

कम्ब रामायणम

(तमिळ)

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड

(नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय एवं हिन्दी अनुवाद)

रचयिता

महर्षि कम्बर

लिप्यन्तरण एवं अनुवाद

आचार्य ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

प्रथम संस्करण—

१९८०-८१ ई०

पृष्ठसंख्या—१८"×२२"÷८=१०१६

मूल्य— ७०·०० रुपये

मुद्रक—

वाणी प्रेस

'प्रभाकर निलयम्', ८०५/१२८, [illegible]टियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३


उपहार

....

....

....

....

....



अतुलितबलधामं स्व[illegible]मदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

श्रीराम-पञ्चायतन



Swami Chinmayananda

"Bombay Yagnasala
14-11-79.

Sri Seshadri.
Madurai

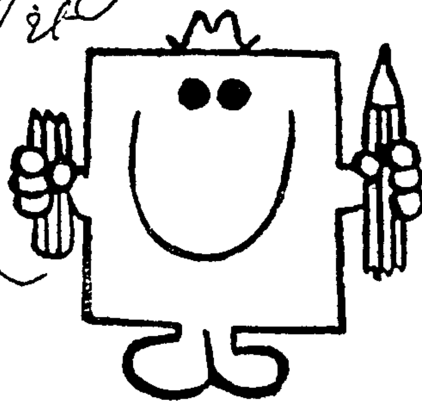
Blessed One,

Hariom Hariom. Hariom.
Salutations.

Congratulations that you found in you the "faith" to serve the Lord with this stupendous work of translating and commenting, in Hindi, the entire 10,000 and odd verses of Kambar Ramayana. May Sri Ramachandra shower His grace upon you: let Sita give the required heart: and let Hanumanji supply the mental and physical strength to accomplish it.

Love dear love,

[illegible]



श्री स्वामी चिन्मयानन्द

श्री शेषाद्रि

मदुरै

धन्य ॐ

बाम्बे यज्ञशाला

१४-११-७६

हरिः ओम्, हरिः ओम्, हरिः ओम्, प्रणाम।



कम्बर रामायण के पूरे दस हजार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएं, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने के लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल दें।

प्रेम प्रेम प्रेम

(प्रेमसहित)

ॐ चिन्मयानन्द

कम्बन-मणिमण्डपम्



तमिळ्नाडु में कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर
स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान में महर्षि कम्बन
के समाधिस्थल पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन-
अडिप्पोडि (कम्बन की चरणरेणु)
श्री सा० गणेशन द्वारा स्थापित

आचार्य ति० शेषाद्रि का अभिनन्दन

कारैक्कुडी के 'कम्बन कऴगम्' द्वारा इस अनुवाद का भव्य स्वागत



बालकाण्ड की भूमिका में कारैक्कुडी के निवासी, कम्बन कऴगम् के निर्माता, संचालक और अध्यक्ष श्री कम्बन अडिप्पॉडि (कम्बन-चरणरेणु) जी की चर्चा दी गयी है। उस संदर्भ में उक्त कऴगम् द्वारा हर वर्ष चलायी जानेवाली 'कम्ब जयन्ती' के उत्सव की बात भी कही गयी है। वह उत्सव चार दिनों का होता है और उसकी समाप्ति कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान

में वहाँ होती है, जहाँ कम्बन की समाधि पर बना मन्दिर-सा मण्डप रहता है। फाल्गुन (सौर गणना के अनुसार) महीने के 'हस्त नक्षत्र' का दिन कम्ब रामायण के प्रकाशन का दिन माना जाता है। (शकाब्द ८०७ के फाल्गुन यानी फ़रवरी सन् ८९६ ई० के दिन वह प्रकाशित हुआ।) इसलिए यह उत्सव उस दिन कम्बन की पूजा-अर्चना के साथ समाप्त होता है।

इस उत्सव में तमिऴनाडु के मूर्द्धन्य विद्वान् और अन्य गण्यमान्य सज्जन भाग लेकर अपने भाषणों, कविताओं और चर्चाओं द्वारा अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। यह शानदार जलसा है और कम्बन अडिप्पॉडि जी कोई बात उठा नही रखते। यह उत्सव कारैक्कुडी में बन रहे कम्ब-मण्डप में चलता है।

इस साल 'कम्ब-मेला' में दो विशेष बातों का आयोजन था। कम्बन के दो विद्वान् भक्तों की स्मृति में चित्रों का अनावरण एक बात था, और इस अनुवाद-ग्रंथ के प्रणेता का अभिनन्दन दूसरी बात।

मार्च १८ से २१वी ता० तक मनाये गये इस उत्सव में पहले ही दिन की सभा के कार्यक्रम में ये दोनों अच्छे कार्य सम्पन्न हुए।

इस सभा के तमिऴनाडु के वित्तमंत्री श्री वी० आर्० नॅडुञ्जॅऴियन जी सभापति रहे। प्रधान न्यायमूर्ति जस्टिस् मु० मु० इस्माइल ने उद्घाटन किया। (इनकी लिखी भूमिका बालकाण्ड के आरम्भ में छपी है।) तमिऴनाडु विधान कौंसिल के अध्यक्ष मान्य म० पॉ० शिवज्ञान ग्रामणी जी ने वी० वी० एस् अय्यर के चित्र का अनावरण किया और उनका गुणगान समुचित रूप से किया। यह साल व० वे० सु० अय्यर के जन्म का सौवाँ साल है। उन्ही ने पहले-पहल कम्बन की रचना का विश्व के श्रेष्ठतम कवियों की रचनाओं के साथ तुलना करके कम्बन को उनसे भी आगे निकली मेधा का स्वामी साबित किया। उनका 'A study of Kamban' 'कम्बन —एक अध्ययन' बड़ा ही उत्कृष्ट, प्रामाणिक और महत्त्व का विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ है। वी० वी० एस्० (व-वे-सु) अय्यर तमिऴनाडु के 'तिलक' थे।

कोयम्बत्तूर के प्रसिद्ध मिल-मालिक जी० के० सुन्दरम् जी ने तॅ० पो० मीनाक्षी सुन्दरम् के चित्र का अनावरण किया। तॅ० पो० मी०,

जिनको यहाँ गुरुदेव कहके सम्बोधित करने की प्रथा है, बहुभाषाविद्, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के प्रथम उपकुलपति थे। उन्हीं ने पहले-पहल कम्बन का समूचा ग्रन्थ एक ही जिल्द में संकलन करके पुस्तक के प्रकाशन में सहायता दिलायी थी।

बाद मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने श्री शेषाद्रि और ग्रन्थ की सराहना की। इनकी लिखी भूमिका भी बालकाण्ड के आरम्भ में छपी है। उन्होंने अपनी संस्तुति के भाषण में कहा कि तमिळभाषियों के लिए हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, 'ने, का, के, की' आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं। तमिळनाडु में रहनेवाले इने-गिने हिन्दी के अधिकारी विद्वानों में आचार्य ति० शेषाद्रि एक हैं।

फिर उन्हीं ने कम्बन की महत्ता बतायी। अनुवाद के दो-एक स्थलों का उल्लेख करके बताया कि अनुवाद सफल हुआ है।

यहाँ की प्रथा के अनुसार उन्होंने कम्बन कळगम् की ओर से ज़री की कारीगरी से युक्त रेशमी शाल उढ़ाकर अनुवादक का सम्मान किया।

असल में यह कार्य तमिळ देश के समूचे कम्बन प्रेमियों के सम्मान का प्रदर्शक है और ट्रस्ट और अनुवादक इस पर गर्व कर सकते हैं।



अनुवादक की अवतरणिका

अयोध्या-अरण्यकाण्ड की भूमिका (अनुवादक की अवतरणिका) में तमिऴ़ के वाक्यों में आनेवाले शब्दों के मूल रूपों को छाँटने में जो कठिनाई सम्भवनीय है, उसे दूर करने (कम से कम करने) के विचार से शब्द-विचार पर कुछ बातें कही गयीं। अब उसी को मद्देनजर रखकर सन्धि-सम्बन्धी कुछ विस्तार करना चाहता हूँ।

सन्धि ध्वनियों के मेल से होती है। वहाँ विग्रह आसान है। पर शब्दों का जहाँ योग के कारण रूप-परिवर्तन होता है, जो आम तौर से समास के कारण होता है, वहाँ विग्रह आसान नहीं है। यों ही शब्दों को खण्डित करने से काम नहीं चलेगा। अतः समास के कारण होनेवाली सन्धि-सम्बन्धी बातें जानना आवश्यक हो जाता है। असल में तमिऴ़ में 'पुणर्च्चि' के प्रकरण में जो तत्त्व बताये जाते हैं वे अधिकांश समास के ही नियम हैं, यद्यपि 'पुणर्च्चि' का अर्थ मेल, सन्धि या योग है।

पुणर्च्चि

1 पुणर्च्चि (लक्षण)— शब्दों के अपने क्रम में मेल या योग को "पुणर्च्चि" कहते हैं। इसमें "समास, सन्धि और योग" तीनों का समावेश है। ये दो तरह की हैं:—

पहली— वेऱ्ऱुमैप् पुणर्च्चि— जब पूर्वशब्द का अपर शब्द से विभक्ति के "योग" या समास बनता है, उसे 'वेऱ्ऱुमैप् पुणर्च्चि' कहते हैं। (इसके अंतर्गत हिन्दी का तत्पुरुष समास आता है।) इसमें कारक-चिह्न लुप्त भी रह सकते हैं, प्रकट भी।

उदाहरण :

कारकचिह्न लुप्त	कारकचिह्न प्रकट	कारकचिह्न	विभक्ति
पाल् कुटित्तान् (दूध पिया)	पालैक् कुटित्तान् (दूध को पिया)	ऐ (को)	दूसरी
तलै वणङ्कितान् (सिर नवाया)	तलैयाल् वणङ्कितान् (सिर से नमन किया)	आल् (से)	तीसरी
परतन् मैन्तन् (भरत-सुत)	परतनुक्कु मैन्तन् (भरत को सुत)	कु (को)	चौथी

(यहाँ हिन्दी में छठी विभक्ति होती है।)

मलै वीऴरुवि (पर्वत-उतरती नदी)	मलैयिऩ् वीऴरुवि (पर्वत से उतरती नदी)	इऩ् (से)	पाँचवीं
मुरुकऩ् वेल् (मुरुग-भाला)	मुरुकऩतु वेल् (मुरुगन का भाला)	अतु (का)	छठी
कुकै नुऴैन्ताऩ् (गुहा-घुसा)	कुकैक्कण् नुऴैन्ताऩ् (गुहा में घुसा)	कण् (में)	सातवीं
पाल्+कुटम्=पाऱ्कुटम्	पालै उटैय कुटम्	मध्यमपदलोपी कर्मधारय	

दूसरी— अल्वऴिप् पुणर्च्चि— अन्य सभी समस्त (या संयुक्त) शब्द "अल्वऴिप् पुणर्च्चि" के कहे जाते हैं। "अल्" का अर्थ "इतर" या अन्य या 'जो यह नहीं'।

उदाहरण :

(क) पाय्पुलि— विऩैत्तॊहै (कृदन्त) के प्रयोग से बननेवाले समस्त शब्द 'पाय्' का अर्थ 'झपटता', 'झपटा' और आगे 'झपटनेवाला' है— पुलि=बाघ है।

(ख) पचुम् पुल् (हरी घास) पण्पुत्तॊहै— गुणवाचक विशेषण तथा विशेष्य का समास है।

(ग) कयल् विऴि— (मछली-सी आँख)उवमैत्तॊहै— उपमेय तथा उपमित शब्दों का मेल।

(घ) इराप्पहल्— इरा+पकल्=रात (और) दिन (द्वन्द्व समास)।

(ङ) कयल् विऴि वन्ताळ्— यहाँ "मछली-सी आँख वाली आयी" अर्थ है। यह 'अन्मॊऴित्तॊहै' (कर्मधारय समास) में बना समास है।

2 "पुणर्च्चि" दो तरह से साधी जाती है—

(अ)1 स्वाभाविक या केवल संयोग— इरामन् वन्ताऩ् (राम आया), माट्टु पुल् मेय्न्ततु (बैल ने घास चरी।)

2 विकारयुक्त—मेल होते वक़्त पूर्व शब्द के आखिर में और पूर्व व अपर शब्दों के बीच परिवर्तन या विकार हो जाते हैं।
उदाहरण : कलै+चॅल्वि=कलैच्चॅल्वि।

(आ) विकार तीन तरह के होते हैं— आगम, परिवर्तन और लोप।

आगम—कलै+चॅल्वि=कलैच्चॅल्वि— आगम है 'च्' आया है। (कला में निपुण स्त्री इसका अर्थ है। 'कलै' और 'चॅल्वि' का समास नहीं बना तो अर्थ भिन्न होगा; उनको अलग-अलग लेना पड़ेगा।)

पू+तोट्टम्=पून् दोट्टम्—आगम है। पू और तोट्टम् अलग-अलग रहें तो दोनों के अलग-अलग अर्थ करना पड़ेगा। पर यहाँ यह समस्त शब्द है। अर्थ 'फूलों का बाग' है।

परिवर्तन—मरम्+चायन्ततु=मरञ्जायन्तदु(अर्थ—पेड़ गिरा।) यहाँ म् ञ् में परिवर्तित हो गया।

लोप—मरम्+वेर्=मरवेर्— (अर्थ— पेड़ की जड़) यहाँ म् का लोप हो गया।

तमिऴ में इस तरह के समासगत संधि के विस्तृत नियम होते हैं। उनके रूप के किंचित् ज्ञान के लिए कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

संधि में परुष व्यंजनों का द्वित्व

तमिऴ में परुष वर्ग के अक्षरों के द्वित्व का मुख्यत्व है। द्वित्व के विना अर्थ भी बदल जाता है; समास ही भिन्न हो जाता है। अतः पहले उन स्थलों का विवरण उदाहरण-सहित दिया जाता है।

नोटः— यहाँ तमिऴ के वर्णों के वर्गीकरण का स्मरण करना सुविधाजनक होगा :

अ आदि बारह स्वर— स्वरवर्ण के हैं।

क, च, ट, त, प, ऱ— ये परुष अक्षर, "वल्लॅऴुत्तु" या "वलि" या वल् इनम् के परुषवर्ण या परुषगण के अक्षर हैं।

ङ, ञ, ण, न, म, ऩ— ये कोमल वर्ण "मॅल् इनम्" कोमल वर्ण या कोमल गण के हैं।

य, र, ल, व, ऴ, ळ— ये मद्धिम वर्ण के अक्षर "इडैयिनम्" के कहे जाते हैं।

3 (क) विभक्ति-समास में वे स्थल जहाँ परुष वर्ण का द्वित्व होता है :

1 द्वितीया तत्पुरुष के विग्रह करते समय द्वित्व होता है :

अणैयै+कट्टिनान्=अणैयैक्कट्टिनान्। (आक्कल्) सृजन
कट्टैयै+तऱित्तान्=कट्टैयैत्तऱित्तान्। (अऴित्तल्) नाश
ऊरै+शेर्न्दान्=ऊरैच्चेर्न्दान्। (अडैदल्) प्राप्ति
उलहै+तुऱन्दान्=उलहैत्तुऱन्दान्। (नीत्तल्) त्याग
पुलियै+पोऩ्ऱवन्=पुलियैप्पोऩ्ऱवन्। (ऑत्तल्) समता
पॉरुळै+पॅऱ्ऱान्=पॉरुळैप्पॅऱ्ऱान्। (उडैमै) स्वामीत्व

2 चौथी विभक्ति के बने समस्त शब्दों के विग्रह करते समय :

नम्बिक्कु+कॊडत्तान्=नम्बिक्कुक्कॊडुत्तान्। (कॊडै) दान

पाम्बुक्कु + पहै कीरि = पाम्बुक्कुप्पहै कीरि । (पहै) शत्रुता
औवॅक्कु + कबिलर् नण्बर् = औवॅक्कुक्कबिलर् । (नण्बर्) मित्रता
वॅन्ऱवर्क्कु + कळल् तक्कदु = वॅन्ऱवर्क्कुक्कळल् । (तक्कदु) उचितता
नूलुक्कु + पत्रुजु = नूलुक्कुप्पत्रुजु । (अदुवादल्) वही बनना
कूलिक्कु + शॅय्द वेलै = कूलिक्कुच्चॅय्द वेलै । (पॉरुट्टु) तदर्थ
कण्णनुक्कु + तम्बि मुरुहन् = कण्णनुक्कुत्तम्बि मुरुहन् । (क्रम)

3 छठी विभक्ति में अवर वर्ग के नामों के बाद परुषाक्षरों का द्वित्व हो जाता है :

यानै + कादु = यानैक्कादु । (गजकर्ण)
कुदिरै + शॅवि = कुदिरैच्चॅवि । (अश्वकर्ण)
पाम्बु + तलै = पाम्बुत्तलै । (सर्पसिर)
पूनै + पार्वै = पूनैप्पार्वै । (मार्जारदृष्टि)

4 सातवीं विभक्ति पर आधारित समास में :

कूण्डु + किळि = कूण्डुक्किळि । (पिंजरे का तोता)
तण्णीर् + पाम्बु = तण्णीर्प्पाम्बु ।
मलै + कुहै = मलैक्कुहै ।

5 परुष वर्ण के ह्रस्व 'उ' के बाद परुष अक्षर आवे तो उसका द्वित्व हो जाता है :

वाक्कु + कॉडु = वाक्कुक्कॉडु । कॉक्कु + शिऱहु = कॉक्कुच्चिऱहु ।
पाक्कु + तूळ् = पाक्कुत्तूळ् । अच्चु + पलहै = अच्चुप्पलहै ।

6 स्थानवाचक शब्द के उपांत अक्षर कोमल (मॅल्लॅळुत्तु) व्यंजन हों तो परुष व्यंजनों का द्वित्व हो जाता है :

इङ्गु + कण्डान् = इङ्गुक्कण्डान् ।
अङ्गु + शॅन्ऱान् = अङ्गुच्चॅन्ऱान् ।
आङ्गु + तेडिनान् = आङ्गुत्तेडिनान् ।
ऍङ्गु + पोनाय् = अङ्गुप्पोनाय् ?
ईङ्गु + कण्डान् = ईङ्गुक्कण्डान् ।
आण्डु + शॅन्ऱान् = आण्डुच्चॅन्ऱान् ।
ईण्डु + तेडिनान् = ईण्डुत्तेडिनान् ।
याण्डु + पोनाम् = याण्डुप्पोनाय् ?

7 एकाक्षर शब्द के आगे के परुषाक्षर का द्वित्व हो जाता है :

पू + कडै = पूक्कडै पू + चॅण्डु = पूच्चॅण्डु
ती + पुहै = तीप्पुहै ई + तलै = ईत्तलै
तै + पॉङ्गल् = तैप्पॉङ्गल्

3 (ख) इतर समास-गठन में परुष अक्षरों का द्वित्व :

1 अरै, पादि (आधा) के बाद आनेवाले परुषाक्षर :
अरै+काशु=अरैक्कासु। पादि+शुमै=पादिच्चुमै।

2 ह्रस्व अक्षर के आगे के परुष का द्वित्व होता है :
कना+कण्डेन्=कनाक्कण्डेन्।
पला+चुळै=पलाच्चुळै।
उला+तमिऴ्=उलात्तमिऴ्।
इरा+पहल्=इराप्पहल्।

3 दो ह्रस्वाक्षरों के शब्दों के आगे के परुषाक्षर का द्वित्व होता है :
कौशु+कडित्तदु=कौशुक्कडित्तदु।
उडु+शिदऱियदु=उडुच्चिदऱियदु।
कणु+तोन्ऱियदु=कणुत्तोन्ऱियदु।
वडु+पिळन्ददु=वडुप्पिळन्ददु।

4 नकारात्मक शब्दों का अन्तिम स्वर जहाँ लुप्त है, वहाँ :
कलैया+कून्दल्=कलैयाक्कून्दल्।
नाडा+शिऱप्पु=नाडाच्चिऱप्पु।
काणा+तॅय्वम्=काणात्तॅय्वम्।
माणा पिऱप्पु=माणाप्पिऱप्पु।

5 अकारान्त कृदन्त (अपूर्ण क्रिया) के आगे के परुषाक्षर का :
पाड+केट्टान्=पाडक्केट्टान्।
पाड+शौत्नान्=पाडच्चौन्नान्।
कूऱ+तॅरिन्दान्=कूऱत्तॅरिन्दान्।
आऱ+पौरुत्तान्=आऱप्पौरुत्तान्।

6 इकारान्त कृदन्त (अपूर्ण क्रिया) के आगे के परुषाक्षर का :
केट्टालन्ऱि+कौडान्=केट्टालन्ऱिक्कौडान्।
उणविन्ऱि+शॅत्तान्=उणविन्ऱिच्चॅत्तान्।
तेडि+तन्दान्=तेडित्तन्दान्।
ओडि+पोनान्=ओडिप्पोनान्।

7 उन शब्दों के आगे, जिनका अन्तिम स्वर ह्रस्व हो और उपान्त कोमल वर्ग का हलन्त व्यंजन हो :
अन्बु+तळै=अन्बुत्तळै।

8 गुणवाचक विशेषण तथा विशेष्य से बने समस्त शब्दों में :
वट्ट + कोट्टै = वट्टक्कोट्टै । पच्चै + पुडैवै = पच्चैप्पुडैवै ।

9 दो नामों के (रूपी या संज्ञित अर्थ में) बने समस्त शब्दों में :
तै + तिङ्गळ् = तैत्तिङ्गळ् । शारै + पाम्बु = शारैप्पाम्बु ।

10 अ, इ—संकेतात्मक प्रत्यय और ऍ प्रश्नात्मक प्रत्यय के आगे :
अ + करुम्बु = अक्करुम्बु । इ + शङ्गु = इच्चङ्गु ।
ऍ + पन्दु = ऍप्पन्दु ?

11 'अन्त' (उस); 'इन्त' (इस) और 'ऍन्त' (कौन) इन प्रश्नवाचक शब्दों के आगे :
अन्द + कुदिरै = अन्दक्कुदिरै । इन्द + शिलै = इन्दच्चिलै ।
ऍन्द + तट्टु = ऍन्दत्तट्टु ? ऍन्द + पडम् = ऍन्दप्पडम् ?

12 अप्पडि (वैसा), इप्पडि (ऐसा); ऍप्पडि (कैसा) इन शब्दों के आगे :
अप्पडि + कूरिनान् = अप्पडिक्कूरिनान् ।
इप्पडि + शॅय्दान् = इप्पडिच्चॅय्दान् ।
ऍप्पडि + पाडिनान् = ऍप्पडिप्पाडिनान् ?

13 'इनि' (अब, आगे); 'तनि' (अकेला); "मट्रै", "मट्रु" (अलावा, अन्य, इतर) इन शब्दों के आगे :
इनि + पोहलाम् = इनिप्पोहलाम् ।
तनि + पळक्कम् = तनिप्पळक्कम् ।
मट्रु + कण्डवै = मट्रुक्कण्डवै ।
मट्र + पॉरुळ्हळ् = मट्रप्पॉरुळ्हळ् ।
मट्रै + कूरुहळ् = मट्रैक्कूरुहळ् ।

वे स्थल जहाँ द्वित्व नहीं होता

4 (क) विभक्ति-समास में जहाँ परुष का द्वित्व नहीं होता :

1 कर्म, तत्पुरुष समास में जहाँ विग्रह नहीं किया गया है:—
कवै + कट्टिनान् = कवै कट्टिनान् । (सृजन)
काडु + कॊन्ट्रान् = काडु कॊन्ट्रान् । (नाश)
ऊर् + शेर्न्दान् = ऊर् शेर्न्दान् । (प्राप्ति)
उयिर् + तुरन्दान् = उयिर् तुरन्दान् । (त्याग)
पुलि + पोन्ट्रान् = पुलि पोन्ट्रान् । (समता)
पुहळ् + पॅट्रान् = पुहळ् बॅट्रान् । (स्वामीत्व)

2 तीसरी विभक्ति के 'ऑटु, ओटु' के चिह्नों के आगे नहीं होगा—
ॲत्नोडु+कर्ड्रान्=ॲत्नोडु कर्ड्रान् ।
महनोडु+शेर्न्दान्=महनोडु शेर्न्दान् ।
ॲत्नॉडु+तङ्गिनान्=ॲत्नॉडु तङ्गिनान् ।
वेलनोडु+पोनान्=वेलनोडु पोनान् ।

3 पाँचवीं विभक्ति के 'इरुन्तु, नित्रु' चिह्नों के आगे नहीं होता—
मरत्तिलिरुन्दु+कुदित्तान्=मरत्तिलिरुन्दु कुदित्तान् ।
वीट्टिनित्रु+पुड्पपट्टान्=वीट्टिनित्रु पुड्पपट्टान् ।

4 छठी विभक्ति के चिह्नों के आगे नही होगा—
कण्णनदु+कुळल्=कण्णनदु कुळल् ।
वेलनुडैय+शिड्प्पु=वेलनुडैय शिड्प्पु ।
ॲन+कैहळ्=ॲन कैहळ् ।

4 (ख) इतर सन्धियों में जहाँ परुष का द्वित्व नहीं होगा :

1 उच्च जाति के साधारण नामों (जातिवाचक संज्ञाओं) के आगे—
तम्बि+शिड्रियवन्=तम्बि शिड्रियवन् ।
शॅल्वि+पॅरियळ्=शॅल्वि पॅरियळ् ।
ताय्+शिड्न्दवळ्=ताय् शिड्न्दवळ् ।
ताय्+शिड्न्ददु=ताय् शिड्न्ददु ।

2 उन सभी कृदन्तीय विशेषणों को छोड़, जिनके अन्तिम स्वर लुप्त हों—
पाराद+काडु=पाराद काडु (नकारात्मक)
पुदिय+शिङ्गम्=पुदिय शिङ्गम् (संकेतात्मक)
पाय्न्द+तवळै=पाय्न्द तवळै (खुला)

3 अवर जाति के वाचक पूर्ण क्रिया के शब्दों के आगे—
मुळङ्गिन+शङ्गुहळ्=मुळङ्गिन शङ्गुहळ् ।
आर्त्तन+पड्रैहळ्=आर्त्तन पड्रैहळ् ।
पाडिन+कुमिल्हळ्=पाडिन कुमिल्हळ् ।
करैन्दन+काक्कैहळ्=करैन्दन काक्कैहळ् ।

4 "चॅय्यिय"—(करने) जैसी अपूर्ण क्रिया के आगे—
उण्णिय+शॅन्ड्रान्=उण्णिय शॅन्ड्रान् । (खाने गया)
नोटः—यह कविता में ही प्रयुक्त होता है ।

5 'मिया' की पूरक ध्वनि के आगे—
केण्मिया+शॅल्व=केण्मिया शॅल्व !

शॅन्मिया+तम्बि=शॅन्मिया तम्बि !
केण्मिया—केण्—सुनो; शॅन्मिया=शॅल=चल—यह भी कविता में आता है।

6 आकारान्त, नकारात्मक बहुवचन की पूर्ण क्रियाओं के आगे नहीं होता :
वारा+किळिहळ्=वारा किळिहळ्।
तिन्ना+पुलिहळ्=तिन्ना पुलिहळ्।
पाडा+कुयिल्हळ्=पाडा कुयिल्हळ्।

7 कर्ता अगर ऐकारान्त हो तो सन्धि में द्वित्व नहीं होता :
यानै+पॅरियदु=यानै पॅरियदु। पूनै+शिऱियदु=पूनै शिऱियदु।

8 प्रश्नसूचक शब्द के आगे द्वित्व नहीं होता :
कण्णा+केळ्=कण्णा केळ्। वेला+शॅल्=वेला शॅल्।
मुरुहा+ता=मुरुहा ता। कुप्पा+पो=कुप्पा पो।

9 क्रिया और संज्ञा मिलकर जहाँ समस्त शब्द बने हों, वहाँ द्वित्व नहीं होता :
कत्तु+कडल्=कत्तुकडल्। ऑलि+शङ्गु=ऑलिशङ्गु।
मोदु+तिरै=मोदुदिरै। तॅळि+पॉरुळ्=तॅळिपॉरुळ्।

10 ह्रस्वान्त शब्दों के उपान्त अक्षर परुष जहाँ नहीं हो, वहाँ द्वित्व नहीं होगा :
नाडु+कळित्तदु=नाडु कळित्तदु।
ॲह्(∴)गु+कडिदु=ॲ∴गु कडिदु।
कयिरु+शिऱिदु=कयिरु शिऱिदु।
पन्दु+तन्दात्=पन्दु तन्दात्।
कॉय्दु+शॅल्=कॉय्दु शॅल्।

11 कुछ मामूली उकार के आगे द्वित्व नहीं होगा :
कदवु+तिऱन्ददु=कदवु तिऱन्ददु। नालु+पेर्=नालु पेर्।

12 कुछ संख्यावाचक शब्दों के आगे परुष का द्वित्व नहीं होगा :
ऑन्ऱु+कोडु=ऑन्ऱु कोडु। ऑरु+काशु=ऑरु काशु।
इरण्डु+शिङ्गम्=इरण्डु शिङ्गम्। इरु+शीर्=इरु शीर्।
मून्ऱु+किळि=मून्ऱु किळि। नान्गु+काल्=नान्गु काल्।
ऐन्दु+तलै=ऐन्दु तलै। आऱु+शेवल्=आऱु शेवल्।
एळु+कडल्=एळु कडल्। ऑन्बदु+पळम्=ऑन्बदु पळम्।

13 वह, यह (कर्तावाचक) निश्चयार्थक सर्वनामों के आगे :
अदु+शिऱिदु=अदु शिऱिदु। इदु+पॅरिदु=इदु पॅरिदु।

4 (ग) अन्य स्थल जहाँ द्वित्व नहीं होगा :

1 'ऍतु', 'एतु', 'यातु' क्या एकवचन; 'ऍवै', 'यावै' क्या बहुवचन प्रश्नवाचक सर्वनामों के आगे :
ऍदु+तङ्गिऱ्ऱु ?=ऍदु तङ्गिऱ्ऱु ? एदु+पै ?=एदु पै ?
यादु+शॅय्दाय् ?=यादु शॅय्दाय् ? ऍवै+शॅन्ऱऩ ?=ऍवै शॅन्ऱऩ ?
यावै+कण्डऩ ?=यावै कण्डऩ ?

2 'अव्वळवु' (उतना), 'इव्वळवु' (इतना), 'ऍव्वळव' (कितना) —इन शब्दों के आगे :
अव्वळवु+पॊरुळ्=अव्वळवु पॊरुळ्।
इव्वळवु+कालम्=इव्वळवु कालम्।
ऍव्वळवु+शुरुक्कम्=ऍव्वळवु शुरुक्कम् ?

3 अत्तनै (उतना), इत्तनै (इतना), ऍत्तनै (कितना) —इन शब्दों के आगे :
अत्तनै+काक्कै=अत्तनै काक्कै।
इत्तनै+शॅल्वम्=इत्तनै शॅल्वम्।
ऍत्तनै+पॅरिदु !=ऍत्तनै पॅरिदु !

4 पटि (ऐसा) के प्रत्यय के बाद :
तॅरिमुम्पडि+कूऱिऩान्=तॅरिमुम्पडि कूऱिऩान्।
उवक्कुम्पडि+शिऱन्दान्=उवक्कुम्पडि शिऱन्दान्।
काणुम्पडि+तोऩ्ऱिऩान्=काणुम्पडि तोऩ्ऱिऩान्।
महिऴुम्पडि+पेशिऩान्=महिऴुम्पडि पेशिऩान्।

5 'शिल', 'पल' (कुछ) :
शिल+कऱ्कळ्=शिल कऱ्कळ्। पल+शॊऱ्कळ्=पल शॊऱ्कळ्।
शिल+तडैहळ्=शिल तडैहळ्। पल+पयिऱ्हळ्=पल पयिऱ्हळ्।

6 आ, ओ, ए, या —इन प्रश्नसूचक शब्दों के आगे :
अवना+शॅन्ऱान् ?=अवना शॅन्ऱान् ?
अवनो+कण्डान् ?=अवनो कण्डान् ?
यारे+शॅय्दार् ?=यारे शॅय्दार् ?
या+कूऱिनाय्=या कूऱिनाय् ?

7 निश्चयार्थक 'ए'कार-युक्त शब्दों के आगे :
इवने+शॅयदवन् ! = इवने शॅयदवन् !

5 उटम्पटु मॅय् (मिलानेवाला व्यंजन)— पास-पास स्वर ही आएँ तो उन्हें मिलाने के लिए य और व के व्यंजनों का आगम होता है :

'य्' आया है :—
मणि+अळहिदु=मणियळहिदु
ती+अॅळुन्ददु=तीयॅळुन्ददु
कै+इदु=कैयिदु
अवने+अळहन्=अवनेयळहन्

'व्' का आगम हुआ है :—
विळ+अळहिदु=विळवळहिदु
पला+अळहिदु=पलावळहिदु
कडु+अळहिदु=कडुवळहिदु
पू+अळहिदु=पूवळहिदु
नौ+अळहिदु=नौव्वळहिदु
को+अळहिदु=कोवळहिदु

6 प्रश्नवाचक या निश्चयवाचक शब्दों (सर्वनामों) का मेल :
(कौन, क्या) ऍ+अणि=ऍव्वणि; ऍ+यानै=ऍव् यानै ।
(उस) अ+अणि=अव्वणि; अ+यानै=अव् यानै ।
यहाँ अपर शब्द का आरम्भाक्षर य या व है। तब हलन्त व का आगम हुआ है। य को छोड़ अन्य व्यंजन आएँ तो उस-उस व्यंजन का द्वित्व हो जाता है। [पहले (10) में आया है।]

7 ह्रस्व उ का मेल— नाकु+अरिदु=नाकरिदु— ह्रस्व उ का लोप हो गया और क्+अ मिलकर क हो गया। अपर शब्द यकारारम्भ हो तो ह्रस्व उ ह्रस्व इ बन जाता है :
नाकु+यातु=नाकियातु ।
कुछ स्थानों में ह्रस्व उ के बाद 'ऐ' का आगम होता है। उदा :
पण्टु+कालम्=पण्टैक्कालम् । इन्रु+कूलि=इऱ्ऱैक्कूलि ।

8 गुणी नामों का मेल— अधिकांश गुणवाचक शब्द (संज्ञाएँ) 'मै' में अन्त होते हैं। उनको लेकर गुणी का समस्त शब्द जब बनते हैं, तो समास निम्नलिखित प्रकार से बनते हैं :
उटैमै+अन्=उटैयन्—मै का लोप ।

करुमै+अन्=करियन्—मै का लोप और उ का इ में विकार।
पचुमै+तार्=पैन्तार्—मै का लोप; चु का विकार; त् का न् में विकार।

9 व्यंजनान्त शब्दों की सन्धि— पूर्व शब्द व्यंजनान्त हो और अपर शब्द स्वरान्त तो पहले के व्यंजन से यह स्वर संयुक्त हो जाता है :
उदा : नेरम्+इल्लै=नेरमिल्लै। पाल्+आट्टु=पालाट्टु।

10 केवल एक ह्रस्व अक्षर और हलन्त के बने शब्दों के आगे स्वरारम्भ शब्द आएँ, तो निम्नलिखित विकार होता है :
मण्+अरितु=मण्णरितु। पौन्+अरितु=पौन्नरितु।

11 'म'कारान्त शब्दों की संधि— इसमें पहले 'म्' का लोप हो जाता है; फिर स्वरान्त बनकर तत्संबंधी विधियों के अनुसार परिवर्तन पाता है। उदा :

1 मरम्+अडि=मरवडि (म् का लोप; मिलानेवाला व्यंजन का आगम।)

2 मरम्+कोडु=मरक्कोडु (म् का लोप+क का द्वित्व)

3 मरम्+वेर्=मरवेर् (म् का लोप; फिर केवल संयोग : विकार
मरम्+नार्=मरनार् नहीं।)

4 (अ) उण्णुम्+चोरु=उण्णुञ्जोरु (म् का ञ् में बदलना।)
(आ) अहम्+चॅवि=अञ्जॅवि—म् का लोप म् का च वर्ग के कोमल ञ् में परिवर्तन।
अहम्+कै=अङ्गै— म् का लोप; म् का क वर्ग के कोमल ग् में परिवर्तन।

12 ण, न की समास-संधि विधि :

1 शिरु कण्+कळिरु=शिरु कट्कळिरु— ण् का ट् में परिवर्तन
पॉन्+तट्टु=पॉऱ्ऱट्टु— न् का ऱ् में परिवर्तन

2 मण्+आट्चि=मण्आट्चि
पॉन्+नीट्चि=पॉन्नीट्चि
मण्+वन्मै=मण्वन्मै
पॉन्+याप्पु=पॉन्याप्पु
विभक्ति-समास है। इसमें केवल संयोग यानी बिना: परिवर्तन के मेल हो जाता है।

3 मण्+कटितु=मण्कटितु इतर-समास है— परुषगण, (अनुनासिक)

मण्+ज्ञात्ऱ्तु=मण्ज्ञात्ऱ्तु
मण्+याप्पु=मण्याप्पु
पॉत्+कटितु=पॉत्कटितु
पॉत्+ज्ञात्ऱ्तु=पॉत्ज्ञात्ऱ्तु
पॉत्+याप्पु=पॉत्याप्पु

कोमल गण और मद्धिम गण —तोनों के व्यंजनों के साथ स्वाभाविक मेल या संयोग हो जाता है।

13 ल, ळकारान्त शब्दों की विधि :

1 कल्+कुऱै=कऱ्कुऱै
मुळ्+कुऱै=मुट्कुऱै

विभक्ति-समास है-- ल ऱ में और ळ ट में बदल गया।

2 कल्+कुऱितु=कल् कुऱितु या कऱ्कुरितु
मुळ्+कुऱितु=मुट् कुऱितु--या मुट्कुऱितु

इतर समास है विकल्प है।

3 कल्+ञॅरिन्ततु=कन् ञॅरिन्ततु
मुळ्+ञॅरिन्ततु=मुण् ञॅरिन्ततु
कल्+ञॅरि=कन् ञॅरि
मुळ्+ञॅरि=मुण् ञॅरि

इतर समास है- कोमल वर्ण के सामने विकार पाता है। विभक्ति-समास है, यहाँ भी ल ऩ में और ळ ण में बदल जाता है।

4 कल्+यातु=कल् यातु
मुळ्+यातु=मुळ् यातु
कल्+याप्पु=कल् याप्पु
मुळ्+याप्पु=मुळ् याप्पु

मद्धिम गण के अक्षर के सामने दोनों तरह के समासों में अपरिवर्तन के स्वाभाविक संयोग होता है।

14 न, ल, ण के आगे त, न के सम्बन्ध में :

1 पॉन्+तीतु=पॉन्ऱीतु
कल्+तीतु=कऱ्ऱीतु

न, ल के आगे का त ऱ में बदल जाता है।

2 पॉन्+नन्ऱु=पॉन्ऩन्ऱु
कल्+नन्ऱु=कन्ऩन्ऱु

न ऩ में बदल जाता है।

3 मण्+तीतु=मण्टीतु
मुळ्+तीतु=मुट्टीतु

त ट में बदलता है।

4 मण्+नन्ऱु=मण्णन्ऱु
मुळ्+नन्ऱु=मुण्णन्ऱु

न ण में बदलता है।

15 य, र और ऴकारान्त शब्दों के सम्बन्ध में :

1 वेय्+कटितु=वेय्कटितु
वेर्+कटितु=वेर्कटितु
वोऴ्+कटितु=वीऴ् कटितु

इतर समास है— अपरिवर्तित मेल है।

2 मॅय्+कीर्त्ति=मॅय्क्कीर्त्ति इतर समास है।
कार्+परुवम्=कार्प्परुवम् क, प आदि का द्वित्व होता है।
पूऴ्+पऱवॅ=पूऴ्प्पऱवॅ

3 नाय्+काल्=नाय्क्काल् विभक्ति-समास है। परुष अक्षर
तेर्+काल्=तेर्क्काल् का द्वित्व होता है।
पूऴ्+काल्=पूऴ्क्काल्

4 वेय्+कुऴल्=वेयङ्गुऴल्, वेय्क्कुऴल् विभक्ति-समास है।
आर्+कोट्ु=आर्ङ्गोड्ु, आर्क्कोट्ु विकल्प है।

अब तक सन्धि के विविध रूपों का परिचय दिया गया है। उद्देश्य यही है कि जहाँ समस्त शब्द दिये गये हैं, वहाँ मूल शब्दों की परख हो जाय। पर इसका कितना उपयोग हुआ या होता है, वह तब तक हमें मालूम नहीं हो सकता जब तक कोई पाठक कम्ब रामायण के इस अनुवाद के द्वारा कम्बन को ही नहीं 'तमिऴ' भाषा को समझने का प्रयास न करे और अपना अनुभव न बतलाए।

आशा है कि शीघ्र ही ऐसे एक नहीं, अनेक जिज्ञासु पाठक हिन्दी-ज्ञाता तमिऴप्रेमी निकल आएँगे।

तब ये देखेंगे कि और भी सहायता की आवश्यकता पड़ती है। प्रयत्न करने पर वह भी उन्हें मिल जाएगा।

ति० शेषाद्रि



सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

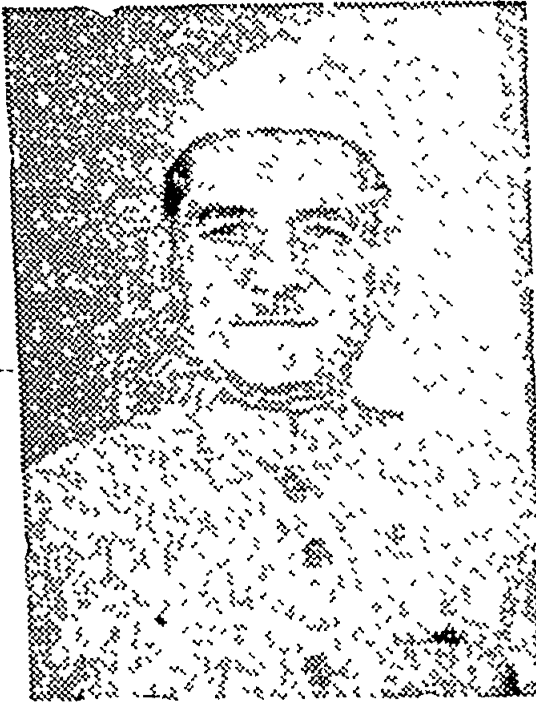
आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमर भारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिळ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

अचलाद्रि चलायमान

शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये। अचलायतन में ही सीमित न रहकर हिमञ्चल अब अञ्चल-अञ्चल की सैर करने लगे। तमिळ रूपाम्बरा ने नागरी पटम्बर भी धारण कर लिया। तमिळ का प्राचीन और विशाल महाकाव्य 'कम्बरामायण' अब केवल तमिळ-जन तक सीमित नही है। लेखन और उच्चारण, दोनों पद्धतियों पर उसका नागरी लिप्यन्तरण और राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरलानुवाद, इसका अधिकांश प्रकाशित होकर अब अखिल राष्ट्र की वस्तु बन चुकी है।



पृष्ठभूमि

अभी कल की बात है, जब आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस भगीरथ-कार्य को हाथ में लिया। और प्रतिकूल स्वास्थ्य में भी लगभग ५००० पृष्ठ का यह बृहत् संस्करण सम्पूर्णप्राय है। वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था। वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार हुई। सन् ८१ के आरम्भ में ही किष्किन्धा-सुन्दर की तीसरी बृहद् जिल्द १०१६ पृष्ठों में प्रकाशित हो गयी और युद्धकाण्ड तीव्रगति में यन्त्रस्थ है। इस आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम पुनः और बारम्बार नमन करते है। तमिळ की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन महाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं। फिर भी, विद्वान् अनुवादक का अथक परिश्रम और

ट्रस्ट के विद्वानों एवं शिल्पी कलाकारों का श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित मनोवृत्ति —इस बल पर हम इस त्वरा गति से कार्य को सम्पन्न करने में सफल हो सके हैं। इसलिए यह चरितार्थ है कि श्री शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये।

बालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ ई० से अकिञ्चन् की साधना; १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; तब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की सम्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; नागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) के सिर्जन से राष्ट्रलिपि का श्रृंगार; विशेष रूप से तमिळ लिपि की जटिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य ति० शेषादि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान —'बालकाण्ड' की भूमिका में इन सबकी चर्चा है। तमिळ ही नहीं, विश्व की सभी लिपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन एक मूलोद्गम के मत की ओर संकेत भी किया गया है।

बालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस्० शंकर राजू नायडू; कम्बन्चरण-रेणु श्री सा० गणेशन्; तमिळनाडु के चीफ़् जस्टिस् श्री एम्० एस्० स्माइल; जस्टिस श्री महाराजन; स्व० श्री० के० सन्थानम् आदि के प्राक्कथन; और सर्वोपरि, आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का सोल्लास आशीर्वाद —यह सब बालकाण्ड में अक्षरशः मुद्रित हैं।

बालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्घोष जनार्दन का उद्घोष है। आवाज़ए खल्क़, नक़्क़ारए ख़ुदा! चारों ओर से इस प्रयास को प्रशंसा प्राप्त हुई। उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान विलुप्त हो रही है। विशेष रूप से तमिळनाडु में ही, ग्रन्थ और ग्रन्थकार एवं ट्रस्ट के आजीवन न्यासी आचार्य ति० शेषाद्रि का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ। एक स्थल पर, उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिळनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना —ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन!

अयोध्या-अरण्यकाण्ड

श्री प्रभुदास वी० पटवारी, तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत् कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्वी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं तत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा ॥" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छवि को निखारा है। गांधीयुग से अद्यावधि निरन्तर राष्ट्रसेवी तमिऴनाडु के जाने-माने महापुरुष श्री० ना० म० र० सुब्वरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुवन्धन पर अपने वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हज़ार रुपया दान-स्वरूप अर्पण किया। एक्सप्रेस परिवार की तमिऴनाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'ग्राम-राज्यम्' आदि ने वड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। अरण्य-अयोध्याकाण्ड की भूमिका में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड

नवप्रकाशित इस खण्ड में, विद्वान् अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार आचार्य ति० शेषाद्रि के अभिनन्दन का समग्र वर्णन पृष्ठ ९-११ पर विद्यमान है। कम्बन के समाधिस्थल पर प्रत्येक वर्ष मनायी जानेवाली कम्ब जयन्ती के अवसर पर 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित कम्ब रामायण के नागरी संस्करण का समादर और चर्चा दक्षिणाञ्चल का विषय वनी।

इस सुअवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने हिन्दी संस्करण की प्रशंसा करते हुए हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में कहा है कि "हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, ने–का–के–की आदि विधियो के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं"।

हिन्दी के पक्षधरों को उनके कथन पर ग़ौर करना चाहिए। डॉ० शंकर नायडू आरम्भ से ही हिन्दी भाषा और हमारे कार्य के प्रशंसक हैं। उन पर हिन्दी-विरोधी होने के आरोप की गुजाइश नहीं। वे हिन्दी के विद्वान् भी है। हमको समझना चाहिए कि हिन्दी-जैसी सरल भाषा भी, नवीन और अनभ्यस्त होने के कारण, अहिन्दीभाषी को अटपटी और कठिन प्रतीत होती है। यदि हिन्दीभाषी पर तमिऴ-जैसी जटिल भाषा का भार आ पड़े तो उनको और अधिक कठिनाई प्रतीत होगी।

इसलिए अहिन्दीभाषियों की कठिनाई के प्रति हमें सहिष्णुता और उदारता से काम लेना चाहिए।

उसी प्रकार तमिळभाषियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि हिन्दी की वर्णमाला तो कठिन नहीं, वरन् उनकी सहायक है। तमिळ में, वे एक ही अक्षर लिखकर स्थान-भेद से कई ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। यह जटिलता नागरी लिपि में स्वतः दूर हो जाती है, जिसके फलस्वरूप तमिळभाषी और हिन्दीभाषी को परस्पर एक-दूसरे की भाषा का लिखना-पढ़ना सुकर हो जाता है। इसी सुविधा के लिए किसी समय तमिळ के लिबास में 'ग्रन्थ लिपि' की रचना हुई थी, जिसको कालान्तर में चढ़ा-ऊपरी ने निगल लिया। अन्यथा आज के युग में वह राष्ट्र की भाषा-समस्या में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती।

अनुवादक की अवतरणिका

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले सभी (लगभग पाँच) खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिळभाषा और तमिळकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिळ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी। प्रथम दो जिल्दों के तारतम्य में, प्रस्तुत खण्ड में भी अनुवादक की चल रही अवतरणिका में, सन्धि-समास के फलस्वरूप उच्चारण-वैभिन्न्य का विश्लेषण दिया गया है।

महर्षि कम्बर्

ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर ग्रन्थकार का नाम मैंने 'महर्षि कम्बर्' दिया है। कई शुभचिन्तकों को कम्बर् के लिए 'महर्षि' शब्द उपयुक्त नहीं प्रतीत हुआ। "कम्बर् विवाहित गृहस्थ था, कम्बर् के वंश-परिवार पर विपरीत किंवदन्तियाँ भी हैं, आदि-आदि।" मेरा नम्र निवेदन है कि ऋषि-महर्षि प्रायः सब पुत्र-कलत्र वाले हुए हैं। महर्षि होने के लिए अविवाहित होगा, ऐसा कोई विधान नहीं है। रहा लोक-आक्षेप, तो उस त्रास से गोस्वामी तुलसीदास, सन्त एकनाथ, सन्त ज्ञानेश्वर जैसे भी नहीं बच पाये। देवभाषा संस्कृत के अतिरिक्त, एक देशज भाषा 'तमिळ' में रामचरित की रचना! यही क्या कम अपराध था कम्बर् का। शुद्धाशुद्ध का तथ्य तो अतीत के अन्तराल में है। हमारे सामने तो प्रेरणा-स्रोत की महत्ता प्रधान है। नागरी लिपि की सार्वभौमिकता का उद्घोष करनेवाले जस्टिस शारदा-चरण मित्र मंत्र-द्रष्टा ऋषि हैं। 'वदेमातरम्' मंत्र के मूलस्रोत बंकिम

ऋषि कहे जाते हैं। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का शंखनाद करनेवाले तिलक, 'भगवान्' पदवी से प्रख्यात हुए।

कम्बर्-काव्य को, विद्वान् १२०० वर्ष पूर्व तक ले जाते है। तब से तमिळ का यह जीवन्त अद्भुत महाकाव्य, जनता और विद्वानों, सभी में शीर्षस्थ सम्मान-प्राप्त है। और आज १२०० वर्षों के बाद, वह नागरी लिपि का नव-कलेवर धारण कर, न केवल अखिल राष्ट्र, वरन् विश्व में भारतीय वाङ्मय की छटा बिखेरने जा रहा है। हम गौरवान्वित हैं, आत्मविभोर हैं, उस युगपुरुष के लिए नत-मस्तक है। कम्ब को 'महर्षि' सम्बोधित करने के लिए और चाहिए क्या? प्रत्येक खण्ड के प्रकाशन के समय वे हमारे लिए स्मरणीय है।

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का १०१६ पृष्ठों का तृतीय खण्ड प्रस्तुत है। शेष दो खण्ड लगभग, २५०० पृष्ठों में, शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं। युद्धकाण्ड पूर्वार्ध और युद्धकाण्ड उत्तरार्ध। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान्, और शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते है।

प्रस्तुत 'सानुवाद लिप्यन्तरण' के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। केन्द्रीय राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को इस ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, और राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। यही है हमारा आभार-प्रदर्शन।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—३

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त

(तमिऴ) वर्णमाला का नागरी-रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यन्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८० की निदेशालय की बैठक मे, जिसमे मै भी सम्मिलित था, 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही को ग्रहण किया गया।

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं। तमिऴ में ए और ओ के ह्रस्व और दीर्घ स्वरों (मात्राओं) को भिन्न रूप में लिखा जाता है। नागरी लिपि में उनका रूप ॆ ॊ ; े ो हैं।

तमिऴ-देवनागरी वर्णमाला

அ अ க	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ,ऴ	ள ळ
ற ऱ,ऱ	ன ऩ,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

तमिऴ उच्चारण—कुछ तत्त्व

[तमिऴ के व्यञ्जनों में स्थानभेद से, लेखन तथा उच्चारण में अन्तर पड़ जाता है। नागरी लिपि के माध्यम से तमिऴ के पठन में यह एक समस्या है। कम्ब रामायण (बालकाण्ड) की भूमिका में, आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस सम्बन्ध में पृष्ठ २२-२४ में एक विवरण दिया है। पाठकों को तमिऴ के लेखन और उच्चारण में सुविधा प्रदान करने के लिए श्री शेषाद्रि का वह विवरण 'कम्ब रामायण' के प्रत्येक खण्ड में उद्धृत कर देना समुचित होगा:—]

ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२है।

लब्धलिपि	ह्रस्व:—अ इ उ ऍ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)	—	1 मात्रा
	दीर्घ:— आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
	"आय्दम" (उपस्वर)—∴	—	½ मात्रा
अलब्धलिपि	ह्रस्व—ऐ और औ	—	1 मात्रा
	ह्रस्व—उ, ह्रस्व इ	—	½ मात्रा
	ह्रस्व—'आय्दम'	—	¼ मात्रा

नोट:— आय्दम या उपस्वर सस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यतरण मे दोनों सकेतो (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत् पढ़ ले और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर मे और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों मे अ या अय् लिखा गया है। इसमे एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कही-कही सधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियो के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अत: बाद के पदों मे ऐ कै···आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरम्भ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नही होगी।

व्यंजन (शरीराक्षर:) मूल १८ हैं

लब्धलिपि	वल्लॅऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
	मॅल्लॅऴुत्तु —कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
	इडैयॅऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य र ल व ऴ ळ

अलब्धलिपि : ह्, ग, ज, ड, द, ब। ह् और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से यह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट—तमिळ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलंत व्यंजन से शब्द आरम्भ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारम्भ में, द्वित्व में और ट्, ड़् के बाद 'क' ही रह जाता है; जैसे— कण्डु, पाक्कु, उड्गट्कु, कड़्क।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है; जैसे— काहम्।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा : चङ्कम् —शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ड़्, ट् के बाद च ही रहता है। उदाहरण : अच्चु, पॉड़्चटै, वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद— संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है; जैसे— कोसलै।
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम्— मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम्।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है; जैसे— तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है— शन्दम्, परदन्, मोदल्।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ड़् के बाद यह 'प' ही है। उदा : पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पॉड़्पु। अन्यत्र यह 'ब' के समान ध्वनित है।

विशेष: न् आदि के बाद यह कभी-कभी प, ब दोनों से पृथक्, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

ऩ— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण-भेद नहीं के बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में ऩ नहीं आता। न शब्द के

मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्य ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारम्भ में नहीं आता। तमिऴ में अ, इ या उ मिलाकर कहते है; जैसे— अरङ्गन्, इरामन् उरुत्तिरन्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारम्भ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है, तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण : अरम्— रेती; अऱम्—धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ऱ और ऩ के समान तमिऴ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रन्थाक्षर का ईजाद हुआ। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे; जैसे— निन्पॅरुव् को निन्बॅरुव् पढ़ना चाहिए, पर निन्पॅरुव् पाया जायगा, तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर ज़ोर देने के लिए अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी गल्ती हो जाने की सम्भावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखण्ड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिऴ में छन्द-रचना की विशेषता है। तमिऴ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते है और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत् मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक़्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

विषय-सूची

किष्किधाकाण्ड

7 वालि-वध पटल 138-213

श्रीराम आदि के मार्ग व मार्गगमन का वर्णन; सुग्रीव का ललकारना; वाली का क्रुद्ध होना; वाली-तारा संवाद; वाली का लड़ने आना; श्रीराम और लक्ष्मण का वाली के शान और सुग्रीव के भ्रातृविरोध को लेकर आपस में बात करना; सुग्रीव-वाली-युद्ध; श्रीराघव का वाली पर अस्त्र चलाना; वाली का विस्मय और खीझ; वाली का अस्त्र को वक्ष से निकालना और श्रीराम का नाम देखना; वाली का अपना श्रीराम पर विश्वास झूठा हो जाने से शरम, दुःख और क्रोध का अनुभव करना; श्रीराम का वाली के समक्ष आना; वाली का श्रीराम की निन्दा करना; श्रीराम का वाली के प्रश्नों का उत्तर देना; वाली का समाधान कहना; श्रीराम का वाली की मान्यताओं का खण्डन करना; वाली का और प्रश्न करना; लक्ष्मण का उत्तर देना; वाली का ज्ञान पाना; वाली का श्रीराम की स्तुति करना और सुग्रीव को उनके अधीन सौंप देना; वाली का हनुमान की प्रशंसा करना; अंगद का वाली को देखकर विलाप करना; वाली का आश्वासन; अंगद को श्रीराम के हाथ में सौंपना; वाली की परमपदयात्रा; तारा का आना और रोना; हनुमान का तारा को महल में पहुँचाना और वाली का दाहकर्म आदि करवाना।

8 शासन-शास्त्र पटल 213-227

श्रीराम का लक्ष्मण को सुग्रीवाभिषेक की आज्ञा देना; हनुमान का सामग्री इकट्ठी कर लाना; अभिषेक; श्रीराम का सुग्रीव को शासन-शास्त्रोपदेश देना; सुग्रीव का श्रीराम को नगर में वास करने का निमन्त्रण देना और श्रीराम का अस्वीकार करना; श्रीराम का तपस्यानिमित्त प्रश्रवणपर्वत पर जाने का संकल्प; सुग्रीव का नगर में जाना; अंगद का श्रीराम की सलाह लेकर नगर जाना; हनुमान का श्रीराम की सेवा में रहने की अनुमति माँगना; श्रीराम का न मानना; सुग्रीव का शासन।

9 वर्षाकाल पटल 227-278

वर्षा का वर्णन; वर्षाकाल का प्रकृतिवर्णन; श्रीराम का विरह-दुःख; श्रीलक्ष्मण का श्रीराम को धीरज बँधाना; श्रीराम का किंचित् धैर्यावलम्बन; फिर से पिछली वर्षा का (शरद का) वर्णन; श्रीराम का विरह-विलाप; श्रीलक्ष्मण का उत्तर; शरद का अन्त और प्रकृति-वर्णन।

10 किष्किंधा पटल 278-332

श्रीराम का कोप करके लक्ष्मण को किष्किंधा भेजना; श्रीलक्ष्मण का अपना अलग मार्ग पकड़कर जाना; उनकी गति का वर्णन; उनका किष्किंधा पहुँचना; अंगद का, वानरों द्वारा लक्ष्मण का आगमन जानकर सुग्रीव के पास जाना; सुग्रीव की स्थिति का वर्णन; अंगद का सुग्रीव को जगाना और सुग्रीव का बेसुध रहना; अंगद का हनुमान के पास जाना; दोनों का तारा के पास जाना; तारा का उनको आड़े हाथों लेना; वानरों का कपाट बन्द करना; श्रीलक्ष्मण का कोप और कपाट तोड़कर अन्दर आना; तारा का स्त्रियों-सहित लक्ष्मण के रास्ते में आना; लक्ष्मण का दुःख; तारा-लक्ष्मण-संवाद; लक्ष्मण का शान्त होना और हनुमान का आना; लक्ष्मण का प्रश्न करना और हनुमान का समाधान; लक्ष्मण का कोप छोड़कर सुग्रीव का दोष बताना; हनुमान का उन्हें सुग्रीव के पास ले जाना; अंगद का सुग्रीव से लक्ष्मण के क्रोध के साथ आगमन का समाचार देना; सुग्रीव का जागकर उसी पर दोष लगाना;

सुन्दरकाण्ड

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

किष्किन्दा काण्डम्

कडवुळ् वाऴ्त्तु (ईश्वर वन्दना)

❀ मूऩ्ऱुरु वॅऩक्कुण मुम्मै यामुदल्, तोऩ्ऱुरु वॆवैयुमम् मुदलैच् चॊल्लुदऱ्
केऩ्ऱुरु वमैन्दवु मिडैयि निऩ्ऱवुम्, शाऩ्ऱुरु वुणर्विऩुक् कुवन्द दायिनाऩ् 1

मुतल्–परमात्मा; मुम्मै कुणम् आम्–तीन गुणों के; मूऩ्ऱु उरु अॅऩ–तीन देव हैं, जैसे; तोऩ्ऱु उरु अॅवैयुम्–व्यक्त सभी रूप; अ मुतलै चॊल्लुतऱ्कु–उस परब्रह्म को कहने के लिए; एऩ्ऱु उरु अमैन्तवुम्–योग्य रूप जिनके हैं, वे; इटैयिल् निऩ्ऱवुम्–मध्य में स्थित जो हैं, वे; चाऩ्ऱु उरु–उन सबके साक्ष्य (श्रीराम) उणर्विऩुक्कु–हमारी अनुभूति के लिए; उवन्तु आयिऩाऩ्–परम भोग्य बन प्रकट हुए। १

आदि परब्रह्म हमारे ज्ञान के विषय बनकर श्रीराम के रूप में अवतरित हुए। वे तीन गुणों के त्रिदेव, सृष्टि के सारे जीव, पदार्थ आदि, परब्रह्म के द्योतक अर्चावतार और उनके मध्य पाये जानेवाले जीवन्मुक्त लोग इन सभी के साक्षी रूप रहनेवाले हैं। तात्पर्य यह कि ये सब परब्रह्म के ही रूप हैं। वैष्णव मत के अनुसार ये सब परब्रह्म श्रीमन्नारायण के शरीर हैं और वे सर्वशरीरी हैं। १

1. पम्बैप् पडलम् (पम्पा पटल)

तेऩ्बडि मलरदु शॆङ्गण् वॆङ्गैमा, ताऩ्बडि हिऩ्ऱदु तॆळिवु शाऩ्ऱदु
मीऩ्बडि मेहमुम् बडिन्दवोङ्गुनीर्, वाऩ्बडिन् दुलहिडैक् किडन्द माण्बदु 2

तेऩ् पटि मलरतु–(वह सर ऐसा–) भ्रमरावृत पुष्पों का; चॆम् कण्–लाल आँखों के और; वॆम्–डरावने; कै मा–करि; पटिकिऩ्ऱतु–गोते लगाते हैं, जिसमें; तॆळिवु चाऩ्ऱतु–स्वच्छता के साथ है; मीऩ् पटि–नक्षत्रसहित; मेकमुम् पटिन्त–मेघों से युक्त; वोङ्कु नीर् वाऩ्–अधिक जल के साथ आकाश ही; उलकु इटै–पृथ्वी पर; पटिन्तु किटन्त–पड़ा रहता हो; माण्पतु–ऐसा विलक्षण है। २

पम्पा सर का वर्णन किया जाता है। सर प्राकृतिक बड़ा तालाब है। वह सर ऐसे पुष्पों से भरा है, जिन पर (शहद या) भ्रमरकुल रहता है; जिसमें लाल आँखों वाले डरावने करि आकर नहाते हैं। वह ऐसा दृश्यमान है, मानो नक्षत्रों और मेघों से अलकृत और विपुल जलराशि से भरा आकाश ही भूमि पर आकर पड़ा हुआ हो। २

ईर्न्दनुण् पळिङ्गॅन्नत् तॅळिन्द वीर्म्बुन्नल्
पेर्न्दॉळिर् नवमणि पडर्न्द पित्तिहैच्
चेर्न्दुळिच् चेर्न्दुळि निऱत्तैच् चेर्दलान्
ओर्न्दुणर् विल्लव रुळ्ळ मॊप्पदु 3

ईर्न्त–तराशे हुए; नुण् पळिङ्कु–सूक्ष्म रफटिक; ॲन्न–जैसे; तॅळिन्त–स्वच्छ रहनेवाला; ईर्म् पुनल्–(उसका) शीतल जल; पेर्न्तु–(वायु के कारण) चलकर; ऑळिर्–उज्ज्वल; नव मणि पटर्न्त–नवरत्न जिनमें जड़े रहते हैं; पित्तिकै–उन किनारों की भित्तियों पर; चेर्न्तुळि चेर्न्तुळि–जव-जव लगता है, तव; निऱत्तै चेर्तलाल्–उन रंगो से प्रभावित होता है, इसलिए; ओर्न्तु–अनुमान (तर्क आदि) करके; उणरवु इल्लवर्–अनुभवज्ञान जिन्होंने प्राप्त नहीं किया है; उळ्ळम्–उनके मन का; ऑप्पतु–साम्य रखनेवाला है। ३

काट-छाँटकर सुन्दर वनाया गया स्फटिक-सम है उसका जल। वह शीतल जल लहरों के रूप में चलकर नवविध रत्नों से युक्त और जाज्वल्यमान प्राकृतिक तट-भित्तियों से टकराता है। जव-जव वह ऐसा टकराता है, तव वह उन नवरत्नों का प्रतिबिम्ब पाकर रंग-विरंगा लगता है। तव वह उनके मन का सादृश्य करता है, जो अपनी तरफ़ से तर्क, अनुमान आदि करके तत्त्व जान नहीं पाते और दृढ़ धारणा न रहने से सन्देह के कारण जिनके मन का रंग वदलता रहता है। ३

कुवान्मणऱ् ऱडन्दॊऱुम् पवळक् कॊम्बिवर्
कवानर शन्नमुम् पॅडैयुङ् गाण्डलिल्
तवानॆडु वानहन् दयङ्गु मीनॊडुम्
उवामदि युलप्पिल वुदित्त वॊत्तदु 4

कुवाल्–लगे हुए; मणल् तटम् तॊऱुम्–वालू के ढेर-ढेर पर; पवळम् कॊम्पु–प्रवाल-लता पर; इवर्–रहते जैसे; कवान्–पैरों वाले; अरचु अन्नमुम्–राजहंस; पॅटैयुम्–और हंसिनियाँ; काण्टलिन्–दिखाई देते हैं, इसलिए; तवा नॆटु वानकम्–अक्षय विस्तृत आकाश में; तयङ्कुम् मीन् ओटुम्–विद्यमान उडुओं के साथ; उवा मति–पूर्णचन्द्र; उलप्पु इल–असंख्यक; उतित्त ऑत्ततु–उदित हुए हों, ऐसे लगा। ४

उस सर के मध्य और किनारों पर यत्र-तत्र बालू के टीले देखे जाते है। उन पर अपने लाल पैरों के कारण प्रवाल-लता के समान दिखनेवाले राजहंस और उनकी हंसिनियाँ वैठे रहते है। उससे वह सर ऐसा लगता है, मानो

अक्षय आकाश उज्ज्वल नक्षत्रों के साथ हो और उसमें अनेक पूर्णचन्द्र उदित हुए हों। ४

ओदनी	रुलहमु	मुयिर्हळ्	यावैयुम्
वेदपा	रहरैयुस्	विदिप्प	वेट्टनाळ्
शीदनी	रुवरियैच्	चॅहुक्क	वाङ्गोरु
कादिहा	दलन्ऱरु	कडलि	नन्ऩदु 5

काति कातलन्–गाधिनंदन ने; ओतम् नीर् उलकमुम्–समुद्रजलावृत पृथ्वी; उयिर्कळ् यावैयुम्–(और) सभी जीवों को; वेत पारकरैयुम्–वेदपारगों को; वितिप्प–सृजित करना; वेट्ट नाळ्–(जिस दिन) चाहा उस दिन; चीत नीर् उवरियै–शीतल जल-भरे समुद्रों को; चॅकुक्क–दबाने के लिए (मान घटाने के लिए); आङ्कु–वहाँ; तरु–सृष्ट; और कटलिन् अन्नतु–अन्य एक सागर-जैसा था। ५

गाधितनय विश्वामित्र ने एक बार समुद्रों से घिरे भुवनों, उनमें सभी तरह के जीवों और वेदपारंगत ब्राह्मणों को अलग से सृष्ट करना चाहा था। यह पम्पा सर उस समुद्र के जैसा लगा, जिसे उस दिन विश्वामित्र ने शीतल जल-भरे समुद्र के मानमर्दन के लिए सरजा था। ५

ॲऴ्पडर्	नाहर्द	मिरुक्कै	यीदॅनक्
किऴ्पदोर्	काट्चिय	दॅतिलुङ्	गेऴुऱक्
कऴ्पह	मनैयवक्	कविञर्	काट्टिय
शॊऴ्पॊरु	ळामॅनत्	तोन्ऱु	हिन्ऱदु 6

नाकर् तम्–नागों का; ॲल् पटर्–प्रकाश से भरा; इरुक्कै–वासस्थान (पाताललोक); ईतु ॲन–यह है, ऐसा; किऴ्पतु–इशारा करता सा; ओर् काट्चियतु–दृश्यमान है; ॲतिलुम्–तो भी; केऴ् उऱ–छवि के साथ; कऴ्पकम् अनैय–कल्पतरु के समान; कविञर् काट्टिय–कवियों द्वारा दर्शित; चॊल् पॊरुळ् आम्–शब्दों के अर्थगाम्भीर्य के ही; ॲन–समान; तोन्ऱुकिन्ऱतु–दिखाई देता है। ६

'नागों का प्रकाशमय लोक यही है' —ऐसा इंगित कर रहा हो, ऐसा दृश्यमान था वह सर। साथ-साथ कल्पतरु के समान (शब्द और अर्थ दोनों की दृष्टि से) कवियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों के प्रकाशमय अर्थों के समान भी दिखता है। नागलोक अनेक रत्नों की राशियों के कारण प्रकाशमय रहता है। वह प्रकाश पम्पा सर के जल में प्रतिबिंबित होता है। इसलिए वह सर ऐसा दिखता है, मानो यह संकेत करता हो कि यही नागलोक है। वह सर बहुत गहरा है और उसका जल स्वच्छ है। कवि के शब्द कल्पतरु से उपमित हैं क्योंकि दोनों वांछित और अधिक अर्थ दे सकते हैं। ६

कळनवि	लन्ऩमे	नुदल	कण्णहन्
तळमलर्प	पुळ्ळॊलि	तळङ्गि	यिन्नदोर्

किळवियॆऩ् इऱिवरुङ् गिळर्च्चित् तादलिऩ्
वळनहर्क् कूलमे पोलु माण्बदु 7

कळम् नविल्–मधुर वोलनेवाले; अऩ्ऩम् मुतल–हंस आदि; कण् अकल्–विशाल; तळ मलर्–दलयुक्त कमलपुष्पों पर रहनेवाले; पुळ् ऑलि–पक्षियों का कलरव; तळङ्कि–अधिक रहता है; इऩ्ऩतु ओर् किळवि–यह अमुक की ध्वनि है; अऱिवु अरु–यह जानना कठिन है; किळर्च्चितु–ऐसा कोलाहलमय है; आतलिऩ्–इसलिए; वळ नकर्–समृद्ध नगर की; कूलमे पोलुम्–पण्यवीथी जैसे; माण्पतु–विलक्षण है। ७

विशाल दलसंकुल कमलपुष्पों पर हंस आदि पक्षी कलरव करते हुए रहते है। उनमें कौन से पक्षी क्या बोलते है, यह समझा नहीं जाता। ऐसी अधिक और मिश्रित ध्वनि के कारण वह सर किसी बड़े नगर के बाजार के समान लगता है। ७

अरिमलर्प् पङ्गयत् तऩ्ऩ मॆङ्गणुम्
पुरिहुळल् पुक्किडम् पुहल्हि लादयाम्
तिरुमुह नोक्कलॆं मिऱऩ्दु तीर्दुमॆऩ्
ऱॆरिपुहु वऩ्ऩॆऩत् तोऩ्ऱु मीट्टदु 8

ऎङ्कणुम्–सर्वत्र; अरि मलर्–लाल लकीरों से युक्त; पङ्कयत्तु–कमलपुष्पों पर रहते हुए; अऩ्ऩम्–मराल; पुरि कुळल्–सँवारकर बँधे हुए केश वाली सीताजी का; पुक्किटम्–प्रवेशस्थल; पुकल्किलात–न (जान) कहनेवाले; याम्–हम; तिरुमुकम् नोक्कलॆम्–(श्रीराम का) श्रीमुख नही देखेंगे; इऱन्तु तीर्तुम्–मर मिटेंगे; ऎऩ्ऱु–यह निश्चय करके; ऎरि पुकुवऩ ऎऩ–अग्निप्रवेश करते हों जैसे; तोऩ्ऱुम्–दिखते हैं; ईट्टतु–वह सर ऐसा है। ८

उस सर में सर्वत्र लाल कमलपुष्पों का घना समूह है। उन कमलों के मध्य हंस पक्षी पाये जाते है। उनको देखने पर ऐसा लगता है कि वे हंस आग में प्रवेश कर रहे हों! क्यों? उनके मन में (शायद) यह विचार है— (मेढ़ी मे) गूँधकर गाँठ के रूप में बँधी चोटी से अलंकृत सीताजी के रहने का स्थान हम नहीं जानते, इसलिए श्रीराम से बता भी नहीं सकते। ऐसे हम श्रीराम का मुख नही देखेंगे और आग में घुसकर अपनी जान त्याग लेंगे। ८

काशडै विळङ्गिय काट्चित् तायिऩुम्
माशडै पेदैमै यिडैम यक्कलाल्
आशडै नल्लुणर् वनैय दामॆऩप्
पाशडै वयिऩ्ऱॊरुम् परन्द पण्बदु 9

माचु अटै–दोषयुक्त; पेतैमै–अज्ञता; इटै मयक्कलाल्–मध्य में आकर मोह में डाल लेती है, इसलिए; आचु अटै–दोषपूर्ण हो जानेवाले; नल् उणर्वु अतैय–उत्तम ज्ञान के समान; काचु अटै विळङ्किय–रत्नोंसहित उज्ज्वल होकर; काट्चितु

आयितुम्–दृश्यमान होने पर भी; वयित् तोऱुम्–स्थल-स्थल पर; पाचटै परन्त–काई फैली थी; पण्पतु–ऐसा विशिष्टतायुक्त था वह। ९

मोती, रत्न आदि उस सर के तल में पड़े थे। जल की स्वच्छता के कारण वे बाहर दिखाई दे रहे थे। ऐसे दृश्य होने पर भी कहीं-कहीं काई, सेवार आदि के कारण जल ढका हुआ था और मोती, रत्न आदि अदृश्य रहे। वह दृश्य उस ज्ञान के समान लगा, जो अज्ञान के कारण मोहाच्छादित हो जाता हो। ९

कळिप्पडा मनत्तवन् काणिर् कऱ्पॅनुम्
किळिप्पडा मॊऴियवळ् विऴियिन् केळॅन्नत्
तुळिप्पडा नयनङ्ग डुळिप्पच् चोरुमॅन्
ऱॊळिप्पडा दायिडै यॊळिक्कु मीन्नदु 10

कळि पटा–आनन्द जिसमें नहीं रहता; मनत्तवन्–उस मन के श्रीराम; काणिल्–हमें देखेंगे तो; कऱ्पु ॲनुम्–मूर्तिमान पातिव्रत्य; किळि पटा–शुक में भी अप्राप्य; मॊऴि अवळ्–(मधुर-)भाषिणी उन (सीता) की; विऴियिन् केळ् ॲन्न–आँखों का बन्धु समझकर; तुळि पटा–कभी (अश्रु-)कण जिनमें न पड़े थे; नयनङ्कळ् तुळिप्प–उन नेत्रों में आँसू की बूँदें ढलकाते हुए; चोरुम्–दुःखी होंगे; ॲन्ऱु–सोचकर; ऑळि पटातु–रूप व्यक्त नहीं करते हुए; अ इटै–उस सर में; ऑळिक्कुम्–अपने को छिपा लेनेवाली; मीन्नतु–मछलियों से युक्त है (वह सर)। १०

उस सर में मछलियाँ रहीं पर वे छिपी रहीं। उसका कारण क्या था? शायद उनको यही भय था कि श्रीराम आनन्दरहित मन के हैं। उनकी दृष्टि हम पर पड़ेगी तो उन्हें पातिव्रत्य की मूर्ति, शुक में भी अप्राप्य (मधुर) भाषण वाली सीताजी की आँखें स्मरण हो आयेंगी और अपनी आँखों से जो कभी अश्रु बहाने के आदी नहीं हैं, वे आँसू बहाते हुए शिथिल पड़ जायँगे। ऐसे मीनों से भरा हुआ वह सर था। १०

कळैपडु मुत्तमुङ् गलुऴिक् कार्मद
मऴैपडु तरळमु मणियुम् वारिनेर्
इऴैपडर्न् दनैयनी ररुवि यॆय्दलान्
कुऴैपडु मुहत्तियर् कोलम् बोल्वदु 11

कळै पटु–बाँसों में उत्पन्न; मुत्तमुम्–मोतियों; कलुऴि–पंकिल; कार् मत मऴै–काले मद-नीर से युक्त मेघों (गजों) से; पटु–प्राप्य; तरळमुम्–मोतियों को और; मणियुम्–अनेक रत्नों को; वारि–बटोर लेकर; नेरिऴै पटर्न्ततु–सुन्दर आभरण-भूषित; नीर् अरुवि–सरिता-जल; ऍय्तलाल्–आया है, इसलिए; कुऴै पटु मुकत्तियर्–कुण्डलधारिणी मुखों की स्त्रियों के; कोलम् पोल्वतु–सौंदर्य के समान सौंदर्य रखनेवाला है वह सर। ११

वह सर कर्णकुण्डलधारिणी सुन्दरियों का-सा सौन्दर्य रखता था, क्योंकि उसमें बाँसों से उत्पन्न मोती, पंकिल मदनीर वाले मत्तगजों से उत्पन्न मोती और अनेक प्रकार के रत्न, इनको वहा लेती आकर सरिताएँ उससे मिलती थीं। ११

पॉङ्गुवॅङ्	गडहरि	पॉदुळि	याडलिऩ्
कङ्गुलि	ऩॅदिर्पॉरु	कलविप्	पूशलिल्
अङ्गनॉन्	दलशिय	विलैयि	ऩाय्वळै
मङ्गैयर्	वडिवॅऩ	वरुन्दु	मॅय्यदु 12

पॉङ्कु–उमग उठनेवाला; वॆम् कट–उष्ण मदनीर वाले; करि–मातंग; पॉतुळि आटलिऩ्–गोते लगाते हैं, इसलिए; कङ्कुलिऩ्–रात के समय में; ऍतिर् पॉरु–सामने से आलिंगन के; कलवि पूचलिल्–संभोग-समर में; अङ्कम् नॉन्तु–अंगों में शिथिल पड़कर; अलचिय–थकित हुई; आय् वळै–चुने हुए कंकणभूषित; विलैयिऩ् मङ्कैयर्–वेश्याओं का; वटिवु ऍऩ–शरीर के समान; वरुन्तुम्–कष्ट उठानेवाले; मॅय्यतु–शरीर का है। १२

उस सर में उष्ण मदस्रावी गज गोते लगाते हैं। उससे वह सर उन आभरणभूषिता वेश्याओं के शरीर के समान थकित अंगों का हो जाता है, जो रात के समय सामने प्राप्त संभोग-समर में अपने शरीर की शक्ति खोकर श्रांत हो रहती हैं। १२

विण्डॉडु	नॅडुवरैत्	तेऩुम्	वेऴत्तिऩ्
वण्डुळर्	नरुमद	मऴैयु	मण्डलाल्
उण्डवर्	पॅरुङ्गळि	युऱ्ऱलि	ऩोदियर्
तॉण्डैयङ्	गऩियिदऴ्त्	तुप्पिऱ्	चाऩ्ऱदु 13

विण् तॊट्टु–आकाशस्पर्शी; नॆटु वरै–उन्नत पर्वतों से झरनेवाला; तेऩुम्–शहद; वेऴत्तिऩ्–गजों का; वण्टु उळर्–भ्रमर जिसमें पैठकर चूसते हैं; नऱु मत मऴैयुम्–सुगन्धित मद-वारि; मण्टलाल्–आकर मिलते हैं, इसलिए; उण्टवर्–(उस सर के जल को) पीनेवाले; पॆरुम् कळि उऱ्ऱलिऩ्–बहुत आनन्दयुक्त होते हैं, इसलिए; ओतियर्–रमणियों के; तॊण्टै अम् कऩि इतऴ्–बिम्बफल-सम अधरों के; तुप्पिल् चाऩ्ऱतु–(अमृत) पान के समान है। १३

गगनस्पर्शी और बड़े पर्वतों से शहद की धारा आती है। मत्तगजों के भ्रमराकुलित और सुगन्धित दान की धारा आती है। वे धाराएँ आकर उस सर में मिल जाती हैं। उस सर का जल पीने से लोग मदमत्त हो जाते हैं। इसलिए वह सर सुकेशिनी बिम्बाधरा स्त्रियों के अधरों की समानता करता है (और जल अधर-मधु की)। १३

आरिय	मुदलिय	पदिऩॆण्	पाडैयिल्
पूरिय	रॊरुवऴि	पुहुन्द	पोऩ्ऱऩ

ओर्विल किळविह ळोंनुरों डोप्पिल
शोर्विल विळम्बुपुट् टुवन्रु हिन्रद्दु 14

आरियम् मुतलिय–संस्कृत आदि; पतिन् अण् पाटैयिल्–अठारह भाषाओं के; पूरियर्–अल्पज्ञ लोग; ओरु वळि–एक स्थान पर; पुकुन्त पोन्रत–मिलकर शोर मचाते जैसे; ओर्वु इल–स्वच्छ नहीं हैं; किळविकळ्–शब्द; ओन्रोट्ट ओप्पु इल–परस्पर सम नहीं; चोर्वु इल–दुर्बल नहीं हैं; विळम्पु–(ऐसे) बोलनेवाले; पुळ्–पंक्षीगणों से; तुवन्रुकिन्रतु–भरा है। १४

आर्य (संस्कृत) आदि अठारह भाषाओं के अपढ़ बोलनेवाले एक स्थान पर इकट्ठे हो गये हों, ऐसे, अस्पष्ट और परस्पर विपरीत और अथक रूप से बोलनेवाले पक्षीगणों से पूर्ण है (वह सर)। १४

तानुयि रुडत्तन्नित् तळुवुम् पेडैयै
ऊनुयिर् पिरिन्दॅन्प् पिरिन्द वोदिमम्
वानर महळिर्तम् वयङ्गु नूपुरत्
तेनुहु मळलैयैच् चेवियि नोर्प्पद्दु 15

तान् उयिर् उड–अपने प्राणों के साथ; तन्नि तळुवुम्–खूब आलिंगन करनेवाली; पेंटैयै–हंसिनी को; उयिर् ऊन् पिरिन्ततु अँन–प्राण शरीर को छोड़ गये हों जैसे; पिरिन्त ओतिमम्–अलग जो गया वह हंस; वान् अर मकळिर् तम्–आकाशलोक की सुरबालाओं की; वयङ्कु–मनोरम; नूपुर तेन् उकु–नूपुरों की शहद-सी उठनेवाली; मळलैयै–मधुर, तुतली-सी बोली को; चॅवियिन् ओर्प्पतु–अपने कानों से सुनते हैं, ऐसा है वह सर। १५

उस सर में व्योमराज्य की अंगनाएँ आकर स्नान कर रही हैं। उनकी बोलियाँ उनके नूपुरों की ध्वनि ही के समान मनोरम हैं। हंस उन मधुर बोलियों को कान देकर सुनते हैं। कौन हंस ? वे हंस, जो अपनी हंसिनियों से शरीर त्यागकर जानेवाले प्राणों के समान छोड़ अलग हुए हैं। कैसी हंसिनियाँ ? वे हंसिनियाँ, जो इन हंसों के साथ इस तरह पाश-बद्ध रहीं, मानो प्राणों से प्राण लगाकर अपूर्व रीति से आलिंगन कर रही थीं। १५

ईरिड लरियमाल् वरैनिन् रीर्त्तिळि
आरिडु विरैयहि लार मादिया
ऊरिड वीणणह रुरैत्त वॅण्डळच्
चेरिडु परणियिर् रिहळ्न् देशदु 16

ईरु इटल्–अन्त निर्धारित करना; अरिय–(जिसका) कठिन है; माल् वरै निन्रु–बड़े पर्वत से; ईर्त्तु इळि–बहाते हुए नीचे बहनेवाली; आरु इट्टु–नदियों द्वारा लाकर डाले हुए; विरै अकिल्–सुगन्धित अगरु; आरम् आतिया–चन्दन के काठ आदि; ऊरिट–पड़े घुलते रहते है, इसलिए; ओळ् नकर्–श्रेष्ठ नगर में लोगों द्वारा;

उरत्त-पीसकर; वॆण् तळ चेङ्-सफ़ेद चन्दन का लेप; इट्टु-जिसमें रखा गया हो; परणियिल्-उस पात्र के समान; तिकऴुम्-मनोरम रहनेवाले; तेचतु-सौंदर्य का (है वह सर)। १६

अपरिमित बड़े पर्वत से नदियाँ सुगन्धित अगरु, चन्दन आदि की लकड़ियाँ बहा ले आयी और वे उस सर में पड़ी घुली रहीं। तब वह सर श्रेष्ठ नगरवासियों के द्वारा घिसकर तैयार किये हुए चन्दनलेप के पात्र के समान दिखा। १६

नव्वि नोक्किय रिदऴ्निहर् कुमुदत्ति नरुन्देन्
वव्वि मान्दलिन् कळिमयक् कुरुवन महरम्
अॆव्व मोङ्गिय विऱप्पॊडु पिऱप्पिवै यॆन्नक्
कव्वु मीनॊडु मुऴुहिन वॆऴुवन करण्डम् 17

मकरम्-मकर; नव्वि नोक्कियर्-मृगाक्षियों के; इतऴ् निकर्-अधरों के समान; कुमुतत्तिन्-कुमुदपुष्पों के; नऱुम् तेन्-सुवासपूर्ण मधु को; वव्वि मान्तलिन्-लेकर पीते हैं, इसलिए; कळि मयक्कु-सुरापायी-प्राप्य नशा; उऱुवन-प्राप्त करते हैं; अॆव्वम् ओङ्किय-दुःखप्रवृद्ध; इऱप्पु ओटु पिऱप्पु-मरण और जन्म; इवै अॆन्न-ऐसे हैं, इसका संकेत करते-से; कव्वु मीन् ऒटु-अपने द्वारा ग्रस्त मछलियों के साथ; करण्टम्-करंड; मुऴुकिन अॆऴुवन-उस (सर के) जल में डूबते हैं, उतराते हैं। १७

उसमें मकर थे। मृगनयनी सुन्दरियों के अधरों के समान जो उस सर में कुमुद-कुसुम थे, उनसे सुगन्धपूर्ण शहद रिसता रहा। उसको पीकर वे मकर सुरापायी के-से नशे में रहे। उसमें करंड पक्षी मछलियाँ पकड़ते रहे। उन मछलियों के साथ वे कभी जल के अन्दर घुसते, कभी बाहर निकलते। उसे देखकर ऐसा लगा मानो वे, दुःखबहुल जन्म और मरण का चक्र यही है —यह दरसा रहे हों। १७

कवळ यानैय नार्कनदक् कडिनरुङ् गमलत्
तवळै योहल मावदु शॆय्दुमॆन् ऱरुळित्
तिवळ वन्नङ्ग डिरुनडै काट्टुव शॆङ्गण्
कुवळै काट्टुव दुवरिदऴ् काट्टुव कुमुदम् 18

कवळ यानै-कवलभक्षी गज; अनार्कु-सम (श्रीराम) को; अनृत कटि नऱुम् कमलत्तु अवळै-उस श्रेष्ठ सुगन्धित कमल की (निवासिनी) सीता को; ईकलम्-(ढूंढ़ लाकर) नहीं देते; आवतु चॆय्तुम्-तो भी जितना हो सकेगा, उतना करेंगे; अॆन्ऱु अरुळि-ऐसा कृपा करके; अन्नङ्कळ्-हंस; तिवळ-प्रकट रूप से; तिरु नटै काट्टुव-(सीताजी की-सी) श्रेष्ठ चाल दिखाते हैं; कुवळै-नीलोत्पल; चॆम् कण् काट्टुव-(सीताजी की-सी) लाल आँखें दिखाते हैं; कुमुतम्-(लाल) कुमुद; तुवर् इतऴ् काट्टुव-लाल अधर दिखाते हैं। १८

उसमें हंस चल-फिर रहे थे। वे मानो सीताजी की चाल का श्रीराम को स्मरण दिला रहे थे। उनका विचार था कि हम कवलग्राही गज-सदृश श्रीराम को सुगन्धपूर्ण कमल की निवासिनी श्री सीताजी को ढूँढ़ लाकर दे नहीं पाये। कम से कम उनकी-सी चाल दिखाएँ। उनके मन में कृपा थी। वैसे ही नीलोत्पल के फूलों ने देवी की लाल डोरोंसहित आँखों का और कुमुदों ने लाल अधरों का दृश्य दरसाया। १८

पॅय्ह लन्गळि न्रिलङ्गॊळि मरुङ्गॊडु पिऱ्ळ
वैह लुम्बुन्नल् कुडैबवर् वान्नर महळिर्
शॅय्है यन्न्रङ्ग ळेन्दिय शेडिय रॅन्न्रप्
पॉय्है यन्न्रङ्ग ळेन्दिय पूङ्गॊम्बु पॉलिव 19

पॅय् कलन्नकळिन्–(उतारकर) रखे गये आभरणों से; इलङ्कु ऑळि–निसृत प्रकाश; मरुङ्कु ऑटु पिऱ्ळ–पास के स्थानों से भिन्न छटा देते हैं; वैकलुम–दिनों-दिन; पुन्नल् कुटैपवर्–जल में स्नान करनेवाले; वान् अर मकळिर्–आकाश की अप्सरा स्त्रियों के; चॅयकै अन्नङ्कळ्–कृत्रिम हंसों को; एन्तिय–उठा ले आनेवाली; चेटियर् अन्न–दासियों के समान; पूम् कॊम्पु–पुष्पशाखाएँ; पॉयकै अन्नङ्कळ्–सर के हंसों को; एन्तिय–धारण करती हुई; पॉलिव–शोभायमान हैं। १६

उसमें रोज आकाशलोकवासिनी अप्सराएँ आकर स्नान करती थीं। उनके साथ उनकी दासियाँ आयीं और उनके हाथों में उन अप्सराओं के मनोरंजन के लिए बने कृत्रिम हंस थे। उन अप्सराओं ने अपने आभरण उतारकर वहाँ यत्र-तत्र रखे थे। उनकी कांति वहाँ के पदार्थों से अलग चित्र-विचित्र छटा दिखा रही थी। वहाँ की पुष्पलताएँ अपने ऊपर बैठे हंसों के साथ उन अप्सराओं की चेरियों के समान लगीं, जिनके हाथों में कृत्रिम हंस थे। १९

एलु नीणिळ लिडैयिडै यॅरित्तलिऱ् पडिहम्
पोलुम् वार्पुन्नल् पुहुन्दुळ वामॅन्नप् पॉङ्गि
आलु मीन्गणम् वॅरुवुऱ् वलम्वर वज्जक्
कूल मामरत् तिरुञ्जिऱै पुलर्त्तुव कुरण्डम् 20

एलुम्–युक्त; नीळ् निळल्–लम्बी छायाएँ; इटै इटै–बीच-बीच में; ऍरित्तलिन्–पड़ती हैं, इसलिए; पटिकम् पोलुम् वार् पुन्नल्–स्फटिक-से विस्तृत जलतल में; पुकुन्तुळ आम् ॲन्न–घुसे हों जैसे; आलुम्–क्रीडामग्न; मीन् कणम्–मछलियों के समूह; वॅरुवु उऱ्–डर से; अलम् वर–घबड़ाकर; पॊङ्कि अञ्च–चंचल और कातर होते; कुरण्टम्–(ऐसे) बगुले; कूल मा मरत्तु–तट पर के आम्रतरुओं पर; इरुम् चिऱै–अपने बड़े पंखों को; पुलर्त्तुव–सुखा रहे हैं। २०

उसके किनारों पर पेड़ थे और उन पेड़ों की शाखाओं पर बैठे हुए बक अपने बड़े पक्षों को सुखा रहे थे। उनकी परछाईं उस सर के

स्फटिक-स्वच्छ जल में यत्र-तत्र पड़ती थी। मछलियों ने सोचा कि सचमुच बक घुस गये है। इसलिए वे भयातुर होकर घबड़ाते हुए चकित और थकित हो रहीं। ऐसे दृश्यों का था वह सर। २०

अङ्गोर् बाहत्ति ऩऴ्जऩ्ऩ मणिनिऴ लडैयप्
पङ्गु वेऱदिऱ् पदुमरा हत्तॊळि पायक्
कङ्गु लुम्बह लुम्मॆऩ्ऩप् पॊलिवऩ्ऩ कमलम्
मङ्गै मारत्तुणै मुलैयॆऩ्ऩप् पॊलिवऩ्ऩ वाळम् 21

अङ्कु–वहाँ (उस सर के); ओर् पाकत्तिऩ्–एक भाग में; अऩ्चऩ्ऩमणि–नीली मणियों की; निऴल् अटैय–छटा पड़ती है, तो; वेऱु पङ्कु अतिल्–दूसरे भाग में; पतुमराकत्तिऩ् ऑळि–पद्मराग का प्रकाश; पाय–फैला है; पॊलिवऩ्ऩ कमलम्–(तब) शोभा के साथ विद्यमान कमल; कङ्कुलुम् पकलुम् ऍऩ्ऩ–रात और दिन के (बन्द और खुले कमलों के) रहते हैं और; वाळम्–चक्रवाक; मङ्कै मार्–स्त्रियों के; तुणै मुलै ऍऩ्ऩ–स्तनद्वयों के समान; पॊलिवऩ्ऩ–रूप में शोभते हैं। २१

वहाँ एक भाग में नीलमणियों की कांति पड़ी रही। दूसरी ओर पद्मराग का लाल प्रकाश पड़ा रहा। इसलिए वहाँ के कमल रात और दिन में जैसे क्रमशः बन्द और खिले रहे। (नीलमणियों की काली कांति अँधेरा-भरी रात के समान थी और पद्मराग का प्रकाश धूप के समान।) चक्रवाक पक्षी (देखने में) स्त्रियों के स्तनों के समान लगे। २१

वलिन डत्तिय वाळॆऩ वाळैहळ् पाय
ऑलिन डत्तिय तिरैतॊऱु मुहळ्वन नीर्नाय्
कलिन डक्कळैक् कणुळ रॆऩ्ऩनडङ् गविऩ्ऩप्
पॊलिवु डैत्तॆऩ्ऩत् तेरैहळ् पुहळ्वन्न पोलुम् 22

वलि नटत्तिय–बल के साथ चलायी गयी; वाळ् ऍऩ्ऩ–तलवार के समान; वाळैकळ् पाय–'वाळै' नाम की मछलियाँ झपटती हैं; ऑलि नटत्तिय–ध्वनिपूर्ण; तिरै तॊऱुम्–तरंगों में; कलि नट–मनोरंजक नर्तन करनेवाले; कळै कण्णुळर् ऍऩ्ऩ–बाँस (गाड़कर उस पर) नर्तन दिखानेवाले नटों के समान; नीर् नाय्–जलकूकर; उकळ्वऩ्ऩ–लुढ़कते हैं; नटम् कविऩ्ऩ–और नर्तन का-सा खेल दिखाते हैं और; तेरैकळ्–दादुर; पॊलिवु उटैत्तु ऍऩ्ऩ–(तुम्हारा नाच) श्रेष्ठता से युक्त है, कहकर; पुकळ्वऩ्ऩ पोलुम्–वाहवाही करते से है। २२

(उस सर में कुछ अनोखे दृश्य पाये जाते हैं।) 'वाळै' नाम की मछलियाँ बहुत वेग और शक्ति के साथ चलायी गयी तलवार के समान झपटती थी। तरंगों के मध्य जल-कूकर (एक जलजन्तु) बाँस गाड़कर खेल दिखानेवाले नटों के समान लुढ़क-लुढ़ककर तमाशा दिखा रहे थे। दादुर उनको देखकर वाहवाही दे रहे थे। २२

अन्न दाहिय वहन्बुनर् पॉय्हैयै यणुहिक्
कन्नि यन्नमुङ् गमलमु मुदलिय कण्डान्
तन्नि नीङ्गिय तळिरियर् कुरुहितन् ऱळर्वान्
उन्नु नल्लुणर् वॉडुङ्गिडप् पुलम्बिड लुऱ्ऱान् 23

अन्नतु आकिय–ऐसे (दृश्यों के); अकल् पुनल्–विशाल जल-फैलाव के; पॉय्कैयै–सर के; अणुकि–पास जाकर; कन्नि अन्नमुम्–बालमरालों; कमलमुम्–और कमलों; मुतलिय–आदि (सब) को; कण्टान्–देखकर; तन्निन् नीङ्किय–अपने से अलग जो चली गईं; तळिर् इयर्कु–पल्लवनिभ सीताजी के लिए; उरुकितन्–द्रवीभूत होकर; तळर्वान्–दुखते हुए; उन्नुम् नल् उणर्वु–विवेकी बुद्धि के; ऑटुङ्किट–मन्द पड़ने के कारण; पुलम्पिटल् उऱ्ऱान्–(श्रीराम) विलाप करने लगे। २३

श्रीराम अपने छोटे भाई के साथ ऐसे पम्पा सर पर आये। उसमें रहनेवाले बाल-मरालों और कमलों को देखा। उन्हें उनसे बिछुड़ी पल्लव-निभ सीताजी का स्मरण सताने लगा। उनका मन द्रवीभूत हो गया। दुःख के कारण धैर्य, बुद्धि भी मन्द पड़ गयी। तब वे यों विलाप करने लगे। २३

वरियार् मणिक्काल् वरालिनमे सडवन् नङ्गा ळॅन्नैनीङ्गित्
तरिया नडैया ळिलळालॅङ् ड्रन्द वेदुन् दहवेयाल्
ॲरिया निन्ड्र वारुयिरुक् किरङ्गि नाली दिशैयन्ड्रो
पिरिया दिरुन्दीर्क् कॊरुमाड्रम् पेशिर् पूशल् पॅरिदामो 24

वरि आर्–लकीरों से युक्त; मणि काल्–सुन्दर पैरों (रूपी डैनों) से युक्त; वराल् इनमे–'वराल' मछलियों के समूह; मट अन्नङ्काळ्–बालमराल; ॲन्नै नीङ्कि–मुझे छोड़कर; तरिया–अलग जी नहीं सकतीं; नटैयाळ्–ऐसे स्वभाव की; इलळ्–(सीता मेरे साथ अब) नहीं है; ॲन् तन्त–मेरे लिए दिया गया सन्देश; एतुम्–कोई; तकवे–अच्छा होगा; ॲरिया निन्ऱ–जलनेवाले; आर् उयिर्क्कु–मेरे प्यारे प्राणों के लिए; इरङ्किताल्–सहानुभूति करेंगे तो; ईतु–यह; इचै अन्ऱो–(तुम्हारे लिए) प्रशंसा का विषय होगा न; पिरियातु–अवियुक्त; इरुन्तीर्क्कु–जो रहते हो, उन तुमको; ऑरु माऱ्ऱम् पेचिल्–(उसके सम्बन्ध में) एक बात कहना; पूचल्–टंटा; पॅरितु–बड़ा; आमो–हो जायगा क्या। २४

रेखाओं से युक्त डैनों वाली हे 'वराल' मछलियो! हंसो! अब सीताजी मेरे पास नहीं रहतीं। उनका स्वभाव ऐसा है कि वे मुझे छोड़कर अलग जीवित नहीं रह सकतीं। उसने तुम्हारे पास कुछ भी कहा हो तो वह मुझसे कह दो। यही उचित होगा। मेरे प्राण उसके विना जल रहे हैं। दया करके यह सहायता करोगे तो वह तुम्हारी कीर्ति का हेतु बनेगा। तुम तो नर-मादा अपृथक् रहते हो। कुछ मुझे बताओगे तो टंटा बढ़ जायगा क्या? । २४

वण्ण नऱुन्दा मरैमलरुम् वाशक् कुवळै नाण्मलरुम्
पुण्णि नॅरियु मोरुनॅञ्जम् बॊदियु मरुन्दिऱ् ड्ररुम्बॊयूहाय्
कण्णु मुहमुङ् गाट्टुवाय् वडिवु मॊरुहाऱ् काट्टायो
ऒण्णु मॅन्निन ऩ:(ह्)दुदवा दुलोवि ऩाऱु मुयरुन्दारो 25

वण्ण नरुम्–सुन्दर और सुवासित; तामरै मलरुम्–कमलपुष्प; वाच नाळ् कुवळै मलरुम्–सुवासित और तत्कालविकसित कुवलयपुष्प; पुण्णित् ॲरियुम्–व्रण के समान जलनयुक्त; ऒरु नॅञ्चम्–(मेरे) एक मन में; पॊतियुम् मरुन्तिल्–घाव पर लिपे मलहम के समान; तरुम्–दरसानेवाले; पॊय्काय्–हे सर; कण्णुम् मुकमुम्–आँखें और मुख; काट्टुवाय्–दिखाते हो; वटिवुम्–सारा रूप; ऒरु काल्–एक वार; काट्टायो–नहीं दिखाओगे क्या; ऒण्णुम् ॲन्निल्–हो सकता है तो; अ.·.तु उतवातु–(जो दे सकते हैं) उसको न देकर; उलोविन्नारुम्–लोभ दिखानेवाले भी; उयर्न्तारो–श्रेष्ठ वन सकेंगे क्या (वन नहीं सकेंगे)। २५

हे सर ! मेरा मन व्रण से जल रहा है। तुम सुन्दर और सुवासपूर्ण कमलकुसुमों और सुवासित और नवविकसित नीलोत्पल के फूलों को दिखा रहे हो और वह मेरे मन पर मलहम का काम दे रहा है ! तुम इस तरह सीताजी की आँखों और मुख को दरसा रहे हो ! क्या उसका सारा रूप नही दिखाओगे एक वार ? हो सकता है तो दिखाने की दया करो। वह न करके लोभ दिखाओगे तो लोभी भी उत्कृष्ट हो सकते हैं क्या ? । २५

विरिन्द कुवळै चेदाम्बल् विरैमॅन् कमलङ् गॊडिवळ्ळै
तरङ्ग नॅरुङ्गु वरालामै यॅन्ऱित् तहैय तमैनोक्कि
मरुन्दि नन्नैया ळवयवङ्ग ळवैनिऱ् कण्डेन् वल्लरक्कन्
अरुन्दि यहल्वान् शिन्दिन्नवो वावि युरैत्ति यामन्ऱे 26

विरिन्त कुवळै–विकसित नील कुवलय; चॅम्मै आम्पल्–लाल कुमुद; विरै मॅल् कमलम्–वासपूर्ण कोमल कमल; कॊटि वळ्ळै–'वळ्ळै' नाम की लता; तरङ्कम् नॅरुङ्कु–तरंगों के बीच पास-पास संचार करनेवाले; वराल्–'वराल' नामक मीन; आमै–कछुए; ॲन्ऱु इ तकैय तमै–इस प्रकार के जीवों को (देखकर); वावि–हे सर; मरुन्तिन् अन्नैयाळ्–देवामृत के समान सीता के; अवयवङ्कळ्–अंगों को; निन्न् कण्टेन्–तुम्हारे पास देखता हूँ; वल् अरक्कन्–वली राक्षस (रावण); अरुन्ति अकल्वान्–उसको खाकर जो गया; चिन्तिन्नवो–तव विथुर गये, क्या ये; उरैत्ति–वताओ। २६

श्रीराम ने विकसित नीलोत्पल के फूलों को, लाल कुमुदों को और सुन्दर सुवासित कोमल कमलो को देखा। 'वळ्ळै' नाम की लता देखी, जिसके पत्ते मनुष्य के कानों के आकार के लगते है। लहरों के मध्य 'वराल' मछलियाँ और कछुए भी दिखाई दिये। (तो उन्हें क्रमशः सीता की आँखें, अधर, मुख, कान, पिंडली, उत्चरण आदि स्मरण हो आ गये।) उन्होंने सर से कहा कि हे सर ! तुम्हारे पास मैं अमृत-समाना सीताजी के अवयवों

को देखता हूँ। क्या वे तब बिथुरे गिरे हैं, जब बली राक्षस रावण सीता को खाते हुए जाता रहा ? । २६

ओडा निन्ऱ् कळिमयिले शायर् कौडुङ्गि युळ्ळळिन्दु
कूडा दारिऱ् ऱॆरिहिन्ऱ नीयु माहङ् गुळिर्न्दायो
तेडा निन्ऱ वॆन्नुयिरैत् तॆरियक् कण्डाय् शिन्दैयुवन्
दाडा निन्ऱा यायिरङ्ग णुडैयायक् कॊळिक्कु माऱुण्डो 27

ओटा निऩ्ऱ–दौड़ते फिरनेवाले; कळि मयिले–मुदित मोर; चायर्कु ऒतुङ्कि–(सीता की) आभा के सामने (हार मानकर) हटकर; उळ् अळिन्तु–मन मारकर; कूटातारिल्–शत्रु के समान; तॆरिकिन्ऱ–दिखनेवाले; नीयुम्–तुम भी; आकम् कुळिर्न्तायो–मन में आनन्दानुभव करते हो क्या; तेटा निन्ऱ–जिसकी मैं खोज कर रहा हूँ; ऎन् उयिरै–उस मेरे प्राणसमाना को; तॆरिय कण्टाय्–तुमने खूब देखा है; चिन्तै उवन्तु आटा निन्ऱाय्–अब सन्तोष के साथ नाचते हो; आयिरम् कण् उटैयाय्क्कु–सहस्र-नेत्र तुमसे; ऒळिक्कुम् आऱु उण्टो–छिपने का रास्ता भी है क्या २७

(श्रीराम एक मयूर से पूछते हैं—) हे दौड़ते फिरनेवाले मयूर ! सीताजी की आभा के सामने तू हार गया था। मन मारकर तू शत्रुवत् व्यवहार करता-सा दीखता है ! अब तेरा मन ठण्डा हो गया न ? तूने मेरी प्राण-सम सीता को खूब देखा है ! अब मुदितमन हो नाच रहा है ! तेरे सहस्र नेत्र हैं ! तुझसे कोई वस्तु अनदेखी रह सकेगी क्या ? । २७

अडैयी रॆन्नि मॊरुमाऱ्ऱ मऱिन्द दुरैयी रन्नत्तिन्
पॆडैयी रॊन्ऱुम् पेशीरो पिळैया देऱ्कुम् पिळैत्तीरो
नडैनी रळियच् चॆय्दारार् नडुवि लादार् नन्ऱियवरो
डुडैयीर् पहैदा नुमैनोक्कि युवक्किन् ऱेनै मुनिवीरो 28

अन्नत्तिन् पॆटैयीर्–हंस-स्त्रियो; अटैयीर् ऎन्निनुम्–पास नहीं आओगी तो भी; अऱिन्ततु–जाना; ऒरु माऱ्ऱम्–एक समाचार; उरैयीर्–मुझे बताओ; ऒन्ऱुम् पेचीरो–कुछ न कहोगी क्या; पिळैयातेऱ्कुम्–निरपराधी के प्रति भी; पिळैत्तीरो–अपराध करोगी; नटु इलातार्–तटस्थता (कमर) जिसके पास नहीं है; नटै नीर् अळिय चॆय्तार्–तुम्हारी चाल (के गर्व) को मिटाया; यार्–किसने था; अवरोटु पकै तान्–उनके साथ शत्रुता; नन्ऱि उटैयीर्–भले ही रखो; उमै नोक्कि–तुम्हें देखकर; उवक्किन्ऱेनै–हर्षित होनेवाले मुझसे; मुनिवीरो–गुस्सा करोगी क्या। २८

(हंसिनियों से उपालम्भ—) हे हंसकुमारियो ! तुम मेरे पास नहीं आओगी। सही। पर सीता के सम्बन्ध में कुछ समाचार कहो। क्या नहीं कहोगी ? मैंने तो तुम्हारा कोई अपराध नहीं किया। निरपराध के प्रति भी अपराध करोगी क्या ? कटिहीन ('नडु' का अर्थ तटस्थता भी है— अतः तटस्थता से रहित) किसने तुम्हारा चाल का गर्व चूर किया ?

सीता ने ही न ? उसके साथ शत्रुता तुम भले ही करो। मैं तो तुमको देखकर आनन्द से भर जाता हूँ। मुझसे भी खीझ दिखाओगी क्यों ? । २८

पॊऩ्बाल् पॊरुवुम् विरैयल्लि पुल्लिप् पॊलिऩ्द पॊलऩ्दादु
तऩ्बाऱ् ऱऴ्वुङ् गुऴल्वण्डु तमिऴ़्प्पाट् टिशैक्कुऩ् दामरैये
ॲऩ्बा लिल्लै यप्पालो विरुप्पा रल्लर् विरुप्पुडैय
उऩ्बा लिल्लै यॆऩ्ऱक्का लॊऴिप्पा रोडु मुऱ्वुण्डो 29

पॊऩ् पाल्–स्वर्ण का-सा गुण; पॊरुवुम्–रखनेवाले; विरै अल्लि–सुवासित दलों के; पुल्लि पॊलिऩ्त–अन्दर शोभनेवाले और; पॊलऩ् तातु–स्वर्ण-सम मकरन्द; तऩ् पाल् वऴ्वुम्–जिन पर लगे रहते हैं; कुऴल् वण्टु–बाँसुरी-ध्वनि वाले भ्रमर; तमिऴ़् पाट्टु–मधुर संगीत; इचैक्कुम्–(जिनमें रहकर) गाते हैं; तामरैये–ऐसे कमल-पुष्पो; ॲऩ् पाल् इल्लै–(सीता) अब मेरे साथ नहीं है; अप्पालो इरुप्पार् अल्लर्–अलग कहीं रहनेवाली भी नहीं है; विरुप्पु उटैय–प्रेमासक्त; उऩ् पाल्–तुम पर; इल्लै ॲऩ्ऱक्काल्–नहीं है, कहोगे तो; ऒऴिप्पारोटुम्–छिपा रखनेवालों के साथ; उऱ्वु उण्टो–मित्रता हो सकती है क्या। २९

हे कमलपुष्पो ! तुम्हारे दल स्वर्ण के समान है। उन पर मकरन्द भरा है। उस मकरन्द-धूल पर भ्रमर लोटते हुए अपने शरीरों पर उसे मल लेकर खूब गुंजार कर रहे हैं ! सीता मेरे साथ नहीं है। वह ऐसी है जो अन्यत्र रह ही नहीं सकती। (वह या तो मेरे साथ रहेगी या अपनी नैहर तुम पर।) अगर तुम यह कहो कि वह यहाँ नही, तो वह झूठ ही होगा। छिपाकर रखनेवालों के साथ मित्रता कैसे रखी जायगी ? । २९

ऒरुवा शहत्तै वाय्तिऱन्दिङ् गुदवाय् पॊय्है युऴ्ळॊडुङ्गुम्
तिरुवा यनैय शॆदाम्बर् कयले किडऩ्द शॆङ्गिडैये
वॆरुवा वॆदिर्निऩ् ऱमुदुयिर्क्कुम् वीऴिच् चॆव्विक् कॊऴ्ङ्गनिवाय्
तरुवा यव्वा यित्तिऩमिऴ्दुन् तण्णॆन् मॊऴियुन् दारायो 30

पॊय्कैयुळ्–सर के अन्दर; ऒटुङ्कुम्–दबे रहनेवाले; तिरुवाय् अनैय–सीताजी के श्रीसम्पन्न अधरों के समान; चॆम्मै आम्पऱ्कु–लाल कुमुदकुसुमों के; अयले किटन्त–पास रहनेवाली; चॆम् किटैये–लाल खुखरी; वॆरुवा–निर्भय होकर; ॲतिर् निऩ्ऱु–सामने रहकर; अमुतु उयिर्क्कुम्–अमृत बहानेवाले; वीऴि कॊऴ्म् कति–"वीऴि" (नाम) के पुष्ट फल के (सदृश); चॆव्वि वाय्–(सीता के) लाल मुख को; तरुवाय्–दरसाते हो; अ वायिऩ्–उस मुख के; इऩ् अमिऴ्तुम्–मधुर अमृत को भी; तण् ॲऩ्–शीतल; मॊऴियुम्–बोली को भी; तारायो–नहीं दोगे क्या; ऒरु वाचकत्तै–एक वचन; वाय् तिऱन्तु–अपना मुख खोलकर; इङ्कु उतवाय्–कहने की, यहाँ, कृपा करो तो। ३०

हे लाल 'किटै' (खुखरी ?) लता, जो सर के अन्दर सीता के मुख के

समान लाल कुमुदों के पास पड़ी हो ! (किटै लाल रंग की जललता है। उसकी उपमा अधर से दी जाती है।) तुम मेरे सामने मधुस्रावी, 'वीळि' के फल के समान (सीता के) सुन्दर अधरों को दिखा (स्मरण करा) रही हो ! क्या तुम उन अधरों का अमृतपान और उनकी बोली का स्वाद नहीं दिलाओगी ? मुख खोलकर एक बात करो तो बड़ी दया होगी। ३०

अलक्क णुऱ्ऱेऱ् काऱ्ऱुवदऱ् कडैवुण् डन्ऱो कॉडिवळ्ळाय्
मलर्क्कॉम् बन्नैय मडच्चीदै कादे मऱ्ऱॉन् ऱल्लैयाल्
पॉलक्कुण् डलमुङ् गॉडुङ्गुळैयुम् पुनैताळ् मुत्तिन् पॉऱ्ऱोडुम्
विलक्कि वन्दाय् काट्टायो विन्नुम् बूशल् विरुम्बुदियो 31

कॉटि वळ्ळाय्–हे 'वळ्ळै' लता; मलर् कॉम्पु अन्नैय–पुष्पशाखा-सदृश; मटम् चीतै–बाला सीता के; काते–कर्ण; मऱ्ऱु ऑन्ऱु अल्लै आल्–(तू) दूसरा कुछ नहीं है तो; पॉलन् कुण्टलमुम्–स्वर्णकुण्डलों; कॉटुम् कुळैयुम्–वक्र ताटंकों को; पुनै ताळ्–पहने हुए, लटकनेवाले; मुत्तिन् पॉन् तोटुम्–मोती के स्वर्ण कर्णफूलों को; विलक्कि वन्ताय्–छोड़कर आये हो; काट्टायो–(सीता को) दिखाओगी नहीं क्या; अलक्कण् उऱ्ऱेऱ्कु–दुःख को प्राप्त मुझे; आऱ्ऱुवतऱ्कु–दुःखशमन के लिए; अटैवु उण्टु अन्ऱो–मार्ग होगा न; इन्नुम् पूचल् विरुम्पुतियो–आगे भी मुझसे झगड़ा चाहती हो क्या। ३१

हे 'वळ्ळै' लता ! तुम पुष्पलता-सदृश बाला सीता के कान ही हो ! और कुछ नहीं। स्वर्णकुण्डल, वक्र ताटंक और मोती-जड़ित स्वर्ण कर्णफूल (विना पहने) त्यागकर आयी हो ! क्या तुम मुझे उस सीता को नहीं दरसाओगी ? मैं दुःखदग्ध हूँ। दिखाओगी तो दुःख बुझाने में सहायता मिलेगी। फिर क्यों और भी मुझसे झगड़ा रखना चाहती हो ? । ३१

पञ्जु पूत्त विरऱ्पदुमम् पवळम् बूत्त वडियाळॆन्
नॆञ्जु पूत्त तामरैयि निलय मुवन्दा णिऱम्बूत्त
मञ्जु पूत्त मळैयन्नैय कुळलाळ् कण्बोन् मणिक्कुवळाय्
नञ्जु पूत्त तामॆन्न नहुवा यॆन्नै नलिवायो 32

पञ्चु पूत्त–लाक्षारंजित; विरल्–उँगलियों; पतुमम् पवळम् पूत्त–पद्मों में प्रवाल जटित हों, ऐसे; अटियाळ्–चरणों वाली; ऍन् नॅञ्चु–मेरे मन के; पूत्त तामरैयिन्–विकसित कमल पर; निलयम् उवन्ताळ्–वास चाव के साथ करनेवाली; निऱम् पूत्त–रंगीन; मञ्चु पूत्त–सुन्दरता-भरे; मळै अन्नैय–मेघ-सम; कुळलाळ्–केश वाली की; कण् पोल्–आँख के सदृश रहनेवाले; मणि कुवळाय्–सुन्दर कुवलय-कुसुम; नञ्चु पूत्ततु ॲन्न–विष फैलता हो, ऐसा; नकुवाय्–हँसी दिखाते हो; ॲन्नै नलिवायो–मुझे त्रास दोगे क्या। ३२

(नीलोत्पल के फूल से श्रीराम कहते हैं—) लाक्षारसरंजित उँगलियों, प्रवाल-जड़ित पद्मों के समान चरणों से भूषित; मेरे मन रूपी विकसित

कमल पर वास चाहनेवाली; और सुन्दर काले रंग के मेघ के समान केश वाली सीता की आँख के समान दृश्यमान नीलोत्पल के फूल ! तुम मुझ पर विष की-सी दृष्टि डालते हुए हँस रहे हो ! मुझे सताओगे क्या ? । ३२

ऍऩ्ऱ यावुयिर्क् किऩ्ऱव ऩेडविऴ्, कॊऩ्ऱै यावियुऱत्तिवै कूऱियाऩ्
पॊऩ्ऱ यादुम् पुहल्हिलै पोलुमाल्, वऩ्ऱ याविलि यॆऩ्ऩ वरुन्दिऩाऩ् 33

ऍऩ्ऱु-ऐसा; अया उयिर्फ्किऩ्ऱवऩ्-ठण्डी आहें भरनेवाले; आवि पुऱत्तु-सर के पास; एट्टु अविऴ् कॊऩ्ऱै-(दलों से पूर्ण) फूलों से युक्त अमलतास तरु; इवै-ये बातें; याऩ् कूऱि-मैं, कहकर; पॊऩ्ऱ-मर जाऊँगा, तब भी; यातुम्-कुछ भी; पुकलकिलै पोलुम्-नहीं कहोगे शायद; आल्-तो; वऩ्-कठोर; तयाविलि-निर्दय हो; ऍऩ्ऩ-कहकर; वरुन्तिऩाऩ्-दुःखी हुए । ३३

इस तरह श्रीराम विलाप करते हुए ठण्डी आहें भरते रहे। फिर उन्होंने सर के पास रहे अमलतास के तरुओं को देखकर कहा कि विकसित पुष्पों से भरे हे अमलतास ! देखो। मैं इस तरह दुखड़ा रोते-रोते मर जाऊँगा। इस स्थिति में मुझे देखकर भी तुम कुछ आश्वासन के वचन नहीं कहते हो। तुम अवश्य कठोर और निर्मम हो। ३३

वार ळित्तिळ माप्पिडि वायिडैक्, कार ळिक्कलु ळ्क्करुङ् गैम्मलै
नीर ळिप्पदु नोक्किऩ निऩ्ऱऩऩ्, पेर ळिक्कुप् पिऱन्दविल् लायिऩाऩ् 34

पेर् अळिक्कु-बड़ी दया का; पिऱन्त इल्-जन्मस्थान; आयिऩाऩ्-जो रहे; वार् अळित्तु-बड़े प्रेम का पात्र; इळ मा पिटि वाय् इटै-छोटी आयु की बड़ी हथिनी के मुख में; कार् अळि-काले भ्रमरों के; कलुळ-तितर-बितर भागते; करुम् कै मलै-काले करि को; नीर् अळिप्पतु-जल पिलाते हुए; नोक्किऩऩ्-देखते हुए (श्रीराम) निऩ्ऱऩऩ्-खड़े रहे। ३४

श्रीराम बड़ी दया के जन्मस्थान थे। उन्होंने एक दृश्य देखा। एक काला हाथी अपनी सूँड़ से जल लेकर अपने गहरे प्रेम का पात्र, हथिनी के मुख में डाल रहा था। तब काले भ्रमर चकित होकर उड़ रहे थे। श्रीराम ने यह दृश्य देखा तो वे स्तब्ध खड़े रह गये। ३४

आण्डव् वळ्ळलै यऩ्बॆऩु मारणि, पूण्ड तम्बि पॊऴुदु कऴिन्ददाल्
ईण्डि रुम्बुऩ ऱोय्न्दुऩ् ऩिशैयॆऩ, नीण्ड वऩ्गऴ ऱाळ्नॆडि योयॆऩ्ऱाऩ् 35

आण्टु-तब; अऩ्पु ऍऩुम्-प्रेम नाम का; आर् अणि पूण्ट-अपूर्व आभरण-धारी; तम्पि-अनुज (ने); अ वळ्ळलै-उन उदार प्रभु को; पॊऴुतु कऴिन्ततु आल्-(दिन का) समय बीत गया, इसलिए; नॆटियोय्-बढ़े हुए (या बड़े यशस्वी); ईण्टु-यहाँ; इरुम् पुऩल् तोय्न्तु-इस बड़े जलाशय में स्नान करके; उऩ् इचै ऍऩ-आपकी कीर्ति के समान; नीण्टवऩ्-लम्बे (सर्वव्यापी); कऴल् ताऴ्-(श्रीमन्नारायण) के चरणों की पूजा करें; ऍऩ्ऱाऩ्-कहा। ३५

तब प्रेम रूपी उत्तम आभरणधारी लक्ष्मण ने उदार प्रभु श्रीराम से विनय की कि दिन बीत गया। सन्ध्या आ गयी। इसलिए, हे लम्बे (श्रीशरीर के या) यश के धारक! यहाँ इस जलाशय में स्नान करें और आपके यश के समान सर्वत्र व्याप्त श्रीमन्नारायण की चरण-वन्दना करें। ३५

अरशु मव्वळि नितृरि देहियत्, तिरैशॅय् तीर्त्तमुञ् जॅय्दव मुण्मैयाल्
वरैशॅय् मामद वारण नाणुड़, विरैशॅय् पूम्बुन लाडलै मेयिनान् 36

अरचुम्–राजा राम ने भी; अ वळि नितृरु–वहाँ से; अरितु एकि–सायास जाकर; अ तिरै चॅय् तीर्त्तमुम्–उस तरंगसंकुल सर के जल की; चॅय् तवम्–की हुई तपस्या; उण्मैयाल्–रही, इसलिए; वरै चॅय्–पर्वत-सम; मा मत वारणम्–बहुत मदस्रावी हाथी को भी; नाण् उऱ–लजाते हुए; विरै चॅय् पूम् पुनल्–सुबासपूर्ण पुष्पों से भरे जल में; आटलै–स्नान में; मेयिनान्–प्रवृत्त हुए। ३६

राजा राम भी वहाँ से सायास सर के पास गये। तरंग उठानेवाले उस सरोवर के जल का सुकृत था। इसलिए श्रीराम ने उसमें स्नान करना अपनाया। तब पर्वताकार और मदस्रावी गज भी उनको देखकर लजा गया। ऐसा उन्होंने स्नान किया। ३६

नीत्त नीरि नॆडियवन् मूऴ्हलुम्, तीत्त कामत् तॆऱुहदिर्त् तीयिनाल्
काय्त्ति रुम्बैक् करुमहक् कम्मियन्, तोय्त्त तण्बुन लॊत्तदत् तोयमे 37

नॆटियवन्–लम्बोतरे; नीत्तम् नीरिल्–उस बड़े प्रवाह के सर के जल में; मूऴ्कलुम्–(श्रीराम ने) जब स्नान किया; तीत्त–तब उनके शरीर को ताप देनेवाले; कामम्–विरह की; तॆऱु कतिर् तीयिनाल्–जलती ज्वाला की अग्नि के कारण; अ तोयम्–वह जल; करुमकन् कम्मियन्–लोहार; इरुम्पै काय्त्तु–लोहे को तपाकर; तोय्त्त–(जिस जल में) डुबोया; तण् पुनल्–उस ठण्डे जल के; ऒत्ततु–समान बन गया (गरम हो गया)। ३७

जब लम्बे क़द के श्रीराम ने उस जल में स्नान किया, तब उनके शरीर को तपानेवाली विरहाग्नि ने उस जल पर अपना प्रभाव दिखाया। जब लुहार लोहा तपाकर ठण्डे जल में डालता है, तब वह जल गरम हो जाता है। वैसे ही उस सर का जल भी गरम हो गया। ३७

आडिन्ना ऩन्नमा यरुमऱैहळ् पाडिनान्
नीडुनीर् मुत्तैनू नॆऱिमुऱैयि नेमिताळ्
शूडिनान् मुनिवरैत् तॊऴुदुपुञ् जोलैवाय्
माडुतान् वैहिना नॆरिहदिर् वैहिनान् 38

अन्नमाय्–हंस का रूप लेकर; अरु मऱैकळ्–अपूर्व वेदों को; पाटिनान्–जिन्होंने गाया; मुन्तै नूल् नॆऱि मुऱैयिन्–(उन श्रीराम ने) प्राचीन शास्त्रों की बतायी विधि के

अनुसार; नीट्टु नीर् आटिनान्–विस्तृत जलाशय में स्नान करके; नेमि ताळ् चूटिनान्–चक्रधर (विष्णु) देव के चरणों की; चूटिनान्–वन्दना की; मुनिवरै तॊऴुतु–मुनियों की पूजा करके; पून् चोलै वाय्–एक बगीचे में; माट्टतन्–एक ओर; वैकिनान्–ठहरे; अॆरि कतिर्–जलानेवाला सूर्य भी; वैकिनान्–अस्त हुआ। ३८

श्रीराम विष्णु के अवतार थे। विष्णु ने एक बार हंस का अंशावतार लेकर ब्रह्मा को वेद गाकर सिखाये थे। उन्होंने पम्पा सर में प्राचीन शास्त्रोक्त रीति से स्नान करके श्री चक्रधर नारायण के चरणों की पूजा की। फिर वहाँ के मुनियों को नमस्कार करके वे एक बगीचे में गये। उसमें एक ओर ठहरे। तब किरणमाली भी अस्त हुआ। ३८

अन्दियाळ् वन्दुता णहवे मवयिन्
शन्दवार् कॊङ्गैया ळनिमैता नायहन्
शिन्दिया नॊन्दुतेय् पॊऴुदवण् शीदनीर्
इन्दुवा नुन्दुवा नॆरिहदि रायिनान् 39

अन्दियाळ्–सन्ध्यादेवी; वन्तु–आकर; अणुकवे–निकट पहुँची; अ वयिन्–तब; नायकन्–नायक; चन्त–सुन्दर; वार्–अँगियाबद्ध; कॊङ्कैयाळ्–स्तनों वाली सीताजी का; तनिमैतान्–अकेलापन; चिन्तिया–सोचकर; नॊन्तु–दुःख से; तेय् पॊऴुतु–जब विगलित हुए, तब; अवण्–वहाँ; चीत नीर्–(समुद्र के) शीतल जल को; वान् उन्तुवान्–आकाश में उछालनेवाला; इन्तु–चन्द्र; अॆरि कतिर्–तापक सूर्य (-सा); आयिनान्–बन गया (श्रीराम के लिए।)। ३९

सन्ध्या देवी आ पहुँची। तब श्रीराम को सीतादेवी का स्मरण आया। नायक श्रीराम सुन्दर अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीताजी का निस्सहाय एकाकीपन स्मरण करके दुःखी हुए। दुःख से कृश होने लगे। तब चन्द्र उदित हुआ। वह शीतल-समुद्र-जल को आकाश तक उछालने वाला है। पर श्रीराम के लिए वह जलानेवाले सूर्य के समान बहुत गरम लगा। ३९

पूवॊडुङ् गिनविरवु पुळ्ळॊडुङ् गिनपॊरुविल्
मावॊडुङ् गिनमरनु मिलैयॊडुङ् गिनकिळिहळ्
नावॊडुङ् गिनमयिल्ह णडमॊडुङ् गिनकुयिल्हळ्
कूवॊडुङ् गिनपिळिरु कुरलॊडुङ् गिनकळिरु 40

पू ऒटुङ्किन–फूल बन्द हुए; विरवु–अनेक प्रकार के मिश्रित; पुळ्–पक्षी; ऒटुङ्किन–(जाकर) दुबक गये; पॊरुवु इल्–उपमाहीन; मा ऒटुङ्किन–प्राणी छिप गये; मरनुम् इलै ऒटुङ्किन–तरुओं के पत्ते भी संकुचित हो गए; किळिकळ्–शुकों की; ना–जिह्वाएँ; ऒटुङ्किन–बन्द हो गयीं; मयिल्कळ्–मोरों का; नटम्–नाच; ऒटुङ्किन–बन्द हुए; कुयिल्कळ्–कोयलों की; कू–कूकें; ऒटुङ्किन–

बन्द हुई; कळिऱ्‌-पुरुषगजों के; पिळिऱु कुरल्-चिंघाड़ने की ध्वनियाँ; ऑट्ङ्कित-बन्द हो रहीं। ४०

रात का आगमन हो गया। इसलिए उस सर के फूल सब बन्द हो गये। विविध तरह के पक्षी अपने-अपने घोंसलों में जाकर दुबक गये। उपमाहीन अनेक जानवर जाकर अपने-अपने स्थानों में बन्द हो गये। बड़े पेड़ों के पत्ते बन्द हुए। शुकों की बोली, मोरों का नाच, कोयलों की कूकें, हाथियों की चिंघाड़ —सब बन्द हो रहीं। ४०

मण्डुयिन्ऱ्‌ ऱ्‌तनिलैय मलैतुयिन्ऱ्‌ ऱ्‌तमरुविल्
पण्डुयिन्ऱ्‌ ऱ्‌तविरवु पनितुयिन्ऱ्‌ ऱ्‌तपहरुम्
विण्डुयिन्ऱ्‌ ऱ्‌तहळुदुम् विळिदुयिन्ऱ्‌ ऱ्‌तपळुदिल्
कण्डुयिन्ऱ्‌ ऱिलनॅडिय कडरुयिन्ऱ्‌ ऱ्‌वौर्हळिऱु 41

मण् तुयिन्ऱ्‌रत-पृथ्वी के सब सो गये; निलैय मलै-अचल पर्वत; तुयिन्ऱ्‌रत-सोये; मरु इल्-निर्मल; पण्-जलाशय; तुयिन्ऱ्‌रत-सो गये; विरवु पत्ति तुयिन्ऱ्‌रत-व्याप्त हिम भी सो गया; पकरुम् विण्-(बड़ा) कहलानेवाला आकाश भी; तुयिन्ऱ्‌रत-निःशब्द हुए; कळुतुम्-भूतगण ने भी; विळि तुयिन्ऱ्‌रत-आँखें मूँद लीं; नॅटिय कटल्-विशाल (क्षीर-)सागर पर; तुयिन्ऱ्‌र ओर् कळिऱु-निद्रा करनेवाले अप्रतिम हाथी, श्रीराम; पळुतु इल्-निर्मल; कण् तुयिन्ऱ्‌रिलन्-आँखें मूँदकर नहीं सोये। ४१

पृथ्वी, अचल पर्वत, निर्मल जलाशय, सर्वत्र व्याप्त हिम, गौरवान्वित आकाश —सभी निःशब्द हो गये। भूतों ने भी आँखें मूँद लीं। पर क्षीर-सागर पर निद्रा करने के आदी जो थे, गजश्रेष्ठ-तुल्य उन श्रीराम ने अपनी निर्मल आँखें नहीं मूँदीं। ४१

पोङ्गिमुऱ्‌ ऱियवुणर्वु पुणर्दलुम् पुहैयिन्ऱोडु
पङ्गमुऱ्‌ ऱ्‌तैयविनै परिवुरुम् बडिमुडिविल्
कङ्गुलिऱ्‌ ऱ्‌दुकमल मुहमॅडुत् तदुकडलिल्
वॅङ्गदिर्क् कडवुळॅळ विमलऩ्वॅन् दुयरिऩॅळ 42

मुऱ्‌रिय उणर्वु-पूर्णज्ञान; पोङ्गि पुणर्तलुम्-प्राप्त होने पर; पुकैयिनोटु-धुएँ के साथ; पङ्कम् उऱ्‌र अतैय-पंक मिल गया हो, ऐसा; विनै-उसके कर्म; परिवु उरुम्पटि-जैसे नष्ट होते हैं, वैसे; मुटिवु इल्-अनन्त रीति से, लम्बी रही; कङ्कुल्-रात; इऱ्‌रतु-समाप्त हुई; कटलिल्-समुद्र पर; वॅम् कतिर्-गरम किरणों के; कटवुळ् ॲळ-(सूर्य-)देव उठे; विमलऩ्-विमल प्रभु को; वॅम् तुयरिऩ् ॲळ-कठोर (विरह-)दुःख से मुक्त कराने के लिए; कमलम्-कमल; मुकम् अॅटुत्ततु-विकसित हुए। ४२

जैसे-तैसे अनन्त लगनेवाली वह रात ऐसे बीती, जैसे सम्पूर्ण ज्ञान के प्राप्त होने पर धुएँ और पंक के मिश्रण के समान रहनेवाला कर्म (पाप) मिट

जाता है। समुद्र से उष्णकिरण सूर्यदेव उगे। कमल भी विमल विष्णुदेव श्रीराम के दुःख के निवारणार्थ विकसित हुए। ४२

कालैये	कडिदुनॅडि	देहिनार्	कडलक्कविन्
शोलयॅय्	मलैतऴुवु	कान्नी	नॅरिॅतॊलैय
आलयॅय्	तुऴनियह	नाडरार्	कलियमिऴ्दु
पोलवे	युरैशॅय्पुन	मानैना	डुदल्पुरिन्नर् 43

आलै एय् तुऴनि–इक्षुशालाओं से निकलनेवाली ध्वनि से भरे; अकल् नाटर्–(और) विशाल (कोसल) देश के वे; आर् कलि अमिऴ्तु पोलवे–शब्दायमान सागर से उत्पन्न अमृत के ही समान; उरै चॅय्–बोलनेवाली; पुन मानै–वनमृगी (-सी सीताजी) को; नाटुतल् पुरिन्नर्–खोजने में प्रवृत्त हो; कटल् कवितुम्–समुद्रतुल्य; चोलै एय्–उपवनों से पूर्ण; मलै तऴुवुम्–पर्वतों से मिलित; कानल् नीऴ नॅरि–कंकड़ीले और लम्बे मार्ग; तॊलैय–तय करने के विचार से; कालैये–सवेरे ही; कटितु–सवेग; नॅटितु–बहुत दूर; एकिनार्–गये। ४३

इक्षुशाला से उत्पन्न ध्वनि वाले विशाल कोसल देश के स्वामी दोनों क्षीरसागरोत्पन्न अमृत के समान बोलनेवाली वनमृगी-सी सीतादेवी को, खोजने के हेतु सवेग जाने लगे। उन्हें समुद्र-सम विशाल उपवनों से भरे और पर्वत-मिलित कंकड़ीले मार्ग तय करने थे। इसलिए वे उदयकाल में ही बहुत जल्दी-जल्दी बहुत दूर चले गये। ४३

2. अनुमप् पडलम् (हनुमान पटल)

ऍय्तिनार्	शवरिनॅडि	देयमाल्	वरैयॅळिदिन्
नॊय्दिने	रिन्नदनि	नोन्मैहूर्	कवियरशु
शॅय्वदोर्	हिलनिवर्ह	डॅव्वरा	मॅनवॅरुवि
उय्दुना	मनविरैवि	नोडिनान्	मलैमुळैयिन् 44

ऍय्तिनार्–(वैसे जो) गये; चवरि नॅटितु एय–शवरी से साफ़ निर्दिष्ट; माल् वरै अततिल्–बड़े पर्वत पर; ऍळितिन्–अनायास; नॊय्तिन्–शीघ्र; एऱिनर्–चढ़े; नोन्मै कूर्–क्षमाशील; कवि अरचु–कपिराज (सुग्रीव); इवर्कऴ्–ये; तॅव्वर् आम्–शत्रु हैं; ऍन वॆरुवि–ऐसा डरकर; चॅय्वतु ओर्किलन्–क्या करना, यह न जान कर; नाम् उय्तुम् ऍन–हम बच जायँ, यह सोचकर; मलै मुळैयितिल्–पर्वतगुफा में; विरैविन् ओटिनान्–शीघ्र भागा। ४४

ऐसे जो गये, वे दोनों शबरी द्वारा साफ़ निर्दिष्ट ऋष्यमूक पर्वत पर अनायास और शीघ्रता से चढ़ते चले। उस पर कपिराज सुग्रीव बैठा था। वह क्षमा के साथ उस पर्वत पर रहता था। उसने इन दोनों को देखा तो डर गया कि ये धनुर्धर वीर शत्रु ही हैं। अब क्या करना होगा

—यह न जानता हुआ वह 'हम बच जायँ' —इस विचार से पर्वत की गुफा की ओर भागने लगा। ४४

कालिन्मा मदलैयिवर् काण्मिन्नो करुवुडैय
वालिये वलिन्वरवि नार्हडाम् वरिशिलैयर्
नीलमाल् वरैयन्नैयर् नीदियाय् निन्नैदियेन
मूलमोर् हिलन्मरुहि योडिन्नात् मुळैयदनिन् 45

कालित् मा मतलै–पवनदेव के श्रेष्ठ पुत्र; इवर् काण्मिन्–इनको देखो; वरि चिलैयर–सबन्ध धनुर्धर; नील माल् वरै अन्नैयर्–नीले, बड़े पर्वत से तुल्य हैं; करु उटैय–वैर रखनेवाले; वालि एवलिन्–वाली की प्रेरणा से; वरविनार्कळ् ताम्–आनेवाले हैं अवश्य; नीतियाय्–नीतिज्ञ; निनैति–सोचो; ॲन–कहकर; मूलम्–हेतु; ओर्किलन्–न जानकर; मरुकि–घबड़ाकर; मुळै अततिल्–उस गुफा के अन्दर; ओटिनान्–दौड़ा। ४५

तब उसने हनुमान से कहा कि पवनदेव के महान पुत्र! इनको निहारो। सबन्ध धनुर्धर, नील पर्वत-सम दृश्यमान —ये अवश्य वैरी वाली की प्रेरणा से ही (हमें तंग करने) आये हैं। नीतिज्ञ मारुति! तुम खूब सोचो! ऐसा कहकर उनके आगमन का हेतु न समझ सकने के कारण घबड़ाहट में पड़कर गुफा के अन्दर भाग गया। ४५

अव्विडत् तवर्मरुहि यञ्जिनेञ् जळियमैदि
वॆव्विडत् तिन्नैमरुहु तेवर्ता नवर्वॆरुवत्
तव्विडत् तनियरुळुन् दाळ्शडैक् कडवुळॆन
इव्विडत् तिनिदिरुमि नञ्जलॆन् ड्रिडैयुदवि 46

अ इटत्तु–वहाँ; अवर्–वे; मरुकि अञ्चि–घबड़ाते हुए डरकर; नॆञ्चु अळि अमैति–(जब) चित्ताक्रान्त रहे, तब; वॆम् विटत्तिनै–(सागर-मन्थन के समय प्रकट हुए) भयंकर विष को देखकर; मरुकु–जो घबड़ाए; तेवर् तानवर् वॆरुव–वे देव और दानव भयभीत हुए, तब; तव्विट–डर दूर करने; तनि अरुळुम्–जिन्होंने अपूर्व कृपा की; ताळ् चटै कटवुळ् ॲन–उन प्रलम्ब जटाधारी शिवदेव के समान; इ इटत्तु–यहाँ; इनितु इरुमिन्–सुख से रहें; अञ्चल्–नहीं डरें; ॲन्रु–ऐसा; इटै उतवि–बीच में सहायता करके (कहकर)। ४६

उस पर्वत पर सुग्रीव आदि वानरवीर घबड़ाहट के साथ भयातुर हुए। तब सागर-मन्थन के अवसर पर भयंकर विष से भयभीत देवों व दानवों की सहायता में जिन्होंने उसको खाकर कृपा की, उन प्रलंब जटाधारी शिवजी के समान हनुमान उठा। उसने उनको आश्वासन प्रदान किया कि यहीं सुख से रहें। भय मत करें। ४६

अञ्जनैक् कोरुशिऴुव नञ्जनक् किरियनैय
मञ्जलैक् कुरुहियोरु माणिनइ पढिवमोडु
वॅञ्जिनत् तोऴिलरतव मॅय्यर्कैच् चिलैयरैन
नॅञ्जयिर्त्तु तयन्मरैय निन्ऱुकर् पिनिनिनैयुम् 47

अञ्चनैक्कु ओरु चिरुपन्–अंजना का अप्रतिम पुत्र हनुमान; ओरु नल् माणि–एक श्रेष्ठ ब्रह्मचारी के; पढिवमोडु–रूप में; अञ्चनम् किरि अनैय–अंजनगिरि-तुल्य; मञ्चनै–सुन्दर श्रीराम के; कुरुकि–पास आकर; अयल् मरैय निन्ऱु–अलग अवश्य खड़े होकर; वॅम् चिन तोऴिलर्–भयंकर क्रोधी कर्मरत; तव मॅय्यर्–तपस्वी वेश के शरीर वाले; कै चिलैयर्–हाथ में धनु लिये हुए; अन–यह देखकर; नॅञ्चु अयिर्त्तु–मन में शंका करके; कट्पिनिन्–विद्वत्ता का आधार लेकर; निनैयुम्–विचार करने लगा। ।४७।

यह कहकर अंजना के अप्रतिम पुत्र ने एक उत्तम ब्रह्मचारी का वेश लिया। वह अंजनगिरि-तुल्य श्रीराम के पास आया, छिपा खड़ा रहा। वे क्रोध से कार्य करनेवाले लगते हैं। पर उनका तपस्वी का वेश है। और हाथ में धनु रखते हैं। यह देखकर हनुमान निश्चय नहीं कर सका कि ये कौन हैं। उसके मन में संशय पैदा हुआ। तब वह अपनी विद्वत्ता से प्राप्त ज्ञान के आधार पर सोचने लगा। ४७

देवरोप् परुतलैव रामुदर् इवरॅन्निल्
मूवरमर् इवरिरुवर् मूरिविऱ् कररिवर
यावरोप् पवरुलहिन् यादिवर्क् करियपोरुळ्
केवलत् तिवर्निलैमै तेर्वदॅक् किळमैकोडु 48

ओप्पु अरु–उपमाहीन; तेवर् तलैवर् आम्–देवों के प्रधान; मुतल् तेवर् अन्निन्–आदिदेव हैं तो; अवर् मूवर्–वे तीन हैं; इवर् इरुवर्–ये तो दो हैं; मूरि विल् कररर्–बलवान धनु के धारक हैं; उलकिल्–संसार में; इवरै ओप्पवर्–इनकी समानता करनेवाले; यारे–कौन है; इवर्क्कु–इनके लिए; अरिय–असाध्य; पोरुळ् यातु–पदार्थ क्या है; केवलत्तु इवर् निलैमै–अपूर्व इनकी स्थिति; ऎ किळमै कोंडु–किसके नाते से; तेर्वतु–जाना जायगा। ४८

ये अनुपम देवों के प्रधान त्रिदेव नहीं हो सकते। क्योंकि वे तीन हैं। ये तो दो ही हैं। इनके हाथ में कठोर धनु है। संसार में इनकी टक्कर का कौन मिल सकता है? ये खोजते फिरें, ऐसी इनके लिए असाध्य वस्तु क्या है? निपट अद्वितीय इनका समाचार किस नाते से जाना जायगा? ।४८

शिनवैयिर् चिरिदुदुयर् शेर्वुरत् तॅरुमरलिन्
नोन्दयरत् तनरॅनिनु नोवुरुम् जिद्रियरलर्

अन्दरत्तु तमरर्शिरु मात्तिडम् पडिवर्मयर्
शिन्दत्तैक् कुरियपौरु डेडुदरु कुरुनिलैयर् 49

चिन्तैयिल्–मन में; चिरितु तुयर्–थोड़ी ग्लानि; चेर्वु उरु–उठी, इसलिए; तरुमरलित्–उस गड़बड़ी में; नोन्तु अयर्त्ततर्–पीड़ित होकर थके हैं; ऍनितुम्–तो भी; नोवु उरुम्–अभिभूत होनेवाले; चिरियर् अलर्–शक्तिहीन नहीं हैं; अन्तरत्तु अमरर्–आकाश के अमर; चिरु मातिट पटिवर्–छोटे मानवरूप में आये हैं; मयर्–मोहक; चिन्तत्तैक्कु उरिय–चिन्ता योग्य; पौरुळ्–पदार्थ कोई; तेट्टतरकु उरु–खोजने में प्रवृत्त; निलैयर्–स्थिति वाले हैं। ४६

उनके मन में थोड़ी ग्लानि अवश्य हुई है। घबड़ाहट से ये अवश्य कुछ क्लांत हैं। तो भी बिल्कुल अभिभूत हो जायँ, ऐसी ओछी प्रकृति या शक्ति के भी नहीं हैं। इसलिए आकाशवासी अमर देव ही कम महत्त्व के मानवी रूप लेकर आये हैं। उनके मन को मोहनेवाली और चिन्ता के योग्य किसी वस्तु की खोज में लगे रहनेवाले से लगते हैं। ४९

तरुममुन् तहवुमिवै तनमेनुम् दहैयरिवर्
करुममुम् पिरिदोर्पौरुळ् करुदियन्न् रुदुकरुदिन्
अरुमरुन् दनैयदिडै यऴिवुवन् दुळददनै
इरुमरुङ् गिनुनेडिदु तुरुवुहिन् रनरिवर्हळ् 50

इवर्–ये; तरुममुम् तकवुम् इवै–धर्म और शालीनता, इनको; तनम् ऍनुम्–धन माननेवाले; तकैयर्–स्वभाव के हैं; करुममुम्–मनोरथ (कार्य) भी; पिरितु ओर् पौरुळ्–दूसरी वस्तु; करुति अन्रु–चाहकर नहीं; अतु करुतिन्–उसको सोचें, तो; इवर्कळ्–ये; अरु मरुन्तु अनैयतु–उत्तम देवामृत-सम; इटै अऴिवु वन्तु उळतु–(कुछ) बीच में खो गया है; अततै–उसको; इरु मरुङ्कितुम्–(दायें, बायें) दोनों ओर; नॅटितु–बहुत दूर तक; तुरुवुकिन्ऱतर्–(छानकर) खोजते हैं। ५०

ये धर्म और गौरव को धन माननेवाले लगते हैं। इनके मनोरथ का कार्य भी किसी अन्य वस्तु की चाह का नहीं लगता। देवामृत-सा कोई पदार्थ बीच में खो गया है। उसको वे दायें और बायें बहुत दूर तक खोजते आते है। ५०

कदमॅनुम् पौरुण्मैयिलर् करुणैयिन् कडलनैयर्
इदमॅनुम् पौरुळलदो रियल्बुणर्न् दिलरिवर्हळ्
शदमखन् जुरुनिलैयर् तरुमनञ् जुरुशरिदर्
मदननञ् जुरुवडिवर् मरलियञ् जुरुविरलर् 51

कतम् ऍनुम् पौरुण्मै इलर्–वैरी स्वभाव के नहीं हैं; करुणैयिन् कटल् अनैयर्–करुणा के सागर के समान है; इतम् ऍनुम् पौरुळ् अलतु–हितार्थ से इतर; इवर्कळ्–ये; ओर् इयल्पु–एक गुण; उणर्न्तिलर्–नहीं जानते (रखते); चतमखन् अञ्चुरु–शतमख भी डरे; निलैयर्–ऐसे शानदार; तरुमन् अञ्चुरु–धर्मदेवता भी डरें, ऐसे;

चरितर्–चरित्र वाले; मतत्तन्–मन्मथ; अन्चुरु–डरे, ऐसा; वटिवर्–सौंदर्यवान; मरुलि–यम भी; अन्चुरु–डरे, ऐसा; विऱलर्–पराक्रमी। ५१

ये वैर रखनेवाले लोगों का-सा क्रोध नहीं रखते। करुणा के समुद्र के समान हैं। परहित को छोड़कर कोई दूसरा अर्थ चाहनेवाले स्वभाव के नहीं लगते। इन्द्र भी इनका पौरुष देखकर डरेगा। धर्मदेवता भी इनका चरित्र देखकर डरेगा। मदन इनका रूप देखकर डरेगा। यम भी डरे ऐसी वीरता के है ये। ५१

ऎन्बन पलवु मॆण्णि यिरुवरै यॆय्द नोक्कि
अन्बिन नुरुहु हिन्ऱ वुळ्ळत्त नार्वत् तोरै
मुन्बिरिन् दन्नैयर् तम्मै मुन्निना नॆन्न निन्ऱान्
तन्बॆरुङ् गुणत्ताऱ् ऱन्नैत् तानल दॊप्पि लादान् 52

तन् पॆरुम् कुणत्ताल्–अपने महान गुणों के कारण; तन्नै तान् अलतु–आपकी आपको छोड़; ऒप्पु इलातान्–उपमा नहीं रखनेवाले; ऎन्पत पलवुम्–ऐसे अनेक; ऎण्णि–विचार करके; इरुवरै–दोनों के; ऎय्त नोक्कि–समीप जाने का निश्चय करके; अन्पिनोटु–प्रेम के साथ; उरुकुकिन्ऱ–पसीजनेवाले; उळ्ळत्तन्–मन का; आर्वत्तोरै–प्रियों से; मुन् पिरिन्तु–पहले अलग होकर; अन्नैयर् तम्मै–उनसे; मुन्नितान्–मिले; ऎन्न–जैसे; निन्ऱान्–खड़ा रहा। ५२

अपने उन्नत गुणों के कारण अपने आप को छोड़ कोई दूसरी उपमा न रखनेवाले हनुमान ने इस तरह अनेक प्रकार से सोचकर उनके पास जाना चाहा। प्रेमार्त मन के साथ विछोह के बाद पुनः प्रियों से मिलनेवाले के समान उनके सामने खड़ा रहा। ५२

तन्गन्ऱु कण्ड वन्न तन्मैय तरुहट् पेऴ्वाय्
मिन्गन्ऱु मॆयिऱ्ऱुक् कोण्मा वेङ्गैयॆन् ऱिन्नैय वेयुम्
पिन्शॆन्ऱु कादल् कूरप् पेऴ्हणित् तिरङ्गु हिन्ऱ
ऎन्गन्ऱु हिन्ऱ वॆण्णिऱ् पऱ्पल विवरै यम्मा 53

तरुकण्–निर्भयता; पेऴ् वाय्–(और) खुला (बड़ा) मुख; मिन् कन्ऱुम्–बिजली को विह्वल करनेवाले; ऎयिऱ्ऱु–दाँत, इनसे युक्त; कोळ् मा–सिंह; वेङ्कै–व्याघ्र; ऎन्ऱु इन्नैयवेयुम्–कथित ये भी; तन् कन्ऱु कण्टु अन्न–अपने वत्सों को देखा हो, ऐसे; तन्मैय–(वात्सल्य-)गुण के होकर; पिन् चॆन्ऱु–उनके पीछे जाकर; कातल् कूर–प्रेमाधिक्य के साथ; पेऴ्कणित्तु–आँखें मूंदकर; इरङ्कुकिन्ऱ–अनुताप दिखाते है; इवरै–इन्हें; पल्पल ऎण्णि–अनेक प्रकार से मानकर; ऎन् कन्ऱुकिन्ऱ–क्यों अनुताप करते है; अम्मा–हाय री माँ। ५३

(हनुमान ने और भी देखा।) बिजली को भी मात देनेवाले रूप से प्रकाशमय दाँतों वाले अपने मुख खोले सिंह और व्याघ्र आदि सहस्र

जानवर भी उनको अपने वत्सों को जैसे वात्सल्य के साथ देखते और आँखें मूँदकर रंज प्रकट करते हैं। इनके सम्बन्ध में अनेक प्रकार से सोचकर ये क्यों ऐसे रंज दिखाते हैं ? । ५३

मयिऩ्मुदऱ् पऱवै यॆल्ला मणिनिऱत् तिवर्दम् मेंऩि
वॆयिलुऱऱ् किरङ्गि मीदाय् विरिशिऱैप् पन्दर् नीङ्गा
इयल्वहुत् तॆय्दु हिऩ्ऱ वित्तमुहिऱ् कणङ्ग ळॆङ्गुम्
पयिल्वुऱत् तिवलै शिन्दिप् पयप्पयत् ताऴुम् पाङ्गर् 54

मयिल् मुतल्—मयूर आदि; पऱवै ॲल्लाम्—खग सब; मणि निऱत्तु—मनोरम रंगों के; इवर् तम् मेति—इनके श्रीशरीर पर; वॆयिल् उऱऱ्कु—धूप पड़ेगी, इसकी; इरङ्कि—चिन्ता करके; मीतु आय्—इनके ऊपर जाकर; विरि चिरै—खुले पंखों का; पन्तर् नीङ्का—वितान न छोड़ें, इस तरह; इयल् वकुत्तु—सुन्दर ढंग से रचना करके; ॲय्तुकिऩ्ऱ—इनके साथ जाते हैं; इत्त मुकिल् कणङ्कळ्—श्रेष्ठ मेघों के समूह; ॲङ्कुम्—सब स्थानों पर; पयिल्वु उऱ—(इनसे) लगे रहकर; तिवलै चिन्ति—बूँदें गिराते हुए; पय पय—धीरे-धीरे; पाङ्कर—इनके समीप; ताऴुम्—नीचे-नीचे जाते हैं । ५४

इन सुन्दरवर्ण वीरों के शरीर पर धूप लगती देखकर मयूर आदि पक्षी दुःखी हैं। वे इनके ऊपर अपने पंख फैलाकर वितान-सा बनाये उनके साथ-साथ इस रीति से चलते हैं कि वे उस वितान के नीचे से अलग न हो जायँ। श्रेष्ठ मेघवृन्द भी, ये जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ-वहाँ छोटी बूँदें गिराते हुए उनके साथ-साथ धीरे-धीरे जाते हैं। वे नीचे-नीचे ही जाते हैं। ५४

❀ कायॆरि कनलुङ् गऱ्कळ् कळ्ळुडै मलरे पोलत्
तूयशॆङ् गमल पादन् दोय्दोऱुङ् गुऴैन्दु तोऩ्ऱुम्
पोयिऩ तिशैह डोऱु मरत्तोडु पुल्लु मॆल्लाम्
शाय्वुऱुम् दॊऴुव पोलिङ् गिवर्हळो दरुम मावार् 55

काय् ॲरि कऩलुम्—जलती आग के समान तपनेवाले; कऱ्कळ्—कंकड़ आदि; तूय—पवित्र; चॆम् कमल पातम्—लाल चरण-कमलों के; तोय् तोऱुम्—लगते-लगते; कळ् उटै मलरे पोल—मधु-भरे पुष्पों के समान; कुऴैन्तु तोऩ्ऱुम्—मृदुल बन जाते हैं; पोयिऩ तिचैकळ् तोऱुम्—ये जहाँ-जहाँ जाते हैं, उन सभी दिशाओं में; मरत्तोटु पुल्लुम् ॲल्लाम्—तरुओं के साथ घास आदि सभी; इङ्कु तॊऴुव पोल्—इस ओर प्रणाम करते जैसे; चाय्वुऱुम्—नत रहते हैं; तरुमम् आवार्—ये धर्ममूर्ति हैं; इवर्कळो—ये, क्या । ५५

(और भी विस्मयकारी बातों को देखता है हनुमान।) कंकड़, जो जलती अग्नि के समान जलाते हैं, इनके पवित्र और लाल कमल-से चरण लगते हैं तो शहद-भरे फूलों के समान कोमल हो जाते हैं। वे जिन-जिन दिशाओं में जाते हैं, वहाँ रहनेवाले तरु, घास आदि पादप इन्हीं की ओर झुक जाते हैं, मानो वे इनको प्रणाम कर रहे हों। ५५

❀ तुऩ्बिनैत् तॉडक्कु मायत् तॉल्विनै तुडैत्तु नीक्कित्
तॆऩ्बुलत् तऩ्ऱि मीळा नॆऱियुय्क्कुन् देव रोताम्
अॆऩ्बॆनक् कुरुहु हित्ऱ दिवर्हित्ऱ दळविल् कादल्
अऩ्बिनुक् कवदि यिल्लै यडैवॆऩ्गॊ लऱिद ट्रेऱ्ऱेऩ् 56

तुऩ्पित्तै–कष्टों को; तॊटक्कुम्–शृंखला में देनेवाले; माय तॊल् वितै–माया-जनित कर्म को; तुटैत्तु नीक्कि–पोंछ मिटाकर; तॆऩ् पुलत्तु अऩ्ऱि–दक्षिण में (यम) लोक न भेजकर; मीळा नॆऱि–आवर्त्तनहीन, मोक्षमार्ग में; उय्क्कुम्–पहुँचानेवाले; तेवरो ताम्–देव है क्या; अॆऩ्पु–हड्डियाँ; अॆनक्कु–मेरी; उरुकुकिऩ्ऱ–पानी हो जाती हैं; अळविल् कातल्–अपार स्नेह; इवर्किऩ्ऱतु–उठता है; अऩ्पिऩुक्कु–प्रेम का; अवति इल्लै–ठिकाना नहीं रहता; अटैवु अॆऩ् कॊल्–उपलब्धि क्या होगी; अऱितल् तेऱ्ऱेऩ्–जान नहीं पाता। ५६

(हनुमान अनुभव करता है कि उसके तन-मन में एक अगाध दैवी प्रेम व्याप्त हो रहा है।) आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक दुःखों को शृंखला में देनेवाले है पूर्वकृत कर्म। उनका नाश करके, दक्षिण के यमलोक में जाने से बचाते हुए मोक्षलोक में, जहाँ से लौटना नहीं होता, पहुँचना हो तो आदि परमात्मा देवों की कृपा से ही वह साध्य है। (हनुमान पूछता है कि) क्या ये ही वे देव हैं? वह कहता है कि मेरी हड्डियाँ जलप्राय हो रही है। अपार प्रेम उमड़ आता है। इनके प्रति उठनेवाले प्रेम का ठिकाना नही रहता। इसके फलस्वरूप क्या ही सौभाग्य जागने वाला है? वह जान नही पाता। ५६

❀ इव्वऴि यॆण्णि याण्डव् विरुवरु मॆय्द लोडुम्
शॆव्वऴि युळ्ळत् तालुन् दॆरिवुऱ वॆदिर्शॆऩ् ऱॆय्दिक्
कव्वैयिऩ् ऱाह नुङ्गळ् वरवॆनक् करुणै योनुम्
ऎव्वऴि नीङ्गि योय्नी यारॆऩ वियम्ब लुऱ्ऱाऩ् 57

चॆम् वऴि उळ्ळत्तातुम्–नेकमार्गगामी मन के हनुमान (के) भी; इ वऴि अॆण्णि–इस तरह सोचकर; आण्टु–वहाँ; अ इरुवरुम्–उन दोनों के; अॆय्तलोटुम्–आने पर; अॆतिर् चॆऩ्ऱु–सामने जाकर; तॆरिवु उऱ अॆय्ति–प्रकट रूप से पास पहुँचकर; नुङ्कळ् वरवु–आपका आगमन; कव्वै इऩ्ऱु–अमंगलरहित (शुभ); आक–हो; अॆन–कहने पर; करुणैयोनुम्–कृपालु (के) भी; नी–तुम; ऎ वऴि–कहाँ से; नीङ्कियोय्–आनेवाले हो; यार्–कौन; अॆन–पूछने पर; इयम्पल् उऱ्ऱाऩ्–(हनुमान) बोलने लगा। ५७

हनुमान नेकमन था। वह इस तरह सोचता रहा। तब श्रीराम और लक्ष्मण उसके पास आ गये। हनुमान उनके पास प्रकट होकर उनके सामने जा खड़ा हुआ और अभिनन्दन-वचन बोला कि आपका आगमन अशुभहीन (शुभ) हो। कृपालु श्रीराम ने पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो और कौन हो? हनुमान इसका उत्तर यों देने लगा। ५७

❀ मञ्जॅन्नत् तिरण्ड कोल मेलिय मह्ळिर्क् कॅल्लाम्
नञ्जॅन्नत् तहैय वाहि नळिरिरुम् बनिक्कुत् तेम्बाक्
कञ्जमॊत् तलर्न्द शॅय्य कण्णयान् काट्रिन् वेन्दर्
कञ्जनै वयिट्रिल् वन्दे नाममु मनुम नॆन्बेन् 58

मञ्चु अँन-मेघ-सम; तिरण्ट कोल-अधिक सुन्दर; मेलिय-शरीर वाले; मकळिर्क्कु अॅल्लाम्-सभी स्त्रियों के लिए (जो आप पर दृष्टि डालती है); नञ्चु अॅन-विष के-से; तकैय आकि-स्वभाव की बनकर; नळिर् इरुम् पत्तिक्कु-शीतल और कड़े हिम के सामने भी; तेम्पा-न मुरझानेवाले; कञ्चम् ऒत्तु-कमल के समान; अलर्न्त-विकसित; चॅय्य कण्ण-लाल आँखों वाले; यान्-मैं; काट्रिन्-वेन्तर्कु-वायुदेव का; अञ्चनै वयिट्रिल्-अंजना के गर्भ में; वन्तेन-उत्पन्न हुआ (पुत्र) हूँ; नाममुम्-नाम भी; अनुमन्-हनुमान; अॅन्पेन्-कहा जाता हूँ। ५८

बहुत ही सुन्दर मेघवर्ण! ऐसी आँखों वाले, जो सभी दर्शक स्त्रियों के लिए विष के समान हैं और शीतल ओस के पड़ने पर भी न मुरझाने वाले कमल के समान विकसित और लाल हैं! मैं वायुदेव का अंजना के गर्भ से आया पुत्र हूँ। मेरा नाम हनुमान है। ५८

❀ इम्मलै यिरुन्दु वाळु मॅरिहदिर्प् परिदिच् चॅल्वन्
शॅम्मलुक् केवल् शॅय्वेन् ऱेवनुम् वरवु नोक्कि
विम्मलुऱ् ऱनैया नेव विन्नविय वन्दे नॆन्ऱान्
अॅम्मलैक् कुलमुन् दाळ विशैशुमन् दॆळुन्द तोळान् 59

इचै चुमन्तु-कीर्ति धारण कर; अँ मलै कुलमुम्-किसी भी पर्वतकुल को; ताळ-नीचा दिखाते हुए; ऍळुन्त तोळान्-उन्नत उठे कंधों वाले (हनुमान) ने; इ मलै-इस पर्वत पर; इरुन्तु वाळुम्-रहकर वास करनेवाले; अॅरि कतिर्-गरम किरणों के; परिति-सूर्य के; चॅल्वन्-प्यारे पुत्र; चॅम्मलुक्कु-प्रभु (सुग्रीव) का; एवल् चॅय्वेन्-आज्ञाकारी हूँ; तेव-भगवान; नुम् वरवु नोक्कि-आपका आना देखकर; अनैयान्-उनके; विम्मल् उट्रु-घबड़ाकर; एव-प्रेरित करने पर; विन्नविय-पूछने के लिए; वन्तेन्-आया; अॅन्ऱान्-कहा। ५९

किसी भी पर्वतकुल को मात देनेवाली रीति से उन्नत और कीर्तिभार-वाही कन्धों के हनुमान ने आगे कहा कि इस पर्वत पर गरम किरण-माली सूर्यदेव का पुत्र वास कर रहे हैं। उनका मैं सेवक हूँ और उनकी आज्ञाएँ मान रहा हूँ। आपका आगमन देखकर वे घबड़ा गये। उनसे प्रेरित होकर मैं आपसे आपके सम्बन्ध में पूछने आया हूँ। ५९

❀ माट्रमः(ह्) दुरैत्त लोडुम् वरिशिलैक् कुरिशिन् मैन्दन्
तेट्रमुट् ट्रिवनि नूङ्गुच् चॅव्वियो रिन्मै तेट्रि
आट्रलु निरैवुङ् गल्वि यमैदियु मरिवु मॅन्नुम्
वेट्रुमै यिवन्नो डिल्लै यामॆन्न विळम्ब लुट्रान् 60

मार्ररम्–उत्तर; अ.'.तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; वरि चिलै–सवन्ध धनु के; कुरिचिल् मैन्तन्–चक्रवर्ती-कुमार; तेर्ररम् उर्रु–आश्वस्त होकर; इवतिन् ऊङ्कु–इससे बढ़कर; चेंव्वियोर् इन्मै–श्रेष्ठ का अभाव; तेरि–निश्चित रूप से जानकर; आर्ररलुम्–पराक्रम; निरैवुम्–गुणपूर्णता; कल्वि अमैतियुम्–विद्या से प्राप्त विनय; अरिवुम्–और ज्ञान; अँन्नुम्–आदि ये गुण; इवन्तोटु वेर्रुमै इल्लै आम्–इससे परे नहीं हैं; अँत्त–सोचकर; विळम्पल् उर्रान्–(लक्ष्मण से) बोलने लगे। ६०

हनुमान ने यह उत्तर दिया तो सवन्ध धनुर्धर चक्रवर्तीतनय श्रीराम को विश्वास हो गया। इससे बढ़कर उत्तम कोई नहीं होगा। यह निश्चय हुआ। पराक्रम, गुणपूर्णता, विद्या से प्राप्त विनय और ज्ञान —ये विशेषताएँ इससे पृथक् नहीं होंगी। यह धारणा बना लेकर श्रीराम लक्ष्मण से यों बोले। ६०

❀ इल्लाद वुलहत् तेङ्गु मिङ्गिव निशैहळ् कूरक्
कल्लाद कलैयुम् वेदक् कडलुमे येन्नुङ् गाट्चि
शोल्लाले तोन्रिर् रन्रे यार्कोलिच् चोल्लिन् शेल्वन्
विल्लार्तो ळिळैय वीर विरिञ्जनो विडैवल् लानो 61

इङ्कु–इस पृथ्वी में; इचैकळ् कूर–कीर्ति बढ़े, ऐसा; इवन् कल्लात–इसने जो नहीं सीखे; कलैयुम्–शास्त्र और; वेत कटलुम्–वेदों का सागर; उलकत्तु अँङ्कुमे–संसार में कहीं; इल्लात–नहीं होगे; अँन्नुम्–इसका; काट्चि–प्रत्यक्ष प्रमाण; चोल्लाले तोन्रिर्रु–इसके वचन से मिल जाता है; अन्रे–न; इ–यह; चोल्लिन् चेल्वन्–वाग्देवी-पुत्र (वचनसमर्थ); यार् कोल्–कौन होगा; विल् आर् तोळ्–धनुधारी कन्धों के; इळैय वीर–छोटे वीर; विरिञ्चनो–विरंचि है; विटै वल्लानो–या ऋषभवाहन शिव हैं। ६१

धनुधारी भुजा वाले छोटे वीर ! इस संसार में ऐसे शास्त्र या वेद-सागर नही है, जो इसने नहीं सीखे है। इससे उसकी कीर्ति विवर्धित रहती है। उसके वचन इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण है। है न यह बात ? यह सरस्वतीपुत्र (भाषण-चतुर) कौन होगा ? ब्रह्मदेव होगा या ऋषभ-वाहन समर्थ शिवजी ही होगा ? । ६१

माणियाम् वडिव मन्रु मर्रिवन् वडिव मैन्द
आणियिव् वुलहुक् कॅल्ला मॅन्नला मार्रर् केर्र
शेणुयर् पॅरुमै तन्नैच् चिक्करत् तेंळिन्देन् पिन्नरक्
काणुदि मॅय्म्मै यॅन्रु तम्बिक्कुक् कळरिक् कण्णन् 62

मैन्त–तात; इवन् वटिवम्–इसका सच्चा रूप; माणियाम् पटिवम् अन्रु–ब्रह्मचारी का रूप नहीं है; मर्रु–फिर; इ–इस; उलकुक्कु अॅल्लाम्–सारे संसार के लिए; आणि अॅन्नलाम्–धुर कह सकते हैं; आर्ररर्कु एर्र–इसके पराक्रम के

अनुरूप; चेण् उयर्-बहुत ही उत्कृष्ट; पॅरुमै तन्नै-गौरव को; चिक्कु अऱ-संशयहीन रीति से; तॅळिन्तेन्-जान गया; पिन्नर्-बाद; मॅय्म्मै-सच्चाई; काणुति-देखोगे; ॲन्ऱु-ऐसा; तम्पिक्कु-भाई को; कण्णन्-सबके नेत्रस्वरूप श्रीराम; कळऱि-कहकर। ६२

तात ! तुम जो ब्रह्मचारी का इसका वेश देख रहे हो, वह उसका सच्चा रूप नहीं है। फिर वह इस सारे संसार का धुर है ! इसका पराक्रम और उसके अनुरूप उसकी श्रेष्ठता —इनको मैं साफ़ पहचान रहा हूँ। तुम भी बाद उसको देखोगे। यह लक्ष्मण से कहकर श्रीराम— । ६२

❀ ॲव्वळि यिरुन्दान् शॊन्न कविक्कुलत् तरशन् याङ्गळ्
अव्वळि यवनैक् काणु मरुत्तियि नणुह वन्देम्
इव्वळि निन्नै युऱ्ऱॆमॆमक्कुनिन् निन्शॊ लन्न
शॆव्वळि युळ्ळत् तानैक् काट्टुदि यॆन्ऱान् 63

चॊन्न-(तुमसे) उक्त; कवि कुलत्तु अरचन्-कपिकुलाधिपति; ॲॅ वळि इरुन्तान्-किस स्थान पर रहते हैं; याङ्कळ्-हम; अ वळि-वहाँ (जाकर); अवनै काणुम्-उनको देखेंगे (उनसे मिलेंगे); अरुत्तियिन्-चाह के साथ; अणुक वन्तेम्-मिलने आये है; इ वळि-यहाँ; निन्नै उऱ्ऱ-तुमसे मिलकर; ॲमक्कु-हमें; निन् इन् चॊल् अन्न-तुम्हारे ही मधुर वचन के समान; चॅम् वळि उळ्ळत्तानै-सीधे मन के उनको; तॆरिय-परिचित कराते हुए; काट्टुति-दरसाओ; ॲन्ऱान्-कहा। ६३

हनुमान से बोले। उक्त वानरराज कहाँ है ? हम उन्हीं को उधर जाकर मिलने की उत्कंठा लेकर आये हैं। अब तुम हमें मिल गये हो। तुम्हारे मधुर वचन के समान ही मधुर-स्वभाव उनसे हमें मिला दो और परिचय करा दो। उन्हें दरसाओ। ६३

मादिरप् पॊरुप्पो डॊङ्गि वरम्बिला वुलहिन् मऱ्ऱिप्
पूदरप् पुयत्तु वीरर् नुम्मॊक्कुम् बुनिदर् यारे
आदरित् तवनैक् काण्डर् कणुहिनि रॆन्नि नन्नान्
तीदवित् तरिदिऱ् चॆय्द शॆय्दवच् चॆल्व नन्ऱे 64

मातिर पॊरुप्पोटु-दिशाओं को घेरकर रहनेवाले (चक्रवाल गिरि) के साथ; ओङ्कि-समान रूप से उन्नत; वरम्पु इला-निस्सीम; उलकिन्-लोक में; इ-यहाँ के; पूतर पुयत्तु-भूधर-सम कन्धों के; वीरर्-वीर; नुम् ऑक्कुम्-आपके समान; पुनितर्-पवित्र पुरुष; यारे-और कौन हैं; अवनै काण्टऱ्कु-उनको देखने के लिए; आतरित्तु-चाव के साथ; अणुकिनिर् ॲन्निन्-पधारे हों तो; अन्नान्-वे; तीतु अवित्तु-पाप मिटाकर; अरितिल् चॆय्त-कष्ट के साथ कृत; चॆय्तव चॆल्वम्-कर्तव्य तपस्या का धन; नन्ऱे-बड़ा अच्छा है ही। ६४

(हनुमान श्रीराम और लक्ष्मण से शिष्टता के साथ बोला।) दिशाओं

को घेरते हुए चक्रवाल पर्वत जो है, उनके साथ-साथ और उतने ही उन्नत बढ़े हुए भूधर-तुल्य कन्धों वाले वीर ! आपके समान पवित्र पुरुष दूसरे कौन होंगे ? यह बात है कि आप स्वयं उनसे मिलने की चाह लेकर पधारे हैं, तो पाप शान्त करते हुए उन्होने जो कर्तव्य तपस्या की है वह भाग्य-धन निश्चय ही श्रेष्ठ है ! । ६४

इरवितन् पुदल्वन् ऱन्नै यिन्दिरन् पुदल्व नॅन्नुम्
परिविलन् शीऱप् पोन्दु परुवरऱ् कॊरु वनाहि
अरुवियङ् गुन्ऱि नॅम्मो डिरुन्दन नवन्बाऱ् चॅल्वम्
वरुवदो रमैविन् वन्दीर् वरैयिनुल् वळर्न्द तोळीर् 65

वरैयिनुम् वळर्न्त तोळीर्–पर्वतों से भी उन्नत कन्धों वाले; इरवि तन् पुतल्वन् तन्ऩै–रवि-कुमार पर; इन्तिरन् पुतल्वन् ॲन्नुम्–इन्द्र के कुमार; परिवु इलन्–दयाहीन; चीऱ–(वालि) के क्रोध करने पर; परुवरऱ्कु ऒरुवन् आकि–दुःखसंतप्त निस्सहाय एकाकी बनकर; अरुवि अम् कुन्ऱिल्–नदीसहित (ऋष्यमूक) पर्वत पर; पोन्तु–आकर; ॲम्मोटु–हमारे साथ; इरुन्तनन्–रहते हैं; अवन् पाल्–उनके पास; चॅलवम् वरुवतु–संपत्ति आती हो; ओर् अमैविन्–ऐसी एक रीति में; वन्तीर्–आप पधारे हैं । ६५

भूधरों से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले ! रविसूनु सुग्रीव पर इन्द्र-पुत्र निर्दय वालि ने क्रोध दिखाया । सुग्रीव दुःखाक्रांत हुए । निस्सहाय और एकाकी बनकर वे सरिताओं से भूषित इस पर्वत पर आये और हमारे साथ (छिपे) रह रहे हैं । अब उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो जाय, ऐसा एक सन्दर्भ बनाते हुए आप पधारे है (या आप ही सम्पत्ति के समान पधारे हैं) । ६५

ऒडुङ्गलि लुलहम् यावु मुवन्दन वुदवि वेळ्वि
तॊडङ्गिन मऱ्ऱु मुऱ्ऱत् तॊल्लऱन् दुणिवर् शान्ऱोर्
कॊडुङ्गुलप् पहैञ नाहिक् कॊल्लिय वन्द कूऱ्ऱै
नडुङ्गिनर्क् कबय नल्हु मदनिनु नल्ल दुण्डो 66

चान्ऱोर्–श्रेष्ठ लोग; ऒडुङ्कल् इल्–अक्षय; उलकम् यावुम्–सारे लोक में; उवन्तन–लोग जो चाहते है; उतवि–उनको वह देकर; तॊटङ्कित वेळ्वि–आरब्ध यज्ञ आदि; मऱ्ऱुम्–अन्य कार्य; मुऱ्ऱ–पूरा करने के लिए; तॊल् अऱम्–प्राचीन धर्म पर; तुणिवर्–दृढ़ रहेंगे; कुल कॊटुम्–जीवकुल के भयंकर; पकैञन् आकि–शत्रु बनकर; कॊल्लिय वन्त–मारने आये; कूऱ्ऱै–यम से; नटुङ्कितर्क्कु–भयभीत हुए लोगों को; अपयम्–अभय-प्रदान; नल्कुम् अतनिनुम्–करने के उस काम से; नल्लतु उण्टो–अधिक श्रेष्ठ हैं क्या । ६६

श्रेष्ठ लोग प्राचीन धर्मों का पालन इसलिए करते हैं कि वे अक्षय संसार में सबको उनके माँगे पदार्थ दान दें और अपने आरब्ध यज्ञादि शास्त्रविहित

कर्म पूरा करें। पर जीवकुल का शत्रु बनकर आनेवाले यम से भयभीत लोगों को अभयदान देने से बड़ा धर्म कोई हो सकता है क्या ? । ६६

अॅम्मैये कात्ति रॅऩ्ऱ लॅळिदरो विमैप्पि लादोर्
तम्मैये मुदलिट् टाऩ्ऱ शराशरज् जमैत्त वाऱ्ऱल्
मुम्मैया मुलहुङ् गाक्कु मुदल्वर्नीर् मुरुहच् चॅव्वि
उम्मैये पुहल्बुक् केमुक् किदिन्वरु मुरुदि युण्डो 67

इमैप्पु इलातोर्–जो पलक नहीं गिराते; तम्मैये मुतल् इट्टु–उन देवों से लेकर; आऩ्ऱ–श्रेष्ठ; चराचरम् चमैत्त आऱ्ऱल्–जड़जंगमजग सृष्ट करने के सामर्थ्य के साथ; मुम्मैयाल् उलकम् काक्कुम्–त्रिलोकपालन करनेवाले; मुतल्वर् नीर्–परम देव आप ही हैं; अॅम्मैये–हम अकिंचन को; कात्तिर् अॅऩ्ऱल्–रक्षित करें, यह कहना; अॅळितु–छोटी बात है; मुरुक चॅव्वि उम्मैये–दिव्य सौंदर्ययुक्त आपके ही; पुकल् पुक्केमुक्कु–शरण आये हमें; इतिऩ्–इस (आपकी कृपा) से बढ़कर; वरुम् उरुति उण्टो–मिलनेवाला हित अन्य हो सकता है क्या। ६७

हे वीर ! आप अपलक देवों से लेकर चराचरमय सारे जग की सृष्टि करने के साथ-साथ त्रिलोक के पालन करने का भी सामर्थ्य रखनेवाले परम देव हैं। ऐसे आपसे, हमारी रक्षा की प्रार्थना करना बहुत ही अल्प विषय है। दिव्य सौन्दर्यमय आपकी शरण आये हैं —इससे बढ़कर और किस लाभ को अधिक हितकारी मानें ? । ६७

❀ यारॅऩ विळम्बु हेना नॅङ्गुलत् तिऱैवर् कुम्मै
वीरर्नीर् पणित्ति रॅऩ्ऱाऩ् मॅय्म्मैयिऩ् वेलि पोल्वाऩ्
वार्हळ लिळैय वीरऩ् मरबुळि वाय्मै यावुम्
शोर्विल ऩिलैमै यॅल्लाऩ् दॅरिवुऱच् चॊल्ल लुऱ्ऱाऩ् 68

मॅय्म्मैयिऩ् वेलि पोल्वाऩ्–सत्य(-खेत) के घेरे के समान (सत्यसेतु) हनुमान ने; नाऩ्–दास मैं; अॅम् कुलत्तु इऱैवर्क्कु–हमारे कुल के नायक को; उम्मै–आपको; यार् अॅन विळम्पुकेन्–कौन कहकर परिचय दूं; वीरर्–वीर; नीर पणित्तिर्–आप आज्ञा दीजिए; अॅऩ्ऱाऩ्–पूछा; वार् कळल्–(स्वर्ण की) ढली पायल से भूषित; इळैय वीरऩ्–लघु वीर लक्ष्मण ने; वाय्मै यावुम्–सभी सच्ची घटनाएँ; चोर्विलऩ्–विना कोई अंश छोड़े; 'मरपुळि–यथाक्रम; निलैमै अॅल्लाम्–सारी स्थिति; तॅरिवु उऱ–साफ़ करते हुए; चोल्लल् उऱ्ऱाऩ्–कहना प्रारम्भ किया। ६८

हनुमान ने, जो सत्य के खेत के घेरे के समान (सत्यसेतु) था, आगे बहुत ही चातुर्य के साथ पूछा कि हे वीर ! अपने कुल के नायक सुग्रीव के पास मैं आपका कौन सा परिचय दूँ ? आपको कौन बतलाऊँ ? आप ही आज्ञा दें। तब स्वर्ण की ढली पायल से अलकृत छोटे वीर लक्ष्मण सारी सच्ची घटनाएँ विना छूट के साफ़ समझाते हुए बताने लगे। ६८

❀ शूरियन् मरबिऱ् ऱोन्ऱिच् चुडर्नॅडु नेमि याण्ड
आरिय न्नमरर्क् काहि यशुररै यावि युण्ड
वीरियन् वेळ्वि मुऱ्ऱि विण्णुल होडु माण्ड
कारियऱ् करुणै यन्नन कण्णहन् कविहै मन्नन् 69

चूरियन् मरपिल्–सूर्य के वंश में; तोन्ऱि–प्रकट होकर; चुटर् नॅटु नेमि–उज्ज्वल, बड़ा (आज्ञा-)चक्र; आण्ट–जिन्होंने चलाया; आरियन्–वे उत्तम राजा; अमरर्क्कु आकि–सुरों के लिए; अचुररै–(शंवर आदि) असुरों के; आवि उण्ट–प्राण खाने (हरने) वाले; वीरियन्–प्रतापी; वेळ्वि मुऱ्ऱि–यज्ञ सम्पन्न करके; विण् उलकोटुम्–आकाश का भूमि के साथ; आण्ट–जिन्होंने शासन किया; कार् इयल्–मेघ का स्वभाव; करुणै अन्न–(जो कृपा है) उसके समान कृपालु; कण् अकल्–विशाल; कविकै मन्नन्–छत्रधारी। ६९

सूर्यवंशोत्पन्न; उज्ज्वल और विशाल आज्ञाचक्र चलानेवाले; सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम; देवों के हितार्थ शवरासुर आदि असुरों के मारक प्रतापी; अनेक यज्ञ सुसम्पन्न करके जिन्होंने आकाश के साथ भूमि पर शासन किया; मेघ के समान करुणा का स्वभाव रखनेवाले और विशाल छत्र (राज्य)-धारी; । ६९

[इसके बाद टी०के०सी के संकलन मे निम्नलिखित पद पाया जाता है। यद्यपि प्रस्तुत संकलन मे उसको क्षेपक माना गया है, तो भी चूंकि टी०के०सी इसे प्रामाणिक मानते है, इसलिए हम मूल पद और भावार्थ दे रहे है।]

❀ पुयल्रु मतत्तिण् कोट्टुप् पुहर्मलैक् किऱैयै यूर्न्दु
सयल्रु मवुणर् यारु मडिदर वरिविऱ् कॊण्ड
इयल्रु पुलमैच् चॅङ्गोन् मनुमुदल् यारु मोव्वात्
तयरदन् कनह मोऱ्दुत् तडमदि लयोत्ति वेन्दन् (69 अ)

मेघ के समान मद बहानेवाले, कठोर दाँतों से युक्त और मुख पर लाल बिन्दियों के साथ दृश्यमान गजराज पर चढ़कर जिन्होंने धनु के सहारे युद्ध किया और सारे असुरों को मरवाया; जो सहज मेधावी, नेक दण्डधर और मनु से लेकर किसी भी राजा से अनुपमेय (अधिक) सुशासक थे, दशरथ नाम के वे स्वर्णमहलों से भरी, विशाल प्राचीरों-सहित अयोध्यानगरी के राजा थे। ६९ (अ)

❀ अन्नवन् शिरुव नामिव् वाण्डहै यन्नै येवत्
तन्नुडै युरिमैच् चॅल्वत् दम्बिक्कुत् तहवि नल्हि
नन्नॅडुङ् गानज् जेर्न्दा नामसु मिराम नॅन्बान्
इन्नॅडुञ् जिलैव लानुक् केवल्शॅय् यडियन् याने 70

अन्नवन् चिऱुवन् आम्–उनका पुत्र; इ आण् तकै–ये पुरुषश्रेष्ठ; अन्नै एव–माता की आज्ञा से; तन् उटै उरिमै चॅल्वम्–अपने स्वत्व का राज्यधन; तम्पिक्कु–

अपने छोटे भाई को; तकविन् नल्कि—उदारता के साथ देकर; नल् नॅटुम् कातम्—बहुत ही बड़े जंगल में; चेर्न्तात्—आ गये; नाममुम् इरामन् ॲन्पान्—नाम के भी श्रीराम हैं; इ—इन; नॅटुम् चिलै—बड़े धनु में; वलान्कु—समर्थ श्रीराम की; एवल् चॅय्—सेवा करनेवाला; अटियन्—दास; यान्—मैं हूँ। ७०

ये पुरुषश्रेष्ठ उनके पुत्र हैं। माता की आज्ञा मानकर ये अपने स्वत्व का राज्य आदि धन अपने छोटे भाई के हाथ उदारता के साथ सौंप कर इस अति विपुल कानन में पधारे हैं। इनका नाम भी सुनो— श्रीराम है। इन लम्बे और धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम की सेवा करनेवाला किंकर हूँ मैं। ७०

※ ॲन्ड्रवन् रोड्र मादि यिरावण निळैत्त मायप्
पुन्रॉळि लिरुदि याहप् पुहुन्दुळ पॉरुळ्ह ळॅल्लाम्
ऑन्ड्रमाण् डॉळिवु ऱाम लुणर्त्तिन नुणर्त्तक् केट्टु
निन्ड्रवक् कालिन् मैन्द नॅडिदुवन् दडियिर् ऱाळ्न्दान् 71

ॲन्ड्र—ऐसा; अवन् तोट्रम् आति—उनके अवतार से लेकर; इरावणन् इळैत्त—रावण-कृत; माय पुन् तॉळिल्—वंचनापूर्ण नीच काम; इरुति आक—तक; पुकुन्तु उळ—घटित; पॉरुळ्कळ् ॲल्लाम्—सारी घटनाएँ; ऑन्ड्रुम्—(कुछ) एक भी; ऑळिवु उऱामल्—न छोड़कर; आण्टु—तब; उणर्त्तिनन्—जतलायीं; उणर्त्त केट्टु—बतायी गयी बातें सुनकर; निन्र—उनके सामने स्थित; अ कालिन् मैन्तन्—वह पवनकुमार; नॅटितु उवन्तु—बहुत प्रसन्न होकर; अटियिल्—उनके चरणों पर; ताळ्न्तान्—झुका। ७१

लक्ष्मण ने ऐसा श्रीराम के अवतार से लेकर रावण-कृत वंचक नीच कर्म तक की सारी घटनाएँ विना किसी अन्तर के कह सुनायीं। वह सुनकर वायुकुमार बहुत प्रसन्नता के साथ श्रीराम के श्रीचरणों पर झुका। ७१

※ ताळ्दलुन् दहाद शॅय्द दॅन्नॆनो दरुम मन्ड्राल्
केळ्विनून् मऱैव लाळा वॅन्ड्रनन् नॅन्नक् केट्ट
पाळियन् दडन्दोळ् वॅन्ड्रि मारुदि पदुमच् चॅङ्गण्
आळियाय् अडिय नेनु मरिहुलत् तॉरुव नॅन्ड्रान् 72

ताळ्तलुम्—झुकने पर; केळ्विनूल् मऱै—श्रौत और स्मार्त वेदों के; वलाळा—विद्वान; नी—तुमने; तकाततु चॅय्ततु—अनुचित किया; ॲन्नै—वह क्यों; तरुमम् अन्रु—धर्मसम्मत नहीं है; ॲन्ड्रनन्—श्रीराम ने कहा; ॲन्न—कहना; केट्ट—सुनकर; पाळि—स्थूल; अम्—सुन्दर; तटम् तोळ्—विशाल कन्धों के; वॅन्ड्रि—विजयी; मारुति—मारुति ने; पतुमम् चॅम् कण् आळियाय्—लाल कमल-सी आँखों के चक्रधारी; अटियनेनुम्—दास मैं भी; अरि कुलत्तु—कपिकुल का; ऑरुवन्—एक हूँ; ॲन्ड्रान्—कहा। ७२

उसके प्रणाम करने पर श्रीराम ने पूछा कि हे! यह क्या कर रहे हो?

श्रवण द्वारा वेद और शास्त्रों में दक्षताप्राप्त विप्र ! यह अनुचित कार्य किया, वह क्यों ? यह धर्मसम्मत नहीं है। यह सुनकर स्थूल, सुन्दर, विशाल और विजयी भुजाओं वाले हनुमान ने निवेदन किया कि पद्मपत्र-अरुणाक्ष ! चक्रधारी ! दास मैं भी उसी कपिकुल का एक हूँ। ७२

* मिऩ्ऩुरुक् कॊण्ड विल्लोर् वियप्पुऱ वेद नऩ्नूल्
पिऩ्ऩुरुक् कॊण्ड दॆऩ्ऩुम् पॆरुमैयाम् बॊरुळुम् नाणप्
पॊऩ्ऩुरुक् कॊण्ड मेरु पुयत्तिऱ्कु मुवमै पोदात्
तऩ्ऩुरुक् कॊण्डु निऩ्ऱाऩ् ऱरुमत्तिऩ् ऱऩिमै तीर्प्पाऩ् 73

तरुमत्तिऩ् तऩिमै–धर्म का एकाकीपन (धर्म की निस्सहायता); तीर्प्पाऩ्–दूर करनेवाला; मिऩ् उरु कॊण्ट–विद्युतस्वरूप; विल्लोर्–धनुर्धरों को; वियप्पु उऱ–विस्मय में डालते हुए; वेतम् नल् नूल–वेद आदि शास्त्रों ने; पिऩ् उरु कॊण्टतु ऎऩ्ऩुम्–बाद यह रूप लिया हो, ऐसा; पेरुमै आम् पॊरुळुम्–गौरव नामक तत्त्व भी; नाण–लजा जाय, ऐसा; पॊऩ् उरु कॊण्ट–स्वर्णरूप; मेरु–मेरु पर्वत भी; पुयत्तिऱ्कु–(हनुमान की) भुजा की; उवमै पोता–उपमा न वन सके, ऐसा; तऩ् उरु कॊण्टु–अपना रूप (विश्वरूप) लेकर; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। ७३

यह कहकर धर्म की निस्सहायता दूर करने के लिए धर्मसहायक के रूप में अवतरित हनुमान अपना निजी (बड़ा भारी) रूप लेकर उनके सामने खड़ा हुआ। तब विद्युतस्वरूप धनु के धारक श्रीराम और लक्ष्मण अपार विस्मय में पड़ गये। वेद आदि शास्त्रों ने एक नया रूप लिया हो, ऐसा; गौरव का तत्त्व भी उनकी गुरुता को देखकर लजा जाय, ऐसा; स्वर्णमय मेरुपर्वत भी उनकी भुजा की उपमा न बन सके, ऐसा वह हनुमान दृश्यमान रहा। ७३

कण्डिल नुलह मूऩ्ऱुङ् गालिऩाऱ् कडन्दु कॊण्ड
पुण्डरी हक्क णाऴिप् पुरवलऩ् पॊलऩ्गॊऴ् शोदिक्
कुण्डल वदन मॆऩ्ऱाऱ् कूऱलाऩ् दहैमैत् तॊऩ्ऱो
पण्डैनूऱ् कदिरोऩ् शॊल्लप् पडित्तऩऩ् पडिव मम्मा 74

उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों को; कालिऩाल्–अपने श्रीचरणों से; कटन्तु कॊण्ट–मापकर (जिन्होंने) तीर्ण किया; पुण्टरीक कण्–वे पुण्डरीकाक्ष; आऴि–चक्रधर; पुरवलऩ्–जगन्नाथ; पॊलऩ् कॊऴ् चोति–स्वर्णमय उज्ज्वल; कुण्टल–कुण्डलों से भूषित; वततम्–(हनुमान का) आनन; कण्टिलऩ् ऎऩ्ऱाल्–नहीं देख पाये तो; पण्टै नूल्–अति प्राचीन शास्त्र (व्याकरण आदि); कतिरोऩ् चॊल्ल–सूर्य के सिखाने पर; पटित्ततऩ्–जिन्होंने अध्ययन किये थे; पटिवम्–उनका आकार; कूऱल् आम् तकैमैत्तु ऒऩ्ऱो–वर्णन-योग्य एक विषय है क्या। ७४

तब अपने श्रीचरणों से जिन्होंने त्रिलोक को तीर्ण किया था, वे पुंडरीकाक्ष चक्रधर प्रभु स्वर्णमयकुण्डल-भूषित हनुमान का मुख देख नहीं

सके तो उस हनुमान का रूप वर्ण्य एक विषय हो सकता है क्या, जिसने सूर्य से शिक्षा लेकर प्राचीन व्याकरणादि शास्त्रों का अध्ययन किया था ? । ७४

❀ ताट्पडाक् कमल मन्न तडङ्गणान् उम्बिक् कम्मा
कीट्पडा निन्उ नीक्किक् किळर्पडा दाहि यॅन्रुम्
नाट्पडा मरैह ळानु नवैपडा ञानत् तालुम्
कोट्पडाप् पदमै यॆय कुरक्कुरुक् कॊण्ड दॆन्रान् 75

ताळ् पटा–नाल पर जो न उगा हो; कमलम् अन्नत्–उस कमल के समान; तटम् कणान्–विशाल आँखों वाले; तम्पिक्कु–अपने छोटे भाई से; ऐय–तात; कीळ् पटा निन्उ–अधोस्थितियाँ; नीक्कि–छोड़कर; किळर् पटातु आकि–अमन्द न पड़कर; ॲन्रुम्–सदा; नाळ् पटा–कालातीत; मरैकळालुम्–वेदों द्वारा; नवै पटा–(और) निर्दोष; ञानत्तालुम्–ज्ञान द्वारा; कोळ् पटा–अग्राह्य; पतमै–तत्त्व ने ही; कुरक्कु उरु–वानर का रूप; कॊण्टतु–लिया है; ॲन्रान्–कहा; अम्मा–मैया री । ७५

श्रीराम ऐसे कमल के दल के समान विशाल आँखों वाले थे, जो मामूली नाल पर नहीं उगा था (जो दिव्य था)। उन्होंने अपने छोटे भाई से कहा कि भैया! यह देखो। यह मामूली वानर का रूप नहीं। यह उस सनातन तत्त्व का वानर-रूप है, जो नीची स्थितियों और गतियों से परे है; जो सदा प्रकाशमय है; जो कालातीत है; और जो वेदों और निर्दोष ज्ञान द्वारा भी अग्राह्य है ! आहा मैया ! कितना अद्भुत है ! । ७५

❀ नल्लन निमित्तम् बॆऱ्ऱे नम्बियैप् पॆऱ्ऱेम् नम्बाल्
इल्लैये तुन्ब मान दिन्बमु मॆय्दिऱ् ऱामाल्
विल्लिना यिन्नैयन् बोलाङ् गविकुलक् कुरिशिल् वीरन्
चौल्लिना लेवल् शॆय्वा नवनिले शॊल्लऱ् पाऱ्ऱो 76

विल्लिताय्–धनुर्धर; नल्लन–अच्छे; निमित्तम्–शकुन; पॆऱ्ऱेम्–पाये (हमने); नम्पियै पॆऱ्ऱेम्–(उसी से) पुरुषनायक यह मिला है; नम्पाल्–(अब) हमारे पास; तुन्पम् आततु–संकट; इल्लैये–नहीं रहे; इन्पमुम्–सुख भी; ॲय्तिऱ्ऱ आम्–मिल गये; इन्नैयन्–ऐसा (वीर); कवि कुल कुरिचिल्–वानरकुल-पति; वीरन्–(और) वीर (सुग्रीव) की; चौल्लिताल्–आज्ञा के वचन के अनुसार; एवल् चॆय्वान् पोल् आम्–कैंकर्य करनेवाला लगता है तो; अवन् निलै–उसकी स्थिति; चौल्लल् पाऱ्ऱो–(श्रेष्ठता) बतायी जा सकती है क्या । ७६

श्रीराम ने आगे कहा— धनुधारी लक्ष्मण ! हमारे शुभ शकुन हो गये। तभी पुरुषनायक यह प्राप्त हुआ है। अब हमारे पास कोई संकट नहीं रहा। सुख ही सुख आ गया। ऐसा यह वीर कपिकुल के

राजा का आज्ञाकारी दास है —यह सुनते है। तब तो वह राजा कैसा होगा ? उसकी श्रेष्ठता बतायी जा सकेगी क्या ? ।७६

❀ ऎन्ऱह मुवन्दु कोल मुहमलर्न् दिनिदि निन्ऱ
कुन्ऱुऱळ् तोळि नानै नोक्किय कुरक्कुच् चीयम्
शॆन्ऱवन् ऱन्नै यिन्ने कॊणर्हिन्ऱेन् शिऱिदु पोळ्दु
वॆन्ऱियि रिरुत्ति ऎन्ना विडैपॆऱ्ऱु विरैविऱ् पोनान् 77

ऎन्ऱु–ऐसा कहकर; अकम् उवन्तु–मन से मुदित होकर; कोलम् मुकम् मलर्न्तु–सुन्दर मुख पर सन्तोष प्रकट करते हुए; इतितिन् निन्ऱ–प्रसन्न खड़े रहे; कुन्ऱु उऱळ्–पर्वत-सम; तोळितातै–कन्धो वाले को; नोक्किय–देखकर; कुरक्कु चीयम्–वानरसिंह; चॆन्ऱु–जाकर; इन्ऩे–अभी; अवन् तन्तै–उनको; कॊणर्किन्ऱेन्–लाता हूँ; वॆन्ऱियिर्–विजयी वीर; चिऱितु पोळ्तु–थोड़ी देर; इरुत्तिर्–ठहरिए; ऎन्ना–कहकर; विटै पॆऱ्ऱु–विदा लेकर; विरैविल् पोतान्–शीघ्र गया। ७७

ऐसा श्रीराम ने प्रफुल्ल-चित्त होकर कहा। उनका मुख भी सन्तोष के कारण प्रकाशमय हो रहा। बहुत ही प्रसन्नता के साथ अपने सामने स्थित पर्वत-सम भुजा वाले श्रीरम को वानरसिंह हनुमान ने देखकर निवेदन किया कि विजयी वीर! मैं अभी जाकर उन्हे बुला लाता हूँ। थोड़ी देर ठहरे रहें। हनुमान ने यह कहकर उनसे आज्ञा ली। फिर वह बहुत शीघ्र चला। ७७

3. नट्पुप् पडलम् (मैत्री पटल)

पोनमन् दरमणिप् पुयनॆड्म् बुहळितान्
आनदन् नरिहुलत् तरशन्मा डणुहिनान्
यानुमुन् कुलमुमिव् वुलहुमुय्न् दन्ऎन्ना
मानवन् गुणमॆला निनैयुमा मदियिनान् 78

पोत–जो गये; मन्तरम्–मंदरगिरि-सम; मणि पुयम्–सुन्दर भुजा वाला; नॆट्टम् पुकळितान्–बड़े यश वाला; मानवन्–मानव श्रीराम के; कुणम् ऎलाम्–सर्व कल्याणगुणगणों के; निनैयुम्–स्मरणकारी; मा मतियितान् आन–बड़ा बुद्धिमान जो था; यानुम्–मै भी; उन् कुलमुम्–तुम्हारा कुल और; इ उलकुम्–यह लोक; उय्न्ततम्–तर गये; ऎन्ना–कहते हुए; तन्–(हनुमान) अपने; अरि कुलत्तु अरचन् माटु–वानरकुल के राजा के पास; अणुकितान्–पहुँचा। ७८

हनुमान मन्दर पर्वत-सम सुन्दर भुजाओं के और बहुत बड़ी कीर्ति के स्वामी सम्माट्य श्रीराम के सब दिव्य और कल्याणगुणों का स्मरण करते हुए चला। कपिकुल-राज सुग्रीव के पास यह कहते हुए पहुँचा कि मैं तर गया; आप तर गये और आपके कुल का भी उद्धार हो गया। ७८

मेलवन् रिरुमहर् कुरैशेयदान् विरैशेयदार्
वालियेन् उळविला वलियिना नुयिर्तेरक्
कालन्वन् दननिडर्क् कडलहडन् दनमेना
आलमुण् डवनिनिन् रुनडम् बुरिहुवान् 79

आलम् उण्डवतिन्–हलाहल (विष-) पायी के समान; निन्रु–स्थित होकर; अरु नटम् पुरिवान्–अतिशय नृत्य करनेवाला; विरै चेय्–सुवासदायी; तार्–मालाधारी; वालि–वाली; ऍन्नुरु–नाम के; अळवु इला–अपार; वलियितान्–बली के; उयिर् तेर–प्राणों को तोड़ने; कालन् वन्ततन्–यम आ गया; इटर् कटल्–संकटसागर; कटन्ततेम्–तारण कर लिया; ऍना–ग्रह; मेलवन्–ऊपर के (सूर्य) देव के; तिरुमकर्कु–सुपुत्र से; उरै चेय्तान्–बोला। ७९

हनुमान हलाहलविषपायी शिवदेव के समान नृत्य करते हुए बोला कि सुगन्ध छिटकानेवाली माला के धारक और अपार बली वाली के प्राण हरने के लिए यम आ गये। हम भी दुःख-सागर पार कर गये! हनुमान ने आकाशचारी सूर्यदेव के पुत्र सुग्रीव से ये बातें कहीं। ७९

मण्णुळार् विण्णुळार् मारुळार् वेरुळार्
ऍण्णुळार् दिशैयुळा रियलुळा रिशैयुळार्
कण्णुळा रायिनार् पहैयुळार् कळिन्नेडुम्
पुण्णुळा रारुयिर्क् कमिळ्दमे पोलुळार् 80

मण् उळार्–भूलोकवासी; विण् उळार्–व्योमवासी; मारु उळार्–इतर (पाताल) लोकवासी; वेरु उळार्–अन्य लोग; तिचै उळार्–दिशाओं के वासी; ऍण् उळार्–स्मरण करनेवालों के लिए; इयल् उळार्–बुद्धि-रूप जो रहते हैं; इचै उळार्–कीर्तिस्वरूप जो रहते हैं; कण् उळार्–नेत्रस्वरूप जो रहते हैं; आयितार्–वे बने रहते हैं; पकै उळार् जिनके शत्रु हैं; कळि नॆटुम् पुण् उळार्–और जिनके (शत्रु द्वारा) प्राप्त बड़े गहरे घाव हैं; आर् उयिर्क्कु–उन जीवों के लिए; अमिळ्तमे पोल्–अमृत के ही समान; उळार्–रहनेवाले (वे वीर हैं।)। ८०

हनुमान ने श्रीराम का और भी गुणगान किया। वे वीर पृथ्वी में, व्योम में, इनसे अलग नागलोक में, इतर लोकों में या किसी भी दिशा में रहनेवालों में अपना स्मरण करनेवाले भक्तजनों के लिए बुद्धि, कीर्ति और नेत्रों के समान सहायता करनेवाले हैं। उनमें जिनके शत्रु हैं और जिन्हें शत्रु के कारण बहुत गहरे व्रण (पीड़ा और दुःख) हो गये हैं, उनके लिए देवामृत के समान (तापहारी) हैं। ८०

शूळिमाल् यानैयार् तोळुहळर् उयरदन्
पाळिया रुलहेला मोरुवळिप् पडरवाळ्
आळियान् सैलुवरपे ररिविना रळहिनार्
उळिया लिनिदुनक् करशुदन् दुदविनार् 81

सूऴि–मुखपट्ट-सहित; माल् यातैयार्–वड़े गजों के स्वामी राजाओं से; तॊऴु कऴल्–नमस्कृत पायल-चरण; तयरतन्–दशरथ; पाऴि आर् उलकु ऎलाम्–बड़े-वड़े सभी लोकों को; ऒरुवऴि पटर–अपने शासनाधीन कर चलाते (पालते) हुए; वाऴ्–जो रहे; आऴियान्–उन चक्रवर्ती के; मैन्तर्–पुत्र हैं; पेर् अऴकित्तार्–बड़े ही सुन्दर; अऱिवित्तार्–और मेधावी; ऊऴियाल्–विधिवत; उतक्कु–आपको; इतितु अरचु तन्तु–सुख से राज्य प्रदान कर; उतवित्तार्–उपकार करनेवाले हैं। ८१

(हनुमान श्रीराम का चरित्र और परिचय यों देता है—) वे चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र है, जिनके पायल-चरणों पर मुखपट्ट से अलंकृत वड़े गजों के स्वामी राजा लोग विनत होते थे और जो सभी विश्वों को अपने एकछत्र शासन के अधीन करके चलाते रहे थे। वे वड़े ही सुन्दर है और मेधावी भी। वे ही विधिवत आपको राज्य प्रदान करके उपकार करनेवाले हैं। ८१

नीदियार् करुणैयित् नॆऱियिनार् नॆऱिवयित्
पेदिया निलैमैया रॆवरिनुम् पॆरुमैयार्
पोदिया दळविला वुणर्विनार् पुहऴिन्नार्
कादियार् शेय्दरुङ् गडवुळ्वॆम् बडैयिनार् 82

नीतियार्–(और) न्यायी; करुणैयित् नॆऱियित्तार्–करुणा के मार्ग पर चलनेवाले; नॆऱि वयित्–न्याय-मार्ग से; पेतिया निलैमैयार्–न हटने के स्वभाव वाले; ऎवरित्तुम्–किसी से भी; पॆरुमैयार्–अधिक सम्मान्य; पोतियातु–विना पर-बोधन के ही; अळवु इला–अपार; उणर्वित्तार्–प्रतिभाशाली; पुकऴित्तार्–कीर्तिमान; कातियार् चेय्–गाधिपुत्र; तरुम्–(द्वारा) दिये गये; कटवुळ्–दिव्य; वॆम् पटैयितार्–प्रतापी अस्त्रों वाले। ८२

(और भी—) वे न्यायी है। करुणावलम्बी हैं। न्यायमार्ग से न हटनेवाले किसी से भी ये अधिक गौरववान हैं। विना किसी के वोधन से ही वे प्रतिभावान अपार ज्ञानी रहते हैं। वड़े कीर्तिमान और गाधिपुत्र कौशिकजी के द्वारा प्रदत्त दिव्य और प्रतापी अस्त्रों वाले हैं। ८२

वेलिहऱ् चिनवुता डहैविऴिन् दुरुळविऱ्
कोलियक् कॊडुमैयाळ् पुदल्वनैक् कॊन्ऱुदन्
कालियऱ् पॊडियिना नॆडियहऱ् पडिवमाम्
आलिहैक् कुरियपे रुरुवळित् तरुळिनान् 83

वेल् इकल्–त्रिशूल लेकर युद्ध करनेवाली; चितवु ताटकै–क्रोधी ताड़का; विऴिन्तु उरुळ–मरकर गिर पड़े, ऐसा; विल् कोलि–धनु प्रयोग करके; अ कॊटुमैयाळ्–उस अत्याचारिणी के; पुतल्वतै कॊन्ऱु–पुत्र (सुबाहु) को मारकर; तन् काल् इयल्–अपने श्रीचरणों पर लगी; पॊटियित्ताल्–धूली से; नॆटिय कल्–बड़े प्रस्तर के; पटिवम् आम्–रूप में रही; आलिकैक्कु–अहल्या को; उरिय–उनका अपना; पेर् उरु–मान्य रूप; अळित्तु–देकर; अरुळित्तान्–कृपा की। ८३

उन्होंने त्रिशूल लेकर लड़नेवाली ताड़का को अपने धनु को झुकाकर (अस्त्र चलाकर) मारा; उस अत्याचारिणी के पुत्र सुबाहु को मारा। और अपने चरणों पर लगी धूल के पवित्र प्रताप से उन्होंने (श्रीराम ने) बड़े पत्थर के रूप में पड़ी जो रहीं, उन अहल्या को उनका अपना रूप दिलाकर उपकार किया था। ८३

नल्लुरुप् पमैयुतम् बियरिन्मुन् तवन्नयन्
दॅल्लुरुप् परियपे रॅरिशुडर्क् कडवुडन्
पल्लिरुत् तवन्वलिक् कमैतियम् बहमॅन्नुम्
विल्लिरुत् तरुळिनान् मिदिलैपुक् कणैयुनाळ् 84

नल् उरुप्पु अमैयुम्–शुभ अंग-लक्षणों के बने; नम्पियरिन्–नायकों में; मुन्नवन्–ज्येष्ठ श्रीराम; मितिलै पुक्कु–मिथिला में प्रवेश कर; अणैयुम् नाळ्–जब गये तब; ऍल् उरुप्पु–प्रकाश की किरणों के; अरिय–अपूर्व; पेर्–बड़े; ऍरि चुटर् कटवुळ् तन्–गरम किरणमाली सूर्यदेव के; पल् इरुत्तवन्–दाँत जिन्होंने तोड़े थे; वलिक्कु अमै–उन शिवजी की शक्ति के अनुरूप बने; तियम्पकम् ऍन्नुम्–त्र्यंबक नाम के; विल् नयन्तु–धनु को प्यार के साथ उठाकर; इरुत्तु अरुळिनान्–तोड़कर कृपा की। ८४

दोनों लक्षणपूर्ण अंगों के सुन्दर रूपधर हैं। उनमें ज्येष्ठ श्रीराम ने मिथिला में जाकर रहते समय, गरम किरणमाली सूर्यदेव के दाँतों के भंजक शिवजी के धनुष को तपाक से उठाया और भग्न करके उपकार किया। (दक्ष-यज्ञ के अवसर पर शिवजी ने सूर्य के दाँत तोड़े थे।)। ८४

उळैवयप् पुरवियान् नुदववुड् रॉरुशॉलाल्
अळविल्कड् पुडैयशिड् ड्रवैपणित् तरुळलाल्
वळैयुडैप् पुणरिशूळ् महितलत् तिरुवॅलाम्
इळैयवड् कुदवियित् तलैयॅळुन् दरुळिनान् 85

उळै वयम्–अयालसहित बलवान; पुरवियान्–अश्वों के स्वामी (दशरथ) से; उतव उड्र–दिया जाकर; अळवु इल् कड्पु उटैय–अपार पातिव्रत्यशीला; चिड्ड्रवै–छोटी माता के; ओर् चॊलाल्–एक वचन के कारण; पणित्तु अरुळलाल्–आज्ञा देने से; पुणरि चूळ् वळै उटै–समुद्र से जो घेरी गयी है; मकितलम् तिरु ऍलाम्–भू की सम्पत्ति, सब; इळैयवड्कु–छोटे भाई को; उतवि–उपकार-बुद्धि के साथ देकर; इ तलै–इस ओर; ऍळुन्तरुळिनान्–कृपा करके पधारे हैं। ८५

अयाल वाले बलिष्ठ अश्वों के स्वामी चक्रवर्ती दशरथ ने अपनी इच्छा से राज्य को श्रीराम को दिया। पर बड़ी पातिव्रत्यशीला श्रीराम की विमाता कैकेयी को दशरथ ने वर का वचन दिया था। उसकी प्राप्ति में विमाता ने श्रीराम को आज्ञा दिलायी कि वन जाओ। उस आज्ञा को

मानकर समुद्रवलयित राज्यश्री और अपनी सारी सम्पत्ति को अपने छोटे भाई (कैकेयी के पुत्र) को देकर के श्रीराम इस ओर पधारे हैं। ८५

तॅव्विरा	वहैनॅडुम्	जिहैविरा	मळुवित्तान्
अव्विरा	मन्नैयुमा	वलितॉलैत्तु	तरुळित्तान्
इव्विरा	हवन्वॅहुण्	डॅळुमिरा	वन्नैयत्ताम्
अव्विरा	दनैयिरा	वहैदुडैत्तु	तरुळित्तान् 86

इ इराकवन्–इन श्रीराम ने; तॅव् इरा वकै–शत्रु ही न रहें, ऐसा; नॅटुम् चिकै–लम्बी ज्वालाओं से; विरा–युक्त; मळुवित्तान्–परशु वाले; अ इरामनैयुम्–उन (परशु-) राम को; मा वलि तॉलैत्तु–उनका बल मिटाकर (हराकर); अरुळित्तान्–(लोक का) उपकार किया; वॅकुण्टु ऍळुम्–कुपित हो चढ़ आनेवाले; इरा अन्नैयन्–रात्रि के समान काले; अ विरातनै–उस विराध को भी; इरा वकै–जीवित न रहे, ऐसा; तुटैत्तु–मिटाकर; अरुळित्तान्–कृपा की। ८६

इन्हीं श्रीराम ने उन परशुराम का बल मिटाया था, जिनके अग्निशिखा-वृत्त परशु ने मही को शत्रुहीन बना दिया था; यह इनकी कृपा थी। वही नहीं। रात के समान काला विराध कोप के साथ उन पर चढ आया। श्रीराम ने उसका भी नाश करके लोकोपकार किया। ८६

करन्मुदर्	करुणैयर्	ट्रवर्हडर्	पडैयॉडुम्
शिरमुहच्	चिलैहुनित्	तुदवुवान्	तिशैयुळार्
परमुहप्	पहैदुमित्	तरुळुवान्	परमराम्
अरन्मुदर्	रलैवरुक्	कदिशयत्	तिरलित्तान् 87

करन् मुतल्–खर आदि; करुणै अट्रवर्–करुणाहीन (की); कटल् पटैयॉटुम्–सागर-सी सेना के साथ; चिरम् उक–उनके मस्तकों को गिराते हुए; चिलै कुनित्तु–धनुष झुकाकर; उतवुवान्–(देवों और मानवों का) उपकार किया; तिचै उळार्–सभी दिशाओं में रहनेवाले; पर मुक पकै–वैरी शत्रुओं को; तुमित्तु–मिटाकर; अरुळुवान्–कृपा करनेवाले हैं; परमर् आम्–श्रेष्ठ देव; अरन् मुतल् तलैवरुक्कु–हर आदि प्रधान देवताओं के लिए भी; अतिचय–विस्मय देनेवाली; तिरलित्तान्–शक्ति रखनेवाले हैं। ८७

(वहीं नहीं —) खर आदि नृशंस निशाचरों और उनकी सागर-सम सेना को श्रीराम ने उनके सिर काटकर मिटाया और देवों और मानवों का बड़ा उपकार किया। श्रीराम ऐसे है, जो सभी दिशाओं में रहनेवाले शत्रुओं का नाश करके उपकार करेंगे। श्रेष्ठ हर आदि प्रधान देवों को भी विस्मय हो जाय, वे ऐसे शक्तिशाली हैं। ८७

आयमा	नाहर्वा	ळाळिया	नेयलाल्
कायमा	नायित्तान्	यावने	कावला

नीयमा नेर्दिया तिरुदमा रीशन्नार्
मायमा नायिन्नान् मायमा न्नायिन्नान् 88

कावला–हमारे पालक; आर् माय–अधिक मायावी; मान् आयितान्–मृग जो बना; निरुत मारीचन्–उस राक्षस मारीच के लिए; मा यमान् आयितान्–बड़े यम बने; ताय–उचित; मा नाकर्–श्रेष्ठता से युक्त देवों से; ताळ्–नमस्कृत; आळि याते अलल्–चक्रधारी विष्णु के सिवा; मान् कायम् आयिनान्–मानवशरीरी बने; यावते–और कौन हैं; नी–आप; अ मान्–उन महान पुरुष से; नेर्ति–जाकर मिलें। ८८

राजन! राक्षस मारीच मायामृग बना। श्रीराम उसके लिए बड़ा यम बन गये। वे अवश्य चक्रधारी श्रीविष्णु हैं, जिनके चरणों पर देव विनत होते हैं? फिर कौन ऐसे मानव बन सकते हैं? आप आइए और उन महान विभूति से मिलिए। (इस पद में माय मान् में श्लेष है। माय मान् = मायावी मृग; मा यमान् = बड़ा यम। 'मान्' शब्द के और दो अर्थ हैं— मानव और महान; 'मायम्' का 'मरने' अर्थ भी है।)। ८८

उक्कवन् दववुडर् पॉरैतुडन् दुयर्पदम्
पुक्कवन् दमुनमक् कुरैशॅयुम् बुरैयवो
तिक्कवन् दरनॅडुन् दिरळ्करज् जॅलवुतोळ्
अक्कवन् दनुनिन्नन् दमरर्ताळ् शवरिपोल् 89

अम्–श्रेष्ठ; तव–तपस्या से; उटर् पॉरै–शरीर का भार; तुरन्तु–गिराकर; उक्क–जो दिवंगत हुई; अमरर् नितैन्तु–देवों द्वारा ध्यान कर; ताळ्–नमस्कृत; चवरि पोल्–शवरी के समान; तिक्कु अवम् तर–सभी दिशाओं में संकट फैलाकर; नॅट्टु तिरळ् करम्–लम्बे और स्थूल हाथों को; चॅलवु तोळ्–चलानेवाले कन्धों से युक्त; अ कवन्तनुम्–वह कवन्ध भी; उयर् पतम् पुक्क–उच्च पद पहुँचा, वह; अनुतमुम्–महिमा; नमक्कु–हमें; उरै चॅयुम्–कथन योग्य हो, ऐसा; पुरैयवो–सुलभ है क्या। ८६

शवरी थीं, जो श्रेष्ठ तपस्या से शरीर-भार छुड़ाकर मरीं। देव भी उनका स्मरण करके नमस्कार करते है। उन्हें मोक्ष दिया प्रभु ने। कवन्ध था, जो अपने हाथों को सारी दिशाओं में फैलाकर बड़ा उत्पात मचा रहा था। वह भी इन्हीं की कृपा से मोक्ष पहुँचा। श्रीराम की इस महिमा का सम्यक् वर्णन क्या हमारे लिए सुलभ है? । ८९

मुनैवरुम् पिड़रुमे मुडिवरुम् वहलॅलाम्
इनैयर्वन् दुरुवरॅन् रियवरुम् पुरिहुवार्
विनैयॅनुञ् जिरैदुडन् दुयर्पदम् विरविनार्
अनैयरॅन् रुरैशॅयुहे न्निरविदन् पुदल्वने 90

इरवि तन् पुतल्वने–हे सूर्यसुनु; मुनैवरुम् पिरुम्–मुनि और अन्य लोग;

इत्तैयवर् वुन्तु–ये आकर; उदवर् ॲन्ऱु–उपकार करेंगे, यह समझकर; मुटिवु अरुम्–अनन्त; पकल् ॲलाम्–काल तक; इयल्नु तवम् पुरिकुवार्–उत्तम तपस्या करते हुए; विनै ॲनुम् चिऱै–कर्मबन्धन की कारा; तुऱन्तु–तुड़ाकर; उयर् पतम्–श्रेष्ठ (मोक्ष) पद; ऌिरवित्तार्–पहुँचे; ॲत्तैयर्–ऐसे ये कैसे महान हैं; ॲन्ऱु–यह; उरै सॅय्केन्–कथन करूँ। ९०

हे सूर्यसूनु ! मुनिगण और अन्य ऋषि आदि इन्हीं के आगमन और कृपा की प्रतीक्षा में लम्बे काल तक कठोर तपस्या करते हैं और कर्मबन्धन की कारा काटकर सर्वोत्कृष्ट मोक्षपद को प्राप्त होते हैं। ऐसी स्थिति में इनके बारे में, ये कौन हैं, कैसे हैं ? यह विवरण मैं कैसे दे सकूँगा ? । ९०

मायैयाल् मदियिला निरुदरहोन् मनैवियैत्
तीयका नॆऱियिनुयत् तनन्तवट टेडवान्
नीयया तवमिळैत् तुडमैया नॆडमनम्
तूयया वुडमैया लुडविनैत् तुणिकुवार् 91

ऐया–प्रभु; मति इला–बुद्धिहीन; निरुतर् कोन्–राक्षसराज; मायैयाल्–प्रपंच से; मनैवियै–श्रीराम की पत्नी को; तीय कान् नॆऱियिन्–कठोर वनमार्ग में; उयत्तनन्–ले गया; अवळ् तेटुवान्–उनको खोजने के लिए; नी–आप; तवम् इऴैत्तु–सुकृत कर चुके; उडमैयाल्–उससे; मनम्–और मन में; नॆटुम् तूयया उडमैयाल्–अति पवित्रता रखते हैं, इसलिए; उऴवित–आपकी मैत्री; तुणिकुवार्–प्राप्त कर लेने का निश्चय किया है। ९१

प्रभु ! जड़मति राक्षसपति प्रपञ्च रचकर श्रीराम की पत्नी को कठोर कानन-मार्ग में हर ले गया। उन्हीं की खोज में वे इधर आये। आपका सुकृत है और आपका मन पवित्र है। इसीलिए वे आपकी मैत्री तीव्रता से चाहते है। ९१

तन्दिरुन् दनरुट् टलैमैयेप् पहैञरम्
इन्दिरन् शिऱुवनुक् किऱुदियिन् ऱिशैवुरम्
पुन्दियिन् पॆरुमैयाय् पोदॆरन् ऱुरैशॆय्दान्
मन्दिरङ् गॊळ्मुऱैन् मरबुणर्न् दुदववान् 92

कॊळ्मुऱैनूल्–श्रेष्ठ शास्त्रसम्मत; मन्तिरम् मरपु–मंत्रणा का क्रम; उणर्न्तु–जानकर; उतववान्–उपकार करनेवाले (हनुमान) ने; पुन्तियिन् पॆरुमैयाय्–श्रेष्ठ बुद्धिशाली; अरुळ् तलैमैयै–कृपा-विशेष को; तन्तिरुन्तनर्–वे आपको प्रदान करने को प्रस्तुत हैं; पकैञर् आम्–शत्रु; इन्तिरन् चिऱुवनुक्कु–इन्द्रपुत्र (वाली) का; इऱुति–अन्त; इन्ऱु इन्ऱे उऱुम्–अब हो जायगा; पोतर्–जाइए; ॲन्ऱु–ऐसा; उरै चॆय्तान्–कथन किया। ९२

हनुमान शास्त्रज्ञ था। मन्त्रणा देने का क्रम, जानता था। उसने सुग्रीव से आगे कहा कि श्रेष्ठ बुद्धिशाली ! वे आप पर विशेष कृपा रखते

है। आपके शत्रु, इन्द्र के पुत्र, वाली का अन्त अब आ जायगा। इसलिए आप उनके पास जाइए। ९२

अन्नवा मुरैयला मद्रिविना लुणर्हुवान्
उन्नये युडयवरु करियदप पोरुळरो
पोन्नये पोरुववाय् पोदनप् पोदुवान्
तन्नये यनयवन् शरणम्वन् दणुहिनान् 93

अन्न आम्–वैसे; उरै अलाम्–वे वचन; अरिवितान्–बुद्धि से; उणरकुवान्–समझकर; पोन्नये–(सुग्रीव ने) स्वर्ण से ही; पोरुववाय–तुल्य; उन्नये उदय–तुमको प्राप्त; अडुकु–मुझे; अ पोरुळ्–कौन सी वस्तु; अरियतु–दुर्लभ है; पोतु–चलो; अन–कहकर; पोतुवान्–निकला; तन्नये अनैयवन्–स्वोपम; चरणम् वन्तु–(श्रीराम के) चरणों के पास आकर; अणुकितान्–पहुँचा। ९३

सुग्रीव ने हनुमान की कही सारी बातें सुनीं। बुद्धिसंगत समझा। उसने हनुमान से कहा कि स्वर्ण ही सम (मूल्यवान या सुन्दर) हनुमान! तुम्हें सहायक के रूप में मैंने पाया है। वैसे मुझे दुर्लभ वस्तु कौन सी होगी? आओ। फिर वह स्वोपम श्रीराम के चरणों पर आ पहुँचा। ९३

❀ कण्डन तन्नै मन्नो कदिरवन् शिरुवन् कामरक्
कुण्डलन् दुरन्द कोल वदनमुङ् गुळिर्ककुङ् गण्णम्
पुण्डरी हङ्गळ पूत्तुप् पुयऱ्ऱळीइप् पोलिन्द तिङ्गळ
मण्डल मुदयञ् जय्द मरगदक् किरियन् नानै 94

कतिरवन् चिऱुवन्–किरणमाली के पुत्र ने; पुण्टरीकङ्कळ–कमल; पूत्तु–विकसित होकर; पुयल् तुळीइ–मेघ से मिलकर; पोलिन्त–शोभायमान; तिङ्कळ मण्टलम्–चन्द्रमण्डल; उतयम् चेय्त–उदित हो; मरकत किरि–ऐसे मरकतपर्वत; अन्नाते–जैसे का; कामर–मनोरम; कुण्टलम् तुऱन्त–कुण्डल-रहित; कोल वतनमुम्–सुन्दर वदन; कुळिर्क्कुम् कण्णुम्–और स्नेहशीतल आँखों के; कण्टनन्–दर्शन किये। ९४

सूर्यसूनु सुग्रीव ने आकर श्रीराम के दर्शन किये। श्रीराम एक मरकत-गिरि के समान थे, जिस पर अनेक कमल खिले थे और जिस पर मेघावृत चन्द्र-मण्डल उदित हुआ था। उनके मुख के दर्शन किये, जो मनोरम कुण्डलों से रहित थे। उनकी आँखों के दर्शन किये जो स्नेह-शीतल थीं। ९४

❀ नोक्किन् नॆडिदु निन्ऱा नॊडिवरुङ् गमलत् तण्णल्
आक्किय वुलह मॆल्ला मन्ऱुतीट् टिन्ऱु हारुम्
पाक्कियम् बुरिन्द वॆल्लाङ् गुविन्दिरु पडिव माहि
मेक्कुयर् तडन्दोळ् वॆन्ऱि वीररैय् विळैन्द वॆन्बात् 95

नोक्कितन्–दर्शन करके; नॆटितु निन्ऱान्–बहुत देर (मुग्ध) खड़ा रहा;

नॊटिवु अरुम्–अवर्ण्य; कमलत्तु अण्णल्–कमल के देव ब्रह्मा से; आक्किय–सृष्ट; उलकम् ऎल्लाम्–सारे लोकों द्वारा; अन्ऱु तॊट्टु–उस दिन से लेकर; इन्ऱु काऱुम्–अब तक; पुरिन्त पाक्कियम् ऎल्लाम्–कृत पुण्य सब; कुविन्तु–इकट्ठा होकर; इरु पटिवम् आकि–दो दिव्य मूर्तियाँ बने; मेक्कु उयर्–खूब उन्नत; तटम् तोळ्–विशाल भुजाओं के; वॆन्ऱि वीरराय्–विजयी वीरों के रूप में; विळैन्त–व्यक्त हुआ है; ऎन्पान्–ऐसा सोचने लगा (सुग्रीव)। ६५

देखा तो सुग्रीव मन्त्रमुग्ध-सा बहुत देर विस्मित खड़ा रह गया। उसने सोचा कि अवर्णनीय श्रेष्ठ कमलासन ब्रह्मा द्वारा सृष्ट सारे विश्वों का उस दिन से लेकर अब तक किया हुआ जो पुण्य है,वही दो मूर्तियाँ बनकर श्रेष्ठ उन्नत भुजाओं के साथ विजयी वीरों के रूप में व्यक्त हुआ है! । ९५

❀ तेऱिऩॆऩ् नमरर्क् कॆल्लान् देवरान् देवरॆऩ्ऱे
मारियिप् पिऱप्पिल् वन्दार् मानुड राहि मन्ऩो
आऱुहोळ् शडिलत् तानु मयनुमॆन् ऱिवर्ह ळादि
वेऱुळ कुळुवै यॆल्ला मानुडम् वॆन्ऱ दन्ऱे 96

मारि–रूप बदलकर; मात्तर् आकि–मनुष्य बनकर; इ पिऱप्पिल् वन्तार्–इस जन्म में आये हुए ये; अमरर्क्कु ऎल्लाम्–सभी देवों के; तेवर् आम् तेवर्–देव परमदेव हैं; ऎन्ऱु–ऐसा; तेऱिनॆन्–साफ़ समझ लिया; आऱु कोळ्–गंगाधर; चटिलत्तानुम्–जटाधारी महादेव और; अयनुम्–ब्रह्मा; ऎन्ऱु–कहलानेवाले; इवर्कळ् आति–इनसे लेकर; वेऱु उळ कुळुवै ऎल्लाम्–अन्य सभी वृन्दों को; मात्टम् वॆन्ऱतु–मानवता ने जीत लिया है। ९६

ये दोनों देवों के देव परमदेव के ही अवतार हैं। परमेश्वर ने ही अपना रूप बदलकर मनुष्य-जन्म लिया है। गंगाधर जटाधारी महादेव, ब्रह्मा आदि अनेक वृन्दों के देवों के जन्म को मनुष्य-जन्म ने हरा दिया है! मानव जाती का ही भाग्य रहा कि ये परमदेव मानव बन आये। ९६

❀ ऎन्ऩनिऩ्ऩैन् दिन्नैय वॆण्णि यिवर्हिन्ऱ काद लोदक्
कन्नैहडऱ् ऱिरैयुळ् ळाळ्न्दु कण्णिणै कळिप्प नोक्कि
अन्नहन्नैक् कुऱुहि नानव् वण्णलु मरुत्ति कूरप्
पुन्नैमलर्त् तडक्कै नीट्टिप् पोन्दिति दिरुत्ति यॆन्ऱात् 97

ऎन्न निन्नैन्तु–ऐसा सोचकर; इन्नैय ऎण्णि–यों विचार करके; इवर्किन्ऱ–उमगनेवाले; कातल् ओतम्–प्रेम-जल के; कन्नै कटल्–शब्दायमान समुद्र की; तिरैयुळ् आळ्न्तु–तरंगों में मग्न होकर; कण् इणै–अक्षद्वय; कळिप्प–मुदित करते हुए; नोक्कि–दर्शन करके; अनकन्नै–अनघ के; कुऱुकिनान्–समीप गया; अ अण्णलुम्–उन महिमावान प्रभु ने भी; अरुत्ति कूर–वांछा के बढ़ते; पुन्नै मलर–सुन्दर कमल-सम; तटम् कै–(और) विशाल हाथों को; नीट्टि–बढ़ाकर; पोन्तु–

(स्वागत में); पोन्तु–इधर आकर; इतितु इरुत्ति–सुख से रहो; ऍन्ड्रात्–कहा। ९७

ऐसी-ऐसी बातें सुग्रीव ने सोचीं। और आगे भी अनेक विचार करते हुए श्रीराम और लक्ष्मण के प्रति उमड़ आनेवाले स्नेहजल के शब्दायमान सागर की तरंगों में मग्न हुआ। अपनी आँखों को मुदित करते हुए उनके दर्शन किये। इस परवश स्थिति में सुग्रीव श्रीराम के पास पहुँचे। अनघ श्रीराम की भी वांछा बढ़ी। उन्होंने सुन्दर कमल-सम अपने हाथ बढ़ाकर उसका स्वागत किया और कहा कि आओ! इधर सुख से रहो। ९७

तवावलि यरक्क रॅन्नुन् दवाविरुट् पहैयैत् तळ्ळिक्
कुवालऱ निरुत्तऱ् केऱ्ऱ कालत्तिन् कूट्ट मॊत्तार्
अवामुद लरुत्त शिन्दै यनहनु मरियिन् वेन्दुम्
उवावुऱ वन्दु कूडु मुडुपदि यिरवि यॊत्तार् 98

अवा मुतल् अरुत्त–राग को जड़ से उखाड़कर रहे; चिन्तै अनकनुम्–मन के अनघ श्रीराम और; अरियिन् वेन्तुम्–कपिराज; उवा उऱ–अमावस्या के आने पर; वन्तु कूटुम्–आ मिलनेवाले; उडुपति इरवि–उडुपति और किरणमाली के; ऒत्तार्–समान रहे; तवा वलि–अक्षय बली; अरक्कर् ऍन्नुम्–राक्षस रूपी; तवा इरुळ् पकैयै–अखण्डित अन्धकार शत्रु को; तळ्ळि–मिटाकर; कुवाल् अऱम्–पुंजीभूत धर्म को; निरुत्तऱ्कु–स्थापित करने के लिए; कालत्तिन् कूट्टम्–उपयुक्त काल के संगम के; ऒत्तार्–समान लगे। ९८

श्रीराम ने राग को मूल से उखाड़कर फेंक दिया था। अनघ वे और वानरराज सुग्रीव मिले, तो उनका मिलन अमावस्या के दिन उडुपति चन्द्र और किरणमाली रवि के सम्मिलन-सा था। अक्षय बलशाली राक्षस रूपी अखण्डित अन्धकार-शत्रु को मिटाने के लिए और पुंजीभूत धर्म की संस्थापना करने के लिए संगमित कालों के समान था। ९८

कूट्टमुऱ् ऱिरुन्द वीरर् कुऱित्तदोर् पॊरुट्कु मुन्नाळ्
ईट्टिय तवमुम् पिन्नर् मुयऱ्चियु मियैन्द दॊत्तार्
वीट्टुम्वा ळरक्क रॅन्नुन् दीविनै वेरिन् वाङ्गक्
केट्टुणर् कल्वि योडु ञानमुङ् गिडैत्त दॊत्तार् 99

कूट्टम् उऱ्ऱु इरुन्त–एकत्रित रहे; वीरर्–वीर; कुऱित्ततु ओर् पॊरुट्कु–निश्चित कोई कार्य साधने के लिए; मुन् नाळ्–पूर्व के दिनों में; ईट्टिय तवमुम्–की हुई तपस्या; पिन्नर् मुयऱ्चियुम्–और बाद का प्रयत्न; इयैन्ततु–मिले; ऒत्तार्–जैसे लगे; वीट्टुम् वाळ्–घातक तलवार-सरीखे; अरक्कर् ऍन्नुम्–राक्षस रूपी; ती विनै–पातक को; वेरिन् वाङ्क–मूल से उखाड़ने के लिए; केट्टु उणर् कल्वियोटु–श्रवण से प्राप्त विद्या को; ञानमुम्–ज्ञान भी; किटैत्ततु–प्राप्त हुआ हो; ऒत्तार्–ऐसा लगे। ९९

श्रीराम और सुग्रीव का मिलन और कैसा था ? किसी निश्चित कार्य की सिद्धि के लिए पूर्वकृत तपस्या का फल और तत्काल का प्रयत्न —दोनों मिल गये हों, ऐसा भी लगा। और भी खूनी तलवार-से राक्षसों के रूप में रहे पातक को मूल से मिटाने के हेतु श्रवण से प्राप्त विद्या को तत्त्व का ज्ञान भी प्राप्त हो गया हो, ऐसा भी लगा। ९९

❀आयदो रवदि यिलुक् णरुक्कत्तॆ यरशै नोक्कित्
तीविनै तीय नोऱ्ऱा रॆन्ननित्यार् शॆल्व निन्नै
नायह मुलहुक् कॆल्ला मॆन्नला नलमिक् कोयि
मेयिनॆन् विदियॆ नल्हिन् मेवला हादॆन् ऱॆन्ऱान् 100

आयतु ओर्–ऐसे एक; अवेतियिन् फण्–समय में; अरुक्केन् चेय्–अर्कपुत्र; अरचै नोक्कि–राजा राम को देखकर; सॆल्व–प्रभु; उलकुक्कु ऍल्लाम्–सारे लोकों के; नायकम् ऍन्नलाम्–नायक माने, उसके योग्य; नलम् मिक्कोय्–श्रेष्ठता रखनेवाले; निन्नै–आपके पास; मेयिनॆन्–आ गया; तो विनै तीय–पाप जल जायें, ऐसी; नोऱ्ऱार्–तपस्या के कर्ता; ऍन्ननिल यार्–मेरे समान कौन होंगे; विदियॆ नल्किन्–जब विधि ही अनुकूल रहे, तब; मेवल् आकातु–अप्राप्य; ऍन्–क्या है। १००

उस मिलन के समय सूर्यसूनु सुग्रीव ने राजा राम से यों निवेदन किया। प्रभु ! सारे लोकों के नायक के योग्य श्रेष्ठता रखनेवाले आपके पास मैं आ गया हूँ। कठोर पाप को मिटानेवाली तपस्या के श्रेष्ठ कर्ता मेरे समान कौन होंगे ? जब विधि स्वयं उपकार करने को अनुकूल हो जाती है, तब कौन सी वस्तु होगी जो दुर्लभ हो ? । १००

मॆय्यऱ तवत्तिऱ् ऱान शवरियिम् मलैयिऱ् ऱीवन्
दॆय्दिन यिरुन्द तन्मै यियम्बिनळ् याङ्ग ळुऱ्ऱ
कॆय्यऱु तुयर नीन्नाऱ् कडप्पदु करुदि वन्दोम्
ऐयनिङ् ङोरुमॆन्न वरिहुलत् तलैवन् शॊल्वान् 101

ऐय–श्रेष्ठ; मॆय् अऱ–अकलंक; तवत्तिन् आन–तपस्या में रत; चवरि–शबरी ने; इ मलैयिल्–इस पर्वत पर; नी वन्तु ऍय्तिनै–तुम आये रहे; इरुन्त तन्मै–रहने की बात; इयम्पिनाळ्–कही थीं; याङ्कळ् उऱ्ऱ–हमको प्राप्त; कै अऱु तुयरम्–निष्क्रिय बनानेवाला दुःख; निन्नाल् कटप्पतु करुति–तुम्हारी सहायता से दूर करें, समझ; निन् तीरुम्–तुम दूर करोगे, सोचकर; वन्तोम्–आये हैं; ऍन्ऩ–(श्रीराम के) यह कहने पर; अरि कुल तलैवन्–वानरकुल का नायक; चॊल्वान्–बोला। १०१

उसके उत्तर में श्रीराम ने यह श्रीवचन उच्चारे। श्रेष्ठ सुग्रीव ! निर्दोष तपस्विनी शबरी ने हमें तुम्हारे इस ऋष्यमूक पर्वत पर आकर वास करने की बात बतायी थी। हम यही सोचकर तुम्हारे पास आये कि हम पर जो मनुष्य को निष्क्रिय बना सकनेवाली विपदा आयी है, वह तुम्हारी

सहायता से दूर होगी। श्रीराम ने जब यह बात कही तब वानरकुलाधीश ने यों कहा। १०१

❀ मुरणुडैत् तडक्कै योच्चि मुन्नवन् पिन्वन् देनै
इरुणिलैप् पुरत्तिन् काऱु मुलहॅङ्गुन् दोडर विक्कुन्
ऱरणुडैत् ताह वुयन्दे नारुयिर् तुऱक्क वञ्जिच्
चरणुनैप् पुहुन्दे नेन्नैत् ताङ्गुद ऱरुम मॅन्ऱान् 102

मुन्नवन्-मेरे अग्रज के; पिन् वन्तेन-अनुज, मुझ पर; मुरण् उट्ट-बलिष्ठ; तडम् कै-विशाल हाथ; ओच्चि-उठाते हुए; इरुळ् निलै-अंधकारनिलय; पुऱत्तिन् काऱुम्-इस अण्ड के बाहर तक; उलकु अङ्कुम्-विश्व भर में; तॊडर-पीछा करने पर; आर् उयिर्-प्यारे प्राण; तुऱक्क अञ्चि-छोड़ने से डरकर; इ कुन्ऱु-इस (ऋष्यमूक) पर्वत के; अरण् उट्टत्तु आक-मेरे रक्षक रहते; उयन्तेन्-बचा; चरण् उन्नै पुकुन्तेन्-आपकी शरण में आया हूँ; ऎन्नै ताङ्कुतल्-मुझे अपना लेना (और मेरी सहायता करना); तरुमम्-आपका धर्म है; ऎन्ऱान्-कहा। १०२

प्रभु! मेरे बड़े भाई ने अपने ही अनुज मुझ पर अपना बलवान हाथ उठाकर खदेड़ा। विश्व भर में, अण्ड के बाहर तक जहाँ अँधेरा भरा है उसने मेरा पीछा करके मुझे भगाया। मैं मरने से डरता था। अच्छा हुआ कि यह पर्वत मेरा रक्षण कर सकता था। मैं इधर आया तभी जीवित बच सका। ऐसा मैं आपकी शरण में आया हूँ। मेरी रक्षा करना आपका धर्म है! । १०२

❀ ऎन्ऱवक् कुरङ्गु वेन्दै यिरामनु मिरङ्गि नोक्कि
उन्ऱनक् कुरिय विन्ब तुन्बङ्ग ळुळ्ळ मुन्नाळ्
शॆन्ऱन पोह मेलवन् दुरुवत् तीरप्प लॆन्न
निन्ऱन वॆनक्कु निऱ्कु नेरॆन मॊऴियु नेरा 103

ऎन्ऱ-ऐसा जिसने कहा; अ कुरक्कु वेन्तै-उस वानरपति को; इरामनुम्-श्रीराम (ने); इरङ्कि नोक्कि-अनुताप के साथ देखकर; उन् तनक्कु उरिय-तुम्हारे अपने; इन्प तुन्पङ्कळ् उळ्ळ-सुख-दुःख जो हैं; मुन् नाळ् चॆन्ऱन-उनमें जो पहले हो चुके हैं; पोक-उनको जाने दो; मेल वन्तु उऱुवत्त-जो आगे आयेंगे; तुन्पङ्कळै-उन दुःखों को; तीर्प्पल्-दूर कर दूँगा; ऎन्न निन्ऱन-वैसे जो स्थित हैं; ऎनक्कुम् निऱ्कुम् नेर्-वे मेरे और तुम्हारे लिए समान रहेंगे; ऎन-यह; मॊऴियुम् नेरा-वचन देकर। १०३

श्रीराम ने ऐसा कहनेवाले सुग्रीव पर दया की दृष्टि फेरी। कहा कि देखो सुग्रीव! तुम्हारे हक में जितने सुख-दुःख होंगे, उनमें जो बीत गये वे तो बीत गये। पर आगे जो दुःख होंगे उनका निवारण मैं अवश्य करूँगा। अभी जो बाकी हैं आने को, उनको तुम भी मेरे समान हक के समझ लो। प्रभु श्रीराम ने यह वचन दिलाया। १०३

❀ मऱ्ऱिनि युरैप्प दॆन्ने वानिडै मण्णि निन्नैच्
चॆऱ्ऱव रॆन्नैच् चॆऱ्ऱार् तीयरे यॆनिनु निन्नो
डुऱ्ऱव रॆनक्कु मुऱ्ऱा रुन्किळै यॆनदॆन् कादऱ्
चुऱ्ऱमुन् चुऱ्ऱ नीयॆन् निन्नुयिर्त् तुणैव नॆन्ऱान् 104

मऱ्ऱु–और; इनि–आगे; उरैप्पतु–कहने के लिए; ऍन्नॆ–क्या है; वान् इटै–आकाश में; मण्णिन्–पृथ्वी में; निन्नै चॆऱ्ऱवर्–तुम्हारे शत्रु; ऍन्नै चॆऱ्ऱार्–मेरे भी शत्रु है (मैं वैसा मानूँगा); निन्नोटु उऱ्ऱवर्–तुम्हारे साथी मित्र; तीयरे ऍनिनुम्–दुष्ट ही क्यों न हों; ऍनक्कुम् उऱ्ऱार्–मेरे भी मित्र होंगे; उन् किळै–तुम्हारे नातेदार; ऍनतु–मेरे है; ऍन् कातल् चुऱ्ऱम्–मेरे प्यारे रिश्तेदार; उन् चुऱ्ऱम्–तुम्हारे बन्धु हैं; नी–तुम; ऍन्–मेरे; इन्–प्यारे; उयिर् तुणैवन्–प्राणसखा हो; ऍन्ऱान्–कहा। १०४

फिर आगे बोले— फिर कहने को क्या है ? इतना मान लो कि आकाश में हो, चाहे पृथ्वी में, जो भी तुम्हारे त्रासक शत्रु हैं वे मेरे भी शत्रु होंगे। तुम्हारे साथी मित्र मेरे मित्र होंगे। तुम्हारे बन्धु मेरे बन्धु और मेरे प्यारे रिश्तेदार तुम्हारे बान्धव ! तुम मेरे प्यारे प्राणसखा हो ! । १०४

❀ आर्त्तदु कुरक्कुच् चेनै यञ्जनैच् चिऱुवन् मेनि
पोर्त्तन पॊडित्त रोम पुळहङ्गळ् पूविन् मारि
तूर्त्तनर् विण्णोर् मेहम् जॊरिन्दन कनह मण्णल्
वार्त्तैयॆक् कुलत्तु ळोर्क्कु मऱैयिनु मॆय्यॆन् ऱुन्ना 105

अण्णल् वार्त्तै–महिमावान प्रभु का वचन; ऍ कुलत्तु उळोर्क्कुम्–किसी भी कुल के लोगों के लिए; मऱैयिनुम्–वेदवचन से भी (अधिक); मॆय्–सत्य है; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्ना–सोचकर; कुरक्कु चेनै–वानर-सेना ने; आर्त्ततु–आनन्दारव किया; अञ्चनै चिऱुवन्–अंजना के पुत्र की; मेनि–श्रीदेह पर; पॊटित्त रोम पुळकङ्कळ्–प्रफुल्ल रोम-पुलक; पोर्त्तन–भर गये; विण्णोर्–देवों ने; पूविन् मारि–पुष्पवर्षा करके; तूर्त्तनर्–(भूमि को) पाट दिया; मेकम्–मेघों ने; कनकम्–कनक की; चॊरिन्तन–वर्षा करायी। १०५

महिमामय प्रभु श्रीराम का यह वचन सुनकर वानर-सेना आनन्दनाद कर उठी। 'यह प्रभु का वचन किसी भी (वानर, मानव, देव या प्राणी) कुल के सभी लोगों के लिए सत्य है और वेद-वाक्य से भी अधिक सत्य है' —इसी धारणा से वे वीर हर्षोन्मत्त हो उठे। अंजनासुत की श्रीदेह रोमांच से ढक गयी। देवों ने पुष्पवर्षा करके भूमि को छिपा दिया। मेघों ने कनकवर्षा करायी। १०५

❀ आण्डॊळ्न् दडियिर् ऱाळ्न्द वञ्जनैच् चिङ्गम् वाळि
तूण्डि डडन्दोण मैन्द तोळनु नीयुम् वाळि

ईण्डुनुङ् गोयि लॅय्दि यिनिदिनि तिरुक्कै काण
वेण्डुदुम् मरुळु हॅन्ड्रान् वीरनुम् विळुमि दॅन्ड्रान् 106

आण्टु–तब; ॲळुन्तु–उठ आकर; अटियिल् ताळ्न्त–श्रीराम-चरण पर विनत हुआ; अन्चनै चिङ्कम्–अंजनापुत्र सिंह-सदृश हनुमान ने; तूण् तिरळ्–स्तम्भ-सम स्थूल; तटम् तोळ्–और विशाल-कन्धों वाले; मैन्त–बलवान वीर; वाळि–जियें; तोळनुम् नीयुम्–आपका मित्र और आप; वाळि–(चिरकाल) जिएँ; ईण्टु–अब; नुम् कोयिल् ॲय्ति–अपना मन्दिर जाकर; इतिनिन्–सुख से; निन् इरुक्कै–आपका (आराम से) रहना; काण वेण्टुतुम्–देखना चाहते हैं; अरुळुक–कृपा करें; ॲन्ड्रान्–प्रार्थना की; वीरनुम्–श्री वीरराघव ने भी; विळुमितु–यह श्रेष्ठ है; ॲन्ड्रान्–कहा (सम्मति प्रकट की)। १०६

तब हनुमान उठा। श्रीराम के पास आकर उनके चरणों पर विनत हुआ। अंजनासुत, केसरी-सदृश हनुमान ने निवेदन किया कि स्तम्भ-सम स्थूल और विशाल कन्धों वाले बली वीर! जिएँ आप। आपका मित्र और आप चिरकाल जिएँ। अब आप अपने मन्दिर में सुख से पधारें और प्रसन्नता के साथ आराम करें। इसके हम दर्शन करना चाहते हैं। यह निवेदन सुनकर श्रीवीरराघव ने भी श्रीवचन उच्चारा कि हाँ! यह अच्छी बात है!। १०६

एहिन रिरवि शेयु मिरुवरु मरिह ळेरुम्
ऊहवॅङ् जेनै शूळ्वन् दडियिणै युवन्दु वाळ्न्त
नाहमु नरन्दक् कावु नळिनवा विहळु मल्हिप्
पोहबू मियैयु मेशुम् पुदुमलर्च् चोलै पुक्कार् 107

इरवि चेयुम्–रविसुत (और); इरुवरुम्–(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों; अरिकळ् एऱुम्–वानरों में केसरी-सम हनुमान; वॅम्–भयंकर; उक चेनै–और वानर-सेना के; चूळ् वन्तु–घेरते आकर; अटियिणै–चरणद्वय; उवन्तु वाळ्न्त–भक्ति के साथ वन्दना करते; एकिनर्–चले; नाकमुम्–पुंनाग और; नरन्त कावुम्–नारंगी के बागों; नळिन वाविकळुम्–और कमलसरों से; मल्कि–खूब भरे होकर; पोक पूमियैयुम्–भोगभूमि (स्वर्ग) को भी; एचुम्–शरम में डालनेवाले; पुतुमलर् चोलै–नवविकसित पुष्पोद्यान में; पुक्कार्–पहुँचे। १०७

उनके सम्मत होने पर रविसुत सुग्रीव, श्रीराम और लक्ष्मण दोनों और वानरकेसरी हनुमान सब उठे और चलने लगे। वानर-सेना ने उनके चरणों में विनत होकर उनकी स्तुति की। वे एक नवविकसित पुष्पोद्यान में पहुँचे, जिसमें पुंनाग, नारंगी आदि के तरु लसे थे और कमलसर पाये गये। वह भोगभूमि स्वर्ग का भी उपहास करनेवाला (उतना मनोरम और सुहावना) उद्यान था। १०७

आरमु महिलुन् दुन्नि यविर्पळिक् कऱ्रैय ळावि
नारनिन् ड्रन्नपोऱ् ड्रोन्ड्रि नवमणित् तडङ्ग णीडुम्
पारमु मरुङ्गुन् दॅय्वत् तरुवुयर् मरत्ति नाडुम्
शूरर महळि रूश ऱुवन्ड्रिय शुम्मैत् तन्ऱे 108

आरमुम् अकिलुम्–चन्दनतरुओं और अगरु के वृक्षों से; तुन्नि–ठस भरकर; अविर् पळिङ्कु अऱ्रै–उज्ज्वल स्फटिक-चट्टानों से; अळावि–शोभायमान; नारम् निन्ऱन पोल्–(उनमें) जल स्थित हो; तोन्ऱि–ऐसा भ्रम पैदा करते हुए; नव मणि तटङ्कळ्–नवरत्न-खचित तडागों के; नीटुम्–लम्बे; पारमुम् मरुङ्कुम्–तटों और पास के स्थलों में; तेय्व तरु–देवलोक के कल्पतरु-सम; उयर्–उन्नत; मरत्तिन्–वृक्षों पर; आटुम्–झूलनेवाले; चूर् अर मकळिर्–देवबालाओं के; ऊचल्–झूले; तुवन्ड्रिय–जो खूब मचाते हैं; चुम्मैत्तु–उस शोर से भरा है, (वह उद्यान) । १०८

उसमें चन्दनतरु और अगरु के पेड़ बहुत थे। प्रकाशमय स्फटिक-चट्टानें थीं। वे ऐसी दिखीं मानो उनमें जल भरा हो। नवरत्नों से शोभित तडाग थे। उनके कूलों पर और उनके आसपास दिव्य कल्पतरु के समान अनेक ऊँचे वृक्ष थे। उन पर देवनारियाँ झूले बाँधकर झूल रही थीं। वह उद्यान उनकी कोलाहलध्वनि से भरा था। १०८

अयर्विल् केळ्विशा लऱिञर् वेलैमुन्
पयिल्विल् कल्वियार् पॉलिविल् पान्मैपोल्
कुयिलु मामणिक् कुळ्मु शोदियाल्
वॅयिलुम् वॅळ्ळिवॅण् मदियिन् मेम्बडा 109

अयर्वु इल्–अप्रमत्त; केळ्वि चाल्–श्रवणज्ञान से युक्त; अऱिञर् वेलै मुन्–ज्ञानी पंडितों के सागर (वृन्द) के सामने; पयिल्वु इल्–अनभ्यस्त; कल्वियार्–विद्या वाले; पॉलिवु इल्–जैसे नहीं चमकते; पान्मै पोल्–वैसी रीति से; कुयिलुम्–जड़ित; मा मणि कुळ्मु–अनेक रत्नों की सम्मिलित; चोतियाल्–ज्योति से; वॅयिलुम्–धूप भी; वॅळ्ळि वॅण् मतियिन्–चाँदी के से श्वेत चन्द्र की तरह; मेम्पटा–प्रकाश में उन्नत नहीं रहती। १०९

उसमें अनेक तरह के रत्न पाये गये। उनके प्रकाश के सामने धूप भी श्वेत चाँदनी से अधिक उज्ज्वल नहीं रही। वह ऐसा रहा, जैसा अप्रमत्त श्रवण-ज्ञान से भरे विद्वानों के (सागर) समूह के सामने विद्या से अनभ्यस्त लोग नहीं चमकते। १०९

एय वन्नदा मिनिय शोलैवाय्, मेय मैन्दनुङ् गवियिन् वेन्दनुम्
तूय पूवणैप् पॉलिन्दु तोन्ऱिनार्, आय वन्बिना रळव ळावुवार् 110

एय–(ऐसी विशेषता से) युक्त; अन्नतु आम्–उस; इनिय–सुहावने; चोलै वाय्–उद्यान में; मेय मैन्तनुम्–आगत वीर श्रीराम; कवियिन् वेन्तनुम्–कपिराज;

तूय पू अणै—पवित्र पुष्पासन पर; पॊलिन्तु तोन्ऱिनार्—शोभायुक्त विराजे; आय अन्पिनार्—गम्भीर प्रेम के साथ; अळवळावुवार्—स्नेहसम्भाषण करने लगे। ११०

ऐसे विशिष्ट सुखद उद्यान में श्रीराम और कपिकुलेश दोनों पधारे और एक पवित्र पुष्पासन पर विराजे। दोनों बराबर स्नेह के साथ वार्तालाप करने लगे। ११०

कनियुङ् गन्दमुम् कायुन् दूयन
इनिय यावैयुङ् गॊणर यारिनुम्
पुनिदन् मञ्जनत् तॊऴिल्पु रिन्दुपिन्
इनिदि रुन्दुनल् विरुन्दु मायिनान् 111

कनियुम्—फलों और; कन्तमुम्—कन्दों; कायुम्—खाद्य कच्चे फलों को; तूयन—पवित्र और; इनिय—मधुर; यावैयुम्—सब; कॊणर—लोग लाये, तब; यारिनुम् पुनितन्—सर्वश्रेष्ठ पावनमूर्ति; मञ्चन तॊऴिल्—स्नानकार्य; पुरिन्तु—करके; पिन्—पश्चात; इनितु इरुन्तु—सुख से रहकर; नल् विरुन्तुम्—श्रेष्ठ अतिथि भी; आयिनान्—बने (आतिथ्य स्वीकार किया)। १११

स्नेह के साथ जब वे बोलते रहे तब वानर फल, कन्द, तरकारी आदि लाये, जो पावन और मधुर थे। सर्वश्रेष्ठ पावन (और पावनकारी) भगवान ने स्नानकार्य किया। फिर सुख से आसीन होकर आतिथ्य को स्वीकार किया। १११

विरुन्दु माहियम् मॆय्म्मै यन्बिनो
डिरुन्दु नोक्कितॊन् दिरैवन् शिन्दियाप्
पॊरुन्दु नन्मनैक् कुरिय पूवैयैप्
पिरिन्दु ळायुँलो नीयुम् पिन्नॆन्ऱान् 112

अ मॆय्म्मै अन्पितोटु—उस तरह सच्चे प्रेम के साथ; इरुन्तु—रहकर; इऱैवन्—भगवान श्रीराम ने; विरुन्तुम् आकि—आतिथ्य स्वीकार करके; नोक्कि—सुग्रीव पर दृष्टि डालकर; नॊन्तु—खेद करके; चिन्तिया—विचार करके; पॊरुन्तु—योग्य; नल् मनैक्कु उरिय—सद्गृहिणी; पूवैयै—स्त्री से; पिन्—बाद; नीयुम्—तुम भी; पिरिन्तु उळाय् कॊल्—वियुक्त हो गये क्या; ॲन्ऱान्—प्रश्न किया। ११२

श्रीराम ने सुख से आतिथ्य स्वीकार किया। तब उनकी दृष्टि सुग्रीव पर पड़ी। उनके मन में सुग्रीव के अकेलेपन पर ध्यान गया। वे दुःखी हुए। उन्होंने उससे पूछा कि फिर तुम भी आखिर अपनी योग्य गृहिणी स्त्री से वियुक्त हो गये क्या? । ११२

ॲन्ऱु वेलैयि नॆऴुन्दु मारुदि
कुन्ऱु पोलनिन् ड्रिरुहै कूप्पिनान्

निन्ऱ् नीदियाय् नॆडिदु केट्टियाल्
ऑन्ऱु नानुनक् कुरैप्प दुण्डॆन्ना 113

ॲन्ऱ् वेलैयिल्–प्रश्न करते समय; मारुति–मारुति; कुन्ऱु पोल ॲऴुन्तु निन्ऱ्–पर्वत-सम उठ खड़ा हुआ और; इरुकै–दोनों हाथ; कूप्पित्तान्–जोड़े; निन्ऱ् नीतियाय्–अचल नीतिमान; नान्–मैं; उनक्कु–आपसे; उरैप्पतु–निवेदन करूँ, वह; ऑन्ऱु उण्टु–एक बात है; नॆटितु केट्टि–लम्बी (है) सुन लें; ॲन्ना–कहकर। ११३

जब श्रीराम ने सुग्रीव से यह प्रश्न किया, तब मारुति पर्वत के समान उठ खड़ा हुआ और दोनों हाथ जोड़कर यों बोला। अचल नीतिमान स्वामी! आपसे एक बात निवेदन करनी है। उसको आप पूरा-पूरा आदि से अन्त तक सुनिए। ११३

नालु वेदमा नवैयि लार्हलि
वेलि यन्नदोर् मलैयिन् मेलुळान्
शूलि यिन्नरुट् टुरैयिन् मुऱ्ऱिनान्
वालि यॆन्ऱुळान् वरम्बि लाऱ्ऱलान् 114

नालु वेतमाम्–चार वेद रूपी; नवै इल्–निर्दोष; आर् कलि–समुद्र ही; वेलि अन्नतु–रक्षा-भित्तियाँ जिसकी हों; ओर् मलैयिन् मेल्–ऐसी एक गिरि (कैलास) पर; उळान्–रहनेवाले; चूलियिन्–शूली महादेव की; अरुळ् तुऱैयिन्–कृपा से; मुऱ्ऱिनान्–पूर्ण; वरम्पिल् आऱ्ऱलान्–असीम बलशाली; वालि–वाली; ॲन्ऱु उळान्–नामक एक है। ११४

निर्दोष, वेद रूपी और शब्दायमान समुद्रों को रक्षण-भित्तियों के रूप में जिसने पाया है, उस कैलासपर्वत पर रहनेवाले शूली महादेव की कृपा का पूर्ण पात्र और असीम बलिष्ठ वाली नाम का एक वानरराज है। ११४

कळरुन् देवरो डवुणर् कण्णिनिन्
ऱुळलु मन्दरत् तुरुत्तु तेय्वुऱ
अळलुङ् गोळरा वहड्डु तीयॆळच्
चुळलुम् वेलैयैक् कडैयुन् दोळिनाम् 115

कळरुम्–प्रशंसित; तेवरोटु–देवों के साथ; अवुणर्–दानव; कण्णि निन्ऱु–(अमृत-प्राप्ति का) लक्ष्य लेकर, (दोनों ओर) खड़े होते; उळलुम्–घूमनेवाला; मन्तरत्तु–मन्दर पर्वत का; उरुवु–आकार; तेय्वु उऱ–घिसे ऐसा; अळलुम्–क्रुद्ध; कोळ् अरा–भयंकर सर्प, वासुकी के; अकटु ती ॲळ–पेट से आग निकले, ऐसा; चुळलुम् वेलैयै–मथित समुद्र को; कटैयुम् तोळिनाम्–अकेला मथनेवाले बलिष्ठ कन्धों का। ११५

अमृत निकालने के उद्देश्य से देवों और दावनों ने वासुकी-लपेटे मन्दर पर्वत को घुमाया था। तब मन्दर के आकार को घिसाकर क्षीण कराते

हुए और क्रुद्ध भयंकर वासुकी नाग अपने पेट से आग उगले —ऐसा वाली ने अकेले ही मन्दर पर्वत को घुमाया था और समुद्र बिल्कुल क्षुब्ध हो गया। (यह वृत्तान्त वाल्मीकी में नहीं पाया जाता।) ऐसा भुजबली है वह। ११५

निलनु	नीरुमाय्	नॅरुप्पुङ्	गाऱ्ऱुमाय्
उलैविल्	पूदनाऩ्	गुडैय	वाऱ्ऱलाऩ्
अलैयिन्	वेलैशूऴ्	किडन्द	वाऴिमा
मलैयि	ऩिऩ्ऱुमिम्	मलैयिऩ्	वावुवान् 116

निलत्तुम्–भूमि; नीरुम् आय्–व जल बने; नॅरुप्पुम् काऱ्ऱुम् आय्–अनल और अनिल बने; उलैव ईल्–अक्षय; पूतम् नाऩ्कु उटैय–(जो हैं) उन चार भूतों के सम्मिलित; आऱ्ऱलाऩ्–बल से युक्त; अलैयिऩ् वेलै–तरंगसमेत समुद्र से; चूऴ् किटन्त–घिरे रहे; आऴि मा मलैयिऩ् निऩ्ऱुम्–चक्रवाल पर्वत से; इ मलैयिल्–इस पर्वत पर; वावुवाऩ्–उछलकर कूदेगा। ११६

वाली भूमि, जल, अनल और अनिल —इन चारों भूतों का सम्मिलित बल रखता है। तरंग-भरे बाह्य समुद्रों से घिरे चक्रवाल पर्वत से उछलकर वह इस पर्वत पर एक दम कूद सकता है। ११६

किट्टु	वार्पॊरक्	किडैक्कि	ऩऩ्नवर्प्
पट्ट	नल्वलम्	बाह	मॅय्दुवाऩ्
ॲट्टु	मादिरत्	तिरुदि	नाऴुमुऱ्
ऱट्ट	मूर्त्तिताऴ्	पणियु	माणैयाऩ् 117

पॊर किट्टुवार्–लड़ने आनेवाले; किटैक्किऩ्–मिल गये तो; अऩ्नवर् पट्ट–उनमें रहनेवाले; नल् वलम्–श्रेष्ठ बल का; पाकम्–(आधा) भाग; ऍय्तुवाऩ्–खुद प्राप्त कर लेगा; ऍट्टु मातिरत्तु–आठों दिशाओं के; इऱुति–अन्त तक; नाळुम् उऱ्ऱु–रोज जाकर; अट्ट मूर्त्ति–(वहाँ अधिष्ठित रहनेवाले) अष्टमूर्तियों के; ताऴ्–चरणों की; पणियुम्–पूजा करने का; आणैयाऩ्–नियम रखनेवाला। ११७

जो कोई उससे युद्ध करने आयगा, उसका आधा बल वाली को मिल जायगा। ऐसा वर उसे प्राप्त है। (यह बात वाल्मीकी में नहीं पायी जाती। श्रीराम ने छिपकर वाली को मारा, इसकी सफ़ाई में यह वर इंगित किया जाता है।) वह प्रतिदिन आठों दिशाओं के अन्त तक जाता है और वहाँ अधिष्ठित अष्टमूर्तियों की पूजा कर आता है। यह उसका नियम बना है। ११७

कालुशॆ	लादवऩ्	मुऩ्नरक्	कन्दवेऴ्
वेलुशॆ	लादवन्	मार्विन्	वॆन्ऱियाऩ्

वाल्शॅ लादवा यलदि रावणन्
कोल्शॅ लादवन् कुडैशॅ लादरो 118

अवन् मुन्तर्–उसके सामने; काल् चॅलातु–पवन नहीं चलता; अवन् मार्पिन्–उसके वक्ष में; कन्त वेळ्–स्कन्द (कार्तिकेय) देव की; वेल् चॅलातु–शक्ति नहीं निफर सकती; वॅन्ड्रियान्–विजयी (की); वाल् चॅलात–पूंछ जहां नहीं जाती; वाय् अलतु–उस जगह के सिवा अन्यत्र (यानी जहां उसकी पूंछ जाती वहां नहीं); इरावणन् कोल्–रावण का (राज) दण्ड; चॅलातु–नहीं जायगा; अवन् कुटै–उसका छत्र भी; चॅलातु–नहीं चलेगा। ११८

उस वाली के सामने पवन नहीं चलता। उसके वक्ष में स्कन्ददेव की शक्ति घात नहीं कर सकती। (स्कन्ददेव कार्तिकेय हैं।) रावण का दण्ड और छत्र वहीं चल सकेंगे, जहाँ वाली की पूंछ नहीं गयी हो। रावण का अधिकार वाली के अधिकार से सीमित रह गया है। ११८

मेरु वेमुदर् किरिहळ् वेरोंडुम्, पेरु मेयवन् पेरु मॅन्ँडुम्
कारुम् वानमुङ् गदिरु नाहमुम्, तूरु मेयवन् पॅरिय तोळ्हळाल् 119

अवन् पेरुमेल्–वह चलेगा तो; मेरुवे मुतल् किरिफळ्–मेरु ही आदि पर्वत; वेरोंटुम्–जड़ के साथ; पेरुमे–उखड़ जायेंगे; अवन् पॅरिय तोळ्फळाल्–उसकी बड़ी भुजाओं से; नॅटुम् कारुम्–वड़े-वड़े मेघ और; वानमुम्–आकाश; कतिरुम्–चन्द्र और सूर्य और; नाकमुम्–स्वर्गलोक; तूरुमे–परस्पर टकराकर मिट जायेंगे। ११९

जब वह चलता है, तब उसके वेग से चालित पवन के कारण मेरु आदि सभी पर्वत जड़ से उखड़ जाते हैं। उसके कन्धों से टकराकर वड़े-वड़े मेघ, आकाश, चन्द्र और सूर्य और स्वर्गलोक तक चूर हो जा सकते हैं। ११९

पारि डन्दवॅम् वन्ड्रि पण्डैनाळ्, नीर्हि डन्दपे रामै नेरुळान्
मार्बि डन्दमा वॅन्निनु मड्रवन्, तार्हि डन्दतो डहैय वल्लदो 120

पार् इटन्त–भूमि को उखाड़नेवाले; वॅम् पन्ड्रि–अतिवलिष्ठ वराह (विष्णु का अवतार) भी; पण्टै नाळ्–प्राचीनकाल में; नीर् किटन्त–जल में रहा; पेर् आमै–वड़ा कच्छप (विष्णु का अवतार) भी; नेर् उळान्–उसके समान हैं; मार्पु इटन्त–हिरण्य का वक्ष-विदारक; मा ॲन्निनुम्–नरसिंह भी; अवन्–उसके; तार् किटन्त तोळ्–माला से अलंकृत कन्धों को; तकैय वल्लतो–परास्त करने की शक्ति रखता क्या। १२०

वह, भूमि को जिन्होंने खोद निकाला उन विष्णु का अवतार, वड़ा वराह, और प्रलयजल में पड़ा रहा, विष्णु का, अवतार कच्छप —इनकी-सी शक्ति रखनेवाला है। नरसिंह भी, जिन्होंने हिरण्यकशिपु के वक्ष को विदीर्ण किया था, इसके भुजबल को परास्त कर सकेंगे क्या ? नहीं। १२०

पडऱ्ऩद नीणॅडुन् दलैप रप्पिमी
दडऱ्ऩुडु पारिडन् दत्तैय नन्दत्तुम्
किडन्ऩुडु ताङ्गुमिक् किरियिऩ् मेयिऩ्ताऩ्
नडन्ऩुडु ताङ्गुमिप् पुवन्न नाळॆलाम् 121

अनन्ततुम्–अनन्त नाग भी; पटऱ्ऩ्त–खुले; नीळ् नॆंटु–लम्बे-चौड़े; तलै–अपने सहस्र सिरों को; परप्पि–फैलाकर; मीतु अटऱ्ऩ्तु–उन पर रही; पार् इटम् तत्तै–भूमि को; किटन्तु ताङ्कुम्–उसके नीचे रहकर ढो रहा है; इ किरियिऩ् मेयिऩ्ताऩ्–इस पर्वत पर रहनेवाला वाली तो; इ पुवत्तम्–इस भुवन को; नाळ् ऍलाम्–अनेक काल से; नटन्तु ताङ्कुम्–चलते हुए ही धारण करता रहा है। १२१

अनन्तनाग इस भूमि को अपने सहस्र सिरों को फैलाकर, भूमि के नीचे रहकर ही उसे धारण कर रहा है। पर इस पर्वत पर रहनेवाला वाली चलते हुए ही बरसों से इसका धारण कर रहा है। १२१

कडलॊ लिप्पडुङ् गाल्श लिप्पडुम्
मिडल रुक्कर्तेर् मीडु शल्वडुम्
तॊडरिऩ् मऱ्ऱवन् शुळियु मॆऩ्ऱलाल्
अडलिन् वॆऱ्ऱिया ययलि ऩ्ताववो 122

अटलिऩ् वॆऱ्ऱियाय्–युद्धविजेता; कटल् ऒलिप्पतुम्–समुद्र का गर्जन करना; काल् चलिप्पतुम्–पवन का संचार करना; मिटल् अरुक्कर्–शक्तिमन्त (द्वादश) आदित्यों का; तेर् मीतु चॆल्वतुम्–रथों पर सवार होकर संचार करना; तॊटरिऩ्–(वाली के) पास जायें तो; अवऩ् चुळियुम्–वह क्रोध करेगा; ऍऩ्ऱु अलाल्–यह (कारण) छोड़कर; मऱ्ऱु अयलिऩ्–अन्य कारणों से; आववो–होते हैं क्या। १२२

हे युद्धविजेता! समुद्र गरजता है, वायु बहती रहती है, बलवान द्वादश आदित्य रथों पर सवार हो संचार कर रहे हैं! यह सब क्यों? वे वाली से डरते हैं। सोचते हैं कि अगर हम उसके पास जायें तो वह कुपित होगा। अन्य कोई हेतु है क्या? नहीं। १२२

वॆळ्ळ मेळुपत् तुळ्ळ मेरुवैत्
तळ्ळ लात्तदो ळरियिऩ् ऱात्तैयाऩ्
उळ्ळ मॊन्ऱियॆव् वुयिरुम् वाळुमाल्
वळ्ळ लेयवन् वलियिऩ् वऩ्मैयाल् 123

वळ्ळले–उदार दानी; मेरुवै तळ्ळल् आत–मेरु को भी ढकेलने की शक्ति वाले; तोळ्–कन्धों के; वॆळ्ळम् ऍळुपत्तु उळ्ळ–सत्तर 'वॆळ्ळम्' के; अरियिऩ् तात्तैयाऩ्–वानरों की सेना का स्वामी; अवऩ् वलियिऩ्–उसकी शक्ति के; वऩ्मैयाल्–आधिक्य से; ऍ उयिरुम्–सभी जीव; उळ्ळम् ऒऩ्ऱि–उसके साथ मन मिलाकर, मेल के साथ; वाळुम्–जीते हैं। १२३

हे वदान्य ! उसके पास सत्तर 'वॅळ्ळम्' या समुद्र वानरवीरों की बनी सेना है। (एक हाथी, एक रथ, तीन अश्व, पाँच पदाति —ये मिलकर एक 'पंक्ति' बनते हैं। तिगुणे के हिसाब से सेनामुख, गुल्म, गण, वाहिनी, पृतना, चमू, अनीकिनी होती है। दस अनीकिनियों की एक अक्षौहिणी होती है। फिर अठगुणे के हिसाब से एक, कोटि, शंख, विन्द, कुमुद, पद्म, देश और समुद्र होता है —शुकनीति से न०वे० रा० द्वारा उद्धृत।) उसके प्रताप के आधिक्य के कारण सभी जीव उसका आदर करके मेल के साथ रहते हैं। १२३

मऴैयि	डिप्पुऱा	वयवॅऩ्	जीयमा
मुऴैयि	डिप्पुऱा	मुरण्वॅङ्	गालुमॅऩ्
तऴैतु	डिप्पुऱच्	चार्वु	ऱावबऩ्
विऴैवि	डत्तिऩ्मेल्	विळियॅ	यऩ्जलाल् 124

विळियै अऩ्चल् आल्—उसके गर्जन से डरते हैं, इसलिए; अवऩ्—उसके; विऴैवु इटत्तिऩ् मेल्—चाहे (वास के) स्थान के ऊपर; मऴै इटिप्पु उऱा—मेघ वज्रघोष नहीं निकालते; वयम् वॅम्—विजयी भयंकर; चीयमा—सिंह जानवर; मुऴै—गुफाओं में; इटिप्पु उऱा—गर्जन नहीं करते; मुरण् वॅम् कालुम्—बली, भयंकर पवन भी; मॅऩ् तऴै—मृदु पत्तों में; तुटिप्पु उऱ—स्पन्दन पैदा करते हुए; चार्वु उऱा—उनके पास नहीं बहता। १२४

वाली गरज उठेगा, इसी डर से जहाँ वह चाह के साथ रहता है, उसके ऊपर मेघ वज्र नहीं गिराते। विजयशील सिंह जानवर अपनी गुफा में भी गर्जन नही करते। बलवान भयंकर पवन भी पल्लवों को भी हिलाते हुए नहीं बहता। १२४

मॅय्क्कोळ्	वालिऩाऩ्	मिडलि	रावणऩ्
तॉक्क	तोऴुऱत्	तॉडर्ब	डुत्तनाळ्
पुक्कि	लादवुम्	बॉऴिय	रत्तनीर्
उक्कि	लादवु	मुलहम्	यावदो 125

मॅय् कोळ् वालिताल्—अपने शरीर का एक अंग, पूँछ से; मिटल् इरावणऩ्—अति बलिष्ठ रावण के; तॉक्क तोऴ्—राशि के कन्धों को; उऱ—खूब कसकर; तॉटर् पट्टुत्त नाळ्—जिस दिन (वाली ने) बाँधा था; पुक्कु इलातवुम्—(उस दिन) वह जिन लोकों में नहीं गया; पॉऴि अरत्त नीर्—बहनेवाला रक्त; उक्कु इलातवुम्—जहाँ नहीं गिरा; उलकम् यावतो—वे लोक कौन हैं। १२५

(एक बार वाली समुद्रतट पर सन्ध्यावन्दन कार्य में निरत था। रावण ने पीछे से उसको अपनी बीसों भुजाओं से बाँधा।) वाली ने उसके बीसों कंधों को एक साथ कसकर अपनी पूँछ से बाँध लिया। उसी स्थिति में उसको उठा लेते हुए वाली सभी लोकों में घूमा। तब कौन सा लोक बचा था, जिसमें वाली नहीं गया था और जहाँ रावण का रक्त नहीं गिरा था ? । १२५

इन्दि रत्ऩ्ऱ्ऩिप् पुदल्व ऩिऩ्ऱ्ळिच्
चन्दि रऩ्ऱ्ळैत् तऩैय तऩ्मैयाऩ्
अन्द हऩ्ऱ्ऩक् करिय वाणैयाऩ्
मुन्दि वन्दऩ् ऩिवऩिऩ् मोय्म्बिऩाय् 126

मोय्म्पिऩाय्–शक्तिमन्त; इन्तिरऩ् तऩि पुतल्वऩ्–इन्द्र का अनुपम वह पुत्र; इऩ् अळि–सुखद; चन्तिरऩ्–चन्द्र; तळैत्तु अऩैय–शोभायमान हो, ऐसा; तऩ्मैयाऩ्–विशिष्ट (श्वेत वर्ण का) है; अन्तकऩ् तऩक्कु अरिय–यम के लिए भी अलंघ्य; आणैयाऩ्–आज्ञाकारी है; इवऩिऩ्–इन (सुग्रीव) का; मुन्ति वन्तऩऩ्–अग्रज है। १२६

शक्तिमान ! इन्द्र का वह अनुपम पुत्र वाली श्वेत रंग का है और सुखद शोभायमान चन्द्र के समान है। उसकी आज्ञा ऐसी है कि यम के लिए भी टालना कठिन है। वह इन सुग्रीव का अग्रज भ्राता है। १२६

अऩ्ऩ वऩ्ऩॆमक् करश ऩाह्वेऩ्
ऩ्ऩिऩ्ऩ वऩ्ऩिळम् बदमि यर्ऱुनाळ्
मुऩ्ऩ वऩ्गुलप् पहैञऩ् मुट्टिऩाऩ्
मिन्ऩॆ यिर्ऱुवा ळवुणऩ् मेऩ्मैयाऩ् 127

अऩ्ऩवऩ्–वह; ऍमक्कु अरचऩ् आक–हमारा राजा रहा, तब; इऩ्ऩवऩ्–ये; इळम् पतम् एऩ्ऱु–युवराज के पद का धारण करके; इयर्ऱु नाळ्–शासन करते रहे, तब; मेऩ्मैयाऩ्–शक्ति में बढ़ा हुआ; मुऩ्–पूर्व से ही; अवऩ् कुल पकैञऩ्–वाली का कुलवैरी जो रहा, वह; मिऩ् ऍयिर्ऱु–उज्ज्वल वक्र दन्तार; वाळ् अवुणऩ्–तलवारधारी दानव; मुट्टिऩाऩ्–(वाली से) भिड़ा। १२७

वह वाली हमारा राजा रहा। ये सुग्रीव युवराज के पद पर थे। जब ये राज्य कर रहे थे, तब अति बलिष्ठ, वाली का कुलवैरी और बिजली-सम वक्रदंतार और तलवारधारी (मायावी नाम का) दानव वाली से आकर भिड़ा। १२७

मुट्ट निऩ्ऱ्वऩ् मुरणु रत्तिऩाल्
ऒट्ट वञ्जिनॆञ् जुलैय वोडिऩाऩ्
वट्ट मण्डलत् तरिदु वाळ्वॆऩा
ऍट्ट रुम्बिल मदऩि लॆय्दिऩाऩ् 128

मुट्ट–टकराने पर; निऩ्ऱवऩ्–जो अड़ा रहा वह वाली; मुरण् उरत्तिऩाल्–बलवान वक्ष से; ऒट्ट–प्रहार करने लगा; अञ्चि–डरकर; नॆञ्चु उलैय–मन में व्यग्र होकर; ओटिऩाऩ्–भागा; वट्ट मण्टलत्तु–गोल भूमण्डल में; वाऴ्वु अरितु ऍऩा–जीना कठिन है, जानकर; ऍट्टु अरुम्–पहुँचने में कठिन; पिलम् अततिल्–एक बिल में; ऍय्तिऩाऩ्–घुस गया। १२८

जब असुर भिड़ने आया, तब वाली अड़ा रहा और अपने वक्ष से उस पर प्रहार किया। असुर डरा और जान लेकर भागा। 'इस गोल भूमण्डल पर कहीं भी रहना खतरे से खाली नहीं' —यह जानकर वह ऐसे एक बिल में घुस गया, जहाँ जाना बहुत ही कठिन था। १२८

ॲय्दु	कालैयिप्	पिलनु	ळॅय्दियान्
नॉय्दि	नङ्गवङ्	कॉल्वॅ	नोन्मैयाल्
शॅय्दि	कावनी	शिऱिदु	पोऴ्दॅन्ना
वॅय्दि	नॅय्दिनान्	वॅहुळि	मेयिनान् 129

ॲय्तु कालै–जब घुसा; वॅकुळि मेयिनान्–क्रुद्ध (वाली); यान्–मैं; इ पिलत्तुळ् ॲय्ति–बिल में जाकर; नोन्मैयाल्–शक्ति से; नॉय्तिन्–शीघ्र; अङ्कु–वहाँ; अवन् कॉल्वॅन्–उसको मारूँगा; नी–तुम; चिऱितु पोऴ्तु–थोड़ी देर; कावल् चॅय्ति–रक्षण का काम करो; ॲन्ना–कहकर; वॅय्तिन्–शीघ्र; ॲय्तिनान्–(बिल में) गया। १२९

जब वह घुस गया तो वाली को अपार क्रोध हुआ। उसने सुग्रीव को आज्ञा दी कि मैं इसमें जाऊँगा और अपने बल से इसको शीघ्र मारकर आ जाऊँगा। तुम इसकी रखवाली करो, थोड़ा समय। यह कहकर वाली शीघ्र उस बिल में घुस गया। १२९

एहि	वालियु	मिरुदुवे	ळॉडेळ्
वेह	वॅम्बिलन्	दडवि	वॅम्मैशाल्
मोह	मोडमर्	मुयल्विन्	वैहिडच्
चोह	मॅय्दिनिन्	ऱुणैदु	ळङ्गिनान् 130

वालियुम्–वाली भी; वॅम् पिलम् वेकम् एकि–भयंकर बिल में घुसकर; एऴ् ओटु एऴ् इरुतु–चौदह ऋतुओं के काल तक; तटवि–टटोलकर; वॅम्मै चाल्–उग्र; मोकम् ओटु–उत्साह के साथ; अमर् मुयल्विन्–युद्ध के प्रयत्न में; वैकिट–लगा रहा, तब; निन् तुणै–आपके भाई (सुग्रीव); चोकम् ॲय्ति–शोकाकुल होकर; तुळङ्किनान्–घबड़ा गया। १३०

वाली उसके अन्दर गया। उस असुर को ढूँढ़ता रहा। चौदह ऋतुओं का (अट्ठाईस मास का) काल बीत गया। आखिर उसको पाकर वाली उग्र रूप से दत्तचित्त होकर उसके साथ लड़ने में लगा हुआ था। इधर आपके भाई सुग्रीव चिन्ताग्रस्त होकर (शायद वाली मर गया क्या? इस संशय के कारण) घबड़ाये रहे। १३०

अळद	ळुङ्गुरु	मिवनै	यन्बिनिल्
तॉळुदि	रन्दुनिन्	ऱॉळिलि	दादलाल्

अळुदु वॆत्रियाय् अरशु कॊळ्हॆन्नप्
पळुदि दॆन्ऱनन् परियु नॆञ्जिनान् 131

ऍळुतु वॆत्रियाय्–उल्लेखनीय विजयशाली; अळुतु अळुङ्कुरुम्–रोते और दुःखी; इवत्तै–इनको; अन्पिनिल् तॊळुतु–स्वामी-भक्ति के साथ नमस्कार करके; इरन्तु–प्रार्थना में; निन् तॊळिल् इतु–आपका कार्य है यह; आतलाल्–इसलिए; अरचु कॊळ्क–राज्य लो; ऍन्न–हमारे कहने पर; परियुम् नॆञ्चिनान्–(भ्रातृस्नेह से) विह्वलमन; इतु पळुतु–यह गलत है; ऍन्ऱनन्–कहा। १३१

वर्णनयोग्य विजयशील ! बहुत काल तक सुग्रीव दुःख के साथ रोते रहे। तब हम वानरों ने इनसे प्रार्थना की। शासन करना आपका जन्मसिद्ध अधिकार का कार्य है। आप जाकर राज्य पर अधिकार करें। पर भ्रातृवियोग से दुःखी इन्होंने कहा कि यह गलत काम है। वे सम्मत नहीं हुए। १३१

ऍन्ऱु तानुमव् वळियि रुम्बिलम्
शॆन्ऱु मुन्नवऩ् ऱेडु वेन्नवऩ्
कॊन्ऱु ळान्ऱनैक् कॊलवॊ णादॆनिल्
पॊन्ऱु वेनॆनप् पुहुदऩ् मेयिनान् 132

ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; अ वळि–उसी रास्ते से; इरुम् पिलम् चॆन्ऱु–बड़े बिल में जाकर; मुन्नवन् तेटुवेन्–अपने बड़े भाई को ढूँढूँगा; अवन् कॊन्ऱु उळान् तन्नै–उसके हन्ता को; कॊल ऒणातु ऍनिल्–मार नहीं सकूँगा तो; पॊन्ऱुवेन्–स्वयं मर जाऊँगा; ऍन–यह ठानकर; तानुम्–स्वयं भी; पुकुतल् मेयिनान्–घुसने लगे। १३२

उन्होंने यह ठाना कि मैं इसी मार्ग से इस बिल में घुस जाऊँगा और बड़े भाई की टोह लगाऊँगा। समझिए कि उनको असुर ने मारा है और उसे मैं मार नहीं सकूँगा, तो मैं स्वयं आत्महत्या कर लूँगा। यह निश्चय सुनाकर वे उसी बिल में प्रवेश करने लगे। १३२

तडुत्तु वल्लवर् तणिवु शॆय्दुनोय्
कॆडुत्तु मेलैयोर् किळत्तु नीदियाल्
अडुत्त कावलुम् मरशु माणॆयिल्
कॊडुत्त दुण्डिवन् कॊण्ड दिल्लैयाल् 133

वल्लवर्–समर्थ, बड़े वानर लोगों ने; तटुत्तु–रोककर; तणिवु चॆय्तु–समाधान करके; नोय् कॆटुत्तु–दुःख का रोग दूर करके; मेलैयोर्–पूर्व के लोगों के; किळत्तु नीतियाल्–कथित नीतिवाक्यों के अनुसार; अटुत्त कावलुम् अरचुम्–प्राप्त पालन और शासन का पद; आणॆयिल्–क्रम के अनुकूल; कॊटुत्ततु उण्टु–दिया, यही सत्य है; इवन् कॊण्टतु इल्लै–इन्होंने खुद लिया नहीं था। १३३

तब चतुर, समर्थ बुजुर्ग लोगों ने उनको रोका और सान्त्वना दिलायी;

और दुःखरोग से निवृत्त कराया। पूर्व के विद्वानों के कथित धर्म के अनुसार पालन और शासन का जिम्मा उनका हो गया था। इसलिए उन्होंने राज्य का भार नियमानुसार उन्हें सौंप दिया। यही सच्ची घटना है। सुग्रीव ने स्वयं राज्य नहीं लिया था। १३३

अऩ्ऩ	नाळिऩ्मा	यावि	यप्पिलत्
तिऩ्ऩ	वायिल्	डेरु	ऍन्ऩयाम्
पॊऩ्ऩिऩ्	मालुवरैप्	पॊरुप्पॊ	ऴितृतुवे
रुऩ्ऩु	कुऩ्ऱॆला	मुडऩ्	डुक्किऩेम् 134

अऩ्ऩ नाळिल्–उन दिनों; याम्–हम; मायावि–मायावी; अ पिलत्तु–उस बिल के; इऩ्ऩ वायिल् ऊडु–इस द्वार के द्वारा; एऱुम् ऍऩ्ऩ–चढ़कर बाहर आयगा (तो); ऍऩ्ऩ–ऐसा सोचकर; पॊऩ्ऩिऩ् माल् वरै पॊरुप्पु–स्वर्ण का बड़ा मेरुपर्वत; ऒऴित्तु–छोड़कर; वेऱु उऩ्ऩु–अन्य गण्य; कुऩ्ऱु ऍलाम्–सभी पर्वतों को; उटऩ् अट्टुक्किऩेम्–उस द्वार पर चुन दिया। १३४

जब यह सब हुआ तो हमने सोचा कि मायावी इस द्वार से बाहर आ जाएगा तो अनर्थ हो जाएगा। इस डर से हमने उसको बन्द कर अपनी रक्षा करना चाहा। अतः मेरुपर्वत को छोड़कर अन्य सारे गण्य भारी पर्वतों को उठाकर हमने उस द्वार के सामने चुन दिया। १३४

शेम	मव्वऴिच्	चॆय्दु	शॆङ्गदिर्क्
कोम	हऩ्ऱनैक्	कॊण्डु	वन्दियाम्
मेवु	कुऩ्ऱिऩ्मेल्	वैहुम्	वेलैवाय्
आवि	युण्डऩ	नवऩ्ऩै	यऩ्ऩवऩ् 135

याम्–हम; अ वऴि–उस द्वार को; चेमम् चॆय्तु–सुरक्षित (बन्द) करके; चॆम् कतिर्–लाल किरणों के सूर्य के; कोमकऩ् तऩ्ऩै–सुपुत्र को; कॊण्टु वन्तु–ले आकर; मेवु कुऩ्ऱिऩ् मेल्–(हमारे वास के लिए) बने पर्वत पर; वैकुम् वेलै वाय्–रहते थे, तब; अवऩ्ऩै–उस असुर के; अऩ्ऩवऩ्–उस वाली ने; आवि उण्टऩऩ्–प्राण पी लिये (हर लिये)। १३५

इस तरह उस द्वार को खूब बन्द करके, हमने सुरक्षा का बन्दोबस्त किया। लाल किरणों के स्वामी सूर्य के सुत को पर्वत पर ले आये। हम यहाँ निश्चिन्त अपना समय बिताने लगे। उधर क्या हुआ? वाली ने मायावी के प्राणों का पान कर लिया (मार डाला)। १३५

ऒऴित्त	वऩ्ऩुयिर्क्	कळ्ळै	युण्डुळम्
कळित्त	वालियुङ्	गडिदि	नॆय्दिनाऩ्
विळित्तु	निऩ्ऱुवे	ऱुरैप्	पाऩिरुन्
दळित्त	वाऩ्ऩऩ्	ऱिळव	लारॆऩ्ऩा 136

ऑळितूतवन्–जो छिपा रहा उसके; उयिर् कळ्ळै–प्राणसुरा को; उण्टु–पान करके; उळम् कळितूत–मनमस्त; वालियुम्–वाली भी; कटितिन् अयतितान्–वेग के साथ आकर; विळितुतु निन्ऱु–टेर लगाता रहा; वेऱु उरै पॅऱात्–उत्तर नहीं पाकर; इळवलार्–युवराज का; इरुन्तु अळितूत–यहाँ रहकर उपकार करने का; आऱु–यह प्रकार; नन्ऱु अँता–अच्छा रहा, कहकर। १३६

बिल में जो छिपा था, उस मायावी के प्राण वाली के लिए सुरा-सम लगे। यानी वाली उसको मारकर सन्तोष से भर गया। मनमस्त होकर वह द्वार पर आकर क्या देखता है? द्वार बन्द है। टेर लगाता है; कोई उत्तर नहीं मिलता। हा! युवराज का यहाँ रखवाली करके मेरा उपकार करने का यह तरीका भी बड़ा अच्छा रहा! यह कहा। १३६

वाल्वि शैत्तुवान् वळिनि मिऱ्न्दुऱक्
काल्पॅ यर्त्तवन् कडिदु दैत्तलुम्
नील्नि ऱत्तवा नॅडुमु हट्टवुम्
वेलै पुक्कवुम् बॅरिय वॅऱ्पॅलाम् 137

अवन्–उसके; वात् वळि–आकाश में; निमिर्न्तु उऱ–उठी रहे, ऐसा; वाल् विचैत्तु–पूँछ ऊपर करके; काल् पॅयर्त्तुतु–पैर उछालकर; कटितु उतैत्तलुम्–जोर से (लात) मारने पर; पॅरिय वॅऱ्पु अॅलाम्–सारी बड़ी गिरियाँ; नील् निऱत्त–नील; वान्–आकाश की; नॅटु मुकट्टवुम्–ऊँची चोटी की (तक पहुँची हुई) हो गयीं; वेलै पुक्कवुम्–और समुद्र में मग्न (हो गईं)। १३७

उसने अपनी पूँछ आकाश की चोटी से लगाते हुए उठायी। बड़े वेग के साथ पैर उछालकर लात मारी तो द्वार पर के सारे पर्वत उड़ गये। एक अंश के आकाश पर गये और बाकी समुद्र में जा गिरे। १३७

एऱि नान्व नॅवरु मञ्जुरच्
चीऱि नानॅडुञ् जिहर मॅय्दिनान्
वेऱि लादवन् बुदवु मॅय्म्मैयाम्
आऱि नानुम्वन् दडिव णङ्गिनान् 138

अवन्–वह; अॅवरुम् अञ्चुऱ–सबको भयभीत करते हुए; एऱिनान्–बिल के बाहर चढ़ आया; चीऱिनान्–क्रोध दिखाते हुए; नॅटुम् चिकरम् अॅय्तिनान्–विशाल उन्नत शिखर पर आ पहुँचा; वेऱु इलात–निर्विकार; अन्पु उतवु–भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर; मॅय्म्मै आम्–सत्य के; आऱिनानुम्–मार्ग में चलनेवाले सुग्रीव भी; वन्तु–सामने आकर; अटि वणङ्कितान्–उसके चरणों पर नत हुए। १३८

वह ऊपर चढ़कर बिल के बाहर निकला। सबको भयभीत करते हुए अत्यन्त क्रोध के साथ वह इस पर्वत के विशाल और उन्नत शिखर पर चढ़ आया। सत्यमार्गगामी सुग्रीव निर्विकार भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर उसके सामने आये और चरणों पर नत हुए। १३८

वणङ्गि	यण्णतिऩ्	वरवि	लामैयाल्
उणङ्गि	युऩ्वऴिप्	पडर	वुऩ्ऩुवेड़
क्किणङ्ग	रिऩ्मैया	लिड़ैव	वुऩ्ऩुडैक्
कणङ्गळ्	कावलुऩ्	कडऩ्मै	यॆऩ्ड़ऩर् 139

वणङ्कि–नमस्कार करके; अण्णल्–महिमामय; निऩ्–आपका; वरवु–आगमन; इलामैयाल्–नहीं हुआ, इसलिए; उणङ्कि–मुरझाकर; उऩ् वऴि पटर–आपकी खोज में आना; उऩ्ऩुवेड़्कु–जो सोचा वैसे मुझे; इड़ैव–हे नाथ; उऩ्ऩुटै कणङ्कळ्–आपके ही इन वृन्दों ने; इणङ्कर् इऩ्मैयाल्–सम्मत न होने से; कावल् उऩ् कटऩ्मै–शासन तुम्हारा ज़िम्मा है; ॲऩ्ड़ऩर्–कहा। १३९

नमस्कार करके उन्होंने वाली से निवेदन किया कि महिमावान ! आप वहुत दिन तक लौट नहीं आये। मैं मुरझाया और मैं आपका अनुगमन करना ही चाहता था। पर आपके इन वानरवृन्दों ने उससे सहमत न होकर मुझसे आज्ञा दी कि शासन करना तुम्हारा कर्तव्य है; ज़िम्मा है। १३९

आणै	यञ्जियिव्	वरशै	यॆय्दिवाऴ्
नाणि	लादनी	नवैयुळ्	वैहिऩाय्
पूणु	लावुदो	ळिऩैपॊ	ड़ायॆऩक्
कोणि	ऩाऩॆडुङ्	गॊडुमै	कूड़िऩाऩ् 140

पूण् उलावु–आभरण जिन पर हिलते हैं, ऐसे; तोळिऩै–भुजा वाले; पॊड़ाय्–क्षमा कीजिए; ॲऩ–विनय करने पर; आणै अञ्चि–इनकी आज्ञा से डरकर; इ अरचै–इस राज्य को; ॲय्दि–लेकर; वाऴ्–रहनेवाले; नाण् इलात नी–निर्लज्ज तुम; नवैयुळ् वैकिऩाय्–अपराध कर चुके हो; कोणिऩाऩ्–विकृतमन; नॆटुम् कॊटुमै–वड़े कठोर वचन; कूड़िऩाऩ्–वोला। १४०

आभरणालंकृत भुजा वाले भाई ! क्षमा करें। सुग्रीव ने यह विनय की। पर वाली का मन वक्र हो गया था। उसने अपराध लगाया कि उनकी आज्ञा से डरकर तुम राज्य लेकर भोग कर रहे हो। तुम निर्लज्ज हो ! तुम अपराध कर चुके हो। विकृतमन वाली ने कितने ही कठोर शब्द कहे। १४०.

अडलॢह	डऩ्ददो	ळवनै	यञ्जिॲम्
कुडलॢह	लङ्गियॆङ्	गुलमॊ	डुङ्गमुऩ्
कडलॢह	डैऩ्दवक्	करद	लङ्गळाल्
उडलॢह	डैऩ्दन	ऩिवनु	लॆऩ्दऩऩ् 141

अटल् कटन्त–अतिक्रान्त; तोळ् अवऩै–भुजवल वाले उससे; अञ्चि–डरकर; ॲम् कुलम्–हमारे समूह; ॲम् कुटल्–तप्त आँतों के; कलङ्कि–विचलित होते;

ऑट्टुङ्क–दुबके रहे; मुन्न् कटल् कटैन्त–पूर्वकाल में जिनसे समुद्र मथा था; अ करतलङ्कळाल्–उन हाथों से; उटल् कटैन्ततन्–(सुग्रीव का) शरीर मथ दिया; इवन् उलैन्ततन्–ये व्याकुल हुए। १४१

वाली का भुजबल बल के माप का भी अतिक्रमण कर गया था। उसके डर के कारण हमारे समूह के वानरों की आँतें तक तप्त हो गयीं, विचलित हो गयीं। हम दुबके खड़े रहे। तब वाली ने अपने हाथों से, जिनसे उसने क्षीरसागर को मथा था, सुग्रीव को प्रहार करके त्रस्त किया। ये सुग्रीव बहुत व्याकुल हुए। १४१

नक्क रक्कडर् पुऱत्तु नण्णुनाळ्
शॅक्कर् मॅय्त्तनिच् चोदि शेर्हलाच्
चक्क रप्पोरुप् पिन्ऱ लैक्कुमप्
पक्क मुऱ्ऱवऩ् कडितु पऱ्ऱिनान् 142

नक्करम्–नक्रों से युक्त; कटल् पुऱत्तु–समुद्रों के भी उस पार; नण्णुम् नाळ्–(जब सुग्रीव) गये तब; चॅक्कर् मॅय्–लाल शरीर के; तनि चोति–अनुपम ज्योतिस्वरूप (सूर्य); चेर्कला–जहाँ पहुँच नहीं पाते; चक्करम् पोरुप्पिन्–चक्रवाल गिरि के; तलैक्कुम्–तल के भी; अ पक्कम् उऱ्ऱु–उस पार जाकर; अवन् कटितु पऱ्ऱिनान्–उनको जल्दी पकड़ लिया। १४२

सुग्रीव भागा। नक्रसहित समुद्रों के उस पार जाकर रहा। वाली चक्रवाल गिरि के उस पार, जहाँ लाल शरीर के अनुपम ज्योतिपुंज सूर्य भी पहुँच नहीं पाते, गया और सुग्रीव को पकड़ लिया। १४२

पऱ्ऱि यञ्जलन् पळियै वॅञ्जिनम्
मुऱ्ऱि निन्ऱदन् मुरण्व लिक्कैयाल्
ऍऱ्ऱु वानॅडुत् तॅळुद लुम्बिळैत्
तऱ्ऱ मोन्ऱुपॅऱ् ऱिवन्ऱ हन्ऱनन् 143

पऱ्ऱि–पकड़कर; पळियै अञ्चलन्–लोकनिन्दा से न डरकर; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध; मुऱ्ऱि निन्ऱ–से भरे; तन् मुरण् वलि कैयाल्–अपने अति वलिष्ठ हाथों से; ऍऱ्ऱुवान्–पटकने के विचार से; ऍटुत्तु ऍळुतलुम्–उठाते हुए उठा तो; इवन्–ये; अऱ्ऱम् ओन्ऱु–एक मौका; पॅऱ्ऱु–पाकर; पिळैत्तु अकन्ऱनन्–बचकर भाग गये। १४३

वाली 'भ्रातृत्रासक के रूप में लोक-निन्दा का पात्र बनूँगा' इस बात से भी नहीं डरा। उसने अति क्रोध के साथ अपने क्रूर हाथों से सुग्रीव को पकड़ लिया। उनको वेग से पटकने के विचार से उसने अपने हाथ उठा लिये। तब सुग्रीव किसी विध मौका पाकर बच गये और भाग आये। १४३

ॲन्दै मऱ्ऱव नॅयिऱ् ऱुक्कुमेल्, अन्द हऱ्कुमो ररण मिल्लैयाल्
इन्द वॅऱ्पिन्वन् दिवनि रुन्दनन्, उन्द वुऱ्ऱदोर् शाव मुण्मैयाल् 144

ॲन्तै–हमारे धाता; अवन्–(वाली) वह; ॲयिऱ् अतुक्कुमेल्–दाँत पीसेगा तो; अन्तकऱ्कुम्–यम के लिए भी; ओर् अरणम्–कोई पनाह; इल्लै–नहीं मिलेगी; आल्–इसलिए; उन्त–(मतंग मुनि द्वारा) दिया जाकर; उऱ्ऱतु ओर् चापम्–मिला एक शाप; उण्मैयाल्–है, उससे; इवन्–ये; इन्त वॅऱ्पिन् वन्तु–इस गिरि पर आकर; इरुन्तनन्–ठहरे हैं। १४४

हनुमान ने जारी किया। हमारे धाता! वाली दाँत पीसता दिखता तो यम को भी पनाह नहीं मिलती। इसलिए सुग्रीव का बचना कठिन हो गया। तो भी कुपित मतंग मुनि का दिया हुआ शाप है कि वह इधर नहीं आ सकता। इसलिए सुग्रीव इस पर्वत पर आकर ठहरे हैं। १४४

उरुमै यॅन्ऱिवऱ् कुरिय तारमाम्, अरुम रुन्दैयु मवन्वि रुम्बिनान्
इरुमै युन्दुऱन् दिवनि रुन्दनन्, करुम मिङ्गिदॆङ् गडवु ळॆन्ऱनन् 145

ॲम् कटवुळ्–हमारे ईश्वर; इवऱ्कु–इनके; उरुमै ॲन्ऱु–रुमा नाम की; उरिय तारम् आम्–इनकी अपनी पत्नी; अरु मरुन्तैयुम्–दुर्लभ अमृत को भी; अवन् विरुम्पिनान्–उसने अपने पास कामना के साथ रख लिया है; इवन्–ये; इरुमैयुम्–(पत्नी, राज्य) दोनों को; तुऱन्तु–त्यागकर; इरुन्तनन्–रहते हैं; इङ्कु करुमम् इतु–यहाँ का वृत्तान्त यह है; ॲन्ऱनन्–(हनुमान ने) कहा। १४५

हमारे भगवान! सुग्रीव के रुमा नाम की, दिव्य अमृत-समान पत्नी है। वाली ने उसे भी कामना के साथ अपने पास रख लिया है। ये पत्नी व राज्य, दोनों से वंचित होकर इधर आकर ठहरे हैं। यही घटित वृत्तान्त है। हनुमान ने सारी बातें कह सुनायीं। १४५

❀ पॉय्यि लादवन् वरन्मुऱै यम्मॊऴि पुहल
ऐय नायिरम् पॅयरुडै यमरर्क्कुममरन्
वैय नुङ्गिय वायिदऴ् तुडित्तदु मलर्क्कण्
शॅय्य तामरै याम्बलम् पोदॆनत् तिहऴ्न्द 146

पॉय् इलातवन्–असत्य-रहित (सत्यसंध); वरन् मुऱै–यथाक्रम; अ मॊऴि पुकल–वह वृत्तान्त बोला, तब; आयिरम् पॅयरुटैय–सहस्रनामी; ऐयन्–प्रभु; अमरर्क्कुम् अमरन्–देवाधिदेव के; वैयम् नुङ्किय–भुवनों को (प्रलयकाल में) निगलनेवाले; वाय् इतऴ्–मुख के अधर; तुटित्ततु–फड़के; कण्–आँखें रूपी; चॅय्य–लाल; तामरै मलर्–कमल के फूल; आम्पल् अम् पोतु ॲन–लाल कुमुद-सुमन के समान (अत्यधिक लाल); तिकऴ्न्त–हो गये। १४६

हनुमान कभी झूठ बोलनेवाला नहीं था। सत्यसंध था। उसने क्रमवार सारी घटनाएँ कह सुनाया तो सहस्रनामधारी देवाधिदेव के प्रलयकाल में

इन्दि रन्ऱिप् पुदल्व तिन्ऱळिच्
चन्दि रन्ऱळैत् तनैय तन्मैयान्
अन्द हन्ऱक् करिय वाणैयान्
मुन्दि वन्दन् निवनिन् मॊय्म्बिनाय् 126

मॊय्म्पिनाय्–शक्तिमन्त; इन्तिरन् तनि पुतल्वन्–इन्द्र का अनुपम वह पुत्र; इन् अळि–सुखद; चन्तिरन्–चन्द्र; तळैत्तु अतैय–शोभायमान हो, ऐसा; तन्मैयान्–विशिष्ट (श्वेत वर्ण का) है; अन्तकन् तनक्कु अरिय–यम के लिए भी अलंघ्य; आणैयान्–आज्ञाकारी है; इवनिन्–इन (सुग्रीव) का; मुन्ति वन्तनन्–अग्रज है। १२६

शक्तिमान ! इन्द्र का वह अनुपम पुत्र वाली श्वेत रंग का है और सुखद शोभायमान चन्द्र के समान है। उसकी आज्ञा ऐसी है कि यम के लिए भी टालना कठिन है। वह इन सुग्रीव का अग्रज भ्राता है। १२६

अन्न वन्नॆमक् करश नाहवेन्
ऱिन्न वन्निळम् बदमि यऱ्ऱुनाळ्
मुन्न वन्गुलप् पहैजन् मुट्टिनान्
मिन्नॆ यिऱ्ऱुवा ळवुणन् मेन्मैयान् 127

अन्नवन्–वह; ऎमक्कु अरचन् आक–हमारा राजा रहा, तब; इन्नवन्–ये; इळम् पतम् एन्ऱु–युवराज के पद का धारण करके; इयऱ्ऱु नाळ्–शासन करते रहे, तब; मेन्मैयान्–शक्ति में बढ़ा हुआ; मुन्–पूर्व से ही; अवन् कुल पकैजन्–वाली का कुलवैरी जो रहा, वह; मिन् ऎयिऱु–उज्ज्वल वक्र दन्तार; वाळ् अवुणन्–तलवारधारी दानव; मुट्टिनान्–(वाली से) भिड़ा। १२७

वह वाली हमारा राजा रहा। ये सुग्रीव युवराज के पद पर थे। जब ये राज्य कर रहे थे, तब अति बलिष्ठ, वाली का कुलवैरी और बिजली-सम वक्रदंतार और तलवारधारी (मायावी नाम का) दानव वाली से आकर भिड़ा। १२७

मुट्ट निन्ऱवन् मुरणु रत्तिनाल्
ऒट्ट वन्जिनॆञ् जुलैय वोडिनान्
वट्ट मण्डलत् तरिदु वाळ्वॆना
ऎट्ट रुम्बिल मदनि लॆय्दिनान् 128

मुट्ट–टकराने पर; निन्ऱवन्–जो अड़ा रहा वह वाली; मुरण् उरत्तिनाल्–बलवान वक्ष से; ऒट्ट–प्रहार करने लगा; अन्चि–डरकर; नॆञ्चु उलैय–मन में व्यग्र होकर; ओटिनान्–भागा; वट्ट मण्टलत्तु–गोल भूमण्डल में; वाळ्वु अरितु ऎना–जीना कठिन है, जानकर; ऎट्टु अरुम्–पहुँचने में कठिन; पिलम् अततिल्–एक बिल में; ऎय्तिनान्–घुस गया। १२८

जब असुर भिड़ने आया, तब वाली अड़ा रहा और अपने वक्ष से उस पर प्रहार किया। असुर डरा और जान लेकर भागा। 'इस गोल भूमण्डल पर कहीं भी रहना खतरे से खाली नहीं' —यह जानकर वह ऐसे एक बिल में घुस गया, जहाँ जाना बहुत ही कठिन था। १२८

ऍय्दु	कालैयिप्	पिलन्	ऴॅय्दियान्
नॉय्दि	नङ्गवड्	कॉल्वॅ	ऩोन्मैयाल्
शॅय्दि	कावनी	शिऱिदु	पोऴ्दॅऩ्ना
वॅय्दि	नॅय्दिऩ्ऩान्	वॅहुळि	मेयिऩ्ऩान् 129

ऍय्तु काले–जब घुसा; वॅकुळि मेयित्तान्–क्रुद्ध (वाली); यान्–मैं; इ पिलत्तुळ् ऍय्ति–बिल में जाकर; नोन्मैयाल्–शक्ति से; नॉय्तिन्–शीघ्र; अङ्कु–वहाँ; अवन् कॉल्वॅन्–उसको मारूँगा; नी–तुम; चिऱितु पोऴ्तु–थोड़ी देर; कावल् चॅय्ति–रक्षण का काम करो; ऍन्ना–कहकर; वॅय्तिन्–शीघ्र; ऍय्तित्तान्–(बिल में) गया। १२९

जब वह घुस गया तो वाली को अपार क्रोध हुआ। उसने सुग्रीव को आज्ञा दी कि मैं इसमें जाऊँगा और अपने बल से इसको शीघ्र मारकर आ जाऊँगा। तुम इसकी रखवाली करो, थोड़ा समय। यह कहकर वाली शीघ्र उस बिल में घुस गया। १२९

एहि	वालियु	मिरुदुवे	ऴॉडेऴ्
वेह	वॅम्बिलन्	दडवि	वॅम्मैशाल्
मोह	मोडमर्	मुयल्विन्	वैहिडच्
चोह	मॅय्दिनित्	रुणैदु	ळङ्गिऩ्ऩान् 130

वालियुम्–वाली भी; वॅम् पिलम् वेकम् एकि–भयंकर बिल में घुसकर; एऴ् ओटु एऴ् इरुतु–चौदह ऋतुओं के काल तक; तटवि–टटोलकर; वॅम्मै चाल्–उग्र; मोकम् ओटु–उत्साह के साथ; अमर् मुयल्विन्–युद्ध के प्रयत्न में; वैकिट–लगा रहा, तव; निन् तुणै–आपके भाई (सुग्रीव); चोकम् ऍय्ति–शोकाकुल होकर; तुळङ्कित्तान्–घबड़ा गया। १३०

वाली उसके अन्दर गया। उस असुर को ढूँढ़ता रहा। चौदह ऋतुओं का (अट्ठाईस मास का) काल बीत गया। आखिर उसको पाकर वाली उग्र रूप से दत्तचित्त होकर उसके साथ लड़ने में लगा हुआ था। इधर आपके भाई सुग्रीव चिन्ताग्रस्त होकर (शायद वाली मर गया क्या ? इस संशय के कारण) घबड़ाये रहे। १३०

अऴद	ऴुङ्गुरु	मिवऩ्ऩै	यऩ्बिऩ्ऩिल्
तॉऴुदि	रन्दुनिन्	ऱॉऴिलि	दादलाल्

अऴुदु वॆऩ्ऱियाय् अरशु कॊळ्हॆऩप्
पऴुदि ऎऩ्ऱऩऩ् परियु नॆञ्जिऩाऩ् 131

अऴुतु वॆऩ्ऱियाय्–उल्लेखनीय विजयशाली; अऴुतु अऴुङ्कुरुम्–रोते और दुःखी; इवऩै–इनको; अऩ्पिऩिल् तॊऴुतु–स्वामी-भक्ति के साथ नमस्कार करके; इरन्तु–प्रार्थना में; निऩ् तॊऴिल् इतु–आपका कार्य है यह; आतलाल्–इसलिए; अरचु कॊळ्क–राज्य लो; ऎऩ–हमारे कहने पर; परियुम् नॆञ्चिऩाऩ्–(भ्रातृस्नेह से) विह्वलमन; इतु पऴुतु–यह गलत है; ऎऩ्ऱऩऩ्–कहा। १३१

वर्णनयोग्य विजयशील ! बहुत काल तक सुग्रीव दुःख के साथ रोते रहे। तब हम वानरों ने इनसे प्रार्थना की। शासन करना आपका जन्मसिद्ध अधिकार का कार्य है। आप जाकर राज्य पर अधिकार करें। पर भ्रातृवियोग से दुःखी इन्होंने कहा कि यह गलत काम है। वे सम्मत नहीं हुए। १३१

ऎऩ्ऱु ताऩुमव् वऴियि रुम्बिलम्
शॆऩ्ऱु मुऩ्ऩवऩ् ऱेडु वेऩवऩ्
कॊऩ्ऱु ळाऩ्ऱऩैक् कॊलवॊ णाट्टेऩिल्
पॊऩ्ऱु वेऩॆऩप् पुहुदऩ् मेयिऩाऩ् 132

ऎऩ्ऱु–ऐसा कहकर; अ वऴि–उसी रास्ते से; इरुम् पिलम् चॆऩ्ऱु–बड़े बिल में जाकर; मुऩ्ऩवऩ् तेट्टुवेऩ्–अपने बड़े भाई को ढूँढूँगा; अवऩ् कॊऩ्ऱु उळाऩ् तऩै–उसके हन्ता को; कॊल ऒणातु ऎऩिल्–मार नहीं सकूँगा तो; पॊऩ्ऱुवेऩ्–स्वयं मर जाऊँगा; ऎऩ–यह ठानकर; ताऩुम्–स्वयं भी; पुकुतल् मेयिऩाऩ्–घुसने लगे। १३२

उन्होंने यह ठाना कि मैं इसी मार्ग से इस बिल में घुस जाऊँगा और बड़े भाई की टोह लगाऊँगा। समझिए कि उनको असुर ने मारा है और उसे मैं मार नहीं सकूँगा, तो मैं स्वयं आत्महत्या कर लूँगा। यह निश्चय सुनाकर वे उसी बिल में प्रवेश करने लगे। १३२

तडुत्तु वल्लवर् तणिवु शॆय्दुनोय्
कॆडुत्तु मेलैयोर् किळत्तु नीदियाल्
अडुत्त कावलुम् मरशु माणैयिल्
कॊडुत्त दुण्डिवऩ् कॊण्ड दिल्लैयाल् 133

वल्लवर्–समर्थ, बड़े वानर लोगों ने; तटुत्तु–रोककर; तणिवु चॆय्तु–समाधान करके; नोय् कॆटुत्तु–दुःख का रोग दूर करके; मेलैयोर्–पूर्व के लोगों के; किळत्तु नीतियाल्–कथित नीतिवाक्यों के अनुसार; अटुत्त कावलुम् अरचुम्–प्राप्त पालन और शासन का पद; आणैयिल्–क्रम के अनुकूल; कॊटुत्ततु उण्टु–दिया, यही सत्य है; इवऩ् कॊण्टतु इल्लै–इन्होंने खुद लिया नहीं था। १३३

तब चतुर, समर्थ बुजुर्ग लोगों ने उनको रोका और सान्त्वना दिलायी;

और दुःखरोग से निवृत्त कराया। पूर्व के विद्वानों के कथित धर्म के अनुसार पालन और शासन का ज़िम्मा उनका हो गया था। इसलिए उन्होंने राज्य का भार नियमानुसार उन्हें सौंप दिया। यही सच्ची घटना है। सुग्रीव ने स्वयं राज्य नहीं लिया था। १३३

अन्ऩ	नाळित्मा	यावि	यप्पिलत्
तिन्ऩ	वायिल्	डेरु	मॅन्ऩयाम्
पॊन्ऩिन्	माल्वरैप्	पॊरुप्पॊ	ळित्तुवे
रुन्ऩु	कुन्ऱॅला	मुडन्ऩ	डुक्किऩेम् 134

अन्ऩ नाळिल्–उन दिनों; याम्–हम; मायावि–मायावी; अ पिलत्तु–उस बिल के; इन्ऩ वायिल् ऊडु–इस द्वार के द्वारा; एऱुम् ऍन्ऩ–चढ़कर बाहर आयगा (तो); ऍन्ऩ–ऐसा सोचकर; पॊन्ऩिन् माल् वरै पॊरुप्पु–स्वर्ण का बड़ा मेरुपर्वत; ऒऴित्तु–छोड़कर; वेऱु उन्ऩु–अन्य गण्य; कुन्ऱु ऍलाम्–सभी पर्वतों को; उडन्ऩ अडुक्किऩेम्–उस द्वार पर चुन दिया। १३४

जब यह सब हुआ तो हमने सोचा कि मायावी इस द्वार से बाहर आ जाएगा तो अनर्थ हो जाएगा। इस डर से हमने उसको बन्द कर अपनी रक्षा करना चाहा। अतः मेरुपर्वत को छोड़कर अन्य सारे गण्य भारी पर्वतों को उठाकर हमने उस द्वार के सामने चुन दिया। १३४

शेम	मव्वऴिच्	चॅय्दु	शॆङ्गदिर्क्
कोम	हन्ऱऩैक्	कॊण्डु	वन्दियाम्
मेवु	कुन्ऱिन्मेल्	वैहुम्	वेलैवाय्
आवि	युण्डन्ऩ	नवऩै	यन्ऩवऩ् 135

याम्–हम; अ वऴि–उस द्वार को; चेमम् चॅय्तु–सुरक्षित (बन्द) करके; चॅम् कतिर्–लाल किरणों के सूर्य के; कोमकन्ऩ् तऩै–सुपुत्र को; कॊण्टु वन्तु–ले आकर; मेवु कुन्ऱिन् मेल्–(हमारे वास के लिए) बने पर्वत पर; वैकुम् वेलै वाय्–रहते थे, तब; अवऩै–उस असुर के; अन्ऩवऩ्–उस वाली ने; आवि उण्टन्ऩ–प्राण पी लिये (हर लिये)। १३५

इस तरह उस द्वार को खूब बन्द करके, हमने सुरक्षा का बन्दोबस्त किया। लाल किरणों के स्वामी सूर्य के सुत को पर्वत पर ले आये। हम यहाँ निश्चिन्त अपना समय बिताने लगे। उधर क्या हुआ? वाली ने मायावी के प्राणों का पान कर लिया (मार डाला)। १३५

ऒऴित्त	वन्ऩुयिर्क्	कळ्ळै	युण्डुळम्
कळित्त	वालियुङ्	गडिदि	नॆय्दिऩान्
विळित्तु	निन्ऱुवे	ऱुरैप्	पाऩिरुन्
दळित्त	वाऱॆऩ्ऩ्	ऱिळव	लारॅऩा 136

ऑळित्तवन्–जो छिपा रहा उसके; उयिर् कळ्ळै–प्राणसुरा को; उण्टु–पान करके; उळम् कळित्त–मनमस्त; वालियुम्–वाली भी; कटितिन् अॅय्तितान्–वेग के साथ आकर; विळित्तु निन्ऱु–टेर लगाता रहा; वेऱु उरै पॅऱान्–उत्तर नहीं पाकर; इळवलार्–युवराज का; इरुन्तु अळित्त–यहाँ रहकर उपकार करने का; आऱु–यह प्रकार; नन्ऱु ॲन्ता–अच्छा रहा, कहकर। १३६

बिल में जो छिपा था, उस मायावी के प्राण वाली के लिए सुरा-सम लगे। यानी वाली उसको मारकर सन्तोष से भर गया। मनमस्त होकर वह द्वार पर आकर क्या देखता है? द्वार बन्द है। टेर लगाता है; कोई उत्तर नहीं मिलता। हा! युवराज का यहाँ रखवाली करके मेरा उपकार करने का यह तरीका भी बड़ा अच्छा रहा! यह कहा। १३६

वाल्वि शैत्तुवान् वळिनि मिर्न्तुडुऱक्
काल्पॅ यर्त्तवन् कडिदु दैत्तलुम्
नील्नि ऱत्तवा नॅडुमु हट्टवुम्
वेलै पुक्कवुम् बॅरिय वॅऱ्पॅलाम् 137

अवन्–उसके; वान् वळि–आकाश में; निमिर्न्तु उऱ–उठी रहे, ऐसा; वाल् विचैत्तु–पूँछ ऊपर करके; काल् पॅयर्त्तु–पैर उछालकर; कटितु उतैत्तलुम्–जोर से (लात) मारने पर; पॅरिय वॅऱ्पु ॲलाम्–सारी बड़ी गिरियाँ; नील् निऱत्त–नील; वान्–आकाश की; नॅटु मुकट्टवुम्–ऊँची चोटी की (तक पहुँची हुई) हो गयीं; वेलै पुक्कवुम्–और समुद्र में मग्न (हो गईं)। १३७

उसने अपनी पूँछ आकाश की चोटी से लगाते हुए उठायी। बड़े वेग के साथ पैर उछालकर लात मारी तो द्वार पर के सारे पर्वत उड़ गये। एक अंश के आकाश पर गये और बाकी समुद्र में जा गिरे। १३७

एऱि नानव नॅवरु मञ्जुऱच्
चीऱि नानॅडुञ् जिहर मॅय्दिनान्
वेऱि लादवन् बुदवु मॅय्म्मैयाम्
आऱि नानुम्वन् दडिव णङ्गिनान् 138

अवन्–वह; ॲवरुम् अञ्चुऱ–सबको भयभीत करते हुए; एऱिनान्–बिल के बाहर चढ़ आया; चीऱिनान्–क्रोध दिखाते हुए; नॅटुम् चिकरम् ॲय्तिनान्–विशाल उन्नत शिखर पर आ पहुँचा; वेऱु इलात–निर्विकार; अन्पु उतवु–भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर; मॅय्म्मै आम्–सत्य के; आऱिनानुम्–मार्ग में चलनेवाले सुग्रीव भी; वन्तु–सामने आकर; अटि [illegible]–उसके चरणों पर नत हुए। १३८

वह [illegible] के बाहर निकला। सबको भयभीत करते हुए [illegible] स पर्वत के विशाल और उन्नत [illegible] पर चढ़ [illegible] निर्विकार भ्रातृप्रेम की [illegible] उसके [illegible] नत हुए। १३८

वणङ्गि	यण्णनित्	वरवि	लामैयाल्
उणङ्गि	युन्वऴिप्	पडर	वुन्नुवेऱ
किणङ्ग	रिन्मैया	लिऱैव	वुन्नुडैक्
कणङ्गळ्	कावलुन्	कडन्मै	यॆन्ऱनर् 139

वणङ्कि–नमस्कार करके; अण्णल्–महिमामय; निन्–आपका; वरवु–आगमन; इलामैयाल्–नहीं हुआ, इसलिए; उणङ्कि–मुरझाकर; उन् वऴि पटर–आपकी खोज में आना; उन्नुवेऱ्कु–जो सोचा वैसे मुझे; इऱैव–हे नाथ; उन्नुटै कणङ्कळ्–आपके ही इन वृन्दों ने; इणङ्कर् इन्मैयाल्–सम्मत न होने से; कावल् उन् कटन्मै–शासन तुम्हारा ज़िम्मा है; ऎन्ऱनर्–कहा। १३९

नमस्कार करके उन्होंने वाली से निवेदन किया कि महिमावान ! आप वहुत दिन तक लौट नहीं आये। मैं मुरझाया और मैं आपका अनुगमन करना ही चाहता था। पर आपके इन वानरवृन्दों ने उससे सहमत न होकर मुझसे आज्ञा दी कि शासन करना तुम्हारा कर्तव्य है; ज़िम्मा है। १३९

आणै	यञ्जियिव्	वरशै	यॆय्दिवाऴ्
नाणि	लादनी	नवैयुळ्	वैहिनाय्
पूणु	लावुदो	ळिनैपॊ	ऱायॆनक्
कोणि	नानॆडुङ्	गॊडुमै	कूऱिनान् 140

पूण् उलावु–आभरण जिन पर हिलते हैं, ऐसे; तोळिनै–भुजा वाले; पॊऱाय्–क्षमा कीजिए; ऎन–विनय करने पर; आणै अञ्चि–इनकी आज्ञा से डरकर; इ अरचै–इस राज्य को; ऎय्ति–लेकर; वाऴ्–रहनेवाले; नाण् इलात नी–निर्लज्ज तुम; नवैयुळ् वैकिनाय्–अपराध कर चुके हो; कोणिनान्–विकृतमन; नॆट्टुम् कॊटुमै–बड़े कठोर वचन; कूऱिनान्–बोला। १४०

आभरणालंकृत भुजा वाले भाई ! क्षमा करें। सुग्रीव ने यह विनय की। पर वाली का मन वक्र हो गया था। उसने अपराध लगाया कि उनकी आज्ञा से डरकर तुम राज्य लेकर भोग कर रहे हो। तुम निर्लज्ज हो ! तुम अपराध कर चुके हो। विकृतमन वाली ने कितने ही कठोर शब्द कहे। १४०

अडल्ह	डन्ददो	ळवनै	यञ्जिवॆम्
कुडल्ह	लङ्गियॆङ्	गुलमॊ	डुङ्गमुन्
कडल्ह	डैन्दवक्	करद	लङ्गळाल्
उडल्ह	डैन्दन	निवनु	लॆन्दनन् 141

अटल् कटन्त–अतिक्रान्त; तोळ् अवनै–भुजवल वाले उससे; अञ्चि–डरकर; ऎम् कुलम्–हमारे समूह; वॆम् कुटल्–तप्त आँतों के; कलङ्कि–विचलित होते;

ऑटुङ्क–दुबके रहे; मुन् कटल् कटैन्त–पूर्वकाल में जिनसे समुद्र मथा था; अ करतलङ्कळाल्–उन हाथों से; उटल् कटैन्ततन्–(सुग्रीव का) शरीर मथ दिया; इवन् उलैन्ततन्–ये व्याकुल हुए। १४१

वाली का भुजबल बल के माप का भी अतिक्रमण कर गया था। उसके डर के कारण हमारे समूह के वानरों की आँतें तक तप्त हो गयीं, विचलित हो गयीं। हम दुबके खड़े रहे। तब वाली ने अपने हाथों से, जिनसे उसने क्षीरसागर को मथा था, सुग्रीव को प्रहार करके त्रस्त किया। ये सुग्रीव बहुत व्याकुल हुए। १४१

नक्क रक्कडर् पुऱत्तु नण्णुनाळ्
शॅक्कर् मॅय्त्ततिच् चोदि शेर्हलाच्
चक्क रप्पॊरुप् पिऩ्ऱ लैक्कुमप्
पक्क मुड्ऱवऩ् कडिदु पऱ्ऱिऩाऩ् 142

नक्करम्–नक्रों से युक्त; कटल् पुऱत्तु–समुद्रों के भी उस पार; नण्णुम् नाळ्–(जब सुग्रीव) गये तब; चॅक्कर् मॅय्–लाल शरीर के; तत्ति चोति–अनुपम ज्योतिस्वरूप (सूर्य); चेर्कला–जहाँ पहुँच नहीं पाते; चक्करम् पॊरुप्पिऩ्–चक्रवाल गिरि के; तलैक्कुम्–तल के भी; अ पक्कम् उऱ्ऱु–उस पार जाकर; अवऩ् कटितु पऱ्ऱिऩाऩ्–उनको जल्दी पकड़ लिया। १४२

सुग्रीव भागा। नक्रसहित समुद्रों के उस पार जाकर रहा। वाली चक्रवाल गिरि के उस पार, जहाँ लाल शरीर के अनुपम ज्योतिपुंज सूर्य भी पहुँच नहीं पाते, गया और सुग्रीव को पकड़ लिया। १४२

पऱ्ऱि यञ्जलऩ् पऴियै वॅञ्जिऩम्
मुऱ्ऱि निऩ्ऱदऩ् मुरणव लिक्कैयाल्
ऍऱ्ऱु वाऩ्ऍडुत् तॅऴुद लुम्बिऴैत्
तऱ्ऱ मॊऩ्ऱुपॆऱ् ऱिवऩ् हऩ्ऱऩऩ् 143

पऱ्ऱि–पकड़कर; पऴियै अञ्चलऩ्–लोकनिन्दा से न डरकर; वॅम् चित्तम्–भयंकर क्रोध; मुऱ्ऱि निऩ्ऱ–से भरे; तऩ् मुरण् वलि कैयाल्–अपने अति बलिष्ठ हाथों से; ऍऱ्ऱुवाऩ्–पटकने के विचार से; ऍटुत्तु ऍऴुतलुम्–उठाते हुए उठा तो; इवऩ्–ये; अऱ्ऱम् ऒऩ्ऱु–एक मौका; पॆऱ्ऱु–पाकर; पिऴैत्तु अकऩ्ऱऩऩ्–बचकर भाग गये। १४३

वाली 'भ्रातृत्रासक के रूप में लोक-निन्दा का पात्र बनूँगा' इस बात से भी नहीं डरा। उसने अति क्रोध के साथ अपने क्रूर हाथों से सुग्रीव को पकड़ लिया। उनको वेग से पटकने के विचार से उसने अपने हाथ उठा लिये। तब सुग्रीव किसी विध मौका पाकर बच गये और भाग आये। १४३

ऍन्दै मऱ्ऱव नॅयिऱ् ऱुक्कुमेल्, अन्द हऱ्कुमो ररण मिल्लैयाल्
इन्द वॅऱ्पिन्वन् दिवऩि रुन्दनन्, उन्द वुऱ्ऱदोर् शाब मुण्मैयाल् 144

ऍन्तै–हमारे धाता; अवन्–(वाली) वह; ऍयिऱ् अतुक्कुमेल्–दाँत पीसेगा तो; अन्तकऱ्कुम्–यम के लिए भी; ओर् अरणम्–कोई पनाह; इल्लै–नहीं मिलेगी; आल्–इसलिए; उन्त–(मतंग मुनि द्वारा) दिया जाकर; उऱ्ऱतु ओर् चापम्–मिला एक शाप; उण्मैयाल्–है, उससे; इवन्–ये; इन्त वॅऱ्पिन् वन्तु–इस गिरि पर आकर; इरुन्तनन्–ठहरे है । १४४

हनुमान ने जारी किया । हमारे धाता ! वाली दाँत पीसता दिखता तो यम को भी पनाह नहीं मिलती । इसलिए सुग्रीव का वचना कठिन हो गया । तो भी कुपित मतंग मुनि का दिया हुआ शाप है कि वह इधर नहीं आ सकता । इसलिए सुग्रीव इस पर्वत पर आकर ठहरे हैं । १४४

उरुमै यॅन्ऩिवऱ् कुरिय तारमाम्, अरुम रुन्दैयु मवन्वि रुम्बिनान्
इरुमै युन्दुऱन् दिवनि रुन्दनन्, करुम मिङ्गिदॅङ् गडवु ळॅन्ऱनन् 145

ऍम् कटवुळ्–हमारे ईश्वर; इवऱ्कु–इनके; उरुमै ऍन्ऩु–रुमा नाम की; उरिय तारम् आम्–इनकी अपनी पत्नी; अरु मरुन्तैयुम्–दुर्लभ अमृत को भी; अवन् विरुम्पिऩान्–उसने अपने पास कामना के साथ रख लिया है; इवन्–ये; इरुमैयुम्–(पत्नी, राज्य) दोनों को; तुऱन्तु–त्यागकर; इरुन्तनन्–रहते हैं; इङ्कु करुमम् इतु–यहाँ का वृत्तान्त यह है; ऍन्ऱनन्–(हनुमान ने) कहा । १४५

हमारे भगवान ! सुग्रीव के रुमा नाम की, दिव्य अमृत-समान पत्नी है । वाली ने उसे भी कामना के साथ अपने पास रख लिया है । ये पत्नी व राज्य, दोनों से वंचित होकर इधर आकर ठहरे हैं । यही घटित वृत्तान्त है । हनुमान ने सारी बातें कह सुनायीं । १४५

❀ पॊय्यि लादवन् वरन्मुऱै यम्मॊऴि पुहल
ऐय नायिरम् पॅयरुडै यमरर्क्कु ममरन्
वैय नुङ्गिय वायिदऴ् तुडित्तदु मलर्क्कण्
शॅय्य तामरै याम्बलम् पोदॆन्त् तिहऴ्न्द 146

पॊय् इलातवन्–असत्य-रहित (सत्यसंध); वरन् मुऱै–यथाक्रम; अ मॊऴि पुकल–वह वृत्तान्त बोला, तब; आयिरम् पॅयरुटैय–सहस्रनामी; ऐयन्–प्रभु; अमरर्क्कुम् अमरन्–देवाधिदेव के; वैयम् नुङ्किय–भुवनों को (प्रलयकाल में) निगलनेवाले; वाय् इतऴ्–मुख के अधर; तुटित्ततु–फड़के; कण्–आँखें रूपी; चॅय्य–लाल; तामरै मलर्–कमल के फूल; आम्पल् अम् पोतु ऍन–लाल कुमुद-सुमन के समान (अत्यधिक लाल); तिकऴ्न्त–हो गये । १४६

हनुमान कभी झूठ बोलनेवाला नहीं था । सत्यसंध था । उसने क्रमवार सारी घटनाएँ कह सुनाया तो सहस्रनामधारी देवाधिदेव के प्रलयकाल में

नाऱ्ऱ मलुहुपो दडैहनि ननैमुद नाना
वीऱ्ऱिन् मण्डलत् तियावैयुम् वीऴ्हिल याण्डुम्
काऱ्ऱ लम्बिनुङ् गलिनॅडु वानिडैक् कलन्द
आऱ्ऱिन् वीऴ्न्दुपो यलैहडऱ् पाय्दरु मियल्ब 165

काऱ्ऱु अलम्पितुम्–हवा हिला दे तो भी; नाऱ्ऱम् मल्कु–सुवासपूर्ण; पोतु–फूल; अटै–पत्ते; नतै कनि–कलियाँ और फल; मुतल–आदि; नाना वीऱ्ऱिन्–अनेक खण्ड बनकर; यावैयुम्–वे सब; मण् तलत्तु–पृथ्वीतल में; याण्टुम्–कहीं भी; वीऴ्किल–गिरनेवाले नहीं; वान् इटै कलन्त–आकाश में ही पड़ी रही; आऱ्ऱिन्–गंगा में; वीऴ्न्तु–गिरकर; पोय्–(बहते हुए) जाकर; कलि नॅटुम्–शोर-भरे; अलै कटल्–तरंग समेत समुद्र में; पाय् तरुम्–मिल जाते हैं; इयल्प–वैसे प्रकार के हैं। १६५

हवा बहुत प्रबल रूप से हिलाये तो भी उनके सुगन्धपूर्ण फूल, पत्ते, कलियाँ और फल छितरकर भूमि पर कहीं नहीं गिरते। पर वे आकाश-गंगा में तिरकर गर्जनशील तरंगायित समुद्र में जा मिलते हैं। १६५

अडिय नान्मऱै यन्दण नण्डत्तुक् कप्पाल्
मुडियिन् मेऱ्चॅन्ऱ मुडियन वादलिन् मुडिया
नॅडिय मालन्न निलैयन नीरिडैक् किडन्द
पडियिन् मेनिन्ऱ मेरुमाल् वरैयिनुम् परिय 166

नान् मऱै अन्तणन्–चतुर्वेदी ब्रह्मा के; अणटत्तुक्कु अटिय–अण्डों के मूल से भी नीचे गयी हुई जड़ वाले थे; अप्पाल्–उस (अण्ड) के भी परे; मुटियिन् मेल्–शिखर के भी ऊपर; चेन्ऱ–गये हुए; मुटियन–शिखर के; आतलिन्–इस कारण; मुटिया–अनन्त; नॅटिय माल्–त्रिविक्रम महाविष्णु; अन्न–के समान; निलैयन–दृश्यमान हैं; नीर् इटै किटन्त–समुद्रमध्य पड़ी रहनेवाली; पटियिन् मेल्–भूमि पर; निन्ऱ–स्थायी; मेरु माल् वरैयिनुम्–मेरु के बड़े पर्वत से भी; परिय–मोटे हैं। १६६

चतुर्वेदी ब्रह्मा के अण्ड के मूल तक इनकी जड़ें गयी हैं। इनकी शिखाएँ उस ब्रह्माण्ड की चोटी के ऊपर भी गयी हैं। इसलिए वे त्रिविक्रम महाविष्णु के समान आकार के लगते हैं। समुद्र-मध्य-स्थित भूमि पर स्थायी रहनेवाले मेरु से ये अधिक स्थूल हैं। १६६

वळ्ळ लिन्दिरन् मैन्दऱ्कुन् दम्बिक्कुम् वयिऱ्ऱत
उळ्ळ मॅन्न वॊन्ऱिनॊन् ऱुळ्वयिऱ्प् पुडैय
तॆळ्ळु नीरिडैक् किडन्दपाऱ् ऱुमक्किन्ऱ शेडन्
वॆळ्ळि वॆण्बडङ् गुडैन्दुकोळ् पोहिय वेर 167

वळ्ळल्–दानी; इन्तिरन्–इन्द्र के; मैन्तऱ्कुम्–पुत्र वाली और; तम्पिक्कुम्–छोटे भाई सुग्रीव के; वयिऱ्ऱत उळ्ळमे अॆन–वैरी मन के समान; ऒन्ऱिन् ऒन्ऱु–

(उन पेड़ों में) एक से बढ़कर एक; वयिर्प्पु उटैय–हीर वाले हैं; तॆळ्ळु नीर् इटै–शुद्धजल के समुद्रमध्य; किटन्त–पड़ी रहनेवाली; पार्–भूमि को; चुमक्कित्र–धारण करनेवाले; चेटन्–शेषनाग के; वॆळ्ळि वॆण्–पटम्–चाँदी के समान श्वेत फन को; कुटैन्तु–छेदकर; कीळ् पोकिय–पाताल में गयी हुई; वेर–जड़ों वाले हैं। १६७

दानी इन्द्र के पुत्र और उसके भाई सुग्रीव के मन के वैर के ही समान इनके एक-एक का सत भी कठोर हो गया था। शुद्धजल सागरमध्य-स्थित भूमि के धारक शेषनाग के फनों को छेदकर जो नीचे गयी थीं, ऐसी जड़ों के थे ये वृक्ष। १६७

शॆन्रु तिक्किनै यळन्दन तिशैहळिऱ् ऱेवर्
ऎन्रु निऱ्कुमॆन् ऱिशैप्पन विरुशुडर् तिरियुम्
कुन्ऱि नुक्कुयर्न् दहन्ऱन यादिनुङ् गुऱुहा
ऒन्ऱि नॊन्ऱिडै नीडॆनि दियोशनै युडैय 168

चॆन्रु–बढ़कर; तिक्किनै–दिशाओं को; अळन्तन–नापनेवाले; तिचैकळिल् तेवर्–दिशाओं के (दिग्पाल) देव; ऎन्रुम् निऱ्कुम्–हमेशा उन्हीं पर रहते हैं; ऎन्रु इचैप्पन– ऐसा वर्ण्य हैं; इरु चुटर्–दो प्रकाशपुंज सूर्य और चन्द्र; तिरियुम्–जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुन्ऱितुक्कु–उस मेरुपर्वत से बढ़कर; उयर्न्तु अकन्ऱन–उन्नत और विशाल बने हैं; यातिनुम् कुऱुका–किसी से भी कम नहीं; ऒन्ऱितुक्कु ऒन्ऱिन् इटै–एक दूसरे के बीच; नीटितु–लम्बाई (दूरी); ऒरु योचनै उटैय–एक योजन की रखनेवाले थे। १६८

वे ऐसे व्यापक हैं, मानो वे दिशाओं को नापते हों। दिग्पालक इन्हीं पर रहते हों —ऐसे वर्णनीय हैं। मेरुपर्वत से भी, जिसकी दोनों प्रकाशपुंज, सूर्य और चन्द्र परिक्रमा करते हैं, उन्नत और विशाल हैं। वे किसी से भी कम नहीं हैं। उनकी आपस की, एक-दूसरे से, दूरी एक योजन की थी। १६८

आय मामर मनैत्तैयु नोक्किनिन् ऱमलन्
तूय वार्हणै तुरप्पदो रादरन् दोन्ऱच्
चेय वानमुन् दिशैहळुञ् जॆविडुऱत् तेवर्क्
केय लाददोर् पयम्वरच् चिलैयिना णॆऱिन्दान् 169

आय–वैसे; मा मरम् अनैत्तैयुम्–सभी बड़े वृक्षों को; अमलन्–निरंजन श्रीराम ने; नोक्कि निन्ऱु–देखते खड़े रहकर; तूय वार् कणै–पवित्र लम्बे शर को; तुरप्पतु–छोड़ने की; ओर् आतरम्–एक प्रबल इच्छा; तोन्ऱ–होने से; चेय वानमुम्–दूर के आकाशवासी और; तिचैकळुम्–दिशाओं के वासी; चॆविटु उऱ–बहरे हो जायँ, ऐसा; तेवर्क्कु–देवों को; एय् अलात–अपरिचित; ओर् पयम् वर–एक भय हो जाय, ऐसा; चिलैयिन् नाण्–धनु की प्रत्यंचा; ऎऱिन्तान्–खींचकर ध्वनि निकाली। १६९

निरंजन श्रीराम ऐसे उन पेड़ों को गौर से देखते खड़े रहे। उनके मन में उत्कण्ठा हुई कि पवित्र और लम्बा शर चलाऊँ। तब उन्होंने प्रत्यंचा को खींचकर टंकार पैदा की। उससे अधिक दूर के देवलोकवासियों और सभी दिशाओं के रहनेवाले लोगों के कान बहरे हो गये। देवों को एक अभूतपूर्व डर हो गया। १६९

ऑक्क निन्ऱदेव् वुलहमु मङ्गङ्गे योशै
पक्क निन्ऱवर्क् कुऱ्ऱदु पहर्वदॆप् पडियो
दिक्क यङ्गळ् मयङ्गिन दिशैहळुन् दिहैत्तन
पुक्क यन्बदि शलिप्पुऱ वॊलित्तदप् पोर्विल् 170

ओचै–वह ज्यास्वर; अँ उलकमुम्–सारे लोकों में; अङ्कङ्के–यत्र-तत्र; ऑक्क निन्ऱतु–समान रूप से फैला; पक्कम् निन्ऱवर्कु–पास स्थित लोगों पर; उऱ्ऱतु–जो बीता; पकर्वतु–वह कहना; ऍप्पटियो–कैसे हो; तिक् कयङ्कळुम्–दिग्गज भी; मयङ्कित–बेहोश हुए; तिचैकळुम्–दिशाएँ; तिकैत्तत–अस्त-व्यस्त हुईं; अ पोर् विल्–उस (श्रीराम के) युद्ध-धनुष की ध्वनि; अयन् पति–ब्रह्मा के (सत्य-) लोक को भी; चलिप्पु उऱ–चंचल करते हुए; पुक्कु ऑलित्ततु–घुसकर गूँजी। १७०

वह ज्यास्वन सारे लोकों में यत्र-तत्र समान रूप से व्याप गया। उन वृक्षों के पास जो रहे, उन पर कैसे बीता, यह क्या कहा जाय? आठों दिग्गज बेहोश हो गये। दिशाएँ भ्रमित हो गयीं। श्रीराम के उस युद्ध-धनु की ध्वनि ब्रह्मा के सत्यलोक में घुसी, तो वह लोक भी डगमगा गया। १७०

अरिन्द मन्शिलै नाणॆडि दार्त्तलु ममरर्
इरिन्दु नीङ्गिनर् कऱ्पत्ति निऱुदियॆन् ऱयिर्त्तार्
परिन्द तम्बियै पाङ्गुनिन् ऱान्मऱ्ऱॆप् पल्लोर्
पुरिन्द तन्मैयै युरैशॆयिऱ् पळियवर्प् पुणरुम् 171

अरिन्तमन्–अरिन्दम (परंतप) श्रीराम; चिलै नाण्–धनु का डोरा; नॆटितु आर्त्तलुम्–देर तक ध्वनि करता रहा तो; अमरर्–देव; कऱ्पत्तिन् इऱुति–कल्पान्त; ऍन्ऱु–कहकर; अयिर्त्तार्–शंकित ए; इरिन्तु,नीङ्कितर्–अस्त-व्यस्त भागे; परिन्त तम्पियै–स्निग्ध छोटे भाई ही; पाङ्कु निन्ऱान्–पास खड़े रहे; मऱ्ऱै पल्लोर्–अन्य अनेक लोगों ने; पुरिन्त तन्मैयै–जो किया वह कार्य; उरै चॆयिल्–कहें तो; पळि–निन्दा; अवर् पुणरुम्–उनको होगी। १७१

अरिन्दम श्रीराम के धनुष का डोरा बहुत देर तक टंकार निकालता रहा। देवों को शंका हो गयी कि कल्पान्त आ गया। इसलिए वे अस्त-व्यस्त होकर भागे। केवल लक्ष्मण ही पास खड़े रहे, जो कि श्रीराम पर अगाध भक्ति रखते थे। अन्य अनेकों ने क्या किया, यह कहने लगें तो उनकी निन्दा होगी। १७१

अॅय्दल् काण्डुङ्गॉ लिन्नुमॅन्ऱ् ऱरिदिन्वन् दॅय्दिप्
पॉय्यिन् मारुदि मुदलिनर् पुहलुरुम् पॉऴ्दिल्
मॉय्हॉऴ् वार्शिलै नाणित्तै मुऱैयुऱ वाङ्गि
वॅय्य वाळियै याळुडै विल्लियुम् विट्टान् 172

पॉय् इल्–असत्य-रहित (सत्यसंध); मारुति मुतलितर्–मारुति आदि; इन्नुम्–और भी; अॅय्तल् काण्टुम् कॉल्–शर चलाना भी देखना है क्या; अॅन्ऱु–कहकर; अरितिन् वन्तु अॅय्ति–सप्रयास आ पहुँचकर; पुकल् उऱुम् पॉऴुतु–समीप आते समय; आळुटै विल्लियुम्–हमारे कैंकर्य-प्राप्त धनुर्धर श्रीराम ने भी; मॉय् कॉळ्–सुदृढ़; वार् चिलै–लम्बे धनुष के; नाणितै–डोरे को; मुऱै उऱ–यथाविधि; वाङ्कि–खींचकर; वॅय्य वाळियै–भयंकर शर को; विट्टान्–चलाया। १७२

सत्यसंध मारुति आदि यही सोचने लगे कि आगे श्रीराम का शर चलाना देखना भी है क्या ? वे बहुत प्रयास के साथ श्रीराम के पास धीरे-धीरे आये। तब हमारे कैंकर्य के अधिकारी श्रीराम ने सुदृढ़ अपने चाप के डोरे को यथाविधि खींचकर एक भयंकर शर चलाया। १७२

एऴु सामर मुरुविक्की ऴुलहमॅन्ऱ् ड्रिशैक्कुम्
एऴु मूडुपुक् कुरुविप्पिन् नुडनडुत् तियन्ऱ
एऴि लामैयान् मीण्डदव् विराहवन् पहऴि
एऴु कण्डपि नुरुवुमा लॉऴिवदन् ड्रिन्नुम् 173

इराकवन्–श्रीराघव का; अ पकऴि–वह बाण; एऴु मा मरम्–उन सातों बड़े वृक्षों को; उरुवि–बेधकर; कीऴ् उलकम्–नीचे के लोक; अॅन्ऱु–ऐसा; इचैक्कुम् एऴुम्–कहलानेवाले सातों को; ऊटु पुक्कु–मध्य घुसकर; उरुवि–उस तरफ बाहर आकर; पिन्–बाद; उटन् अटुत्तु–साथ लगे; इयन्ऱ–रहनेवाले; एऴु इलामैयाल्–सप्तक न रहने के कारण; मीण्टतु–लौट आया; इन्नुम्–आगे भी; एऴु कण्ट पिन्–कोई सप्तक देखता तो उसके बाद; उरुवुम्–भेद जाता; ऑऴिवतु अन्ऱु–छोड़नेवाला नहीं था। १७३

श्रीराघव का वह बाण सातों सालवृक्षों को भेदकर बाहर निकला। फिर सातों लोकों के मध्य घुसकर निफरा। उसके बाद अन्य कोई सप्तक (सात वस्तुओं का सम्मिलित समूह) न पाकर लौट आया। और कोई सप्तक मिल जाता, तो वह अवश्य भेदकर पार होता। छोड़ता नहीं। १७३

एऴु वेलैयु मुलहमे लुयर्न्दन वेऴुम्
एऴु कुन्ऱमु मिरुडिह ळॅऴुवरुम् बुरवि
एऴु मङ्गैय रॅऴुवरु नडुङ्गिन रॅन्ब
एऴु पॅऱ्ऱदो विक्कणैक् किलक्कमॅन् ड्रॅण्णि 174

एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्र; उयर्न्तत–ऊपर रहनेवाले; मेल् उलकम्–उपरिलोक;

एऴुम्-सातों; एऴु कुन्ऱमुम्-सातों पर्वत; इरुटिकळ्-ऋषि; ऍऴुवरुम्—सप्तक; पुरवि एऴुम्-सातों अश्व (सूर्य के रथ के); मङ्कैयर् ऍऴुवरुम्-सातों कन्याएँ; इ कणैक्कु-इस शर का; इलक्कम्-निशान; एऴु—सप्तक; पॆऱ्ऱतो-बनेगा क्या; ऍन्ऱु ऍण्णि-यह सोचकर; नटुङ्कितर्-भयभीत हो गए। १७४

तब सृष्टि में जितने सप्तक थे, वे सब भयभीत हो गये। (नमक, इक्षुरस, सुरा, घृत, दधि, दुग्ध, शुद्धजल के) समुद्र-सप्तक; (भूलोक, भुवलोक, स्वर्लोक, जन, महा, तपो, सत्य के सातों) उपरिलोक; (कैलास, हिम, मन्दर, विन्ध्य, निषध, हेमकूट, गन्धमादन —ये सातों) गिरियाँ; (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगिरा —ये) ऋषि-सप्तक; (गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति, दृष्टुप, जगती —ये छन्द, जो सूर्यरथ के अश्व है —ये सातों) अश्व; (ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, नारायणी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डी —ये) सप्तकन्याएँ —ये सब सप्तक इस संशय से भयभीत हुए कि इस शर का निशान कोई भी सप्तक होगा! । १७४

अन्न दायिनु मऱत्तिलुक् काऱुयिर्त् तुणैवन्
ऍन्नुन् दन्मैयै नोक्किन रियावरु मॆवैयुम्
पॊन्निन् वार्हऴऱ् पुदुनऱुन् दामरै पूण्डु
शॆन्नि मेऱ्कॊण्ड वरुक्कन्शे यिवैयिवै शॆप्पुम् 175

अन्नतु आयिनुम्-वैसा हुआ तो भी; अऱत्तिनुक्कु-धर्म का; आर् उयिर् तुणैवन् ऍन्नुम्-बहुत ही प्राणप्यारा रहने का; तन्मैयै-उनका स्वभाव; यावरुम् ऍवैयुम्-सारे लोगों और सारे जीवों ने; नोक्किनर्-समझा (समझकर भय त्याग दिया); पॊन्निन् वार् कऴल्-स्वर्ण की बड़ी पायल के; पुतु नऱुम् तामरै-नवीन सुगन्धित शहदयुक्त कमलों (चरणों) को; पूण्टु-पकड़कर; चॆन्नि मेल् कॊण्ट-अपने सिर पर जिसने रख लिया; अरुक्कन् चेय्-वह सूर्यकुमार; इवै इवै चॆप्पुम्-यों-यों बोलने लगा। १७५

तो भी उनको यह विश्वास था कि श्रीराम धर्म के प्राणप्यारे संगी हैं। इसलिए वे सभी भयमुक्त हुए। तब सूर्यपुत्र सुग्रीव स्वर्ण की बनी बड़ी पायलों से शोभित और नवविकसित सुगन्धपूर्ण कमल के समान रहनेवाले श्रीराम-चरणों को सिर पर धारण करके (चरणों पर दण्डवत में सिर रखकर) निम्नोक्त स्तुति की बातें कहने लगा। १७५

वैयनी वानुनी मऱ्ऱुनी मलरिन्मेल्
ऐयनी याऴिमा लुनी यरनुनी
शॆय्यनी विन्नैनेऱुन् देवुनी नायिनेन्
उय्यवन् दुदविना युलहमुन् दुदविनाय् 176

वैयम् नी-भूमि भी आप हैं; वानम् नी-आकाश भी आप; मऱ्ऱुम् नी-अन्य भूत भी आप; मलरिन् मेल् ऐयन्-(कमल-)पुष्प पर वास करनेवाले देव (ब्रह्मा भी);

नी–आप हैं; आळि मा मालुम्–क्षीरसागर-शायी महाविष्णु भी; नी–आप; अरतुम् नी–हर भी आप; ती वित्तै तेंरुम्–पापनाशक; चॅय्य तेवुम् नी–श्रेष्ठ देव भी आप; उलकु–प्रपंच को; मुन्नु उतवित्ताय्–पहले सृष्ट करनेवाले आपने; नायित्तेन् उय्य–कुत्ते के समान मेरे उद्धार के लिए; वन्तु उतवित्ताय्–आकर उपकार किया। १७६

आप भूमि हैं; आकाश व अन्य भूत भी आप हैं। कमलासन ब्रह्मा, क्षीरसागरशायी महाविष्णु, हर आदि सब हैं। पापनाशक श्रेष्ठ देवता भी आप ही हैं। लोकपिता आपने ही इस प्रपंच को सृष्ट किया। ऐसे आपने स्वयं आकर मेरे उद्धार का बड़ा उपकार किया है। १७६

ऍन्ऩॅन्ऩक् करियदॅप् पॊरुळुमॅऱ् कॅळियदाल्
उन्ऩैयित् तलैविडुत् तुदविनार् विदियिनार्
अन्ऩैयॊप् पुडैयवुन् नडियरुक् कडियऩ्यान्
मन्ऩवर्क् करशवॆन् ऱुरैशॆय्दान् वशैयिलान् 177

वचै इलान्–निर्दोष सुग्रीव ने; मन्नवर्क्कु–राजाओं के; अरच–राजा; वितियित्तार्–विधि के देव ने; उन्नै–आपको; इ तलै विट्टुतु–यहाँ भिजवाकर; उतवित्तार्–उपकार किया है; ॲन्–क्या; ॲनक्कु–मेरे लिए; अरियतु–दुर्लभ है; ॲ पॊरुळुम्–कोई भी वस्तु; ॲऱ्कु–मेरे लिए; ॲळियतु आल्–सुगम है, इसलिए; अन्नै ऑप्पु उटैय–मातृ-सम; उन्–आपके; अटियरुक्कु–दासों का; यान् अटियन्–मैं किंकर हूँ; ॲन्ऱु–ऐसा; उरै चॅय्तान्–कथन किया। १७७

निर्दोष सुग्रीव ने और भी निवेदन किया। राजाधिराज! विधि ने आपको यहाँ भिजवाकर मेरा बहुत बड़ा उपकार किया है! अब मेरे लिए कौन सी बात दुर्लभ है? कोई भी बात सुगम है! इसलिए मैं माता-तुल्य आपके दासों का भी दास बन गया। १७७

आडिनार् पाडिन्ऩा रङ्गुमिङ् गुङ्गलन्
दोडिना रुवहैया नऱवैयुण् डुणर्हिलार्
नेडिन्ऩाम् वालिहा लन्ऩॅन्ऩा नॅडिदुनाळ्
वाडिनार् तोळॅलाम् वळरमऱ् ऱवरॅलाम् 178

नॅटितु नाळ् वाटितार्–बहुत दिन से व्यथित; अवर् ॲलाम्–वे सब; वालि कालनै–वाली के यम को; नेटित्ताम्–ढूँढ़कर पा गये; ॲन्ना–कहकर; उवकैयिन् नऱवै–सन्तोष का सुरा; उण्टु–पीकर; उणर्किलार्–आपा भूलकर; तोळ् ॲलाम् वळर–भुजाओं के वर्धित होते; आटित्तार्–नाचे; पाटित्तार्–गाये; अङ्कुम् इङ्कुम्–इधर-उधर; कलन्तु–मिलकर; ओटित्तार्–दौड़े। १७८

वे वानर बहुत दिनों से संकटग्रस्त और व्यथित रहे थे। अब उन्हें यह सन्तोष हो गया कि हम वाली के काल को ढूँढ़ रहे थे और वह श्रीराम के रूप में मिल गया। आनन्द सुरा का काम करने लगा। पिये हुए के

समान वे आपा भूलकर नाचे-गाये। उनके कन्धे फूल उठे। वे वृन्दों में मिलकर यत्र-तत्र दौड़े। १७८

5. तुन्दुबिप् पडलम् (दुन्दुभि पटल)

अण्डमुम् महिलमु मडैयवन् ड्रन्नलिडैप्
पण्डुवॅन् ददुनॅडुम् पशैवड्रन् दिडिनुम्वान्
मण्डलन् दीँडुवदम् मलैयिन्मेन् मलैयॅन्नक्
कण्डनन् ड्रुन्दुबिक् कडलन्ना नुडलरो 179

अण्टमुम्–अण्डगोल और; अकिलमुम्–उसके अन्तर्निहित सारे लोक; अटैय–एक साथ; अन्रु–प्रलय के उस दिन; अत्तल् इटै–आग में; पण्टु–पहले; वॅन्ततु–जल गये; नॅटुम् पचै वड्रन्तिटिनुम्–(रक्त आदि) लस के बहुत दिनों से सूखने पर भी; वान् मण्टलम् तीँटुवतु–आकाश-मण्डल को छूनेवाला; कटल् अन्नान्–समुद्र-सम; तुन्तुपि उटलै–दुन्दुभी के (मृत) शरीर को; अ मलैयिन् मेल्–उस पर्वत पर रहनेवाले; मलै अॅन्न–अन्य पर्वत के समान; कण्टनन्–(श्रीराम ने) देखा। १७९

[श्रीराम ने दुन्दुभि की लाश को देखा। दुन्दुभि महिष का-सा रूप वाला था। इसको मय का पुत्र भी माना जाता है। वाल्मीकी के अनुसार श्रीराम ने सालवृक्ष-छेदन के पहले दुन्दुभि के पंजर को अपने पैर के अँगूठे से उछाला था।]

वह दुन्दुभि का पंजर सारे अण्डगोल के और उसके अन्तर्हित सभी लोकों के पूर्व प्रलयकाल में अग्नि में जलने पर जो अवशेष रह सकता था, उसके समान था। रक्त आदि सूख गया था, तो भी वह इतना ऊँचा था कि आकाश को छू रहा था। समुद्र के समान वह फैला पड़ा था। श्रीराम ने उस मृत शरीर (अस्थिपंजर) को देखा, जो ऋष्यमूक पर्वत पर पड़े रहनेवाले दूसरे पर्वत के समान लगता था। १७९

तॅन्बुलक् किळ्वनूर् मयिडमो दिशैयिन्वाळ्
वन्बुलक् करिमडिन् ददुहॉलो महरमीन्
ॲन्बुलप् पुड्रवुलर्न् ददुहॉलो विदुवॅना
उन्बुलक् कुरियनी युरैशॅया यॅन्नववन् 180

इतु–यह; तॅन् पुलम् किळ्वन्–दक्षिण दिशा के अधिदेव की; ऊर्–सवारी; मयिटमो–महिष है; तिचैयिन् वाळ्–दिशाओं में वास करनेवाले; वन्पु–बलिष्ठ; उलम् करि–(गजों में) मोटा एक गज; मटिन्ततु कॉलो–मरा है क्या; मकर मीन्–मगर-मच्छ; उलप्पु उड्र–जीवन खोकर; ॲन्पु उलर्न्ततु कॉलो–उसकी हड्डियाँ सूखी पड़ी हैं क्या; ॲना–सोचकर; उन् पुलक्कु उरिय–तुम्हारी जानकारी में आयी हुई बात को; नी–तुम; उरै चॅयाय्–बताओ; ॲन्न–पूछने पर; अवन्–सुग्रीव भी। १८०

श्रीराम ने उसको देखकर सुग्रीव से पूछा कि सुग्रीव ! यह पंजर दक्षिण दिशा के अधिदेव यम का वाहन महिष है ? या आठ बलिष्ठ मोटे दिग्गजों में एक मरा पड़ा है ? या किसी मगरमच्छ के मरने पर उसकी हड्डियाँ सूखी पड़ी है ? आश्चर्य के साथ ऐसा पूछने के बाद श्रीराम ने कहा कि तुम जो जानते हो, वह बताओ। सुग्रीव ने यों उत्तर दिया। १८०

तुन्दुबिप् पॅयरुडैच् चुडुशिऩत् तवुणऩ्मी
इऩ्दुवैत् तॊडनिमिर्न् दॆऴुमरुप् पिणैयिऩाऩ्
मन्दरक् किरियॆऩप् पॆरियवत् महरनीर्
शिऩ्दिडक् करुनिऱत् तरियिऩैत् तेडुवाऩ् 181

मी इऩ्तुवै–ऊपर, चन्द्र को; तॊट–स्पर्श करते हुए; निमिर्न्तु ऎऴु–ऊपर की ओर उठे हुए; मरुप्पु इणैयिऩाऩ्–शृंगद्वय-सहित था; मन्तर किरि–मन्दर पर्वत; ऎऩ–जैसे; पॆरियवऩ्–बड़ा आकारवाला; तुन्तुपि–दुन्दुभि; पॆयरुटै–नाम का; चुट्ु चिततु–जलानेवाले क्रोध का; अवुणऩ्–दानव; मकर नीर् चिन्तिट–मकरालय (समुद्र) का जल विलोड़ित करके; करु निऱत्तु–काले रंग के; अरियिऩै–हरि को; तेटुवाऩ्–ढूँढ़ चला। १८१

एक दुन्दुभि दानव था। उसके दो सींग थे, जो आकाश में चन्द्र को स्पर्श कर दें, इतने ऊँचे ऊपर को उठे हुए थे। उसका आकार मन्दर पर्वत के समान बड़ा था। उसका क्रोध अग्नि के समान जलानेवाला था। वह मकरालय में इतने ज़ोर से घुसा कि उसका जल छलककर छितर गया। वह काले रंग के महाविष्णु को (युद्ध करने के लिए) ढूंढ़ते हुए चला। १८१

अङ्गुवन् दरियॆदिर्न् दमैदियॆऩ् ऩॆऩ्ऱलुम्
पॊङ्गुवॆञ् जॆरुविऩिल् पॊरुदियॆऩ् ऱुरैशॆयक्
कङ्गैयिऩ् कणवनक् करैमिडऱ् ऱमलऩे
उङ्गदप् पॆरुवलिक् कॊरुवऩॆऩ् ऱुरैशॆय्दाऩ् 182

अङ्कु–वहाँ; अरि वन्तु–हरि आये; ऎतिर्न्तु–सामने रहकर; अमैति ऎऩ्–योजना क्या है; ऎऩ्ऱलुम्–पूछने पर; पॊङ्कु–क्रोध जिसमें उमड़े, उस; वॆम् चॆरुविऩिल्–भयंकर युद्ध में; पॊरुति–मुझसे भिड़ो; ऎऩ्ऱु उरै चॆय–यह कहने पर; कङ्कैयिन् कणवऩ्–गंगा के पति; अ करै मिटऱ्ऱु–वे विष-कण्ठ; अमलऩे–निर्मल ईश्वर ही; उम्–तुम्हारे (जैसे लोगों को); कत पॆरुवलिक्कु–क्रोधशील बड़े बल के योग्य; ऒरुवऩ्–एक (शत्रु) है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उरै चॆय्ताऩ्–कहा। १८२

तब वहाँ हरि सामने आये। उन्होंने दानव से पूछा कि अभिप्राय क्या है ? दानव ने उत्तर दिया कि मेरे साथ क्रोध उभाड़नेवाली रीति से युद्ध करो। तब हरि ने कहा कि चलो गंगा के पति के पास। विषकण्ठ

वे ही तुमको तृप्तिदायक युद्धदान कर सकेंगे। तुम बहुत ही क्रोधशील और बड़ी शक्ति के रखनेवाले हो। १८२

कडिदुशॆन्‌ ऱवनुमक्‌ कडवुडन्‌ कयिलैयैक्‌
कॊडियकॊम्‌ बिनिल्मडुत्‌ तॆळ्ळुदलुङ्‌ गुऱुहिमुन्‌
नॊडिदिनिन्‌ कुऱैयॆयॆन्‌ ऱलुनुवन्‌ ऱन्नरो
मुडिविल्वॆञ्‌ जॆरुवॆन्नक्‌ कुदवुवान्‌ मुयल्हॆन्ना 183

अवनुम्‌–वह भी; कटितु चॆन्ऱु–जल्दी जाकर; अ कटवुळ्‌ तन्‌—उन ईश्वर के; कयिलैयै–कैलास पर्वत को; कॊटिय कॊम्पितिल्‌–भयंकर सींगों से; मट्टुत्तु–उखाड़ लेकर; ऍळ्ळुतलुम्‌–उठा, तो; मुन्‌ कुऱुकि–सामने आकर (शिवजी); निन्‌ कुऱैयै–अपनी चाह; नॊटिति–कहो; ऍन्ऱलुम्‌–बोले, तो; मुटिवु इल्‌–असीम; वॆम्‌ चॆरु–कठोर युद्ध; ऍन्नक्कु उतवुवान्‌–मुझे देकर उपकार करने का; मुयल्क–प्रयत्न करें; ऍन्ना–यह; नुवन्ऱनन्‌–(दुन्दुभि) बोला। १८३

वह वेग के साथ चला। उसने ईश्वर शिव के कैलास को अपने सींगों से खोदकर उठा लिया। तब शिवजी उसके सामने आये और पूछा कि तुम्हारी चाह क्या है? दानव ने कहा, मुझसे असीम काल तक भयंकर युद्ध करने का प्रयत्न कीजिए। १८३

मूलमे वीरमे मूडिन्ना योडुपोर्‌
एलुमो तेवर्पा लेहॆना वेविन्नान्‌
शालनाळ्‌ पोर्शॆय्वा यादियेऱ्‌ चारल्पोय्‌
वालिपा लेयॆन्ना वानुळोर्‌ वानुळान्‌ 184

मूलमे–आदि से ही; वीरमे मूटिन्नायोटु–वीरता में मग्न रहनेवाले तुमसे; पोर्‌ एलुमे–युद्ध शक्य है क्या; तेवर्‌ पाल्‌ एकु ऍन्ना–देवों के पास जाओ, ऐसा; एविनान्‌–प्रेरित किया; वान्‌ उळोर्‌–व्योमवासियों के; वान्‌ उळान्‌–ऊपर रहनेवाले इन्द्र; चाल नाळ्‌–अनेक दिन; पोर्‌ चॆय्वाय्‌ आति–युद्ध करनेवाले हो; एल्‌–तो; वालि पाले–वाली के पास ही; पोय्‌ चारल्‌–जाकर मिलो; ऍन्ना–ऐसा। १८४

शिवजी ने कहा कि तुम आदि से ही वीरता से आवृत बड़े वीर हो! तुम्हारे साथ युद्ध करने की शक्ति मुझमें है क्या? तुम देवों के पास जाओ। उन्होंने उसे देवों के पास भेजा। (वह उनके पास गया।) देवों के राजा इन्द्र ने उनसे कहा कि अगर तुममें बहुत लम्बे काल तक युद्ध करने की चाह है, तो वाली के पास ही जाओ। १८४

अन्नवन्‌ विडवुवन्‌ दवनुम्वन्‌ दरिहडम्‌
मन्नव वरुहपोर्‌ शॆयवॆन्ना मलैयिन्नॆच्‌
चिन्नपिन्‌ नम्बडुन्‌ तिङ्दलुम्‌ जिन्नवियॆन्‌
मुन्नवन्‌ मुन्नर्वन्‌ दवन्नोडुम्‌ मुन्नैदलुम्‌ 185

अऩ्ऩुतवऩ् विट–इन्द्र के भेजने पर; अवऩुम्–उस (दुन्दुभि) के; उवन्तु वन्तु–मुदित आकर; अरिकळ् तम् मऩ्ऩव–वानरों के राजा; पोर् चॅय–युद्ध करने; वरुक–आओ; ॲऩ्ऩा–कहकर; मलैयिऩै–वाली के वास के पर्वत को; चिऩ्ऩ पिऩ्ऩम् पट्टुत्तिट्टुतलुम्–छिन्न-भिन्न करने पर; ॲऩ् मुऩ्ऩवऩ्–मेरे अग्रज; चिऩवि–कुपित हो; मुऩ्ऩर् वन्तु–सामने आकर; अवऩोटु–उसके साथ; मुऩैतलुम्–लड़े, तब। १८५

इन्द्र ने ऐसा कहकर उसे भेज दिया। दुन्दुभि भी बहुत खुश होकर वाली के पास आया। वानरराज! आओ, हमसे भिड़ो! यह कहते हुए उसने वाली के पर्वत को तहस-नहस किया। तो मेरे बड़े भाई क्रुद्ध हुए और आकर उससे भिड़ने लगे। १८५

इरुवरुञ् जॅरुवुऱुम् पॉऴुदिऩिऩ् ऩवर्हळॅऩ्
ऱॊरुवरुञ् जिरिदुणर्न्दिलर्हळॅव् वुलहमुम्
वॅरुवरुन् दहैयिऩार् विऴुवर्निऩ् ऱॅऴुवराल्
मरुवरुन् दहैयर्ता नवर्हळ्वा ऩवर्हडाम् 186

इरुवरुम्–दोनों; चॅरु उऱुम् पॉऴुतिऩ्–जब भिड़े तब; इऩ्ऩवर्कळ् ॲऩ्ऱु–कौन हैं, ऐसा; ऑरुवरुम्–कोई भी; उणर्न्तिलर्कळ्–समझ नहीं पाये; ॲ उलकमुम्–किसी भी लोक के वासी; वॅरुवरुम् तकैयिऩार्–देखकर भयभीत हो जायें, ऐसे रचित वे; विऴुवर्–गिरेंगे; निऩ्ऱु ॲऴुवर् आल्–फिर उठेंगे, इसलिए; ताऩवर्–दानव; वाऩवर्कळ् ताम्–और देवों को भी; मरुवु–पास आना; अरुम् तकैयर्–असम्भव हो, ऐसी स्थिति वाले। १८६

दोनों जब लड़े तो वे इतने गुँथ गये कि किसी के लिए भी अलग-अलग पहचानना कठिन हो गया। वे दोनों ऐसे थे कि किसी भी लोक के वासी उनको देखकर भयभीत हो जायँ। ऐसा वे भिड़ते हुए कभी गिर जाते; कभी उठ जाते कि दानव, देव सभी उनके समीप आ नहीं सके। १८६

तीयॅऴुन् ददुविशुम् बुऱ्ऱॅंडुन् दिशैमिशैप्
पोयॅऴुन् ददुमुऴक् कुडऩॅऴुन् ददुपुयल्
तोयमुम् बुणरियुन् दॊडर्तडङ् गिरिहळुम्
शायऴिन् दऩवडित् तलमॅंडुत् तिडुदलाल् 187

अटि तलम्–पैरों को; ॲटुत्तिट्टुतलाल्–बदलकर रखने से; ती–आग; विचुम्पु उऱ–आकाश छूते हुए; ॲऴुन्ततु–उठी; मुऴक्कु–गर्जन; नॅटुम् तिचै मिचै–लम्बी दिशाओं में; पोय् ॲऴुन्ततु–जाकर गूँज उठा; पुयल्–मेघ; उटऩ् ॲऴुन्ततु–साथ उठे; तोयमुम्–जलाशय; पुणरियुम्–समुद्र; तटम् तॉटर् किरिकळुम्–और बड़े श्रेणीबद्ध पर्वत; चाय् अऴिन्तऩ–प्रभाहीन हो गये (महिमाहीन हो गये या सौंदर्य-विहीन हो गये)। १८७

वे जब पैंतरे बदलते तब आग उठ जाती और आकाश तक फैल

जाती। उनका गर्जन सारी दिशाओं में जाकर गूँज उठा। मेघ भी उसके साथ उठ जाते। शुद्ध जलाशय, समुद्र और बड़ी पर्वतश्रेणियाँ अपना-अपना सौन्दर्य खो गयीं। सब मिट गये। १८७

अऱ्ऱदा हियशॅरुप् पुरिवुऴ् मळविनिल्
कॉऱ्ऱवा लियुम्वयक् कुववुतोळ् वलियिनाल्
पऱ्ऱिया शयिन्नवऩ् पणैमरुप् पिणैपऱित्
तॅऱ्ऱिना ऩवऩुम्वा ऩिडियिनिऩ् ऱुरऱ्ऱिनाऩ् 188

अऱ्ऱतु आकिय–उस प्रकार के; चॅरु–युद्ध को; पुरिवुऴुम् अळविनिल्–जब वे करते रहे, तब; कॉऱ्ऱ वालियुम्–साहसी वाली ने भी; वयम् कुववु–विजयी और पुष्ट; तोळ् वलियिनाल्–भुजबल से; अवऩ्–उसके; पणै–स्थूल; मरुप्पु इणै–सींगों के जोड़े को; पऱ्ऱि–पकड़कर; पऱित्तु–नोच लेकर; आचैयिऩ्–दिशाओं में; ऍऱ्ऱिनाऩ्–फेंका; अवऩुम्–वह (दुन्दुभि) भी; वाऩ् इटियिऩ्–आकाश में होनेवाले वज्र के समान; निऩ्ऱु–खड़ा होकर; उरऱ्ऱिनाऩ्–गरजा। १८८

दोनों में ऐसा युद्ध हो रहा था। तब साहसी वाली ने अपनी विजयी, पुष्ट और उन्नत भुजाओं के बल से दानव के दोनों सींगों को तोड़ लेकर दूर दिशाओं में फेंक दिया। वह भी वहीं रहकर वज्र के समान गरजने लगा। १८८

कवरियङ् गिरियिनैक् करदलङ् गॉडुतिरित्
तिवर्दलुङ् गुरुदिपट् टुयर्नॅडुन् दिशैतॉऱुम्
तुवरणिन् दनवॅनप् पॉशितुदैन् दनदुणैप्
पवर्नॅडुम् बणैमदम् बयिलुम्वऩ् गिरिहळे 189

कवरि अम् किरियिनै–महिष के आकार के सुन्दर पर्वत के समान उस दुन्दुभि को; करतलम् कॉटु–(वाली) हाथों से; तिरित्तु–घुमाते हुए; इवर्तलुम्–घूमा तो; कुरुति पट्टु–(उस दानव का) रक्त आ लगा, इसलिए; उयर् नॅटुम्–विशाल व उन्नत; तिचै तॉऱुम्–आठों दिशाओं में; तुणै–मिले रहे; पवर्–पास-पास के; नॅटुम्–बड़े; पणै–स्थूल; मतम् पयिलुम्–मदमत्त; वऩ् किरिकळ्–बलिष्ठ गिरि-सम गज; तुवर् अणिन्तन ॲन–लाल रंग से रंगित हो गये जैसे; पॉचि–(रक्त के) लेप से; तुतैन्तन–युक्त हो गये। १८९

वाली महिषाकार सुन्दर पर्वत-सम उसको अपने हाथों में उठाकर घुमाते हुए स्वयं घूमने लगा। तब उस असुर के रक्त से आठों परस्पर मिल, बड़े, मोटे और मदस्रावी दिग्गज लाल रंग के बने से लिप्त हो गये। १८९

पुयल्हडन् दिरवितऩ् पुहल्हडन् दयलुळोर्
इयलुमण् डिलमिहन् दॅनैयवन् दविरमेल्

वयिरवन् करदलत् तवन्वलित् तॅऱ्ियवन्
ऱुयिरुम्विण् पडरविव् वुडलुमिम् बरिन्ऱरो 190

अवन्–वह; पुयल् कडन्तु–मेघमण्डल पार करके; इरवि तन् पुकल्–सूर्य-मार्ग; कडन्तु–पार करके; अयल् उळोर् इयलुम्–उनके परे अन्य देवों के भी; मण्टिलम् इकन्तु–मण्डलों को पार करके; ॲत्तैयवुम्–अन्य लोकों को भी; तविर–छोड़ते हुए; मेल्–ऊपर; वयिर–कठोर; वन् कर तलत्तु–वलिष्ठ हाथों से; वलित्तु ॲऱ्िय–जोर से फेंकने पर; अन्ऱु–तब; उयिरुम् विण् पटर–प्राणों के स्वर्ग में जाते; इ उटलुम्–यह शरीर भी; इम्परिन् अरो–इस लोक में पड़ा रह गया न। १९०

वाली ने अपने बहुत ही बलवान हाथों से उसको ऐसा ले पटका कि वह मेघमण्डल, सूर्यमण्डल, देवलोक और अन्य लोकों को पार कर जाये। तब उसके प्राण स्वर्ग में चले गये और उसका शरीर इस भूमि पर पड़ा, इस भूमि का हो गया न ? । १९०

मुट्टिवान् मुहड्डॅन्ऱ् ऱणवियिम् मुडैयुडल्
कट्टिमाल् वरैयैवन् दुऱुदलिऱ् करुणैयान्
इट्टशा बमुमॅन्क् कुदवुमिव् वियल्विनिल्
पट्टवा मुऴुवदुम् बरिविना लुरैशॅय्दान् 191

इ मुडै–यह दुर्गन्धपूर्ण; उटल् कट्टि–शरीर का मांसपिण्ड; वान् मुकट्टु–आकाश की छत को; मुट्टि चॅन्ऱु–टकराते हुए जाकर; अणवि–वहाँ लगा रहने के बाद; माल् वरैयै–इस बड़े (ऋष्यमूक) पर्वत पर; वन्तु उऱुतलिल्–आ गिरा, तब; करुणैयान्–करुणामय (मतंग ऋषि) का; इट्ट चापमुम्–दिया गया शाप भी; ॲनक्कु उतवुम्–मेरा उपकारी बना; इ इयल्पिनिल्–इस प्रकार से; पट्टवा मुऴुवतुम्–जो कष्ट सहना पड़ा, वह सब; परिविनाल्–पीड़ा के साथ; उरै चॅय्तान्–(सुग्रीव ने) कह सुनाया। १९१

यह दुर्गन्धपूर्ण शरीर, मांसपिण्ड ऊपर गया, आकाश की छत से टकराया और इस बड़े पर्वत पर आ गिरा। तब करुणामय मतंग ऋषि ने यह देखकर वाली को शाप दे दिया। वही शाप अब मेरा बड़ा उपकारी बना रहता है। इस प्रकार से सुग्रीव ने अपने सारे कष्टों की कहानी वेदना के साथ सुना दी। १९१

केट्टन नमलनुङ् गिळन्द वारॅलाम्
वाट्टॊऴि लिळवलै यिदनै मैन्दनी
ओट्टॅन्न चवन्कळल् विरलि नुन्दिनान्
मीट्टडु विरिञ्जना डुऱ्ऱु मीण्डदे 192

अमलनुम्–निरंजन प्रभु ने भी; किळन्त आऱु ॲलाम्–कथित सभी बातों को; केट्टनन्–सुना; वाळ् तॊऴिल्–करवालकार्य में चतुर; इळवलै–छोटे भाई से;

मैन्त–वीर भाई; नी–तुम; इतत्तै–इसको; ओट्टु–दूर करो; अँत–कहा तो; अवन्–उन्होंने भी; कळल् विरलिन्–पैर की उँगलियों से; उन्तिन्नात्–उछाला; अतु–वह पंजर; मीट्टु–फिर एक बार; विरिञ्चन् नाटु उड्डु–विरंचि का लोक जाकर; मीण्टतु–लौट आया। १६२

यह सब श्रीराम ने सुना। उन्होंने तलवार चलाने में अत्यन्त चतुर अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा कि वीर भाई! इसको यहाँ से हटाओ। लक्ष्मण ने भी उसको अपने पैरों की उँगली से उछाला, तो वह पंजर फिर एक बार विरंचिलोक जा लौटा १९२

6. कलन् काण् पडलम् (आभरण-दर्शन पटल)

आयिडै यरिक्कुल मशत्ति ·यञ्जिड
वाय्तिड्न् दार्त्तडु वळ्ळ लोङ्गिय
तूयवच् चोलैयि लिरुन्द शूळल्वाय्
नायह वुणर्त्तुव दुण्डु नान्ना 193

अ इटै–तब; अरि कुलम्–वानरवृन्द; अचत्ति अञ्चिट–वज्र को भयभीत करते हुए; वाय् तिड्न्तु–मुख खोलकर; आर्त्ततु–शोर मचा उठे; वळ्ळल्–उदार प्रभु श्रीराम भी; ओङ्किय–उन्नत; नल्–अच्छे; तूय–पवित्र; चोलैयिल्–उद्यान में; इरुन्त–जब रहे; चूळल् वाय्–उस समय; नायक–नायक; नान् उणर्त्तुवतु–मेरी समझाने की; उण्टु–एक बात है; अँता–कहकर। १६३

तब वानरवृन्दों ने मुख खोलकर सन्तोष का बड़ा हल्ला मचाया। दानी श्रीराम ऊँचे तरुओं से पूर्ण एक सुन्दर और पवित्र उपवन में जाकर ठहरे। तब सुग्रीव ने कहा कि नायक! मेरा एक निवेदन है। १९३

इव्वळि यामियैन् दिरुन्द दोरिडै
वॅव्वळि यिरावणन् कॉणर मेलैनाळ्
शॅव्वळि नोक्किर्त्तम् देवियॆ कॉलाम्
कव्वैयि नरड्रित्तळ् कळिन्द शेणुळाळ् 194

मेलै नाळ्–पहले किसी दिन; इ वळि–यहाँ; याम् इयैन्तु–हम मिलकर; इरुन्ततु ओर् इटै–जब रहे तब; वॅम् वळि–दुराचारी; रावणन्–रावण द्वारा; कॉणर–लायी जाकर; कळिन्त चेण् उळाळ्–बहुत दूर आकाश में जो रहीं; कव्वैयित्–(एक स्त्री ने) दुःख से; अरड्रित्तळ्–विलाप किया; चॅम्मै वळि–अब खूब; नोक्किर्त्तम्–सोचकर देखा; तेवियॆ कॉल् आम्–देवी सीता ही होंगी शायद। १६४

उसने कहा— पहले किसी दिन हम यहाँ एकत्र होकर बैठे हुए थे। तब दुराचारी रावण एक स्त्री को उठाये ले जा रहा था। वह बहुत दूर में दुःख से विलाप कर रही थीं। अब सोचता हूँ तो लगता है कि वे देवी सीता ही थीं। १९४

उऴैयरि नुणर्त्तुव दॆन्व दुन्नियो
कुऴैपॊरु कण्णिनाऴ् कुऱित्त दोर्न्दिलॆम्
मऴैपॊरु कण्णिणै वारि योडुदन्
इऴैपॊदिन् दिट्टनऴ् याङ्ग ळेऱ्ऱॆम् 195

कुऴै पॊरु–कुण्डलों से टकरानेवाली; कण्णिनाऴ्–आँखों की वे; उऴैयरिन्–पास जो रहे उन हमसे; उणर्त्तुवतु–(अपनी स्थिति) बताना; ॲनपतु उन्नियो–यह सोचकर; कुऱित्ततु–उनका अभिप्राय; ओर्न्तिलॆम्–जान नहीं सके; तन् इऴै–अपने आभरणों को; पॊतिन्तु–बाँधकर; मऴै पॊरु–वारिश के समान; इणै कण्–जोड़ी की आँखों से; वारियोटु–बहनेवाली अश्रुधारा के साथ; इट्टनऴ्–नीचे डाल दिया; याङ्कळ्–हमने; एऱ्ऱॆम्–लेकर रख लिया। १६५

तब उन्होंने अपने आभरणों को वस्त्रखण्ड में बाँधकर आँखों से बहनेवाली अश्रुधारा के साथ हमारे सामने नीचे डाला। यह उन्होंने क्या सोचकर किया ? हम ही पास रहे, हमको अपनी स्थिति समझाना चाहती थीं, यही कारण था ? या कोई और ? हम नहीं जानते। हमने भी उन्हें उठाकर रखा है। १९५

वैत्तनॆ मिव्वऴि वळ्ळ निन्वयिन्
उय्त्तन तन्दपो दुणर्दि यालॆनाक्
कैत्तलत् तन्नवै कॊणर्न्दु काट्टिनान्
नॆय्त्तलैप् पाल्हलन् दनैय नेयत्तान् 196

नॆय् तलै–शहद से; पाल् कलन्ततैय–दूध मिला जैसे; नेयत्तान्–स्निग्ध; वळ्ळल्–दानी प्रभु; उय्त्तत–ऐसे जो डाले गये, उनको; इ वऴि वैत्ततॆम्–यहाँ रखा है; निन् वयिन्–आपके पास; तन्त पोतु–जब देंगे तब; उणर्ति–आप समझ लेंगे; ॲना–कहकर; अन्नवै–उन आभरणों को; कै तलत्तु–अपने हाथों में; कॊणर्न्तु–ले आकर; काट्टिनान्–दिखाया (सुग्रीव ने)। १६६

सुग्रीव का स्नेह शहदमिश्रित दूध के समान मधुर और गाढ़ा था और पवित्र भी। वैसे स्नेही सुग्रीव ने आगे कहा कि वदान्य ! वे आभरण, जिनको उन्होंने नीचे डाला था, इधर ही है। उनको हम आपके पास लाकर दें तो आप समझ सकेंगे कि वे क्या उन्हीं के है। यह कहकर सुग्रीव अपने हाथ में उन आभरणों को ले आया और श्रीराम को दिखाया। १९६

तॆरिवुऱ नोक्किनन् ऱॆरिवै मॆय्यणि
ॲरिहन लॆय्दिय मॆऴुहिन् याक्कैपोय्
उरुहिन तॆन्गिलॆ मुयिरुक् कूऱ्ऱमाय्प्
परुहिन नॆन्गिलॆम् बहर्व दॆन्गॊलाम् 197

तॆरिवै मॆय् अणि–देवी के शरीर को अलंकृत करते जो रहे उनको; तॆरिवु उऱ–

ध्यान देकर; नोक्कितन्–श्रीराम ने निहारा; ॲरि अतल्–जलती अग्नि में; ॲय्तिय–पड़े; मॅळुकिन्–मोम के समान; याक्कै पोय्–शरीर के; उरुकितन्–कृश हुए (पिघल गये); ॲन्रकिलॅम्–यह नहीं कह सकते; उयिरुक्कु ऊऱ्ऱम् आय्–प्राण की संजीवनी समझकर; परुकितन् ॲन्किलॅम्–पिया, यह भी कह नहीं सकते; पकर्वतु–कहने के लिए; ॲन् कोल् आम्–क्या हो है। १६७

देवी सीता के शरीर को अलंकृत करते जो रहे, उन आभरणों को श्रीराम ने ध्यान से देखा। तब उनकी स्थिति क्या रही? आग में पड़े मोम के समान शरीर द्रवीभूत हो गया? ऐसा कह नहीं सकते। या प्राणों की संजीवनी मानकर उनको उन्होंने पी लिया —यह भी नहीं कह सकते। फिर हम क्या कह सकेंगे? । १९७

नल्हुव	ॲन्निनि	नङ्गै	कॉङ्गैयैप्
पुल्हिय	पूणुमक्	कॉङ्गै	पोन्ऱन
अल्हुलि	नणिहळु	मल्हु	लायिन
पल्हलन्	पिऱवुमप्	पडिव	मायवे 198

नङ्कै कॉङ्कैयै—देवी के उरोजों को; पुल्किय—जो आलिंगन करते रहे; पूणुम्—वे आभरण; अ कॉङ्कै पोन्ऱन—उन्हीं स्तनों के समान बने (दिखे); अल्कुलित् अणिकळुम्–कटि-प्रदेश के आभरण भी; अल्कुल् आयिन—कटि-प्रदेश ही बने; पल्कलन्—अनेक आभरण; पिऱवुम्–अन्य भी; अ पटिवम् आयिन—उन्हीं अंगों के रूप में दिखे (जिन पर वे पहने गये थे); इन्नि—इसके अलावा; नल्कुवतु–आभरण कर सकते हैं; ॲन्—क्या (उपकार)। १६८

उन आभरणों ने सीता के उन अंगों का स्मरण दिलाकर बड़ा उपकार किया। उरोजों से जो आभरण लगे रहे, वे (हार आदि) उरोज ही बन गये! कटिप्रदेश के मेखला आदि आभरण वही अंग बन गये। अन्य अंगों के आभरण भी वे अंग बन गये। (श्रीराम के मन में उन अंगों की स्मृति जागी और वह तीव्र हो गयी।) वे आभरण इसके सिवा क्या उपकार कर सकते थे? । १९८

विट्टपे	रुणर्विनै	विळित्त	वॅन्गॅन्नो
अट्टन	वुयिरैयव्	वणिह	ळॅन्गॅन्नो
कॉट्टिन	शान्दॅनक्	कुळिर्न्द	वॅन्गॅन्नो
शुट्टन	वॅन्गॅन्नो	यादु	शॊल्लुहेन् 199

अ अणिकळ्–उन आभरणों ने; विट्ट–जो छूट गयी थी; पेर् उणर्विनै—(श्रीराम की) उस प्रज्ञा को; विळित्त–बुलाकर लौटा दिया; ॲन्कॅन्नो–कहूँ; उयिरै–प्राणों को; अट्टन—मार दिया; ॲन्कॅन्नो–कहूँ; कॉट्टिन–ऊपर उड़ेले गये; चान्तु ॲन–चन्दन के समान; कुळिर्न्त–शीतल बनाया; ॲन्कॅन्नो–कहूँ; चुट्टन—जलाया; ॲन्कॅन्नो—कहूँ; यातु चॉल्लुकेन्–क्या बता सकता हूँ। १६६

उन आभरणों ने श्रीराम की छूटी प्रज्ञा को फिर से जाग्रत् कर दिया —ऐसा कहूँ ? या उन्होंने उनके प्राण जला (मिटा) दिये —कहूँ ? अधिक परिमाण में लिप्त चन्दन के समान शरीर को शीतल (सुखी) बनाया —कहूँ ? या श्रीशरीर को ताप दिया —कहूँ ? क्या कहूँ, मैं ? । १९९

मोन्दिड नरुमल रान मॉय्म्बिनिल्
एन्दिड वुत्तरी यत्तै येय्न्दन
शान्दमु मायौळि तळ्वप् पोर्त्तलाल्
पूनुडुहि लानवप् पूवै पूण्गळे 200

अ–उन; पूवै–कोमल सारिका-सम देवी के; पूण्कळ्–आभरण; मोन्तिट–सूँघने के लिए; नरु मलर् आत–सुगन्धित फूल बने (उन्होंने सूँघा); मॉय्म्पितिल्–अपने कन्धों पर; एन्तिट–धारण करने पर; उत्तरीयत्तै–उत्तरीय के; एय्न्तत–स्थान में रहे; चान्तमुम्–चन्दन भी; आय्–बने और; ऑळि तळुव–शोभा देते हुए; पोर्त्तलाल्–शरीर पर धारण करने से; पून् तुकिल्–सुन्दर वस्त्र भी; आत–बने । २००

श्रीराम को वे आभरण कैसे-कैसे लगे ! उन्होंने उन्हें सूँघा तो वे फूल हो गये । (फूल के समान उन्होंने उन्हें सूँघा ।) कन्धों पर धारण किया तो वे उत्तरीय बने । चन्दन बने और शोभा बढ़ाते हुए उनके अंगों के आवरण बने । तब वे सुन्दर वस्त्र भी बने । २००

ईर्त्तन शॅङ्गणीर् वॅळ्ळम् यावैयुम्
पोर्त्तन मयिर्प्पॅरुम् बुळहम् पौङ्गुतोळ्
वेर्त्तन नॆन्ऱ्गॆन्ऩो वॅदुम्बि नाऩॆन्ऱ्गो
तोर्त्तनै यव्वळि यादु शॅप्पुहेन् 201

ईर्त्तन–बहकर जो आया; चॅम् कण् नीर् वॅळ्ळम्–लाल अश्रुप्रवाह; यावैयुम्–सबको; मयिर् पॅरुम् पुळकम्–रोमांच ने; पोर्त्तन–ढक दिया; पौङ्कु तोळ्–प्रफुल्ल कन्धे; वेर्त्तनन्–स्वेदयुक्त हो गये; ऎन्कॆन्ऩो–कहूँ; वॅतुम्पिनान्–तप्त हुए; ऎन्को–कहूँ; तीर्त्तनै–भगवान की; अ वळि–वह स्थिति; यातु चॅप्पुकेन्–क्या कह सकता । २०१

श्रीराम की आँखों से अश्रु की धारा बहती आयी और उनके शरीर पर लगी रही । पर रोमांच ने उसको ढक दिया । तब क्या कहा जाय ? यह कहूँ कि उनके पुष्ट कन्धे स्वेदयुक्त हो गये ? या यह कहूँ कि विरहताप से तप्त हो गये ? तीर्थ, भगवान श्रीराम की तब की स्थिति का क्या कहूँ ? । २०१

विडम्बरन् दनैयदोर् वॅम्मै मीक्कॊळ
नॆडुम्बॊळु दुणर्विन्ऩो डुयिर्प्पु नीङ्गिय

तडम्बॅरुङ् गण्णनैत् ताङ्गि तान्ऱत्
दुडम्बिनिऱ् चॅऱिमयिर् शुरुक्कॊण् डोडवे 202

विटम् परन्त–विष फैला; अन्नैयतु–ऐसा; ओर् वॆम्मै–एक ताप; मी कॊळ–अधिक हुआ; नॆटुम् पॊळुतु–बहुत देर तक; उणर्वित्तोटु–सुध के साथ; उयिर्प्पु–श्वास; नीङ्किय–खोया रहा; तटम् परुम् कण्णनै–(जिनका) उन आयतविशालाक्ष को; तनतु उटम्पितिल्–अपने शरीर पर के; चॆऱि मयिर्–घने बालों के; चुरुक्कॊण्टु ओट–झुलसने देते हुए; ताङ्कितान्–(सुग्रीव ने) धारण कर लिया। २०२

उनके शरीर भर में विष फैला जैसा ताप बढ़ गया। वे बहुत देर तक सुध-बुध खोये रहे। सुग्रीव ने उन आयतविशालाक्ष श्रीराम को अपने शरीर पर धारण कर लिया। ताप इतना था कि सुग्रीव के शरीर के बाल झुलस गये। २०२

ताङ्गिन निरुत्तियत् तुयरन् दाङ्गुऱा
दॆङ्गिय नॆञ्जिन निरङ्गि विम्मुवान्
वीङ्गिय तोळिनाय् विनैयि नेनुयिर्
वाङ्गिनॆ निव्वणि वरुवित् तॆन्ना 203

ताङ्कितन्–धारण कर; इरुत्ति–रखते हुए; अ तुयरम्–वह (उनका) दुःख; ताङ्कुऱातु–सह नहीं सक कर; एङ्किय–दुखनेवाले; नॆञ्चितन्–मन के साथ; वीङ्किय–फूले हुए; तोळिनाय्–कन्धों वाले; विनैयिनेन्–यह कार्यकर्त्ता मैं; इ अणि वरुवित्ते–ये आभरण मँगाकर ही; उयिर् वाङ्कितॆन्–आपके प्राण हर चुका; ऎन्ना–कहकर; इरङ्कि–अनुताप से; विम्मुवान्–भर गया। २०३

सुग्रीव श्रीराम के दुःख से कातर हुआ। श्रीराम को अपने अंक में धारण करते हुए सुग्रीव ने कहा कि प्रफुल्ल भुजा वाले! मैं अनुचित काम का करनेवाला बन गया। ये आभरण मँगाकर मैंने आपके प्राणों को खतरे में डाल दिया। वह बहुत दुःख से भर गया। २०३

अयनुडै यण्डत्ति नप्पु ऱत्तैयुम्
मयर्वऱ नाडियॆन् वलियुङ् गाट्टियुन्
उयर्पुहळ्त् तेवियै युदवर् पालनाल्
तुयरुळन् दयर्दियो शुरुदि नूल्वलाय् 204

चुरुति नूल् वलाय्–श्रुतिशास्त्रविद्वान्; अयन् उटै–ब्रह्मा के; अण्टत्तिन्–अण्ड के; अ पुऱत्तैयुम्–पार के स्थानों में भी; मयर्वु अऱ–विना श्रम के; नाटि–खोजकर; ऎन् वलियुम्–अपना बल भी; काट्टि–दिखाकर; उन् उयर् पुकळ्–आपकी उत्कृष्ट यशस्विनी; तेवियै–धर्मपत्नी को; उतवल् पालन्–ले आने को बद्ध हूँ; आल्–इसलिए; तुयर् उळन्तु–दुःख में पड़कर; अयर्तियो–श्रान्त होंगे क्यों। २०४

उसने आगे आश्वासन दिया। श्रुतिशास्त्रव्युत्पन्न! ब्रह्माण्ड के

उस पार भी जाकर सब स्थलों में विना प्रमाद के ढूँढ़कर, अपने बल से आपकी उत्कृष्ट यशस्विनी धर्मपत्नी सीताजी को ले आने का संकल्पवद्ध हूँ। फिर आप क्यों दुःखमग्न होकर श्रान्त हों ? । २०४

तिरुमह ळन्नैयवत् तॅय्वक् कट्पिऩाळ्
वॅरुवरच् चॅय्दुळ वॅय्य वऩ्बुयम्
इरुबदु मीरैन्दु तलैयु निऱ्कवुऩ्
ऒरुहणैक् काट्रुमो वुलह मेळुमे 205

तिरुमकळ् अऩैय–श्रीलक्ष्मी-सदृश; अ तॅय्व कट्पिताळ्–उन पतिव्रता देवी को; वॅरुवर चॅय्तु उळ–जिसने भयभीत किया है; वॅय्यवऩ्–उस नृशंस को; पुयम् इरुपतुम्–वीसों भुजाएँ; ईर् ऐन्तु तलैयुम्–दसों सिर; निऱ्क–रहें; उऩ् ऒरु कणैक्कु–आपके एक शर के सामने; उलकम् एळुम्–सातों लोक; आट्रुमो–ठहर सकेंगे क्या। २०५

श्रीलक्ष्मी-सदृश पतिव्रता सीता को भयभीत करते हुए जो कष्ट देता रहता है, उस क्रूर रावण के वीस भुजाएँ और दस सिर हैं। तो क्या ? उनको रहने दीजिए। आपके एक शर के सामने सातों लोक टिक सकेंगे क्या ? । २०५

ईण्डुनी यिरुन्दरु ळेळॊ डेळॆऩप्
पूण्डपे रुलहङ्गळ् वलियिऱ् पुक्किडैत्
तेण्डियव् वरक्कनैत् तिरुहित् तेवियैक्
काण्डिया ळिव्वळिक् कॊणरुङ् गैप्पणि 206

ईण्टु–यहीं; नी इरुन्तु अरुळ्–आप रहने की कृपा करें; एळ् ओटु एळ् ऎऩ–सात और सात; पूण्ट–के वने; पेर् उलकङ्कळ्–लोकों में; वलियिल् पुक्कु–अपने बल से प्रवेश करके; इटै–वहाँ; तेण्टि–खोजकर; अ अरक्कनै–उस राक्षस को; तिरुकि–मरोड़कर; तेवियै–देवी सीता को; इ वळि कॊणरुम्–इधर लाने का; कै पणि–मेरा हस्तकौशल (कार्यकौशल) काण्टि–देखिए। २०६

श्रीमान आप यहीं रहने की कृपा करें। चौदह की संख्या के इन बड़े लोकों में मैं अपने बल से प्रवेश करूँगा। देवी को ढूँढ़ूँगा। उस राक्षस रावण का शरीर मरोड़ दूँगा। फिर सीताजी को इधर सम्मान सहित ले आऊँगा। मेरी कार्यकुशलता देखिए आप। २०६

एवल्शॅय् तुणैवरेम् याङ्ग ळीङ्गिवऩ्
तावरुम् बॅरुवलित् तम्बि नम्बिनिऩ्
शेवह मिदुवॆऩिऱ् चिऱुह नोक्कलॆऩ्
मूवहै युलहुनिऩ् मॊळियिऩ् मुऩ्दुमो 207

याङ्कळ्–हम; एवल् चॅय्–आज्ञाकारी; तुणैवरेम्–साथी हैं; ईङ्कु इवऩ्–यहाँ

रहनेवाले ये (लक्ष्मण); ता अरुम्–अप्रतिहत; पॅरु वलि–बड़े बलवान; तम्पि–कनिष्ठ भ्राता हैं; नम्पि–नायक; निन् चेवकम्–आपकी वीरता; इतु ॲतिल्–यह है तो; चिरुक नोक्कल्–लघुता देखना; ॲन्–क्यों; मू वकै उलकुम्–तीनों (वर्गों के) लोक; निन् मॉळियिन्–आपकी आज्ञा; मुनुतुमो–लाँघकर जायँगे क्या। २०७

आपके आज्ञाकारी सेवक और सखा हम हैं। और यहाँ पास जो हैं, वे लक्ष्मण दुर्द्धर्ष बड़े बलवान हैं। नायक! आपकी शक्ति तो वैसी है। तब क्यों आप अपने को अल्प के रूप में देखें? क्या पाताल, भूलोक, देवलोक —ये तीनों वर्गों के लोक आपकी आज्ञा को लाँघ सकेंगे? । २०७

पॅरुमैयो रायिनुम् पॅरुमै पेशलार्
करुममे यल्लदु पिर्रिदॅन् कण्डदु
दरुमनी यल्लदु तनित्तु वेरुण्डो
अरुमैये दुनक्कुनिन् ऱवलङ् गूर्दियो 208

पॅरुमैयोर् आयितुम्–प्रशंसायोग्य हों तो भी; करुममे अल्लतु–कार्य करना छोड़कर; पॅरुमै पेचलार्–अपनी प्रशंसा नहीं करते रहते; पिर्रितु ॲन् कण्टतु–फिर क्या देखा गया; तरुमम्–धर्म; नी अल्लतु–आपके सिवा; तनित्तु वेरु–अलग दूसरा; उण्टो–है क्या; उनक्कु–आपके लिए; अरुमै एतु–कठिन क्या है; निन्रु–रहकर; अवलम्–दुःख; कूर्तियो–करेंगे क्या। २०८

बड़े समर्थ लोग भी करनी करते हैं। अपनी प्रशंसा कहते नहीं फिरते। यह बड़ा तथ्य है। इसको छोड़ दूसरा तथ्य कहाँ? धर्म आप ही हैं। दूसरा कुछ नहीं है। आपके लिए दुर्गम क्या है? फिर आप ऐसा रहकर क्यों दुःख कर रहे हैं? । २०८

मुळरिमेल् वैहुवान् मुरुहर् ऱन्दवत्
तळिरियल् बाहत्तान् ऱडक्कै याळियान्
अळवियॊन् ऱावदे यन्ऱि यैयमिल्
किळवियाय् तनित्तनिक् किडप्प रोतुणै 209

ऐयम् इल्–असंदिग्ध; किळवियाय्–वचन बोलनेवाले; मुळरि मेल्–कमल पर; वैकुवान्–आसीन (ब्रह्मा); मुरुकन् तन्त–'मुरुगन' (कार्तिकेय का तमिळ नाम) के जनक; अ तळिरियल्–उस पल्लव-समान पार्वतीदेवी के; पाकत्तान्–अर्द्धाङ्गी; तट कै आळियान्–विशाल हस्त में चक्र रखनेवाले (चक्रधारी) विष्णु; अळवि–मिलित होकर; ऑन्रु आवते अन्ऱि–एक बनें तब के सिवा; तनि तनि–पृथक्-पृथक् वे; तुणै किटप्परो–आपकी समानता कर सकेंगे क्या। २०९

कमलासन, मुरुगन की माता पार्वती को अंग में रखनेवाले अर्धनारीश्वर और विशाल हाथ में चक्र रखनेवाले चक्रधारी विष्णु —तीनों सम्मिलित हो एक बने आवें, तो शायद वे आपकी समानता कर सकेंगे। पृथक्-पृथक् वे आपकी समानता कर सकेंगे क्या? । २०९

ऍन्नुडैच् चिरुकुरै मुडित्त लीण्डोरीइप्
पिन्नुडैत् तायिनु माह वेदुरुम्
मिन्निडैच् चत्तहियै मीट्टु मीडुमाल्
पॊन्नुडैच् चिलैयिन्नाय् विरैन्दु पोयॆन्ड्रान् 210

पॊन् उटै–सौंदर्ययुक्त; चिलैयिन्नाय्–धनुर्धर; ऍन्नुटै–मेरी; चिरु कुरै–छोटी याचना; मुटित्तल्–पूरा करना; पिन्नुटैत्तु आयिनुम्–पीछे हो तो; आक–हो; ईण्टु ऒरीइ–अब उसको रहने देकर; विरैन्तु पोय्–शीघ्र जाकर; पेतु उरुम्–पीड़ित रहनेवाली; मिन् इटै–विद्युत्कटि; चत्तकियै–जानकी को; मीट्टु–छुड़ाकर; मीळ्तुम्–लौट आयेंगे (हम); ऍन्ड्रान्–कहा (सुग्रीव ने)। २१०

सुन्दर धनुर्धारी ! मेरी छोटी प्रार्थना बाद को देखी जाय ! उसको अब छोड़ दें। हम अभी जायँगे। रावण के हाथों त्रस्त, विद्युत्कटि सीता को उससे मुक्त कराके लेकर लौट आयेंगे। २१०

ऍरिहदिर्क् कादल निन्नैय कूड्लुम्
अरुवियङ् गण्डिड्न् दन्बि नोक्किनान्
तिरुवुरै मार्बन्नुन् दॆळिवु तोन्ड्रिड
ऒरुवहै युणर्वुवन् दुरैप्प दायिन्नान् 211

ऍरि कतिर्–दाहक किरणों के सूर्य के; कातलन्–प्यारे (पुत्र) के; इन्नैय कूड्लुम्–यह कहने पर; तिरु उरै–श्रीनिवास; मार्पन्नुम्–वक्ष वाले; तॆळिवु तोन्ड्रिट–प्रज्ञा पाकर; ऒरु वकै उणर्वु–एक तरह से सुध; वन्तु–मिलने से; अरुवि–(अश्रु की) नदी बहानेवाली; अम्–सुन्दर; कण्–आँखें; तिड्न्तु–खोलकर; अन्पिन् नोक्कितान्–स्नेह के साथ देखकर; उरैप्पतु आयितान्–कहने लगे। २११

गरम किरणमाली के पुत्र, सुग्रीव, के यह कहने पर श्रीनिलयवक्ष (महाविष्णु) के अवतार श्रीराम एक तरह से सचेत हुए। सुन्दर और अश्रुसरिता की अपनी आँखें खोलकर उन्होंने सुग्रीव से ये बातें कहीं। २११

विलङ्गॆळिर् ड्रोळिनाय् वित्तैयि नेन्नुमिव्
विलङ्गुविर् करत्तिन्नें निरुक्क वेयवळ्
कलन्गळित् तत्तळिदु कड्पिन् मेविय
पॊलन्गुळैत् तॆरिवैयर् पुरिन्दु ळोर्हळ्यार् 212

विलङ्कु ऍळिल्–पर्वतसुन्दर; तोळिताय्–कन्धों वाले; वित्तैयितेन्नुम्–दुर्भाग्यशाली मेरे; इ इलङ्कु विल्–इस देखने योग्य धनु के; करत्तिन्नेंन्–रखनेवाले हाथों के; इरुक्कवे–रहते हुए भी; अवळ्–उसने; कलन् कळित्तत्तळ्–अपने आभरण त्यागे; इतु–यह कार्य; कड्पिन् मेविय–गृहस्थ धर्म में लगी हुई; पॊलन् कुळै तॆरिवैयर्–स्वर्णकुण्डलधारिणी स्त्रियों में; पुरिन्तुळोर्कळ्–जो करने को मजबूर हुई हैं; यार्–वे कौन हैं। २१२

पर्वत जैसे और सुन्दर कन्धों वाले ! मैं बड़ा अभागा हूँ। हाथ में

यह शोभायमान धनु लिये हुये रहता हूँ ! तो भी सीता को अपने आभरण उतारने पड़े। गृहस्थी में लगी हुई स्त्रियों में और किसका यह दुर्भाग्य रहा है ? । २१२

वाणडुङ् गण्णियॅन् वरवु नोक्कयान्
ताणॅडुङ् गिरियॊडुन् दरुक्क डम्मॊडुम्
पूणॊडुम् पुलम्बिये पॊळ्दु पोक्कियिन्
नाणॅडुञ् जिलैशुमन् दुळल्वॆ नाणिलेन् 213

वाळ् नॅट्टुम् कण्णि—तलवार-सी आयत आँखों वाली सीता; ऎन् वरवु नोक्क—मेरी राह देख रही हैं, तब; यान्—मैं; ताळ्—तलों के साथ; नॅट्टुम् किरि ऒट्टुम्—उन्नत पर्वतों से; तरुक्कळ् तम् ऒट्टुम्—वृक्षों के साथ; पूण् ऒट्टुम्—इन आभरणों के साथ; पुलम्पिये—विलाप करते हुए ही; पॊळुतु पोक्कि—समय व्यतीत करके; इ नाण्—इस डोरेसहित; नॅट्टुम् चिलै—लम्बे धनुष को; चुमन्तु—ढोते हुए; नाण् इलेन्—निर्लज्ज होकर; उळल्वॆन्—संकटग्रस्त रह रहा हूँ। २१३

तलवार के समान आँखों वाली सीता मेरी बाट जोह रही है ! पर मैं यहाँ विशाल तलोंसहित गिरियों, वृक्षों और आभरणों को देखकर विलाप करता हुआ, और इस बड़े धनुष को बेकार ढोता हुआ, निर्लज्ज (लाजहीन) दुःख सह रहा हूँ। ("नाण्"—डोरा, लाज)। २१३

आरुडन् शॆल्बव ररिवै मार्दमै
वेरुळोर् वलिशॆयिन् विलक्कि वॆञ्जमत्
तूरुरत् तम्मुयि रुहुप्प रॆन्नैये
तेरिन्नळ् पुन्गणोय् तीर्क्क हिर्रिलेन् 214

आरु—मार्ग में; उटन् चॆल्पवर्—साथ चलनेवाली; अरिवै मार् तमै—स्त्रियों को; वेरु उळोर्—पराये लोग; वलि चॆयिन्—त्रास देते हैं तो; विलक्कि—उनको हटाकर; वॆम् चमत्तु—भयंकर युद्ध में; ऊरु उऱ्—कष्ट आने पर; तम् उयिर् उकुप्पर्—अपनी जान दे देते; ऎन्नैये तेरिन्नळ्—मुझी पर निर्भर जो रहीं, उनका; पुन्कण् नोय्—दुःखरोग को; तीर्क्ककिर्रिलेन्—नहीं दूर कर सक रहा हूँ। २१४

मार्ग में अपने साथ आनेवाली स्त्री पर कोई अत्याचार करे, तो भी लोग उस अत्याचारी को रोकते हैं। कठोर युद्ध में अपने प्राण भी दे देते हैं। पर मुझे देखो। मेरे ही ऊपर सब तरह से निर्भर है सीता। उसका दुःख दूर करने में भी मैं असमर्थ हूँ। २१४

इन्दिरर् कुरियदो रिडुक्कण् डीर्त्तिहल्
अन्दहर् करियपो रवुणर् रॆय्त्तनन्
ऎन्दैमर् रवनिन्वन् दुदित्त यानुळेन्
वॆन्दुयरक् कॊडम्बळि विल्लिर् राङ्गिनेन् 215

ऎन्तै-मेरे पिता ने; इन्तिरऱ्कु उरियतु-इन्द्र का; ओर् इडुक्कण्-एक संकट; तीर्त्तु-दूर करके; अन्तकऱ्कु अरिय-यम के लिए भी असाध्य; इकल् पोर् अवुणन्-विरोधी, युद्ध में चतुर दानव (शम्बर) को; तेय्त्ततन्-मिटाया; मऱ्ऱु-इसके विपरीत; अवतिल् वन्तु-उनके पुत्र के रूप में आकर; उतित्त-पैदा जो हुआ; यान्-वह मैं; वॆम् तुयर्-कठोर दुःखदायी; कॊडुम् पऴि-घोर अपमान; इ विल्लिल्-इस धनुष पर; ताङ्कित्तेन्-उठा रहा हूँ। २१५

मेरे पिता ने इन्द्र का संकट दूर किया। यम के लिए भी दुर्द्धर्ष वैरी और युद्ध-चतुर शंबरासुर को कठोर युद्ध में मारा। किन्तु मैं हूँ उनका ही पुत्र! इस धनुष पर कठोर दुःखदायी क्रूर निन्दा ढो रहा हूँ। २१५

करुङ्गड ऱ्ऱॊट्टनर् गङ्गै तन्दनर्
पॊरुम्बुलि मान्ऱॊडु पुनलु मूट्टिनर्
पॆरुन्दहै यॆन्गुलत् तरशर् पिन्नॊरु
तिरुन्दिऴै तुयरनान् ऱीर्क्क हिऱ्ऱिलेन् 216

करुम् कटल्-काले समुद्र के; तॊट्टनर्-खननकारी; कङ्कै तन्तनर्-गंगा को भूमि पर जो लाये, वे; पॊरुम् पुलि-झगड़ालू व्याध को; मान् ओटु-हरिण के साथ; पुनलुम् ऊट्टिनर्-(एक ही घाट पर) पानी पिलानेवाले; पॆरुम् तकै-बड़े ही श्रेष्ठ; ऎन् कुलत्तु अरचर्-मेरे कुल के राजा; पिन्-उनके बाद; नान्-मैं; ऒरु-एक; तिरुन्तु इऴै-श्रेष्ठ आभरणभूषित स्त्री का; तुयरम्-दुःख; तीर्क्ककिऱ्ऱिलेन्-दूर कर नहीं सक रहा हूँ। २१६

हमारे पूर्वजों में सागर-खननकारी (सगरपुत्र) रहे। गंगा नदी को भूमि पर लानेवाले (भगीरथ) रहे। शत्रु व्याध को हरिण के साथ एक ही घाट में जल पिलानेवाले (मान्धाता) थे। ऐसे प्रख्यात राजा थे मेरे पूर्वज। उनके ही कुल में उत्पन्न मैं एक (अपनी ही) स्त्री का दुःख दूर नहीं कर सक रहा हूँ। २१६

विरुम्बॆऴि लॆन्दैयार् मॆय्म्मै वीयुमेल्
वरुम्बऴि यॆन्ऱियान् महुडम् जूडलेन्
करुम्बऴि शॊल्लियैप् पहैजन् कैक्कॊळप्
पॆरुम्बऴि शूडिनेन् पिऴैत्त दॆन्नरो 217

विरुम्पु-मनोरम; ऎऴिल्-शानदार; ऎन्तैयार्-मेरे पिता का; मॆय्म्मै वीयुम् एल्-(वचन) सत्य भंग हो जायगा तो; पऴि वरुम्-निन्दा होगी; ऎन्ऱु-सोचकर; यान्-मैंने; मकुटम् चूटलेन्-मुकुट धारण नहीं किया; करुम्पु अऴि-ईख को हरानेवाली; चॊल्लियै-बोली वाली को; पकैजन्-शत्रु; कै कॊळ-ले गया; पॆरुम् पऴि-बड़ा अपमान; चूटिनेन्-धारण कर लिया; पिऴैत्ततु ऎन्-क्या ही गल्ती की है। २१७

मेरे पिताजी सबके मनों का हरण करनेवाले रूप के स्वामी थे। उनका वचन भंग हो जायगा तो बड़ा अपयश होगा। इस डर से शायद मैंने मुकुट धारण नहीं किया। किन्तु इक्षुरस के स्वाद को भी फीका बनानेवाली मधुर बोली वाली सीता को रावण के हाथ कैद होने देकर मैंने बड़ी निन्दा ग्रहण कर ली। कैसी ही भयंकर गलती हो गयी है मेरे हाथों ? । २१७

अॅऩ्ऩनॊन् दिऩ्ऩ पऩ्ऩि येङ्गिये
तुऩ्ऩरुन् दुयरत्तुच् चोर्हिऩ् ऱाऩ्ऱै
पऩ्ऩरुङ् गदिरवन् पुदल्वऩ् पैयुळ्पार्त्
तऩ्ऩवॆंन् दुयरॆंनु मळक्कर् नीक्किऩान् 218

अॅऩ्ऩ–ऐसा; नॊन्तु–दुःखी होकर; इऩ्ऩ पऩ्ऩि–ऐसी बातें कहते हुए; एङ्किये–तरसते हुए; तुऩ्ऩ अरुम्–असह्य; तुयरत्तु–शोक से; चोर्किऩ्ऱाऩ् तऩ्ऩै–लटनेवाले को; पऩ्ऩ अरुम्–अकथनीय; पैयुळ्–पीड़ा को; कतिरवन् पुतल्वऩ्–सूर्यसुत ने; पार्त्तु–देखकर; अऩ्ऩ–उस; वॆंम् तुयर् ॲऩुम्–कठोर दुःख रूपी; अळक्कर्–समुद्र के; नीक्किऩान्–पार कराया। २१८

श्रीराम ने दुःख के साथ ऐसी-ऐसी बातें कहीं। उनका मन आक्रान्त हो गया। असह्य दुःख के कारण वे निर्बल हो रहे। ऐसे उनके दुःख को सूर्यपुत्र ने देखा। उसने अपनी परिचर्या से धीरज दिलाकर उनको उस कठोर दुःख के सागर को पार कराया। २१८

ऐयनी याऱ्ऱलि ऩाऱ्ऱि ऩॆऩ्ऩला
दुय्वने यॆऩक्किदि ऩुरुदि वेरुण्डो
वैयहत् तिप्पऴि तीर माय्वदु
शॆय्वॆऩिऩ् कुरैमुडित् तऩ्ऱिच् चॆय्हलेऩ् 219

ऐय–प्यारे; नी–तुमने; आऱ्ऱलिऩ्–शान्त कराया; आऱ्ऱिऩॆऩ् अलातु–शान्त हुआ, नहीं तो; उय्वऩे–जी सकता था क्या; ॲऩक्कु–मेरे लिए; इतिऩ्–इस (तुम्हारी मित्रता) से बढ़कर; उरुति–हितकारी; वेरु–दूसरा; उण्टो–है क्या; वैयकत्तु–संसार में; इ पऴि तीर–इस अपमान को पोंछने के लिए; माय्वतु चॆय्वॆऩ्–मर जाऊँगा; निऩ् कुरै–तुम्हारी शिकायत; मुटित्तु अऩ्ऱि–दूर किये बगैर; चॆय्कलेऩ्–वैसा नहीं करूँगा। २१९

श्रीराम किसी विध सम्हले। उन्होंने सुग्रीव से कहा कि तुम्हारे ही कहने से मैं सम्हल रहा हूँ। नहीं तो मैं कहाँ जीवित रह पाता ? तुम्हारी मित्रता से बढ़कर कोई हित भी है ? यह अपयश कठोर है। उससे बचने के लिए मैं मर जाऊँगा। पर तुम्हारी माँग पूरी किये विना मैं ऐसा नहीं करूँगा। २१९

ऍन्ऱ्इऩ निराहव निन्ऩैय कालैयिल्
वन्ऱ्इऱऩ् मारुदि वणङ्गि नोक्किनाऩ्
कुन्ऱिवर् तोळिनाय् कूऱल् वेण्डुव
दोन्ऱुळ ददन्ऩैनी युवन्दु केळॅन्ऩा 220

ऍन्ऱ्रतन्–कहा; इराकवन्–श्रीराघव ने; इन्ऩैय कालैयिल्–उस समय; वल् तिऱल्–अधिक बलशाली; मारुति–मारुति ने; वणङ्कि नोक्कितान्–नमस्कार करके देखा; कुन्ऱु इवर्–पर्वत-सम; तोळिताय्–कन्धों वाले; कूऱल् वेण्टुवतु–निवेदन-योग्य; ऒन्ऱु उळतु–एक बात है; अतन्ऩै–उसको; नी–आप; उवन्तु–मन देकर; केळ्–सुनिए; ऍन्ऩा–कहकर। २२०

श्रीराम ने सुग्रीव को यों वादा दिलाया। तब बहुत बली मारुति ने श्रीराम को नमस्कार करके उनसे निवेदन किया कि पर्वतभुज! एक बात का निवेदन है। कृपा करके सुनें। यह सुनाकर आगे— । २२०

कॊडुन्दिऱल् वालियैक् कॊन्ऱु कोमहन्
कडुङ्गदि रोन्मह नाक्किक् कैवळर्
नॆडुम्बडै कूट्टिन्ऩा लन्ऱि नेडरि
दडुम्बडै यरक्कन दिरुक्कै याणैयाल् 221

कॊटुम्–निर्मम; तिऱल्–बलिष्ठ; वालियै–वाली को; कॊन्ऱु–मारकर; कटुम्–अधिक गरम; कतिरोन्–किरणों वाले सूर्य के; मकन्–पुत्र को; कोमकन् आक्कि–राजा बनाकर; आणैयाल् (सुग्रीव की) आज्ञा द्वारा; कै वळर्–युद्धाभ्यस्त; नॆटुम् पटै–बड़ी सेना को; कूट्टिन्ऩाल् अन्ऱि–एकत्रित किये बिना; अटुम् पटै–घातक सेना वाले; अरक्कनतु–राक्षस का; इरुक्कै–वासस्थान; नेटु अरितु—ढूँढ़ना कठिन (काम) है। २२१

पहले क्रूर पराक्रमी वाली को मारना है। फिर गरम किरणमाली सूर्यदेव के पुत्र को राजा बनाना और समर के सब प्रकारों में समर्थ सेना को एकत्र करना चाहिए। तभी, घातक सेना के स्वामी रावण का वासस्थान ढूँढ़कर उसका पता लगाया जा सकता है। नहीं तो वह दुस्साध्य है। २२१

वानदो मण्णदो मऱ्ऱुम् वॆऱ्पदो
एन्ऩैमा नाहर्त मिरुक्कैप् पालदो
तेन्नुळर् तॆरियलाय् तॆळिव दन्ऱुनाम्
ऊनुडै मानुड माव दुण्मैयाल् 222

तेन् उळर्–भ्रमर जिसको कुरेदते हैं; तॆरियलाय्–ऐसी माला से भूषित; वानतो–आकाश में का है; मण्णतो–भूतल का; मऱ्ऱुम्–अन्य; वॆऱ्पतो–पर्वतप्रदेश का; एन्ऩै–अन्य; मा–विशाल; नाकर् तम् इरुक्कै–नागों के वास के; पालतो–स्थान में है; नाम्–हम; ऊनुटै–मांस के; मानुटम् आवतु उण्मै–मानव-शरीर के हैं; आल्–इसलिए; तॆळिवतु अन्ऱु–निश्चित रूप से जानने योग्य नहीं। २२२

ऐसी माला से शोभायमान प्रभु, जिस पर भ्रमर कुरेदते रहते हैं! उन राक्षसों का वासस्थान आकाश में है, या इस भूतल में? या कहीं अन्य पर्वतस्थलों में? या अन्य नाग आदि लोगों के वास के लोक में है? हम सब मानवशरीरी हैं। (वानर और नर दोनों का शरीर एक-सा माना गया है, देवों के दिव्य शरीरों और राक्षसों के राक्षस-शरीरों से भिन्न।) इस कारण हम निश्चित रूप से जानते नहीं। २२२

ॲव्वुल	हत्तिनु	मिमैप्पि	ॅंय्दुवर्
वव्वुव	रव्वळि	महिऴ्न्द	यावैयुम्
वॆव्विनै	वन्दॅन	वरुवर्	मीळ्वराल्
अव्वव	रुऱैविड	मऱियर्	पालदो 223

इमैप्पिन्–पलक मारते समय के अन्दर; ॲ उलकत्तिनुम्–किसी भी लोक में; ॲय्तुवर्–जायँगे; अ वळि–वहाँ; मकिऴ्न्त यावैयुम्–जिनको पसन्द करते हैं, उन सबको; वव्वुवर्–हथिया लेंगे; वॆव्विनै–कठोर पूर्व-कर्म; वन्ततु ॲंत–आ गया हो, ऐसा; वरुवर्–आ जायँगे; मीळ्वर्–लौट जायँगे; अ अवर् उऱैविटम्–ऐसे उनका वासस्थान; अऱियल् पालतो–जानने योग्य है क्या। २२३

वे पलक मारते समय के अन्दर कहीं भी, किसी भी लोक में जा पहुँचने वाले होते हैं। वे वहाँ जो भी उनको भावे उन वस्तुओं का अपहरण कर लेंगे। बुरे पूर्वकर्म जैसे अचूक रीति से और अकस्मात आते हैं, वैसे वे भी आ जाते हैं। वैसे ही वापस भी चले जाते हैं। ऐसे उनके वासस्थान का पता लगाया जा सकता है क्या? । २२३

ऑरुमुऱै	येपरन्	दुलहम्	यावैयुम्
तिरुमह	ळुऱैविडन्	दॆर	वेण्डुमाल्
वरन्मुऱै	नाडिडिल्	वरम्बिन्	ऱालुल
हरुमैयुण्	डळप्परु	माण्डुम्	वेण्डुमाल् 224

वरन्मुऱै–क्रमेण स्थान-स्थान में; नाटिटिल्–खोजना हो; उलकु–संसार; वरम्पु इन्ऱु–असीम है; आल्–इसलिए; अरुमै उण्टु–कठिनाई है; अळप्पु अरुम् आण्टुम्–असंख्यक वर्षों का समय भी; वेण्टुम् आल्–(खोजने के लिए) चाहिए; आल्–इसलिए; ऑरु मुऱैये–एक ही समय; उलकम् यावैयुम्–सारे लोक में; परन्तु–फैलकर; तिरुमकळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी का; उऱैविटम्–वासस्थान; तेर वेण्टुम्–ढूँढ़ लेना चाहिए। २२४

श्रीलक्ष्मी (सीता) जी को एक-एक स्थान पर क्रम से ढूँढ़ने लगें, तो लोक की सीमा कहाँ है? वह तो असीम है! उसमें बहुत अधिक कठिनाई है। उस रीति से अधिक काल तक ढूँढ़ना पड़ेगा। इसलिए श्रीदेवी को एक साथ दुनिया भर में व्यापकर ढूँढ़ना चाहिए। २२४

एऴुपत् ताहिय वॆळ्ळत् तॆण्वडै
ऊऴियिऱ् कडलॆन वुलहम् बोर्क्कुमाल्
आऴियैक् कुडिप्पिनु मयन्शॆ यण्डत्तैक्
कीऴ्मडुत् तॆडुप्पिनुङ् गिडैत्तल् शॆय्युमाल् 225

एऴु पत्तु आकिय–सत्तर; वॆळ्ळत्तु ऍण्–'वॆळ्ळम्'की संख्या की; पटै–(वानरों की) सेना; ऊऴियिल् कटल् ऍन–प्रलयसागर के समान; उलकम्–सारे संसार पर; पोर्क्कुम्–छा जायगी; आल्–इसलिए; आऴियै–समुद्र (जल) को; कुटिप्पितुम्–पीना हो; अयन् चॆय् अण्टत्तै–ब्रह्मा-सृष्ट अण्ड को; कीऴ् मटुत्तु–नीचे से उखाड़कर; ऍटुप्पितुम्–उठा लेना हो; किटैत्तल्–जो भी सामने आयें; चॆय्युम्–वे कार्य कर देंगे। २२५

सत्तर 'वॆळ्ळम्' की संख्या की सेनाएँ आयँगी, तो वह प्रलयसमुद्र के समान सारे लोक पर छा जायँगी। समुद्र को पीना (सोखना) हो। चाहे ब्रह्माण्ड को जड़ से उखाड़ उठाना हो, जो भी काम आ जाय वह करने में समर्थ हैं। २२५

आदला लन्नदे यमैव दामॆन
नीदियाय् निनैन्दनॆ नॆन्ऱनि हऴ्त्तिनान्
सादुवा मॆन्ऱवत् तनुविन् शॆल्वनुम्
बोदुनाम् वालिपा लॆन्नप् पोयिनार् 226

नीतियाय्–राजनीतिनिपुण; आतलाल्–इसलिए; अन्नते–वही (कार्य); अमैवतु आम्–करना (उचित) है; ऍन–ऐसा; नितैन्तनॆन्–सोचा मैंने; ऍन निकऴ्त्तितान्–ऐसा कहा; चातु आम् ऍन्ऱ–साधु कहनेवाले; अ–उन; तनुवित् चॆल्वन्म्–धनुर्धर ने भी; वालि पाल्–वाली के पास; पोतुम् नाम्–जाएँ हम; ऍन्न–कहा, तब; पोयिनार् (सब) चले। २२६

राजनीति के अच्छे ज्ञाता! वही काम (वानर-सेना इकट्ठी करके भेजना) उचित है। यही मेरा विचार है। हनुमान ने यह निवेदन किया। वही साधु है—धनुधन श्रीराम ने सहमति दिलायी। फिर कहा कि हम वाली के पास जायँ। तब सब चले। २२६

7. वालि वदैप् पडलम् (वालि-वध पटल)

वॆङ्ग णाऴि येऱु मीऴि मावुम् वेह नाहमुम्
शिङ्ग वेऱि रण्डॊ डुन्दि रण्ड वन्न शॆय्हैयार्
तङ्गु शाल मूल मार्त माल मेल मालपोल्
पॊङ्गु नाह मुन्दु वन्ऱ शार लूडु पोयिनार् 227

वॆम् कण्–भयानक आँखों वाले; आऴि एऱुम्–पुरुषशरभ; मीऴि मावुम्–और साहसपूर्ण वाघ और; वेकम् नाकमुम्–गतिमान गज; चिङ्क एऱु–पुरुषसिंह;

इरण्टॉटुम्–दो के साथ; तिरण्ट अन्न–एकत्र हुए जैसे; चॅयकैयार्–कर्मण्य; तङ्कु–वहाँ रहनेवाले; चालम्–सालवृक्ष; मूलम्–'मूलम' नाम के तरु; आर्–अगस्त; तमालम्–तमाल; एलम्–एला नाम के (जटाधारी) तरु; मालै पोल्–हारों की तरह; पॉङ्कु–पुष्पबहुल; नाकमुम्–पुंनाग; तुवन्नुऱ–इनसे खूब भरे; चारल् ऊटु–पर्वत-प्रदेशों से होकर; पोयितार्–चले। २२७

जैसे भयंकर आँख वाला (नर) "याळि", साहसपूर्ण बाघ औरतीव्रगामी गज दो पुरुषसिंहों के साथ एकत्र हो जाते हों, वैसे सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, तार और श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ के पर्वतप्रदेशों से होकर चले जहाँ साल, अगस्त, एला और हारों के समान पुष्पगुच्छों के साथ शोभायमान पुंनाग आदि तरुविशेष घने रूप से उगे थे। २२७

उळैयु लानॅ डुङ्गण् माद रूश लूश लल्लवेल्
तळैयु लावु शन्द लन्नद शारल् शार लल्लवेल्
मळैयु लावु मुन्ऱि लल्ल मन्ऱ नाऱु शण्बहक्
कुळैयु लावु शोलै शोलै यल्ल पॉन्शॅय् कुन्ऱमे 228

उळै–हरिणी के समान; उलाम्–चकित देखनेवाली; नॅटु कण्–आयत आँखों से भूषित; मातर्–स्त्रियों के; ऊचल्–झूले; ऊचल् अल्ल एल्–झूले नहीं तो; तळै उलावु–पत्ते जिन पर हिलते हैं, उन; चन्तु–चन्दन के पेड़ों से भरे; चारल्–पर्वतप्रदेश; चारल् अल्ल एल्–ऐसे प्रदेश नहीं तो; मळै उलावु–मेघविहार; मुन्ऱिल्–(पर्वतों के) आँगन; अल्ल–(वे) नहीं तो; मन्ऱल् नाऱु–सुवासित; कुळै उलावु–पत्ते जिन पर झूलते हैं, उन; चण्पकम् चोलै–चम्पक वन; चोलै अल्ल–(चम्पक) वन नहीं तो; पॉन् चॅय्–स्वर्णदृश्य; कुन्ऱमे–गिरियाँ। २२८

उस पर्वत-मार्ग में कोई न कोई मनोरम दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। हरिणों की-सी और आयत आँखों वाली स्त्रियों के झूले; वे जहाँ नहीं थे, वहाँ चन्दन तरुओं के प्रदेश जिनके पत्ते हिल रहे थे। नहीं तो मेघविहार पर्वतांगन या चंपकवन और उसके तरुओं पर सुबासित पल्लव हिल रहे थे। चंपकवन जहाँ नहीं पाये गये, वहाँ स्वर्णसम गिरियाँ विद्यमान थीं —इस तरह मार्ग के सभी भाग मनोरम थे। २२८

अऱङ्ग णाऱु मेनि यार रिक्क णङ्ग ळोडुमङ्
गिऱङ्गु पोदु मेऱु पोदु मीऱि लाद वोशैयाल्
कऱङ्गु वार्ह ळऱक लन्क लिप्प मुन्दु कण्मुहिळ्त्
तुऱङ्गु मेह मुम्मु णऱ्‍नुदु मोदु लावुमे 229

अऱङ्कळ् नाऱुम् मेनियार्–धर्मस्वरूप श्रीराम और लक्ष्मण; अरि कणङ्कळोटुम्–वानरगण के साथ; अङ्कु–वहाँ; इऱङ्कु पोतुम्–उतरते समय; एऱु पोतुम्–चढ़ते वक्त; ईऱु इलात–सदा; ओचैयाल्–शब्द के साथ; कऱङ्कु वार् कळल्–क्वणनशील बड़ी पायल रूपी; कलन्–आभरण; कलिप्प–ध्वनि निकाल रहे थे; मुन्तु–पहले;

कण् मुकिऴ्त्तु–आँखें मूँदकर; उऱङ्कु–जो सो रहे थे; मेकमुम्—वे मेघ भी; उणर्न्तु–जागकर; मीतु उलावुम्–आकाश में संचार करने लगे। २२९

धर्मस्वरूप श्रीराम और लक्ष्मण वानरगण के साथ उस मार्ग में कभी नीचे उतरते, कभी चढ़ाई पर चढ़ते जा रहे थे। तब उनकी क्वणनशील पायलें निरन्तर बज रही थीं। उस ध्वनि से सुप्त मेघ भी जाग गये और आकाश में संचार करने लग गये। २२९

नीडु नाह मूडु मेह मोड नीरु मोडवे
आडु नाह मोड मान यान्नै योड वाळिपोम्
माडु नाह नीडु शारल् वाळै योडुम् वावियू
डोडु नाह मोड वेङ्गै योडुम् यूह मोडवे 230

नीटु नाकम् ऊटु—लम्बे पर्वतों से होकर; मेकम् ओट–मेघ भागते; नीरुम् ओट–जल बहता; आटुम् नाकम्–फन फैलाकर नाचनेवाले सर्प; ओट–भागते; मातम् यान्नै ओट–बड़े गज दौड़ते; आळि पोम्–शरभसंचार के; माटु–पास में; माकनीटु–स्वर्ग रहे, ऐसे विशाल; चारल्–प्रदेशों में; वावि ऊटु–सरों के अन्दर; वाळैयोटुम्–'वाळै' मीनों के साथ; ओटु नाकम्–भागनेवाले सर्प; ओट–भागते; वेङ्कैयोटु–वाघों के साथ; ऊकम्–काले (मुख वाले) वन्दर; ओट–भागते। २३०

वहाँ सर्वत्र स्पन्दन था। लम्बे पर्वतों पर से मेघों का संचार; जल का बहाव; फन फैलाए हुए नाचनेवाले सर्पों की गति; बड़े गजों का भागना; 'याळियों' का इधर-उधर जाना; स्वर्ग तक विस्तृत पर्वतप्रदेश के जलाशयों में 'वाळै' मछलियों और सर्पों का संचार या बाघों के साथ काले मुख वाले बन्दरों का जाना-आना—इस तरह वह मार्ग सर्वत्र गतिमय था। २३०

मरुण्ड माम लैत्त डङ्गळ् शॆल्ल लाव दल्लमाल्
तॆरुण्डि लाद मत्त यान्नै शीऱ्ऱि निन्ऱ्ऱि डित्तलाल्
इरुण्ड काळ् हिऱ्ऱ डत्तॊ डिऱ्ऱु लर्न्द शन्दुवन्
दुरुण्ड पोद ऴिन्द तेनॊ ऴुक्कु पेरि ऴुक्किने 231

माल्–मोह से; तॆरुण्टु इलात–जो छूटे नहीं थे; मत्त–मत्त; यान्नै–गज; चीऱ्ऱि निन्ऱु–कोप के साथ; इटित्तलाल्–झपटते, इसलिए और; इरुण्ट–काले; काऴ्–कठोर गूदे के; अकिल् तटत्तु ओटु–अगरु-काष्ठों के साथ; इऱ्ऱु–टूटकर; उलर्न्त–सूखे हुए; चन्तु–चन्दन के पेड़; वन्तु–आकर; उरुण्ट पोतु–जब लुढ़कते है, तब; अऴिन्तु–छत्तों के टूटने से निकली; तेन् ऒऴुक्कु–शहद की धारा से उत्पन्न; पेर् ऒऴुक्किन्–बड़ी फिसलन थी, इसलिए; मरुण्ट–भ्रामक; मा मलै तटङ्कळ्–बड़े पर्वत-प्रदेश; चॆल्लल् आवतु अल्ल–यात्रा के लिए सुगम नहीं थे। २३१

वहाँ के मार्ग में जाना खतरे से खाली नहीं था। कारण ? मद में चूर मत्त हाथी कोप के साथ मार्ग में झपटने को तैयार खड़े थे। कठिन

हीर (गूदा) के काले अगरुकाष्ठ और चन्दन के तरु जब कटकर लुढ़कते तब शहद के छत्ते टूट जाते थे और शहद बड़ी धारा में बहने लगता। उससे फिसलन हो जाती थी। इसलिए पर्वततराइयों के वे मार्ग किसी को भी भ्रमित कर सकते थे। उनमें जाना सुलभ नहीं था। २३१

मित्तन्म णिक्कु लनुदु वत्त्ड़ि विल्ल लर्न्दु विण्गुलाय्
अत्तल्प रप्प लॉप्प मीदि मैप्प वन्द विप्पपोल्
पुत्तल्प रप्प लॉप्पि रुन्द पॉत्प रप्पु मॅन्बराल्
इत्तैय विर्ऱ् डक्कै वीर रेऱ् हिन्ऱ् कुन्ऱमे 232

इत्तैय–ऐसे; विल् तट कै–धनु रखनेवाले विशाल हस्तों के; वीरर्–वीर (श्रीराम और लक्ष्मण); एऱ्किन्ऱ्–जिस पर चढ़ते हैं वह; कुन्ऱम्–पर्वत; मित्तल्–रह-रहकर चमकनेवाले; मणि कुलम्–रत्न-समूह; तुवन्ऱि–भरा था और; विल् अलर्न्तु–कान्ति बिखेरकर; विण् कुलाय्–आकाश तक; अत्तल् परप्पल् ऑप्प–आग फैलाते जैसे; मीतु–उस पर्वत पर; इमैप्प–प्रकाश छिटकाते है तब; वन्तु अविप्प पोल्–(उस आग को) आकर बुझाते जैसे; पुतल् परप्पल्–जल डाल रहे हों; ऑप्पु इरुन्त–जैसे रहनेवाले; पॉन् परप्पुम्–स्वर्णराशि भी; (इरुन्त–रही;) ऎन्पर्–कहते हैं। २३२

ऐसे वीर जिस पर्वत पर चढ़ते जाते थे, उसमें रत्नों की विपुल राशियाँ थीं। उनसे जो लाल रंग की कान्ति छूट रही थी, उसको देखकर ऐसा लगा मानो आकाश में बहुत दूर आग फैल गयी हो। वहाँ स्वर्णों के स्थल भी थे और वे, उस आग को बुझाने के लिए जल पसार दिया गया हो, ऐसे लगे। २३२

तेन्ऩि ळुक्कु शारल् वारि शॅल्ल मीदु शॅल्लुनाळ्
मीन्ऩि ळुक्कु मन्ऱि वान्ऩ विल्लि ळुक्कुम् वॅण्मदिक्
कून्ऩि ळुक्कु माऱु लावु कोळि ळुक्कु मॅन्बराल्
वान्ऩि ळुक्कु मेल वाश मन्ऱ् ऩाऱु कुन्ऱमे 233

वान्–देवों को भी; इऴुक्कुम्–खींचनेवाले; एलम् वाचम् मन्ऱल्–एलावास से बासित; कुन्ऱम्–उस पर्वत पर; तेन् इऴुक्कु चारल्–शहद की धारा से युक्त पर्वतढालों में; वारि चॅल्ल–जल बहता है, तब; मीतु चॅल्लुम्–ऊपर संचार करनेवाले; नाळ् मीन्–नक्षत्रों को; इऴुक्कुम्–खींचकर ले जाता है; अन्ऱि–अलावा; वान विल्–इन्द्रधनुष को भी; इऴुक्कुम्–खींचता है; वॅण् मति कून्–श्वेत चन्द्र के वक्र अंश को; इऴुक्कुम्–खींचता; माऱु–परस्पर विपरीत; उलावु–संचार करनेवाले; कोळ् इऴुक्कुम्–(नव-) ग्रहों को खींचता; ऎन्पर्–(ऐसा लोग) कहते हैं। २३३

उसमें एले के वृक्ष थे। उनकी सुगन्धि देवों को भी आकृष्ट कर रही थी। उस पर्वत पर, जिस पर शहद की धारा बह रही थी, जल भी

बह रहा था। वह जलधारा आकाश के नक्षत्र, इन्द्रधनुष, चन्द्र का वक्र अंश और परस्पर विपरीत चलनेवाले नवग्रह —इन सबको खींच लेती। २३३

मरुवि याडुम् वावि तोऱुम् वान याऱु पायुमवन्
दिरुवि यार्द डङ्गण् मीऩि नेऱु पायु माऱुपोल्
अरुवि पायु मौऩ्ऱि नौऩ्ऱि नाऩै पायु मेनलिल्
कुरुवि पायु मोडि मन्दि कोडु पायु माडॅलाम् 234

माट्टु ॲलाम्–पार्श्वों में सब ओर; मरुवि–उतरकर; आटुम्–जिनमें लोग स्नान करते है, उन; वावि तोऱुम्–तालावों में, हर एक में; वात याऱु–आकाशगंगा; वन्तु पायुम्–आकर बहती; मीतिन् एऱु–बड़ी-बड़ी मछलियाँ; इरुवि आर्–बाल-कटे कोदों के पौधों से भरे; तटङ्कऴ्–खेतों में; पायुम्–झपटते; आऱु पोल्–नदियों की ही तरह; अरुवि पायुम्–नाले बहते है; ऑन्ऱिन् ऑन्ऱिन्–एक-एक (नाले) में; आनै पायुम्–हाथी झपटते है; एऩलिल्–कोदों के खेतों पर; कुरुवि पायुम्–चिड़ियाँ झपटती है; मन्ति–वानर; ओटि–भागकर; कोटु पायुम्–तरुशाखाओं (या पर्वतशृंगों) पर झपटते हैं। २३४

वहाँ पर्वत के तलों में जो जलाशय थे उनमें आकाशगंगा बही। उन जलाशयों के मोटे-मोटे मीन उन खेतों के कोदों के पौधों पर झपटे, जिनकी बालें कट गयी थी। वहाँ के बरसाती नाले भी नदियों के समान (विशाल) बह रहे थे। उनमें हाथी झपटते रहते थे। कोदों के खेतों पर चिड़ियाँ झपटतीं। बन्दर तरुशाखाओं पर भागते और झपटते थे। २३४

अन्न दाय कुन्ऱि नाऱु शॅन्ऱ वीर रॅन्दॊडॆन्
दॆन्न लाय योश नैक्कु मुम्ब रेऱि इम्बरिल्
पॊऩ्ऩि नाडि ऴिन्द दन्न वालि वाऴ्पॊ रुप्पिडम्
तुन्नि नार्हऴ् यादु शॅय्दु मॆन्ऱु शॊऱ्ऱ पोदिन्ने 235

अन्नतु आय–वैसे रहनेवाले; कुन्ऱिन् आऱु–पर्वत-मार्ग से; चॅन्ऱ–जो गये वे; वीरर्–श्रीराम आदि वीर; एन्तु ओटु एन्तु–पाँच के साथ पाँच; ॲन्तल् आय–(दस) कहलानेवाले; योचनैक्कुम्–योजन से भी; उम्पर् एऱि–ऊपर चढ़कर; इम्परिल्–इस लोक में; पॊन्निन् नाटु–(अमरावती) स्वर्णपुरी; इऴिन्ततु अन्न–उतरकर आया हो जैसे; वालि वाऴ्–वाली के वास के; पॊरुप्पु इटम्–पर्वतस्थान को; तुन्निनार्कऴ्–गये; यातु चॅय्तुम्–क्या करेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा; चॊऱ्ऱ पोतिन्–पूछने पर। २३५

ऐसे पर्वत-मार्ग पर श्रीराम आदि वीर दस योजन दूर ऊपर चले। वाली जहाँ वास करता था, उस पर्वत-नगर किष्किन्धा के पास पहुँचे। वह स्थान स्वर्णपुरी अमरावती-सा लगा जो आकाश से उतरकर वहाँ रह गयी हो। वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाय? । २३५

अव्वि डत्ति राम नीय ळैत्तु वालि यानपेर्
वॅव्वि डत्तिन् वन्दु पोर्वि ळैक्कु मेल्वै वेऱ्निन्
ऱॅव्वि डत्तु णिन्द मैन्द दॅन्ग रुत्ति दॅन्ऱ्ऱन्
तॅव्व डक्कुम् वॅन्ऱि यानु नन्ऱि दॅन्ऱु शिन्दिया 236

अ इटत्तु–तब; इरामन्–श्रीराम ने; अळैत्तु–(सुग्रीव को पास) बुलाकर; नी–तुम; वालि आन्–वाली नाम के; पेर् वॅम् विटत्तिन्–बड़े भयंकर विष के साथ; वन्तु–आकर; पोर् विळैक्कुम्–जब युद्ध करो; एल्वै–तब; वेऱु निन्ऱु–अलग खड़ा रहकर; ॲव्विट–बाण चलाने को; तुणिन्तु–ठाना है; अमैन्तु इतु–निश्चय यह; ॲन् करुत्तु–मेरी राय है; ॲन्ऱ्ऱन्–कहा; तॅव् अटक्कुम्–शत्रु-संहार कर; वॅन्ऱियानुम्–विजय चाहनेवाला (सुग्रीव) भी; इतु नन्ऱु–यही अच्छा है; ॲन्ऱु–ऐसा; चिन्तिया–सोचकर। २३६

तब श्रीराम ने सुग्रीव को अपने पास बुलाया और कहा कि तुम बड़े और भयंकर विष, वाली, को ललकारो। जब तुम उसके विरुद्ध युद्ध करो तब मैं अलग रहकर उसके ऊपर बाण चलाऊँ, यही मेरी राय है। शत्रु वाली के नाश में तुला हुआ, विजय का चाहक सुग्रीव ने उत्तर में कहा कि हाँ! वही अच्छा है। २३६

वार्त्तै यन्न दाह वानि यङ्गु तेरि नान्महन्
नीर्त्तर रङ्ग वेलै यञ्ज नील मेह नाणवे
वेर्त्तु मण्णु ळोरिन् विण्णु ळोरि रिन्दु विम्ममेल्
आर्त्त वोशै यीश नुण्ड वण्ड मुऱ्ऱु मुण्डदे 237

वार्त्तै अन्नतु–श्रीराम का वचन वैसा; आक–रहा तो; वान् इयङ्कु–आकाशचारी; तेरितान् मकन्–रथ के स्वामी सूर्य का पुत्र; तरङ्क नीर् वेलै–तरंगाकुल समुद्र को; अञ्च–भयभीत करते हुए; नील मेकम् नाण–नीले मेघों को लजाने देते हुए; मण् उळोरिन्–भूतलवासियों के समान; विण् उळोर्–स्वर्गवासी भी; वेर्त्तु–पसीना-पसीना होकर; इरिन्तु–अस्त-व्यस्त होकर; विम्म–दुःख से भर जायँ, ऐसा; मेल् आर्त्त ओचै–तिस पर निकाला शोर; ईचन् उणट–महाविष्णु से खादित; अण्टम् मुऱ्ऱुम्–अण्ड भर को; उण्टतु–(लील गया) खा गया। २३७

श्रीराम ने ऐसा कहा तो सुग्रीव ने घोर गर्जन-नाद निकाला। आकाशचारी रथ के स्वामी सूर्य के पुत्र के उस नाद के सामने तरंगायमान समुद्र डर गया। नीले मेघ लजा गये। भूमि के वासी जैसे सुरलोकवासी भी पसीना-पसीना होकर अस्त-व्यस्त हो गये और घबड़ाहट से भर गये। उसका नाद सारे ब्रह्माण्ड को लील गया, जिसको भगवान महाविष्णु ने प्रलय के अवसर पर अपने उदर में समा लिया था। २३७

इडित्तु रप्पि वन्दु पोर् दिर्त्ति येल डर्प्पत्तन्
ऱडित्त लङ्गाळ् कॉट्टि वाय्म डित्त डत्त लङ्गुतोळ्

पुडैत्तु निन्रु ळैत्त पूशल् पुक्क दॆन्व मिक्किटम्
तुडिप्प वङ्गु रुङ्गु वालि तिण्शॆ वित्तों ळैक्कणे 238

वन्तु–आकर; पोर् ॲतिर्त्तियेल्–युद्ध में सामना करो तो; अटर्प्पॆन्–मार दूंगा; ॲन्रु–कहकर; इटित्तु उरप्पि–डाँट बतायी ओर; अटि तलक्कळ् कॊट्टि–पैरों को ज़ोर से पटककर; वाय् मटित्तु–अधर मोड़कर; अट्तुतु अलक्कु तोळ्–पार्श्व में फड़कते रहनेवाले कन्धों को; पुट्टत्तु–ठोंकते हुए; निन्रु उळैत्त पूवल्–रहकर जो (शोर) मचाया, वह शोर; इटम् मिक्कु–बायें अंगों के अधिक; तुटिप्प–फड़कते; अङ्कु–वहाँ (किष्किन्धा नगर में); उरङ्कु–सोते रहनेवाले; वालि–वाली के; तिण् चॆवि तॊळै कण्–वलयुक्त कर्ण-विवर में; पुक्कतु–घुसा; ॲन्प–कहते हैं। २३८

'तुम आकर मेरे साथ युद्ध करो तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा' —ऐसा सुग्रीव ने डाँट के साथ बताया। उसने ललकार के साथ पैरों से शब्द निकालते हुए पैंतरे बदले। अधरों को मोड़ लिया; कन्धे ठोंके। ऐसा जो शोर उसने मचाया वह वाली के बलवान कर्णविवर में जा पहुँचा। तब वह सो रहा था। जब उसने यह सुना तब उसके बायें अंग बहुत फड़के। २३८

❀ माऱ्पॆरुङ् कडहरि मुळक्कम् वाळरि
एऱ्पदु शॆवित्तलत् तॆन्न वोङ्गिय
आर्प्पॊलि केट्टन नमळि मेलॊरु
पाऱ्कडल् किडन्ददे यनैय पान्मैयान् 239

अमळि मेल्–सेज पर; ऒरु पाल् कटल्–एक क्षीरसागर; किटन्तते अनैय–पड़ा रहा हो, ऐसे ही; पान्मैयान्–दृश्य वाली ने; माल्–प्रमित; पॆरुम् कट करि–बड़े व मत्त गज की; मुळक्कम्–चिंघाड़ को; वाळ् अरि–भयंकर सिंह; चॆवि तलत्तु–कान से; एऱ्पतु ॲन्त–सुनता हो जैसे; ओङ्किय–उठा हुआ; आर्प्पु ऒलि–ललकार का स्वर; केट्टनन्–सुना। २३९

अपनी शय्या पर वाली क्षीरसागर के समान लेटा हुआ था। मदहोश मत्तगज की चिंघाड़ सुननेवाले सिंह के समान वाली ने सुग्रीव की ललकार का उच्च नाद सुना। २३९

❀ उरुत्तनन् पॊरवॆदिर् दिळव लुऱ्ऱमै
वरैत्तडन् दोळिनान् मनत्ति नॆण्णिनान्
शिरित्तन नव्वॊलि तिशैयि नप्पुऱत्
तिरित्तदव् वुलहमॊ रेळॊ डेळैये 240

वरै तटम् तोळिनान्–पर्वत-सम विशाल कन्धों वाले ने; इळवल्–कनिष्ठ भ्राता; उरुत्तनन्–कोप करके; पॊर–लड़ने के हेतु; ॲतिर्न्तु उऱ्ऱमै–सामने आया है, यह बात; मनत्तिन् ॲण्णिनान्–मन में सोची; चिरित्तनन्–हँसा; अ ऒलि–उस

ध्वनि ने; तिचैयिन् अ पुऱत्तु–दिगन्त के उस पार जाकर और; अ उलकम्–श्रेष्ठ लोक; ऑर् एळॊटु एळै–(सात और सात) चौदहों को; इरित्ततु–भय से अस्त-व्यस्त करा दिया। २४०

पर्वतविशाल कन्धों वाले वाली ने जब सोचा कि मेरा छोटा भाई सुग्रीव मुझसे युद्ध करने आया है तो उसे हँसी आ गयी। वह हँस उठा। वह ध्वनि दिगन्त के उस पार भी चौदहों लोकों पर छायी, जिससे सारे लोक काँप उठे। २४०

ऍऴुन्दनन्	वल्विरैन्	दिऱुदि	यूऴियिल्
कॉळन्दिरैक्	कडल्हिळर्न्	दनैय	कॉळ्हैयान्
अऴुन्दिय	दक्किरि	यरुहिन्	माल्वरै
विऴुन्दन	तोळ्पुडै	विशैत्त	काऱ्ऱिने 241

ऊऴि इऱुतियिन्–युगान्त में; कॉळुम् तिरै–बड़ी-बड़ी लहरों का; कटल्–समुद्र; किळर्न्ततु–उमँग उठा हो; अनैय–जैसी; कॉळ्कैयान्–अवस्था में वाली; वल् विरैन्तु–बहुत तेजी से; ऍऴुन्तनन्–उठा; अ किरि–वह पर्वत; अऴुन्तियतु–दब गया; तोळ् पुटै–भुजाओं को; विचैत्त–ठोंकने से उठी; काऱ्ऱिन्–हवा के कारण; अरुकिन् माल् वरै–पास के बड़े पर्वत; विऴुन्तन–गिर गये। २४१

वाली शीघ्र उस प्रकार उठा जैसे युगान्त में बड़ी लहरों वाला सागर उमँग उठा हो! उस (के भार और वेग) से वह पर्वत धँस गया। कंधों के ठोंकने से जो हवा चलित हुई उसके कारण पास के बड़े-बड़े पर्वत टूटकर गिरे। २४१

पोय्प्पॊडित्	तनमयिर्प्	पुऱत्त	वॆम्बॊऱि
काय्प्पॊडुऱ्	ऱॆऴुवड	कनलुङ्	गण्कॆडत्
तीप्पॊडित्	तनविऴि	तेवर्	नाट्टिनुम्
मीप्पॊडित्	तनपुहै	युयिर्प्पु	वीङ्गवे 242

वॆम् पॊऱि–गरम अंगारे; मयिर् पुऱत्त–शरीर के बालों के ऊपर; पोय्–आकर; पॊटित्त–छितरे; विऴि–आँखों ने; काय्प्पु ओटु–क्रोध के साथ; उऱु ऍऴु–मिलकर ऊपर उठनेवाली; वट कनलुम्–बड़वाग्नि की; कण् कॆट–आँखों को चौंध से खराब करते हुए; ती पॊटित्तन–आग निकाली; उयिर्प्पु–श्वास; वीङ्कवे–वेग के साथ ऊपर आया तब; पुकै–धुआँ; तेवर् नाट्टिनुम्–देवलोक में भी; मी–ऊपर जाकर; पॊटित्तन–प्रकट हुआ। २४२

भयंकर कोपाग्नि शरीर पर के बालों के ऊपर अंगारों के रूप में प्रकट हुई। आँखों से आग निकली। उसको देखकर भयंकर क्रोध के साथ (भयंकर रूप से भभककर) उठनेवाली बड़वाग्नि भी चौंधिया गयी! उसके निःश्वास बढ़े और उनसे धुआँ उठकर ऊपर गया और सुरलोक में जाकर फैल गया। २४२

※ कैक्कोडु	कैत्तलम्	वुडैप्पक्	कावलित्
तिक्कयङ्	गळुमदच्	चॅरुक्कुच्	चिन्दिऩ
उक्कऩ	वुरुमिऩ	मुलैन्द	वुम्बरुम्
नॅक्कऩ	नॅरिन्दऩ	निन्ऱ	कुन्ऱमे 243

कै कोट्टु–हाथ से; कै तलम्–हथेली; पुटैप्प–(वाली ने) पीटी; कावलिन्–लोकरक्षण में लगे रहनेवाले; तिक्कयङ्कळुम्–दिग्गजों ने भी; मत चॅरुक्कु–मदमस्ती (पौरुष) को; चिन्तिऩ–त्याग दिया; उरुम् इऩम्–वज्रसमूह; उक्कऩ–चूर हो चू गये; उम्परुम्–आकाशलोक भी; उलैन्त–क्लान्त हो गये; निन्ऱ कुन्ऱम्–अचल गिरियाँ भी; नॅक्कऩ–टूटे; नॅरिन्तऩ–चूर्ण हो गये। २४३

वाली ने हाथ से हाथ पीटा। तो पृथ्वी के रक्षण में खड़े रहनेवाले दिग्गजों ने अपना मद और शक्ति त्याग दी। वज्र निर्बल होकर गिर गये। देवलोक डगमगा गये। अचल पर्वत भी दलक गये। २४३

वन्दनॅऩ्	वन्दनॅ	नॅन्ऱ	वाशहम्
इन्दिरि	मुदऱ्ऱिशै	यॅट्टुङ्	गेट्टऩ
शन्दिरऩ्	मुदलिय	तार	हैक्कुळाम्
शिन्दिऩ	ववन्मुडिच्	चिहरन्	दीण्डवे 244

वन्ततॅन्–आ गया; वन्ततॅन्–आ गया; ऍन्ऱ वाचकम्–वे शब्द; इन्तिरि मुतल् तिचै–इन्द्र की (पूर्व) दिशा आदि; ऍट्टुम्–आठों दिशाओं में; केट्टऩ–सुनाई दिये; अवन्–उसके; मुटि चिकरम्–किरीट-शिखर के; तीण्ट–छूने से; चन्तिरन् मुतलिय–चन्द्र आदि; तारकै कुळाम्–ताराओं के समूह; चिन्तिऩ–नीचे गिर गये। २४४

वाली ने उच्च स्वर में ललकार का उत्तर दिया— आ गया। अभी आ गया। वे शब्द इन्द्र की पूरब दिशा से लेकर सारी दिशाओं में गूँज उठे। उसके किरीट की चोटी के लगने से चन्द्र और सितारों के समूह नीचे चू गये। २४४

वीशिऩ	काऱ्ऱिन्वेर्	पऱिन्दु	वॅऱ्पिऩम्
आशैयै	युऱ्ऱऩ	वण्डप्	पित्तिहै
पूशिऩ	वॅण्मयिर्प्	पुऱत्त	वॅम्बॊऱि
कूशिऩ	ऩन्दहन्	कुलैन्द	वुम्बरे 245

वीचिऩ काऱ्ऱिऩ–(वाली के उठने के वेग से) चालित हवा के कारण; वॅऱ्पु इऩम्–पर्वतसमूह; वेर् पऱिन्तु–जड़ कटकर; आचैयै–दिशाओं में जा; उऱ्ऱऩ–पहुँचे; वॅण्मयिर्–(शरीर के) सफ़ेद बालों के; पुऱत्त–ऊपर; वॅम् पॊऱि–कोपाग्नि (जो उठी) उसके कण; अण्ट पित्ति कै–अण्ड की भित्तियों पर; पूचिऩ–पोत गये; अन्तकन्–यम; कूचिऩन्–संकोच में पड़ गया; उम्पर्–स्वर्गलोक; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हुआ। २४५

उसके वेग से हवा चलित हुई। तब पर्वत-वृन्द मूल से कटकर दिशाओं में जा लगे। श्वेत बालों के ऊपर से निकले अंगारे अण्ड-भित्तियों से जा लगे। यम भी वाली को देखने से संकोच करने लगा। स्वर्ग अस्त-व्यस्त हो गया। २४५

कडित्तवा यॆयिऱुहु कनल्हळ् कार्विशुम्
बिडित्तवा लुहुमुरु मिन्नत्तिऱ् चिन्दिन
तडित्तुवीऴ्न् दन्नवॆन्नत् तहर्न्दु शिन्दिन
वडित्ततोळ् वलयत्तिन् वयङ्गु काशरो 246

कटित्त वाय्–मुख में पिसते; अँयिऱु उकु–दाँतों से निकली; कनल्कळ्–अग्नि के कण; कार्–मेघों के; विचुम्पु इटित्त आल्–आकाश में टकराने से; उकुम्–गिरनेवाले; उरुम् इनत्तिल्–वज्र-समूह के समान; चिन्तिन–गिरे; वटित्त–श्रेष्ठ; तोळ् वलयत्तिन्–बाहुवलय में; वयङ्कु काचु–दृश्यमान रत्न; तटित्तु वीऴ्न्तन अँन्न–तड़ितें गिरतीं जैसे; तकर्न्तु चिन्तिन–टूटकर गिरे। २४६

वाली ने दाँत पीसे। तब दाँतों से अंगारे निकले। वे आकाश में गरजते मेघों से निकलकर गिरनेवाली तड़ितों के समान छितरे। उसके सुन्दर बाहुवलयों से रत्न अलग होकर गाजों के समान चू पड़े। २४६

ञालमु नाऱ्ऱिशैप् पुनलु नाहरुम्
मूलमु मुऱ्ऱिड मुडिविऱ् ऱीक्कुमक्
कालमु मॊत्तनन् कडलिऱ् ऱान्कडै
आलमु मॊत्तन नॆवरु मञ्जवे 247

अँवरुम् अञ्च–कोई भी भयभीत हो, ऐसा; ञालमुम्–यह भूमि और; नाल् तिचै पुनलुम्–चारों दिशाओं के समुद्र और; नाकरुम्–देव; मूलमुम्–सृष्टि के मूल (भूत आदि); मुऱ्ऱिट–(इनको) नाश करते हुए; मुटिविल्–युगान्त में; तीक्कुम्–जला डालनेवाले; अ कालमुम्–उस प्रलयकाल के; ऑत्तनन्–समान भी रहा; कटलिल्–(क्षीर-) सागर में; तान् कटै–खुद उससे मथने से निकले; आलमुम्–हलाहल के; ऑत्तनन्–समान भी रहा। २४७

उस वाली को देखकर सब कोई भयभीत हो गये। तब वह प्रलय-काल के समान लगा जो भूमि, चारों ओर के सागर, देवगण और इन सबके मूलतत्त्व आदि सभी का अन्त करते हुए जला डालता है। और भी उस हलाहल के समान भी लगा, जिसको उसी ने खुद क्षीरसागर मथकर उससे प्रकट कराया था। २४७

* आयिडैत् तारैयॆन् ऱमुदिऱ् ऱोन्ऱिय
वेयिडैत् तोळिन्ना ळिडैवि लक्किनाळ्

वायिडैप् पुहैवर वालि कण्वरुम्
तीयिडैत् तन्नॆडुङ् गून्द ट्रीहित्ट्राळ् 248

अ इटै–तव; तारै ऎन्ऱु–तारा नाम की; अमुतिल् तोन्ऱिय–अमृत के समान दृश्यमान; वेय् इटै तोळिन्नाळ–बाँस-से प्राप्त कन्धों वाली (वाली-पत्नी) ने; वाय् इटै–मुख से; पुकै वर–धुआँ निकलने देते हुए; वालि कण् वरुम्–वाली की आँखों में प्रकट; ती इटै–अग्नि में; तन् नॆटुम् कून्तल्–अपने लम्बे केश को; तीकिन्ऱाळ्–जलने देती हुई; इटै विलक्किनाळ्—बीच में आकर रोका। २४८

तब तारा ने आकर उसे रोका। तारा अमृत के समान प्रकट हुई। बाँस के समान कन्धों वाली वाली की पत्नी तारा के लम्बे केश उस अग्नि में झुलसे जो वाली के मुख से धुआँ छोड़ते हुए उसकी आँखों में जल रही थी। २४८

❀ विलक्कलै विडुविडु विळित्तु ळानुरम्
कलक्कियक् कडल्हडैन् दमुदु कण्डॆन
उलक्कविन् नुयिर्हुडित् तॊल्लै मीळ्हुवॆन्
मलैक्कुल मयिलॆन मडन्दै कूऱुवाळ् 249

मलै कुल मयिल्–पर्वतवासिनी सुन्दर मोरनी; विलक्कलै–मत रोको; विट्टु विट्टु–छोड़ो, छोड़ो; अ कटल्–(तब या) उस सागर को; कटैन्तु–मथकर; अमुतु कण्टु–अमृत निकाला (मैंने); ऎन–वैसे ही; विळित्तु उळान्–ललकारनेवाले का; उरम् कलक्कि–बल मिटा करके; उलक्क–उसको मारकर; इन् उयिर् कुटित्तु–उसके प्यारे प्राण पीकर; ऒल्लै–शीघ्र; मीळ्कुवॆन्–लौट आऊँगा; ऎन–कहने पर; मटन्तै–वह नारी; कूऱुवाळ्–बोली। २४९

वाली ने उससे कहा कि पर्वतकुलकेकिनी! मुझे मत रोको। छोड़ दो, छोड़ दो। उस दिन जैसे सागर मथकर अमृत निकाला, उसी तरह आज ललकारनेवाले सुग्रीव का बल मिटाकर, उसे मिटा दूँगा और उसके प्यारे प्राण पीकर शीघ्र लौट आऊँगा। तब तारा ने कहा। २४९

❀ कॊट्ऱव निन्वॆरुङ् गुववुत् तोळ्वलिक्
किट्ऱतन् मुन्नैना ळीडुण् डेहुवान्
पॆट्ऱिलन् पॆरुन्दिऱल् पॆयर्त्तुम् पोर्शॆयऱ्
कुट्ऱदु नॆडुन्दुणै युडैमै यालॆन्ट्राळ् 250

कॊट्ऱव–राजा; मुन्नै नाळ्—पहले दिन; निन्–आपके; कुववु पॆरुम् तोळ्–पुष्ट, बड़े कन्धों के; वलिक्कु—बल के सामने; इट्ऱतन्–हारकर; ईटु उण्टु—अपमानित होकर; एकुवान्—जो भागा; पॆरु तिऱल्—(वह अब) बहुत शक्ति; पॆट्ऱिलन्–पा नहीं गया है; पॆयर्त्तुम्–फिर भी; पोर् चॆयऱ्कु–युद्ध करने के लिए; उट्ऱतु–आना; नॆटुम् तुणै–बहुत बड़ी सहायता; उटैमैयाल्–प्राप्त करने के कारण; ऎन्ट्राळ्–कहा। २५०

राजा ! पहले यही सुग्रीव आपके पुष्ट बड़े कन्धों के बल के सामने हारा, अपमानित हुआ और भागा। उसे अब कोई बड़ी शक्ति तो प्राप्त नहीं हुई है। तो भी वह लड़ने आया है। इसका कारण उसकी किसी बड़ी सहायता की प्राप्ति है। —तारा ने ऐसा कहा। २५०

सून्ट्रॅन्न मुट्रिय मुडिविल् पेरुल
हेन्रुड नुट्रन्न वॅन्नक्कु नेरॅन्नत्
तोन्ट्रिनुन् वोट्रवै तॉलैयु मॅन्ट्रकुच्
चान्रुळ वन्नवै तैयल् केट्टियाल् 251

तैयल्–दयिता; सून्ट्रु अॅन्न–तीन की संख्या में; मुट्रिय–पूर्ण बने; मुटिवु इल्–अनन्त; पेर् उलकु–बड़े लोकों के वासी; अॅन्नक्कु नेर् अॅन्न–मेरे सामने; एन्रु–विरोध करके; उटन् उट्रन्न–साथ मिलकर; तोन्ट्रिनुम्–आकर प्रकट हों तो भी; अवै तोट्रु–वे हारकर; तॉलैयुम्–मिट जायेंगे; अॅन्ट्रकु–इसके लिए; चान्रु उळ–प्रमाण हैं; अन्नवै–उनको; केट्टि–सुनो; (आल्–पूरक ध्वनि)। २५१

वाली ने कहा— दयिता ! स्वर्ग, मध्य, पाताल —तीनों श्रेणियों के असंख्यक और बड़े लोक, सारे, मिलकर मेरे विरुद्ध युद्ध करने आयें तो भी वे हारकर मिट जायेंगे। इसके प्रमाण हैं। बतलाता हूँ। सुनो। २५१

मन्दर नॅडुवरै मत्तु वाशुहि
अन्दमिल् कडैहयि रडैह लाळियान्
शन्दिरन् ड्रूणॅदिर् तरुक्किन् वाङ्गुवार्
इन्दिरन् मुदलिय वमर रेनैयोर् 252

मन्तर–मन्दर के; नॅटवरै–बड़े पर्वत को; मत्तु–मथानी; वाचुकि–वासुकी को; अन्तम् इल्–बहुत लम्बी; कटै कयिरु–नेती; आळियान्–चक्रधारी महाविष्णु को; अटै कल्–(पर्वत को धँसने से रोकने का) आधार-प्रस्तर; चन्तिरन्–चन्द्र को; तूण्–स्थिर स्तम्भ (खूँटा, जिसके सहारे मथानी बँधी रहती है); तरुक्किन्–गर्व के साथ; अॅतिर् वाङ्कुवार्–आमने-सामने रहकर खींचनेवाले; इन्तिरन् मुतलिय अमरर्–इन्द्रादि देव; एनैयोर्–और अन्य (असुर) थे। २५२

(क्षीरसागर-मन्थन की बात लो।) मन्दरपर्वत को मथानी, वासुकी को लम्बी नेती बनायी गयी। चक्रधारी महाविष्णु पर्वत के नीचे आधार-प्रस्तर बने रहे, ताकि पर्वत घूमते समय धँस न जाय। चन्द्र को स्थिरस्तम्भ बनाकर उसी से मथानी सुरक्षित की गयी। गर्व के साथ दोनों पक्षों में इन्द्रादि सुरगण और असुर रहकर नेती को खीचने लगे। २५२

पॅयर्वुर वलिक्कवु मिडुक्किल् पॅरुडियार्
अयर्वुर लुट्रदै नोक्कि यान्दु

तयिरॅनक् कडैन्दवर्क् कमुदन् दन्ददुम्
मयिलियर् कुयिन्मॊऴि मऱक्कर् पालदो 253

मयिल् इयल्–मोर की-सी छटा; कुयिल् मॊऴि–कोकिल की वाणी वाली; पॅयर्वु उऱ–घुमाते हुए; वलिक्कवुम्–खींचने पर; मिट्कु इल्–निर्बल; पॅऱियार्–दम वाले; अयर्वु उऱल् उऱ्ऱलॆ–थक गये, उसे; नोक्कि–देखकर; यान्–मेरा; अतु–उसे; तयिर् अॆन–दही के समान; कटैन्तु–मथकर; अवर्क्कु–उन्हें; अमुतम् तन्ततुम्–अमृत दिलाना; मऱक्कल् पालतो–भूलने योग्य है क्या। २५३

मयूराभा कोकिलवाणी तारा ! वे मन्दरपर्वत को घुमाने लगे। पर उनमें योग्य बल नहीं था। इसलिए वे थक गये। उसको मैंने देखा तो मैं गया और दही के समान सागर को मथ डाला। अमृत निकालकर दिया। वह सामर्थ्य भुलाने की बात है क्या ? । २५३

❀ आऱ्ऱलि नमररु मवुणर् यावरुम्
तोऱ्ऱन रॅन्नैयवर् शॊल्लर् पालदो
कूऱ्ऱमॆन् पॅयर्शॊलक् कुलैयु मारिनि
माऱ्ऱवर् काहिवन् दॆदिरु माण्बिनार् 254

आऱ्ऱलिन्–मेरी शक्ति के सामने; अमररुम्–देव और; अवुणर् यावरुम्–दानव सब; तोऱ्ऱतर्–जो हारे; अॆन्नैयवर्–कितने हैं; चॊल्लल् पालतो–(हिसाब) कहा जा सकता है क्या; कूऱ्ऱुम्–यम भी; अॆन् पॅयर्–मेरा नाम; चॊल–लेने पर; कुलैयुम्—भय से काँप जायगा; माऱ्ऱवर्कु–मेरे शत्रु का; आकि वन्तु–(सहायक) बन आकर; इति–अब; अॆतिरुम्–लड़े; माण्पितार्–ऐसी शक्ति रखनेवाले; आर्–कौन हैं। २५४

मेरे सामने अमर और असुर कितने ही हारे हैं ! उनकी गणना भी हो सकती है क्या ? यम भी, मेरा नाम लिया जाय तो भय से काँप जायगा ! फिर कौन हैं जो इतना हौसला रखते हैं कि मेरे सामने आकर युद्ध करें ? । २५४

❀ पेदैय रॅदिर्हुव रॅनिनुम् बॅऱ्ऱुडै
ऊदिय वरङ्गळु मुरमु मुळ्ळदिल्
पादियु मॅन्नदाऱ् पहैप्प दॆङ्ङनम्
नीतुय रॊऴिहॅन्न निन्ऱु कूऱिनान् 255

पेतैयर्–बुद्धिहीन; अॆतिर्कुवर्–लड़ेंगे; अॆनिनुम्–तो भी; पॅऱ्ऱटै–उनके प्राप्त; ऊतियम् वरङ्कळुम्–शक्तियाँ और वर; उरमुम्–बल; उळ्ळतिल्–जो हैं, उनका; पातियुम् अॆन्नततु–आधा मेरा होगा; आल्–इसलिए; पकैप्पतु अॆङ्ङनम्–विरोध करेंगे कैसे; नी–तुम; तुयर्–दुःख; ऒऴिक–छोड़ो; अॆन–ऐसा; निन्ऱु–सावधानी के साथ; कूऱिनान्–(आश्वासन का वचन) कहा (वाली ने)। २५५

समझो कि कुछ जड़मति हैं जो युद्ध करने आ जायँ। (मेरे प्राप्त वरदान के बल से) उनके वर, बल और सामर्थ्य —सबके आधे भाग मेरे हो जायँगे। फिर वे कैसे मेरा विरोध करेंगे ? तुम अपना दुःख छोड़ दो। वाली ने तारा को धीरज देते हुए सावधानी से कहा। २५५

❀ अन्नदु	केट्टव	ळरश	वायवऱ्
किन्नुयिर्	नट्पमैन्	दिराम	नॅन्बवन्
उन्नुयिर्	कोडलुक्	कुडन्वन्	दार्नत्
तुन्निय	वन्बिनर्	शॊल्लिना	रॅन्ऱाळ् 256

अन्नतु केट्टवळ्–उसको सुनकर (तारा ने); अरच–राजा; इरामन् ऍन्पवन्–श्रीराम नाम के; आयवऱ्कु–उनका; इन् उयिर् नट्पु–प्राणप्यारा मित्र; अमैन्तु–बनकर; उन् उयिर् कोटलुक्कु–तुम्हारे प्राण हरने के लिए; उटन् वन्तान्–साथ आये हैं; ऍन–ऐसा; तुन्निय–निकट के; अन्पिनर्–स्नेहियों ने; चॊल्लिनार्–कहा; ऍन्ऱाळ्–बोली। २५६

यह सुनकर तारा ने उत्तर दिया। राजा ! बात ठीक नहीं है। हमारे निकट के स्नेहियों ने कोई बात कही है। श्रीराम नाम के कोई सुग्रीव के प्राणप्यारे मित्र बनकर आपके प्राण हरने के लिए उसके साथ इधर आये हैं। २५६

❀ कुळैत्तवल्	लिरुविनैक्	कूरु	काण्गिला
दळैत्तय	रुलहिनुक्	करत्ति	नाॅलाम्
इळैत्तवऱ्	कियल्बल	वियम्बि	यॅन्शॆय्दाय्
पिळैत्तनै	पावियुन्	पॅण्मै	यालॅन्ऱान् 257

पावि–पापिनी; कुळैत्तत–संकटदायी; वल् इरु विनैक्कु–बलवान दोनों कर्मों (पाप, पुण्य) का; ऊऱु–नाश; काण्किलातु–(उपाय) न देखकर; अळैत्तु–बुलाते हुए; अयर्–दुःखी; उलकिनुक्कु–लोकवासियों को; अऱत्तिन् आऱु ऍलाम्–धर्म के मार्ग सब; इळैत्तवऱ्कु–अपने चरित्र से सिखाया जिन्होंने, उन श्रीराम के लिए; इयल्पु अल–अनुपयुक्त; इयम्पि–कहकर; ऍन् चॆय्ताय्–क्या ही (अपचार) किया है; उन् पॆण्मैयाल्–अपनी स्त्री-बुद्धि के कारण; पिळैत्तनै–अपराध किया (या बच गयीं); ऍन्ऱान्–वाली ने कहा। २५७

(वाली को श्रीराम का नाम सुनकर क्रोध आ गया। क्षुब्ध भी हुआ।) वाली बोला— पापिनी ! (क्या बात करती हो ? श्रीराम कौन हैं, जानती हो?) पूर्वकर्म, पाप और पुण्य, दोनों मनुष्यों को निरन्तर सताते है। उनका अन्त न पाकर जीव छटपटाते हैं। निवारण का कोई उपाय न देखकर वे श्रीराम को बुलाते हैं, तो वे आकर जीवों को धर्म के मार्ग सब अपने आचरणों द्वारा बताते हैं। ऐसे श्रीराम के सम्बन्ध में अनुचित

बातें कहती हो ! यह बड़ा अपचार है ! तुम स्त्री हो ! इसीलिए तुमने यह अपराध किया है ('पिऴैत्तल्' का दूसरा अर्थ 'जीवित बच जाना' है !)। २५७

❀ इरुमैयु नोक्कुरु मियल्पि नाऱ्किङ्
पॆरुमैयो वीङ्गिदिऱ् पॆऱुव दॆन्गोलो
अरुमैयि निन्ऱुयि रळिक्कु माऱुडैत्
तरुममे तविर्क्कुमो तन्नैत् तानरो 258

इरुमैयुम्–(पूर्व, अपर) दोनों पक्षों को; नोक्कुरुम्–सोच-देखनेवाले; इयल्पि–नाऱ्क्कु–स्वभाव वाले श्रीराम के लिए; इतु पॆरुमैयो–यह (काम) गौरव है क्या; इङ्कु–यहाँ; इतिल्–इस (मित्रता) में; पॆऱुवतु–लाभ; ऎन्न कोलो–क्या है; अरुमैयिन् निन्ऱु–दुर्लभ रहकर; उयिर अळिक्कुम्–जीवों की रक्षा करने का; आऱु उटै–कार्यकारी; तरुममे–धर्म स्वयं; तन्नै तान्–अपने आप को; तविर्क्कुमो–नष्ट कर लेगा क्या। २५८

वाली आगे बोला। श्रीराम निष्पक्ष दोनों ओर ध्यान देनेवाले स्वभाव के हैं। उनके लिए यह काम गौरवदायी है क्या ? और भी इससे उनको मिलेगा भी क्या ? धर्म दुर्गम है और जीवरक्षण का सामर्थ्य रखता है। क्या वह स्वयं अपना नाश करा लेगा ? । २५८

❀ एऱ्ऱपे रुलहॆला मॆय्दि यीन्ऱवळ्
माऱ्ऱव ळेवमऱ् ऱवडन् मैन्दनुक्
काऱ्ऱरु मुवहैया लळित्त वैयनैप्
पोऱ्ऱलै यिन्नन पुहऱ्ऱ पालैयो 259

एऱ्ऱ–(पिता द्वारा) भरण किये हुए; पेर् उलकु ऎलाम्–विशाल लोक (राज्य-अधिकार) सब; ऎय्ति–प्राप्त करके; ईन्ऱवळ्–जननी की; माऱ्ऱवळ्–सौत के; एव–आज्ञा देने पर; मऱ्ऱु–फिर; अवळ् तन् मैन्तनुक्कु–उनके पुत्र को; आऱ्ऱु अरुम्–(अन्यों द्वारा) करने में असाध्य; उवकैयाल्–सन्तोष के साथ; अळित्त–जिन्होंने दिया; ऐयनै–उन प्रभु को; पोऱ्ऱलै–नहीं सराहा; इन्नन–ऐसी (निन्दा की) बातें; पुकलल् पालैयो–कह सकोगी क्या। २५९

अपने पिता के भरण में रहे सारे लोकों का अधिकार पाकर भी उन्होंने अपनी विमाता के कहने पर उसे उनके पुत्र के हाथ में असाध्य प्रेम के साथ सौंप दिया। ऐसे महान पुरुष की सराहना नहीं करती पर ऐसी निन्दा की बातें करोगी ! । २५९

❀ निन्ऱपे रुलहॆला नॆरुङ्गि नेरिनुम्
वॆन्ऱिवॆञ् जिलैयलाऱ् पिऱिदुम् वेण्डुमो
तन्ऱुणै यॊरुवरुन् दन्निल् वेऱिलान्
पुन्ऱॊऴिऱ् कुरङ्गॊडु पुणरु नट्पॆनो 260

निऩ्ऱ–स्थायी; पेर् उलकु ॲलाम्–बड़े-बड़े सभी लोक; नॆरुङ्कि–मिलकर; नेरितुम्–लड़ें तो भी; वॆऩ्ऱि–विजयदायी; वॆम्–भयंकर; चिलै अलाल्–धनु को छोड़कर; पिऱितुम्–अन्य सहायता भी; वेण्टुमो–उन्हें चाहिए क्या; तऩ् तुणै–अपने सदृश; तऩ्तिल्–अपने से; वेऱु ऒरुवरुम्–अन्य कोई; इलाऩ्–नहीं ऐसे (श्रीराम); पुल् तॊऴिल्–अल्पकृत; कुरङ्कोटु–वानर के साथ; पुणरुम् नट्पु–करे, ऐसी मित्रता; ॲतो–क्यों। २६०

ये लोक, जो युग-युग से रहते हैं, सभी मिलकर उनका सामना करें तो भी अपने एक कोदण्ड के सिवा किसी और (चीज़) की सहायता लेनेवाले वे नही हैं। उनकी बराबरी का और कोई नहीं रहता। ऐसे वे अल्पकर्मी वानर के साथ मित्रता क्यों बना लेंगे ? । २६०

❀ तम्बिय रल्लदु तनक्कु वेऱुयिर्
इम्बरि निल्लॆन वॆण्णि येयुन्दवन्
ॲम्बियुम् यानुमुऱ् ऱॆदिरन्द पोरिनिल्
अम्बिडै तॊडुक्कुमो वरुळि नाऴियान् 261

तम्पियर् अल्लतु–छोटे भाइयों के सिवा; तनक्कु–अपने; वेऱु उयिर्–अलग प्राण; इम्परिल्–इस लोक में; इल्–नहीं; ॲन–ऐसा; ॲण्णि–सोचकर; एयुन्तवन्–उनसे मिलकर रहनेवाले; अरुळिन् आऴियान्–करुणासागर; ॲम्पियुम् यानुम्–मैं और मेरा भाई; उऱ्ऱु ॲतिर्न्त–(जिसमें) लगे लड़ते हैं; पोरिनिल्–(उस) लड़ाई में; इटै–बीच में आकर; अम्पु तॊटुक्कुमो–बाण चलायँगे क्या। २६१

वे ऐसे हैं जिनके इस लोक में अपने अनुजों के अलावा प्राण हैं ही नहीं। और जो उनसे हेल-मेल के साथ रहते हैं। वे करुणासागर हैं। ऐसे वे क्या उस युद्ध में बीच में आकर बाण चलायेंगे, जिसमें मैं और मेरे भाई भिड़ रहे हैं ? । २६१

❀ इरुत्तिनी यिऱैयिव णिमैप्पिल् कालैयिल्
उरुत्तुयिर् कुडित्तव नुडऩ्वन् दारैयुम्
करुत्तऴित् तॆय्दुवॆऩ् कलङ्ग लॆऩ्ऱनन्
विरैक्कुऴल् पिऩ्ऩुरै विळम्ब वञ्जिनाळ् 262

नी–तुम; इऱै–कुछ देर; इवण् इरुत्ति–ठहरो; इमैप्पु इल्–पलक भी न मारो; कालैयिल्–उस समय के अन्दर; उरुत्तु–कोप दिखाकर; उयिर् कुटित्तु–प्राण पीकर; अवन् उटन् वन्तारैयुम्–उसके साथ आये हुओं को भी; करुत्तु अऴित्तु–विफल-मनोरथ करके; ॲय्तुवॆन्–लौट आऊँगा; कलङ्कल्–क्षुब्धमत हो; ॲन्ऱनन्–कहा; विरै कुऴल्–सुगन्धित केश वाली; पिन्–आगे; उरै विळम्प–बात करने से; अञ्चिताळ्–डरी। २६२

तुम थोड़ी देर यहीं ठहरो। पलक भी न मार सको उतनी देर के अन्दर मैं कोप करके सुग्रीव को मार डालूँगा। और उसके साथ आये हुओं का

मनोरथ विफल करके लौट आ जाऊँगा। तुम मत घबड़ाओ। वाली ने धीरज दिया। आगे सुगन्धित केशिनी तारा कुछ न बोली। वह कुछ कहने से डरती थी। २६२

ऑल्लैच् चॅरुवेट् टुयर्वन्पुय वोङ्ग लुम्बर्
ॲल्लैक्कु मप्पा लिवर्हिन्ऱ विरण्डि ऩोडुम्
मल्लऱ् किरियिन् ऱलैवन्दनन् वालि कीऴ्पाल्
तॊल्लैक् किरियिन् ऱलैतोन्ऱिय ञायि ऱॆन्ऩ 263

वालि—वाली; ऑल्लै—जल्दी; चॅरु वेट्टु—युद्ध करना चाहकर; उयर्—फूल उठनेवाले; उम्पर् ॲल्लैक्कुम्—स्वर्ग की सीमा के पार भी; इवर्किन्ऱ—उन्नत; वन् पुय—बलवान भुजा रूपी; ओङ्कल्—पर्वत; इरण्टितोट्टुम्—दो के साथ; कीऴ् पाल्—पूर्व दिशा में; तॊल्लै किरियिन् तलै—प्राचीन (उदय-)गिरि के शिखर पर; तोन्ऱिय—प्रकट; ञायिऱु ॲन्न—सूर्य के समान; मल्लल् किरियिन् तलै—वैभवयुक्त गिरि के ऊपर; वन्दनन्—आया। २६३

वाली को युद्ध प्यारा था। उसके बारे में सोचते ही उसके कंधे फूल उठे। वे देवों के लोकों के पार भी उन्नत हुए। पूर्व दिशा की प्राचीन उदयगिरि पर प्रकट होनेवाले सूर्य के समान वाली अपने दोनों उन्नत भुजाओं के साथ शोभता हुआ वैभवपूर्ण उस गिरि पर आया। २६३

निन्ऱा ऩॆदिर्या वरुनॆञ्ज नडुङ्गि यञ्जत्
तन्ऱोळ् वलियाऱ् ऱहैमाल्वरै शालुम् वालि
कुन्ऱू डुवन्दुऱ् ऱनन्गो ळवुणन् कुऱित्त
वन्ऱू णिडैत्तोन् ऱियमानर शिङ्ग मॆन्न 264

तन् तोळ् वलियाल्—अपने भुजबल से; तकै माल् वरै—शालीन बड़े (मेरु) पर्वत की; चालुम्—समता करनेवाला (वाली); कोळ् अवुणन् कुऱित्त—नृशंस राक्षस (हिरण्यकशिपु) द्वारा निर्दिष्ट; वल् तूण् इटै—कठोर खम्भे से; तोन्ऱिय—प्रकट; मा—माननीय; नरचिङ्कम् ॲन्न—नृसिंह के समान; ऍतिर् यावरुम्—सामने (आये) सभी को; नॆञ्चम् नटुङ्कि—दिल दहलकर; अञ्च—भयभीत होने को विवश करते हुए; कुन्ऱु ऊटु वन्तु—पर्वत से होकर आया और; निन्ऱान्—स्थित रहा। २६४

वाली अपने भुजबल में बड़े और श्रेष्ठ मेरुपर्वत से तुल्य था। जब क्रूर राक्षस हिरण्यकशिपु ने खम्भे का निर्देश किया (और प्रह्लाद को ललकारा कि तेरा हरि इसमें है क्या ?) तब उस कठोर स्तम्भ के मध्य से नृसिंह प्रकट हुए। उन्हीं नृसिंह-मूर्ति के समान वाली सामने आये सभी के मन में भय भरते हुए गिरियों की घाटियों से होता हुआ आया और खड़ा रहा। २६४

आर्क्किन्ऱ पिन्नोन् ऱनैनोक्किनन् ऱानु मार्त्तान्
वेर्क्किन्ऱ वानत् तुरुमेऱ् वॆरित्तु वीऴ्प्

पोर्क्किन्ऱ वॆल्ला वुलहुम्बॊदिर् वुऱ्ऱ पूशल्
कार्क्कुन्ऱ मन्ना निलन्दाविय कालि नॆन्न 265

आर्क्किन्ऱ-गर्जन करनेवाले; पिन्तोन् तनै-अनुज को; नोक्किनन्-देखकर; तानुम् आर्त्तान्-उसने भी नारे लगाये; वेर्क्किन्ऱ-स्वेदयुक्त; वानत्तु-आकाश के; उरुम् एऱु-वज्रराज; वॆरितु-तनकर; वीळ-गिरें, ऐसे; कार्कुन्ऱम् अन्नान्-काले मेघ-सम महाविष्णु के; निलम् ताविय-लोकमापक; कालिन् अन्न-श्रीचरणों के समान; पूचल्-उनके घोष; पोर्क्किन्ऱ-(भू को) आवृत रहनेवाले; ऎल्ला उलकुम्-सारे लोकों में; पोतिर्वु उऱ्ऱ-भर गये। २६५

उसने अपने गर्जन करनेवाले अनुज को देखा। उसने भी मारू नारे लगाये। उस दिन काले मेघतुल्य महाविष्णु के श्रीचरण सब जगह फैले। तब स्वेदयुक्त आकाश के वज्रसमूह भी भय से नीचे चू पड़े। उन्हीं श्रीचरणों के समान वाली और सुग्रीव के घोषों का शब्द सब लोकों में व्याप्त हुआ। २६५

अव्वेलै यिराम नुमन्बुडैत् तम्बिक् कैय
शॆव्वे शॆलनोक् कुदितानवर् देवर् निऱ्क
ऎव्वेलै यॆम्मेरु वॆक्कालॊडॆक् काल वॆन्दी
वॆव्वे ऱुलहत् तिवर्मेनियै मानु मॆन्ऱान् 266

अ वेलै-तब; इरामनुम्-श्रीराम भी; अन्पु उटै-प्यारे; तम्पिक्कु-अपने छोटे भाई से; ऐय-सुन्दर भाई; चॆव्वे चॆल-खूब ध्यान देकर; नोक्कुति-देखो; तानवर् तेवर् निऱ्क-दानव और देव एक ओर रहें; वॆव्वेऱु उलकत्तिन्-पृथक्-पृथक् रहनेवाले लोकों में; ऎ वेलै-कौन सा सागर; ऎ मेरु-कौन सा मेरु; ऎ काल् ओटु-कौन से पवन के साथ; ऎ काल वॆम् ती-कौन सी प्रलयकालीन नाशकारी आग; इवर् मेनियै-इनके शरीर की; मानुम्-समता करेगी। २६६

(श्रीराम को वाली और सुग्रीव के रूप को देखकर विस्मय हुआ।) श्रीराम अपने प्यारे भाई से बोले। सुन्दर भाई! ध्यान देकर निहारो। देव और दानव एक ओर रहें! पृथक्-पृथक् रहनेवाले इन लोकों में कौन सा सागर, कौन सा मेरु, पवन या कालानल —इनके रूप और आकार की समता कर सकेगा?। २६६

वळ्ळऱ् किळैयान् पहर्वानिवन् ऱन्मुन् वाणाळ्
कॊळ्ळक् कॊडुङ् गूऱ्ऱुवनैक् कॊणर्न् दान्कुरङ्गिन्
ऎळ्ळऱ् कुरुम्बोर् शॆयवॆय्दिनॆ मॆन्नु मिन्नल्
उळ्ळत्ति नून्ऱ वुणर्वुऱ्ऱिलॆ नॊन्ऱु मॆन्ऱान् 267

वळ्ळऱ्कु इळैयान्-दानी प्रभु के अनुज; पकर्वान्-कहते; इवन्-यह सुग्रीव; तन् मुन्-अपने ज्येष्ठ भ्राता की; वाळ् नाळ् कॊळ्ळ-आयु हरने के लिए; कॊटुम् कूऱ्ऱुवनै-क्रूर यम को; कॊणर्न्तान्-यहाँ लाया है; कुरङ्किन्-वानरों से;

ऍळ्ळऱ्कु उऱुम्–निन्द्य; पोर् चॅय–युद्ध करने; ऍय्तिनॅम्–आये हैं; ऍऩ्ऩुम्–इसका; इऩ्ऩल्–दुःख; उळ्ळत्तिऩ्–चित्त में; ऊऩ्ऱ–गड़ गया, इसलिए; ऒऩ्ऱुम्–कुछ भी; उणर्वु उऱ्ऱिलॅऩ्–सोच नहीं पाता; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २६७

यह सुनकर वदान्य श्रीराम के अनुज ने कहा कि यह अपने ज्येष्ठ भाई को शत्रु मानकर उसकी आयु को हरने के निमित्त भयंकर यम को इधर लाया है! वानरों के साथ, गर्हण योग्य युद्ध करने के लिए हम भी आये हैं। यह दुःख मेरे चित्त में गड़ा हुआ है। अतः मैं कुछ सोच नहीं पाता। २६७

आऱ्ऱाडु पिऩ्ऩुम् पहर्वाऩऱत् ताऱ ऴुङ्गत्
तेऱ्ऱाडु शॅय्वार् हळैत्तेऱुदल् शॆव्वि दऩ्ऱाल्
माऱ्ऱा नॅनत्तऩ् मुऩैक्कॊल्लिय वन्दु निऩ्ऱाऩ्
वेऱ्ऱार्ह डिऱत्ति वऩ्ऱञ्जमॆऩ् वीर वॆऩ्ऱाऩ् 268

आऱ्ऱातु–शोक न सह सककर; पिऩ्ऩुम्–और भी; पकर्वाऩ्–कहते; वीर–वीर; अऱत्तु आऱु–धर्म का मार्ग; अऴुङ्क–नष्ट करते हुए; तेऱ्ऱातु–विवेचन न करके; चॅय्वार्कळै–(बुरे काम) करनेवालों को; तॆऱुतल्–(मित्र) समझना; चॆव्वितु अऩ्ऱु–ठीक नहीं होगा; तऩ् मुऩै–अपने ज्येष्ठ को; माऱ्ऱाऩ् ऍन–शत्रु कहकर; कॊल्लिय–मारने के लिए; वन्तु निऩ्ऱाऩ्–आकर खड़ा है; वेऱ्ऱार्कळ् तिऱत्तु–परायों के प्रति; इवऩ् तञ्चम्–इसका शरण्यभाव; ऍऩ्–कैसा होगा; ऍऩ्ऱाऩ्–(लक्ष्मण) बोले। २६८

लक्ष्मण के लिए यह क्षोभ असहनीय रहा। अपने को शान्त बना नहीं सके। वे आगे बोले— वीर भ्राता! धर्ममार्ग नष्ट करके अविवेकी कार्य करनेवालों को सहायक चुन लेना श्लाघनीय काम नहीं है। यह अपने ज्येष्ठ भ्राता को शत्रु मानकर उसे मारने के निमित्त आ खड़ा है। परायों के प्रति इसका शरण्यभाव कौन सा मूल्य रखेगा? (सर्वशरण्य श्रीराम के सामने सुग्रीव को श्रीराम का शरण्य मानना खलता है। अतः 'तञ्चम्' का अर्थ 'इसका शरण में आना और आपका मानना' —किया जाता है। तब 'परायों के प्रति' —अर्थ नहीं होगा 'पराये हमारी' यह अर्थ होगा।)। २६८

अत्ता विदुहे ळॆऩवारियऩ् कूऱु वाऩिप्
पित्ताय विलङ्गि ऩॊळुक्किनैप् पेश लामो
ऍत्तायर् वयिऱ्ऱि नुम्बिऩ्पिऱन् दोर्ह ळॆल्लाम्
ऒत्ताऱ् परदऩ् पॆरिदुत्तम ऩाद लुण्डो 269

अत्ता–तात; इतु केळ्–यह सुनो; ऍऩ–ऐसा; आरियऩ्–महिमावान श्रीराम; कूऱुवाऩ्–बोलने लगे; पित्तु आय–पागल; इ विलङ्कित्–इस मृगप्राय के; ऒऴुक्कितै–चरित्र को; पेचल् आमो–चर्चा योग्य मानेंगे क्या; ऍ तायर्–

किसी भी माता को; वयिर्ट्रितुम्–कोख में; पिन् पिर्न्तोर्कळ्–अनुज के रूप में उत्पन्न; ॲल्लाम्–सभी को; ऑत्ताल्–तुलना करें तो; परतन्–भरत के समान; पॅरितु उत्तमन्–बहुत श्रेष्ठ; आतल्–बननेवाले; उण्टो–कोई हैं क्या। २६९

तब महिमावान श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि तात! यह सुनो। ये पागल और मृगप्राय हैं। उनके चरित्र चर्चा के विषय बन सकेंगे क्या? (नहीं।) (किसी भी माता से उत्पन्न अनुज जब अपने अग्रजों से हेल-मेल के साथ रहें तो भरत बहुत उत्तम माना जायगा क्या? —यह सीधा अर्थ लगता है। पर हेय लगता है। इसलिए यह अर्थ किया गया है—) अगर किसी भी माता से उत्पन्न सभी अनुजों की भरत से तुलना की जाय तो भरत के समान उत्तम कोई पाया जायगा क्या? । २६९

विऱ्ऱाङ्गु वॅऱ्पन् नविलङ्गॉळिऱ् ऱोळ मॅय्म्मै
उऱ्ऱार् शिलरल् लवरेपल रॅन्ब दुण्मै
पॅऱ्ऱा रुळैप्पॅऱ् ऱपयन्पॅऱुम् पॅऱ्ऱि यल्लाल्
अऱ्ऱार् नवैयॅन् ऱलुक्काहुन रार्हॊ लॅन्ऱान् 270

विल् ताङ्कु–धनु धारण करनेवाले; वॅऱ्पु अन्न–पर्वत-सम; इलङ्कु–वर्तमान; ऑळिल्–सुन्दर; तोळ–भुजा वाले; मॅय्म्मै उऱ्ऱार्–सचमुच बड़प्पन के रखनेवाले; चिलर्–थोड़े हैं; अल्लवरे–जो नहीं; पलर्–वे अनेक है; ॲन्पतु–यह मसल; उण्मै–सत्य है; पॅऱ्ऱार् उळै–(मित्र-रूप में) प्राप्त लोगों के पास; पॅऱ्ऱ पयन्–प्रापनीय हित की; पॅऱुम्–प्राप्त; पॅऱ्ऱि अल्लाल्–उपलब्धि के सिवा; नवै अऱ्ऱार्–दोषरहित हैं; ॲन्ऱलुक्कु–ऐसा कहने योग्य; आकुतर्–बननेवाले; आर् कॉल्–कौन हैं; ॲन्ऱान्–कहा। २७०

धनुर्धारी पर्वततुल्य सुन्दर भुजा वाले! दुनिया में सच्चे (श्रेष्ठ आचरणशील) मनुष्य कम हैं। इसके विपरीत रहनेवाले ही अधिक संख्या में हैं। यह मसल सत्य है। मित्र के पास प्राप्य हित जो होगा उसे लेना है। वही लाभ है। उसे छोड़कर दोष देखना आरम्भ करो तो दोषहीन कहलाने योग्य कौन हैं इस संसार में? । २७०

वीरत् तिऱलो रिवरिन्न विळम्बुम् वेलै
तेरिऱ् ऱिरिवान् महनिन्दिरन् शॅम्म लॅन्ऱिप्
पारिऱ् ऱिरियुम् बनिमाल्वरै यन्न पण्बार्
मूरित् तिशैया नैयिरण्डॅन्न मुट्टि नारे 271

वीरम् तिऱलोर् इवर्–वीर और बलिष्ठ ये; इन्न विळम्पुम् वेलै–जब ऐसा बोलते रहे, तब; तेरिल् तिरिवान्–रथचारी; मकन्–(सूर्य का) पुत्र; इन्तिरन् चॅम्मल्–इन्द्र का पुत्र; ॲन्ऱु–कहलानेवाले; इ पारिल्–इस भूमि पर; तिरियुम्–संचार करते हुए; पनिमाल् वरै–हिमाच्छादित बड़े पर्वतों के-से; पण्पार्–रूप वाले; मूरि–बलवान; तिचै यानै–दिग्गज; इरण्टु–दो; ॲन्न–जैसे; मुट्टिनार्–आपस में भिड़े। २७१

ये दोनों बलिष्ठ वीर आपस में ऐसी बातें कर रहे थे। तब रथचारी सूर्य का पुत्र सुग्रीव और इन्द्र का पुत्र वाली दोनों भूतल पर संचार करनेवाले हिमपर्वत के समान दिखते हुए दो बलवान दिग्गजों के समान आपस में भिड़े। २७१

कुन्ऱोडु कुन्ऱॊत् ततर्कोळरि कॊऱ्ऱ वल्ले
ऱॊन्ऱोडु शॆन्ऱॊन् ऱॆदिरुऱ्ऱन वेयु मॊत्तार्
निन्ऱार् तिरिन्दार् नॆडुञ्जारि निलन्दि रिन्द
वन्ऱोट् कुयवन् ऱिरिमट्कलत् ताळि यॆन्न 272

कुन्ऱु ऒटु–पर्वत के साथ; कुन्ऱु–पर्वत (टकराता हो); ऒत्तनर्–ऐसे रहे; कॊऱ्ऱ–विजयी; वल्–बलिष्ठ; एऱु कोळरि–(नर) सिंह; ऒन्ऱोटु ऒन्ऱु–परस्पर; ऎतिर् चॆन्ऱु–सामने आकर; उऱ्ऱनवेयुम्–भिड़ने लगे; ऒत्तार्–ऐसे; निन्ऱार्–रहते हुए; नॆटुम् चारि–(दायें और बायें) दूर-दूर तक चक्कर लगाये; वल् तोळ्–बलवान कन्धों के; कुयवन् तिरि–कुम्हार के घुमाये हुए; मण् कलत्तु–मिट्टी के बर्तन बनाने के; आळि अन्न–चक्र के समान; निलम्–भूमि (के जीव) तिरिन्त–डगमगायी (अस्त-व्यस्त हुए)। २७२

दो पर्वत टकराते जैसे, विजयी, ताकतवर दो सिंह आपस में भिड़ते जैसे दोनों दायें और बायें घूमे। तब बलवान कन्धों के कुलाल से घुमाए हुए मृत्पात्र के समान भूमि चक्रित हुई। भूमि के वासी डगमगा गये। २७२

तोळोडु तोडेयुत् तलिऱ्ऱॊन्निलन् दाङ्ग लाऱ्ऱात्
ताळोडु ताडेयुत् तलिऱ्ऱनद तळऱ्पि ऱङ्गल्
वाळोडु मिन्नो डुवपोनॆडु वानि नोडुम्
कोळोडु कोळुऱ् ऱनवॊत्तडर्त् तार्हॊ दित्तार् 273

तोळ् ऒटु–(एक के) कन्धे के साथ; तोळ् तेयत्तलिल्–(दूसरे का) कन्धा टकराता तो; तॊल् निलम्–पुरातन भूमि; ताङ्कल् आऱ्ऱा–सहन कर नहीं सके, ऐसा; ताळ् ऒटु ताळ्–पैर से पैर; तेयत्तलिल्–टकराता, इस कारण; तन्त–उत्पन्न; तळल् पिऱङ्कल्–अग्निपुंज; वाळ् ऒटु–प्रकाश के साथ; मिन् ओटुव पोल्–विद्युत चलती जैसे; नॆटु वानिन्–विशाल गगन में; ओटुम्–सवेग चलनेवाले; कोळ् ओटु कोळ्–ग्रह के साथ ग्रह; उऱ्ऱन ऒत्तु–टकराते जैसे; कॊतित्तार्–उबले; अटर्न्तार्–लड़े। २७३

उनके कन्धे भिड़े। पुरातन भूमि को भी असह्यता का अनुभव दिलाते हुए उनके पैर आपस में टकराये। तब अग्नि का पुंज उठा। वह विस्तृत आकाश में बिजली के समान सवेग व्याप चला। वे दो ग्रहों के समान आपस में बहुत क्रोध के साथ लड़े। २७३

तन्दोळ् वलिमिक् कवर्तामॊरु ताय्व यिऱ्ऱित्
वन्दोर् मडमङ् गैपॊरुट्टु मलैद लुऱ्ऱार्
शिन्दो डरियुण्कट् टिलोत्तमै कादऱ् चॆऱ्ऱ
सुन्दोब सुन्दप् पॆयर्त्तॊल्लैयि नोरु मॊत्तार् 274

तम् तोळ् वलि-(अपने) अपने भुजबल में; मिक्कवर्-बढ़े हुए; ताम ऑरु ताय् वयिऱ्ऱित्-दोनों एक ही माता की कोख से; वन्तोर्-जनित; मट मङ्कै पॊरुट्टु-एक बाला स्त्री के कारण; मलैतल् उऱ्ऱार्-गुथने लगे, वे; चिन्तु ओट्टु-सिंधु को हराने (भगाने) वाले; अरि-लाल डोरों से युक्त; उण् कण्-अंजनयुक्त; नेत्रों वाली; तिलोत्तमै-तिलोत्तमा के; कातल्-प्रेम के कारण; चॆऱ्ऱ-जो लड़े; चुन्त उपचुन्त पॆयर्-सुन्द-उपसुन्द नाम के; तॊल्लैयित्तोरुम्-प्राचीन राक्षसों की भी; ऑत्तार्-समानता करते थे। २७४

वे दोनों भुजबल में बढ़े हुए थे। दोनों एक ही माता की कोख से जने थे। अब वे एक बाला स्त्री (रूमा) के निमित्त लड़ते हुए सुन्द-उपसुन्द के समान दिखे, जो लाल डोरों से युक्त और अंजनभूषित आँखों वाली तिलोत्तमा के निमित्त आपस में लड़े थे। (इसका वृत्तान्त यों है— ये दोनों हिरण्यकशिपु के वंश में आये दानव थे। वे लोकों को बहुत त्रस्त करते थे। महाविष्णु ने विश्वकर्मा द्वारा तिलोत्तमा नाम की अप्सरा को सृष्ट कर इनके पास भेजा। ये दोनों उस पर आसक्त हुए। तिलोत्तमा ने कहा कि मैं तुम दोनों में श्रेष्ठतर वलशाली से विवाह कर लूँगी। दोनों आपस में लड़कर मर गये।)। २७४

कडलॊन् ऱिऩॊडॊन् ऱुमलैक्कवुङ् गावन् मेरुत्
तिडलॊन् ऱिनॊडॊन् ऱमर्शॆय्यवुञ् जीऱ्ऱ मॆन्ब
दुडलॆय्दि यिरण्डाहि युडऱ्ऱवुङ् गण्डि लादेम्
मिडलिङ् गिवर्वॆन् दॊऴिऱ्कॊप्पन वेऱु काणेम् 275

कटल् ऑन्ऱिन् ऑट्टु ऑन्ऱु-एक समुद्र दूसरे समुद्र के साथ; मलैक्कवुम्-टकराये; कावल्-भूमि का रक्षक; मेरु तिटल्-मेरुपर्वत; ऑन्ऱिनॊट्टु ऑन्ऱु-(दो भाग बनकर) आपस में; अमर् चॆय्यवुम्-लड़े; चीऱ्ऱम् ऎन्पतु-कोप नाम का गुण; इरण्टाकि-दो भागों में बँटकर; उटल् कॊण्टु-(मानव-) शरीर लेकर; उटऱ्ऱवुम्-एक दूसरे को सताएँ; कण्टिलातेम्-नहीं देखा, ऐसे हम; इङ्कु-यहाँ; इवर्-इनके; मिटल् वॆम् तॊऴिऱ्कु-कठोर साहसपूर्ण युद्धकृत्य की; ऑप्पन-समता करनेवाले; वेऱु काणेम्-कुछ नहीं देखते। २७५

हमने दो समुद्रों को आपस में टकराता नहीं देखा है। मेरुपर्वत का दो भाग बनकर आपस में भिड़ना नहीं देखा है। न ही कोप को दो भागों में बँटकर परस्पर गुँथते देखा है। और इन साहसी वीरों के युद्धकार्य की उपमाएँ भी नहीं देखते। २७५

ऊहङ् गळिना यहर्वॆङ्ग णुमिऴ्न्द तीयाल्
मेहङ् गळ्करिन् दन्वॆऱ्पु मॆरिन्द तिक्किन्
नाहङ् गणडुङ् गिऩ्ऩानिल मुङ्गु लॆन्द
माहङ् गळैनण्णिय विण्णवर् पोय्म ऱैन्दार् 276

ऊकङ्कळिऩ्–वानरों के; नायकर्–नायकों की; वॆम् कण्–उग्र आँखों की; उमिऴ्न्त–उगली; तीयाल्–आग से; मेकङ्कळ् करिन्तत–मेघ झुलस गये; वॆऱ्पुम् ऎरिन्त–पर्वत जल गये; तिक्किऩ्–दिशाओं के; नाकङ्कळ्–हाथी; नटुङ्कित–काँप उठे; नाऩिलमुम्–चतुर्विधा भूमि भी; कुलैन्त–अस्त-व्यस्त हुए; माकङ्कळै–आकाशलोकों में; नण्णिय–वास करनेवाले; विण्णवर्–स्वर्गवासी; पोय् मऱैन्तार्–(कहीं) जाकर छिप गए। २७६

उन वानरनायकों की भयानक आँखों से जो आग निकली, उससे मेघ झुलस गये। पर्वत जल गये। दिग्गज काँपे। चतुर्विधा भूमि थर्रायी। आकाशवासी देव कहीं जाकर छिप गये। २७६

विण्मे लिनरो नॆडुवॆऱ्पिन् मुहट्टि नारो
मण्मे लित्तरो पुऱमादिर वीदि यारो
कण्मे लिनरो वॆनयावरुङ् गाण निन्ऱार्
पुण्मे लिरत्तम् पॊडिप्पक्कडिप् पाऱ्पु डैप्पार् 277

विण् मेलिऩरो–व्योम के ऊपर के हैं; नॆट्टु वॆऱ्पिऩ्–बड़े पर्वत के; मुकट्टिऩारो–शिखर के हैं; मण् मेलित्तरो–भूतल के हैं; पुऱम्–बाह्य; मातिरम्–दिशाओं की; वीतियारो–वीथियों के हैं; कण् मेलितरो–(हमारे) दृष्टिपथ के हैं; ऎऩ–ऐसा; यावरुम्–सबके; काण–दृष्टिगोचर होते हुए; निऩ्ऱार्–(घूमते) रहनेवाले; पुण् मेल्–व्रणों पर; इरत्तम्–रक्त; पॊदिप्प–ढलकाते; कटिप्पार्–काटते; पुडैप्पार्–पीटते (लड़ते)। २७७

सभी जगह रहनेवालों ने उन्हें अपने-अपने स्थान पर देखा। तो यह सन्देह उठा कि क्या वे आकाश में रहकर लड़ रहे हैं? या बड़े पर्वत के शिखर पर? या भूमि पर? या अण्ड के बाहर की वीथियों पर? या हमारी ही दृष्टि के पथ में रहकर लड़ रहे हैं? ऐसा लड़ते हुए उन्होंने परस्पर एक दूसरे को काटा और पीटा। तब गम्भीर व्रण हुए और उन पर रक्त ढलक आया। २७७

एऴोत् तुलहन् दिशैयॆट्टॊ डिरण्डु मुट्टि
आऴिक् किळरार् कलिक्कैम्मडङ् गार्प्पि नोदै
पाऴित् तडन्दो ळिनमार्बिनुङ् गैहळ् पाय
ऊऴिक् किळर्हा रिडियोत्तदु कुत्तु मोदै 278

आर्प्पिऩ् ओतै–उनके गर्जन का स्वर; उलकम् एऴ्–सातों लोकों में; ऒत्तु–जैसे; तिचै–दिशाओं; ऎट्टु ओटु इरण्टुम्–आठ और दो (दस) में; मुट्टि–जा

टकराकर; आऴि किळर्–समुद्र की उमड़ से; आर् कलिक्कु–उत्पन्न उच्च स्वर से; ऐमूमटङ्कु–पाँच गुना (अधिक था); पाऴि–सारयुक्त; तटम् तोळितुम्–विशाल कन्धों पर; मार्पितुम्–वक्ष पर; कैकळ् पाय–हाथों को चलाते हुए; कुत्तुम् ओतै–घूँसा मारने से उत्पन्न ध्वनि; ऊऴि किळर्–युगान्त में उठनेवाले; कार् इटि–मेघों के गर्जन; ओत्ततु–के समान थी। २७८

उन्होंने नारे लगाये। गर्जन किया। वह स्वर सातों लोकों में व्याप्त हुआ। वैसे ही वह आठों दिगन्तों से जा टकराया। उमड़नेवाले सागर की ध्वनि से वह स्वर पाँच गुना अधिक था। हाथ चलाकर उन्होंने आपस में कन्धों पर और वृक्षों पर घूँसा मारा। वह स्वर युगान्त में घुमड़नेवाले बादलों के वज्र के समान था। २७८

वॅव्वा यॅयिऱ्ऱाल् मिडल्वीरर् कडिप्प मीच्चॅन्
ऱव्वा यॅऴुशो रिहळाशैह डोऱुम् वीश
अॅव्वा युमॅऴुन् दहॊळुञ्जुडर् मीन्गळ् यावुम्
शॅव्वा यॅनिहर्त् तन्नशॅक्करै यॊत्त मेहम् 279

मिटल् वीरर्–बलिष्ठ वीरों के; वाय् वॅम् ऍयिऱ्ऱाल्–अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से; कटिप्प–काटने से; अ वाय्–उन मुखों से; ऍऴु–निकलनेवाला; चोरि–रक्त; मी चॅन्ऱु–ऊपर जाकर; आचैकळ् तोऱुम्–दिशा-दिशा में; वीच–व्याप्त हुआ, तब; ऍ वायुम्–कहीं भी; ऍऴुन्त–उदित; कॊऴुम् चुटर्–विपुल कान्ति के; मीन्कळ् यावुम्–नक्षत्र सभी; चॅव्वायै–मंगल ग्रह; निकर्त्तन–के समान लगे; मेकम्–मेघ; चॅक्करै ओत्त–लाल गगन के समान लगे। २७९

उन बलिष्ठ वीरों ने अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से एक दूसरे को काटा। तब रक्त जो बह आया, आकाश में उछलकर सभी दिशाओं में फैल गया। उससे विपुल प्रकाशमय नक्षत्र, जहाँ कहीं भी उदित हुए, मंगलग्रह के समान (लाल) हो गये। मेघ भी लाल (सन्ध्या-) गगन के समान बन गये। २७९

वॅन्द वल्लिरुम् बिडैनॅडुङ् गूडङ्गळ् वीऴच्
चिन्दि यॅङ्गणुञ् जिदऱुव पोऱ्पॊऱि तॅऱिप्प
इन्दि रन्महन् पुयङ्गळु मिरविशे युरनुम्
शन्द वन्नॅडुन् दडक्कैह डाक्कलिऱ् ऱहर्व 280

वॅन्त–खूब तप्त; वल्–घने; इरुम्पु इटै–लोहे पर; नॅटु कूटङ्कळ्–बड़े हथौड़ों के; वीऴ–पीटने से; पॊऱि तॅऱिप्प–अंगारे छूटते; ऍङ्कणुम् चिन्ति–सब ओर गिरते; चितऱुव पोल्–छितरते है जैसे; इन्तिरन् मकन्–इन्द्रपुत्र के; पुयङ्कळुम्–कन्धे और; इरवि चेय्–रविकुमार का; उरतुम्–वक्ष; चन्तम्–सुन्दर; वल्–ताकतवर; नॅटुम् तटम् कैकळ्–लम्बे विशाल हाथों के; ताक्कलिल्–प्रहारों से; तकर्व–(पिटकर) खण्ड-खण्ड हुए। २८०

ऊहङ् गळिता यहर्वेङ्ग णुमिळ्न्द तीयाल्
मेहङ् गळ्करिन् वनवेंऱ्पु मॅरिन्द तिक्किन्
नाहङ् गणडुङ् गित्तानिल मुङ्गु लॅन्द
माहङ् गळैनण्णिय विण्णवर् पोय्म ऱैन्दार् 276

ऊकङ्कळिन्–वानरों के; नायकर्–नायकों की; वॅम् कण्–उग्र आँखों की; उमिळ्न्त–उगली; तीयाल्–आग से; मेकङ्कळ् करिन्तत–मेघ झुलस गये; वॅऱ्पुम् ऍरिन्त–पर्वत जल गये; तिक्किन्–दिशाओं के; नाकङ्कळ्–हाथी; नटुङ्कित–काँप उठे; नातिलमुम्–चतुर्विधा भूमि भी; कुलैन्त–अस्त-व्यस्त हुए; माकङ्कळै–आकाशलोकों में; नण्णिय–वास करनेवाले; विण्णवर्–स्वर्गवासी; पोय् मऱैन्तार्–(कहीं) जाकर छिप गए। २७६

उन वानरनायकों की भयानक आँखों से जो आग निकली, उससे मेघ झुलस गये। पर्वत जल गये। दिग्गज काँपे। चतुर्विधा भूमि थर्रायी। आकाशवासी देव कहीं जाकर छिप गये। २७६

विण्मे लित्तरो नॅडुवॅऱ्पित् मुहट्टि त्तारो
मण्मे लिनरो पुऱमादिर वीदि यारो
कण्मे लिनरो वॅनयावरुङ् गाण नित्ऱार्
पुण्मे लिरत्तम् पॉडिप्पक्कडिप् पाऱ्पु डैप्पार् 277

विण् मेलित्तरो–व्योम के ऊपर के हैं; नॅट्टु वॅऱ्पिन्–बड़े पर्वत के; मुकट्टित्तारो–शिखर के हैं; मण् मेलित्तरो–भूतल के हैं; पुऱम्–बाह्य; मातिरम्–दिशाओं की; वीतियारो–वीथियों के हैं; कण् मेलित्तरो–(हमारे) वृष्टिपथ के हैं; ॲत–ऐसा; यावरुम्–सबके; काण–दृष्टिगोचर होते हुए; नित्ऱार्–(घूमते) रहनेवाले; पुण् मेल्–व्रणों पर; इरत्तम्–रक्त; पॉटिप्प–ढलकाते; कटिप्पार्–काटते; पुटैप्पार्–पीटते (लड़ते)। २७७

सभी जगह रहनेवालों ने उन्हें अपने-अपने स्थान पर देखा। तो यह सन्देह उठा कि क्या वे आकाश में रहकर लड़ रहे हैं? या बड़े पर्वत के शिखर पर? या भूमि पर? या अण्ड के बाहर की वीथियों पर? या हमारी ही दृष्टि के पथ में रहकर लड़ रहे हैं? ऐसा लड़ते हुए उन्होंने परस्पर एक दूसरे को काटा और पीटा। तब गम्भीर व्रण हुए और उन पर रक्त ढलक आया। २७७

एऴीत् तुलहन् दिशैयॅट्टॊ डिरण्डु मुट्टि
आऴिक् किळरार् कलिक्कॅम्मडङ् गार्प्पि नोदै
पाऴित् तडन्दो ळिनमार्बिनुङ् गॅहळ् पाय
ऊऴिक् किळर्हा ऱ्डियोत्तदु कुत्तु मोदै 278

आर्प्पिन् ओतै–उनके गर्जन का स्वर; उलकम् एऴ्–सातों लोकों में; ओत्तु–जैसे; तिचै–दिशाओं; ॲट्टु ओटु इरण्टुम्–आठ और दो (दस) में; मुट्टि–जा

टकराकर; आऴि किळर्–समुद्र की उमड़ से; आर् कलिक्कु–उत्पन्न उच्च स्वर से; ऐम्मटङ्कु–पाँच गुना (अधिक था); पाऴि–सारयुक्त; तटम् तोळितुम्–विशाल कन्धों पर; मार्पितुम्–वक्ष पर; कैकळ् पाय–हाथों को चलाते हुए; कुत्तुम् ओतै–घूँसा मारने से उत्पन्न ध्वनि; ऊऴि किळर्–युगान्त में उठनेवाले; कार् इटि–मेघों के गर्जन; ऑत्ततु–के समान थी। २७८

उन्होंने नारे लगाये। गर्जन किया। वह स्वर सातों लोकों में व्याप्त हुआ। वैसे ही वह आठों दिगन्तों से जा टकराया। उमड़नेवाले सागर की ध्वनि से वह स्वर पाँच गुना अधिक था। हाथ चलाकर उन्होंने आपस में कन्धों पर और वृक्षों पर घूँसा मारा। वह स्वर युगान्त में घुमड़नेवाले बादलों के वज्र के समान था। २७८

वॅव्वा यॅयिऱ्ऱान् मिडल्वीरर् कडिप्प मीच्चॅन्
ऱव्वा यॅऴुशो रिहळाशै डोऱुम् वीश
ऑव्वा युमॅऴुन् दहॊऴुज्जुडर् मीन्गळ् याबुम्
शॅव्वा यॅनिहर्त् तनशॅक्करै यॊत्त मेहम् 279

मिटल् वीरर्–बलिष्ठ वीरों के; वाय् वॅम् ऍयिऱ्ऱाल्–अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से; कटिप्प–काटने से; अ वाय्–उन मुखों से; ऍऴु–निकलनेवाला; चोरि–रक्त; मी चॅन्ऱु–ऊपर जाकर; आचैकळ् तोऱुम्–दिशा-दिशा में; वीच–व्याप्त हुआ, तब; ऑ वायुम्–कहीं भी; ऍऴुन्त–उदित; कॊऴुम् चुटर्–विपुल कान्ति के; मीन्कळ् यावुम्–नक्षत्र सभी; चॅव्वायै–मंगल ग्रह; निकर्त्तन–के समान लगे; मेकम्–मेघ; चॅक्करै ऑत्त–लाल गगन के समान लगे। २७९

उन बलिष्ठ वीरों ने अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से एक दूसरे को काटा। तब रक्त जो बह आया, आकाश में उछलकर सभी दिशाओं में फैल गया। उससे विपुल प्रकाशमय नक्षत्र, जहाँ कहीं भी उदित हुए, मंगलग्रह के समान (लाल) हो गये। मेघ भी लाल (सन्ध्या-) गगन के समान बन गये। २७९

वॅन्द वल्लिरुम् बिडैनॅडुङ् गूडङ्गळ् वीऴच्
चिन्दि यॅङ्गणुञ् जिदऱुव पोऱ्पॊऱि तॅऱिप्प
इन्दि रन्महन् पुयङ्गळु मिरविशे युरन्नुम्
शन्द वन्नॅडुन् दडक्कैह डाक्कलिऱ् ऱहर्व 280

वॅन्त–खूब तप्त; वल्–घने; इरुम्पु इटै–लोहे पर; नॅटु कूटङ्कळ्–बड़े हथौड़ों के; वीऴ–पीटने से; पॊऱि तॅऱिप्प–अंगारे छूटते; ऍङ्कणुम् चिन्ति–सब ओर गिरते; चितऱुव पोल्–छितरते हैं जैसे; इन्तिरन् मकन्–इन्द्रपुत्र के; पुयङ्कळुम्–कन्धे और; इरवि चेय्–रविकुमार का; उरत्तुम्–वक्ष; चन्तम्–सुन्दर; वल्–ताकतवर; नॅटुम् तटम् कैकळ्–लम्बे विशाल हाथों के; ताक्कलिल्–प्रहारों से; तकर्व–(पिटकर) खण्ड-खण्ड हुए। २८०

जब खूब तप्त लोहे पर भारी हथौड़ों की चोटें पड़ती हैं, तब लोहे के छोटे-छोटे तप्त कण चारों ओर उड़ते हैं। वैसे ही इन्द्रपुत्र के कन्धों से और सूर्यसूनु के वक्ष से, उनके आपस की बलिष्ठ सुन्दर हाथों की चोटों के कारण, अंश छूटकर उड़ने लगे। २८०

उरत्ति ऩाऩ्मड्डुत् तुऩ्दुवर् पादमिट् टुदैप्पर्
करत्ति ऩाल्विशैत् तॆऱ्ऱुवर् कडिप्पर्निन् ऱिडिप्पर्
मरत्ति ऩालडित् तुरप्पुवर् पॊरुप्पिऩम् वाङ्गिच्
चिरत्तिऩ् मेलॆऱिन् दोऱुक्कुवर् तॆळिप्पर्ती विळिप्पर् 281

उरत्तिऩाल्—छाती से; मट्टुत्तु—टकराकर; उन्तुवर्—ढकेलते; पातम् इट्टु—पैर बढ़ाकर; उतैप्पर्—लात मारते; करत्तिऩाल्—हाथों से; विचैत्तु—वेग के साथ; ॲऱ्ऱुवर्—ठेलते; कटिप्पर्—काटते; निऩ्ऱु—अड़कर; इटिप्पर्—टकराते; मरत्तिऩाल्—तरुओं से; अटित्तु—पीटकर; उरप्पुवर्—चिल्लाते; पॊरुप्पु इऩम्—गिरि-समूह; वाङ्कि—उखाड़ लेकर; चिरत्तिऩ् मेल्—सिरों पर; ॲऱिन्तु—फेंककर; ऑऱुक्कुवर्—दण्ड देते; तॆळिप्पर्—नारे लगाते; ती विळिप्पर्—आग्नेय वृष्टि करते। २८१

वे एक दूसरे को अपनी छाती से टकराकर ढकेलते; पैरों से लात मारते; हाथों से वेग के साथ पीटते। दाँतों से काटते। खड़े होकर धक्का देते। तरुओं से पीटकर चिल्लाते। पर्वतसमूह लेकर सिर पर फेंककर दण्डित करते। गर्जन करते। अग्नि के समान लाल आँखों के साथ तरेरते। २८१

ॲडुप्पर् पऱ्ऱियुऱ् ऱॊरुवरै यॊरुवर्विट् टॆऱिवर्
कॊडुप्पर् वन्दुरङ् गुत्तुवर् कैत्तलङ् गुळिप्पक्
कडुप्पि निऱ्पॆरुङ् गऱ्ऱॆऩच् चारिहै पिऱङ्गत्
तडुप्पर् पिऩ्ऱुव रॊऩ्ऱुवर् तळुवुवर् विळुवर् 282

ऑरुवरै ऑरुवर्—एक दूसरे को; पऱ्ऱि उऱ्ऱु—पकड़ लेकर; ॲड्डुप्पर्—उठाते; विट्टु ॲऱिवर्—दूर फेंकते; उरम्—छाती; वन्तु—आकर; कॊट्टुप्पर्—आगे करते; कै तलम् कुळिप्प—हाथों को (मुट्ठियों को) धँसाते हुए; कुत्तुवर्—घूँसा मारते; कट्टुप्पिऩिल्—अतिवेग से; पॆरु करुङ्कु ॲन—बड़े वातचक्र के समान; चारिकै पिऱङ्कु—दायें और बायें पैंतरे बदलते हुए; तट्टुप्पर्—रोकते; पिऩ्ऱुवर्—पीछे हटते; ऑऩ्ऱुवर्—गुँथे रहते; तळुवुवर्—लपेट लेते; विळुवर्—नीचे गिरते। २८२

वे एक दूसरे को पकड़ लेते और दूर फेंकते। सामने आकर छाती आगे करते। ऐसा घूँसा देते कि मुट्ठियाँ ही शरीर के अन्दर धँस जायँ। प्रबल वातचक्र के समान वे पैंतरे बदलते और रोकते। कभी पीछे हटते; कभी गुँथ जाते, चपेट मे लेते और नीचे गिर जाते। २८२

वालि ऩालुरम् वरिन्दऩर् नॆरिन्दुह वलिप्पर्
कालि ऩाल्ॆडुङ् गाल्पिडित् तुडर्ुवर् कऴल्वर्
वेलि नालुऱ वॆऱिन्दऩ विऱल्वलि युहिराल्
तोलि ऩाक्कैह णॆडुवरै मुऴैयॆऩत् तॊळैप्पर् 283

वालिऩाल्–पूँछ से; उरम् वरिन्ततर्–वक्ष लपेटकर; नॆरिन्तु उक–दलककर गिरने देते हुए; वलिप्पर्–खींचते; कालिऩाल्–पैर से; नॆटु काल्–लम्बे पैर को; पिटित्तु–मरोड़, पकड़कर; उटर्ुवर्–पीड़ा देते; कऴल्वर्–उस बन्धन से बच जाते; वेलिऩाल्–भाले को; उऱ ऍऱिन्तऩ–खूब गड़ाकर फेंका गया हो, ऐसा; विऱल् वलि–अति कठोर; उकिराल्–नाखूनों से; तोलिऩ्–चमड़े से ढके; आक्कैकळ्–शरीरों पर; नॆटु वरै मुऴै–बड़ी पर्वत-गुफाओं; ऍऩ–के समान; तॊळैप्पर्–छेद बना देते। २८३

एक दूसरे की छाती को अपनी पूँछ से लपेट लेकर ऐसा खींचते कि शरीर ही दलककर चू जाय! पैरों से पैर पकड़कर खींचते और दुःख देते। पकड़ से बच जाते। शक्ति के प्रहार के समान अपने तेज कठोर नाखूनों को चलाकर चमड़े-मढ़े उनके शरीरों पर छेद ही लगा देते, जो पर्वत की गुफाओं के समान दिखते। २८३

मण्ण हत्तऩ मलैहळु मरङ्गळु मऱ्ऱुम्
कण्ण हत्तिनिऱ् ऱोऩ्ऱिय यावैयुङ् गैयाल्
ऍण्ण हप्पऱित् तॆऱिदलि ऩॆऱ्ऱलि ऩिऱ्ऱ
विण्ण हत्तिनै मऱैत्तऩ मऱिहडल् वीऴ्न्द 284

मण् अकत्तऩ–पृथ्वी के; मलैकळुम्–पर्वतों; मरङ्कळुम्–और तरुओं को; मऱ्ऱुम्–और; कण् अकत्तिऩिल्–दृष्टिपथ में; तोऩ्ऱिय–प्रकट; यावैयुम्–सभी को; कैयाल्–हाथों से; ऍण् नक–गिनती को परिहास करते हुए (अनगिनत); पऱित्तु–तोड़ लेकर; ऍऱितलिल्–एक दूसरे पर फेंकते; ऍऱ्ऱलिल्–प्रहार करते, इसलिए; इऱ्ऱ–टूटे वे; विण्णकत्तिऩै–व्योममण्डल को; मऱैत्तऩ–ढकनेवाले; मऱि कटल्–उठकर गिरनेवाली तरंगों से युक्त सागर में; वीऴ्न्त–गिरनेवाले बने। २८४

वे भूमि के हों, या आकाश के सभी पर्वतों और तरुओं और दृष्टि में पड़नेवाले सारे पदार्थों को तोड़कर उठा लेते और फेंकते। ऐसे पदार्थों की संख्या गिनती में ही न आ सकती थी। उनके शरीरों से लगकर वे टूट जाते और आकाश को ढकनेवाले या उठकर गिरनेवाली तरंगों से युक्त सागर में गिरनेवाले बन जाते थे। २८४

वॆरुविच् चायन्दनर् विण्णवर् वेऱॆन्नै विळम्वल्
ऒरुवर्क् काण्डम रॊरुवरुन् दोऱ्ऱिल रुडन्ऱु
शॆरुविऱ् ऱुय्त्तलिऱ् चॆङ्गऩल् वॆण्मयिर्च् चॆल्ल
मुरिपुऱ काऩ्ऱै यॆरिपरन् दऩवॆऩ मुऩैवार् 285

आण्ट्ट अमर्–वहाँ के युद्ध में; ऑरुवरुम्–कोई; ऑरुवर्क्कु–किसी से; तोट्रिलर्–नहीं हारा; उट्रुन्रु–कष्ट उठाकर; वॅरुविल्–युद्ध में; तुय्त्तलिल्–मग्न रहे, इसलिए; चॅम् कनल्–लाल कोपाग्नि; वॅण् मयिर्–उनके (शरीर के) श्वेत रोमों द्वारा; चॅल्ल–प्रकट हुई, इसलिए; मुरि पुल्–सूखी घास के; कान् इटै–वन में; ऍरि परन्तन–आग फैल गयी; ऍन्न–जैसे; मुनैवार्–लड़े; विण्णवर्–व्योमवासी; वॅरुवि–डरकर; चाय्न्तनर्–अस्थिर हुए; वेरु विळम्पल्–अलावा कहना; ऍन्नै–क्या। २८५

तव जो युद्ध हुआ, उसमें कोई किसी से न हारा। एक दूसरे को पीड़ा देते हुए स्वयं कष्ट उठाकर लड़ रहे थे। तव कोपाग्नि उनके श्वेत बालों पर वाहर दिखाई दे रही थी। तव सूखी घास के वन में आग फैल रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित हो रहा था। वे इस भाँति युद्ध कर रहे थे। उसको देखकर व्योमवासी देव भी भय से अस्थिर हो गये। फिर इस लड़ाई का और कैसा वर्णन किया जाय ? । २८५

अन्न तन्मैय राट्रलि नमर्पुरि पॉरुदिन्
वन्नॅ डुन्दडत् तिरळ्पुयत् तडुदिऱल् वालि
शॉन्न तम्बियैत् तुम्बियै यरितॉलैत् तॅन्न
कॉन्न हङ्गळिर् करङ्गळिर् कुलैन्दुह मलैन्दान् 286

अन्न–ऐसे; तन्मैयर्–रंग-ढंग के वे; आट्रलिन्–वल लगाकर; अमर् पुरि पॉरुतिन्–जब लड़े, तव; वल्–वलवान; नॅट्ट–लम्वे; तटम्–विशाल; तिरळ्–स्थूल; पुयत्तु–भुजा वाले; अट्ट तिऱल्–शत्रुसंहारक बलशाली; वालि–वाली ने; चॉन्न तम्पियै–जिसने ललकार सुनाई, उस लघु भाई से; तुम्पियै–हाथी को; अरि–सिंह; तॉलैत्तु ऍन्न–जैसे मिटा देगा वैसे; कॉल् नकङ्कळिल्–घातक नाखूनों से; करङ्कळिल्–व हाथों से; कुलैन्तु उक–जर्जर हो गिर जाए, ऐसा; मलैन्तान्–युद्ध किया। २८६

जव ऐसे रंग-ढंग के वाली और सुग्रीव अपना सारा बल लगाकर लड़ रहे थे तव बलवान, लम्वे, विशाल और स्थूल हाथों वाला वाली सुग्रीव से, जिसने उसको ललकारा था, इस तरह लड़ा जैसे एक सिंह हाथी का वल मिटाता है। उसने अपने कठोर घातक नाखूनों और हाथों से सुग्रीव पर प्रहार करते हुए लड़ाई की। तव सुग्रीव निर्बल होकर गिर गया। २८६

[इसके वाद तीन अतिरिक्त पद हैं, जिनका सार है— वाली के प्रहारों से जर्जर होकर सूर्यसूनु प्रभु श्रीराम के पास गया और क्षोभ के साथ उलाहना की। प्रभु ने कहा कि मुझे भेद नहीं दिखाई दिया। अब पुष्पित लता पहनके जाओ। दुःखो मत।

सिर पर नक्षत्र-माला जैसा पुष्पहार पहने हुए सुग्रीव व्याघ्र के समान वज्रनाद को मात देनेवाले गर्जन के साथ युद्ध करने आया और शत्रुतप वाली को मुट्ठी से मारकर त्रस्त कर दिया।

शंकितमन वाली ने गुस्से के साथ ऐसा घूरा कि यम भी डर गया। फिर मन्दहास के साथ उसने अपने हाथों और पैरों से सूर्यपुत्र के मर्मस्थलों पर ऐसा प्रहार किया कि सुग्रीव मूर्च्छित हो गया।

ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि तीनों पद क्षेपक हैं। किसी वाल्मीकी-भक्त तमिळ-विद्वान् द्वारा बनाये गये हैं। कथा के रवैये को ये साफ़ रोकते हैं।]

कक्कि नानुयि रुयिर्प्पोडुञ् जॅविहळिऱ् कण्णिन्
उक्क ताड्ॅरिप् पडलैयो डुदिरत्ति नोदम्
तिक्कु नोक्किनन् शॅड्गदि रोन्महन् शॅरुक्किप्
पुक्कु मीक्कॊडु नॅरुक्किन तिन्दिरन् पुदल्वन् 287

आङ्कु–तब; चॅम् कतिरोन् मकन्–किरणमाली के पुत्र ने; उयिर्प्पोटुम्–निःश्वास के साथ; उयिर्–प्राणों को; कक्कितान्–उगला; चॅविकळिल्–कानों; कण्णिल्–व आँखों से; उतिरत्तिन् ओतम्–रक्त का प्रवाह; ॲरि पटलै ओटु–अग्निपटल के साथ; उक्कतु–निकला और बूंदें छिड़कीं; तिक्कु नोक्किनन्–सारी दिशाओं में दृष्टि दौड़ायी; इन्तिरन् पुतल्वन्–इन्द्र-पुत्र वाली ने; चॅरुक्कि–आवेग के साथ; मी कोंटु पुक्कु–और भी उसके पास जाकर; नॅरुक्कितन्–कष्ट दिया। २८७

तब सुग्रीव का दम फूल गया। प्राण निकलने लगे। कानों और आँखों से रक्त का प्रवाह अग्निपटल के साथ निकलकर बहा। वह सारी दिशाओं में दृष्टि दौड़ाने लगा। तब इन्द्रपुत्र वाली ने आवेग के साथ उसके पास जाकर और भी यंत्रणा दी। २८७

ऍडुत्तुप् पारिडै यॆऱ्ऱुवॆन् पऱ्ऱियॆन् ऱिळवल्
कडित्त लत्तिनुङ् गळुत्तिनुन् दन्निरु करङ्गळ्
मडुत्तु मीक्कॊण्ड वालिमेऱ् कोलॊन्ऱु वाङ्गित्
तॊडुत्तु नाणॊडु तोळुऱत् तिराहवन् ऱुरन्दान् 288

पऱ्ऱि ऍटुत्तु–पकड़कर उठाकर; पार् इटै–भूमि पर; ऍऱ्ऱुवॆन्–पटक दूंगा; ऍन्ऱु–कहकर; इळवल्–छोटे भाई को; कटि तलत्तितुम्–कमर में; कळुत्तितुम्–व गले में; तन् इरु करङ्कळ् मटुत्तु–अपने दोनों हाथों को देकर; मी कॊण्ट (सुग्रीव को) जिसने ऊपर उठाया; वालि मेल्–उस वाली पर; इराकवन्–श्रीराघव ने; कोल् ऒन्ऱु वाङ्कि–एक बाण लेकर; तॊटुत्तु–धनुष पर संधानकर; नाण् ऒटु–डोरे के साथ; तोळ् उऱत्तु–कन्धा मिले, ऐसा डोरा खींचकर; तुरन्तान्–चलाया। २८८

तब वाली ने सोचा कि इसको उठाकर भूमि पर पटक दूँ। इसलिए उसने सुग्रीव की कमर पर एक हाथ और कन्धे पर एक हाथ देकर उसे उठा लिया। तभी श्रीराम ने एक बाण लेकर धनु में रखा, डोरा कन्धे तक खींचकर बाण को छोड़ दिया। २८८

कारुम् वार्शुवैक् कदलियिन् कनियिनैक् कळियच्
चेरुम् जूशियिऱ् चॅन्ऱदु निन्ऱदॅन् शॅप्प
नीरु नीर्दरु नॅरुप्पुम्वन् काऱ्ऱुङ्गीळ् निरन्द
पारुम् जार्वलि पडैत्तव नुरत्तैयप् पहळि 289

अ पकळि–वह बाण; नीरुम्–जल; नीर् तरु नॅरुप्पुम्–जल का जनक अनल; वल् काऱ्ऱुम्–(उसका जनक) बलवान अनिल; कीळ्–नीचे; निरन्त–व्याप्त; पारुम्–थल; चार्–इनका सम्मिलित; वलि पटैत्तवन्–बल जिसमें था, उस वाली के; उरत्तै–छाती में; कारुम्–पके; वार् चुवै–अति स्वादिष्ट; कतलियिन् कतियिनै–कदली-फल में; कळिय चेरुम्–घुस जानेवाली; चूचियिन्–सूई के समान; चॅन्ऱतु–शीघ्र घुसा; चॅप्प निन्ऱतु–कहने के लिए रहा जो; ॲन्–वह क्या है। २८९

वाली असाधारण रूप से बलवान था। उसमें जल, जल का जनक अनल, उसका जनक अनिल और पृथ्वी —इन सब भूतों का सम्मिलित बल था। ऐसे वाली के वक्ष में वह शर सूई के समान घुसा जो पके और अति स्वादिष्ट कदलीफल में घुस रही हो! अब कहने के लिए क्या बचा है? (इसका यह अर्थ भी किया जा सकता है कि वह रुका। क्या समझाने को रुका?।)। २८९

अलङ्गु तोळ्वलि यळिन्ददन् ऱम्बियै यरुळान्
वलङ्गीळ् पारिडै यॅऱ्ऱुवा नुऱ्ऱपोर् वालि
कलङ्गि वल्विशैक् काल्हिळर्न् दॅऱिवुरुङ् गडैनाळ्
विलङ्गन् मेरुवुम् वेर्पऱिन् दालॅन वीळ्न्दान् 290

अलङ्कु तोळ् वलि–शोभायमान कन्धों का बल; अळिन्त–जिसका मिट गया; तन् तम्पियै–उस अपने भाई को; अरुळान्–दया न दिखाकर; वलम् कीळ्–कठोर; पार् इटै–भूमि पर; ॲऱ्ऱुवान्–पटकने को; उऱ्ऱ–प्रस्तुत; पोर् वालि–योद्धा वाली; कलङ्कि–हड़बड़ाकर; वल्–प्रबल; विचै काल्–वेगवान पवन; किळर्न्तु–उठकर; ॲऱिवु उरुम्–सबको (जब) उड़ा देता है; कटै नाळ्–उस युगान्त के दिन में; विलङ्कल् मेरुवुम्–मेरुपर्वत भी; वेर् पऱिन्ताल् ॲन्न–जड़ से उखड़ गया हो, ऐसा; वीळ्न्तान्–नीचे गिरा। २९०

शर के लगने से वह निर्दय वाली गिरा जिसने भुजबल खोकर कष्टग्रस्त अपने भाई को कठोर भूमि पर पटकना चाहा। वह बलवान योद्धा था। वह वाली चक्कर खाकर ऐसा गिरा, मानो युगान्त में, प्रबल रूप से उठकर सभी जीवों व पदार्थों को उखाड़ देनेवाले पवन के आघात से जड़ से उखड़कर मेरुपर्वत गिरा हो। २९०

ॲळुन्दु वान्मुह डिडित्तुहप् पडुप्पलॅन् ऱिवरुम्
उळुन्दु पेर्वुळित् तिशैतिरिन् दिरुप्पलॅन् रुरुक्कुम्

विळ्न्दु पारिनै वेरोडुम् पऱिप्पलॆन् ऱोरुम्
अळ्न्दु मिच्चर मॆय्दव नार्हॊलॆन् ऱयिर्क्कुम् 291

ऍळुन्तु–उठकर; वान् मुकटु–आकाश-शिखर को; इटित्तु–धक्का देकर; उक पट्टुप्पल् ऍन्ऱु–गिरा दूंगा, कहते हुए; इवरुम्–ऊपर उठता; उळुन्तु पेर्वु उळि–उड़द के लुढ़कने की देर में; तिचै तिरिन्तु–चारों दिशाओं में घूमकर; इऱुप्पल् ऍन्ऱु–तोड़-फोड़ डालूंगा, कहते हुए; उरुक्कुम्–कोप दिखाता; विळुन्तु–नीचे झपटकर; पारित्तै–भूमि को; वेर् ओटुम्–जड़ के साथ; पऱिप्पल्–उखाड़ लूंगा; ऍन्ऱु ओरुम्–यह सोचता; अळुन्तुम्–गड़नेवाला; इ चरम्–यह शर; ऍय्तवन्–चलानेवाला; आर् कॊल्–कौन है तो; ऍन्ऱु–ऐसा; अयिर्क्कुम्–सन्देह करता। २६१

वाली सँभलकर उठा। फिर 'आकाश की चोटी को धक्का देकर गिरा दूँगा' यह कहते हुए उठता। 'उड़द के एक बार घूमने के समय के अन्दर ही सारी दिशाओं में घूमकर सारी वस्तुओं को तोड़-फोड़कर मिटा दूँगा' —ऐसा कहकर अपना गुस्सा दिखाता। 'झपटकर इस भूमि को जड़ से खोद दूँगा' —ऐसा विचार करता। फिर संशय उठाता कि इस तरह मेरी छाती में गड़नेवाले शर का प्रेरक कौन होगा ? । २९१

ऍऱ्ऱुङ् गैयिनै निलत्तोडु मॆरिप्पॊऱि पिऱक्कच्
चुऱ्ऱु नोक्कुरुज् जुडुशरत् तैत्तुणैक् करत्ताल्
पऱ्ऱि वालिनुम् कालिनुम् पल्लिनुम् बरिप्पान्
उऱ्ऱी णामैयि नुलेवुरु मलैयॆन वुरुळुम् 292

कैयित्तै–हाथ को; निलत्तोटु–भूमि पर; ऍऱ्ऱुम्–पीटता; ऍरि पॊऱि–अंगारे; पिऱक्क–छितराते हुए; चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; नोक्कुरुम्–देखता; चुटु चरत्तै–जलानेवाले उस शर को; तुणै करत्ताल्–दोनों हाथों से; पऱ्ऱि–पकड़कर; वालितुम् कालितुम् पल्लितुम्–पूँछ से, पैरों से और दाँतों से; पऱिप्पान्–उखाड़ता; उऱ्ऱु–उखाड़ते; ऒणामैयिन्–न उखड़ने पर; उलैवु उरुम्–दुःखी होता; मलै ऍन–पर्वत के समान; उरुळुम्–लोटता। २६२

(क्षोभ और क्रोध की दशा में) वह हाथ से धरती को पीटता। आँखों से अंगारे निकालते हुए चारों ओर दृष्टि दौड़ाता। जलानेवाले उस शर को वह पूँछ, हाथों और दाँतों से पकड़कर बाहर खींचने का प्रयास करता। पर उस काम को असाध्य पाकर खीझ उठता। पर्वत के समान भूमि पर लोटता। २९२

देव रोवॆन वयिर्क्कुमत् तेवरिच् चॆयलुक्
काव रोववर्क् काऱ्ऱलुण् डोवॆनु मयलोर्
एव रोवॆन नहैशॆयु मॊरुवने यिऱैवर्
मूव रोडुमॊप् पानॆय लामॆन मुनियुम् 293

तेवरो–क्या देव हैं; ॲऩ्ऩ–ऐसा; अयिर्क्कुम्–संशय करता; अ तेवर्–वे देव; इ चॅय्लुक्कु–इस काम के लिए; आवरो–(योग्य) होंगे क्या; अवर्क्कु–उनमें; आऱ्ऱल् उण्टो–शक्ति है क्या; ॲऩ्ऩुम्–पूछता; अयलोर्–दूसरे; एवरो ॲऩ्ऩ–कौन हैं, कहकर; नर्कं चॅयुम्–हँस उठता; इऱ्ऱैवर् मूवरोट्टुम्–तीनों देवों की; ऑप्पाऩ्–समानता करनेवाले; ऑरुवऩ्–उन अकेले देव का; चॅयल् आम्–काम है; ॲऩ्ऩ–कहकर; मुतियुम्–कुपित होता। २६३

उसे सन्देह हुआ कि क्या देवों ने यह शर चलाया होगा ? पर क्या देवता लोग ऐसा काम करने को सम्मत होंगे ? उनमें शक्ति भी है ? फिर दूसरे कौन होंगे ? वह हँस उठता। फिर सोचता कि त्रिदेवों के समान वल रखनेवाले, अपार महिमावान, किसी अद्वितीय देव ने ही किया होगा ! यह सोचकर वह कोपवश हो जाता। २९३

नेमि दाऩ्कॊलो नीलहण् डऩ्ऩॆडुञ् जूलम्
आमि दाङ्गॊलो वऩ्ऱॆनिऱ् कुऩ्ऱुरु वयिलुम्
नाम विऩ्दिरऩ् वच्चिरप् पडैयुमॆऩ् नड्वण्
पोमॆ ऩुऩ्दुणॆप् पोदुमो यादॆऩप् पुळुङ्गुम् 294

नेमि ताऩ् कॊलो–चक्रायुध (सुदर्शन) ही है क्या; नीलकण्टऩ्–नीलकंठ शिवजी का; नॆट्टु चूलम्–लम्बा त्रिशूल; इतु आम् कॊलो–यह है क्या; अऩ्ऱु ॲऩिल्–नहीं तो; कुऩ्ऱु उरुवु–(क्रौंच-) पर्वत भेद जो गया; अयिलुम्–(कार्तिकेय की) शक्ति भी; इन्तिरऩ्–इन्द्र का; नाम–भयानक; वच्चिर पटैयुम्–वज्रायुध भी; ॲऩ् नट्टुवण्–मेरे बीच से; पोम् ॲऩ्ऩुम्–जायें ऐसा; तुणै–उतना; पोतुमो–(सशक्त) बने हैं क्या; यातु–कौन सा है; ॲऩ्ऩ–यह सोचकर; पुळुङ्कुम्–व्याकुल होता। २६४

'यह जो मेरी छाती को विद्ध कर रहा है, क्या महाविष्णु का सुदर्शन चक्रायुध है ? या नीलकण्ठ शिवजी का लम्बा त्रिशूल है ? नहीं तो क्रौंच पर्वत को जिसने वेधा, वह कार्तिकेय की शक्ति हो या इन्द्र का भयानक वज्रायुध हो, वे मेरे शरीर के मध्य में भेदकर नहीं जा सकेंगे। यह कौन सा है ?' ऐसा सोचते हुए वाली व्याकुल हुआ। २९४

विल्लि ऩाऱ्ऱुरप् परिदिव्वॆञ् जरमॆऩ वियक्कुम्
शॊल्लि ऩाऩॆडु मुनिवरो तूण्डिना रॆऩ्ऩुम्
पल्लि नाऱ्पडिप् पुरुम्वल हालुऩ्दऩ् ऩुरत्तैक्
कल्लि यार्प्पॊडु परिक्कुमप् पहळियैक् कण्डाऩ् 295

तऩ् उरत्तै–अपनी छाती को; कल्लि–छेदकर; आर्प्पु ऑट्टु–शब्द के साथ; परिक्कुम्–घुस जो रहा; अ मकळियै–उस वाण को; कण्टाऩ्–देखकर; इ वॆम् चरम्–यह सन्तापक शर; विल्लिऩाल्–धनु द्वारा; तुरप्पु अरितु–प्रेषणीय नहीं है; ॲऩ्ऩ वियक्कुम्–ऐसा विस्मय करता; चॊल्लिऩाल्–अपने (अमोघ) शब्दों से; नॆट्टु मुनिवरो–महर्षियों ने; तूण्टिऩार्–प्रेरित किया क्या; ॲऩ्ऩुम्–सोचता; पल कालुम्–

अनेक बार; पल्लिनाल्–अपने दाँतों से; पड़िप्पुरुम्–(काट) निकालने का प्रयास करता। २६५

फिर उसने बाण को देख लिया जो उसके कठोर वक्ष को बड़े शब्द के साथ भेद रहा था। उसे आश्चर्य हुआ कि क्या यह बाण किसी धनु द्वारा प्रेषित भी किया जा सकता है? उसने विचार किया कि क्या महर्षियों ने अपने अमोघ (मन्त्र-) वचन से इसे प्रेरित किया? अनेक बार उसने अपने दाँतों से बाहर खींच लेने का प्रयास किया। २९५

शरमॅ नुम्बडि तॅरिन्दडु पलपडच् चलित्तॅन्
उरमॅ नुम्बद मुयिरॊडु मुरुविय वीत्रैक्
करमि रण्डिनुम् वालिनुङ् गालिनुङ् गळड्रिप्
परम नन्नवन् पॅयररि हुवॅनॅनप् पड्रिप्पान् 296

चरम् ॲन्नुम् पटि तॅरिन्ततु–शर है, ऐसा मालूम हो गया; पल पट–अनेक प्रकार से; चलित्तु ॲन्–चंचल होने से क्या (लाभ); उरम् ॲन्नुम् पतम्–वक्ष नाम के स्थान को; उयिर् ऑटुम्–मेरे प्राणों के साथ; उरुविय ऒत्रै–भेद जानेवाले इस अद्वितीय शर को; करम् इरण्टिलुम्–दोनों हाथों से; वालिनुम्–पूँछ से; कालिनुम्–व पैरों से; कळड्रि–अपनी छाती से निकालकर; परमन्–बड़े ही श्रेष्ठ; अन्नवन्–उस (चलानेवाले) का; पॅयर्–नाम; अरिकुवॅन्–जान लूँगा; ॲन्न–सोचकर; पड्रिप्पान्–निकालने लगा। २६६

वाली ने कुछ निश्चय किया। 'यह मालूम हो गया कि यह बाण है। तब अनेक प्रकारों से चंचल होने से क्या लाभ होगा? यह शर मेरी छाती को मेरी जान के साथ भेदकर चल रहा है! इस अपूर्व शर को मैं अपनी पूँछ और पैरों का उपयोग करके बाहर खींच लूँगा और उसका नाम देख लूँगा जो परमवीर लगता है।' यह निश्चय करके वह उस बाण को खींचने लगा। २९६

ओङ्ग रुम्पॅरुन् दिड्लुडै मनत्तनुळ् ळत्तन्
वाङ्गि नान्मड्रव् वाळियै याळिपोल् वालि
आङ्गु नोक्कित्त रमररु मवुणरुम् पिड्रुम्
वीङ्गि नार्हडोळ् वीररै यार्विय वादार् 297

याळि पोल्–'याळी' (नामक भयंकर जानवर) की तरह; वालि–वाली ने; ओङ्कु–वर्धनशील; अरुम् पॅरुम्–अपूर्व, बड़ा; तिड्ल् उटै–बलसंयुक्त; मनत्तन्–मन वाला; उळ्ळत्तन्–जीवट का (जो था); अ वाळियै–उस बाण को; वाङ्किनान्–जोर से पकड़ लिया; आङ्कु नोक्किनर्–वहाँ देखा; अमररुम्–देवों और; अवुणरुम्–दानवों और; पिड्रुम्–अन्यों ने; तोळ् वीङ्कितार्कळ्–उनके कन्धे (विस्मय और गर्व से) फूल उठे; वीररै–वीरों की; वियवातार–प्रशंसा न करनेवाले; यार्–कौन हैं। २६७

वाली 'याळी' (वहुत ही वलवान अप्राप्य या कल्पित जानवर) के समान वलिष्ठ था। मन का भी वहुत वड़ा साहसी था। वड़ा ही जीवट का था। उसने उस वाण को पकड़कर आगे जाने से रोक दिया। यह वड़ा ही वीरता का काम था। देवों, दानवों और अन्यों ने उसे देखा तो उनकी भुजाएँ भी फूल उठीं। उनके मन में उतनी उमंग भर गयी। हाँ! वीरों को देखकर कौन विस्मय और उमंग से नहीं भरता ?। २९७

❀ वाशत् तारवन् मार्वॅनु मलैवऴङ् गरुवि
ओशैच् चोरियै नोक्किन नुडन्पिऱप् पॅन्नुम्
पाशत् तार्पिणिप् पुण्डवत् तम्बियुम् वशुङ्गण्
नेशत् तारैहळ् शोरितर नॅंडुनिलज् जेर्न्दान् 298

वाचम् तार्–सुवासित माला; अवन्–(पहने हुए) उसके; मार्पु ॲनुम्–वक्ष रूपी; मलै वऴङ्कु–पर्वत से निःसृत; अरुवि–सरिता-सदृश; ओचै चोरियै–शब्दायमान रक्त को; उटन् पिऱप्पु–सहोदर के; ॲन्नुम्–उस; पाचत्तात्–पाश से; पिणिप्पु उण्ट–वद्ध; अ तम्पियुम्–वह भाई (सुग्रीव) भी; नोक्किनन्–देखकर; पचुम् कण्–स्नेहार्द्र आँखों से; नेच तारैकळ्–प्रेम के आँसू; चोरि तर–वहाते हुए; नॆटु निलम् चेर्न्तान्–लम्वी धरती पर गिरा। २९८

सुवासित मालाधारी वाली का वक्ष पर्वत के समान था। उससे रक्त की सरिता वह चली। शोर के साथ वहनेवाले रक्त को सुग्रीव ने देखा। वह सहोदर-प्रेम के पाश से वद्ध था। उसकी प्रेमार्द्र आँखों से वलात् भ्रातृस्नेह-जनित आँसू की धाराएँ वहने लगीं और वह धरती पर लम्बा व चित गिर गया। २९८

❀ पऱित्त वाळियैप् परुवलित् तडक्कैयाऱ् पऱ्ऱि
इऱुप्पॅ नॅन्ऱॅण् डॅऴुन्दनन् मेरुवै यिरण्डाय्
मुऱिप्पॅ नॅन्निनू मुऱिवदन् ऱामॅन मौऴियाप्
पॊऱित्त नामत्तै यऱिहुवा नोक्किनन् पुहऴोन् 299

पऱित्त वाळियै–(अन्दर) धँसते हुए उस वाण को; परु वलि–अधिक वली; तट कैयाल्–विशाल हाथ से; पऱ्ऱि–पकड़कर; इऱुप्पॆन्–तोड़ूँगा; ॲन्ऱु कॊण्टु–कहते हुए; ॲऴुन्तनन्–उठा; मेरुवै–मेरु को; इरण्टाय्–दो (टुकड़ों) में; मुऱिप्पॆन् ॲन्निनुम्–तोड़ सकता हूँ, तो भी; मुऱिवतु अन्ऱु आम्–यह टूटनेवाला नहीं है; ॲन्ऱु मॊऴिया–ऐसा कहते हुए; पुकऴोन्–स्तुत्य वाली; पॊऱित्त–अंकित; नामत्तै–नाम को; अऱिकुवान्–जानने के लिए; नोक्किनन्–देखा। २९९

वाली ने बाण को वाहर निकाल दिया। 'मैं अपने वहुत ही वलवान और विशाल हाथों से उसे पकड़कर तोड़ दूंगा' —यह विचार करके उठा। पर उसे कहना पड़ा कि मेरु को भी दो खण्डों में तोड़ सकता हूँ। पर इसको

तोड़ना असाध्य है। यह कहते हुए उसने उसमें अंकित नाम को जानने के लिए उस पर दृष्टि चलायी। २९९

❀ मुम्मैशा लुलहुक् कॆल्ला मूलमन् दिरत्तै मुऱ्ऱुम्
तम्मैये तमक्कु नल्हुन् दनिप्पॆरुम् बदत्तैत् ताने
इम्मैये मऱुमै नोय्क्कु मरुन्दिनै यिराम वॆन्नुम्
शॆम्मैशेर् नामन् दन्नैक् कण्गळिऱ् ऱॆरियक् कण्डान् 300

मुम्मै चाल्–त्रिविध; उलकुक्कु अॅल्लाम्–सारे लोकों के; मूल मन्तिरत्तै–मूल मन्त्र को; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तमक्कु–उनके भक्तों को; तम्मैयॆ नल्कुम्–नामी को ही दिलानेवाले; तनि पॆरुम् पतत्तै–अद्वितीय श्रेष्ठ पद को; ताने–स्वयं; इम्मैये मऱुमै नोय्क्कुम्–इह-पर भवरोग के; मरुन्तिनै–औषध को; इराम अॆन्नुम्–राम के; चॆम्मै चेर्–महान; नामम् तन्नै–नाम को; कण्कळिल्–आँखों से; तॆरिय–स्पष्ट रूप से; कण्टान्–देखा। ३००

(वहाँ वाली ने क्या नाम देखा ?) त्रिविध, भूमि, मध्य और पाताल के लोकों का आधार मन्त्र; भक्तों को पूर्णतः अपने (नामी) को दिला देनेवाला विशिष्ट अद्वितीय शब्द; इह-पर के भवरोग का श्रेष्ठ औषध; राम का महिमामय नाम—इसको वाली ने साफ़-साफ़ अपनी आँखों से देखा। ३००

❀ इल्लऱन् दुऱन्द नम्बि यॆम्मनोर्क् काहत् तङ्गळ्
विल्लऱन् दुऱन्द वीरन् ऱोन्ऱलाल् वेद नन्नूल्
शोल्लऱन् दुऱन्दिलाद सूरियन् मरबुन् दॊल्लै
नल्लऱन् दुऱन्द दॆन्ना नहैवर नाणुक् कॊण्डान् 301

इल्लऱम्–गृहस्थ धर्म के; तुऱन्त–त्यागी (जो वन में आये हैं); नम्पि–नायक; अॅम्मनोर्क्कु आक–हम लोगों के लिए; तङ्कळ्–अपना; विल् अऱम्–धनु-धर्म; तुऱन्त–त्यागी; वीरन्–वीर; तोन्ऱलाल्–अवतार से; वेतम् नल् नूल्–वेदों के श्रेष्ठ शास्त्रों में; चॊल्–प्रतिपादित; अऱम्–धर्म; तुऱन्तिलात–जिसने नहीं त्यागा; चूरियन् मरपुम्–उस सूर्यकुल ने भी; तॊल्लै नल् अऱम्–प्राचीन सद्धर्म; तुऱन्ततु–त्याग दिया; अॅन्ना–सोचकर; नकै वर–हँसी के आने से; नाणु कॊण्टान्–शरम खायी। ३०१

(वाली सोचने लगा।) घर-बार छोड़कर वन में आये हुए श्रीराम हम जैसे वानरों के कार्य में अपने धनु-धर्म को त्याग चुके—ऐसे वीर श्रीराम के जन्म लेने से वेदशास्त्र-विहित धर्ममार्ग से न हटनेवाला सूर्यवंश भी सनातन सद्धर्म छोड़नेवाला हो गया। उसे हँसी आयी। और शरम का अनुभव हुआ। ३०१

❀ वॆळ्हिडु महुडञ् जाय्क्कुम् वॆडिपडच् चिरिक्कु मीट्टुम्
उळ्हिड मिदुवन् दानो रोङ्गऱ् मोवॆन् ऱुन्नम्

मुळ्हिडुङ् गुऴियिङ् पुक्क मूरिवॆंङ् गळिनल् यानै
तॊंळ्हॊंडुङ् गिडन्द दॆंऩ्ऩत् तुयरुऴऩ् ऱऴिन्दु शोर्वात् 302

वॆंळ्किट्टुम्–शरम का अनुभव करता; मकुटम्–किरीट को (सिर को); चाय्क्कुम्–झुकाता; वॆंटि पट–ठठाकर; चिरिक्कुम्–हँसता; मीट्टुम्–फिर; उळ्किट्टुम्–चिन्तामग्न होता; इतुवुम्–यह भी; ओर्–एक; ओङ्कु–उत्कृष्ट; अऱम् तात्तो–धर्म है क्या; ऍऩ्ऱु उऩ्ऩुम्–ऐसा सोचता; कुऴियिल् पुक्क–एक गड्ढे में गिरा हुआ; मूरि-बलवान; वॆम्–भयंकर; कळि नल् यानै–मत्त, श्रेष्ठ हाथी; मुळ्किट्टुम्–अन्दर खींचनेवाले; तॊंळ्कु ऑट्टुम्–पंक में; किटन्तत्तु ऍऩ्ऩ–फँस गया हो, ऐसा; तुयर् उऴऩ्ऱु–दुःख में पड़कर; अऴिन्तु–बल खोकर; चोर्वात्–थक जाता। ३०२

वाली शरम का अनुभव करता; किरीट (सिर) को झुकाता; ठठाकर हँसता। फिर गम्भीर रूप से चिन्तामग्न हो जाता। सोचने लगता कि क्या यह भी एक श्रेष्ठ धर्म है! गड्ढे में पंक में पड़कर धँसनेवाले सबल भयंकर और मत्त गज के समान वह दुःखी होकर छटपटाया, बल खोकर बहुत शिथिल हो गया। ३०२

❀ इऱैदिऱम् बिनना लॆंऩ्ऩे यिऴिन्दुळो रियऱ्कै यऩ्ऩिऩ्
मुऱैदिऱम् बिनना लॆंऩ्ऱु मॊंऴिहिऩ्ऱ मुहत्ताऩ् मुऩ्ऩर्
मऱैदिऱम् बाद वाय्मै मऩ्ऩर्क्कु मनुविऱ् चॊंल्लुम्
तुऱैदिऱन् बामऱ् काक्कत् तोऩ्ऱिनाऩ् वन्दु तोऩ्ऱ 303

इऱै तिऱम्पित्तऩ्–राजा धर्मच्युत हो गये; आल्–इसलिए; इऴिन्तुळोर्–नीच लोगों की; इयऱ्कै–स्थिति; ऍऩ्ऩे–क्या होगी; ऍऩ्ऩिऩ्–मेरे सम्बन्ध में; मुऱै तिऱम्पित्तनाल्–तो क्रम-भंग कर दिया है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; मॊंऴिकिऩ्ऱ–आपसे आप बोलते रहनेवाले; मुकत्ताऩ् मुऩ्ऩर्–मुख के वाली के सामने; वाय्मै–सच्चे; मऩ्ऩर्क्कु–राजाओं के लिए; मनुविल् चॊंल्लुम्–मनु में कथित; मऱै–वेद-विचार के; तिऱम्पात–विपरीत जो न जाते थे; तुऱै–उन मार्गों की; तिऱम्पामल्–नष्ट न होने देते हुए; काक्क–रक्षा करने के हेतु; तोऩ्ऱिताऩ्–अवतरित श्रीराम; वन्तु तोऩ्ऱ–उसके सामने आये, तब। ३०३

स्वयं राजाराम ने धर्ममार्ग छोड़ दिया, तो नीच लोगों की क्या हस्ती है? वह भी राजाराम ने मेरे सम्बन्ध में क्रम-भंग कर दिया है! वाली यों आप से आप कह ही रहा था कि उसके सामने श्रीराम आ प्रकट हुए। ये श्रीराम मनु-शास्त्र मे राजाओं के सम्बन्ध में निर्दिष्ट वेदतत्त्व के विपरीत न चलने का क्रम सुस्थापित करने के लिए अवतरित हुए थे। ३०३

❀ कण्णुऱ्ऱाऩ् वालि नीलक् कार्मुहिल् कमलम् बूत्तु
मण्णुऱ्ऱु वरिवि लेन्दि वरुवदे पोलु मालैप्
पुण्णुऱ्ऱ निऱत्तिऱ् चोरि पॊंङ्गिये पॊंडिप्प नोक्कि
ऍण्णुऱ्ऱा यॆंऩ्शॆंय् दायॆंऩ् ऱेशुवा नियमब लुऱ्ऱाऩ् 304

नीलम् कार् मुकिल्—काला वर्षाकालीन मेघ; कमलम् पूत्तु—विकसित कमल धारण करके; वरि विल् एन्ति—सबन्ध धनुष लेकर; मण् उऱ्ऱु—भूमि पर आकर; वरुवते पोलुम्—आता हो जैसे; मालै—महाविष्णु को; कण् उऱ्ऱान् वालि—आँखों से देखकर वाली; पुण् उऱ्ऱ—व्रणयुक्त; निऱत्तिल्—छाती से; चोरि—रक्त; पोङ्किये—उमड़कर; पोट्टिप्प—उठा, उस स्थिति में; नोक्कि—देखकर; ॲन्न (ॲण्) उऱ्ऱाय्—क्या सोचा; ॲन् चॅय्ताय्—क्या किया; ॲन्ऱु—ऐसा; एचुवान्—भर्त्सना देते हुए; इयम्पल् उऱ्ऱान्—कहने लगा। ३०४

वाली ने श्रीराम को देखा, जो एक काले वर्षाकालीन मेघ के समान थे। उस मेघ में कमल खिले थे। वह धनुष लिये हुए धरती पर आ रहा था। वाली की छाती के व्रण से रक्त उमड़ आ रहा था। वाली ने श्रीराम से पूछा कि क्या सोचा और क्या किया है तुमने ? वह और भी उन्हें भर्त्सना देने लगा। ३०४

❀ वाय्मैयु मरबुङ् गात्तु मन्नुयिर् तुऱन्द वळ्ळल्
तूय्मैयन् मैन्द नेनी बरदन्मुन् ऱोन्ऱि नाये
तीमैतान् पिऱरैक् कात्तुत् तान्शॅय्दाऱ् ऱीदन् ऱामो
ताय्मैयु मऱैयुम् नट्पुन् दरुममुन् दळुवि निन्ऱाय् 305

ताय्मैयुम्—मातृवत्सलता; मऱैयुम्—और वेदसम्मत बर्ताव; नट्पुम्—और मैत्री; तरुममुम्—और धर्म; तळुवि निन्ऱाय्—इनको अपनाये रहनेवाले; वाय्मैयुम्—सत्य और; मरपुम्—कुलाचार का; कात्तु—पालन कर; मन् उयिर् तुऱन्त—अपने नित्य प्राण जिन्होंने छोड़े थे; वळ्ळल्—उन दानी; तूय्मैयन्—और पवित्र पुरुष दशरथ के; मैन्तने—पुत्र; नी—तुम; परतन् मुन्—भरत के पहले; तोन्ऱिताये—(अग्रज के रूप में) पैदा हो गये; तीमै—बुराई; पिऱरै कात्तु—दूसरों से बचाकर; तान् चॅय्ताल्—वह खुद करे तो; तीतु अन्ऱु आमो—(बुराई) बुराई नहीं रहेगी क्या। ३०५

मातृवत्सलता, वेदमार्ग, मैत्री, धर्म आदि को अपनाए रहनेवाले श्रीराम! दशरथ सत्य और अपने कुल के आचार का सम्यक् पालन करके उसी के अर्थ अपने प्राण भी त्याग चुके। ऐसे दानी और पवित्र दशरथ के पुत्र! तुम कैसे भरत के अग्रज हो पैदा हुए ? दूसरों को बुराई करने से रोको और स्वयं बुराई करो तो वह बुराई, बुराई नहीं रहेगी क्या ? । ३०५

कुलमिदु कल्वि यीदु कॊऱ्ऱमी दुऱ्ऱु निन्ऱ
नलमिदु बुवन मून्ऱिन् नायह मीदु निन्ऱोळ्
वलमिदिव् वुलहन् दाङ्गुम् वण्मैयी दॆन्ऱाऱ् ऱिण्मै
अलमरल् शॅय्य लामो वरिन्दिरुन् दयर्न्दु ळार्पोल् 306

इतु कुलम्—यह तुम्हारा कुल है; कल्वि ईतु—तुम्हारी विद्या यह है; कॊऱ्ऱम् ईतु—विजय यह है; उऱ्ऱु निन्ऱ—तुम्हारे जन्मसिद्ध; नलम्—अच्छे गुण; इतु—ये हैं; पुवनम् मून्ऱिन्—तीनों लोकों का; नायकम् ईतु—नायकत्व यह है; निन् तोळ् वलम् इतु—तुम्हारा भुजबल यह है; इ उलकम् ताङ्कुम्—यह संसार-भरण करने की; वण्मै

ईतु–वदान्यता यह है; ऍऩ्ऱाल्–तो; अऱिन्तिरुन्तु–जानते हुए भी; अयर्न्तु उळार् पोल्–भ्रान्त के समान; तिण्मै अलमरल्–गुण-दृढ़ता में चंचलता लाना; चॅय्यलामो–कर सकते हो क्या। ३०६

(सारा संसार तुम्हारी प्रशंसा करता है कि) इनका कुल यह (उत्कृष्ट); विद्या ऐसी; विजय यह; इन्हें प्राप्त अच्छे गुण ये हैं। तीनों भुवनों का नायकत्व यह जो इनका है। इनका भुजवल ऐसा। भुवन का गोप्तृत्व यह। तो यह सब जानते हुए भी मोहित मनुष्य के समान ऐसी दृढ़ता को अस्थिर करा देना क्या तुम्हें शोभा देगा ? । ३०६

❀ कोवियर् ऱरुम मुङ्गळ् कुलत्तुदित् तोर्हट् कॅल्लाम्
ओवियत् तॅळ्ुद वॊण्णा वुरुवत्ता युडैमै यन्ऱो
आवियैच् चनहन् पॅऱ्ऱ वन्नत्तै यमिऴ्दिन् वन्द
देवियैप् पिरिन्द पिन्नैत् तिहैत्तनै पोलुम् जॅय्है 307

ओवियत्तु ऍळ्ुत ऒण्णा–आपका चित्र न वन सके, ऐसे; उरुवत्ताय्–अपार रूप वाले; को इयल् तरुमम्–राजधर्म; उङ्गळ् कुलत्तु–तुम्हारे कुल में; उतित्तोर्कट्कु ऍल्लाम्–उत्पन्न सभी की; उटैमै अन्ऱो–सम्पत्ति है न; आवियै–प्राण (-समाना) सीता को; चतकन् पॅऱ्ऱ–जनक की जनायी गयी; अन्नत्तै–हंसिनी देवी को; अमिऴ्तिन् वन्त–अमृत के समान तुम्हारे पास आयी हुई; तेवियै–देवी को; पिरिन्त पिन्नै–छोड़ने के वाद; चॅय्कै–काम में; तिकैत्तनै पोलुम्–अस्त-व्यस्त हो गये शायद। ३०७

हे ऐसे रूपवान, जिसका चित्र नहीं वन सकता ! राजधर्मपालन तुम्हारे कुल में उत्पन्न सभी का धन है ! (फिर तुमने उसका भंग क्यों किया ?) प्राण-सम, जनकदुहिता हंसिनी-सी, अमृततुल्य सीतादेवी के वियोग के वाद तुम्हारा मन भ्रमित और कार्य अस्थिर हो गया है क्या ? । ३०७

❀ अरक्कनो रळिवु शॅय्दु कळिवन्ने लदऱ्कु माऱोर्
कुरक्कर शदनैक् कॊल्ल मनुनॅऱि कूऱिऱ् ऱुण्डो
इरक्कमॅङ् गुहुत्ता यॅन्बा लॅप्पिळै कण्डा यप्पा
परक्कळि विदुनी पूण्डाऱ् पुहळैयार् परिक्कर् पालार् 308

अरक्कन्–राक्षस रावण; ओर् अळिवु चॅय्तु–एक हानि करके; कळिवतेल्–चला जाय तो; अतऱ्कु माऱु–उसके प्रीतिकार में; ओर् कुरक्कु अरचु अतत्तै–एक वानरराज को; कॊल्ल–मारने को; मत नॅऱि–मनु-धर्म ने; कूऱिऱ्ऱु उण्टो–कहा है क्या; इरक्कम्–दया को; ऍङ्कु–कहाँ; उकुत्ताय्–गिरा दिया; ऍन् पाल्–मुझमें; ऍ पिळै–कौन सा अपराध; कण्टाय्–देखा; इतु परक्कळिवु–यह बड़ा अपयश; नी पूण्टाल्–तुम धारण करो तो; पुकळै–यश को; यार्–कौन; परिक्कल् पालार्–भरण करने योग्य रहेंगे। ३०८

(क्या ही विचित्र विडम्वना है !) राक्षस कोई हानि कर गया तो

दूसरे वानरराज को मारने की आज्ञा मनुधर्म देता है क्या ? दया तुमने कहाँ छोड़ी ? मुझमें क्या अपराध देखा ? यह बड़ा अपयश है ! अगर तुम अपयश धारण कर लोगे तो यश का पात्र कौन बन सकेगा ? रे बाप ! । ३०८

ऑलिहड लुलहन् दन्नि लूर्दरु कुरङ्गिन् माडे
कलियदु कालम् वन्दु कलन्ददो करुणै वळ्ळाल्
मॅलियवर् पाल देयो विळुप्पमु मॊळुक्कन् दानुम्
वलियवर् मॅलिवु शॅय्दार् पुहळ्न्रि वशैयु मुण्डो 309

करुणै वळ्ळाल्–करुणा-दानी; ऑलि कटल्–शब्दायमान समुद्रवसना; उलकम् तन्निल्–लोक में; ऊर् तरु–रेंगनेवाले; कुरङ्कित् आटे–वानरों के हक में ही; कलि अतु कालम्–कलि (नाशक) काल; वन्तु कलन्ततो–आ मिल गया क्या; विळुप्पमुम्–सभ्यता और; ऑळुक्कम् तानुम्–सदाचरण; मॅलियवर् पालतेयो–निर्बलों के लिए ही विहित हैं क्या; वलियवर्–बलवान; मॅलिवु चॅय्ताल्–नीच काम करें; पुकळ् अन्रि–यश के सिवा; वचैयुम् उण्टो–निन्दा (नहीं) होगी (शायद) क्या । ३०९

अपरिमित दयावान ! शब्दायमान समुद्रमध्य स्थित भूलोक में क्या रेंगते चलनेवाले वानरों पर ही कलि (नाश का) काल आ छा गया ? सभ्यता (श्रेष्ठता) सदाचार आदि निबलों के लिए ही विहित हैं ? बलवान लोग नीच काम करें तो यश मिलेगा और भर्त्सना नहीं होगी न ? । ३०९

कूट्टॊरु वरैयुम् वेण्डाक् कॊर्र्व पॅर्र् तादै
पूट्टिय शॅल्व माङ्गोर् तम्बिक्कुक् कॊडुत्तुप् पोन्दु
नाट्टॊरु करुमञ् जॅय्दाय् यॅम्बिक्किव् वरशै नल्हिक्
काट्टॊरु करुमञ् जॅय्दाय् करुमन्दा निदन्मे लुण्डो 310

कूट्टु–सहायक; ऑरुवरैयुम्–किसी की; वेण्टा–अपेक्षा नहीं करनेवाले; कॊर्र्व–विजयराघव; पॅर्र् तातै–जनक ने; पूट्टिय चॅल्वम्–जो सम्पत्ति दिलायी; आङ्कु–उसे वहाँ; ओर्–श्रेष्ठ; तम्पिक्कु–भाई को; कॊटुत्तु–देकर; नाट्टु–जनपद में; ऑरु करुमम् चॅय्ताय्–एक (अनोखा) कार्य किया; पोन्तु–जाकर; ऍम्पिक्कु–मेरे भाई को; इ अरचै–इस राज्य को; नल्कि–देकर; काट्टु–जंगल में; ऑरु करुमम् चॅय्ताय्–एक कार्य किया; इतन् मेल्–इससे बड़ा; करुमम् तान् उण्टो–कर्म कोई होगा क्या । ३१०

किसी दूसरे की सहायता की अपेक्षा न करनेवाले विजयी ! तुम्हारे जनक ने तुम्हें स्वतः जो सम्पत्ति दी, उसे तुमने अपने श्रेष्ठ भाई को देकर जनपद में एक अनोखा कार्य कर दिखाया । फिर मेरे भाई को यह राज्य देकर यहाँ जंगल में एक कार्य किया । इससे बढ़कर कोई काम हो सकता है क्या ? । ३१०

अऱैहऴ़ ललङ्गल् वीररक् कडुत्तदे पुरिव दाण्मैत्
तुऱैयॅन्न लायिऱ् ऱन्ऱे तॊन्मैयि नन्नूऱ् कॅल्लाम्
इऱैवन्नी यॅन्नैच् चॅय्द तीदॅनि लिलङ्गै वेन्दे
मुऱैयल शॅय्दा नॅन्ऱु मुनिदियो मुनिवि लादाय् 311

मुनिवु इलाताय्–क्रोधविहीन; अऱै कऴ़ल्–शब्द करनेवाली पायल के धारक; अलङ्कल्–मालाधारी; वीरर्क्कु–वीरों के लिए; अटुत्तते–योग्य (काम) ही; पुरिवतु–करना; आण्मै तुऱै ऍन्नल्–पुरुषोचित काम कहना; आयिऱ्ऱु अन्ऱे–होता है न; तॊन्मैयिन्–प्राचीन; नल् नूऱ्कु–श्रेष्ठ शास्त्रों के; ऍल्लाम्–सबके; इऱैवन् नी–नायक तुमने; ऍन्नै चॅय्ततु ईतु–मेरे प्रति जो किया, यह; ऍनिल्–तो; इलङ्कै वेन्तै–लंकापति से; मुऱै अल–अनुचित काम; चॅय्तान् ऍन्ऱु–किया, ऐसा; मुनितियो–गुस्सा करोगे क्या। ३११

हे क्रोधविहीन राम! शब्द करती रहनेवाली पायलधारी वीर के लिए योग्य काम करना ही पुरुषोचित माना जायगा न? तुम सभी प्राचीन शास्त्रों के नायक हो! तुमने यह काम कर दिया; फिर लंकापति के सम्बन्ध में 'अनुचित व्यवहार किया' कहकर कोप करोगे क्या? । ३११

इरुवर्पो रॅदुरुङ् गालै यिरुवरु नल्लुऱ् ऱारे
ऒरुवर्मेऱ् करुणै तूण्ड वॊरुवर्मे लॊळित्तु निन्ऱु
वरिशिलै कुऴ़ैय वाङ्गि वायम्बु मरुमत् तॅय्दल्
तरुममो पिऱिदॊन् ऱामो तक्किल दॅन्नुम् बक्कम् 312

इरुवर्–दो; पोर् ऍतिरुम् कालै–युद्ध में परस्पर जब लड़ते है तब; इरुवरुम्–दोनों; नल् उऱ्ऱारे–(समान रूप से) अच्छे (मित्र) हैं ही; ऒरुवर् मेल्–उनमें एक पर; करुणै तूण्ट–करुणा के प्रेरित करने पर; ऒळित्तु–छिपा; निन्ऱु–रहकर; ऒरुवर् मेल्–(दूसरे) एक पर; वरि चिलै–सबन्ध धनु; कुऴ़ैय–झुकाते हुए; वाङ्कि–डोरा (खींचकर); वाय् अम्पु–तीक्ष्णमुखी शर को; मरुमत्तु–मर्मस्थान पर; ऍय्तल्–चलाना; तरुममो–धर्म (हो सकता) है; पिऱितु–इतर; ऒन्ऱु–एक; आमो–होगा; तक्किलतु–अनुचित; ऍन्नुम् पक्कम्–की तरफ़ ही (माना) जायगा। ३१२

जब दो मनुष्य, जो हमारे लिए समान रूप से अपरिचित हैं, आपस में युद्ध करते है, तब दोनों समान रूप से हमारे होते है। तब एक के प्रति करुणा करके, उससे प्रेरित होकर आड़ में से सबन्ध धनु को झुकाकर तीक्ष्णमुखी बाण को दूसरे के मर्म पर चलाना धर्म होगा या धर्मेतर? वह अवश्य अनुचित, अधर्म के पक्ष में ही माना जायगा। ३१२

* वीर मन्ऱु विदियन्ऱु मॅय्म्मैयिन्
वार मन्ऱुनिन् मण्णिनुक् कॅन्नुडल्

बार मन्रु पहैयन्रु पण्बोळिन्
दीर मन्रियि दॆन्शॆय्द वाऱ्रो 313

वीरम् अन्रु—वीरता (का काम) नहीं है; विति अन्रु—युद्धधर्म की विधि नहीं; मॆय्म्मैयिन्—सत्य की; वारस् अन्रु—सीमा में भी नहीं; निन् मण्णिनुक्कु—तुम्हारे इस राज्य में; ॲन् उटल्—मेरा शरीर; पारम् अन्रु—भार नहीं है; पकै अन्रु—शत्रुता नहीं; पण्पु ओळिन्तु—शील त्यागकर; ईरम् अन्रि—स्नेह-हीन होकर; इतु—यह; ॲन् चॆय्त आऱु—क्या करने का प्रकार है। ३१३

तुम्हारा व्यवहार वीरता का परिचायक नहीं है; न ही वह विधिसम्मत है। वह सत्य की सीमा के अन्दर भी नहीं आता। तुम्हारे राज्य की भूमि पर मेरा शरीर असह्य भार भी नहीं बना था। मैं तुम्हारा शत्रु भी तो नहीं। अपना शील-स्वभाव छोड़कर, आर्द्रता (दया) का भाव त्यागकर तुमने यह जो कार्य किया है वह किस काम में आयगा ? । ३१३

इरुमै नोक्किनिन् ड्रियावर्क्कु मॊक्किन्ऱ
अरुमै याऱ्रलन् ऱोवरङ् गाक्किन्ऱ
पॆरुमै यॆन्बदि दॆन्बिळै पेणल्विट्
टॊरुमै नोक्कि यॊरुवर् कुदवलो 314

इरुमै—दोनों तरफ़; नोक्कि निन्रु—समान रूप से देखकर; यावर्क्कुम् ऑक्किन्ऱ—सर्वमान्य; अरुमै—श्रेष्ठ कर्म; आऱ्रल् अन्ऱो—करना न; अऱम् काक्किन्ऱ—धर्म-रक्षण करने का; पॆरुमै ॲन्पतु—बड़प्पन है; पिळै पेणल् विट्टु—दोष से बचकर; ऑरुमै नोक्कि—एकतरफ़ा होकर; ऑरुवर्कु उतवल् ओ—एक की सहायता करना ही; इतु ॲन्—यह क्या (न्याय) है। ३१४

दोनों पक्षों का विचार करके सर्वमान्य रीति से श्रेष्ठ व्यवहार करना ही न धर्मपालन का गौरवमय कार्य होगा! दोषपूर्ण कार्य से वचना छोड़कर पक्षपाती बनकर किसी एक की सहायता करना (ऐसा माना जायगा) क्या ? यह क्या नीति है ? । ३१४

शॆयलैच् चॆऱ्ऱ पहैतॆरु वान्ऱॆरिन्
दयलैप् पऱ्ऱित् तुणैयमैन् दायॆनिन्
पुयलैप् पऱ्रुमव् वॆङ्गरि पोक्कियोर्
मुयलैप् पऱ्रुव दॆन्न मुयऱ्चियो 315

चॆयलै चॆऱ्ऱ—(तुम्हारे गृहस्थी-सम्बन्धी) कार्य को जिसने मिटाया; पकै—उस शत्रु को; तॆरुवान्—मारने के लिए; तॆरिन्तु—सोचकर; अयलै पऱ्रि—एक पराये को (मित्र के रूप में) लेकर; तुणै अमैन्ताय्—उसके सहायक बने; ॲनिल्—तो; पुयलै पऱ्रुम्—मेघ को खींचनेवाले; अ वॆम् करि—उस भयंकर हाथी को; पोक्कि—जाने देकर; ओर् मुयलै—एक खरगोश को; पऱ्रुवतु—मित्र बना लेना; ॲन्न मुयऱ्चियो—कैसा प्रयास है। ३१५

तुम्हारी गृहस्थी को मिटाकर जो गया उस शत्रु को मारना चाहते हो। उपाय सोचकर तुमने अन्य की सहायता ली है। तुमने उसको अपना सहायक बना लिया है। ठीक ! तो मेघ को भी छीन लेनेवाला भयंकर गज है— उसको (या मेघ-सम हाथी को भी पछाड़नेवाले सिंह को —यानी मुझे) छोड़कर एक खरगोश को (मित्र के रूप में) पकड़ लेना कैसा (बुद्धिमत्ता का) प्रयास है ? । ३१५

❀ कारि	यन्ऱ	निऱत्त	कळङ्गमॊन्ऱ
ऊरि	यन्ऱ	मदिक्कुळ	दामॆन्बर्
सूरि	यन्मर	बुक्कुमॊर्	तॊन्मऱु
आरि	यन्बिऱन्	दाक्किनै	यामरो 316

ऊर् इयन्ऱ–संचारी; मतिक्कु–चन्द्र में; कार् इयन्ऱ निऱत्त–काला रंग वाला; कळङ्कम् ऑन्ऱु–कलंक एक; उळतु आम्–रहता है; ऍन्पर्–कहते हैं; चूरियन्–सूर्य के; तॊल् मरपुक्कुम्–प्राचीन वंश के लिए; ओर् मऱु–एक कलंक; आरियन्–श्रेष्ठ पुरुष (तुमने); पिऱन्तु—पैदा होकर; आक्किनै आम्–लगा लिया है। ३१६

संचरणशील चन्द्र में काले रंग का कलंक है। यह सब लोक कहते हैं। (सूर्य में नहीं है, पर) प्राचीन सूर्यकुल पर भी श्रेष्ठ तुमने पैदा होकर धब्बा लगा दिया है क्या ? । ३१६

मऱ्ऱॊ	रुत्तन्	वलिन्दऱै	कूववन्
दुऱ्ऱ	वॆन्नैयॊ	ळित्तुयि	रुण्डनी
इऱ्ऱि	दऱ्पि	न्ऱिहलरि	येऱॆन्न
निऱ्ऱि	पोलुङ्	गिडन्द	निलत्तरो 317

मऱ्ऱु ऑरुत्तन्–दूसरे किसी (एक) के; वलिन्तु–ज़बरदस्ती से; अऱै कूव–(युद्ध के लिए) ललकारने पर; वन्तु उऱ्ऱ–जो आया उस; ऍन्नै–मुझे; ऑळित्तु–छिपा रहकर; उयिर् उण्ट नी–प्राण खा लिये ऐसे तुम; इऱ्ऱु इतन् पिन्–इस घटना के बाद; किटन्त निलत्तु–जिस पर मैं पड़ा हूँ, उस भूमि पर; इकल्–युद्ध में चतुर; अरि एऱु ऍन्न–नरकेसरी के समान; निऱ्ऱि पोलुम्—(शान के साथ) खड़े भी रहो क्या। ३१७

किसी ने (जो तुम्हारे किसी नाते का नहीं) मुझे ज़बरदस्ती आकर युद्ध के लिए ललकारा और मैं युद्ध करने आया। ऐसे मेरे प्राणों को तुमने छिपे रहकर हर लिया। यह करने के बाद तुम, जहाँ मैं (शराहत हो) पड़ा हूँ, वहाँ आकर खड़े हो, मानो युद्ध-चतुर नरकेसरी हो ! । ३१७

❀ नूलि	यऱ्कैयु	नुङ्गुलत्	तन्दैयर्
पोलि	यऱ्कैयुम्	शीलमुम्	पोऱ्ऱलै

वालि यैप्पडुत् तायलै सन्नर
वेलि यैप्पडुत् ताय्विड्ल् वीरने 318

नूल् इयऱ्कैयुम्–शास्त्रोक्त क्रमों को; नुम् कुल–तुम्हारे कुल के; तन्तैयर् पोल्–पुरखों के समान; इयऱ्कैयुम्–उनके स्वभाव को; चीलमुम्–और उनके शील को; पोऱ्ऱलै–मानकर नहीं चले; वालियै पट्टुत्ताय् अलै–वाली को नहीं मारा है; मन् अऱम्–राजधर्म की; वेलियै–रक्षक बाड़ को; पट्टुत्ताय्–नष्ट कर दिया है; विऱल् वीरने–प्रतापी वीर हो क्या। ३१८

शास्त्रों में जो कहे गये हैं वे गुण, तुम्हारे कुल के पुरखों से प्राप्त गुण, शील आदि को तुम मानकर नहीं चले। तुमने वाली को मारा नहीं है; पर वास्तव में राजधर्म की रक्षक बाड़ को मिटा दिया है। क्या तुम सचमुच प्रशंसायोग्य प्रतापी वीर हो ? । ३१८

❀ तार मऱ्ऱीरु वन्गॊळत् तन्गैयिल्
पार वेंज्जिलै वीरम् बळिप्पदे
नेरु मन्ऱु मऱैन्दु निरायुदन्
मार्बि लॆय्यवो विल्लिहल् वल्लदे 319

तारम्–(तुम्हारी) पत्नी को; मऱ्ऱु ऑरुवन्–किसी अन्य ने; कॊळ–हर लिया, तब; तन् कैयिल्–अपने हाथ में; पारम् वॆम् चिलै–भारी और भयंकर धनु; वीरम्–वीरता का; पळिप्पतु–परिहास करता है; नेरुम् अन्ऱु–सामने से नहीं; मऱैन्तु–छिपकर; निरायुतन् मार्पिन्–निरायुध के वक्ष में; ऍय्यवो–(शर) चलाने के कारण क्या; विल् इकल–धनुर्युद्ध में; वल्लतु–समर्थ कहा जाना। ३१९

तुम्हारी पत्नी को किसी ने हर लिया। तब तुम्हारे हाथ का भारी भयंकर धनु तुम्हारी वीरता का परिहास कर रहा है! (तुम्हारा कोदण्ड-पाणी नाम ही किस काम का ?) सामने से नहीं, आड़ में रहकर आयुध-हीन रिक्त हाथ मेरे वक्ष में शर चलाना ही धनुर्युद्ध में तुम्हारे सामर्थ्य का परिचायक बनेगा ? । ३१९

❀ ऍन्ऱु तानु मॆयिऱु पॊडिपडत्
तिन्ऱु कान्ऱु विळिवळित् तीयुह
अन्ऱु वालि यनैयन कूऱिनान्
निन्ऱ वीर निनैय निहऴ्त्तुवान् 320

ऍन्ऱु–ऐसा; अ वालि तानुम्–उस वाली ने; ऍयिऱु पॊटि पट–दाँतों को चूर्ण बनाते हुए; तिन्ऱु–पीसकर; विऴि वऴि–आँखों द्वारा; ती कान्ऱु उक–आग प्रकट होकर छितर जाय ऐसा; अन्ऱु–तब; अनैयन–वे बातें; कूऱिनान्–कहीं; निन्ऱ वीरन् तानुम्–सामने स्थित वीर भी; इनैय–यों; निकऴ्त्तुवान्–कहने लगे। ३२०

वाली ने दाँत चूर-चूर हो जायँ, ऐसा दाँत पीसते हुए, आँखों से

अंगारे निकाल छितराते हुए ऐसी बातें कहीं। तब वहाँ जो स्थित थे वे श्रीराम भी यों बोले। ३२०

पिलम्बुक	कायनॆंडु	नाळ्पॆय	रायॆन्नाप्
पुलम्बुऱ्	ऱुन्वऴिप्	पोदलुऱ्	ऱान्ऱऩॆक्
कुलम्बुक्	कान्ऱ	मुदियर्	कुऱिक्कॊळीइ
अलम्बुत्	तारव	नीयर	शॆन्ऱलुम् 321

पिलम् पुक्काय्–बिल में (तुमने) प्रवेश किया; नॆंटु नाळ्–बहुत दिन तक; पॆयराय्–नहीं लौटे; ऎन्ना–इसलिए; पुलम्पु उऱ्ऱु–विलाप करके; उन् वऴि–तुम्हारे मार्ग में; पोतल् उऱ्ऱान् तनॆ–जाने को उद्यत (सुग्रीव) को; कुलम् पुक्कु–तुम्हारे कुल में जनमे हुए; आन्ऱ मुतियर्–श्रेष्ठ वृद्ध लोग; कुऱि कॊळीइ–उसका संकल्प जानकर; अलम्पु तारव–हिलती मालाधारी; नी अरचु–तुम राजा हो; ऎन्ऱलुम्–कहने पर। ३२१

(मायावी का पीछा करते हुए) तुम बिल में घुसे। बहुत दिनों तक लौट नहीं आये। यह देखकर सुग्रीव दुःखी हुआ और विलाप करते हुए तुम्हारे पीछे तुम्हारे मार्ग में जाने को उद्यत हुआ। तब तुम्हारे कुल के वृद्ध लोगों ने उसका आशय ताड़ लिया। उससे कहा कि हिलनेवाली माला से शोभित सुग्रीव ! तुम हमारे राजा हो। तब। ३२१

वान	माळवॆन्	ऱम्मुनॆ	वॆत्तवन्
तानु	माळक्	किळॆयु	मिऱत्तडिन्
दियानु	माळ्वॆनि	रुन्दर	शाळ्हिलॆन्
ऊन	मान	वुरॆपहर्न्	दीरॆन 322

ऎन् तम् मुनॆ–मेरे अग्रज को; वातम् आळ वॆत्तवन् तानुम्–स्वर्गपालन करने जिसने भेज दिया, वह मायावी; माळ–मर जाए; किळॆयुम् इऱ–और उसका परिवार मिट जाय, ऐसा; तटिन्तु–मारकर; यानुम्–मैं भी; माळ्वॆन्–मर जाऊँगा; इरुन्तु–(जीवित) रहकर; अरचु–राज्य; आळ्किलॆन्–नहीं पालूँगा; ऊनम् आन–निकृष्ट; उरॆ–बात; पकर्न्तीर्–बतायी; ऎन्न–कहने पर। ३२२

सुग्रीव ने कहा कि मेरे बड़े भाई को इस राक्षस ने स्वर्ग में उसका पालन करने के लिए भेज दिया। उसको उसके परिवारों के साथ मार दूँगा और स्वयं भी मर जाऊँगा। जीवित रहकर शासन न करूँगा। तुम लोगों ने निकृष्ट बात की सलाह दी है। मैं नहीं मानूँगा। ३२२

पऱ्ऱि	यान्ऱ	पडॆत्तलॆ	वीररुम्
मुऱ्ऱु	णर्न्द	मुदियरु	मुन्बरुम्
ऎऱ्ऱु	ऱुम्मर	शॆय्दिलॆ	येलॆनक्
कॊऱ्ऱ	नन्मुडि	कॊण्डिलन्	कोदिलान् 323

आन्ऱ्-श्रेष्ठ; पटै तलै वीररुम्-सेनापति वीरों ने और; मुऱ्ऱुणर्न्त-पूर्णज्ञ; मुतियरुम्-वयोवृद्ध लोगों ने और; मुन्परुम्-अन्य अग्रुओं ने; पऱ्ऱि-पकड़कर; अरचु अँय्तिलैयेल्-राज्य न लोगे तो; ॲऱ्ऱु उऱुम्-क्या गति (वानरों को) प्राप्त होगी; ॲन्त-कहा, तब भी; अ कोतु इलान्-उस निर्दोष (सुग्रीव) ने; कोऱ्ऱम् नल् मुटि-राजकीय श्रेष्ठ किरीट को; कोण्टिलन्-स्वीकार नहीं किया। ३२३

उसको सुनकर उत्तम सेनापति वीरों, पूर्णज्ञानी वयोवृद्ध लोगों और अन्य मुखियाओं ने मिलकर उसको पकड़ लिया और कहा कि सोचो ! अगर तुम राज्य न लोगे तो वानरों की गति क्या होगी ? तब भी उस निरपराध सुग्रीव ने राजकीय श्रेष्ठ मुकुट को नहीं अपनाया। ३२३

वन्द निन्नै वणङ्गि महिऴ्न्दनन्
ॲन्दै ॲन्कणि ऩत्तव राऱ्ऱलिन्
तन्द तुन्नर शॅन्ऱु तरिक्किलेन्
मुन्दै युऱ्ऱदु शॊल्ल मुनिन्दुनी 324

वन्त निन्नै-(फिर) आये हुए तुमको; मकिऴ्न्तनन्-हर्षित होकर; वणङ्कि-नमस्कार करके; ॲन्तै-पितृतुल्य; इत्तत्तवर्-समूह के लोगों ने; ॲन् कण्-मेरे पास; आऱ्ऱलिल्-(तर्क के) ज़ोर से; तन्त-जो सौंपा; उन् अरचु-उस तुम्हारे राज्य को; तरिक्किलेन्-वहन नहीं किया; ॲन्ऱु-ऐसा; मुन्तै उऱ्ऱतु-पूर्व-वृत्तान्त को; चॊल्ल-कहा, तब भी; नी-तुम; मुनिन्तु-कुपित होकर। ३२४

फिर तुम लौट आये। तुमको लौट आये देखकर सुग्रीव अपार हर्षित हुआ। उसने तुमको नमस्कार करके कहा कि पिता-सम मेरे भाई ! हमारे समूह के वानरों ने तर्क के ज़ोर से मेरे पास यह राज्य सौंपा। पर तुम्हारा वह राज्य मैंने नहीं लिया। इस तरह उसने पूर्ववृत्तान्त सुनाया। पर तुम नहीं माने और कुपित हुए। ३२४

कॊल्ल लुऱ्ऱनै युम्बियैक् कोदवऱ्
किल्लै ॲन्ब दुणर्न्दु मिरङ्गलै
अल्लल् शॆय्य लुनक्कंब यम्बिऴै
पुल्ल लॆन्ऩवुम् पुल्ललै पॊङ्गिनाय् 325

उम्पियै-अपने भाई को; कॊल्लल् उऱ्ऱनै-निहत करने लगे; अवऱ्कु-उसका; कोतु इल्लै-कोई अपराध नहीं; ॲन्पतु-यह; उणर्न्तुम्-जानकर भी; इरङ्कलै-दया नहीं की; अल्लल् चॆय्यल्-त्रास मत दो; उनक्कु अपयम्-तुम्हारी शरण हूँ; पिऴै पुल्लल्-मुझ पर अपराध मत लगाओ; ॲन्ऩवुम्-प्रार्थना करने पर भी; पुल्ललै-नहीं माने; पॊङ्किनाय्-उबल पड़े। ३२५

कोप करके तुम अपने भाई को मारने लगे। वह निरपराध है, यह जानकर भी तुमने दया नहीं दिखाई। उसने विनय की कि मुझे त्रास मत

दो। मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। मुझे अपराधी मत मानो। फिर भी तुमने उसकी बात नहीं मानी और उस पर कोप दिखाया। ३२५

ऊऱ्ऱ	मुऱ्ऱुडै	यानुन्नक्	कारमर्
तोऱ्ऱु	मंन्ऱु	तॉऴुदुयर्	कैयनैक्
कूऱ्ऱ	मुण्णक्	कॊडुप्पॆन्न्	ऍण्णिनाय्
नाऱ्ऱि	शैक्कुम्	पुऱत्तैयु	नण्णिनान् 326

ऊऱ्ऱम्–बल; मुऱ्ऱु उडैयान्–पूर्ण रखनेवाले; उन्नक्कु–तुम्हारे सामने; आर् अमर् तोऱ्ऱम्–होनेवाले इस युद्ध में हारा; ऍंन्ऱु–विनय करके; तॉऴुतु उयर्–अंजलिबद्ध और ऊपर उठाए हुए; कैयनै–हाथों वाले को; कूऱ्ऱम् उण्ण–यम को खाने; कॊटुप्पॆन्–दे दूंगा; ऍंन्ऱु–ऐसा; ऍण्णिनाय्–सोचा (तुमने); नाल् तिचैक्कुम्–(वह) चारों दिगन्तों के; पुऱत्तैयुम्–उस पार को भी; नण्णिनान्–गया। ३२६

सुग्रीव ने यह भी कहा कि तुम्हारे पास सम्पूर्ण बल है। हमारे बीच हुए इस युद्ध में मैं हार मान लेता हूँ। उसने यह कहकर हाथ जोड़े और नमस्कार की मुद्रा में ऊपर उठाये। तुमने उसे यम का भोजन बनाने का संकल्प किया। वह भागा और दिगन्तों के पार के प्रदेशों में जा पहुँचा। ३२६

अन्न	तन्मै	यऱिन्दु	मरुळलै
पिन्न	वन्निव	नॆन्बदुम्	पेणलै
वन्नि	तान्निडु	शाब	वरम्बुडैप्
पॊन्म	लैक्किव	नण्णलिऩ्	पोहलै 327

अन्न तन्मै–उसकी वैसी स्थिति; अऱिन्तुम्–जानकर भी; अरुळलै–दया नहीं दिखाई; इवन् पिन्नवन्–यह अनुज है; ऍंन्पतुम्–यह बात भी; पेणलै–नहीं मानी; वन्नि तान्–महर्षि (मतंग) के; इटु–दिये हुए; चापम् वरम्पु उटै–शाप की सीमा के अन्तर्गत; पॊन् मलैक्कु–सुन्दर ऋष्यमूक पर्वत को; इवन् नण्णलिन्–यह आया, इसलिए; पोकलै–नहीं गये (तुम)। ३२७

वह भय से भागा —यह जानते हुए भी तुमने दया नहीं की। 'आखिर यह मेरा अनुज है!' यह नाता भी तुमने नहीं माना। यह स्थान मतंग मुनि (वर्णी का अपभ्रंश रूप प्रयुक्त है —अतिवर्णी के अर्थ में।) के शाप से निर्दिष्ट सीमा के अन्दर यह ऋष्यमूक पर्वत पड़ा है। वह उधर पहुँच गया, इसलिए तुम उधर नहीं गये। ३२७

ईर	मावदु	मिऱ्पिऱप्	पावदुम्
वीर	मावदुङ्	गल्वियिन्	मॆय्न्नॆऱि

वार मावदु मऱ्ऱॊरु वऩ्बुणर्
तार मावदॆऩ् ताङ्गुम् तरुक्कदो 328

ईरम् आवतुम्–दया जो है; इल् पिऱप्पु आवतुम्—कुलीनता जो है; वीरम् आवतुम्–वीरता जो है; कल्वियिऩ्–विद्या द्वारा; मॆय् नॆऱि—सच्चे धर्ममार्ग की; वारम् आवतुम्–श्रेष्ठता जो है; मऱ्ऱु ऒरुवऩ्–(वह) किसी दूसरे की; पुणर्–भोग की हुई; तारम् आवतॆ–पत्नी को; ताङ्कुम्–अपना बना लेने का; तरुक्कु अतो–घमण्ड होगा क्या। ३२८

दया, कुलीनता, वीरता, शिक्षा द्वारा प्राप्त सदाचार, निष्ठा —इन सबमें परोपभुक्त दारा के ग्रहण को सहने की शक्ति है क्या ? । ३२८

मऱऩ्दि ऱम्बल् वलियमॆ नामतम्
पुऱऩ्दि ऱम्ब लॊळियवर्प् पॊङ्गुदल्
अऱऩ्दि ऱम्ब लरुङ्गडि मङ्गैयर्
तिऱऩ्दि ऱम्ब ऱॆळिवुडै योर्क्कॆलाम् 329

तॆळिवु उटैयोर्क्कु ऎलाम्–सुलझे हुए विचार वाले सभी के लिए; अरुम् कटि–श्रेष्ठ गृहस्थी के संरक्षण में रहनेवाली; मङ्कैयर् तिऱम्–स्त्रियों के सम्बन्ध में; तिऱम्पल्–अतिक्रमण; वलियम् ऎऩा–हम वली हैं, समझकर; मऱम् तिऱम्पल्–वीरता का दुरुपयोग; मतम् पुऱम् तिऱम्पल्–अन्तःकरण की उपेक्षा करना; ऒळियवर् पॊङ्कुतल्–निर्बलों पर क्रोध करना; अऱम् तिऱम्पल्–धर्म के विपरीत (कार्य) हैं। ३२९

सभी सद्विवेकियों के लिए गृहस्थी के संरक्षण में रहनेवाली स्त्रियों के प्रति अतिक्रम का व्यवहार करना, अपने बल के घमण्ड में अन्तःकरण का उल्लंघन करना, निर्बलों पर उबल पड़ना —ये काम अधार्मिक हैं। ३२९

दरुम मिऩ्ऩ तॆऩुऩ्दहैत् तऩ्मैयुम्
इरुमै युन्दॆरिन् दॆण्णलै यॆण्णिनाल्
अरुमै युम्बिदऩ् नारुयिर्त् तेवियैप्
पॆरुमै नीङ्गिड वॆय्दप् पॆऱुदियो 330

तरुमम् इऩ्ऩतु–धर्म यह है; ऎऩुम्–ऐसा इंगित; तकै तऩ्मैयुम्–उसकी विशेष गति; इरुमैयुम्–और इह-पर दोनों; तॆरिन्तु–खूब विश्लेषण करके; ऎण्णलै–तुमने नहीं सोचा; ऎण्णिनाल्—सोचा होता तो; अरुमै उम्पि तऩ्—प्यारे अनुज की; आर् उयिर् तेवियै–प्राणप्यारी पत्नी को; पॆरुमै नीङ्किट–गौरव त्यागते हुए; ऎय्त पॆऱुतियो–हथिया पाओगे क्या। ३३०

तुमने धर्म, उसकी श्रेष्ठता, पाप-पुण्य, इह-पर —इनका विचार नहीं किया। अगर किया होता तो अपने प्यारे अनुज की पत्नी को अपनी बनाकर गौरव खोते क्या ? । ३३०

आद लानु मवन्नॆन्क् कारुयिर्क्
काद लानॆन लानुनिर् कट्टनॆन्
एदि लारैयु मॆळियरॆन् ऩारैयुम्
तीदु तीर्प्पदॆन् शिन्दैक् करुत्तरो 331

आतलानुम्–इसीलिए; अवन्–वह (सुग्रीव); ऍन्नक्कु–मेरा; आर् उयिर्–प्यारे प्राण-सम; कातलान्–मित्र है; ऍन्नलानुम्–उससे भी; निन् कट्टनॆन्–तुमको मिटाया; एतु इलारैयुम्–निरपराधों को और; ऍळियर्–दीन; ऍन्नारैयुम्–लोगों को; तीतु तीर्प्पतु–हानि से बचाना; ऍन् चिन्तै करुत्तु–मेरे मन का संकल्प है। ३३१

इन कारणों से और वह मेरा प्राणप्यारा मित्र है —इस नाते मैंने तुम्हें मारा। निर्दोष और निर्बल लोगों को हानि से बचाना मेरा संकल्प है। ३३१

पिळैत्त तन्मै यिदुवॆनप् पेरॆळिल्
तळैत्त वीर नुरैशॆयत् तक्किला
विळैत्त वालि यियल्बल वित्तुणै
विळैत्ति ऱत्तॊळि लॆन्न विळम्बुवान् 332

पिळैत्त तन्मै–अपराध करने का प्रकार; इतु ऍन–यह है ऐसा; पेर् ऍळिल्–बड़ी सुन्दरता से; तळैत्त वीरन्–पूर्ण वीर श्रीराम के; उरै चॆय–कहने पर; तक्कु इलातु–अनुचित; इळैत्त–जिसने किया; वालि–वाली; इ तुणै–इतने; इयल्पु अल–(हमारे सम्बन्ध में) साध्य नहीं हैं; विळै तिऱम्–मनमाना; तॊळिल्–काम करना ही; ऍन्न विळम्पुवान्–कहकर समझाने लगा। ३३२

यही तुम्हारा अपराध है। —ऐसा अतिसुन्दर श्रीराम ने वाली को बताया। अनुचित आचरण वाले वाली ने उत्तर मे कहा कि ये सब धर्म हमारी जाति के योग्य नहीं है। मनमाना करना ही हमारा धर्म है। वह आगे बोला। ३३२

ऐय नुङ्ग ळरुङ्गुलक् कऱ्पिऩप्
पॊय्यिन् मङ्गैयर्क् केय्न्द पुणर्च्चिपोल्
शॆय्दि लन्नॆमैत् तेमलर् मेलवन्
ऍय्दि नॆय्दिय दाह वियऱ्ऱिनान् 333

ऐय–प्रभु; नुङ्कळ्–तुम लोगों की; अरुम् कुल–श्रेष्ठ जाति के; कऱ्पिन्–पातिव्रत्य पर आधारित; अ पॊय् इल् मङ्कैयर्क्कु–उन असत्यहीन स्त्रियों के; एय्न्त–योग्य; पुणर्च्चि पोल्–विवाह-मिलन के समान; ऍमै–हमको; तेमलर् मेलवन्–दिव्य कमलासन ब्रह्मा ने; चॆय्तिलन्–(संभोग-विधान) नहीं दिया है; ऍय्तिन्–संयोग हुआ तो; ऍय्तियतु–संभोग बना, ऐसा; इयऱ्ऱिनान्–विधान बनाया है। ३३३

प्रभु ! आपकी जाति में पातिव्रत्यशीला और सच्ची (पति-भक्ति रखनेवाली) स्त्रियों के योग्य विवाह-विधान हैं। ऐसे विधान हमारे लिए कमलासन ब्रह्मा ने नहीं बनाये हैं। पर 'संयोग हुआ तो संभोग करो' का विधान ही दिया है। ३३३

मणमु मिल्लै मऱैनॆऱि वन्दन
गुणमु मिल्लैक् कुलमुदऱ् कॊत्तन
उणर्वु शॆन्ऱुऴिच् चॆल्लु मॊऴुक्कलाल्
निणमु नॆय्यु मिणङ्गिय नेमियाय् 334

निणमुम्–(शत्रु-) मांस; नॆय्युम्–और घृत; इणङ्किय–मिलकर लगे हुए; नेमियाय्–चक्रधारी; उणर्वु चॆन्ऱ उऴि–मन जहाँ गया; चॆल्लुम् ऒऴुक्कु–वहीं जाने का चरित्र है; अलाल्–उसके सिवा; मऱै नॆऱि–वेदमार्ग से; वन्तन–आये; मणमुम् इल्लै–विवाह-विधान नहीं; कुल मुतऱ्कु–तुम्हारे (मानव) कुल के; ऒत्तन–समान; कुणमुम् इल्लै–(हमारे पास) गुण भी नहीं। ३३४

शत्रुमांस और घृत से लिप्त चक्र के धारण करनेवाले वीर ! मन जहाँ प्रेरित करता है, वहीं जाना हमारा आचार है। उसके सिवा वेद-सम्मत विवाह नहीं है; न ही तुम्हारे मानवकुलोचित गुण हैं हममें। ३३४

पॆऱ्ऱि मऱ्ऱिदु पॆऱ्ऱदॊर् पॆऱ्ऱियिल्
कुऱ्ऱ मुऱ्ऱिलॆ नीयिदु कोडियाल्
वॆऱ्ऱि यऱ्ऱदॊर् वॆऱ्ऱियि नायॆनच्
चॊऱ्ऱ चॊऱ्ऱुरैक् कुऱ्ऱदु शॊल्लुवान् 335

वॆऱ्ऱि अऱ्ऱतु–(सच्ची) विजय से हीन; ऒर् वॆऱ्ऱियिनाय्–श्रेष्ठ विजयी; पॆऱ्ऱि इतु–(हमारी जाति की) स्थिति यह है; पॆऱ्ऱतु ऒर् पॆऱ्ऱियिल्–जन्म-प्राप्त धर्म के अनुसार; कुऱ्ऱम् उऱ्ऱिलॆन्–दोषयुक्त न हुआ हूँ; नी इतु कोटि–तुम इसको मन में धारण करो; ऎन–ऐसा; चॊऱ्ऱ–कहे हुए; चॊल् तुरैक्कु–वचनक्रम के; उऱ्ऱतु–योग्य उत्तर को; चॊल्लुवान्–श्रीराम देने लगे। ३३५

हे झूठे विजयी ! यह हमारी जाति को मिली रीति है। उसके अनुसार देखा जाय तो मुझ पर कोई दोष नहीं लगा है। तुम यह बात मन में धारण कर लो। वाली ने जब ऐसा कहा तो श्रीराम उसके विचारक्रम को ध्यान में रखकर योग्य उत्तर देने लगे। ३३५

नलङ्गॊ डेवरिऱ् ऱोन्ऱि नवैयऱक्
कलङ्ग लावऱ नन्नॆऱि काण्डलिन्
विलङ्ग लामै विळङ्गिय दादलान्
अलङ्ग लाय्क्कि दडुप्पद ऩ्ऱामरो 336

नलम् कॊळ्–सद्गुणी; तेवरिल्–देवों से (या के समान); तोन्ऱि–पैदा होकर;

नवै अऱ–निर्दोष; कलङ्कला–भ्रमविहीन; अऱम् नल् नॆरि–धर्म का अच्छा मार्ग; काण्टलिऩ्–जानते हो, उससे; विलङ्कु अलामै–जानवर न रहना; विळङ्कियतु–साफ़ मालूम होता है; आतलाल्–इसलिए; अलङ्कलाय्क्कु–मालाधारी तुम्हें; इतु अट्टुप्पतु अऩ्ऱु–यह उचित नहीं; आम्–होगा। ३३६

श्रेष्ठ गुण वाले देवों से (या देवों के समान) तुम पैदा हुए। निर्दोष और भ्रमरहित रीति से तुम धर्म की अच्छी गति को जानते हो। इससे साफ़ है, तुम जानवरों में नहीं हो। इसलिए, हे मालाधारी वीर! यह कार्य तुम्हारे योग्य नहीं था। ३३६

पॊऱियिऩ् याक्कैय दोपुल नोक्किय
अऱिविऩ् मेलदऩ् ऱोवऱत् ताऱुदाऩ्
नॆऱियि नोऩ्मैयै नेर्निऩ् ऱुणर्न्दनी
पॆऱुदि योपिऴै युऱ्ऱुऱु पॆऱ्ऱिदाऩ् 337

अऱत्तु आऱु ताऩ्–धर्म की गति; पॊऱियिऩ् याक्कैयतो–इन्द्रियसहित शरीर पर आश्रित रहेगी क्या; पुलऩ् नोक्किय–इन्द्रियों का आश्रय; अऱिविऩ् मेलतु अऩ्ऱो–विवेक पर स्थित है न; नॆऱियिऩ् नोऩ्मैयै–धर्ममार्ग का बल; नेर् निऩ्ऱु–सीधे प्रत्यक्ष रीति से; उणर्न्त नी–जाननेवाले तुम; पिऴै उऱ्ऱु–अपराध करके; उऱु–प्राप्त होनेवाले; पॆऱ्ऱिताऩ्–पद को; पॆऱुतियो–पाओगे क्या। ३३७

धर्म का आचरण क्या इन्द्रियों के आगार शरीर पर निर्भर रहेगा? वह तो इन्द्रियों को वश में रखनेवाली विवेकबुद्धि पर आधारित है। तुम प्रत्यक्ष रूप से धर्म की शक्ति को जानते हो। फिर अपराध करने की स्थिति को ही तुम अपनाओगे क्या? । ३३७

माडु पऱ्ऱि यिडङ्गर् वलित्तिडक्
कोडु पऱ्ऱिय कॊऱ्ऱवऩ् कूयदोर्
पाडु पॆऱ्ऱ वुणर्विऩ् पयत्तिनाल्
वीडु पॆऱ्ऱ विलङ्गुम् विलङ्गरो 338

इटङ्कर्–एक नक्र; पऱ्ऱि–पकड़कर; माटु–एक ओर; वलित्तिट–खींचता रहा, तब; पाटु पॆऱ्ऱ–उत्कृष्ट; उणर्विऩ् पयत्तिनाल्–भावना के फलस्वरूप; कोटु पऱ्ऱिय–शंख (पांचजन्य) रखनेवाले; कॊऱ्ऱवऩ्–विजयी (श्रीमहाविष्णु को); कूयतु–पुकारकर; ओर्–परम; वीटु पॆऱ्ऱ–पद जिसने प्राप्त किया; विलङ्कुम्–वह जानवर भी; विलङ्कु अरो–जानवर था क्या। ३३८

(तुम गजेन्द्र की बात जानते हो।) नक्र ने उसको पकड़ा और जल की ओर खींचा। गजेन्द्र की बुद्धि श्रेष्ठ थी। उसने पाञ्चजन्य शंख के धारक महाविष्णु को पुकारा। उसे मोक्षपद मिल गया। क्या वह भी जानवर ही माना जाय? । ३३८

शिन्दै नल्लरत्तिन्वळिच् चॆऱ्दलाल्
पॆन्दॊ डित्तिरु विन्बरि वाऱ्ऱुवान्
वॆन्दॊ ऴिऱ्ऱुऱै वीडुपॆऱ् ऱॆय्दिय
ऎन्दै युम्मॆरु वैक्कर शल्लनो 339

नल् अऱत्तिन् वळि–सद्धर्मपथ पर; चिन्तै चेरललाल्–मन गया, इसलिए; पॆन्तॊटि–स्वर्णकंकणालंकृता; तिरुविन्–श्रीलक्ष्मी (सीता) का; परिवु–दुःख; आऱ्ऱुवान्–कम करने के हेतु; वॆम् तॊऴिल् तुऱै–भयंकर (युद्ध-) कर्म में; वीटु पॆऱ्ऱु–मोक्ष प्राप्त कर; ऎय्तिय–जो गये; ऎन्तैयुम्–मेरे पिता (तुल्य) जटायु भी; ऎरुवैक्कु अरचु–गीधों के राजा; अल्लनो–नहीं थे क्या। ३३९

(जटायु की बात लो।) उनका मन श्रेष्ठ धर्मपथगामी था। इसलिए वे स्वर्णकंकणधारिणी श्रीलक्ष्मीजी सीता का दुःख कम करने गये और रावण के साथ घोर युद्धकर्म में प्रवृत्त हुए। उसमें उन्हें मोक्षपद प्राप्त हो गया। क्या वह गीधों (पक्षियों) के राजा नहीं हैं ? । ३३९

नन्ऱु तीदॆन् ऱियऱ्ऱॆरि नल्लऱि
विन्ऱि वाऴ्व दन्ऱोविलङ् गिन्नियल्
निन्ऱ नन्नॆऱि नीयऱि यात्तॆऱि
ऒन्ऱु मिन्मैयुन् वाय्मै युणर्त्तुमाल् 340

नन्ऱु तीतु ऎन्ऱु–अच्छा, बुरा यह; इयल् तॆरि–(और) उनका स्वभाव जाननेवाले; नल् अऱिवु इन्ऱि–अच्छे विवेक के बिना; वाऴ्वतु अन्ऱो–जीना न; विलङ्किन् इयल्–जानवरों का स्वभाव है; निन्ऱ नल् नॆऱि–सुस्थापित अच्छे मार्गों में; नी–तुम; अऱिया नॆऱि–जो नहीं जानते वह मार्ग; ऒन्ऱुम् इन्मै–कुछ नहीं है, यह बात; उन् वाय्मै–तुम्हारे वचन ही; उणर्त्तुम्–बता देंगे। ३४०

जानवर का लक्षण है क्या ? कौन सी बात अच्छी है, कौन सी बुरी —इसके ठीक-ठीक लक्षण के ज्ञान के विना रहना ही तो जानवरों का स्वभाव है ! इस संसार में सुस्थापित धर्म-मार्गों में तुमको अज्ञात कोई भी मार्ग नहीं है —यह तथ्य तुम्हारे वचनों से साफ़ प्रकट होता है ! । ३४०

तक्क विन्न तहादत विन्नवॆन्
ऱॊक्क वुन्नल राहि युयर्न्दुळ
मक्क ळुम्विलङ् गेमनु विन्नॆऱि
पुक्क वेलव् विलङ्गुम् बुत्तेळिरे 341

इन्न तक्क–क्या-क्या ग्राह्य हैं; इन्न तकातन–क्या-क्या अग्राह्य हैं; ऎन्ऱु–यह; ऒक्क–सबको लेकर; उन्नलर् आकि–विचार न करनेवाले बनकर; उयर्न्तु उळ–(जन्म से) उच्चता प्राप्त; मक्कळुम्–मानव भी; विलङ्के–पशु ही हैं; अ विलङ्कुम्–वे पशु भी; मनुविन् नॆऱि–मनुनीति; पुक्कवेल्–(सम्मत मार्ग में) प्रवेश करें तो; पुत्तेळिरे–देव ही (मान्य) होंगे। ३४१

जो जन्म से उत्कृष्ट मानव पैदा हुए हैं, पर यह विवेक नहीं करते कि क्या ग्राह्य है, क्या अग्राह्य और सबको तोलकर कोई सही निर्णय नहीं करते वे पशु ही हैं ! पर वे जन्मजात पशु भी मनुनीति के अनुसार चलने लगें तो वे देवों के समकक्ष होंगे। ३४१

काल ऩाऱ्ऱल् कडिऩ्द कणिच्चियाऩ्
पालि ऩाऱ्ऱिय पत्ति पयत्तलाऩ्
मालि ऩाऱ्ऱरु वऩ्बॆरुम् बूदङ्गळ्
नालि ऩाऱ्ऱलु माऱ्ऱुऴि नण्णिऩाय् 342

कालऩ् आऱ्ऱल्–यम के बल को; कटिऩ्त–जिन्होंने प्रभावहीन बनाया; कणिच्चियाऩ् पालिऩ्–उन परशुधर शिवजी के प्रति; आऱ्ऱिय–तुमने जो की; पत्ति पयत्तलाल्–उस भक्ति के फलीभूत होने से; मालिनाल्–शिवजी के सद्भाव के कारण; तरु–दत्त; वल् पॆरुम् पूतङ्कळ्–बलिष्ठ और बड़े भूतों के; नालिऩ्–चारों (अनल, अनिल, जल, थल) के; आऱ्ऱलुम्–प्रताप को; माऱ्ऱु उऴि–दूर करने की शक्ति; नण्णिनाय्–प्राप्त की (तुमने)। ३४२

तुमने काल के प्रभाव का निरसन करनेवाले शिवजी की भक्ति की। शिवजी ने तुम पर दयाभाव रखा और उसके फलस्वरूप तुममें अनल, अनिल, जल और थल —इन चारों प्रबल भूतों के बल को भी बेकार करने की शक्ति आ गयी थी। ३४२

मेव रुऩ्दरु मत्तुऱै मेविऩार्
एव रुम्बवत् तालिऴिऩ् दोर्हळुम्
ताव रुऩ्दव रुम्तम दऩ्मैशाल्
देव रुम्मुळर् तीमै तिरुत्तिऩार् 343

मेवु अरुम्–दुष्प्राप्य; तरुम तुऱै–धर्ममार्ग पर; मेविऩार् एवरुम्–लगे हुए सब कोई; पवत्ताल्–पाप के कारण; इऴिऩ्तोर्कळुम्–निकृष्ट बने हुए लोग; ता अरुम्–दोषहीन; तवरुम्–तपस्वी; तम–अपने; तऩ्मै चाल्–गुणों में उत्कृष्ट; तेवरुम्–देव (इनमें); तीमै तिरुत्तिऩार्–बुराई करनेवाले; उळर्–हैं। ३४३

सभी तरह के लोगों में महान भी हैं और क्षुद्र भी पाये जाते हैं। दुर्गम धर्मपथ के पथी, पाप के कारण पतित लोग, निर्दोष तपस्वी, अपने गुणों के कारण उच्च बने हुए देव —सबमें ऊँचे भी हैं, ओछे भी। ३४३

इऩैय दादलि ऩॆक्कुलत् तियावर्क्कुम्
विऩैयि ऩाल्वरु मेऩ्मैयुङ् गीऴ्मैयुम्
अऩैय तऩ्मै यऱिन्दु मऴित्तऩै
मऩैयिऩ् माट्चियॆऩ् ऱाऩ्मनु नीदियाऩ् 344

मनु नीतियाऩ्–मनुनीति पर चलनेवाले श्रीराम; इऩैयतु आतलिऩ्–ऐसी स्थिति

है; इसलिए; ऍ कुलत्तु यावर्क्कुम्–किसी भी जाती के सभी के लिए; मेन्मैयुम्–गौरव और; कीळ्मैयुम्–क्षुद्रता; विनैयिनाल्–उनके कर्म से; वरुम्–प्राप्त होती हैं; अनैय तन्मै–वह रीति; अरिन्तुम्–जानते हुए भी; मनैयिन्–गृहस्थी का; माट्चि–गौरव; अळित्तनै–मिटा दिया; ऍन्ड्रान्–बोले। ३४४

मनुनीति के अनुसार चलनेवाले श्रीराम ने वाली से और भी कहा—यही सच्ची स्थिति है। किसी भी कुल के किसी को भी महत्ता या क्षुद्रता उसके कर्म के अनुसार ही प्राप्त होगी। यह सब जानते हुए भी तुमने गृहस्थी का गौरव मिटा दिया। ३४४

अव्वुरै यमैयक् केट्ट वरिक्कुलत् तरशु मातूर्
शॅव्वियो यनैय दाहच् चॅरुक्कळत् तुरुत्तॅय् दादे
वॅव्विय पुळिञ नॅन्न विलङ्गिनै मरैन्दु विल्लाल्
ऍव्विय दॅन्नै यॅन्ड्रा निलक्कुव नियम्ब लुट्ड्रान् 345

अ उरै–वे वचन; अमैय–ध्यान से; केट्ट–सुनकर; अरि–वानर; कुलत्तु–कुल का; अरचुम्–राजा वाली भी; आतूर–उत्कृष्ट; चॅव्वियोय्–सदाचारी; अनैयतु आक–वही हो; चॅरु कळत्तु–युद्धभूमि में; उरुत्तु–कोप करके; ऍय्ताते–न आकर; वॅव्विय–क्रूर; पुळिञन् ऍन्न–व्याध के समान; विलङ्किनै–अलग (या पशु को); मरैन्तु–आड़ में रहकर; विल्लाल् ऍव्वियतु–धनु से शर चलाना; ऍन्नै–कैसा (न्याय) है; ऍन्ड्रान्–पूछा; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; इयम्पल् उट्ड्रान्–कहने लगे। ३४५

वाली ने श्रीराम का कहना ध्यान से सुना। कपिकुलराज ने पूछा कि उत्कृष्ट सदाचारी! तुम्हारा कहना सही रहे! पर युद्धभूमि में कोप के साथ प्रकट न होकर पशु को मारनेवाले क्रूर व्याध के समान तुमने (अलग रहकर) धनुष से शर चलाया। यह कैसा (धर्म) है? उसका उत्तर लक्ष्मण देने लगे। ३४५

मुन्बुनिन् ट्रम्बि वन्दु शरण्बुह मुरैयि लोयैत्
तॅन्बुलत् तुय्प्पॅ नॅन्ड्रु शॅप्पिनन् शॅरुवि नीयुम्
अन्बिनै युयिरुक् काहि यडैक्कल मियानु मॅन्बाय्
ऍन्बदु करुदि यण्णल् मरैन्दुनिन् ट्रॅय्द दॅन्ड्रान् 346

निन् तम्पि–तुम्हारे भाई के; मुन्पु वन्तु–पहले आकर; चरण् पुक–शरण माँगने पर; मुरै इलोयै–अधर्मी तुम्हें; तॅन् पुलत्तु–दक्षिणी प्रदेश में (यमपुरी में); उय्प्पॅन्–पहुँचा दूँगा; ऍन्ड्रु–ऐसा; चॅप्पिनन्–(श्रीराम ने) कहा; चॅरुविल्–युद्ध में; नीयुम्–तुम भी; उयिरुक्कु अन्पिनै–प्राणों के मोह में; आकि–पड़कर; यानुम् अटैक्कलम्–मैं भी शरणप्रार्थी हूँ; ऍन्पाय्–कहोगे; ऍन्पतु करुति–यह सोचकर; अण्णल्–महिमायुक्त श्रीराम का; मरैन्तु निन्ड्रु–आड़ लेकर; ऍय्ततु–चलाना; ऍन्ड्रान्–कहा। ३४६

तुम्हारे भाई ने पहले आकर श्रीराम की शरण माँगी और श्रीराम

ने वादा किया कि दुराचारी तुम्हें यमपुरी भिजवा दूँगा। युद्ध में तुम भी प्राणों के मोह में पड़कर शरण माँगोगे तो क्या किया जायगा? यही सोचकर श्रीराम ने आड़ में से शर चलाया। ३४६

कविकुलत् तरशु मन्न कट्टुरै करुत्तिऱ् कॊण्डान्
अवियुरु मनत्त नाहि यऱत्तिऱ नऴियच् चॆय्यान्
पुवियिडै यण्ण लॆन्ब वॆण्णिनिऱ् पॊरुन्द मुन्ने
शॆवियुरु केळ्विच् चॆल्वन् शॆन्नियि निऱैन्जिच् चॊन्नान् 347

कवि कुलत्तु अरचुम्–वानरकुलाधिपति ने भी; अन्न कट्टुरै–यह व्याख्या; करुत्तिल् कॊण्टान्–समझ ली; अवि उरु–शान्त; मनत्तन् आकि–मन वाला बनकर; अण्णल्–महिमामय श्रीराम; पुवि इटै–भूमि पर; अऱम् तिऱन्–धर्म की श्रेष्ठता को; अऴिय चॆय्यान्–मिटने न देंगे; ऎन्पतु–यह तथ्य; ऎण्णिनिल् पॊरुन्त–चिन्तन में आया, तो; चॆवि उरु–कर्ण द्वारा; केळ्वि चॆल्वन्–श्रवणज्ञान के धनी के; मुन्ने–सामने; चॆन्नियिन् इऱैन्चि–सिर से नमस्कार करके; चॊन्नान्–बोला। ३४७

वानरकुलाधिपति ने उनके हेतुकथन पर ध्यान दिया। बात समझी। शान्त-मन हुआ। उसके मन में यह विश्वास जगा कि महिमामय श्रीराम भूमि पर धर्म की स्थिति को बिगाड़नेवाला कोई काम नहीं करेंगे। इस तथ्य के जानने पर वाली श्रवण-ज्ञान-धन श्रीराम के सामने सिर झुकाकर नमस्कार करके बोला। ३४७

तायॆन वुयिर्क्कु नल्हित् तरुममुन् दहवुञ् जार्वुम्
नीयॆन निन्ऱ नम्ब नॆऱियिनि नोक्कु नेर्मै
नायॆन निन्ऱ वॆम्बा नवैयुऱ लुणर लामे
तीयन पॊऱुत्ति यॆन्ऱान् शिऱियन शिन्दि यादान् 348

चिऱियन चिन्तियातान्–छोटी बातों को ओर ध्यान न देनेवाला; ताय् ऎन–माता के समान; उयिर्क्कु–जीवों को; नल्कि–हित देकर; तरुमुन्–धर्म; तकवुम्–और तटस्थता; चार्वुम्–आधार; नी–आप; ऎन निन्ऱ–ऐसे विद्यमान; नम्प–नायक; नॆऱियिनिल्–श्रेष्ठ मार्ग पर; नोक्कुम् नेर्मै–स्थित होकर विचार करने की श्रेष्ठता के आधार पर; नाय् ऎन–कुत्ते के समान; निन्ऱ–रहनेवाले; ऎम् पाल्–हमारे; नवै उऱल्–दोषयुक्त होने की बात; उणरलामे–विचारणीय है क्या; तीयन–बुराइयाँ; पॊऱुत्ति–क्षमा कीजिए; ऎन्ऱान्–बोला। ३४८

वाली छोटी बातों पर ध्यान देनेवाला नहीं था। (परमपदप्राप्ति, श्रीराम की महिमा आदि के सामने अपना दुःख और क्रोध भूल गया।) हे नायक! माता के समान जीवों का हित करनेवाले! धर्म, तटस्थता और आश्रय आप ही हैं, ऐसे विद्यमान श्रीराम! धर्म-मार्ग पर स्थित रहकर विचार करनेवाले आप श्वान-सम हमारी दोषयुक्तता का विश्लेषण करेंगे क्या? हमारी बुराइयों को क्षमा कर दीजिए। ३४८

इरन्दनन् पिन्नु मॆन्दै यावदु मॆण्ण ऱेऱ्ऱाक्
कुरङ्गॆनक् करुदि नायेन् कूऱिय मनत्तुक् कॊळ्ळेल्
अरन्दैवॆम् बिऱवि वॆन्नोय्क् करुमरुन् दन्नैय वैया
वरन्दरु वळ्ळा लॊन्ऱु केळॆन्न मऱित्तुञ् जॊल्वान् 349

पिन्नुम्–फिर भी; इरन्ततन्–विनय करता हुआ; ऍन्तै–विधाता; अरन्तै–दुःखमूल; वॆम् पिऱवि ऍन्–भयानक जन्म रूपी; नोय्क्कु–रोग के; अरु मरुन्तु अन्नैय–श्रेष्ठ औषध-समान; ऐया–प्रभु; वरम् तरु–वरदायी; वळ्ळाल्–दानी; यावतुम् ऍण्णल् तेऱ्ऱा–किंचित भी विवेक न रखनेवाले; नायेन्–मुझ दास को; कुरङ्कु ऍन करुति–वानर समझकर; कूऱिय–कहे गये; मनत्तु कॊळ्ळेल्–मन में न रखिए; ऑन्ऱु केळ्–एक बात सुनिए; ऍन–ऐसा; मऱित्तुम्–आगे भी; चॊल्वान्–कहने लगा। ३४६

वाली ने यह कहकर आगे विनय की। विधाता! दुःखमूल भयंकर भवरोग के दिव्य औषध, प्रभु! याचित वरों को देनेवाले दानी! विवेक-हीन वानर हूँ आपका दास मैं। इसका विचार करके आप मेरी कही हुई बातों को मन में न रखें। और भी एक विनय है, सुनिए। ३४९

एवुहूर् वाळिया लॆय्दुना यडियनेन्
आविपोम् वेलैवा यऱिवुदन् दरुळिनाय्
मूवर्नी मुदल्वनी मुऱ्ऱुनी मऱ्ऱुनी
पावनी दरुमनी पहैयुनी युऱवुनी 350

एवु–प्रेरित; कूर् वाळियाल्–तीक्ष्ण शर से; ऍय्तु–चलाकर; नाय् अटियनेन्–श्वान से मुझ दास को; आवि पोम्–प्राणों के चलने के; वेलै वाय्–समय पर; अऱिवु तन्तु अरुळिनाय्–ज्ञान प्रदान कर दया दिखायी; मूवर् नी–आप त्रिदेव हैं; मुतल्वन् नी–उनके आदि भी आप; मुऱ्ऱुम् नी–ये सारे आप ही; मऱ्ऱुम् नी–अन्य सभी आप ही; पावम् नी–पाप आप ही; तरुमम् नी–धर्म भी आप; पकैयुम् नी–शत्रु भी आप; उऱवुम् नी–सम्बन्धी भी आप हैं। ३५०

आपने तीक्ष्ण बाण चलाकर मुझे मारा और मरते समय आकर दास को ज्ञान देकर बड़ा उपकार किया। आप त्रिदेव हैं; त्रिदेवों में आदि हैं। संसार के सारे पदार्थ आप ही हैं। अन्य भी आप ही हैं। आप पाप, धर्म, शत्रु, बन्धु सब हैं। ३५०

पुरमॆला मॆरिसॆय्दोन् मुदलिनोर् पॊरुविला
वरमॆला मुरुवियॆन् वशैयिला वलिमैशाल्
उरमॆला मुरुवियॆन् नुयिरॆला मुरुवुनिन्
शरमलाऱ् पिऱिदुवे ऱुळदरो दरुममे 351

पुरम् अलाम्–त्रिपुर सारा; ऍरि चॆय्तोन्–जिन्होंने जला दिये वे रुद्र; मुतलिनोर्–आदि देवों के; पॊरुवु इला–अनुपम; वरम् ऍलाम्–सभी वरों को;

उरुवि–दूर करके; अॅन्–मेरे; वचै इला–अनिन्द्य; वलिमै चाल्–बलयुक्त; उरम् अॅलाम् उरुवि–वक्ष सब वेधकर; अॅन् उयिर् अॅलाम्–मेरे सारे प्राणों को; उरवुम्–विद्ध करनेवाले; निन् चरम् अलाल्–आपके शर के अलावा; तरुमम्–धर्म; पिर्रितु वेरु–अन्य कोई; उळतु अरो–है क्या। ३५१

त्रिपुरदाहक शिवदेव आदिदेवताओं ने मुझे अनुपम वर दिये थे। उन सबको विफल करके, अनिंद्य और सबल मेरे वक्ष को और प्राणों को विद्ध करके जानेवाला आपका उत्तम बाण ही धर्म है। उसके सिवा धर्म अलग कहीं है क्या ? । ३५१

[अतिरिक्त पद— बड़े पराक्रमी शिवजी अपने भक्तों को उच्च वर (परमपद) दिलाने की शक्ति रखते हैं। वह आपके नाम के सदा स्मरण करने से ही उन्हें प्राप्त हुई। ऐसे आपके मैंने प्रत्यक्ष दर्शन कर लिये। फिर मेरे लिए दुर्लभ क्या है ?]

यावरु मॅवैयुमा यिरुदुवुम् बयनुमाय्
पूवुनल् वॅर्रियुमोत् तॉरुवरुम् पॉदुमैयाय्
यावनी यावदॆन् ऱर्रिविना ररुळितार्
तावरुम् पदमॅनक् करुमैयो तनिमैयोय् 352

तनिमैयोय्–अकेले देवता; यावरुम्–सब कोई और; अॅवैयुम् आय्–बस कुछ बनकर; इरुतुवुम् पयनुम् आय्–ऋतुएँ और उनके फल बनकर; पूवुम् नल् वॅर्रियुम् ऑत्तु–पुष्प और सुगन्ध के समान; ऑरुवु अरुम्–अपृथक् रहनेवाले; पोतुमैयाय्–सम रहनेवाले; नी यावन्–आप कौन हैं; यावतु–कैसे हैं; अॅन्रु–यह बात; अर्रिवितार् अरुळितार्–ज्ञान ने दिखा दी; ता अरुम् पतम्–अकलंक परमपद; अॅनक्कु अरुमैयो–मेरे लिए दुर्लभ है क्या। ३५२

अद्वितीय श्रीराम ! सब कोई, सब कुछ, ऋतुएँ और उनके फल सभी में, पुष्प मे सुगन्ध के समान समान रूप से व्याप्त रहते हैं आप। मुझे इसका ज्ञान हो गया कि आप कौन हैं और आपकी प्रकृति क्या है। अब मेरे लिए अनिंद्य परमपद भी दुर्लभ रहेगा क्या ? नहीं। ३५२

उण्डॅनुन् दरुममे युरुवमाय् निन्ऱनिन्
कण्डनॆन् मऱ्ऱिनिक् काणवॆन् कडवनो
पण्डॊडिन् ऱळवुमे यॆन्पॆरुम् वळविनै
दण्डमे यडियनेऱ् कुरुपदन् दरुवदे 353

उण्टु अॅन्नुम्–(सनातन रूप से) है ऐसा; तरुममे–धर्म ही; उरुवमाय् निन्ऱ–स्वरूप में विद्यमान; निन् कण्टनॆन्–आपके दर्शन मैंने कर लिये; मऱ्ऱु–अलावा; इति काण अॅन् कटवनो–और भी किसी के दर्शन करनेवाला बनूँगा क्या; अॅन्–मेरे; पॆरुम् पळम् विनै–बड़े और पूर्वकृत कर्म; पण्टु ऑटु–आदि से लेकर; इन्ऱु अळवुमे–आज तक के ही; तण्टमे–यह दण्ड ही; अटियनेऱ्कु–मुझ दास को; उरु पतम्–परमपद; तरुवते–दिला देगा। ३५३

धर्म के अस्तित्व को धर्मस्वरूप आपमें मैंने देख लिया। फिर आगे क्या देखना चाहूँगा ? मेरे पूर्वकृत कर्म पहले से आज़ तक ही रहे। (अब मिट गये।) आपने जो दण्ड दिया वही मुझे परमपद दिला देगा। ३५३

मऱ्ऱिनि युदवि युण्डो वाऩिऩु मुयर्न्द मानक्
कॊऱ्ऱव वुऩ्ऩै यॆऩ्ऩैक् कॊल्लिय कॊणर्न्दु तॊल्लैच्
चिऱ्ऱिऩक् कुरङ्गि ऩोडुन् दिरिवुऱच् चॆय्द चॆय्है
वॆऱ्ऱर शॆय्दि यॆम्बि वीट्टर शॆऩक्कु विट्टाऩ् 354

वाऩिऩुम् उयर्न्त–व्योम से भी उन्नत; मात कॊऱ्ऱव–सम्मान्य विजयी; ऍम्पि–मेरे छोटे भाई ने; ऍऩ्ऩै कॊल्लिय–मुझे मरवाने; उऩ्ऩै–आपको; कॊणर्न्तु–लाकर; तॊल्लै–प्राचीन; चिऱ इऩ कुरङ्किऩोटुम्–अल्प जाति के वानरों के स्वभाव के; तिरिवु उऱ–विपरीत; चॆय्त चॆय्कै–जो किया उस कार्य से; वॆऱुमै अरचु–कोरा राज्य; ऍय्ति–प्राप्त करके; ऍऩक्कु–मुझे; वीटु अरचु–परमपद का मोक्ष-राज्य; विट्टाऩ्–प्राप्त करने दिया; मऱ्ऱु इनि–इससे श्रेष्ठ कोई; उतवि–सहायता; उण्टो–हो सकती है क्या। ३५४

व्योम से भी उन्नत महिमा के विजयी स्वामी ! मेरा अनुज मुझे मारने आपको ले आया। इस कार्य द्वारा उसने क्षुद्र जाति के वानरों के स्वभाव के विपरीत एक बड़ा श्रेष्ठ काम किया है। इससे उसने स्वयं कोरा वानराधिपत्य लेकर मुझे परमपद मोक्ष का राज्य दिला दिया। इससे बढ़कर उसके हाथों क्या उपकार हो सकता है ? । ३५४

ओविय वुरुव नाये नुळदॊऩ्ऱु पॆऱुव दुऩ्बाल्
पूविय ऩऱव मान्दिप् पुन्दिवे ऱुऱ्ऱ पोऴ्दिल्
तीविऩै यियऱ्ऱु मेनु मॆम्बियैच् चीऱि यॆऩ्मेल्
एविय पहऴि यॆऩ्ऩुङ् गूऱ्ऱिऩै येव लॆऩ्ऱाऩ् 355

ओविय उरुव–चित्रसमान रूपवान; नायेऩ्–दास का; उऩ् पाल्–आपसे; पॆऱुवतु–माँग लेना; ऒऩ्ऱु उळतु–एक है; पू इयल्–पुष्पों से प्राप्य; नऱवम् मान्ति–मधु पीकर; पुन्ति–बुद्धि; वेऱु उऱ्ऱ पोऴ्तिल्–बदल जब जाती है, तब; ती विऩै इयऱ्ऱुमेऩुम्–बुरे कार्य कर लेगा तो भी; ऍम्पियै चीऱि–मेरे भाई पर गुस्सा करके; ऍऩ् मेल् एविय–मुझ पर प्रेषित; पकऴि ऍऩ्ऩुम्–शर रूपी; कूऱ्ऱिऩै–यम को; एवल्–मत चला दें; ऍऩ्ऱाऩ्–यह प्रार्थना की। ३५५

चित्र-सम रूपवान ! मुझ दास को आपसे एक याचना करनी है। पुष्पों से प्राप्य मधु को पीकर उस नशे में बुद्धि खोकर मेरा भाई अगर कोई बुरा काम करेगा, तो आप उस पर गुस्सा करके मुझ पर जो शर के रूप में यम को प्रेरित किया उसे उस पर न चलाइएगा। ३५५

इऩ्ऩ मॊऩ्ऱिऱप्प दुण्डा लॆम्बियै युम्बि माऱ्हळ्
तऩ्मुऩैक् कॊल्वित् ताऩॆऩ् ऱिहऴ्वरेऱ् ऱडुत्ति तक्कोय्

मुन्नमे मौऴिन्दा यन्ऱे यिवन्कुऱै मुडिप्प वेय
पिन्निवन् विनैयिन् शॅय्है यदनैयुम् विऴैक्क लामो 356

तफ्फोय्–उत्तम; इन्नम् ऑन्ऱु–और एक; इरप्पतु–याचना; उण्टु–है; उम्पिमारकळ्–आपके छोटे भाई; ऍम्पियै–मेरे अनुज की; तन् मुत्तै–अपने अग्रज को; कॊल्वित्तान्–मरवाया (सुग्रीव ने); ऍन्ऱु–कहकर; इकऴ्वरेल्–निन्दा करें तो; तट्टुति–उनको रोकिए; ऐय–प्रभु; इवन् कुऱै–इसका कष्ट; मुटिप्पतु–दूर करना; मुन्नमे–पहले ही; मौऴिन्ताय् अन्ऱे–आपने वचन दिया न; पिन्–फिर; इवन् विनैयिन्–इसके प्रारब्ध के; चॅय्कै अततैयुम्–परिणाम-कर्म से; पिऴैक्कल्–वचना; आमो–साध्य है क्या। ३५६

उत्तम गुण वाले ! और एक प्रार्थना है। अगर आपके भाई मेरे भाई की, यह कहकर निन्दा करेंगे कि उसने अपने बड़े भाई को मरवा दिया तो आप उनको रोक दें। आपने इसकी याचना पूरी करने का वादा किया था। उस सिलसिले में वह जो काम करेगा उसके फल से बच सकेंगे क्या ? । ३५६

मऱ्ऱिलॅ नॅनिनू माय वरक्कनै वालिऱ् पऱ्ऱिक्
कॊऱ्ऱव निन्गट् टन्दु कुरक्कियऱ् ऱॊऴिलुङ् गाट्टप्
पॅऱ्ऱिलॅन् कडन्द शॊल्लिऱ् पयनिलै पिऴैप्प दिन्ऱि
उऱ्ऱदु शॅय्हॅन् ऱालु मुरियनिव् वनुम नॅन्ऱान् 357

कॊऱ्ऱव–विजयी राजा राम; मऱ्ऱु इलॅन्–और कुछ करनेवाला न रहा; ऍन्निनुम्–तो भी; माय अरक्कनै–वंचक राक्षस को; वालिल् पऱ्ऱि–पूँछ में बाँधकर; निन् कण् तन्तु–आपके पास सौंपकर; कुरक्कु इयल् तॊऴिलुम्–वानरयोग्य कार्य; काट्ट पॅऱ्ऱिलॅन्–दिखा नहीं पाया; कटन्त–बीती बात; चॊल्लिल्–कहने में; पयन् इलै–कोई लाभ नहीं है; पिऴैप्पतु इन्ऱि–गलती के विना; उऱ्ऱतु–यह जो मिला है; चॅय्क–वह काम करो; ऍन्ऱालुम्–कहने पर; इ अनुमन्–यह हनुमान; उरियन् ऍन्ऱान्–समर्थ है, कहा। ३५७

(वाली ने आगे कहा—) विजयशील श्रीराम ! और कुछ नहीं कर सका तो भी वंचक राक्षस को पूँछ से बाँधकर आपके पास लाता और अपना वानर-सामर्थ्य दिखाता। वह भाग्य नहीं रहा। पर जो बीत चुका, उसको अब कहने से क्या लाभ है ? पर यह जो हनुमान है उसे, 'जो आ गया, इस काम को करो'— की आज्ञा दी जाय तो वह पूर्ण रूप से समर्थ है। ३५७

अनुमनॅन् बवनै यालि यॅयनिन् शॅय्य शॅङ्गैत्
तनुवॅन निनैदि मऱ्ऱॅन् तम्बिनिन् तम्बि याह
निनैदियोर् तुणैव रिन्नो रनैयव रिलैनी यीण्डव्
वनिदैयै नाडिक् कोडि वानिनु मुयर्न्द तोळाय् 358

अनुमन् ॲतुपवतै–हनुमान नाम के उसको; निन्–आपका; चॅय्य–सुन्दर; चॅम् कै तनु ॲत–लाल हाथ का धनु; नितॆति–समझिए; आळि ऐय–चक्रधारी प्रभु; वानितुम्–आकाश से भी अधिक; उयर्न्त–उन्नत; तोळाय्–कन्धे वाले; मट्रुम्–और भी; ॲन् तम्पि–मेरे भाई को; निन् तम्पि आक–अपने भाई के रूप में; नितैति–समझें; इन्नोर् अनैयवर्–इनसे तुल्य; ओर् तुणैवर्–एक साथी; इलै–दूसरा नहीं होगा; ईण्टु–ऐसी स्थिति में; नी–आप; अ–उन; वनितैयै–देवी को; नाटि–ढूँढ़कर; कोटि–प्राप्त कर लीजिए। ३५८

चक्रधारी देव! आकाश से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले! इस हनुमान को आप अपने लाल हाथ का सुन्दर धनु मान लीजिए। और मेरे छोटे भाई को अपना छोटा भाई मान लीजिए। इनके समान आपको दूसरा सहायक नहीं मिलेगा। उनकी सहायता से आप अपनी पत्नी सीतादेवी को ढूँढ़कर प्राप्त कर लीजिए। ३५८

ॲन्रवर् कियम्बिप् पिन्न रिरुन्दन निळव रनैत्
तन्रुणैत् तडक्कै नीट्टि वाङ्गितन् रळुवि मैन्द
ऑन्रुनक् कुरैप्प दुण्डा लुरुदिय:(ह्) दुणर्न्दु कोडि
कुन्रिनु मुयर्न्द तोळाय् वरुन्वलै यॅन्रु कूरुम् 359

ॲन्रु–ऐसा; अवर्कु इयम्पि–उनसे कहकर; पिन्नर्–पीछे; इरुन्तनन्–जो रहा, उस; इळवल् तनै–लघु भाई को; तन् तुणै–अपने जोड़े के; तट कै–विशाल हाथ; नीट्टि–बढ़ाकर; वाङ्कितन्–खींच लेकर; तळुवि–गले लगाते हुए; मैन्त–बेटे; कुन्रिनुम् उयर्न्त–पर्वत से भी बढ़े हुए; तोळाय्–कन्धों वाले; ऑन्रु–एक बात; उनक्कु–तुमसे; उरुति–हितकारी; उरैप्पतु–कहनी; उण्टु–है; अ..तु–उसे; उणर्न्तु–समझकर; कोटि–मान लो; वरुन्तलै–दुःख मत करो; ॲन्रु–कहकर; कूरुम्–बोला। ३५९

वाली ने यह सब श्रीराम से कहा। फिर उसने अपने दोनों हाथ बढ़ाकर अपने पीछे खड़े रहे सुग्रीव को पकड़कर अपने पास खींच लिया और गले लगा लिया। फिर उससे कहा कि बेटे! पर्वत से भी अधिक बढ़े हुए कन्धों वाले! तुमसे एक बात कहनी है। उसे सुनो, समझो और मन में धारण करो। दुःख मत करो। वह समझाकर कहने लगा। ३५९

मरैहळुम् मुनिवर् यारुम् मलर्मिशै ययनुम् मट्रैत्
तुरैहळिन् मुडिवुम् जॉल्लुन् दुणिपॊरु डिणिविर् रूक्कि
अरैहळ लिराम नाहि यरनॆरि निरुत्त वन्द
तिरैयॊरु शङ्गै यिन्रि यॅण्णुदि यॅण्ण मिक्कोय् 360

ॲण्णम् मिक्कोय्–सोच-विचार में समर्थ; मरैकळुम्–वेद; मट्रै–और अन्य ग्रन्थों के बताये हुए; तुरैकळिन् मुटिवम्–मार्ग का अन्त; मुनिवर् यारुम्–सभी मुनिगण;

मलर् मिचै अयत्तुम्–कमलासन ब्रह्मा; चोल्लुम्–जो बताते है; तुणि पौरुळ्–वह निश्चित तत्त्व; तिणि विल्–सारयुक्त धनु; तूक्कि–उठाए हुए; अऱ्‌ कऴल्–क्वणित पायलधारी; इरामन् आकि–श्रीराम बनकर; अऱ् नॅऱि निऱुत्त–धर्ममार्ग प्रतिष्ठापनार्थ; वन्तनु–आया है; इऱ्–थोड़ा भी; ऑरु चक्कै इन्ऱि–कोई संशय विना; ऍण्णुति–समझो। ३६०

सोच-विचार करने में समर्थ सुग्रीव ! ये जो श्रीराम है वह परम-तत्त्व है, जिसकी सत्ता का दृढ़ता से वेद घोषित करते है; अन्य ग्रन्थों का विषय है; जिसके बारे में सारे मुनिगण और कमलासन बतलाते है। वही तत्त्व क्वणनशील पायलधारी श्रीराम बनकर हाथ में कठोर धनुष लिये हुए संसार में धर्म-मार्ग को सुस्थापित करने के लिए अवतरित हुआ है ! इसको विना किसी शंका या संशय के मान लो। ३६०

निऱ्‌किन्ऱ शॅल्वम् वेण्डि नॅऱिनिन्ऱ पौरुळ्ह ळॅल्लाम्
कऱ्‌किन्ऱ विवन्ऱन् नामङ् गरुदुव विवनैक् कण्डाय्
पौऱ्‌कुन्ऱ मनैय तोळाय् पौदुनिन्ऱ निलैमै नोक्किन्
ऍऱ्‌कौन्ऱ वलिये शालु मिदऱ्‌कौन्ऱु मेदु वेण्डा 361

पौन् कुन्ऱम् अनैय–मेरुपर्वत-सदृश; तोळाय्–भुजा वाले; निऱ्‌किन्ऱ–शाश्वत; चॅल्वम् वेण्टि–पद (परमपद) चाहकर; नॅऱि निन्ऱ–धर्ममार्ग पर स्थित; पौरुळ्कळ् ऍल्लाम्–सभी जीव; इवन् तन् नामम्–इनका नाम; कऱ्‌किन्ऱ–जप करते हैं; इवनै करुतुव–इनका ध्यान करते हैं; कण्टाय्–जानते हो; पौतु निन्ऱ–तटस्थ; निलैमै नोक्किन्–स्थिति में रहकर देखें तो; ऍन् कौन्ऱ–मुझे मारने की; वलिये–शक्ति ही; चालुम्–प्रमाण होगा; इतऱ्‌कु–इसके लिए; ऑन्ऱुम्–और कोई; एतु वेण्टा–हेतु की आवश्यकता नहीं है। ३६१

मेरुपर्वत-सम कन्धों वाले ! शाश्वत परमपद प्राप्त करने के हेतु धर्म-मार्ग पर जानेवाले सभी जीव इनका ही नाम जपते हैं और ध्यान करते हैं। तुम यह जान लो। तटस्थ रहकर देखा जाय तो इसका प्रमाण वही उनकी शक्ति है जिसने मुझे मारा। और अन्य किसी हेतु की आवश्यकता नहीं है। ३६१

कैदव मियऱ्‌ऱि याण्डुङ् गऴिप्परुङ् गणक्कि ऱीमै
वैहलुम् पुरिन्दु ळारुम् वानुयर् निलैयै वळ्ळल्
ऍय्दवर् पॅऱुव रॅन्ऱा विणैयडि यॅय्दि येवल्
शॆय्दवर् पॅऱुव दैय शॅप्पलाञ् जिऱुमैत् तामो 362

ऐय–तात; कैतवम् इयऱ्‌ऱि–कैतव करके; याण्टुम्–कभी भी; कऴिप्पु अरु–अनिवार्य; कणक्कु इल्–असंख्यक; तीमै–पापकार्य; वैकलुम्–हर दिन; पुरिन्तुळारुम्–जिन्होंने किये वे भी; वळ्ळल्–उदार श्रीराम के द्वारा; ऍय्तवर्–प्रेरित शर के लक्ष्य बने (और मरे) तो; वान् उयर् निलैयै–अत्युच्च परमपद को;

पऱुवर् अँन्ऱाल्–पा जायेंगे, तो; इणै अटि ॲय्ति–उनके चरणद्वय की शरण लेकर; एवल् चॅय्तवर्–उनका कैंकर्य करनेवाले; पॅऱुवतु–जो प्राप्त करेंगे; चॅप्पल् आम्–(वह पद) कहने योग्य; चिऱुमैत्तु आमो–लघु विषय होगा क्या। ३६२

तात ! जो वंचक काम करते रहते हैं, दुर्वार असंख्यक पाप सदा करते हैं वे भी, इन उदार प्रभु से प्रेरित शर से मरेंगे तो अतिश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त हो जायेंगे। तब जो इनके चरणद्वय की शरण में रहकर इनकी सेवा करते हैं, उनको जो पद प्राप्त होगा क्या वह इतना अल्प होगा कि वर्णन का विषय बने ? । ३६२

अरुमैयॅन् विदियि ऩारे युदवुवा ऩमैन्द कालै
इरुमैयु मॅय्दि नाय्मऱ् ऱिऩिच्चॅयऱ् पाल दॅण्णिऩ्
तिरुमऱु मारब नेवल् शॅऩ्निियिऱ् चेर्त्तिच् चिन्दै
ऑरुमैयि ऩिऱुवि मुम्मै युलहिऩु मुयर्दि यऩ्ऱे 363

वितियिऩारे–विधि ही; उतवुवाऩ् अमैन्त कालै–जब उपकार करने को उद्यत हो जाती है, तब; अरुमै ॲन्–अगम क्या; इरुमैयुम् ॲय्तिऩाय्–(तुम) इह-पर दोनों हित पा चुके; इऩि–आगे; चॅयल् पालतु–कर्तव्य; ॲण्णिऩ्–सोचो तो; तिरु मऱु मार्पऩ्–श्रीवत्सांकितवक्ष; एवल्–(श्रीराम) की आज्ञाओं को; चॅऩ्ऩियिल् चेर्त्ति–सिर पर धारण करो; चिन्तै–मन को; ऑरुमैयिऩ्–एक ही मार्ग पर (अचल); निऱुवि–रखकर; मुम्मै उलकिऩुम्–तीनों विध लोकों में; उयर्ति–श्रेष्ठता प्राप्त कर लो। ३६३

जब स्वयं विधिदेवता उपकार करने को उद्यत हो जाते हैं, तब क्या वस्तु दुर्लभ होगी ? तुम भाग्यवान हो। इह-पर दोनों हित पा चुके हो ! आगे का कर्तव्य सोचो तो यही है कि, श्रीवत्सांकितवक्ष श्रीराम की आज्ञाओं को शिरोधार्य करो; मन को एक मार्ग में चलाओ और त्रिविध लोकों में सर्वश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त हो जाओ। ३६३

मदवियल् कुरक्कुच् चॅय्है मयर्वॉडु माऱ्ऱि वळ्ळल्
उदवियै युऩ्ऩि यावि युऱ्ऱिटत् तुदवु हिऱ्ऱि
पदवियै यॅवर्क्कु नल्हुम् पण्णवऩ् पणित्त यावुम्
शितैविल शॅय्दु नॉय्दिऱ् ऱीर्वरुम् बिऱवि तीर्दि 364

मत इयल्–मत्त स्वभाव के; कुरक्कु चॅय्कै–वानर-कृत्यों को और; मयर्वॉटु–भ्रम को; माऱ्ऱि–दूर करके; वळ्ळल्–उदार प्रभु श्रीराम की; उतवियै–सहायता को; उऩ्ऩि–सोचकर; उऱ्ऱिटत्तु–(उन पर) जब विपदा आयगी, तब; आवि उतवुकिऱ्ऱि–अपने प्राण भी देकर (सेवा करो); पतवियै–परमपद को; ॲवर्क्कुम् नल्कुम्–(भक्त) किसी को भी देनेवाले; पण्णवऩ्–कृपालु स्वभाव के; पणित्त–(श्रीराम के) आज्ञा किये हुए; यावुम्–सभी कार्य; चितैवु इल–बिना कमी के; चॅय्तु–करके; तीर्वु अरुम्–दुर्वार; पिऱवि–जन्म को; नॉय्तिल्–सुगम रीति से; तीर्ति–दूर करो। ३६४

अपना मस्त वानर-प्रकृति का कृत्य और भ्रम छोड़ दो। उदार प्रभु का उपकार स्मरण रखो। जब उन पर कोई विपदा आये तो अपने प्राण देकर निवारण करो। वे भक्तों में भेद करनेवाले नहीं है। किसी को भी अपना परमपद दिलानेवाले उदार प्रभु हैं। वे जो भी कहेंगे उनको निर्दोष रीति से कार्यान्वित करो। इस प्रकार अपना जन्म-बन्धन शीघ्र काट लो। ३६४

अरशियङ् पारम् पूरित् तयर्त्तनै यिहळा दैयन्
मरैमलर्प् पादम् नीङ्गा वाळ्दि मन्न रॅन्बार्
ॲरियनङ् कुरिय रॅन्ड्रे यॅण्णुदि यॅण्णम् यावुम्
पुरिदिशिङ् ऱडिमै कुड्ड्रम् पॉरुप्परॅन् ड्रॅण्ण वेण्डा 365

अरचु इयल्–राज्य-शासन के; पारम्–भार पर; पूरित्तु–मुदित होकर; अयर्त्तनै–भ्रमित हो; इकळातु–(श्रीराम को) अल्प मत मानो; ऐयन् मरै मलर् पातम्–(और) श्रीराम के कमल-चरणों से; नीङ्का–अलग मत जाओ; वाळ्ति–इस तरह जीवन बिताओ; मन्नर् ॲन्पार्–राजा कहलानेवाले; ॲरि अनड्कु–जलती आग की समानता पाने के; उरियर् ॲन्ड्रे–योग्य हैं, यही; ॲण्णुति–समझो; ॲण्णम् यावुम्–उनके विचार सब; पुरिति–कार्यान्वित करो; चिऱु अटिमै–मै छोटा दास हूँ; कुड्ड्रम् पॉरुप्पर्–अपराध क्षमा करेंगे; ॲन्ड्रु–ऐसा; ॲण्ण वेण्टा–विचार नहीं रखना चाहिए। ३६५

राज्य-शासन के भार से मुदित होकर या भूलकर उनको अल्प मत मानो। प्रभु श्रीराम के कमल-चरणों से अलग मत होओ। उनकी ही शरण में जीवन बिताओ। राजा जलती आग के समान है। उन्हें वैसा ही रहने का अधिकार है। यह विचार करके उनके सभी विचारों को कार्यान्वित करो। 'हम छोटे दास हैं, वे हमारी भूलें क्षमा कर देंगे' —ऐसा कभी मत सोचो। ३६५

ॐ ॲन्नवित् तहैय वाय वुड्दिहळ् यावु मेङ्गुम्
पिन्नवर्क् कियम्बि निन्ड्र पेरॅळि लानै नोक्कि
मन्नवर्क् करशन् मैन्द मऱ्ड्रिवन् शुड्ड्रत् तोडुम्
उन्नडैक् कलमॅन् ड्रुयत्ते युयर्हर मुच्चि वैत्तान् 366

ॲन्न–इस तरह; इ तकैय आय–ऐसे; उऱुतिकळ् यावुम्–सब हितों का; एङ्कुम्–दुःखी; पिन्नवर्कु–अपने अनुज को; इयम्पि–उपदेश देकर; निन्ड्र–सामने स्थित; पेर् ॲळिलानै–अतिसुन्दर श्रीराम को; नोक्कि–देखकर; मन्नवर्क्कु अरचन् मैन्त–राजाधिराज के पुत्र; इवन्–यह; चुड्ड्रत्तोटुम्–इसके परिवार के साथ; उन् अटैक्कलम्–आपकी शरण में है; ॲन्ड्रु उयत्तु–कहकर उसे उनके पास सौंपकर; उयर् करम्–उठाये हुए हाथ; उच्चि वैत्तान्–(वाली ने) अपने सिर पर रखे। ३६६

इस भाँति वाली ने अपने दुःखी भाई को ऐसे हितोपदेश दिये। फिर

अपने सामने स्थित अतिरूपवान श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र ! यह सुग्रीव अपने परिवारों के साथ आपकी शरण में हैं। यह कहकर वाली ने सुग्रीव को श्रीराम के आगे किया। फिर उसने अपने हाथ जोड़कर सिर पर रख लिये। ३६६

※ वैत्तपिन् तुरिमैत् तम्बि मामुह नोक्कि वल्लै
उय्त्तनै कॊणर्दि युन्ऱ ऒोङ्गरु महनै यॆन्न
अत्तलै यवनै येवि यऴैत्तलि नणॆन्दा नॆन्ब
कैत्तलत् तुवरि नीरैक् कलक्किनान् पयन्द काळै 367

वैत्त पिन्–रखने (नमस्कार करने) के बाद; उरिमै तम्पि–अपने ही छोटे भाई का; मा मुकम् नोक्कि–उत्तम मुख देखकर; उन् तन्–तुम्हारे; ओङ्कु अरु मकनै–श्रेष्ठ और प्यारे पुत्र (अंगद) को; वल्लै–शीघ्र; उय्त्तनै–बुला; कॊणर्ति–लाओ; ऍन्त–कहकर; अ तलै–वहाँ; अवनै एवि–उसको भिजवाकर; अऴैत्तलिन्–बुलवाने पर; कै तलत्तु–हाथों से; उवरि नीरै कलक्किनान्–(जिसने) समुद्रजल को मथा, उस वाली का; पयन्त काळै–पुत्र ऋषभ-सम अंगद; अणैन्तान्–आया (ऍन्प)। ३६७

सिर पर जुड़े हाथ रखकर नमस्कार करने के बाद वाली ने अपने भाई के गौरवमय मुख को देखकर कहा कि सुग्रीव ! तुम जाओ और अपने श्रेष्ठ और प्यारे पुत्र अंगद को बुला लाओ। वाली ने सुग्रीव को भिजवाकर बुलवाया। समुद्र को अपने हाथों से जिसने मथा था, उस वाली का पुत्र ऋषभतुल्य अंगद आया। ('ऍन्प' का इधर अर्थ नहीं किया गया यद्यपि उसका अर्थ 'कहते हैं' भी है।) पूरक ध्वनि। ३६७

※ शुडरुडै मदिय मॆन्नत् तोन्ऱलुन् दोन्ऱि याण्डुम्
इडरुडै युळ्ळत् तोरै यॆण्णिनु मुणर्न्दि लादान्
मडरुडै नऱुमॆन् शेक्कै मलैयन्ऱि युदिर वारिक्
कडरिडैक् किडन्द कादऱ् ऱादैयैक् कण्णिऱ् कण्डान् 368

चुटर् उटै–प्रकाशमय; मतियम् ऍन्न–चन्द्र के समान; तोन्ऱलुम्–कुँअर भी; याण्टुम्–कहीं भी; इटर् उटै उळ्ळत्तोरै–संकटग्रस्त लोगों को; ऍण्णिनुम्–अपनी कल्पना में भी; उणर्न्तिलातान्–जो नहीं जानता था, वह; तोन्ऱि–आकर; मटर् उटै–सुमन दलों से युक्त; नऱु मॆन्–सुगन्धित और कोमल; चेक्कै मलै अन्ऱि–शय्या रूपी पर्वत पर न; उतिर वारि–रक्तप्रवाह रूपी; कटर् इटै–समुद्रमध्य; किटन्त–पड़े रहे; कातल् तातैयै–प्यारे पिता को; कण्णिल् कण्टान्–अपनी आँखों से देखा (अंगद ने)। ३६८

वाली का कुमार भूलकर भी किसी को दुःख देनेवाला नहीं था। दुःखी मनुष्य को उसने कल्पना में भी नहीं देखा था। वह प्रकाशमय पूर्णचन्द्र के समान आ प्रकट हुआ। उसने देखा कि वाली पंखुड़ियों की

बनी शय्या रूपी पर्वत पर नहीं लेटा था, पर रक्त-समुद्र के मध्य पड़ा था। उसने अपनी आँखें फाड़कर उस दृश्य को देखा। ३६८

❀ कण्डहण् कनलु नीरुङ् गुरुदियुङ् गाल मालैक्
कुण्डल मलम्बु हिन्र् कुववुत्तोट् कुरिशि ड्रिङ्गळ्
मण्डल मुलहिल् वन्दु किडन्ददम् मदियिन् मीदा
विण्डल मदनि न्रिन्ऱोर् मीन्विळुन् दॆन्न वीळ्न्दान् 369

कण्ट कण्-देखनेवाली आँखों ने; कनलुम्-अग्नि को और; नीरुम्-जल को; कुरुतियुम्-रक्त को; काल-निकाला और; कुण्टलम् अलम्पुकिन्ऱ-कुण्डल जिन पर लगे डोलते है; मालै कुववु-और जो माला से भूषित हैं, उन; तोळ्-कन्धों से भूषित; कुरिचिल्-राजकुमार; तिङ्कळ् मण्टलम्-चन्द्रमण्डल; उलकिल् वन्तु-भूमि पर आकर; किटन्ततु-पड़ा रहा; अ मतियिन् मीता-उस चन्द्रमण्डल पर; विण् तलम् अतन्िन् निन्ऱु-आकाश से; ओर् मीन्-एक नक्षत्र; विळुन्तु ॲन्न-गिरा, जैसे; वीळ्न्तान्-गिरा। ३६९

उसकी उन आँखों से आग उठी और जल रक्त के साथ वह निकला। अंगद के कन्धे ऊँचे थे। उन पर कुण्डल डोल रहे थे। वे माला से अलंकृत थे। वह राजकुमार आकर वाली पर गिरा। तब ऐसा लगा मानो चन्द्रमण्डल भूमि पर पड़ा हो और उस पर आकाश से एक तारा आकर गिरा हो। ३६९

❀ ॲन्दैये यॆन्दै येयिव् वॆळुदिरै वळाहत् तियार्क्कुम्
शिन्दैयाऱ् चॆय्है यालोर् तीविनै शॆय्दि लादाय्
नॊन्दनै यदुदा निऱ्क निन्मुह नोक्किक् कूऱ्ऱुम्
वन्ददे यन्ऱो वञ्जा दारदन् वलियैत् तीर्प्पार् 370

ॲन्तैये-पिता; ॲन्तैये-मेरे पिता; इ ॲळु तिरै-इन सातों समुद्रों से; वळाकत्तु-वलयित भूमि में; यार्क्कुम्-किसी को भी; चिन्तैयाल्-मन से; चॆय्कैयाल्-और कृत्य से; ओर् ती विनै चॆय्तिलाताय्-कोई हानि न करनेवाले; नॊन्तनै-अब दुःखग्रस्त हो गये; अतु तान् निऱ्क-वह तो रहे एक ओर; निन् मुकम् नोक्कि-आपके मुख को देखते हुए; कूऱ्ऱुम्-मृत्यु भी; अञ्चातु-विना भय खाये; वन्तते अन्ऱो-आ गयी न; आर्-कौन; अतन् वलियै-उसके वल को; तीर्प्पार्-तोड़ देगा। ३७०

(अंगद विलाप करने लगा।) मेरे पिताजी! मेरे पिताजी! आपने सातों समुद्रों से वलयित इस भूमि पर किसी का अहित नहीं सोचा, न ही किया। ऐसे आप अब कष्ट में पड़े हैं। हाय! वह एक ओर रहे! आज यह अनोखी बात हो गयी है कि यम ने भी आपके सम्मुख आने का साहस किया! अब कौन है जो उसका घमण्ड चूर करे? । ३७०

तरैयडित् तदुपोर् इरीरात् तहैयवित् तिशैह डाङ्गुम्
करैयडिक् किळिवु कण्ड कण्डह नॆञ्ज मुन्ऱत्
निरैयडिक् कोल वालि निलैमैयै निनैयुन् दोऱुम्
परैयडिक् किन्ऱ वन्दप् पयमऱप् परन्द दन्ऱे 371

तरै–खूँटे; अटित्ततु पोल्–गाड़े गये हों, ऐसे; तीरा तकैय–अचल रहनेवाले; इ तिचैकळ् ताङ्कुम्–इन दिशाओं के भारवाही; करै अटिक्कु–ओखली के समान पैरों के गजों को; इळिवु कण्ट–हरानेवाले; कण्टकन्–कंटक रावण का; नॆञ्चम्–मन; उन् तन्–आपकी; निरै–स्थूल; अटि–अग्रभाग से युक्त; कोल–सुन्दर; वालिन्–पूँछ की; निलैमैयै–(शक्ति की) स्थिति को; निनैयुम् तोऱुम्–जब-जब स्मरण करता है तब; परै अटिक्किन्ऱ–ढोल-सा थर्रानेवाला; अन्तप्पयम्–वह भय; अऱ–अलग; परन्ततु अन्ऱे–भाग गया न। ३७१

आपकी मृत्यु से रावण के मन का भय मिट जायगा। "रावण खूँटों के समान अचल रहकर दिशाओं को ढोनेवाले, ओखली के समान पैरों वाले दिग्गजों को हराकर उनको हेय बना दिया था। उस कंटक का मन आपकी सुन्दर और स्थूल अग्र भाग की पूँछ का स्मरण करते हर समय पिटे ढोल के समान थर्राता था। अब वह भय उड़ गया। ३७१

❀ कुलवरै नेमिक् कुन्ऱ मॆन्ऱवा नुयर्न्द कोट्टिन्
तलैहळु निन्पॊऱ् ऱाळिऱ् ऱळुम्बिनित् तविर्न्द वन्ऱे
मलैयुड नरवु मऱ्ऱु मदियमुम् बलवुन् दाङ्गि
अलैहडल् कडैय वेण्डि नारिनिक् कडैव रैया 372

ऐया–श्रेष्ठ; कुल वरै–आठों कुलपर्वत; नेमि कुन्ऱम्–चक्रवालपर्वत के; वान् उयर्न्त कोट्टिन्–गगनस्पर्शी पर्वत के; तलैकळुम्–शिखर भी; निन्–आपके; पोन् ताळिल्–सुन्दर पैरों के कारण; तळुम्पु–पड़े चिह्नों से; इनि–अब; तविर्न्त अन्ऱे–रिक्त हो गये न; मलैयुटन्–मन्दरपर्वत के साथ; अरवुम्–सर्प (वासुकी); मतियमुम्–चन्द्र; मऱ्ऱुम् पलवुम्–और अन्य सभी; ताङ्कि–धारण करके; अलै कटल्–तरंगपूर्ण समुद्र का; कटैय वेण्टिन्–मथन करना हो; आर् इनि कटैवर्–कौन मथेगा। ३७२

श्रेष्ठ! आपके पैरों के लगने से आठों कुलपर्वतों और गगनस्पर्शी चक्रवालपर्वत के शिखरों पर घिसने के चिह्न लगे हुए थे। अब वे उनसे रहित हो जायँगे। मन्दरपर्वत, वासुकी नाग, चन्द्र और अन्य उपकरण तैयार करके तरंगपूर्ण समुद्र को मथना पड़े तो कौन मथेगा? । ३७२

पञ्जिनॆल् लडियाळ् पङ्गन् पदयुह मलुल याडुम्
अञ्जलित् तऱियाच् चॆङ्गै याणैया यमरर् यारुम्
ऎञ्जल रिरुन्दा रुण्णा दिन्नमु दीन्द नीयो
तुञ्जिनै वळळि योर्ह णिन्निन्यार् शॊल्लऱ् पालार् 373

पञ्चित् मॆल् अटियाळ्–रुई से भी अधिक कोमल चरणों की पार्वतीदेवी के; पङ्कन्–अर्द्धांगी के; पत युकम् अल्ल–चरणद्वय को छोड़कर; यातुम् अञ्चलित्तु अऱिया–किसी की अंजलि करना जिन्होंने नहीं जानने का; आणै–नियम रखा था; चॆम् कैयाय्–ऐसे लाल हाथों वाले; अमरर् यावम्–सभी देव; अॆञ्चलर् इरुन्तार्–अमर रहते हैं (आपके मथने से प्राप्त अमृत खाकर); इन् अमुतु–वह मधुर अमृत; उण्णातु–विना भोगे; ईन्त नीयो–उन्हें देकर आप; तुञ्चित्तै–मृतक हो गये; निन्ऱिन्–आपसे बढ़कर श्रेष्ठ; वळ्ळियोर्कळ्–दानी; चॊल्लल् पालार्–कहाने योग्य; यार्–कौन है। ३७३

रुई से भी कोमलचरणा पार्वती को आधा शरीर जिन्होंने दिया है, उन शिवजी के चरणद्वय को छोड़कर आपके हाथों ने किसी की अंजलि करना न जाना था। यह आपका प्रण था। ऐसे लाल हाथों वाले ! आपकी कृपा और परिश्रम से अमृत निकला। उसे आपने देवों को दे दिया। वे अमर रह गये। पर आप मर गये। आपसे बढ़कर श्रेष्ठ दानी कहलानेवाले कौन होंगे ? । ३७३

आयन पलवुम् बन्ऩि यळुङ्गिनन् पुळुङ्गि नोक्कित्
तीयुरु मॆळुहिऱ् चिन्दै युरुहिनन् शॆङ्गण् वालि
नीयिनि ययर्वा यल्लै यॆन्ऱुदन् नॆञ्जिऱ् पुल्लि
नायह निरामन् शॆय्द नल्विनैप् पयनी दॆन्ऱान् 374

आयत्त पलवुम्–ऐसी वहुत वातें; पन्ऩि–वार-वार कहकर; पुळुङ्कि–तप्त होकर; अळुङ्कितन्–दुःखी हुआ और; नोक्कि–(वाली को) देखकर; ती उऱु मॆळुकिल्–आग में गलते मोम के समान; चिन्तै उरुकितन्–द्रवमन हो गया; चॆम् कण् वालि–लाल बनी आँखों वाले वाली ने; नी–तुम; इनि–अब से; अयर्वाय् अल्लै–दुःखी मत हो; अॆन्ऱु–(धीरज में) कहकर; तन् नॆञ्चिल्–अपने गले से; पुल्लि–लगाकर; नायकन् इरामन्–नायक श्रीराम का; चॆय्त ईतु–कृत यह कार्य; नल् विनै पयन्–सौभाग्य का फल है; अॆन्ऱान्–कहा (वाली ने)। ३७४

अंगद ऐसी बातें कहते हुए विलाप करता रहा। वह बहुत तप्त और दुःखी हुआ। वह वाली को देखकर अग्नि-तप्त मोम के समान द्रवमन हो गया। तब वाली ने अंगद को धीरज देते हुए कहा कि पुत्र ! दुःख मत करो। फिर उसने अपने पुत्र को गले से लगाते हुए कहा कि सर्वलोकनायक श्रीराम ने जो किया है, यह मेरे सौभाग्य का फल है। ३७४

तोन्ऱलु मिरत्त ऱानुन् दुहळऱत् तुणिन्दु नोक्किन्
मून्ऱुल हत्ति नोर्क्कुम् मूलत्ते मुडिन्द वन्ऱे
यान्ऱव मुडैमै यालिव् विऱुदिवन् दियॆन्द दियार्क्कुम्
शान्ऱॆन निन्ऱ वीरन् ऱान्वन्दु वीडु तन्दान् 375

तोऩ्ऱलुम्—जन्म लेना; इऱत्तल् तानुम्—और मरना; तुकळ् अऱ—दोषहीन; तुणिन्तु नोक्किऩ्—दृढ़ता से विचारा जाय तो; मूऩ्ऱु उलकत्तिनोर्क्कुम्—तीनों लोकों के वासियों के लिए; मूलत्ते—आरम्भ में ही; मुटिन्त—निश्चित विषय हैं; यान्—मैं; तवम् उटैमैयाल्—पूर्वकृत तपस्या वाला था, इसलिए; इ इऱुति—ऐसा अन्त; वन्तु इयैन्ततु—आ मिला; यार्क्कुम्—सभी के; चान्ऱु अँत—साक्षी-रूप में; निन्ऱ—स्थित; वीरऩ्—वीर श्रीराम ने; तान् वन्तु—स्वयं पधारकर; वीटु तन्तान्—मोक्ष दिलाया। ३७५

अंगद ! जन्म और मरण तीनो लोकों के वासियों के सम्बन्ध में पूर्व-निर्धारित विषय हैं। मैंने तपस्या की थी, इसलिए ऐसा दुर्लभ अन्त हुआ। तभी तो सबके साक्षीरूप-स्थित ये श्रीराम स्वतः मेरे पास आये और इन वीर श्रीराम ने मुझे मोक्षपद दिला दिया। ३७५

❀ पालमै तविर्दि यॅन्ऩॊॅऱ् पऱ्ऱुदि यॅन्ऩि नैय
मेलॊरु पॊरुळु मिल्ला मॅय्प्पॊरुळ् विल्लुन् दाङ्गिक्
काल्तरै तोय निन्ऱु कट्पुलक् कुऱ्ऱ दम्मा
माल्तरुम् बिऱवि नोय्क्कु मरुन्दॆन वणङ्गु मैन्द 376

ऐय—तात; पालमै तविर्ति—बालपना छोड़ दो; ॲन् चॊल्—मेरा कहना; पऱ्ऱुति—मानो; ॲन्ऩिन्—तो; मेल् ऒरु पॊरुळुम् इल्ला—जिसके परे या ऊपर कोई तत्त्व नहीं है; मॅय् पॊरुळ्—वह सनातन तत्त्व; विल्लुम् ताङ्कि—धनु भी लेकर; काल्—पैरों को; तरै तोय—भूमि पर रखते हुए; निन्ऱु—स्थित रहकर; कण् पुलक्कु उऱ्ऱतु—दृष्टिगोचर हुआ; मैन्त—पुत्र; माल् तरुम्—मोहजनक; पिऱवि नोय्क्कु—भवरोग का; मरुन्तु ॲॅन—औषध मानकर; वणङ्कु—इनका नमन करो; अम्मा—मैया री। ३७६

(वाली ने अंगद को सलाह दी।) बेटे ! बालपन छोड़ दो। मेरी बात मानो। ये श्रीराम, वही तत्त्व है जिससे परे कोई तत्त्व नहीं है। वह सनातन तत्त्व हाथ में एक धनु भी लिये हुए और धरती पर चरण रखते हुए दृष्टिगोचर हुआ है। इसलिए, हे पुत्र ! इनकी वन्दना करो, यह मानकर कि ये मोहक भवरोग के औषध हैं। ३७६

❀ ॲन्ऩुयिर्क् किऱुदि शॅय्दा नॆन्ऩवदॆ यिऱैयु मॅण्णा
दुन्ऩुयिर्क् कुऱुदि शॅय्दि यिवर्क्कम रुऱ्ऱ दुण्डेल्
पॊन्ऩुयिर्त् तॊळिरुम् बूणाय् पॊदुनिन्ऱु दरुमम् पोऱ्ऱि
मन्ऩुयिर्क् कुऱुदि शॅय्वान् मलरडि तॊळुदु वाळ्दि 377

पॊन् उयिर्त्तु—स्वर्ण से निर्मित होकर; ऑळिरुम्—ज्वलन्त रहनेवाले; पूणाय्—आभरणधारी; ॲन् उयिर्क्कु—मेरे प्राणों का; इऱुति चॅय्तान्—अन्त कराया; ॲन्पतै—यह बात; इऱैयुम् ॲण्णातु—बिलकुल न सोचकर; उन् उयिर्क्कु—अपने जीवन का; उऱुति चॅय्ति—हित करा लो; इवर्क्कु—इनकी; अमर् उऱ्ऱतु उण्टेल्—(शत्रुओं से) लड़ाई हो गयी तो; पॊतु निन्ऱु—तटस्थ रहकर; तरुमम् पोऱ्ऱि—धर्म का पक्ष

लो; मन् उयिर्क्कु–सनातन जीवों के; उऱुति चॅय्वान्–हितकारी इनका; मलर् अटि–चरण-कमल; तॊऴुतु–वन्दित कर; वाऴ्ति–जीवन बिताओ। ३७७

स्वर्णनिर्मित, कांतियुक्त आभूषणभूषित अंगद! श्रीराम ने मेरे प्राणों का अन्त करा दिया, इस बात का किंचित भी विचार मत करो। अपने जीवन का हित साध लो। इनको कभी युद्ध करने का मौका आ जाय तो तटस्थता न छोड़कर धर्म का पालन करो। ये सनातन जीवों के हितकारी हैं। इनके चरणों की पूजा-वन्दना करके उनकी सेवा में जीवन बिताओ। ३७७

ऎन्ऱन निनैय वाय उऱुदिहळ् यावुम् जॊल्लित्
तन्ऱुणैत् तडक्कै यारत् तनयनैत् तऴुविच् चालक्
कुन्ऱिनु मुयर्न्द तिण्डोट् कुरक्किनत् तरशन् कॊऱ्ऱप्
पॊन्ऱिणि वयिरप् पैम्बूट् पुरवलन् ऱन्नै नोक्कि 378

कुन्ऱिनुम् चाल उयर्न्त–पर्वत से भी अत्यधिक उन्नत; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कन्धों से युक्त; कुरङ्कु इनत्तु अरचन्–वानरकुलाधिपति; ऎन्ऱनन्–ऐसा; इनैय आय–इस तरह के; उऱुतिकळ् यावुम्–सब हितकारी बातें; चॊल्लि–कहकर; तन् तुणै तट कै–अपने जोड़े के विशाल हाथों से; तनयनै–पुत्र को; आर तऴुवि–कसकर आलिंगन करके; कॊऱ्ऱम्–विजयी; पैम् पॊन् तिणि–उत्तम स्वर्णमय; वयिरम् पूण्–हीरे-जड़े आभरणों से भूषित; पुरवलन् तन्नै–जगद्रक्षक को; नोक्कि–देखकर। ३७८

पर्वतों से भी अत्यधिक उन्नत कन्धों वाले वानराधिपति वाली ने ऐसा इस तरह की हित की बातें कहीं। फिर उसने अपने दोनों विशाल हाथों से अपने पुत्र का कसकर आलिंगन किया। उसके बाद वाली ने विजयशील और स्वर्णमय, हीरे-जटित आभरणधारी जगन्नाथ श्रीराम की ओर देखकर—। ३७८

* नॆय्यडै नॆडुवेऱ् ऱानै नीनिऱ निरुद रॆन्नुम्
तुय्यडैक् कनलि यन्न तोळिनन् ऱॊऴिलुन् दूयन्
पॊय्यडै युळ्ळत् तार्क्कुप् पुलप्पडाप् पुनिद मऱ्ऱुन्
कैयडै याहु मॆन्ऱव् विरामऱ्कुक् काट्टुङ् गालै 379

पॊय् अटै–असत्यमिलित; उळ्ळत्तार्क्कु–मन वालों को; पुलप्पटा–अदृश्य; पुनित–पवित्र पुरुष; नॆय् अटै–घृतसिक्त; नॆटु वेल्–लम्बे भालों के धारक वीरों की; चेनै–सेना वाले; नील् निऱ निरुतर् ऎन्नुम्–काले रंग के राक्षस रूपी; तुय् अटै–कपास के गट्ठर के लिए; कनलि अन्न–अग्नि-सम; तोळिनन्–कन्धे वाला है; तॊऴिलुम्–कार्य में; तूयन्–पवित्र है; मऱ्ऱु–अब; उन् कैयटै आकुम्–आपका धरोहर होगा; ऎन्ऱु–कहकर; अ इरामऱ्कु–उन श्रीराम को; काट्टुम् कालै–दिखाने (सौंपने) पर। ३७९

वाली ने सम्बोधित किया कि असत्य-मन जीवों को अगोचर रहनेवाले पवित्र पुरुष ! इस अंगद के कन्धे घृत-लगे भालों वाले वीरों की सेना के स्वामी, काले रंग के राक्षस रूपी रुई की गंठरियों के लिए अग्नि के समान हैं। यह अपने कृत्यों में भी पवित्र रहनेवाला है। अब से यह आपका धरोहर है। यह कहकर जब उसने अंगद को श्रीराम के आगे किया, तब। ३७९

❀ तन्नडि ताळ्द लोडुन् दामरैत् तडङ्ग णानुम्
पॊन्नुडै वाळै नीट्टि नीयिदु पॊरुत्ति यॆन्ऱान्
अॆन्ऱलु मुलह मेळु मेत्तिन्न विऱन्दु वालि
अन्निलै तुऱन्दु वानुक् कप्पुऱत् तुलह नानान् 380

तामरै तट कणातुम्–आयत-कमलाक्ष ने भी; तन् अटि ताळ्तलोटुम्–अपने पैरों पर (उसके) झुकने पर; पॊन् उटै वाळै नीट्टि–स्वर्णनिर्मित तलवार बढ़ाकर; नी–तुम; इतु–इसको; पॊरुत्ति–धारण कर लो; अॆन्ऱान्–कहा (उसे दिया); अॆन्ऱलुम्–कहते ही; उलकम् एळुम् एत्तित्त–सातों लोकों ने स्तुति की; वालि–वाली; अ निलै–वह स्थिति; तुऱन्तु–छोड़कर; वानुक्कु–स्वर्ग के; अ पुऱत्तु–उस पार के; उलकत् आनान्–विष्णुलोक (वैकुण्ठ या परमपद) वासी बना। ३८०

अंगद श्रीराम के चरणों में नत हुआ। विशाल-कमलाक्ष श्रीराम ने अपनी स्वर्णनिर्मित तलवार बढ़ायी और अंगद से कहा कि इसको धारण करो। (श्रीराम ने उसे अंगरक्षक का पद दिया।) श्रीराम के यह कहते ही सातों लोकों के वासियों ने श्रीराम की स्तुति की और अंगद को बधाई दी। तब वाली अपनी भूलोकवास की स्थिति से छूटकर उस परमलोक में पहुँच गया, जो देवों के स्वर्गलोक से भी परे, ऊपर है। ३८०

कैयव णॆहिळ्द लोडुङ् गडुङ्गणै कालन् वालि
वॆय्यमार् बहत्तुट् टङ्गा दुरुविमेक् कुयर मीप्पोय्त्
तुय्यनीर्क् कडलुट् टोय्न्दु तूय्मल रमरर् तूव
ऐयन्वॆन् विडाद कॊऱ्ऱत् तावम्वन् दडैन्द दन्ऱे 381

अवण्–तब; कै–उसके हाथों के; नॆकिळ्तलोटुम्–ढीले पड़ते ही; कटुम् कण कालन्–कठोर शर रूपी यम; वालि–वाली के; वॆय्य–सुदृढ़; मार्पु अकत्तु उळ्–वक्ष के अन्दर; तङ्कातु–न रहकर; उरुवि–निफरकर; मेक्कु उयर–ऊपर उठकर; मी पोय्–दूर जाकर; तुय्य नीर् कटलुळ्–शुद्ध-जल-सागर में; तोय्न्तु–मग्न होकर; तूय् मलर्–पवित्र पुष्प; अमरर् तूव–देवों के बरसाते; ऐयन्–प्रभु की; वॆन्–पीठ को; विटात–छोड़ जो अलग नहीं होता; कॊऱ्ऱत्तु–जो विजय का आधार है, उस; आवम्–तूणीर में; वन्तु–आकर; अटैन्ततु–पहुँचा। ३८१

वाली के हाथ (जो बाण को पकड़े हुए थे) ढीले हो गये तो कठोर बाण (यम) वाली के सुदृढ़ वक्ष से निफरकर बाहर आया। आकाश में ऊपर

बहुत दूर गया। शुद्धजल के सागर में नहा उठा। फिर उस तूणीर में आकर घुस गया जो श्रीराम की पीठ से कभी अलग नहीं होता था और जो श्रीराम की विजयों का आधार था। ३८१

वालियु मेहि नान्विण् वरम्बिला वाऱ्ऱ लोडुम्
पालिया मुन्नर् निन्ऱ परिदिशेय् शॅङ्गै पऱ्ऱि
आलिलैप् पळ्ळि यान्‌ मङ्गद नोडुम् बोनान्
वेल्विऴित् तारै केट्टाळ् वन्दवन् मॅय्यिल् वीऴ्न्दाळ् 382

वालियुम्–वाली भी; विण् एकितान्–परमपद गया; आल् इलै पळ्ळियानुम्–वटपत्रशायी विष्णु (के अवतार श्रीराम) भी; वरम्पु इला–असीम; आऱ्ऱलोटुम्–बल के साथ; मुन्नर् निन्ऱ–सामने स्थित; परिति चेय्–सूर्यपुत्र के; चॅङ्कै–लाल हाथों को; पऱ्ऱि–पकड़कर; पालिया–कृपा का प्रदर्शन करके; अङ्कतनोटुम्–अंगद को साथ लेकर; पोनान्–(परे) गये; वेल् विऴि–बर्छी-सी आँखों वाली; तारै केट्टाळ्–तारा ने सुना; वन्तु–आकर; अवन् मॅय्यिल्–उस (वाली) के शरीर पर; वीऴ्न्ताळ्–गिरी। ३८२

वाली स्वर्ग (परमपद) पहुँच गया। सुग्रीव अपार बल के साथ सामने खड़ा था। श्रीराम वटपत्रशायी (विष्णु प्रलयकाल में एक शिशु के रूप में प्रलय-प्रवाह के ऊपर एक वटपत्र पर शयन की मुद्रा में रहते है, ऐसा पुराणों का कथन है।) विष्णु के अवतार थे। उन्होंने सूर्यपुत्र सुग्रीव का हाथ पकड़कर अपनी कृपा जतायी। फिर वे अंगद को साथ लेकर वहाँ से अलग हो गये। भाले की-सी आँखों वाली तारा ने समाचार सुना तो वह भागती आकर वाली के शरीर पर गिरी। ३८२

कुङ्गुमङ् गॉट्टियन्न कुविमुलैक् कुवट्टिऱ् कॊन्न
पॊङ्गुवॆङ् गुरुदि पोर्प्पप् पुरिहुळल् शिवप्पप् पॊऱ्ऱोळ्
अङ्गव नलङ्गन् मार्बिऱ् पुरण्डन ळहन्ऱ शॅक्कर्
वॆङ्गदिर् विशुम्बिऱ् ऱोन्ऱु मिन्नॆन्नत् तुवळु मॅय्याळ् 383

कुवि मुलै–उठे हुए स्तनों के; कुवट्टिऱ्कु ऒत्त–पर्वतशिखरों के लिए उपयुक्त रीति से; कुङ्कुमम् कोट्टि अन्न–कुंकुम डाला गया हो, ऐसा; पॊङ्कु–उमगनेवाले; वॆम् कुरुति–गरम रक्त; पोर्प्प–(स्तनों पर) ढँककर जम गया; पुरि कुऴल्–घुंघराले बाल; चिवप्प–लाल हुए; अङ्कु–वहाँ; पॊन् तोळवन्–सुन्दरबाहु; अलङ्कल् मार्पिल्–(वाली के) माला से अलंकृत वक्ष पर; अकन्ऱ चॅक्कर्–विशाल लाल गगन में; वॆम् कतिर्–गरम सूर्यकिरणों के; विचुम्पिल्–आकाश में; तोन्ऱुम्–प्रकटित; मिन् ऎन्न–विद्युत के समान; तुवळुम् मॅय्याळ्–तड़पनेवाले शरीर की होकर; पुरण्टनळ्–लोटी। ३८३

पर्वतशिखरों के समान उसके स्तनों पर कुंकुम जम गया हो, ऐसा उमड़नेवाला गरम रक्त जम गया। उसके घुंघराले केश भी लाल हो

गये। वह उस बिजली के समान सुन्दर कन्धों वाले वाली के शरीर पर पड़कर तड़पी, मानो लाल सन्ध्यागगन के विशाल आकाश में बिजली तड़प रही हो। ३८३

वेय्ङ्गुळल् विळरि नल्याळ् वीणैयॆन् ऱिनैय नाण
एङ्गिन ळिरङ्गि विम्मि युरुहिन ळिरुहै कूप्पित्
ताङ्गिन डलैयिऱ् चोर्न्दु शरिन्दुताळ् कुळलुह डळ्ळि
ओङ्गिय तुयराऱ् पन्नि यिन्नन्न वरऱ्ऱ लुऱ्ऱाळ् 384

वेय् कुळल्–वंशीनाद; विळरि नल् याळ्–'विळरि' (रुदन का) राग का 'याळ्' का स्वर; वीणै–वीणा का नाद; अन्न इनैय–ऐसे स्वरों को; नाण–शरमाते हुए; एङ्कित्तळ्–रोती हुई; इरङ्कि–दुःखी होकर; विम्मि–सिसककर; उरुकित्तळ्–पानी-पानी होकर; तलैयिल्–सिर पर; इरु कै कूप्पि–दोनों हाथ जोड़े; ताङ्कित्तळ्–रखकर; चोर्न्तु–थककर; ताळ् कुळल्कळ्–लटकनेवाले केशों को; तळ्ळि–हटाकर; ओङ्किय तुयराल्–बढ़ते दुःख से; पन्नि–विविध प्रकार से विलाप करते हुए; इन्नन्न–यों; अरऱ्ऱल् उऱ्ऱाळ्–रोने लगी। ३८४

उसके रुदन-स्वर के सामने वंशीनाद, 'विळरि' के शोकगीत निकालने वाली 'याळ्' का स्वर और वीणा की ध्वनि भी शरम का अनुभव करे, ऐसी मधुर ध्वनि में वह रो रही थी। असह्य दुःख से वह सिसकी। दोनों हाथ जोड़कर उसने अपने सिर पर रखे। शिथिलता का अनुभव किया। केश उसके मुख पर बिखर रहे थे, उसने उनको हटाया। बढ़ते दुःख से पीड़ित होकर वह विविध बातें कहते हुए विलाप करने लगी। ३८४

❀ वरैशेर् तोळिडै नाळुम् वैहुवेन्
करैशे राविड रॆल्लै कण्डिलेन्
उरैशे रायुयि रेयॆन् नुळ्ळमे
अरैशे यानिदु काण् वञ्जिनेन् 385

उरै चेर्–प्रकीर्तित; आर् उयिरे–मेरे प्राण; ॲन् उळ्ळमे–मेरे मन; अरैचे–राजा; वरै चेर्–पर्वत-सम; तोळ् इटै–कन्धों में; नाळुम्–सदा; वैकुवेन्–रहनेवाली; करै चेरा–पार न पाऊँ, ऐसा; इटर्–दुःख; ॲल्लै कण्टिलेन्–इसका किनारा नहीं देखती; यान्–मैं; इतु काण–यह देखने से; अञ्चिनेन्–डरती हूँ। ३८५

मेरे प्राण-सम और कीर्तिमान नाथ! मेरे मन (के वासी)! राजा! तुम्हारे पर्वत-सम कन्धों के मध्य सदा (निश्चिन्त और सुखी) रहती थी। अब अपार दुःख आ गया। उसका छोर देख नहीं पाती। इसको देखने से मैं भय खाती हूँ। ३८५

तुयरा लेतॊलै याद वॆन्नैयुम्
पयिरा योपहै याद पण्बिनोय

शॅयिर्ती रायविदि यान दॅय्वमे
उयिर्पो नालुड लारु मुय्वरो 386

पकैयात–वैर न करनेवाले; पण्पित्तोय्–शीलवान; तुयराले–दुःख से; तोलैयात–जो नहीं मरी; ॲन्नैयुम्–मुझे भी; पयिरायो–न बुलाओगे क्या; चॅयिर् तीराय्–मेरा अपराध भूल जाओ; विति आत्त–विधिदत्त; तॅय्वमे–मेरे देव; उयिर् पोत्ताल्–प्राणों के छूटने पर; उटलारुम्–शरीर भी; उय्वरो–टिकेगा क्या। ३८६

मुझसे कभी न खीझनेवाले मेरे पति! इस दुःख में भी मैं नहीं मरी। ऐसे मुझे सम्बोधित न करोगे क्या? मेरे अपराध का विस्मरण कर दो। विधिदत्त मेरे पतिदेव! प्राण छूट जायँ तो शरीर भी रह सकेगा क्या? 'उडलार्' में 'आर्' चेतनवाचक प्रत्यय लगा है; काकु है।)। ३८६

नऱिदा नल्लमिऴ् दुण्ण नल्हलिऩ्
पिऱिया विऩ्ऩुयिर् पॅऱ्ऱ पॅऱ्ऱिदाम्
अऱिया रोनम नार दनऱ्ऱॅऩिऩ्
शिऱिया रोवुब हारञ् जिऩ्दियार् 387

नमतार्–यमदेव; नऱिवु आम्–स्वादिष्ट और सुवासपूर्ण; नल् अमिऴ्तु–श्रेष्ठ अमृत; उण्ण–खाने को; नल्कलिऩ्–(तुम्हारे) देने से; पिऱिया–अमर; इऩ् उयिर्–प्यारे प्राणों को; पॅऱ्ऱ पॅऱ्ऱि–प्राप्त करने का लाभ; ताम् अऱियारो–आप जानते नहीं क्या; अतु अऩ्ऱु ॲऩिल्–वैसा नहीं तो; उपकारम् चिन्तियार्–कृतघ्न; चिऱियारो–अल्प जीव हैं क्या। ३८७

तुमने देवों को अमृत दिया। यमदेव ने भी सुगन्धित स्वादिष्ट अमृत तुमसे लेकर पिया था। तभी वे अमर बने। इस प्राप्ति की सच्ची स्थिति को वे नहीं जानते क्या? नहीं तो वे क्या कृतघ्न और क्षुद्रप्रकृति हैं?। ३८७

अणङ्गार् पाहनै याशै तोऱुमुऱ्
ऱुणङ्गा वॊण्मलर् कॊण्डु ळऩ्बॊडुम्
इणङ्गाक् काल मिरण्डॊ डॊऩ्ऱिनुम्
वणङ्गा दित्तुणै वैह वल्लैयो 388

आचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; उऱ्ऱु–जाकर; उळ् अऩ्पोटुम्–आन्तरिक भक्ति के साथ; इणङ्का–रहकर; उणङ्का–अमलिन (ताजे); ऑळ् मलर्–प्रकाशमय पुष्पों को; कॊण्टु–ले; कालम् इरण्टॊटु–(प्रातः और सन्ध्या) दो कालों के साथ; ऑऩ्ऱितुम्–(मध्याह्न) एक में; अणङ्कु आर्–नारी को दिये हुए; पाकऩै–अर्द्धांग वाले (शिव) की; वणङ्कातु–पूजा किये विना; इ तुणै–इतनी देर; वैक वल्लैयो–रह सकनेवाले हो क्या। ३८८

तुम्हारी आदत थी कि दिशा-दिशा में जाकर प्रातःकाल, मध्याह्न

और सायंकाल, तीनों बेर अर्द्धनारीश्वर की नवीन सुगन्धित पुष्पों से पूजा करते थे। अब वह किये विना पड़े रहते हो। इतनी देर विना पूजा किये रह सकते हो क्या ? । ३८८

वरैयार्	तोळ्पॉडि	याड	वैहुवाय्
तरैमे	लायुरु	तत्मै	यीदॅन्न
करैवे	त्निल्ड्रिड्ड्	पूशल्	कण्डुमॉन्
उरैया	यॅन्वयि	नून	मियावदो 389

तरै मेलाय्–धरती पर; वरै आर् तोळ्–पर्वतोपम कन्धों पर; पॉटि आट–धूल लगने देते हुए; वैकुवाय्–पड़े रहनेवाले; उरु तत्मै–तुम्हारी प्राप्त दशा; ईतु ॲन–यही क्या, कहकर; करैवेन् नान्–चिल्लाती मैं; इन्रु इटु–आज जो मचाती; पूचल्–वह शोर; कण्टुम्–देख (सुन) कर भी; ऑन्रु उरैयाय्–कुछ न कहते हो; ॲन् वयिन्–मेरे पास; ऊनम्–कमी (अपराध, दोष); यावतो–क्या है तो। ३८९

कन्धों पर धूल लगने देते हुए धरती पर पड़े रहनेवाले ! तुम्हारी यह दशा हुई। यह कहते हुए मैं रो रही हूँ। मैं इतना रार मचा रही हूँ। तो भी तुम कुछ भी कह नहीं रहे हो ? मुझमें क्या दोष हो गया ? । ३८९

नैया	नित्रत्तॅ	नानि	रुन्दिङ्ङन्
मॅय्वा	नोर्तिरु	नाडु	मेवित्ताय्
ऐया	नीयॅन	दावि	यॅन्रदुम्
पॉय्यो	पॉय्युरै	याद	पुण्णिया 390

पॉय् उरैयात–असत्य न बोलनेवाले; पुण्णिया–पुण्यपुरुष; नान्–मैं; इङ्ङन्–यहाँ; इरुन्तु–रहकर; नैया नित्रत्तॅन्–मलिन हो रही हूँ; मॅय् वानोर् तिरु नाटु–सत्यदेव की स्वर्गभूमि; मेवित्ताय्–पहुँच गये; ऐया–नायक; नी–तुम; ॲनतु आवि–मेरे प्राण हो; ॲन्रतुम्–(जो) कहा (तुमने) वह; पॉय्यो–झूठ ही है क्या। ३९०

कभी असत्य न बोलनेवाले पुण्यपुरुष ! मैं यहाँ रहकर कुम्हला रही हूँ और तुम सत्यदेव के वैकुण्ठलोक में पहुँच गये। हे नाथ ! तुम कहते रहे कि तुम (तारा) मेरे प्राण हो। वह असत्य हो गया क्या ? । ३९०

※ शॅरुवार्	तोळनिन्	शिन्दैयु	ळॅनॅत्तिल्
मरुवार्	वॅञ्जर	मॅनैयुम्	नव्वुमाल्
ऑरुवे	नुळ्ळुळै	याहि	लुय्दियाल्
इरुवे	मुळ्ळिरु	वेमि	रुन्दिलेम् 391

चॅरु आर् तोळ–युद्धाभ्यस्त कन्धों वाले; नित् चिन्तै–तुम्हारे मन में; उळेन् ॲतिल्–रही तो; मरुवार्–शत्रु (श्रीराम) का; वॅम् चरम्–क्रूर शर; ॲतैयुम्

वव्वुमाल्–मुझे भी मारकर ले गया होता; ऑरुवेन् उळ्–अकेली मेरे मन में; उळै आक्किल्–तुम रहते तो; उय्ति आल्–बचे रह जाते; इरुवेम् उळ्–दोनों के अन्दर; इरुवेम् इरुन्तिलेम्–परस्पर नहीं रहे हैं। ३६१

युद्धाभ्यस्त कन्धों वाले ! अगर मैं तुम्हारे मन में रहती होती तो शत्रु का क्रूर शर मुझे भी मार के जाता ! तुम ही मेरे, जो अब अकेली रह गयी हूँ, मन मे रहते तो तुम अब बचे रहते। इसलिए साफ़ यह है कि न तुम मेरे मन के अन्दर रहे, न मैं तुम्हारे मन में। ३९१

ॐ ऍन्दाय्	नीयमिऴ्	दीय	यामॅलाम्
उय्न्दे	मॅन्रुव	हार	मुन्नुवार्
नन्दा	नाण्मलर्	शिन्दि	नण्बोडु
वन्दा	रोवॅदिर्	वान्	ळोरॅलाम् 392

वान् उळोर् ऍलाम्–स्वर्गवासी (देव) सब; उपकारम् उन्नुवार्–उपकार मानकर; ऍन्ताय्–पिता-सम; नी–तुमने; अमिऴ्तु–अमृत; ईय–दिया; याम् ऍलाम्–(इससे) हम सब; उय्न्तेम्–अमर बने; ऍन्रु–कहकर; नन्ता–कभी न मुरझानेवाले; नाळ् मलर्–नवीन (कल्प) पुष्प; चिन्ति–बरसाकर; नण्पु ओटु–मैत्री के साथ; ऍतिर् वन्तारो–अगवानी करने आये क्या। ३६२

क्या सभी स्वर्गवासी कृतज्ञ बनकर तुम्हारी अगवानी करने आये ? क्या उन्होंने यह कहा कि पिता-सम ! तुमने अमृत दिया और हम अशन करके अमर रहते है ? क्या उन्होंने तुम पर कभी न मुरझानेवाले नवीन कल्पसुमन बरसाये। ३९२

ओया	वाळि	यॊळित्तुनिन्	ऱॆय्यवे
एया	वन्द	विराम	नॆन्रुळान्
वाया	लेयिन	नॆन्निन्	वाऴ्वॅलाम्
ईया	योवमिऴ्	देयु	मीहुवाय् 393

ऑळित्तु निन्रु–(आड़ में) छिपे रहकर; ओया वाळि–(बिना मारे) न चलनेवाला शर; ऍय्यवे–चलाने के हेतु; एया वन्त–(सुग्रीव द्वारा) प्रेरित जो आये; इरामन् ऍन्रु–श्रीराम नाम के एक; उळान्–हैं; वायाल्–(वे) अपने मुख से; एयिनन् ऍन्निन्–माँगते तो; अमिऴ्तु एयुम्–अमृत ही; ईकुवाय्–दान देनेवाले तुम; वाऴ्वु ऍलाम्–जीवनाधार सब सम्पत्ति (राज्य आदि); ईयायो–नहीं देते क्या। ३६३

श्रीराम सुग्रीव से प्रेरित होकर, आड़ से अपना अमोघ बाण चलाने आये। अगर वे राम अपना मुख खोलकर तुमसे माँगते तो अमृत को भी दूसरों को जो दे चुके वैसे तुम अपने जीवन का आधार, सब सम्पत्ति, राज्य आदि नहीं दे देते क्या ? । ३९३

शीऱ्ऱेन्	मुन्दुर	वन्न	शीर्कॊळाय्
अऱ्ऱा	नन्नदु	शॆय्ह	लानॆन

उऱ्ऱा युम्बियै यूऴि काणुनी
इऱ्ऱाय् नानुनै यॅन्ऱु काण्बॅन्नो 394

मुन्तुऱ–पहले ही; चॉऱ्ऱेन्–मैंने कहा; अन्न चॉल्–वह कहना; कॊळाय्–तुमने नहीं माना; अऱ्ऱान्–वे; अन्नतु चॅय्कलान्–वह काम नहीं करेंगे; अॅन्–कहकर; उम्पियै–अपने छोटे भाई के सामने; उऱ्ऱाय्–(लड़ने के लिए) आ पहुँचे; ऊऴि काणुन्–अनेक युगपर्यन्त रहकर उनको देखने की आयु रखनेवाले तुम; इऱ्ऱाय्–चल बसे; नान्–मैं; उन्नै–तुम्हें; अॅन्ऱु–कब; काण्पॅन्नो–देखूँगी। ३९४

पहले ही, जब तुम जाने लगे तभी, मैंने कहा था (कि श्रीराम आये हैं)। पर तुमने वह कथन नहीं माना। 'वे वैसा करनेवाले नहीं हैं।' —यह कहकर भाई से लड़ने आ गये। तुम्हारी आयु इतनी लम्बी है कि युग-युग तक जीवित रहते। पर अब मर गये। कब मैं तुमको देखूँगी ? । ३९४

❀ नीऱा मेरुवु नीनॅ रुङ्गिनाल्
माऱोर् वाळियुन् मार्बै यीर्वदो
तेऱेन् यानिदु तेवर् मायमो
वेऱोर् वालि कॉलाम्वि ळिन्दुळान् 395

नी नॅरुङ्कितल्–तुम नियराओ तो; मेरुवुम्–मेरुपर्वत भी; नीऱु आम्–भस्म हो जायगा; माऱु–तुम्हारे विरोध में; ओर् वाळि–एक वाण; उन् मार्पै–तुम्हारे वक्ष को; ईर्वतो–चीर गया, यह क्या; यान् इतु तेऱेन्–मैं यह नहीं मानूँगी; तेवर् मायमो–देवों की माया है क्या; विळिन्तु उळान्–मरे जो पड़े हैं; वेऱु–(व) दूसरे; ऑरु–एक; वालि कॉलाम्–वाली ही हैं। ३९५

तुम पास जाओ तो मेरु भी भस्मीभूत हो जायगा। ऐसे तुम्हारे वक्ष को कोई बाण चीर गया क्या ? मैं विश्वास नहीं कर पाती। यह देवों की माया होगी ? ये जो मरे पड़े है शायद दूसरे कोई वाली हैं क्या ? । ३९५

तहैशेर् वण्बुहऴ् तिन्ऱु तम्बियार्
पहैनेर् वारुळ रान पण्बिनाल्
उहवे शिन्दै युलन्द ळिन्ददाल्
महने कण्डिलै योनम् वाऴ्वॅलाम् 396

मकने–पुत्र (अंगद); तम्पियार्–(तुम्हारे पिता के) छोटे भाई; तकै चेर्–आदर योग्य; वण् पुकऴ्–श्रेष्ठ प्रशंसा को; तिन्ऱु–मिटाकर; पकै नेर्वार्–शत्रुता करनेवाले; उळर् आन–है, ऐसे; पण्पिनाल्–व्यवहार से; नम् वाऴ्वु ॲलाम्–हमारा सारा जीवन; उकवे–चूर-चूर हो गया; चिन्तै–(इसलिए) मन भी; उलन्तु–कुम्हलाकर; अऴिन्ततु–मर गया; कण्टिलैयो–नहीं देखा। ३९६

(तारा ने अपने पुत्र, अंगद, से कहा—) पुत्र अंगद ! देवर ने गौरवयोग्य विपुल यश को खा (मिटा) लिया और शत्रुता के व्यवहार से

हमारे जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अव हमारा मन मुरझाया हुआ आक्रांत है। यह नहीं देखते क्या ? । ३९६

अरुमन् दऱ्ऱ महऱ्ऱुम् विल्लियार्
ऑरुमैन् दऱ्कु मडाद दुन्ऩिनार्
तरुमम् बऱ्ऱिय तक्क वर्क्कॅलाम्
करुमङ् गट्टळै यॅन्ऱल् कट्टदो 397

अरुमन्तु–अपूर्व औषध के समान; अऱ्ऱम् अकऱ्ऱुम्–दुःख दूर करनेवाले; विल्लियार्–धनुर्धर श्रीराम ने; ऑरु मैन्तऱ्कुम्–किसी वीर के; अटाततु–न योग्य; उन्ऩिनार्–(सोच) कर दिया है; तरुमम् पऱ्ऱिय–धर्मदृढ़; तक्कवर्क्कु ॲलाम्–सभी श्रेष्ठ लोगों के लिए; करुमम्–उनका कृत्य; कट्टळै–कसौटी है; ॲन्ऱल्–यह मसल; कट्टतो–मिटाया गया क्या। ३९७

श्रीराम अपूर्व औषध के समान दुःखनिवारक धनुर्धर हैं। पर उन्होंने ऐसा काम किया है, जो किसी भी वीर को नहीं सोहता। यह कथन है कि धर्मावलम्वी श्रेष्ठ लोगों के कृत्य ही उनकी श्रेष्ठता की कसौटी हैं। पर क्या वह कथन अव निरर्थक हो गया ? । ३९७

ॲन्ऱा ळिन्ऩन पन्ऩि यिन्ऩलो
डॉन्ऱा वुळ्ळुणर् वेदु मुऱ्ऱिलाळ्
निन्ऱा ळन्निलै नोक्कि नीदियाल्
वन्ऱाण् माल्वरै यन्ऩ मारुदि 398

ॲन्ऱाळ्–कहकर; इन्ऩन–इस प्रकार; पन्ऩि–वार-वार कहकर; इन्ऩलोटु–दुःख के साथ; ऑन्ऱा–एक बनकर; उळ् उणर्वु–अन्तर्चेतना; एतुम् उऱ्ऱिलाळ्–कुछ भी न रखती हुई; निन्ऱाळ्–भ्रमित खड़ी रही; अ निलै–वह स्थिति; नोक्कि–देखकर; नीतियाल्–न्याय (-व्यवहार) में; माल् वरै अन्ऩ–बड़े मेरु के समान (उत्कृष्ट और दृढ़); वल् ताळ्–अपार कार्यशक्ति-सम्पन्न; मारुति–मारुति ने। ३९८

तारा ऐसी वहुत वातें वार-वार कहकर विलापती रही। उसका मानो दुःख के साथ एकाकार हो गया। सुध-बुध खो दी और भ्रमित खड़ी रह गयी। हनुमान ने, जो अपने न्यायपालन में मेरु के समान उन्नत और दृढ़ था और कर्मण्य भी, — । ३९८

मडवार् शूळ मडन्दै तन्ऩैवाळ्
इडमे वुम्बडि येवि वालिपाल्
कडन्ऩया वुङ्गडै हण्डु कण्णनो
डुडन्ना वुऱ्ऱ वॅलामु णर्त्तिनान् 399

मटवार् चूळ्–स्त्रियों के मध्य रहनेवाली; अ मटन्तै तन्ऩै–उस स्त्री (तारा) को; वाळ् इटम्–वासस्थान; मेवुम्पटि–जाने को; एवि–प्रेषित करके; वालि

पाल्–वाली के प्रति; कटन् यावुम्–कर्तव्य सब संस्कार; कटै कण्टु–पूरा कराकर; उटत्ता–तुरत; कण्णतोटु–पद्माक्ष के पास; उऱ्ऱ ॲलाम्–जो हुआ, वह सब; उणर्त्तित्तान्–कह सुनाया। ३९९

स्त्रियों के मध्य रही उसको अपने अन्तःपुर में भिजवा दिया। फिर अंगद द्वारा वाली के प्रति कर्तव्य दाहकर्म आदि पूर्णरूप से कराया। पश्चात वह कमलाक्ष श्रीराम के पास गया और सारा वृत्तान्त समझा दिया। ३९९

(इसके बाद के तीन अतिरिक्त पदों का सार—) सूर्य अस्त हुआ। तब सूर्यमण्डल वाली के ही मुख के समान लाल था। श्रीराम ने रात का समय सीता का स्मरण करते हुए दुःख में बिताया। दूसरे दिन सवेरे सूर्य अपने पुत्र का अभिषेक देखने के इरादे से शीघ्र उदित हो गये। सुग्रीव के पास श्रीदेवी को पहुँचने में सुविधा हो, इस हेतु उन्होंने कमलों का द्वार खोल दिया।

8. अरशियर् पडलम् (राज्य-शासन पटल)

अदुहा लत्तव् वरुट्कु नायहन्
मदिशा ऱम्बियै वल्लै येवितान्
कदिरोन् मैन्दनै यैय कैहळाल्
विदियान् मौलि मिलैच्चु वायॅन्ना 400

अतु कालत्तु–उस समय; अ अरुट्कु नायकन्–उन करुणानाथ श्रीराम ने; मति चाल्–बुद्धि-श्रेष्ठ; तम्पियै–अनुज से; ऐय–सुन्दर भाई; कतिरोन् मैन्तर्नै–सूर्यपुत्र का; कैकळाल्–अपने हाथों से; वितियाल्–विधिवत; मौलि–मुकुट; मिलैच्चुवाय्–धारण कराओ; ॲन्ना–ऐसा; वल्लै–शीघ्र; एवितान्–आज्ञा सुनाई। ४००

तब करुणामय प्रभु श्रीराम ने बुद्धिश्रेष्ठ अपने कनिष्ठ को तुरन्त आज्ञा दी कि सुन्दर भाई! जाओ अपने हाथों से विधिवत सूर्यपुत्र सुग्रीव का मुकुटधारण कराओ। ४००

अप्पो दङ्गरु णिन्ऱ वण्णलुम्
मॅय्प्पोर् मारुदि तन्नै वीरनी
इप्पो देहॉण रिन्न शॅय्वित्तैक्
कॉप्पाम् यावैयु मॅन्ऱु णर्त्तलुम् 401

अरुळ् निन्ऱ–(श्रीराम की) कृपा (आज्ञा) माननेवाले; अण्णलुम्–महिमावान लक्ष्मण के भी; अप्पोतु–तभी; अङ्कु–वहीं; मॅय् पोर्–धर्म-योद्धा; मारुति तन्नै–मारुति से; वीर–वीर; नी–तुम; इन्न–इस; चॅय् वित्तैक्कु–कर्तव्य कृत्य के लिए;

ऑप्पु आम्–योग्य; यावैयुम्–सभी उपकरणों को; इप्पोते कॉणर्–अभी लाओ; ऍन्ऱु उणर्त्तलुम्–ऐसा कहते ही। ४०१

श्रीराम की कृपापूर्ण आज्ञाओं के सदा माननेवाले महिमावान लक्ष्मण ने तभी और वही धर्मयुद्धनिपुण हनुमान से कहा कि वीर ! इस मंगल-कार्य के लिए योग्य और आवश्यक उपकरण जुटाकर अभी लाओ। ४०१

मण्णु नीर्मुदऩ् मङ्ग लङ्गळुम्
ऍण्णुम् पॊऩ्मुडि यादि यावैयुम्
नण्णुम् वेलैयि नम्बि तम्बियुम्
तिण्णऩ् जॅय्वऩ शॅय्दु शॅम्मलै 402

मण्णुम्–अभिषेक का; नीर् मुतन्–पुण्यजल आदि; मङ्कलङ्कळुम्–मंगलद्रव्य; ऍण्णुम्–प्रशंसनीय; पॊन् मुटि–स्वर्णमुकुट; आति यावैयुम्–आदि सभी; नण्णुम् वेलैयिल्–जब आये तब; नम्पि–पुरुषनायक के; तम्पियुम्–अनुज भी; चॅम्मलै–(वानर-) नायक के लिए; तिण्णम् चॅय्वऩ–अवश्य कर्तव्य; चॅय्तु–(संस्कार) करवाकर। ४०२

उनकी आज्ञा सुनते ही हनुमान कार्यतत्पर हुआ और अभिषेक-जल आदि मंगलसाधन और गण्य स्वर्णमुकुट आदि उपकरण आ गये। तब पुरुषनायक श्रीराम के कनिष्ठ लक्ष्मण ने वानरनायक के प्रति आवश्यक अभिपेकपूर्व कर्तव्य संस्कार आदि करवाया। ४०२

मऱैयो राशि वऴङ्ग वाऩुळोर्
नऱैदोय् नाण्मलर् तूव नऩ्ऩॆऱिक्
किऱैयोऩ् ऱम्बि यिळैयोऩ् अन्दलैत्
तुऱैयोर् नूऩ्मुऱै मौलि शूट्टिऩाऩ् 403

मऱैयोर्–विप्रों के; आचि वऴङ्क–आशीर्वचन कहते; वाऩुळोर्–स्वर्गवासियों के; नऱै तोय् नाण् मलर् तूव–सुरभियुक्त ताज़े फूल बरसाते; नल् नॆऱिक्कु–श्रेष्ठ आचरण के; इऱैयोऩ्–नायक; तऩ्–के; इळैयोऩ्–अनुज ने; अ एऩ्तलै–उस राजा को; तुऱैयोर् नूल् मुऱै–आचार्यों के शास्त्रों के अनुसार; मौलि चूट्टिऩाऩ्–मुकुट धारण करवाया। ४०३

फिर धर्मावलम्वी श्रेष्ठ नायक के भाई ने उस सम्मानित सुग्रीव का विधिवत मुकुटधारण करवाया। तब विप्रों ने आशीर्वचन उच्चारे। स्वर्ग के देवों ने सुरभिमय ताज़े कल्पसुमन बरसाये। ४०३

पॊऩ्मा मौलि पुऩैन्दु पॊय्यिलाऩ्
तऩ्मा नक्कऴ् ऱाळुम् वेलैयिल्
नऩ्मार् विऱ्ऱऴु वुऱ्ऱ नायहऩ्
शॊऩ्नाऩ् मुऱ्ऱिय शॊल्लि नॆल्लैयाऩ् 404

पॊन् मा मौलि पुनैन्तु–स्वर्ण के बड़े मुकुट को धारण करके; पॊय् इलान्–सत्यसंध; तन् मान्नम् कळल्–(श्रीराम के) आदरणीय चरणों पर; ताळुम् वेलैयिल्–(जब सुग्रीव) झुका तब; नल् मार्पिल्–अपने श्रेष्ठ वक्ष से; तळुवुऱ्ऱ–लगा लेकर; मुऱ्ऱिय चॊल्लिन्–वेदों के; ॲल्लैयान्–शीर्षस्थ; नायकन्–जगन्नायक; चॊन्नान्–बोले। ४०४

सुग्रीव स्वर्णनिर्मित बड़ा किरीट पहनकर सत्यसंध श्रीराम के आदरणीय चरणों पर आ झुका। श्रीराम ने उसे अपने श्रीवक्ष से लगा लिया। फिर अर्थपूर्णवेदों के शीर्षस्थ (या अर्थपूर्णशब्दों के सर्वोन्नत अधिकारी) जगन्नायक सुग्रीव को (निम्नलिखित) उपदेश देने लगे। ४०४

ईण्डुनिन् ऱेहि नीनिन् निन्निय लिरुक्कै यॆय्दि
वेण्डुव मरबि नॆण्णि विदिमुऱै यियऱ्ऱि वीर
पूण्डपे ररशुक् केऱ्ऱ यावैयुम् बुरिन्दु पोरिन्
माण्डवन् मैन्द नोडुम् वाळ्दिनऱ् ऱिरुविन् वैहि 405

वीर–वीर; नी–तुम; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; एकि–जाकर; निन्–अपने; इन् इयल्–सुहावने; इरुक्कै–वासस्थान; ॲय्ति–पहुँचकर; वेण्टुव–कर्तव्य; मरपिन्–यथापरम्परा; ॲण्णि–विचारकर; विति मुऱै–विधिवत; इयऱ्ऱि–करके; पूण्ट–अपनाये गये; पेर् अरचुक्कु–बड़े शासन-कार्य के; एऱ्ऱ–योग्य; यावैयुम्–सभी; पुरिन्तु–सम्पन्न करते हुए; पोरिल्–युद्ध में; माण्टवन्–जो मरा, उसके; मैन्ततोटुम्–पुत्र (अंगद) के साथ; नल् तिरुविन्–श्रेष्ठ वैभव में; वैकि–रहकर; वाळ्ति–जीवन व्यतीत करो। ४०५

तुम यहाँ से सुखपूर्वक जाओ। अपने मधुर और निजी वासस्थान पहुँचो। कर्तव्य यथाक्रम सोचो और यथाविधि करो। अपनाये गये राज्यशासन के योग्य सभी कृत्य पूरा करते हुए युद्धनिहत वाली के पुत्र के साथ श्रेष्ठ सुख-वैभव में रहो। ४०५

वाय्मैशा लऱिविन् वाय्न्द मन्दिर मान्द रोडुम्
तीमैती रॊळुक्किन् निन्ऱु तॆऱुदॊळिन् मऱव रोडुम्
तूय्मैशाल् पुणर्च्चि पेणित् तुहळऱु तॊळिलै याहिच्
चेय्मैयो डणिमै यिन्ऱित् तेवरिऱ् ऱॆरिय निऱ्ऱि 406

वाय्मै चाल्–सत्यपूर्ण; अऱिविन् वाय्न्त–बुद्धिशाली; मन्तिरम् मान्तरोटुम्–मंत्रणा के (मन्त्री) लोगों के साथ; तीमै तीर्–बुराई-रहित; ऒळुक्किन्–आचरण में; निन्ऱु–रहकर; तॆऱु तॊळिल्–संहारकारी; मऱवरोटुम्–(सेना) वीरों के साथ; तूय्मै चाल्–पवित्र; पुणर्च्चि पेणि–मेल का व्यवहार चाहकर; तुकळ् अऱु–दोषहीन; तॊळिलै–कर्मी; आकि–बनकर; चेय्मैयोटु–दूरी के साथ; अणिमै इन्ऱि–निकटता भी छोड़कर; तेवरिल् तॆरिय–देवों के समान; निऱ्ऱि–रहो। ४०६

सत्यसंध और बुद्धिमान मन्त्रियों के साथ बुराई-रहित आचरण करो,

और संहारकारी (सेना के) वीरों के साथ पवित्र मेल का व्यवहार करो। तुम स्वयं दोषरहित आचरण करो। प्रजाजनों से न बहुत दूर रहो, न अत्यधिक समीप रहो। देवों के समान सम्मानित रहो। ४०६

पुहैयुडैत् तॅऩ्ऩि नुण्डु पॊङ्गऩ लङ्गॆन् ऱुऩ्ऩुम्
मिहैयुडैत् तुलह नूलोर् विनयमुम् वेण्डर् पाऱ्ऱे
पहैयुडैच् चिन्दै यार्क्कुम् पयऩुऱ पण्विऱ् ऱीरा
नहैयुडै मुहत्तै याहि यिऩ्ऩुरै नलहु नावाल् 407

उलकम्–संसार के (अनुभवी) लोग; पुकै उटैत्तु ऍऩ्ऩिऩ्–धुआँ रहा तो; अङ्कु–वहाँ; पॊङ्कु अऩल्–लपलपानेवाली आग; उण्टु–है; ऍऩ्ऱु उऩ्ऩुम्–ऐसा (अनुमान) कहने का; मिकै उटैत्तु–ज्ञान रखते हैं; नूलोर् वितयमुम्–शास्त्रज्ञों के कहे कूटव्यवहार भी; वेण्टल् पाऱ्ऱे–अपेक्षित है; पकै उटै चिन्तैयार्क्कुम्–शत्रुता मन में रखनेवाले लोगों के प्रति भी; पयऩ् उऱ–फलदायक; पण्पिल् तीरा–व्यवहार से न हटकर; नकै उटै मुकत्तै–हासवदन; आकि–बनकर; नावाल्–जीभ से; इऩ् उरै–मधुर वचन; नलकु–बोलो। ४०७

धुआँ दिखायी दिया तो लोग कहते हैं कि वहाँ भभक उठनेवाली आग भी है। यह अनुमान का प्रमाण है। यह भी आवश्यक है। साथ-साथ ग्रन्थों में शास्त्रज्ञों ने जो लिख रखा है, उस पर भी (आगम-प्रमाण में भी) विश्वास रखो। तुम्हारे प्रति शत्रुता रखनेवालों के प्रति सुफल-दायक बर्ताव करने का गुण मत छोड़ो। हँसमुख रहो। जिह्वा से मधुर वचन बोलो। ४०७

तेवरुम् वॆः(ह्)हऱ् कॊत्त शॆयिरऱ शॆल्व मः(ह्)दुऩ्
कावल दरुमैत् तॆऩ्ऱा लऩ्ऩदु करुदिक् काण्डि
एवरु मिऩिय नण्ब रयलवर् विरवा रॆऩ्ऱिम्
मूवहै यियलो रावर् मुऩैवर्क्कु मुलह मूऩ्ऱिऩ् 408

तेवरुम्–देव भी; वॆः.कऱ्कु ऑत्त–अपने लिए चाहें, इस योग्य; चॆयिऱ अऱ–कमीहीन; चॆल्वम् अः.तु–सम्पत्ति वह; उऩ कावलतु अरुमैत्तु–तुम्हारे संरक्षण में आ मिली है; ऍऩ्ऱाल्–कहें तो; अऩ्ऩतु करुति–वह सोचकर; काण्टि–देखो; मुऩैवर्क्कुम्–मुनियों के लिए भी; उलकम् मूऩ्ऱिऩ्–तीनों लोकों के; एवरुम्–कोई भी; इऩिय नण्पर्–मधुर मित्र; विरवार्–अरि; अयलवर्–अन्य (उदासीन); ऍऩ्ऱु–ऐसे; इ मूवकै–इन तीन प्रकारों के; इयलोर् आवर्–स्वभाव वाले होते हैं। ४०८

तुम्हारे पास ऐसी सम्पत्ति मिली है, जिसको देखकर देव भी अपने लिए चाहें। इसलिए तुम उसका महत्त्व जानो और उसका ठीक तरह से पालन करो। मुनियों के लिए भी अरि, मित्र, उदासी —इन तीनों तरह के लोगों से सम्बन्ध रखना पड़ता है। ४०८

शॆय्वन शॆय्दल् याण्डुन् तीयन शिन्दि यामल्
वैवन वन्द पोदुम् वशैयिल विनिय कूरल्
मॆय्शॊलल् वळङ्गल् यावुम् मेविन वॆः(ह्)ह लिन्मै
उय्वन वाक्कित् तम्मो डुयर्वन वुवन्दु शॆय्वाय् 409

याण्टुम्–(अरि, मित्र, उदासीन) सभी के प्रति; तीयत चिन्तियामल्–बुराई न सोचकर; चॆय्वत चॆय्तल्–करनी करना; वैवत–निन्दा-कथनों के; वन्त पोतुम्–(कानों में) लगने पर भी; वचै इल–कटुवचन छोड़कर; इत्तिय कूरल्–मधुर भाषण करना; मॆय् चॊलल्–सत्य ही बोलना; यावुम् वळङ्कल्–सबका दान देना; मेवित–परधन; वॆ॰.कल् इन्मै– न ग्रसना; उय्वत आक्कि–(मनुष्यों का) उद्धार कराकर; तम्मोटु उयर्वत–खुद भी उत्कृष्ट बनते हैं; उवन्तु चॆय्वाय्–(ऐसे व्यवहार) चाव के साथ करो। ४०६

अरि, मित्र उदासी —इन तीनों के प्रति कभी भी बुराई मत सोचो। कर्तव्य योग्य कृत्य करो। अपवाद कानों में पड़ें तो भी कटु शब्द मत कहो, पर मधुर भाषण ही करो। खूब दान करो। परधन मत चाहो। ऐसे कृत्य तुम्हें भी उभारेंगे और स्वयं भी उत्कृष्ट होते रहेंगे। इनको चाह के साथ करो। ४०९

शिऱियरॆन्ऱ् ऱिहळ्न्दु नोवु शॆय्वन शॆय्यऱ् मऱ्ऱिन्
नॆऱियिहन् दियानोर् तीमै यिळैत्तला लुणर्च्चि नीण्डु
कुऱियदा मेत्ति याय कूनियाऱ् कुववुत् तोळाय्
वॆऱियन वॆय्दि नॊय्दिन् वॆन्दुयरक् कडलिन् वीळ्न्देन् 410

कुववु तोळाय्–पुष्ट कन्धों वाले; चिऱियर् ऎन्ऱु–छोटे (अल्प या लघु) ऐसा; इकळ्न्तु–(सोचकर) उपेक्षा करके; नोवु चॆय्वत–दुःखदायी कृत्य; चॆय्यल्–मत करो; मऱ्ऱु–और भी; यात्–मैने; इ नॆऱि–यह सिद्धान्त; इकन्तु–छोड़कर; ओर् तीमै–एक बुराई; इळैत्तलाल्–की, इसलिए; उणर्च्चि नीण्टु–(शत्रुता की) भावना बढ़कर; कुऱियतु आम्–छोटी; मेत्ति आय–देह वाली; कूनियाल्–कुब्जा द्वारा; वॆऱियत–अभाव; ऎय्ति–प्राप्त करके; नॊय्तिन्–शीघ्र; वॆम् तुयर्–कठोर दुःख के; कटलिन्–सागर में; वीळ्न्तेन्–गिरा। ४१०

पुष्ट कन्धों वाले! अल्प (छोटा, या नीच, या लघु) समझकर किसी की उपेक्षा या अपमान मत करो और उनको दुःखी मत करो। देखो। मैंने इस सिद्धान्त का उल्लंघन कर एक बुराई की। इसलिए छोटी देह वाली कुब्जा का वैर-भाव बढ़ा और फलस्वरूप मुझे अभावों का सामना करना पड़ा और मैं क्रूर दुःख-सागर में गिर गया। ४१०

मङ्गैयर् पॊरुट्टा लॆय्दु मान्दर्क्कु मरण मॆन्ऱल्
शङ्गैयिन् ऱुणर्दि वालि शॆय्हैयाऱ् चालु मिन्नुम्

अङ्गवर् तिऱत्ति नात्ते यल्ललुम् वळियु मादल्
ऍङ्गळिऱ् काण्डि यन्ऱे यिदऱ्कुवे ऱुवमै युण्डो 411

मङ्कैयर् पोरुट्टाल्–नारियों के कारण; मान्तर्क्कु–पुरुषों को; मरणम् ऍय्तुम्–मरण प्राप्त होगा; ऍन्ऱल्–यह तथ्य; वालि चॅय्कैयाल्–वाली के कृत्य से; चङ्कै इन्ऱि–शंका के विना; उणर्ति–जान लो; चालुम्–प्रमाण (पर्याप्त) होगा; इन्नुम्–और भी; अवर् तिऱत्तिनाले–उनके निमित्त; अल्ललुम्–संकट और; पळियुम् आतल्–अपकीर्ति होती है, यह; ऍङ्कळिल्–हममें; काण्टि अन्ऱे–देखते हो न; इतर्कु–इसके लिए; वेऱु–अन्य कोई; उवमै उण्टो–उपमा है क्या। ४११

स्त्रियों के कारण पुरुषों को मृत्यु भी प्राप्त होगी —यह तथ्य वाली के व्यवहार से शंका के विना जान लो। यही श्रेष्ठ प्रमाण है। और उनके ही निमित्त संकट और अपवाद प्राप्त हो सकते हैं —यह तथ्य हमारी बाबत साबित हुआ है। दूसरे उदाहरण भी चाहिएँ क्या ? । ४११

नायह नल्ल नम्मै ननिपयन् दॅडुत्तु नल्हुम्
तायॅन विनिदु पेणत् ताङ्गुदि ताङ्गु वारै
आयदु तन्मै येन् मऱवरम् बिहवा वण्णम्
तीयन वन्द पोदु शुडुदियाऱ् ऱीमै योरै 412

नायकन् अल्लन्–स्वामी नहीं; नम्मै–हमें; पयन्तु ऍटुत्तु–जनाकर; नत्ति नल्कुम्–खूब पालनेवाली; ताय्–माता; ऍन–ऐसा (मानकर); इनितु पेण–(प्रजा) तुमसे प्रेम-भरा व्यवहार करे, ऐसा; ताङ्कुवारै–भरणयोग्य प्रजाजनों का; ताङ्कुति–भरण करो; आयतु तन्मै एन्नुम्–वैसे व्यवहार के होने पर भी; तीयन वन्त पोतु–हानि (किसी के द्वारा) आयी तो; तीमैयोरै–बुरा करनेवाले को; अऱम् वरम्पु–धर्म की सीमा; इकवा वण्णम्–लाँघे विना; चुटुति–जलाओ (दण्ड दो)। ४१२

प्रजा तुम्हें स्वामी न माने; पर अपनी जननी और पालन करने वाली धात्री समझे, और तुम्हारी सेवा करे। ऐसा तुम भरण-योग्य प्रजा का पालन करो। तो भी बुराई किसी के द्वारा आयी तो हानिकारी को, धर्म की सीमा का उल्लंघन किये विना, दण्ड दो। ४१२

इऱत्तलुम् पिऱत्त ऱानु मॅन्नवन् विरण्डुम् याण्डुम्
तिऱत्तुळि नोक्किऱ् चॅय्द विनैदरत् तॅरिन्द वन्ऱे
पुऱत्तिनि युरैप्प दॅन्ने पूविन्मेऱ् पुनिदऱ् केनुम्
अऱत्तिन दिऱुदि वाळ्नाट् किऱुदियः(ह्) दुऱुदि यन्ब 413

अन्प–स्नेही; तिऱत्तु उळि–समर्थ-रूप से; नोक्किन्–देखें तो; इऱत्तलुम्–मरना और; पिऱत्तल् तानुम्–जन्म लेना; ऍन्पन इरण्टुम्–दोनों; याण्टुम्–सदा; चॅय्त विनै तर तॅरिन्त अन्ऱे–पूर्वकृत कर्म के फलस्वरूप होते हैं न; पूविन् मेल्–(कमल) पुष्प पर आसीन; पुनितर्कु एनुम्–पवित्र (ब्रह्मा) देव के लिए भी;

अऱ्ऱुतित्तु इऱुति–धर्म का अन्त; वाळ् नाट्कु इऱुति–आयु का अन्त है; अ.·.तु उऱुति–वह निश्चित है; इनि–आगे; पुऱत्तु–अन्य; उरैप्पतु ऍन्नॅ–कहना क्या है ? । ४१३

प्रिय मित्र ! खूब विदग्धता के साथ सोचा जाय तो जन्म और मरण पूर्वकृत कर्मो के ही फल हैं। है न ? महाविष्णु के नाभि-कमल पर उदित पवित्र ब्रह्मा के लिए भी धर्म-कर्म का अन्त आयु का अन्त ला देगा। वह शाश्वत है और ध्रुव है। फिर क्या कहा जाय ? । ४१३

आक्कमुङ् गेडुन् दाम्जॅं यऱत्तॊडु पाव माय
पोक्किवे ऱुण्मै तेऱार् पॊरुवरुम् बुलमै नूलोर्
ताक्कित्त वॊन्ऱो डॊन्ऱु तरुक्करुञ् जॅरुविऱ् ऱक्कोय्
पाक्किय मन्ऱि यॅन्ऱुम् पावत्तैप् पऱ्ऱ लामो 414

तक्कोय्–योग्य; ऑन्ऱॊट्टु ऑन्ऱु–एक दूसरे के साथ; ताक्कित्त–टकराकर; तरुक्कु उऱुम्–जहाँ गर्व दरसाया जाता है, उस; चॅरुविल्–युद्ध में; आक्कमुम् केट्टुम्–उत्कर्ष और अपकर्ष; ताम् चॅय्–अपने से किये हुए; अऱत्तॊट्टु पावम् आय–धर्म और पाप के फलस्वरूप मिलनेवाले हैं; पोक्कि–वह छोड़कर; वेऱु उण्मै–अन्य कारणों का रहना; पॊरुवु अरुम्–अनुपम; पुलमै नूलोर्–विद्वान् शास्त्रज्ञ; तेऱार्–नहीं मानते; पाक्कियम् अन्ऱि–पुण्यकर्म छोड़कर; पावत्तै–पाप को; ऍन्ऱुम्–कभी; पऱ्ऱलामो–कर सकते हैं क्या। ४१४

योग्य सुग्रीव ! युद्ध में, जहाँ लोग परस्पर टकराते हैं और अभिमान दिखाते हैं, अभ्युदय और नाश अपने किये पुण्य और पाप के लाये हुए होते हैं। विद्वान् शास्त्रज्ञ लोग उसका और किसी कारण का होना नहीं मानते। इसलिए सौभाग्यकारी पुण्यकर्म छोड़कर नाशकारी पापकार्य कभी भी किये जा सकते हैं क्या ? । ४१४

इन्नवै तहैमै यॅन्ब वियल्बुळि मरबि नॅण्णि
मन्नर शियऱ्ऱि यॅन्गण् वरुवळि मारिक् कालम्
पिन्नुऱ मुऱैयि नुन्ऱन् पॅरुङ्गडऱ् चेनै योडुम्
तुन्नुदि पोदि यॅन्ऱान् सुन्दर न्नवनुञ् जॊल्वान् 415

इन्नवै तकैमै–ये योग्यताएँ हैं; ऍन्प–कहते हैं (लोग); इयल्पु उळि–शास्त्र-सम्मत रीति से; मरपिन् ऍण्णि–यथाक्रम विचार कर; मन् अरचु–स्थायी राज्य; इयऱ्ऱि–(राज) करके; मारि कालम्–वर्षाकाल के; पिन् उऱ–बीतने पर; ऍन् कण्–मेरे पास; वरु वळि–जब आओगे तब; मुऱैयिन्–उचित प्रकार से; उन् तन्–अपनी; पॅरु कटल् सागर-सम; चेनैयोटुम्–सेना के साथ;
ऍन्ऱान्–कहा; चुन्तरन्–सुन्दर
वह

ये सब शासक के लिए योग्य विचार और व्यवहार हैं। ऐसा लोग कहते हैं। इसलिए शास्त्र में उक्त रीति से और परम्परा के क्रम के अनुसार शाश्वत राज्य करो। फिर वर्षाकाल के बीतने पर मेरे पास आ जाओ। जब आओ, तब अपनी विशाल सागर-सम सेना को भी साथ ले आओ। अब तुम जाओ। —सुन्दर श्रीराम ने कहा। तब सुग्रीव उत्तर में यों बोला। ४१५

कुरङ्गुउऱै यिरुक्कै यॆऩ्ऩुङ् गुऱ्ऱमे कुऱ्ऱ मल्लाल्
अरङ्गॊळिल् तुरक्क नाट्टुक् करशॆऩ लाहु मऩ्ऱे
मरङ्गिळ ररुविक् कुऩ्ऱिऩ् वळ्ळनी मऩत्ति नॆम्मै
इरङ्गिय पणियाश् जॆय्य विरुत्तियाऱ् चिऩ्ऩा ळॆम्बाल् 416

वळ्ळल्–वदान्य; कुरङ्कु उऱै–वानरों के रहने का; इरुक्कै–स्थान; ऍऩ्ऩुम्–कहा जाता है, यही; कुऱ्ऱमे–दोष; कुऱ्ऱम् अल्लाल्–दोष है, नहीं तो; ऍळिल् अरङ्कु–सुन्दर मंच (सुधर्मा) से शोभित; तुरक्कम् नाट्टुक्कु–स्वर्गदेश का; अरचु ऍऩल्–राजा है, कहने योग्य; आकुम्–है; मरम् किळर्–तरुलसित; अरुवि कुऩ्ऱिऩ्–सरितापूर्ण पर्वत पर; नी–आप; मऩत्तिऩ्–चित्त में; ऍम्मै–हमारे प्रति; इरङ्किय–सहानुभूति के साथ दी गयी; पणि–सेवा की आज्ञाएँ; याम् चॅय्य–हमें करने देते हुए; चिल् नाळ्–कुछ दिन; ऍम् पाल्–हमारे पास; इरुत्ति–रहिए। ४१६

हमारे वासस्थान के सम्बन्ध में इतना ही दोष है कि वह वानरों का वासस्थान है, अगर वह दोष हो! नही तो वह 'सुधर्मा' नाम के सभाभवन के साथ शोभनेवाले स्वर्ग का भी नायक (स्वर्ग से अधिक भव्य) है। हमारे पर्वत पर तरु हैं और सरिताएँ है। आप जो भी आज्ञा देने की कृपा करेंगे, हम उनको कार्यान्वित कर देंगे। आप कुछ दिनों तक हमारे पास रहने की कृपा करें। ४१६

अरिन्दम निऩ्ऩै यण्मि यरुळुक्कु मुरिये माहिप्
पिरिन्दुवे ऱॆय्दुञ् जॆल्वम् वॆऱुमैयिऱ् पिऱिदऩ् ऱामाल्
करुन्दडङ् गण्णि ऩाळै नाडलाङ् गालङ् गाऱुम्
इरुन्दरु डरुदि यॆम्मो डॆऩ्ऱडि यिणैयिऩ् वीऴ्न्दाऩ् 417

अरिन्तम–शत्रुहंता; निऩ्ऩै अण्मि–आपकी शरण में आकर; अरुळुक्कुम्–कृपा के; उरियोमाकि–पात्र बनकर; पिरिन्तु–आपसे बिछुड़कर; वेऱु ऍय्तुम्–अलग रहकर भोगने का; चॆल्वम्–विभव; वॆऱुमैयिल् पिऱितु अऩ्ऱु आम्–अभाव से पृथक् नहीं है; करु तटम् कण्णिऩाळै–काली और आयत आँखों वाली (सीतादेवी) को; नाटल् आम्–खोजने का; कालम् काऱुम्–काल आते तक; ऍम्मोटु इरुन्तु–हमारे साथ रहकर; अरुळ् तरुति–उपकार करें; ऍऩ्ऱु–कहकर; अटि इणैयिऩ्–चरणद्वय पर; वीऴ्न्ताऩ्–गिरा। ४१७

शत्रुहन्ता वीर हे श्रीराम ! आपकी शरण में आकर, आपकी कृपा के पात्र रहने के बाद आपसे बिछुड़कर अलग जो, भी भोग भोगेंगे, वे अभाव से भिन्न नहीं होंगे ! काली और विशाल आँखों वाली देवी सीता के अन्वेषण के लिए योग्य काल के आने तक आप हमारे साथ रहने की कृपा कीजिए। सुग्रीव ने यह विनय करते हुए श्रीराम के चरणयुगल पर गिरकर प्रणाम किया। ४१७

एन्दलु मिदनैक् केळा विन्निळ मुरुव नाऱ
वेन्दमै यिरुक्कै यॆम्बोल् विरदियर् विळैदऱ् कॊव्वा
पोन्दव णिरुप्पि नॆम्मैप् पोऱ्ऱुवे पॊऴ्दु पोमाल्
तेऱ्न्दिनि दियऱ्ऱु मुन्ऱ नरशियऱ् ऱुरुमन् दीऱ्दि 418

एन्तलुम्–राजाराम भी; इतनै केळा–यह सुनकर; इन् इळ मुरुवल्–मधुर मन्दहास; नाऱ–प्रकट करते हुए; वेन्तु अमै–राजकीय; इरुक्कै–भवन में रहना; ऍम् पोल्–हम जैसे; विरतियर्–तपोव्रती लोगों के लिए; विळैतऱ्कु ओव्वा–चाहनीय नहीं है; अवण् पोन्तु–वहाँ आकर; इरुप्पिन्–रहें तो; ऍम्मै पोऱ्ऱुवे–हमारे सत्कार करने में ही; पॊऴ्तु पोम्–समय बीत जायगा; आल्–इसलिए; तेऱ्न्तु–छानबीन कर; इतितु इयऱ्ऱुम्–सुख से जो करोगे; उन् तन्–उस तुम्हारे; अरचियल् तरुमम्–शासन-धर्म से; तीऱ्ति–तुम हट जाओगे। ४१८

श्रीराजाराम ने भी यह सुनकर मधुर मन्दहास करते हुए उत्तर दिया। हम तपोव्रती हैं। हमारे लिए राजकीय भवन में रहना चाहने योग्य काम नहीं है। और भी अगर हम वहाँ आकर रहें तो हमारी सेवा-टहल में तुम लोगों का सारा समय कट जायगा। और उससे तुम सोच-विचारकर करणीय अपने शासनकार्य के धर्म से च्युत हो जाओगे। ४१८

एळिरण् डाण्डि यान्पोन् दॆरिवनत् तिरुक्क वेन्ऱेन्
वाळिया यरशर् वैहुम् वळनहर् वैह लॊल्लेन्
पाळियन् दडन्दोळ् वीर पाऱ्क्किलै पोलु मन्ऱे
याळिशै मॊऴियो डन्ऱि यानुऱ्ऱ मिन्ब मॆन्नो 419

वाळियाय्–जयजीव; एळ् इरण्टु आण्टु–सात के दो (चौदह) साल; यान् पोन्तु–मैं जाकर; ऍरि वनत्तु–जलते वन में; इरुक्क–रहना; एन्ऱेन्–मैंने मान लिया; अरचर् वैकुम्–राजा जहाँ रहते हैं; वळ नकर्–उस समृद्ध नगर में; वैकल् ऑल्लेन्–रहने को सम्मत नहीं होऊँगा; पाळि–सबल; अम्–सुन्दर; तटम् तोळ्–विशाल कन्धों वाले; वीर–वीर; याळ् इचै–'याळ्'-ध्वनि-सी मधुर; मॊऴियोटु अन्ऱि–बोली की सीता के विना; यान् उऱ्ऱ–मैं जो भोगूँ, वह; इन्पम्–सुख; ऍन्नो–किस मूल्य का; पाऱ्क्किलै पोलुम्–शायद तुमने नहीं सोचा क्या। ४१९

जयजीव ! मैने चौदहों साल दाहक वन में वास करने का वचन दिया है। तब तक राजाओं के वासस्थान, समृद्ध नगरों में रहना नहीं मानूँगा।

और भी, हे सबल सुन्दर विशाल कन्धों वाले वीर ! 'याऴ्' की ध्वनि-सी मधुरभाषिणी सीता के बिना जो भी मुझे सुख-भोग मिले, वह किस काम का ? यह तुम नहीं देखते शायद ! । ४१९

ऐदेविवे ऱरक्कन् वैत्त शिऱैयिनु ळिरुप्पत् तान्ऱन्
आवियन् दुणैव नोडु मळविडऱ् करिय विन्बम्
मेविना निराम नॆन्ऱा लैयविव् वॆय्य माऱ्ऱम्
मूवहै युलह मुऱ्ऱुङ् गालत्तु मुऱ्ऱ वऱ्ऱो 420

ऐय–श्रेष्ठ सुग्रीव; तेवि–मेरी गृहिणी; वेऱु–अलग; अरक्कन् वैत्त–राक्षस-रक्षित; चिऱैयिनुळ्–कारागृह में; इरुप्प–रहती है, तब; इरामन्–श्रीराम; तान्–स्वयं; तन् आवि अम् तुणैवनोटुम्–अपने प्राणप्यारे सखा के साथ; अळविटऱ्कु अरिय–अगण्य; इन्पम्–सुखभोग; मेवितान्–अपनाए रहा; ऍन्ऱाल्–लोग कहें तो; इ वॆय्य माऱ्ऱम्–यह कठोर अपवाद-कथन; मूवकै उलकम्–त्रिवर्ग के लोकों के; मुऱ्ऱुम् कालत्तुम्–मिटने के समय में भी; मुऱ्ऱवऱ्ऱो–मिटेगा क्या । ४२०

श्रेष्ठ सुग्रीव ! मेरी गृहिणी सीता रावणरक्षित कारागृह में है । तब 'राम अपने प्यारे प्राणसम सखा के साथ अपार सुख-भोग में मस्त रहा !' —यह अपवाद अगर लोग कहने लगें तो क्या वह अपयश त्रिवर्ग के लोकों के नाश होने पर भी मिटेगा ? । ४२०

इल्लऱन् दुऱन्दि लादो रियऱ्कैयै यिऴन्दु पोरिन्
विल्लऱन् दुऱन्दु वाऴ वॆळ्हिनॆन् मेन्मै यल्लाच्
चिल्लऱम् बुरिन्दु निन्ऱ तीमैह डीरु माऱु
नल्लऱन् दॊडर्न्द नोन्बि नवैयऱ नोऱ्प नाळुम् 421

इल् अऱम्–गृहस्थधर्म; तुऱन्तिलातोर्–अमुक्त; इयऱ्कैयै–लोगों का आचार-व्यवहार; इऴन्तु–छोड़कर; पोरिन्–युद्ध में; विल् अऱम्–धनुधर्म; तुऱन्तु–छोड़कर; वाऴ वॆळ्किनॆन्–जीने से शरमाता हूँ; मेन्मैयल्ला–जो उत्कृष्ट नहीं; चिल् अऱम्–क्षुद्र धर्म; पुरिन्तु निन्ऱ–जो मैंने आचरण किया है; तीमैकळ्–उनसे मिलनेवाले कष्ट; तीरुम् आऱु–दूर करने हेतु; नल् अऱम् तॊटर्न्त–सद्धर्मानुचारी; नोन्पिन्–व्रत के पालन में; नाळुम्–रोज; नवै अऱ–निर्दोष रीति से; नोऱ्पल्–तपस्या करूँगा । ४२१

गृहस्थी में रहनेवालों के योग्य रहन-सहन या व्यवहार मैंने त्याग दिया । साथ-साथ युद्ध में धनु-धर्म जो है, उसका भी उल्लंघन कर दिया । इस स्थिति में अपने जीवित रहने में मुझे शरम का अनुभव होता है । जो धर्म मैंने अब तक अपनाए वे अल्प हैं और श्रेष्ठ नहीं हैं । उनके पालन से जो हानियाँ सम्भवनीय हैं, उनको दूर करने के वास्ते मैं सदाचरण व्रत के पालन में स्थित होकर प्रतिदिन तप करूँगा, ताकि दोष सब दूर हों । ४२१

अरशियऱ् कुरिय यावु माऱ्ऱुळि याऱ्ऱि यान्ऱ
करैशेयऱ् करिय शेनैक् कडलोडुन् दिङ्ग णान्गिल्
विरशुव देन्बा निन्नै वेण्डिनेन् वीर वेन्ऱान्
उरैशेयर् कॆळिदु माहि यरिदुमा मॊळुक्कि निन्ऱान् 422

उरै चॆयऱ्कु–कहने के लिए; ॲळितुम् आकि–सुलभ रहकर; अरितुम् आम्–(करने के लिए) कठिन जो है; ऒळुक्किल्–उस आचरण में; निन्ऱान्–स्थित रहनेवाले श्रीराम; वीर–वीर; अरचु इयऱ्कु–राजकाज के लिए; उरिय यावुम्–योग्य आवश्यक सभी; आऱ्ऱुळि–करनेयोग्य रीति से; आऱ्ऱि–करके; आन्ऱ–श्रेष्ठ; करै चॆयऱ्कु अरिय–पार पाने में कठिन; चेनै कटलोटुम्–सेना-सागर के साथ; तिङ्कळ् नान्किल्–महीनों, चार, में; ॲन् पाल्–मेरे पास; विरचुक–आ मिलो; निन्नै वेण्टिनेन्–तुमसे याचना करता हूँ; ॲन्ऱान्–बोले। ४२२

सदाचार ऐसे हैं, जिनका कथन सुलभ है पर आचरण कठिन है। श्रीराम ऐसे सदाचरण में स्थिर रहनेवाले थे। उन्होंने सुग्रीव से कहा कि वीर! राजकाज ठीक सँभालो। फिर अपार सेना के सागर के साथ चार मास की अवधि में मेरे पास आ जाओ। तुमसे मेरी यह याचना है। ४२२

मऱ्ऱितोर मार्ऱङ् गूऱान् वानुयर् तोऱ्ऱत् तन्नान्
कुऱिप्पऱिन् दॊळुहन् मादो कोदिल राद लॆन्ना
नॆऱिप्पडर् कण्गळ् पॊङ्गि नीर्वर नॆडिदु ताळ्न्दु
पोऱिप्परुन् दुन्ब मुन्नाक् कविक्कुलत् तरशन् पोनान् 423

कविकुलत्तु अरचन्–कपिकुल का राजा; मऱ्ऱितु–उत्तर में; ओर् माऱ्ऱम्–कोई वचन; कूऱान्–न बोला; वान् उयर्–बहुत उत्कृष्ट; तोऱ्ऱत्तु–(तपो-)वेशधारी; अन्नान्–उनका; कुऱिप्पु अऱिन्तु–मनोभाव जानकर; ऒळुकल्–उसके अनुसार आचरण करना; कोतु इलर् आतल्–निर्दोष काम करनेवाले का गुण होगा; ॲन्ना–यह सोचकर; पटर् कण्कळ्–विशाल आँखों से; नीर् पॊङ्कि–जल को उमड़कर; नॆऱि वर–धारा में बहाते हुए; नॆटितु ताळ्न्तु–पट गिरकर; पोऱिप्पु अरु–अकूत; तुन्पम् उन्ना–दुःख मन में रखे; पोनान्–गया। ४२३

यह सुनकर कपिकुलराज ने कुछ उत्तर नहीं दिया। अति श्रेष्ठ तपवेश-धारी श्रीराम का तात्पर्य समझा। माना कि उनका मन जानकर उसी के अनुकूल चलना निर्दोष आचरण वाले के लिए युक्त है। आँखों से आँसू बहाते हुए सुग्रीव श्रीराम के चरणों में पट गिरा। नमस्कार कर उठा और अपार दुःख लेकर किष्किन्धा की ओर चल दिया। ४२३

वालिहा दलनु माण्डु मलरडि वणङ्गि नानै
नीलमा मेह मन्न नॆडियव नरुळि नोक्किच्
चीलनी युडैयै याद लिवन्शिरु तादै यॆन्ना
मूलमे तन्द नुन्दै यामॆन मुऱैयि निऱ्ऱि 424

मलर् अटि–कमल-चरण पर; वणङ्कितान्–जिसने प्रणाम किया; वालि कातलन्म्–उस वाली के पुत्र को भी; आण्टु–वहाँ; नीलम् मा मेकम् अन्न–नीले, वड़े मेघ के समान; नॆटियवन्–उत्तम श्रीराम; अरुळिन्–कृपापूर्वक; नोक्कि–देखकर; नी–तुम; चीलम् उटैयै–शीलवान; आतल्–वनो; इवन्–इसे; चिऱ्ऱातै ऎन्ना–छोटे पिता न मानकर; मूलमे तन्त–जन्म-दाता; तुन्तै आम् ऎन्न–अपने पिता ही मानकर; मुऱैयिन् निऱ्ऱि–उसी (वान्धव्य-) क्रम में वर्ताव करो। ४२४

तब वाली का पुत्र भी श्रीराम के चरणों पर नत हुआ। नीले, वड़े मेघ-सम श्रीराम ने उस पर कृपाकटाक्ष डालकर कहा कि तुम शीलवान वने रहो। इस सुग्रीव को छोटे पिता मत मानो। पर जनक पिता ही मानो। उस रिश्ते के गौरव का पालन करो। ४२४

ऎन्नमऱ् ऱिनैय कूऱि येहवऱ् ऱॊडर वॆन्ऱान्
पॊन्नडि वणङ्गि मऱ्ऱप् पुहऴुडैक् कुरिशिल् पोनान्
पिन्नर्मा रुदियै नोक्किप् पेरॆऴिल् वीर नीयुम्
अन्नव नरशुक् केऱ्ऱ दाऱ्ऱुदि यऱिवि नॆन्ऱान् 425

ऎन्न–कहकर; मऱ्ऱुम्–और; इत्तैय कूऱि–ऐसी बातें कहकर; अवन् तॊटर–उसका पीछा करके; एकु–जाओ; ऎन्ऱान्–कहा; मऱ्ऱु–उसके पश्चात्; अ पुकऴ् उटै–वह कीर्तिमान; कुरिचिल्–कुँअर; पॊन् अटि वणङ्कि–सुन्दर चरणों पर नमस्कार करके; पोनान्–गया; मारुतियै–मारुति को; नोक्कि–देखकर; पिन्नर्–फिर; पेर् ऎऴिल् वीर–अतिसुन्दर वीर; नीयुम्–तुम भी; अन्नवन्–उसके; अरचुक्कु एऱ्ऱतु–राज्य के योग्य; अऱिविन्–अपनी बुद्धि से; आऱ्ऱुति–(काम) करो; ऎन्ऱान्–कहा। ४२५

श्रीराम ने यह कहा और भी ऐसे हित-वचन कहे। फिर आज्ञा दी कि सुग्रीव के पीछे जाओ। पश्चात वह प्रकीर्तित कुमार अंगद श्रीराम के सुन्दर चरणों पर नमस्कार करके किष्किन्धा की ओर चल पड़ा। श्रीराम ने मारुति से कहा कि अतिसुन्दर वीर! तुम भी जाओ और सुग्रीव के शासनकार्य में युक्त सहयोग के कार्य अपने बुद्धिबल के आधार पर साधो। ४२५

पॊय्त्तलि लुळ्ळन् तन्वु पॊऴिहिन्ऱ पुणर्च्चि यानुम्
इत्तलै यिरुन्दु नायेऩ् ऩेयिन वॆनक्कुत् तक्क
कॆत्तॊऴिल् शॆय्वॆ नॆन्ऱु कऴलिणै वणङ्गुङ् गालै
मॆय्त्तलै निन्ऱ वीर लिव्वुरै विळम्व लुऱ्ऱान् 426

पॊयत्तल् इल्–असत्य जिसमें नहीं था; उळ्ळत्तु–ऐसे मन के; अन्पु पॊऴिकिन्ऱ–(और) भक्ति अधिक; पुणर्च्चियानुम्–रखनेवाले के; नायेन्–दास में; इ तलै इरुन्तु–यहीं रहकर; एयित्त–आप जो आज्ञा देंगे, ऎनक्कु तक्क–और अपने योग्य; कॆत् तॊऴिल्–छोटी-मोटी सेवाएँ; चॆय्वॆन्–करूँगा; ऎन्ऱु–कहकर;

कऴल् इणै–चरणयुगल पर; वणङ्कुम् कालै–नमस्कार करते समय; मॅय् तलै निन्ऱ वीरन्–सत्यसंध वीर (श्रीराम); इ उरै–यह बात; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४२६

असत्यहीन और भक्ति से लबालब भरे मन वाले हनुमान ने विनय की कि दास मैं यहीं रह जाऊँ ! आप जो भी आज्ञा करेंगे, जो मुझसे साध्य है, वे छोटी-मोटी सेवाएँ बजाऊँगा। यह कहते हुए उसने श्रीराम के चरणों पर नमस्कार किया; तब सत्यसंध श्रीराम ने यों कहा। ४२६

निरम्बिना नॉरुवन् कात्त निऱैयर शिऱुदि निन्ऱ
वरम्बिला ददनै मऱ्ऱोर् तलैमहन् वलिदिऱ् कॉण्डाल्
अरुम्बुव नलनुन् दीङ्गु माहलि नैय निन्बोर्
पॅरुम्बॊरै यऱिवि नोरा निलैयिनैप् पॅरुव दम्मा 427

निरम्पितान्–पूर्णयोग्य; ऑरुवन्–एक (वाली); कात्त–द्वारा पालित; निऱै अरचु–समृद्ध राज्य; इऱुति निन्ऱ–अन्तिम; वरम्पु इलाततु–सीमा-रहित है; अततै–उसे; मऱ्ऱु ओर् तलै मकन्–कोई दूसरा राजा; वलितिन् कॉण्टाल्–बलात् हथिया लेगा तो; नलतुम् तीङ्कुम्–लाभ और हानि; अरुम्पुव–होंगी; आकलिन्–इसलिए; ऐय–महिमामय; निन्पोल्–तुम्हारे समान; पॅरुम् पॊऱै–बड़े सहनशील और; अऱिविनोराल्–बुद्धिमान लोगों द्वारा ही; निलैयिनै पॅऱुवतु–स्थिरता पा सकता है। ४२७

पूर्णकुशल वाली द्वारा पालित राज्य समृद्ध और निस्सीम है। उसको कोई अन्य राजा बलात् हथिया लेगा तो लाभ और हानियाँ निकल आयँगी। इसलिए उसे सुरक्षित करना है। महिमावान हनुमान ! वह स्थिरता देने का कार्य तुम जैसे बड़े ही सहनशील और बुद्धिमान के हाथों ही हो सकेगा। ४२७

आन्ऱवर् कुरिय दाय वरशिनै निऱुवि यप्पाल्
एन्ऱनक् कुरिय दाय करुममु मियऱ्ऱऱ् कॊत्त
शान्ऱवर् निन्नि निल्लै यादलाऱ् ऱरुमन् दानें
पोन्ऱनी यानें वेण्ड वत्तलैप् पोदि यॅन्ऱान् 428

आन्ऱवर्कु–उत्तम सुग्रीव के; उरियतु आय–स्वत्व के; अरचिनै–राज्य को; निऱुवि–सुसंगठित करके; अप्पाल्–बाद; ऍनक्कु उरियतु आय–मेरे प्रति कर्तव्य; करुममुम्–कार्य भी; एन्ऱु–हाथ में लेकर; इयऱ्ऱऱ्कु ऒत्त–करने योग्य; चान्ऱवर्–श्रेष्ठ व्यक्ति; निन्निन् इल्लै–तुम्हारे समान कोई नहीं है; आतलाल्–इसलिए; तरुमम् तानें पोन्ऱ–धर्म ही-सम; नी–तुम; यानें वेण्ट–मेरी ही याचना से; अ तलै पोति–उधर जाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ४२८

श्रेष्ठ सुग्रीव के अधिकार में आये राज्य को पहले सुरक्षित करो।

फिर मेरे प्रति कर्तव्य करो। इसके लिए तुमसे बड़ा श्रेष्ठ कोई नहीं है। इसलिए धर्मावतार-सम तुम मेरी याचना मानो और वहाँ जाओ। ४२८

आऴियान् ननैय कूऱ वाणैयी दाहि नः(ह्)दे
वाऴियाय् पुरिवॅ नॅन्ऱु वणङ्गिमा रुदियुम् बोनान्
शूऴिमाल् यानै यन्न तम्बियो डॅऴुन्दु तॉल्लै
ऊऴिना यहनुम् वेऱो रुयर्दडङ् गुन्ऱ मुऱ्ऱान् 429

आऴियान्–(सुदर्शन-) चक्रधारी श्रीराम (के); अनैय कूऱ–वैसा कहने पर; मारुतियुम्–हनुमान भी; वाऴियाय्–जयजीव; आणै–आज्ञा; ईतु आकिन्–यह हो तो; अ.·.ते पुरिवॅन्–वही करूँगा; ऍन्ऱु–कहकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; पोनान्–गये; तॉल्लै–पुरातन; ऊऴि नायकनुम्–युगनायक श्रीराम भी; चूऴि माल्–मुखपट्ट पहने हुए और बड़े; यानै अन्न–गज के समान; तम्पियोटु ऍऴुन्तु–भाई के साथ उठकर; वेऱु ओर्–दूसरे एक; उयर् तट कुन्ऱम्–उन्नत विशाल पर्वत पर; उऱ्ऱान्–पहुँचे। ४२९

सुदर्शन नाम के चक्रधारी श्रीराम के ऐसा कहने पर मारुति ने विनय के साथ कहा कि जयजीव! यही आपकी आज्ञा है तो उसी के अनुसार चलूँगा। फिर वह उनको नमस्कार करके चला गया। बाद पुरातन युगों के नायक श्रीराम मुखपट्ट पहने हुए बड़े हाथी के समान अपने भाई लक्ष्मण को साथ लेकर दूसरे एक बड़े (प्रश्रवण) पर्वत पर जा पहुँचे। ४२९

आरिय नरुळिऱ् पोयव् वहन्मलै यहत्त नान
सूरियन् महनु मानत् तुणैवरुङ् गिळैयुञ् जुऱ्ऱत्
तारैयै वणङ्गि यन्ना डायॅनत् तन्द शॉऱ्कळ्
शीरियर् शॊल्ले यॅन्नच् चॅव्विदि नरशु शॅय्दान् 430

आरियन् अरुळिन्–आर्यश्रेष्ठ श्रीराम की आज्ञा के अनुसार; पोय्–जाकर; अ अकन् मलै–उस विशाल (किष्किन्धा) पर्वत के; अकत्तन् आन–स्थल में रहनेवाला; चूरियन् मकनुम्–सूर्य के पुत्र ने भी; मानम् तुणैवरुम्–सम्मान्य साथी; किळैयुम्–और बन्धु; चुऱ्ऱ–घेर आये; तारैयै वणङ्कि–तारा को नमस्कार करके; अन्नाळ् तायॅन–उसके द्वारा मातृ-सम; तन्त चॉऱ्कळ्–कहे हुए शब्दों को; चीरियर् चॉल्ले–उत्तम लोगों के उपदेश-वचन ही; ऍन्न–मानकर; चॅव्वितिन्–उत्तम रूप से; अरचु चॅय्तान्–राज्य किया। ४३०

आर्य श्रीराम की आज्ञा लेकर सुग्रीव अपने साथियों (मन्त्रियों आदि) और बान्धवों के साथ अपने पर्वत पर पहुँचा। वहाँ का होकर उसने तारा को नमस्कार किया। उसने जो भी माता के समान कहा उसे उत्तम, बड़े लोगों के उपदेशों का-सा गौरव देते हुए सुग्रीव राज्य करता रहा। ४३०

वळवर शॅय्दि मऱ्ऱ वाऩर वीरर् यारुम्
किळैञरि ऩुदव वाणै किळर्दिशै यळप्पक् केळो
डळविल वाऱ्ऱ लाण्मै यङ्गद ऩऱङ्गोळ् शॅल्वत्
तिळवर शियऱ्ऱ वेवि यिऩिदिऩि ऩिरुन्दा ऩिप्पाल् 431

वळम् अरचु ॲय्ति–सब तरह से समृद्ध राज्य पाकर; मऱ्ऱ–अन्य; वाऩर वीरर् यारुम्–सभी वानर वीरों के; किळैञरिऩ् उतव–रिश्तेदारों के समान साथ देते; आणै–आज्ञा के; किळर् तिचै–वर्तमान सभी दिशाओं में; अळप्प–मापते (मान्य रहते); अळवु इल आऱ्ऱल्–अपार शक्तिशाली; आण्मै अङ्कतऩ्–पौरुषयुक्त अंगद को; केळोटु–अपने बन्धु-बान्धवों के साथ; अऱम् कॉळ् चॅल्वत्तु–धर्मसम्मत रीति से प्राप्त वैभव के साथ; इळवरचु इयऱ्ऱ–युवराज का अधिकार चलाने की; एवि–आज्ञा देकर; इऩितिऩ् इरुन्ताऩ्–सुखपूर्वक रहा; इप्पाल्–इसके पश्चात्। ४३१

सुग्रीव सर्वसमृद्ध राज्य का राजा बना। अन्य वानरवीर उसका रिश्तेदारों के समान साथ दे रहे थे। उसकी आज्ञा वर्तमान सभी दिशाओं में मानी गयी। सुग्रीव ने अपार बल और पौरुष से युक्त अंगद को युवराज के पद पर रहकर अपने रिश्तों के साथ धर्मसम्मत रीति से प्राप्त धन-वैभव को भोगने की आज्ञा दी। इस स्थिति में सुग्रीव सुख के साथ राज्य करता रहा। ४३१

9. कार्कालप् पडलम् (वर्षाकाल पटल)

मावियल् वडदिशै निऩ्ऱुम् माऩवऩ्
ओविय मेयॅऩ वॉळिक्क विऩ्गुलाम्
देवियै नाडिड मुऩ्दिऩ् तॅऩ्ऱिशैक्
केविय तूदॅऩ विरवि येहिऩाऩ् 432

ओवियमे ॲऩ–चित्र के ही समान; ऑळि–प्रकाशमय; कविऩ् कुलाम्–सौन्दर्ययुक्त; तेवियै–देवी सीता को; नाटिट–ढूँढ़ने के लिए; मुऩ्ऩति–(किसी के जाने से) पूर्व ही; माऩवऩ्–मनुकुल सम्भूत श्रीराम के द्वारा; तॅऩ् तिचैक्कु–दक्षिण दिशा में; एविय–प्रेषित; तूतु ॲऩ–दूत के समान; इरवि–सूर्य; मा इयल्–श्रेष्ठ मान्य; वट तिचै निऩ्ऱुम्–उत्तर दिशा से; एकिऩाऩ्–(दक्षिण की तरफ़) गये। ४३२

दक्षिणायन आरम्भ हुआ। सूर्य ने अपना दक्षिण की ओर गमन आरम्भ किया। सूर्य श्रीराम के दूत के समान लगे, जिनको श्रीराम ने चित्र-सम सुन्दर देवी सीता को खोजने के लिए सबसे पहले भेजा हो। वे उत्तम उत्तर दिशा छोड़कर दक्षिण में गये। ४३२

पैविरि पः(ह्)ऱलैप् पाऩ्द ळेन्दिय
मॆय्निलत् तहळियिऩ् मुळङ्गु नीर्नॅयिऩ्

वॅय्यवन् विळक्कमा मेरुप् पॉऱ्ऱिरि
मैयह लॊत्तदु मळैत्त वानमे 433

मळैत्त वानम्–मेघाच्छन्न आकाश; पै विरि–फन फैले हुए; पल् तलै–अनेक सिरों के; पान्तळ्–शेषनाग द्वारा; एन्तिय–वहित; मॊय् निलम्–सशक्त भूमि रूपी; तकळियिल्–दिये में; मुळङ्कुम्–शब्दायमान; नीर् नॅयिन्–समुद्र रूपी घृत से; मेरु पॊन् तिरि–मेरु रूपी सुन्दर वर्तिका पर; वॅय्यवन् विळक्कम् आ–सूर्य की ज्वाला का; मै अकल्–काजल पारने के बर्तन; ऑत्ततु–के समान लगा। ४३३

आकाश मेघाच्छन्न था। वह काजल पारने के एक बहुत बड़े बर्तन के समान लगा। फैले हुए फनों वाले शेषनाग द्वारा वहित भूमि रूपी दिये में शब्दायमान समुद्रजल रूपी घृत डालकर मेरु की सुन्दर वर्तिका रखी गयी और सूरज की ज्वाला से जो धुआँ उठा वह आकाश पर जम गया। ४३३

नण्णुद लरुङ्गड नञ्ज नुङ्गिय
कण्णुदल् कण्डत्तिन् काळ मामॅन
विण्णह मिरुण्डदु वॅयिलिन् वॅङ्गदिर्
तण्णिय मॅलिन्दन तळैत्त मेहमे 434

विण् अकम्–आकाश; नण्णुतल् अरु–अगम; कटल् नञ्चम्–(क्षीर-)सागरोत्पन्न विष के; नुङ्किय–खादक; कण्नुतल्–भालनेत्र शिवजी के; कण्टत्तिन्–कण्ठ में; काळम् आम् ॲन–(जो है) उस हलाहल के समान; इरुण्टतु–काला बना; वॅयिलिन्–सूर्य की; वॅम् कतिर्–गरम किरणें; तण्णिय–शीतल बनीं और; मॅलिन्तन–कृश (मन्द) पड़ गयीं; मेकम्–मेघ; तळैत्त–पुष्ट हुए (घुमड़ आये)। ४३४

आकाश भालनेत्र शिवजी के कण्ठ के विष के समान काला बना, जो अतिभीषण था, क्षीरसागर से निकला था और जिसको उन्होंने निगल लिया था। सूर्य की गरम किरणें शीतल और कृश पड़ गयीं। वैसे मेघ घने रूप से इकट्ठे हुए। ४३४

नञ्जिनि नळिर्नॅडुङ् गडलि नङ्गैयर्
अञ्जन नयनत्ति नविळ्न्द कून्दलिन्
वञ्जने यरक्कर्दम् वडिविन् चॅय्हैयिन्
नॅञ्जिनि निरुण्डदु नील वानमे 435

नीलम् वानम्–नीला आकाश; नञ्चिनिन्–विष के समान; नळिर्–शीतल; नॅटु कटलिन्–विशाल सागर के समान, और; नङ्कैयर्–स्त्रियों के; अञ्चनम् नयनत्तिन्–कजरारे नेत्रों के समान; अविळ्न्त कून्तलिन्–खुले केश के समान; वञ्चनै अरक्कर् तम्–वंचक राक्षसों के; वटिविन्–शरीर के समान; चॅय्कैयिन्–उनके कृत्यों के समान; नॅञ्चिनिन्–उनके मन के समान; इरुण्टतु–काला बना रहा। ४३५

नीला आकाश हलाहल के समान, शीतल व विशाल समुद्र के

समान, स्त्रियों के कजरारे नेत्र के समान, और उनके खुले केश के समान लगता था। और भी वह वंचक राक्षसों के शरीर के समान, उनके नृशंस कृत्यों के समान और उनके मन के समान काला बना हुआ था। ४३५

नाट्कळि नळिर्हड नार नावुऱ
वेट्कैयिऱ् परुहिय मेह मिन्नुव
वाट्कैहण् मयङ्गिय शॅरुविन् वार्मदप्
पूट्कैह णिऱत्तपुण् डिऱप्प पोन्ऱवे 436

नाळ् –(उसी या बहुत) दिन की; कळिन्–ताड़ी के समान; नळिर् कटल् नारम्–शीतल समुद्रजल को; ना–जीभ से; उऱ–अधिक; वेट्कैयिन्–चाव के साथ; परुकिय–(जिन्होंने) पिया था; मेकम्–वे मेघ; मिन्नुव–जो चमके; वाळ् कैकळ्–तलवारधारी हाथ; मयङ्किय–जिसमें टकराए; चॅरुविन्–लड़ाई में; वार् मत–बहनेवाले मदजल के; पूट्कैकळ्–हाथी; निऱत्त पुण्–छाती के व्रणों को; तिऱप्प–दिखाते हों; पोन्ऱ–जैसे दिखे। ४३६

मेघों ने (उसी दिन की या) बहुत दिनों की ताड़ी के समान शीतल समुद्रजल को बहुत ही चाव के साथ पी लिया था। उनमें रह-रहकर बिजलियाँ कौंध रहीं थीं। तब वे मेघ मदनीर बहाते हुए बड़े-बड़े हाथियों के समान लगे, जो युद्ध में तलवार लेकर लड़नेवाले वीरों के हाथ से चोटें खा चुके हों। बिजलियाँ उनके खुले व्रणों के समान लगीं। ४३६

नीनिऱप् पॅरुङ्गरि निरैत्त नीर्त्तॅन्नच्
चूनिऱ मुहिऱ्कुलन् दुवन्ऱिच् चूळ्दर
मानिऱ नॅडुङ्गडल् वारि मूरिवान्
मेनिरैन् दुळदॅन मुळक्क मिक्कदे 437

चूल्–जलगर्भ; निऱम्–काले रंग के; मुकिल्–मेघों के; कुलम्–समूह; नील् निऱम्–नीले रंग के; पॅरुम् करि–बड़े-बड़े हाथी; निरैत्त नीर्त्तु ॲन्–पंक्तियों में खड़े किये गये हों, ऐसा; तुवन्ऱि–सटकर; चूळ् तर–घेर आये; माल् निऱम्–काले रंग के; नॅटु कटल्–विशाल सागर का; वारि–जल; मूरि वान् मेल्–विस्तृत आकाश में; निरैन्तु उळतु ॲन–फैला रहा, ऐसा; मुळक्कम् मिक्कतु–अधिक शोर मचाते हुए रहे। ४३७

काली घटाओं के समूह पंक्तियों में स्थित हाथियों के समान आकाश में चारों ओर घेरे रहे। तब वज्र कड़क उठे। वह दृश्य ऐसा था, मानो विशाल समुद्र का जल आकाश में उठ फैलकर गर्जन कर रहा हो। ४३७

अरिप्पॅरुम् बॅयरवन् मुदलि नोरणि, विरिप्पवु मौत्तन वॅऱ्पिन् मीदुती
ॲरिप्पवु मौत्तन वेशि लाशैहळ्, शिरिप्पवु मौत्तन तॆरिन्द मिन्नॅलाम् 438

तॆरिन्त मिन् ॲलाम्–प्रकटित सभी बिजली की रेखाएँ; अरि–हरि का; पॅरुम्

पॅयरवन्–वड़ा नाम जिसका था; मुतलित्तोर्–उस इन्द्र आदि देवताओं के; अणि विरिप्पवुम् ऑत्तन–आभरणों की कान्ति फैलाती हों, जैसी भी रहीं; वॅऱ्पिन् मीतु–पर्वतों पर; ती ऍरिप्पवुम्–आग जलती हो; ऑत्तन–जैसी भी दिखीं; एचु इल्–अनिन्द्य; आचैकळ्–दिशाएँ; चिरिप्पवुम्–हँसती हों; ऑत्तन–जैसी भी दिखीं। ४३८

बिजलियाँ, जो कौंध उठीं, हरि कहलानेवाले इन्द्र आदि देवों के आभरणों की चमक दिखती जैसी लगी। वे ऐसा भी लगीं, मानो पर्वत पर आग जल रही हो। अनिंद्य दिशाएँ हँस रही हों, ऐसा भी लगीं। ४३८

मादिरक् करुमहन् मारिक् कार्मळै
यादिनु मिरुण्डविण् णिरुन्दैक् कुप्पॅयिन्
कूदिर्वॅङ् गाऱ्ऱॆडुन् दुरुत्तिक् कोळमैत्
तूदुवॅङ् गऩलुमि ऴुलैयु मॊत्तदे 439

यातिऩुम् इरुण्ट विण्–किसी भी वस्तु से (सबसे) अधिक जो काला रहा, वह आकाश; मातिरम् करुमकन्–दिशा रूपी लुहार; मारि कार् मळै–वर्षाकालीन काले मेघों के; इरुन्तै कुप्पॅयिल्–कोयलों के ढेर में; वॅम् कूतिर् काल्–वेगवान शारदीय पवन रूपी; नॅटुम् तुरुत्ति कोळ् अमैत्तु–बड़ी भाथी में जोर लगाकर; ऊतु–हवा चलाकर उभाड़ी गयी; वॅम् कनल्–गरम आग के कणों को; उमिऴ्–निकालनेवाली; उलैयुम्–भट्ठी के भी; ऑत्ततु–समान था। ४३९

आकाश एक दम काले से काला हो गया। काला आकाश, मेघ, शारदीय पवन, बिजलियाँ —यह सब देखकर कवि कल्पना करते हैं कि दिशा लुहार बनी; वर्षाकालीन मेघ कोयलों का ढेर। अतिवेगवान उदीची पवन भाथी से निकलनेवाली हवा बनी और उस हवा द्वारा अग्नि प्रज्वलित हो उठी और ज्वालाएँ दिखीं। इस साज में आकाश लुहार की भट्ठी बन गया। ४३९

पिरिन्दुऱै महळिरुम् बिलत्त पान्दळुम्
ऍरिन्दुयिर् नडुङ्गिड विरवि यिन्गदिर्
अरिन्दन वाॅन्न वशनि नावॅन्न
विरिन्दन तिशैतॊऱु मिशैयिन् मिन्नॅलाम् 440

मिचैयिन्–आकाश में; तिचै तॊऱुम्–हर दिशा में; मिन् ऍलाम्–सभी बिजलियाँ; इरवियिन् कतिर्–रवि की किरणें; अरिन्तन आम् ऍन्न–जो काटकर रखी गयी हों, ऐसी; अचनि ना ऍन्न–अशनि की जिह्वाओं के समान; पिरिन्तु उऱै–बिछुड़कर रहनेवाली; मकळिरुम्–स्त्रियों को और; पिलत्त पान्तळुम्–बाँबियों में रहनेवाले साँपों को; ऍरिन्तु–झुलसकर; उयिर् नटुङ्किट–प्राणविकम्पित होने देते हुए; विरिन्तन–सर्वत्र फैली दिखायी दीं। ४४०

आकाश में सब ओर बिजलियाँ कौंध उठीं। वे रविकिरणों के

समान थीं, जिनको काटकर रखा गया हो। वे अशनि-जिह्वाओं के समान भी लगीं। पतिवियुक्त स्त्रियों और बिलों में रहनेवाले साँपों को भय-विकंपित करते हुए वे सब ओर कौंधती दिखायी दीं। ४४०

शूडिन	मणिमुडित्	तुहळिल्	विज्जैयर्
कूडुरै	नीक्किय	कुरुदि	वाट्कळुम्
आडवर्	पॅयर्दॊरु	माशै	यानैयिन्
ओडैह	ळॊळिपिऱळ्	वनवु	मौत्तवे 441

चूटित्त मणि मुटि–धृत-रत्न-किरीट; तुकळ् इल्–अनिन्द्य; विज्चैयर्–विद्याधर; कूटु उऱै–म्यानों से; नीक्किय–बाहर निकाली गयी; कुरुति वाट्कळुम्–रक्तरंजित तलवारों (के समान भी थीं); आटवर्–दिग्पालकों के; पॅयर् तॊऱुम्–स्थान-परिवर्तन के समय में; आचै यानैयिन्–दिग्गजों के; ओटैकळ् ऑळि–मुखपट्ट अपनी कान्ति; पिऱळ्वनवुम्–रह-रहकर प्रकट कर रहे हों, ऐसी भी लगीं। ४४१

वे बिजलियाँ रत्नमुकुटधारी विद्याधरों की म्यान से निकली हुई रक्तरंजित तलवारों के समान भी लगीं; और वे उन दिग्गजों के मुखपट्ट की कौंधों के समान भी दिखायी दी, जो कि दिग्पालों के स्थान बदलकर जाते समय खुद जाते थे। (इन्द्र आदि आठ दिग्पाल हैं। उनके आठ गज हैं। इन्द्र का ऐरावत है; अग्नि का पुण्डरीक; यम का वामन; नैऋत का कुमुद; वरुण का अंजन; वायु का पुष्पदन्त; कुबेर का सार्वभौम और ईशान का सुप्रदीप है)। ४४१

ॲण्वहै	नाहङ्ग	डिशैह	ळॆट्टैयुम्
नण्णिन	नावळैत्	तनैय	मिन्नहक्
कण्णुदन्	मिडऱॅनक्	करुहिक्	कार्विशुम्
बुण्णिऱै	युयिर्प्पॅन	वूदै	यूदिन 442

ॲण् वकै नाकङ्कळ्–(आठों दिशाओं के) आठ प्रकार के नाग; तिचैकळ् ॲट्टैयुम्–आठों दिशाओं को; नण्णिन–पास जाकर; ना वळैत्तु अनैय–जिह्वाएँ बढ़ाकर घेर लेते हों, ऐसा; मिन् नक–बिजली के चमकते; कार् विचुम्पु–काले मेघ; कण्णुतल् मिटऱु ॲन–भालनेत्र शिव के कण्ठ के समान; करुकि–झुलसकर काले बनकर; उळ् निऱै–अन्दर के; उयिर्प्पु ॲन–श्वास के समान; ऊतै–उदीची हवा को; ऊतिन–निकालते रहे। ४४२

बिजलियाँ आठ प्रकार के (वासुकी, अनन्त, तक्षक, शंखपाल, कुलिक, पद्म, महापद्म और कार्कोटक) सर्पों की जिह्वाओं के समान लगीं, जिनको वे सर्प निकालकर दिशाओं को चाटने के लिए अपने चपेट में ला रहे हों। काले मेघ भाल में अग्निमयनेत्र से भूषित शिव के कण्ठ के समान काले बने। मानो वे अपने अन्दर के श्वासों को निकाल रहे हों, ऐसी उदीची हवा बही। ४४२

तलैमयुङ् गीळ्मैयुन् दविर्द लिन्ऱिये
मलयिन् मरत्तिन् मऱ्ऱु मुऱ्ऱिनुम्
विलैनिनैन् दुळवळि विरुम्बुम् वेशैयर्
उलैवुऱ मुळमॅन वुलाय दूदैये 443

ऊतै–वह पवन; तलैमैयुम् कीळ्मैयुम्–ऊँचे और नीचे स्थानों में; तविर्तल् इन्ऱिये–(भेद न करते हुए) किसी को न छोड़कर; मलैयित्तुम्–पर्वतों पर; मरत्तित्नुम्–तरुओं पर; मऱ्ऱुम् मुऱ्ऱिनुम्–अन्य सभी स्थानों पर; विलै निनैन्तु–सिर्फ़ दाम ही सोचकर; उळ वळि–धन जहाँ हो वहीं; विरुम्पुम्–प्रेम दिखानेवाली; वेचैयर्–वेश्याओं के; उलैवु उरुम्–चंचल; उळम् अॅन–मन के समान; उलायतु–संचार करता रहा। ४४३

वह हवा ऊँच-नीच का भेद नहीं करके पर्वतों, तरुओं और अन्य सभी स्थलों पर बही और केवल धन का ही विचार करके (मनुष्य के गुणों का विचार किये विना ही) धन जहाँ से प्राप्त होता है, वहीं प्रेम दिखानेवाली वेश्याओं के चंचल मन के समान संचार करने लगी। ४४३

अऴुङ्गुरु महळिर्द मत्तविर् ऱीर्न्दवर्
पुळुङ्गुरु पुणरमुलै कौदिप्पप् पुक्कुलायक्
कॊळुङ्गुरैत् तशैयिनै यरिन्दु कॊण्डदु
विळुङ्गुरु पेयॆन वाडै वीङ्गिऱ्ऱे 444

वाटै–उदीची (अतिशीतल) पवन; तम् अत्तपिल् तीर्न्तवर्–अपने पति के प्रेम से बिछुड़कर; अळुङ्कुरु–दुःखित रहनेवाली; मकळिर्–स्त्रियों के; पुळुङ्कुरु पुणर् मुलै–तप्त स्तनद्वयों को; कौतिप्प–और तप्त करते हुए; पुक्कु उलाय्–(उन पर) लगते हुए बहकर; कॊळुम्–मांसल; कुरै तचैयित्तै–(स्तनों के) मांसखण्डों को; अरिन्तु कॊण्टु–काट लेकर; अतु विळुङ्कुरु–उनको निगलने में लगे; पेय् अॅन–पिशाच के समान; वीङ्किऱ्ऱु–और अधिक चला। ४४४

वह उदीची शीतल हवा विरहिणी स्त्रियों के तप्त स्तनद्वयों को और भी ताप देती हुई उन पर लगी वर्द्धित होकर बही। तब वह पिशाच के समान लगी, जो उनके मांसल स्तनों को काटकर बोटी-बोटी खाना चाहता हो। ४४४

आर्त्तॆळु तुहळ्विशुम् बडैत्तत लान्मिन्
कूर्त्तॆळु वाळॆनप् पिऱळुङ् गॊट्पिनुम्
तार्प्परुम् बणैयिनुविण् डळङ्ग लानुमप्
पोर्प्परुङ् गळमॆनप् पॊलिन्द दुम्बरे 445

आर्त्तु–नर्दन करते हुए; अॅळु तुकळ्–उठनेवाली धूल; विचुम्पु–आकाश को; अटैत्ततलात्नुम्–ढँक लेती, इसलिए और; मिन्–बिजलियाँ; कूर्त्तु अॅळु–तीक्ष्णता लिये रहनेवाली; वाळ् अॅन–तलवार के समान; पिऱळुम्–झमकते हुए;

कोट्पितुम्—घूमती हैं, इसलिए; विण्–मेघ; तार्–हारालंकृत; पॅरुम् पणैयिऩ्–बड़े ढोलों के समान; तळङ्कलातुम्–शब्द करते हैं, इसलिए; उम्पर्–आकाश; अ पॅरु पोर् कळम् ॲंत–रम्य समरभूमि के समान; पॊलिन्ततु–शोभा। ४४५

धूल ऊपर उठी और भीषण ध्वनि के साथ उठी। उसने आकाश को ढँक दिया। और बिजलियाँ तीक्ष्णता लिये घूमनेवाली तलवारों के समान कौंधीं। मेघ ढोलों के समान गरज उठे। इस साज के कारण आकाश सुन्दर और विशाल समरांगण-सा लगा। ४४५

इऩ्ऩहैच् चत्तहियैप् पिरिन्द वेन्दलमेल्
मऩ्मदऩ् मलर्क्कणै वळङ्गि ताऩॆऩप्
पॊऩ्ऩॆडुङ् गुऩ्ऱिऩ्मेऱ् पॊऴिन्द तारैहळ्
मिऩ्ऩॊडुन् दुवऩ्ऱिऩ मेह राशिये 446

इऩ् नकै चत्तकियै–मधुर मन्दहास वाली जानकी से; पिरिन्त–बिछुड़े रहनेवाले; एन्तल् मेल्–(राजा-) राम पर; मऩ्मतऩ्–मन्मथ ने; मलर् कणै–पुष्पशर; वळङ्किताल्–चलाये; ॲंत–जैसे; मिऩ्ऩॊटुम्–बिजली के साथ; तुवऩ्ऱित–मिले आये; मेक राचि–मेघों की राशियों ने; पॊऩ्–सुन्दर; नॆटुम् कुऩ्ऱिऩ् मेल्–बड़े पर्वत पर; तारैकळ्–धारें; पॊऴिन्त–बरसायीं। ४४६

बिजलियोंसहित मेघराशियाँ पर्वतों पर जो धारें गिरा रही थीं, वह ऐसा था मानो मारदेव मधुर मन्दहासकारिणी सीताजी से वियुक्त राजाराम पर अपने पुष्प-शर छोड़ रहा हो। ४४६

कल्लिडैप् पडुन्दुळित् तिवलै कारिडुम्
विल्लिडैच् चरमॆऩ विशैयिऩ् वीऴ्न्दऩ
शॆल्लिडैप् पिऱन्दशॆङ् गऩल्हळ् शिन्दिऩ
अल्लिडै मणिशिदऱ् दळलि यऱ्ऱल्पोल् 447

कार् इटै–मेघ-मध्य; विल्लिटै चरम् ॲंत–इन्द्रधनुष के शरों के समान; कल् इटै—चट्टानों के मध्य; पटुम्—गिरनेवाली; तुळि तिवलै–वर्षा की बूंदें; विचैयिऩ् वीऴ्न्तत–बहुत वेग के साथ गिरीं; चॆल् इटै–अशनियों से; पिऱन्त–छूटे; चॆम् कतल्कळ्–लाल अंगारे; मणि–रत्न; अल्लिटै चितऱ्न्तु–अन्धकार में छितरकर; अळल् इयऱ्ऱल् पोल्—ज्वाला-सम प्रकाश फैलाते हों जैसे; चिन्तित–गिरे। ४४७

मेघों से गिरनेवाली बूंदें उनमें रहनेवाले इन्द्रधनुष से निकले शर के समान वेग के साथ गिरीं। मेघों से निकली अशनि के लाल अंगारे रात में रत्नों की ज्योतियों के समान यत्र-तत्र गिरे। ४४७

मळ्ळऱ्हण् मरुपडै मान यानैमेल्
वॆळ्ळिवे लॆऱिवऩ पोऩ्ऱ मेहङ्गळ्

तळ्ळरुन् दुळिपडत् तहर्न्दु शाय्हिरि
पुळ्ळिवॅङ् गडहरि पुरळ्व पोन्ऱवे 448

मऱ् पटै–योद्धा; मळ्ळर्कळ् मान–वीरों के समान; यानै मेल्–हाथियों पर; वॅळ्ळि वेल्–श्वेत शक्तियाँ (भाले); ऍऱिवन–फेंक रहे हों; पोन्ऱ मेकङ्कळ्–ऐसे मेघों की; तळ् अरुम्–दुर्निवार; तुळि–धारें; पट–लगीं, इससे; तकर्न्तु चाय्–ढहकर गिरती; किरि–गिरियाँ; पुळ्ळि–बिंदियों-सहित रहनेवाले (उत्तम लक्षण के); वॅम्–भयंकर; कट–मस्त; करि–हाथी; पुरळ्व पोन्ऱवे–लोटते जैसे लगे। ४४८

मेघ शत्रुसंहारक वीर थे। गिरियाँ हाथी थीं। मेघों ने श्वेत भालाओं के समान बूँदें गिरायी। गिरियाँ उन दुर्निवार धारों के सामने टूटकर ऐसे लुढ़क पड़ी, मानो लाल बिंदियों के अच्छे लक्षणों से भरे भयंकर और मस्त हाथी लोटते हों। ४४८

वानिडु तन्नॅडुङ् गरुप्पु विन्मळै
मीनॅडुङ् गॉडियवन् पहळि वीळ्तुळि
तानॅडुञ् जार्तुणै पिरिन्द तन्मैयर्
ऊनुडै युडम्बॅला मुरुक्क लॉत्तवे 449

मळै–मेघ; मीन् नॅटु कॉटियवन्–मत्स्यांकित बड़ी पताका वाला बना; वान् इटु तनु–मेघमध्य प्रकट इन्द्रधनुष; नॅटु करुप्पु विल्–लम्बा इक्षु-धनुष; वीळ् तुळि–गिरती धारें; पकळि–(उसके) शर; नॅटुम् चार्–लम्बे पर्वत के पादप्रदेश; तुणै पिरिन्त–विरही; तन्मैयर–की हालत में; ऊन् उटै उटम्पु ऍलाम्–मांससहित शरीरों को; उरुक्कल् ऑत्त–गलाते हों जैसे। ४४९

मेघ मकरांकित ध्वजा वाला मार बना। इन्द्रधनुप उसका लम्बा इक्षु-धनुष बना; मेघों से गिरनेवाली बूँदें उसके शर बनी। और लम्बे पर्वत-चरण-प्रदेश विरही जनों के समान विगलित शरीर और हड्डियों वाले हो रहे। ४४९

तीर्त्तनुङ् गविहळुञ् जॅऱिन्दु नम्बहै
पेर्त्तन रिनियॅनप् पेशि वानवर्
आर्त्तॅन वार्त्तन मेह मायमलर्
तूर्त्तन वॉत्तन तुळ्ळि वॅळ्ळमे 450

तीर्त्तनुम्–पवित्र श्रीराम; कविकळुम्–और वानर; चॅऱिन्तु–एकत्र हुए, इसलिए; इनि–अब; नम् पकै–हमारे शत्रुओं को; पेर्त्तनर्–उन्होंने दूर कर दिया; ऍन पेचि–ऐसा कहकर; वानवर्–देवता लोग; आर्त्तु ऍन–आनन्दरव करते हों जैसे; मेकम्–मेघों ने; आर्त्तन–गर्जन किया; तुळ्ळि वॅळ्ळम्–बूँदों की राशियाँ; आय् मलर् तूर्त्तन–चुने हुए (उत्तम) पुष्प (जो) बरसाये गये; ऑत्तन–उनके समान लगीं। ४५०

मेघगर्जन देवों के आनन्दघोष के समान लगा, जो यह कह रहे हों कि

श्रीराम और वानरों का मेल हो गया और अब वे हमारे शत्रुओं (रावण आदि राक्षसों) को हटा देंगे। मेघ के गिरते जलकण देवों के आनन्द के साथ गिराये श्रेष्ठ चुने हुए पुष्पों के समान रहे। ४५०

वण्णविऱ् करदलत् तरक्कऩ् मण्णोडुम्
विण्णिडैक् कडिदुहोण् डेहुम् वेलैयिल्
पॅण्णिऩुक् करुङ्गल मऩ्ऩैय पॅय्वळै
कण्णॅऩप् पॊऴिन्ददु काल मारिये 451

वण्णम् विल्–सुन्दर धनु(-शोभित); करतलत्तु–हाथों वाले; अरक्कऩ्–राक्षस; मण्णोटुम्–धरती (के अंश) के साथ; कोण्टु–लेकर; विण्णिटै–आकाश में; कटितु–सवेग; एकुम् वेलैयिल्–जब जाता रहा, तब; पॅण्णिऩुक्कु–स्त्रियों के; अरु कलम् अऩ्ऩैय–दुर्लभ आभरण के समान; पॅय्वळै–कंकणधारिणी सीता की; कण् ऍऩ–आँखों के समान; कालम् मारि–मौसमी बारिश; पॊऴिन्ततु–बरसी। ४५१

जब सुन्दर धनुर्धर रावण एक योजन धरती के अंश के साथ सीताजी को लेकर आकाश में जा रहा था, तब स्त्रियों का अलभ्य आभरण मानी जानेवाली [—दक्षिण की सधवाएँ मंगलसूत्र पहनती हैं, जिसमें श्रीलक्ष्मीदेवी की मूर्ति से अंकित तमग़े (पदक) के आकार का आभरण रहता है और ऐसा मंगलसूत्र आभरणों में श्रेष्ठ माना जाता है। वस्तुतः वही अन्य आभरण पहनने का अधिकार भी देता है।] और कंकणहस्ता सीतादेवी की आँखों ने अश्रु बरसाया। वर्षाकालीन मेघों ने उन्ही नेत्रों की भाँति अधिक जल बरसाया। ४५१

परञ्जुडर्प् पण्णवऩ् पण्डु विण्डोडर्
पुरञ्जुड विडुशरम् बुरैयु मिऩ्ऩिऩम्
अरञ्जुडप् पॊऴिनिमि रयिलि ऩाडवर्
उरञ्जुड वुळैन्दऩर् पिरिन्दु ळोरॅलाम् 452

परम् चुटर्–उत्तम ज्योतिर्मय; पण्णवऩ्–शिवदेव; पण्टु–प्राचीनकाल में; विण् तोटर् पुरम्–आकाश में संचार करनेवाले त्रिपुरों को; चुट–जलाने के लिए; विटु चरम्–जो शर चलाते थे, उनकी; पुरैयुम्–समानता करनेवाली; मिऩ्ऩिऩम्–बिजलियों के समूह; अरम् चुट–रेती के रगड़ने से; पॊऴि निमिर्–अंगारे निकालनेवाले; अयिलिऩ्–भाले के समान; आटवर्–(विरही) पुरुषों के; उरम् चुट–दिल को जलाती थीं; पिरिन्तु उळोर् ऍलाम्–(उससे) विरही सभी; उळैन्तऩर्–दुःखी हुए। ४५२

महान ज्योतिस्वरूप शिवजी के, आकाश-संचारी त्रिपुरों को जलाने हेतु छोड़े गये शरों-जैसी बिजलियों ने रेती से रगड़कर उज्ज्वल रहनेवाली बछियों के समान विरही पुरुषों के हृदयों को जलाया। वे सब उद्विग्न हुए। ४५२

पॊरुडरप् पोयिऩर्प् पिरिन्द पॊय्युडऱ्
कुरुडरु तेर्मिशै युयिर्हॊण् डुय्त्तलाऩ्
मरुडरु पिरिवॆंनुम् माशु णङ्गॊडक्
करुडनैप् पॊरुविऩ काल मारियै 453

पॊरुळ् तर-अर्थार्जन के लिए; पोयिऩर्-गये हुए नायकों से; पिरिन्त-वियुक्त; पॊय् उटऱ्कु-व निर्जीव शरीर वाली नायिकाओं के पास; उरुळ् तरु-लुढ़क चलनेवाले पहियों के; तेर् मिचै-रथों पर; उयिर् कॊण्टु-(उनके) प्राणों को लेकर; उय्त्तलाऩ्-मिलाती है; कालम् मारि-(इसलिए) मौसमी बारिश; मरुळ् तरु-भ्रान्त करनेवाले; पिरिवु ॲंतुम्-वियोग रूपी; माचुणम् कॊट-साँप को नाश करते हुए (आगत); करुटऩै-गरुड़ की; पॊरुविऩ-समानता कर रही थी। ४५३

अर्थार्जन के लिए नायक प्रवास पर चले गये थे। उनके वियोग मे स्त्रियाँ निर्जीव शरीरवत रही। अव उनके पास मानो उनकी जानें लेकर नायक घूमते आनेवाले चक्रो से युक्त रथों पर वापस आ गये। उनको लानेवाली वर्षा संज्ञाहीन करनेवाले विरह रूपी साँप का नाश करते हुए आगत गरुड़ के समान लगी। ४५३

मुऴङ्गिन मुऱैमुऱै मूरि मेहनीर्
वऴङ्गिऩ मिडैवन माऩ यानैहळ्
तऴङ्गिऩ पॊऴिमदत् तिवलै ताऴ्दरप्
पुऴुङ्गिन वॆंदिरॆंदिर् पॊरुव पोऩ्ऱवे 454

मूरि मेकम्-सवल मेघ; मुऱै मुऱै-वारी-वारी से; मुऴङ्किऩ-गरजे; नीर् वऴङ्किऩ-जल वरसाते हुए; मिटैवऩ-(जो) घुमड़ आये (वे); माऩम् यानैकळ्-वड़े-वड़े हाथी; तऴङ्किऩ-चिंघाड़ते हुए; पॊऴि मतम् तिवलै-बहनेवाले मदनीर की धार के; ताऴ्तर-गिरते; पुऴुङ्किऩ-कोप करके; ॲंतिर् ॲंतिर्-आमने-सामने; पॊरुव पोऩ्ऱ-लड़ते-जैसे (दिखे)। ४५४

बड़े-वड़े मेघ रह-रहकर गरजे, जल बरसाते हुए घुमड़ आये। तव वे ऐसे वड़े गजो के समान लगे जो चिंघाड़ते और मदनीर बहाते हुए गुस्से के साथ आपस में टकरा रहे हों। ४५४

विशैहॊडु मारुद मऱित्तु वीशलाल्
अशैवुऱु शिऱुतुळि यप्पु मारियिऩ्
इशैवुऱऴ्ऩ् दॆंडुप्पऩ विशैय वायिरुन्
दिशैयॊडु तिशैशॆरुच् चॆय्व पोऩ्ऱवे 455

विचै कॊटु-वेग के साथ; मारुतम्-हवा के; मऱित्तु वीचलाल्-रह-रहकर वहने से (मेघ); अप्पु मारियिऩ्-शर-वर्षा के समान; इचैवु उऱऴ्नुतु-आपस में मनमुटाव के साथ; ॲंटुप्पऩ-बढ़नेवाले; अचैवु उऱ-हिलनेवाले; चिऱु तुळि-छोटे-

छोटे कणों के साथ; इचैय–युक्त हो; आय् इरुम्–सुन्दर बड़ी; तिचै ओंटु तिचै–दिशाएँ आपस में; चॅरु चॅय्व पोऩ्ऱ–युद्ध करती जैसी (दिखीं)। ४५५

प्रबल प्रभञ्जन रह-रहकर अतिवेग के साथ बह रहा था। इसलिए शर-वर्षा के समान जल की बूँदें आपस में टकरा उठीं। तब ऐसा लगा, मानो सुन्दर व बड़ी दिशाएँ आपस में युद्ध कर रही हों। ४५५

विऴैयुऱु पॉरुडरप् पिरिन्द वेन्दर्वन्
दुऴैयुऱ वुयिरुऱ वुयिर्क्कु मादरिऩ्
मऴैयुऱ मणमुऱ मलर्न्दु तोऩ्ऱिऩ
कुऴैयुऱप् पॉलिन्दन वुलवैक् कॉम्बॅलाम् 456

विऴै उऱु–स्पृहणीय; पॉरुळ्–अर्थ; तर–अर्जन हेतु; पिरिन्त–वियुक्त हुए; वेन्तर्–नायकों के; वन्तु उऴै उऱ–लौट आकर मिलने पर; उयिर् उऱ–जान में जान आयी और; उयिर्क्कुम्–(सन्तोष की) साँसें जो छोड़ती है, उन; मातरिऩ्–(नायिकाओं) स्त्रियों के समान; उलवै कॉम्पु ॲलाम्–सूखे पेड़ों की सभी शाखाएँ; मऴै उऱ–बारिश के होने से; मणम् उऱ–सुगन्धि से भरकर; कुऴै उऱ–पत्तों से युक्त होकर; पॉलिन्तन–शोभायमान हुईं और; मलर्न्तु तोऩ्ऱिऩ–विकसित (मनोरम) रहीं। ४५६

इच्छित धनार्जन के लिए नायक अपनी प्रियतमाओं को छोड़कर गये थे। अब वे आकर मिल गये और विरहिणियों की जान में जान आ गयी। उनकी साँसें भी यथावत स्वस्थ लग गयीं। उनके समान सूखे पेड़ों की सभी शाखाएँ वर्षाकाल के आगमन से पल्लवों से भरकर प्रफुल्लमन दिखायी दीं। ४५६

पाडलम् वऱुमै कूरप् पहलवऩ् पशुमै कूरक्
कोडल्हळ् पॅरुमै कूरक् कुवलयञ् जिऱुमै कूर
आडिन मयिल्हळ् पेशा दडङ्गिन कुयिल्ह ळऩ्बर्क्
केडुऱत् तळर्न्दार् पोऩ्ऱऩ् दिरुवुऱक् किळर्न्दार् पोऩ्ऱम् 457

पाटलम्–पाटल वृक्ष; वऱुमै कूर–(पुष्पहीन हो) दीन हुए; पकलवऩ्–दिनकर; पचुमै कूर–शीतल बना; कोटल्कळ्–'कोडल' के पौधे; पॅरुमै कूर–(पुष्पित हो) शानदार लगे; कुवलयम्–कुवलय; चिऱुमै कूर–म्लान हुए; मयिल्कळ्–मोर; तिरु उऱ–श्रीसम्पन्न (धनी) होने पर; किळर्न्तार्–उत्साहित हुए; पोऩ्ऱ–जैसे; आटिऩ–नाच उठे; कुयिल्कळ्–कोयलें; अऩ्पर् केटुऱ–मित्रों की दुर्गति पर; तळर्न्तार्–जो शिथिल हुए हों; पोऩ्ऱ–उनके समान; पेचातु अटङ्किऩ–अवाक् रह गयीं। ४५७

पाटलवृक्ष हीनता को (पुष्पों से हीन होने के कारण) प्राप्त हो गये। सूर्य शीतलता को प्राप्त हो गये। 'कोडल' ('कांदळ्' भी कहते हैं। इनके पंचदलीय पुष्प अपने नालों के साथ स्त्री के हाथों के समान लगते

हैं।) पुष्प शानदार हो गये। कुवलय म्लान पड़ गये। मोर, सम्पत्ति के प्राप्त होने पर इतरानेवालों के समान नाच उठे। कोयलें, अपनों की दीन दशा देखकर शिथिल पड़नेवाले लोगों के समान मौन रह गयी। ४५७

वाळॅयिऱ् ऱरवम् बोल वान्ऱलै तोन्ऱ वाऱ्न्द
ताळुडैक् कोड ऱम्मै तळीइयन काद ऱङ्ग
मीळल ववैयु मन्न विळैवन वुणर्वु वीन्द
कोळर वॅन्नप् पिन्नि यवर्ऱॊडुङ् गुळैन्दु शायन्द 458

वाळ् ऎयिऱु अरवम्–तलवार-जैसे दाँत वाले सर्प; वान् तलै पोल–अपने उठे हुए सिर के समान; तोन्ऱ वाऱ्न्त–दिखते हुए जो बढ़े थे; ताळ् उडै–ऐसे तनों से युक्त; कोटल् तम्मै–'कोडल' पौधों से; कातल् तङ्क–प्रेम के साथ; तळीइयत–लिपटकर; मीळल–अलग नहीं हुए; अवैयुम्–वे (पौधे) भी; अन्न विळैवन–वही चाह रखते हुए; उणर्वु वीन्त–काटने की स्वाभाविक भावना जिनसे दूर हो गयी थी, ऐसे; कोळ् अरवु ऎन्न–बड़े सर्पों के समान; अवर्ऱॊटुम् पिन्नि–उनके साथ लिपटकर; कुळैन्तु–झुके हुए; चायन्त–उन पर गिरे पड़े थे। ४५८

उठे हुए सिर वाले सर्पों के समान लम्बे नालों के 'कोडल' पुष्पों को तलवार-से दाँत वाले सर्पों ने सर्प ही समझ लिया। इसलिए वे बहुत ही प्रेम के साथ उनसे लिपटे, बिना छोड़े, पड़े रहे। वे पुष्प भी, दंशनसंज्ञाशून्य सर्प-सम वैसे ही प्यार से उनके साथ लिपटकर झुके पड़े रहे। ४५८

नानिऱच् चुरम्बुम् वण्डुम् नवमणि यणियिऱ् ऱारत्
तेनुह मलर्न्दु शायन्द शेयिदळ्क् कान्दळ् चॅम्बू
वेनिलै वॅन्ऱ दम्मा कारॆन वियन्दु नोक्कि
मानिलक् किळत्ति कैहण् मऱित्तन पोन्ऱ मन्नो 459

नाल् निऱम्–नाना रंग के; चुरुम्पुम् वण्टुम्–भ्रमर और भ्रमरियाँ; नवमणि अणियिन्–नवरत्नजटित आभरण के समान; चार–(उन फूलों पर) बैठे; तेन् उक–शहद निकालते हुए; मलर्न्तु–फूलकर; चायन्त–झुके हुए; चेय् इतळ्–लाल पंखुड़ियों के; कान्तळ् चॅम्पू–रक्तकांतळ (या कोडल) के फूल; माल् निलम् किळत्ति–महीयसी पृथ्वी-स्त्री के; नोक्कि–(ऋतु-उत्सव) देख; वेतिलै–वसन्त को; वॅन्ऱतु कार्–जीत लिया वर्षा ने; अम्मा–मैया री; मऱित्तन–(कहते हुए विस्मय-प्रकटन में) मोड़े हुए; कैकळ् पोन्ऱ–हाथों के समान थे। ४५९

'कोडल' पुष्पों पर भ्रमर और भ्रमरियाँ नवरत्नाभरण के समान बैठी थीं। शहद बरसाते हुए वे पुष्प झुके रहे। तब उन लाल पखुड़ियों के रक्त 'कांदळ्' के पुष्प भूमिदेवी के हाथ के समान लगे, मानो भूमि ने विस्मय से यह कहते हुए अपने हाथों की तदनुकूल मुद्रा में मोड़ रखा हो कि वर्षा ने वसन्त की शोभा को हरा लिया है। ४५९

ऍळ्ळिड विडमीन् ऱिन्ऱि यॅळुन्दत्त विलङ्गु कोबम्
तळ्ळुऱत् तलैवर् तम्मैप् पिरिन्दवर् तळुवत् तूय
कळ्ळुडै योदि यार्दङ् गलवियिऱ् पलहाऱ् कान्ऱ
वॆळ्ळडैत् तम्बङ् कुप्पै शिदऱ्न्दॆन विरिन्द मादो 460

ऍळ् इट–तिल डालने के लिए (भी); इटम् ऒन्ऱु इन्ऱि–स्थान न रहा, ऐसा; ऍळुन्तत्त–उठकर; इलङ्कु–प्रकट; कोपम्–इन्द्रगोप; तळ्ळुऱ–अलग होकर; तम्मै पिरिन्तवर्–अपने को छोड़कर जो गये थे; तलैवर्–वे नायक; तळुव–लौट आ मिले, तब; तूय कळ् उटै–शुद्ध शहद से युक्त; ओतियार्–केश वाली स्त्रियों की; तम् कलवियिल्–अपने समागम में; पल काल् कान्ऱ–अनेक बार थूकी हुई; वॆळ् अटै–पान की; तम्पल् कुप्पै–पीक की अधिक छींटें; चितऱ्न्तु ऍत–बिखरी पड़ी हों, ऐसा; विरिन्त–फैले रहे। ४६०

सब जगह इन्द्रगोप के कीड़े प्रकट होकर ऐसा पड़े हुए थे कि तिल धरने को भी अन्तर नहीं मिलता था। वह दृश्य शहद-भरे केश वाली उन स्त्रियों की अनेक बार थूकी हुई व छितरी पड़ी पीकों के समान था, जिनके साथ उनसे थोड़े समय के लिए बाहर गये हुए उनके नायक आकर मिल रहे थे। ४६०

नल्लॅडुङ् गान्दट् पोदि ऩऱैविरि कडुक्कै मॅन्बूत्
तुन्निय कोबत् तोडुन् दोन्ऱिय तोऱ्ऱत् तुम्बि
इन्निशै मुरल्व नोक्कि यिरुनिल महळ्कै येन्दिप्
पॊन्नॊडुङ् गाशै नीट्टिक् कॊडुप्पदे पोल्ऱ दन्ऱे 461

नल्–सुन्दर; नॆटु–लम्बे; कान्तळ् पोतिल्–'कांदल' पुष्प पर; नऱै विरि–शहद-भरे; कट्टुक्कै मॆल् पू–अमलतास के कोमल फूल; तुन्निय कोपत्तोटुम्–आकर मिले हुए इन्द्रगोपों के साथ; तोन्ऱिय–जो दिखते हैं; तोऱ्ऱम्–वह दृश्य; इन् इचै–मधुर गीत; मुरल्व–गुंजारनेवाले; तुम्पि नोक्कि–भ्रमरों को देखकर; इरु निल मकळ्–महीयसी भूमिदेवी; कै एन्ति–हाथ उठाकर; नीट्टि–बढ़ाकर; पॊन्नॊटुम्–स्वर्ण के साथ; काचै–रत्नों को; कॊटुप्पते–दे रही हो, उसी के; पोन्ऱतु–समान था। ४६१

सुन्दर और लम्बे 'कांदल' पुष्पों पर शहद-भरे अमलतास के (पीले) फूल गिरे पड़े थे और इन्द्रगोप के (लाल) कीड़े भी रहे। वह दृश्य ऐसा था, मानो माननीय भूमिदेवी मधुर गीत गानेवाले भ्रमरों को उपहार देने के लिए अपने हाथों को बढ़ाकर स्वर्ण के साथ रत्न प्रदान कर रही हों। ४६१

तोङ्गनि नाव लोङ्गुज् जेणुयर् कुन्ऱिऱ् चॆम्बॊन्
वाङ्गिन कॊण्डु पारिन् मण्डुमाल् याऱु मान

वेङ्गैनन् मलरुङ् गॊन्ऱै विरिन्दन वीयु मीर्त्तुत्
ताङ्गिन कलुऴि शॆन्ऱु तलैमयक् कुऱुव तम्मिल् 462

तीम्-मधुर; कनि-फल (-धारी); नावल् ओङ्कुम्-जामुन के पेड़ जिस पर रहते हैं; चेण् उयर् कुन्ऱिन्-आकाश तक उन्नत मेरु पर्वत से; वाङ्किन-गृहीत; चॆम्पोन् कॊण्टु-स्वर्ण बहाते हुए; पारिल्-धरती पर; मण्टु-पुष्कल रीति से बहनेवाली; माल् याऱु-बड़ी नदी (जम्बू नाम की ?); मान-के समान; वेङ्कै नल् मलरुम्-'वेंगै' पेड़ के पुष्पों और; कॊन्ऱै-अमलतास तरु पर; विरिन्तन वीयुम्-विकसित पुष्पों को; ईर्त्तु ताङ्कित-वहाते हुए ले आती हुई; कलुऴि-पंकिल वरसाती नदियाँ; चॆन्ऱु-बहकर; तम्मिल्-आपस में; तलै मयक्कु उऱुव-मिलकर मिश्रित हो जाती हैं। ४६२

मधुरफलयुक्त जामुन के पेड़ों से भरे मेरु के उन्नत पर्वत से जम्बू नदी स्वर्ण खींच लाते हुए नीचे की ओर वह रही है। इस पर्वत पर पंकिल नाले 'वेंगै' और 'कॊन्ऱै' (अमलतास ?) के फूलों को वहा लेते आ रहे थे और उस उत्तम जम्बू नदी की समानता करने का प्रयास कर रहे थे। ४६२

किळैत्तुणै मळलै वण्डु किन्नर निहर्त्त मिन्नुम्
तुळिक्कुरल् मेहम् वळ्वार्त् तूरियन् दुवैप्प पोन्ऱ
वळैक्कैयर् पोन्ऱ मञ्ञै तोन्ऱिह ळरङ्गिन् माट्टु
विळक्किन मॊत्त काण्बोर् विऴियॊत्त विळैयिन् मॆन्बू 463

किळै-'किळै' नाम का राग; तुणै-सम; मऴलै वण्टु-मधुरस्वर भ्रमर; किन्नरम् निकर्त्त-किन्नर 'याऴ'; निकर्त्त-के समान थे; मिन्नुम् तुळि-चमकती बूंदों से युक्त और; कुरल् मेकम्-गरजनेवाले मेघ; वळ् वार् तूरियम्-स्थूल चमड़े के फ़ीतों से बँधे हुए ढोल; तुवैप्प पोन्ऱ-बजते जैसे हैं; मञ्ञै-मोर; वळै कैयर् पोन्ऱ-कंकणधारिणी स्त्रियों के समान हैं; तोन्ऱिकळ्-'कांदल'; अरङ्किन् माट्टु-रंगमंच पर; विळक्कु इनम्-दीपावलियों; ऒत्त-के समान थे; विळैयिन् मॆल् पू-'विळै' के कोमल फूल; काण्पोर् विऴि ऒत्त-दर्शकों की आँखों के समान थे। ४६३

"कैक्किळै" राग-सी ध्वनि करनेवाले भ्रमर 'किन्नर याऴ' (वीणा-सा वाद्य) की समानता करते थे। चमकनेवाले जलकणों से भरे गर्जनशील मेघों ने बजनेवाले चमड़े के फ़ीतों से बँधे ढोलों की समानता की। मोर कंकणधारिणी स्त्रियो के समान लगे। 'कांदल' पुष्प नाट्य मंच पर के दीपों के समान लगे। काले 'विळै' के फूलो ने दर्शकों की आँखों की समानता की। ४६३

पेडैयु जिमिरुम् वायप् पॆयर्वुऴिप् पिड्रक्कु मोशॆ
ऊडुरुत् ताक्कुन् दोरु मॊल्लॊलि पिड्रप्प नल्लार्

आडियऱ् पाणिक् कॊक्कु मारिय वमिऴ्दप् पाडऱ्
कोडियर् ताळङ् गॊट्टऩ् मलर्न्दकू दाळ मॊत्त 464

ञिमिऱुम्–भ्रमर और; पेट्टैयुम्–भ्रमरियाँ; पाय–टकराते हुए; पॆयर्वुऴि–जब उड़ती हैं; पिऱक्कुम् ओचै–तब निकलनेवाला शब्द; ऊटु उऱ–मध्य जाकर; ताक्कुम् तोऱुम्–गुंजार करती हैं, तब; पिऱप्प–निकलनेवाली; ऑल् ऑलि–'ऑल' की ध्वनि; नल्लार् आटु इयल्–देवांगनाओं के नृत्य से लयीभूत; पाणिक्कु ऑक्कुम्–करताल के समान रहती हैं; मलर्न्त कूताळम्–विकसित 'कूदालि' के फूल; आरिय–कुशल; अमिऴ्तम्–नर्तकों के अमृत-सम; पाटल्–गीतों के अनुकूल; कोटियर्–नर्तक; ताळम् कॊट्टल् ऑत्त–ताल देते जैसे लगे। ४६४

जब भ्रमर और भ्रमरियाँ आपस में टकराते हुए उड़ती हैं, तब जो नाद उठता है, वह दोनों और परस्पर मिलते हुए जो शब्द करती हैं, वह देवांगनाओं के करताल के समान लगते हैं। 'कूदाली' के फूल उन श्रेष्ठ नर्तकियों के नृत्य के अनुकूल बजनेवाले झाल के समान दिखे। ४६४

वऴैदुऱु कान्न याऱु मानिलक् किऴत्ति मक्कट्
कुऴैदुऱु मलैमाक् कॊङ्गै शुरन्दपा लॊऴुक्कै यॊत्त
विऴैवुऱु वेट्कै नाळुम् वेण्डिनर्क् कुदव वेण्डिक्
कुऴैदॊऱुङ् गनहन् दूङ्गु कऱ्पह निहर्त्त कॊन्ऱै 465

वऴै तुऱु–पुन्नाग तरुओं के मध्य बहनेवाली; कानयाऱु–जंगली नदियाँ; मा निलम् किऴत्ति–सम्मान्य भूदेवी; मक्कट्कु–अपनी सन्तानों के लिए; उऴै तुऱु–पास में संकुलित रहनेवाले; मलै मा कॊङ्कै–पर्वत रूपी बड़े स्तनों से; चुरन्त–निस्रित; पाल् ऑऴुक्कै–दूध की धारा के; ऑत्त–समान थीं; कॊन्ऱै–अमलतास; विऴैवु उऱु–चाहनेवाली; वेट्कै–इच्छा के कारण; नाळुम्–प्रतिदिन; वेण्टिनर्क्कु–याचना करनेवालों को; उतव वेण्टि–सहायता देना चाहकर; कुऴै तॊऱुम्–पत्ते-पत्ते पर; कनकम् तूङ्कुम्–स्वर्ण लटकाये रहनेवाले; कऱ्पकम् निकर्त्त–कल्पतरुओं के समान थे। ४६५

पर्वत पर जंगली नदियाँ बह रही थीं। उनके कूलों पर घने पुन्नाग के पेड़ उगे थे। उन नदियों को देखने पर ऐसा लगा, मानो भूमिदेवी अपनी सन्तानों के लिए अपने गिरियों के स्तनों से दूध बहा रही हो और दूध की धाराएँ ही वे नदी हों। अमलतास के पेड़ उन कल्पतरुओं के समान लगे, जो अपने पत्तों के मध्य सतत याचकों को देने के लिए स्वर्ण लिये खड़े हों। ४६५

पूवियल् पुऱव मॆङ्गुम् पॊरिवरि वण्डु पोर्प्पत्
तीविय कळिय वाहिच् चॆरुक्किन कामच् चॆव्वि
ओविय मातृग डोऱु मुरैत्तऱ वुरिञ्जि यॊण्गेऴ्
नाविचित् मणङ्ग णाऱ्क् कलैयॊडुम् बुलन्द नव्वि 466

पू इयल् पुरवम्–पुष्प-भरे वन; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; पॊऱि वरि–चित्तियों से भरे मधुरगायक; वण्टु पोर्प्प–भ्रमर भीड़ लगाए हुए थे; तीविय कळिय आकि–मधुर आनन्ददायक बनकर; चॆरुक्कित–इतराते रहे; कामम् चॆव्वि–प्रेमाधिक्य के कारण; ओवियम्–चित्र-सम; मान्कळ् तोऱुम्–हर मृग पर; उरॆत्तु–रगड़कर; अऱ उरिञ्चि–खूब मलने से; ऒळ् केऴ्–परिपक्व; नाविियिन् मणङ्कळ्–कस्तूरी की सुगन्ध; नाऱ्–निकल रही थी, इसलिए; कलैयोटुम्–उन मृगों से; नव्वि–मृगियाँ; पुलन्त–रूठ गयी। ४६६

वहाँ के पुष्पतरुओं से पूर्ण वनों में, सर्वत्र चित्तियोंसहित शरीर वाले गुंजनशील भ्रमर आनन्द प्रदान करते हुए मँड़रा रहे थे। नरमृग प्रेम की भावना से प्रेरित होकर अन्य मृगों से रगड़-रगड़ाकर आये। उन पर परिपक्व कस्तूरी की गन्ध आ रही थी। उन मृगों से उनकी प्रिया मृगियाँ (यह समझकर) रूठ गयी (कि ये कस्तूरीमृगियों से मिलकर आये है।)। ४६६

तेरि नन्नॆंडुन् दिशैशॆलच् चॆरुक्कऴिन् दॊडुङ्गुम्
कूर यिन्नॆडुङ् गण्णॊनक् कुविन्दन कुवळै
मार नन्नवर् वरवुहण् डुवक्किनुऱ महळिर्
मूरन् मॆन्नुगुरु मुरुवलोत् तरुम्बिन मुल्लै 467

तेरिनन्–रथी बनकर; नॆटु तिचै–बहुत दूर; चॆल–जाने से (अपने प्रिय के); चॆरुक्कु अऴिन्तु–दर्पहीन (आनन्दहीन) होकर; ऒटुङ्कुम्–कृश होनेवाली; कूर्–(नायिका के) तीक्ष्ण; अयिल्–भाले के समान; नॆटु कण् अॆन–लम्बी आँखों के समान; कुवळै–कुवलय; कुविन्तन–मुकुलित हुए; मारन् अन्नवर्–मन्मथ-सम; वरवु कण्टु–(नायकों का) आगमन देखकर; उवक्किनुऱ–आनन्दित होनेवाली; मकळिर्–स्त्रियों के; मॆल्–कोमल; कुऱु मुरुवल्–मन्दहास के; मूरल्–दाँतों; ऒत्तु–के समान; मुल्लै–कुंद; अरुम्पिन–पुष्पित हुए। ४६७

कुवलय, उन गर्वहीन और कृश हुई विरहिणियों की भाले-सी तीक्ष्ण और आयत आँखों के समान मुकुलित हो गये, जिनके पति रथारूढ़ हो बहुत दूर चले गये हैं। मन्मथ-सम अपने नायकों को आते देख हर्षित होनेवाली स्त्रियों के सहास दाँतों के समान कुन्दकलियाँ उग आयीं। ४६७

कळिक्कु मञ्ञैयैक् कण्णुळ रिन्नमॆनक् कण्णुऱ्
ऱळिक्कु मन्नरिऱ् पॊन्वळङ् गिनमलै यरुवि
वॆळिक्कण् वन्दकार् विरुन्दॆन विरुन्दुहण् डुळ्ळम्
कळिक्कु मङ्गैयर् मुहमॆनप् पॊलिन्दन कमलम् 468

कळिक्कुम् मञ्ञैयै–हर्षित मोरों को; कण्णुळर् इन्नम् अॆन–नटवर्ग समझकर; कण्णुऱ्ऱु–उनका नृत्य देखकर (उससे खुश होकर); अळिक्कुम्–पुरस्कार दान करनेवाले; मन्नरिन्–राजाओं की तरह; मलै अरुवि–पर्वत-सरिताएँ; पॊन् वळङ्कित–स्वर्ण दे रही थीं; वॆळि कण् वन्त–आकाश में प्रकट; कार्–मेघों को;

विरुन्तु अॅत्त–अतिथि समझकर; निरुन्तु कण्टु–अतिथि (का आगमन) देखकर; उळ्ळम् कळिक्कुम्–मनमुदित; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; मुकम् अॅन्न–मुखों के समान; कमलम्–कमल; पॉलितन्न–सुशोभित हुए ।·४६८

पर्वत-नदियों ने आनन्दनृत्य-लीन मयूरों को देखकर, बाँस गाड़कर खेल दिखानेवाले नटवृन्द को देखकर उपहार देनेवाले राजाओं के समान स्वर्ण को वहुतायत से छितरा दिये। आकाश में प्रकट मेघों को मेहमान समझकर कमल उन स्त्रियों के समान सुशोभित हुए, जो कि मेहमानों के आगमन से प्रफुल्लमन हो जाती हैं। ४६८

शरद नाण्मल रियावैयुङ् गुडैन्दन तडविच्
चुरद नूॅन्ड्रि विडरॅनत् तेन्कॉण्डु तॉहुप्प
बरद नूत्मुऱै नाडहम् बयनुऱप् पहुप्पान्
इरद मीट्टुरुङ् गविञरैप् पॉरुविन तेनी 469

चुरत नूल् नॅऱि–कामशास्त्रज्ञ; विटर् अॅन्न–विटपुरुषों के समान; नाळ् मलर् यावैयुम्–सद्यविकसित सभी फूलों को; चरतम् कुटैन्तत्त–मधु में घुसकर; तटवि–स्पर्श कर; तेन् कॉण्टु–रस लेकर; तॉकुप्प–संचय करनेवाले; तेनी–भ्रमर; परतम् नूल् मुऱै–भरत के (नाट्य) शास्त्र के क्रम से; नाटकम्–नाट्य; पयन् उऱ–उपादेय रीति से; पकुप्पान–बनाने के लिए; इरतम् ईट्टुरुम्–(नव-) रसों का सम्पादन करनेवाले; कविञरै–कवियों की; पॉरुविन–समानता करते थे। ४६९

मधुमक्खियों ने फूल-फूल पर बैठकर खूब पैठकर मधुर पुष्परस संचित किया। इसमें वे कोकशास्त्रज्ञ विटपुरुषों के समान थे। बाद उन्होंने उसे शहद में परिवर्तित कर दिया। इसमें वे भरत ऋषि के नाट्यशास्त्र में कहे अनुसार नाटक में रसों के सम्पादक कवियों के समान रहे। ४६९

नोक्कि नानमै नोक्कळि कण्डनुण् मरुङ्गुल्
ताक्क णङ्गरुन् जीदैक्कुत् ताक्करुन् दुन्बम्
आक्कि नातम दुरुविनॅन् ऱरुम्बॅऱ लुवहै
वाक्कि नानुरै यामॅनक् कळित्तन मान्गळ् 470

नोक्किनाल्–दर्शनीयता से; नमै–हमारी; नोक्कु–दृष्टि को; अळि कण्ट–हरानेवाली; नुण् मरुङ्कुल्–पतली कमर की; ताक्कु अणङ्कु–(चंचल-)लक्ष्मीदेवी के समान; अरुम् चीतैक्कु–अपूर्व सीताजी को; ताक्कु अरु–असह्य; तुन्पम्–दुःख; नमतु उरुविन्–हमारा-सा रूप लेकर; आक्किनान्–(मारीच ने) दिलाया; अॅन्ऱु–यह सोचकर; पॅऱल् अरुम्–दुर्लभ; उवकै–आनन्द को; वाक्किनान् उरैयाम्–मुख से नहीं कहेंगे; अॅन–यह विचार कर; मान्कळ्–हरिण; कळित्तन–मौन रूप से हर्षित हुए। ४७०

हिरण इतराये। उन्हें इस बात का ठसक हो गया था कि मारीच ने अपनी दर्शनीयता से दर्शक की दृष्टि को हरनेवाली और पतली कमर से

शोभित लक्ष्मीदेवी से तुल्य सीताजी को असह्य दुःख देने की बात जब सोची, तब हमारा ही रूप धरकर कष्ट दिया। पर वे मौन ही रहे; क्योंकि उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि हम अपना मुख खोलकर अपना आनन्द प्रकट नहीं करेंगे। ४७०

नीडु	नॅञ्जुरु	नेयत्ता	नॅडिदुऱप्	पिरिन्दु
वाडु	हिन्ऱन	मरुळुरु	कादलिऩ्	मयङ्गिक्
कूडु	नन्नदित्	तडन्दोरुङ्	गुडैन्दन	पडिवुऱ्
ऱाडु	हिन्ऱन	कॉळुन्नरैप्	पॉरुविन	वन्नम् 471

नॅटितु उऱ–दीर्घ (बहुत) काल तक; पिरिन्तु–वियुक्त रहकर; नॅञ्चु उऱु–मन में रहनेवाले; नीटु नेयत्ताल्–गहन प्रेम से; वाटुकिन्ऱ–म्लान होकर; मरुळ् उऱु–मोहक; कातलिऩ् मयङ्कि–प्यार के साथ भ्रान्त हो; कूटुम्–जहाँ आ मिले हैं; नल् नति–उन उत्तम नदियों के; तटम् तॊऱुम्–तल-तल में; कुटैन्तऩ–गोते लगाते हुए; पटिवुऱ्ऱु–वहीं रहकर; आटुकिन्ऱऩ–(जो) क्रीड़ा करते हैं, वे; अन्नम्–हँस; कॉळुन्नरै–पतियों की; पॊरुविऩ–समानता करते थे। ४७१

हस बहुत काल तक दूर रहे। फिर मन के गम्भीर प्रेम के कारण व्याकुल और मोहक प्रेम के वश में होकर नदी-तटों पर आ जाते है और वे जल में गोते लगाकर क्रीड़ा करते है। वे विरही पतियों के समान हैं। अर्थश्लेष के द्वारा यह पद दोनो पर (हंसों और पतियों पर) लागू होता है। ४७१

कारॅ	नुम्बॅयर्क्	करियवन्	मार्बिनिऱ्	कदिर्मुत्
तार	मॅन्नवुम्	बॉलिन्दन	वळप्परु	मळक्कर्
नीर्मु	हन्दमा	मेहत्ति	नरुहुऱ्	निरैत्त
कूरुम्	वॅण्णिऱत्	तिरैयॅनप्	पऱप्पन	कुऱण्डम् 472

अळप्प अरुम्–अगणित (अपार); अळक्कर्–समुद्र से; नीर् मुकन्त–जल सोखकर जानेवाले; मा मेकत्तिऩ्–काले मेघ के; अरुकु उऱ–पार्श्व में; निरैत्त–पंक्ति में; वॆळ् निऱम् कूरुम्–श्वेत रंग की; तिरैयत–लहरों के समान; पऱप्पऩ कुरण्टम्–उड़नेवाले बगुले; कार् ऍतुम् पॅयर्–मेघश्याम नाम के; करियवऩ्–श्यामदेव महाविष्णु के; मार्पिलिल्–वक्ष में रहनेवाले; कतिर् मुत्तु आरम् ऍन्नवुम्–शोभायमान मुक्ताहार के समान; पॊलिन्तऩ–शोभायमान थे। ४७२

अपार सागर से जल सोखकर काले मेघ आकाश में संचार करते है। उनके पास श्वेत तरंगों के समान पंक्तिबद्ध होकर बगुले उड़ते है। वे नीलमेघश्याम महाविष्णुवक्ष के मुक्ताहार के समान लगते हैं। ४७२

मरुवि	नीङ्गलॅॅल्	लानॅडु	मालैय	वानिऱ्
परुव	मेहत्ति	नरुहुऱक्	कुरुहिनम्	बऱप्प

तिरुवि नायह त्तिवर्त्तनत् तेमऱै त्तॅरिक्कुम्
ऑरुवन् मार्बिनि नुत्तरी यत्तैयु मॊत्त 473

मरुवि–इकट्ठा होकर; नीङ्कल् चॅल्ला–अन्तर न देकर; नॅट्टु मालैय–लम्बी पंक्ति बाँधकर; वात्तित्–आकाश में; परुवम् मेकत्तित्–मौसमी मेघों के; अरुकु उऱ–पास में लगे; पऱप्प–जो उड़ते हैं, वे; कुरुकु इत्तम्–सारसों का वृन्द; तिरुवित् नायकन्–श्रीलक्ष्मी के नायक; इवन् ॲन–ये हैं, ऐसा; ते मऱै–दिव्य वेदों से; तॅरिक्कुम्–प्रतिपादित; ऑरुवन्–अप्रमेय (श्रीविष्णु) के; मार्पित्तिल्–वक्ष में; उत्तरीयत्तैयुम्–उत्तरीय को भी; ऑत्त–समानता करते थे। ४७३

सारस पक्षी भी पंक्तियों में उड़ते हैं। वे सटे हुए जाते हैं। वे आकाश में वर्षाकालीन काले मेघों के पास लगे हुए उड़ते हैं। वे वेदों द्वारा प्रतिपादित श्रियःपति महाविष्णु के वक्ष पर के उत्तरीय के समान भी लगते हैं। ४७३

तेन वामलर्त् तिशैमुहत् मुदलिनर् तॅळिन्दोर्
ञान नायह न्नवैयऱ न्नोक्किन नलुहक्
कानम् यावैयुम् बरप्पिय कण्णॅनच् चनहन्
मानै नाडिनिन् ऱळैप्पन पोनुऱन मञ्ञै 474

तेन् अवाम्–मधु-भ्रमरों से इच्छित; मलर्–कमल पर के; तिचैमुकन्–चतुर्मुख; मुतलिनर्–आदि; तॅळिन्तोर्–विशद ज्ञानियों के; ञान नायकन्–ज्ञान के विषय, नायक श्रीराम का; नवै–दुःख; अऱल्–दूर होना; नोक्कित–चाहते हुए; नलुक–उनके पास सीताजी को ले आकर उपकार करने के विचार से; कानम् यावैयुम्–जंगल भर में; परप्पिय कण् ॲन–फैलायी गयी आँखें हों, ऐसे; मञ्ञै–मोर; चनकन् मानै–जनक की हरिणी को; नाटि निन्ऱु–खोजते हुए; अळैप्पन पोनुऱन–बुलाते हों जैसे हैं। ४७४

श्रीराम भ्रमरावृत कमल पर आसीन ब्रह्मा आदि के ज्ञान का विषय हैं। उन्हें पत्नी के विरह से जनित अपार दुःख है। उसे दूर करने के लिए उनकी पत्नी को ढूँढ़कर ला देंगे। इस उपकार के लिए मयूर सर्वत्र अपनी आँखें (दृष्टि) भेजकर जनक की दुहिता हरिणी-सी सीता को ढूँढ़ रहे हों और बुला रहे हों, ऐसे लगे। ४७४

उऱवॅ दुप्पुरुङ् गॊडुन्दॊऴिल् वेनिला नॊऴिय
तिऱनि नॅप्पुरुङ् गार्ॲनुञ् जॅव्वियोन् ऱेर
निऱम त्तत्तुरु कुऴिर्प्पिनि नॅडुनिल मडनुदॅ
पुऱम यिर्त्तलम् बॊडित्तन पोन्ऱन पशुम्बुल् 475

पचुम् पुल्–हरी घासें; वॅतुप्पु उऱ–तप्त करते हुए; उऱुम्–आनेवाले; कॊटुम् तॊऴिल्–क्रूरकर्म; वेत्तिलान्–ग्रीष्मराज के; तिऱम् ऑऴिय–बल को मिटाते हुए; निनैप्पु उऱु–सबके मन में आनेवाले; कार् ॲनुम् चॅव्वियोन्–वर्षाकाल रूपी श्रेष्ठ गुण

वाले राजा के; चेर–आ जाने पर; नॆट्टु निऱम्–विशाल विस्तार की; निलम् मटन्तै–भूमिदेवी; मत्तुतु उऱ–मन में हुई; कुळिर्प्पितिन्–शीतलता के कारण; पुऱम् मयिर् तलम्–शरीर के रोंगटे; पॊटित्तन–पुलकित हुए हों; पोन्ऱत–ऐसे लगीं। ४७५

घासें भूमिदेवी के पुलकित रोंगटों के समान लगीं। तप्त करनेवाले क्रूरकर्मी ग्रीष्मराज का आतंक दूर करते हुए सर्वप्रिय वर्षाकाल आ गया। इससे भूमि के विशाल शरीर भर मे शीतलता (आनन्द) के कारण पुलक भर गये। ४७५

शॆऩ्ऩॆ वेलवर् शऱिशिलैक् कुरिशिल रिरुण्ड
कुञ्जि शेयॊळि कदुवुऱप् पुदुनिऱङ् गॊडुक्कुम्
पञ्जि पोर्त्तमॆल् लडियॆनप् पॊलिन्दन पदुमम्
वञ्जि पोलियर् मरुङ्गॆन नुडङ्गिन वल्लि 476

चॆम् चॆव्वेलवर्–(रक्त के कारण) लाल हुए तीक्ष्ण भालाओं के धारक; चॆऱि चिलै कुरिचिलर्–सबन्ध धनुर्धर वीर, इनके; इरुण्ट कुञ्चि–काले केश; चेय् ऒळि कतुवुऱ–लाल कान्ति से रंजित हो, ऐसा; पुतु निऱम् कॊटुक्कुम्–नई रौनक़ देनेवाला; पञ्चि पोर्त्त–लाक्षारसरंजित; वञ्चि पोलियर्–वल्लरी-सी स्त्रियों के; मॆल् अटि ऎऩ–कोमल चरणों के समान; पतुमम् पॊलिन्तत–कमल शोभे; मरुङ्कु ऎऩ–(उनकी) कमरों के समान; वल्लि नुटङ्कित–पुष्पलताएँ लचकीं। ४७६

कमल वल्लरी-तुल्य रमणियों के चरणों के समान कोमल रहे। लाक्षारसरंजित वे चरण, रक्तरंजित भालाधारी और सबन्ध धनुर्धर वीरों के काले केशों को (अपने आघातों से) नया रंग देनेवाले थे। उन स्त्रियों की कमर के समान लताएँ लचकीं। ४७६

नीयि रन्नवळ् कुदलैय रादलि ऩॆडिप्
पोयत् तैयलैत् तरुदिरॆन् ऱिराहवन् पुहलत्
तेय मॆङ्गणुन् दिरिन्दन पोन्दिडैत् तेडिक्
कूय वाय्क्कुरल् कुऱैन्दवोऱ् कुऱैन्दन कुयिल्हळ् 477

नीयिर्–आप लोग; अन्नवर् कुतलैयर् आतलिन्–उनकी-सी मधुर (अस्पष्ट) तोतली बोली वाली हैं, इसलिए; नेटि पोय्–खोजते जाकर; अत्तैयलै–उन रमणी को; तरुतिर्–ला दीजिए; ऎऩ्ऱु–यह; इराकवऩ् पुकल–श्रीराम के कहने पर; कुयिल्कळ्–कोयलों ने; तेयम् ऎङ्कणुम्–देश भर में; तिरिन्तत पोन्तु–घूमते हुए जाकर; इटै तेटि–उन-उन स्थानों में खोजकर; कूय आय्–टेर लगाकर; कुरल्–गला; कुऱैन्त पोल्–बैठ गया हो, ऐसा; कुऱैन्तन–बोलना छोड़ दिया। ४७७

कोयलें अब मौन रहीं। क्यों? श्रीराघव ने उनसे कहा था कि सीताजी की बोली भी तुम्हारी जैसी है। उसे ढूँढ़कर लाओ। वे देश भर में टेर

लगाती हुई घूमीं। उन्होंने उसमें अपना गला फाड़ दिया, अब गले के बैठ जाने के कारण वे मौन हैं। यह कवि की उत्प्रेक्षा है। ४७७

पॉऴिन्द मानिलम् पुऱ्ऱरक् कुमट्टिय पुत्तिऱ्ऱा
ऍऴुन्द वाम्बिह ळिडऱिन शॅऱितयि रेय्त्त
मॉऴिन्द तेनुडै मुहिऴ्मुलै याय्च्चियर् मुळविऱ्
पिऴिन्द पाल्वऴि नुरैयिन्नैप् पॊरुवित्त पिडवम् 478

पॉऴिन्त मा निलम्–वर्षा-प्राप्त भूमि ने; **पुल् तर**–घास उगायी, इसलिए; **कुमट्टिय**–उमे खाकर जो अघा गयीं; **पुत्तिऱ् आ**–हाल में ब्यायी हुई गायों ने; **ऍऴुन्त आम्पिकळ्**–उगे हुए कुकुरमुत्तों को; **इटऱित्त**–ठोकर मारकर छितरा दिया; **तयिर् चॅऱि**–(वे) दहीखण्ड; **एय्त्त**–के समान लगे; **पिटवम्**–'पिडव' नामक पौधों के फूल; **मॉऴिन्त तेन् उटै**–बोली के रूप में शहद बरसानेवाली; **मुकिऴ् मुलै**–नवोदित स्तनों वाली; **आय्च्चियर्**–ग्वालवालाओं के; **मुळविल् पिऴिन्त**–दुग्धपात्रों से निकले; **पाल्**–दूध से; **वऴि**–छलकनेवाले; **नुरैयित्तै**–झाग के; **पॊरुवित्त**–समान रहे। ४७८

भूमि को अधिक वर्षा प्राप्त हो गयी। उसने अधिक घास पैदा करायी। हाल में ब्यायी हुई गायों ने उस घास को खूब चरा और अघा गयीं। उन्होंने अपने पैरों से अपनी गति में कुकुरमुत्तों को तोड़कर छितरा दिया। वे कुकुरमुत्ते दहीखण्डों के समान दिखे। 'पिडव' नाम के फूल यत्र-तत्र दिखे। वे मधुमधुर बोली और नवोदित स्तनों वाली ग्वालवालाओं द्वारा दूध के पात्रों में ढाले गये दूध के झाग के समान लगे। ४७८

वेङ्गै नाऱिन्न कॉडिच्चियर् वडिक्कुऴल् विरैवण्
डेङ्ग नाहमु नाऱिन नुळैच्चिय रैम्बाल्
आङ्गु नाण्मुल्लै नाऱिन वाय्च्चिय रोदि
आङ्ग रुऱ्पल मुळत्तियर् पित्तिहै नाऱ 479

कॉटिच्चियर्–पर्वतीय स्त्रियों के; **वटि कुऴल्**–कंघी करके बँधे केश; **वेङ्कै विरै नाऱित्त**–'वेंगै' फूलों का गन्ध निकाल रहे थे; **नुळैच्चियर्**–(समुद्रतटीय प्रदेश की) धीवर स्त्रियों के; **ऐम्पाल्**–केश; **वण्टु एङ्क**–भ्रमर गुंजार करें, ऐसा; **नाकमुम् नाऱित्त**–सुरपुन्नाग के (फूलों के कारण) सुवास से पूर्ण थे; **आङ्कर्**–पास; **उऴत्तियर्**–(खेतों के प्रदेश की) कृषकवालाओं के; **पित्तिकै**–केश; **उऱ्पलम् नाऱ**–उत्पल की गन्ध दे रहे थे; **आङ्कु**–वहाँ; **आय्च्चियर्**–ग्वालिनों के; **ओति**–केश; **नाळ् मुल्लै नाऱित्त**–नवविकसित कुंदपुष्प का गन्ध दे रहे थे। ४७६

पार्वत्य देश वाली 'कॉडिच्ची' स्त्रियों के बँधे केश से 'वेंगै' फूलों का सुवास आ रहा था। समुद्रतटप्रदेश वाली धीवरवालाओं के केश से सुरपुन्नाग की गन्ध आ रही थी और उस पर भ्रमर मँड़रा रहे थे। पार्श्व में

कृषकस्त्रियों के केश से लाल उत्पल का सुवास आ रहा था। उन पर्वत-प्रदेशों में ग्वालिनों के केश कुन्दपुष्पगन्ध से भरे थे। ४७९

तेरैक् कॊण्डपे रल्हुला डिरुमुहङ् गाणान्
आरैक् कण्डुयि रार्रुवा नल्लुणर् वऴिन्दान्
मारर्क् कॆण्णिल्वल् लायिर मलर्क्कणै वहुत्त
कारैक् कण्डनन् वॆन्दुयर्क् कौरुहरै काणान् 480

तेरै कॊण्ट–रथसदृश; पेर् अल्कुलाळ्–विशाल कटि वाली; तिरु मुकम् काणान्–(सीताजी का) श्रीमुख न देखकर; मारर्कु–मन्मथ के लिए; ऍण् इल्–अगण्य; पल् आयिरम्–अनेक सहस्र; मलर् कणै–पुष्पशर; वकुत्त–जिसने सृष्ट कर दिया, उस; कारै–वर्षाकाल को; कण्टनन्–देखकर; वॆम् तुयर्क्कु–कठोर दुःख (सागर) का; ऒरु करै–पार; काणान्–न देखकर; नल् उणर्वु–होश; अऴिन्तान्–खो गये; आरै कण्टु–किसको देखकर; उयिर् आर्रुवान्–प्राण धारण करेंगे। ४८०

रथ-सदृश विशाल कटिप्रदेश वाली सीताजी का मुख श्रीराम को देखने को नहीं मिला। लेकिन कामदेव के वास्ते असंख्य अनेक सहस्र पुष्प-शर उत्पन्न करनेवाले वर्षाकाल को देखा। वे अपने दुःख-सागर का अन्त नहीं देख पाये। अतः वे बेसुध हो गये। बेचारे श्रीराम किसको देखकर अपनी जान बचाते? । ४८०

अळविल् कारॆन् मप्पॆरुम् बरुवम्वन् दणैन्दाल्
तळर्व रॆन्बदु तवम्बुरि वोरुक्कुन् दहुमाल्
किळवि तेनिनु ममिऴ्दिनुङ् गुऴैत्तवळ् किळैत्तोळ्
वळवि युण्डवन् वरुन्दुमॆन् ड्रालदु वरुत्तो 481

अळवु इल्–अपार; कार् ऍनुम्–वर्षा की; अ पॆरुम् परुवम्–वह श्रेष्ठ ऋतु; वन्तु अणैन्ताल्–आ गयी तो; तळर्वर्–शिथिल पड़ जायँगे; ऍन्पतु–यह बात; तवम् पुरिवोरुक्कुम्–तपस्या करनेवालों के लिए भी; तकुम्–लागू होगी; आल्–इसलिए; वळ्किळै तोळ्–बड़े बाँस के समान कन्धों वाली (सीतादेवी) की; तेनिनुम्–शहद में; अमिऴ्तिनुम्–और अमृत में; कुऴैत्त–घुली; किळवि–(मधुर) बोली का; वळवि उण्टवन्–खूब स्वादन जिन्होंने किया था; वरुन्तुम् ऍन्राल्–वे दुःखी रहे तो; अतु वरुत्तो–वह साधारण दुःख होगा क्या। ४८१

अतिगहन और अपार वर्षाकाल जब आता है, तब लोग शिथिलमन हो जाते हैं। यह कथन मुनियों के विषय में भी सत्य है। श्रीराम ने बाँस-सम कन्धों वाली सीताजी के मधु-सुधा-मिश्रित वचन जी भर सुने थे। अब वे दुःख से पीड़ित हैं, तो क्या वह दुःख साधारण दुःख होगा? । ४८१

कावि युङ्गरुङ् गुवळैयु नॆय्दलुङ् गायाम्
बूवै युम्बॊरु वानवन् पुलम्बिनन् ड्रळर्वान्

आवि युञ्जिङ्ङि दुण्डुहों लामॆंत्त वयर्न्दान्
तूवि यन्नत्तम् नाडिङ्त् तिवैयिवै शॊल्लुम् 482

कावियुम्–नीलोत्पल और; करुम् कुवळैयुम्–नीलकुवलय; नॆय्तलुम्–और 'नॆय्दल'; कायाम् पूवैयुम्–और अतसी पुष्पों की; पोल्वान्–समानता करनेवाले; अवन्–वे श्रीराम; पुलम्पितन्–विलाप करते हुए; तळर्वान्–शिथिल हुए; आवियुम्–प्राण भी; चिरितु उण्टु कॊल् आम्–थोड़े हैं क्या; ॲंत्त–ऐसा; अयर्न्तान्–बेसुध हुए; तूवि अन्नत्तम् अन्नाळ्–मृदु पर वाली हंसिनी-सदृश; तिड्त्तु–(सीताजी) के प्रति; इवै इवै चॊल्लुम्–ये बातें कहते। ४८२

नीलोत्पल, कुवलय, 'नॆय्दल' और अतसी पुष्पों के-से रंग वाले श्रीराम विलाप करते हुए बेसुध हो रहे। इस बात का भी संशय हो रहा कि प्राण हैं या नहीं। वे कोमलपंख हंसिनी-सी सीताजी के सम्बन्ध में निम्नोक्त बातें कहने लगे। ४८२

वारेय् मुलैया ळॆमरैक्कु नर्वाळ्
ऊरेयड्डि येनुयि रोडु ळल्वेन्
नीरे युडैया परुणिन् निलैयो
कारे यॆंत्तदा विहलक् कुदियो 483

कारे–काले मेघ; वार् एय् मुलैयाळै–अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीता को; मर्क्कुत्तर्–छिपाये रखनेवालों की; वाळ् ऊरे–वास की बस्ती को भी; अड्रियेन्–नहीं जानते हुए; उयिरोटु–प्राणसह; उळल्वेन्–घूमता फिरता हूँ; नीरे उटैयाय्–पानी (आन) रखते हो; अरुळ्–करुणा; निन् इलैयो–तुम्हारे पास नहीं है क्या; ॲंत्तु आवि–मेरे प्राणों को; कलक्कुलियो–आकुलित करोगे क्या। ४८३

काले मेघ! मैं अँगिया-बद्ध स्तनों वाली सीताजी को छिपाये रखने वालों का वासस्थान नहीं जानता। प्राण ढोकर घूम रहा हूँ। तुम जल (आन) से भरे हो! पर तुममें दया (आर्द्रता) नहीं है क्या? मेरे प्राणों को सताओगे क्या? । ४८३

वॆप्पार् नॆंडुमिन् निनॆंयिड् ड्रैवॆंहुण्
डॆप्पा लुम्विशुम् बिनिरुण् डॆळुवाय्
अप्पा दहवञ् जवरक् करैये
ऑप्पा युयिर्हॊण् डलदो वलैयो 484

वॆप्पु आर्–ज्वलन्त; नॆंटु मिन्निन्–लम्बी विजलियों के; ऎयिड्ड्रै–दाँतों वाले; इरुण्टु–काले होकर; वॆंकुण्टु–कोप करके (गरजकर); विचुम्पिन्–आकाश में; ऎप्पालुम्–सभी ओर; ऎळुवाय्–प्रकट होते; अ पातकम्–उन पातक; वञ्चम्–कपटी; अरक्करैये ऑप्पाय्–राक्षसों की ही समता करते हो; उयिर् कॊण्टु अलतु–प्राण लिये विना; ओवलैयो–न हटोगे क्या। ४८४

कठोर और लम्बी बिजलियों रूपी दन्तोरे ! काले होकर, गुस्सा करते हुए (गरजते हुए) आकाश में सर्वत्र प्रकट हो ! तुम भी उन पातक और वंचक राक्षसों की समता करते हो ! मेरी जान लिये विना हटोगे नहीं क्या ? । ४८४

अयिलेय्	विऴियार्	विळैया	रमिऴ्दिन्
कुयिलेय्	मॊऴियार्क्	कॊणराय्	कॊडियाय्
तुयिले	नॊरुवे	नुयिर्शोर्	वुणर्वाय्
मयिले	यॆन्नैनी	वलिया	डुदियो 485

मयिले–मोर; अयिल् एय् विऴियार्–भाला-जैसी आँखों वाली; विळै–(क्षीर-सागर-) उत्पन्न; आर्–मधुर; अमिऴ्तिन्–अमृत और; कुयिल् एय्–कोकिल की-सी; मॊऴियार्–बोली वाली सीता को; कॊणराय्–ढूँढ़कर नहीं लाओगे; कॊटियाय् नी–क्रूर हो तुम; तुयिलेन्–अनिद्र; ऑरुवेन्–(अकेला) विरही; उयिर् चोर्वु–मेरे प्राणों की शिथिल हालत; उणर्वाय्–जानते हो; ऍन्नै–(ऐसे) मेरे प्रति; वलि–अपना (बल) सामर्थ्य; आट्टुतियो–दिखाओगे (सताओगे) क्या । ४८५

मयूर ! तुम भाले-सी आँख वाली और क्षीरसागरोत्पन्न अमृत-सम और कोयल की कूक की-सी बोली वाली सीताजी को ढूँढ़ नहीं लाओगे क्या ? तुम भी बहुत क्रूर हो ! मुझे नींद नहीं आती और मेरी शिथिलता जानते हो । तब भी तुम अपना बल दिखाओगे क्या ? । ४८५

मऴैवा	डैयॊडा	डिवलिन्	दुयिर्मेल्
नुऴैवाय्	मलर्वाय्	नॊडियाय्	कॊडिये
इऴैवा	णुदला	रिडैपो	लिडैये
कुऴैवा	यॆन्नदा	विहुऴैक्	कुदियो 486

कॊटिये–लता; मऴै वाटैयॊट्टु–वर्षाकालीन (उदीची) हवा में; आटि–हिलकर; वलिन्तु–बलात्; उयिर् मेल्–मेरे प्राणों में; नुऴैवाय्–प्रवेश करोगी; मलर्वाय्–खिलोगी; इऴै–झूमर से अलंकृत; वाऴ् नुतलार्–प्रकाशमय माथे वाली की; इटै पोल्–कमर के समान; इटैये–मध्य में; कुऴैवाय्–झुकते हुए; ऍन्तु आवि–मेरे प्राणों को; कुऴैक्कुतियो–निर्बल बनाओगी क्या; नॊटियाय्–कहो । ४८६

हे लताओ ! वर्षाकालीन हवा में हिलकर बलात् मेरे अन्दर घुस जाती हो ! पुष्पसहित (प्रफुल्ल) रहती हो । झूमर से अलंकृत भाल वाली सीताजी की कमर के समान लचकती हो ! मेरे प्राणों को भी लचकाओगी क्या ? बताओ । ४८६

विळैयेन्	विळैवा	नवैमॆय्	मैयिनिन्
द्रिळैये	नुणर्वे	नवैयिन्	मैयिनाल्
पिळैये	नुयिरो	डुपिरिन्	दन्राल्
उळैये	यवरॆव्	वुळैया	रुरैयाय् 487

उऴैये–हिरन; विऴैवु–चाहनीय; आतवै–जो हैं; विऴैयेन्–उनको नहीं चाहता; मॅय्मैयिन् निऩ्ऱु–सत्य से; इऴैयेन्–नहीं हटूँगा; उणर्वेन्–(तथ्य) समझूँगा; अवै–वे ज्ञान; इऩ्मैयिताल्–नहीं रहे, इसलिए; पिऴैयेन्–अपराधी हो गया; उयिरोटु पिरिन्ततर्–(सीता) प्राणों के साथ बिछुड़ गयीं; अवर्–वे; ॲं उळैयार्–किस स्थान में हैं; उरैयाय्–कहो। ४८७

हे हरिण ! प्यारी वस्तुओं की चाह नहीं रखता। सत्य-मार्ग से नहीं हटता। समझदार हूँ। पर ये सब गुण छूट गये; तभी तो मैंने अपराध किया और तभी तो जीते-जी मुझे वे छोड़कर चली गयीं। वे कहाँ है ? बताओ, भला। ४८७

पयिल्बा डहमॅल् लडिपञ् ज़नैयार्
शॅयिरे दुमिला रॉडुतो रुदियो
अयिरा दुडऩे यहल्वा यलैयो
उयिरे कॅडुवा युऱवोर् हिलैयो 488

उयिरे–मेरे प्राण; पयिल्–शोभाकारी; पाटकम्–'पाडगम' नाम के (चरण के) आभरणों से भूषित; मॅल् अटि–कोमल चरण; पञ्चु अनैयार्–रुई के समान (जिनके) है; चॅयिर्–दोष; एतुम्–कुछ; इलारॊटु–(जिनका) नहीं है, उनके साथ; तीरुतियो–(मुझे छोड़कर) जाओगे क्या; अयिरातु–विना विलम्ब किये; उटऩे–उनके साथ ही, तभी; अकल्वाय् अलैयो–हट गये होगे न; कॅटुवाय्–नाशवान; उऱवु–(मेरा-सीता का) सम्बन्ध; ओर्किलैयो–(तभी) न समझे क्या। ४८८

मेरे प्राण ! सुन्दर पादकटक-भूषित व रुई-से चरणों वाली, अनिंद्य सीताजी के साथ तुम भी मुझे छोड़ जाओगे क्या ? अगर जाने का विचार रखते तो अविलम्ब चले जाते ! हे नाशवान ! उनका मेरा नाता नहीं जानते ? । ४८८

ऑऩ्ऱैप् पहराय् कुऴलुक् कुडैवाय्
वऩ्ऱैप् पुऱुनोऴ् वयिरत् तिऩैये
कॊऩ्ऱैक् कॊडियाय् कॊणर्हिऩ् ऱिलैये
ॲऩ्ऱैक् कुऱवा हविरुन् दऩैये 489

कॊऩ्ऱै कॊटियाय्–अमलतास के क्रूर (तरु); कुऴलुक्कु–सीताजी के केश के सामने; उटैवाय्–हार गया; वल्–दृढ़; तैप्पु उऱु–गड़े हुए; नीऴ वयिरत्तिऩै–गम्भीर वैर रखनेवाला है; ऑऩ्ऱै–एक भी; पकराय्–नहीं बोलता; कॊणर्किऩ्ऱिलै–(सीता को) नहीं लाता; ॲऩ्ऱैक्कु उऱवाक इरुन्ततै–किस दिन (कब) तू बन्धु (मित्र) रहा। ४८९

अमलतास, क्रूर ! तुम्हारे फल सीताजी के केशों के सामने हारे ! इसलिए मेरे साथ गम्भीर वैर पालते हो ! यह उत्तर दो ! उनको तुम मेरे पास ले नहीं आते। तुम कब मेरे मित्र रहे ? । ४८९

कुरावरुम् वनैय कूर्वा ळॅयिऱ्ऱुवॅङ् गुरुळै नाहम्
विराववॅङ् गडुविऩ् कॉल्लु मॅल्लिणर् मुल्लै वॅय्दिऩ्
उरावरुन् दुयर मूट्टि योय्वऱ मलैव दॉन्ऱो
इरावण कोब निऱ्क विन्दिर कोब मॅन्ऩो 490

कुरा अरुम्पु—"कुरा" तरु की कलियों के; अनैय—समान; कूर् वाळ् ऍयिऱु—तीक्ष्ण और उज्ज्वल दाँतो के; वॆम् नाकम्—भयंकर सर्प के; कुरुळै—बच्चे में; विरावु—(स्वाभाविक रूप से) रहनेवाले; वॆम् कडुविन्—भीषण विष के समान; कॉल्लुम्—मुझे मारनेवाली; मुल्लै—कुन्दलता की; मॆल् इणर्—कोमल कलियाँ; वॆय्तिन् उरावु—ताप देते हुए आनेवाले; अरुन्तुयरम्—असह्य दुःख को; मूट्टि—बढ़ाकर; ओय्वु अऱ—निरन्तर; मलैवतु—संघर्ष करती हैं; ऑन्ऱो—क्या यही एक है; इरावणन् कोपम् निऱ्क—रावण का कोप तो एक तरफ़ रहता है; इन्तिर कोपम् ऍन्नो—इन्द्र का कोप भी क्यों। ४९०

कुन्दलताओं की कोमल कलियाँ 'कुरवक' पुष्प-सदृश दाँतो वाले भयंकर बालसर्पो के विष के समान मुझे सन्तापक और असह्य दुःख देते हुए मेरे साथ अथक रीति से लड़ रही है ! क्या यही एक है ? रावण का कोप एक ओर रहता है तब ये असख्यक इन्द्रगोप क्यो आ निकले है ? [इस पद के पिछले अश का भाव-चमत्कार तमिऴ में गोप, कोप दोनों को एक ही समान लिखने पर आधारित है। पहले ही रावण का कोप (दुष्कृत्य) सता रहा है; अब ये इन्द्रगोप क्यो आकर सताने लगे ? कुन्दकली से सीताजी की दन्तावली की याद आ जाती है और इन्द्रगोप से उनके अधरों की स्मृति। दोनों उनको पीड़ा दे रही हैं]। ४९०

ओडैवा णुदलि नाळै यॉळिक्कला मुबाय मुन्नि
नाडिमा रीच ऩारो राडह नववि यानार्
वाडैयाय्क् कूऱ्ऱि नारु मुरुविनै माऱ्ऱि वन्दार्
केडुशूऴ् वार्क्कु वेण्डु मुरुक्कॉळक् किडैत्त वन्ऱे 491

मारीचनार्—मारीच; ओटै वाळ्—ललाट-पट्ट से अलंकृत और उज्ज्वल; नुतलिताळै—भाल वाली सीता को; ऑळिक्कलाम् उपायम्—छिपाने का उपाय; उन्नि—सोचकर; नाटि—ढूँढकर; ओर्—अनुपम; आटकम् नववि—स्वर्णमृग; आनार्—बने; कूऱ्ऱिनारुम्—(महाशय) यम भी; वाटैयाय्—उदीची (जाड़े की) हवा के रूप में; उरुविनै—अपना रूप; माऱ्ऱि—बदलकर; वन्तार्—आये; केटु चूऴ्वार्क्कु—हानि करनेवालों को; वेण्टुम् उरु—मनचाहे रूप; कॉळ—लेना; किटैत्तत् अन्ऱे—सम्भव हो गया न। ४९१

मारीच महाशय ने (मुझे क्लेश देना चाहा और) लाज से अलकृत उज्ज्वल भाल वाली सीता को (हर लेकर) छिपाने का मार्ग सोचा और कोई उपाय निर्णय किया और तदनुसार अनुपम स्वर्ण-मृग के रूप में अपना रूप बदल लिया ! वैसे ही यम महाराज भी उदीची (जाड़े का) पवन

में रूप बदलकर आ पधारे ! हानि करना चाहनेवालों को मन-चाहा रूप लेने का मौका मिल गया न ! । ४९१

अरुविऩै यरक्क रॅऩ्ऩ वऩ्दर मदऩिल् यावुम्
वॅरुवर मुळङ्गु हिऩ्ऱ मेहमे मिऩ्ऩु हिऩ्ऱाय्
तरुवलॅऩ् ऱिरङ्गि ऩायो तामरै तुऱन्द तैयल्
उरुविऩैक् काट्टिक् काट्टि यॉळिक्किऩ्ऱा यॉळिक्किऩ् ऱाय्याल् 492

अरुविऩै–दुष्कृत्य; अरक्कर् ॲऩ्ऩ–राक्षसों के समान; अन्तरम् अतऩिल्–आकाश में; यावुम् वॅरुवर–सबको भयभीत होने देते हुए; मुळङ्कुकिऩ्ऱ–गरजनेवाले; मेकमे–मेघ; मिऩ्ऩुकिऩ्ऱाय्–चमक दिखाते हो; तरुवल् ॲऩ्ऱु–उन्हें दिला दूँगा, ऐसा; इरङ्किनायो–दया दिखायी क्या; तामरै तुऱन्त–जिसने कमल त्यागा; तैयल्–उस दयिता के; उरुविनै काट्टि काट्टि–रूप को (बिजली के रूप में) दिखाते-दिखाते; ऑळिक्किऩ्ऱाय्–छिपाते; ऑळिक्किऩ्ऱाय्–छिपाते; (आल्–पूरक ध्वनि) । ४९२

हे मेघ ! जो दुष्कृत्य राक्षसों के समान आकाश मे रहकर सबको डराते हुए गरज रहे हो ! तुम (सीतादेवी के समान) चमक दिखा रहे हो। पर तुमने उनको मेरे पास सौपने की दया तो नहीं की न ? कमल त्यागकर जो आयी है उन देवी का रूप दिखाते, छिपाते; दिखाते और छिपाते हो ! । ४९२

उण्णिऱैन् दुयिर्क्कुम् वॅम्मै युयिर्शुड वुलैयु मुळ्ळम्
पुण्णुऱ वाळि तूर्त्तल् पळुदिऩिप् पोदि मार
ॲण्णुऱु कल्वि युळ्ळत् तिळैयव ऩिऩ्ऩे युऩ्ऩैक्
कण्णुऱु मायिऩ् पिऩ्ऩै यारवऩ् शीऱ्ऱङ् गाप्पार् 493

मार–मारदेव; उळ् निऱैन्तु–सारे शरीर में भरकर; उयिर्क्कुम्–निकलनेवाली; वॅम्मै–गरमी (तपन); उयिर् चुट–मेरे प्राणों को जलाती है; इति–आगे; उलैयुम् उळ्ळम्–दुखनेवाला मन; पुण् उऱ–व्रण-लगा हो, ऐसा; वाळि तूर्त्तल्–शर छिड़काना; पळुतु–व्यर्थ काम है; पोति–हट जाओ; ॲण् उऱु–मान्य; कल्वि उळ्ळत्तु–विद्यापूर्ण मन वाले; इळैयवऩ्–मेरा छोटा भाई; इऩ्ऩे–अभी; उऩ्ऩै–तुमको; कण् उऱुम् आयिऩ्–देख लेगा तो; पिऩ्ऩै–बाद; अवऩ् चीऱ्ऱम्–उसके क्रोध को; काप्पार्–बचानेवाला (रोकनेवाला); यार्–कौन है । ४९३

मन्मथ ! विरहताप अन्दर सब जगह भरकर बाहर भी प्रकट हो गया और वह मेरे प्राणों को जला रहा है। उससे मेरा मन अत्यधिक जर्जर है। तिस पर चोट करते हुए शर छिड़काना व्यर्थ है। सम्मान्य विद्वान् मेरा छोटा भाई अभी तुम्हें देखेगा तो फिर उसके कोप को रोकनेवाला कौन होगा ? । ४९३

विल्लुम्वॆङ् गणैयुम् वीरा वॆञ्जमत् तञ्जि नार्मेल्
पुल्लुन वल्ल वाऱ्ऱल् पोऱ्ऱलर्क् कुरित्तु पोलाम्
अल्लुनन् पहलु नीङ्गा यनङ्गनी यरुळिऱ् ऱीर्न्दाय्
शॆल्लुमॆन् ऱॆळिवन् दोर्मेऱ् शॆलुत्तलुम् जोर्मेत् तामो 494

वीरा–वीर; वॆम् चमत्तु–भयंकर युद्ध में; अञ्चितार् मेल्–भयातुर मनुष्यों पर; विल्लुम्–धन और; वॆम् कणैयुम्–भयंकर शर (प्रयोग); पुल्लुन अल्ल–युक्त नहीं है; आऱ्ऱल्–शुद्ध वीरता का; पोऱ्ऱलर्क्कु–मान न करनेवालों के लिए; उरित्तु पोलाम्–उचित है शायद; अनङ्क–मन्मथ; नी–तुम; अरुळिन् तीर्न्ताय्–करुणा-त्यक्त हो; अल्लुम्–रात; नल् पकलुम्–और श्रेष्ठ दिन भी; नीङ्काय्–हट जाते नहीं; चॆल्लुम् ऎन्ऱु–चलेगा, यह समझकर; ऎळि वन्तोर् मेल्–निर्वलों पर; चॆलुत्तुतलुम्–(वल का) प्रयोग करना भी; चीर्मेत्तु आमो–अच्छा होगा क्या। ४६४

वीर ! घोर समर में भयभीत लोगों पर धनु-शर का प्रयोग उचित नहीं है। शायद यह वीरता को न माननेवालों के विषय में युक्त है ? अनंग ! तुम दया से तो छूट गये; पर दिन और रात मुझे छोड़ नहीं जाते ! वहीं वलप्रयोग कारगर होगा, यह समझकर निर्वलों पर प्रयोग करना श्लाघ्य काम होगा क्या ? । ४९४

ऎन्नवित् तहैय पन्नि यीडळिन् दिरङ्गु हिन्ऱ
तन्नैयॊप् पानै नोक्कित् तहैयाळिन् दयर्न्द तम्बि
निन्नैयॆत् तहैयै याह निनैन्दनै नॆंडियो येन्नाच्
चॆन्नियिऱ् चुमन्द कैयन् ऱेऱ्ऱुवान् शॆप्प लुऱ्ऱान् 495

ऎन्न–ऐसा; इन्नकैय–ऐसी वातें; पन्नि–कहकर; ईडु अळिन्तु–शक्ति खोकर; इरङ्कुकिन्ऱ–रोनेवाले; तन्नै ऒप्पानै–स्वोपम (श्रीराम) को; नोक्कि–देखकर; तकै अळिन्तु–दृढ़ता खोकर; अयर्न्त–थके हुए; तम्पि–लघुभ्राता; चॆन्नियिल् चुमन्त कैयन्–सिर-धृत-हस्त हो; तेऱ्ऱुवान्–ढाड़स देने हेतु; नॆंटियोय्–महिमावान; निन्नै–अपने को; ऎत्तकैय आक–कैसे मनुष्य; निनैन्तनै–समझ गये; ऎन्ना–कहकर; चॆप्पल् उऱ्ऱान्–वोलने लगे। ४६५

ऐसा, ऐसी विभिन्न वातें कहते हुए शक्ति खोकर श्रीराम दुःखी हो रहे थे। तव स्वोपम श्रीराम को देखकर उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने, जो सब खोकर थक गये थे, सिर पर हाथ धरकर, कहा कि हे महिमामय ! आपने अपने को क्या और कैसा समझा है ? फिर वे उनको आगे ढाड़स दिलाने हेतु निम्न प्रकार वोले । ४९५

कालनोळितु कारुमारियुम् वन्ददॆन्ऱ कवर्च्चियो
नीलमेनि यरक्कर्वीरम् निनैन्दळुङ्गिय नीर्मैयो
वालिशैनै मडन्दैवैहिड नाडवारलि लामैयो
शालनूलुणर् केळ्विवीर तळर्न्ददॆन्नै तवत्तिनोय् 496

चाल–खूब; नूल् उणर्–शास्त्रज्ञान; केळ्वि–श्रवणज्ञान के; वीर–वीर; तवत्तित्तोय्–तपस्वी; कार् कालमुम् नीळितु–वर्षाकाल लम्बा है; मारियुम् वन्ततु–बारिश भी आ गयी; ऍन्नुर्–यह; कवर्चियो–दुःख है क्या; नीलम् मेति–काले शरीरों के; अरक्कर् वीरम् नितैन्तु–राक्षसों के पराक्रम को सोचकर; अळुङ्किय–क्षीण हुए; नीर्मैयो–मन वाले हो गये क्या; नटन्तै–देवी; वैकुम्–जहाँ रहती हैं; इटम्–वह स्थान; नाट–ढूँढ़ने के लिए; वालि चेतै–वाली की सेना का; वारल्–आगमन; इलामैयो–नहीं हुआ इसलिए क्या; तळर्न्ततु ऍन्नै–विगलित होना क्यों। ४९६

शास्त्र के पठन और श्रवण से प्राप्त पुष्कल ज्ञान के धनी ! वीर ! तपस्वी ! वर्षाकाल दीर्घ है; बारिश भी खूब आयी ! यह सोचकर आप चिन्ताग्रस्त है क्या ? या काले शरीरों के राक्षसों का प्रताप सोचकर मन टूट गया है ? या देवी का स्थान ढूँढ़ने के लिए वाली की सेना का आगमन नहीं हुआ, वही कारण है ? यह मन की शिथिलता क्यों ? । ४९६

मऱैतुळङ्गितु मदितुळङ्गितुम् वानुमाळ्हडल् वैयमुम्
निऱैतुळङ्गितु निलैतुळङ्गुरु निलैमैनिन्वयि निऱ्कुमो
पिऱैतुळङ्गुव वत्तैयपॆऱॆयि ऱुडैयपेदैयर् पॆरुमैनिन्
इऱैतुळङ्गुरु पुरुववॆञ्जिलै यिडैतुळङ्गुऱ विशैयुमो 497

मऱै तुळङ्किनुम्–वेद विपरीत बनें तो भी; मति तुळङ्किनुम्–चन्द्र भ्रमित हो जाय तो भी; वानुम्–आकाश और; आऴ् कटल्–गहरे समुद्र-मध्य; वैयमुम्–भूमि; निऱै तुळङ्किनुम्–स्थिति खो दें तो भी; निलै तुळङ्कुरुम् निलैमै–स्थिति खोने का स्वभाव; निन् वयिन्–आपके पास; निऱ्कुमो–रहेगा क्या; पिऱै–चन्द्रकलाएँ; तुळङ्कुव अतैय–चमकती-जैसे; पेर् ऍयिऱु–बड़े दाँतों के; उटैय–रखनेवाले; पेतैयर्–बुद्धिहीनों का; पॆरुमै–(शक्ति का) महत्त्व; निन्–आपके; इऱै तुळङ्कुरु–स्वामीत्व-प्रदर्शक; पुरुवम् वॆञ्चिलै–भौंहें रूपी भयंकर धनुषों के; इटै तुळङ्कुऱ–मध्यभाग के काँपने पर; इचैयुमो–(टिका) रहेगा क्या। ४९७

चाहे वेद ही अस्त-व्यस्त क्यों न हों; भले ही चन्द्र का स्थिति-विपर्यय हो आवे; आकाश और गम्भीर-सागरमध्यस्था भूमि अपनी स्थिति खो जाय तो भी स्थैर्यस्खलन आपके पास होगा क्या ? चन्द्रकलाओं के समान चमकने वाले दाँतों से युक्त राक्षसों का पराक्रम स्वामित्वद्योतक आपकी भौहों रूपी भयंकर धनुओं के मध्यभाग के काँपने पर टिक सकेगा क्या ? । ४९७

अनुमतॆन्बव नळवऱिन्दन मऱिञवङ्गद नादियोर्
ऍन्नैयरॆन्बदॊ रिऱुदिहण्डिल मॆळ्ळुबदॆन्ऱॆणु मियल्बिनार्
विनैयिन्वॆन्दुयर् विरवुतिङ्गळुम् विरैवुशॆन्ऱन वॆळिदिनिन्
ततुवॆनुन्दिऱ नुदलिवन्दनळ् शरदम्वन्दुयर् तविर्दिये 498

अऱिञ–ज्ञानी; अनुमन् ऍन्पवन्–हनुमान कहलानेवाले के; अळवु–(सामर्थ्य का) माप; अऱिन्तनम्–जान गये; अङ्कतन् आतियोर्–अंगद आदि; ऍळुपतु

ऍऩ्ऱु ऍण्णुम्–सत्तर (वॆळ्ळम्) की गिनती में; इयलुपित्तार्–आनेवाले; ऍत्तैयर्–कितने (वीर) हैं; ऍऩ्पतु–इसका; ओर् इऱुति–एक निर्णय; कण्टिलम्–हमने नहीं जाना; विऩैयिऩ्–बुरे कर्म (फल) के समान; वॆम् तुयर्–तापक दुःख; विरवु–देनेवाले; तिङ्कळुम्–मास भी; विरैवु चॆऩ्ऱऩ–जल्दी बीत गये; निऩ्–आपके; तनु ऍऩ्ऩुम्–धनु-सम; तिरु नुतलि–श्रीयुक्त ललाट वाली; ऍळितिऩिऩ् वन्तऩळ्–सुगम रीति से आ गयीं; चरतम्–यह ध्रुव है; वऩ् तुयर्–कठोर दुःख; तविर्ति–छोड़ दीजिए। ४९८

ज्ञानी ! हमने जान लिया कि हनुमान (के प्रताप) का माप क्या है ! अंगद आदि वीरों की सेना सत्तर (वॆळ्ळम) की संख्या में बतायी गयी। पर असल में वे कितने हैं ? उनकी गणना की सीमा हमने नहीं देखी। बुरे कर्म-फल के समान कठोर दुःखदायी (शरत्ऋतु के) मास भी बीत गये। अब आपके धनु के समान ललाट वाली देवी आपसे सुगमता से आकर मिल गयीं, समझिए। यह ध्रुव है। इसलिए अब यह कठोर दुःख छोड़ दीजिए। ४९८

मऱैयऱिन्दवर् वरवुहण्डुमै वलियुम्वञ्जहर् वळियॊडुम्
कुऱैयवॆऩ्ऱिडर् कळैवॆऩ्ऩॆऩ्ऱऩै कुऱैमुडिन्ददु विदियिनाल्
इऱैववङ्गव रिऱुदिहण्डिनि दिशैपुनैन्दिमै यवर्हडाम्
उऱैयुमुम्बरु मुदविनिन्ऱरु ळुणर्वळिन्दिड लुऱुदियो 499

इऱैव–प्रभु; मऱै अऱिन्तवर्–(आपका) रहस्य जाननेवालों का; वरवु कण्टु–(दण्डक वन के ऋषिगणों का) आगमन देखकर; उमै वलियुम्–आप लोगों को त्रास देनेवाले; वञ्चकर्–राक्षसों के; वळियॊटुम् कुऱैय–सन्तति के साथ नाश हों, ऐसा; वॆऩ्ऱु–हराकर; इटर् कळैवॆऩ्–कष्ट दूर करूँगा; ऍऩ्ऱऩै–वचन दिया (आपने); वितियिनाल्–विधिवशात्; कुऱै मुटिन्ततु–कष्ट दूर हो गया (या राक्षसों के हाथ अपराध हो गया और वे मरेंगे); इनि–अब; अङ्कु अवर् इऱुति कण्टु–वहाँ उनका अन्त करके; इनितु–सुख से; इचै पुनैन्तु–प्रशंसा पाकर; इमैयवर्कळुक्कुम्–देवों का भी; ताम् उऱैयुम् उम्परुम्–उनका वासस्थान स्वर्गलोक; उतवि निन्ऱु–दिलाकर; अरुळ्–उपकार करें; उणर्वु अळिन्तिटल्–धैर्य खोना; उऱुतियो–हितकारी है क्या। ४९९

हे प्रभु ! आपका अवतार-रहस्य जिन्हे मालूम था वे आपके पास (शरण माँगने) आये। उनके आगमन पर आपने वादा किया कि हम आपके त्रासक कपटी राक्षसों को उनकी सन्तति के साथ नष्ट करते हुए हरायेंगे और आपका कष्ट दूर करेंगे। विधिवशात् (उसी वचन के अनुसार) उनका कष्ट दूर हो गया। (या राक्षस ने अपराध कर दिया और आप उसको बिना किसी संकोच के दण्ड दे सकते हैं।) अब उनका अन्त कीजिए। सुख से यश अर्जन करते हुए देवों को भी उनका स्वर्ग दिला दीजिए। उसके विपरीत इस तरह धैर्य खोना हितकारी हो सकता है क्या ? । ४९९

कादुहोऱ्ऱ निनक्कलादु पिऱर्क्कॅव्वाऱ कलक्कुमो
वेदनैक्किड मादल्वीरदै यन्ऱुपेदमै यामरो
पोदुपिऱ्पड लुण्डिदोर्पोरु ळन्ऱियिन्ऱु पुणर्त्तियेल्
यादुनक्किय लाददॅन्दै वरुन्दलॅन्न वियम्बिनान् 500

ॲन्तै–मेरे पिता (सदृश); कातु कोऱ्ऱम्–संहारक विजय; नित्तक्कु अलातु–आपको छोड़; पिऱर्क्कु–अन्यों (राक्षसों) को; ॲव्वाऱ कलक्कुमो–कैसे मिलेगी; वेतनैक्कु इटम् आतल्–वेदना का शिकार होना; वीरतै अन्ऱु–वीरता नहीं; पेतैमै आम् अरो–अज्ञता नहीं होगा क्या; पोतु पिन्पटल्—समय का अनुकरण करना; इतु ओर् पोरुळ् उण्टु–यह एक लोकरीति का विषय है; अन्ऱि–उसके अलावा; इन्ऱु पुणर्त्तियेल्–आज ही प्रयत्न करें तो; उनक्कु इयलाततु–आपके लिए अशक्त; यातु–क्या है; वरुन्तल्–दुःख मत कीजिए; ॲन्न–ऐसा; इयम्पिनान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ५००

मेरे पिता-तुल्य! शत्रुसंहारजन्य विजय आपको छोड़ अन्य की हो कैसे सकेगी? वेदनाग्रस्त होना वीरता नहीं है। यह अज्ञता होगा। हाँ! समय का अनुसरण करना है, यह एक बात लोकमान्य है! पर उसको न मानकर आज ही प्रयास करें तो आपके लिए असाध्य क्या है? इसलिए मन मत मारिए। —लक्ष्मण यों बोले। ५००

शोऱ्ऱतम्बि युरैक्कुणर्न्दुयिर् शोर्वोडुङ्गिय तोल्लैयोन्
इऱ्ऱविन्न लियक्कमॅय्दिड वैहल्पऱ्पल वेहमेल्
उऱ्ऱुनिन्ऱ विन्नैक्कॉडुम्बिणि योन्ऱिन्मेलुड नोन्ऱुराय्
मऱ्ऱुमॅम्बिणि पऱ्ऱिनालॅन वन्दॅदिर्न्ददु मारिये 501

उयिर् चोर्वु–जीवन के दुर्बल होने से; ओटुङ्किय–शरीर और मन में शिथिल जो हुए; तोल्लैयोन्–उन पुरुष-पुरातन के; तम्पि–छोटे भाई के; चोऱ्ऱ उरैक्कु–कहे वचनों से; उणर्न्तु–सुध पाकर; इऱ्ऱ इन्नतल्–त्यक्त-दुःख हो; इयक्कम् ॲय्तिट–चलते-फिरते हुए; पऱ्पल–अनेक; वैकल्–दिन; एक–बीते; मेल्–बाद; उऱ्ऱु निन्ऱ–आ लगे; विन्नै–कर्म-सम; कोटुम् पिणि–क्रूर रोग पर; मऱ्ऱुम् ॲम् पिणि ओन्ऱु–और अन्य एक भयंकर रोग; उटन् उराय् पऱ्ऱिनाल् ॲन्न–साथ आकर पकड़ गया हो, ऐसा; मारि–(दुबारा) वर्षा; ॲतिर्न्तु वन्ततु–सामने आयी। ५०१

श्रीराम का शरीर निर्बल था और उनकी जान भी दुर्बल हो गयी थी। अब वे अपने छोटे भाई के वचन सुनकर थोड़ा आश्वस्त हुए और उनका मन साफ़ हुआ। दुःख-विमुक्त हुए और चलने-फिरने लगे। ऐसा अनेक दिन व्यतीत हुए। तब प्राप्त कर्मफल के समान, मानो एक रोग पर दूसरा आ लगा हो, ऐसा अपर-वर्षाकाल भी आ गया। (वर्षाऋतु के पूर्व अपर दोनों अंशों में वर्षा होती है। बीच में एक अंश ऐसा है जब पानी नहीं बरसता)। ५०१

निऱैन्दन	नॅडुङ्गुळ	नॅरुङ्गिन	तरङ्गम्
कुऱैन्दन	करुङ्गुयिल्	कुळिर्न्दवुयर्	कुन्ऱम्
मऱैन्दन	तडन्दिशै	वरुन्दिनर्	पिरिन्दार्
उऱैन्दन	महन्ऱिलुड	नन्ऱिलुयि	रॊन्ऱि 502

नॅट्टुम् कुळन् निऱैन्तत–वड़े-वड़े तालाव भर गये; तरङ्कम्–(उन पर) तरंगें; नॅरुङ्कित्त–अधिक उठी; करुङ्कुयिल्–काली कोयलें; कुऱैन्तत–मौन हो रहीं; उयर् कुन्ऱम्–ऊँची गिरियाँ; कुळिर्न्त–शीतल हुईं; तट तिचै–विशाल दिशाएँ; मऱैन्तत–(वर्षा में) छिप गयीं; पिरिन्तार्–बिछुड़े लोग; वरुन्तित्तर्–दुःखी हुए; मकन्ऱिल् पऱवैकळ्–'महन्ऱिल्' नामक जल-पक्षी; अन्ऱिलुटन्–मादा पक्षियों के साथ; उयिर् ऑन्ऱि–एकप्राण हो; मऱैन्तत–छिप गये (संश्लिष्ट रहे)। ५०२

बारिश से सभी वड़े-बड़े तालाव भर गये। उन पर तरंगें लगातार उठीं। काले रंग की कोयलें मौन हुई। ऊँचे पर्वत शीतल हुए। विशाल दिशाएँ (मेघों में) छिप गयी। वियोगी लोग दुःखी हुए। क्रौंच पक्षी क्रौंचियों के प्राणों में प्राण मिलाकर ऐसे सटे रहे कि वे अदृश्य हो गये। ५०२

पाशिळै	मडन्दैयर्	पळिप्पिलह	लल्हुल्
तूशुतॊड	रूशन्नि	वॅम्मैतॊडर्	वुऱ्ऱे
वीशियदु	वाडैयॅरि	वॅन्दविरि	पुण्वीळ्
आशिलयिल्	वाळियॅन	वाशैपुरि	वार्मेल् 503

आचै पुरिवार् मेल्–(विरह की अवस्था में) प्रेम से भरी; पळिप्पिल् अकल् अल्कुल्–निर्दोष विशाल कटिप्रदेश; पाचु इळै–सुन्दर आभरण (इनसे अलंकृत); मटन्तैयर् मेल्–स्त्रियों पर; तूचु–उनके वस्त्रों; तॊटर् ऊचल्–झूलनेवाले झूलों पर; नत्ति तॊटर्वुऱ्ऱु–खूब लगकर; वॅन्त विरिपुण्–आग लगने से बने बड़े व्रण पर; वीळ्–लगनेवाले; आचु इल्–अचूक; अयिल् वाळि ॲन–तीक्ष्ण शर के समान; वाटै–उदीची (बरसाती) हवा ने; वॅम्मै–गरमी; वीचियतु–दिलायी। ५०३

उदीची हवा अनिद्य विशाल जघनप्रदेशों से और उत्तम आभरणों से शोभित वियोगिनी स्त्रियों के कपड़ों पर और उनके झूलों पर खूब लगी और आग से बने व्रण में लगनेवाले दोषहीन और तीक्ष्ण भाले के समान उन्हें अपार ताप दे रही थी। ५०३

वेलैनिऱै	वुऱ्ऱन	वॅयिऱ्कदिर्	वॅदुप्पुम्
शीलमळि	वुऱ्ऱपुन	लुऱ्ऱुरुवु	शॅप्पिन्
कालमऱि	वुऱ्ऱुणर्दल्	कन्ऩलळ	वल्लाल्
मालैपह	लुऱ्ऱदॆन	वोर्वरिदु	मादो 504

वेलै–समुद्र; निऱैवु उऱ्ऱत–भर गये; वॅयिल् कतिर्–सूर्य की किरणें; वॅतुप्पुम् चीलम्–गरमी देने का गुण; अळिवुऱ्ऱ–छोड़ गयी; पुनल् उऱ्ऱु–जल जिसमें से गिरकर;

उरुवु–निकलता है; चॅप्पित्त् कन्तल्–उस ताँबे के बने समयमापक पात्र के; अळवु–माप से; कालम् अरिवुरु–समय जानकर; उणर्तल् अल्लाल्–समझे विना; मालै पकल्–शाम, सवेरा; उरुतु–आया; ॲत्त ओर्वु–यह जानना; अरितु–कठिन हो गया; (मातु ओ–पूरक ध्वनियाँ)। ५०४

समुद्र भर गये। सूर्य की किरणों का तापक गुण नष्ट हो गया। समय का ज्ञान उस यन्त्र से ही प्राप्त हो सका, जिसमें जल ऊपर के पात्र से नीचे के पात्र में रंध्रों द्वारा गिरता है। नहीं तो सन्ध्या, दिन आदि काल का बोध होना असाध्य हो गया। ५०४

नॅर्किळिय नॅर्पॉदि निरम्बित्त निरम्बाच्
चॉर्किळिय नर्किळिह डोहैयवर् तूय्मित्
पर्किळि मणिप्पडर् तिरैप्परदर् मुन्ऱिल्
पॉर्किळि विरित्तन शिनैप्पॉदुळु पुन्नै 505

तोकैयवर्–कलापी-सी स्त्रियों की; निरम्पा चॉर्कु–अपूर्ण (अस्पष्ट) बोली (तोतली) के सामने; इळिय–हार जाने से; नल् किळिकळ्–सुन्दर तोते; नॅल् किळिय–धान चीरते हुए; नॅल् पॉति निरम्पित्त–धानों के ढेरों में छिप गये; तूय्–(ललनाओं के) शुद्ध; मित्त् पर्कु–चमकदार दाँतों के सामने; इळि–हारनेवाले; मणि–मोती; पटर् तिरै–फैलनेवाली सागर-लहरों से; परतर् मुन्ऱिल्–(स्पृष्ट) धीवरों के आँगनों में; चितै पॉतुळ–पुष्प-बहुल; पुन्नै –'पुन्नै' के तरु; पॉन् किळि–स्वर्ण-बँधे वस्त्र के समान; विरित्तत्त–लगे। ५०५

शुक जाकर धान की बालियों को तोड़ते हुए उनके बीच जा छिपे। (कवि की उत्प्रेक्षा है कि) वे मयूरसंकाश स्त्रियों की सुमधुर, अस्पष्ट तोतली बोली के सामने हारकर जा छिपे। स्त्रियों के चमकीले दाँतों के सामने जो हारे वे मुक्तागण समुद्रतटप्रदेश के लोगों के आँगनों में, जहाँ समुद्र की तरंगें बहती थीं, ऐसे पड़े दीखे, मानो पुष्प-भरी शाखादार 'पुन्नै' के वृक्षों ने स्वर्णभरी गाँठों को खोलकर बिखेर दिया हो। ५०५

निऱङ्गरुहु कङ्गुल्पह निन्ऱनिलै नीङ्गा
अऱङ्गरुदु शिन्दैमुनि यन्दणरि नालिप्
पिऱङ्गरु नॅडुन्दुळि पडप्पॅयर्विल् कुन्ऱिन्
उऱङ्गलिल् बिलङ्गलिल निन्ऱवुयर् वेळम् 506

निऱम् करुकु–रंग में काली; कङ्कुल्–रात्रि में (और); पकल्–दिन में; निन्ऱ निलै नीङ्का–अपनी स्थिति से न हटकर; अऱम् करुतु चिन्तै–धर्म-चिन्तन-रत मन वाले हो; मुनि अन्तणरित्–(कामादि को) तिरस्कृत करनेवाले मुनियों के समान और; पिऱङ्कु–शोभायमान; अरु–अपूर्व; नॅटु आलि तुळि पट–बड़ी-बड़ी जल की बूँदों के लगने से (पर भी); पॅयर्वु इल्–अचल (रहनेवाले); कुन्ऱिन्–पर्वत के समान; उयर् वेळम्–ऊँचे हाथी; उऱङ्कल् इल्–विना सोये; विलङ्कल् इल–हिले विना; निन्ऱ–खड़े रहे। ५०६

काली अँधेरी रात में और दिन में भी ऊँचे हाथी अनिद्र और अचल खड़े रहे। तब वे उन मुनियों के समान लगे जो अपने तप में अचल और धर्म पर स्थिरमन रहे, और जिन्होंने कामादि दोषों पर कोप दिखाया था (उनको हटा दिया था)। उनके ऊपर पानी की बूँदे गिर रही थीं। तब भी वे हाथी पर्वतों के समान अचल खड़े रहे। ५०६

शन्दिनडै यिड्रपडलै वेदिहै तडन्दो
ड्रन्दियि डहिर्पुहै नुळैन्दकुळि रन्नम्
मन्दितुयि लुड्रमुळै वन्कडु वनङ्गत्
तिन्दियम वित्ततनि योहरि निरुन्द 507

कुळिर् अन्नम्–शीत (से प्रभावित) हंस; चन्तित्–चन्दन के (तरु के); अटैयित् पटलै–पत्रों के छाजन के झोंपड़ों में रहनेवाली; वेतिकै–वेदियों पर; तटम् तोड्र–हर होमकुण्ड में; अन्ति इटु–सन्ध्याकालों में डाली गयी; अकिल्–अगरु की लकड़ियों के; पुकै–धुएँ में; नुळैन्त–(ठण्ड से बचने) घुसे; मन्ति–वानरियाँ; मुळै–गुफाओं में; वल् कटुवन्–बलवान वानरों की; अङ्कत्तु–गोद में; तुयिलुड्र–सोयीं; इन्तियम् अवित्त–(वे वानर) इन्द्रियनिग्रही; तनि योकरिन्–अनुपम योगियों के समान; इरुन्त–(निश्चल) रहे। ५०७

ठण्ड से हंस पीड़ित हुए तो वे चन्दन-पत्रों से आच्छादित ऋषियों के आश्रम के अन्दर गये। वहाँ सन्ध्याकालों में वेदियों पर होम-कुण्डों में अगरु की लकड़ियाँ जलायी जाती थीं। उनके धुएँ में घुसकर हंस घाम का अनुभव करते थे। वानरियाँ पर्वतकन्दराओं में तगड़े वानरों की गोदी में सोयीं। वे वानर भी इन्द्रियनिग्रही और उत्कृष्ट योगियों के समान अचल बैठे रहे। ५०७

आशिल्चुनै वालरुवि यायिळैय रैम्बाल्
वाशमण नाड्रलिल वान्नमणि वन्गाल्
ऊशलवड्रि दानविद णोण्मणिहळ् विण्मेल
वीशलिल वानिनॅडु मारितुळि वीश 508

वानिन्–आकाश से; नॅटुतुळि–लम्बी धारों की; मारि वीच–बरसात होती रही, इसलिए; आचु इल्–निर्दोष; चुनै–स्रोतें; वाल् अरुवि–(और) उत्तम सरिताएँ; आय् इळैयर्–चुने हुए आभरणों से भूषित स्त्रियों के; ऐम्पाल् वाचम्–केशों की सुगन्धि से; मणम् नाड्रल् इल–गन्ध देनेवाले नहीं; आन–बने; मणि वल् काल्–रत्नयुक्त दृढ़ खम्भों से बँधे; ऊचल्–झूले; वड्रितु आन–खाली रहे; इतण्–मचान; ऑळ् मणिकळ्–चमकदार रत्न; विण् मेल्–आकाश में; वीचल् इल–फेंकने (-वालियों) से हीन हुए। ५०८

आकाश से लम्बी धारों में पानी बरस रहा था। इसलिए अनिंद्य स्रोतों और श्रेष्ठ सरिताओं के जल से उत्तम आभरणधारिणी अंगनाओं

के केश का सुबास नहीं आ रहा था (क्योंकि वे उनमें स्नान करने नहीं गयीं)। नवरत्नखचित खम्भों पर झूलनेवाले झूले खाली रहे। मचानों से रत्न आकाश में फेंके नहीं गये (क्योंकि मचान पर बैठकर कोई रखवाली नहीं करता था और पत्थर के स्थान पर रत्न नहीं फेंकता था)। ५०८

करुन्दहैय तण्शिनैय कैदैमडल् कादल्
तरुन्दहैय पोदुहिळै यिरुपुडै तयङ्गप्
पॅरुन्दहैय पॉन्चिरैयै डुक्कियिडै पेरा
दिरुन्दकुरु हिन्पॅडैपि रिन्दवर्ह ळॅन्न 509

करु तकैय–काले रंग की; तण् चिनैय–शीतल डालों वाले; कैतै–केतकी के; मटल्–फूल; कातल् तरु तकैय–चाह पैदा करने योग्य; पोतु–कलियाँ; किळैयिल्–बन्धुओं के समान; पुटै तयङ्क–चारों ओर आसपास खड़ी रहीं; कुरुकिन् पॅटै–सारसी; पॅरु तकैय–बड़े और सुन्दर; पॉन् चिरै–आकर्षक पंखों को; ऑटुक्कि–समेटकर; इटै पेरातु–अपने स्थान से न हटकर; पिरिन्तवर्कळ् ॲन्न–वियोगिनियों की तरह; इरुन्त–विद्यमान रहीं। ५०९

सारसियाँ अपने पंखों को बन्द करके अपने-अपने स्थान पर वियोगिनियों की भाँति बैठी हुई थीं। उनके चारों ओर काले और शीतल पत्तों वाले केवड़े के झाड़ों के सुन्दर फूल और मनोहर कलियाँ रिश्तेदारों के समान (उन वियोगिनियों को ढाड़स बँधाती-सी) विद्यमान रहीं। ५०९

पदङ्गमुळ वॊत्तविशै पन्ञिमिरु पन्न
विदङ्गळि नडित्तिडु विहर्पवळि मेवुम्
मदङ्गियरै यॊत्तमयिल् वैहुमर मूलत्
तॊदुङ्गिन वुळैक्कुल मळैक्कुल मुळक्क 510

पतङ्कम्–विहंग; मुळवु ऑत्त–मृदंग के समान रहे; पल् ञिमिरु–विविध भ्रमर; इचै–संगीत; पन्न–गाये; मयिल्–मोर; वितङ्कळिन् नटित्तिटु–विविध रूप से नृत्य किये जानेवाले; विकर्पम् वळि–अनेक नाचों में; मेवुम्–विदग्ध; मतङ्कियरै नर्तकियों; ऑत्त–के समान रहे; मळै कुलम्–मेघकुल के; उळक्क–भीत करने से; उळै कुलम्–हरिणसमूह; वैकुम् मरम्–नाच जहाँ हो रहे थे, उन पेड़ों के; मूलत्तु–तले; ऑतुङ्कित्त–आ ठहरे। ५१०

विविध जलपक्षी अपनी ध्वनि के कारण मृदंग के समान लगे। विविध भ्रमर संगीत (का-सा नाद) उठा रहे थे। मोर उन नर्तकियों के समान नाच रहे थे, जो अनेक तरह के तालों के लय में होनेवाले विविध नृत्यों में दक्ष थीं। मेघ-गर्जन से भयभीत हुए हिरण-समूह उन पेड़ों के तले जा ठहरे जहाँ ये नृत्य और गान आदि हो रहे थे। ५१०

विळक्कोळि यहिऱ्पुहै विऴुङ्गमळि मॅन्गॊम्
विळैक्कुमिडै मङ्गैयरु मैन्दर्हळु मेऱत्
तळत्तहु मलर्त्तविशि कन्दुनहु शन्दिन्
तॊळैत्तुयिलु वन्दुतुयिल् वुऱ्ऱहुळिर् तुम्बि 511

मॅल् कॊम्पु–पतली लता भी; इळैक्कुम्–जिसकी उपमा बनने से बिछुड़ जाती है; इडै–ऐसी कमरों की; मङ्कैयरुम्–स्त्रियाँ और; मैन्तर्कळुम्–पुरुष; अकिल् पुकै–अगरु का धुआँ; विळक्कु ऑळि–दीपों के प्रकाश को; विऴुङ्कु–जहाँ निगल रहा था; अमळि–उस शय्या पर; एऱ–चढ़े; कुळिर् तुम्पि–शीतल भ्रमर; तळ तकु–त्यागने को मजबूर होकर; मलर् तविचु–फूलों की सेज; इकन्तु–त्यागकर; नकु चन्तिन्–सुन्दर रहनेवाले चन्दनतरुओं के; तॊळै–कोटरों में; तुयिल्–सोना; उवन्तु–चाहकर; तुयिल्वुऱ्ऱ–(आये और) सोये। ५११

पतली पुष्पलता से भी अधिक पतली कमर वाली दयिताएँ और उनके नायक पुरुष शय्याओं पर चढ़े। वहाँ अगरु का धुआँ दीप के प्रकाश को निगल रहा था। शीतल ('तुम्पि' जाति के) भ्रमरों को पुष्पशय्या त्यागना पड़ गया। वे चन्दनतरुओं के कोटरों में चाह के साथ जाकर सोये। ५११

तामरै मलर्त्तविशि कन्दुदहै यन्नम्
मामर निरैत्तॊहु पॊदुम्बरुळै वहत्
तेमर नडुक्किद णिडैच्चॆऱि कुरम्बैत्
तूमरु वॆयिऱ्ऱिय रॊडन्बर् तुयिल्वुऱ्ऱार् 512

तकै अन्नम्–उत्तम हंस; तामरै मलर्–कमल-पुष्प का; तविचु इकन्तु–अपना आसन त्यागकर; मा मरन् निरै–बड़े वृक्षों की पंक्तियों से; तॊकु–भरे; पॊतुम्पर् उळै–उपवनों में; वैक–ठहरते है और; तेम् मरन् अडुक्कु–सुगन्धपूर्ण लकड़ियाँ चुनकर बने; इतण् इडै चॆऱि–मचानों पर बने; कुरम्पै–छोटे-छोटे झोंपड़ों में; तू मरुवु–शुद्ध; ऍयिऱ्ऱियरॊडु–दाँतों वाली किरातिनियों के साथ; अन्पर्–उनके प्रेमी; तुयिल्वुऱ्ऱार्–सोये। ५१२

सुन्दर हस विहंगों ने कमलशय्या त्याग दीं। वे जाकर बागों में रहे जहाँ बड़े-बड़े वृक्ष पंक्तियों मे खड़े थे। सुवासपूर्ण काष्ठखण्डों को चुनकर उन ढेरों पर झोंपड़े बनाये गये थे। उन झोंपड़ों में वनप्रदेश-वासी व्याध लोग अपनी पवित्र दाँतों वाली स्त्रियों के साथ सोये। ५१२

वळ्ळिपुडै शुऱ्ऱियुयर् शिऱ्ऱिलै मरन्दो
ऱॆळ्ळरुम रिक्कुरळॊ डण्डर्ह ळिरुन्दार्
कळ्ळरि नॊळित्तुळ नॆडुङ्गळु दॊडुङ्गि
मुळ्ळॆयिऱु तिन्ऱुपशि मूळ्हिड विरुन्द 513

वळ्ळि पुडै चुऱ्ऱि–'वळ्ळि' की लताओं से, चारों ओर से घिरे रहनेवाले; उयर्–

ऊँचे उगे; चिऱु इलै—छोटे-छोटे पत्तों के; मरम् तोऱु—पेड़-पेड़ के तले; अँळ्ळ अरु—अनिंद्य; मऱि कुरुळोटु—पालनयोग्य बाल-बकरियों के साथ; अण्टर्कळ्—गोप लोग; इरुन्तार्—ठहरे रहे; कळ्ळरिन्—चोरों के समान; ऑळितु उळल्—छिपे-छिपे फिरनेवाले; नॅटु कळुतु—बड़े-बड़े भूत भी; ऑटुङ्कि—शिथिल होकर; मुळ् अँयिऱु—काँटे-सदृश अपने दाँतों को; तिन्ऱु—खाते हुए; पचि मूळ्किट—भूख में मग्न; इरुन्त—रहे। ५१३

छोटे-छोटे पत्तों के साथ पेड़ खड़े थे। उनके चारों ओर 'वळ्ळी' नाम की लताएँ फैली थीं। उनके तले पालनयोग्य बाल-बकरों की रक्षा करते हुए गोपलोग रहे। चोरों के समान छिपे-छिपे घूमनेवाले भूत और पिशाच कहीं जा नहीं सके। उनको भूख सता रही थी। अतः वे अपने ही दाँतों को खाते हुए रह गये। ५१३

शरम्बयि नॅडुन्दुळि निमिर्न्दपुयल् शार
उरम्बॅयर् विल्वन्करि करन्दुर वॉडुङ्गा
वरम्बह नॅडुम्बिरशम् वैहल्पल वैहुम्
मुरम्बिनि निरम्बल मुळैञ्जिडै नुळैन्द 514

निमिर्न्त पुयल्—ऊपर रहे मेघों से; चरम् पयिल्—शर-सम बरसनेवाली; नॅटु तुळि—लम्बी धारें; चार—पड़ीं तो; उरम् पॅयर्वु इल्—साहस न खोकर; वल् करि—बलवान हाथी भी; ऑटुङ्का—सिकुड़कर; वरम्पु अकल्—बड़े-बड़े; नॅटु पिरचम्—अनेक छत्ते; पल वैकल्—अनेक दिनों से; वैकुम्—जहाँ रहे, उन; मुरम्पिनिल्—टीलों पर; निरम्पल—ठहर नहीं सके; करन्तु उऱ—(बरसात से) बचकर रहने हेतु; मुळैञ्चु इटै—गुफाओं में; नुळैन्त—घुसे। ५१४

उन्नत आकाश में ऊपर रहनेवाले मेघों से शरों के समान पानी की बूँदें गिर रही थी और वे हाथियों पर ज़ोर से लगीं। हाथी मन में दृढ़ और शरीर में सबल थे। तो भी वे उन उन्नत भू-भागों पर नहीं रह सके, जहाँ बड़े-बड़े शहद के छत्ते अनेक दिनों से थे। वे छिपकर रहने के विचार से चट्टानों के बीच गुफाओं में जा रहे। ५१४

इत्तहैय मारियिडै तुन्नियिरु ळॅय्द
मैत्तहु विळिक्कुरु नहैच्चनहन् मान्मेल्
उयत्तवुणर् विऱ्ऱिन नॅरुप्पिडै युयिर्प्पान्
वित्तह निलक्कुवनै मुत्तिन्न् विळम्बुम् 515

इत्तकैय मारियिटै—ऐसी वर्षा में; इरुळ् तुन्नि अँय्त—अन्धकार आ गया, तब; वित्तकन्—विद्यासम्पन्न श्रीराम; मैतकु विळि—अंजन-लगी आँखें; कुऱु नकै—मन्दहास (इनसे युक्त); चनकन् मान् मेल्—जनक-दुहिता, हरिणी-सी जानकी पर; उय्त्त—रखे गये; उणर्विल्—(प्रेम के) भाव से; तिनन्—रोज; नॅरुप्पिटै उयिर्प्पान्—

आग-सा गरम उच्छ्वास छोड़ते हुए; इलक्कुवर्त्ते मुन्तिनन्–लक्ष्मण को देखकर; विळम्पुम्–बोले । ५१५

वारिश ऐसी थी और सर्वत्र अन्धकार का राज्य हो गया। तव विद्वान् श्रीराम अंजनरंजित सुन्दर आँखों और मृदु-मन्दहास के साथ मनोरम लगनेवाली जनकसुता पर के प्रेम के कारण आग के समान गरम उच्छ्वास छोड़ते हुए लक्ष्मण से (यों) वोले। ५१५

मळैक्करु मित्तॅयिऱ् ऱरक्कन् वञ्जनै
इळैप्पॅरुङ् गॊङ्गैयु मॅदिर्वुऱ् ऱिन्नलिन्
उळैत्तन ळुलैन्दुयि रुलक्कु मेलिनिप्
पिळैप्परि दॅनक्कुमि दॅन्न पॅऱ्ऱियो 516

करु मळै–काले मेघ-सम और; मिन् ॲयिऱु–विजली-जैसे दाँत वाले; वञ्चनै–कपट से; इळै पॆरु कॊङ्कैयुम्–भूषणमण्डित पुष्ट स्तनों की सीताजी भी; इन्नलिन् ॲतिर्वुऱ्ऱु–कष्ट का सामना करके; उळैत्तनळ्–दुःखी होकर; उलैन्तु–मुरझाकर; उयिर् उलक्कुमेल्–प्राण छोड़ देंगी तो; ॲनक्कुम्–मेरे लिए भी; ऒन्ऱितुम् पिळैप्पु अरितु–किसी विध जीना दूभर हो जायगा; इतु ॲन्न पॆऱ्ऱियो–यह भी क्या भाग्य है। ५१६

काले मेघ के समान रग के और विजली के समान दाँतों के रावण के कपट-कार्य से आभरणभूषिता पीनस्तनी सीता कष्ट का सामना करते हुए अधिक दुःख के कारण मर जाय, तो मेरे लिए भी जीवित रहने का कोई मार्ग न रहेगा। यह कैसी स्थिति है ? । ५१६

तूनिऱच् चुडुशरन् दूणि तूङ्गिड
वानुऱप् पिऱङ्गिय वयिरत् तोळॊडुम्
यानुऱक् कडवदे यिदुवु मिन्निलै
वेन्निऱत् तुऱ्ऱदॊत् तुळियुम् वीहिलेन् 517

तू–पवित्र; निऱम्–और अच्छे रंग वाले; चुडु चरम्–सन्तापक शर; तूणि–तूणीर में; तूङ्किट–वेकार रहे; वान् उऱ–आकाश छूते हुए; पिऱङ्किय–उन्नत; वयिरम्–सुदृढ़; तोळॊडुम्–कन्धों के साथ; यान्–मैं; इतुवुम् उऱ कटवतु ए–यह (दु:ख) भी भोगूँ क्या; इ निलै–यह स्थिति; वेल्–भाला; निऱत्तु उऱ्ऱतु ऒत्त–छाती पर लगा, ऐसी है; उळियुम्–तो भी; वीकिलॆन्–नहीं मरा। ५१७

तूणीर मे पवित्र, मनोरम रंग वाले और सन्तापक शरों को वेकार पड़े रहने देते हुए अपने आकाश छूते हुए-से ऊँचे वढ़े कन्धों के साथ मैं इस स्थिति में आने अर्ह हूँ क्या ? यह स्थिति, भाला वक्ष मे घुस गया-जैसी है। तो भी (क्या आश्चर्य—) मैं मरा नहीं ! । ५१७

तॅरिहणै मलर्हळाऱ् ऱिऱन्द नॅञ्जॊडुम्
अरियवन् ऱुयरॊडुम् यानुम् वैहुवेन्

ॲरियुमिऩ् मिऩ्मिणि विळक्कि निऩ्ऱुणैक्
कुरीइयिऩम् बॆडैयॊडुऩ् दुयिल्व कूट्टिऩुळ् 518

कुरीइ इऩम्–चिड़ियों का दल; ॲरियुम्–उज्ज्वल; मिऩ्मिनि–जुगुनू रूपी; मणि विळक्किऩ्–सुन्दर दीपों के प्रकाश में; इऩ् तुणै पॆटैयॊटुम्–अच्छी साथिन, मादा चिड़ियों के साथ; कूट्टिऩुळ्–अपने घोंसलों में; तुयिल्व–सोते हैं; याऩुम्–मैं तो; तॆरि कणै मलर्कळाल्–चुनकर फेंके गये (मन्मथ-) शरों से; तिऱन्त–विदीर्ण; नॆञ्चॊटुम्–हृदय के साथ; अरिय–असह्य; वल्–कठोर; तुयरॊटुम्–दुःख के साथ; वैकुवेऩ्–रह रहा हूँ। ५१८

देखो! चिड़ियाँ भी अपने घोंसलों में अपनी प्यारी मादा चिड़ियों के साथ सुख से सोती हैं और जुगुनू के दीप उन घोंसलों में प्रकाश दे रहे हैं। इधर मैं हूँ जो कामदेव के चुने हुए पुष्पशरों से विदीर्ण हृदय के असह्य और कठोर दुःख के साथ रह रहा हूँ। ५१८

वाऩह मिऩ्ऩिऩु मळैमु ळङ्गिऩुम्, याऩह मॆलिहुवे नॆयिऱ्ऱ रावॆऩक्
काऩहम् पुहुन्दियाऩ् मुडित्त कारियम्, मेऩ्ड्ङ् गीऴ्नहु मिऩ्ऱियॆऩ् वेण्डुमाल् 519

वाऩ् अकम्–आकाश; मिऩ्ऩिऩुम्–चमकता तो भी; मऴै–मेघ; मुऴङ्किऩुम्–गरजते तो भी; ॲयिऱु अरा ॲऩ्ऩ–विषदन्त सर्प के समान; याऩ्–मैं; अकम् मॆलिकुवेऩ्–शिथिलमन पड़ जाता हूँ; याऩ्–मैं; काऩ् अकम्–जंगल में; पुकुन्तु–प्रवेश करके; मुटित्त कारियम्–जो पूरा किया वह कार्य; मेल् नकुम्–(देखकर) व्योमवासी हँसेंगे; कीऴ्–नीचे के लोकवासी भी; नकुम्–हँसेंगे; इऩि–अब; ॲऩ् वेण्टुम्–और (दुर्भाग्य) क्या चाहिए। ५१९

जब आकाश में बिजली चमकती है या वज्र कड़कता है, तो विष-दाँत सर्प के समान दहल उठता हूँ। यही जंगल में आकर मैंने जो किया वह काम है। इसको देखकर ऊपर व्योमवासी हँसेंगे और नीचे भूमिवासी भी हँसेंगे। आगे (मेरे लिए) और क्या चाहिए? । ५१९

मऱन्दिरुन् दुय्हलॆऩ् मारि यीदॆनिऩ्, इऱन्दुविण् शेर्वदु शरद मिप्पऴि
पिऱन्दुपिऩ् ऱीर्वलो पिऩ्ऩ रॆऩ्ऩदु, तुऱन्दुशॆऩ् ऱुऱुवलो तुयरिऩ् वैहुवेऩ् 520

तुयरिऩ् वैकुवेऩ्–दुःखपीड़ित मैं; मऱन्तु इरुन्तु–(सीता को) भूले रहकर; उय्कलॆऩ्–जीवित नहीं रहूँगा; मारि–वर्षा; ईतु ॲऩिऩ्–ऐसी होगी तो; इऱन्तु–मरकर; विण् चेर्वतु–स्वर्ग पहुँचना; चरतम्–ध्रुव है; इ पऴि–यह अपमान; पिऱन्तु–दूसरा जन्म लेकर; पिऩ्–बाद; तीर्वलो–दूर करूँगा क्या; पिऩ्ऩर्–बाद तब; चॆऩ्ऱु–जाकर; तुऱन्तु–संन्यासी बनकर; अऩ्ऩतु–(अपमान से छूटने की) वह दशा; उऱुवलो–पाऊँ क्या। ५२०

दुःखमग्न मैं सीता को भूलकर जीवित रह नहीं सकता। यही वर्षा है (वर्षा यही करती रहेगी), तो मेरा मरकर स्वर्ग जाना ध्रुव है! फिर यह अपयश फिर एक जन्म लेकर (रावण को परास्त करके) दूर

किया जायेगा ? या दूसरे जन्म में गृहस्थी छोड़ जाकर, संन्यासी बनूँ और इस अपमान को दूर कर पाऊँ ? । ५२०

ईण्डुनित् ऱरक्करद मिरुक्कै यामिनिक्
काण्डलिऱ् पऱ्पल कालङ् गाण्डुमाल्
वेण्डुव दन्ऱिदु वीर नोय्दॅऱ
माण्डनॅ नॅन्ऱदु माट्चिप् पालदाम् 521

वीर–वीर; याम्–हम; ईण्टु नित्ऱु–यहाँ से; इनि–आगे; अरक्कर् तम् इरुक्कै–राक्षसों का स्थान; काण्टलिल्–ढूँढ़ पाना चाहें तो; पऱ्पल कालम्–अनेक दिन; काण्टुम्–बीतेंगे, देखेंगे; आल्–इसलिए; इतु–यह (खोज); वेण्टुवतु अन्ऱु–नहीं चाहिए; नोय्तॅऱ–(वियोग-) रोग के कष्ट देने से; माण्टनॅन् ॲन्ऱतु–मर गया, यह; माट्चिप् पालतु आम्–श्रेयस्कर होगा। ५२१

वीर ! हम यहाँ रहकर राक्षस का वासस्थान ढूँढ़ पाना चाहें तो उसमें अनेक दिन लग जायँगे। इसलिए यह खोजने का काम नहीं चाहिए। (वियोग-) रोग के कारण मर जाऊँ, यही श्लाघ्य है, यशदायी काम है। ५२१

शॅप्पुरुक् कनैयविम् मारिच् चीहरम्
वॅप्पुरुप् पुरञ्जुड वॅन्दु वीवदो
अप्पुरुक् कॊण्डवा ळॅड्ड्ग णायिळै
तुप्पुरुक् कुमुदवा यमुदन् दुय्त्तयान् 522

अप्पु उरु–शर का रूप; कॊण्ट–लेकर रहनेवाली; वाळ्–प्रकाशमान; नॅट्टुम् कण्–आयत आँखों वाली; आय् इऴै–चुने हुए आभरणभूषिता सीता के; तुप्पु उरु–प्रवाल-सम; कुमुतम् वाय्–कुमुद-सम अधरों का; अमुतम्–अमृत; तुय्त्त–जिसने पान किया, वह; यान्–मैं; इ मारि चीकरम्–इस वर्षा के सीकरों के; चॅम्पु उरुक्कु अनैय–पिघले ताँबे के समान; वॅप्पु उरुप्पु–गर्मी के साथ; उरम् चुट–हृदय को जलाते; वॅन्तु–जलकर; वीवतो–मर जाऊँ क्या। ५२२

सीता की आँखें शर के रूप की हैं, आयत हैं और उज्ज्वल। उसके आभरण चुने हुए और मनोरम हैं। उसके अधर प्रवाल-सम लाल और कुमुद के समान सुन्दर है। उसके अधरों के रस का मैं पान कर चुका हूँ। ऐसा मैं पिघले ताँबे के समान गरमी के साथ गिरनेवाले इन वर्षा के सीकरों के मेरे हृदय को जलाते मन तपकर मर जाऊँ क्या ? । ५२२

नॅय्यडै तीयॅदिर् निऱुवि निऱ्किवळ्, कैयडै यॅन्ऱवच् चनहन् कट्टुरै
पॊय्यडै याक्किय पॊऱियि लेनॊडु, मॅय्यडै यादिनि विळिद लन्ऱरो 523

नॅय् अटै–घृतवर्धित; ती ॲतिर्–(होम-) अग्नि के सामने; निऱुवि–स्थित कर; निऱ्कु–आपके पास; इवळ्–यह सीता; कैयटै–धरोहर है; ॲन्ऱ–ऐसा

(जिन्होंने) कहा; अ चत्तकन्–उन जनक के; कट्टुरै–वचन को; पोय् अटै–असत्य-मिला; आक्किय–जिसने बनाया; पोंट्रि इलेन्नोंदु–उस अभागे मेरे पास; मेय्–सत्य; अटैयातु–नहीं ठहरेगा; इत्ति–अब; विळितल् नन्ऱु–मरना अच्छा है। ५२३

राजा जनक ने घृत-लगी होमाग्नि के सामने सीता को स्थित कर मुझसे कहा कि यह आपका धरोहर है ! मैंने उनके उस विश्वास के वचन को झूठा बना दिया। मैं बड़ा अभागा हूँ। मेरे पास सत्य नहीं रह सकता। इसलिए मर जाना ही अच्छा है ! । ५२३

तेड्ऱुवाय् नीयुळै याहत् तेड्रिनिन्
ड्राड्ऱुवे नानुळ नाह वाय्वळै
तोड्ऱुवा ळल्लळित् तुन्ब मारिन्नि
माड्ऱुवार् तुयर्क्कोरु वरम्बुण् डाहुमो 524

तेड्ऱुवाय्–सान्त्वना देनेवाले; नी उळै–तुम हो; आक–ऐसा होने पर, और; तेड्रि निन्ऱु–आश्वस्त हो; आड्ऱुवेन्–दृढ़ रहनेवाला; नान् उळन् आक–मैं रहूँ, तब; आय् वळै–चुने हुए कंकण पहने रहनेवाली सीता; तोड्ऱुवाळ् अल्लळ्–इधर आकर प्रकट होनेवाली नहीं; इ तुन्पम्–यह दुःख; इत्ति–अब; आर् माड्ऱुवार्–कौन दूर करेगा; तुयर्क्कु–इस दुःख का; ओर् वरम्पु–(एक) ठिकाना; उण्टाकुमो–होगा क्या। ५२४

भाई ! तुम मुझे सान्त्वना दो और मैं आश्वस्त होकर रहता रहूँ, तो क्या सीता स्वतः आकर प्रकट होगी ? नहीं। वह आनेवाली नहीं है। यह वियोगदुःख दूर करेगा कौन ? इस दुःख की कोई सीमा भी है ? । ५२४

विट्टपोर् वाळिहळ् विरिञ्जन् विण्णैयुम्
शुट्टपो दिमैयवर् मुदल तोल्लैयोर्
पट्टपो दुलहमु मुयिरुम् बड्ऱक्
कट्टपो दल्लदु मयिलैक् काण्डुमो 525

पोर्–युद्ध में; विट्ट–प्रेषित; वाळिकळ्–शर; विरिञ्चन्–ब्रह्मा के; विण्णैयुम्–लोक को भी; चुट्ट पोतु–जला दे; इमैयवर् मुतल–सुर आदि; तोल्लैयोर् प्राचीन लोग; पट्ट पोतु–मर जायँ; उलकमुम् उयिरुम्–लोकों को और लोकवासियों को; पड्ऱु अऱ–निशान मिटाकर; चुट्ट पोतु–जला डालूँ; अल्लतु–नहीं तो; मयिलै काण्कुमो–मयूरनिभ सीता को देख सकूँगा क्या। ५२५

युद्ध हो, मैं शर छोड़ूँ और वे शर ब्रह्मा के सत्यलोक को जला दें; सुर आदि प्राचीन लोग मर जायँ; सभी लोक और लोकवासी नामोनिशान न छोड़कर मिट जायँ —विना ऐसा हुए मैं अपनी मोर-सी सुन्दरी सीता को देख पाऊँगा क्या ? । ५२५

दरुममॆंन्ऩ् ऱॊरुपॊरु ळळ्ळ वञ्जियान्, तॆंरुमरुहिऱ्पदु शॆंऱ्ऱनर् देवरो
डॊरुमैयिऩ् वन्दऩ रेनु मुय्हलार्, उरुमॆंऩ वॊलिपडु मुरवि लोयॆंन्ऱान् 526

उरुम् ॲन्न–अशनि के समान; ऑलि पटुम् (ज्या-) स्वन देनेवाला; उरम्–दृढ़; विलोय्–धनु के धारक; यान्–मेरा; तॆंरुमरुकिऱ्पतु–भ्रमित रहना; तरुमम् ॲन्ऱ् ओरु पॊरुळ्–धर्म नाम के उस चीज़ को; तळ्ळ–उपेक्षित करने से; अञ्चि–डरकर; चॆंऱ्ऱर्–शत्रु; तेवरोटु–देवों के साथ; ऑरुमैयिन्–एकत्र हो; वन्तनर् एनुम्–आयें तो भी; उय्कलार्–बचेंगे नहीं; ॲन्ऱान्–(श्रीराम ने) कहा। ५२६

वज्रघोष-सी टंकार से युक्त धनु के धारण करनेवाले! मैं अब भ्रमित-सा चुप रहता हूँ, क्यों? मालूम है? धर्म नाम का जो मार्ग है, उसका उल्लंघन करने से डरता हूँ। ये शत्रु देवों से मिलकर एकत्र हो आयें तो भी वे बच नहीं पायेंगे। यह निश्चित है! श्रीराम यों बोले। ५२६

इळवलु मुरैशॆय्वा ऩॆण्णु नाळिनि, उळवल कूदिरु मिऱ्दि युऱ्ऱदाल्
कळवुशॆय् दवनुऱै काणुङ् गालमी, दळविऱन् दयर्वदॆ ऩाणै यािळियाय् 527

इळवलुम्–लघुस्वामी ने भी; उरै चॆय्वान्–उत्तर में कहा; आणै आळियाय्–आज्ञाचक्रधर; ॲण्णुम् नाळ्–निर्धारित (अवधि) दिन; इनि उळ अल–अब नहीं रहे; कूतिरुम्–शरत्काल भी; इऱुति उऱ्ऱतु–अन्त हो गया; कळवु चॆय्तवन्–(देवी की) चोरी जिसने की, उसका; उऱै–वासस्थान; काणुम् कालम्–(ढूँढ़) लेने का काल; इतु–यह (आ गया); अळवु इऱन्तु–सीमा पारकर (अत्यधिक); अयर्वतु ॲन्–आयास करना क्यों। ५२७

लघुभ्राता ने भी उत्तर दिया कि आज्ञाचक्रधारी! हमने जो अवधि बनायी थी उसके दिन अब बाकी नहीं रहे। शरत्काल भी व्यतीत हो गया। देवी सीता को जो चुरा ले गया है उसका वासस्थान ढूँढ़ पाने का समय अभी आ गया है। अब आपका अपार दुःख करना क्यों?। ५२७

तिरैशॆयत् तिण्गड लमिळ्दञ् जॆङ्गणान्
उरैशॆयत् तरित्तुमत् तॊळिलु वन्दिलन्
वरैमुदऱ् कलप्पैहण् माडु नाट्टित्तन्
कुरैमलर्त् तडक्कैयाऱ् कडैन्दु कॊण्डनन् 528

तिरै चॆय्–तरंगकारी; अ तिण् कटल्–वह सशक्त (क्षीर-) सागर; अमिळ्तम्–अमृत को; चॆम् कणान्–अरुणाक्ष (श्रीविष्णु) के; उरै चॆय–(दे दो) कहने पर; तरित्तुम्–दे सकता था, तो भी; अ तॊळिल्–वह (आज्ञा चलाने का) काम; उवन्तिलन्–न चाहकर; वरै मुतल्–पर्वत आदि; कलप्पैकळ्–उपकरण; माटु नाट्टि–पार्श्व में स्थापित करके; तन्–अपने; कुरै–(आभरणों के कारण) ध्वनि उठानेवाले; मलर्–कमल-सम; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; कटैन्तु–मथकर ही; कॊण्टनन्–(अमृत) पाया (श्रीविष्णुदेव ने)। ५२८

तरंगकारी वह सबल क्षीरसागर अरुणाक्ष श्रीविष्णु के कहने मात्र से

अमृत निकाल दे सकता था। पर श्रीविष्णु ने वैसा प्राप्त करना नहीं चाहा। (वे काल, उपकरण, प्रयास आदि के महत्त्व को स्थापित करना चाहते थे, इसलिए) मन्दरपर्वत आदि उपकरण यथास्थान स्थापित करके उन्होंने आभरणों के कारण ध्वनि निकालनेवाले अपने कमल-सम हस्तों से समुद्र को मथा। तब जाके अमृत ग्रहण किया। ५२८

मतत्तिनि तुलहॅलाम् वहुत्तु वाय्प्पॅयुम्
नितैप्पित्त नायित्तु नेमि योडुवे
ड्रैत्तैप्पल पडैक्कल मेन्दि यारैयुम्
वित्तैप्पॅरुम् जूळ्च्चियिऱ् पॉरुदु वॅल्लुमाल् 529

मतत्तितित्—मन (के संकल्प मात्र) से; उलकु ऍलाम्—सारे लोकों को; वकुत्तु—बनाकर; वाय् पॅयुम्—अपने मुख में डाल सकनेवाले; नितैप्पितत्—संकल्प-शक्ति के हों तो भी; नेमियोटु—चक्र के साथ; वेऱु—अन्य; ऍनै—कितने ही; पल नॅटुम् पटैक्कलम्—अनेक हथियार; एन्ति—धारण करके; यारैयुम्—(दुष्कृत) सभी को; वित्त—युद्धोचित; पॅरुम् चूळ्च्चियित्—गम्भीर उपायों द्वारा; पॉरुतु—सामना करके; वॅल्लुम्—जीतते हैं। ५२९

और भी वे विष्णुदेव सारे लोकों की सृष्टि करके फिर उन्हें निगल लेने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह उनके संकल्प मात्र से हो सकता है। तो भी वे अपना चक्रायुध और अन्य कितने ही हथियारों का प्रयोग करके, और अनेक युद्धतंत्रों को अपनाकर किसी भी शत्रु का संहार करते हैं। ५२९

कण्णुडै नुदलिनन् कणिच्चि वानवन्, विण्णिडैप् पुरज्जुड वॅहुण्ड मेलैनाळ्
ऍण्णिय शूळ्च्चियु मीट्टिक् कॉण्डवुम्, अण्णले यॉरुवरा लरैयर् पालवो 530

अण्णले—महिमायुक्त; कण् उटै नुतलितत्—भाल-नेत्र (शिवजी); कणिच्चि वानवन्—परशु शस्त्रधर; विण् इटै—आकाश में; पुरम् चुट—त्रिपुर जलाने हेतु; वॅकुण्ट—कुपित हुए, तब; मेलै नाळ्—उस पहले के दिन; ऍण्णिय चूळ्च्चियुम्—जो सोचे वे उपाय; ईट्टि—संग्रह कर; कॉण्टवुम्—जो लिये (वे उपकरण); ऑरुवराल् अरैयर् पालवो—किसी से वर्णित हो सकते हैं क्या। ५३०

महिमावान! भालनेत्र परशुधर शिवजी की बात लीजिए। त्रिपुर-दहन के लिए उन्होंने संकल्प किया। उन्हें क्रोध आया। तब क्या-क्या उपाय किये, क्या-क्या हथियारों को जुटा लिया —यह सब वर्ण्य हो सकता है क्या? । ५३०

आहुनर् यारैयुन् दुणैव राक्किप्पिन्, एहुरु नाळिडै यॅय्दि यॅण्णुव
शेहुरप् पन्मुरै तॅरुट्टिच् चॅय्दपिन्, वाहैयॅन् ड्रॉरुपोरुळ् वळुवर् पालदो 531

आकुतर् यारैयुम्—(सहायक) बननेवाले सभी को; तुणैवर आक्कि—साथी बना लेकर; ऍण्णुव—विचारणीय; चेकु उऱ—दृढ़ रूप से; पल मुरै तॅरुट्टि—अनेक बार

स्पष्ट करके; पिन्–बाद; एकुड़–जाने के; नाळ् इटै–दिन में; अॅय्ति–जाकर; चॅय्त पिन्–(कार्य) करने के उपरान्त; वाकै–विजय; ॲन्ऱ और पॉरुळ्–नामक एक विषय; वळुवल् पालवो–चूक जा सकेगा क्या। ५३१

सहायकों को एकत्र कर लेना, विचारणीय बातों पर ध्यान देकर, बार-बार सोचना, बाद निश्चय पर आना, गमन के योग्य समय पर जाना, कार्यस्थल पर पहुँचना —इस रीति से काम होने पर विजय नामक चीज़ बच सकेगी क्या ? । ५३१

अऱत्तुऱै तिऱम्बिन राक्क राऱ्ऱलान्
मऱत्तुऱै नमक्कॅन वलिक्कुम् वन्मैयोर्
तिऱत्तुऱै नन्नॅऱि तिऱम्ब लुण्डॅन्निन्
पुऱत्तिनि यार्तिऱम् बुहऴुम् वाहैयुम् 532

अऱम् तुऱै–धर्म-मार्ग; तिऱम्पित्तर्–जो छोड़ गये, वे; अरक्कर्–राक्षस; आऱ्ऱलान्–(शरीर, वर और सेना के) बल से; मऱम् तुऱै–पाप-मार्ग; नमक्कु ॲॅन–हमारा, ऐसा; वलिक्कुम्–सोचनेवाले; वन्मैयोर्–कठोरमन हैं; तिऱम् तुऱै–उत्तम रीति के; नल् नॅऱि–सन्मार्ग से; तिऱम्पल् उण्टु–डिग जायँगे; ॲन्निन्–तो; पुऱत्तु इत्ति–फिर अब; पुकऴुम् वाकैयुम्–कीर्ति और विजय; यार् तिऱम्–किसके पास होगी। ५३२

धर्ममार्गातिक्रमी है राक्षस लोग। वे शरीर, वर और सेना के बल पर विश्वास रखते हैं और उनका मन पाप-मार्ग को अपना समझने की कठोरता रखता है ! वे उत्तम रीति के सन्मार्ग से हटकर व्यवहार करते हैं। फिर जीत और कीर्ति कहाँ जा सकेगी ? आपको छोड़कर उनकी हो सकती है क्या ? । ५३२

पॅन्दॉडिक् किडर्हळै परुवम् पैयवे, वन्दडुत् तुळदिनि वरुत्त नीङ्गुवाय्
अन्दणर्क् कामऱ मरक्कर्क् काहुमो, सुन्दरत् तनुवलाय् शॊल्लु नीयॆन्ऱान् 533

पॅन्तॉटिक्कु–कुन्दन-भूषण-अलंकृत सीताजी के; इटर् कळै–दुःख-निवारण का; परुवम्–काल; पैयवे वन्तु–धीरे आकर; अटुत्तु उळतु–पास पहुँचा है; इति–अब; वरुत्तम्–दुःख; नीङ्कुवाय्–छोड़ दें; अऱम्–धर्म; अन्तणर्क्कु आम्–दयावानों का होगा; अरक्कर्क्कु–(नृशंस) राक्षसों का; आकुमो–होगा क्या; चुन्तरम्–सुन्दर; तनु वलाय्–धनु-समर्थ; नी चॊल्लु–आप कहिए; ॲन्ऱान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ५३३

कुन्दन-निर्मित आभरण-भूषित सीतादेवी के कष्टों को दूर करने का समय अब धीरे-धीरे आकर पास पहुँच गया है। अब आप दुःख छोड़ दें। धर्म-मार्ग दयावानों का है। नृशंस राक्षसों का हो सकता है क्या ? हे सुन्दर धनुर्विद्याविशारद ! आप ही कहें। —लक्ष्मण यों बोले। ५३३

उरुदियः(ह्) देयॅऩ वुणर्न्द वूळियान्
इरुदियुण् डेहॉलिम् मारिक् कॅन्बदोर्
तॅरुतुय रुळन्दनन् रेयत् तेय्वुशॅन्
रुरुदियै यडैन्ददप् परुव माण्डुपोय् 534

अ॰ु तु उरुतिये–(उनका कहा) वह हितकारी है; ॲऩ–ऐसा; उणर्न्त–जो समझे, वे; ऊळियान्–युगपति (जब); इ मारिक्कु–इस वर्षा का; इरुति उण्टु कॉल्–अन्त होगा क्या; ॲन्पतु–ऐसा, सोचकर; ओर् तॅरु तुयर्–एक गहन दुःख से; उळन्ततन्–पीड़ित होकर; तेय–कृश हुए (तब); अ परुवम्–वह वर्षाकाल; आण्टु–अपना शासन पूरा करके; पोय्–जाकर; तेय्वु चॅन्रु–क्षीण होता हुआ; अरुतियै अटैन्ततु–अन्त को प्राप्त हुआ। ५३४

श्रीराम ने अपने छोटे भाई के वचन सुने और माना कि उनके वचन हितकारी हैं। वे यह सोचकर दुःखी थे कि क्या इस वर्षा का अन्त भी कहीं होगा और उसी चिन्ता में घुलकर कृश हो रहे थे। अब वह काल अपना अधिकार चलाने के बाद धीरे-धीरे क्षीण होने लगा और अन्त को मिल गया। ५३४

मळ्हलिल् पॅरुङ्गॉडै मरुवि मण्णुळोर्, उळ्हिय पॉरुळॅला मुदवि यऱ्ऱपो
दॅळ्हलि लिरवलर्क् कीव दिन्मैयाल्, वॅळ्हिय मान्दरिन् वॅळुत्त मेहमे 535

मळ्कल् इल्–अक्षय; पॅरु कॉटै–बड़ी दानशीलता; मरुवि–जन्म से लेकर; मण् उळोर्–पृथ्वीलोकवासी; उळ्किय–जो चाहते थे; पॉरुळ् ॲलाम्–पदार्थ सब; उतवि–देकर; अऱ्ऱ पोतु–धनहीन हो जाने पर; ॲळ्कल् इल्–अनुपेक्षणीय; इरवलर्क्कु–याचकों को; ईवतु इन्मैयाल्–देने को न रहने के कारण; वॅळ्किय–लाज का अनुभव करनेवाले; मान्तरिन्–(दानी) मनुष्यों के समान; मेकम्–मेघ; वॅळुत्त–श्वेत बन गये। ५३५

तब मेघ श्वेत हो गये। वे उन दानशील उदार पुरुषों के समान श्वेत हो गये, जो जन्मजात अक्षय दानशीलता के कारण अपने सारे धन पृथ्वीवासी सभी याचकों को उनकी इच्छानुसार देने के बाद अब अनुपेक्षणीय याचक को देने के लिए कुछ न रहने के कारण लज्जायुक्त हो गये हों। ५३५

तीविनै नल्विनै यॅन्नत् तेऱियप्, पेय्विनैप् पॉरुडनै यऱिन्दु पॅऱ्ऱदोर्
आय्विनै मॅय्युणर् वणुह वाशुरु, मायैयिन् माय्न्ददु मारिप् पेरिरुळ् 536

तीविनै–पापकृत्य; नल्विनै–पुण्यकार्य; ॲन्न तेऱि–क्या, यह सोच-विचारकर; पेय् विनै–उस पिशाचकृत्यप्रेरक; पॉरुळ् तनै–धन को; अऱिन्तु–पहचानकर; पॅऱ्ऱु–प्राप्त; ओर्–अनुपम; आय्विनै–विवेकशील; मॅय् उणर्वु–तत्त्वदर्शन; अणुक–आ जाने पर; आचु उरु–दोषपूर्ण; मायैयिन्–माया (अविद्या) की तरह; मारि पेर् इरुळ्–मेघों के कारण उत्पन्न बड़ा अन्धकार; माय्न्ततु–मिट गया। ५३६

शरत्काल के आते ही मेघाच्छादन से बना रहा अन्धकार हट गया। वह वैसे हट ही गया, जैसे विवेकशील तत्त्वज्ञान के आने पर दोषपूर्ण मायाजन्य अविद्या हट जाती है। यह तत्त्वज्ञान कैसा ? पाप-पुण्य की विवेचना करके, शुद्धमन होने पर पापकारी धन का स्वभाव मालूम हो जाता है। उसके फलस्वरूप यह तत्त्वज्ञान प्राप्त होता है ! । ५३६

मूळमर् मुऱ्ऱुऱ मुरश विन्दबोल्, कोळमै कणमुहिल् कुमुऱ लोवित्त
नीळडु कणैयंतत् तुळियु नीङ्गित्त, वाळुऱै युऱ्ऱॅन मऱैन्द मित्त्तॅलाम् 537

मूळ् अमर्–छिड़ा हुआ युद्ध; मुऱ्ऱु उऱ–समाप्त होने पर; मुरचु–भेरियाँ; अविन्त पोल्–बन्द हुईं जैसे; कोळ् अमै–सबल; कणम् मुकिल्–मेघगण; कुमुऱल् ओवित्त–गर्जन-रहित हो गये; नीळ्–लम्बे; अटु–संहारक; कणै अॅन्त–शरों के समान; तुळियुम्–बूँदें भी; नीङ्कित्त–गिरने से रह गयीं; वाळ्–तलवारें; उऱै–म्यान में; उऱ्ऱु अॅन्त–चली गयीं, जैसे; मिन्नु अॅलाम्–सभी बिजलियाँ; मऱैन्त–छिप गयीं। ५३७

परस्पर वैर के कारण युद्ध छिड़ जाता है। जब युद्ध बन्द हो जाता है तब भेरियो का बजना भी बन्द हो जाता है और भेरियाँ चुप्पी साध लेती हैं न ! वैसे ही सशक्त मेघ गर्जनहीन हो गये। बूँदें, जो लम्बे संहारक शरो के समान गिरती थीं, रुक गयीं। तलवारें म्यानों में छिप जाती हैं न ! वैसे ही बिजलियाँ भी अदृश्य हो गयी। ५३७

तडुत्तदा ऍडुन्दडङ् गिरिह् डाळ्वरै, अडुत्तनी रॊळिन्दन्न वरुवि तूङ्गित्त
अॅडुत्तनू लुत्तरि यत्तॊ डॅय्दिनित्तु, ऱुडुत्तवा निऱत्तुहि लॊळिन्द पोन्ऱवे 538

तटुत्त–मार्गरोधक; ताळ्–पाद-प्रदेश वाले; नॆटु तट किरिकळ्–ऊँचे और चौड़े पर्वतों की; ताळ्वरै–तराइयों में; अटुत्त–रहा; नीर्–जल; ऑळिन्तत्त–सूख गये; अरुवि–सरिताएँ; तूङ्कित्त–वहीं; अॅटुत्त–धृत; नूल् उत्तरियत्तॊटु–सूती उत्तरीय के साथ; अॅय्ति नित्तु–युक्त रहकर; उटुत्त–पहने हुए; वाल् निऱम् तुकिल्–श्वेत रंग के (अधो-)वस्त्र से; ऑळिन्त–रहित हुए; पोन्ऱ–जैसे रहे। ५३८

उन्नत और विशाल पर्वतों की तराइयों में जमा रहा जल बह गया। पर ऊपर से बहनेवाली सरिताओं में जल था। तब ऐसा लगता था मानो पर्वत के श्वेत अधोवस्त्र हट गये और वे श्वेत कपास के उत्तरीयों के साथ खड़े थे। ५३८

मेहमा मलैहळिन् पुऱत्तु वीदलान्, माहमा ऱियावैयुम् वारि यऱ्ऱन
आहैयाऱ् ऱहविळन् दळिवि नन्बॊरुळ्, पोहवा ऱॊळुहलान् शॆल्वम् बोन्ऱवे 539

माकम् याऱु–ऊपर बहनेवाली नदियाँ; यावैयुम्–सभी; मेकम्–मेघों के; मा मलैकळिन् पुऱत्तु–बड़े पर्वतों के ऊपर से; वीतलाल्–हट जाने से; वारि अऱ्ऱन–

जलहीन हो गयीं; आकैयाल्–इसलिए; तकवु इळन्तु–योग्यता खोकर; अऴिवु इल्–अमोघ; नल् पॊरुळ्–शुभकारी (पुण्य-) तत्त्व; पोक–रिक्त हो जाने से; आऱु ऒऴुकलान्–सन्मार्ग पर न चलनेवाले का; चॆल्वम्–धन (जो मिट जायगा); पोन्ऱ–उसके समान थीं। ५३९

मेघ छँट गये और पर्वत के ऊपरी भाग में बहनेवाली नदियाँ जलहीन हो रहीं। कोई आदमी कुमार्गगामी है, तब योग्य और अमोघ स्वभाव का पुण्य क्षीण हो जाता है और फलस्वरूप धन भी चला जाता है। उन नदियों का जल भी उसी तरह शून्य हो गया। ५३९

कडन्दिऱन् वॆळ्हळि ऱत्तैय कार्मुहिल्
इडन्दुऱन् देहलिऱ् पॊलिन्द दिन्दुवुम्
नडन्दिऱ नविल्वुऱ नङ्गै मार्मुहम्
पडन्दिऱन् दुरुवलिऱ् पॊलियुम् पान्मैपोल् 540

कटम्–मदनीर; तिऱन्तु ऎळु–अत्यधिक खुलकर जिन पर बहता है; कळिऱु अत्तैय–उन हाथियों के समान; कार् मुकिल्–काले मेघ; इटम् तुऱन्तु–आकाश स्थल छोड़कर; एकलिन्–चले (जाने से); इन्तुवुम्–इन्दु भी; पटम् तिऱन्तु–पट खोलते हुए; उरुवलिन्–हटाने पर; तिऱम् नटन्–कलापूर्ण नृत्य; नविल्वुऱ–करनेवाली; नङ्कैमार्–नर्तकी स्त्रियों के; मुकम्–मुखों के; पॊलियुम् पान्मै पोल्–शोभने के प्रकार के समान; पॊलिन्ततु–शोभा। ५४०

काले मेघ अत्यधिक मद बहानेवाले गजों के समान थे। वे आकाश को छोड़कर चले गये। तब इन्दु उदित हुआ। पर्दे के खुलने पर चतुर नर्तकियों का मनोरम मुख जैसे शोभायमान दिखता है, वैसे ही वह इन्दु शोभायमान लगा। ५४०

पांशिळै मडन्दैयर् पहट्टु वॆम्मुलै, पूशिय शन्दनम् पुळुहु कुङ्गुमम्
मूशिन मुयङ्गुशे ऱुलर मॊण्डुऱ, वीशिय नऱुम्बॊडि विण्डु वाडैये 541

पाचिळै मटन्तैयर्–कुन्दन के बने आभरणों से भूषित स्त्रियों के; पकट्टु वॆम् मुलै–(हाथी के) कुम्भों-सम आकर्षक स्तनों पर; पूचिय–चर्चित; चन्तनम्–चन्दन का लेप और; पुळुकु–कस्तूरी का लेप; कुङ्कुमम्–केसर का लेप; मूचिन–इनके मिश्रण से; मुयङ्कु चेऱु–प्रणयोत्तेजन के लिए (वक्ष व स्तनों पर अंकित) चित्र का लेप; उलर–सुखाते हुए; विण्टु वाटै–पर्वतीय पवन; नऱुम् पॊटि–सुगन्धित मकरन्द; मॊण्टु–लेकर; उऱ–खूब; वीचिय–बहा। ५४१

अब पर्वतों पर से बहनेवाली जाड़े की हवा सुबासित मकरन्दकण को ले आकर स्त्रियों पर लीप देती थी। अतः उनके स्तनों और वक्षों पर जो चन्दन, कुंकुम और कस्तूरी का लेप लगा हुआ था, वह सूख गया। ५४१

मन्नवन् ऱलैमहन् वरुत्त मार्ऱुवान्
नन्नॆडुम् बरुवम्वन् दणहिऱ् ऱाहलाल्

पॉन्निनै नाडिय पोदु मॅन्नवपोल्
अन्नमुन् दिशैदिशै यहन्ऱ विण्णिन्वाय् 542

मन्नवन्–चक्रवर्ती (दशरथ) के; तलै मकन्–ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम के; वरुत्तम् माऱ्ऱुवान्–दुःख को दूर करने के लिए; नल् नॆट्टु–अच्छा और लम्बा; परुवम्–काल; वन्तु अणुकिऱ्ऱु–आकर नियराया; आकलाल्–इसलिए; पॊन्तिनै–देवी को; नाटिय–खोजते; पोतुम्–हम जायँ; ऍन्प पोल्–कहते जैसे; अन्नमुम्–हंस भी; विण्णिन् वाय्–आकाश में; तिचै तिचै–दिशा-दिशा में; अकन्ऱ–दूर-दूर (उड़ते) गये। ५४२

हंस पंक्तियाँ बाँधे आकाश में दिशा-दिशा में उड़ रहे थे। 'चक्रवर्ती दशरथ के श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम का दुःख दूर करने का दीर्घ रूप से अच्छा रहनेवाला काल आ गया है। अब हम भी जाकर स्वर्णसुन्दरी सीता को खोजें' —हंस शायद यही सोचकर उड़ रहे थे! । ५४२

तञ्जिऱै यॊडुङ्गिन तऴुवु मिन्नलिन्, नॆञ्जुऱु मम्मरुम् निनैप्पु नीडिन
मञ्जुऱु नॆडुमऴै पिरिद लान्मयिल्, अॆञ्जिन मिदिलैनाट् टन्न मॆन्नवे 543

मयिल्–मोर; मञ्चु उरु–मेघों को; नॆटु मऴै–अधिक वर्षा; पिरितलान्–रुक गयी, इसलिए; तम् चिऱै ऑटुङ्किन–बन्द किये हुए पंख वाले हो गये; तऴुवुम् इन्नलिन्–लगे दुःख के कारण; नॆञ्चु उरु–मन में उठे; मम्मरुम्–भ्रम; निनैप्पुम्–सोच; नीटिन–बढ़े; मितिलै नाट्टु अन्नम् अॆन्न–मिथिला की हंसिनी (सीता) के समान; अॆञ्चिन–क्षीण-आनन्द हुए। ५४३

मेघ लुप्त हो गये और वर्षा रुक गयी। इसलिए मोरों ने अपने पंखों को समेट लिया। उनके मन में दुःख भर गया और भ्रम तथा धूमिल विचारों ने घर कर लिया। मिथिला में जनित, मोर (समान सीताजी) के समान वे सन्तोषहीन हो रहे। ५४३

वञ्जनैत् तीविनै मऱन्द मादवर्
नॆञ्जॆनत् तॆळिन्दनीर् निरन्दु तोन्ऱुव
पञ्जॆनच् चिवक्कुमॆन् पादप् पेदैयर्
अञ्जनक् कण्णॆनप् पिऱऴन्द वाडन्मीन् 544

वञ्चनै तीविनै–वंचक कार्योद्दीपक पाप-कर्म; मऱन्त मातवर्–जिन्हें मालूम ही नहीं था, उन महान तपस्वियों के; नॆञ्चु ऍन्न–मन के समान; निरन्तु तोन्ऱुव–फैला पड़ा था; तॆळिन्त नीर्–स्वच्छ जल; आटल् मीन्–(उसमें) क्रीड़ा करनेवाली मछलियाँ; पञ्चु ऍन–लाल रुई कहने भर से; चिवक्कुम्–लाल होनेवाले; मॆल् पातम्–कोमल चरणों की; पेतैयर्–स्त्रियों की; अञ्चनम् कण् ऍन–अंजन-लगी आँखों के समान; पिऱऴन्त–चलित थीं। ५४४

सब जगह जल वंचना और पाप न जाननेवाले श्रेष्ठ तपोधनों के मन के समान शुद्ध स्वच्छ हो गया। उसमें मछलियाँ उन स्त्रियों की आँखों

के समान चलित थीं, जिनके पैर महावर का नाम लेते ही लाल हो जाते हैं (लाक्षारस लगाने की आवश्यकता ही नहीं होती थी)। ५४४

ऊडिय मडन्दैयर् वदन मॊत्तन, ताळॊरु मलर्न्दन मुदिर्न्द तामरै
कूडिनर् तुवरिदळ्क् कोलङ् गॊण्डन, शेडुरु नरुमुहै विरिन्द शॅङ्गिडै 545

ताळ् तॊरुम्–नाल-नाल पर; मलर्न्तन–जो खिले थे; मुतिर्न्त–वर्धित; तामरै–कमल के फूल; ऊटिय–रूठी हुई; मटन्तैयर्–स्त्रियों के; वतनम् ऒत्तन–मुखों के समान थे; चेटु उरु–ऊँची उगी; नरु मुकै विरिन्त–सुवासित कलियाँ जिन पर खिली थीं; चॆम् किटै–वे लाल "किटै" (खुखरी ?) नाम की जल-लताएँ; कूटिनर्–प्रिय के साथ मिली हुई स्त्रियों के; तुवर् इतळ्–लाल अधरों की; कोलम् कॊण्टन–सुन्दरता से युक्त हो गयीं। ५४५

नाल-नाल पर कमल पूर्णता को प्राप्त होकर रूठी हुई स्त्रियों के मुखों के समान एक ओर झुक गये। लाल 'किटै' (खुखरी ?) नाम की लता, जिसमें सुबासित कलियाँ ऊपर खिल आयी थी, स्त्रियों के लाल अधरों का-सा रूप दिखाने लगी। ५४५

कल्वियिऱ् ऱिहळ्हणक् कायर् कम्बलै
पल्विदच् चिऱाअरॆनप् पहर्व वल्लरि
शॆल्लिडत् तल्लदॊन् ऱुरैत्तल् शॆय्हला
नल्लऱि वाळरि नविन्द नावॆलाम् 546

कल्वियिल् तिकळ्–विद्या के कारण प्रसिद्ध; कणक्कायर्–पाठशाला के अध्यापक के अधीन; कम्पलै–उच्च शोर के साथ सीखनेवाले; पल्वितच् चिऱार् ॲॆत–अनेक तरह के बालकों के समान; पकर्व–जो बोल (टेर) लगा रहे थे; वल् अरि यावुम्–जोरदार मेंढक सब; चॆल् इटत्तु अल्लतु–जहाँ बात मानी जाय, उस स्थान को छोड़कर अन्यत्र; ऒन्ऱु–कोई बात; उरैत्तल् चॆय्या–न कहनेवाले; नल् अऱिवाळरिन्–चतुर विद्वानों के समान; ना अविन्त–मौन (-जिह्वा) हो गये। ५४६

पहले मेंढक अध्यापक के सामने उच्च स्वर में पाठ दुहरानेवाले बटुओं के समान टेर लगा रहे थे। अब वे उन विद्वानों के समान मौन-जिह्वा हो गये, जो अनुपयुक्त तथा सम्मानहीन स्थलों में कोई बात नहीं करते। ५४६

शॆऱिपुनऱ् पून्दुहि ऱिरैक्कै याऱ्ऱिरैत्
तुरुदहक् कान्मडुत् तोडि योदनीर्
ऍरुळ्वलिक् कणवनै यॆय्दि याऱॆलाम्
मुरुवलिक् किन्ऱन पोन्ऱ मुत्तॆलाम् 547

मुत्तु ऍलाम्–मोती सभी; चॆऱि पुनल्–घने जल रूपी; पू तुकिल्–सुन्दर वस्त्रधारिणी; याऱु ऍलाम्–सभी नदियाँ; तिरै कैयाल्–तरंग रूपी हाथों से;

तिरैंतुवु–समेटकर; उडु तक–कसकर; काल् मट्टुतु–पैरों से लपेटकर; ओटि–दौड़कर; ओतम् नीर्–सरितापति रूपी; अॅरुळ्वलि–अतिवली; कण्वत्त अॅयृति–पति को मिलकर; मुक्वलिक्किनुरत–हँसती हों; पोनुर–ऐसे लगे। ५४७

जल का स्वच्छ वस्त्र पहने हुए नदियाँ जो वह रही थी, वे लहरों रूपी हाथों को उठाते हुए, नालों से होकर, सवेग वही और सरितापति, अपने पति का आलिंगन करके वहुत आनन्दित हुई। उनकी हँसी के समान मोती चमकते थे। (काल मे श्लेष है— पैर या चरण और नाला। स्त्रियाँ पैरों पर चलती है और नदियाँ नालो के रूप में वहती है।)। ५४७

शॊनुनिरै केळ्वियिऱ् ऱॊडरन्द मान्दरिन्
इन्निऱप् पशलैयुऱ् ऱिरुन्द मादरिन्
तन्निऱम् वयप्पय नीङ्गित् तळ्ळरुम्
पॊन्निऱम् वॊरुन्दिन पूहत् तारॆलाम् 548

पूकम् ताऱु–पूग-गुच्छे; अॅलाम्–सभी; चॊल् निरै–वहुप्रशंसित; केळ्वियिन्–शास्त्र-श्रवण के लिए; तॊटर्न्त–यात्रा पर निकले; मान्तरिन्–पुरुषों (के वियोग) से; इन् निऱम् पचलै–मनोरम हरे रंग को; उऱ्ऱिरुन्त–प्राप्त; मातरिन्–स्त्रियों के समान; तम् निऱम्–अपना हरा रंग; पयप्पय–धीरे-धीरे; नीङ्कि–खोकर; तळ्ळ अरुम्–अनिंद्य; पॊन्निऱम्–स्वर्ण के-से रंग से; पॊरुन्तित–युक्त हुए। ५४८

पूग के गुच्छे अपना (हरा) रंग खोकर स्वर्ण-वर्ण हो गये। जव प्रेमी श्रेष्ठ गुरु से श्रवणज्ञानार्जन हेतु चला जाता है, तव उसकी वियोगिनी के शरीर में एक तरह का हरा रंग फैल जाता है। पूग के गुच्छों का रंग पहले वैसा (हरा) था। पीछे वह रग वदल जाता है। ५४८

पयिन्ऱुडल् कुळिर्प्पवुम् वळन्न नीत्तवण्
इयन्ऱिल विळवॆयि लॊळ्ुडु मॆय्यन
वयिन्ऱॊ[illegible]प् वयिन्ऱॊरु मडित्त वायन
तुयिन[illegible] विडङ्गर्मात् तडङ्ग डोऱुमे 549

इटङ्कर् मा–[illegible]र प्राणी; पयिन्ऱु–(जल में अधिक काल से) पड़े रहने के कारण; उटल् कुळिर्प्पवुम्–शरीर के ठण्डा होने से; अवण् इयन्ऱिल–गहरे स्थानों में न रहकर; पळ्ळम् नीत्तु–तडागों को छोड़कर; इळ वॆयिल्–वालसूर्य-किरणों से; अॅळ्ुतुम् मॆय्यन–लिप्त-शरीरी होकर; तटङ्कळ् तोऱुम्–तडागों के तटों पर; वयिन् तॊऱुम् वयिन् तॊऱुम्–स्थान-स्थान पर; मटित्त वायन–मुख वन्द कर; तुयिन्ऱन–सोये। ५४९

मगरों का शरीर अधिक गहरे जल में वहुत दिन पड़े रहने से ठण्डा हो गया। इसलिए वे तीरों पर यत्र-तत्र मुख वन्द किये सोते हुए दिखाई दिये और उनके शरीरों पर धूप पड़ रही थी। ५४९

कॊञ्जुरुङ् गिळिनॆडुङ् गुदलै कूडिऩ, अञ्जिऱै यऱुपद वळह् वोळिय
ऎञ्जलिल् कुळैयन विडैनु डङ्गुव, वञ्जिहळ् पॊलिन्दऩ महळिर् माऩवे 550

वञ्चिकळ्–'वञ्जि' नाम की लताएँ; कॊञ्चुरुम् किळि–तुतलानेवाले शुकों के; नॆटु कुतलै–दीर्घ बोलों से; कूटिऩ–युक्त होकर; अम् चिऱै–मनोरम पंखों के; अरु पतम् अळकम्–षट्पदों के रूप में केश की; ओळिय–पंक्तियों के साथ रहतीं; ऎञ्चल् इल्–अक्षय; कुळैयऩ–पत्रों सहित (आभरणों सहित); इटै नुटङ्कुव–मध्य में लचकतीं; मकळिर् माऩ–स्त्रियों के समान; पॊलिन्तऩ–शोभीं। ५५०

('वंजी' लताओं और स्त्रियों में श्लेष है।) 'वंजी' लताओं पर शुक बैठकर मधुर बोली में बोल रहे थे। भ्रमर पंक्तियों में लगे बैठे थे। वे ही केश थे। लता पर बहुत पत्ते थे और स्त्रियों पर बहुत आभरण पाये जाते हैं। ('कुळै' के 'छोटे पत्ते' और 'आभरण' दोनों अर्थ हैं।) लताएँ लचकीली थीं। स्त्रियों की कमरें लचकीली होती हैं। (अतः) वे लताएँ स्त्रियों के समान थीं। ५५०

मळैपडप् पॊदुळिय मरुदत् तामरै
तळैपडप् पेरिलैप् पुरैयिड् ऱङ्गुव
विळैपडप् पॆडैयॊडु मॆळ्ळ नळ्ळिहळ्
पुळैयडैत् तॊडुङ्गिन पॊच्चै माक्कळ्बोल् 551

मळै पट–बारिश के कारण; पॊतुळिय–पनपे; मरुतम् तामरै–'मरुद' प्रदेश के कमल की लताएँ; तळै पट–पत्रों से युक्त हुईं; पेर् इलैयिल्–उनके बड़े पत्तों के; पुरैयिल्–मध्य; तङ्कुव–जो ठहरते है; नळ्ळिकळ्–केकड़े; विळै पट–प्यार के होने से; पॆटैयॊटम्–केकड़ियों के साथ; पॊच्चै माक्कळ् पोल्–अपराधी लोगों के समान; पुळै–अपनी बिलों को; मॆळ्ळ अटैत्तु–(मिट्टी से) चुपके से बन्द करके; ऒटुङ्किऩ–छिपे रहे। ५५१

पानी खूब बरसा था। 'मरुदम' (खेत और बागों के) प्रदेश में कमल की लताओं पर पत्ते घने रूप से उग आये थे। केकड़े उनमें ठहरे थे। अब वे अपनी प्यारी केकड़ियों के साथ बाहर निकल आये और मिट्टी में बिल बनाकर उसमें घुस गये। और उसका मुख मिट्टी से बन्द करके वे अपराधी लोगों के समान छिपे रहने लगे। ५५१

अळित्तऩ मुत्तिऩन् दोऱ्प वाऩऩम्
वॆळित्तॆदिर् विळिक्कवुम् वॆळ्हि मेऩ्मैयाल्
ऒळित्तऩ वार्मॆऩ वॊडुङ्गु हुण्णऩ
कुळित्तऩ मण्णिडैक् कूऩ नन्दॆलाम् 552

कूऩल् नन्तु ऎलाम्–कूबड़ वाले घोंघे सभी; अळित्तऩ–अपने जाये; मुत्तु इऩम्–मोतियों की राशि के; तोऱ्प–हार जाने से; आऩऩम् ऎतिर्–(हरानेवाली स्त्रियों के) आननों के सामने; वॆळित्तु–प्रकट होकर; विळिक्कवुम्–दृष्टि पड़ने से;

वॅळ्कि–लजाकर; मॆऩ्मैयाल् ऑळित्तत्त आम्–मानो बड़प्पन के कारण छिपे; ऍऩ्–ऐसा कहने योग्य रीति से; ऑट्टुङ्कु कण्णन–उन्मीलित आँखों के साथ; मण्णिटै–पंक के अन्दर; कुळित्तत्त–मग्न हुए । ५५२

घोंघे भी मिट्टी के अन्दर आँखें मूँदकर मग्न हो छिपे रहे। उन्होंने मोती दिये थे। वे मोती स्त्रियों के दाँतों से होड़ लगा नहीं सके और हार गये। इसलिए घोंघो को अपमान लगा। वे उन स्त्रियो के सामने प्रकट रूप से आना नहीं चाहते। यह किसी को मालूम नहीं था। सभी समझने लगे कि ये घोंघे अपने बड़प्पन के कारण स्वयं ही मिट्टी के अन्दर चले गये है। ५५२

10. किट्किन्दैप् पडलम् (किष्किन्धा पटल)

अऩ्ऩ काल महलु मळविनिल्, मुऩ्ऩ वीर निळवलै मुऩ्विऩोय्
शॊऩ्ऩ वॆल्लैयि नूङ्गिनुम् तूङ्गिनऩ्, मऩ्ऩऩ् वन्दिल नॆन्शॆय्द वाऱरो 553

अऩ्ऩ कालम्–वैसा काल; अकलुम् अळवित्तिल्–जब बीता तब; मुऩ् अव् वीरऩ्–अग्रगण्य वीर श्रीराम; इळवलै (नोक्कि)–अपने छोटे भाई को देखकर; मुऩ्पित्तोय्–वली; चॊऩ्ऩ ऍल्लैयिऩ्–कथित अवधि के; ऊङ्कितुम्–बीत जाने पर भी; मऩ्ऩऩ्–राजा (सुग्रीव); तूङ्कितऩ्–देर करता है; वन्तिलऩ्–नहीं आया; चॆय्त आऱु–(वचन-पालन) करने का ढंग भी; ऍऩ्–कैसा । ५५३

जब वह (वर्षा) काल बीता तब वीरों में अग्रगण्य वीर श्रीराम लघुभ्राता लक्ष्मण से बोले। वली वीर! हमने जो अवधि निर्धारित की थी, वह बीत गयी। उसके बाद भी राजा सुग्रीव देर करता है। नहीं आया है। उसका वचनपालनक्रम भी कैसा है, देखो। ५५३

पॆऱल रुन्दिरुप् पॆऱ्ऱ्द विप्पॆरुम्, तिऱऩि ऩैन्दिलऩ् शीर्मैयिर् ऱीर्न्दऩऩ्
अऱम ऱन्दऩ नऩ्बु किडक्कनम्, मऱऩ ऱिन्दिलन् वाऴ्विन् मयङ्गिनाऩ् 554

पॆऱल् अऱु–दुष्प्राप्य; तिरु पॆऱ्ऱु–(राज्य-) धन पाकर; उतवि–सहायता का; पॆरुम् तिऱल्–बड़ा महत्त्व; नित्तैन्तिलऩ्–न सोचा (उसने); चीर्मैयिऩ्–सदाचरण से; तीर्न्ततऩ्–डिग गया; अऱम्–धर्म; मऱन्ततऩ्–भुला दिया; अऩ्पु किटक्क–स्नेह एक ओर रहे; नम् मऱऩ्–हमारी वीरता; अऱिन्तिलऩ्–नहीं जानी; वाऴ्विऩ्–राज्य-जीवन में; मयङ्कित्ताऩ्–भ्रमित रह गया । ५५४

हमारी सहायता से उसे दुष्प्राप्य राजधन मिला। वह इस सहायता का महत्त्व नही समझता। उचित आचरण से डिग गया। उसने कृतज्ञता, वचन-पालन आदि धर्म भी भुला दिया। स्नेह भी भूल गया, वह एक ओर रहे! हमारी वीरता भी भूलकर तो वह राज-जीवन में मोहित हो रहता है। ५५४

नन्रि कॉन्ररु नट्पिनै नारऱुत्, तॉन्रु मॅय्म्मै शिदैत्तुरै पॉय्त्तुळान्
कॉन्रु नीक्कुदल् कुऱ्ऱत्तु नीङ्गुमाल्, शॅन्रु मऱ्ऱवन् शिन्दैयैत् तेऱ्हुवाय् 555

नन्रि कॉन्रु–कृतघ्न बनकर; अरु नट्पिनै–अच्छी मित्रता का; नार् अऱुत्तु–बन्धन (सम्बन्ध) काटकर; ऒन्रुम्–सुबद्ध; मॅय्म्मै–सत्य को; पळुताक्कि–बिगाड़कर; उरै पॉय्त्तुळान्–जो वचन को भी झूठा बना चुका, उसे; कॉन्रु नीक्कुतल्–मारकर हटाना; कुऱ्ऱत्तु–अपराध से; नीङ्कुम्–हटा रहेगा; आल्–इसलिए; चॅन्रु–जाकर; अवन् चिन्तयै–उसका मन; तेऱ्कुवाय्–परख आओ। ५५५

जो आदमी कृतघ्न बनता है, उत्तम मित्रता का सम्बन्ध तोड़ता और सबके लिए पालनयोग्य सत्य को भी बिगाड़ता है और वचन-भंग करता है, उसको मार-मिटाना अपराध नहीं होगा। इसलिए तुम जाकर उसका अभिप्राय जान आओ। ५५५

वॅम्बु कण्डहर् विण्बुह वेरऱुत्, तिम्बर् नल्लऱञ् शॅय्य वॅडुत्तविल्
कॉम्बु मुण्डरुङ् कूऱ्ऱमु मुण्डॅङ्गळ्, अम्बु मुण्डॅन्रु शॉल्लुनम् माणैये 556

वॅम्पु कण्टकर्–नृशंस दुष्टों को; विण् पुक–स्वर्ग पहुँचाते हुए; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल बनाकर; इम्पर्–इहलोक में; नल् अऱम् चॅय्य–सद्धर्मस्थापन के लिए; ऍटुत्त–जो हाथ में लिया है, हमने; विल् कॉम्पुम्–धनुर्दण्ड भी; उण्टु–है; अरुम्–दुद्धर्ष; कूऱ्ऱमुम् उण्टु–यम भी है; ऍङ्कळ् अम्पुम् उण्टु–हमारे शर भी है; ऍन्रु–ऐसा; नम् आणै–हमारी शपथ; चॉल्लु–कहो। ५५६

हमारे पास यह धनुर्दण्ड है, जिसको हमने नृशंस दुष्कृतों को आकाश में भेजने और इस लोक में सद्धर्म-स्थापन करने के लिए रखा है। और यम भी है, मरा नहीं है। हमारे शर भी हैं। यह सब स्मरण कराके हमारी आज्ञा सुनाओ। ५५६

नञ्ज मन्न वरैनलिन् दालदु, वञ्ज मन्रु मनुवळक् कादलान्
अञ्जि लम्बदि लॉन्ऱऱि यादवन्, नॅञ्जि निन्रु निलाव निऱुत्तुवाय् 557

नञ्चम् अन्नवरै–विष-समान खलों को; नलिन्ताल्–दण्डित करे तो; अतु–वह; मनु वळक्कु–मनुनीति है; आतलाल्–इसलिए; वञ्चम् अन्रु–वंचना नहीं है; अञ्चिल् अम्पतिल्–पाँचवीं उमर में या पचासवीं उमर में; ऒन्रु अऱियातान्–जो (कर्तव्य) कुछ नहीं जानता; नॅञ्चिल्–उसके मन में; निन्रु निलाव–स्थिर रूप से रहे, ऐसा; निऱुत्तुवाय्–यह विचार रखो। ५५७

विष-सम खलो को दण्ड देना मनुधर्म-सम्मत कार्य है। वह कपट या वञ्चना नही होगा। सुग्रीव, लगता है कि पाँच (साल की आयु) में भी कुछ नहीं समझा (सीख चुका है); और पचास में भी कुछ नहीं जानता। उसके मन में बात बैठ जाय, ऐसा समझाओ। ५५७

ऊरु माळु मरशुनुञ् जुट्रमुम्, नीरु माळुदि रेयॅन्निल् नेर्न्दनाळ्
वारुम् वार लिरेयॅनिऩ् वानरप्, पेरु माळु मॅनुम्बोरुळ् पेशुवाय् 558

नीरुम्–तुम और; तुम् चुट्रमुम्–तुम्हारा परिवार; आळुम्–जहाँ शासन करता है; ऊरुम्–वह नगर और; अरचुम्–राज्य; आळुतिरे–(पर) शासन करना चाहो; ॲत्तिल्–तो; नेर्नत नाळ–कथित दिन में; वारुम्–आओ; वारलिरे ॲत्तिऩ्–नहीं आओगे तो; वानरम् पेरुम् माळुम्–वानर का नाम-निशान मिट जायगा; ॲंतुम्–यह; पॊरुळ्–विषय; पेचुवाय्–कहो। ५५८

उनसे कहो— तुम और तुम्हारा शासकदल यह चाहता है कि किष्किन्धा नगरवास और राज्य-शासन टिका रहे तो निर्णीत समय में, (सीता के अन्वेषणार्थ) आ जाओ हमारे पास। अगर नहीं आओगे, तो वानर का नाम-निशान नही रहेगा और सब वानर मिट जायँगे। ५५८

इन्नु नाडुडु मिङ्गिवर्क् कुम्वलि, तुन्नि ऩारै यॅनत्तुणिन् दारॅनिऩ्
उन्नै यॉप्प वुलहोरु मून्ऱिनुम्, निन्न लाऱपिऱ रिन्मै निहळ्त्तुवाय् 559

इङ्कु–यहाँ; इन्नुम्–और भी; इवर्क्कु–इन (श्रीराम और लक्ष्मण) से वढ़कर; वलि तुन्नित्तारै–वलवानों को; नाट्टुम्–ढूँढ़ लें (सहायक वना लें); ॲन–ऐसा; तुणिन्तार् ॲनिन्–निश्चय करते हैं, तो; उलकु ऒरु मून्ऱितुम्–तीनों लोकों में; उन्नै ऒप्प–तुम्हारे समान; निन् अलाल्–तुम्हारे सिवा; पिऱर् इन्मै–दूसरे का अभाव; निकळ्त्तुवाय्–कहोगे। ५५९

समझो कि वे हमसे वलवानों की सहायता ढूँढ़ लेने का विचार रखते हैं, तो कहना, लक्ष्मण, कि तुम्हारे समान वीर इन तीनों लोकों में तुम्हारे सिवा नही मिल सकता। ऐसे वीर का अभाव उनसे कहो। ५५९

नीदि यादि निहळ्त्तिनै निन्ऱडु, वेदि याद पॊळुदु वॅहुण्डिडल्
शादि यादवर् शॊर्ऱरत् तक्कनै, पोदि यादियॅन् ऱान्पुहळ्प् पूणिनान् 560

पुकळ् पूणितान्–प्रशंसा-आभरण; निन्ऱु–अवधान करके; नीति आति–नीति आदि; निकळ्त्तिनै–समझाकर; अतु–वह; वेतियात पॊळुतु–उनके मन में जव नहीं घुसा तो; नी–तुम; वॅकुण्टिटल्–कोप करना; चातियातु–न करके; अवर् चॊल्–उनका (उत्तर-) वचन; तर तक्कनै–(यहाँ मेरे पास) कहो; पोति आति–चलता वनो; ॲन्ऱान्–कहा। ५६०

श्रीराजाराम, जिनका आभरण प्रशंसा ही थी, ज़रा ठहरे। अवधान करके वोले कि लक्ष्मण नीति का उपदेश दो। अगर तुम्हारा वचन उनके मन में प्रवेश नही करता तो तुम क्रोध को मत अपनाओ। आकर मेरे पास उनका कथन कह दो। यही तुम्हारा कर्तव्य है। ५६०

आणै शूडि यडितॊळु दाण्डिरै, पाणि यादु पडर्वोन् पळिपडात्
तूणि तूक्कित् तॊडुशिलै तॊट्टरुञ्, जेणि नीङ्गिनन् शिन्दैयि नीङ्गलान् 561

आणै चूटि–(श्रीराम की आज्ञा को) शिरोधार्य करके; अटि तॊऴुतु–पैरों पर नमन करके; आण्टु–वहाँ; इरै–ज़रा भी; पाणियातु–विलम्ब किये विना; पटर्वोन्–जो चले; पऴि पटा–अनिंद्य (अक्षय); तूणि तूक्कि–तूणीर कन्धे पर लेकर; तॊटु चिलै–शरप्रेषक धनु; तॊट्टु–लेते हुए; चिन्तैयिन्–मन से; नीङ्कलान्–(श्रीराम को) न हटाकर (स्मरण करते हुए); अरुम् चॆणिल्–जहाँ पीछा करना कठिन है, उस लम्बे मार्ग में; नीङ्किनन्–चले। ५६१

लक्ष्मण ने भगवान श्रीराम की आज्ञा को शिरोधार्य करके उनके चरणों पर प्रणाम किया। फिर वहाँ से विना विलम्ब किये जाने लगे। वे अक्षय तूणीर अपने कन्धे पर उठाते हुए, और शरप्रेषक धनु को साथ लिये हुए श्रीराम के स्मरण के साथ लम्बे मार्ग में ऐसे चले कि उनका उस मार्ग में पीछा कोई नहीं कर सकता था। ५६१

मारु निन्ऱ मरनु मलैहळुम्, नीरु शॆन्रु नॆडुनॆरि नीङ्गिड
वेरु शॆन्ऱनन् मॆय्म्मैयि नोङ्गिय, आरु शॆन्ऱव नाणैयि नेहुवान् 562

मॆय्म्मैयिन्–सत्य के; ओङ्किय आरु–उत्तम मार्ग में; चॆन्ऱवन्–चलनेवाले श्रीराम की; आणैयिन् एकुवान्–आज्ञा पर चलनेवाले लक्ष्मण; मारु निन्ऱ–मार्ग में बाधा-रूप में रहे; मरनुम् मलैकळुम्–वृक्ष और पर्वत; नीरु चॆन्ऱु–चूर होकर; नीङ्किट–अलग हुए; वेरु–अन्य; नॆटु नॆरि–लम्बे मार्ग में; चॆन्ऱनन्–गये। ५६२

सत्य के उन्नत मार्ग पर चलनेवाले श्रीराम की आज्ञा लेकर जो लक्ष्मण चले, उनके मार्ग में रहनेवाले पर्वत और वृक्ष उनकी गमन-गति से चूर होकर अलग हो गये। वे (ऐसे बने) दूसरे मार्ग से चले। (शायद वे पूर्वपरिचित अभ्यस्त मार्ग से जाना सुरक्षित नहीं समझे)। ५६२

विण्णु ऱत्तॊडर् मेरुविन् शीर्वरै, मण्णु ऱप्पुक्क ऴुन्दिन मादिरम्
कण्णु ऱत्तॆरि वुऱ्ऱदु कट्चॆवि, उण्णि ऱक्कऴर् चेवडि यून्ऱलाल् 563

कट्चॆवि–नेत्र-कर्ण (आदिशेषनाग) के अवतार लक्ष्मण के; ऒळ् निऱम्–उज्ज्वल रंग की; कऴल्–पायल से अलंकृत; चेवटि–सुन्दर पैरों को; ऊन्ऱलाल्–रोपकर रखने से; विण् उऱ तॊटर्–आकाश स्पर्श करते हुए उन्नत; मेरुविन्–मेरु पर्वत की; चीर् वरै–ऊँचाई जितनी; कण् उऱ तॆरिवुऱ्ऱतु–दृष्टिगोचर; मातिरम्–दिशाएँ; मण् उऱ–भूमि में; पुक्कु–जाकर; अऴुन्तिन–धँस गयीं। ५६३

आदिशेष नाग के अवतार लक्ष्मण के उज्ज्वल पायलों से अलंकृत सुन्दर पैरों के लगने से, आकाशस्पर्शी उन्नत मेरुपर्वत जितना ऊँचा था, उतना गहरा, संदृश्य दिशाएँ सब पाताल में धँस गयीं। ५६३

वॆम्बु कानिडैप् पोहिन्ऱ वेहत्ताल्, उम्बर् तोयु मरामरत् तूडुशॆल्
अम्बु पोन्ऱन नन्ऱडल् वालितन्, तम्बि मेर्चॆलु मानवन् ऱम्बिये 564

अन्ऱु–तब; अटल् वालि तन्–बलवान वाली के; तम्पि मेल्–सुग्रीव के प्रति;

चॆलुम्–चलनेवाले; मातवऩ् तम्पि–मनुकुल में उत्पन्न श्रीराम के लघुभ्राता लक्ष्मण के; पोकिऩ्ऱ–गमन के; वेकत्ताल्–वेग से; वॆम्पु काऩिटै–गरम जंगल में; उम्पर् तोयुम्–गगन-चुम्बी; मरामरत्तु ऊटु चॆल्–सालवृक्षों के मध्य जानेवाले; अम्पु पोऩ्ऱऩऩ्–शर के समान लगे। ५६४

तब बलवान वाली के लघु भ्राता सुग्रीव के पास, जो मनुवंश के श्रीराम के छोटे भाई चले, वे अपने चलने की तीव्र गति से, गरम जंगल में सालवृक्षों के मध्य चलते हुए श्रीराम के शर के समान लगे। ५६४

माडु वॆऩ्ऱियॊर् मादिर याऩैयैच्, चेडु तुऩ्ऱु शॆंडिलॊरु तिक्किऩ्मा
नाडु हिऩ्ऱदु नण्णिय काल्पिडित्, तोडु हिऩ्ऱदु मॊत्तुळ ऩायिनाऩ् 565

चेटु तुऩ्ऱु–महिमायुक्त; ऒरु तिक्किऩ् मा–एक दिग्गज; माटु–पास रहनेवाले; ओर् वॆऩ्ऱि मातिरम् याऩैयै–अनुपम और एक दिग्गज को; नाटुकिऩ्ऱतु–ढूंढ़ता; नण्णिय चॆटिल्–स्वाभाविक मद-गन्ध का; काल् पिटित्तु–मार्ग लेकर; ओटुकिऩ्ऱतुम्–जो दौड़ता है, उसके भी; ऒत्तु उळऩ् आयिऩाऩ्–समान बने। ५६५

एक महान दिग्गज अपूर्व विजयी और एक दिग्गज को ढूंढ़ते हुए, उसके स्वाभाविक मद की गन्ध द्वारा टोह लगाकर भाग रहा हो, लक्ष्मण वैसे भी लगे। ५६५

उरुक्कॊ ळॊण्गिरि यॊऩ्ऱिनिऩ् ऱॊऩ्ऱिऩैप्
पॊरुक्क वॆय्दिनऩ् पॊऩ्ऩॊळिर् मेऩियाऩ्
अरुक्कऩ् मावुद यत्तिनिऩ् ऱत्तमाम्
परुप्प दत्तिनै यॆय्दिय पण्बिनाल् 566

अरुक्कऩ्–सूर्य; मा उतयत्तिऩ् निऩ्ऱु–बड़ी उदयगिरि से; अत्तम्–जहाँ अस्त होता है, उस; परुप्पतत्तिऩै–पर्वत को; ऎय्तिय–जाता जिस रीति से; पण्पिऩाल्–उस रीति से; पॊऩ् ऒळिर् मेऩियाऩ्–स्वर्णोज्ज्वल-शरीरी; उरु कॊळ्–बड़े आकार के; ऒळ् किरि–उज्ज्वल पर्वत; ऒऩ्ऱिऩ् निऩ्ऱु–एक से; ऒऩ्ऱिऩै–दूसरे एक पर्वत पर; पॊरुक्क–जल्दी; ऎय्तिऩऩ्–पहुँचे। ५६६

सूर्य बड़ी उदयगिरि से अस्तगिरि पर जिस रीति से जाता है, उसी रीति से स्वर्णोज्ज्वल-शरीरी लक्ष्मण बड़े आकार के और उन्नत और उज्ज्वल एक पर्वत (माल्यवान) से दूसरे पर्वत की तरफ़ (किष्किन्धा) की तरफ़ सवेग गये। ५६६

तऩ्ऩु णैत्तमै यऩ्ऱनि वाळियिऩ्, चॆऩ्ऱु शेणुयर् किट्किन्दै शेर्न्दवऩ्
कुऩ्ऱि निऩ्ऱॊरु कुऩ्ऱिनिऩ् कुप्पुरुम्, पॊऩ्ऱु ळङ्गुळैच् चीयमुम् बोऩ्ऱऩऩ् 567

तऩ् तुणै–अपने साथी; तमैयऩ्–और बड़े भ्राता श्रीराम के; तऩि वाळियिऩ्–अप्रमेय शर के समान; चॆऩ्ऱु–जाकर; चेण् उयर्–गगन छूते हुए; उयर्–उन्नत; किट्किन्तै चेर्न्तवऩ्–जो किष्किन्धा पहुँचे; कुऩ्ऱिऩ् निऩ्ऱु–एक गिरि से; ऒरु

कुन्रिनिल्–दूसरी एक गिरि पर; कुप्पुरुम्–झपटनेवाले; पॉन् तुळङ्कु–स्वर्णवर्ण; उळै–अयाल वाले; चीयमुम्–सिंह के; पोन्रनन्–समान भी शोभे। ५६७

अपने साथी और बड़े भ्राता श्रीराम के अनुपम शर के समान बहुत तीव्र गति से चलकर गगनोन्नत किष्किन्धा पर जो पहुँचे, वे लक्ष्मण एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर झपटनेवाले स्वर्णोज्ज्वल अयाल के पुरुषकेसरी के समान भी शोभे। ५६७

कण्ड वानरङ् गालनैक् कण्डॆन, मण्डि योडिन वालि महऱ्कैया
कॊण्ड शीऱ्ऱत् तिळैयोन् कुरुहिनान्, चण्ड वेहत्ति नानॆन्ऱु शाऱ्ऱलुम् 568

कण्ट वानरम्–इनको जिन वानरों ने देखा, वे वानर; कालनै कण्टु–यम को देख गये; ऍन–ऐसा; मण्टि ओटिन–मिलकर भागे; वालि मकऱ्कु–वाली-पुत्र से; ऐया–सुन्दरराज; इळैयोन्–लघु भाई लक्ष्मण; कॉण्ट चीऱ्ऱत्तु–अपनाये क्रोध से; चण्ट वेकत्तिनान्–प्रचण्ड वेगवान बनकर; कुरुकिनान्–आ गये; ऍन्ऱु–ऐसा; चाऱ्ऱलुम्–कहते ही। ५६८

वानरों ने श्रीलक्ष्मण को देखा। मानो यम का साक्षात्कार कर लिया हो, ऐसा वे भागे और अंगद के पास गये। उससे बोले कि सुन्दर युवराज! लक्ष्मण अत्यधिक क्रोधी बनकर प्रचण्ड वेग के साथ आ पहुँचे हैं। यह कहते ही— । ५६८

अन्न तोन्ऱलु माण्डॊऴि लान्वर, विन्न दॆन्ऱऱि वान्मरुङ् गॆय्दिलान्
मन्नन् मैन्दन् मनक्करुत् तुट्कॊळाप्, पॊन्निन् वार्हळऱ् ऱादैयिऱ् पोयिनान् 569

अन्न तोन्ऱलुम्–वह राजकुमार भी; आण् तॊऴिलान् वरवु–पुरुषोचित कार्य करनेवाले (वीर) के आने का कारण; इन्नतु–(क्या) यही है; ऍन्ऱु अऱिवान्–यह जानने के लिए; मरुङ्कु–उनके पास; ऍय्तिलान्–नहीं गया; मन्नन् मैन्तन्–चक्रवर्ती के पुत्र का; मनम् करुत्तु–मनोभाव; उट् कॊळा–ताड़कर; पॊन्निन्–स्वर्णनिर्मित; वार् कऴल्–बड़ी पायल के धारक; तातै–पिता के; इल् पोयिनान्–महल में गया। ५६९

वह राजकुमार अंगद भी लक्ष्मण के पास यह जानने के लिए नहीं गया कि पौरुषकर्म लक्ष्मण किस अभिप्राय से आये हैं? लेकिन वह ताड़ गया कि लक्ष्मण का मनोभाव क्या है। इसलिए वह दीर्घ स्वर्ण-पायलधारी अपने पिता (चाचा) के महल में गया। ५६९

नळनि यऱ्ऱिय नायहक् कोयिलुळ्, तळम लर्त्तहैप् पळ्ळियिऱ् ऱाळ्हुळल्
इळमु लैच्चिय रेन्दडि तैवर, विळैतु यिऱ्कु विरुन्दु विरुम्बुवान् 570

नळन् इयऱ्ऱिय–नल-निर्मित; नायकम्–राजसी; कोयिलुळ्–महल में; तळम् मलर् तकै–पल्लव और पुष्पों से भरी; पळ्ळियिल्–शय्या पर; ताळ् कुऴल्–प्रलम्ब केश; इळ मुलैच्चियर्–बालस्तनी स्त्रियों के; एन्तु अटि–स्तुत्य पैरों को;

तैवर–सहलाते; विळै–वर्तमान; तुयिऱ्कु–निद्रा का; विरुन्तु–अतिथि रहना; विरुम्पुवान्–चाहनेवाला और । ५७०

वानर नल के द्वारा निर्मित राजायोग्य महल के अन्दर पल्लव-पुष्प-शय्या पर सुग्रीव सो रहा था। प्रलम्ब केश और वालस्तनों से युक्त वानर-स्त्रियाँ उसके पूज्य पैरों को सहला रही थीं। वह ऐसा सो रहा था, मानो निद्रादेवी का मेहमान बना रहना चाहता हो। ५७०

तॅळ्ळि योर्हि लान्बॅरुञ् जॅल्वमाम्, कळ्ळि नालदि हङ्गळित् तान्कदिर्प्
पुळ्ळि मानॅडुम् पॊन्वरै पुक्कदोर्, वॅळ्ळि माल्वरै यॅन्न विळङ्गुवान् 571

तॅळ्ळि–खूब स्पष्ट; ओर्किलान्–विचार न करनेवाला; पॅरु चॅल्वम् आम्–विपुल धन रूपी; कळ्ळिनाल्–सुरा-पान के कारण; अतिकम् कळित्तान्–अधिक मत्त; कतिर् पुळ्ळि–किरणपुंज; मा नॅट्टु–अत्युन्नत; पॊन् वरै–स्वर्ण (मेरु) पर्वत में; पुक्कतु–प्रवेश करके रहनेवाले; ओर्–अनुपम; वॅळ्ळि माल् वरै ऎन्न–रजतपर्वत के समान; विळङ्कुवान्–शोभनेवाला। ५७१

(सुप्त सुग्रीव का वर्णन ५७०वे पद से लेकर सात पद्यों तक हुआ है।) सुग्रीव साफ़ सोचने में असमर्थ (था); अपार धन रूपी सुरा के पान से अतिमस्त; किरणपुञ्जों के साथ वहुत उन्नत हिमालय पर्वत के अन्दर घुसकर रहनेवाली एक श्वेत, उज्ज्वल और विपुल रजत-गिरि के समान शोभायमान (था)। ५७१

सिन्दु वारन् दिरुनरै तेक्कहिल्, चन्द मामयिऱ् चायलर् ताऴ्हुऴल्
कन्द मामलरक् काडुह डाविय, मन्द मारुदम् वन्दुऱ वैहुवान् 572

चिन्तुवारम्–'सिंदुवार' नामक तरु; तिरु नऱै–सुगन्धयुक्त लता; तेक्कु–सागौन के वृक्ष; अकिल्–अगरु; चन्तम्–सुन्दर; मा मयिल् चायलर्–श्रेष्ठ मोरों की-सी छटा वाली; ताऴ्कुऴल्–(स्त्रियों के) प्रलम्ब केश के; कन्तम्–वास से पूर्ण; मा मलर् काट्कळ्–विपुल पुष्प-वन; ताविय–(इन पर से) वहता आया; मन्त मारुतम्–मन्द मारुत; वन्तु उऱ–आ वहे, ऐसा; वैकुवान्–(सोता) जो रहा वह। ५७२

सिंधुवार-तरु, सुबासित लताएँ, सागौन, अगरु आदि वृक्ष और सुन्दर मयूरनिभ छटा वाली स्त्रियों के प्रलम्ब केश पर के पुष्पवन, इनके ऊपर से वहनेवाली हवा उसको सहला रही थी; वैसा सुप्त। ५७२

तित्ति यानिन्ऱ शॅङ्गनि वाय्च्चियर्, मुत्त वाणहै मुळ्ळॅयि ऱूऱुतेन्
पित्तु मालुम् पिऱवुम् पॅरुक्कलान्, मत्त वारण मॅन्न मयङ्गिनान् 573

तित्तिया निन्ऱ–मधुर रहनेवाले; चॅम् कनि–लाल (बिम्ब) फल के समान; वाय्च्चियर्–अधरों की स्वामिनियों के; मुत्तम्–मोती-सम; वाळ् नकै–उज्ज्वल हास के; मुळ् ऎयिऱु–तीक्ष्ण दाँतों से; ऊऱु–रिसनेवाले; तेन्–शहद-सम रसीला द्रव; पित्तुम् मालुम्–पागलपन, मोह और; पिऱवुम्–अन्य (कामादि) मनोविकारों को;

पॅरुक्कलान्–बढ़ाता रहा, इसलिए; मत्त वारणम् ऑन्न–मत्तगज के समान; मयङ्कितान्–मोहित जो पड़ा रहा। ५७३

मधुर व लाल बिंब-सम अधरों वालियों के मुक्तासदृश उज्ज्वल हास दिखानेवाले तीक्ष्ण दाँतों के मध्य से, रिसनेवाला रस (जो) पागलपन, मोह और कामादि अन्य विकृति उत्पन्न करनेवाला था। (उसका) पान करने के कारण मत्त गज के समान मोह-मुग्ध। ५७३

महुड कुण्डल मेमुदन् मण्डनत्, तुहुनॅ डुन्जुडर्क् कर्रै युलावलाल्
पहल वन्शुडर् पाय्पनि माल्वरै, तहम लर्न्दु पॉलिन्दु तयङ्गुवान् 574

मकुट कुण्टलमे मुतल्–किरीट, कुण्डलादि; मण्टत्तत्तु–अलंकारों से; उकुम्–निकलनेवाले; नॅटु चुटर् कर्रै–लम्बी किरणों का समूह; उलावलाल्–(उसके) शरीर पर लगता चला, इसलिए; पकलवन्–सूर्य की; चुटर्–किरणें; पाय्–जिस पर लगती हैं, उस; माल्—बड़े; पति वरै तक–शीतल उदयाचल के समान; मलर्न्तु–प्रफुल्ल; पॉलिन्तु–शोभायमान हो; तयङ्कुवान्—रहनेवाला। ५७४

उस पर किरीट, कुण्डल आदि अलंकार के आभरणों से कान्ति की दीर्घ किरणों का पुज लग रहा था। इसलिए सूर्य-रश्मिरंजित बड़े और शीतल उदयाचल के समान खिलता हुआ और उज्ज्वल रूप लिये हुए (सो रहा था)। ५७४

किडन्द नन्गिडन् दानैक् किडैत्तिरु
तडङ्गै कूप्पिनन् ञारैमिन् नाट्टन्द
मडङ्गल् वीरनन् मार्रम् विळम्बुवान्
तॉडङ्गि नानव नैत्तुयि नीक्कुवान् 575

किटन्तनन्–लेटा रहा; किटन्तानै–पड़े रहे उसके; तारै–तारा-संज्ञित; मिन्नाळ्–बिजली-समाना के; तन्त–जाये; मटङ्कल् वीरन्–पुरुषसिंह-सम वीर ने; किटैत्तु—पास जाकर; इरु तटकै–दोनों विशाल हाथ; कूप्पित्तन्–जोड़े; अवनै–उसको; तुयिल् नीक्कुवान्–निद्रा से जगाने के लिए; नल् मार्रम्–अच्छे वचन; विळम्पुवान्–कहने; तॉटङ्कितान्–लगा। ५७५

सुग्रीव ऐसा सो रहा था। विद्युत् के समान कान्तिमय शरीर वाली तारा का पुत्र पुरुष-केसरी अंगद उसके पास गया। वह अपने दोनों विशाल हाथों को जोड़कर सुग्रीव को निद्रा से जगाने के निमित्त अच्छे और हितकारी शब्द कहने लगा। ५७५

ऍन्दै केळव् विरामर् किळैयवन्, शिन्दै युण्णॅडुन् जीर्रन् दिरुमुहम्
तन्द ळिप्पत् तडुप्परुम् वेहत्तान्, वन्द नन्नुन् मनक्करुत् तियार्देन्रान् 576

ऍन्तै–मेरे पिता; केळ्–सुनो; अ–उन; इरामर्कु–श्रीराम के; इळैयवन्–कनिष्ठ भ्राता; चिन्तैयुळ् नॅटु चीर्रम्—मन का गम्भीर कोप; तिरुमुकम्–श्रीमुख

के; तन्नु अळिप्प–बाहर प्रकट होने देते हुए; तट्टप्पु अरु–दुर्वार; वेकत्ताऩ्–वेग के साथ; वन्तऩऩ्–आये हैं; उऩ् मतम् करुत्तु–आपके मन का भाव; यातु–क्या है; ॲॕऩ्ऱाऩ्–(अंगद ने) पूछा। ५७६

मेरे पिताजी ! सुनिये। उन श्रीराम के भाई लक्ष्मण आये है। उनके मुख पर उनका आन्तरिक अत्यन्त कोप झलक रहा है। अदम्य वेग के साथ आये है। उनके सम्बन्ध में आपका विचार क्या है ? । ५७६

इनैय माऱ्ऱ मिशैत्तन नॆऩ्ऩवदोर्, निनैवि लाॅऩ्डुञ् जॆल्व नॆरुक्कवुम्
ननैन ऱुन्दुळि नञ्जु मयक्कवुम्, तनैयु णर्न्दिलन् मॆल्लणैत् तङ्गिनान् 577

(सुग्रीव तो) नॆट्टु चॆल्वम्–विपुल धन-मद के; नॆरुक्कवुम्–मन को वश में रखने के कारण; नऱु ननै तुळि–सुवासित सुरा की बूंदों रूपी; नञ्चु मयक्कवुम्–विष चेतना-हरण कर चुका, इसलिए; तनै उणर्न्तिलऩ्–(अपनी सुधि ले नही सका) होश में नहीं आया; इनैय माऱ्ऱम्–ऐसे वचन; इचैत्ततऩ्–(अंगद ने) कहा; ॲॕऩ्पतु ओर् निनैवु–यह कोई ज्ञान; इलाऩ्–न रखनेवाला; मॆल् अणैयिल्–मृदु सेज पर; तङ्किऩाऩ्–पड़ा रहा। ५७७

विपुल धन का मद और सुरापान का मद —इन दोनों के उसके मन पर हावी आने के कारण सुग्रीव अपनी सुध-बुध नहीं रखता था। अंगद क्या कह रहा है, इसका भी उसको कुछ बोध नहीं हुआ। इसलिए वह कोमल शय्या पर निद्रामग्न रह गया। ५७७

आद लालव् वरशिळङ् गोळरि, यादु मुन्नि यियऱ्ऱुव दिन्मैयाल्
कोदिल् शिन्दै यनुमनैक् कूवुवान्, पोदल् मेयिनन् पोदह मेयनान् 578

आतलाल्–इसलिए; पोतकमे अताऩ्–बालगज-सम; अ इळ अरचु कोळरि–वह युवराजकेसरी (अंगद); मुन्नि–सोचकर; इयऱ्ऱुवतु–करणीय; यातुम् इऩ्मैयाल्–कुछ नहीं रहा, इसलिए; कोतु इल् चिन्तै–उलझन-रहित मन वाले; अनुमनै–हनुमान को; कूवुवाऩ्–बुलाने; पोतल् मेयिनाऩ्–जाने लगा। ५७८

सुग्रीव की यह स्थिति होने से कलभ-सम वह युवराज-केसरी सोचने लगा कि अब क्या किया जाय ? उसके सामने करने योग्य कोई काम नहीं सूझा। इसलिए वह निर्दोष-मन हनुमान को बुलाने चला। ५७८

मन्दि रत्तनि मारुदि तन्नोडुम्, वॆन्दि ऱऱ्पडै वीरर् विरायवर
अन्द रत्तिन्वन् दन्नदन् कोयिलै, इन्दि रऱ्कु महन्मह नॆय्दिनान् 579

इन्तिरऱ्कु मकऩ्–इन्द्रपुत्र का; मकऩ्–पुत्र; मन्तिरम्–मंत्रणा में; तनि–अद्वितीय; मारुति तन्नोटुम्–मारुति के साथ; वॆम् तिऱल्–अत्यधिक साहस के; पटै वीरर्–सेनावीरों के; विराय् वर–साथ लगे आते; अन्तरत्तिन् वन्तु–बाहर आया और; अन्नै तन् कोयिलै–माता के महल में; ॲॕय्तिनाऩ्–पहुँचा। ५७९

इन्द्रपौत्र और मंत्रणाचतुर वायुकुमार दोनों वहाँ से बाहर निकले।

कठोर बल के वीरों की सेना उनके पीछे-पीछे आयी। अंगद अपनी माता के महल मे गया। ५७९

ऍय्दि मेऱ्चॅयत् तक्कदॅत् ॲन्ऩ्ऱलुम्, शॅय्दिर् शॅय्दऱ् करुनॅडुन् दीयन
नॉय्दि लन्नवै नीक्कवु नोक्कलिर्, उय्दिर् पोलु मुदविहॉन् ऱीरॅना 580

ऍय्ति–पहुँचकर; मेल्–आगे; चॅय्यत् तक्कतु–करने योग्य; ऍन्–क्या है; ऍन्ऱलुम्–पूछने पर; चॅय्तऱ्कु अरु–अकरणीय; नॅट्टुम् तीयन–बहुत बुरे कामों को; नॉय्तिल् चॅय्तिर्–अनायास कर दिया (तुम लोगों ने); अन्नवै–उनको; नॉय्तिल् नीक्कवुम्–जल्दी दूर करने को; नोक्कलिर्–सोचा भी नहीं; उतवि कॉन्ऱीर्–कृतघ्न बने; उय्तिर् पोलुम्–बचोगे क्या; ऍन्ना–कहकर। ५८०

अंगद ने माता से पूछा कि अब क्या करना है? यह पूछते ही तारा डाँट बताने लगी। तारा ने कहा—अकरणीय और बुरे काम को अनायास तुम लोगों ने कर दिया। करके भी उसका निवारण करने का उपाय नहीं सोचा। कृतघ्न हो तुम! बच सकोगे क्या? । ५८०

मीट्टु मॉन्ऱु विळम्बुहिन्ऱाळ्पडै
कूट्टु मॅन्ऱुमैक् कॉऱ्ऱवन् कूऱिय
नाट्टि ऱम्बिन्ऩुन् नाट्टिऱम् बुम्मॅनक्
केट्टि लीरिनिक् काण्डिर् किडैत्तिराल् 581

मीट्टुम्–और; ऑन्ऱु–एक बात; विळम्पुकिन्ऱाळ्–तारा कहती है; उमै–तुम लोगों से; पटै कूट्टुम्–सेना एकत्र करो; ऍन्ऱु–ऐसा; कॉऱ्ऱवन्–श्रीविजयराघव के; कूऱिय नाळ्–कथित दिन के; तिऱम्पिन्–बीत जाने पर; उम् नाळ्–तुम्हारे (जीवन के) दिन; तिऱम्पुम्–पूरे हो जायँगे; ऍन्न–कहने पर; केट्टिलीर्–नहीं सुना (तुम लोगों ने); इनि काण्टिर्–अब देखोगे; किटैत्तिर्–(अब) फँस गये। ५८१

तारा आगे बोली। मैंने तुमको समझाया था कि विजयी श्रीराम ने सेना-संग्रह की अवधि निर्धारित की है। और अगर वह अवधि बीत जायगी तो तुम्हारे जीवन की अवधि भी खतम हो जायगी। पर तुमने नहीं सुना। अब उसका फल भुगतोगे। अब खूब फँसे! । ५८१

वालि यारुयिर् कालनुम् वाङ्गविऱ्, कोलि वालिय शॅल्वङ् गॊडुत्तवर्
पोलु मालुम्बु ऱत्तिरुप् पारिदु, शालु मालुङ्ग डन्मैयि ऩोर्क्कॅलाम् 582

वालि आरुयिर्–वाली के प्यारे प्राणों को; कालनुम् वाङ्क–कालदेव ले ले, ऐसा; विल् कोलि–धनु झुकाकर; वालिय–उज्ज्वल; चॅल्वम्–राजधन; कॊटुत्तवर् पोलुम्–जिन्होंने दिया वे क्या; उम् पुऱत्तु–आपसे उपेक्षित; इरुप्पार्–रहेंगे; इतु–यह उपेक्षा; उङ्कळ् पोलुम्–तुम्हारे समान; तन्मैयित्तोर्क्कु–स्वभाव वालों को ही; ऍलाम्–सब तरह से; चालुम्–योग्य होगी। ५८२

श्रीराम ने अपने धनु के बल से वाली के प्यारे प्राणों को कालदेव के हाथ में सौंप दिया। क्या वैसे राम तुमसे उपेक्षणीय हैं? यह उपेक्षा शायद तुम जैसे कृतघ्नों को सोह सकती है! । ५८२

देवि नीङ्गवत् तेवरिऱ् चीरियऩ्, आवि नीङ्गिनऩ् पोलयर् वाऩ्दु
पावि यादु परुहुदिर् पोलुनुम्, कावि नाण्मलर्क् कण्णियर् कादऩीर् 583

तेवि नीङ्क–देवी के अलग होने पर; अ तेवरिल् चीरियऩ्–देवों में श्रेष्ठ श्रीराम; आवि नीङ्किऩऩ् पोल्–प्राणविहीन के समान; अयर्वाऩ्–शिथिल होते हैं; अतु पावियातु–उसकी चिन्ता न करके; नुम्–(तुम्हारी) अपनी; नाळ् कावि मलर्–सद्यविकसित नीलोत्पल फूल के समान; कण्णियर्–आंखो वाली (पत्नियों) के; कातल् नीर्–प्रेम-रस; परुकुतिर् पोलुम्–पान करते रहोगे क्या। ५८३

देवी के वियोग में देवों में श्रेष्ठ श्रीराम निर्जीव होकर शिथिल पड़े हुए हैं। तुम उसकी चिन्ता नहीं करके सद्य-विकसित नीलोत्पल के सदृश आँखों वाली अपनी पत्नियों का प्रेम-रस पान कर रहे हो न ? । ५८३

तिऱम्बि ऩिर्मॅय् शिदैत्ती रुदवियै, निऱम्बॉ लीइरुङ्ग डीविऩै नेर्न्ददाल्
मऱञ्जॅय् वातुडिऩ् माळुदिर् मऱ्ऱिनि, पुऱञ्जॅय् दावदॅ नॅन्गिऩ्ऱ पोदिन्वाय् 584

मॅय् तिऱम्पिऩीर्–सत्य लाँघ चुके; उतवियै चितैत्तीर्–कृतज्ञता को मार चुके हो; निऱम् पॉलीइऱ्–रंग ही (गौरव ही) नष्ट कर चुके हो; उङ्कळ् तीविऩै–तुम्हारा दुर्भाग्य; नेर्न्ततु–आ गया; मऱम् चॅय्वाऩ् उऱिऩ्–वीरता दिखाने (लड़ने) चलोगे तो; माळुतिर्–मर जाओगे; इऩि–अब; पुऱम् चॅय्तु–उपेक्षा करने से; आवतु–होगा; ऎऩ्–क्या है; ऎऩ्किऩ्ऱ पोतिऩ् वाय्–जब यह (तारा) बोल रही थी, तब। ५८४

तुम लोगों ने सत्य छोड़ दिया। कृतघ्न बन गये। इस बुरे गुण के कारण तुम्हारी छवि ही मिट गयी। बुरे कर्म अपने फल देने आ गये। अपनी वीरता के बल पर लड़ने जाओगे तो मर जाओगे। अब मुकरने से क्या होगा? तारा यह कह ही रही थी कि— । ५८४

कोळु ऱुत्तऱ् करिय कुरक्किऩम्, नीळॆ ळुत्तॊ डरुन्नॆडु वायिलैत्
ताळु ऱुत्तित् तडवरै तन्दऩ, मूळु ऱुत्ति यडुक्किन मॊय्म्बिऩाल् 585

कोळ् उऱुत्तऱ्कु अरिय–नाशदुस्साध्य; कुरक्कु इऩम्–वानरगणों ने; नीळ् ऎळु–लम्बी लोहे की सिटकिनियों से; तॊटरुम्–बन्द होने योग्य; नॆटु वायिलै–विशाल द्वार को (कपाट को); ताळ् उऱुत्ति–सिटकिनी लगाकर; मॊय्म्पिऩाल्–शरीर-बल के जोर से; तटवरै–चट्टानो को; तन्तऩ–ले आकर; मूळुऱुत्ति–जोड़कर; अटुक्किऩ–चुन रखा। ५८५

वहाँ वानरगणों ने, जिनको मारना आसान नहीं था, लोहे की लम्बी सिटकिनियों से बड़े द्वार-कपाट को सुरक्षित किया और उसके पीछे बड़ी-बड़ी चट्टानें, अपने बल से ले आकर, जोड़ रखी। ५८५

शिक्कु ऱक्कडै शेमित्त शॆय्हैय, तॊक्कु ऱुत्त मरत्त तुवन्ऱिन
पुक्कु ऱुक्किप् पुडैत्तु मॆन्नप्पुऱम्, मिक्कि ऱुत्तन वीरनु मेयिनान् 586

कटै चिक्कुऱ–द्वार को खूब; चेमित्त–सुरक्षित करनेवाले; चॆय्कॆय–कृत्यकारी वानर; पुक्कु उऱुक्कि–(अगर वह अन्दर किसी विध आ जायँ तो) सामने जाकर डाँटेंगे; पुटैत्तुम्–और पीटेंगे; ऍन्न–सोचकर; तोक्कुऱुत्त–पंक्तियों में रखे हुए; मरत्त–तरुओं के साथ; तुवन्ऱिन–मिल आये; पुऱम्–द्वार के पास; मिक्कु इऱुत्तन–खचाखच सटे रहे; वीरनुम् मेयितान्–वीर लक्ष्मण भी आ गये। ५८६

इस तरह किले के द्वार को सुरक्षित रूप से बन्द करने के बाद वानर यह सोचकर कि अगर वह किसी तरह अन्दर आयगा तो डाँट-डपट करके पीटेंगे, बड़े-बड़े वृक्षों को लिये हुए दल बाँधे खड़े थे। तब तक वीर लक्ष्मण भी आ गये। ५८६

काक्क वोकरुत् तॆन्ऱु कदत्तिनाल्, पूक्कु मूरऱ् पुरवलर् पुङ्गवन्
ताक्क णङ्गुऱै तामरैत् ताळिनाल्, नूक्कि नानक् कदविनै नॊय्दिनिन् 587

कतत्तिनाल्–क्रोध की; मूरल् पूक्कुम्–हँसी प्रकट करते हुए; पुरवलर् पुङ्कवन्–राजश्रेष्ठ ने; काक्कवो करुत्तु–बचने का अभिप्राय है क्या; ऍन्ऱु–सोचकर; ताक्कणङ्कु उऱै–(विजय-) लक्ष्मी के आश्रय; तामरै ताळिनाल्–कमलों के जैसे चरणों से; अ कतविनै–उस कपाट को; नॊय्तिनिन्–लघु-प्रहार करके; नूक्कितान्–हटाया। ५८७

बन्द द्वार को देखकर लक्ष्मण ने एक क्रोध की हँसी हँसी। राज-पुंगव ने सोचा, यह स्वरक्षा का उपाय है क्या? अपने श्रीयुक्त कमल-चरण से उस किवाड़ पर लघु प्रहार किया। ५८७

कावन् मामदि लुडुगद वुड्गडि, मेवुम् वायि लडुक्किय वॆऱ्पॊडुम्
तेवु शेवडि तीण्डलुन् दीण्डरुम्, पाव मामॆन्नप् पऱ्ऱळिन् दिऱ्ऱवाल् 588

तेवु–दिव्य; चे अटि–सुन्दर चरणों के; तीण्टलुम्–स्पर्श करते ही; कावल् मा मतिलुम्–नगर-रक्षक प्राचीर; कतवुम्–और कपाट; कटि मेवुम्–सुरक्षा के लिए; वायिल् अटुक्किय–द्वार पर जोड़कर रखे हुए; वॆऱ्पॊटुम्–पत्थरों के साथ; तीण्टु अरुम्–अस्पृश्य; पावम् आम् ऍन्न–पाप के समान; पऱ्ऱु अऴिन्तु–लगाव छोड़कर; इऱ्ऱ–मिट गये। ५८८

दिव्य और सुन्दर (लक्ष्मण के) चरणों के स्पर्श मात्र से नगर-रक्षक प्राचीर और किवाड़, किवाड़ के पीछे चुनी हुई चट्टानों के साथ पाप के समान जिनका स्पर्श भी भयंकर है, आधार खोकर गिरकर मिट गये। ५८८

नॊय्दि नोन्कद वुम्मुदु वायिलुम्, शॆय्द हनुमदि लुन्दिशै योशनै
ऐयि रण्डि नळवडि यऱ्ऱह, वॆय्दि निन्ऱ कुरङ्गु वॆरुक्कोळ 589

नोन् कतवुम्–कठोर किवाड़; मुतु वायिलुम्–और प्राचीन द्वार; कल् चॅयत मतिलुम्–पत्थरों का प्राचीर; नोय्तिल्–आसानी से; अटि अऱ्ऱु–आधार खोकर; तिचै–दिशाओं में; ऐ इरण्टु–दस (पाँच के दो); योचनैयिन्–योजनों की दूरी तक; उक–गिरे, तो; कुरङ्कुम्–वानर भी; वॅरु कोळा–भय खाकर; वॅयुतिन् निन्ऱ–तप्तमन रहे। ५८९

कपाट सशक्त था। पत्थर का बना नगर-द्वार भी प्राचीन था। पर वे सब लक्ष्मण के चरण-प्रहार से आधार खोकर गिर गये और दिशाओं में दस योजन तक छितर गये। वानर भय खाकर तप्त-मन खड़े रहे। ५८९

परिय मामदि लुम्बडर् वायिलुम्, शरिय वीळ्न्दु तहर्न्द मुडित्तलै
नॅरिय नॅञ्जु पिळक्क नॅडुन्दिशै, इरिय लुऱ्ऱन विऱ्ऱिल विन्नुयिर् 590

परिय मा मतिलुम्–चौड़े बड़े प्राचीर भी; पटर् वायिलुम्–विशाल द्वार भी; चरिय–ढहकर; वीळ्न्तु–गिरे; तकर्न्त–और मिटे; मुटि तलै–सिर का भाग; नॅरिय–टूटा; नॅञ्चु पिळप्प–विदीर्ण-मन हो; इन् उयिर्–प्यारे प्राणों से; इऱ्ऱिल–हीन नहीं हुए (वानर); नॅटु तिचै–दूर दिशाओं में; इरियल् उऱ्ऱन–छितरकर भाग गये। ५९०

चौड़ा और ऊँचा प्राचीर और विशाल द्वार ढहकर गिरे और मिटे। प्राचीरों के शिरोभागों पर दरार पड़ गयी। इसको देखकर वानरों का मन भी विदीर्ण हो गया। वे अपने प्यारे और बचे हुए प्राणों को लेकर सभी दिशाओं में अलग-अलग भाग गये। ५९०

पहर वेयु मरिदु परिन्दॅळु, पुहरिल् वानर मञ्जिय पूशलान्
शिहर माल्वरै शॅन्ऱु तिरिन्दुळि, महर वेलैयै यॊत्तदु मानहर् 591

परिन्तु–उद्विग्न होकर; ॲळु–जो भागे; पुकर् इल्–निरपराध; वातरम्–वानरों ने; अञ्चिय पूचलान्–डर से जो शोर मचाया, उससे; मानकर्–वह बड़ा नगर; चिकरम् माल् वरै–शिखर-सहित बड़ा (मन्दर) पर्वत; चॅन्ऱु तिरिन्तुळि–जब (सागर में) प्रविष्ट हो घूमा; मकरम् वेलैयै–तब के मकरालय के; ऑत्ततु–समान था; पकरवेयुम् अरितु–कहना दुस्साध्य है। ५९१

वानरसमूह बहुत दुःखी होकर अपना स्थान छोड़कर भागे। बेचारे वे वानर निरपराध थे। इनके भय के कारण नगर में बड़ा शोर मच गया। तब वह नगर उस मकरालय के समान लगा, जिसमें शिखरसहित बड़ा मन्दरपर्वत घुसकर घूम रहा था। ५९१

वान रङ्गळ् वॅरुवि मलैयॊरीइक्, कानॊ रुङ्गु पडरवक् कार्वरै
मीनॆ रुङ्गिय वानह मीन्ॲलाम्, पोन पिन्बॊलि वऱ्ऱदु पोन्ऱदे 592

वानरङ्कळ्–वानर; वॅरुवि–भयभीत होकर; मलै ऑरीइ–(किष्किन्धा)

पर्वत त्यागकर; ऑरुङ्कु–एक साथ; कान् पटर–(पास के) जंगल में चले गये, इसलिए; अ कार् वरै–वह मेघाच्छादित पर्वत; मीन् नॅरुङ्किय–उडुगणों से भरा; वानकम्–आकाश; मीन् ॲलाम् पोन पिन्–नक्षत्रों के जाने के बाद; पोलिवु अऱ्ऱतु–शोभा खो जाता; पोन्ऱतु–जैसे, वैसा लगा। ५९२

वानर भय से उस किष्किन्धा पर्वत को छोड़कर पास के जंगलों में, झुण्डों में भाग गये। इसलिए मेघाच्छादित वह किष्किन्धा गिरि उस नक्षत्रवान आकाश के समान दिखायी दी, जिसके सभी नक्षत्र लुप्त हो गये हों। ५९२

अन्न कालैयि नाण्डहै याळियान्, पॊन्नि नन्नहर् वीदियिऱ् पुक्कनन्
शॊन्न तारैयैच् चुऱ्ऱिनर् निन्ऱवर्, ॲन्न शॆय्हुव वॆय्दिन वॆन्ऱनर् 593

अन्न कालैयिन्–उस समय; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के; आळियान्–(आज्ञा-) चक्र लक्ष्मण; पॊन्नितिन्–सुन्दर; नल् नकर्–श्रेष्ठ नगर की; वीतियिल्–वीथी में; पुक्कनन्–प्रवेश करके चले; चॊन्न तारैयै–जिसने सचेतन-वचन कहे, उस तारा को; चुऱ्ऱिनर्–घेरे; निन्ऱवर्–जो खड़े थे, वे (अंगद आदि); ॲय्तिनन्–आ ही गये; ॲन्न चॆय्कुवतु–क्या करें; ॲन्ऱनर्–(ऐसा घबड़ाकर) बोले। ५९३

तब पुरुषश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र के आज्ञाचक्र के समान लक्ष्मण उस सुन्दर और अच्छे नगर की वीथी में प्रविष्ट हुए। पहले जिस तारा ने सचेतन के वचन कहे थे, उसको घेरे हुए अंगद आदि खड़े थे। जब उनको मालूम हुआ कि लक्ष्मण नगर में आ गये तो वे घबड़ाये और पूछने लगे कि आ ही गये, अब क्या करें ? । ५९३

नीरॆ लामय नीङ्गुमि नेर्न्दियान्, वीर नुळ्ळम् विनवुव लॆन्ऱलुम्
पेर निन्ऱनर् यावरुम् पेर्हलात्, तारै शॆन्ऱन डार्हुळ लारॊडुम् 594

नीर् ॲलाम्–तुम सभी; अयल् नीङ्कुमिन्–अलग हट जाओ; यान् नेर्न्तु–मैं मिलकर; वीरन् उळ्ळम्–वीर का अभिप्राय; विनवुवल्–पूछ लूंगी; ॲन्ऱलुम्–(तारा के) यह कहने पर; यावरुम्–सभी; पेर–हटकर; निन्ऱनर्–खड़े हुए; तारै–तारा; पेर्कला–पीछे नहीं (आगे); तार्कुळलारॊडुम्–पुष्पालंकृत केश वालियों के साथ; चॆन्ऱनळ्–गयी। ५९४

तारा ने उनसे कहा, तुम सब यहाँ से हट जाओ। मैं उनसे मिलूँगी और जान लूँगी कि वीर उनका अभिप्राय क्या है ? तारा के ऐसा कहने पर सभी वानर हटकर खड़े हो गये। तारा पीछे नहीं गयी, लेकिन पुष्पालंकृत केश वाली अपनी सखियों के साथ आगे बढ़ी। ५९४

उरैशॆय् वानर वीर रुवन्दुरै, अरैशर् वीदि कडन्दहन् कोयिलैप्
पुरशै यानैयन् नान्पुह लोडुमव्, विरैशॆय् वार्हुळ्ऱ् ऱारै विलक्किनाळ् 595

पुरचै–गले की रस्सी (कलापक) सहित; यातै अऩ्ऩाऩ्–गजसदृश लक्ष्मण; उरै चॆय्–प्रकीर्तित; वानर वीरर्–वानर वीर; उवन्तु उऱै–जहाँ खुशी से रहे; अरैचर् वीति–उस राजवीथी को; कटन्तु–पार करके; अकल् कोयिलै–(सुग्रीव के) विशाल महल में; पुकलोटुम्–प्रवेश करते ही; अ–उस; विरै चॆय्–सुवासपूर्ण; वार् कुऴल्–लम्बे केश वाली; तारै–तारा ने; विल्क्किऩाळ्–रोका। ५९५

कलापक (गले की रस्सी) सहित गजराज-सम लक्ष्मण प्रकीर्तित वानर वीरों के प्यारे वासस्थान, राजवीथी को पारकर सुग्रीव के विशाल महल में पहुँचे। तब प्राकृतिक-सुबास-भरे केश वाली तारा ने उसके मार्ग को रोका। ५९५

विलङ्गि मॆल्लियल् वॆण्णहै वॆळ्वळै
इलङ्गु नुण्णिडै येन्दिळ मॆऩ्मुलैक्
कुलङ्गॊ डोहै महळिर् कुऴात्तिनाल्
वलङ्गॊळ् वीरन् वरुम्वऴि माऱ्ऱिऩाळ् 596

विलङ्कि–आड़े आकर; मॆल् इयल्–कोमल प्रकृति; वॆळ् नकै–श्वेत दाँत; वॆळ् वळै–श्वेत कंकण; इलङ्कुम्–(विद्युत् के समान) शोभायमान; नुण् इटै–सूक्ष्म कमर; एन्तु–उठे हुए; इळ–बाल; मॆल् मुलै–कोमल स्तन; कुलम् कॊळ्–श्रेष्ठ; तोकै–मयूर की-सी आभा; मकळिर्–(इनसे युक्त) स्त्रियों के; कुऴात्तिऩाल्–झुण्ड की सहायता से; वलम् कॊळ् वीरऩ्–दाहिनी ओर से जो आ रहे थे, उन वीर श्रीलक्ष्मण का; वरुम् वऴि–आने का मार्ग; माऱ्ऱिऩाळ्–रोका। ५९६

सुकुमारी, श्वेत दाँत, श्वेत कंकण, विद्युत-सम पतली कमर, उन्नत बाल-स्तन —इनके साथ शोभायमान मयूरनिभ स्त्रियों के समूहों का उपयोग करके तारा ने दाहिनी ओर से आनेवाले वीर लक्ष्मण का मार्ग रोका। ५९६

विल्लुम् वाळुम् मणियॊडु मिन्निड, मॆल्ल रिक्कुरन् मेहलै यार्त्तिडप्
पल्व हैप्पुरु वक्कॊडि पम्बिड, वल्लि यायम् वलत्तिनिल् वन्ददे 597

विल्लुम्–धनु-सम (वक्र); वाळुम्–तलवार-सम प्रकाशपुंज; अणियॊटु–आभरणों के साथ मिलकर; मिऩ्ऩिट–चमके; मॆल् अरि कुरल्–नूपुर के अन्दर के छोटे कंकड़ों का स्वर; मेकलै–मेखला की ध्वनि; आर्त्तिट–(मारू) नारे से लगे; पल् वकै पुरुवम्–विविध भौंहें रूपी; कॊटि–(युद्ध के) झंडे; पम्पिट–घने रूप से भरे रहे; वल्लि आयम्–स्त्रियों की सेना; वलत्तिऩिल्–दल-बल के साथ; वन्ततु–आयी। ५९७

वानर-स्त्रियों का समूह क्या था, वह एक अलंघ्य सेना थी। धनु-सम वक्र और तलवार के समान लम्बी कान्तियाँ आभरणों के साथ मिलकर विद्युत के समान चमक रही थीं। छोटे-छोटे कंकड़ों से भरे नूपुरों और मेखलाओं से उठनेवाला नाद भेरीनाद-सा था। विविध भौहें युद्ध के

झण्डों के समान दिखायी दीं। इस साज के साथ स्त्री-समूह की सेना ने दल-बल सहित आकर लक्ष्मण को घेर लिया। ५९७

आर्क्कुन् पुरङ्गळ् बेरि यल्हनर् रडन्दे रॉत्त
पोर्क्कण्वॅम् बुरुवम् विल्ला मॅल्लियर् वळैन्द पोदु
पेर्क्करुञ् जीर्रम् पेर मुहम्बॅयर्न् दॉदुङ्गिर् रल्लाल्
पार्क्कवु मञ्जि नान्प् परुवरै यनैय तोळान् 598

आर्क्कुम्–स्वरित; नूपुरङ्कळ्–नूपुर; पेरि–भेरियाँ बने; अॉत्त अलकुल्–सुडौल कटि-प्रदेश; तट तेर्–विशाल रथ; वॅम् पुरुवम्–प्यारी भौंहें; पोर् कण् विल्ला–युद्ध में धनुष (यह लेकर); मॅल्लियर्–सुकुमारियों ने; वळैन्त पोतु–जब घेर लिया तब; अ–वे; परु वरै–बड़े पर्वत; अनैय–समान; तोळान्–लक्ष्मण; पेर्क्क अरु–दुर्वार; चीर्रम्–कोप; पेर–छोड़कर; मुकम् पॅयर्न्तु–मुख मोड़कर; ऑतुङ्किर्ङ–दूसरी तरफ़ करने; अल्लाल्–के सिवा; पार्क्कवुम्–देखने से भी; अञ्चितान्–डरे। ५९८

स्वरित नूपुर भेरियाँ बने। सुडौल कटि-प्रदेश बड़े-बड़े रथ बने। प्यारी भौंहें युद्धकारी धनु बनीं। इनके साथ जब स्त्री-सेना ने लक्ष्मण को घेर लिया तब, विशाल पर्वत के समान उन्नत कन्धों वाले लक्ष्मण का दुर्वार क्रोध दूर हो गया। उनका मुख दूसरी ओर मुड़ गया। वे उनको देखने से भी डरे। ५९८

तामरै वदनञ् जाय्त्तुत् तनुनॅडुन् दरैयि नून्रि
मामियर् कुळुविन् वन्दा नामॅन मैन्दन् निर्पप्
पूमियि लणङ्ग नार्दम् पॉदुविडैप् पुहुन्दु पॉर्रोळ्
तूमन नॅडुङ्गट् टारै नडुङ्गुवा ळिनैय शॉन्नाळ् 599

मैन्तन्–वीर कुमार; तामरै वतनम् चाय्त्तु–कमल-सम वदन झुकाकर; नॅटु तनु–लम्बे धनु को; तरैयिल् ऊन्रि–भूमि पर टेककर; मामियर् कुळुविन्–सासों के समुदाय में; वन्तान् आम् ॲन–फँस गये जैसे; निर्प–संकुचित खड़े रहे; पॉन् तोळ्–सुन्दर भुजाओं; तू मनम्–पवित्र मन; नॅटुम्कण्–आयत आँखों वाली; तारै–तारा; पूमियिल् अणङ्कु अनार् तम्–भूलोक में सुरांगनाओं के समान रहनेवाली वानर-स्त्रियों के; पॉतुविटै–दल में; पुकुन्तु–घुसकर; नटुङ्कुवाळ्–कंपन के साथ; इनैय–यों; चॊन्नाळ्–बोली। ५९९

वीर राजकुमार ने अपना सिर झुका लिया। वे भूमि पर अपने लम्बे धनुष को टेककर ऐसे खड़े रहे, मानो कोई जवान पुरुष सासों के मध्य फँस गया हो। तब सुन्दर भुजा वाली, पवित्र मन वाली और आयताक्षी तारा भूमि में रहनेवाली देवांगनाओं के समान उन रमणियों के दल को चीरकर सामने आयी और काँपती वाणी में बोलने लगी। ५९९

अन्दमिल् काल नोट्रॅ वाट्रलुण् डायि नन्ऱि
इन्दिरन् मुदलि नोर्क्कु मॅय्दला मियल्बिऱ् ऱन्ऱे
मैन्दनिन् पादङ् गॉण्डॅम् मनैवरप् पॅट्रु वाऴ्न्देम्
उय्न्दनम् विनैयुन् दीर्न्दे मुऱुदिवे ऱिदन्मे लुण्डो 600

मैन्त–वीर कुमार; अन्तम् इल्–(आपका आगमन) अनन्त; कालम्–काल; नोट्ऱ–हमने तपस्या की, उसका; आट्रल्–बल; उण्टायिन् अन्ऱि–नहीं होगा तो; इन्तिरन् मुतलित्तोर्क्कुम्–इन्द्रादि देवों को भी; ऍय्तलाम्–प्राप्य; इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱे–गुण का नहीं है न; निन् पातम् कॉण्टु–अपने श्रीचरण से (चलकर); ऍम् मनै–हमारे घर में; वर पॅट्रु–आ पाये; वाऴ्न्तेम्–हम सफल-जन्म हो गये; विनैयुम् तीर्न्तेम्–कर्म-मुक्त हुए; उय्न्ततम्–हमारा उद्धार हो गया; इतन् मेल्–इससे बढ़कर; उऱुति–हित; वेऱु उण्टो–और कोई है क्या। ६००

हे वीरकुमार ! आप पैदल चलके इतनी दूर आये हैं। यह आपका आगमन, अनन्त काल तक तपस्या करो, तभी हो सकता है। नही तो इन्द्र आदि के लिए भी यह भाग्य प्राप्य रीति का नहीं है। आपके अपने पैरों से चलकर हमारे घर में आगमन से हम उत्कृष्ट जीवन पा गये। हमारा बुरा कर्म मिट गया। हमारा उद्धार हो गया। इससे बढ़कर हितकारी विषय और कुछ है क्या ? —नहीं है। ६००

वॅय्दिनी वरुद नोक्कि वॅरुवुनुन् जेनै वीर
शॅय्दिदा नुणर्हि लादु तिरुवुळन् दॅरित्ति यॅन्ना
ऐयनी यरुळिन् वेन्द नडियिणै पिरिहि लादाय्
ऍय्दिय दॅन्नै यॅन्ऱा ळिशैयिनु मिनिय शॉल्लाळ् 601

इचैयितुम्–संगीत से भी; इनिय–मधुर; चॉल्लाळ्–भाषिणी; वीर–वीर; नी–आपका; वॅय्तिन् वरुतल् नोक्कि–वेग के साथ आना देखकर; चॅय्ति तान्–समाचार; उणर्किलातु–न जान सककर; नुम् चेनै–आपकी सेना; वॅरुवुम्–डरती है; तिरु उळम्–अपने मन की बात; तॅरित्ति–बताइए; ऍन्ना–कहकर (आगे); ऐय–सुन्दर वीर; अरुळिन् वेन्तन्–करुणामय राजाराम के; अटि इणै–चरणद्वय; पिरिकलाताय् नी–छोड़ जो न सकते हैं, वैसे आपका; ऍय्तियतु–आगमन (का हेतु); ऍन्नै–क्या है; ऍन्ऱाळ्–बोली। ६०१

तारा की वाणी संगीत से भी मधुर थी। उसने लक्ष्मण से कहा कि हे वीर ! तुम्हारा सवेग आना देखकर समाचार न जानने के कारण आपकी वानर-सेना डरेगी। कृपया आप अपना मनोभाव कहें। उसने आगे जारी किया— सुन्दर कुमार ! आप तो दया के अधिपति श्रीराम के श्रीचरणों से कभी अलग होनेवाले नहीं हैं। ऐसे आप इधर पधारे हैं —उसका क्या हेतु है ? । ६०१

आर्हीला वुरैशॅय् दारॅऩ् ऱरुळ्वरच् चीऱ्ऱ मः(ह्)हाप्
पार्हुला मुळुवॅण् डिङ्गळ् पहल्वन्द पडिवम् बोलुम्
एर्हुला मुहत्ति ऩाळै यिऱैमुह मॅडुत्तु नोक्कित्
तार्हुला मलङ्गऩ् मार्बन् तायरै नित्तैन्दु नैन्दाऩ् 602

अलङ्कल्–हिलनेवाली; तार्–माला से; कुलाम मार्पऩ्–अलंकृत वक्ष वाले; अरुळ् वर–कृपा के होने पर; चीऱ्ऱम् अ.'.का–क्रोध कम करके; उरै चॅय्तार्–भाषण किया; आर् कॉलो–किसने तो; ॲऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; कुलाम्–गोल; मुळु–पूर्ण; वॅण् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र; पकल्–दिन में; पार् वन्त–भूमि पर आया हो, ऐसा; पटिवम् पोलुम्–रूप वाली (को); एर् कुलाम्–सौंदर्यमय; मुकत्तिऩाळै–मुख वाली को; मुकम्–मुख; इऱै ॲटुत्तु–थोड़ा उठाकर; नोक्कि–देखकर; तायरै नित्तैन्तु–अपनी माताओं को स्मरण करके; नैन्ताऩ्–दुःखी हुए। ६०२

हिलनेवाली पुष्पमाला से भूषित लक्ष्मण के मन में दया आयी। क्रोध कम हुआ। ऐसा बोलनेवाली कौन होगी? यह समझने के लिए जब उसने थोड़ा मुख उठाकर तारा का सुन्दर मुख देखा, जो गोल राका-चन्द्र, दिन में ही भूमि पर आया-सा (मन्दप्रभ) लगता था, तब उन्हें अपनी (विधवा) माताओं का स्मरण आया और वे वहुत दुःखी हुए। ६०२

मङ्गल वणियै नीक्कि मणियणि तुऱन्दु वाशक्
कॉङ्गलर् कोदै माऱ्ऱिक् कुङ्गुमञ् जान्दङ् गॉट्टा
पॉङ्गुवॅम् मुलैहळ् पूहक् कळुत्तॊडु मऱैयप् पोर्त्त
नङ्गैयैक् कण्ड वळ्ळल् नयऩङ्गळ् पऩिप्प निऩ्ऱाऩ् 603

मङ्कलम् अणियै–अहिवात के आभरणों को; नीक्कि–दूर करके; मणि अणि–नवरत्नाभरण; तुऱन्तु–त्यागकर; वाचम्–सुगन्धपूर्ण; कॉङ्कु अलर्–शहद-भरी; कोतै–पुष्पमाला को; माऱ्ऱि–हटाकर; कुङ्कुमम् चान्तम्–कुंकुम-चन्दन; कॉट्टा–न लगाकर; पॉङ्कु वॅम् मुलैकळ्–पीन और प्यारे स्तनों को; पूकम् कळुत्तॊटु–पूगतरु-सम कन्धों के साथ; मऱैय–छिपाते हुए; पोर्त्त–ओढ़े (रहनेवाली); नङ्कैयै–स्त्री तारा को; कण्ट–जिन्होंने देखा; वळ्ळल्–वे प्रभु; नयनङ्कळ्–आँखों को; पऩिप्प–अश्रु से भरने देते हुए; निऩ्ऱाऩ्–खड़े रहे। ६०३

उस पर अहिवात के आभरण नहीं थे। मणियाँ नहीं थीं। सुवासित और शहद-भरे पुष्पों की मालाएँ त्याग दी गयी थीं। कुंकुम, चन्दन आदि के लेप का श्रृंगार नहीं था। पीन और गरम स्तनों को पूग-तरु-सम कन्धों के साथ ओढ़नी के अन्दर छिपाये रखकर तारा खड़ी थी। यह देखकर दयानिधि लक्ष्मण की आँखों से आँसू आ गये। वे वैसे ही स्तब्ध खड़े रहे। ६०३

इऩैयरा मऩ्ऩै यीऩ्ऱ विरुवरु मॆऩ्ऩ वॆऩ्द
निऩैविना ऩयर्प्पुच् चॆऩ्ऱ नॆञ्जिऩ नॆडिदु निऩ्ऱाऩ्
विनविनाट् कॊदिरोर् माऱ्ऱम् विळम्बवुम् वेण्डु मॆऩ्ऱप्
पुऩैहुऴ लाट्कु वन्द कारियम् पुहल्व दानाऩ् 604

ॲऩ्ऩै ईऩ्ऱ–मेरी जननियाँ; इरुवरुम्–दोनों; इऩैयर् आम्–ऐसी ही (विधवा-वेश में) होंगी; ॲऩ्ऩ–ऐसे; वॆऩ्त निऩैविऩाऩ्–झुलसानेवाले विचार से; अयर्प्पु चॆऩ्ऱ–थकित; नॆञ्चिऩाऩ्–मन वाले हो; नॆटितु निऩ्ऱाऩ्–लम्बी देर तक जो खड़े रहे; विऩविऩाट्कु–अपने से प्रश्न करनेवाली से; ॲतिर् ओर् माऱ्ऱम्–उत्तर में एक बात; विळम्पवुम् वेण्टुम्–कहना भी है; ॲऩ्ऱु–यह सोचकर; अ पुऩै कुऴलाट्कु–उस सुन्दर केश वाली से; वन्त कारियम्–आगमन का हेतु; पुकल्वतु आऩाऩ्–कहने लगे। ६०४

वे सोचने लगे— मेरी दोनों माताएँ (कैकेयी का स्मरण नहीं हुआ) ऐसी ही दिखेंगी। इस तापक विचार से उनका मन दुर्बल हुआ। बहुत देर तक वैसे ही खड़े रहे। बाद सोचा कि प्रश्न करनेवाली को उत्तर देना चाहिए। इसलिए वे सुकेशिनी तारा से अपने आगमन का अभिप्राय इन शब्दों में कहने लगे। ६०४

शेऩैयुम् यातुन् देडित् तेवियैत् तरुवॆ नॆऩ्ऱु
मानवर् कुरैत्त माऱ्ऱ मऱन्दन नरुक्कऩ् मैन्दऩ्
आऩव नमैदि वल्लै यऱियॆऩ वरुळिन् वन्देऩ्
मेऩिलै यऩैयाऩ् शॆय्है विळैन्दवा विळम्बु हॆऩ्ऱाऩ् 605

अरुक्कऩ् मैन्तऩ्–सूर्यसूनु ने; चेऩैयुम्–सेना और; यातुम्–मैं; तेवियै–देवी सीता को; तेटि तरुवॆऩ्–खोज लाऊँगा; ॲऩ्ऱु–ऐसा; माऩवर्कु–मनुकुलोदित श्रीराम को; उरैत्त माऱ्ऱम्–जो दिया, वह वचन; मऱन्तऩन्–(सुग्रीव) भूल गया; आऩवऩ् अमैति–उसका अभिप्राय; वल्लै अऱिति–जल्दी जान आओ; ॲऩ्ऩ–ऐसा (श्रीराम के) कहने पर; अरुळिऩ्–उस आज्ञा को लेकर; वन्तेऩ्–आया; मेल् निलै–उच्चस्थिति के; अऩैयाऩ् चॆय्कै–उसका समाचार; विळैन्तवा–जैसे होता है; विळम्पुक–वैसा कहो; ॲऩ्ऱाऩ्–बोले। ६०५

"सूर्य-पुत्र ने मनुकुल-दीपक श्रीरामजी को वचन दिया था कि मैं और मेरी सेना देवी सीता को खोजकर लायगी। वह उसको भूल गया। उसका मन जान आओ।" श्रीराम ने मुझसे यह कहा और उनकी आज्ञा पर मैं इधर आया हूँ। उत्कृष्ट राजधन जिसे मिला है, उस सुग्रीव के कार्य के सम्बन्ध में आप ही कहें —लक्ष्मण ने यह कहा। ६०५

शीऱुवा यल्लै यॆय शिऱियवर् तीमै शॆय्दाल्
आऱुवाय् नीय लाऩ्मऱ् ऱारुळ रयर्न्दा ऩल्लऩ्

वेरुवे रुलह मॅङ्गुन् दूदरै विडुत्त वल्लै
ऊरुमा नोक्किन् ताळ्त्ता नुदविमा रुदवि युण्डो 606

ऐय–प्रभु; चिरियवर्–छोटे लोग; तीमै चॅय्ताल्–अपराध करें तो; चीरुवाय् अल्लै–कोप मत करें; आरुवाय्–शान्त हों; नी अलाल्–(इस योग्य) आपके सिवा; मट्रु आर् उळर्–और कौन हैं; अयर्न्तान् अल्लन्–(सुग्रीव) भूले नहीं हैं; उलकम् अॅङ्कुम्–विश्व भर में; वेरु वेरु–अलग-अलग; तूतरै विदुत्तु–दूतों को भेजकर; अ अॅल्लै–उन स्थलों से; ऊरुमा नोक्कि–उनके आने की प्रतीक्षा करते हुए; ताळ्त्तान्–विलम्ब किया (उन्होंने); उतवि–आपकी की हुई सहायता का; मारु उतवि–प्रतीकार सहायता; उण्टो–भी (हो सकती) है क्या । ६०६

(तारा ने उत्तर दिया कि) प्रभु ! छोटे लोग बुराई करें तो बड़े आपको क्रोध नहीं करना चाहिए। शान्त हो जाइये। अगर आप शान्त नही हो सकेंगे, तो और कौन हैं जिनमें यह गुण होगा ? और भी सुग्रीव कुछ नहीं भूले हैं। संसार भर में उन्होंने दूत भेजे हैं। उनके आने की प्रतीक्षा में वे विलम्ब कर रहे हैं। आपने जो उपकार किया, उसका प्रत्युपकार हो भी सकता है क्या ? । ६०६

आयिर कोडि तूद ररिक्कण मळैप्प वाण
पोयिनर् पुहुदु नाळुम् पुहुन्दडु पुहल्पुक् कोर्क्कुत्
तायिनु मिनिय नीरे तणिदिराऱ् ररुम मः(ह्)दाल्
तीयन शॅय्या रायिन् यावरे शॅरुन रावार् 607

आयिर कोटि तूतर्–सहस्र करोड़ (असंख्यक) दूत; अरि कणम् अळैप्प–वानर-गणों को बुला लाने; आणै पोयिनर्–(सुग्रीव की) आज्ञा से चले हैं; पुकुतुम् नाळुम्–उनके आने का दिन भी; पुकुन्ततु–आ गया; पुकल् पुक्कोर्क्कु–शरणागतों के लिए; तायिनुम् इनिय–माता से बढ़कर प्यारे रहनेवाले; नीरे–आप ही; तणितिर्–कोप शान्त करने अर्ह हैं; अ∴तु तरुमम्–वही धर्म है; तीयन चॅय्यार् आयिन्–अगर बुरा काम करते ही नहीं; चॅरुनर् आवार्–कोपभाजन या दंड्य होगा; यावरे–कौन । ६०७

सहस्रकोटि (असंख्यक) दूत वानर-समूहों को ले आने के लिए सुग्रीव की आज्ञा लेकर चले हैं। उनके लौट आने का समय भी आ गया है। शरणागतों के लिए आप माता से भी प्यारे हैं। आपका क्रोध शान्त हो। वही धर्म है। बुरे काम करनेवाले होंगे ही नहीं तो क्रोध करने योग्य या दण्डनीय कौन होंगे ? (अपराध हो ही जाते हैं। तभी तो क्षमा की बात भी आती है।) । ६०७

अडैन्दवर्क् कबय नोवि ररुळिय वळविल् शॅल्वम्
तॉडर्न्दुनुम् बणियिऱ् ऱीर्न्दा लदुवुनुन् दॉळिले यन्ऱो

मडन्दैदन् पॊरुट्टाल् वन्द वाळमर्क् कळत्तु माण्डु
किडन्दिल रॆन्निऱ् पिन्नु निऱ्कुमो कॆण्मै यम्मा 608

नीविर्–आप; अटैन्तवर्क्कु–आपकी शरण में आये हुए लोगों को; अपयम् अरुळिय–अभय के साथ जो दी; अळवु इल् चॆल्वम्–वह अनन्त सम्पत्ति; तॊटर्न्तु–मिली, उस कारण; नुम् पणियिन्–आपकी सेवा की; तीर्न्ताल्–उपेक्षा करें तो; अतुवुम्–वह भी; नुम् तॊऴिले–आपका ही कार्य; अन्ऱो–होगा न; मटन्तै तन्–रमणी सीता के; पॊरुट्टाल् वन्त–कारण प्राप्त; वाळ् अमर् कळत्तु–तलवार के युद्ध की भूमि में; माण्टु किटन्तिलर्–मरकर पड़े नहीं रहे; ॲन्निन्–तो; पिन्नुम्–उसके बाद भी; कॆण्मै–मित्रता; निऱ्कुमो–टिकेगी क्या। ६०८

सुग्रीव आपकी शरण में आये थे। आपने उनको अभय प्रदान किया। और उन्हें फलस्वरूप अपार वैभव और सुख-भोग मिल गया। उसमें भूलकर अगर सुग्रीव आपकी सेवा त्यागेंगे तो वह भी आपके ही कृत्य का फल समझा जायगा न? सीतादेवी के कारण तलवार के साथ लड़ने योग्य युद्ध जो आयगा, उसमें वे मरे नहीं पड़ेंगे तो मित्रता भी टिकेगी क्या?। ६०८

शॆम्मैशे रुळ्ळत् तीर्हळ् शॆय्दपे रुदवि तीरा
वॆम्मैशेर् पहैयु माऱ्ऱि यरशुवीऱ् ऱिरुक्क विट्टीर्
उम्मैये यिहळ्व रॆन्नि नॊळिमैया यॊऴिव दॊन्ऱो
इम्मैये वऱुमै यॆय्दि यिरुमैयु मिऴप्प रन्ऱे 609

चॆम्मै चेर् उळ्ळत्तीर्कळ्–निष्पक्षता से सुसंस्कृत मन वाले (आप) ने; चॆय्त पेर् उतवि–जो (उपकार) किया, वह बड़ा उपकार; तीरा–भुलाया नहीं जा सके, ऐसा; वॆम्मै चेर्–भयंकर; पकैयुम् माऱ्ऱि–शत्रु को मारकर; अरचु वीऱ्ऱिरुक्क विट्टीर्–राजा बन बैठने दिया (आपने सुग्रीव को); उम्मैये इकऴ्वर्–आपकी ही उपेक्षा करेंगे; ॲन्निन्–तो; ऒऴिमैयाय् ऒऴिवतु ऒन्ऱो–(वह उपेक्षा) यों ही आसानी से चली जायगी क्या; इम्मैये वऱुमै ॲय्ति–इसी जन्म में अभावग्रस्त होकर; इरुमैयुम्–इह-पर दोनों को; इऴप्पर् अन्ऱे–खो देंगे न। ६०९

उत्कृष्ट मन वाले आपने उपकार किया। वह बड़ा उपकार भुलाया न जाय, ऐसा आपने उनके सन्तापक शत्रु तो मारा और उन्हें राजसिंहासन पर शान के साथ आसीन कराया। अगर वे आपकी उपेक्षा करेंगे तो क्या वह आसानी से (विफल) हो जायगी? इसी जन्म में दरिद्र बनकर वे इह-पर दोनो हितों से वंचित न हो जायँगे?। ६०९

आण्डुपोर् वालि याऱ्ऱन् माऱ्ऱिय दम्बॊन् ऱायिन्
वेण्डुमो तुणैयु नुम्बाल् विल्लिनु मिक्क दुण्डो
तेण्डुवार्त् तेडु हिन्ऱीर् देवियै यदनैच् चॆव्वे
पूण्डुनिन् ऱुय्त्तर् पालार् नुङ्गळ्ऱ् पुहुन्दु ळोरुम् 610

आण्टु–तब (वाली-युद्ध के समय); पोर् वालि–योद्धा वाली का; आऱ्ऱल्–बल का; माऱ्ऱियतु–नाश करना; अम्पु ऑन्ऱु–आपका ही एक शर है; आयिन्–तो; तुणैयुम्–सहायक भी; वेण्टुमो–चाहिए क्या; नुम् पाल्–आपके पास रहनेवाले; विल्लिनुम् मिक्कतु–धनु से बढ़कर बलवान; उण्टो–सहायक हैं क्या; तेवियै तेण्टुवार्–देवी सीता के अन्वेषक; तेटुकिन्ऱीर्–खोजते हैं (इतना ही); नुम् कळल्–आपके चरणों में; पुकुन्तुळोरुम्–आगत सुग्रीव आदि; अततै–उस (सेवाकार्य) को; चॅव्वे पूण्टु निन्ऱु–अच्छे प्रकार से लेकर पूरा करके; उय्तल् पालार्–उद्धार पाने अर्ह हैं। ६१०

(असल में आप सहायक नहीं चाहते।) आपके एक ही शर ने योद्धा वाली के बल को नष्ट किया। तब आपको सहायक भी चाहिए क्या? आपके धनु से बढ़कर कोई (सहायक) क्या होगा? आप तो सीता देवी के अन्वेषकों की खोज में हैं। आपके शरणागत सुग्रीव आदि वह सेवाकार्य अच्छी तरह से करें —यह उनका कर्तव्य ही है। ६१०

ऍन्ऱव ळुरैत्त माऱ्ऱम् यावैयु मिन्निदु केट्टु
नन्ऱुणर् केळ्वि याळ नरुळ्वर नाणुट् कॉण्डान्
निन्ऱन निन्ऱ लोडु नीत्तनन् मुनिवॆन् ऱुन्ना
वन्ऱुणै वयिरत् तिण्डोण् मारुदि मरुङ्गु वन्दान् 611

ऍन्ऱु–ऐसा; अवळ् उरैत्त माऱ्ऱम्–उसके कहे वचन; यावैयुम्–सब; इनितु–ससंतोष; केट्टु–सुनकर; नन्ऱु उणर्–अच्छी तरह जाने हुए; केळ्वि-याळन्–श्रवण-ज्ञान के रखनेवाले लक्ष्मण; अरुळ् वर–करुणा के आने से; नाण् उळ् कॉण्टु–लाज से युक्त होकर; निन्ऱान्–खड़े रहे; निन्ऱलोटुम्–स्थित रहते ही; मुनिवु नीत्तनन्–क्रोध छोड़ गये; ऍन्ऱु उन्ना–ऐसा सोचकर; वल् तुणै–बलवान सहायक; वयिरम् तिण् तोळ्–सारयुक्त और कठोर भुजाओं वाला; मारुति–मारुति; मरुङ्कु वन्तान्–पास आया। ६११

तारा ने जो कुछ कहा, वह सब लक्ष्मण ने सन्तुष्ट होकर सुना। लक्ष्मण ने शास्त्र खूब सुने थे और उनको खूब समझ लिया था, यानी वे बड़े ही शिष्ट थे। उन्हें दया आ गयी और लज्जायुक्त हो खड़े रह गये। जब वे ऐसे खड़े हो गये, तब हनुमान को, जिसके युगल कन्धे बड़े और सुदृढ़ थे, आश्वासन हो गया कि लक्ष्मण का क्रोध दूर हो गया। इसलिए हनुमान उनके पास आया। ६११

वन्दडि वणङ्गि निन्ऱ मारुदि वदन नोक्कि
अन्दमिल् केळ्वि नीयु मयर्त्तनै याहु मन्ऱे
मुन्दिन्न शॅय्है यॆन्ऱान् मुनिवितु मुळैक्कु मन्बान्
ऍन्दैकेट् टरुळु हॆन्ना वियम्बिन नियम्ब वल्लान् 612

मुनिवित्तुम्–क्रोध में भी; मुळैक्कुम्–उत्पन्न; अन्पान्–स्नेह वाले (लक्ष्मण) ने; वन्तु–आकर; अटि वणङ्कि–पैरों पर नमस्कार करके; निन्ऱ–जो खड़ा रहा,

उस; मारुति वतनम् नोक्कि–मारुति का मुख देख; अनुतम् इल्–अनंत; केळ्वि–
श्रवण-ज्ञान रखनेवाले; नीयुम्–तुम भी; मुन्तित्त चॅय्कै–पहले (जो) हुआ (वह)
काम; अयर्त्ततै अन्ऱे–भूल गये न; ॲन्ऱान्–कहा; इयम्प वल्लान्–वाग्विदग्ध;
ॲन्तै–पिता-सम; केट्टु अरुळुक–सुनने की कृपा करें; ॲन्ना–यह कहकर;
इयम्पित्तन्–आगे बोला। ६१२

लक्ष्मण ऐसे थे कि क्रोध करते हुए भी प्रेम रखनेवाले थे। अपने पैरों पर नमन करनेवाले मारुति का मुख देखकर लक्ष्मण बोले— अपार श्रवण-ज्ञान रखनेवाले हो तुम ! तुमने भी पहले जो हुआ उसको भुला दिया न ? तब वाग्विदग्ध हनुमान ने कहा कि पिता (तुल्य) ! सुनने की कृपा करें। आगे वह यों बोला। ६१२

शिदैवहल् कादऱ् ऱायैत् तन्दैयैक् कुरुवैत् तॅय्वप्
पदवियन् दणरै यावैप् पालरैप् पावै मारै
वदैपुरि हुनर्क्कु मुण्डा माऱ्ऱला माऱ्ऱन् माया
उदविहॊन् ऱार्क्कॅन् ऱेन्नु मौळिक्कला मुवाय मुण्डो 613

चितैवु अकल्–अक्षय; कातल् तायै–वात्सल्यभरी माता को; तन्तैयै–और
पिता को; कुरुवै–गुरु को; तॅय्वम् पतवि–देवपदासीन; अन्तणरै–ब्राह्मणों को;
आवै–गायों को; पालरै–वालों को; पावैमारै–स्त्रियों को; वतै पुरिकुत्तर्क्कुम्–
जो मारते हैं (हत्या करते हैं), उनके लिए भी; माऱ्ऱलाम् आऱ्ऱल्–परिहार का
उपाय; उण्टाम्–होता है; माया–अविस्मरणीय; उतवि कॊन्ऱार्क्कु–सहायता
(मारनेवालों) भूलनेवालों (कृतघ्नों) के लिए; ऒळिक्कलाम् उपायम्–निवारण का
उपाय; ऒन्ऱेनुम्–एक भी; उण्टो–है क्या। ६१३

ससार में अक्षय प्रेम रखनेवाली माता की और पिता, गुरु, देवतुल्य ब्राह्मण, गाय, वालक, स्त्री —इनकी हत्या करना वड़ा पाप है। पर ऐसे पाप का भी प्रायश्चित्त हो सकता है। कृतघ्नता का परिहार कहीं एक भी है क्या ? । ६१३

ऐयनुम् मोडु मॅङ्ग ळरिक्कुलत् तरश नोडुम्
मॅय्युरु केण्मै याह मेलैनाळ् विळैव दाय
शॅय्हैयॅन् शॅय्है यन्ऱो वन्नदु शिदैयु मायिन्
उय्वहै यॅवर्क्कु मुण्डो वुणर्वुमा शुण्ड दन्ऱो 614

ऐय–सुन्दर; नुम्मोटुम्–आपके; अरिकुलत्तु–और वानरकुल के; ॲङ्कळ्
अरचत्तोटुम्–हमारे राजा सुग्रीव के बीच; मॅय् उरु–सच्ची रीति से बनी; केण्मै–
मित्रता; आक–हो ऐसा; मेलै नाळ्–पहले; विळैवतु आय–जो हुआ; चॅय्कै–
वह काम; ॲन् चॅय्कै अन्ऱो–मेरा काम था न; अन्नतु–वह मित्रता; चितैयुम्
आयिन्–टूट जायगी तो; उय्वकै–उद्धार का मार्ग; ॲवर्क्कुम्–किसी के लिए
भी; उण्टो–होगा क्या; उणर्वु–हमारी बुद्धि; माचु उण्टतु अन्ऱो–कलंकित
बन जायगी न। ६१४

सुन्दर राजकुमार ! आपके साथ वानरकुल के हमारे राजा की सच्ची मित्रता स्थापित हुई। क्या वह काम मेरा नहीं है ? अगर वह टूट जायगी तो उससे जो पाप होगा उससे बचने का किसी के लिए क्या मार्ग होगा ? उसका अर्थ यही होगा न कि हमारी बुद्धि धूमिल हो गयी ! । ६१४

देवरुन् दवमुत्र् जॅय्यु नल्लइत् तिरमु मर्रुम्
यावैयु नीरे यॅन्ब दॅत्वयिर् किडन्द दॅन्दाय्
आवदु निर्क शेरु मरणुण्डो वरुळुण् डन्रेल्
मूवहै युलहङ् गाक्कु मॉय्म्बिनीर् मुनिवुण् डानाल् 615

ॲन्ताय्–पिता (-सम); चॅय्युम् तवमुम्–हमारी की जानेवाली तपस्या; तेवरुम्–हमारे देव; मर्रुम् यावैयुम्–अन्य सभी कुछ; नीरे–आप ही है; ॲन्पतु–यह विचार; ॲन् वयिन्–मेरे मन में; किटन्ततु–घर किये है; आवतु निर्क–वह जो है एक ओर रहे; मूवकै उलकम्–त्रिवर्ग के लोकों का; काक्कुम्–पालन करने का; मॉय्म्पितीर्–बल रखनेवाले; अरुळ्–आपकी कृपा ही; उण्टु–हमारे लिए है; अन्रेल्–नहीं तो; मुनिवु उण्टाताल्–कोप करेंगे तो; चेरुम्–हम जा लगें, ऐसी; अरण् उण्टे–रक्षा का स्थान भी है क्या। ६१५

हमारे पिता (तुल्य) ! हमारे तप आप है। हमारे देव आप ही हैं। हमारे अन्य सभी कुछ आप ही हैं। यह विचार मेरे मन में घर किये है। वह एक ओर रहे— तीनों लोकों का पालन करने में समर्थ ! आपकी कृपा ही हमारी गति है ! अगर कृपा न रहे और क्रोध भी हो जाय तो हम कहाँ जायँगे, जहाँ हमें शरण मिलेगी ? । ६१५

मरन्दिलन् कविधिन् वेन्दन् वयपपडै वरुविप् पारै
तिरन्दिर मेवि यन्नार् शेर्वदु पार्त्तुत् ताळ्त्तान्
अरन्दुणै नुमक्कुत् तान्रत् वाय्मैयै यळिक्कु मायिन्
पिरन्दिल नन्रे यॉन्रो नरहमुम् पिळैप्प दन्राल् 616

कविधिन् वेन्तन्–कपिराज; मरन्तिलन्–नहीं भूले; वय पटै–विजय-वाहिनी को; वरुविप्पारै–बुला लानेवालों को; तिरम् तिरम्–(पृथ्वी के) भाग-भाग में; एवि–भेजकर; अन्नार् चॅर्वतु–उनके आने की; पार्त्तु–(राह) देखते हुए; ताळ्त्तान्–विलम्ब किया (सुग्रीव ने); अरम् तुणै–धर्म-मित्र; नुमक्कु–आपके विषय में; तान्–स्वयं; तन् वाय्मैयै–अपने सत्य का (वचन का); अळिक्कुम् आयिन्–भंग कर देंगे तो; पिरन्तिलन् अन्रो–जनित नहीं है न (जन्म वृथा हो गया न); ऑन्रो–क्या वही एक है; नरकमुम्–नरक भी; पिळैप्पतु अन्रु–छोड़ेगा नहीं। ६१६

कपिकुलपति भूले नहीं हैं। विजयवाहिनी को बुलाने के लिए दूत भेजे जा चुके हैं। दूतों को स्थान-स्थान पर भेजकर वे उनके लौट आने

का रास्ता देख रहे हैं। आप धर्मपालक हैं। अगर आपके प्रति सत्य व्यवहार को सुग्रीव विगाड़ देंगे तो वे पैदा हुए ही नहीं, ऐसा न समझे जायँगे (जन्म असफल हुआ रहेगा न) ? यह एक बुरा नतीजा ही नहीं— उन्हें नरक का वास भी मिलने से नही चूकेगा। ६१६

उदवाम लोरुवन् शॅय्द वुदविक्कुक् कैम्मा राह
मदवानै यन्नैय मैन्द मऱ्ऱु मोन्ऱुलहि लुण्डो
शिदैयाद शॅरुवि लन्नान् मुन्शॅन्ऱु शॅरुनर् मार्बिन्
उदैयाने लुदैयुण् डावि युलैयाने लुरवॅन् मन्नो 617

मतम् आत्तै—मत्तगज; अन्नैय मैन्त—समान वीर; उतवामल्—विना उपकृत हुए ही; ओरुवन् चॅय्त—जिसने किया; उतविक्कु—उस उपकार के; कैम्माऱु आक—वदले में; मऱ्ऱुम् ओन्ऱु—और कुछ; उलकिल्—संसार में; उण्टो—होगा क्या; चितैयात चॅरुविल्—पूर्ण युद्ध में; अन्नान् मुन् चॅन्ऱु—उसके पूर्व ही जाकर; चॅरुनर् मार्पिल्—शत्रु के वक्ष में; उतैयातेल्—वाण गड़ा न दे तो भी; उतै उण्टु—वाण से आहत होकर; आवि उलैयातेल्—प्राण नहीं छोड़ेगा तो; उऱवु ऍन्—(फिर) उससे नाता क्या; (मन्—ओ''' पूरक ध्वनियाँ)। ६१७

मत्तगज-सदृश महावीर ! अहेतुक उपकार का कोई प्रत्युपकार इस संसार में सम्भव है क्या ? घोर युद्ध में उन (उपकारी) के पहले ही जाकर शत्रु के वक्ष पर वाण चलाना (या लात मारना) चाहिए। अगर वह न हो सके तो शत्रु का शर वक्ष में लेकर प्राण छोड़ नहीं देगा तो ऐसे उपकृतों के साथ सम्वन्ध से क्या होनेवाला है ? । ६१७

ईण्डिन्ि निऱ्ऱ लॅन्ब दिनियदो रियल्विऱ् ऱन्ऱाल्
वेण्डल रऱिव रेनुङ् गेण्मैदीर् विनैयिऱ् ऱामाल्
आण्डहै याळि मोय्म्बि नैयनी रळित्त शॅल्वम्
काण्डिया लुन्मुन् वन्द कविक्कुलक् कोनो डॅन्ऱान् 618

आण् तकै—पौरुषयुक्त; आळि—'याळि' (नामक वलवान जानवर) के समान; मोय्म्पिन्—वलवान; ऐय—प्रभु; नी—आप; ईण्टु—यहाँ; इन्ि—अव भी; निऱ्ऱल् ऍन्पतु—खड़े रहने का यह काम; इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱु—(मित्रता के लिए) स्वाभाविक नहीं; वेण्टलर्—शत्रु लोग; अऱिवरेल्—जान लेंगे तो; नुम् केण्मै—आपकी मित्रता; तीर् वितैयिऱ्ऱु आम्—टूट जाय, ऐसा अनर्थकारी हो जायगा; नीर् अळित्त चॅल्वम्—आपने दिया, यह धन; उन् मुन् वन्त—आपके अग्रज (के रूप में सम्मानित); कवि कुलम्—कपिकुल के; कोन् ओटु—राजा के साथ; काण्टि—आकर निहार लें; ऍन्ऱान्—कहा (हनुमान ने)। ६१८

पौरुषयुक्त "याळि" सदृश वलवान प्रभु ! आप आगे भी यहाँ खड़े रहेंगे, तो वह मधुर-सम्वन्ध का लक्षण नहीं होगा। शत्रु जानेंगे तो हमारी मित्रता के नाश का कारण वन जायगा। आपने जो वैभव

हमें दिलाया उसे, और आपके बड़े भाई के रूप में स्वीकृत हमारे वानरयूथों के पति सुग्रीव को आकर निहारें। हनुमान ने आमन्त्रित किया। ६१८

मारुदि माऱ्ऱङ् गेट्ट मलैपुरै वयिरत् तोळान्
तीर्विन्नै शॅन्ऱ निन्ऱ शीऱ्ऱत्तान् शिन्दै शॅय्दान्
आरिय नरुळिऱ् रीर्न्दा नल्लत्वन् दडुत्त शॅल्वम्
पेर्वरि दाहच् चॅय्द शिऱुमैया लॅन्नुम् बॅऱ्ऱि 619

मारुति–मारुति का; माऱ्ऱम् केट्ट–उत्तर सुननेवाले; मलै पुरै–पर्वत की समानता करनेवाले; वयिरम् तोळान्–सारयुक्त कन्धों वाले; तीर् विनै चॅन्ऱ–हटने पर तत्पर; निन्ऱ–जो रहा; चीऱ्ऱत्तान्–वैसा क्रोध जिनका था (क्रोध-रहित हो); आरियन् अरुळिल्–आर्य श्रेष्ठ श्रीराम की आज्ञा की; तीर्न्तान् अल्लन्–उपेक्षा नहीं की है; वन्तु अडुत्त चॅल्वम्–अपने को प्राप्त वैभव-सुख-भोग को; पेर्वु अरितु आक–भूलना कठिन था, इसलिए; चॅय्त चिऱुमैयान्–अल्पकर्मा हो गया है; ऍन्नुम् पॅऱ्ऱि–यह स्वाभाविक फल; चिन्तै चॅय्तान्–मन में सोचा (लक्ष्मण ने)। ६१९

लक्ष्मण ने मारुति के वचन सुने। अब पर्वतोन्नत भुजा वाले वे गतक्रोध हो गये थे। उन्हें पता लग गया कि सुग्रीव ने श्रीराम की आज्ञा की उपेक्षा नहीं की है, वरन् यह नई प्राप्त सम्पत्ति का गुण था जो उसे सुख-भोग से अलग होने नहीं दे रहा था। इसके कारण वह गुणहीन हो गया था। लक्ष्मण ने इस तथ्य को समझा। ६१९

अन्नैयदु करुदिप् पिन्न ररिक्कुलत् तवनै नोक्कि
निन्नैयोरु माऱ्ऱ मिन्ने निहळ्त्तुव दुळदु निन्बाल्
इन्नैयन वुरैत्तऱ् केऱ्ऱ वॅण्णुदि यिवैनी यॅन्ना
वनेहळल् वयिरत् तिण्डोण् मन्निळङ् गुमरन् शॊल्वान् 620

अन्नैयतु करुति–उसको सोचकर; पिन्नर्–बाद; वन्नै कळल्–सुनिर्मित वीर-कटक; वयिरम् तिण् तोळ्–हीर के समान कठोर कन्धे; मन् इळम् कुमरन्–(इनके साथ शोभायमान) चक्रवर्तीकुमार; अरि कुलत्तवनै–वानरकुल के उस (हनुमान) को; नोक्कि–देखकर; इन्ने–अभी; निन्नै–तुम्हें; ऒरु माऱ्ऱम्–एक समाचार; निकळ्त्तुवतु–कहना; उळतु–(रहता) है; इन्नैयन–यह; निन्पाल् उरैत्तऱ्कु–तुम्हारे पास; एऱ्ऱ–कहने योग्य है; नी इवै ऍण्णुति–तुम ये बातें सोचो; ऍन्ना–कहकर; चॊल्वान्–कहने लगे। ६२०

यह सोचकर, कारीगरीयुक्त स्वर्ण-पायलों और वज्र-सम कठोर भुजाओं से भूषित राजकुमार लक्ष्मण ने वानरकुल के हनुमान से कहा कि मारुति! तुमसे कुछ बातें कहनी हैं। ये बातें तुम्हीं से कहने योग्य है। तुम सुनो और उन पर विचार करो। वे आगे यों बोले। ६२०

देवियैक् कुऱित्तुच् चॅऱ्ऱ शीऱ्ऱमु मानत् तीयुम्
आवियैक् कुऱित्तु निन्ऱ वैयत्तै यदत्तैक् कण्डेन्
कोवियऱ् ऱरुमम् नीङ्गक् कॊडुमैयो डुऱवु कूडिप्
पावियर्क् केऱ्ऱ शॆय्यक् करुदुवल् पऴियुम् पारेन् 621

तेवियै कुऱित्तु–देवी सीता (के हरण) के कारण; चॅऱ्ऱ–शत्रु के प्रति हुआ; चीऱ्ऱमुम्–रोष और; मानम्–(अप-) मान की; तीयुम्–आग दोनों; ऐयत्तै आवियै कुऱित्तु–प्रभु श्रीराम के प्राणों को लक्ष्य बनाकर; निन्ऱ–(क्रियाशील) खड़े हैं; अतत्तै कण्टेन्–इसको मैंने देखा; को इयल्–राजा के लिए उचित; तरुमम् नीङ्क–धर्म छोड़कर; कॊटुमैयोटु–क्रूरता से; उऱवु कूटि–सम्बन्ध स्थापित करके; पावियर्कु–पापी जनो के; एऱ्ऱ–योग्य; चॆय्य–(काम) करना; करुतुवल्–सोचूंगा; पऴियुम्–(उससे मिलनेवाली) निन्दा; पारेन्–की भी परवाह नहीं करूँगा। ६२१

श्रीराम की बात सोचो। देवी के अपहरण से उत्पन्न शत्रुता-भरा क्रोध और अपमान-भावना की आग उनके प्राणों को खाये जा रही है। उसको प्रत्यक्ष देखकर मेरे मन में यह भाव उठा कि राजधर्म छोड़ दूँ; क्रूरता के धर्म से नाता जोड़ लूँ और पापी-योग्य (आत्म-) घातक कार्य कर लूँ; और इसमें अपयश की परवाह नहीं करूँ। ६२१

आयिनु मॆन्नै यान्ऱे याऱ्ऱिनिन् ऱावि युयन्दु
नायहन् ऱनैयुन् देऱ्ऱ नाळ्पल कऴिन्द वन्ऱेल्
तीयुमिव् वुलह मून्ऱुन् देवरुम् वीव रॊन्ऱो
वीयुनल् लऱमुम् वोहा विदियैयार् विलक्कर् पालार् 622

आयितुम्–तो भी; ऍन्नै–अपने को; यान्ऱे आऱ्ऱि निन्ऱु–स्वयं शान्त करके; आवि उय्न्तु–प्राणधारण करके; नायकन् तनैयुम्–नायक श्रीराम को भी; तेऱ्ऱ–ढाढ़स दिलाने में; नाळ् पल कऴिन्त–अनेक दिन बीत गये; अन्ऱेल्–नहीं तो; इ उलकम् मून्ऱुम्–ये तीनों लोक; तीयुम्–जल जाते; तेवरुम् वीवर्–देव भी मर जाते; ऒन्ऱो–यही एक है क्या; नल् अऱमुम्–श्रेष्ठ धर्म भी; वीयुम्–मिट जाते; पोका–अटल; वितियै–विधि को; विलक्कल् पालार्–टाल सकनेवाले; यार्–कौन हैं। ६२२

तो भी मैंने स्वयं अपने को धीरज बँधा लिया। अपने प्राणों को रख लिया। नायक श्रीराम को भी ढाढ़स दिलाया। इसी में अनेक दिन बीत गये। नही तो (अगर हम अपना गुस्सा शान्त नही करते तो), ये तीनों लोक जल जाते! देवगण मिट जाते। क्या वहीं तक समाप्त होता? श्रेष्ठ धर्म भी मिट जाते। अनिवार्य प्रारब्ध कर्म का निवारण कौन कर सकता है?। ६२२

उन्नैक्कण् डुङ्गोन् ऱन्नै युऱ्ऱिडत् तुदवुम् बॆऱ्ऱिक्
कॊन्नैक्कण् डनन्बोर् कण्डिङ् गित्तुणै नॆडिदु वॆहित्

तऩ्ऩैक्कॊण् डिरुन्दे ताऴ्त्ता तऩ्ऱॆनिऱ् ऱनुवॊन् ऱाले
मिऩ्ऩैक्कण् डऩैया डऩ्ऩै नाडुदल् विलक्कऱ् पाऱ्ऱो 623

उऩ्ऩै कण्टु–(श्रीराम) तुम्हें देखकर; उऱ्ऱ इटत्तु–संकट के अवसर पर; उतवुम् पॆऱ्ऱिक्कु–उपकार करने के स्वभाव में: उम् कोऩ् तऩ्ऩै–तुम्हारे राजा को; ऍऩ्ऩै कण्टऩऩ् पोल्–(जैसे) मुझे देखते हैं, वैसे (भाई) मानकर; इ तुणै–इतना; नॆटितु वैकि–लम्बा काल बिताकर; तऩ्ऩै कॊण्टु–अपने को (किसी तरह) जीवित; इरुन्ते ताऴ्त्तात्–रखते हुए क्षमाशील रहे; अऩ्ऱु ऍऩिऩ्–नहीं तो; तनु ऒऩ्ऱाले–धनु, एक से; मिऩ्ऩै कण्टु अऩैयाऴ् तऩ्ऩै–विद्युत्-सी दिखनेवाली सीताजी को; नाट्टल्–खोजना; विलक्कल् पाऱ्ऱो–रोका जा सकता है क्या। ६२३

श्रीराम ने तुम्हें देखकर तुम्हारे राजा को मेरे समान (अपना भाई) माना। अपने उपकारी स्वभाव के अनुकूल समय पर सहायता की। सुग्रीव के प्रति सम्मानभाव के ही कारण वे इतने दिन अपने प्राणों की रक्षा करते रह गये। नहीं तो वे अपने धनु की सहायता से ही अपनी विद्युत्-सम कान्ति वाली देवी को खोज लेते! उनको उस काम से रोका जा सकता है क्या? । ६२३

ऒऩ्ऱुमो वाऩ मऩ्ऱि युलहमुम् पदिऩा लुळ्ळ
वॆऩ्ऱिमाक् कडलु मेऴेऴ् मलैयुळ्ळ वॆऩ्ऩ वेयाय्
निऩ्ऱदो रण्डत् तुळ्ळे यॆऩिऩदु नॆडिय दॊऩ्ऱो
अऩ्ऱुनीर् शॊऩ्ऩ माऱ्ऱन् दाऴ्वित्तल् करुम मऩ्ऱाल् 624

वाऩम्–आकाश; ऒऩ्ऱुमो–केवल एक है क्या; अऩ्ऱि–वही नहीं; पतिऩाल् उळ्ळ–चौदह (की संख्या में) रहनेवाले; उलकमुम्–लोक और; वॆऩ्ऱि–विजयी; मा कटल्–बड़े समुद्र; एऴुम्–सातों; मलै एऴुम्–पर्वत सात; उळ्ळ–(इसके अन्दर) हैं; ऍऩ्ऩवे–ऐसा; आय् निऩ्ऱ–स्थित रहनेवाले; ओर् अण्टत्तु उळ्ळे–एक अण्ड में; ऍऩिऩ्–(कहीं एक कोने में) रहती हैं तो; अतु–वह (वहाँ पहुँचना); नॆटियतु ऒऩ्ऱो–बड़ा काम है क्या; अऩ्ऱु–उस दिन; नीर् चॊऩ्ऩ माऱ्ऱम्–तुमने जो दिया, वह वचन; ताऴ्वित्तल्–(पालन करने में) देरी करना; करुमम् अऩ्ऱु–(योग्य) काम नहीं। ६२४

आकाश क्या? चौदहों लोक, अजेय सातों समुद्र, सातों कुलगिरियाँ आदि से भरे इस अण्ड में कही किसी भी कोने में क्यों न हो, अगर देवी रहेंगी तो उनको ढूँढ़कर ले आना क्या कोई अतिकठिन काम होगा? लेकिन तुम लोगों ने जो वचन दिया, उसकी उपेक्षा करके विलम्ब करना तुम्हारे लिए योग्य काम नहीं है! । ६२४

ताऴ्वित्ती रल्लीर् पऩ्ऩा डरुक्किय वरक्कर् तम्मै
वाऴ्वित्ती रिमैयोर्क् किऩ्ऩल् वरुवित्तीर् मरबिऱ् ऱीराक्

केळ्वित्ती याळर् तुन्बङ् गिळर्वित्तीर् पावन् दन्नै
मूळ्वित्तीर् मुनिया दानै मुनिवित्तीर् मुडिदि रॅन्ऱान् 625

ताळ्वित्तीर् अल्लीर्–विलम्ब (ही) नहीं किया; पल् नाळ् तरुक्किय–कई दिनों से घमण्ड के साथ फिरनेवाले; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; वाळ्वित्तीर्–जीवित रख दिया; इमैयोर्क्कु–देवों को; इन्नल् वरुवित्तीर्–कष्ट दिलाया; मरपिन् तीरा–धर्म-क्रम से दूर न जानेवाले; केळ्वि–श्रवण-ज्ञानी; ती आळर्–अग्निहोत्री ब्राह्मणों के; तुन्पम् किळर्वित्तीर्–दुःख को बढ़ाया; पावम् तन्नै–पाप को; मूळ्वित्तीर्–उकसाया; मुनियातानै–जो (साधारण रूप से) क्रोध नहीं करते, उन श्रीराम को; मुनिवित्तीर्–क्रोध करने को मजबूर कर दिया; मुडितिर्–मरो; ॲन्ऱान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ६२५

तुमने केवल विलम्ब ही नहीं किया! (तुम्हारे विलम्ब से अन्य अनर्थ भी हो गये।) बहुत काल से गर्व के साथ फिरनेवाले राक्षसों की आयु को तुमने बढ़ने दिया! देवों को कष्ट दिलाया। यथाविधि अर्जित शास्त्रज्ञान रखनेवाले और यागाग्नि के पालक मुनियों का दुःख बढ़ाया। पाप को वर्धित कर दिया। जो साधारण रूप से कोप नहीं करते, उन श्रीराम को क्रोध से युक्त कर दिया। मरो सब! —लक्ष्मण ने झुंझलाहट के साथ कहा। ६२५

तोन्ऱलः(ह्) दुरैत्त लोडु मारुदि तॊळुदु तॊल्लै
आन्ऱन् लऱिञ पोय पॊरुण्मनत् तडैप्पा यल्लै
एन्ऱदु मुडिये मॆन्नि निऱत्तुमित् तिऱत्तुक् कॆल्लाम्
शान्ऱिनि याने पोन्दुन् ऱन्मुनैच् चार्दि यॆन्ऱान् 626

तोन्ऱल्–सुन्दर राजकुमार (के); अ॰॰तु–वह; उरैत्तलोडुम्–कहते ही; मारुति–हनुमान; तॊळुतु–नमस्कार करके; तॊल्लै–प्राचीन; आन्ऱ–श्रेष्ठ; नूल्–ग्रन्थों के; अऱिञ–ज्ञाता; पोय पॊरुळ्–बीती बातें; मनत्तु–मन में; अटैप्पाय् अल्लै–रखें मत; एन्ऱतु–लिया हुआ काम; मुटियेम्–पूरा नहीं करेंगे; ॲन्निन्–तो; इऱत्तुम्–प्राण छोड़ देंगे; इ तिऱत्तुक्कु ॲल्लाम्–इन सब बातों के लिए; इनि–आगे; नाते चान्ऱु–मैं खुद साक्षी हूँ; पोन्तु–अन्दर पधारकर; उन् तन् मुनै चार्ति–अपने बड़े भाई से मिलिए; ॲन्ऱान्–कहा। ६२६

जब सुन्दर सुमित्रानन्दन ने यह बात कही, तब मारुति ने नमस्कार करके कहा कि हे प्राचीन और श्रेष्ठ शास्त्रों के विद्वान्! बीती बातों को मन में मत रखिये। हम अपने वचन के अनुसार अपनायी हुई सेवा पूर्ण न करेंगे तो हम मर जायँगे। इन सबका मैं ही साक्षी रहूँगा। आप अन्दर पधारें और अपने बड़े भाई के स्थान में रहनेवाले सुग्रीव से मिलें। ६२६

मुन्नुनी शॊल्लिऱ् ऱन्ऱो मुयन्ऱदु मुयऱ्चि दानुम्
इन्नुनी यिशैत्त शॆय्वा लियैन्दन मॆन्ऱु कूऱि
अन्नदो रमैदि यान्ऱ तरुळ्शिऱि दऱिवा नोक्किप्
पॊन्निऱ्वार् शिलैयि नानु मारुदि योडुम् बोनान् 627

पॊन्निन्–स्वर्ण के; वार् चिलैयिनानुम्–ढले धनु के धारक (लक्ष्मण) भी; मुन्नुम्–पहले भी; मुयन्ऱतु मुयऱ्चि तानुम्–हमने जो किया, वह कार्य भी; नी चॊल्लिऱ्ऱु अन्ऱो–तुम्हारा कहा हुआ था न; इन्नुम्–आगे भी; नी इचैत्त–तुम जो कहो; चॆय्वान्–वह करने को; इयैन्तनम्–सम्मत है; ऎन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; अन्नतु ओर्–वैसी एक; अमैतियान् तन्–स्थिति में रहनेवाले; अरुळ् (सुग्रीव की) दया; चिऱितु–थोड़ा; अऱिवान्–समझने का; नोक्कि–विचारकर; मारुतियोडुम्–मारुति के साथ; पोनान्–गये। ६२७

पिघले स्वर्ण से निर्मित धनु के धारक लक्ष्मण ने हनुमान से यों कहा। पहले जो प्रयास हमने अपना लिये थे, वे भी तुम्हारे ही कहे हुए थे न? वैसे ही आगे भी हमने तुम्हारी बात मानने को स्वीकार किया है। फिर वे पूर्वकथित स्थिति में रहनेवाले सुग्रीव का मनोभाव जानने के विचार से मारुति के साथ गये। ६२७

अयिल्विऴिक् कुमुदच् चॆव्वायच् चिलैनुद लन्नप् पोक्किन्
मयिलियऱ् कॊडित्ते रल्हुन् मणिनहैत् तिणिवेय् मॆन्ऱोट्
कुयिन्मॊऴिक् कलशक् कॊङ्गै मिन्निडैक् कुमिऴेऱ् मूक्किन्
पुयलियऱ् कून्दन् मादर् कुऴात्तॊडुन् दारै पोनाळ् 628

तारै–तारा; अयिल् विऴि–भाले के समान आँखें; कुमुतम् चॆव्वाय्–कुमुद जैसे लाल अधर; चिलै नुतल्–(और) धनुसदृश भौंहें; अन्नम् पोक्किन्–हंस की-सी चाल; मयिल् इयल्–कलापी-सी छटा; कॊटि तेर् अल्कुल्–पताकाओं से अलंकृत रथ के समान कटि-प्रदेश; मणि नकै–मुक्ता-सम दाँत; तिणि वेय्–सुदृढ़; मॆन् तोळ्–मृदुल कन्धे; कुयिल् मॊऴि–कोयल की-सी बोली; कलचम् कॊङ्कै–स्वर्णकलश-सम उरोज; मिन् इटै–विद्युत्-सी कमर; कुमिऴ्–'कुमिऴ्' नामक फूल के समान; एर्–सुन्दर; मूक्किन्–नाक; पुयल् इयल् कून्तल्–मेघ-सम केश; मातर् कुऴात्तॊटुम्–(इनसे युक्त) स्त्रियों के समूह के साथ; पोनाळ्–लौट चलीं। ६२८

तारा अपनी दासियों और सहेलियों के वृन्दों के साथ लौट चली। वे स्त्रियाँ भी कितनी सुन्दर थीं! भाले के समान आँखें, कुमुद जैसे अधर, धनु के आकार की भौंहें, हंस की-सी चाल, मयूर-सम आभा, ध्वजालंकृत रथों के समान कटि-प्रदेश, मोतियों के समान दाँतों की सुन्दरता, सुदृढ़ वंशवृक्ष के समान कोमल कन्धे, कोकिल का-सा कण्ठस्वर, स्वर्ण कलश-सम उरोज, बिजली-सी कमर और 'कुमिऴ्' नामक फूल के समान नासिका और काले मेघ के समान केश —हर एक स्त्री का यह साज था।

(तारा की वैधव्य-स्थिति पर ध्यान आकर्षित करने के लिए स्त्रियों का यह वर्णन कवि द्वारा विशेष रूप से किया गया है।) । ६२८

वल्लमन् दिरिय रोडु -वालिहा दलनु मैन्दन्
अल्लियङ् गमल मन्न अडिपणिन् दच्चन् दीरन्दान्
विल्लियु मवनै नोक्कि विरैविनॅन् . वरवु वीर
शॊल्लुदि नुन्दैक् कॅन्ऱा नन्ऱॅनत् तॊऴुदु पोनान् 629

वालि कातलन्नुम्–वाली का प्यारा (पुत्र) भी; वल्ल–समर्थ; मन्तिरियरोटु–मन्त्रियों के साथ; मैन्तन्–(राजकुमार) लक्ष्मण के; अल्लि–पंखुड़ियों-सहित; अम् कमलम् अन्न–सुन्दर कमल के समान जो रहे; अटि पणिन्तु–(उनके) चरणों पर नमस्कार करके; अच्चम् तीरन्तान्–भय-विमुक्त हुआ; विल्लियुम्–धनुर्धर (लक्ष्मण) ने भी; अवनै नोक्कि–उसको देखकर; वीर–वीर; ऎन् वरवु–मेरा आना; नुन्तैक्कु–अपने पिता को; विरैविन्–जल्दी; चॊल्लुति–कहो; ऎन्ऱान्–कहा; नन्ऱु–अच्छा; ऎन–कहकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पोनान्–(अंगद) गया। ६२९

वाली के पुत्र अंगद ने लक्ष्मण को देखा, जो राजनीति और उससे सम्बन्धित शास्त्रों में कुशल मन्त्रियों के साथ आ रहे थे। उसने लक्ष्मण के पंखुड़ियों सहित खिले हुए सुन्दर कमल के समान चरणों पर झुककर नमस्कार किया। लक्ष्मण की करुणा देखकर उसका भय जाता रहा। धनुर्धर लक्ष्मण ने अंगद से कहा— वीर! तुम जाओ और अपने पिता से मेरा आना बताओ। अंगद, "अच्छा" कहकर नमस्कार करके चला। ६२९

पोनपिन् ऱादै कोयिल् पुक्कवन् पॊलन्गॊऴ् पादम्
तानुऱप् पऱ्ऱि मुऱ्ऱुन् दैवन्दु तडक्कै वीरन्
मानवर् किळैयोन् वन्दुन् वायिलिन् पुऱत्तान् चीऱ्ऱम्
मीनुयर् वेलै मेलुम् पॅरिदिदु विळैन्द दॅन्ऱान् 630

तट कै वीरन्–बड़े हाथों वाले (अंगद) ने; पोन् पिन्–जाने के पश्चात्; तातै कोयिल् पुक्कु–पिता के महल में जाकर; अवन्–उसके; पॊलम् कॊऴ् पातम्–सुन्दरता-युक्त चरणों को; तान् उऱ पऱ्ऱि–खूब पकड़कर; मुऱ्ऱुम् तै वन्तु–पूर्णरूप से सहलाकर; मानवर्कु–श्रीराम के; इळैयोन्–कनिष्ठ; वन्तु–आकर; उन् वायिलिन् पुऱत्तान्–आपके महल के द्वार के बाहर खड़े हैं; चीऱ्ऱम्–उनका क्रोध; मीन् उयर्–मकर-भरे; वेलै मेलुम्–समुद्र से बढ़कर; पॅरितु–अधिक है; इतु विळैन्ततु–यह (कार्य) हुआ है; ऎन्ऱान्–कहा। ६३०

विशाल और दीर्घ हाथों वाला वीर अंगद वहाँ से चलकर अपने (छोटे) पिता के महल के अन्दर गया। उसने सुग्रीव के स्वर्ण-सम पैरों को पकड़कर सहलाया और कहा कि सम्मान्य श्रीराम के छोटे भ्राता लक्ष्मण

तुम्हारे महल के द्वार पर खड़े हैं। उनका क्रोध मकरालय से भी बड़ा है। यह समाचार है। ६३०

अऱिवुट्र महळिर् वॆळ्ळ मलमरु समलै नोक्किप्
पिऱिवुट्र मयक्कत् तान्मुन् दुट्रदोर् पॆट्रि योरान्
शॆऱिपॊट्रा रलङ्गल् वीर शॆय्दिलङ् गुट्र नम्मैक्
करुवुट्र पॊरुळुक् कॆन्नो कारणङ् गण्ड दॆन्ऱान् 631

अऱिवु उट्र मकळिर् वॆळ्ळम्–बात जो जान गयीं, उन स्त्रियों की भीड़ के; अलमरुम्–थर्राने के; अमलै–शोर को; नोक्कि–देखकर; पिऱिवु उट्र मयक्कत्तान्–छूटे हुए भ्रम वाले (सुग्रीव) ने; मुन्तु–पहले; उट्रतु ओर् पॆट्रि–जो हुआ वह समाचार; ओरान्–न जानकर; चॆऱि पॊन् तार्–पक्के सोने के हारों से भूषित; अलङ्कल् वीर–मालाधारी वीर; कुट्रम् चॆय्तिलॆम्–(हमने) कोई अपराध नहीं किया; नम्मै–हम पर; करुवु उट्र पॊरुळुक्कु–क्रोध करने की बात के लिए; कारणम् कण्टतु–हेतु देखा; ऎन्तो–क्या; ऎन्ऱान्–पूछा। ६३१

सुग्रीव ने थोड़ा जागकर देखा। अंगद के वहाँ आने से वहाँ रहनेवाली स्त्रियों में खलबली-सी मची हुई थी। सुग्रीव अपने मोह से छूटकर पूर्ण रूप से जागा। उसको बीती बातों का कोई ज्ञान नहीं रहा। उसने अंगद से पूछा कि हे स्वर्णघनहारधारी वीर! हमने अपराध तो कुछ नहीं किया। फिर हम पर क्रोध करने का क्या कारण उन्हें मिला है? । ६३१

इयैन्दना ळॆल्लै नीशॆन् ऱॆय्दलै शॆल्व मॆय्दि
वियन्दनै युदवि कॊन्ऱाय् मॆय्यिलै यॆन्न वीङ्गि
उयर्न्दद्दु शीट्र मट्र दुट्रदु शॆय्य मुट्रुम्
नयन्दॆरि यनुमन् वेण्ड नल्हिन्न नम्मै यिन्नुम् 632

इयैन्त नाळ्–सहमत दिनों की; ऎल्लै–अवधि पर; नी–आप; चॆन्ऱु ऎय्तलै–जा नहीं पहुँचे; चॆल्वम् ऎय्ति–विभव प्राप्त कर; वियन्तनै–इतराते हैं; उतवि कॊन्ऱाय्–उपकार का हनन कर चुके; मॆय् इलै–सत्य पालन नहीं है; ऎन्न–ऐसा सोचकर; चीट्रम्–क्रोध; वीङ्कि–बढ़कर; उयर्न्ततु–उठा; नयम् मुट्रुम्–नीति की सभी बातें; तॆरि अनुमन्–जो जानता है, उस हनुमान ने; अतु उट्रतु–उसके (शमन करने) योग्य (कार्य); चॆय्य–किया और; वेण्ट–प्रार्थना की, तब; नम्मै–हमको इन्नुम्–अब भी; नल्किनन्–जीवित रहने दिया। ६३२

अंगद ने सुग्रीव से आगे कहा कि आप निर्धारित अवधि के दिन में श्रीराम के पास नहीं गये। सुख-भोग में इतराते रहे। कृतघ्न बन गये। और झूठे हो गये। ऐसा समझकर लक्ष्मण का कोप बढ़ा-चढ़ा। तब नीति और न्याय-मार्ग सब जाननेवाले हनुमान ने लक्ष्मण के क्रोध को दूर

करने योग्य उपचार किये और लक्ष्मण से विनय की। उसी के फलस्वरूप आज उन्होंने हमको जीवित रहने दिया है। ६३२

वरुहिन्ऱ वेह नोक्कि वानर वीरर् वानैप्
पौरुहिन्ऱ नहर वायिल् पौऱ्कद वडैत्तुक् कर्कुन्ऱ
इरुहीन्ऱ मिलुला वण्णम् वाङ्गिन रडुक्कि मऱ्ऱुम्
तॆरिहिन्ऱ शिनत्ती पॊङ्गच् चॆरुच्चॆय्वान् शॆरुक्कि निन्ऱार् 633

वानर वीरर्–वानर वीर; वरुकिन्ऱ वेकम् नोक्कि–लक्ष्मण का आगमन देखकर; वानै पॊरुकिन्ऱ–गगनस्पर्शी; नकरम् वायिल्–नगर-द्वार; पॊन् कतवु–स्वर्णकपाट; अटैत्तु–बन्द करके; अरुकु–पास; ऒन्ऱुम् इलुला वण्णम्–कोई न रहे, वैसा; कल् कुन्ऱु–चट्टानों को; वाङ्कितर्–ले आकर; अटुक्कि–जोड़कर रखा; मऱ्ऱुम्–और; तॆरिकिन्ऱ–प्रकट जो हो रहा; चिनम् ती–उस क्रोध की आग के; पॊङ्क–भभकते; चॆरु चॆय्वान्–युद्ध करने; चॆरुक्कि निन्ऱार्–गर्वोन्नत खड़े रहे। ६३३

लक्ष्मण बहुत तीव्र गति से आ रहे थे। उनकी गति देखकर वानर वीरों ने आकाश से टकरानेवाले हमारे नगर-द्वार को बन्द किया और वहाँ मिलनेवाली गिरियों को, बिना एक को छोड़े ले आकर कपाट के पीछे जोड़ रखा। और वे अपनी क्रोधाग्नि को प्रकट करते हुए लक्ष्मण से लड़ने के लिए सन्नद्ध खड़े रहे। ६३३

आण्डहै यदनै नोक्कि यम्मलरक् कमलत् ताळिल्
तीण्डिनन् रीण्डा मुन्नन् दॆऱ्कॊडु वडक्कुच् चॆल्ल
नीण्डहन् मदिलुङ् गॊऱ्ऱ वायिलु निरैत्त कुन्ऱुङ्
कीण्डन तहर्न्दु पिन्नैप् पॊडियॊडुङ् गॊळीइय वन्ऱे 634

आण् तकै–पौरुषयुक्त लक्ष्मण ने; अतनै नोक्कि–उसको देखकर; अम्–सुन्दर; कमलम् मलर्–कमलसुमन-सम; ताळिल्–चरणों से; तीण्टिनन्–स्पर्श किया; तीण्टा मुन्नम्–छूने से पहले; तॆऱ्कॊटु वटक्कु चॆल्ल–दक्षिण से उत्तर में खिंचा; नीण्ट कल् मतिलुम्–लम्बा पत्थर का प्राचीर और; कॊऱ्ऱम् वायिलुम्–विजयद्वार; निरैत्त कुन्ऱम्–जोड़कर रखे हुए पर्वत भी; तकर्न्तु–टूटकर; कीण्टन–बिखर गये; पिन्नै–बाद; पॊटियॊटुम् कॊळीइय–धूल के साथ मिल गये। ६३४

पौरुषपूर्ण लक्ष्मण ने वानरों का वह कृत्य देखा और अपने सुन्दर कमल-चरणों से कपाट पर लात मारी। उनके चरण स्पर्श के लगने से पूर्व ही उत्तर-दक्षिण में फैले रहे वे पत्थर के प्राचीर और विजयद्वार और वहाँ जुड़ी रही गिरियाँ —सब टूटकर छितर गयीं और चूर होकर धूल से मिल गयीं। ६३४

अन्निलै कण्ड तिण्डो ळरिक्कुलत् तनिह मन्मा
ऎन्निलै युऱ्ऱ दॆन्गॆन् याण्डुप्पुक् कॊळित्त दॆन्गॆन्

अन्निलै कण्ड वत्तै आयिळै यायत् तोडु
मिन्निलै विल्लि तानै वळियॅदिर् विलक्कि निन्ड्राळ् 635

अ विलै कण्ट—उस स्थिति को जिन्होंने देखा, उन; तिण् तोळ्—सुदृढ़ कन्धों वाले; अरिकुलत्तु—वानरकुल के वीरों की; अनिकम्—सेना; अँ निलै उड्रत्तु—किस स्थिति को पहुँच गयी; ॲन्केन्—कहूँगा; याण्टु पुक्कु—कहाँ जाकर; ऑळित्तत्तु—छिप गयी; ॲन्केन्—कहूँ; अ निलै कण्ट—(जिसने) उस स्थिति को देखा वह मेरी माता; आय् इळै—सुन्दर आभरणालंकृत; आयत्तोडु—स्त्रियों के समूह के साथ; मिन् इलै—विद्युत् की चमक का आश्रय; विल्लितानै—जो धनु था, उसके धारक के; ॲतिर्—सामने; वळि विलक्कि—मार्ग रोके; निन्ड्राळ्—खड़ी रहीं। ६३५

उस हालत को देखकर बली भुजाओं वाले वानर वीरों की उस सेना की क्या स्थिति हुई, यह मैं क्या कहूँ ? कहाँ जाके छिप गयी, यह कैसे कहूँ ? वानर-सेनाओं की वह स्थिति देखकर मेरी माता तारा चुने हुए आभरणों से अलंकृत स्त्रियों के समूह के साथ लक्ष्मणजी के, जिनके हाथ में विद्युच्छटाधारी धनु था, मार्ग में जाकर उनको रोका। ६३५

मङ्गैयर् मेति नोक्कान् मैन्दनु मनत्तु वन्द
पॉङ्गिय शीड्रम् माड्रिप् पुहल्हिलन् पॉरुमि निन्ड्रान्
नङ्गैयु मिन्तिडु कूड्रि नायह नडन्द दॆन्नो
ॲङ्गळ्पा लॆन्नक् केट्टा ळिलवलुम् वरवु शॊन्नान् 636

मैन्तनुम्—कुमार; मङ्कैयर् मेति—रमणियों के रूप; नोक्कात्—नहीं देखते; मनत्तु—मन में; वन्त पॉङ्किय—आकर जो उफन रहा था, वह; चीड्रम् माड्रि—क्रोध दूर करके; पुकल्किलन्—नहीं बोलते; पॉरुमि निन्ड्रान्—भाव-भरे खड़े रहे; नङ्कैयुम्—रमणी-नायिका तारा ने; इत्तिवु कूड्रि—मधुर वचन कहकर; नायक—नाथ; ॲङ्कळ् पाल्—हमारे पक्ष में; नटन्ततु ॲन्नो—हुआ क्या; ॲन्न—ऐसा; केट्टाळ्—पूछा; इळवलुम्—कनिष्ठ राजा ने भी; वरवु—आने का कारण; चॊन्नान्—बताया। ६३६

राजकुमार लक्ष्मण ने न उन स्त्रियों का रूप अपनी आँख उठाकर देखा, न अपने मन का क्रोध दबाते हुए कुछ कहा। लेकिन वे गुस्से से भरे खड़े रहे। तब स्त्रियों में नायिका (तारा) मेरी माता ने लक्ष्मण से मधुर वचन कहे। वे बोलीं— प्रभु ! आप हमारे पास (श्रीराम को अकेला छोड़कर) इधर पैदल आये हैं। वह क्यों ? इस प्रश्न के उत्तर में लक्ष्मण ने अपने आगमन का कारण बताया। ६३६

अदुपॅरि दरिन्द वन्नै यन्नवत् शीड्र माड्रि
विदिमुरै मरन्दा नल्लन् वॅञ्जिनच् चेनै वॅळ्ळम्
कदुमॅनक् कॊणरुन् दूदु कल्लदर् शॆल्ल वेवि
ॲदिर्मुरै यिरुन्दा नॆन्ड्रा ळिदुविड्गुप् पुहुन्द दॆन्ड्रान् 637

अतु–वह; पॅरितु–खूब (विस्तृत रूप से); अऱिन्दुन–(जिन्होंने) जान लिया उन; अन्नै–माता तारा ने; अन्नवन् चीऱ्ऱम्–उनका क्रोध; आऱ्ऱि–शान्त करके; विति मुऱै–आज्ञा का प्रकार; मऱन्दान् अल्लन्–भूले नहीं हैं; वॆम् चितम्–भयंकर क्रोध-युक्त; चेनै वॆळ्ळम्–सेना की बाढ़ को; कतुमॆन–तुरन्त; कॊणरुम्–लानेवाले; तूतु–दूतों को; कल् अतर् चॆल्ल–पर्वत-मार्ग में जाने को; एवि–आज्ञा देकर; ऍतिर् मुऱै–उनकी प्रतीक्षा में; इरुन्दान्–रहे; ऍन्ऱाळ्–कहा; इतु–यही; इङ्कु–यहाँ; पुकुन्ततु–घटकर रहा; ऍन्ऱान्–कहा (अंगद ने)। ६३७

कारण को ठीक तरह से जानकर मेरी माता ने उनका क्रोध शान्त करते हुए कहा कि सुग्रीव श्रीराम की आज्ञा का प्रकार नहीं भूले हैं। अत्यन्त क्रोधशील वानर-सेना के बहुत बड़े अंश को जल्दी ले आने के लिए ऐसा करनेवाले दूतों को पर्वतमार्ग में जाने के लिए भेजकर वे उन दूतों की प्रतीक्षा में है। अंगद ने यह समाचार देकर सुग्रीव से कहा कि यही यहाँ हुआ समाचार है। ६३७

शॊऱ्ऱलु मरुक्कन् ऱोन्ऱल् शॊल्लुवान् मण्णिन् विण्णिन्
निऱ्कुरि यार्हळ् याव रनैयवर् शिनत्ति नेर्न्दाल्
विऱ्कुरि यारित् तन्मै वॆहुळियिन् विरैवि नैयद
ऍऱ्कुरै यादु नीरी दियऱ्ऱिय दॆन्गॊ लॆन्ऱान् 638

चॊऱ्ऱलुम्–कहने पर; अरुक्कन् तोन्ऱल्–अर्कपुत्र; चॊल्लुवान्–बोला; अन्नैयवर् चिनत्तिन्–वे क्रोध के साथ; नेर्न्दाल्–आएँ तो; मण्णिन्–भूलोक में; विण्णिन्–व्योमलोक में; निऱ्क उरियार्कळ्–खड़े रह सकनेवाले; यावर्–कौन होंगे; विऱ्कु उरियार्–धनुर्वीर; इ तन्मै–इस प्रकार; वॆकुळियिन्–कोप के साथ; विरैविन् ऍय्त–सवेग आये और; ऍऱ्कु उरैयातु–मुझसे न कहकर; नीर्–तुम लोगों ने; ईतु इयऱ्ऱियतु–यह किया; ऍन् कॊल्–क्या कारण है; ऍन्ऱान्–पूछा। ६३८

अंगद के यह कहने पर सूर्यपुत्र बोला। अगर श्रीराम और लक्ष्मण कोप करके लड़ने आयें, तो उनके सामने टिक सकनेवाले भूमि पर या आकाश में कौन हैं? धनुर्धर वे वीर इतनी जल्दी कोप के साथ इधर आये हैं, इसकी खबर मुझे न देकर तुम लोगों ने ऐसा किया है। इसका कारण क्या है? । ६३८

उणर्त्तिनेन् मुन्नर् नीयः(ह्) दुणर्न्दिलै युणर्विर् ऱीर्न्दाय्
पुणर्प्पदॊन् ऱिन्मै नोक्कि मारुदिक् कुरैप्पान् पोनेन्
इणर्त्तोहै यीन्ऱ पॊऱ्ऱा रॆरुळ्वलित् तडन्दो ळॆन्दाय्
कणत्तिडै यवनै नीयुङ् गाणुदल् करुम मॆन्ऱान् 639

इणर् तॊकै ईन्ऱ–फूलों के गुच्छों से बनी; पॊन् तार्–सुन्दर माला से अलंकृत; ऍरुळ् वलि–बहुत बल से युक्त; तट तोळ्–विशाल भुजा वाले; ऍन्ताय्–मेरे पिता; मुन्नर् उणर्त्तिनेन्–पहले समझाया; नी–आप; उणर्विल् तीर्न्ताय्–बेसुध रहे;

अ.'.तु उणर्न्तिलै–वह नहीं समझे; पुणर्प्पतु–उपाय; ऑन्ऱु इन्मै–एक नहीं रहा, वह; नोक्कि–देखकर; मारुतिक्कु–हनुमान के पास; उरैप्पान्–कहने के लिए; पोत्तेन्–गया; कणत्तिटै–एक पल के अन्दर; अवर्त्त–उनसे; नीयुम्–आप भी; काणुतल्–जा मिलें; करुमम्–(वही) कर्तव्य है; ॲन्ऱान्–कहा। ६३९

सुग्रीव के ऐसा पूछने पर अंगद ने उत्तर दिया— फूलों के गुच्छों की बनी सुन्दर माला से अलकृत सशक्त कन्धों वाले मेरे तात! मैंने आपसे पहले ही निवेदन किया। लेकिन आप बेसुध रहे। इसलिए आपने नहीं समझा। तब मैंने करने योग्य कोई काम नहीं रहा दिखा। इसलिए मैं मारुति के पास कहने गया। एक पल के अन्दर आप श्रीलक्ष्मणजी से जाकर मिलें। यही आपको अब करना है। ६३९

उऱवुण्ड शिन्दै यान् मुरैशॅय्वा नॊरुवर्क् किन्नम्
पॅऱलुण्डे यवरा लीण्डियान् पॅऱ्ऱ पेरुदविच् चॅल्वम्
इऱवुण्डाळ् पॊरुट्टार् ऱीरा दिरुन्दपे रिडरै यॅल्लाम्
नऱवुण्डु मऱन्देन् काण नाणुवॅन् मैन्द वॅन्ऱान् 640

उऱवु उण्ट–श्रीराम के प्रति मित्रता से युक्त; चिन्तैयान्नुम्–मन वाला; उरै चॅय्वान्–वचन बोला; मैन्त–पुत्र; अवराल्–उनके द्वारा; ईण्टु–यहाँ; यान् पॅऱ्ऱ–जो मैने प्राप्त किया; पेर् उतवि चॅल्वम्–वह उपकार और धन-वैभव; ऑरुवर्कु–किसी से; इन्नम् पॅऱल्–और प्राप्त करना; उण्टे–हो सकता है क्या; इऱवु उण्टाळ्–अलग जो हो गयीं, उन; पॊरुट्टाल्–सीतादेवी के हेतु; तीरातु इरुन्त–बिना दूर हुए जो रहा, वह; पेर् इटरै ॲल्लाम्–सभी बड़ा दुःख; नऱवु उण्टु–सुरा पान कर; मऱन्तेन्–भूले रहा; काण–(लक्ष्मण से) भेंट करने से; नाणुवन्–शरमाता हूँ; ॲन्ऱान्–कहा। ६४०

श्रीराम के प्रति जिसके मन में मित्रता का नाता था, वह सुग्रीव अंगद से बोला— पुत्र, श्रीराम जी के द्वारा जो परमोपकार का धन मुझे मिला है, वह क्या किसी दूसरे को प्राप्य हो सकता है? (मैं यह जानता हूँ। लेकिन) सीताजी के वियोग से श्रीराम पर जो अचल संकट आया है, उसको मैं सुरा पीकर उसके नशे में भूल गया था। इसलिए अब लक्ष्मणजी को देखने से शर्माता हूँ। ६४०

एयिन नऱवल् लान्मऱ् ऱॆळैमैप् पाल दॆन्नो
तायवळ् मनैवि यॆन्नुन् दॆळिविन्ऱेऱ् ऱरुम मॆन्नाम्
तीविनै यैन्दि नॊन्ऱा मन्ऱियुन् दिरुक्कु नीङ्गा
माययिन् मयङ्गु हिन्ऱाम् मयक्कित्मेन् मयक्कुम् वैत्ताम् 641

एयिन–मुझमें लगी हुई; नऱवु अल्लाल्–सुरापान की आदत के सिवा; मऱ्ऱु–और कोई; एळैमैप्पालतु–मूर्खता की प्रवृत्ति; ॲन्नो–कौन सी है; तायवळ्–माता; मनैवि–पत्नी; ॲन्नुम्–इनमें भेद करने की; तॆळिवु इन्ऱेल्–स्पष्ट बुद्धि

नहीं हो तो; तरुमम्–अन्य धर्मों का पालन; ॲन् आम्–क्या होगा; ती वित्तै–महापातक; एन्तिन् ऑन्ड्राम्–पाँच में एक है; अन्ड्रियुम्–और भी; तिरुक्कु नीङ्का–वंचना से जुड़ी हुई; मायैयिल्–माया के वश में; मयङ्कुकिन्ड्राम्–मोहित हैं; मयक्किन् मेल्–(ऐसे) मोह के ऊपर; मयक्कुम् वैत्ताम्–सुरापान का नशा चढ़ा दिया (हमने)। ६४१

मेरे पास यही एक बुरी आदत लगी हुई है। इस सुरापान के अलावा और कोई दुर्गुण मेरे पास क्या है? यह सुरापान ऐसा है, जो माता और पत्नी में भी भेद जानने की बुद्धि को हर लेता है। फिर मनुष्य के पास अन्य धर्म रहा तो क्या लाभ है। यह सुरापान की आदत पाँच (हत्या, असत्य, चोरी, सुरापान और गुरु-निन्दा) महापातकों में एक है। और भी, हम पहले ही कपटी माया के वश में हैं। उस माया-मोह के ऊपर हमने यह नशा भी जोड़ दिया है। ६४१

तॅळिन्दुती वित्तैयैत् तीरन्दोर् पिऱवियैत् तीरव रॅन्ऱा
विळिन्दिला वुणर्वि त्तोरुम् वेदमुस् विळम्बव वेयुम्
नॅळिन्दुऱै पुऴुवै नीक्कि नऱवुण्डु निऱैहिन् ऱेनाल्
अळिन्दहत् तॅरियुन् दीयै नॅय्यिना लविक्किन् ऱामाल् 642

तॅळिन्तु–मन में साफ़ होकर; तीवित्तैयै–बुरे कर्मों को; तीरन्तोर्–जिन्होंने त्यागा है, वे; पिऱवियै तीरवर्–जन्म से छूट जायेंगे; ॲन्ऱा–ऐसा; विळिन्तिलर्–अभ्रान्त; उणर्वित्तोरुम्–ज्ञान रखनेवालों और; वेतमुम् वेदों का; विळम्पवेयुम्–कहा हुआ होने पर भी; नॅळिन्तु उऱै–रेंगते रहनेवाले; पुऴुवै–कीड़ों को; नीक्कि–हटाकर; नऱवु उण्टु–ताड़ी पीकर; निऱैकिन्ऱेन्–संतुष्ट रहता हूँ; अळिन्तकम्–वेदी पर; ऍरियुम् तीयै–जलती आग को; नॅय्यिनाल्–घी द्वारा; अविक्किन्ऱाम्–बुझाते हैं। ६४२

विवेक प्राप्त कर जिनका मन शुद्ध हो गया है, और जिन्होंने उस विवेक के फलस्वरूप पाप-कर्म को छोड़ दिया है, वे जन्म-कर्म से छूट जाते है। अविनश्वर ज्ञान से युक्त तत्त्वज्ञ लोग और वेदों ने यही कहा है। उसको जानकर भी मैं ताड़ी से, उसमें रेंगते रहनेवाले कीड़ों को हटाकर उसे पीता हूँ और अघाता हूँ। यह ऐसा काम है कि हम यज्ञ-वेदी पर जलनेवाले आग को आग से बुझाने का (मूर्ख) प्रयास करें। ६४२

तन्नैत्ता नुणरत् तीरुन् दहैयऱ पिऱवि यॅन्ब
दॅन्नत्तान् मऱैयु मऱ्ऱैत् तुऱैहळु मिशैत्त वॅल्लाम्
मुन्नैत्तान् ऱन्नै योरा मुळ्प्पिणि यळ्क्किन् मेले
पिन्नैत्तान् पॅऱुव दम्मा नऱवुण्टु तिहैक्कुम् बित्ते 643

तान् तन्नै उणर–कोई अपना आत्मस्वरूप पहचाने तब; तकै अऱु–गौरवहीन; पिऱवि ॲन्पतु–जन्म; तीरुम्–छूट जाता है; ॲन्नत्तान्–ऐसा ही; मऱैयुम्–वेद

और; मऱ्ऱै तुऱैकळुम्–अन्य शास्त्र; अॅल्लाम्–सभी; इचैत्त–कहते हैं; मुऩ्ऩै–पहले ही; ताऩ् तऩ्ऩै ओरा–आत्मा को न पहचानने का; मुळ्ळु पिणि–पूर्ण रोग और; अळुक्किऩ् मेले–कल्मश जो है, उस पर; पिऩ्ऩै–फिर भी; नऱवु उण्टु–ताड़ी पीकर; तिकैक्कुम् पित्तु–भ्रमित हो रहने का पागलपन; पॅऱुवतु–पाना (उचित है क्या ?)। ६४३

स्वस्वरूप जानने पर यह क्षुद्र जन्म मिट जायगा। यही वेद और अन्य वेदांग, शास्त्र आदि समझाते हैं। पहले ही हमने शरीर पाया है, जो आत्मज्ञानहीनता के कारण हमें मिला है और जो रोगपूर्ण और मलिन है। तिस पर नशा पैदा करनेवाले पान से मोह का पागलपन ताड़ी पीकर प्राप्त कर लेना कैसा काम है ? मैया री ! । ६४३

चॅऱ्ऱदुम् बहैजर् नट्टार् शॅय्दपे रुदवि तानुम्
कऱ्ऱदुङ् गणक्कू डाहक् कण्डदुङ् गलैव लाळर्
शॊऱ्ऱदु मानम् वन्दु तॊडर्न्ददुम् बडर्न्दु तुऩ्बम्
उऱ्ऱदु मुणर्व रायि ऩुऱुदिवे ऱिदनि नुण्डो 644

पकैञर् चॅऱ्ऱतुम्–शत्रु द्वारा किया हुआ और; नट्टार् चॅय्त–मित्रकृत; पेर् उतवि तानुम्–बड़ा उपकार; कऱ्ऱतुम्–सीखा हुआ; कण् कूटाक–अपनी आँखों से; कण्टतुम्–दर्शित; कलैवलाळर्–शास्त्रज्ञों का; चॊऱ्ऱतुम्–कहा हुआ और; मानम् वन्तु–गौरव का आकर; तॊटर्न्ततुम्–लगना; तुऩ्पम् पटर्न्तु–दुःख का आकर; उऱ्ऱतुम्–लगना; उणर्वर् आयिन्–(यह सब) परखकर जानेंगे तो; इततिन् वेऱु–इससे अलग; उऱुति उण्टो–कोई हित होगा क्या। ६४४

शत्रु का वैर करना, मित्रकृत बड़ा उपकार, विद्या का ज्ञान, अपनी आँखों से देखी हुई बात, शास्त्रोक्त विषय, सम्मान की प्राप्ति, दुःख का आगमन —इन बातों की स्थिति को कोई ठीक-ठीक जान ले, तो इससे बढ़कर हितकारी क्या हो सकता है ? । ६४४

वञ्जमुङ् गळवुम् बॊय्यु मयक्कमु मरबिल् कॊट्पुम्
तञ्जमॆऩ् ऱारै नीक्कुन् दऩ्मैयुङ् गळिप्पुन् दाक्कुम्
कञ्जमॆल् लणङ्गुन् दीरुङ् गळ्ळिऩा लरुन्दि नारै
नञ्जमुङ् गॊल्व दल्ला नरहिऩै नल्हा दऩ्ऱे 645

कळ्ळिताल्–सुरा (-पान) से; वञ्चमुम्–छल; कळवुम्–चोरी; पॊय्युम्–असत्य; मयक्कमुम्–मोह; मरपिल्–परम्पराविरुद्ध; कॊट्पुम्–आचरणचक्र; तञ्चम् ॲऩ्ऱारै–शरणागतों को; नीक्कुम् तऩ्मैयुम्–छोड़ देने का दुर्गुण; कळिप्पुम्–मद; ताक्कुम्–(ये सब) दुःख देंगे; कञ्चम् मॆल् अणङ्कुम्–कमलवासिनी कोमल श्रीदेवी भी; तीरुम्–छोड़ जायगी; नञ्चमुम्–विष भी तो; अरुन्तिनारै–पान करनेवाले को मारना छोड़; नरकिऩै–नरक को; नल्कातु–नहीं दिलायगा। ६४५

इस सुरापान से छल, चोरी, झूठ, मोह, परम्पराविरुद्ध आचरणचक्र,

शरणागत को भगा देने का गुण, घमण्ड आदि मद्यप को सताते हैं। और भी कमल-निवासिनी कोमलांगी श्री भी उसको छोड़ जाती है। विष भी पीनेवाले को मारता है, पर नरक में नहीं भेजता। लेकिन यह ताड़ी नरक दिला देती है। ६४५

केट्टन नऱ्‌वाऱ् केडु वरुमॆनक् किळत्तु मच्चॊल्
काट्टिय दनुम नीदिक् कल्वियाऱ् कडन्द दल्लाल्
मीट्टिनि युरॆप्प दॆन्ऩे विरॆविन्वन् दडॆन्द वीरन्
मूट्टिय वॆहुळि यानाम् मुडिवदऱ् कैय मुण्डो 646

नऱ्‌वाल्–ताड़ी (पीने) से; केटु वरुम्–हानि होगी; ऍन–ऐसा; केट्टनन्–(मैंने) सुना है; किळत्तुम्–कथित; अ चॊल्–उस बात ने; काट्टियतु–(अपनी यथार्थता) दिखा दी; मीट्टु इनि–और आगे; उरॆप्पतु–कहना; ऍन्ऩे–क्या है; कटन्ततु–(आफ़त) पार की; अनुमन् नीति–हनुमान के नीतिशास्त्र के; कल्वियाल्–अध्ययन (-ज्ञान) से; अल्लाल्–नहीं तो; विरॆविन् वन्तु–सवेग आ; अटॆन्त वीरन्–जो पहुँचे उन वीर (लक्ष्मण) के; मूट्टिय वॆकुळियाल्–उभरे हुए क्रोध से; नाम्–हमारे; मुटिवतऱ्‌कु–मर मिटने में; ऍयम् उण्टो–सन्देह रहा क्या। ६४६

ताड़ी पीने से हानि होगी, यह मैंने सुना भर था। अब देखता हूँ कि उसने अपना सारा बल दिखा दिया है। और आगे कहने को क्या है? जो संकट होनेवाला था उससे हम बचे, हनुमान की नीति-बुद्धि से। नही तो त्वरित गति से आगत वीर लक्ष्मण के उभरते क्रोध से हमारे मर जाने में कोई सन्देह रहा है क्या ? । ६४६

ऐयना नञ्जि नेनिन् नऱ्‌विनि नरिय केडु
कैयिना लन्ऱि यॆयुङ् गरुदुदल् करुम मन्ऱाल्
वॆय्यदा मदुवै यिन्नुम् विरुम्बिन्ऩे नॆन्निन् वीरन्
शॆय्यदा मरॆह ळन्न शेवडि शिदैत्ते नॆन्ऱान् 647

ऐय–सुन्दर; इ नऱ्‌वितिन्–इस ताड़ी की; अरिय केटु–अवार्य हानि से; नान् अञ्चित्तेन्–मैं डरा; कैयिताल् अन्ऱिये–हाथ से ही नहीं; करुतुतलुम्–मन से स्पर्श करना भी; करुमम् अन्ऱु–करनेयोग्य काम नहीं है; वॆय्यतु आम्–भयंकर; मतुवै–मद्य को; इन्नुम् विरुम्पिनेन्–और चाहा; ऍन्ऩिन्–तो; वीरन्–वीर श्रीराम के; चॆय्य तामरैकळ्–लाल कमलों के; अन्न–समान; चे अटि–लाल चरणों में (विश्वास); चितैत्तेन्–नष्ट करनेवाला बनूँगा; ऍन्ऱान्–कहा (सुग्रीव ने)। ६४७

सुन्दर अंगद ! मैं इस मद्यपान के अहित करने के गुण से डरा। हाथ मे लेना क्या, इसका मन में विचार लाना भी योग्य काम नहीं। यह सुरा बड़ी भयंकर है। आगे भी इसको चाहूँ तो वीर श्रीराम के लाल कमल-सम सुन्दर चरणों के प्रति अपराध करनेवाला बन जाऊँगा। —सुग्रीव ने यह सब कहा। ६४७

ऍन्ऱुकॊण् डियम्बि यण्णऱ् कॆदिऱ्हॊळऱ् कियैन्द वॆल्लाम्
नन्ऱुकॊण् डिन्ऱु नीये नणुहॆन्ऩ ववनै येवित्
तन्ऱुणैत् तेवि माऱ्हळ् तमरॊडुन् दळुवत् तानुम्
निन्ऱनन् नॆडिय वायिऱ् कडैत्तलै निवन्द नीरान् 648

ऍन्ऱु–ऐसा; निवन्त नीरान्–उत्कृष्ट स्वभाव वाले; इयम्पि कॊण्टु–कहते हुए; अण्णऱ्कु–महिमावान (लक्ष्मण) के; ऍतिर्कॊळऱ्कु–स्वागत के लिए; इयैन्त ऍलाम्–योग्य सभी पदार्थ; नऩ्ऱु कॊण्टु–भलीभाँति लेकर; इऩ्ऱुम् नीये–अब भी तुम्हीं; नणुकु–पास जाओ; ऍन–ऐसा; अवनै एवि–उस (अंगद) को भेजकर; तन् तुणै तेविमार्कळ्–अपनी संगिनी पत्नियों के; तमरॊटुम् तऴुव–अपने रिश्तेदारों के साथ घेरकर आते; तानुम्–खुद भी; नॆटिय वायिल्–उन्नत द्वार के; कटैत्तलै–मुख पर; निन्ऱनन्–खड़ा रहा। ६४८

उत्कृष्ट गुण-प्राप्त सुग्रीव ऐसा कहते हुए उठा और अंगद से बोला कि लक्ष्मण के स्वागतार्ह सभी साज लेकर अभी तुम्हीं जाओ। अंगद को भेजने के बाद सुग्रीव आकर महल के गोद्वार पर प्रतीक्षा में खड़ा रहा। उसके साथ उसकी संगिनी पत्नियाँ अन्य रिश्तेदारों के साथ उसको घेरे खड़ी रहीं। ६४८

उरैत्तशॆञ् जान्दुम् बूवुम् चुण्णमुम् बुहैयु मूऴिन्
निरैत्तपॊऱ् कुडमुन् दीब शालमु निहरिल् मुत्तुम्
कुरैत्तॆळु विदानत् तोडु तॊङ्गलुङ् गॊडियुञ् जङ्गुम्
इरैत्तिमिऴ् मुरचुम् मुऱ्ऱु मियङ्गिन वीदि यॆल्लाम् 649

उरैत्त–घिसकर बना; चॆम् चान्तुम्–श्रेष्ठ चन्दन-लेप और; पूवुम्–फूल; चुण्णमुम्–सुगन्ध-चूर्ण; पुकैयुम्–धुआँ; ऊऴिन् निरैत्त–पंक्ति में रखे हुए; पॊन् कुटमुम्–स्वर्णकलश (पूर्णकुम्भ); तीपचालमुम्–दीपजाल; निकर् इल्–अनुपम; मुत्तुम्–मोती; कुरैत्तु ऍऴु–शब्दायमान; वितानत्तॊटु–वितानों के साथ; तोङ्कलुम्–झालर और; कॊटियुम्–ध्वजाएँ और; चङ्कुम्–शंखनाद; इरैत्तु इमिऴ्–जोर से शोर करनेवाली; मुरचुम्–भेरियाँ और; मुऱ्ऱुम्–सभी; वीति ऍल्लाम्–वीथियों भर में; इयङ्किन–भर गये। ६४९

तव किष्किन्धा नगर की वीथियों में सभी मंगल द्रव्य और अन्य साज भर गये। खूब पिसा हुआ लाल चन्दन-लेप, फूल, सुगन्धचूर्ण धूप, पंक्तियों में रखे हुए जल-भरे स्वर्णकलश, दीप-जाल, अनुपम मुक्तामालाएँ, शब्द के साथ उठनेवाले वितान, मोरपंखों के झालर, ध्वजाएँ —इनके साथ शंख और जोर से बजनेवाली भेरियाँ आदि दिखायी दीं। ६४९

तूयतिण् पळिङ्गिऱ् चॆय्द शुवर्हळिऱ् ऱलत्तिऱ् चुऱ्ऱिल्
नायह मणियिऱ् चॆय्द नलिनॆडुन् दूणि नाप्पण्
शायैपुक् कुऱलाऱ् कण्डो रयर्वुऱु तहैवि लोडुम्
आयिर मैन्दर् वन्दा रुळरॆनप् पॊलिन्द दव्वूर् 650

अ ऊर्–वह नगर; तूय–पवित्र; तिण् पळिङ्किऩ्–कठिन स्फटिक की; चॆय्त चुवर्कळिऩ्–बनी हुई दीवारों के; तलत्तिल्–तल में; चुट्रिल्–ओर चारों ओर; नायकम् मणियिऩ् चॆय्त–अत्युत्कृष्ट मणियों के बने; नति नॆटुम् तूणिऩ्–बहुत ऊँचे खम्भों के; नाप्पण–मध्य; चायै पुक्कु उट्रलाल्–(श्रीलक्ष्मण के रूप की) परछाईं के जा लगने से; कण्टोर्–दर्शक; अयर्वु उऱ–थक जायँ, ऐसे; तकै विल्लोटुम्–महान धनु के साथ; आयिरम् मैन्तर्–सहस्र-सहस्र वीर कुमार; वन्तार् उळर्–आये हैं; ऎऩ–ऐसा; पॊलिन्ततु–शोभायमान हुआ। ६५०

(लक्ष्मण वीथी में आ रहे थे; तब) किष्किन्धा के घर की दीवारें दृढ़ और शुद्ध स्फटिक की बनी थीं। खम्भे भी श्रेष्ठ नवरत्न-जड़े थे। लक्ष्मण का रूप उन पर प्रतिबिम्बित हुआ। तब ऐसा लगा कि हजारों वीर कुमार दर्शकों के मन को भ्रांत करनेवाले धनु लेकर आ रहे हों। ६५०

अङ्गदऩ् पॆयर्त्तुम् वन्दाण् डडिदॊऴु दाऩै यैयऩ्
ऎङ्गिरुन् दानुङ् गोमा ऩॆऩ्ऱलु मॆदिर्हो ळॆण्णि
मङ्गुऱोय् कोयिऱ् कॊऱ्ऱक् कडैत्तलै मरुङ्गु निऩ्ऱाऩ्
शिङ्गवे ऱऩैय वीर शॆय्दवच् चॆल्व ऩॆऩ्ऱाऩ् 651

पॆयर्त्तुम्–लौटकर, फिर; आण्टु वन्तु–वहाँ आकर; अटि तॊऴुतान्–जिसने चरणों पर सिर झुकाया; अङ्कतऩै–उस अंगद को; ऐयऩ्–प्रभु लक्ष्मण (के); उम् कोमाऩ्–तुम्हारे राजा; ऎङ्कु इरुन्तान्–कहाँ रहा; ऎऩ्ऱलुम्–पूछते ही; चिङ्कम् ऐऱु अऩैय–पुरुषसिंह-सदृश; वीर–वीर; चॆय् तवम्–संपन्न तपस्वी; चॆल्वऩ्–धन के स्वामी; ऎतिर् कोळ् ऎण्णि–अगवानी करने के विचार से; मङ्कुल् तोय्–जिस पर मेघ ठहरते हैं; कोयिल्–उस महल के; कॊऱ्ऱम् कटैत्तलै–विजय-द्वार के; मरुङ्कु निऩ्ऱाऩ्–पास खड़े हैं; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ६५१

अंगद ने फिर वहाँ आकर लक्ष्मण के चरणों पर नमस्कार किया। तब सुन्दर लक्ष्मण ने अंगद से पूछा कि तुम्हारा राजा रहा कहाँ? यह प्रश्न करने पर अंगद ने उत्तर दिया— पुरुषसिंह-सम वीर! पुण्यधन! सुग्रीव आपके स्वागत का विचार लेकर मेघाश्रय योग्य विजय द्वार के पास खड़े हैं। ६५१

शुण्णमुन् दूशुम् वीशिच् चूडहत् तॊडिक्कै मादर्
कण्णहऩ् कवरिक् कऱ्ऱैक् कालुऱक् कलैवॆण् डिङ्गळ्
विण्णुऱ वळर्न्द दॆऩ्ऩ वॆण्गुडै विळङ्ग वीर
वण्णविऱ् करत्ताऩ् मुऩ्ऩर्क् कविक्कुलत् तरशऩ् वन्दाऩ् 652

चूटकम्–चूड़े; तॊटि–'तोडि' आदि; कै–जिन्होंने हाथ मे पहने हैं; मातर्–वे स्त्रियाँ; चुण्णमुम्–सुगन्धचूर्ण और; तूचुम् वीचि–वस्त्र बिखेरकर; कण् अकल्–विशाल; कवरि कऱ्ऱै–चामरों की राशियों से; काल् उऱ–हवा करती हैं, वैसे; कलै–कलाओं से पूर्ण; वॆळ् तिङ्कळ्–श्वेत चाँद; विण् उऱ–आकाश स्पर्श

करते हुए; वळर्न्ततु ॲन्न–बढ़ गया हो ऐसे; वॅळ् कुटै–श्वेतछत्र; विळङ्क–शोभायमान हैं, ऐसे; वीरम्–वीरोचित; वण्णम् विल्–सुन्दर धनु के; करत्तान्–धारक हस्तों वाले; मुन्नर्–के सामने; कविकुलत्तु अरचन्–कपिकुलराज; वन्तान्–आया। ६५२

सुग्रीव आया। (उसके जुलूस का ठाट देखिये।) चूड़े और "तोंड़ी" नाम के कंकणधारिणी वानर-नारियाँ सुगन्ध-चूर्ण और वस्त्र उछालते हुए और विशाल चामर डुलाकर हवा करते हुए आयीं। सोलहों कलाओं से पूर्ण श्वेत चन्द्र आकाश में लगे शोभित हो रहे हों —ऐसे श्वेतछत्र दिखायी दे रहे थे। इस ठाट के साथ कपिकुलाधिपति पौरुषयुक्त और सुन्दर धनुर्धर लक्ष्मण के सामने आया। ६५२

अरुक्किय मुदल वाय वरुच्चनैक् कमैन्द यावुम्
मुरुक्किदळ् महळि रेन्द मुरशिन मुहिलि नार्प्प
इरुक्किन मुनिव रोद विशैदिशै यळप्प याणर्त्
तिरुक्किळर् शॅल्व नोक्कित् तेवरु मरुळच् चॅन्रान् 653

मुरुक्कु इतळ्–कँटीले पलाश के फूल के समान अधरों की; मकळिर्–स्त्रियाँ; अरुक्कियम् मुतल आय–अर्घ्य आदि (पूजार्ह); यावुम् एन्त–सब लेती आयीं; मुरचु इनम्–भेरियों के समूहों ने; मुकिलिन्–मेघों के समान; आर्प्प–घोष किया; मुनिवर्–मुनियों ने; इरुक्कु इनम्–ऋचाओं (वेद-मन्त्रों) का; ओत–उच्चारण किया; इचै–संगीत; तिचै–दिशाओं को; अळप्प–मापता रहा; याणर् तिरु–नव वैभवयुक्त; किळर् चॅल्वम्–पुष्कल धन को; नोक्कि–देखकर; तेवरुम् मरुळ–देव भ्रमित हुए; चॅन्रान्–(इस साज के साथ) सुग्रीव चला। ६५३

कँटीले पलाश तरु के पुष्पों के समान अधर वाली अंगनाएँ अर्घ्य आदि पूजा की सामग्रियाँ हाथ में लेती हुई आयीं। भेरियों का समूह मेघों के समान गर्जन कर रहा था। मुनिगण वेदपारायण करते हुए आये। संगीत का नाद दिशाओं को माप (व्याप्त कर) रहा था। सुग्रीव के नव-वैभव को देखकर देव भी चकित हो गये। इस रीति से सुग्रीव गया। ६५३

वॅम्मुलै महळिर् वॅळ्ळ मीनॅन विळङ्ग विण्णिल्
शुम्मैवान् मदियङ् गुन्ऱिऱ् ऱोन्ऱिय वॅन्नवुन् दोन्ऱिच्
चॅम्मलै यॅदिर्हो ळॅण्णित् तिरुवॊडु मलर्न्द शॅल्वन्
अम्मलै युदयन् ऱॅय्युन् दादैयु मन्नै यानान् 654

चॅम्मलै–नायक को; ॲतिर् कोळ् ॲण्णि–स्वागत करना चाहकर; तिरुवॊटु मलर्न्त–राज्यश्री के साथ प्रफुल्ल; चॅल्वन्–धनी; वॅम्मुलै–मनोरम उरोजों वाली; मकळिर् वॅळ्ळम्–स्त्रियों की बाढ़ के; विण्णिल् मीन् ॲन–आकाश में नक्षत्रों के समान; विळङ्क–शोभित होते; कुन्ऱिल् तोन्ऱिय–(उदय-) गिरि पर प्रकट हुए; चुम्मै वान्–अधिक उज्ज्वल; मतियम् ॲन्नवुम्–चन्द्र के समान भी; तोन्ऱि–प्रकट होकर;

अ मलै उतयम् चॅय्युम्–उस पर्वत पर उदीयमान; तातैयुम् अन्नैयन्–पिता (सूर्य) के समान भी; आन्नान्–लगा। ६५४

नायक लक्ष्मण के स्वागतार्थ आनेवाला वैभवशाली सुग्रीव उदयगिरि पर उदित होनेवाले शोभायमान चन्द्र के समान दिखा। उसके चारों ओर मनोरम स्तन वाली स्त्रियों का बड़ा समूह आकाशस्थित नक्षत्र-वृन्द के समान शोभ रहे थे। सूर्यपुत्र उदयगिरि पर प्रकट अपने पिता सूर्य के समान भी शोभायमान दिखा। ६५४

तोऱ्ऱिय वरिक्कुलत् तरशैत् तोन्ऱलुम्
एऱ्ऱॅदिर् नोक्किन्न नॅऴुन्द दव्वऴि
शीऱ्ऱमङ् गडुदलैत् तॅळिन्द शिन्दैयाल्
आऱ्ऱिनन् करुमत्ति नमैदि युन्नुवान् 655

तोन्ऱलुम्–कुमार (लक्ष्मण) ने भी; तोऱ्ऱिय अरि कुलत्तु अरचै–सामने प्रकट हुए वानरकुल के राजा को; ऍतिर् एऱ्ऱु–स्वागत करके; नोक्कितन्–निहारा; अ वऴि–तब; चीऱ्ऱम् ऍऴुन्ततु–क्रोध हुआ; करुमत्तिन् अमैति–कार्य की स्थिति; उन्नुवान्–सोचकर; अङ्कु–वहाँ; अतु तनै–उस (क्रोध) को; तॅळिन्त चिन्तैयाल्–सुलझे हुए विवेक से; आऱ्ऱितन्–शान्त कर लिया। ६५५

महिमावान राजकुमार लक्ष्मण ने अपने सामने प्रकट हुए सुग्रीव को आँखों में आँख डालकर देखा। तब उनके मन में क्रोध उमड़ आया। लेकिन कर्तव्य की रीति का विचार कर लक्ष्मण ने क्रोध को अपने विवेक के बल से शान्त कर लिया। ६५५

ऍऴुविनु मलैयिनु मॅऴुन्द तोळ्हळाल्
तऴुविन्न रिरुवरुन् दऴुवित् तैयलार्
कुऴुवॊडुम् वीरर्दङ् गुऴात्ति नोडुम्बुक्
कॊऴिविलाप् पॊऱ्कुऴात् तुऱैयु ळॅय्दिन्नार् 656

इरुवरुम्–दोनों; ऍऴुवितुम्–लोहे के स्तम्भों; मलैयितुम्–और पर्वतों; ऍन्न–के समान; ऍऴुन्त तोळ्कळाल्–बढ़ी हुई भुजाओं से; तऴुवितर्–परस्पर गले लगे; तऴुवि–आलिंगन करके; तैयलार्–स्त्रियों के; कुऴुवॊटुम्–समूहों के साथ और; वीरर् तम्–वीरों के; कुऴात्तितोटुम्–दलों के साथ; ऒऴिवु इला–अक्षय; पॊऱ्कुऴात्तु–स्वर्णराशियों से भरे; उऱैयुळ–महल में; पुक्कु–प्रवेश करके; ऍय्तितार्–पहुँचे। ६५६

दोनों ने अपनी लोहे के खम्भे और पर्वत-जैसी भुजाओं से परस्पर आलिंगन किया। फिर परस्पर मिले हुए वे अक्षय स्वर्ण से भरे महल के अन्दर चले। उनके साथ वानर-नारी-वृन्द और वीरों के दल चले। ६५६

अरियणै	यमैन्दडु	हाट्टि	यैयवीण्
डिरुवॅन्नक्	कविक्कुलत्	तरश	न्नेवलुम्
तिरुमह	डलैमहन्	पुल्लिड्	च्चेरवॅड्
कुरियदो	वि:(ह)दॅन्न	वुरैत्तुप्	पिन्नरुम् 657

कवि कुलत्तु अरचन्–वानरकुलाधिपति (के); अमैन्ततु–सुरचित; अरि अणै–सिंहासन को; काट्टि–दिखाकर; ऐय–प्रभु; ईण्टु इरु–यहाँ विराजिए; ऍन्न–ऐसा; एवलुम्–प्रार्थना करने पर; तिरुमकळ् तलैमकन्–श्रीलक्ष्मी के पति के; पुल्लिल् चेर–घास पर बैठे रहते; इ:तु–यह; ऍऩ्कु उरियतो–मेरे योग्य होगा क्या; ऍन्न उरैत्तु–ऐसा कहकर; पिन्नरुम्–फिर भी। ६५७

कपिकुल-पति सुग्रीव ने सुनिर्मित श्रेष्ठ सिंहासन को दिखाकर प्रार्थना की कि नाथ ! इस पर विराजिये। उसके उत्तर में लक्ष्मण ने कहा कि जब लक्ष्मीपति महाराज श्रीराम घास की भूमि पर बैठे रहें, तब यह मेरे योग्य होगा क्या ? और भी (आगे बोले।)। ६५७

कल्लणै	मनत्तिनै	युडैक्कै	केशियाल्
ऍल्लणै	मणिमुडि	तुऱन्द	वॅम्मुनार्
पुल्लणै	वैहयान्	पॊन्शॅय्	पूत्तॊडर्
मॅल्लणै	वैहलुम्	वेण्डु	मोवॅन्ऱान् 658

कल् अणै–पत्थर-सम; मनत्तिनै उटै–मन वाली; कैकेचियाल्–कैकेयी के कारण; ऍल् अणै–कांतिमय; मणि मुटि–सुन्दर किरीट; तुऱन्त–जिन्होंने त्याग दिया; ऍम् मुनार्–मेरे ज्येष्ठ (के); पुल् अणै–घास की शय्या पर; वैक–रहते समय; यान्–मैं; पॊन् चॅय्–स्वर्णनिर्मित; पू तॊटर्–पुष्प-भरे; मॅल् अणै–कोमल आसन पर; वैकलुम्–आसीन होऊँ, यह भी; वेण्टुमो–करना चाहिए क्या; ऍन्ऱान्–कहा। ६५८

प्रस्तरमना कैकेयी के वर के कारण मेरे ज्येष्ठ श्रीराम कांतिपूर्ण मुकुट को त्यागकर जंगल में आये। वे मेरे बड़े भाई घासों की बनी शय्या पर लेटते हैं। तब मैं स्वर्ण-निर्मित सुमन-भूषित इस कोमल आसन पर बैठूँ, क्या यह श्लाघ्य होगा ? । ६५८

ऍन्ऱव	नुरैत्तलु	मिरवि	कादलन्
निन्ऱनन्	विम्मिनन्	मलर्क्कण्	णीरुहक्
कुन्ऱॅन्न	वुयर्न्दवक्	कोयिड्	कुट्टिम
वन्ऱलत्	तिरुन्दनन्	मनुविन्	कोमहन् 659

ऍन्ऱु–ऐसा; अवन्–उनके; उरैत्तलुम्–कहने पर; इरवि कातलन्–सूर्य-सूनु; मलर् कण्–कमल-सी आँखों से; नीर् उक–आँसू गिराते हुए; विम्मितन्–दुःख से भरकर; निन्ऱनन्–खड़ा रहा; मनुविन् कोमकन्–मनुकुल के राजकुमार भी;

कुन्ऱ् अत्त–पर्वत के समान; उयर्न्त अ कोयिल्–उन्नत उस महल के; कुट्टिमम् वल् तलत्तु–कोष्ठ की कठोर भूमि पर; इरुन्तनन्–बैठे। ६५९

लक्ष्मण के वैसा कहने पर सूर्य का प्यारा पुत्र कमलदल के समान अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए दुःख से भरा खड़ा रहा। तब मनु के कुल में उत्पन्न राजकुमार पर्वत के समान ऊँचे बने उस महल के अन्दर पत्थरों के बने एक कृत्रिम चबूतरे पर बैठ गये। ६५९

मैन्दरु मुदियरु महळिर् वॆळ्ळमुम्
अन्दमि नोक्किन रळुद कण्णिनर्
इन्दिय मवित्तव रॆन्नवि रुन्दनर्
नॊन्दनर् तळर्न्दनर् नुवल्व दोर्हिलर् 660

मैन्तरुम्–पुरुष और; मुतियरुम्–वृद्ध लोग; मकळिर्–स्त्रियों की; वॆळ्ळमुम्–भीड़; अन्तम् इल्–छविहीन; नोक्किनर्–दृष्टि और; अऴुत कण्णिनर्–रोती आँखों वाले; नुवल्वतु–क्या कहना, यह; ओर्किलर्–नहीं जानते; नॊन्ततर्–दुःखी हो; तळर्न्तनर्–शिथिल होकर; इन्तियम् अवित्तवर् ॲन–इन्द्रिय-नाशक के समान; इरुन्ततर्–रहे। ६६०

उसको देखकर वहाँ रहनेवाले वयस्क पुरुष, ज्ञानवृद्ध लोग, स्त्रियों का बड़ा समूह —सभी की आँखों से पानी बरसने लगा और उनका सौन्दर्य ही मिट गया। वे कुछ भी कह नहीं सके, क्योंकि उन्हें मालूम ही नहीं हो रहा था— क्या कहना है? वे चिन्ताकुल होकर शिथिल हो गये। इन्द्रिय-निग्रही मुनियों के समान वे (अचल) खड़े रहे। ६६०

मञ्जन विदिमुऱै मरबि ऩाडियॆ, ॲञ्जलि लिऩ्ऩमु दरुन्दिन् यामॆलाम्
उञ्जन मिऩियॆऩ वरशु रैत्तलुम्, अञ्जऩ वण्णऩुक् कनुशऩ् कूऱुवान् 661

अरचु–राजा (सुग्रीव) के; विति मुऱै मरपिन्–शास्त्रोक्त रीति से; मञ्चतम् आटियॆ–स्नान करके; ॲञ्चल् इल्–निर्दोष; इन् अमुतु–मधुर भोजन; अरुन्तिन्–भोग करेंगे तो; याम् ॲलाम्–हम सब; इनि उय्ञ्चतम्–अब उद्धार पा जायेंगे; ॲन–ऐसा; उरैत्तलुम्–कहने पर; अञ्चत वण्णतुक्कु–अंजनवर्ण (श्रीराम) के; अनुचन्–अनुज; कूऱुवान्–कहने लगे। ६६१

राजा सुग्रीव ने लक्ष्मण से प्रार्थना की। आप शास्त्रोक्त रीति से मज्जन करके खूब स्वादिष्ट भोजन करें तो हम कृतार्थ होंगे। जब सुग्रीव ने यह कहा, तब अञ्जनवर्ण अयोध्यापति श्रीराम के अनुज ने यों कहा। ६६१

वरुत्तमुम् पळियुमॆ वयिऱु मीक्कॊळ
इरुत्तुमॆन् ऩालॆमक् किनिय दियावदो
अरुत्तियुण् डायिनु मवलन् दान्ऱऴीइक्
करुत्तुवॆ ऱुऱ्ऱपि नमिऴ्दुङ् गैक्कुमाल् 662

वरुत्तमुम्–दुःख और; पळियुमे–अपमान के; वयिऱ्‌ मी कॊळ–पेट में भरे रहते; इरुत्तुम्–हम जीवित हैं; ऎन्ऱाल्–तो; ऎमक्कु–हमें; इत्तियतु–सुख देनेवाला; यावतु–क्या है; अरुत्ति उण्टायितुम्–इच्छा होने पर भी; अवलम् तळीइ–शोकग्रस्त हो; करुत्तु–मन; वेऱु उऱ्ऱ पिऩ्–बिगड़ गया तो; अमिऴ्‌तुम्–अमृत भी; कैक्कुम्–कड़ुआ लगेगा; (तान्, आल्)। ६६२

हमारा पेट दुःख और निन्दा से भरा है। हम ऐसे ही जीवित रहते हैं। तो हमको स्वादिष्ट लगनेवाला कौन सा पदार्थ होगा ? जब इच्छा होगी तो भी अगर दुःख के कारण चित्त व्याकुल है तो अमृत भी कड़ुआ लगेगा न ? । ६६२

मूट्टिय पऴियॆऩुम् मुरुङ्गु तीयवित्, ताट्टिऩै गङ्गैनी ररशऩ् ऱेवियैक्
काट्टिऩै यॆऩितॆमैक् कडलि ऩारमु, दूट्टिऩै याऱ्पिऱि दुयवु मिल्लैयाल् 663

अरचऩ् तेवियै–राजाराम की देवी को; काट्टिऩै ऎऩिऩ्–लाकर दिखाओ तो; ऎमै–हम पर; मूट्टिय–लगी हुई; पऴि ऎऩुम्–कलंक रूपी; मुरुङ्कु ती–ऐंठकर जलनेवाली आग को; अवित्तु–बुझाकर; कङ्कै नीर्–गंगा-जल में; आट्टिऩै–स्नान करा दिया (वैसा अनुभव होगा); कटलिऩ् आर् अमुतु–(क्षीर-) सागर के अतिश्रेष्ठ अमृत का; ऊट्टिऩै–भोजन कराया; पिऱितु–बाद; उयवुम् इल्लै–कोई दुःख भी नहीं होगा। ६६३

अगर तुम राजाराम की रानी सीतादेवी को ढूँढ़ लाकर दिखा दो तो हमारे निन्दा रूपी ऐंठकर जलनेवाले अनल को बुझाकर गंगा-स्नान कराने वाले बन जाओगे। क्षीरसागर से उत्पन्न श्रेष्ठ अमृत को खिलानेवाले बन जाओगे। फिर हमारा कोई दुःख नहीं रहेगा। ६६३

पच्चिलै किऴङ्गुकाय् परम नुङ्गिय, मिच्चिले नुहर्वदु वेऱु ताऩॆऩ्ऱु
नच्चिले नच्चिनॆ ऩायि नायुण्ड, ऎच्चिले यदुचिदऱ् कैय मिल्लैयाल् 664

पचु इलै–शाक-पात; किऴङ्कु–(और) कन्द; काय्–कच्चे फल; परमऩ्–परममान्य श्रीराम के; नुङ्किय–खाने के बाद; मिच्चिले ताऩ्–बचे हुए पदार्थ ही; नुकर्वतु–मेरे खाद्य है; वेऱु ऒऩ्ऱुम्–और कुछ; नच्चिलेऩ्–नहीं चाहूँगा; नच्चिऩॆऩ् आयिऩ्–चाहूँगा तो; अतु–वह; नाय् उण्ट ऎच्चिले–श्वान-जूठन होगा; इतऱ्कु ऐयम् इल्लै–इसमें संशय नहीं है। ६६४

हरा शाक, कन्द और कच्चे फल —यही श्रीराम भोजन करते हैं। उनके भोजन के बाद जो बचता है, वही जूठन मेरा खाद्य है। उसको छोड़कर, और कोई वस्तु मैं नहीं चाहूँगा। अगर चाहूँगा तो वह कुत्ते का जूठन होगा। इसमें कोई संशय नहीं है। ६६४

अऩ्ऱियु मॊऩ्ऱुळ दैय याऩिनिच्
चॆऩ्ऱऩॆऩ् कॊणर्न्दडै तिरुत्ति नालदु

नुन्ऱुणैक् कोमह नुहर्व दाहलान्
इन्ऱिऱै ताळ्त्तलु मिन्िदन् ऱॆन्ऱान् 665

ऐय–वानरनायक; अन्ऱियुम्–और भी; ऒन्ऱु उळतु–एक बात है; यान् इति चॆन्ऱॆन्–मैं अब जाऊँ; कॊणर्न्तु–फल-मूल लाऊँ; अटै तिरुत्तिन्ऱाल्–पत्तल परोसूं तभी; अतु–वही; नुन् तुणै–तुम्हारे मित्र; कोमकन्–राजकुमार का; नुकर्वतु–भोज्य होगा; आकलान्–इसलिए; इन्ऱु–अब; इऱै ताळ्त्तलुम्–थोड़ा भी विलम्ब करना; इतितु अन्ऱु आम्–भला नहीं होगा; ऎन्ऱान्–लक्ष्मण ने कहा। ६६५

अधिपति ! इसके अलावा और एक बात है। मैं अब जाकर कन्द-मूलादि ले आकर पत्र पर परोसूँ, तो वही तुम्हारे मित्र राजकुमार श्रीराम का भोजन होगा। इसलिए अब थोड़ा विलम्ब करना भी अच्छा नहीं होगा। ६६५

वानर वेन्दनु मिनिदिन् वैहुदल्, मानवर् तलैमह निडरिन् वैहवे
आन्दु कुरक्किनत् तॆमर्हट् कामॆना, मेनिलै यऴिन्दहम् विम्मि नानरो 666

वानर वेन्तनुम्–वानराधिपति भी; मानवर्–मनुकुल के; तलै मकन्–श्रेष्ठ पुत्र के; इटरिन् वैक–दुःखी रहते; इनितिन् वैकुतल्–सुख से (विलम्ब करता) रहना; आनतु–जो है वह; कुरङ्कु इनत्तु–वानर-जाति के; ऎमर्कट्कु आम्–हमारी प्रकृति है; ऎना–कहकर; मेन् निलै अऴिन्तु–अपना धैर्य खोकर; अकम् विम्मितान्–चित्तविह्वल हुआ। ६६६

लक्ष्मण का यह वचन सुनकर वानरराज सुग्रीव ने दुःख के साथ कहा कि हाँ ! ठीक है। मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम जब दुःख-मग्न हैं, तब सुख में समय बिताना वानर-जाति के हमें ही सोह सकता है। सुग्रीव विचलित होकर चित्ताकुलित हुआ। ६६६

ऎऴुन्दनन् पॊरुक्कॆन विरवि कान्मुळै
विऴुन्दकण् णीरिनन् वॆरुत्त वाऴ्विनन्
अऴिन्दयर् शिन्दैय ननुमर् काण्डॊन्ऱु
मॊऴिन्दनन् वरनुळैप् पोदन् मुन्नुवान् 667

इरवि काल् मुळै–सूर्यपुत्र सुग्रीव; पॊरुक्कॆन ऎऴुन्तनन्–तपाक से उठा; विऴुन्त कण् नीरिनन्–बहते आँसुओं वाला; वॆरुत्त वाऴ्विनन्–और विरक्त जीवन वाला; अऴिन्तु अयर्–जो क्षीण होकर थक गया, ऐसे; चिन्तैयन्–मन वाला होकर; वरन् उळै–उत्तम श्रीराम के पास; पोतल् मुन्नुवान्–जाने को उद्यत हुआ और; आण्टु–तब; अनुमर्कु–हनुमान से; ऒन्ऱु मॊऴिन्तनन्–(उसने) एक (बात) कही। ६६७

फिर सुग्रीव ससंभ्रम उठा। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। उसे अपने जीवन से ही विरक्ति होने लगी। वह विचलित और थकित मन

का हो गया। श्रेष्ठ श्रीराम के पास जाने का विचार करके उसने हनुमान से एक बात कही। ६६७

पोयिन तूदरिऱ् पुहुदुम् जेनैयै, नीयुडऩ् कॊणरुदि नॆऱ्ऱिव लोयॆऩ्ऩ
एयिऩ्ऩ नुमनै यिरुत्ति योण्डॆन, नायह निरुन्दुळिक् कडिदु नण्णिनान् 668

नॆऱ्ऱिवलोय्–उपाय में समर्थ; पोयिऩ तूतरिऩ्–जो गये हैं, उन दूतों के साथ; पुकुतुम् चेऩैयै–आनेवाली सेना को; नी–तुम; उटऩ् कॊणरुति–साथ ले आओ; ऍऩ्ऩ–ऐसा और; ईण्टु इरुत्ति–(तब तक) यहाँ रहो; ऍऩ्ऩ–ऐसा; अनुमनै–हनुमान को; एयिऩऩ्–आज्ञापित करके; नायकऩ् इरुन्त उळि–जहाँ नायक श्रीराम रहे, उस स्थान को; कटितु–सवेग; नण्णिऩाऩ्–चला। ६६८

युद्ध-विज्ञान-विशारद वायुपुत्र! दूत सेना लाने गये हैं न? वे जो सेना लायेंगे उसे लेकर तुम आ जाना। तब तक यहीं रहो। हनुमान से यह आज्ञा सुनाने के बाद सुग्रीव, नायक श्रीराम के यहाँ सवेग जाने लगा। ६६८

अङ्गद	नुडऩ्ऱॆल	वरिहण्	मुऩ्ऱॆल
मङ्गैय	रुळ्ळमुम्	वळियुम्	बिऩ्ऱॆलच्
चङ्गैयि	लिलक्कुवऩ्	ऱळुवित्	तम्मुऩ्ऩिल्
शॆङ्गदि	रोऩ्महऩ्	कडिदु	शॆऩ्ऱऩ्ऩ् 669

चॆम् कतिरोऩ्–लाल किरणमाली का; मकऩ्–पुत्र सुग्रीव; चङ्कै इल्–संशयहीन (ज्ञानी); इलक्कुवन् तळुवि–लक्ष्मण का आलिंगन करते हुए; अङ्कतऩ् उटऩ् चॆल–अंगद के साथ आते; अरिकळ्–वानरों के; मुऩ् चॆल्–आगे जाते; मङ्कैयर् उळ्ळम्–स्त्रियों के मनों के; पिऩ् चॆलवुम्–पीछे आते; वळि पिऩ् चॆलवुम्–मार्ग के पीछे रह जाते; तम् मुऩ् इल्–अपने ज्येष्ठ भ्राता (मान्य) श्रीराम के यहाँ; कटितु चॆऩ्ऱऩऩ्–शीघ्र गया। ६६९

लाल प्रकाश-किरणों वाले सूर्य का पुत्र सुग्रीव असंशयमन लक्ष्मण को आलिंगन में लेकर जाने लगा। अंगद साथ गया। वानर आगे गये। वानर-नारियों का मन उसके पीछे-पीछे गया। मार्ग पीछे छूटता गया। इस रीति से सुग्रीव श्रीराम की तरफ़, जो कि उसके ज्येष्ठ भ्राता (के समान) थे, शीघ्र गया। ६६९

ऒऩ्बदि नायिर कोडि यूहन्दऩ्, मुऩ्ऱॆलप् पिऩ्ऱॆल जाङ्गर् मॊय्प्पुर
मऩ्बॆरुङ् गिळैञरु मरुङ्गु शुऱ्ऱुर, मिऩ्बॊरु पूणिनान् शॆल्लुम् वेलैयिल् 670

ऒऩ्पतिऩ् आयिर कोटि–नौ सहस्र कोटि; यूकम्–सेना; तऩ् मुऩ् चॆल–उसके सामने गयी और; पिऩ् चॆल–पीछे गयी; जाङ्कर्–(दोनों) पार्श्वों में; मॊय्प्पुऱ–घने रूप से मिल आयी; मऩ् पॆरु किळैञरुम्–और बहुत उत्कृष्ट बन्धु-बान्धव; चऱ्ऱुर–

चारों ओर घेर आये; मिन् पौरु पूणित्तान्–विजली-सम आभरण वाला; चॅल्लुम् वेलैयिल्–जब चला तब। ६७०

नौ सहस्र कोटि वानर वीर उसके आगे, पीछे, और पार्श्वों में सटे हुए चले। उत्तम बन्धु-बान्धव भी चारो ओर घेरकर चले। विद्युत् से होड़ लगानेवाले कान्तिमय आभरणों से भूपित सुग्रीव जब चलने लगा तव (आगे के पद मे वाक्य जारी है)। ६७०

कॉडिवन मिडैन्दन कुमुरु बेरियित्, इडिवन मिडैन्दन पणिल मेङ्गिन
तडिवन मिडैन्दन तयङ्गु पूणॉळि, पॉडिवन मॅळुन्दन वानम् वोर्क्कवे 671

कौटि वत्तम्–ध्वजाओं के जंगल; मिटैन्तत्त–जुटे; कुमुरुम् पेरियिन्–गरजनेवाली भेरियों के; इटि वनम्–वज्रघोष के जंगल; मिटैन्तत्त–मिल आये; पणिलम् एङ्कित्त–शंख वज उठे; तयङ्कु पूण्–चमकनेवाले आभरणों की; ऑलि तटि वत्तम्–कान्ति रूपी तड़ितो का वन; मिटैन्तत्त–भर आया; वातम् पोर्क्क–आकाश को ढँकते हुए; पौटि वत्तम्–धूल का जंगल; ॲळुन्तत्त–उठा। ६७१

ध्वजाओं का वन (समूह) मिल आया। नर्दन करनेवाली भेरियो के शब्दों का वन (समूह) भर आया। शंख वज उठे। प्रकाश-प्रसारक आभरणो की कान्तियो के पुञ्ज भरे। आकाश को ढँकते हुए धूलि-वन (समूह) उठकर फैला। ६७१

पॊन्निनित् मुत्तिनिऱ् पुनैमॅन् तुगिलिनिन्
मिन्निन मणियिनिऱ् पळिङ्गित् वॆळ्ळियित्
पिन्निन विशुम्बिनुम् वॆरिय पॆट्पुरत्
तुन्निन शिविहैवॆण् गविहै चुऱ्ऱिन 672

पॊन्तितिन्–स्वर्ण के; मुत्तिनिल्–मोतियों से; पुतै मॅल्–सुन्दर और महीन; तूचितित्–वस्त्रों से; मित्तित्त मणियिनिल्–चमकती मणियों से; पळिङ्कित्–स्फटिक से; वॆळ्ळियित्–चाँदी से; पित्निन–वनी हुई; चिविकै–शिविकाएँ; तुन्तित्त–सटी हुई आयीं; वॆळ् कविकै–श्वेत छत्र; विचुम्पितुन् वॆरिय–आकाश से भी वड़ी; पॆट्पु उऱ–मनोरम रीति से; चुऱ्ऱिन–घूमती आयी। ६७२

शिविकाएँ मिल आयी, जो स्वर्ण, मोती, सुन्दर महीन वस्त्र, चमकने-वाली मणियों, स्फटिक और चाँदी से निर्मित थीं। श्वेत-छत्र ऐसे और इतने घूमते आये कि उनका फैलाव आकाश से भी अधिक विशाल लगा। ६७२

वीरनुक् किळैयवन् विळङ्गु शेवडि, पारिनिऱ् चेऱलुम् परिदि मैन्दनुम्
तारिनिऱ् पॊलन्गळ ऱुळङ्गत् ताऱणित्, तेरिनिऱ् चॆन्ऱनन् चिविहै पिन्शॆल 673

वीरनुक्कु इळैयवन्–वीर श्रीराम के लघुभ्राता के; विळङ्कु–शोभायमान; चे अटि–सुन्दर चरण; पारित्तिल्–भूमि पर; चेऱलुम्–पड़ते चले तो; परिति मैन्तनुम्–सूर्यपुत्र भी; तारिनिल्–हारों और पायलों की; पॊलम् कऴल्–मनोरम ध्वनि

को; तळक्कुक-उठने देते हुए; चिविकै पिन्-पालकियों के (उसके) पीछे; चॅल-चलते; तारणि तेरिल्-भूमि रूपी रथ पर; चॅन्ऱनन्-चला। ६७३

वीर श्रीराघव के कनिष्ठ भ्राता के लाल चरण भूमि पर चलने लगे, तो सूर्यपुत्र भी धरती रूपी रथ पर (यानी भूमि पर पैदल) चलने लगा। तब उसके पैरों पर बँधी हुई वीर पायलें शब्दित हुईं। उसकी शिविका उसके पीछे आयी। ६७३

अँय्दिनन् मानव न्निरुन्द माल्वरै
नॉय्दिनिऱ् चेनैपिन् बॉळिय नोन्गळल्
ऐयविऱ् कुमरनुन् दान्न मङ्गदन्
कैतॉडरन् दयल्शॅलक् कादन् मुन्शॅल 674

नोन् कळल्-तगड़े कड़ों के धारक; ऐय विल्-सुन्दर धनुर्धर; कुमरनुम्-कुमार लक्ष्मण भी; तानुम्-आप (सुग्रीव) के साथ; चेनै पिन्पु ऑळिय-सेना को पीछे छोड़कर; अङ्कतन्-अंगद के; कै तॉटर्न्तु-हाथ से लगे हुए (पास-पास); अयल् चॅल-साथ आते; कातल् मुन् चॅल-(श्रीराम के पास पहुँचने की) इच्छा के आगे जाते; मानवन्-सम्मान्य प्रभु श्रीराम; इरुन्त माल् वरै-जहाँ रहे, उस पर्वत पर; नॉय्तिनिल्-शीघ्र; अँय्तिनन्-पहुँचे। ६७४

ठोस रूप से बनी पायल और सुन्दर धनु —इनके साथ शोभायमान लघुदेव लक्ष्मण और सुग्रीव साथ-साथ जाने लगे। अंगद उनके पार्श्व में उनसे लगा हुआ जा रहा था। वानर-सेना पीछे जा रही थी। और श्रीराम-मिलन की उत्कण्ठा उनके आगे (उनको ले) जा रही थी। वे मनुकुल-श्रेष्ठ श्रीराम जहाँ रहते थे, उस पर्वत पर जा पहुँचे। ६७४

कण्णिय कणिप्परुम् जॅल्वक् कादल्विट्
टण्णलै यडिदॉळ वणैयु मन्बिनाल्
नण्णिय कविक्कुलत् तरश नामवेल्
पुण्णियऱ् ऱॉळवरुम् बरदन् पोन्ऱनन् 675

कण्णिय-सबको विस्मय में डालनेवाले; कणिप्पु अरुम्-अगणित; चॅल्वम् कातल्-धन का प्रेम; विट्टु-त्यागकर; अण्णलै-प्रभु श्रीराम के; अटि तॉळ-चरणों की पूजा करने हेतु; अणैयुम्-उठे हुए; अन्पिताल्-भक्तिभाव के साथ; नण्णिय-जो आया; कवि कुलत्तु अरचन्-कपिकुलपति; नाम वेल्-डरावने भाले वाले; पुण्णियन्-पुण्य-मूर्ति श्रीराम को; तॉळ वरुम्-नमस्कार करने आनेवाले; परतन् पोन्ऱनन्-भरत के समान लगा। ६७५

सर्वमान्य और अगणित विपुल सम्पत्ति का प्यार त्यागकर कपिकुलपति श्रीराम के श्रीचरणों पर नमस्कार करने के लिए उत्पन्न भक्ति के साथ श्रीराम के पास जा पहुँचा। तब वह भयावह भालाधारी श्रीराम के श्रीचरणों पर नमस्कार करने आनेवाले भरत के समान लगा। ६७५

पिरिवरुन् दम्बियुम् विरियप् पेरुल
हिरुदियिऱ् ऱानेन् विरुन्द वेन्दलै
अरैमणित् तारिनो डारम् वार्दोडच्
चॅंऱिमलर्च् चेवडि मुडियिऱ् ऱीण्डिनान् 676

पिरिवु अरु–कभी अलग न होनेवाले; तम्पियुम् पिरिय–कनिष्ठ भ्राता के भी अलग हो जाने से; पेर् उलकु इऱुतियिल्–बड़े लोकों के अन्तिम काल में (युगान्त में); तान् ऒन इरुन्त–अकेले, आप ही रहनेवाले (महाविष्णु के समान जो रहे); एन्तलै–उन महाप्रभु के; अरै मणि तारिनोटु आरम्–क्वणित मणियों की मालाओं के साथ मुक्ताहारों को भी; पार् तोट–भूमि को स्पर्श करने देते हुए; चॅंऱि मलर् चे अटि–उत्फुल्ल पद्म के समान लाल चरणों को; मुटियिन्–अपने सिर से; तीण्टिनान्–स्पर्श किया। ६७६

लक्ष्मण किसी भी हालत में श्रीराम से अलग होनेवाले नहीं थे। अब वे भी इनको अकेले छोड़कर चले गये थे। इसलिए ये श्रीराम सृष्टि के अन्त में, जब सारे लोग लुप्त हो जाते है, निपट एकाकी रहनेवाले श्रीविष्णु के समान अकेले रहे। तब सुग्रीव ने उनके दल-लसित, कमलपुष्प-सम लाल चरणों पर अपना सिर लगाते हुए नमस्कार किया। तब उसके वक्ष में रहनेवाली रत्न और मोती की मालाएँ भी भूमि पर लगीं। उनके आपस में टकराने से शब्द निकल रहा था। ६७६

तीण्डिय कुरिशिलैच् चिलैयि राहवन्
नीण्डपॉेऱ् ऱडक्कैया नॅंडिदु पुल्लिनान्
मूण्डॅऴु वॅहुळिपो यॉळिप्प मुन्बुपोल्
ईण्डिय करुणैतन् दिरुक्कै येवियॆ 677

तीण्टिय कुरिचिलै–स्पर्श करनेवाले राजा को; चिलै इराकवन्–कोदण्डपाणी श्रीराघव ने; नीण्ट–दीर्घ; पॉन्–सुन्दर; तट–विशाल; कैयाल्–करों से; नॅटितु–खूब; पुल्लिनान्–आलिंगन किया; मूण्टु ऍऴु–उफनकर उठा; वॅकुळि–क्रोध; पोय् ऒळिप्प–जाकर छिप गया; मुन्पु पोल्–पूर्व की तरह; ईण्टिय करुणै–अधिक स्नेह; तन्तु–दिखाकर; इरुक्कै एवि–बैठने की आज्ञा देकर। ६७७

अपने चरण-स्पर्शी महिमायुक्त सुग्रीव को कोदण्डपाणी श्रीराम ने अपने दीर्घ और सुन्दर हाथों से उठाकर गले लगा लिया। उनके मन में जो क्रोध उठा और बढ़ रहा था, वह ठण्डा पड़कर लुप्त हो गया। उन्होंने पहले का जैसा प्रेम दिखाया और बैठने की आज्ञा देकर; । ६७७

अयलिनि दिरुत्तिनिन् ऱरशु माणैयुम्
इयल्विन्ऱि नियैन्दवे यिनिदिन् वैहुमे
पुयल्वीरु तडक्कैनी पुरक्कुम् वल्लुयिर्
वॅयिलिल देहुडै यॅन्नवि नायिनान् 678

अयल्-पास में; इनितु-सुख से; इरुत्ति-बिठा लेकर; निन् अरचुम्-तुम्हारा राज्य और; आणैयुम्-शासन; इयल्पिनिल्-शास्त्रोक्त रीति से; इयैन्तवे-मिलकर चलते है न; पुयल् पोरु-मेघ-सम (दानी); तटक्कै नी-विशाल हस्त तुम; पुरक्कुम् पल् उयिर्-जिनका पालन करते, वे अनेक जीव; इनितिन् वैकुमे-सुख से रहते है न; कुडै-श्वेतछत्र; वॅयिल् इलते-आतपहीन है न; ॲन विनायिनान्-ऐसा पूछा। ६७८

अपने पास सुख से बिठा लिया और पूछा कि तुम्हारा राज्य और शासन शास्त्रोक्त प्रकार से युक्त हैं। मेघसम (दानी) हाथों वाले तुमसे पालित होकर विविध जीव और प्राणी सुख से रहते हैं? तुम्हारा श्वेतछत्र आतप-रहित है? (क्या तुम प्रजा को किसी भी कष्ट से बचा रहे हो?)। ६७८

पॉरुळुडै यव्वुरै केट्ट पोऴ्दुवान्, उरुळुडैत् तेरिनान् पुदल्व नूऴियाय्
इरुळुडै युलहिनुक् किरवि यन्ननिन्, अरुळुडै येऱ्कवै यरिय वोवॅन्ऱान् 679

पॉरुळ् उडै-अर्थ-भरा; अ उरै-वह वचन; केट्ट पोऴ्तु-जब सुना तब; वान्-आकाश में; उरुळ् उडै-चलनेवाले; तेरिनान्-रथ के स्वामी सूर्य के; पुदल्वन्-पुत्र (ने); ऊऴियाय्-युगपुरुष; इरुळ् उडै उलकिनुक्कु-अँधेरा-भरी दुनिया के; इरवि अन्न-रवि के समान; निन्-आपकी; अरुळुडैयेऱ्कु-कृपा के पात्र मुझे; अवै अरियवो-वे कार्य कठिन है क्या; ॲन्ऱान्-कहा। ६७९

श्रीराम के वचन अर्थ-भरे थे। यह सुनकर आकाशचारी एकचक्र-रथ के स्वामी सूर्यदेव के प्यारे पुत्र ने जवाब दिया कि युगान्त में अमर रहनेवाले, हे देवदेव! अँधेरे से भरी रही भूमि के रवि के समान आप रहते हैं। ऐसे आपकी कृपा के पात्र मुझे यह काम कठिन है क्या? । ६७९

पिन्नरुम् विळम्बुवान् पेदै येनुन, दिन्नरु ळुदविय शॅल्व मॅय्दिनेन्
मन्नव निन्बणि मऱुत्तु वैहियॅन्, पुन्निलैक् कुरक्कियल् पुदुक्कि नेन्ऱान् 680

पिन्नरुम्-आगे भी; विळम्पुवान्-कहा; मन्नव-राजन्; पेतैयेन्-जड़मति (मैं) ने; उनतु इन् अरुळ् उतविय-आपके कृपादत्त; चॅल्वम् ॲय्तिनेन्-धन पाया; निन् पणि-आपकी आज्ञा; मऱुत्तु-भुलाकर; वैकि-रहा और; ॲन्-मेरा (अपना); पुल् निलै-क्षुद्र स्थिति का; कुरङ्कु इयल्-वानर-स्वभाव; पुतुक्किनेन्-नये रूप से दिखा दिया; ॲन्ऱान्-कहा। ६८०

सुग्रीव आगे बोला। रामराज! मैं बुद्धिहीन हूँ। आपकी कृपा से मुझे अधिक सम्पत्ति मिली। तो भी मैंने आपकी आज्ञा की उपेक्षा कर दी और उसके द्वारा मैंने अपना क्षुद्र वानर का स्वभाव नये रूप से दिखला दिया। ६८०

पॅरुन्दिशै	यनैत्तैयुम्	पिशैन्दु	नेडियान्
तरुन्दहै	यमैन्दुमत्	तनमै	शॅय्दिलेन्

तिरुन्दिऴै तिऱत्तिनाऱ् ऱॆळिन्द शिन्दैनी
वरुन्दिनै यिरुप्पयान् वाऴ्विन् वैहिनेन् 681

पॆरुम् तिचै अनैत्तैयुम्–सभी बड़ी दिशाओं में; यान् पिचैन्नुतु नेटि–मैं खाक छानकर ढूँढ़कर; तरुम्–(देवी सीता को) लाऊँ; तकै–वह सामर्थ्य; अमैन्तुम्–रहता है तो भी; अ तन्मै–उस प्रकार; चॆय्तिलेन्–न करके; तिरुन्तु इऴै–श्रेष्ठ आभरण वाली (सीताजी); तिऱत्तिनाल्–के कारण; तॆळिन्त चिन्तै–विवेकमन; नी–आप; वरुन्तिनै–दुःखी हो; इरुप्प–रहते; यान्–मैं; वाऴ्विल्–(सुखी) जीवन में; वैकिनेन्–डूबा रह गया। ६८१

सुग्रीव ने जारी किया। सभी लम्बी दिशाओं में जाऊँ, खाक छानूँ और देवी सीताजी को ले आऊँ —यह शक्ति मुझमें है। तो भी मैंने ऐसा नहीं किया। सुन्दर कारीगरी से युक्त आभरण-धारिणी सीताजी के कारण आपका सदा-विवेकी मन भी विचलित हुआ। आप दुःखी रहे, तब भी मैंने अपने सुखी जीवन में समय विताया। ६८१

इनैयन यानुडै यियल्बु मॆण्णमुम्
निनैवुमॆन् ऱालिनि नित्ऱि यान्शॆयुम्
विनैयुनल् लाण्मैयु विळम्ब वेण्डुमो
वनैहऴल् वरिशिलै वळ्ळि योयॆन्ऱान् 682

वनै कऴल्–कारीगरीयुक्त पायलधारी; वरि चिलै–सवन्ध धनुर्धर; वळ्ळियोय्–वदान्य; यान् उटै–मेरे पास जो रहता है; इयल्पुम्–वह स्वभाव और; ऍण्णमुम्–विचार; निनैवुम्–स्मरण; इनैयन–ऐसे हैं; ऍन्ऱाल्–तो; इनि–आगे; यान्–मैं; निन्ऱु चॆयुम्–(मित्र की) स्थिति में जो करूँगा; विनैयुम्–वह कार्य; नल् आण्मैयुम्–और श्रेष्ठ पुरुषोचित सामर्थ्य भी; विळम्प वेण्टुमो–कहना भी चाहिए क्या; ऍन्ऱान्–कहा। ६८२

सुनिर्मित पायल और सवन्ध धनु के स्वामी, वदान्य ! मेरा स्वभाव, मेरे विचार और मेरे स्मरण ऐसे हैं तो आगे मैं आपका साथी बनकर जो करूँगा उन कार्यों का और मेरी श्रेष्ठ वीरता का क्या कहा जाय ? । ६८२

तिरुवुरै मार्बनुन् दीर्न्द दॆयुमवन्, दीरुवरुङ् गालमुन् नुरिमै योरुरै
तरुविनैत् ताहैयिऱ् ऱाऴ्विऱ् ऱाहुमो, बरदनी यिनैयन पहर्दियो वॆन्ऱान् 683

तिरु उरै–श्रीनिवास; मार्पत्तुम्–वक्ष वाले भी; ऒरुवु अरु–जल्दी जो नहीं बीतता; कालम्–वह वर्षाकाल; वन्तु–आकर; तीर्न्ततेयुम्–चला गया और; उन् उरिमै–अपना कर्तव्य पहचानकर; ओर् उरै–जो कहते हो, वह वचन; तरु विनैत्तु–सीता को लाकर देने का कार्यवाची है; आकैयिन्–इसलिए; ताऴ्विऱ्ऱु आकुमो–(तुम्हारे वचन और कार्य) नीच हो सकते हैं क्या; परतन् नी–भरत (समान) तुम; इनैयन–ऐसी बातें; पकर्तियो–क्यों कहो; ऍन्ऱान्–बोले। ६८३

(पछतावे के साथ सुग्रीव ने वे शब्द कहे थे।) श्रीवक्ष श्रीराम ने उत्तर

में कहा— शीघ्र बीतनेवाला वर्षाकाल भी आकर चला गया। तुम अपना उत्तरदायित्व समझकर बात करने लगे। तुम्हारे वचनों में सीता को ढूँढ़ लाने का संकल्प झलकता है। फिर इसमें क्षुद्रता कहाँ ? तुम मेरे लिए भरत के समान हो। फिर ऐसी बातें क्यों कहो ? । ६८३

आरियन् पिन्नरुम् मनैन्दु नन्गुणर्, मारुदि यॅव्वऴि मरुवि नानॆन्नच्
चूरियन् कान्मुळै तोन्रुम् मालवन्, नीरिरुम् परवैयि नॅडिय शेनैयान् 684

आरियन्–आर्य श्रीराम (के); पिन्नरुम्–फिर भी; अमैन्तु–कहने को उद्यत होकर; नन्कु उणर्–खूब समझदार; मारुति–मारुति; ऍ वऴि–कहाँ; मरुविन्नान्–रहता है; ऍन्न–कहने पर; चूरियन् कान् मुळै–सूर्य का पुत्र; अवन्–वह; नीर् इरुम् परवैयिन्–जल-भरे बड़े समुद्र के समान; नॅटिय चेनैयान्–बहुत विशाल सेना वाला होकर; तोन्रुम्–आ जायगा। ६८४

आर्य श्रीराम ने और कुछ कहने को उद्यत होकर पूछा कि त्रिकालज्ञ और विवेकी मारुति कहाँ है ? उसके उत्तर में सूर्यसूनु ने कहा— वह जल-भरित सागर-सम विशाल सेना वाला बनकर आयगा। ६८४

कोडियो रायिरङ् गुरित्त तूदुवर्, ओडि नॅडुम्बडै कॊणर लुट्रदाल्
नाडरक् कुरित्तदु मिन्रु नाळैयव्, वाडलन् दानैयो डवनु मॅय्दुमाल् 685

ओर् आयिरम् कोटि–एक सहस्र कोटि; कुऱित्त–गणित; तूतुवर्–दूत; नॅटु पटै–विशाल सेना; कॊणरल् ओटिनर्–लाने दौड़े हैं; तर–(सेना) लाने; कुऱित्तनु नाळुम्–निर्धारित दिन भी; उट्रतु–आ गया; आल्–इसलिए; इन्रु नाळै–आज या कल; अ–उस; आटल् अम् तानैयोटु–शक्तिमान सेना के साथ; अवनुम् ऍय्तुम्–वह भी आ जायगा। ६८५

एक सहस्र कोटि गणित दूत विशाल वानर-सेना को ले आने के लिए वेग के साथ गये हैं। उनके लौट आने के लिए निर्धारित दिन भी आ गया। इसलिए आज या कल सशक्त उस बड़ी सेना के साथ हनुमान भी इधर आ जायगा। ६८५

विरुम्बिय विरामनुम् वीर निर्कदोर्, अरुम्बॊरु ळाहुमो वमैदि नन्रॆन्नाप्
पॅरुम्बह लिरन्ददु पॅयर्दि निन्बडै, पॊरुन्दुऴि वावॆन्नत् तॊऴुदु पोयिनान् 686

विरुम्पिय इरामनुम्–(सुग्रीव से) स्नेह करनेवाले श्रीराम (के); वीर–वीर; निर्कु–तुम्हारे लिए; अतु–वह; ओर् अरुम् पॊरुळ् आकुमो–एक कठिन काम होगा क्या; अमैति–विनय; नन्रु–भली है; ऍन्ना–कहकर; पॅरुम् पकल्–लम्बा दिन; इरन्ततु–पूरा हो गया; पॅयर्ति–निकलो; निन् पटै–तुम्हारी सेना; पॊरुन्तुऴि–जब आकर मिल जायगी; वा–आओ; ऍन्न–कहने पर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पोयिनान्–चला। ६८६

सुग्रीव को प्यार करनेवाले श्रीराम ने सुग्रीव से प्रोत्साहन के शब्द में

कहा कि हे वीर ! तुम्हारे लिए यह काम कोई कठिन काम है क्या ? लेकिन तुम्हारी विनय श्लाघनीय है। उन्होंने आगे कहा कि देखो ! लम्बा दिन का समय पूरा हो गया। अब चलो और जब सेना एकत्रित हो आयगी तब आ जाओ। श्रीराम की यह आज्ञा लेकर सुग्रीव उनको नमस्कार करके चला। ६८६

अङ्गदऱ् किनियन वरुळि यैयपोय्त्, तङ्गुदि युन्दैयो डॆन्ऱु तामरैच्
चॆङ्गणान् ऱम्बियुन् दानुञ् जिन्दैयिऩ्, मङ्गैयु मव्वऴि यन्ऱु वैहिनान् 687

तामरै–कमल-सी; चॆम् कणान्–लाल आँखों वाले; अङ्कतऱ्कु–अंगद से; इतियन–मधुर; अरुळि–(वचन) कहकर; ऐय–तात; पोय्–जाकर; उन्तैयोटु–अपने पिता के साथ; तङ्कुति–रहो; ऎन्ऱु–कहकर; तम्पियुम्–अपने छोटे भाई (के साथ जो प्रत्यक्ष थे) और; चिन्तैयिन् मङ्कैयुम्–(जो मन में रहीं उन) देवी (के साथ) और; तानुम्–स्वयं; अन्ऱु–उस निशा में; अव्वऴि–वहाँ; वैकितान्–ठहरे। ६८७

पश्चात् श्रीराम ने अंगद से मधुर वचन कहे और आज्ञा दी— सुन्दर वीर ! तुम भी जाओ और अपने पिता के साथ रहो। फिर वे मन मे सीता की चिन्ता और पास मे लक्ष्मण को रखते हुए अकेले वहाँ रहे। ६८७

अन्ऱव णिरुत्तन नलरि कोट्टिशैप्, पॊन्ऱिणि नॆडुवरै पॊलिवु ऱादमुन्
वन्ऱिऱर् ऱूदुवर् कूव वानरक्, कुन्ऱुरऴ् नॆडुम्बडै यडैन्द कूऱुवाम् 688

अन्ऱु–उस रात; अवण्–वहाँ (माल्यवान पर्वत) पर; इरुत्तनन्–ठहरे; अलरि–सूर्य (के); कोऴ् तिचै–पूर्व दिशा में; पॊन् तिणि–स्वर्णमय; नॆटु वरै–बड़ी (उदय-) गिरि पर; पॊलिवु उऱात–शोभायमान होने से; मुन्–पहले; वल् तिऱल्–अधिक सशक्त; तूतुवर्–दूतों के; कूव–पुकारने पर; कुन्ऱु उऱऴ्–पर्वत-सम; वानरम्–वानरों की; नॆटु पटै–विशाल सेना; अटैन्तटु–आ पहुँची; कूऱुवाम्–यह कहेंगे। ६८८

उस रात भर में वे उस माल्यवान पर्वत पर रहे। सूर्य के पूर्व दिशा की स्वर्णिम उदयगिरि पर शोभायमान दिखने से पूर्व ही बहुत बलवान दूतों के बुलाने पर पर्वत-सम वानरों की विशाल सेना कैसे आ पहुँची ? इसका अब विवरण देंगे। ६८८

11. तानैकाण् पडलम् (सेना-संदर्शन पटल)

आनै	यायिर	मायिरत्	तॆरुळ्वलि	यमैन्द
वान	रादिप	रायिर	रुडन्वर	वहुत्त
कूनन्	माक्कुरङ्	गैयिरण्	डायिर	कोडित्
तानै	योडमच्	चददलि	यॆन्बवन्	शारन्दान् 689

अ चत बलि ॲन्पवन्–वह शतबली नाम का वीर; आयिरम् आयिरत्तु–सहस्र-सहस्र (दस लाख); आनै–गजों के; ॲळ्ळ् वलि अमैन्त–विकट बल से युक्त; आयिरर् वानर अतिपर्–सहस्र वानर-यूथप; उटन् वर–साथ आते; वकुत्त–दल-बद्ध; कूनल्–कूबड़े; मा–बड़े; ऐ इरण्टु–दस; आयिर–सहस्र; कोटि–कोटि; कुरङ्कु–वानरों की; तानैयोटु–सेना के साथ; वन्तान्–आया। ६८६

शतबली नामक वानर वीर आया; जिसके साथ दस-दस लाख गजों के-से बल वाले वानराधिपति आये। और उनके पीछे व्यूहों में बद्ध दस सहस्र करोड़ झुकी पीठ वाले वानरों की सेना आयी। ६८९

ऊन्रि मेरुवै यॅडुक्कुरु मिडुक्किनुक् कुरिय
तेन् ट्रॅरिन्दुण्डु तॅळिवुरु वानरच् चेनै
आन्र पत्तुनू ड्रायिर कोडियो डमैयत्
तोन्रि नान्वन्दु शुशेडण नॅनुम्बॅयर्त् तोन्रल् 690

चुचेटणन् ॲनुम् पॅयर् तोन्रल्–सुषेण नामक वीर; मेरुवै–मेरुपर्वत को; ऊन्रि ॲटुक्कुम्–उखाड़कर उठा लेने की; मिटुक्किनुक्कु उरिय–शक्तिसम्पन्न; तेन् तॅरिन्तु उण्टु–सुरा का (परिमाण) जानकर पान करके; तेळिवु उरु–स्वच्छ (मन वाली); आन्र वानर चेनै–श्रेष्ठ वानर-सेना; पत्तु नूरायिर कोटि योटु–दस लाख सहस्र के साथ; अमैय–युक्त होकर; वन्तु तोन्रिनान्–आकर प्रकट हुआ। ६९०

सुषेण नामक बड़े वीर आये। उसके साथ उत्कृष्ट दस लाख कोटि वानरों की सेना आयी। वे वीर मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखते थे। मात्रा जानकर पिये हुए थे, उनके मन में कोई भ्रम नहीं था (ऐसे वीरों के साथ सुषेण आया।)। ६९०

ईरिल् वेलैयै यिमैप्पुरु मॅल्लैयिर् कलक्किच्
चेरु काणगुरुन् दिरल्हॅळ वानरच् चेनै
आरॅ णायिर कोडिय दुडन्वर वमुदिन्
मारि लामॉळि युरुमैयैप् पयन्दवन् वन्दान् 691

ईरु इल्–जिसके विस्तार का अन्त नहीं; वेलैयै–उस सागर को; इमैप्पुरुम् ॲल्लैयिल्–पलक मारते समय के अन्दर; कलक्कि–विलोडकर; चेरु काणकुरुम्–पंकिल बना सकनेवाले; मारु इला–अनुपम; अमुतिन् मॉळि–अमृतवाणी; उरुमैयै–रुमा (सुग्रीव-पत्नी) को; पयन्तवन्–जिसने जन्म दिया था, वह; तिरल् कॅळु–शक्तिसम्पन्न; वानर चेनै–वानर-सेना; आरु ॲणायिर कोटि–छः के आठ (अड़तालीस) की; अतु–उसके; उटन् वर–साथ आते; वन्तान्–आया। ६९१

बाद अनुपम अमृत-सम बोली वाली रुमा का पिता आया, जो अपार सागर को भी पलक मारते समय के अन्दर मथकर पंकिल बना सकता था। उसके साथ सशक्त अड़तालीस करोड़ की वानर-सेना आयी। ६९१

ऐम्ब दायन् ट्रायिर कोडियॅण् णमैन्द
मॉय्म्बु माल्वरै पुरैनॅडु वानर मॊय्प्प
इम्बर् ञालत्तुम् वानत्तु मॅऴुदिय चीर्त्ति
नम्ब नैत्तन्द केशरि कडलॅन्न नडन्दान् 692

इम्पर् ञालत्तुम्–इस संसार में; वानत्तुम्–व्योम में; ॲऴुतिय चीर्त्ति–अंकित कीर्ति रूपी; नम्पनै तन्त–महिमावान वीर (हनुमान) को; तन्त–जन्म देनेवाला; केचरि–केसरी नाम का सेनापति; ऐम्पतु आय–पचास के; नूऱायिर कोटि–लाख करोड़; ॲण् अमैन्त–संख्या के; माल् वरै पुरै–श्रेष्ठ (कैलास) पर्वत-सम; मॊय्म्पु नॅटु वानरम्–भुजा वाले वानरों (की सेना) के; मॊय्प्प–साथ आते; कटल् ॲन्न–समुद्र के समान; नटन्तान्–आया। ६९२

भूलोक और व्योम-लोक में भी जिसकी कीर्ति अंकित थी, ऐसे यशस्वी श्रेष्ठ हनुमान के जनक केसरी पचास लाख कोटि में गिनी हुई, कैलास पर्वत-सम भुजा वाले और सशक्त वानरों की लम्बी सेना से घिरा हुआ आया। ६९२

मुनियु मामॅनि नरुक्कनै मुरणर मुरुक्कुम्
तनिमै ताङ्गिय वुलहैयुञ् जलम्वरिऱ् कुमैक्कुम्
कुनियु माक्कुरङ् गीरिरण् डायिर कोडि
अनिक मुन्वर वान्पॅयर्क् कण्णन्वन् दडैन्दान् 693

मुनियुम् आम् ॲनिन्–क्रोध करे तो; अरुक्कनै–सूर्य को; मुरण् अऱ–निर्बल बनाते हुए; मुरुक्कुम्–मार देगा; चलम् वरिन्–उग्र कोप होगा तो; तनिमै–अकेले ही; ताङ्किय उलकैयुम्–(हमको) धरती रहनेवाली भूमि को भी; कुमैक्कुम्–ध्वस्त कर देगा; कुनियुम्–(ऐसे) झुके रहनेवाले; मा कुरङ्कु–बड़े-बड़े वानर; ईर् इरण्टु–दो के दो (चार); आयिर कोटि–सहस्र कोटि (की); अनिकम् मुन् वर–सेना के सामने जाते; आन् पॅयर् कण्णन्–गाय की आँख नाम का (गवाक्ष); वन्तु अटैन्तान्–आ पहुँचा। ६९३

गवाक्ष आया और उसके सामने एक बहुत बड़ी वानर-सेना आयी। उसकी संख्या चार सहस्र कोटि थी। उसके वीर ऐसे थे कि क्रोध करें तो सूर्य को भी निर्बल करके मार दें। और उग्र क्रोध हो तो हमको धारण करनेवाली धरती को भी ध्वस्त कर दे। वे वीर आकार में बड़े थे और उनकी पीठ झुकी हुई थी। ६९३

मण्गॉळ् वाळॅयिऱ् ऱॅन्नत्तिन् वलियॅन वयिरत्
तिण्गॊण् माल्वरै मयिर्प्पुरत् तन्नवॅनत् तिरण्ड
कण्गो ळायिर कोडियि निरट्टियिर् कणित्त
ॲण्गि नीट्टङ्गॊण् डॅऴुवलित् तूमिर निऱुत्तान् 694

ॲऴु वलि–अतिवली; तूमिरन्–धूम्र; मण् कॊळ्–भूमि को उखाड़नेवाले;

वाळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों से भूषित; एऩ्ऩ्तुलिऩ्–(श्रीविष्णु के अवतार) वराह के समान; वलियऩ्–बली; वयिरम्–सारयुक्त; तिण् कोळ्–सशक्त; माल् वरै–बड़े पर्वत; मयिर् पुऱत्तुतऩ–इनके बाल की जड़ में समा जायँगे, ऐसा; तिरण्ट–मोटे-तगड़े; कण् कोळ्–विशाल विस्तार के; आयिरम् कोटियिऩ् इरट्टियिल्–सहस्र कोटि के दुगुने; कणित्तत–गिने हुए; ऍण्कित् ईट्टम् कोण्टु–रीछों का दल लेकर; इऱुत्तताऩ्–आ पहुँचा। ६९४

अत्यधिक बली धूम्र भूमि को उत्पाटित करनेवाले श्रीविष्णु के वराहावतार के समान बड़े बलवान दो सहस्र कोटि में गणित रीछों का समूह ले आया। वे रीछ इतने तगड़े थे कि सुदृढ़ और कठोर बड़े पर्वत भी उनके एक रोम के मूल में समा सकते थे। ६९४

तऩिव रुनुदडङ् गिरियॆऩप् पॆरियवऩ् शलत्ताल्
निऩैयु नॆञ्जिऱ वुरुमॆऩ वुरुक्कुऱु निलैयऩ्
पनश नॆऩ्बवऩ् पऩ्तिरण् डायिर कोडिप्
पुऩिद वॆञ्जिऩ वानरप् पडैहॊडु पुहुन्दान् 695

तऩि वरुम् तट किरि ऍऩ–अकेले आनेवाला बड़ा पर्वत है, ऐसा मान्य; पॆरियवऩ्–भीमकाय; चलत्ताल्–अतिक्रोध से; निऩैयुम् नॆञ्चु इऱ–सोचनेवालों के मन को तोड़ दे, ऐसा; उरुम् ऍऩ–गाज के समान; उरुक्कुऱु–पिघलानेवाले; निलैयऩ्–स्वभाव का; पनचऩ्–पनस (नाम का यूथप); पऩ्तिरण्टु आयिर कोटि–द्वादश सहस्र कोटि; पुऩितम् वॆम् चिऩम्–पवित्र (पर) भयंकर क्रोधी; वानरम् पटै कॊण्टु–वानर-सेना को साथ लेकर; पुकुन्ताऩ्–आ पहुँचा। ६९५

पनस नामक वानर यूथप बारह हज़ार करोड़ पवित्र पर भयंकर वानरों की सेना के साथ आ पहुँचा। वह यूथप अकेले उठकर आनेवाले पर्वत के-से आकार का था। उसका दुर्दम क्रोध सोचनेवाले के मन को भी तोड़ सकता था, और वज्र के समान उसको चूर-चूर कर सकता था। ६९५

इडियु माळ्हडन् मुळक्कमुम् वॆरुक्कॊळ विशैक्कुम्
मुडिविल् पेर्मुळक्क् कुडैयन विशैयन मुरण
कॊडिय कूऱ्ऱैयु मॊप्पन पदिऱ्ऱैन्दु कोडि
नॆडिय वानरप् पडैहॊण्डु पुहुन्दन नीलन् 696

नीलऩ्–नील; इटियुम्–वज्र-नाद; आऴ् कटल्–और गहरे समुद्र के; मुऴक्कमुम्–गर्जन को; वॆरु कॊळ–भयभीत करते हुए; इचैक्कुम्–उठनेवाले; मुटिवु इल्–अपार; पेर् मुऴक्कु–बड़ा शोर; उटैयत–रखनेवाले और; विचैयत–वेगवान; मुरण–विभिन्न; कॊटिय कूऱ्ऱैयुम्–क्रूर यम की भी; ऒप्पत–समता करनेवाले; पतिऱ्ऱैन्तु–दस के पाँच (पचास); कोटि–कोटि (की); नॆटिय वानरम् पटै–विशाल वानर-सेना; कॊण्टु–साथ लेकर; पुकुन्तऩऩ्–प्रविष्ट हुआ। ६९६

नील, वज्र और गम्भीर सागर के गर्जन को भय से स्तब्ध करते हुए उठनेवाले जोर के घोष से युक्त, वेगवान, विविध प्रकार के, और क्रूर यम की बराबरी करनेवाले पचास करोड़ वानरों की सेना को लेकर पहुँचा। ६९६

इळैत्तु वेड्रोरु मानिलम् वेण्डुमॆन्ऱु इरङ्ग
मुळैत्त मुप्पदि नायिर कोडियिऩ् मुड्रुम्
विळैत्त वॆम्जिनत् तरियित्तम् वॆरुवुड़ विळिक्कुम्
अळक्क रोडुमक् कवयनॆऩ् बवनुम्वन् दडैन्दाऩ् 697

अ कवयन् ऍन्पवनुम्–गवय नाम का वह भी; वेऱु ऒरु–अन्य एक; मा निलम् वेण्टुम्–बड़ी भूमि चाहिए; ऍन्ऱु–कहकर; इळैत्तु इरङ्क–दुःखी होकर मन कृश हो, ऐसा; मुळैत्त–जो प्रकट हुए; मुप्पतिन् आयिरम् कोटि–तीस सहस्र कोटि; मुऱ्ऱुम् विळैत्त–भूतल भर में व्याप्त; वॆम् चितत्तु–भयंकर क्रोध से युक्त; अरि इनम्–वानर-समूह; वॆरुवु उऱ–भय उत्पन्न करते हुए; विळिक्कुम्–तरेरनेवाले; अळक्करोटुम्–(सेना-) सागर के साथ; वन्तु अटैन्ताऩ्–आ पहुँचा। ६९७

गवय (गज?) नामक वीर आया, और उसके साथ एक बड़ा सेना-सागर आया। उसको देखकर लोगों के मन में यह दया का भाव उठता था कि (यह भूमि उनके संचार के लिए पर्याप्त नहीं है और) दूसरी पृथ्वी चाहिए। उनकी संख्या तीस हजार करोड़ की थी। अत्युग्र सिंह भी डर जाय, ऐसा तरेरनेवाले वीर थे उस सेना के वानर। ६९७

माह रत्तन वरत्तन मलैयन निलैय
वेह रत्तवॆङ् गण्णुमिळ् वॆयिलन मलैयिऩ्
आह रत्तिनुम् बॆरियन वाड्रैन्दु कोडि
शाह रत्तोडुन् दरीमुह नॆन्बवन् शार्न्दाऩ् 698

तरीमुकन् ऍन्पवन्–दरीमुख नाम का वह; मा करत्तन–मोटी भुजाओं वाले; वरत्तन–अनेक वर जिन्हें प्राप्त थे; मलैयन–पर्वत-सम सुदृढ़; वेकरत्त–उग्र; वॆम् कण्–भयंकर आँखों से; उमिऴ् वॆयिलन–निकलते अंगारों वाले; मलैयिन् आकरत्तिनुम्–पर्वताकार से; पॆरियन–बड़े; आऱु ऐन्तु कोटि–छः के पाँच (तीस) करोड़; चाकरत्तोटुम्–(सेना-) सागर के साथ; चार्न्ताऩ्–आ मिला। ६९८

दरीमुख तीस करोड़ सेना के समुद्र के साथ आ पहुँचा। उसके वीरों के हाथ बहुत मोटे थे। उन्हें श्रेष्ठ वर मिले थे। पर्वत से भी कठोर वे बहुत ही उग्र, आँखों से अंगारे उगलनेवाले और गिरियों से भी बड़े आकार के थे। ६९८

आयि रत्तरु नूरुहो डियिरुकडै यमैन्द
पायि रप्पॆरुम् बडैहॊण्डु परवैयिऱ् ड्रिरैयिऩ्

तायु रुत्तुड नेवरत् तडनॅडु वरैयै
एयु रुप्पुयच् चाम्बर्नेन् ववनुम्वन् दिरुत्तान् 699

तड-विशाल; नॅडु-ऊँचे; वरै एय्-पर्वत के समान; उरु-आकार के; पुयम्-कन्धों वाले; चाम्पन् ॲन्नपवनुम्-जाम्बवान नाम का वह भी; परवैयिन् तिरैयिन्-सागर-तरंगों के समान; ताय्-छलाँग लगाते हुए; उरुत्तु-वैर के साथ; उटन्ते वर-साथ आनेवाले; आयिरत्तु अऱु नूरु-एक सहस्र छः सौ; कोटियिन्-करोड़ की संख्या के; कटै अमैन्त-सर्वत्र व्याप्त; पायिरम् पॅरुम् पटै-महिमामय बड़ी सेना; कॉण्टु-साथ लेकर; वन्तु इरुत्तान्-आ पहुँचा। ६९९

पर्वतोन्नत भुजाओं वाला जाम्बवान, समुद्र तरंगों के समान छलाँग मारते आनेवाले एक सहस्र छः सौ करोड़ की संख्या के वीरों की बड़ी सेना लिये आ पहुँचा। ६९९

वहुत्त तामरै मलरय निशिशरर् वाणाळ्
उहुत्ति नीयॅनप् पॊरुवरुम् बॅरुवलि युडैयान्
पहुत्त पत्तुनू ऱायिरप् पत्तियि निरण्डु
तॊहुत्त कोडिवॆम् बडैहॊण्डु दुन्मुहन् तॊडर्न्दान् 700

पॊरुवु अरुम्-अप्रमेय; पॅरु वलि उटैयान्-बड़ा बली; तुन्मुकन्-दुर्मुख; वकुत्त-लोकसर्जक; तामरै मलर्-(विष्णु की नाभि रूपी) कमल-पुष्प पर आसीन; अयन्-ब्रह्माजी (के); निचिचरर् वाळ्नाळ्-निशिचरों की आयु के दिनों को; नी उकुत्ति-तुम ही समाप्त करो; ॲन्न-कहने पर; पकुत्त-व्यूह-बद्ध; पत्तु नूऱायिरम्-दस लाख; पत्तियिन्-पंक्तियों में; तॊकुत्त-लगे आनेवाले; इरण्टु कोटि-दो करोड़ की; वॆम् पटै कॊण्टु-भयंकर सेना लेकर; तॊटर्न्तान्-(उनका) अनुगमन करता आया। ७००

अप्रतिम बलशाली दुर्मुख ऐसे वीरों को ले आया, जिनको लोकसर्जक कमलासन ब्रह्मा ने शायद यह कहकर बनाया था कि तुम्हीं निशिचरों की आयु का अन्त कर दो। दस-दस लाखों के दलों में विभक्त उन वीरों की कुल संख्या दो करोड़ थी। ७००

कोडि कोडिनू ऱायिर वॆण्णॅनक् कुविन्द
नीडु वॆञ्जिनत् तरियिन मिरुपुडै नॆरुङ्ग
मूडु मुम्बरु मिम्बरुम् बूळियिन् मूळ्हत्
तोडि वर्न्दतार्क् किरिपुरै दुमिन्दनुन् दॊडर्न्दान् 701

तोटु इवर्न्त-दलयुक्त; तार्-पुष्पमालाधारी; किरिपुरै-पर्वत-सम; तुमिन्तनुम्-द्विविद भी; कोटि कोटि नूऱायिरम्-कोटि-कोटि लाख; ॲण् ॲन्न-संख्या में; कुविन्त-एकत्रित; नीटु वॆम् चिनत्तु-बहुत भयंकर क्रोधी; अरि इनम्-वानरवृन्द; इरु पुटै नॆरुङ्क-दोनों पार्श्वों में लगे आए; मूटुम् उम्परुम् इम्परुम्-

भूमि को ढँकनेवाला आकाश और भूमि दोनों को; पूऴियिल् मूऴ्क–धूल में छिपने देते हुए; तॉटर्न्तान्–बाद आया। ७०१

दलयुक्त फूलों की माला पहने हुए पर्वत-सम द्विविद नामक वीर कोटि-कोटि लाखों के, अतिक्रोधी वानर यूथों के मध्य आया। उनके चलने के कारण जो धूल उठी, उसमें भूमि के ऊपर फैला हुआ आकाश और भूतल दोनों डूब गये। ७०१

इयैन्द पत्तुनू ऱायिरप् पत्तॅन्नुङ् गोडि
उयर्न्द वॅञ्जिन्न वानरप् पडैयॊडु मॊरुङ्गे
शयन्द न्क्कॊरु वडिवॅनत् तिऱल्हॊडु तळैत्त
मयिन्दन् मऱ्कश कोमुहन् ऱन्नॊडुम् वन्दान् 702

चयम् तनक्कु ऑरु वटिवु ॲन–विजय को मिला एक रूप है, ऐसा लगनेवाले; तिऱल् कॊट्टु–वल के साथ; तळैत्त–उत्कृष्ट; मयिन्तन्–मयन्द; मल्–मल्ल; कच कोमुकन् तन्नॊटुम्–गजगोमुख के साथ; इयैन्त–युक्त; पत्तु नूऱायिरम् पत्तु ॲन्नुम्–सौ लाख; कोटि–कोटि; उयर्न्त वॆम् चितम्–अति भयंकर क्रोधी; वानरम् पटैयॊटुम्–वानर-सेना के साथ; ऑरुङ्के वन्तान्–मिलकर आया। ७०२

मैंद आया जो विजय का ही साक्षात् रूप था। वह मल्ल गजगोमुख को भी साथ लाया। उनके साथ सौ सहस्र कोटि उत्कृष्ट और क्रोधी वानरों की सेना आयी। ७०२

कऱङ्गु पोल्वन काऱ्ऱिनुङ् गूऱ्ऱिनुङ् गडिय
पिऱङ्गु तॆण्डिरैक् कडल्पुडै पॆयर्न्दॆन्नप् पॆयर्व
मऱङ्गॊळ् वानर मॊन्बदु कोडियॆण् वहुत्त
तिऱङ्गॊळ् वॆञ्जिनप् पडैहॊडु कुमुदनुञ् जेर्न्दान् 703

कुमुतन्नुम्–कुमुद; कऱङ्कु पोल्वन–पतंग के समान (उड़नेवाले); काऱ्ऱिनुम् कूऱ्ऱिनुम् कटिय–पवन से भी (तेज) और यम से भी क्रूर; पिऱङ्कु–शोभनेवाली; तॆळ् तिरै–स्वच्छ वीचियों का; कटल्–समुद्र; पुटै पॆयर्न्तु ॲन्न–स्थान बदला हो, ऐसा; पॆयर्व–स्थान बदलती जानेवाली; ऑन्पतु कोटि–नौ करोड़ की; ॲण् वकुत्त–संख्या में गणित; तिऱम् कॊळ्–बली; वॆम् चितम्–भयंकर क्रोधी; मऱम् कॊळ्–दूसरों की वीरता को परास्त करनेवाली; वानरम् कॊट्टु–वानर-सेना को साथ ले; चेर्न्तान्–आ पहुँचा। ७०३

कुमुद, पतंग-सम, पवनदेव और यमराज से भी कठोर और ऐसा चलनेवाले मानो स्वच्छ वीची वाला समुद्र स्थान बदलकर आ रहा हो, नौ करोड़ वानरों की सेना ले आया। वे वानर मन और शरीर दोनों के वड़े बली और साहसी व क्रोधी थे। ७०३

कैयर् जाशर मुडैयवक् कडवुळैक् कण्डु
मॅय्यर् जादवन् मादिरन् जिऱ्ऱिदॅंन्न विरिन्द
वैयर् जाय्दरत् तिरिदुरु वानरच् चेन्नै
ऐयर् जायिर कोडिहॉण् डनुमन्वन् दडैन्दान् 704

अम् कै–सुन्दर किरणें; चाचरम् उटैय–हज़ारों के साथ रहनेवाले; अ कटवुळै–उस (सूर्य-) देव को; कण्टुम्–देखकर भी; मॅय् अन्चातवन्–शरीर में थोड़ा भी कम्पन न लानेवाले; अनुमन्–हनुमान; मातिरम् चिऱ्ऱितु–दिशाएँ (इसके सामने) छोटी है; ॲन्न विरिन्त–ऐसा विशाल; वैयम्–भूमि; चाय्तर–एक ओर धँस जाय, ऐसा; तिरितरु–घूमनेवाली; ऐ अन्चु–पचीस; आयिरम् कोटि–सहस्र कोटि; वानर-चेन्नै–वानर-सेना; कॉण्टु–साथ लिये; वन्तु अटैन्तान्–आ पहुँचे। ७०४

सहस्रों सुन्दर किरणों को करों के रूप में रखनेवाले सूर्यदेव को सामने से देखकर भी जिसके शरीर में कोई कम्पन नहीं होता था, वह हनुमान दिशाओं को छोटा बनाते हुए और भूमि को एक ओर झुकाते हुए आनेवाले पचीस हजार करोड़ वानरों की सेना लेकर आया। ७०४

नॉय्दिऱ् कूडिय शेन्नै नूऱायिर कोडि
ॲय्दत् तेवरु मॅन्गॊलो मुडिवॅन्ब दॅण्ण
मैयर् चिन्दैया लन्दहन् मरुक्कुऱ्ऱु मयङ्गल्
तॅय्वत् तच्चन्मॅय्त् तिरुनॅडुङ् गादलन् शेर्न्दान् 705

तॅय्वम् तच्चन्–देवशिल्पी (विश्वकर्मा) का; मॅय् तिरु–सच्चा प्रतिरूप; नॅटु कातलन्–उसका बहुत प्यारा पुत्र (नल); तेवरुम्–देवता भी; मुटिवु ॲन् कॊलो–इसका पार कहाँ; ॲन्पतु ॲण्ण–यह सोचें, ऐसा; अन्तकन्–अन्तक (यम); मैयल् चिन्तैयाल्–भ्रमित मन में; मरुक्कुऱ्ऱु–मोहित होकर; मयङ्क–चकित हो; नॉय्तिन् कूटिय–सहसा एकत्रित; नूऱायिर कोटि–सहस्र (सहस्र) कोटि; चेन्नै ॲय्त–सेना को अपने साथ आने देते हुए; चेर्न्तान्–आ पहुँचा। ७०५

देवशिल्पी का जो प्रतिरूप ही लगता था वह उसका पुत्र नल, अपने साथ एकत्रित लाख-लाख कोटि के वानरों की सेना लेकर आया। वह सेना इतनी विशाल थी कि देव भी यह विस्मय करने लगे कि इसका अन्त कहाँ और यम भी भ्रमित और अधीर हो गया। ७०५

कुम्ब नुङ्गुलच् चङ्गनु मुदलिनर् कुरङ्गिन्
तम्बॅ रुम्बडैत् तलैवर्ह डरवन्द लानै
इम्बर् निन्ऱवर्क् कॅण्णरि दिराहव नावत्
तम्बॅ नुन्दुणैक् कुरियमर् ऱुरैप्परि दळवे 706

कुम्पनुम्–कुम्ब व; कुलम् चङ्कनुम्–कुलीन शंख; मुतलिनर्–आदि; तम् पॅरु–अपनी-अपनी बड़ी; कुरङ्किन् पटै तलैवर्कळ्–वानर-सेना के पति; तर वन्त–

अपने साथ आयी; तानै–सेना; इम्पर् निन्ऱवर्क्कु–भूतलवासियों के लिए; ऍण्णरितु–गिनना असम्भव है; इराकवन् आवत्तु–श्रीराघव के तूणीर के; अम्पु ऍन्नुम् तुणैक्कु उरिय–अस्त्र जितने हैं, उतने लगनेवाले; अळवु मऱ्ऱु–दूसरी गणना; उरैप्परितु–कहना कठिन है। ७०६

कुम्भ और कुलीन शंख आदि अपनी वड़ी-वड़ी वानर-सेनाओं के साथ आये। उनकी वानर-सेनाएँ इस लोक के वासियों द्वारा गिनी नहीं जा सकती थी। श्रीराघव के तूणीर में रहनेवाले शरों के उतने हैं, यह कहा जा सकता था। और कोई गणना सम्भव नही। ७०६

तोयि लाऴियो रेऴुनीर् शुवऱ्ऱिवॆण् डुहळाम्
शायि नण्डमु मेरुवु मॊरुङ्गुडन् शरियुम्
एयिन् मण्डल मॆऴ्ऴिड विडमिन्ऱि यिरियुम्
कायिन् वॆङ्गनऱ् कडवुळु मिरवियुङ् गरियुम् 707

तोयिल्–(यह सेना-समूह) गोता लगाएँ तो; आऴि–समुद्र; ओर् एऴुम्–सातों; नीर् चुवऱ्ऱि–जल सूखकर; वॆळ् तुकळ् आम्–श्वेत धूल बन जावें; चायिन्–एक ओर झुकें तो; अण्टमुम्–यह अण्ड और; मरुवुम्–मेरु; ऑरुङ्कु–एक साथ; उटन् चरियुम्–उनके साथ झुक जाते; एयिन्–घूमने लगें तो; मण् तलम्–यह भूमि; ऍळ् इट–तिल धरने को; इटम् इन्ऱि–स्थान नहीं हो; इरियुम्–जायगी; कायिन्–क्रोध करें तो; वॆम् कनल् कटवुळुम्–भयंकर अग्निदेव और; इरवियुम्–रवि; करियुम्–झुलसेंगे। ७०७

ऐसी वड़ी सेना आकर एकत्रित हुई; अगर वह समुद्र में मग्न हो, तो सातों समुद्र सूख जायें और सफ़ेद धूल मात्र रह जायें। अगर वह एक ओर पिल पड़े तो भूमण्डल और मेरु उसके साथ उसी ओर धँस जायें। अगर वह संचार करने लगे तो भूतल पर तिल रखने को भी स्थान नही मिले। अगर वह क्रोध करे तो भयंकर अनलदेव और अर्कदेव जलकर काले पड़ जायें। ७०७

ऍण्णि नान्मुह ऱॆऴुपदि नायिरर्क् कियला
उण्णि नण्डङ्ग ळोर्बिडि युण्णवु मुदवा
कण्णि नोक्कुऱिऱ् कण्णुद लानुक्कुङ् गदुवा
मण्णिन् मेल्वन्द वानरत् तानैयिन् वरम्बे 708

मण्णिन् मेल्–भूमि पर; वन्त–एकत्रित हो आयी; वानर तानैयिन्–वानर-सेना का; वरम्पु–विस्तार (सीमा); ऍण्णिन्–विचार करें तो; नान्मुकर्–चतुर्मुख; ऍऴुपतिनायिरर्क्कु–सात सहस्रों के लिए भी; इयला–असम्भव है; उण्णिन्–खाने लगें; अण्टङ्कळ्–सारे अण्ड; ओर् पिटि उण्णवुम्–एक ग्रास खाने के लिए भी; उतवा–पर्याप्त नहीं होंगे; कण्णिन् नोक्कुऱिन्–आँखों से देखने लगे तो; कण्णुतलानुक्कुम्–भालनेत्र (शिवजी) के लिए भी; कतुवा–देखना असम्भव है। ७०८

भूमि पर जो वानर-सेना एकत्रित हो आयी, उसकी संख्या गिनना हो तो सत्तर हज़ार चतुर्मुखों के लिए भी असम्भव है। इस सेना के लिए खाना हो तो सारे अण्ड एक ग्रास भी नहीं बनें। आँखों से देखना हो तो भाल-नेत्र शिवजी की दृष्टिपथ में न समा सके। ७०८

ऑडिक्कु मेल्वड मेरुवै वेरॉडु मॉडिक्कुम्
इडिक्कु मेलॅडु वानह मुहट्टैयु मिडिक्कुम्
पिडिक्कु मेऱ्पॅरुङ् काऱ्ऱैयुङ् गूऱ्ऱैयुम् बिडिक्कुम्
कुडिक्कु मेऱ्कड लेऴैयुङ् गुडङ्गैयिऱ् कुडिक्कुम् 709

ऑटिक्कुमेल–तोड़ने लगे; वट मेरुवै–तो उत्तर के मेरु को; वेरॉटुम् ऑटिक्कुम्–मूल से तोड़ देंगे; इटिक्कुमेल्–गिराना चाहें; नॅटु वानक मुकट्टैयुम्–विशाल आकाश की चोटी को भी; इटिक्कुम्–गिरा देंगे; पिटिक्कुमेल्–ग्रसना चाहें तो; पॅरु काऱ्ऱैयुम्–बड़े पवन को; कूऱ्ऱैयुम्–और यम को; पिटिक्कुम्–पकड़ ले; कुटिक्कुमेल्–पान करे तो; कटल् एऴैयुम्–सातों समुद्रों को; कुटङ्कैयिन्–हथेली में लेकर; कुटिक्कुम्–पी लेंगे। ७०९

वे सेनाएँ तोड़ने की इच्छा करें तो उत्तर के मेरु को जड़ से उखाड़ कर तोड़ लेतीं। आकाश की छत से भी टकरातीं। मन करें तो महान पवन और यम को भी पकड़ लें। पान करने की इच्छा करें तो सप्त समुद्रों के जल को चुल्लू में भरकर पी जायें। ७०९

आऱु पत्तॅऴु कोडियर् वानरर्क् कदिबर्
कूऱु तिक्किनुक् कप्पुरङ् गुप्पुरर् कुरियार्
माऱिल् कॉऱ्ऱव निनैत्तन मुडिक्कुरुम् वलियर्
ऊऱु मिप्पॅरुञ् जेनैहॉण् डॅळिदिनुवन् दुऱ्ऱार् 710

कूऱु तिक्किनुक्कु–प्रथित चारो दिगन्त के; अप्पुऱम्–उस पार भी; कुप्पुऱ्ऱकु–लपकने का; उरियार्–सामर्थ्य रखनेवाले; माऱु इल्–अप्रमेय; कॉऱ्ऱवन्–उनके राजा (सुग्रीव); निनैत्तन–जो सोचेगा; मुटिक्कुरुम्–उन सबको पूरा करने का; वलियर्–सामर्थ्य रखनेवाले; आऱु पत्तु ऍऴु–सड़सठ; कोटियर्–करोड़; वानरर्क्कु अतिपर्–वानर-सेनापति; ऊऱुम्–उत्तरोत्तर बढ़े आनेवाली; इ पॅरु चेनै–इस बड़ी सेना को; कॉण्टु–लिये हुए; ऍळितिन्–अनायास; वन्तु उऱ्ऱार्–आ पहुँचे। ७१०

ऐसी बढ़ती जाती-सी लगनेवाली विपुल सेना को लेकर सड़सठ वानर यूथप आ पहुँचे। वे चतुर्दिशाओं के पार भी छलाँग मारकर पहुँच सकते थे। उनमें इतना साहस था कि उनका अनुपम राजा सुग्रीव जो भी सोचता था वह काम पूरा कर दिखाते। ७१०

एऴु माहडर् परप्पिनुम् वरप्पॅन विशैप्पच्
चूऴम् वानरप् पडैयॉडव् वीररुन् दुवन्नुरि

आऴि मापरित् तेरवऩ् कादल ऩ्डिहळ्
वाऴि वाऴियॅऩ् ऱुरैत्तऩर् तूविऩर् वणङ्गि 711

अ वीररुम्–उन वीरों ने भी; एऴु मा कटल् परप्पिनुम्–सात महासमुद्रों के विस्तार से भी; परप्पु ॲऩ–इसका अधिक विस्तार है, ऐसा; इचैप्प–लोग कहें, इतनी बड़ी; चूऴुम् वानरम् पटॅयॊटु–घेरे रहनेवाली वानर-सेना के साथ; तुवऩ्ऱि–पास आकर; आऴि मा परि–एक चक्र और बड़े अश्वों से युक्त; तेरवऩ् कातलऩ्–रथ के स्वामी सूर्य के प्यारे पुत्र के; अटिकळ्–श्रीचरण; वाऴि वाऴि–जिए, जिए; ॲऩ्ऱु उरैत्तु–ऐसा जयघोष करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; अलर् तूविनर्–पुष्प बरसाए। ७११

वे वानर वीर सातों समुद्रों के विस्तार से भी अधिक विस्तृत कही जा सकनेवाली वानर-सेना के साथ मिलकर आये। उन्होंने एकचक्ररथी सूर्यदेव के प्यारे पुत्र सुग्रीव की यह कहते हुए स्तुति की कि आपके श्रीचरण जियें, जिये। उस पर पुष्प भी बरसाये। ७११

अऩैय दाहिय शेऩैवन् दिरुत्तलु मरुक्कऩ्
तऩैय नॊय्दिऩिऱ् ऱयरदऩ् पुदल्वऩैच् चार्न्दाऩ्
निऩैयु मुऩ्ऩम्वन् दडैन्ददु निऩ्बॅरुञ् जेऩै
विऩैयिऩ् कूऱ्ऱुव कण्डरु ळीयॅऩ विळम्बुम् 712

अऩैयतु आकिय–ऐसी वह; चेऩै वन्तु–सेना आकर; इरुत्तलुम्–रही, तब; अरुक्कऩ् तऩैयऩ्–अर्कपुत्र; तयरतऩ् पुतल्वऩै–दाशरथी श्रीराम के पास; नॊय्तिऩिल्–शीघ्र; चार्न्ताऩ्–पहुँचा; विऩैयिऩ् कूऱ्ऱुव–पापारि; निऩैयुम् मुऩ्ऩम्–स्मरण करने से पहले; निऩ् पॅरु चेऩै–आपकी बड़ी सेना; वन्तु अटैन्ततु–आ गयी; कण्टरुळ् नी–कृपादर्शन कर लीजिए आप; ॲऩ विळम्पुम्–ऐसा कहा। ७१२

ऐसी सेना के आ एकत्रित होने पर अर्कपुत्र, सुग्रीव दशरथ के पुत्र श्रीराम के पास वेग के साथ आया। उसने उनसे निवेदन किया कि हे पाप के अन्तक! आप सोचें, इसके पहले ही आपकी बड़ी सेना आ गयी। उस पर दृष्टि लगाने की कृपा करें। ७१२

ऐय ऩुम्मुवन् दहमॅऩ मुहमलर्न् दरुळित्
तैय लाळ्वरक् कण्डऩ ऩामॅऩत् तळिर्प्पान्
अॅय्दि ऩाऩ्ङ्गोर् नॅडुवरैच् चिहरत्ति ऩिरुक्कै
वॅय्य वऩ्महऩ् पॅयर्त्तुमत् ताऩैयिऩ् मीण्डाऩ् 713

ऐयऩुम्–सुन्दरराज श्रीराम; उवन्तु–आनन्द करके; अकम् ॲऩ–भीतर जैसे; मुकम्–मुख भी; मलर्न्तु–मोद-विकसित करके; अरुळि–कृपा के साथ; तैयलाळ् वर–पत्नी को आते; कण्टऩऩाम् ॲऩ–देखा हो जैसे; तळिर्प्पाऩ्–फूल उठे; अङ्कु–वहाँ; ओर् नॅटु वरै–एक बड़े पर्वत के; चिकरत्तिऩ् इरुक्कै–शिखर के स्थल पर;

ऍय्तितान्-पहुँचे; वॆय्यवन्-आतपकारी (सूर्य) का; मकन्-पुत्र; पॆयर्त्तुम्-लौटकर; अ ताऩैयिऩ्-उस सेना के पास; मी'ग्टान्-चला । ७१३

सुन्दर श्रीराम मुदित हुए। जितना उनका मन मुदित हुआ, उतना ही उनका श्रीमुख भी प्रफुल्लित हुआ। देवी ही आ गयी हों, इस भाँति उत्साहित होकर वे एक उन्नत पर्वत के शिखर के स्थल पर जा पहुँचे। तब सूर्यपुत्र अपनी सेना के पास लौट आया। ७१३

ऍट्टुत् तिक्कैयु मिरुनिलप् परप्पैयु मिमैयोर्
वट्ट विण्णैयु मड़िहड लनैत्तैयु मड़ैयत्
तॊट्टु मेलॆळुन् दोङ्गिय तूळियिऩ् पूळि
अट्टिच् चॆम्मिय निऱैहुड मॊत्तदिव् वण्डम् 714

ऍट्टु तिक्कैयुम्-आठों दिशाओं को; इरु निल परप्पैयुम्-विशाल भूमि के विस्तार को; इमैयोर् वट्टम्-देवों के गोल; विण्णैयुम्-स्वर्गलोक को; मड़ि कटल्-जिन पर लहरें मुड़-मुड़कर (तीर से) टकराती हैं, उन; अनैत्तैयुम्-सभी (सातों) सागरों को; मड़ैय-छिपाते हुए; तॊट्टु-भूमि पर और उससे; मेल् ऍळुन्तु-ऊपर व्याप्त करके; ओङ्किय-उठी हुई; तूळियिऩ्-धूल से; इ अण्टम्-यह अण्डगोल; पूळि अट्टि-धूल से भरकर; चॆम्मिय-सम्पूर्ण हुए; निऱै कुटम्-पूर्णकुम्भ; ऒत्ततु-के समान लगा। ७१४

सेना ने आठों दिशाओं, बड़ी भूमि के विस्तृत स्थल और देवों के गोल व्योम देश और समुद्रों को, जिन पर लहरें उठकर तीरों से टकराकर वापस मुड़ती थीं, एकदम ढक दिया। तब धूल बहुत उठी और ऊपर चढ़ी; जिससे यह अण्ड धूल-भरे पूर्णकलश के समान दिखा। ७१४

अत्ति यॊप्पॆऩ्ऩि नत्तवै युणर्न्दव रुळराल्
वित्त हर्क्किऩि युरैक्कला मुवमैवे ऱियादो
पत्ति रट्टिनल् पहलिर वॊरुवलर् पार्प्पार्
ऍत्ति ऱत्तिनु नडुवुहण् डिलर्मुडि वॆवऩो 715

अत्ति-अब्धि; ऒप्पु ऍऩ्ऩिऩ्-सानी है, कहें तो; अन्नवै-उनको; उणर्न्तवर्-पूर्णरूप से जो देख (जान) चुके; उळर्-वे हैं; इऩि-अब; वित्तकर्क्कु-विद्वानों को; उरैक्कलाम् उवमै-कथनीय उपमा; वेऱु यातो-और दूसरी क्या है; पत्तु इरट्टि-दस के दुगुने (बीस) दिन; नल् पकल् इरवु-रात और दिन; ऒरुवलर्-विना रुके; पार्प्पर्-जिन्होंने देखा, उन श्रीराम और लक्ष्मण ने; ऍ तिऱत्तिऩुम्-किसी विध; नटुवु कण्टिलर्-इन सेना का मध्य भाग नहीं देखा; मुटिवु ऍवऩो-फिर अन्त कहाँ (देखा जाय)। ७१५

इस सेना की सागर समानता कर सकते हैं --ऐसा कहें तो सागरों की सीमा के ज्ञाता मिलते हैं। (पर इस सेना का अन्त कोई देख नहीं सका।)

फिर विद्याप्रवीणों के पास उल्लेख-योग्य उपमा कहाँ है ? श्रीराम और लक्ष्मण ने बीस दिन और बीस रात लगातार देखा तो भी किसी विध से इस सेना का मध्यभाग भी न देख सके। फिर इसका अन्त देखना कैसे हो सकता है ? । ७१५

विण्णिऱ् ऱोम्बुन लुलहत्ति नाहरिऩ् वॆऱ्ऱि
ॲण्णिऱ् ऱानल दॊप्पिल नॆऩ्ऩिगिऩ्ऱ विरामन्
कण्णिऱ् चिन्दैयिऱ् कल्वियिऩ् ञानत्तिऱ् करुदि
अण्णऱ् ऱम्बियै नोक्किन नुरैशॆय्व दानान् 716

वॆऱ्ऱि ॲण्णिल्–विजयशीलता पर विचार करें; तान् अलतु–स्वयं उन्हीं को छोड़कर; विण्णिल्–व्योम में; तोम्पुतल्–मधुर सागर-वलयित; उलकत्तिल्–भूतल में और; नाकरिन्–नागलोक में; ऑप्पु इलन्–कोई उपमा नहीं रखनेवाले; इरामन्–श्रीराम (ने); कण्णिन्–अपनी आँखों से; चिन्तैयिन्–मन से; कल्वियिन्–विद्या से; ञानत्तिन्–बुद्धि से; करुति–सोचकर; अण्णल् तम्पियै–महिमावान् भ्राता को; नोक्किनन्–देखा और; उरै चॆय्वतु आनान्–वचन कहने लगे। ७१६

श्रीराम की विजयशीलता के सम्बन्ध में विचार करने लगें तो वे अपनी समानता स्वयं आप ही कर सकते हैं। नही तो आकाश मे, सुखद समुद्र-वलयित भूमि में और नागों के पाताललोक में उनके समान कौन है ? ऐसे अप्रमेय श्रीराम ने अपनी आँखों से, मन से और शास्त्रज्ञान और विवेचना द्वारा उस सेना के विस्तार को देखा और समझा और अपने महिमामय भाई सुमित्रानन्दन से कहना आरम्भ किया। ७१६

अडल्हॊण् डोङ्गिय शेऩैक्कु नामुनम् मऱिवाऩ्
उडल्हण् डोमिनि मुडिवुऴ काणुमा ऱुऴदो
मडल्हॊण् डोङ्गिय वलङ्गलाय् मण्णिडै माक्कळ्
कडल्हण् डोमॆऩ्बर् यावरे मुडिवुऱक् कण्डार् 717

मटल् कॊण्टु–पंखुड़ियों से पूर्ण; ओङ्किय–श्रेष्ठ (फूलों की); अलङ्कलाय्–मालाधारी; नामुम्–हमने भी; नम् अऱिवाल्–अपनी बुद्धि से; अटल् कॊण्टु–बल लिये; ओङ्किय–बढ़ी हुई; चेऩैक्कु–इस सेना का; उटल् कण्टोम्–शरीर (मध्य भाग) देखा; इऩि उऴ–आगे रहनेवाले; मुटिवु–अन्त को; काणुम् आऱु–देखने का मार्ग; उऴतो–है क्या; मण् इटै–भूतल में; माक्कळ्–लोग; कटल् कण्टोम्–सागर देखा; ॲऩ्पर्–कहेंगे; मुटिवु उऱ–आर-पार पूरा करके; कण्टार्–जो देख चुके; यावरे–कौन हैं। ७१७

दल-लसे पुष्पों की बनी श्रेष्ठ माला के धारक ! हम दोनों ने अपने बुद्धिबल से वीरता के साथ उत्कृष्ट इस बड़ी वानर-सेना के मध्य भाग को एक तरह से देख लिया। उसका अन्तिम भाग देखने का कोई मार्ग भी है

क्या ? भूलोकवासी कहने को तो कह देते हैं कि हमने सागर देख लिया है, पर असल में कौन लोग हैं, जिन्होंने पूर्णरूप से समुद्र को देख चुके हैं ? । ७१७

ईशऩ् मेऩियै यीरैऩ्दु दिशैहळै योण्डिव्
वाशिल् शेऩैयै यैम्बॆरुम् बूदत्तै यऱिवैप्
पेशुम् पेच्चिऩैच् चमयङ्गळ् पिणक्कुरुम् पिणक्कै
वाश मालैया यावरे मुडिवॆण्ण वल्लार् 718

वाचम् मालैयाय्–सुवासपूर्ण मालाधारी; ईचऩ् मेऩियै–ईश्वर के शरीर को; ईरैन्तु तिचैकळै–दसों दिशाओं को; ऐम् पॆरुम् पूततृतै–पाँच महाभूतों को; अऱिवै–ज्ञान के विस्तार को; पेचुम् पेच्चिनै–कहे हुए वचनों को; चमयङ्कळ्–मतों के; पिणक्कुरुम्–तर्क के; पिणक्कै–झगड़ों को और; ईण्टु–यहाँ; इ–इस; आचु इल्–अनिन्द्य; चेऩैयै–सेना को; यावरे–कौन ही; मुटिवु ॲण्ण–गुनकर पूरा करने को; वल्लार्–समर्थ होंगे । ७१८

सुगन्ध-मालाधारी ! ईश्वर का श्रीरूप, दसों दिशाएँ, पञ्चमहाभूत, सूक्ष्मज्ञान, उच्चरित वचन, धर्मों का वैमनस्य और यहाँ यह अनिंद्य सेना ! इन सबको गुनकर अन्त बतानेवाला कौन है ? । ७१८

इऩ्ऩ शेऩैयै मुडिवुऱ विरुन्दिव णोक्किप्
पिऩ्ऩैक् कारियम् बुरिदुमे ऩाळ्पल पॆयरुम्
उऩ्ऩिच् चॆय्हैमे लॊरुप्पड लुऱुवदे युऱुदि
ॲऩ्ऩ वीरऩैक् कैदॊऴु दिळैयव ऩियम्बुम् 719

इऩ्ऩ चेऩैयै–इस सेना को; इवण् इरुन्तु–यहाँ रहकर; मुटिवु उऱ–पूर्ण रूप से; नोक्कि–देखकर; पिऩ्ऩै–तदनन्तर; कारियम् पुरितुमेल्–कार्य में लगें तो; नाळ् पल–अनेक दिन; पॆयरुम्–व्यतीत हो जायँगे; उऩ्ऩि–विचारकर; चॆय्कै मेल्–कार्य पर; ऒरुप्पटल्–चित्त लगाकर; उऱुवते–लग जाना ही; उऱुति–हितकारी है; ॲऩ्ऩ–ऐसा (श्रीराम ने) कहा, तब; इळैयवऩ्–कनिष्ठ; वीरऩै–वीर श्रीराम से; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; इयम्पुम्–बोले । ७१९

ऐसी सेना को हम यहाँ रहकर पूर्णरूप से देखें और बाद को कोई कार्य करने को सोचें तो अनेक दिन बीत जायेंगे । इसलिए (सेना-संदर्शन को यहीं छोड़कर) आगे के कर्तव्य का विचारकर कार्य में लग जाना ही हित-कार्य है । श्रीराम का यह वचन सुनकर लक्ष्मण ने वीरराघव को नमस्कार किया और कहा । ७१९

याव दॆव्वुल हत्तिऩि ऩीङ्गियवर्क् कियऱ्ऱल्
आव दाहुव दरियदॊऩ् ऱुळदॆऩ्ऩ लामे
देव दैवियॆत् तेडुच दॆऩ्वदु शिऱ्ऱिदाल्
पावन् दोऱ्ऱदु तरुममे वॆऩ्ऱदिप् पडैयाल् 720

तेव–देव; ईङ्कु–यहाँ; इवर्क्कु–इनके लिए; ऍ उलकत्तितिऩ्–किस लोक में; इयर्ऱल् यावतु–करना क्या है; आकुवतु–करणीय वह; आवतु–कृत हो जायगा; अरियतु–कठिन; ऑऩ्ऱु–एक काम; उळतु ॲऩल्–है कहना; आमे–होगा क्या; तेवियै–देवी (सीता) को; तेटुवतु ॲऩ्पतु–खोजने का काम; चिऱितु–अल्प है; इ पटैयाल्–इस सेना के कारण; पावम् तोऱ्ऱतु–पाप हारा; तरुममे वॆऩ्ऱतु–धर्म ही जीता। ७२०

देव ! किसी भी लोक में जो भी आवश्यक काम हैं, वे काम करना इस सेना के वीरों के लिए बाएँ हाथ का खेल है। उनके लिए असाध्य कहने योग्य कोई काम है क्या ? देवी को ढूँढ़ पाना इनके लिए बहुत छोटा काम है। इस सेना के कारण समझ लीजिये कि पाप हार गया और धर्म जीत गया। ७२०

तरङ्ग नीरॆळु तामरै नाऩ्मुहऩ् ऱऩ्द
वरङ्गॉळ् पेरुल हत्तिऩिऩ् मऱ्ऱैमऩ् ऩुयिर्हळ्
उरङ्गॉण् मालुवरै युयिर्पडैत् तॆळुऩ्दऩ वॊक्कुम्
कुरङ्गिऩ् माप्पडैक् कुऱ्ऱैयिडप् पडैत्तऩऩ् कॊल्लाम् 721

तरङ्कम् नीरॆळु–लहरों से युक्त जल में उगनेवाले; तामरै–कमल पर उदित; नाऩ्मुकऩ्–चतुर्मुख ने; तऩ्त–सृष्ट; वरम् कॊळ्–वरीयता-प्राप्त; पेर् उलकत्तितिल्–बड़े जग (में) के; मऱ्ऱै–अन्य; मऩ् उयिर्कळ्–जीवसमूह को; उयिर् पटैत्तु ॲळुन्तऩ–जीवित हो उठे हुए; उरम् कॊळ्–बलवान; माल् वरै ऑक्कुम्–बड़े पर्वतों की समता करनेवाले; कुरङ्किऩ् मा पटैक्कु–वानरों की बड़ी सेना के लिए; उऱ्ऱैइट–मापन-संकेत के रूप में रखने के लिए; पटैत्तऩऩ् कॊल् आम्–शायद सृष्ट किया था। ७२१

लहरोद्वेलित जल मे उत्पन्न जलज-फूल में उद्भूत ब्रह्मदेव के द्वारा सृष्ट इस वर पृथ्वी में जो अन्य जीव हैं, उनकी संख्या अब जो उठ आये हैं, उन बलवान पर्वत-सम वानरों की सेना की गिनती के लिए निर्धारित प्रतिनिधि-मापक चिह्न हों, इस कारण ही ब्रह्मा ने संसार को सृष्ट किया है। [जब बड़ी संख्या को गिनना पड़ता है, तब यह प्रथा है कि बड़ी संख्या के एक अंश को किसी और पदार्थ की अदद को प्रतिनिधि-सूचक निशान (मापक) बनाया जाय। उदाहरणार्थ एक सहस्र रुपया गिनने पर एक कौड़ी रखी जाती। इस तरह से कौड़ियाँ रखते जाते हैं और आखिर में कौड़ियों को गिनकर कुल रुपयों का हिसाब लगाया जाता है। इस (मापक) कौड़ी को हम तमिळ में "उऱ्ऱै" कहते है। संसार का हर जीव वानर-सेना के एक अंश का प्रतिनिधि-चिह्न है। यह कवि का कथन है।]। ७२१

ईण्डु ताऴ्क्किऩ्ऱ दॆऩ्ऩिऩि यॆण्डिशै मरुङ्गुम्
तेण्डु वार्हळै वल्लैयिऱ् चॆलुत्तुव दल्लाल्
नीण्ड नूल्वला यॆऩ्ऱऩ ऩिळैयव ऩॆडियोऩ्
पूण्ड तेरवऩ् कादलऱ् कोरुमॊऴि पुहलुम् 722

नीण्ट नूल् वलाय्–श्रेष्ठ शास्त्रों में व्युत्पन्न; ऍण् तिचै मरुङ्कुम्–आठों दिशाओं के स्थानों में; तेण्टुवार्कळै–अन्वेषकों को; वल्लैयिऩ्–शीघ्र; चॆलुत्तुवतु अल्लाल्–भेजे विना; इऩि–अब; ईण्टु–यहाँ; ताऴ्क्किऩ्ऱतु ऍऩ्–विलम्ब करना क्यों; ऍऩ्ऱऩऩ्–कहा; इळैयवऩ्–लक्ष्मण ने; नॆटियोऩ्–त्रिविक्रम श्रीराम; पूण्ट तेरवऩ्–अश्व-जुते रथ के; कातलऱ्कु–सूर्यदेव के पुत्र सुग्रीव से; ओरु मॊऴि पुकलुम्–एक बात कही। ७२२

महिमायुक्त शास्त्रों के ज्ञाता! अब चारों दिशाओं के स्थानों में अन्वेषण-कर्ताओं को प्रेषित करना छोड़कर विलम्ब क्यों किया जाय? लक्ष्मण के ऐसा कहने पर त्रिविक्रम श्रीराम ने सप्ताश्वरथी सूर्य के पुत्र सुग्रीव से कहने लगे। ७२२

12. नाडविट्ट पडलम् (अन्वेषण-प्रेषण पटल)

वहैयु मानमु मारॆदिऱ् ताऱ्ऱु, पहैयु मिऩ्ऱि निरन्दु परन्दॆऴु
तहैविल् शेऩैक् कमैदि शमैन्ददोर्, तॊहैयु मुण्डुहॊ लॆऩ्ऩच् चॊल्लिऩाऩ् 723

वकैयुम्–व्यूह-रचना; मानमुम्–और देहाभिमान; माऱु ऍतिर्न्तु–वैर करके; आऱ्ऱु पकैयुम्–युद्ध करने की शत्रुता; इऩ्ऱि–विना; निरन्तु–व्यवस्थित होकर; परन्तु–व्याप्त होकर; ऍऴु–जो उठ आयी है; तकैवु इल् चेऩैक्कु–उस दुर्दम सेना की; अमैति चमैन्ततु–गिनती के लिए निर्धारित; ओर् तॊकैयुम्–एक संख्या भी; उण्टु कॊल्लो–है क्या; ऍऩ चॊल्लिऩाऩ्–ऐसा कहा (श्रीराम ने सुग्रीव से)। ७२३

श्रीराम ने सुग्रीव से बधाई के रूप में प्रश्न किया कि विना व्यूह-रचना, शरीराभिमान और परस्पर विरोध के जो दुर्वार वानर-सेना खुद पंक्ति-बद्ध होकर इधर उठ आ जुड़ी है, उसकी गिनती का हिसाब लगाने के लिए कोई संख्या भी है क्या? । ७२३

एऱ्ऱ वॆळ्ळ मॆऴुपदि ऩिऱ्ऱॆऩ्ऩ, ऱाऱ्ऱ लाळ रऱिविऩ मैन्ददोर्
माऱ्ऱ मुण्डदु वल्लदु मऱ्ऱुमोर्, ईऱ्ऱु मुण्डॆऩ् ऱिशैत्तिडऱ् कॊण्णुमो 724

एऱ्ऱ–योग्य; वॆळ्ळम् ऍऴुपतिऩ्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की संख्या में; इऱ्ऱ–बनी है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; आऱ्ऱलाळर् अऱिविऩ्–संख्या-शास्त्र में निपुण लोगों की समझ में; अमैन्ततु ओर् माऱ्ऱम्–बना एक कथन; उण्टु–रहता है; अतु अल्लतु–उसके सिवा; मऱ्ऱुम् ओर् ईऱ्ऱुम् उण्टु–और कोई संख्या-सीमा है; ऍऩ्ऱु इचैत्तिटऱ्कु–ऐसा कहने के लिए; ऒण्णुमो–साध्य है क्या। ७२४

सुग्रीव ने उत्तर दिया— गणितज्ञ विद्वानों ने कहा है कि सत्तर

"वॆळ्ळम्" (प्रवाह) वीरों की यह सेना है। उस कथन पर विश्वास करने के सिवा इस सेना का हिसाब लगाने के लिए और कोई मार्ग नहीं है। ७२४

ऍन्ऱु रैत्त वॆरिहदिर् मैन्दनै, वॆन्ऱि विऱ्कै यिरामन् विरुप्पिन्नात्
निन्ऱि निप्पल पेशियॆन् नोनॆरि, शॆन्ऱि ऴैप्पन शिन्दनै शॆय्हॆन्ऱान् 725

ऍन्ऱु उरैत्त–ऐसा जिसने कहा; ऍरि कतिर् मैन्तनै–तापक किरणमाली के पुत्र से; वॆन्ऱि विल् कै–विजयकोदण्डपाणी; इराकवन्–श्रीराघव ने; विरुप्पिन्नात्–प्यार के साथ; इन्ति–अब; निन्ऱु पल पेचि–खड़े होकर अनेक तरह से बोलने से; ऍन्नो–लाभ क्या; नॆरि चॆन्ऱु–मार्ग जाकर; इऴैप्पन–कर्तव्य (कार्य); चिन्तनै चॆय्क–सोचो; ऍन्ऱान्–कहा। ७२५

तापक किरणमाली के पुत्र को, जिसने यह शब्द कहा, विजय कोदण्डपाणी श्रीराघव ने स्नेह के साथ देखकर उससे कहा— अब खड़े होकर विविध बातें बनाने से क्या लाभ होगा ? यथाक्रम कर्तव्य कार्य पर सोचो। ७२५

अवनु मण्ण लनुमनै यैयनी, पुवन मून्ऱुनिन् ऱादैयिऱ् पुक्कुऴल्
तवन वेहत् तॊरुतनित् तन्मैयाल्, कवन माक्कुरङ् गिल्शॆयल् काट्टुवाय् 726

अवनुम्–उसने भी; अण्णल् अनुमनै–महिमावान हनुमान से; ऐय–तात; नी–तुम; पुवनम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों में; निन् तातैयिन्–अपने पिता के समान; पुक्कु उऴल्–प्रवेश कर घूमने की; तवनम् वेकत्तु–धावन-गति के; ऑरु तनि–एक विशिष्ट; तन्मैयाल्–स्वभाव से; कवनम्–गमन में; मा कुरङ्किन् चॆयल्–बड़े वानर का कृत्य; काट्टुवाय्–दिखाओ। ७२६

तब उस सुग्रीव ने महान हनुमान से कहा, तुम अपने पिता के समान तीनों लोकों में घुसकर संचार करने की तीव्र गति रखते हो। अब अपनी बड़ी वानर-क्रिया दिखाओ। ७२६

एहि येन्दिऴै तन्नै यिरुन्दुऴि, नाह नाडुह नानिल नाडुह
पोह बूमियुम् नाडुह पुक्कुनिन्, वेह मीण्डु वॆळिप्पड वेण्डुमाल् 727

नी–तुम; एकि–जाकर; एन्तु इऴै–अलंकारकारी आभरणधारिणी सीताजी के; इरुन्त उऴि तन्नै–रहने के स्थान को; नाकम्–नागलोक में; नाटुक–ढूँढ़ो; नानिलम् नाटुक–चतुर्विधा-भूमि पर ढूँढ़ो; पोक पूमियुम्–भोगलोक (स्वर्गलोक) में ढूँढ़ो; निन् वेकम्–तुम्हारा वेग; ईण्टु–इसमें; वॆळिप्पट वेण्टुम्–प्रगट होना चाहिए। ७२७

तुम यहाँ से चलो और नागलोक में जाकर अलंकारकारी आभरण-भूषित अबोध सीतादेवी के रहने का स्थान ढूँढ़ो। चतुर्विधा इस पृथ्वी

पर भी खोजो, फिर भोग-भूमि स्वर्ग में भी अन्वेषण करो। इस काम में तुम्हारी गति का वेग प्रकट किया जाय। ७२७

तॆऩ्ऱिशैक्क णिरावणऩ् शेणहर्, ऎऩ्ऱिशैक्किऩ्ऱ दॆऩ्ऩतऱि विऩ्ऩणम्
वऩ्ऱिशैक्किनि मारुदि नीयलाल्, वॆऩ्ऱि शैक्कुरि यार्पिऱर् वेण्डुमो 728

इरावणऩ् चेण् नकर्—रावण का लम्बा-चौड़ा नगर; तॆऩ् तिचै कण्—दक्षिण दिशा में; ऎऩ्ऱु—ऐसा; ऎऩ् अऱिवु—मेरी बुद्धि; इऩ्ऩणम्—यों; इचैक्किऩ्ऱतु—समझाती है; मारुति—मारुति; इऩि—अब; वल् तिचैक्कु—उस बलवान दिशा में (जाकर); वॆऩ्ऱु—विजय पाकर; इचैक्कु—यशस्वी बनने के लिए; उरियार्—योग्य; नी अलाल्—तुम्हारे सिवा; पिऱर् वेण्टुमो—दूसरा चाहिए क्या। ७२८

मेरा मन कहता है कि रावण का उन्नत और विशाल नगर कहीं दक्षिण में ही है। मारुति! इसलिए वह दिशा कठिन दिशा हो गयी है। तुम वहाँ जाओ और विजयी बनो। इस यश का योग्य पात्र तुम ही हो। और किसी का विचार करने की जरूरत है क्या? । ७२८

तारै मैन्दनुञ् जाम्बवनुन् दामुदल्, वीरर् यावरु मेम्बडु मेऩ्मैयार्
शेर्ह निऩ्ऩॊडुन् दिण्डिऱर् चेऩैहळ्, पेर्ह वॆळ्ळ मिरण्डॊडुम् बॆऱ्ऱियाल् 729

तारै मैन्तऩुम्—तारा का पुत्र; चाम्पऩुम्—और जाम्बवान; मुतल्—आदि; मेम्पटु मेऩ्मैयोर्—उन्नत महिमामय; वीरर् यावरुम्—वीर सब; निऩ्ऩॊटुम् चेर्क—तुम्हारे साथ मिलें; वॆळ्ळम् इरण्टॊटुम्—दो 'वॆळ्ळम्' की संख्या में; तिण् तिऱल्—कठोर बल वाली; चेऩैकळ्—सेनाएँ; पॆऱ्ऱियाल्—शान के साथ; पेर्क—उठें (तुम्हारे साथ)। ७२९

तारा-पुत्र अंगद, जाम्बवान आदि अतिश्रेष्ठ वीर तुम्हारे साथ मिलकर जायँ। दो "प्रवाह" संख्या की बलवान सेनाएँ युक्त शान के साथ तुम्हारी सहायता के लिए चलें। ७२९

वळ्ळ ऱेवियै वञ्जित्तु वौविय, कळ्ळ वाळरक् कऩ्ऩॆलक् कण्डदु
तेळ्ळि योयऩ्ऱु तॆऩ्ऱिशै यॆऩ्बदोर्, उळ्ळ मुम्मॆनक् कुण्डॆन वुऩ्ऩुवाय् 730

तॆळ्ळियोय्—सुलझी हुई बुद्धि वाले; वळ्ळल् तेवियै—उदार दानी प्रभु श्रीराम की देवी को; वञ्चित्तु—छल करके; वौविय—जिसने अपहरण किया; कळ्ळम् वाळ् अरक्कऩ्—उस चोर क्रूर राक्षस को; अऩ्ऱु चॆल—उस दिन जाते हुए; कण्टतु—(जिस दिशा में) देखा, वह; तॆऩ् तिचै—दक्षिण दिशा है; ऎऩ्पतु—यह; ओर् उळ्ळमुम्—एक स्मरण भी; ऎऩक्कु उण्टु—मुझे है; ऎऩ—ऐसा; उऩ्ऩुवाय्—समझ लो। ७३०

सुलझी हुई बुद्धि वाले! वदान्य श्रीराम की देवी को धोखा देकर जो हर ले गया वह चोर, क्रूर राक्षस उस दिन जिस दिशा की ओर जाता

दिखायी दिया, वह दक्षिण दिशा है। ऐसा मेरा स्मरण है। यह भी तुम विचार लो। ७३०

ईण्डु निन्ऱॆऴुन्दीरैन्दु नूऱॆऴिल्, तूण्डु शोदिक् कॊडुमुडि तोन्ऱुमाल्
नीण्ड नेमिकॊ लामॆन नेर्तॊऴ, वेण्डुम् विन्दम लैयित्तै मेवुवीर् 731

नीङ्कळ्–तुम लोग; ईण्टु नित्ऱु–यहाँ से; ऍऴुन्तु–निकलकर; ऍऴिल् तूण्टु चोति–सुन्दर और ज्योतिर्मय; ईर् ऐन्तु नूऱु–दस सौ; कोटु मुटि तोन्ऱुमाल्–शिखरों के दिखने के कारण; नीण्ट नेमि कॊलाम्–बड़े आकार के विष्णु है क्या; ऍन–ऐसा समझकर; नेर् तॊऴ वेण्टुम्–सामने जाकर नमस्कार करने योग्य; विन्त मलैयित्तै–विन्ध्यपर्वत को; मेवुवीर्–जा पहुँचो (गे)। ७३१

सुग्रीव ने उनसे कहा— तुम लोग यहाँ से चलकर विन्ध्यपर्वत पहुँच जाओ। विन्ध्यपर्वत के सुन्दर और उज्ज्वल सहस्र शिखर हैं। इसलिए वह बहुत ऊँचे क़द के श्रीविष्णु के समान वंद्य है। ७३१

तेडि यम्मलै तीर्न्दपिन् ऱेवरुम्, आडु हिन्ऱ दऱुपद मैन्दिन्नैप्
पाडु हिन्ऱदु पन्मणि यालिरुळ्, ओडु हिन्ऱ नरुमदै युन्नुवीर् 732

अ मलै–उस पर्वत पर; तेटि तीर्न्त पिन्–खोज चुकने के बाद; तेवरुम् आटुकिन्ऱतु–देव भी जिसमें आकर स्नान करते हैं; अऱु पतम्–षट्पद; ऐन्तित्तै पाटुकिन्ऱतु–(जिसमें) पंचम स्वर में गाते हैं; पल् मणियाल्–(जिसमें रहनेवाली) विविध मणियों के कारण; इरुळ ओटुकिन्ऱ–अँधेरा भाग जाता है; नरुमतै–उस नर्मदा नदी को; उन्नुवीर–स्मरण रखो। ७३२

उस पर्वत पर खोज लेने के बाद उस नर्मदा नदी को जाओगे, जिसमें देवगण भी आकर स्नान करते है और जिसके ऊपर वहनेवाले फूलों पर बैठकर भ्रमर पंचमस्वर में गाते हैं; और जिसके अन्दर रहनेवाले विविध रत्नों के कारण अँधेरा भाग जाता है। ७३२

वाम मेहलै वानर मङ्गैयर्, काम वूशर् कळियिशैक् कळ्ळिनाल्
तूम मेनि यशुणन् दुयिल्वुरुम्, एम कूड मॆन्नुमलै यॆय्दुवीर् 733

वामम् मेकलै–सुन्दर मेखलालंकृत; वान् अर मङ्कैयर्–देवांगनाओं के; कामम् ऊचल्–मोहक झूलों पर से; कळि इचै–आनन्द-संगीत रूपी; कळ्ळिनाल्–सुरा से; तूमम् मेति–धुएँ के रंग का; अचुणम्–'अशुण' नाम का प्राणी; तुयिल्वु उरुम्–निद्रारत जहाँ होता है; एम कूटम्–उस हेमकूट; ऍन्नुम् मलै–नामक पर्वत को; ऍय्तुवीर्–जाओगे। ७३३

फिर तुम हेमकूट पर पहुँच जाओ। वहाँ देखोगे कि मनोरम मेखला-धारिणी देवांगनाएँ प्यारे झूलों पर झूलते हुए मोद के वश होकर गाती हैं और उस गान की सुधा का पान कर धुएँ-से रंग वाले "अशुण" नामक प्राणी सोते हैं। ७३३

नॊय्दि नम्मलै नीङ्गि तुमरीडुम्, पॊय्है यिन्गरै पिऱ्पडप् पोदिराल्
शॆय्य पॆण्णैक् करैप्पॆण्णै यिऱ्चिल, वैह ऱेडिक् कडिदु वळिक्कॊळ्वीर् 734

अम्मलै–उस पर्वत से; नॊय्तिन् नीङ्कि–शीघ्र हटकर; तुमरोटुम्–अपने वानर वीरों के साथ; पॊय्कैयिन् करै–वहाँ के तालाब के तीर को; पिन् पट–पीछे रहने देते हुए; पोतिर्–जाकर; चॆय्य पॆण्णै–लाल (गोरे) रंग की देवी को; पॆण्णै करैयिल्–'पॆण्णै' नाम की नदी के तट पर; चिल वैकल्–कुछ दिन; तेटि–खोजकर; कटितु वळि कॊळ्वीर–जल्दी अपनी राह लो। ७३४

तुम लोग वहाँ से जल्दी हट जाओ और अपने साथी, वानर वीरों के साथ आगे चलो। वहाँ एक तालाब है, उसको पीछे छोड़कर बढ़ो। पश्चात् "पॆण्णै" नाम की नदी के कछार पर उन गोरे रंग की सीतादेवी को कुछ दिन खोजो। फिर आगे जल्दी चलो। ७३४

ताङ्गु मारहिऱ् ऱण्णरुन् जन्दनम्, वीङ्गु वेलि विदर्प्पमु मॆल्लॆन्न
नीङ्गि नाडु नॆडियन पिऱ्पडल्, तेङ्गु वार्पुनड् ऱण्डहन् जेर्दिराल् 735

ताङ्कुम्–गंध-भार-वाहक; आर्–अगस्त्य और; अकिल्–अगरुतरु; तण् नऱुम् चन्तनम्–शीतल सुगन्धित चन्दन; वीङ्कु वेलि–जिसकी बाड़ बने हैं; वितर्प्पमुम्–विदर्भ देश को; मॆल्लॆन्न नीङ्कि–शान्ति के साथ पार करके; नॆटियन नाटु–विस्तृत (अनेक) देशों को; पिन् पट–पीछे छोड़ते हुए; तेङ्कु–अधिक; वार् पुनल्–जलसमृद्ध; तण्टकम्–दण्डक में; चेर्तिर्–पहुँच जाओ। ७३५

फिर विदर्भ देश आयगा। सुगन्धित अगरु वृक्ष और शीतल सुगन्धित चन्दन तरु उसकी बाड़ बने हुए हैं। उस देश को भी पार करो और बहुत विशाल अनेक प्रदेशों को पीछे छोड़ते हुए दण्डकवन में पहुँच जाओ, जो अत्यन्त जलसमृद्ध है। ७३५

पण्ड हत्तियन् वैहिय दाप्पहर्, तण्ड हत्तदु तावदर् तम्मैयुट्
कण्ड हत्तुयर् तीर्वदु काण्डिराल्, मुण्ड हत्तुरै यॆन्ड्रॊरु सॊय्म्बॊळिल् 736

मुण्टकत्तुरै–'मुण्डकघाट'; ऎन्ऱ–नाम का; ऒरु सॊय्म् पॊळिल्–एक घना उपवन; पण्टु अकत्तियन्–प्राचीन अगस्त्य का; वैकियतु–वासस्थान; आ पकर्–ऐसा कहा जाता है; तण्टकत्ततु–(वह) दण्डक वन में है; तापतर्–तपस्वी लोग; तम्मै उळ् कण्टु–अन्दर आत्मदर्शन करके; अकम् तुयर् तीर्वतु–(जहाँ) आध्यात्मिक ताप को हर लेते हैं; काण्टिर्–जाकर देखो। ७३६

वहाँ मुण्डक घाट नाम का एक वृक्षपूर्ण वन मिलेगा। वह दण्डकारण्य में है, जहाँ अगस्त्य रहे, कहे जाते हैं। वहीं तपस्वी लोग आत्मदर्शन करके अपने मन का ताप हर लेते हैं। उस स्थान को देखो। ७३६

जाल नल्लऱत् तोरुन्तु नऱ्पॊरुळ्, पोल निन्ऱ पॊलिवदु पूम्बॊळिल्
शील मङ्गैयर् वायॆनत् तोङ्गनि, काल मिन्ऱिक् कनिवदु काण्डिराल् 737

पूम् पॊऴिल्–पुष्प-बहुल वह उपवन; ञालम्–भूमि के; नल्लऱत्तोर्–सद्धर्मियों के; उन्नुम् नऱ्पॊरुळ् पोल–मन के सद्विषयों के समान; निन्ऱु पॊलिवतु–शोभा के साथ रहता है; चीलम् मङ्कैयर् वाय् अन्न–शीलवती स्त्रियों के अधरों के समान; तीम् कनि–मधुर फलों को; कालम् इन्ऱि–पर्व-बाहर भी (हमेशा); कनिवतु–फलनेवाला है; काण्टिर्–देख लो। ७३७

वह पुष्पपूर्ण मुण्डक घाट उस श्रेष्ठ वस्तु के समान शोभायमान है, जिसे सद्धर्मी लोग चाहते हैं। उसमें शीलवती स्त्रियों के अधरों के समान मधुर फल फलते है, और अकाल में भी फलते हैं। उसको देख लो। ७३७

नयन नन्गिमै यार्तुयि लार्ननि, अयन मिल्लै यरुक्कनुक् कव्वऴि
शयन मादर् कलवि तलैत्तरुम्, पयनु मिन्बमु नीरुम् पयक्कुमाल् 738

नयनम्–(वहाँ रहनेवाले) अपनी आँखे; नन्कु इमैयार्–नहीं झपकाते; नति तुयिलार्–अधिक नहीं सोते; अरुक्कनुक्कु–सूर्य का; अव्वऴि–वहाँ; अयनम् इल्लै–मार्ग नहीं; चयनम्–शय्या में; मातर् कलवि तलै–स्त्रियों के साथ संभोग से; तरुम्–प्राप्य; पयनुम्–सुख; इन्पमुम्–और आनन्द; नीरुम्–और जल (से प्राप्य समृद्धि); पयक्कुम्–देनेवाला है (वह स्थान)। ७३८

वहाँ के वासी पलक नहीं गिराते हैं। खूब नही सोते। सूर्य को वहाँ मार्ग नही मिलता। वह स्थान भोग-शय्या में स्त्री-संगम का सुख, आनन्द और शीतल जल —सभी देनेवाला है। ७३८

आण्डि ऱन्दुपिन् नन्दरत् तिन्दुवैत्, तीण्डु हिन्ऱदु शॆङ्गदिर्च् चॆल्वनुम्
ईण्डु ऱैन्दल दॆहल मॆन्बदु, पाण्डु विन्मलै यॆन्नुम् वरुप्पदम् 739

आण्टु इऱन्तु–वहाँ से चलकर; पिन्–बाद; अन्तरत्तु इन्तुवै–आकाश के चन्द्र को; तीण्टुकिन्ऱतु–स्पर्श करनेवाले; चॆम् कतिर् चॆल्वनुम्–लाल किरणमाली भी; ईण्टु उऱैन्तु–यहाँ ठहरे; अलतु–बिना; एकलम् ऎन्पतु–नहीं जायँगे, ऐसा (जिसको देखकर) सोचते हैं; पाण्टुविन् मलै ऎन्नुम् परुप्पतम्–पाण्डुगिरि नामक पर्वत (है देखो)। ७३९

उस मुण्डकोपवन को छोड़कर आगे जाओ तो पाण्डुपर्वत नामक पर्वत देखोगे। वह आकाश के चन्द्र को स्पर्श करता हुआ रहता है। उसको देखकर लाल किरणमाली भी यह सोचता है कि हम यहाँ कुछ देर ठहरे विना आगे नहीं चलेंगे। ७३९

मुत्तीर्त्तुप् पॊन्ऱिरट्टि मणियुरुट्टि मुदुनीत्त मुन्ऱि लायर्
मत्तीर्त्तु मरनीर्त्तु मलैयीर्त्तु मान्ईर्त्तु वरुव दियार्क्कुम्
पुत्तीर्त्तिट् टलैयामऱ् पुलवर्ना डुदवुवदु पुनिद मान
अत्तीर्त्त महन्गोदा विरियॆन्ब रम्मलैयि ..नरुहिऱ् ऱम्मा 740

मुतु नीत्तम्–प्राचीन प्रवाह; मुत्तु ईर्त्तु–मोती ले आता हुआ; पॊन् तिरट्टि–और स्वर्ण बहाता हुआ; मणि उरुट्टि–रत्न खींचता; आयर् मुन्ऱिल्–गोपों के

आँगनों से; मत्तु ईर्त्तुम्–मथानियों को लेता हुआ; मरन् ईर्त्तु–तरुओं को लाता हुआ; मलै ईर्त्तु–गिरियाँ लेता हुआ; मान् ईर्त्तु–और पशुओं को बहा ले आता हुआ; वरुवतु–आनेवाला है; यार्क्कुम्–किसी भी स्नान करनेवाले को; पुत्तु ईर्त्तुलिट्टु–'पुत्' नामक नरक से खिंचकर; अलैयामल्–घूमे बिना; पुलवर् नाटु–स्वर्गलोक; उतवुवतु–दिलानेवाला है; पुनितम् आन् अ तीर्त्तम्–पवित्र वह तीर्थ (नदी); अकल् कोतावरि ॲन्पर्–चौड़ी गोदावरी कहते; अ मलैयिन्–उस (पाण्डु) गिरि के; अरुकिरु–पास रहनेवाली है। ७४०

आगे जाओ। गोदावरी नदी मिलेगी। उसका सनातन प्रवाह मोती बहा ले आता है। स्वर्ण-कर्ण इकट्ठा कर लाता है। रत्नों को लुढ़काकर ले आता है। गोपों के आँगन से मथानी को, पेड़ों को, चट्टानों को और अनेक पशुओं को खींच ले आता है। उसमें जो भी स्नान करते हैं, वे (अपुत्र होने पर भी) "पुत्" नामक नरक से बच जाते हैं; और देवलोक पहुँच जाते हैं। वह गोदावरी पवित्र जल वाली है। और वह उस उपरोक्त पाण्डुपर्वत के पास बहती रहती है। ७४०

अव्वारु कडन्दप्पा लऱत्तारॆ यॆनत्तॆळिन्द वरुळि नारुम्
वॆव्वारु मॆन्तक्कुळिर्न्दु वॆयिलियङ्गा वहैयिलङ्गुम् विरिपूञ् जोलै
ॲव्वारु मुऱत्तुवन्ऱि यिरुळोड मणियिमैप्प दिमैयोर् वेण्डत्
तॆव्वारु मुहत्तॊरुवन् तनिक्किडन्द शुवणत्तैच् चेर्दिर् मादो 741

अ आरु कटन्तु–उस नदी को पार करके; अप्पाल्–बाद; अऱत्तु आऱे ॲन्–धर्ममार्ग ही सम, और; तॆळिन्त अरुळिन्–स्वच्छ करुणा पर; नारुम्–विकसित; वॆम्–प्यारा; आरु ॲन्तवुम्–नीति के मार्ग के समान; कुळिर्न्तु–शीतल बना; वॆयिल् इयङ्का वकै–धूप न लगे, इस प्रकार; इलङ्कुम्–शोभायमान रहनेवाला; विरि पू चोलै–विकसित फूलों से भरा उद्यान; ॲ आरुम्–सर्वत्र; उऱ तुवन्ऱि–खूब (जिसके किनारों पर) पाया जाता है; इरुळ् ओट–(और) अन्धकार को भगाते हुए; मणि इमैप्पतु–रत्न चमकते हैं (जिसमें); इमैयोर् वेण्ट–देवों की प्रार्थना पर; तॆव् आरुमुकत्तु ऒरुवन्–शत्रुसंहारक, छः मुख वाले देव (षण्मुख); तनि किटन्त–अकेले जिस पर रहे; चुवणत्तै–उस सुवर्ण (सोन) नदी को; चेर्तिर्–जा पहुँचो। ७४१

उस गोदावरी नदी को भी पारकर तुम लोग "शोण" नदी पर पहुँच जाओ। वह धर्म-मार्ग और पवित्र कृपा के फलस्वरूप उपलब्ध होनेवाले सन्मार्ग के समान शीतल है। उसके दोनों ओर प्रफुल्ल पुष्पवह तरुओं से पूर्ण बाग हैं, जिनके अन्दर सूर्य की किरणें पहुँच नहीं पातीं। उसके दोनो कूलों पर मणियाँ प्रकाश फैलाती और अँधेरे को भगाती रहती हैं। उसी में देवताओं की प्रार्थना पर शत्रुसंहारक षण्मुख (या विघ्न-हर विनायक) पड़े रहे। ७४१

शुवणनदि कडन्दप्पाऱ् चूरियकान् दहमॆन्ऩत् तोन्ऱि मादर्
कवणुमिऴ्हल् वॆयिलियङ्गुङ् गऩ्ऩवरैयुम् जन्दिरहान् दहमुङ् गाण्बीर्
अवणवैनीत् तेहियपिन् नहनाडु पलकडन्दा लनन्द नॆऩ्ऩवान्
उवणपदिक् कौळित्तुऱैयुङ् गॊङ्गणमुङ् गुलिन्दमुञ्जॆन् ऱुऱुदिर् मादो 742

चुवण नति कटन्तु–सुवर्ण नदी को पार करके; अप्पाल्–उस तरफ़; चूरिय कान्तकम् ॲऩ्ऩ तोऩ्ऱि–सूर्यकान्ति नाम से विख्यात (गिरि); मातर् कवण् उमिऴ् कल्–(जिस पर) स्त्रियों के ढेलावाँसों से निकले पत्थर; वॆयिल् इयङ्कुम्–प्रकाश फैलाते हैं; कऩम् वरैयुम्–उस भारी पर्वत को और; चन्तिर कान्तकमुम्–चन्द्रकान्त को भी; काण्पीर्–देखोगे; अवण्–वहाँ; अवै नीत्तु–उनको छोड़कर; एकिय पिऩ्–जाने के बाद; अकल् नाटु–विस्तृत देश; पल कटन्ताल्–अनेक पार करेंगे तो; अनन्तन् ॲऩ्पाऩ्–अनन्तनाग; उवणपतिक्कु ऒळित्तु–खगपति गरुड़ से छिपकर; उऱैयुम्–जहाँ रहता है; कॊङ्कणमुम्–कोंकण देश को और; कुलिन्तमुम्–कुलिन्द देश को; चॆऩ्ऱु उऱुतिर्–जा पहुँचोगे। ७४२

"शोण" नदी को पारकर तुम सूर्यकान्तपर्वत पर पहुँचोगे। उस पर्वत पर खेतों की रखवाली करते हुए स्त्रियाँ पायी जाएँगी, जिनके ढेलेवाँसों से निकलनेवाले पत्थर (बहुमूल्य रत्न) धूप जैसा प्रकाश फैलाते है। आगे चन्द्रकान्तपर्वत पर भी खोज लगाओ। फिर उन पर्वतों को छोड़कर आगे अनेक विशाल पर्वतों को पार करो तो कोंकण देश में जाओगे, जहाँ आदिशेष खगपति गरुड़ से डरकर छिपा रहता है। उसके आगे कुलिन्द देश है, वहाँ पहुँचोगे। ७४२

अरऩदिह नुलहळन्द वरियदिह नॆऩ्ऱुरैक्कु मऱिवि लोर्क्कुप्
परहदिशॆन् ऱडैवरिय परिशेपोऱ् पुहलरिय पण्बिऱ् ऱामाल्
सुरनदियि ऩयलदुवाऩ् ऱोयुहुडुमिच् चुडर्त्तोहैय तॊऴुदोर्क् कॆल्लाम्
वरऩदिहन् दरुन्दहैय वरुन्ददिया नॆडुमलैयै वणङ्गि यप्पाल् 743

अरऩ् अतिकऩ्–हरदेव ही श्रेष्ठ हैं; उलकु अळन्त–लोकमापक; अरि अतिकऩ्–हरि ही श्रेष्ठ हैं; ॲऩ्ऱु उरैक्कुम्–ऐसा कहनेवाले; अऱिवु इलोर्क्कु–अज्ञों के लिए; परकति चॆऩ्ऱु–उत्तम गति में जाकर; अटैवु अरिय–रहना कठिन है; परिचे पाल्–वैसी रीति से; पुकल् अरिय पण्पिऱ्ऱु–प्रवेश पाना (जहाँ) कठिन; आम्–है; चुर नतियिऩ् अयलतु–सुरगंगा के पास रहनेवाली; वाऩ् तोय्–आकाशस्पर्शी; कुटुमि–शिखरों पर (जिसके); चुटर् तॊकैयतु–प्रकाशपुंज (सूर्य व चन्द्र) ठहरते हैं; तॊऴुतोर्क्कु ॲल्लाम्–नमन करनेवाले सभी को; अतिकम् वरऩ् तरुम्–अधिक वरदायी; तकैय–महिमा वाला; अरुन्तति आम्–अरुन्धती नाम का; नॆटुमलैयै–बड़ा पर्वत, उसे; वणङ्कि–नमस्कार करके; अप्पाल्–तदनन्तर। ७४३

उसके आगे अरुन्धती नाम का बड़ा और श्रेष्ठ पर्वत रहता है। वह इतना अगम है जितना श्रेष्ठ-गति उन लोगों के लिए अगम है, जो इस बात को लेकर झगड़ा करते हैं कि हरदेव श्रेष्ठ हैं या त्रिलोकमापक हरि

श्रेष्ठ हैं। वह सुरगंगा के बिल्कुल पास है। उसके गगनस्पर्शी शिखरों पर दोनों प्रकाशपुञ्ज, सूर्य और चन्द्र आश्रय लेते हैं। जो उसकी पूजा करते हैं, उसको वह उत्तम वर देनेवाला है। उस पर्वत को (दूर से) नमस्कार करके आगे— । ७४३

अञ्जुवरुम् वॆञ्जुवरनु माऱुमहन् पॆरुञ्जुनैयु महिलोङ् गारम्
मञ्जिवरु नॆडुङ्गिरियुम् वळनाडुम् पिऱ्पडप्पोय् वळिमेऱ् चॆन्ऱाल्
नञ्जुवरु मिडऱ्ऱरवुक् कमिळ्दुननि कॊडुत्तायैक् कलुळ् नीक्कुम्
ऎञ्जिल्मर हदप्पॊरुप्पै यिऱैञ्जियदऩ् पुऱञ्जार वेहिर् मादो 744

अञ्चवरुम्–डरावना; वॆम् चुरत्तुम्–कठोर मरुप्रदेश; आऱुम्–नदियों को; अकल् पॆरु चुनैयुम्–विशाल और बड़े तालाबों को; अकिल्–अगरु; ओङ्कु आरम्–ऊँचे चन्दनतरु; मञ्चु–मेघों तक; इवरुम्–जिन पर उगे हैं; नॆट्टुम् किरियुम्–ऊँचे पर्वतों को; वळम् नाट्टुम्–समृद्ध जनपदों को और; पिन् पट–पीछे छोड़कर; पोय्–जाकर; वळि मेल् चॆन्ऱाल्–आगे मार्ग पर जाओगे तो; कलुळन्–गरुड़ ने; नञ्चु वरुम्–विषैले; मिटऱु–दाँत वाले; अरवुक्कु–नागों को; अमिळ्तु नति कॊट्टुत्तु–अमृत अधिक देकर; आयै नीक्कुम्–अपनी माता को (दासता से) छुड़ाया (जहाँ); ऎञ्चिल्–निर्दोष; मरकत पॊरुप्पै–मरकतगिरि को; इऱैञ्चि–नमस्कार करके; अतन् पुऱम् चार–उसके पार्श्व के मार्ग में; एकिर्–आगे जाओ । ७४४

सबको भयभीत करनेवाला मरुप्रदेश, नदियाँ और चौड़े झरने, अगरु और उन्नत चन्दन तरु जहाँ मेघों का स्पर्श करते हुए उगे हैं; उन पर्वतों और समृद्ध देशों को पीछे छोड़ते हुए जाओगे तो उस मरकतपर्वत को देखोगे, जहाँ गरुड़ ने विषदन्त नागों को अमृत दिलाकर अपनी माता को गुलामी से छुड़ाया था। उसको नमस्कृत करके उसके पास का मार्ग पकड़कर आगे जाओ। (पुराण की कथा है कि कश्यप मुनि की दो पत्नियों में गरुड़ की माता विनता अपनी सौत नागमाता कद्रू की दासी बनी थी। तो उसकी दासता को काटकर छुड़ाने के लिए कद्रू ने शर्त लगायी कि अमृत लाकर दो। गरुड़ ने अमृत-कलश लाकर दिया।) । ७४४

वडशॊऱ्कुन् दॆन्शॊऱ्कुम् वरम्बाहि नान्मऱैयु मऱ्ऱै नूलुम्
इडैशॊऱ्ऱ पॊरुट्कॆल्ला मॆल्लैयदाय् नल्लऱत्तुक् कीऱाय् वेऱु
पुडैशुऱ्ऱुन् दुणैयिन्ऱिप् पुहळ्पॊदिन्द मॆय्य्येपोऱ् पूत्तु निन्ऱ
उडैशुऱ्ऱुन् दण्शार लोङ्गियवेङ् गडत्तिऱ्चॆन् ऱुऱ्दिर् मादो 745

वटचॊऱ्कुम् तॆन् चॊऱ्कुम्–संस्कृत और तमिळ की; वरम्पु ओकि–सीमा बनकर; नाल् मऱैयुम्–चारों वेद और; मऱ्ऱै नूलुम्–अन्य शास्त्र; इटै चॊऱ्ऱ–अपने में जिनकी चर्चा करते है; पॊरुट्कॆल्लाम्–उन विषयों का; ऎल्लैयताय्–शीर्षस्थ और; नल् अऱत्तुक्कु–श्रेष्ठ धर्म का; ईऱाय्–प्रमाण और; पुटै चुऱ्ऱुम्–पास घेरे रहे; तुणै वेऱु इन्ऱि–जोड़ किसी के विना; पुकळ् पॊतिन्त–प्रशंसा के पात्र; मॆय्य्ये पोल्–शरीर के

समान; पूत्तु नित्ऱ-शोभित रहनेवाले; उटै चुट्रम्-वस्त्र के समान लपेटे रहनेवाले; तण्चारल्-शीतल चरण-प्रदेशों-सह; ओङ्किय-ऊँचे; वेङ्कटत्तिल्-श्रीवेंकटगिरि पर; चॆन्ऱु उऱुतिर्-जा पहुँचो। ७४५

आगे तुम श्री वेंकटगिरि के पास पहुँच जाओगे। वह संस्कृत और तमिऴ के प्रदेशों के बीच की सीमा है। उसमें चतुर्वेदों और अन्य शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित सर्वश्रेष्ठ "वस्तु" (परमतत्त्व) रहती है। वह सारे धर्मों की श्रेष्ठ व्याख्या है। उसके साथ मिलाने योग्य और कोई उपमान नहीं मिलता। यशवेष्टित शरीर के समान उसको शीतल तराइयाँ घेरे रहती हैं। वह उन्नत और पवित्र गिरि है। ७४५

इरुविनैयु मिडैविडा वॆव्विनैयु मियट्रादे यिमैयो रॆय्दुम्
तिरुविनैयु मिडुपदन्देर् शिऱुमैयैयु मुरैयॊप्पत् तॆळिन्दु नोक्किक्
करुविनैय दिप्पिऱविक् कॆन्ऱुणरन्दङ् गदुहळैयुङ् गडैयिन् ञानत्
तरुविनैयिन् पॆरुम्बहैञ राण्डुळरीण् डिरुन्दुमडि वणङ्गर् पालार् 746

इरु वित्तैयुम्-दोनों कर्म (पाप और पुण्य); इटै विटा-निरन्तर; ऎव् वित्तैयुम्-कोई कर्म; इयट्रामे-विना किये; इमैयोर् ऎय्तुम्-देवों को प्राप्त; तिरुवित्तैयुम्-भोग-कर्म और; इट्टु पतम् तेर्-(भीख में) दिये खाने की अपेक्षा में; चिऱुमैयैयुम्-रहनेवाले क्षुद्र जीवन को; मुरै ऒप्प-सम क्रम से; तॆळिन्तु नोक्कि-साफ़ विवेचना करके; इ पिऱविक्कु-इस जन्म का; करुवित्तै अतु-वह गर्भ का कर्म है; ऎन्ऱु-ऐसा; उणर्न्तु-समझकर; अतु-उस कर्म को; अङ्कु-वहीं; कळैयुम्-त्यागनेवाले; कटै इल् ञानत्तु-असीम ज्ञान के; अरु विनैयिन्-दुनिवार कर्म के; पॆरु पकैञर्-बड़े शत्रु; आण्टु उळर्-वहाँ रहते है; ईण्टु इरुन्तुम्-यहीं से भी; अटि वणङ्कल् पालार्-चरण-वन्द्य हैं। ७४६

उस पर्वत मे दुर्वार, पाप-पुण्य दोनों कर्मों के प्रबल शत्रु, श्रेष्ठ महात्मा रहते है। उन्हें पाप-पुण्य और लगातार लग करके आनेवाले सभी कर्मों के सम्बन्ध में खूब ज्ञात है। इसलिए वे निष्काम हैं। वे देवों से प्राप्य भोगमय जीवन और भीख में मिलनेवाले भोजनापेक्षी और दुःखमय मानवजीवन, इन दोनों के समदर्शी है। जन्म का हेतु ये ही पाप और पुण्य हैं —इसको खूब जानकर उस कर्म-बन्धन को वही काटनेवाले अपार तत्त्वज्ञ हैं। वे महात्मा यहाँ से भी प्रणम्य हैं। ७४६

शूदहट्रुन् दिरुमऱैयोर् तुऱैयाडु निऱैयाऱुञ् जुरुदिल् तॊन्नूल्
मादवत्तो रुऱैविडनु मळैयुरङ्गु मणित्तलडनु वान मादर्
कीदमॊत्त किन्नरङ्ग ळिन्नरम्बु वरुडुदॊरुङ् गिळक्कु मोदै
पोदहत्तिन् मळक्कन्ऱुम् बुलिप्पऱळु मुरङ्गिडनुम् बॊरुन्दिर् ऱम्मा 747

चूतु अकट्रुम्-कपट को त्यागनेवाले; तिरु मऱैयोर्-सुन्दर ब्राह्मण लोग; आटु-जहाँ स्नान करते हैं; तुऱै-उन घाटों से; निऱै-पूर्ण; आऱुम्-नदियाँ; चरुति-

वेद; तॊल् नूल्–सनातन शास्त्र (के ज्ञाता); मातवत्तोर्–महान तपस्वी; उरैवु इटत्तुम्–जहाँ वास करते हैं, वे आश्रम; मळै उरङ्कुम्–जहाँ मेघ आश्रय लेते हैं; मणि तटत्तुम्–वे रत्न-भरे स्थान; वानम् मातर्–(और) देवांगनाओं के; कीतम् ऒत्त–गीत के समान; किन्नरङ्कळ्–किन्नर (वाद्यों) के; इन् नरम्पु–मधुर (नादोत्पादक) तन्त्रियों को; वरुटु तोरुम्–मींडते वक्त; किळक्कुम्–उठनेवाले; ओतै–नाद से; पोतकत्तिन्–गज के; मळ कन्रुम्–छोटे कलभ और; पुलि परळुम्–बाघ के शावक; उरङ्कु–(जहाँ एक साथ) सोते हैं; इटत्तुम्–वे स्थान; पॊरुन्तिरु–इनसे युक्त है (वह तिरुवेंकटगिरि)। ७४७

उसमें छल-कपट छोड़कर रहनेवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण जिनमें स्नान करते हैं, वे घाटों से भरी नदियाँ; श्रुति और पुराने शास्त्रों के विशिष्ट ज्ञाता बड़े तपस्वियों का वासस्थान; वे स्थल जो रत्नजड़ित हैं और जिन पर मेघ सुप्त रहते है; देवांगनाओं के गीत के लय के साथ किन्नर अपने वाद्य की तंत्रियों से जो स्वर निकालते हैं, उस स्वर को सुनकर कलभ और व्याघ्रशावक जहाँ साथ-साथ सोते हैं वे स्थल —ये सभी हैं। ७४७

कोडुरुमाल् वरैयदनैक् कुरुहुदिरे लुन्नॆडिय कॊडुमै नीङ्गि
वीडुरुदि रादलान् विलङ्गुदिरप् पुऱत्तुनीर् मेवु तॊण्डै
नाडुरुदि रुऱ्ऱदनै नाडियदऱ् पिन्नैयवै नळिनीर्प् पॊन्निच्
चेडुरुदण् पुनऱ्ऱॆय्वत् तिरुनदियि लिरुहरैयुन् दॆरिदिर् मादो 748

कोटु उरु–शिखरोंसहित; माल् वरै अतनै–बड़े उस पर्वत के; कुरुकुतिरेल्–पास जाओ तो; उम् नॆटिय कॊटुमै–तुम्हारा अधिक पाप; नीङ्कि–छूटेगा और; वीटु उरुतिर्–मोक्ष पा जाओगे; आतलान्–इसलिए; विलङ्कुतिर्–दूर से ही हट जाकर; अप्पुऱत्तु–उस तरफ़ के; नीर् मेवु–जलसमृद्ध; तॊण्टै नाटु–"तॊण्डै" (नाम के) देश को; उरुतिर्–जाओ; उऱ्ऱु–वहाँ पहुँचकर; अतनै नाटि–वहाँ खूब खोजकर; अतन् पिन्नै–उसके बाद; नळि नीर्–उत्तम जल से पूर्ण; पॊन्नि चेटु उरु–'पॊन्नी' नाम की श्रेष्ठतायुक्त; तण् पुनल्–शीतल जल; तॆय्वम् तिरु नतियिन्–दिव्य श्रीनदी के; इरु करै अवैयुम्–दोनों तीरों पर; तॆरितिर्–देवी की खोज लगाओ। ७४८

शिखरों से भरे उस पर्वत के पास तुम लोग जाओगे तो तुम्हारे सारे पाप दूर हो जायँगे और तुम मोक्ष को प्राप्त हो जाओगे। इसलिए उससे बचकर आगे रहनेवाले जलसमृद्ध "तॊण्डै" (बिम्ब) प्रदेश में जाओ और वहाँ खूब अन्वेषण करो। फिर उस कावेरी नदी के दोनों किनारों पर खोजो जो "पॊन्नी" के नाम से विख्यात है और जो देखने में बहुत सुन्दर है। वह नदी शीतल जल से भरी और दिव्य है। ७४८

तुऱक्कमुऱ्ऱार् मनमॆन्नत् तुऱैहॆळुनीर्च् चोणाडु कडन्दाऱ् ऱॆल्लै
मऱक्कमुऱ्ऱा रदनयले मरैनुडुरैव रववळिनीर् वल्लै येहि
उऱक्कमुऱ्ऱार् ऒन्नुऱ्ऱा रॆनुमुणर्वि नीडुमोडुङ्गि मणिया रोङ्गऱ्
पिऱक्कमुऱ्ऱ मलैनाडु नाडियहन् ऱमिळ्नाट्टिऱ् पॆयर्दिर् मादो 749

तुऱक्कम् उऱ्ऱार्–स्वर्गगत; मतम् ऒत्त–(लोगों के) मन के समान; तुऱै कॊळ् नीर्–घाटों से युक्त धारा वाली कावेरी के जल से; चोणाडु–(समृद्ध) 'चोळ नाडु' (चोळ देश); कटन्ताल्–पार करोगे तो; अतन् अयले–उसके समीप ही; तॊल्लै–पूर्व-कर्म; मऱक्कम् उऱ्ऱार्–जो भूल चुके है, वे; मऱैन्तु उऱैवर्–छिपे-छिपे वास करते होंगे; नीर्–तुम लोग; अ वऴि–उस मार्ग में; वल्लै एकि–शीघ्र जाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱार्–निद्रा में रत रहनेवाले; ऎन् उऱ्ऱार्–क्या पाये; ऎनुम् उणर्वितॊटुम्–इस समझ के साथ; ऒतुङ्कि–हट जाकर; मणि आर्–रत्न-भरे; ओङ्कल् पिऱक्कम्–पर्वतों के तलों से; उऱ्ऱ–युक्त; मलै नाडु–पर्वत-प्रदेश में; नाटि–खोजकर; पिऱकु–बाद; अकल् तमिऴ् नाट्टिल्–विस्तृत तमिऴनाडु में; पॆयर्तिर्–जाओ। ७४९

स्वर्गगत लोगों के मन के समान कावेरी का जल स्वच्छ है और वह देश पवित्र है, जिसमें यह नदी बहती है। उसके पार्श्व में पूर्व कर्म को जो भूले हुए हैं, वे मुनिवर छिपे-छिपे वास कर रहे है। तुम उस मार्ग को अविलम्ब पार कर लो। सुप्त रहनेवाले क्या पायेंगे ? —इस मसल का स्मरण करते हुए आगे रत्नमय उन्नत पर्वतों के देश में देवी का पता लगाओ। उसके बाद विशाल तमिऴ देश में (पाण्ड्य देश में) पहुँच जाओ। ७४९

तॆन्ऱमिऴ्नाट् टहन्पॊदियिऱ् ऱिरुमुनिवन् ऱमिऴ्च्चङ्गञ् जेर्हिऱ् पीरेल्
ऎन्ऱुमव नुऱैविडमा मादलिना नम्मलैयै यिडत्तिट् टेहिप्
पॊन्ऱिणिन्द पुन्नल्पॆरुहुम् पॊरुनैयॆनुन् दिरुनदिपिन् बॊऴिय नाहक्
कन्ऱुवळर् तडञ्जारन् मयेन्दिरमा नॆडुवरैयुङ् गडलुङ् गाण्डिर् 750

तॆन् तमिऴ् नाडु–दाक्षिणात्य तमिऴ देश में; अकल् पॊतियिल्–विशाल 'पॊदिहै' गिरि पर; तिरु मुनिवन्–श्री (अगस्त्य) मुनि के; तमिऴ् चङ्कम्–तमिऴ संघ में; चेर्किऱ्पीरेल्–पहुँचोगे तो; ऎन्ऱुम्–सदा; अवन् उऱैवु इटम् आम्–उनका रहने का स्थान है वह गिरि; आतलिनाल्–इसलिए; अम् मलैयै–उस पर्वत को; इटत्तु इट्टु–बायीं ओर छोड़कर (परिक्रमा करते हुए); एकि–जाकर; पॊन् तिणिन्त–स्वर्ण-कणों से भरे; पुनल् पॆरुकुम्–जल से पूर्ण; पॊरुनै ऎनुम्–'पॊरुनै' नाम की (ताम्रपर्णी); तिरु नति–श्रीनदी; पिन्पु ऒऴिय–पीछे रह जाय, ऐसा आगे जाकर; नाकम् कन्ऱु–कलभ; वळर्–जहाँ पलते हैं; तट चारल्–वैसी विशाल तराइयों से युक्त; मयेन्तिरम् आम्–महेन्द्र की; नॆटु वरैयुम्–बड़ी गिरि को और; कटलुम्–समुद्र को; काण्टिर्–देखो (गे)। ७५०

उस देश में "पॊदिहै" का बड़ा पर्वत है। वहीं श्री अगस्त्य मुनि का तमिऴ-संग प्राप्त होगा। वही अगस्त्य का स्थायी वासस्थान है। उसके दाहिनी ओर से आगे जाओ और स्वर्णकण-मिश्रित जल वाली ताम्रपर्णी नाम की नदी को भी छोड़कर आगे बढ़ो। महेन्द्रपर्वत आयगा, जिसकी तराइयों मे हाथी के बच्चे बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। उसके पास ही दक्षिणी समुद्र भी रहता है। ७५०

आण्डुकडन् दप्पुऱत्तु सॅप्पुऱत्तु मीरुतिङ्ग ळवदि याहल्
तेण्डियिवण् वन्दडैदिर् विडैहोडिर् कडिदॅन्ऩच् चॅप्पुम् वेलै
नीण्डवन्नु मारुदियै निऱैयरुळा लुऱनोक्कि नीदि वल्लोय्
काण्डियॅनिऱ् कुऱिकेट्टि यॅनवेऱु कॉण्डिरुन्दु कळऱ लुऱ्ऱान् 751

आण्टु कटन्तु–उस स्थान को पार करके; अ पुऱत्तुम्–उसके उस तरफ़; ॲ पुऱत्तुम्–सभी ओर; ऑरु तिङ्कळ्–एक महीना; अवति आक–अवधि बनाकर; तेण्टि–अन्वेषण करके; इवण् वन्तु–यहाँ आ; अटैतिर्–पहुँचो; कटितु–अविलम्ब; विटै कोटिर्–बिदा लो; ॲन्ऩ चॅप्पुम् वेलै–(सुग्रीव के) यों कहते समय; नीण्टवऩुम्–(लम्बोतरा श्रीत्रिविक्रम के अवतार) श्रीराम भी; मारुतियै–मारुति को; निऱै अरुळाल्–सम्पूर्ण कृपा के साथ; उऱ–खूब; नोक्कि–देखकर; नीति वल्लोय्–नीतिशास्त्र-विदग्ध; काण्टि ॲतिऩ्–देखोगे तो; कुऱि केट्टि–लक्षण सुन लो; ॲन–कहकर; वेऱु कॉण्टु इरुन्तु–अलग ले जाकर रहे और; कळऱल् उऱ्ऱाऩ्–बोलने लगे। ७५१

उस स्थान को पार कर उस तरफ़ और सब ओर एक मास की अवधि तक खोज लगाओ। फिर इधर आ पहुँचो। चलो, जल्दी बिदा लो। सुग्रीव ने जब यह आज्ञा सुनायी, तब विश्वाकार श्रीराम ने मारुति पर कृपा-दृष्टि दौड़ायी। और कहा— नीतिशास्त्रज्ञ ! सीता को देखो तो उसकी पहचान के लक्षण सुन लो। फिर उसे अलग ले जाकर श्रीराम सीताजी के (पादादिकेश) अंग-लक्षण बताने लगे। ७५१

पाऱ्कडऱ् पिऱन्द सॅय्य पवळत्तैप् पञ्जि यूट्टि
मेऱ्पड मदियम् जूट्टि विरहुऱ निऱैन्द नॉय्य
काऱ्ऱहै विरलह ळैय कमलमुम् बिऱवुङ् गण्डाल्
एऱ्पिल वॅन्ब दन्ऱि यिणैयडिक् कुवमै यॅन्ऩो 752

ऐय–भद्र; नॉय्य–कोमल; काल् तकै विरल्कळ्–पैरों की उँगलियाँ; पाल् कटल् पिऱन्त–क्षीराब्धि में उत्पन्न; चॅय्य पवळत्तै–लाल प्रवाल-खण्डों को; पञ्चि ऊट्टि–लाल लाक्षारस लगाकर; मेल् पट–उनके ऊपर; मतियम् चूट्टि–चन्द्रों को जड़ित कर; विरकु उऱ–शालीनता से युक्त रीति से; निऱैत्त–बनाया गया, ऐसे हैं; कमलमुम्–कमल और; पिऱवुम्–अन्य (उपमेय) वस्तुएँ; कण्टाल्–इनको देखें तो; एऱ्पिल–योग्य नहीं हैं; ॲन्पतु अन्ऱि–ऐसा कहना छोड़कर; इणै अटिक्कु–चरण-युगल की; उवमै ॲन्ऩो–उपमेय (वस्तु) क्या है। ७५२

उत्तम वीर ! उसके मृदुल चरण की सुन्दर उँगलियों का लक्षण सुनो। क्षीरसागर में उत्पन्न श्रेष्ठ प्रवालखण्डों का लाक्षारस में सनकर उनके ऊपर चन्द्रों को टिकाकर बहुत ही कुशलता के साथ वे पंक्ति में बनायी गयी हैं। कमल और अन्य ऐसे पदार्थ, सोचने पर, उनके उपमान बनने के लिए योग्य नहीं हैं। यही कहना पड़ेगा। नहीं तो उसके दोनों चरणों के लिए योग्य उपमान कहाँ से मिलेगा ? । ७५२

नीमॅया युणर्दि यॅय निरॆवळॆ महळिर्क् कॅल्लाम्
वाय्मैया लुवमै याह मदियरि पुलवर् वॆत्त
आमैया मॆऩ्ऱ पोदु मल्लऩ शॊल्लि नालुम्
यामयाळ् मळलै याडऩ् पुऱवडिक् किळुक्क मऩ्ऩो 753

ऐय—सौम्य; निरै वळै—पंक्तियों में पहने कंकणों की स्वामिनी; मकळिर्क्कु ऎल्लाम्—सभी स्त्रियों के (उत्चरणों के) लिए; उवमै आक—उपमा के रूप में; मति अऱि पुलवर्—अपनी सूझ से सभी समझनेवाले विद्वान्; वाय्मैयाल् वॆत्त—सच्चे रूप से जिसका निर्धारण कर चुके हैं; आमैयाम्—कछुआ है; ऎऩ्ऱ पोतुम्—कहें तब भी; अल्लऩ—इसके विना अन्य भी; चॊल्लिऩालुम्—कहें; यामम् याळ्—अर्धनिशा में सुनायी देनेवाली याऴ (वीणा) के नाद के समान; मळलैयाळ् तऩ्—मधुरभाषिणी सीता के; पुऱवटिक्कु—उत्चरणों के लिए; इळुक्कम्—अगौरव ही है; नी—तुम; मॆय्य्—सच; उणर्ति—मानो । ७५३

महिमावान हनुमान ! पंक्तियों में कंकण पहननेवाली स्त्रियों के उत्चरणों के लिए अपनी बुद्धि से सभी विषयों का ग्रहण कर सकनेवाले विद्वान् लोगों ने कछुए को उपमान निर्दिष्ट किया है । वही कहो, या और कुछ कहो, अर्द्धरात्रि में मन को मोहनेवाली "याऴ" की ध्वनि के समान मधुर-वाणी सीतादेवी के उत्चरणों के लिए ऐसे उपमान कहना उन चरणों का अपमान ही होगा । ७५३

वित्तैवरा लरिय कोदै पेदैमॆऩ् कणैक्काल् मॆय्य
नित्तैवरा लरिय विऩ्ऩ नेर्पडप् पुलवर् पोऱ्ऱुम्
शित्तैवराल् पहळि यावम् नॆर्चिनै यॆऩ्ऩुञ् जिऱ्पम्
ऎत्तैवरार् पहरु मीट्ट यानुरैत् तिऩ्ब मॆऩ्ऩो 754

मॆय्य—सत्यसंध; वित्तैवराल्—चित्रकारों द्वारा; अरिय—चित्रणदुर्लभ; कोतै—केश वाली; पेतै—अबोध देवी की; मॆल्—कोमल; कणैक्काल्—पिण्डलियाँ; नित्तैवराल्—अतिशय सूझ वालों के लिए भी; अरिय—उनकी उपमा ढूँढ़ना कठिन हो; इऩ्ऩ—इस प्रकार की हैं; पुलवर्—विद्वान्; नेर् पट—समान कहकर; पोऱ्ऱुम्—जिनकी प्रशंसा करते हैं; चित्तै वराल्—वे गाभिन 'वराल' मछलियाँ भी; पकळि आवम्—शर-तरकश और; चिनै नॆल्—धान का गाभा; ऎऩ्ऩुम्—ऐसे; चिऱ्पम्—कथन; ऎत्तैवराल् पकरुम्—सबसे कहे जाते हैं; ईट्ट—युक्त भी हैं; यान् उरैत्तु—मैं भी कहूँ तो; इऩ्पम् ऎऩ्ऩो—आनन्द कहाँ । ७५४

सत्यवान ! उस सीतादेवी की, जिसके केश का चित्रकारों को चित्र बनाना कठिन है, मृदुल पिंडलियाँ ऐसी है जिनका ऊहापोह करनेवाले बड़े चतुर लोग भी उपमान नही ढूँढ़ सकते है । साधारण रूप से विद्वान् लोग गर्भिणी वराल नामक मछली, तूणीर कोश को और धानसहित (धान के) पौधे आदि की बातें करते हैं । वे तो साधारण रूप से योग्य उपमान हो

सकते हैं। पर उनको मैं दुहराऊँ, इसमें क्या आनन्द मिल सकता है ? । ७५४

अरम्बैयॅन् ऱळह मादर् कुऱङ्गितुक् कमैन्द वॊप्पिन्
वरम्बैयुङ् गडन्द पोदु मऱ्ऱुरै वहुक्क लामो
नरम्बैयु ममिळ्द नाऱु नऱवैयु नळिर्नीर्प् पण्णैक्
करुम्बैयुङ् गडन्द शॊल्लाळ् कवाऱ्किदु करुदु कण्डाय् 755

अळकम् मातर्–अलकालंकृत स्त्रियों के; कुऱङ्कितुक्कु–ऊरुओं के लिए; अरम्पै अॅन्ऱु–कदली; अमैन्त–कथित; ऑप्पिन् वरम्पैयुम्–समानता की सीमा को भी; कटन्त पोतु–(सीता के ऊरु) लाँघ गये, तब; मऱ्ऱु उरै–और कोई बात; वकुक्कलामो–कही जा सकती है क्या; नरम्पैयुम्–तन्त्री (वीणा) को; अमिळ्तम् नाऱुम्–अमृत की मिठास से भरे; नऱवैयुम्–मधु को; नळिर् नीर् पण्णै–शीतल जल-सिंचित खेतों के; करुम्पैयुम्–ईखों के रस को; कटन्त–जिसने अपनी मधुरता में हराया है; चॊल्लाळ्–ऐसी बोली वाली सीतादेवी के; कवाऱ्कु–ऊरुओं के सम्बन्ध में; इतु–यह (मेरा कथन); करुतु–तुम सोच लो; (कण्टाय्–पूरक ध्वनि) । ७५५

अलकशोभिता स्त्रियों के ऊरुओं को कदली वृक्ष से उपमित करते हैं। लेकिन सीता के ऊरु इस उपमा को पार कर गये हैं। तो और कोई उपमान कहना हो सकता है क्या ? तंत्री नाद, अमृत-सम मधुर मधु, जल-समृद्ध खेतों में उत्पन्न ईख का रस —इन सबको जिस सीता के वचनों ने हरा दिया है, उसके ऊरु के सौन्दर्य को मेरी बातों से जान लो । ७५५

वाराळिक् कलशक् कॊङ्गै वञ्जिपोन् मरुङ्गु लाडन्
ताराळिक् कलैशा रल्हु ऱडङ्गडऱ् कुवमै तक्कोय्
पाराळिप् पिडरिऱ् ऱाङ्गुम् पान्दळुम् पनिवॆन् ऱोङ्गुम्
ओराळित् तेरुङ् गण्ड वुनक्कुना नुरैप्प दॆन्नो 756

तक्कोय्–सुयोग्य; वार्–अँगियाबद्ध; आळि—चक्रवाक; कलचम्–और कलश-सम; कॊङ्कै–स्तनों और; वञ्चि पोल्–'वञ्जि' नाम की लता के समान; मरुङ्कुलाळ् तन्–कमर से भूषित (सीतादेवी) के; तार्–किंकिणी से अलंकृत; आळि–गोल-गोल; कलै चार्–मेखला-वलयित; अल्कुल् तट कटऱ्कु–वरांग के विशाल सागर-प्रदेश की; उवमै–उपमा; आळि पार्–सागर-मेखला पृथ्वी को; पिटरिल् ताङ्कुम्–अपने सिरों पर धारण करनेवाले; पान्तळुम्–शेषनाग को; पनि वॆन्ऱु–(और) हिम को जीतकर; ओङ्कुम्–उन्नत रहनेवाले; ओर् आळि तेरुम्–एक चक्र (सूर्य) के रथ को; कण्ट–जिसने प्रत्यक्ष देखा है, उस; उनक्कु–तुमसे; नान् उरैप्पतु–मैं कहूँ, ऐसा; ॲन्नो–क्या है । ७५६

सुयोग्य ! अँगियाबद्ध, चक्रवाक और स्वर्णकलश-सम स्तन और "वंजी"नाम की लता के समान कमर से शोभित सीतादेवी के किंकिणी-हारों से अलंकृत भग रूपी बड़े समुद्र का उपमान मैं क्या कहूँ ? तुमने समुद्र-मेखला पृथ्वी को अपने सिर पर धरनेवाले आदिशेष का फन देखा है। और

ओस को थमाकर ऊपर उठनेवाले सूर्य के एकचक्र-रथ का पीठ भी देखा है। (तुम जान सकते हो कि सीता का कटि-प्रदेश कैसे इनसे भी सुन्दर है।) ऐसे तुमसे मैं क्या कहूँ ? । ७५६

शट्टहन् दन्नै नोक्कि यारैयुम् जमैक्कत् तक्काळ्
इट्टिडै यिरुक्कुन् दन्मै यियम्बक्केट् टुणर्दि यॆन्निन्
कट्टुरैत् तुवमै काट्टक् कट्पॊऱि कडुवा कैयिल्
तॊट्टवॆऱ् कुणर लामऱ् ऱुण्डॆन्नुज् जॊल्लु मिल्लै 757

चट्टकम् तन्नै नोक्कि–रूप-सौन्दर्य देखकर (आदर्श बनाकर); यारैयुम् चमैक्क–कितनी भी बड़ी सुन्दरी की सृष्टि की जा सके; तक्काळ्–ऐसी रूप वाली सीता की; इट्टु इटै–पतली कमर; इरुक्कुम् तन्मै–जैसा रहता है, वह प्रकार; इयम्प केट्टु–मैं कहूँ और तुम सुनो; उणर्ति–और समझो; ॲन्निन्–तो; कट्टु उरैत्तु–निश्चित रूप से कहकर; उवमै काट्ट–उपमा दिखाना हो तो; कण् पॊऱि–आँख की इन्द्रिय; कतुवा–देख नहीं सकती; कैयिल् तॊट्ट–हाथ से जिसने स्पर्श किया है; ॲऱ्कु–उस मुझसे; उणरल् आम्–साध्य हो सकती है; मऱ्ऱु उण्टु–अन्यथा, 'है'; ॲन्नुम् चॊल्लुम्–ऐसा कथन; इल्लै–नहीं। ७५७

सीता के रूप को नमूना बनाकर ब्रह्मदेव कितनी ही बड़ी सुन्दरी की सृष्टि कर सकते हैं। ऐसी मनोरम रमणी की छोटी कमर का लक्षण मैं कहूँ और तुम सुनो —यह कठिन है। क्योंकि आँखों से देखा जाय, तभी न कल्पना के सहारे उपमान ढूँढ़ा जा सकता है। सिर्फ़ मैंने स्पर्श करके देखा है। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि उसके कमर है। अन्यथा उसकी कमर के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है। ७५७

आलिलै पडिवन् दीट्टु मैयनुण् पलहै नॊय्य
पाल्निऱत् तट्टम् वट्टक् कण्णडि पलवु मिन्न
पोलुमॆन् ऱुरैत्त पोदुम् पुनैन्दुरै पॊदुमै पार्क्किन्
एलुमॆन् ऱिशैक्कि नेला विदुवयिऱ् ऱियऱ्कै यिन्नुम् 758

पॊतुमै पार्क्किन्–सामान्य रूप से देखें तो; आल् इलै–वटपत्र; पटिवम् तीट्टुम्–चित्र खींचने के लिए उपयुक्त; ऐय नुण् पलकै–बहुत पतला फलक; नॊय्य–पतली; पाल् निऱम्–दुग्धवर्ण; तट्टम्–(चाँदनी की) थाली; वट्टम् कण्णटि–गोलाकार दर्पण; इन्न पलवुम्–और ऐसी अन्य वस्तुओं; पोलुम्–के समान रहेगा (उदर); ॲन्ऱु उरैत्त पोतुम्–ऐसा कहने पर भी; पुनैन्तुरै–यह सब मनगढ़न्त कथन है; एलुम् ॲन्ऱु–(उपमित) हो सकते है, ऐसा; इचैक्किन्–कहना चाहें तो; एला–नहीं हो सकते; इतु–यह; वयिऱ्ऱु इयऱ्कै–उनके उदर की प्रकृति है; इन्नुम्–और। ७५८

साधारण रूप से देखने पर स्त्रियों का उदर वटपत्र से, पतले चित्र-पलक से, बहुत ही पतले दुग्ध-सम श्वेत चाँदी की थाली से और गोल आईने

से उपमित किया जाता है। लेकिन यह कोरी कल्पना है। वे उसकी समानता कर सकते हैं, ऐसा कहा जायगा क्या? नहीं। समानता नहीं कर सकते, क्योंकि उसके उदर की प्रकृति ऐसी है। ७५८

शिङ्गलिल् शिरुहू दाळि नन्दियिन् ऱिरट्पूच् चेर्न्द
पोङ्गुपोर् ऱोळैयेन् ऱालुम् बुल्लिय वुवमैत् तामाल्
अङ्गव ळुन्दि योक्कुञ् जुळियेन्क् कणित्त दुण्डाल्
गङ्गैयै नोक्किच् चेऱि कडलिनु नेंडिदु कऱ्ऱोय् 759

कटलितुम्–सागर से भी; नॅटितु–विशाल (शास्त्रों के); कऱ्ऱोय्–विद्वान्; चिङ्कल् इल्–सिकुड़न-रहित; चिऱु कूताळि–छोटा 'कूदाली' का फूल; नन्तियिन्–'नॅंदि' नाम के पौधे का; तिरळ् पू–वर्तुलाकार फूल; चेर्न्त–इनमें रहनेवाले; पोङ्कु पोन् तोळै–बड़ा सुन्दर गड्ढा (सा भाग); ऍन्ऱालुम्–कहें तो भी; पुल्लिय उवमैत्तु–क्षुद्र उपमाएँ होगा; चुळि–(गंगा नदी की) भँवर; अवळ्–उसकी; उन्ति ओक्कुम्–नाभि की समानता करेगी; ऍन–ऐसा; अङ्कु—वहाँ (जब मैंने गंगा पार की तब); कणित्तु उण्टु–मैंने विचारा था; कङ्कैयै नोक्कि–(इसलिए) गंगा (की भँवर) को देखकर; चेऱि–सोच 'चलो'। ७५९

सागर से भी विशाल विद्या के स्वामी! सीता की नाभि का उपमान असंकुचित "कूदाली" का फूल, या "नंदिवर्त" नाम के गोल फूल का सुन्दर कटोरा-सा भाग कहा जा सकता है। लेकिन वे अल्प उपमान हैं। जब मैंने गंगा पार की तब मेरे मन में यह भाव उठा कि गंगा की भँवर सीता की नाभि की समानता कर सकती है। इसलिए तुम भी गंगा का स्मरण कर उसकी नाभि को पहचान चलो। ७५९

मयिरोळुक् कॅन्नवोन् ऱुण्डाल् वल्लिशेर् वयिऱ्ऱिन् मऱ्ऱॅन्
उयिरोळुक् कदऱ्कु वेण्डु मुवमैयोन् ऱुरैक्क वेण्डिन्
शॅयिरिल्शिऱ् ऱिडैया युऱ्ऱ शिऱुहोडि नुडक्कन् दीरक्
कुयिलुरुन् दमैय वैत्त कोळ्होम्बॆन् ऱुणर्न्दु कोडि 760

वल्लि चेर्–वल्लरी-सम; वयिऱ्ऱिन्–उदर की; मयिर् ऒळुक्कु–रोमराजी; ऍन ओन्ऱु उण्टु–ऐसा है; ऍन् उयिर् ऒळुक्कु–मेरे जीवन की ही राजि (रेखा) है; अतऱ्कु–उसकी; वेण्टुम् उवमै–सर्वमान्य उपमा; ओन्ऱु–एक; उरैक्क वेण्टिन्–कहना हो; चॅयिर् इल्–अनिन्द्य; चिऱु इटैयाय्–क्षीण कमर; उऱ्ऱ–जो बनी; चिऱु कोटि–छोटी लता का; नुटक्कम् तीर–संकोच छोड़ बढ़े, इस वास्ते; कुयिल् उऱुत्तु–खूब गाड़कर; अमैय वैत्त–स्थापित; कोळ् कोम्पु–अलान; ऍन्ऱु–ऐसा; कोटि–समझ लो। ७६०

लतासमाना देवी के दिव्य उदर में रोमराजी है। उसको मेरी ही जान का प्रवाह समझो। उसका सर्वमान्य उपमान कहना हो तो वह

असम्भव है। अनिद्य कमर रूपी छोटी लता अपनी थकावट उतार ले, उसके लिए गड़े हुए आलम्ब के रूप में उसको समझ लो। ७६०

अल्लियून् ऱिडुमॆन्ऱञ्जि यरविन्दन् दुऱन्दाट् कम्बॊन्
वल्लिमून्ऱ ऩुळवाऱ् कोल वयिऱ्ऱिऩ्मऱ् ऱवैयु मार
विल्लिमून्ऱ ऩुलहिऩ् वाऴु मादरुन् दोऱ्ऱ मॆय्म्मै
शॊल्लियून् ऱियवाम् वॆऱ्ऱि वरैयॆऩत् तोऩ्ऱु मऩ्ऱे 761

अल्लि–पंखुड़ियाँ; ऊन्ऱिडुम्–चुभेंगी; ऍन्ऱु अञ्चि–ऐसा डरकर; अरविन्दम्–अरविन्द को; तुऱन्ताट्कु–जिसने त्यागा उस सीता के; कोलम् वयिऱ्ऱिल्–मनोहर उदर में; अम् पॊन्–सुन्दर स्वर्ण रंग की; मून्ऱु वल्लि–त्रिवली; उळ–है; अवैयुम्–वे बल; मारऩ् विल्लि–मन्मथ धनुर्धर द्वारा; मून्ऱु उलकित्तुम्–तीनों लोकों में; वाऴुम्–रहनेवाली; मातर्–स्त्रियों का; तोऱ्ऱ–इनसे हारने का; मॆय्म्मै–सत्य समाचार; चॊल्लि–ढिंढोरा पीटकर; ऊन्ऱिय–स्थापित; वॆऱ्ऱि वरै–विजयसूचक लकीरें; आम्–हैं; ऍन–ऐसा; तोन्ऱुम्–विळङ्कुम्–लगती है। ७६१

सीता वही कमला है, जिसने इस डर से कमल छोड़ा कि उसकी पंखुड़ियाँ चुभेंगी और दर्द देंगी। उसके मनोरम उदर में त्रिवली है। वह स्वर्णलता के समान है। वे तीन बल धनुवीर मन्मथ की खींची हुई रेखाएँ हैं, जिनको उसने इस तथ्य को घोषित करने के लिए खींचा था कि तीनों लोकों की वासिनी स्त्रियाँ इस सीता के सामने सौन्दर्य में हार गयीं। ७६१

शॆप्पॆन्बॆन् कलश मॆन्बॆन् शॆव्विळ नीरुन् दॆर्वॆन्
तुप्पॊन्ऱ तिरळ्शू दॆन्बॆन् शॊल्लुवॆन् ऱुम्बिक् कॊम्बॆन्
तप्पिन्ऱिप् पहलिन् वन्द शक्कर वाह मॆन्बॆन्
ऒप्पॊन्ऱु मुलैक्कुक् काणेन् पलनिनैन् दुळल्वॆ निन्नुम् 762

मुलैक्कु–उरोजों को; ऒप्पु–उपमा; ऒन्ऱुम् काणेन्–कुछ नहीं देखता; चॆप्पु–रत्न की डिबिया; ऍन्पॆन्–कहूँगा; कलचम्–स्वर्ण-कलश; ऍन्पॆन्–कहूँगा; चॆव् इळनीरुम्–लाल डाभ; तेर्वॆन्–विचार करूँगा; तुप्पु ऒन्ऱु–प्रवाळ तराशकर; तिरळ्–गोल बनाया हुआ; चूतु ऍन्पॆन्–जुए का गोटा कहूँगा; तुम्पि–हाथी के; कॊम्पु–दन्त-द्वय; चॊल्लुवॆन्–कहूँगा; तप्पु इन्ऱि–बिना नागा के; पकलिल् वन्त–अह (दिन) में आये; चक्करवाकम् ऍन्पॆन्–चक्रवाक कहूँगा; इन्नुम् पल निनैन्तु–और अनेक (उपमाएँ) सोचता; उळल्वॆन्–फिरूँगा। ७६२

स्तनों का कोई उपमान मैं नहीं देखता। इसलिए रत्न-डिबिया कहता हूँ, कलश कहता हूँ, लाल और कच्चे नारियल के फलों को चुनता हूँ और प्रवाल का तराशकर गोल बनाया हुआ गोटा कहता हूँ। कभी गजदन्त-युगल को, कभी दिन में अचूक रीति से आये चक्रवाक को कहता हूँ। और कितने ही अन्य उपमानों को सोचता फिरता हूँ। ७६२

करुम्बुकण् डालुम् कान्शेर् काम्बुकण् डालु मालि
अरुम्बुकण् डारै शोर वळङ्गुवे नरिव दुण्डो
शुरुम्बुकण् डालुङ् गोदै तोळिणैक् कुवमै शॉल्ल
इरुम्बुकण् डनैय नॅञ्ज मॅनक्किलै यिशैप्प दॅन्नो 763

करुम्पु कण्टालुम्–ईख को देखते समय और; कान् चेर्–वनों में उत्पन्न; काम्पु कण्टालुम्–बाँस को देखते समय; कण् अरुम्पु–आँखों से निकली; आलि तारै–अश्रुधारा; चोर–गिराते हुए; अळुङ्कुवेन्–दुःखमग्न हो रहा हूँ; अरिवतु उण्टो–(उसको छोड़कर) उपमा जानता हूँ क्या; चुरुम्पु कण्टु–भ्रमर देखकर; आलुम्–जिन पर मँड़राते हुए गुंजारते हैं, उन; कोतै तोळ् इणैक्कु–केशों से भूषित सीता के स्कन्धद्वय की; उवमै चॉल्ल–उपमा कहूँ; ॲनक्कु–मेरे; इरुम्पु कण्टनैय–लोहे के समान; नॅञ्चम् इलै–मन नहीं है; इचैप्पतु ॲन्नो–फिर कहूँ क्या। ७६३

ईख को देखता हूँ या जंगल में बाँसों को देखता हूँ तो मेरी आँखों से अश्रु की धारा बहती है और मैं उद्विग्न हो जाता हूँ। (ऐसा रोने के सिवा) उसके कन्धों के उपमान को समझ सकता हूँ क्या? उस सुकेशिनी के दोनों कन्धों की, जिन पर भ्रमर गुंजार करते हैं, उपमा, सोच-समझकर बताने के लिए मेरे पास लोहा-सा दिल नहीं है। फिर मैं क्या कहूँ? कैसे कहूँ? । ७६३

मुन्गैये यॉप्प दॊन्रुम् उण्डमून् रुलहत् तुळ्ळुम्
ॲन्गैये यिळुक्क मन्रे यियम्बिनुङ् गान्द ळॅन्रल्
वन्गैयाळ् मणिक्कै यॅन्रन् मरुरॉन्रै युणर्त्तल नरि
नन्गैया डडक्कै यामो नलत्तिन्मे नलमुण् डामो 764

मून्रु उलकत्तुळ्ळुम्–तीनों लोकों में; मुन् कै–अग्रहस्त की; ऒप्पतु–समता करनेवाली; ऒन्रुम्–एक (वस्तु); उण्टु–है; ॲन्कैये–ऐसा कहना ही; इळुक्कम् अन्रे–गलत है न; इयम्पिनुम्–कहें तो भी; मणि कै–उसके सुन्दर अग्रहस्त को; कान्तळ् ॲन्रल्–'कान्दळ' पुष्प कहना; वन्कै–निर्मम वचन है; याळ् ॲन्रल्–'याळ' कहना; मरु ऒन्रै उणर्त्तल्–दूसरी किसी वस्तु को कहना होगा; अन्रि–उसके विना; नन् कैयाळ्–सुन्दर हाथों वाली सीता के; तटक्कै आमो–विशाल हस्त होंगे क्या (वे); नलत्तिन् मेल्–सुन्दरता से बढ़कर; नलम् उण्टामो–सुन्दर हो सकता है क्या। ७६४

तीनों लोकों में सीता के (अग्र) हस्त से उपमित होने योग्य कोई चीज़ है—यह कहना ही दोषपूर्ण है न? इस मजबूरी से उसके सुन्दर हाथों को "कांदळ" पुष्प कहना निर्मम वचन है। "याळ" कहूँ तो वह किसी और बात का संकेत हो जायेगा। इसके सिवा वे देवी के हस्तों के उपमान हो सकेंगे क्या? सौन्दर्य से बढ़कर कोई चीज़ सुन्दर हो सकती है कहीं? । ७६४

एलक्को डीन्ऱ पिण्डि यिळन्दळिर् किडक्क याणर्क्
कोलक्कऱ् पहत्तिन् कामर् कुळैनऱुङ् गमल मॆन्बू
नूलोक्कु मरुङ्गु लाड नूबुर मलम्बु कोलक्
कालुक्कुत् तोलैयु मॆन्ऱाऱ् कैक्कोप्पु वैक्क लामो 765

पिण्टि—अशोक के; एल कोट्टु—सुवासित शाखाओं के; ईन्ऱ—दिए गये; इळम् तळिर्—छोटे पल्लव; किटक्क—एक ओर रहें; याणर् कोलम्—अनोखे सौंदर्य वाले; कऱ्पकत्तिन्—कल्पतरु के; कामर् कुळै—मनोहर पत्ते और; कमलम् नऱुम् मॆन् पू—कमल के सुगन्धित और कोमल फूल; नूल् ओक्कुम्—सूत्र (सूक्ष्म); मरुङ्कुलाळ् तन्—कमर वाली सीता के; नूपुरम् अलम्पुम्—जिन पर से नूपुर नाद करते हैं, उन; कोलम् कालुक्कुम्—अतिसुन्दर चरणों के सामने; तोलैयुम्—हारकर हट जायँगे; ऍन्ऱाल्—तो; कैक्कु ओप्पु—उसके हाथों की उपमा; वैक्कल्—कहना; आमो—(ठीक) होगा क्या। ७६५

अशोक-तरु की सुवासित शाखाओं में उगे पल्लव एक ओर रहें। नित-नवीन कल्पतरु के प्यारे पल्लव और सुगन्धित और कोमल कमल के फूल भी और सूत्र-सी कमर वाली सीता के नूपुर-क्वणन-द्योतित सुन्दर चरणों की उपमा नहीं बन सकते और हारकर पिछड़ जाते। तो उनको सीता के हस्तों से उपमित करना युक्त हो सकता है क्या ? । ७६५

वॆळ्ळिय मुऱुवऱ् चॆव्वाय् विळङ्गिळै यिळम्बॊर् कॊम्बिन्
वळ्ळुहिर्क् कुवमै नम्मात् मयर्वऱ वहुक्क लामो
ऍळ्ळुदिर् नीरे मूक्कै यॆन्ऱुकॊण् डिवरि यॆन्ऱुम्
किळ्ळैहण् मुरुक्किन् पूवैक् किळिक्कुमे लुरैक्क लामो 766

वॆळ्ळिय मुऱुवल्—श्वेत दशन; चॆव्वाय्—अरुण अधर; विळङ्कु इऴै—(कान्ति के साथ) रहनेवाले आभूषण; इळ पॊन्—(इनसे युक्त) बाल, सुन्दर; कॊम्पिन्—पुष्पलता-सी जानकी के; वळ् उकिर्क्कु—तीक्ष्ण नखों की; उवमै—उपमा; नम्माल्—हमसे; मयर्वु अऱ—असंशय रीति से; वकुक्कलामो—दी जा सकती है क्या; किळ्ळैकळ्—तोते; नीरे—तुम; मूक्कै—हमारी चोंचों की; ऍळ्ळुतिर्—अवहेलना (इस बात पर कि हमारी चोंचें सीताजी के नखो की बराबरी नहीं कर सकतीं) करते हो; ऍन्ऱु कॊण्टु—ऐसा मानकर; इवरि—गुस्सा करके; मुरुक्किन् पूवै—(काँटेदार) पलाशफूलों को; ऍन्ऱुम्—सदा; किळिक्कुमेल्—चीरते है तो; उरैक्कलामो—(तोतों की चोंचों को सीताजी के नखों की उपमा) कह सकते है क्या। ७६६

श्वेत दन्त, लाल अधर और कान्तिपूर्ण आभरण से सुशोभित बाल स्वर्णलता, जानकी के तेज नखों की उपमा हम जैसों से भ्रमरहित रीति से रची जा सकती है क्या ? शुक, कंटक-पलाश-पुष्पों को सीता के अधर मानकर चोंचों से नोचकर फाड़ते है —वह इसलिए कि वे उनसे इस बात से क्रुद्ध है कि वे पुष्प उनकी चोंचों की निन्दा करते है। तो शुक-चोंच को उपमान कह सकते है क्या ? । ७६६

अङ्गैयु मडियुङ् गण्डा लरविन्द नित्तैयु मापोल्
शॅङ्गदिर् शिदरि नीलज् जॅरुक्किय दॅय्व वाट्कण्
मङ्गैदत् कळुत्तै नोक्कि वळरिळङ् गमुहुम् वारिच्
चङ्गमु नित्तैदि यायि नवैयॅन्रु तुणिदि लक्कोय् 767

तक्कोय्–सुयोग्य; अम् कैयुम्–सुन्दर हाथों और; अटियुम् कण्टाल्–चरणों को देखें तो; अरविन्तम् नित्तैयुमा पोल्–जैसे अरविन्द याद आते हैं, वैसे ही; चॅम् कतिर् चितरि–लाल किरणें बिखेरते हुए; नीलम् चॅरुक्किय–नीले रंग से युक्त; तॅय्वम्–दिव्य; वाळ् कण् मङ्कै–तलवार-सी आँखों वाली सीता के; कळुत्तै नोक्कि–ग्रीवा को देखकर; वळर् इळ कमुकुम्–ऊँचा उगनेवाले सुपारी के पेड़ और; वारि–समुद्र में उत्पन्न; चङ्कमुम्–शंख को; नित्तैति आयित्–(उपमेय) सोचोगे तो; नवै ॲन्रु–गलती है, ऐसा; तुणिति–निश्चय कर लो। ७६७

सुयोग्य मारुति ! सीता के सुन्दर हस्त और चरणों को देखें तो अरविन्द का स्मरण जैसे हो आता है, वैसे ही लाल कान्ति बिखेरते हुए नीले रंग वाले दिव्य तलवार-सम नेत्रों वाली सीता के कण्ठ को देखकर ऊँचे उगनेवाले गुवाक तरु और समुद्र में मिलनेवाले शंख को स्मरण करोगे तो समझ लो कि वे दोषपूर्ण हैं। ७६७

पवळमुङ् गिडैयुङ् गॉव्वैप् पळनुम्बैङ् गुमुदप् पोदुम्
तुवळ्विल विलवम् कोब मुरुक्कॅन्रित् तॊडक्कञ् जालत्
तवळमॅन् रुरैक्कुम् वण्णञ् जिवन्दुदेन् ऱदुम्बु माहित्
कुवळैयुण् कण्णि वण्ण वायदु कुरियु मः(ह्)दे 768

कुवळै उण् कण्णि–कुवलय-सम और काजल-लगी हुई आँखों वाली सीताजी का; वण्णम् वाय् अतु–सुन्दर मुख; पवळमुम्–प्रवाल; किटैयुम्–'किडै' (नाम की जल-लता) और; कॉव्वै पळनुम्–बिम्बफल; पै कुमत पोतुम्–ताजा कुमुद-सुमन और; तुवळ्वु इल–जिसमें सिकुड़न नहीं पड़ा हो; इलवम्—वह सेमर का फूल; कोपम्–इन्द्रगोप (कीड़े); मुरुक्कु—काँटेदार पलाश के फूल; ॲन्र इ तॊटक्कम्–ये आदि; चाल तवळम्–(इसके सामने) धवल ही हैं; ॲन्रु उरैक्कुम् वण्णम्–ऐसा कहने योग्य रीति से; चिवन्तु–लाल बना; तेन् ततुम्पुम्–और शहद से भरा रहता है; आकिन्–तो; कुरियुम् अ.:तु–निर्देश (उपमान) भी वही है। ७६८

नीलोत्पल-निभ और अञ्जनरंजित आँखों वाली सीता का मुख (अधर) इतना लाल है कि उसके सामने प्रवाल "किडै" (खुखरी ?) नाम की लता का तना, बिम्बफल, ताज़ा कुमुद, नवीन सेमर का फूल, इन्द्रगोप कीड़ा आदि सभी उसके सामने श्वेत कहे जायँगे। वह मधुभरा और शोभायमान है। बल्कि उसका उपमान भी वही है। ७६८

शिवन्ददो रमुद मिल्लैत् तेनिल्लै युळवॅन् ऱालुम्
कवर्न्दपो दन्रि युळ्ळ नित्तैप्पवोर् कळिप्पु नल्हा

पवर्न्दवा णुदलि नाडन् पवळवाय्क् कुवमै पावित्
तुवन्दपो दुवन्द वण्ण मुरैत्तपो दुरैत्त दामो 769

चिवन्ततु ओर–लाल रंग का कोई; अमुतम् इल्लै–अमृत नहीं; तेन् इल्लै–शहद नहीं; उळ ॲन्ऱालुम्–हों तो भी; कवर्न्त पोतु अन्ऱि–उठाकर खाये विना; उळ्ळम् निनैप्प–मन में सोचने मात्र से; ओर् कळिप्पु–अतुल आनन्द; नल्का–नहीं देंगे; पवर्न्त–सुनिर्मित; वाळ् नुतलिनाळ् तन्–उज्ज्वल ललाट वाली सीता के; पवळम् वाय्क्कु–प्रवाल-सम मुख (अधरों) का; उवमै पावित्तु–उपमान सोचकर; उवन्त पोतु–जब मन हुआ तब; उवन्त वण्णम्–अपनी कल्पना के अनुरूप; उरैत्त पोतु–कहा जाय तब; उरैत्ततु–वैसा सही कहा गया; आमो–हो जायगा क्या। ७६९

लाल रंग का अमृत नही होता। वैसा शहद भी नहीं होता। अगर होंगे तो भी उनको उठाकर विना खाये स्मरणमात्र से वे आनन्द नहीं देते। सुरचित, प्रकाशमय ललाट वाली सीता के प्रवालाधरों का उपमान सोचकर जैसा मन को रुचता है, वैसा कहने से ठीक तरह से कहना हो जायेगा क्या ? । ७६९

मुल्लैयु मुरुन्दु मुत्तु मुऱुवलॅन् ऱुरैत्त पोदु
शॉल्लैयु ममुदुम् बालुन् तेनुमॅन् ऱुरैक्कत् तोन्ऱुम्
अल्लदोन् ऱाव दिल्लै यमुदिऱ्कु मुवमै युण्डो
वल्लैये लऱिन्दु कोडि माऱिला वाऱु शान्ऱोय् 770

माऱु इला आऱु–अनुपम अनेक प्रकारों से; चान्ऱोय्–श्रेष्ठ; मुऱुवल्–सीताजी के दाँत; मुल्लैयुम्–कुन्दकलियाँ और; मुरुन्तुम्–मोरपंख (की रीढ़ का) सफ़ेद मूल; मुत्तुम्–और मोती हैं; ॲन्ऱु उरैत्त पोतु–ऐसा (उपमा) कहने पर; चॉल्लैयुम्–उसके वचन को; अमुतुम्–अमृत और; पालुम्–दूध और; तेनुम्–शहद को; ॲन्ऱु उरैक्क–(उपमान के रूप में) कहने को; तोन्ऱुम्–मन में सूझेगा; अल्लतु–(कहने का रीतिपालन मात्र) होने के सिवा; आवतु ऑन्ऱु इल्लै–सधता कुछ नहीं; अमुतिऱ्कुम् उवमै उण्टो–अमृत का भी उपमान है क्या; वल्लैयेल्–सामर्थ्य हो तो; अऱिन्तु कोटि–जान लो। ७७०

अनुपम अनेक प्रकार से श्रेष्ठ ! सीता के दाँत कुन्दकलियों और मोर-पंख के सफ़ेद नोक की समानता करेंगे। तो उसकी वाणी की तुलना में अमृत, दूध और शहद को कहने का विचार उठेगा। फिर कहने के लिए कहना छोड़कर (उपमा का) कोई कार्य सिद्ध नही होगा। अमृत का भी कोई उपमान है क्या ? तुममें सामर्थ्य हो तो तुम ही दाँतों का सौन्दर्य अनुमान कर लो। ७७०

ओदियु मॅळ्ळुन् दॉळ्ळैक् कुमिऴ्मूक् कॉक्कु मॅन्ऱाल्
शोदिशॅय् पॉन्नु मिन्नु मणियुम्बोऱ् ऱुळङ्गित् तोन्ऱा

एदुवु मिल्लै वल्ला रॅळुदुवार्क् कॅळुद वॊण्णा
नीदियै नोक्कि नीये निनैंदिया नॅडिदु काण्बाय् 771

नॅटितु काण्पाय्–दीर्घदर्शी; ओतियुम्–गिरगिट (की नाक); ऍळ्ळुम्–तिल का फूल और; तॊळ्ळै कुमिळम्–रंध्रसहित 'कुमिल' नामक फूल; मूक्कु–सीता की नाक की; ऑक्कुम् ऍन्ऱाल्–समानता करेंगे कहें तो; चोति चॅय्–ज्योतिमय; पॊन्ऩुम्–स्वर्ण; मिन्ऩुम्–चमकती; मणियुम् पोल्–मणि की तरह; तुळङ्कि तोन्ऱा–(वे) प्रभापूर्ण नहीं दिखते; एतुवुम् इल्लै–उनमें हेतु भी नहीं है; ऍळुतुवार् वल्लार्क्कु–चित्र खींचने में समर्थ (चितेरे) के लिए भी; ऍळुत ऑण्णा–जिसका चित्र लिखना असम्भव है, उस; नीतियै नोक्कि–प्रकार को देखकर; नीये निनैंति–तुम ही कल्पना कर लो। ७७१

दीर्घदर्शी! गिरगिट, तिल का फूल, रन्ध्रसहित "कुमिळ" नामक फूल आदि देवी की नासिका की समानता करेंगे —अगर ऐसा कहें तो वे कान्तिमय स्वर्ण और चमकनेवाली मणियों के समान शोभासहित नहीं दिखते। उनमें ऐसी शोभा का कोई हेतु भी नहीं है। इस नासिका की सुन्दरता के, जिसका चतुर चितेरा भी चित्रण नहीं कर सकता, प्रकार को तुम ही नेक रीति से सोच-समझ लो। ७७१

वळ्ळैहत् तरिहै वाम मयिर्विनैक् करुवि यॆन्ऩप्
पिळ्ळैह ळुरैत्त वॊप्पैप् पॅरियव रुरैक्किऩ् पित्ताम्
वॆळ्ळिवॆण् डोडु शॆय्द विळुत्तवम् विळैन्द दॆन्ऱे
उळ्ळुदि युलहुक् कॆल्ला मुवमैक्कु मुवमै युण्डो 772

वळ्ळै–'वळ्ळै' (नाम की जललता के) पत्र; कत्तरिकै–कैंची (रूपी); वामम्–अच्छा; मयिर् वित्तै करुवि–बाल बनाने का औज़ार; ऍन्ऩ–ऐसा; पिळ्ळैकळ्–बालकों के; उरैत्त–कथित; ऑप्पै–उपमान को; पॅरियवर्–बड़े विद्वान् लोग; उरैक्किन्–कहें तो; पित्तु आम्–पागलपन होगा; वॆळ्ळि वॆण् तोटु–अत्यधिक श्वेत कर्णाभरण; चॅय्त–कृत; विळु तवम्–महान तप ने; विळैत्ततु–पैदा किया; ऍन्ऱे उळ्ळुति–ऐसा ही समझो; उलकुक्कु ऍल्लाम्–सारे लोकों के; उवमैक्कुम्–उपमान का भी; उवमै उण्टो–अन्य उपमान हो सकता है क्या। ७७२

स्त्रियों के कानों को "वळ्ळै" नाम की जललता के पत्र के साथ और बाल काटनेवाली कैंची के साथ लोग उपमित करते हैं। ये बालकों के कहे उपमान हैं। बुद्धिमान बड़े लोग अगर ऐसा कहें तो वह पागलपन है। श्वेत चाँदी के ताटंकों ने कड़ी तपस्या की थी; वे ही सीता के कान के रूप में पैदा हो गयी हैं। सीता के कान दुनिया की सभी वस्तुओं के लिए उपमान हैं। उनके लिए और कोई उपमान हो सकता है क्या? । ७७२

पॅरियवाय्प् परवै यॊव्वा पिऱ्ऱिदॊन्ऱु नितैन्दु पेश
उरियवा यॊरुव रुळ्ळत् तॊडुङ्गुव वल्ल वुण्मै
तॅरियवा यिरक्का नोक्किऱ् ऱेवर्क्कुन् देव नॅन्नक्
करियवाय् वॅळिय वाहुम् वाट्टडङ् गण्ग ळम्मा 773

तेवर्क्कुम् तेवऩ्–देवदेव (श्रीनारायण); ऍऩ्ऩ–जैसा; करिय आय्–काली बनकर; वॅळिय आकुम्–श्वेत भी रहनेवाली; वाळ् तट कण्कळ्–तलवार-सम विशाल आँखों को; उण्मै तॅरिय–सच्चाई जानने हेतु; आयिरम् काल् नोक्किऩ्–सहस्र बार देखें तो; पॅरिय आय्–विशाल; परवै–समुद्र भी; ऒव्वा–उपमान नहीं बन सकता; पिऱितु ऒऩ्ऱु–फिर अन्य कोई; नितैन्तु पेच–सोचकर कहने योग्य; ऒरुवर् उळ्ळत्तु–किसी के मन में; ऒट्टुक्कुव अल्ल–समानेवाले नहीं हैं; अम्मा–मैया री। ७७३

देवाधिदेव विष्णु के समान नीले और श्वेत रंग से युक्त तलवार-सम उसकी बड़ी आँखों का सच्चा रूप देखने के इरादे से सहस्र बार देखो, तो भी वे विशाल सागर के उपमान को मान ही नहीं सकेंगी। उनकी आँखें ऐसी नहीं, जिनको कोई पूर्ण रूप से मनोगत करके अन्य उपमान द्वारा वर्णित कर सकें। ७७३

केळॊक्कि नऩ्ऱि यॊन्ऱु किळत्तिनाऱ् कीऴ्मैत् तामे
कोळॊक्कु मॅऩ्ऩि नल्लाऱ् कुऱियॊप्पक् कूऱिऱ् ऱन्ऱाल्
वाळॊक्कुम् वडिक्क णाडऩ् पुरुवत्तुक् कुवमै वैक्किन्
ताळॊक्क वळैन्दु निऱ्प विरण्डिल्लै यनङ्ग शावम् 774

वाळ् ऒक्कुम्–तलवार-सदृश; वटि कणाळ्–सुन्दर आँखों वाली; तऩ् पुरुवत्तुक्कु–की भौंहों की; उवमै वैक्किऩ्–उपमा कहें तो; केळ् ऒक्किऩ् अऩ्ऱि–परस्पर सम वे अपने ही समान हैं, इसके सिवा; ऒऩ्ऱु–अन्य किसी वस्तु को; किळत्तिताल्–उपमान कहें तो; कीऴ्मैत्तु आम्–अल्प ही होगा; कोळ् ऒक्कुम्–हमारी (मनोधर्म) कल्पना में समानता होगी; ऍऩ्ऩिऩ् अल्लाल्–उसे छोड़कर; कुऱि ऒप्प–उपमा-धर्म के अनुसार; कूऱिऱ्ऱु अऩ्ऱाल्–कहा गया नहीं होगा; ताळ् ऒक्क–दोनों छोर समान हैं; वळैन्तु निऱ्प–ऐसा झुके हुए जो है; इरण्टु अनङ्क चापम्–वे दो अनंगचाप; इल्लै–संसार में (प्राप्य) नहीं हैं। ७७४

तलवार के समान तीक्ष्ण नेत्रों वाली सीताजी की भौंहों की उपमा रचना चाहें तो कठिन है। क्योंकि परस्पर सम वे अपने ही समान हैं। दूसरी वस्तु को लेकर उपमित करने का प्रयास नीच काम है। ऐसा करना अपने-अपने विचार के अनुरूप कथन हो सकता है, पर सचमुच उपमा का कार्य अर्थपूर्ण नहीं होगा। दोनों ओर के दण्ड सुडौल रूप से झुके रहें —ऐसे दो अनंगचाप दुनिया में नहीं हैं। (इसलिए अनंगचाप भी कहा नहीं जा सकता।)। ७७४

नऩ्ऩाळु नळिऩ नाणु मुहत्तिऩळ् नुदलै नाडिप्
पऩ्ऩाळुम् पऩ्ऩि याऱ्ऱा मदियॆऩुम् पण्ब दाहि
मुऩ्ऩाळिऩ् मुळैवॆण् डिङ्गण् मुऴुनाळुङ् गुऱैये याहि
ॲऩ्ऩाळुम् वळरा दॆऩ्ऩि निऱैयॊक्कु मियल्बिऱ् ऱामे 775

मुऩ् नाळिल्–(शुक्ल पक्ष के) आरम्भ के दिनों में; मुळै–उदित; वॆळ् तिङ्कळ्–श्वेत (कला-चाँद); नल् नाळ्–अच्छे दिवा में; नळिऩमुम्–कमल भी; नाणुम्–शरमायेगा; मुकत्तिऩळ्–ऐसी आनना; नुतलै–के ललाट को; नाटि–जाँच करके; पल् नाळुम् पऩ्ऩि–अनेक काल वही विचारकर; आऱ्ऱा–सह न सककर; मति ॲऩुम् पण्पतु आकि–(चिन्तक) (पूर्ण-) चन्द्र कहलाने की योग्यता पाकर (भी); मुऴु नाळुम् कुऱैये आकि–पूर्णिमा के दिन में भी कला से हीन रहता है; ॲ नाळुम् वळरातु–कभी भी पूर्ण नहीं बनता; ॲऩ्ऩिऩ्–तो; इऱै ऑक्कुम्–तो जरा भी समानता करने का; इयल्पिऱ्ऱु आम् ए–भाग्यवान होगा क्या। ७७५

शुक्लपक्ष का कलाचन्द्र और मध्याह्न में खिला हुआ कमल भी जिसको देखकर लज्जा से युक्त होते हैं, वैसे मुख वाली सीता के ललाट के सौन्दर्य को अनेक दिन तक चन्द्र सोचता रहा और उसे असह्य लगा। वह चन्द्र तो कहाता है, लेकिन पूर्णिमा के दिन भी सारी कलाओं से पूर्ण नहीं रहता। तो वह सीता के ललाट की कुछ-कुछ ही समता कर सकेगा। (चन्द्र को तमिऴ में "मदि" कहते हैं। मदि का अर्थ सतत चिन्तन है। वह चन्द्र सीता के ललाट का हमेशा चिन्तन करता रहा— इसलिए उसका "मदि" यानी 'चिन्तक' नाम उपयुक्त है।)। ७७५

वऩैबव रिल्लै यऩ्ऱे वऩत्तुणाम् वन्द पिऩ्ऩै
अऩैयऩ वॆऩिऩुन् दान्द मळहुक्को रळिवुण् डाहा
विऩैशॆयक् कुऴऩ्ऱ वल्ल विदिशॆय विळैन्द नीलम्
पुऩैमणि यळह मॆऩ्ऱुम् पुदुमैया मुवमै पूणा 776

नाम्–हमारे; वऩत्तुळ् वन्त पिऩ्ऩै–वन में आने के पश्चात्; वऩैपवर् इल्लै–केशश्रृंगार करनेवाला नहीं है; अऩ्ऱे–न; ताम् अऩैयऩ ॲऩिऩुम्–केश ऐसे रहे तो भी; तम् अऴकुक्कु–अपनी मनोहारिता में; ओर् अऴिवु उण्टाका–कुछ कमी नहीं रखते; विऩै चॆय कुऴऩ्ऱ अल्ल–कलाकृत्य के आधार पर घुँघराले नहीं बने; विति चॆय–ब्रह्मा के ऐसा सृजन करने से; विळैन्त–ऐसे बने है; नीलम् मणि पुऩै–नीली मणि के समान (ललाट पर हिलनेवाले); अळकम्–अलक; ॲऩ्ऱुम् पुतुमै आम्–नित-नवीन हैं; उवमै पूणा–किसी भी उपमान को धारण नहीं करेंगे। ७७६

हमारे वन में आने के बाद सीता के अलकों को सँवारने-सजाने वाले कोई नहीं हैं न? ऐसी स्थिति में भी उनकी रमणीयता में कोई कमी नहीं हुई। क्योंकि उनका घुँघरालापन कृत्रिम रूप से आया नहीं है। लेकिन ब्रह्मदेव की सृष्टि में ही वे केश ऐसे बने हैं। ऐसे नीले रत्न के

समान ललाट के ऊपर के वे अलक नित-नवीन हैं। वे किसी भी उपमान को सह नहीं सकते। ७७६

कॉण्डलिन् कुळवि यामवल् कुनिशिलै वळ्ळै कॉऱ्ऱक्
कॉण्डॅयॉण् डरळ मॅन्ऱिक् केण्मैयिर् किडन्द तिङ्गण्
मण्डिल वदन मॅन्ऱु वैत्तनन् विदियो नीयप्
पुण्डरी हत्तै युऱ्ऱ पॉळ्दुदु पॉरुन्दित् तेर्वाय् 777

कॉण्टलिन् कुळवि–मेघखण्ड; आम्पल्–लाल कुमुद; कुनि चिलै–झुके धनुष; वळ्ळै–'वळ्ळै' (जल-लता) के पत्र; कॉऱ्ऱम् कॅण्टै–मत्त (कॅण्डै नाम की) मछलियाँ; ऑळ् तरळम्–उज्ज्वल मोती; ॲन्ऱु–ऐसे; इक् केण्मैय–इनसे उपमेय वस्तुएँ; किटन्त–जिस पर रहती है; तिङ्कळ् मण्टिलम्–चन्द्रमण्डल को; वितियोन्–विधाता ने; वतनम् ॲन्ऱु–वदन के नाम पर; वैत्तनन्–रचित कर रखा; नी–तुम; अ पुण्टरीकत्तै–उस (मुख-) कमल को; उऱ्ऱ पॉळ्दु–जब पास से देखोगे तब; अतु पॉरुन्ति–उस (मेरे कथन) को सही लगता हुआ; तेर्वाय्–जानोगे। ७७७

ब्रह्मदेव ने ऐसे एक चन्द्रमण्डल को ही सीता के श्रीमुख के रूप में रच लिया था, जिसमें मेघखण्ड, रक्त कुमुद, वक्र धनुष, "वळ्ळै" लता, मत्त मत्स्य, कान्तिमय मुक्ताएँ आदि उपमान योग्य वस्तुएँ रहती हों। जब तुम उस कमल-मुख को पास से देखोगे तो समझ लोगे कि मैं सही वर्णन ही कर रहा हूँ। ७७७

कारिनैक् कळित्तुक् कट्टिक् कळ्ळिनो डावि यूट्टिप्
पेरिरुट् पिळम्बु तोय्त्तु नॅऱिवुऱीइप् पिऱङ्गु कऱ्ऱैच्
चोर्हुळऱ् ऱॉहुदि यॅन्ऱु चुम्मैशॅय् दनैय दम्मा
नेर्मैयैप् परुमै शॅय्द निऱैनरुङ् गून्द लीत्तम् 778

नेर्मैयै–सूक्ष्मता को; परुमै चॅय्त–घनीभूत जो किये गये; निऱै नऱु–वे सुवासपूर्ण; कून्तल् नीत्तम्–केशों की राशि; कारिनै–जल-भरे काले मेघ को; कळित्तु कट्टि–काटकर, बाँधकर; कळ्ळिनोटु–मधु के साथ; आवि–(अगरु आदि का) धुआँ; ऊट्टि–मिलाकर; पेर् इरुळ् पिळम्पु–घने अन्धकार-पुंज में; तोय्त्तु–निमग्न करके; नॅऱिवु उऱीई–कुंचित करके; पिऱङ्कु–शोभायमान; कऱ्ऱै–घना; चोर् कुळल् तॉकुति–लटकनेवाले केश का जाल; ॲन्ऱु–कहकर; चुम्मै चॅय्तु अनैयतु–भार बनाया गया हो ऐसी है। ७७८

उसकी सुवासित केशराशि सूक्ष्म की घनीभूत वस्तु है। काले मेघ को चीरकर बाल बनाये गये और उनकी राशि बाँधी गयी। उसमें सुरा और धुआँ चढ़ाया गया। फिर उसको घने अन्धकार-पुञ्ज में सन लिया। फिर उसमें कुंचन रचित कर लटकनेवाला बनाकर केश नाम दिया गया और वह सीता का केश-भार बन गया (उसका केश वैसा ही है)। ७७८

कुळ्ल्पडैत् तियाळ्ैच् चॅय्दु कुयिलोडु किळियुङ् गूट्टि
मळ्लैयुम् पिऱ्वुन् दन्दु वडित्तहैम् मलरिन् मेलान्
इळैपॊरु मिडैयि नाड ळिन्शॊऱ्क ळियैयच् चॅय्दान्
पिळैयिल दुवमै काट्टप् पॅऱ्ऱिलन् पॅरुङ्गॊ लिन्नुम् 779

कुळ्ल् पटैत्तु–वंशी बनाकर; याळ् चॅय्तु–'याळ्' बनाकर; कुयिलोटु किळियुम् कूट्टि–और कोयल के साथ शुक की सृष्टि करके; मळ्लैयुम् पिऱ्वुम्–मधुर तुतली बोली और अन्य ऐसी मधुर वस्तुएँ; तन्तु–बनाकर; वटित्त–अभ्यस्त; कै–हाथों वाले; मलरिन् मेलान्–कमल पर आसीन (ब्रह्मा ने); इळै पॊरुम्–सूत्र से लड़नेवाली; इटैयिनाळ् तन्–कमर वाली सीता के; इन् चॊऱ्कळ्–मधुर-भाषण को; इयैय–युक्त रीति से; चॅय्तान्–बनाया; पिळै इलतु–निर्दोष; उवमै काट्ट–उपमान दिखाने (बनाने); पॅऱ्ऱिलन्–नहीं पाये; इन्नुम् पॅरुम् कॊल्–आगे ही बनायेंगे क्या। ७७९

ब्रह्मा के हस्तों ने "वंशी" बनायी, "याळ्" बनायी और कोयल और शुक की सृष्टि की। अस्पष्ट तुतली वाणी का भी सृजन किया। इस तरह कमलासन ब्रह्मदेव के हाथ (सीता की वाणी से उपमित होने योग्य वस्तुओं की सृष्टि के) अभ्यस्त थे। सूत्र को भी पराजित करनेवाली पतली कमर से शोभित जानकी की मधुर वाणी तब जाकर बनायी। तो भी वह उनको निर्दोष रीति से उपमान बनने की शक्ति नहीं दे सका। आगे भी उपमानयोग्य वस्तु बनायेगा क्या? —हम नहीं जानते। ७७९

वानिन्ऱ वुलह मून्ऱुम् वरम्बिन्ऱि वळर्न्द वेनुम्
नानिन्ऱ शुवैमऱ् ऱॊन्ऱो वमुदन्ऱि नल्ल दिल्लै
मीनिन्ऱ कण्णि नाडन् मॅन्मॊळिक् कुवमै वेण्डिन्
तेनॊन्ऱो वमिळ्द मॊन्ऱो ववैशॆविक् किन्बम् जॅय्या 780

वान् निन्ऱ उलकम् मून्ऱुम्–स्वर्ग आदि स्थायी त्रिलोक; वरम्पु इन्ऱि–असीम रूप से; वळर्न्त एनुम्–फैल गये हैं तो भी; मीन् निन्ऱ–मछली-सम; कण्णिताळ् तन्–आँखों वाली सीता की; मॅल् मॊळिक्कु–कोमल वाणी का; उवमै वेण्टिन्–उपमान चाहो तो; तेन् ऒन्ऱो–या तो शहद एक है; अमिळ्तम् ऒन्ऱो–या दूध एक है; अवै–(पर) वे; चॅविक्कु–कानों को; इन्पम् चॅय्या–आनन्द नहीं दे सकते; मऱ्ऱॊन्ऱु अमुतो–अन्य देवामृत तो; ना निन्ऱ–जिह्वा का; चुवै अन्ऱि–स्वाद छोड़कर; नल्लतु इल्लै–अन्य गुण से युक्त नहीं है। ७८०

स्वर्ग आदि तीनों लोक असीम रीति से विस्तृत हैं। तो भी मीनाक्षी सीता की मृदुल वाणी के वचनों का उपमान कहना चाहें तो शहद एक है और दूध एक है। लेकिन वे श्रुतिमधुर नहीं हैं। और एक अमृत है, वह भी जीभ को मधुर लग सकता है, पर दूसरा गुण उसमें नहीं है। ७८०

पूवरु मऴलै यन्नम् पुनैमडप् पिडियॅन्ऱिन्न
तेवरु मरुळत् तक्क शॅलविन्न वॅन्निनुन् देऱ्ऱेन्
पावरुङ् गिऴमैत् तॊन्मैप् परुणिदर् पहरुम् वत्ति
नावरुङ् गिऴविच् चॅव्वि नडैवरु नडैय णल्लोय् 781

नल्लोय्–सत्पुरुष; पू वरुम्–कमल के फूलों के साथ सम्पर्क-रखनेवाले; मऴलै–मधुरभाषी; अन्नम्–हंस; पुनै–सुन्दर; मडम् पिडि–बाल-हथिनी; ॲन्ऱ इन्न–आदि ऐसे; तेवरुम् मरुळ तक्क–देवों को भी आश्चर्य में डालनेवाली; चॅलविन्न–चाल वाले है; ॲन्निनुम्–तो भी; तेऱ्ऱेन्–उपमान नहीं चुनूंगा; पा वरुम् किऴमै–(आशु) कविता बनाने की शक्ति के अधिकारी; तॊन्मै परुणितर्–सनातन और श्रेष्ठ विद्वान्; पकरुम्–जो रचना करते हैं; पत्ति–लगातार; ना वरुम् किऴवि–जिह्वा से निकलनेवाली उस वाणी की; चॅव्वि नडै–प्रवाह-प्रसादपूर्ण शैली की; वरुम्–समानता करनेवाली; नडैयळ्–चाल की है। ७८१

भलेमानुस, कमल पर रहनेवाले और अस्पष्ट बोली वाले हंस, सुन्दर बाल-हथिनियाँ आदि की चाल ऐसी है कि देव भी देखकर चक्रित हो जाते है। तो भी मैं उनको उपमान मानने में तृप्ति नहीं पाता। आशु कविता बनानेवाले ज्ञानवृद्ध विद्वानों की जीभ से निकलनेवाले वाक्यों की रचना-शैली की समानता करनेवाली चाल से युक्त है सीता। ७८१

ॲन्निऱ मुरैक्केन् मावि निळन्दळिर् मुदिरु मऱ्ऱैप्
पॊन्निऱङ् गरुहु मॅन्ऱाल् मणिनिऱ मुवमै पोदा
मिन्निऱ् नाणि यॅङ्गुम् वॅळिप्पडा दॊळिक्कुम् वेण्डिन्
तन्निऱन् दाने यॊक्कु मलर्निऱञ् जमऴ्क्कु मन्ऱे 782

माविन्–आम्र का; इळम् तळिर्–कोमल पल्लव; मुतिरुम्–(सीता के शरीर की आभा के सामने) पका दिखेगा; पॊन् निऱम्–स्वर्ण का रंग भी; करुकुम्–काला दिखेगा; ॲन्ऱाल्–तो; मणि निऱम्–रत्नों की प्रभा में; उवमै पोता–उपमान बनने का दम नहीं; मिन् निऱम्–बिजली का रंग; नाणि–लजाकर; ॲङ्कुम् वॅळिप्पटातु–कहीं भी प्रकट न होकर; ऑळिक्कुम्–छिप जायगा; मलर् निऱम्–कमलपुष्प का रंग; चमऴ्क्कुम्–खेद करेगा; ॲ निऱम् उरैक्केन्–कौन सा रंग बताऊँ; वेण्टिन्–कहना ही चाहिए तो; तन् निऱम्–उसकी ही शोभा (का रंग); ताने ऒक्कुम्–खुद उसी से उपमेय है। ७८२

आम्रपल्लव, उसके रंग के सामने पके और फीके लगते है। स्वर्ण का रंग काला लगता है, तो रत्न की उपमा योग्य छवि नही दिखा सकती। विजली का रंग लजाकर कहीं प्रकट नही होगा और छिप जायगा। कमल की छटा पछताकर पीछे हट जायगी। तो कौन सा रंग कहूँ मैं ? उसका रंग उसी के रंग के समान है। ७८२

मङ्गैय रिवळै यॉप्पार् मट्रिल रॅन्नुम् वण्णम्
शङ्गैयि लुळ्ळन् दाने शान्रॅनक् कॉण्डु शान्ड्रोय्
अङ्गव णिलैमै यॅल्ला मळन्दरिन् दरुहु शार्न्दु
तिङ्गळ्वाण् मुहत्ति नाट्कुच् चॅप्पॅनप् पिन्नुम् जॅप्पुम् 783

चान्ड्रोय्–श्रेष्ठ मारुति; इवळै ऑप्पार्–इसकी समानता करनेवाली; मट्र मङ्कैयर्–कोई अन्य रमणियाँ; इलर्–नहीं; ॲन्नुम् वण्णम्–ऐसा कहने योग्य रीति से; चङ्कै इल्–संशयरहित; उळ्ळम् ताने–अपने ही मन को; चान्ऱ ॲन कॉण्टु–प्रमाण मानकर; अङ्कु–वहाँ; अवळ् निलैमै ॲल्लाम्–उसकी स्थिति सभी; अळन्तु अऱिन्तु–परखकर, समझकर; अरुकु चार्न्तु–समीप जाकर; तिङ्कळ्–चन्द्र-सम; वाळ् मुकत्तिनाट्कु–और उज्ज्वल मुख वाली उससे; चॅप्पु–कहो; ॲन–कहकर; पिन्नुम्–फिर भी; चॅप्पुम्–श्रीराम बोले। ७८३

श्रेष्ठ गुण वाले ! इसकी समानता करनेवाली और कोई स्त्री नहीं है। इस प्रकार अपने अशंकित मन को प्रमाण मानकर सीताजी को ढूँढ़ लो। वहाँ उसकी स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर, हो सके तो पास जाओ और चन्द्रानना से ये बातें कहो। यह कहने के बाद श्रीराम यों बोले। ७८३

मुन्नैनाण् मुनियॉडुम् मुदियनीर् मिदिलैवाय्च्
चॅन्निनीण् मालैयान् वेळ्विका णियशॅल
अन्नमा डुन्दुरैक् करुहुनिन् ड्राडलैक्
कन्निमा डत्तिडैक् कण्डदुम् कळ्ऱुवाय् 784

मुन्नै नाळ्–पहले किसी दिन; मुनियॊटुम्–विश्वामित्र मुनि के साथ; मुतिय नीर्–पूर्ण-जल; मितिलै वाय्–मिथिला में; चॅन्नि–सिर पर; नीळ् मालैयान्–बड़ी माला धारण करनेवाले (जनक) का; वेळ्वि काणिय–यज्ञ देखने; नान् चॅल–जब मैं गया तब; अन्नम् आटु–जहाँ हंस खेल रहे थे, उस; तुऱैक्कु अरुकु–(कृत्रिम) जलाशय के पास; कन्नि माटत्तिटै–कन्या-सौध पर; निन्ऱाळ् तनै–स्थित उसको; कण्टतुम्–जो मैंने देखा; कळ्ऱुवाय्–वह (समाचार) कहो। ७८४

कभी पहले मैं मुनि विश्वामित्र के साथ जलसमृद्ध मिथिला में मालाधारी सिर के महाराजा जनक के यज्ञ को देखने गया। तब उस जलाशय के पास, जिसमें हंस क्रीडा कर रहे थे, "कन्यासौध" पर सीता खड़ी थी। उसको मैंने जो देखा, वह बात उससे कहो। ७८४

वरैशॅय्दाळ् विल्लिङ्गत् तवन्नमा मुनियॉडुम्
विरशिना नल्लनल् विडुवल्या नुयिरॅन्नाक्
करैशॅया वेलैयिऱ् पॅरियका दलडॅरिन्
दुरैशॅय्दा ळः(ह्)दॅला मुणरनी युरैशॅय्वाय् 785

करै चॅया वेलैयिऩ्–अपार समुद्र-सम; पॅरिय कातलळ्–अतिगहन प्रेम करनेवाली; वरै चॅय् विल् ताळ्–(मेरु) पर्वत-सम धनु का दण्ड; इऱुत्तवऩ्–तोड़नेवाला; अ मा मुतियॊटुम्–उस महान (कौशिक) मुनि के साथ; विरचितान्–जो आया; अल्लतेल्–वह नहीं हो तो; यान् उयिरै विट्टुवल्–मैं अपना प्राण त्याग दूँगी; ऍऩ्ऱा–ऐसा; तॅरिन्तु–समझदारी से विचारकर; उरै चॅय्ताळ्–(उसने) वचन कहा; अ.·.तु ऍलाम्–वह सब; उणर–समझाते हुए; नी–तुम; उरै चॅय्वाय्–कहो। ७८५

सीता का प्रेम अपार सागर-सम विशाल है। उसने खूब सोचकर प्रण किया कि अगर पर्वत-धनु का भंजक उस दिव्य मुनि के साथ आया हुआ नहीं होगा तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी। वह समाचार समझाकर कहो। ७८५

शूळिमाल् यानैयिऩ् ऱुणैमरुप् पिणैयॆऩक्
केळिला वनमुलैक् किरिशुमन् दिडैवदोर्
वाळिवाऩ् मिऩ्निळङ् गॊडियिऩ्वन् दाळैयऩ्
ऱाळिया नरशवैक् कण्डदुम् मऱैहुवाय् 786

चूळि माल्–मुखपट्ट से अलंकृत बड़े; यानैयिऩ्–गज के; तुणै मरुप्पु इणै ऍन–परस्पर सम दन्त-द्वय के समान; केळ् इला–पर उनसे जो उपमेय नहीं; वनम्–मनोरम; मुलै किरि–स्तनगिरियों को; चुमन्तु–ढोते हुए; इटैवतु–जो बल खाती है; ओर वान् मिन्–आकाश की एक बिजली की; इळ कॊटियिन्–एक लता के समान; वन्ताळै–आती हुई को; अन्ऱु–उस दिन; आळियान्–चक्रवर्ती (जनक) की; अरचवै–राजसभा में; कण्टतुम्–मेरा देखना भी; अऱैकुवाय्–कहना। ७८६

मैंने सीता को चक्रवर्ती जनक की राजसभा में उस दिन देखा, जब वह मुखपट्टालंकृत गजराज के दन्तद्वय-सम बल्कि उनसे अतुल्य स्तन-गिरियों को ढोने के कारण बल खाती हुई आकाश की अनुपम बिजली की वाललता-सदृश आ रही थी। ७८६

मुऩ्बुना ऩ्ऱिहिला मुळिनॆडुङ् गाऩिले
ऍऩ्बिने पोदुवाऩ् निनैदियो वेळैनी
इऩ्बमा यारुयिर्क् किऩ्ऱियैया यिनैयिऩ्ऱित्
तुऩ्बमाय् मुडिदियो वॆऩ्ऱदुम् जॊल्लुवाय् 787

ऐळै–अबोध; नी–तुम; मुऩ्पु–पहले; नाऩ्–मैं; अऱिकिला–जिसको नहीं जानता; मुळि नॆटु–झुलसे, विशाल; कात्तिले–वन में; ऍऩ् पिऩ्ने–मेरे पीछे; पोतुवाऩ्–आने का; निनैतियो–विचार रखती हो क्या; इऩ्पम् आय्–(अब तक) सुख देनेवाली रहकर; आर् उयिर्क्कु इऩ्ऱियै आयिनै–प्राण-प्यारी रहीं; इऩ्ऱि–आगे; तुऩ्पम् आय्–दुःख (दायी) बनकर; मुटितियो–बन चुकोगी क्या; ऍऩ्ऱतुम्–ऐसा मेरा कहना भी; चॊल्लुवाय्–उससे कहो। ७८७

"अबोध ! जला-भुना जंगल मेरे लिए अपरिचित है। उस बड़े जंगल में मेरे पीछे आने की बात सोचती हो क्या ? अब तक तुम आनन्ददायिनी रहीं, प्राणप्यारी रहीं। आगे दु:ख-कारण बन चुकोगी क्या ?" यह मैंने उससे जो कहा वह उसे बताओ। ७८७

आन्पे ररशिळन् दडविशेर् वायुन्क्
कियान्ला दन्वॆला मिनियवो वितियॆंना
मीनुला नॆंडुमलर्क् कण्णितीर् विळविळुन्
दूनिला वुयिरिन्वॆन् दयर्वदु मुरैशॆय्वाय् 788

आन पेर् अरचु–तुम्हारा जो बना वह साम्राज्य; इळन्तु–खोकर; अटवि चेर्वाय्–वन जानेवाले; इत्ति–आगे; यान् अलातन ॲलाम्–मेरे विना सभी; उन्नक्कु इत्तियवो–तुम्हारे लिए मीठे होंगे क्या; ॲन्ना–ऐसा; कॊट्मै कूट्रि–निष्ठुरता का वचन कहकर; मीन् उलाम्–मछली-सी; नॆंटु मलर्–आयत कमल-सम; कण्णिन् नीर् विळ–आँखों से आँसू बहने देते हुए; विळुन्तु–नीचे गिरकर; ऊन् निला उयिरिन्–शरीर में न टिकनेवाली जान के समान; वॆन्तु–जलकर; अयर्वतुम्–उसका छटपटाना भी; उरै चॆय्वाय्–उससे कहो। ७८८

तब सीता ने कहा कि अपना जो हुआ, उस राज्य को खोकर जंगल जानेवाले ! आगे मुझसे रहित सभी वस्तुएँ सुखदायिनी हो रहेंगी क्या ! यह आर्तवचन कहते हुए उसने मछली के समान चंचल और आयत कमल-सम आँखों से आँसू बहाये और नीचे गिर गयी। शरीर छोड़कर जाने को उद्यत प्राणों के समान छटपटायी और दु:खतप्त होकर शिथिल हुई। यह सब बात उसे स्मरण कराओ। ७८८

मल्लन्मा नहर्दुरन् देहुनाण् मदितॊंडुम्
कल्लिन्मा मदिन्मणिक् कडैहडन् दिडुदन्मुन्
ॲल्लैतीर् वरियवॆङ् गानम्या दॊवॆंन्च्
चॊल्लिना ळः(ह्)दॆला मुणरनी शॊल्लुवाय् 789

मल्लल् मा नकर्–सर्वसमृद्ध बड़े नगर (अयोध्या) को; तुरन्तु–त्यागकर; एकुम् नाळ्–(वन) जाने के दिन; मति तॊटुम्–चन्द्रस्पर्शी; कल्लिन् मा मतिल्–पत्थरों के बड़े प्राचीरों के; मणि कटै–रत्नमय गोद्वार को; कटन्तिटुतन् मुन्–पार करने के पूर्व ही; ॲल्लै तीर्वु अरिय–असीम; वॆम् कातम्–भयंकर वन; यातो–कौन सा है; ॲन–ऐसा; चॊल्लिनाळ्–पूछा (उसने); अ:तु ॲलाम्–वह सब; नी–तुम; उणर चॊल्लुवाय्–समझाकर कहो। ७८९

जब हम सर्वसमृद्ध, विशाल अयोध्या नगर छोड़कर जाने लगे तब चन्द्रस्पर्शी विशाल प्रस्तरप्राचीरों के गोद्वार को पार करने से पूर्व ही उसने प्रश्न किया कि असीम भयंकर जंगल कौन सा है ? उसका वह प्रश्न करना उसे समझाकर कहो। ७८९

इनैयवा ऱुरैशेया विनिदिन्ने हुदियेंना
वनैयुमा मणिनन्मो दिरमळित् तरिञनित्
विनैयेला मुडिहेंना विडैहोंडुत् तुदवलुम्
पुनैयुमवार् कळलिना नरुळोंडुम् पोयिनान् 790

इनैय आरु–इस रीति से; उरै चेंया–बातें करके; इनितिन्–सुख से; एकुति अंना–चलो कहकर; मा मणि वनैयुम्–उत्तम रत्न-जड़े; नल् मोतिरम्–श्रेष्ठ मुंदरी को; अळित्तु–देकर; अरिञ–विद्वान्; निन् विनै अंलाम्–तुम्हारे सारे काम; मुटिक–पूरे हों; अंना–कहकर; विटै कोंटुत्तु उतवलुम्–विदा देकर कृपा दिखायी तो; पुनैयुम् वार् कळलितान्–धृत पायल वाले चरणों के श्रीराम की; अरुळोटुम्–कृपा को पुरस्सर करके; पोयितान्–(हनुमान) चला। ७६०

श्रीराम ने हनुमान से ये सारे अभिज्ञान-समाचार कहे; 'सुख से जाओ' कहकर आशीर्वाद दिये। फिर श्रेष्ठ रत्नजटित मुंदरी उसके हाथ में धर कर उन्होंने कहा कि विज्ञ! तुम्हारे कार्य सिद्ध हों! यह कहकर विदा दी। तब हनुमान सबन्ध पायलधारी श्रीराम की आज्ञा लेकर उनकी कृपा को पुरस्सर करके चल पड़ा। ७९०

अङ्गदक् कुरिशिलो डडुशिनत् तुळवराम्
वेंङ्गदत् तलैवरुम् विरिहडऱ् पडैयोंडुम्
पोंङ्गुविऱ् ऱलैवरैत् तोंळुदुमुन् पोयिनार्
शेंङ्गदिर्च् चेंल्वनैप् पणिवुरुञ् जेंन्नियार् 791

अङ्कतन् कुरिचिलोटु–कुमार अंगद के साथ; अटु चितत्तु–संहारक क्रोधी; उळवर् आम्–वीर; वेंम् कतम्–(और) भयंकर आवेगपूर्ण; तलैवरुम्–यूथप; चेंम् कतिर् चेंल्वनै–लाल किरणमाली के पुत्र (सुग्रीव) के आगे; पणिवुरुम्–झुके हुए; चेंन्नियार्–सिरों वाले होकर; पोंङ्कु विल् तलैवरै–अतिश्रेष्ठ धनुर्धारों को; तोंळुतु–नमस्कृत करके; विरिकटल्–विशाल सागर-सम; पटैयोटुम्–सेना के साथ; मुन् पोयितार्–आगे गये। ७६१

अंगद के साथ संहारक क्रोधशील अन्य आवेगपूर्ण भयंकर वानर वीर लाल किरणमाली सूर्य के पुत्र को नमस्कार करके, और श्रेष्ठ धनुर्वीर श्रीराम और लक्ष्मण के आगे सिर झुकाकर प्रणमन करने के बाद विशाल सागर-सम वानर-सेना लेकर प्रस्थान कर गये। ७९१

कुडदि शैक्कण् णिडवन् कुबेरन्वाळ्, वडदि शैक्कट् चदवलि वाशवन्
इडदि शैक्कण् विनूदन् विऱऱ्ऱरु, पडैयो डुऱ्ऱुप् पडर्हेंनप् पन्निनान् 792

कुट तिचैक्कण्–पश्चिम दिशा में; इटपन्–ऋषभ; कुपेरन् वाळ्–कुबेरावाद; वट तिचैक्कण्–उत्तर दिशा में; चतवलि–शतवली और; वाचवन् इटम्–वासवी; तिचैक्कण–(पूर्व) दिशा में; विनूतन्–विन्द; विऱल् तरु–विजयदायिनी; पटैयोटु उऱ्ऱु–सेना को लेकर; पटर्क–चलें; अंत–ऐसा; पन्नितान्–कहा। ७६२

"पश्चिम दिशा में ऋषभ, कुबेर-दिशा (उत्तर) में शतबली, इन्द्र-दिशा (पूरब) में विद विजयशील दो वॆळ्ळम् सेना को लेकर चलें।" —सुग्रीव ने यह आज्ञा सुनायी। ७९२

वॆऱ्ऱि वानर वॆळ्ळ मिरण्डॊडुम्, शुऱ्ऱि योडित् तुरुवि यॊरुमदि
मुऱ्ऱु ऱादमुन् मुऱ्ऱुदि रिव्विडैक्, कॊऱ्ऱ वाहैयि ऩीरॆऩ्ऩक् कूऱिऩाऩ् 793

कॊऱ्ऱम् वाकैयिऩीर्—विजयी और 'वाहै' माला के धारण योग्य वीर; वॆऱ्ऱि वानरम्—विजयशील वानर; वॆळ्ळम् इरण्टुटऩ्—दो 'वॆळ्ळम्' (संख्या) के साथ; चुऱ्ऱि ओटि—घूम दौड़कर; तुरुवि—खूब खोज लगाकर; ऒरु मति—एक मास के; मुऱ्ऱुऱात मुऩ्—पूरा होने से पूर्व; इ इटै—यहाँ पर; मुऱ्ऱुतिर्—आ जाओ; ऎऩ कूऱिऩाऩ्—ऐसा (सुग्रीव ने अन्य वानर वीरों से) कहा। ७९३

"विजय पाकर 'वाहै' की माला पहनने की क्षमता रखनेवाले वीर! तुम दो-दो 'वॆळ्ळम्' सेना के साथ जाओ। सब स्थानों में जाओ और ढूँढ़ो। एक मास के पूरा होने से पूर्व ही यहाँ लौट आ जाओ।" —सुग्रीव ने यह दृढ़ आज्ञा सुना दी। ७९३

13. पिलम् पुक्कु नीङ्गु पडलम् (बिल-प्रवेश व निर्गमन पटल)

पोयिऩार् पोयपिऩ् पुऱनॆडुन् दिशैहडो, ऱेयिऩा निरविहा दलऩुमे यिनपॊरुट्
कायिऩा रवरुमङ् गऩ्ऩना ळवदियिऱ्, ऱायिऩा रुलहिनैत् तहैनॆडुन् दाऩैयार् 794

पोयिऩार—वे सब चले गये; पोय पिऩ्—जाने के बाद; इरवि कातलऩुम्—रविपुत्र ने भी; पुऱम् नॆटु तिचैकळ् तोऱु—(दक्षिण से) इतर सभी लम्बी दिशाओं में; एयिऩाऩ्—आज्ञा देकर भेजा; एयिऩ पॊरुट्टु—आज्ञा-पालन-रत; आयिऩार्—होकर; उलकिऩै—भूमि को; तकै—रोकने में समर्थ; नॆटु ताऩैयार्—बड़ी सेना वाले; अवरुम्—वे वानर-यूथप भी; अऩ्ऩ नाळ्—उतने दिनों की; अवतियिल्—अवधि का ध्यान करते हुए; तायिऩार्—भाग चले। ७९४

अंगदादि वीर, सुग्रीव की आज्ञा लेकर चले गये। उनके जाने के बाद सूर्यसूनु ने अन्य दिशाओं में जानेवाले वीरों को भी बिदा कर भेजा। वे भी राजाज्ञा पर सीतान्वेषण के काम में प्रवृत्त हो जाने लगे। उनके पास सारे संसार को रोक सकनेवाली बलवान सेना थी। वे निश्चित अवधि के अन्दर आने के विचार से जल्दी जाने लगे। ७९४

कुऩ्ऱिशैत् तनवॆऩक् कुववुतोळ् वलियिनार्
सिऩ्ऱिशैत् तिडुमिडैक् कॊडियैऩा डिऩर्विराय्
वऩ्ऱिशैप् पडरुमा रॊळ्ियवण् डमिऴ्डैत्
तॆऩ्ऱिशैच् चॆऩ्ऱुळार् तिरऩॆडुत् तुरैशॆय्वाम् 795

कुऩ्ऱु इचैत्तऩ—पर्वत ही लगे है ऐसा; कुववु तोळिऩाऩ्—पुष्ट कन्धों वाले; मिऩ्

तिचैत्तिटम्–विद्युत् की भ्रान्ति उत्पन्न करनेवाली; इटै कोटि–कमर वाली, लता-सी सीता को; नाटित्तर् विराय्–खोजनेवाले वनकर; वल् तिचै पटरुम्–अन्य दिशाओं में जो गये; आरु ओऴिय–उनका प्रकार छोड़कर; वण् तमिऴ् उटै–समृद्ध तमिऴ भाषा जहाँ प्रचलित है; तेन् तिचै–उस दक्षिण दिशा में; चेन्रु उळार्–जो गये उनका; तिरन्–सामर्थ्य; एटुत्तु–लेकर; उरै चेय्वाम्–वखानेंगे। ७९५

पर्वत-सम उनके कन्धे थे। और वे भुजवली विद्युत् को भ्रमित करनेवाली कमर से भूषित पुष्पलता-सी सीता की खोज में गये। हम उनकी बात छोड़ देंगे, जो दक्षिणेतर दिशाओं में गये। और तमिऴ-भाषी दक्षिण-दिशागामी वानर वीरों की बात कहेंगे। ७९५

शिन्दुरा हत्तोडुन् दिरण्मणिच् चुडर्शेरिन्
दन्दिवा नत्तिनित् ऱविर्दला नरविनो
डिन्दिया ऱॅय्दला निरैवन्मा मौलिपोल्
विन्दैना हत्तिन्मा डॅय्दिनार् वॅय्दिन्नाल् 796

चिन्तु राकत्तोटुम्–सिन्दूर कणों के साथ; तिरळ् मणि चुटर्–वर्तुल रत्नों की कान्ति; चेरिन्तु–मिश्रित हो; अन्ति वानत्तिन्–सन्ध्या-गगन के समान; निन्रु अविर्तलान्–शोभायमान है, इसलिए; अरविनोटु–सर्पों के साथ; इन्तु यारु एय्तलान्–चन्द्र और आकाशगंगा भी है, इसलिए; इरैवन् मा मौलि पोल्–परमेश्वर के जटाजूट के समान; विन्तै नाकत्तिन्–विन्ध्यपर्वत के; माटु–पार्श्व में; वेय्तिन्नाल्–जल्दी; एय्तिनार्–जा पहुँचे। ७९६

वे विन्ध्यपर्वत के पास सवेग गये। विन्ध्यपर्वत शिवजी के बड़े जटाजूट के समान था। क्योंकि सिन्दूर और वर्तुल माणिक्यों की प्रभा के कारण सन्ध्यागगन के समान था। उस पर (शिवजी पर जैसे) सर्प, चन्द्र आकाश-गंगा थी। ७९६

अन्नॅडुङ् गुन्ऱमो डविर्मणिच् चिहरमुम्
पॉन्नॅडुङ् गॉडुमुडिप् पुरैहळुम् पुडैहळुम्
नन्नॅडुन् दाऴ्वरै नाडिनार् नवैयिलार्
पन्नॅडुङ् गालमा मॅन्नवोर् पहलिडै 797

नवै इलार्–अनिन्द्य वे; अ नॅटु कुन्ऱमोटु–उस ऊँचे पर्वत के साथ; अविर् मणि चिकरमुम्–कान्तियुक्त रत्नों से पूर्ण शिखरों; पोन् नॅटु कोटु मुटि–सुन्दर उन बड़े शिखरों पर रहनेवाली; पुरैकळुम्–गुहाओं; पुटैकळुम्–और पास के स्थानों; नल् नॅटु ताऴ्वरै–सुन्दर विशाल तराइयों में; ओर् पकलिटै–एक दिन; पल् नॅटु कालम् आम्–अनेक दिन हों; ऍन्न–ऐसा; नाटिनार्–खोजा। ७९७

अनिंद्य उन वीरों ने उस उन्नत विन्ध्यपर्वत पर उज्ज्वल रत्नमय शिखरों, उन सुन्दर शिखरों मे पायी जानेवाली गुहाओं, पार्श्वों और

मनोरम तराइयों में एक दिन खोजा। उस एक दिन में इतना काम हो गया कि अनेक दिनों का काम हो गया हो, ऐसा लगा। ७९७

मल्लन्मा ञालमोर् मरुवुड़ा वहैयित्तच्
चिल्ललो दियैयिरुन् दुऱैविडन् देडुवार्
पुल्लित्ता रुलहित्तैप् पोंदुविला वहैयिनाल्
ऍल्लैमा कडल्हळे याहुमा ऱॅय्दित्तार् 798

मा कटल्कळे–बड़े समुद्र ही; ऍल्लै आकुम्–उपमान (सीमा) है; आऱु–इस प्रकार; ऍय्तित्तार्–जो चले; मल्लल् मा ञालम्–(वे) समृद्ध भूमिदेवी; ओर् मऱु उऱा–किंचित भी दोषयुक्त न हो; वकैयित्–इस प्रकार अवतरित; अ चिल् अल् ओति–उन स्वर्णबन्धनयुक्त केश वाली सीताजी; इरुन्त–जहाँ ठहरीं, उस; उऱैविटम् ऐ–वासस्थान को; तेटुवार्–खोजते हुए; उलकित्तै–सारी पृथ्वी पर; पोंतु इला वकैयित्ताल्–अन्यों के लिए भी सम-स्थान न हो, ऐसा; ऍय्तित्तार्–व्याप गये। ७९८

पृथ्वी की सीमाएँ, जो सागर हैं, उनके ही समान थे, वे वानर वीर। वे सर्वसमृद्ध भूदेवी को दोषहीन बनाने के लिए अवतरित सुन्दर शिरोभूषण-सज्जित अलका-भूषित सीतादेवी के स्थान को खोजते हुए सारे संसार में इस तरह फैले कि दूसरों के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया। ७९८

विण्डुपो यिऴिवर्मे निमिर्वर्विण् पडर्वर्वेर्
उण्डमा मरत्तिनम् मलैयित्वा युऱैयुत्तीर्
मण्डुपा रदत्तिन्वा ऴुयिर्हळम् मदियित्तार्
कण्डिला दत्तवयत् कण्डिला दत्तहोंलाम् 799

अ मतियित्तार्–सुमति वे; विण्टु–अलग-अलग दल बनकर; पोय् इऴिवर–नीचे की ओर जाते; मेल् निमिर्वार्–ऊपर उठते; विण् पटर्वर्–आकाश में उड़ते; वेर् उण्ट–जड़-द्वारा जल लेनेवाले; मा मरत्तित्–बड़े तरुओं और; अ मलैयित् वाय्–उस पर्वत पर; उऱैयुम् नीर् मण्टु–जमा होकर रहनेवाले जलाशयों से भरे; पार् अतत्तित्–स्थलों में; वाऴ्–वास करनेवाले; उयिर्–जीव; कण्टिलातत्त–जिनको उन्होंने नहीं देखा हो, ऐसे हों तो; अयत् कण्टिलातत्त आम्–वे, वे ही होंगे जिनको अजदेव ने नहीं बनाया होगा। ७९९

बुद्धिशाली वीर, कभी अलग-अलग दलों में जाते, कभी नीचे उतरते, कभी चढ़कर ऊपर जाते थे, कभी आकाश में उछलते —इस तरह वे गये। (जड़ों के द्वारा जल सोखनेवाले) पादपों से भरे उस पर्वत पर जलाशयों से भरे थलों पर रहनेवाले अगर कोई जीव हों जिनको उन्होंने नहीं देखा, तो वे ही होंगे जिनको ब्रह्मा ने नहीं बनाया था। (यानी उन्होंने सभी जीवों को देख लिया।)। ७९९

एहिन्नार् योशनै येळो डेळ्पार्
शेकरत् तॅन्ऱिशैक् कडिदु शॅल्हिन्ऱार्
मेहमा लैयित्तोडुम् विरवि मेदियिन्
नाहुशेर् नरुमदै याऱु नण्णिनार् 800

पार् चेकरम्–पृथ्वी का शिरोभूषण-स्वरूप; तॅन् तिचै–दक्षिणी दिशा मे; कटितु चॅल्किन्ऱार्–तेज जानेवाले वे; एळोटु एळु–सात और सात (चौदह); योचनै–योजन; एकिन्नार्–चले; मेतियिन् नाकु–भैंसों की पड़ियों; मेकम् मालैयित्तोटुम्–मेघमालाओं के साथ; विरवि चेर्–जहाँ मिली रहती हैं; नरुमतै आऱु–उस नर्मदा नदी पर; नण्णिनार्–आये। ८००

दक्षिण दिशा भूमि का शिरोभूषण है। उस दिशा में वे चौदह योजन जाकर नर्मदा नदी के तीर पर आये जहाँ छोटी आयु की भैंसें, काले मेघों के साथ मिश्रित रहती हैं। ८००

अन्नमा डिडङ्गळु ममरर् नाडियर्
तुन्निया डिडङ्गळुन् दुरक्क मेयवर्
मुन्निया डिडङ्गळुञ् जुरुम्बु मूशुदेन्
पन्नियाडिडङ्गळुम् परन्दु शुऱ्ऱिनार् 801

अन्नम् आटु इटङ्कळुम्–हंसो के क्रीडा-स्थलो; अमरर् नाटियर्–देवलोक-वासिनियों के; तुन्नि आटु–मिलकर स्नान करने योग्य; इटङ्कळुम्–स्थानो; तुरक्कम् मेयवर्–स्वर्गवासी देवों के; मुन्नि आटु इटङ्कळुम्–चाह के साथ आकर जहाँ संचार करते है, उन स्थलों; चुरुम्पु–भ्रमर; मूचु तेन्–फूलो पर मँडरानेवाली मधुमक्खियाँ; पन्नि आटु–भन्नाते हुए जहाँ उड़ती रहती हैं; इटङ्कळुम्–उन स्थानों में; परन्तु–व्यापकर; चुऱ्ऱिनार्–घूमे (घूमकर देखा उन्होंने)। ८०१

हंसों के क्रीडा-स्थलों, देवांगनाओं के स्नान-घाटों, स्वर्ग-वासियों के संचार-स्थलो और उन स्थलों में जहाँ भ्रमर और मधुमक्खियाँ भनभनाते हुए उड़ती है —सभी स्थानों मे वे ढूँढ़ते चले। ८०१

पॅऱलरुन् दॅरिवैयै नाडुम् वॅऱ्ऱियार्
अऱनरुङ् गूनदलु मळह वण्डुशूळ्
निऱैनरुन् दामरै मुहमु नित्तिल
मुऱुवलुङ् गाण्वरान् मुळ्दुङ् गाण्गिलार् 802

पॅऱल् अरु–अप्रतिम; तॅरिवैयै नाटुम्–देवी को खोजने के; वॅऱ्ऱियार्–काम में लगे उन्होंने; अऱल्–वालुका में; नऱु कूनतलुम्–सुवासित केश; अळकम् वण्टु–(और) अलक रूपी भ्रमरों से; चूळ्–आवृत; निऱै नऱु–सुगन्धपूर्ण; तामरै मुकमुम्–कमल में मुख; नित्तिलम् मुऱुवलुम्–मोती में दाँत; काण्पर्–देखा; मुळुतुम् काण्किलार्–(उनका) सम्पूर्ण रूप नहीं देख पाये। ८०२

अप्रमेय सीताजी की खोज में लगे वे वीर सीताजी के केश को काले बालूकणों के विस्तार में, मुख को अलक-सम अलिकलित कमल के फूल में, दन्तावली को मुक्ताराशि में देख सके। पर उनका पूर्ण रूप वे कहीं देख न पाये। ८०२

शॅरुमद याक्कैयर् तिरुक्किल् शिन्दैयर्
तरुमद याविवै तळुवु तन्मैयर्
पॉरुमद यानैयुम् बिडियुम् पुक्कुळल्
नरुमदै यार्मॅन् नदियै नीड्गिनार् 803

चॅरु मतम् याक्कैयर्–युद्ध-मत्त-शरीरी; तिरुक्कु इल्–वैषम्य-रहित; चिन्तैयर्–मन वाले; तरुमम्–धर्म; तया–दया; इवै तळुवुम् तन्मैयर्–इनसे युक्त स्वभाव वाले; पॉरुमतम् यानैयुम्–झगड़ालू मत्तगज (और); पिटियुम्–हथिनियाँ; पुक्कु उळल्–जहाँ उतरकर क्रीडा करते है; नरुमतै आम् ऍन्तुम्–नर्मदा संज्ञित; नतियै–नदी को; नीङ्कित्तार्–छोड़ (आगे) चले। ८०३

युद्धमदमत्तशरीरी, अनन्यमन, धर्म-दयावान स्वभाव वाले उन्होंने नर्मदा नदी को, जिसमें झगड़ालू गज और हथिनियाँ प्रवेशकर क्रीडा कर रहे थे, तैरकर पार किया। ८०३

तामकू डम्तिरै तीर्त्त शङ्गमुम्, नामकू डप्पॅरुन् दिशैयै नल्हिय
वामकू डच्चुडर् मणिव यड्गुरुम्, एमकू डत्तडङ् गिरियै ॲय्दिनार् 804

ताम कूटम्–प्रभामय शिखरों से उत्पन्न; तिरै तीर्त्त चङ्कमुम्–लहर-भरे जलाशयों का जमघट; वामम् कूटम् चुटर् मणियुम्–(और) सुन्दर कान्ति-पुंज रत्नों की राशियाँ; वयङ्कुरुम्–जहाँ रहती हैं; नामम् कूटु–नामी; अ पॅरु तिचैयै–उस बड़ी दिशा का; नल्किय–रक्षक; एम कूटम्–हेमकूट; तट किरियै–(नामक) विशाल पर्वत पर; ॲय्तित्तार्–जा पहुँचे। ८०४

वे हेमकूट (सात कुलगिरियों में एक) पहुँचे, जिसके शिखरों से तरंगों से पूर्ण नदियाँ बह रही थीं; जिस पर तेजपुञ्ज मणियाँ रहती थीं और जो प्रसिद्ध उस (दक्षिण) दिशा का रक्षक था। ८०४

माडुरु गिरिहळु मरनु मर्र्रवुम्, शूडुरु पॉन्नॅनप् पॉलिन्दु तोन्र्रप्
पाडुरु शुडरॉळि परप्पु हिन्र्रदु, वीडुरु मुलहिनुम् विळङ्गु मॅय्यदु 805

माटु उरु–पार्श्वस्थित; किरिकळुम्–गिरियाँ; मरनुम्–तरु; मर्र्रवुम्–और अन्य वस्तुएँ; चूटु उरु पॉन् ॲन–तप्त स्वर्ण के समान; पॉलिन्तु तोन्रुर–प्रभामय दिखें, ऐसा; पाटु उरु चुटर् ऑळि–महान उज्ज्वल प्रकाश; परप्पुकिन्र्रतु–फैलाता है; वीटु उरुम् उलकितुम्–स्वर्गलोक से भी; विळङ्कु मॅय्यतु–अधिक दर्शनीय रूप का है। ८०५

वह इतनी कान्ति बिखेरता था कि पास वाली गिरियाँ, तरुकुल और अन्य वस्तुएँ तप्त सोने के समान कान्तिमय लगीं। स्वर्गलोक से भी वह शानदार लगा। ८०५

पऱवैयुम् पल्वहै विलङ्गुम् पाडमैन्, दुऱैवन कनहनुण्पूऴि यॊट्टलाऩ्
निऱैनॆंडु मेरुवैच् चेर्न्द नीरवाय्प्, पॊऱैनॆडुम् बॊऩ्ऩॊऴि पॊऴियुम् पॊऱ्पतु 806

पाट्टु–उसकी बगलों में; अमैन्तु–लगकर; उऱैवऩ–रहनेवाले; पऱवैयुम्–पक्षीगण; पल् वकै विलङ्कुम्–अनेक तरह के जानवर; कऩकम् नुण पूऴि–स्वर्ण के बारीक कणों के; ऑट्टलाल्–लगने से; निऱै नॆंटु मेरुवै चेर्न्त–बड़े और ऊँचे मेरु पर्वतवासी हों; नीर आय्–ऐसे लगकर; पॊऱै नॆंटु पॊऩ् ऑऴि–भारी स्वर्ण की कान्ति; पॊऴियुम्–बरसानेवाली; पॊऱ्पतु–शोभा से युक्त है। ८०६

उसमें इतने बृहत् रूप से स्वर्ण अपनी कान्ति फैला रहा था कि उसमें रहनेवाले पक्षी और विविध पशु, अपने ऊपर लगे हुए स्वर्णकणों के कारण मेरुपर्वतवासी ही-सम लगते थे। ८०६

परविय कनहनुण् पराहम् पाड्ऱ, ऎरिशुडर्च् चॆम्मणि यीट्टत् तोडिऴि
अरुवियु नदिहळु मलङ्गु तीयिडै, उरुहुपॊन् पाय्वपोन् ऱॊऴुहु हिन्ऱदु 807

परविय–बिखरे रहे; कऩकम् नुण् पराकम्–बारीक स्वर्णकण; पाट्ऱ–उस पर जमे रहे, अतः; ऎरि चुटर्–कान्तिपूर्ण; चॆम् मणि–लाल पद्मरागों की; ईट्टत्तोटु–राशि के साथ; इऴि–उतरनेवाले; अरुवियुम् नतिकळुम्–झरने और नदियाँ; अलङ्कु ती इटै–जलती आग में; उरुकु–पिघला; पॊऩ्–स्वर्ण; पाय्व पोऩ्ऱु–बहता हो, ऐसा; ऑऴुकुकिऩ्ऱतु–बहनेवाली नदियों का है वह। ८०७

सर्वत्र फैले रहे स्वर्ण-सूक्ष्म-कणों और कान्तिमय पद्मरागों के साथ सरिताएँ वह रही थीं। वे भी जलती अग्नि के मध्य बहनेवाले पिघले स्वर्ण के समान लगीं। ८०७

विञ्जैयर पाडलुम् विशुम्बिन् वॆळ्वळैप्,
पञ्जिन्मॆल् लडियिना राडऱ् पाणियुम्
कुञ्जर मुळक्कमुङ् गुमुऱु पेरियिन्
मञ्जिन मुरऱ्ऱलुम् मयङ्गु माण्बदु 808

विञ्चैयर् पाटलुम्–विद्याधरों के गाने; विचुम्पिऩ्–व्योमलोक की; वॆळ्वळै–श्वेत कंकणधारिणी; पञ्चिऩ्–लाक्षारसरंजित (या रूई-समान); मॆल् अटियिऩार्–मृदुल चरणों वाली देवांगनाओं के; आटल् पाणियुम्–नृत्य और ताल के नाद; कुञ्चरम् मुळक्कमुम्–हाथियों की चिंघाड़; कुमुऱु पेरियिऩ्–थर्रानेवाली भेरियों के समान; मञ्चु इऩम्–मेघ-समूहों के; मुरऱ्ऱलुम्–वज्रनाद; मयङ्कुम्–जहाँ मिश्रित रहते हैं; माण्पतु–ऐसी महिमा का है वह पर्वत। ८०८

उस पर, विद्याधरों के गाने के स्वर, स्वर्ग की श्वेतकंकणधारिणी और

रूई-सम मृदुल चरणों वाली देवांगनाओं के नृत्यानुयायी ताल-स्वर, हाथियों की चिंघाड़, भेरी का-सा मेघसमूहों का गर्जन —यह सब सुनाई दे रहे थे। वह ऐसी विशिष्ट स्थिति का था। ८०८

अन्नैयदु नोक्किना रमर रञ्जुरुम्
विन्नैवल निरावण निरुक्कुम् वॅऱ्पॅनुम्
निन्नैविन्न रुवर्नुदुयर्न् दोङ्गु नॅञ्जिनर्
शिन्नमिहक् कनऱ्पॊऱि शिन्दु शॅङ्गणार् 809

अन्नैयतु नोक्किनार्–उसको देखकर; अमरर् अञ्चुरुम्–देवों को भयभीत करनेवाले; विन्नैवलन्–अत्याचारी; इरावणन्–रावण का; इरुक्कुम् वॅऱ्पु–रहने का पर्वत है; ॲन्नुम् निन्नैविनर्–ऐसा सोचते मन के; उवन्तु–(और) संतोष करके; उयर्न्तु ओङ्कु–उमड़ उठनेवाले; नॅञ्चिनर्–चित्त (उत्साह) वाले; चिन्नम् मिक–कोप के बढ़ने से; कनल् पॊऱि–अंगारे; चिन्तु–बरसानेवाली; चॅम् कणार्–लाल आँखों वाले (हो गये वे वानर वीर)। ८०९

उन्होंने उस हेमकूट को देखा और सोचा कि यह देवों को भी भयभीत करते हुए नृशंस कर्म करनेवाला रावण का (त्रिकोण) पर्वत है। उनका मन संतोष और उत्साह से भरकर उमंग में आया। साथ-साथ क्रोध के कारण उनकी आँखें कोप के अंगारे उगलती हुई लाल बन गयीं। ८०९

इम्मलै काणुदु मेळै मान्नैयच्
चॅम्मलै नीक्कुदुञ् शिन्दै तीदॅन्न
विम्मलुऱ् ऱुवहैयिन् विळङ्गु मुळ्ळत्तर्
अम्मलै येऱिना रच्च नीङ्गिनार् 810

इम् मलै–इस पर्वत पर; एळै मान्नै–अबोध हरिणी-सी देवी को; काणुतुम्–देखेंगे; अ चॅम्मलै–उन महानुभाव के; चिन्तै तीतु–मन के दुःख को; नीक्कुतुम्–दूर कर लेंगे; ॲन्न–ऐसा सोचकर; विम्मल् उऱ्ऱु–(आशा से) भरकर; उवकैयिन् विळङ्कुम् उळ्ळत्तर्–प्रसन्नचित्त होकर; अच्चम् नीङ्कितार्–भयमुक्त होकर; अ मलै एऱितार्–उस पर्वत पर चढ़े। ८१०

"इस पर्वत पर हम अबोध हरिणी-सी सीताजी को ढूँढ़ेंगे। वे मिल जायँगी और हम प्रभु श्रीराम की चिन्ता दूर कर देगें।" ऐसा सोचकर वे हर्ष से फूल उठे। और भय से मुक्त हुए। ८१०

इरिन्दन करिहळुम् याळि यीट्टमुम्
विरिन्दको ळरिहळुम् वॅरुवि नीङ्गिन
तिरिन्दन रॅङ्गणुन् दिरुवैक् काण्गिलर्
पिरिन्दनर् शिन्दनै पिऱिदॊन् ऱामॅन 811

करिकळुम्–हाथी और; याळि ईट्टमुम्–'याळि' (कल्पित कोई जानवर जो सिंह के समान थे)-समूह; इरिन्तत्त–तितर-बितर हो गये; विरिन्त–व्याप्त; कोळ् अरिकळुम्–घातक सिंह; वॅरुवि नीङ्कित्त–डरकर भाग गये; ऑङ्कणुम्–पर्वत पर सर्वत्र; तिरिन्ततर्–घूमे; तिरुवै–श्रीलक्ष्मी को; काण्किलर्–न देख पाकर; पिऱितु ऑन्ऱाम्–(यह नहीं) अन्य कोई स्थान है; ऑन्त चिन्तत्तै–ऐसा चिन्तन लेकर; पिरिन्ततर्–अलग जाने लगे। ८११

उन वानर वीरों को देखकर हाथी, 'याळि' नाम के (सिंह-समान) जानवरों के झुण्ड, घातक सिंह —सब भयभीत होकर भाग गये। वे सब पर्वत पर सर्वत्र घूमे। पर श्रीदेवी के दर्शन न पा सके। तभी उन्हें सूझा कि यह रावण का स्थान नहीं है, कोई दूसरा है। वे वहाँ से हट कर आगे चले। ८११

ऐम्बदिऱ् ड्रिरट्टिहा वदत्ति ऩालहऩ्
ऱुम्बरैत् तीँडुवदौत् तुयर्वि ऩोङ्गिय
शॅम्बॊनऱ् किरियॅयोर् पहलिऱ् ऱेडिऩार्
कॊम्बिनैक् कण्डिलर् कुप्पुऱ् ऱेहिनार् 812

ऐम्पतिऩ्ऱु इरट्टि–पचास के दुगुने (सौ); कावतत्तिताल्–काद (कोस); अकऩ्ऱु–चौड़ा; उम्परै तॊट्टुवतु ऒत्तु–आकाश को स्पर्श करता-सा; उयर्विऩ् ओङ्किय–उन्नत; चॅम् पॊऩ्–लाल स्वर्ण-सम (सुन्दर); नल् किरियै–उस हेमकूट पर्वत पर; ओर् पकलिल्–दिन भर; तेटिनार्–खोजने पर भी; कॊम्पितै–पुष्पलता (सीताजी) को; कण्टिलर्–न देख पाये; कुप्पुऱ्ऱु–उतरकर; एकिऩार्–आगे चले। ८१२

उस पर्वत का विस्तार एक सौ कोस का था। वह गगनोन्नत था। वह लाल स्वर्णमय था। उस पर दिवा भर खोजने पर भी उन्हें पुष्पलता-सी देवी नहीं मिली। फिर वे उस पर से उतरकर आगे जाने लगे। ८१२

वॅळ्ळमो रिरण्डॆऩ्ऩ विरिन्द शेनैयॆत्
तॅळ्ळुनी रुलहॅलान् दिरिन्दु तेडिनीर्
ऑळ्ळऱु महेन्दिरत् तॅम्मिऱ् कूडुमॆऩ्
ऱुळ्ळिऩा रुयर्नॆडु मोङ्ग ऩीङ्गिनार् 813

वॅळ्ळम् ओर् इरण्टु–दो 'वॅळ्ळम्'; ऑन्त विरिन्त–की संख्या में विस्तृत; चेनैयै–सेना से; नीर्–तुम; तॅळ्ळुम् नीर्–स्वच्छ जल से आवृत; उलकु ऑलाम्–सारे लोक में; तिरिन्तु तेटि–घूमकर खोज लेने के बाद; ऑळ् अरु–अनिंद्य; मकेन्तिरत्तु–महेन्द्रपर्वत पर; ऑम्मिल् कूटुम्–हमारे पास आ मिलो; ऑन्ऱु–ऐसा; उळ्ळिऩार्–विचार कहकर; उयर् नॅटुम् ओङ्कल्–उन्नत विशाल पर्वत से; नीङ्किनार्–(अंगदादि नायक) हटे। ८१३

तब अंगद ने दो 'वॆळ्ळम्' संख्या वाली सेना से कहा कि तुम स्वच्छ जलावृत भूमि पर सर्वत्र जाकर खोजो। फिर अनिंद्य महेन्द्रपर्वत पर हमारे पास आकर मिलो। फिर वे हेमकूटपर्वत को छोड़कर चले। ८१३

मारुदि	मुदलिय	वयिरत्	तोळ्वयप्
पोर्वलि	वीररे	कुळुमिप्	पोहिन्ड्रार्
नीरॆनुम्	बॆयरुमन्	नॆड्रियि	नीङ्गिडच्
चूरियन्	वॆरुवुमोर्	शुरत्तैत्	तुन्निनार् 814

मारुति मुतलिय–मारुति आदि; वयिरम् तोळ्–सुदृढ़ कन्धों वाले; वयम् पोर्–विजयदायी युद्ध में; वलि वीररे–पराक्रम दिखानेवाले वीर ही; कुळुमि पोकिन्ड्रार्–दल बाँधकर चले; अ नॆड्रियिन्–उस मार्ग में; नीर् ऎनुम् पॆयरुम्–जल का नाम तक; नीङ्किट–नहीं रहा, इसलिए; चूरियन् वॆरुवुम्–सूर्य को भी भयभीत करनेवाले; ओर् चुरत्तै–एक मरुप्रदेश को; तुन्निनार्–जा पहुँचे। ८१४

मारुति आदि वज्रस्कन्ध युद्ध-विजयी वीर ही एक दल में चले। एक मरुप्रदेश में आये, जहाँ जल का निशान तक नहीं पाया गया और उस कारण गरम किरणमाली भी वहाँ आने से डरते थे। ८१४

पुळ्ळडै याविलङ् गरिय पुल्लोडुम्, कळ्ळडै मरनिल कल्लुन् दीन्दुहुम्
उळ्ळिडै यावुनुण् पॊडियो डोडलिन्, वॆळ्ळिडै यल्लदोन् ड्रिल्लै वॆन्जुरम् 815

अ वॆम् चुरम्–उस उष्ण मरुप्रदेश में; पुळ् अटैया–पक्षी नहीं आते; विलङ्कु अरिय–जानवर अदृश्य; पुल्लोटुम्–घास के साथ; कळ् अटै–शहद-भरे पुष्पों के; मरन् इल–तरु प्राप्य नहीं; कल्लुम्–पत्थर भी; तीन्तु उकुम्–जलकर राख बन जाता; उळ् इटै यावुम्–अन्तर्गत सभी; नुण् पॊटियोटु–चूर-चूर होकर; ओटलिन्–उड़ जाते है, इसलिए; वॆळ् इटै अल्लतु–खाली स्थान के सिवा; ऒन्ड्र् इल्लै–कुछ नहीं। ८१५

उस रेगिस्तान में पक्षी नही आये। जानवर देखना दुर्लभ था। घास या शहद भरे-फूलों के वृक्ष नही दिखायी दिये। पत्थर भी जल-भुनकर राख बन गया। उसमें रहनेवाले सभी पदार्थ चूर-चूर होकर उड़ रहे थे; इसलिए वहाँ शून्य के अतिरिक्त कुछ नहीं था। ८१५

नन्बुल नड्क्कुड़ वुणर्वु नैन्दड़प्, पुन्बुड़ याक्कैहळ् पुळुङ्गिप् पॊङ्गुवार्
तॆन्बुलत् तवनॆरि नरहिड़् चिन्दिय, अॆन्बिल्पल् लुयिरॆन वॆम्मै यॆय्दिनार् 816

नल् पुलन्–स्वस्थ इन्द्रियाँ; नटुक्कुड़–काँपीं; उणर्वु–बुद्धि; नैन्तु अड़–क्षीण होकर मिट गयी; पॆरुम् पुन् पुड़–प्रभाहीन, बड़े बाह्य; याक्कैकळ्–शरीर; पुळुङ्कि–स्वेद से भर गये; पॊङ्कुवार्–तप्तमन हुए; तॆन् पुलत्तवन्–दक्षिणी दिशा के अधिदेव (यम) के; ऎरि नरकिल्–जलते नरक में; चिन्तिय–गिरे हुए; ऎन्पु

इल्–अस्थिहीन; पल् उयिर् ऍत्त–अनेक जीवों के समान; वॅम्मे ऍय्तित्तार्–झुलसे। ८१६

वहाँ पहुँचकर उनकी इन्द्रियाँ काँप गयी। चेतना खो गयी। बड़े बाह्यशरीर स्वेदयुक्त हो गये। उनका मन तप्त हो गया। दक्षिणी दिशा के स्वामी यम के जलते नरक में पड़े अस्थिहीन जीवों के समान वे शरीर और मन से तप्त-विगलित हो रहे। ८१६

नीट्टिय नावित्तर् निलत्तिड़् ड़ीण्ड़ुदो
ऱूट्टिय वॅम्मैया लुलयुङ् गालित्तर्
काट्टिनुङ् गाय्न्दुदङ् गायन् दीदलाल्
शूट्टहत्त् मेलॅऴु पॊरियिर् ऱुळ्ळिन्नार् 817

नीट्टिय नावित्तर्–वाहर निकली जीभ वाले; निलत्तिल्–भूमि पर; तीण्टु तोरु–ज्यों-ज्यों स्पर्श करते, त्यो-त्यों; ऊट्टिय–लगनेवाली; वॅम्मैयाल्–गरमी से; उलैयुम् कालित्तर–छाले-भरे पैरो वाले; काट्टिनुम्–मरुप्रदेश से भी; काय्न्तु–जलन पाकर; तम् कायम्–अपने शरीरों के; तीतलाल्–झुलसने से; चूट्ट कल् मेल्–तप्त प्रस्तर-पात्र से; ऍऴु पॊरियिन्–उठनेवाले खील के समान; तुळ्ळिन्नार्–उछले। ८१७

उनकी जीभे वाहर लटकने लगी। जव कभी भूमि से उनका स्पर्श हुआ तो नीचे से लगनेवाली गर्मी की वजह से पैरों में छाले पड़ गये। उनका शरीर उस मरुप्रदेश से भी अधिक तप्त हो गया तो तप्त कुण्डी में से उछलनेवाली खीलों के समान छटपटाने लगे। ८१७

ऑदुङ्गला निऴलिन्नैक् काण्गि लादुयिर्
पिदुङ्गला मुडलिनर् मुडिविल् पीऴैयार्
पदङ्गडीप् परुहिडप् पदैक्किन् ड्रार्पल
विदङ्गळा नॅडुम्बिल वऴियिन् मेविन्नार् 818

ऑतुङ्कल् आम्–पनाह लें, ऐसी; निऴलितै–छाँह को; काण्किलातु–न देखकर; उयिर् पितुङ्कल् आम्–जान जिनसे वाहर निकलने को थी, ऐसे; उटलित्तर्–शरीर वाले वनकर; मुटिवु इल्–असीम; पीऴैयार्–वेदनापीड़ित; पतङ्कळ्–पैरों को; ती परुकिट–आग खा लेती है, इसलिए; पतैक्किन्ड्रार्–छटपटाते हैं; पल वितङ्कळाल्–अनेक प्रकारों से सोचकर; नॅट्टु पिलम् वऴियिल्–बड़ी विल के मार्ग में; मेविन्नार्–वढ़े। ८१८

कहीं कोई छाँह नहीं दिखी जहाँ वे पनाह पा सकें। प्राण शरीर से बाहर निकलने को हो गये। असीम पीड़ा से, अग्निभुक्त पैरों के साथ वे तड़प उठे। उनसे वचने के विविध उपाय सोचने के वाद आखिर वे एक विल के द्वार पर आये। ८१८

मोच्चॆल वरिदिऩि विळियि ऩल्लदु
तीच्चॆल वॊळियवुम् तडुक्कुन् दिण्बिल
वाय्च्चॆल नऩ्ऱॆऩ मऩत्ति ऩॆण्णिऩार्
पोय्च्चिल वऱिदुमॆऩ् ऱदनिऩ् पोयिऩार् 819

इऩि—अब; विळियिऩ् अल्लतु—मरना छोड़कर; मी चॆलवु—आगे जाना; अरितु—असम्भव है; तिण् पिलम्—बलवान बिल के; वाय् चॆलल्—द्वार से अन्दर जाना; ती—मरु की आग से युक्त; चॆलवु ऒळियवुम्—(मरुप्रदेश में) बढ़ने से भी; तट्टुक्कुम्—रोकेगी; नऩ्ऱु—(अतः) बिल में जाना ही अच्छा है; ऎऩ—ऐसा; मऩत्तिऩ् ऎण्णिऩार—मन में सोचा; पोय्—जाकर; चिल अऱितुम्—कुछ जान लेंगे; ऎऩ्ऱु—कहते हुए; अतऩिल्—उसमें; पोयिऩार्—गये। ८१९

"मरने के सिवा अब आगे जाना असम्भव है। इस बड़े बिल के द्वार से अन्दर जाने से कम से कम सन्तापक मरु में जाने से बच सकेंगे। इसलिए इसमें घुस जाना ही भला है।" यह सोचकर वे उसमें घुस गये। उनका यह भी विचार था कि अन्दर जाकर थोड़ा देखें भी। ८१९

अक्कणत् तप्पिलत् तहणि यॆय्दिऩार्
तिक्किऩॊ डुलहुऱच् चॆऱिन्द देङ्गिरुळ्
ऒक्किय कदिरवऱ् कञ्जि येमुऱप्
पुक्कदे यऩैयदोर् पुऱैपुक् कॆय्दिऩार् 820

अ कणत्तु—उस क्षण में; अ पिलत्तु अकणि—उस बिल के अन्दरूनी स्थान पर; ऎय्तिऩार्—जाकर; तिक्किऩॊट्टु—चारों दिशाओं के साथ; उलकु उऱ—लोकों में भी लगा रहा; चॆरिन्त तेङ्कु इरुळ्—घना जमा अन्धकार; ऒक्किय—ऊपर चढ़े हुए; कतिरवऱ्कु अञ्चि—सूर्यदेव से डरकर; एमुऱ—रक्षा पाने के लिए; पुक्कते—इसमें घुस गया हो; अऩैयतु—ऐसी एक; पुऱै—गुहा में; पुक्कु—प्रवेश करके; ऎय्तिऩार्—चले। ८२०

वे वीर जब अन्दर एक गुहा में आये, जहाँ का अँधेरा ऐसा लगा मानो सारी दिशाओं में और सारी पृथ्वी पर जमा हुआ अन्धकार आकाश में चढ़े सूर्य से डरकर अपने जीवन की सुरक्षा को उसी के अन्दर साध्य मानकर उधर आ गया हो। ८२०

ऎळुहिलर् कालॆडुत् तेहु मॆण्णिलर्
वळियुळ दामॆनु मुणर्वु माऱिऩार्
इळुहिय नॆय्यॆनु मिरुट् पिळम्बिऩुळ्
मुळुहिय मॆय्यरा युयिर्प्पु सूट्टिऩार् 821

ऎळुकिलर्—नहीं उठते; काल् ऎटुत्तु—पैर रखकर; एकुम् ऎण् इलर्—बढ़ने की इच्छा नहीं करते; वळि उळतु आम्—मार्ग भी है; ऎऩुम् उणर्वु—यह विचार; माऱिऩार्—बदल गया; इळुकिय नॆय्—घने जमे हुए घी के समान; इरुळ् पिळम्पिऩुळ्—

अँधेरे के पुंज में; मुऴुकिय–मग्न; मॅय्यराय्–शरीर वाले होकर; उयिर्प्पु मुट्टिनार्–ठण्डी आहें भरने लगे। ८२१

तब वे खड़े हो गये। उनके पैर नहीं उठे। आगे डग देने को मन नहीं हो रहा था। आगे मार्ग भी होगा —यह सोच नहीं सके। जमे हुए घी के समान उस अन्धकार में उनके शरीर मानो मग्न हो गये। उनका दम फूलने लगा। ८२१

निऩ्ऱनर् शॅय्वदोर् निलैमै योर्हलर्, पॊऩ्ऱिऩ रामॅनप् पॊरुमु पुऩ्दियर्
वऩ्ऱिऱऩ् मारुदि वल्लै योवॅमै, इऩ्ऱिदु काक्कवॅऩ् ऱिरन्दु कूऱिऩार् 822

चॅय्वतु–करणीय; ओर् निलैमै–कोई निर्णय; ओर्फलर्–जान नहीं पाते; निऩ्ऱऩर्–स्तब्ध खड़े रहे; पॊऩ्ऱिऩर् आम् ॲॅऩ–मर गये, ऐसे; पॊरुमु पुऩ्तियर्–निराशा-भरे मन वाले होकर; वल् तिऱल् मारुति–अति बलिष्ठ मारुति; इऩ्ऱु–अब; ॲॅमै–हमें; इतु काक्क वल्लैयो–इस (दु:ख) से बचा सकोगे क्या; ॲॅऩ्ऱु–कहकर; इरन्तु कूऱिऩर्–प्रार्थना का वचन कहा (वानर वीरों ने)। ८२२

वे किंकर्तव्यमूढ़ हो खड़े रह गये। मरणावस्था को पहुँच गये हों, ऐसा दु:खी होकर अन्य वानर वीर हनुमान से विनय-याचना करने लगे कि हनुमान ! अब हमें इस संकट से बचा सकोगे क्या ? । ८२२

उय्वुरुत् तुवॅऩ्मऩ मुलैयि रूऴिऩ्वाल्, मॅय्युरप् पऱ्ऱुदिर् विडुहि लीरॅऩ
ऐयनक् कणत्तिऩि लहलु नीणॅऱि, कैयिनिऱ् ऱडविवॅङ् गालि ऩेहिनाऩ् 823

उय्वु उरुत्तुवॅऩ्–जीवित करूँगा (बचाऊँगा); मऩम् उलैयिर्–मन मत मारो; ऊऴिऩ्–क्रम से (एक के पीछे एक) खड़े होकर; वाल्–मेरी पूँछ को; मॅय् उऱ–दृढ़ रूप से; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ लो; विट्टुकिलीर्–छोड़ो मत; ॲॅऩ–कहकर; अ कणत्तितिल्–उसी क्षण; ऐयऩ्–नायक; अकलुम् नीऴ् नॅऱि–गम्य उस लम्बे मार्ग में; कैयिताल् तटवि–अपने हाथ से टटोलते हुए; वॅम् कालिऩ्–जल्दी पैदल; एकिनाऩ्–गया। ८२३

मारुति ने आश्वासन दिया कि बचाने का उपाय करूँगा। मन मत मारो। एक के पीछे एक खड़े होकर मेरी पूँछ पकड़ लो। मत छोड़ो। जब उन्होंने उसकी पूँछ को पकड़ लिया, तब हनुमान अपने हाथ से रास्ता टटोलते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ा। ८२३

पऩ्निरण् डियोशऩै पडर्न्द मॅय्यिनऩ्
मिऩ्निरण् डऩैयहुण् डलङ्गऴ् विल्लिडऩ्
तुऩ्निरु डॊलैन्दिडऩ् तुरुवि येहिनाऩ्
पॊऩ्नॅडुङ् गिरियॅनप् पॊलिन्द मेऩियाऩ् 824

नॅटु पॊऩ् किरि–बड़ी स्वर्णगिरि; ॲॅऩ पॊलिन्त–(के) समान छविपूर्ण-शरीरी; पऩ्तिरण्टु योचऩै–बारह योजन; पटर्न्त मॅय्यिऩऩ्–विशाल देह का; मिऩ् इरण्टु

अत्तैय–दो बिजलियों के समान; कुण्टलङ्कळ्–कुण्डलों के; विल् इट–प्रकाश फैलाने से; तुन्न् इरुळ्–घना अन्धकार; तॊलैन्तिट–मिटा, तब; तुरुवि एकिनान्–खोजते हुए बढ़ा। ८२४

उन्नत स्वर्ण (मेरु) पर्वत-सम शोभायमान-शरीरी हनुमान का शरीर बारह योजन का बढ़ गया। बिजली के समान उसके दो कुण्डलों ने प्रकाश छिटकाया। उस प्रकाश में घना अन्धकार छँटा। उसी प्रकाश में मार्ग ढूँढ़ते हुए वह आगे गया। ८२४

कण्डनर् कडिनहर् कहनत् तॊण्गदिर्
मण्डल मरैन्दुरैन् दत्तैय माण्बदु
विण्डल नाणुर विळङ्गु हिन्ऱदु
पुण्डरि हत्तवळ् वदनम् बोन्ऱदु 825

कटि नकर् कण्टनर्–(अन्दर जाकर) उन्होंने एक सुन्दर नगर देखा; ककनत्तु–आकाश में; ऑळि कतिर् मण्टलम्–प्रकाशमय किरणों का सूर्यमण्डल; मरैन्तु उऱैन्तु अत्तैय–छिपा रहता हो, ऐसा; माण्पतु–शानदार है; विण् तलम्–स्वर्गलोक; नाण् उऱ–लजावे, ऐसा; विळङ्कुकिन्ऱतु–शोभता है; पुण्टरिकत्तवळ्–कमला श्रीलक्ष्मी के; वतनम् पोन्ऱतु–वदन के समान है। ८२५

वहाँ वीरों ने एक श्रेष्ठ नगर को देखा। वह ऐसा शोभायमान था, मानो प्रकाश की किरणों का सूर्यमण्डल उधर आकर छिपा रह रहा हो। स्वर्ग को भी लजाते हुए वह शोभा दे रहा था। कमलनिवासिनी लक्ष्मी-देवी के श्रीवदन के समान लग रहा था। ८२५

कऱ्पहक् कावदु कमलक् काडदु, पॊऱ्पॆरुङ् गोपुरप् पुरिशै पुक्कदु
अऱ्पुद ममररु मॆय्द लावदु, शिऱ्पमु मयन्मनम् वरुन्दिच् चॆय्ददु 826

कऱ्पकम् कावतु–कल्प-काननयुक्त है; कमलम् काटतु–कमल-वन उसमें है; पॊन् पॆरु कोपुरम्–स्वर्णमय गुम्बजों के साथ; पुरिचै पुक्कतु–प्राचीर बने हैं; अमररुम्–अमरगण को भी; अऱ्पुतम् ऎय्तल् आवतु–विस्मित करनेवाला; चिऱ्पमुम्–शिल्प-कार्य; मयन्–मय का; मनम् वरुन्ति–मन को कष्ट देकर (मन लगाकर); चॆय्ततु–किया हुआ। ८२६

उसके अन्दर कल्पकानन था। कमलसर थे। स्वर्णिम मीनारों के साथ प्राचीर थे। अमर लोग भी उसको देखकर विस्मित हों —ऐसी शोभा वाला था वह। वहाँ कि शिल्पकारी मय के द्वारा परिश्रम उठाकर की गयी थी। ८२६

इन्दिर नहरमु मिणैयि लाददु, मन्दिर मणियिनिऱ् पॊन्निन् मन्नियॆ
अन्दरत् तविर्शुड रङ्गिन् ऱायिनुम्, उन्दरु मिरुडुरन् दॊळिर निऱ्पदु 827

इन्तिरन् नकरमुम्–इन्द्र का नगर भी; इणै इलाततु–इसका साम्य नहीं कर सकता; अन्तरत्तु–आकाश में; अविर् चुटर्–उदित सूर्य व चन्द्र; अङ्कु इन्ऱु–वहाँ नहीं है; आयिनुम्–तो भी; मन्तिरम् मणियिऩ्–प्रासादों में जड़ित मणि-माणिकों और; पोन्तिन् मन्तिये–स्वर्ण से; उन्त अरुम्–जिसका निकालना कठिन हैं; इरुळ्–उस अन्धकार को; तुरन्तु–दूर करके; ऑळिर निऱ्पतु–प्रकाशमय रहता है। ८२७

इन्द्र की अमरावती भी उसकी समानता नही कर सकती थी। आकाश के प्रकाशमण्डल सूर्य और चन्द्र वहाँ नही थे; तो भी वह नगर अपने सौधों पर जड़ित मणियों और स्वर्ण के द्वारा दुर्निवार अन्धकार दूर करके प्रकाशमय रह रहा था। ८२७

पुविपुहऴ् शॅन्निपे रवयन् ट्रोळ्पुहऴ्, कविहड मनैयॅनक् कनह राशियुम्
शवियुडैत् तूशुमॅन् शान्दु मालैयुम्, अविरिऴैक् कुप्पैयु मळवि लाददु 828

पुवि पुकऴ्–लोकसंशित; चॅन्नि पेर् अपयन्–कुलोत्तुंग और अभय नामधारी चोळ राजा के; तोळ् पुकऴ्–भुजबल की प्रशंसा में गानेवाले; कविकळ् तम् मनै–कवियो के भवनों; ॲन–के समान; कनकम् राचियुम्–स्वर्णराशि; चवि उटै तूचुम्–प्रकाशमय स्वर्णाम्बर और; मॅल् चान्तुम्–कोमल चन्दन का लेप; मालैयुम्–मालाएँ; अविर् इऴै कुप्पैयुम्–कान्तिमय आभरणों के ढेर; अळवु इलाततु–अपार हैं वहाँ। ८२८

लोकशंसित कुलोत्तुंग और अभय नाम के चोळ राजा के प्रशंसक भाट-कवियों के घरों के समान, कनकराशि, उज्ज्वल स्वर्णवस्त्र, चन्दन, सुबासित मालाएँ, कान्तिमय आभरणों के ढेर —इनसे वह इतना भरा था कि कोई गणना नहीं हो सकती थी। ('कुलोत्तुंग' का नाम देखकर कुछ विद्वान् कम्बन् के काल का अनुमान लगाते हैं। पर कुलोत्तुंग एक ही नहीं था।) । ८२८

पयिल्हुरऱ् किण्गिणिप पदत्त पावैयर्
इयल्पुडै मैन्दरॆन् ड्रियक्कि लामैयाल्
तुयिलवुम् नोक्कवुम् तुणैय दन्ड्रिये
उयिरिला वोविय मॅनिन् मॊप्पदु 829

पयिल् कुरल्–क्वणनशील; किण्किणि पतत्त–मंजीरों से युक्त पैरों वाली; पावैयर्–रमणियाँ; इयल्पुटै मैन्तर्–(और) श्रेष्ठ गुणों के पुरुष; ॲन्ऱु–इनके; इयक्कु इलामैयाल्–संचार के न होने से; तुयिलवुम् नोक्कवुम्–मूँदने, खोलने के; तुणैयतु–दो परस्पर मिले कार्य के; अन्ऱिये–बिना ही; उयिर् इला–निर्जीव रहनेवाला; ओवियम् ॲनिऩुम्–चित्र कहो; ऑप्पतु–उसके योग्य है। ८२९

वहाँ क्वणनशील नूपुरचरणा स्त्रियों और सद्गुणपूर्ण पुरुषों का संचार नहीं पाया गया। इसलिए वह निर्जीव चित्र के समान था जो सो या जाग नहीं सकता है। ८२९

अमिऴ्दुर ऌयिनियै यडुत्त वुण्डियुम्
तमिऴ्निहर् नऱवमुन् दन्तित्तण् डेऱलुम्
इमिऴ्हन्निप् पिऱक्कमुम् पिऱवु मित्तन
कमऴ्वुऱत् तोन्ऱिय कणक्किल् कोट्पदु 830

अमिऴ्तु उऱऴ्–देवसुधा-सम; अयिनियै अट्टुत्त–भात आदि; उण्टियुम्–भोजनपदार्थ; तमिऴ् निकर् नऱवमुम्–तमिऴ-सम मधुर मधु; तन्ति तण् तेऱलुम्–विशेष शीतल सुरा; इमिऴ् कन्ति पिऱक्कमुम्–मधुर फलों की राशि और; इन्नत्त पिऱवुम्–ऐसे अन्य पदार्थ; कमऴ्वु उऱ–मीठी गन्ध के साथ; तोन्ऱिय–जहाँ भरे थे; कणक्कु इल् कोट्पतु–ऐसा अपार महिमामय है। ८३०

और उसमें यह विशेषता थी कि वहाँ देवामृत-सम भोजन, तमिऴ-मधुर शहद, अनुपम शीतल मद्य, मधुर फलों की राशियाँ और ऐसी अन्य वस्तुएँ अपार रूप से प्राप्त थीं। ८३०

कन्निनेंडु मानहर मन्नदॅदिर् कण्डार्
इन्नहर मामिहलि रावणन दूरॅन्
ऱुन्नियुरै याडिन्रु वन्दन्र् वियन्दार्
पॉन्निनॅंडु वायिलद नूडिनिदु पुक्कार् 831

अन्नतु–वैसे; कन्नि–नितनवीन; नॅंडु मा नकरम्–लम्बे-चौड़े नगर को; ऍतिर् कण्टार्–सामने देखा (वानरों ने); इ नकर्–यह नगर; इकल् इरावणनतु–शत्रु रावण का; ऊर् आम्–नगर है; ऍन्ऱु उन्नि–ऐसा सोचकर; उरै आटिन्र्–आपस में बात करते हुए; उवन्तन्र्–खुश हुए; वियन्तार्–विस्मित हुए; पॉन्निन् नॅंटुवायिल्–स्वर्णपुरी के गोद्वार; अतन् ऊटु–से; इनितु–सुख से; पुक्कार्–घुसकर गये। ८३१

ऐसे बहुत शानदार उस नित्यजीवी नगर को उन्होंने सामने जाकर देखा। सोचा कि यह रावण का नगर है। वे आपस में उस विचार के आधार पर बात करते हुए बहुत आनन्द और विस्मय से भर गये। फिर उस विशाल स्वर्णमय नगर के गोद्वार से सुख से प्रविष्ट होकर चले। ८३१

पुक्कनह रत्तिनिदु नाडिन्र् पुहुन्दार्
मक्कळ्कडै तेवर्तलै वानुलहिन् वैयत्
तॉक्कवुरै वोरुरुव मोवियम लान्मऱ्
ऱॅक्कुऱियि नुळ्ळवुमॅ दिर्न्दिलर् तिरिन्दार् 832

पुक्क नकरत्तु–प्रविष्ट नगर में; इनितु–खूब; नाटिन्र् पुकुन्तार्–खोजना आरम्भ करके; तेवर् तलै–देवों से लेकर; मक्कळ् कटै–मानव तक; वान् उलकिन्–स्वर्गलोक के; वैयत्तु ऑक्क–और भूलोक के साथ; उऱैवोर् उरुवम्–वासियों के रूप; ओवियम् अलाल्–चित्र बनकर रहे, इसके सिवा; मऱ्ऱु–कोई दूसरा; कुऱियित् उळ्ळवुम्–जीवन के लक्षण के साथ रहनेवाले; ऍतिर्न्तिलर्–किसी को नहीं देखा; तिरिन्तार्–घूमे। ८३२

उस नगर में प्रविष्ट होकर उन्होंने उत्साह के साथ खोजना आरम्भ किया। देवों से लेकर मनुष्य तक, देवलोक और मानवलोक में रहनेवालों के चित्र थे, पर कहीं भी जीव का निशान नहीं मिला। वे ऐसे ही घूम-घूमकर देखने लगे। ८३२

वावियुळ पॊय्हैयुळ वाशमलर् नाऱुम्
कावुमुळ काविविऴि यार्मॊऴिह ळॆन्नक्
कूवुमिळ मॆन्कुयिल्हळ् पूवैकिळि कोलत्
तूविमड वन्नमुळ तोहैचुव डिल्लै 833

वावि उळ–वापियाँ हैं; पॊय्कै उळ–तडाग हैं; वाच मलर् नाऱुम्–पुष्प-सुगन्ध भरे; कावुम् ऊळ–बाग हैं; कावि विऴियार्–नीलोत्पलाक्षी; मॊऴिकळ् ऎन्न–(रमणियों) की वाणी के समान; कूवुम्–कूकनेवाली; इळ मॆल् कुयिल्कळुम्–छोटी कोमल कोयलें हैं; पूवै–सारिकाएँ; किळि–शुक; कोलम् तूवि–सुन्दर परों वाले; मटम् अन्नम्–बाल-मराल; उळ–हैं; तोकै–कलापी-निभ; चुवटु–(सीता का) निशान; इल्लै–नहीं। ८३३

उस नगर में वापियाँ थीं; सरोवर थे। सुवासपूर्ण पुष्पों के उद्यान थे। नीलोत्पलाक्षियों के समान कूकनेवाली बाल, कोमल कोयलें, सारिकाएँ, शुक और मनोरम परों से युक्त बाल-मराल पाये गये। पर कलापी-सी सुन्दर सीता का कोई पता नहीं मिला। ८३३

आयनह रत्तिनियल् बुळ्ळुऱ वऱिन्दार्
मायैहॊलॆ नक्करुदि मऱ्ऱुनिनै वुऱ्ऱार्
तीयपिल नुट्पिऱवि शॆन्ऱविदु वॊन्ऱो
तूयदु तुऱक्कमॆन नॆञ्जुतुणि वुऱ्ऱार् 834

आय नकरत्तिन्–उस नगर की; इयल्पु–सच्ची स्थिति को; उळ् उऱ अऱिन्तार्–अन्दर रहकर जिन्होंने जान लिया, उन्होंने; मायै कॊल्–माया क्या; ऎन करुति–ऐसा सोचकर; तीय पिलत्तुळ्–बुरे विवर में; पिऱवि चॆन्ऱ–हमारा जन्म हो गया; मऱ्ऱु निनैवुऱ्ऱार्–दूसरा विचार किया; इतु ऒन्ऱो–यही एक है; तूयतु तुऱक्कम्–पवित्र स्वर्ग है; ऎन्न–ऐसा; नॆञ्चु तुणिवुऱ्ऱार्–मन में दृढ़ कर लिया। ८३४

वे उस नगर की यथार्थ स्थिति को भीतर से जान गये। उन्हें सन्देह हुआ कि यह कोई माया है क्या? हमारा जन्म भयंकर पाताल में हो गया! यह भी विचार उनके मन में उठा। फिर सोचने लगे कि क्या वही एक विचार हो सकता है; नहीं! यह पवित्र स्वर्ग ही है। उनका यह दृढ़ विचार हो गया। ८३४

इऱन्दिल मिदऱ्कुरिय दॆण्णियिल मेदुम्
मऱन्दिल मयिर्प्पिनॊ डिमैप्पुळ मयक्कम्

पिऱन्दवर् शॅयऱ्कुरिय शॅय्दल्पिऴै यिऩ्ऱाल्
तिऱन्दॆरिव दॆन्ऩॆन्न विशैत्तनर् तिहैत्तार् 835

इऱन्तिलम्–(स्वर्गवासी होना कैसे) हम मरे तो नहीं; इतऱ्कु–इसकी; उरियतु–बात; ऍण्णि इलम्–सोची नहीं; एतुम् मऱन्तिलम्–हम किसी बात को भूले नहीं; अयिर्प्पित्तोटु–संशय के साथ; इमैपपु उळ–पलक का गिरना भी चल रहा है; इऩ्ऱु–अब; मयक्कम् पिऱन्तवर्–भ्रमग्रस्त के; चॅयऱ्कु उरिय–करने योग्य काम; चॅय्तल् पिऴै–करना गलत है; ऍत्तिऩ्–तो; तिऱम् तॅरिवतु–अपनी स्थिति जानना; ऍन्ऩ–कैसा; ऍन–ऐसा; इचैत्ततर्–आपस में बोलते हुए; तिकैत्तार्–भ्रान्त हुए। ८३५

(उन्हें इस विचार पर आपत्ति लगी।) स्वर्ग पहुँचने के लिए हम मरे तो नहीं हैं। यहाँ आने की बात हमने सोची भी नहीं थी। बीती बातें हम याद करते हैं— वे नहीं भूलीं। मन में संकल्प-विकल्प उठते हैं और हमारी पलके उठती-गिरती हैं। अब भ्रान्त लोगों के समान कार्य करना गलत होगा। तो हम सच्चा हाल जानें कैसे? यों आपस में बोलते हुए वे चकित खड़े रहे। ८३५

शाम्बनव नॊन्ऱुरैशॅय् वाऩॆऴु शलत्ताल्
काम्बनैय तोळियै यॊळित्तपडु कळ्वऩ्
नाम्बुह वमैत्तपॊऱि नऩ्ऱुमुडि विऩ्ऱाल्
एम्बलिऩि मेलैविदि याऩ्मुडियु मॆऩ्ऱाऩ् 836

चाम्पऩ् अवऩ्–जाम्बवान जो था उसने; ऑन्ऱु–एक बात; उरै चॅय्वाऩ्–कही; ऍऴु चलत्ताल्–स्वाभाविक छल से; काम्पु अऩैय–बाल-बाँस के समान; तोळियै–कन्धों वाली सीता को; ऑळित्त–जिसने छिपाकर रखा; पटु कळ्वऩ्–बड़े चोर (रावण) का; नाम् पुक अमैत्त–हमारे प्रवेश के लिए रचित; पॊऱि–यन्त्रजाल; नऩ्ऱु–अच्छा है; मुटिवु इऩ्ऱु–इसका निस्तार नहीं; एम्पल्–हमारा सन्तोष; इऩि–अब; मेलै वितियाल्–पूर्व कर्म के फल-स्वरूप; मुटियुम्–दूर हो जायगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (जाम्बवान ने)। ८३६

तब जाम्बवान ने हताश होकर एक बात कही। हमें फँसाकर कष्ट देने के विचार से पक्के चोर रावण का, जिसने छल से वंशतरु-सम कन्धों वाली सीता को हर ले जाकर छिपा रखा है, बनाया हुआ यह फंदा भी बहुत भला है! इसका कोई अन्त नहीं दिखता। हमारा सन्तोष अब प्रारब्ध से दूर जायगा। ८३६

इऩ्ऱुपिल नीदिडैयि लेऱरि दॆनिऱ्पार्
तिऩ्ऱुशह रॆक्कदिह माहिऩऩि शेऱुम्
अऱ्ऱदॆलिऩ् वज्जनै यरक्करै यडङ्गक्
कॊऩ्ऱॆऴुदु मज्जलॆऩ मारुदि तुकॊदिताऩ् 837

मारुति–मारुति; इन्ऱु–अव; इटैयित्–मध्यस्थित; पिलन् ईतु–इस बिल से; एऱ अरितु–ऊपर चढ़कर जाना दुस्तर है; ऍतिन्–तो; चकरर्क्कु–सगर-पुत्रों से; नत्ति अतिकम् आकि–वढ़कर अतिवली वनकर; पार् तिन्ऱु–भूमि को चीरकर; चेऱुम्–पहुँच जायेंगे; अतु अन्ऱु ऍतिन्–वह नहीं (हो सका) तो; वञ्चनै अरक्करै–वंचक राक्षसों को; अटङ्क कॊन्ऱु–पूर्ण रूप से मारकर; ऍऴुतुम्–उठ चलेंगे; अञ्चल्–डरो मत; ऍन–ऐसा; कॊतित्तान्–(मारुति ने) तप्त होकर कहा। ८३७

तव मारुति ने वीर वचन कहे। इस विल से साधारण रूप से, ऊपर पहुँचना दुस्साध्य है, तो हम सगरपुत्रों से भी अधिक वलवान होकर भूमि को चीरते हुए सुख से वाहर चले जायँगे। अगर वह सम्भव नहीं तो वचक राक्षसों को समूल नष्ट करके छोड़ेंगे। मत डरो। हनुमान का मन कोपाक्रान्त था। ८३७

मऱ्ऱवरु मऱ्ऱदु मनक्कॊळ वलित्तार्
उऱ्ऱनर् पुरत्तिडैयव् वॊण्शुडरि नुळ्ळोर्
नऱ्ऱव मनैत्तुमुरु नण्णियॊळि पॆऱ्ऱ
कऱ्ऱैविरि पॊऱ्चडैयि नाळैयॆदिर् कण्डार् 838

मऱ्ऱवरुम्–(अंगदादि) अन्य वीरों ने; अतु मनम् कॊळ्ळ–उस वचन के मन मे (ठीक) लगने से; वलित्तार्–(वैसा ही) संकल्प करके; पुरत्तु इटै–नगर-मध्य; उऱ्ऱनर्–जाकर; अ ऒण् चुटरित्तुळ्–अतिप्रकाशमय उस नगर मे; नल् तवम् अनैत्तुम्–श्रेष्ठ तप सारा; ओर् उरु नण्णि–एक (स्त्री-) रूप लेकर; ऒळि पॆऱ्ऱ–प्रभाशालिनी जो रहा; कऱ्ऱै विरि–उलझे केशो की; पॊन् चटैयिनाळै–स्वर्णमय जटा वाली (स्वयंप्रभा) को; ऍतिर् कण्टार्–सामने देखा (उन्होने)। ८३८

यह सुनकर अंगदादि अन्य वीरों में ऐसा ही कोप उदित हुआ। उन्होने भी वही सकल्प किया। फिर वे नगर के अन्दर गये। उस प्रकाशमय नगर के मध्य उन्होंने तपस्विनी स्वयंप्रभा को देखा। वह तपस्या की मूर्ति वनी थी। उसकी जटाजूट सुन्दर और वड़ी थी। ८३८

मरुङ्गलश वऱ्कलै वरिन्दुवरि वाळम्
पॊरुङ्गलश मॊक्कुमुलै माशुपुडै पूशिप्
पॆरुङ्गलै मदित्तिरु मुहत्तळ्पिऱळ् शॆङ्गेऴ्
करुङ्गयल् कळिऱ्ऱिहळ्हण् मूक्कुनुदि काण 839

पॆरु कलै मति–महिमामय सोलह कलापूर्णचन्द्र-सम; तिरु मुकत्तळ्–सुन्दर-मुखी; मरुङ्कु अलच–कमर को दुःख देते हुए; वऱ्कलै वरिन्तु–वल्कल वाँधे; वरि वाळम् पॊरुम्–रेखायुक्त चक्रवाक पक्षी के समान और; कलचम् ऒक्कुम्–कलश-सम; मुलै पुटै–स्तनों पर; माचु पूचि–धूल लगने देते हुए; पिऱळ्–चंचल; चॆम् केऴ्–लाल रंग की; करु कयल्कळित्–काली मछलियों के समान; तिकऴ्–शोभित; कण्–आँखों; मूक्कु नुति काण–नासिकाग्र को देखती रही, वैसा। ८३९

उसका श्रीमुख सोलहों कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान था। उसने कमर को दुःख देते हुए वल्कल बाँधा था। उसके रेखायुक्त, चक्रवाक और स्वर्ण-कलश के समान स्तनों पर गर्द जमी थी। चंचल और लालिमा और कालिमा के साथ शोभायमान 'कॅण्डै' मछलियों के समान उसकी आँखें नासिकाग्र पर लगी हुई थीं। ८३९

तेरत्तैय वल्हुल्शॅरि तिण्गदलि शॅप्पुम्
ऊरुवित्तों डॉडुङ्गुर वॉडुक्कियुर वॉल्हुम्
नेरिडै शलिप्पर निरुत्तितिनिमिर् कॉङ्गैप्
पारमु ळॉडुक्कुर वुयिर्प्पिडै परिप्प 840

तेर् अत्तैय अल्कुल्–रथ-सम कटिप्रदेश को; चॅरि–पुष्ट; तिण् कतलि चॅप्पुम्–प्रवृद्ध कदली-सम; ऊरुवित्तॊटु–ऊरुओं के साथ; ऑटुङ्कुर ऑटुक्कि–लगाकर दबाये हुए; उयिर्प्पु इटै परिप्प–श्वास को रोकने से; उर ऑल्कुम्–खूब चलित होनेवाली; नेर् इटै चलिप्पु–पतली कमर का हिलना; अर निरुत्ति–एक दम रोककर; निमिर् कॉङ्कै पारम्–उन्नत स्तन-भार को; उळ् ऑटुक्कुर–दबकर रहने देते हुए। ८४०

रथ-सदृश भगप्रदेश को उसने परस्पर सम रम्भोरुओ के मध्य दबाकर रख लिया था। प्राणायामसाधना से उसकी चंचल कमर भी स्थिर रही। उन्नत स्तनभार भी उस योगमुद्रा के अन्दर छिपे हुए थे। ८४०

तामरै मलर्क्कुवमै शाल्बुरु तळिर्क्कैप्
पूमरुवु पॉर्चॅरि कुरुङ्गॉडु पॉरुन्दक्
काममुद लुर्रपहै काऱळर वाशै
नाममडि यप्पुलनु नल्लऱिवु पुल्ह 841

तामरै मलर्क्कु–कमल-फूल का; उवमै–उपमान बनने; चाल्पु उरु–योग्य; तळिर् कै–पल्लवहस्त; पू मरुवु–सुन्दरतायुक्त; पॊन्–स्वर्णवर्ण; चॅरि कुरुङ्कॊटु–सटे हुए ऊरुद्वय से; पॊरुन्त–लगाए; कामम् मुतल्–कामादि; उर्र पकै–अंतश्शत्रु; काल् तळर्–मिटाकर; आचै नामम् मटिय–राग का नाम तक नाश करके; पुलन्म्–इन्द्रियों को भी; नल् अऱिवु पुल्क–श्रेष्ठ बुद्धि के वश में रखते हुए। ८४१

कमल के फूल के उपमान बन सकनेवाले पल्लव-हस्त सुन्दर, स्वर्णिम और परस्पर सम ऊरुओं पर लगे थे। कामादि अन्तःशत्रु नष्ट हो गये थे। राग का निशान भी न रहा। उनकी इन्द्रियाँ भी अच्छे मार्गगामिनी बनी थीं। ८४१

नॅरिन्दुनिमिर् कड्रैनिरै योदिनॅडु नीलम्
शॅरिन्दशडै युर्रदु तलत्तिनॅरि शॅल्लप्

परिनुदुविनै पर्रुर मनप्पॅरिय पाशम्
पिरिन्दुपॅय रक्करुणै कण्वऴि पिरङ्ग 842

नॅरिनुतु–कुंचित होकर; निमिर्–उठे हुए; कर्रै–जटाओं (राशियों) में; निरै–भरे; नॅटु नीलम् ओति–लम्बे काले केश; चॅरिनृत चटै उर्रतु–उलझी हुई जटाओं में परिवर्तित रहे; तलत्तिन् नॅरि चॅल्ल–उनको भूमि पर लोटने देते हुए; विनै परिनुतु–कर्मबन्धन छूटकर; पर्रु अर्र–मिट गया; मनम्–मन का; पॅरिय पाचम्–बलवान पाश; पिरिनुतु पॅयर–छूटकर अलग हो जाय, ऐसा; करुणै–करुणा; कण् वऴि–आँखों द्वारा; पिरङ्क–प्रकट करते हुए। ८४२

घुँघराले, लम्बे केशजाल जटा बनकर लटक रहे थे और भूमि पर लोट रहे थे। पूर्वकर्म-फल उससे छूट गये थे। मन पाशों से मुक्त था। उनकी दृष्टि में करुणा व्यक्त हो रही थी। ८४२

इरुन्दन ळिरुन्दवळै यॅय्दिन रिरैञ्जा
अरुन्ददि यॅनत्तहैय शीदैयव ळाहप्
परिन्दनर् पदैत्तनर् पणित्तहुरि पण्बिल्
तॅरिन्दुणर्दि मर्रिवळ्हॉ ट्रेवियॅन लोडुम् 843

इरुन्तनळ्–रहीं; इरुन्तवळै–ऐसा जो रहीं, उनके; ॲय्तिनर्–पास पहुँचकर; इरैञ्चा–नमस्कार करके; अरुन्तति ॲन तकैय–अरुन्धती-सम सीता; अवळ् आक–वही है ऐसा; परिन्तनर्–सोचकर (मन में) आदर किया; पतैत्तनर्–उद्विग्न होकर; इवळ् तेवि कॉल्–यही देवी सीता हैं क्या; पणित्त कुरि–श्रीराम निर्दिष्ट लक्षणों की कसौटी में; पण्पिल् तॅरिनृतु–कसकर परखो और; उणर्ति–समझो; ॲनलोटुम्–कहने पर। ८४३

इस साज के साथ वह योगरत थी। वे वानर उसके पास गये और नमस्कार कर उठे। उसको सीता ही समझकर वे स्नेहार्द्र होकर उत्तेजित हुए। उन्होंने हनुमान से पूछा कि क्या यही देवी सीता है; श्रीराम ने उनके लक्षण तुमसे जो बताये हैं, उनके आधार पर परखकर कहो! तब। ८४३

ॲक्कुरियॉ डॅक्कुण मॅडुत्तिव णिशैक्केन्
इक्कुरि युडैक्कॉडि यिरामन्मनै याळो
अक्कुवड मुत्तमणि यारमदन् नेर्निन्
ऱॉक्कुमॅनि नॉक्कुमॅन मारुदि युरैत्तान् 844

मारुति–मारुति; ॲं कुरियॉटु–किस अंगलक्षण के साथ; ॲं कुणम्–कौन सा गुण; इवण् ॲटुत्तु–यहाँ लेकर; इचैक्केन्–(इसके पास है) कहूँ; इ कुरि उटै कॉटि–इन लक्षणों की यह लता; इरामन् मनैयाळो–श्रीराम की पत्नी होगी क्या; अक्कु वटम्–अस्थिमाला; मुत्तम् मणि आरम् अतन्–मुक्ता व मणिमाला की; नेर् निनृरु ऑक्कुम्–समकक्ष बनकर समानता कर सकेगी; ॲनिन्–तो; ऑक्कुम्–(यह भी) समानता करेगी; ॲन–ऐसा; उरैत्तान्–बोला। ८४४

मारुति ने उत्तर दिया कि कौन से लक्षण कहूँ, जो इसके पास हैं ? ऐसे अंगों वाली लता यह श्रीरामकी देवी हो सकती है क्या ? अगर कहीं अस्थिमाला मुक्ताहार या रत्नहार की समानता कर सके तो यह सीताजी की समानता कर सकेगी। ८४४

अन्नप्पोऴ्दु	**दिन्नगणव**	**णङ्गुमरि**	**वुड्राळ्**
मुन्नन्नैय	**रल्लनॅरि**	**मुन्दिन्नरह**	**ळॅन्नत्**
तुन्नरिय	**पॉन्नहरि**	**यिन्नुरैवि**	**रल्लीर्**
ॲन्नवर	**वियावरुरै**	**शॅय्मॅन**	**विशैत्ताळ् 845**

अन्न पॊऴुतिन् कण्–उसी समय; अ अणङ्कुम्–वह स्वयंप्रभा; अरिवुड्राळ–समाधि से जागी; मुन्–अपने सामने; अन्नैयर्–वे; अल्ल नॅरि–अनुचित रीति से; मुन्तितरकळ्–आये है; ॲन्न–ऐसा सोचकर; तुन्न अरिय–अगम; पॊन् नकरियिन्–इस स्वर्णनगरी में; उरैविर् अल्लीर्–वास करनेवाले नहीं हो; वरवु ॲन्न–आना कैसे; यावर्–कौन हो; उरै चॅय्म्–उत्तर कहो; ॲन–ऐसा; इचैत्ताळ्–प्रश्न किया। ८४५

तभी वह स्त्री भी समाधि से जागी। अपने सामने उनको देखकर उसने समझ लिया कि ये अनुचित मार्ग से इधर आए हुए हैं। उसने पूछा कि तुम अगम इस स्वर्णपुरी के वासी नहीं लगते हो ! फिर इधर आना क्योंकर हुआ ? तुम कौन हो ? उत्तर दो। ८४५

वेदत्तै	**यरक्करॊरु**	**मायैविळै**	**वित्तार्**
शीदैयै	**यॊळित्तनर्**	**मऱैत्तपुरै**	**तेर्वुर्**
ऱेदमि	**लऱत्तुरै**	**निऱुत्तिय**	**विरामन्**
तूदरुल	**हिऱ्ऱिरिदु**	**मॅन्नुमुरै**	**शॊन्नान् 846**

वेतत्तै अरक्कर्–(संसार को) पीड़ा देनेवाले राक्षसों ने; ऑरु मायै–एक माया-कार्य; विळैवित्तार्–किया; चीतैयै ऑळित्तनर्–सीतादेवी को छिपा दिया; एतम् इल्–अनिन्द्य; अऱम् तुरै–धर्ममार्ग; निऱुत्तिय–जिन्होंने स्थिर किया; इरामन् तूतर्–उन श्रीराम के दूत (हम); मऱैत्त पुरै–सीताजी को जहाँ छिपा रखा होगा, उन स्थानों का; तेर्वुऱु–अन्वेषण करते हुए; उलकिल् तिरितुम्–संसार में घूमते हैं; ॲन्नुम् उरै–यह वचन; चॊन्नान्–(हनुमान ने) कहा। ८४६

हनुमान ने उत्तर दिया। आततायी राक्षसों ने एक माया रची और सीताजी को हर ले जाकर कहीं छिपा रखा है। निर्दोष धर्म के संस्थापक श्रीराम के दूत हैं हम। सीताजी के छिपे हुए स्थान की खोज में हम संसार में घूम रहे हैं। ८४६

ॲन्ऱलु	**मिरुन्दव**	**ळॅऴुन्दन**	**ळिरङगिक्**
कुन्ऱनैय	**दायदॊरु**	**पेरुवहै**	**कॊण्डाळ्**

ननुरुवर वाहनड नम्बुरिव लॅन्ना
निन्ऱ्ल णॅडुङ्गणिणै नीर्हलुऴ् नीराळ् 847

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; इरुन्तवळ्–जो बैठी हुई थी; ऍऴुन्तनळ्–वह स्वयंप्रभा उठी; इरङ्कि–आर्द्र होकर; कुन्ऱु अन्नैयतु आयतु–पर्वत-सम; ऒरु पेर्–उतना अधिक; उवकै–आनन्द; कॊण्टाळ्–अनुभव किया; वरवु नन्ऱु आक–आगमन शुभ हो; नटत्तम् पुरिवल्–आनन्द-नृत्य करूँगी; ऍन्ऩा–कहकर; नॆटु कण् इणै–आयत अक्षद्वय से; नीर् कलुऴुम् नीराळ्–अश्रु बहानेवाली होकर; निन्ऱनळ्–खड़ी रही। ८४७

यह सुनते ही स्वयप्रभा, जो बैठी थी, उठ खड़ी हुई। उन पर स्नेह करके 'पर्वत-जितने' आनन्द का अनुभव करने लगी। "तुम्हारा आगमन शुभ हो। मैं नाचूंगी !" उसने कहा और वह अपनी दोनों आयत आँखों से आनन्दाश्रु बहाती हुई ठक खड़ी रही। ८४७

ऍव्वुऴै यिरुन्दन निरामनॆन याणर्च्
चॅव्वुऴै नॅडुङ्गणवळ् शॅप्पिडुद लोडुम्
अव्वुऴै निहऴ्न्ददनै यादियिनॊ डन्दम्
वॅव्विऴैविल् शिन्दैनॆडु मारुदि विरित्तान् 848

इरामन्–श्रीराम; ऍ उऴै–कहाँ; इरुन्तनन्–रहे; ऍन्न–ऐसा; याणर् चॅव् उऴै–विचित्र सुन्दर मृग की-सी; नॆटु कण् अवळ्–आयत आँखों वाली, उसके; चॅप्पिटुतलोटुम्–पूछते ही; वॆ विऴैवु इल्–तापक राग रूपी दोषरहित; चिन्तै–मन के; नॆटु मारुति–महिमावान मारुति ने; अ उऴै–उस स्थान पर; निकऴ्न्ततनै–जो हुआ वह; आतियिनॊटु–आदि से लेकर; अन्तम्–अन्त तक; विरित्तान्–विस्तार के साथ कहा। ८४८

जवान और सुन्दर मृग की-सी आँखों वाली स्वयंप्रभा ने पूछा कि श्रीराम रहे कहाँ ? तब हानिकारक राग-रहित मन वाले महिमामय हनुमान ने श्रीराम का चरित्र आद्योपान्त वर्णन किया। ८४८

केट्टवळु मॆन्नुडैय केडिल्तव मिन्ने
काट्टियदु वीडॆन विरुम्बिननि कान्नीर्
आट्टियमिऴ् दन्नशुवै यिन्नडिशि लन्बो
डूट्टिमन नुळ्हुळिर विन्नुरै युरैत्ताळ् 849

केट्टु–सुनकर; अवळुम्–उसने भी; ऍन्नुटैय केटु इल् तवम्–मेरे अनिन्द्य तप ने; इन्ऱे–आज ही; वीटु काट्टियतु–(शाप-) मुक्ति दिलायी; ऍन–कहकर; विरुम्पि–उन वीरों से स्नेह दिखाकर; कान् नीर्–सुगन्धमिश्रित जल से; नति आट्टि–खूब स्नान करवाकर; अमिऴ्तु अन्न चुवै–अमृत-सम स्वादपूर्ण; इन् अटिचिल्–मधुर भोजन; अन्पोटु ऊट्टि–प्यार के साथ खिलाकर; मनन् उळ् कुळिर–उनके मन को आन्तरिक रूप से शीतलता (सुख) प्रदान करते हुए; इन् उरै–मधुर वचन; उरैत्ताळ्–कहे। ८४९

यह श्रवण करके स्वयंप्रभा ने कहा कि मेरे निर्दोष तप ने आज मुझे शापमुक्ति दिला दी है ! उसे उन पर प्रेम उमड़ आया और उसने उनका सुगन्धयुक्त जल से स्नान करवाकर देवामृत-सम स्वादयुक्त भोजन खिलाया। उसने उनके मन को खुश करनेवाले मधुरवचन से अभिनन्दन किया। ८४९

मारुदियु मट्रवण मलर्च्चरण् वणङ्गा
यारिनह रुक्किडैवर् यादुनि न्नियर्पेर्
पार्पुहळ् तवत्तिनै पणित्तरुळु हॅन्ऱान्
शोर्हुळलु मट्रवनॊ डुट्रपडि शॊन्नाळ् 850

मारुतियुम्–मारुति ने भी; अवळ् मलर् चरण् वणङ्का–उसके कमल-चरण पर नमस्कार करके; यार्–कौन; इ नकर्क्कु–इस नगर के; इडैवर्–राजा हैं; निन् इयल् पेर्–आपका शुभनाम; यातु–क्या है; पार् पुकळ्–संसार-प्रशंसित; तवत्तिनै तपस्विनी; पणित्तु अरुळुक–कहने की कृपा करें; ॲन्ऱान्–पूछा; चोर् कुळलुम्–उसने भी, जिसकी जटा भूमि पर लोटती थी; अवनॊडु–उस (हनुमान) से; उट्र पटि–जैसा हुआ वैसा; चॊन्नाळ्–बखाना। ८५०

मारुति ने उसके कमल-चरणों पर झुककर नमस्कार किया और यह जानना चाहा कि इस नगर के पति कौन हैं ? आपका नाम क्या है ? लोकशंसित तपस्विनी ! कहिए। तब स्वयंप्रभा ने, जिसका केश भूमि पर लोट रहा था, अपना चरित्र यथावत् कहा। ८५०

नूल्मुह नुनित्तनॆरि नूरुवर नॊय्दा
मेल्मुह निमिर्न्दुवॆयिल् कालॊडु विळुङ्गा
मान्मुह नलत्तवन् मयन्शॆय्द तवत्ताल्
नान्मुह नळित्तुळदिम् मानहर नल्लोय् 851

नल्लोय्–साधु; मान् मुकम्–मृग-मुख; नलत्तवन्–श्रेष्ठ; मयन्–मय ने; नूल् मुकम्–योग-शास्त्र में; नुनित्त–सूक्ष्म रूप से कथित; नॆरि नूरु वर–सौ-सौ प्रकारों से; नॊय्तु आ–अनायास; मुकम् मेल् निमिर्त्तु–मुख ऊपर करके; वॆयिल् कालॊटु विळुङ्का–धूप और हवा का अशन करते हुए; चॆय्त–जो (तपस्या) की; तवत्ताल्–उस तपस्या से; इ मा नकरम्–यह बड़ा नगर; नान् मुकन् अळित्तुळतु–चतुर्मुख का दिया हुआ है। ८५१

साधु ! मृगमुख मय ने योगशास्त्रविहित सूक्ष्म प्रकारों के अनुसार अनायास मुख ऊपर करके धूप और पवन का ही अशन करते हुए कठोर तपस्या की। तब चतुर्मुख से तपस्या के फलस्वरूप यह नगर उसे प्रदान किया गया। ८५१

अन्नदिदु तान्व नरम्बैयरु ळाङ्गोर्
नन्नुदलि नाण्मुलै नयन्दनन नल्लाळ्

ऍऩ्ऩुयिर नाळवळै याऩव निरप्पप्
पॊऩ्ऩुलहि निऩ्ऱिदु पिलत्तिडै पुणरत्तेऩ् 852

इतु अऩ्ततु–यह नगर ऐसा है; ताऩवऩ्–दानव (मय) ने; अरम्पैयरुळ्–अप्सराओं में; आङ्कु ओर्–वहाँ एक; नल् नुतलिऩाळ्–सुन्दर भाल वाली (अप्सरा) के; मुलै नयन्तऩऩ्–स्तन-(सुख) भोग चाहा; अ नल्लाळ्–वह सुन्दरी; ऍऩ् उयिर् अऩाळ्–मेरी प्राण-समाना है; अवऩ् इरप्प–उस (मय) के प्रार्थना करने पर; याऩ् मैंने; अवळै–उसको; पॊऩ् उलकिऩ् निऩ्ऱु–स्वर्गलोक से; इतु पिलत्तिटै–इस विल में; पुणरत्तेऩ्–पहुँचाया। ८५२

यह नगर ऐसा बना। उस दानव ने अप्सराओं में एक सुन्दर ललाट वाली के स्तनों (भोग) की इच्छा की। वह अतिसुन्दरी मेरी सहेली थी। उस दानव ने मेरी सहायता की याचना की और मैंने उस अप्सरा को स्वर्गलोक से यहाँ इस विल में पहुँचाया। ८५२

पुणर्न्दवळु मन्नवनु मऩ्ऱिल्विळै पोहत्
तुणर्न्दिलर् नॆडुम्बहलिम् मानह रुरैन्दार्
कणङ्गुळैयि नाळॊडुयर् कादलॊरु वादुऱ्
ऱिणङ्गिवरु पाशमुडै येऩ्ऩुड ऩिरुन्देऩ् 853

अवळुम् अऩ्ऩवऩुम्–वह (हेमा नामक अप्सरा) और मय; पुणर्न्तु–मिले; अऩ्ऱिल् विळै–क्रौंच पक्षियों का भी मन लुभानेवाले; पोकत्तु–भोग में; उणर्न्तिलर्–भूले रहे; नॆटु पकल्–लम्बे काल तक; इ मा नकर् उऱैन्तार्–इस बड़े नगर में रहे; कणम् कुऴैयिऩाळॊटु–मोटे कुण्डलों वाली उसके साथ; उयर् कातल् ऒरुवातु–श्रेष्ट प्रेम को न छोड़कर; उऱ्ऱु इणङ्कि वरु–उसके साथ मिली रहनेवाली; पाचम् उटैयेऩ्–और उस पर आसक्त मैं; उटऩ् इरुन्तेऩ्–उनके साथ रही। ८५३

वे इतने गहरे सम्भोग में लगे रहे कि क्रौंचपक्षी भी वैसे सम्भोग की कामना करे! सब कुछ भूलकर वे अनेक दिन अपने मिलन-वैभव में डूबे, इधर रह गये। भारी कुण्डलधारिणी से मेरा स्नेह गाढ़ा था, इसलिए मैं भी उसके साथ यहाँ रही। ८५३

इरुन्दुपल नाळ्हऴियु मॆल्लैयिऩि ऩल्लोय्
तिरुन्दिऴैयै नाडिवरु देवरिऱै शीऱिप्
पॆरुन्दिऱलि ऩाऩैयुयि रुण्डुपिऴै यॆऩ्ऱम्
मुरुन्दुनिहर् मूरऩहै याळैयु मुऩिन्दाऩ् 854

नल्लोय–साधु; इरुन्तु–उनको मिले रहकर; पल नाळ् कऴियुम्–अनेक दिन जब बीते; ऍल्लैयिऩ्–उस समय; तिरुन्तु इऴैयै–श्रेष्ठ आभरणधारिणी (हेमा) को; नाटि वरु–चाहते हुए जो आया; तेवर् इऱै–वह देवेन्द्र; चीऱि–कोप करके; पॆरु तिऱलिऩाऩै–अतिबली (मय) को; उयिर् उण्टु–मारकर; अ मुरुन्तु निकर्

मूरल्–मोरपंख के नीचे के श्वेत भाग के समान दाँतों और; नकैयाळैयुम्–मन्दहास से युक्त उस पर; पिळै ॲन्ऱु–अपराध कहकर; मुनिन्ताऩ्–कुपित हुआ। ८५४

श्रेष्ठ गुणों वाले! लम्बे अरसे के बाद सुन्दर कारीगरी युक्त आभरणधारिणी की देवेन्द्र ने टोह लगायी। कोप करके उसने बली मय को मार दिया। फिर उससे, जिसके दाँत मोर-पंख के श्वेत मूलभाग के समान मनोरम थे, क्रोध से कहा कि तुमने बड़ा अपराध किया है। ८५४

मुनिन्दवळै युऱ्ऱशॅयल् मुऱ्ऱुमॊऴि ऍन्ऩक्
कनिन्दतुवर् वायवळु मॆन्नैयिवळ् कण्णाल्
वत्तैन्दुमुडि वुऱ्ऱदॆन मन्नवनुमि दॆल्लाम्
नितैन्दिव णिरुत्तिनहर् कावलिन दॆन्ऱान् 855

मुनिन्तु–क्रुद्ध होकर; अवळै–उससे; उऱ्ऱ चॅयल्–जो हुआ; मुऱ्ऱुम् मॊऴिक–पूरा कहो; ॲन्ऩ–कहने पर; कनिन्त–पके; तुवर् वायवळुम्–प्रवाल-सम अधर वाली ने; ॲन्नै–मुझे (दिखाकर); कण्णाल्–आँखों के इशारे से; इवळ् वत्तैन्त–इसका आयोजित; मुटिवुऱ्ऱतु–पूरा हुआ; ॲन–कहा, तब; मन्ऩवनुम्–देवराज ने; इतु ॲल्लाम् नितैन्तु–यह सारा सोचकर; इवण् इरुत्ति–यहीं रह जाओ; नकर् कावल्–नगर-रक्षा का भार; निनतु–तुम्हारे ऊपर है; ॲन्ऱान्–आज्ञा की। ८५५

गुस्से में उसने उससे पूछा कि सारा हाल बता दो। तब प्रवृद्ध प्रवालाधरा ने (जिसका नाम हेमा था) मुझे पकड़ लेकर आँखों के इशारे से जताया कि इसी के द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ। देवराज ने सोचा और मुझसे कहा कि तुम यहीं अकेली रह जाओ। इस नगर का रक्षण-कार्य तुम्हारा है। ८५५

ॲन्ऱलुम् वणङ्गियिरु ळेहुनॆऱि यॆन्नाळ्
ऒन्ऱुरै यॆनक्कुमुडि वॆन्ऱुरैशॆ यामुन्
वन्ऱिऱलि रामनरुळ् वानरर्हळ् वन्दाल्
अन्ऱुमुडि वाहुमॆन ऱॆन्ऱव नहन्ऱान् 856

ॲन्ऱलुम्–कहने पर; वणङ्कि–नमस्कार करके; इरुळ् एकुम् नॆऱि–अन्धकार (दुःख) दूर होने का मार्ग; ऍ नाळ्–कब (होगा); ॲनक्कु मुटिवु ऒन्ऱु–मुझे एक अवधि; उरै–बताइए; ॲन्ऱु–ऐसा; उरै चॆयामुन्–(मेरे) पूछने के पूर्व; अवन्–देवेन्द्र ने; वल् तिऱल् इरामन्–बहुत बलवान श्रीराम की; अरुळ् वानरर्कळ्–कृपापूर्ण आज्ञा लेकर आनेवाले वानर; वन्ताल्–आयेंगे तो; इटर् मुटिवु आकुम्–दुःख अन्त को प्राप्त होगा; ॲन्ऱु–कहकर; अकन्ऱान्–अपने स्थान को चले गये। ८५६

इन्द्र ने यह आज्ञा सुनायी तो मैंने उससे, नमस्कार करके पूछा कि यह अन्धकार (शाप का दुःख) छूटेगा कब? कुछ अवधि निर्धारित कर कहिए। उसके पूछने के पूर्व ही देवेन्द्र यह कहते हुए हट गया कि अतिसशक्त

श्रीराम की आज्ञा लेकर उनके दूत, वानर, जब यहाँ आयेंगे तब तुम्हारा कष्ट दूर होगा। ८५६

उण्णवुळ	पूशवुळ	शूडवुळ	वॊन्ऱो
वण्णमणि	याडैयुळ	मऱ्ऱुमुळ	पॆऱ्ऱेन्
अण्णलवै	विट्टुमै	यडैन्दिडुदल्	वेण्डि
ऎण्णरिय	पल्पह	लिरुन्दव	मिळैत्तेन् 857

अण्णल्–महिमामय; उण्ण उळ–इधर भोजन करने के लिए वहुत (वस्तुएँ) है; पूच उळ–शरीर पर मलने के लिए वहुत है; चूट उळ–सिर पर धारण करने के लिए वहुत है; ऒन्ऱो–यही क्या; वण्णम् मणि आटै–सुन्दर रंगों के मनोरम वस्त्र हैं; मऱ्ऱुम् उळ–अन्य पदार्थ भी हैं; पॆऱ्ऱेन्–ये सब प्राप्त हैं मुझे; अवै विट्टु–उनको त्यागकर; उमै अटैन्तिटुतल् वेण्टि–तुमसे मिलने की साध लेकर; ऎण् अरिय पल् पकल्–असंख्यक अनेक दिन; इरु तवम् इळैत्तेन्–कठोर तप करती रही। ८५७

महात्मा! यहाँ खाने के लिए खूब है। देह पर मलने के लिए चन्दन आदि है। केशालकार के लिए आवश्यक वस्तुएँ है। यही हैं क्या? रंग-बिरंगे सुन्दर वस्त्र है। अन्य कितने ही भोग-पदार्थ यहाँ प्राप्त है! तो भी मैंने उन पर आसक्ति नहीं रखी। तुम लोगों को देखने की इच्छा लेकर मैं अनेक दिनों से अचिंत्य कठोर तप करती रही। ८५७

ऐयिरुब	दोशनै	यमैन्दपिल	मैया
मॆय्युळदु	मेलुलह	मेऱ्ऱॆऱि	काणेन्
उय्युनॆऱि	युण्डुदवु	वीरॆनि	नुबायम्
शॆय्युम्वहै	शिन्दैयि	निनैत्तिरुशिऱि	दॆन्ऱाळ् 858

ऐया–श्रेष्ठ; अमैन्त पिलम्–बना हुआ यह बिल; ऐ इरुपतु योचनै मॆय्–सौ योजन दूर के विस्तार का; उळतु–है; मेल् उलकम्–ऊपर के (सुर) लोक में; एऱु नॆऱि–चढ़ने का मार्ग; काणेन्–मुझे नहीं दिखता; उतवुवीर् ऎनिन्–सहायता करेंगे तो; उय्युम् नॆऱि–बचने का मार्ग; उण्टु–मिलेगा; उपायम् चॆय्युम् वकै–उपाय करने का प्रकार; चिन्तैयिन्–मन में; चिऱितु निनैत्तीर्–थोड़ा सोच लो; ऎन्ऱाळ्–कहा (स्वयंप्रभा ने)। ८५८

बड़े पुरुष! यह बिल शतयोजन विस्तार का है। स्वर्ग जाने का मार्ग मुझे नही दिखता। तुम्हीं सहायता करोगे तभी निस्तार होगा। उसके उपाय के बारे में थोड़ा सोचो। स्वयंप्रभा ने यह याचना की। ८५८

अन्नदु	कुऱित्तलरिवै	कूऱवनु	मानुम्
मन्नुबुलन्	वॆन्ऱुवरु	मादवण्	मलर्त्ताळ्

शॆन्निियिन् वणङ्गिननि वान्वर्हळ् शेरुम्
पॊन्नुलह मीहुवॆ निनक्कॆनल् पुहन्ड्रान् 859

अन्नत्तु कुरित्तु–उस मार्ग के बारे में; अरिवै कूर–स्त्री के कहने पर; अनुमानुम्–मारुति ने भी; मन्नु पुलम् वॆन्ड्र वरु–युक्त इन्द्रियों को जो जीत चुकी, उस; मातवळ्–महातपस्विनी के; मलर् ताळ्–कमल-चरणों को; चॆन्नियिन् वणङ्कि–सिर झुकाकर नमस्कार करके; निनक्कु–आपको; वानवर् कळ्–देव; ननि चेरुम्–जहाँ खूब एकत्रित है; पॊन् उलकम्–उस देवलोक को; ईकुवन्–प्रदान करूँगा; ऎन्नल् पुकन्ड्रान्–यह कथन किया। ८५९

स्वर्गलोक-मार्ग की बात जब स्वयंप्रभा ने कही तब हनुमान ने शरीर के साथ लगी रहनेवाली इन्द्रियों की विजयिनी स्वयंप्रभा के चरणों को नमस्कार किया और कहा कि मैं आपको देवों से भरे स्वर्ग (-वास) को दिला दूँगा। ८५९

मुळैत्तलै यिरुट्कडलिन् मूळ्हिमुडि वेमैप्
पिळैत्तुयि रुयिर्क्कवरुळ् शॆय्द पॆरियोने
इळैत्तिशॆय लायविनै यॆन्ड्रन रिरन्दार्
वळुत्तरिय मारुदियु मन्नदु वलित्तान् 860

मुळै तलै–इस बिल में; इरुळ् कटलिल्–अन्धकार-सागर में; मूळ्कि–डूबकर; मुटिवेमै–जो मरने को थे, ऐसे हमें; उयिर् पिळैत्तु उयिर्क्क–जान बचाकर जीवित रहने; अरुळ चॆय्त–देने की कृपा करनेवाले; पॆरियोने–श्रेष्ठ; चॆयल् आय विनै–अब करणीय कृत्य; इळैत्ति–करो; ऎन्ड्रनर्–कहते हुए; इरन्तार्–(वानरों ने) याचना की; वळुत्तु अरिय–जिसकी पूर्ण प्रशंसा दुर्लभ है; मारुतियुम्–उस मारुति ने भी; अन्नतु वलित्तान्–वही निश्चय किया। ८६०

तब अन्य वानर वीरों ने हनुमान से याचना की कि हे दयावान श्रेष्ठ गुणी! जिसने बिल के अन्दर अन्धकार में दम घुटकर मरणोन्मुख रहे हमें जीवन दिलाने की कृपा की! अब जो करना है वह शीघ्र करो। तब उस हनुमान ने वही करने का संकल्प कर लिया, जिसकी प्रशंसा पूर्ण रूप से करना असम्भव था। ८६०

नडुङ्गन्मि नॆनुञ्जॊलै नविन्ड्रुनहै नाऱ्
मडङ्गलि नॆळुन्दुमळै येऱरिय वानत्
तॊडुङ्गलिल् पॆरुन्दलै पुऱत्तुलहॊ डॊन्ड्र
नॆडुङ्गहळ् शुमन्दुनॆडु वानुऱ निमिर्न्दान् 861

नटुङ्कन्मिन्–मत डरो; ऎन्नुम् चॊलै–यह कथन; नविन्ड्रु–करके; नकै नाऱ्–मन्दहास को प्रकट होने देते हुए; मटङ्कलिन् ऎळुन्तु–सिंह के समान उठकर; मळै एऱ अरिय–जहाँ मेघों के लिए भी उठ जाना कठिन है, उस; वानत्तु उलकॊटु–व्योमलोक के साथ; ऒटुङ्कल् इल्–जो छोटा नहीं था उस; पॆरु तलै–बड़े सिर

को; पुऱत्तु उलकोट्टु ओन्ऱ–बाह्यलोक से लगाते हुए; नॆट्टु कैकळ् चुमन्तु–बड़े हाथों को उठा, बढ़ाकर; नॆट्टु वान् उऱ–अपने शरीर को आकाश भर में व्याप्त करता हुआ; निमिर्न्तान्–ऊँचा बढ़ा। ८६१

हनुमान ने आश्वासन का वचन दिया कि डरो मत। मन्दहास करते हुए वह पुरुषसिंह के समान उठा। तब उसका बहुत बड़ा सिर आकाश से जा लगा, जहाँ मेघों का चढ़ जाना भी कठिन था। उसने अपने हाथ ऊपर उठाये और वे बाह्यलोक को छू गये। आकाश में व्यापते हुए वह ऊँचा बढ़ा। ८६१

अॆडुत्तुयर् चुडर्प्पुय मिरण्डुमॆयि ऱॆन्ऩ
मरुत्तुमह नप्पडि यिडन्दुऱ वळर्न्दान्
करुत्तुनिमिर् कण्णिनॆदिर् कण्डवर् कलङ्ग
उरुत्तुल हॆडुत्तहरु मावित्तियु मौत्तान् 862

मरुत्तु मकन्–मरुतपुत्र; ऍट्टुत्तु उयर्–उठाये गये उन्नत; चुटर् पुयम् इरण्टुम्–दीप्तियुत दोनों हाथों को; ऍयिऱु ऍन्ऩ–दाँतों के समान शोभित होने देते हुए; निमिर् कण्णिन् ऍतिर्–ऊँची उठी हुई आँखों के सामने; कण्टवर्–देखनेवाले; करुत्तु कलङ्क–चित्ताक्रान्त हों, ऐसा; अ पटि इटन्तु–उस बिल (के ऊपरी भाग) को चीरकर; उऱ वळर्न्तान्–ऊँचा बढ़ा; उलकु उरुत्तु ऍट्टुत्त–भूमि को क्रोध के साथ जिन्होंने उठाया; करु मावित्तियुम्–बड़े आकार के वराह के; ऒत्तान्–समान लगा। ८६२

वायुपुत्र के दोनों उठे हुए उज्ज्वल हाथ दाँतों के समान लगे। वह ऐसा बढ़ गया कि उसको जिस किसी ने भी सामने से देखा उसका जी धक हो जाय। तब वह उस वराह (अवतार) के समान लगा, जिसने भूमि को (असुर पर) गुस्से के साथ अपने दाँतों के भीतर उठा लिया था। ८६२

मावडि वुडैक्कमल नान्मुहन् वहुक्कुम्
तूवडि वुडैच्चुडर्होळ् विण्डलै तॊळैक्कुम्
मूवडि कुऱित्तुमुऱै यीरडि मुडित्तान्
पूवडि वुडैप्पोरुविल् शेवडि पुरैन्दान् 863

मा वटिवु उटै–श्रेष्ठ रूपवान; कमलम् नान् मुकन्–नाभिकमलभव चतुर्मुख द्वारा; वकुक्कुम्–सृष्ट; तू वटिवु उटै–पवित्र दृश्य; चुटर् कोळ्–व (सूर्य और चन्द्र दो) तेजपुंजों से युक्त; विण्–आकाश के; तलै–उच्च भाग को; तॊळैक्कुम्–छेदकर; जो गया; मू अटि कुऱित्तु–तीन 'चरण' भर भूमि माँगकर; मुऱै–क्रम से; ईर् अटि मुटित्तान्–दो चरणों मे ही नाप (जिन्होंने) लिया; पू वटिवु उटै–(उन) सुन्दर-रूप; पोरुवु इल्–अप्रतिम; चे अटि–श्रीचरणों की; पुरैन्तान्–समानता कर रहा था। ८६३

बड़े ही सुरूप (विष्णु के) नाभि-कमल से उत्पन्न चतुर्मुख से रचित पवित्ररूप सूर्य आदि तेजपुंजों से युक्त आकाश की छत को चीरते हुए

त्रिविक्रम का सुन्दर चरण गया था, जिन्होंने बलि से तीन चरणों की उतनी भूमि माँगी थी और आकाश और भूमि को दो ही चरणों में नाप लिया। हनुमान उस सुन्दर और लाल श्रीचरण के समान भी लगा। ८६३

एल्ऴिरुब दोशनै यिडन्दुपडि यिन्मेल्
ऊऴुउ वॆऴुन्ददनै युम्बरु मोंडुङ्गप्
पाऴिपोंरु वन्बिलनु णिन्ऱुपडर् मेल्बाल्
आऴियि नॆरिन्दनुम नाऴियॆंन वार्त्तान् 864

अनुमन्-हनुमान; एऴ् इरुपतु योचनै इटन्तु-एक सौ चालीस योजन का छेद बनाकर; पाऴि पोरु-गुहा-सम; वल् पिलत्तुऴ् निन्ऱु-कठोर बिल के अन्दर से; पटियिन् मेल्-भूमि पर; ऊऴ् उऱ ॲऴुन्तु-क्रम से चढ़कर; अततै-उस बिल-नगर को; उम्परुम् ओंट्टुङ्क-देवों को भी भयभीत होने देते हुए; पटर् मेल् पाल् आऴियिन्-विशाल पश्चिमी सागर में; ॲऱिन्तु-फेंककर; आऴि ॲन-समुद्र के समान; आर्त्तान्-गरजा। ८६४

हनुमान उस बिल के एक सौ चालीस योजन विस्तार के भाग को चीरकर ऊपर भूमि पर आया। फिर उस नगर को उसने देवों के मन में भय भरते हुए उठाकर विस्तृत सागर में फेंक दिया। फिर वह सागर के समान नाद कर उठा। ८६४

ॲन्ऱुमुळ मेल्हड लियक्किल्बिल तीवा
निन्ऱुनिलै पॆऱ्ऱुळदु नीणुदलि योडुम्
कुन्ऱुपुरै तोळव रॆऴुन्दुनॆऱि कोंण्डार्
पोन्ऱिणि विशुम्बिन्निडै नन्नुदलि पोनाळ् 865

ॲन्ऱुम् उळ-सदा रहनेवाले; मेल् कटल्-पश्चिमी सागर में; इयक्कु इल्-अनश्वर; पिल तीवु आ-बिलद्वीप के नाम से; निन्ऱु निलै पॆऱ्ऱुळतु-विद्यमान और स्थायी है; नीळ् नुतलियोटुम्-लम्बे ललाट वाली (स्वयंप्रभा) के साथ; कुन्ऱु पुरै-पर्वत-सम; तोळवर्-कन्धों वालों ने; ॲऴुन्तु-निकलकर; नॆऱि कोंण्टार्-अपनी राह ली; नल् नुतलि-सुन्दर ललाट वाली; पोन् तिणि-स्वर्णजड़ित; विचुम्पिन्निटै-देवनगर में; पोनाळ्-चली। ८६५

वह नगर अब भी सदा रहनेवाले पश्चिमी सागर-मध्य बिलद्वीप नाम के साथ विद्यमान है। पर्वतोन्नत कन्धों वाले वानर वीर स्वयंप्रभा के साथ बाहर आये। उन्होंने आगे का मार्ग लिया। सुन्दर ललाट वाली स्वयंप्रभा स्वर्णमय स्वर्गपुरी चली। ८६५

मारुदिवलित् तहैमै पेशिमऱ वोरुम्
पारिडै नडन्दुपह लॆल्लंबड रप्पोय्

नीरुडैय पॉय्हैयिनि नीळ्हरै यडैन्दार्
तेरुडै नॅडुन्दहैयु मेलैमलै शॅन्ऱान् 866

मऱवोरुम्–वीर भी; मारुति वलि तर्कमे–मारुति का बल-विक्रम; पेचि–कहते हुए; पकल् ऍल्लै पटर–दिन के अन्त तक; पारिटै नटन्तु–भूमि पर पैदल; पोय्–चलकर; नीर् उटैय पॉय्कैयिन्–जल-भरे एक तड़ाग के; नीळ् करै–दीर्घ तीर पर; अटैन्तार्–पहुँचे; तेरुटै नॅटु तकैयुम्–एकचक्ररथी महिमावान देव (सूर्य) भी; मेलै मलै–पश्चिमी (अस्त-) गिरि; चॅन्ऱान्–गये। ८६६

पराक्रमी वानर वीर हनुमान के बल की स्थिति की प्रशंसा के वचन कहते हुए दिन के अन्त तक चले और एक जलाशय के बड़े तट पर आये। तब एकचक्ररथी सूर्यदेवता भी पश्चिमी (अस्त) अचल पहुँच गया। ८६६

14. आऱु शॅल् पडलम् (मार्ग-गमन पटल)

कण्डार् पॉय्हैक् कण्णह नन्नीर् कैयार
उण्डार् तेनु मॊण्गनि कायु मॊरुशूळ्ल्
कॊण्डा रत्तुयि विन्ऱुयिल् कॊण्ड कुऱियुत्तनित्
तण्डा वॅन्ऱित् तानवन् वन्दान् ऱहविल्लान् 867

कण्टार्–देखकर; कण् अकल्–विशाल; पॉय्कै–जलाशय में; नल् नीर्–अच्छे जल को; कै आर–हाथों से खूब उठाकर; उण्टार्–(वानरों ने) पिया; तेनुम्–शहद और; ऒण् कति कायुम्–श्रेष्ठ फल और खाद्य कच्चे फलों को; उण्टार्–खाया; ऒरु चूळल्–एक ओर; इन् तुयिल् कॊण्टार्–सुख से सो गये; कॊण्ट कुऱि उन्नि–उनके निद्रामग्न होने का आसरा पाकर; तण्टा वॅन्ऱि–अप्रतिहत विजयशील; तकवु इल्लान्–गुणहीन; तानवन्–एक दानव; वन्तान्–वहाँ आया। ८६७

वानर वीरों ने उस सरोवर को देखा और उस विशाल जलाशय से जल उठाकर जी-भर पिया। शहद पिया और वहाँ प्राप्त मधुर फलों को खाया। फिर वे वहाँ एक ओर लेटे और सो गये। उनके सोने की टोह पाकर एक दानव उधर आया, जो अच्छे गुण वाला नहीं था और जो अक्षुण्ण विजयशील था। ८६७

मलैये पोल्वान् माल्हड लॊपपान् मऱमुऱ्ऱिक्
कॊलैये शॅय्वान् कूऱ्ऱै निहर्प्पान् कॊडुमैक्कोर्
निलैये पोल्वा नीर्मै यिलादा निमिर्तिङ्गळ्
कलैये पोलुङ् गाल वॅयिऱ्ऱान् कनल्कण्णान् 868

मलैये पोल्वान्–पर्वत ही सम; माल् कटल् ऒप्पान्–विशाल समुद्र के समान; मऱम् मुऱ्ऱि–कठोरता में बढ़ा हुआ; कॊलैये चॅय्वान्–हत्या करनेवाला; कूऱ्ऱै निकर्प्पान्–यम की समानता करनेवाला; कॊटुमैक्कु–क्रूरता का; ओर् निलैये–एक आश्रयस्थान; पोल्वान्–सम रहनेवाला; नीर्मै इलातान्–किसी भी अच्छे गुण से

विहीन; निमिर्–आकाश में उठकर शोभित रहनेवाले; तिङ्कळ् कलैये पोल्म्–चन्द्र-कला के समान; काल अॅयिर्‌रान्–भयंकर दन्तुला; कतल् कण्णान्–अग्निसम आँखों वाला। ८६८

वह पर्वत के ही समान आकार का और समुद्र के समान काला और लम्बा-चौड़ा था। वह अत्यधिक नृशंसकारी घातक यम के समान था। अत्याचार का आगार था। अच्छा गुण उसमें कोई नहीं था। उसके वक्र दाँत आकाश में उठे अर्धचन्द्र के समान थे। धधकती आँखों वाला था। ८६८

करुवि मामळै कैह डाविमी, दुरुव मेनिशॅन् रुलवि यॉर्‌रलाल्
पॉरुविन् मारिमे लॉळुहु पॉर्‌पित्ताल्, अरुवि पाय्दरुङ् गुन्‌र मेयनान् 869

करुवि–(लोकवृद्धि का) साधन; मा मळै–बड़े मेघ; कैकळ् तावि–उसके हाथों में कूदकर; मेनि मीतु–शरीर पर; उरुवि चॅन्‌रु–सरककर; उलवि–फैलकर; ऑर्‌रलाल्–जमे रहते है, इसलिए; पॉरुवु इल् मारि–समता-रहित बारिश; मेल् ऑळुकु–उसके ऊपर गिरती है; पॉर्‌पिताल्–उस शोभा से; अरुवि पाय् तरुम्–जिस पर सरिताएँ बहती हैं, वैसी; कुन्‌रमे अन्नान्–गिरि के ही समान रहनेवाला। ८६६

मेघ, जो लोकसमृद्धि के कारण हैं, उसके हाथों में कूदते और उसके शरीर पर चलते जम जाते। और उपमाहीन बारिश भी उस पर गिरती थी। इसलिए वह सरिताओं से युक्त पर्वत के समान लगता था। ८६९

वान वर्क्कुमर् रवर्व लिक्कुनेर्, तान वर्क्कुमे वरिय तन्मैयान्
आन वक्कल नवनॉ डाडवे, रेन वर्क्कुमोन् रॅण्ण वॉण्णुमो 870

वानवर्क्कुम्–देवों; मर्‌रु–और; अवर् वलिक्कु–उनकी वीरता की; नेर् तानवर्क्कुम्–समानता करनेवाले दानवों के लिए भी; मेवु अरिय–अजेय; तन्मैयान् आन–स्वभाव वाला; अ कलन्–वह खल था; अवनॉटु आट–उसके साथ लड़ना; वेरु एनवर्क्कुम्–अन्य किसी के लिए भी; ऑन्‌रु ॲण्ण ऑण्णुमो–कुछ सोचने योग्य हो सकेगा क्या। ८७०

वह इतना बलशाली था कि देव और उनके समान बली दानव उसको जीत नहीं सकते थे। तब उस खल के साथ युद्ध करने की बात कोई सोच ही सकता है क्या ? । ८७०

पिरङ्गु पङ्गियान् पॅयरुम् वॅट्पिनिल्
करङ्गु पोन्‌ऱुळान् पिशैयुङ् गैयिनान्
अरङ्गॊळ् शिन्दयार् नॅरिशॅ लयर्विनाल्
उरङ्गु वारैवन् दॊल्लै यॅय्दिनान् 871

पिरङ्कु पङ्कियान्–ध्यानाकर्षक केश वाला; पॅयरुम् पॅट्पितिल्–चलने के प्रकार में; करङ्कु पोन्‌ऱुळान्–पतंग की गति वाला; पिचैयुम् कैयिनान्–हाथ मलते हुए;

अऱम् कॊळ् चिन्तैयार्–धर्मरत मन वाले; नॆऱि चॆल् अयर्विताल्–मार्ग-गमन की थकावट से; उऱङ्कुवारै–सोनेवाले उनके पास; ऒल्लै वन्तु–तेजी से आकर; ऎय्तिनान्–पहुँचा। ८७१

ध्यान आकर्षित करते हुए विद्यमान केश वाला, गति में पतंग के समान वह अपने हाथों को मलता हुआ पथ-श्रान्त, निद्रामग्न, धर्म-चित्त वानरों के पास आया। ८७१

पॊय्है यॆऩ्ऩदॆऩ् ऱुणर्न्दुम् बुल्लियोर्
ऎय्दि नार्हळ्या रिदुवॆ ऩावॆऩा
ऐय ऩङ्गद नलङ्गऩ् मार्विऩिल्
कैयिऩ् मोदिनाऩ् काल नेयनाऩ् 872

कालऩे अऩाऩ्–यम ही सम; पॊय्कै–जलाशय; ऎऩ्ऩतु ऎऩ्ऱु–मेरा है, यह; उणर्न्तुम्–जानकर भी; पुल्लियोर् क्षुद्र; यार् ऎय्तिऩार्कळ्–कौन आये हैं; इतु ऎऩा–यह क्या है; ऎऩा–कहते हुए; ऐयऩ् अङ्कतऩ्–नायक अंगद के; अलङ्कल् मार्पिऩिल्–मालाधारी वक्ष पर; कैयिऩ् मोतिऩाऩ्–हाथों से पीटा। ८७२

यम-सम उस दानव ने ऐसा कहते हुए अंगद के मालालंकृत वक्ष पर अपने हाथों से प्रहार किया कि ये क्षुद्र लोग कौन हैं, जो यह जानकर भी इस सरोवर पर आये हैं कि यह मेरा है। यह क्या है, क्या है यह ? । ८७२

मऱ्ऱ मैन्दनु मुऱक्क माऱिऩाऩ्
इऱ्ऱि वन्गॊला मिलङ्गै वेन्दॆऩा
ऎऱ्ऱि नाऩैने रॆऱ्ऱि ऩाऩवऩ्
मुऱ्ऱि ऩाऩिहऱ् कादि मूर्त्तियाऩ् 873

अ मैन्ततुम्–उस बलिष्ठ कुमार ने भी; मऱ्ऱु–उस पर; उऱक्कम् माऱिऩाऩ्–निद्रा से छूटकर; इऱ्ऱु–अब; इवऩ्–यह; इलङ्कै वेन्तु कॊल् आम्–लंकाधिपति ही है शायद; ऎऩा–ऐसा सोचकर; ऎऱ्ऱिऩाऩै–पीटनेवाले उसे; नेर् ऎऱ्ऱिऩाऩ्–बदले में पीटा; इकऱ्कु–बल का; आति मूर्त्तियाऩ्–आदिदेव-सम; अवऩ्–वह; मुऱ्ऱिऩाऩ्–समाप्त हुआ। ८७३

उस बली अंगद ने भी निद्रा से जागकर पीटनेवाले उस दानव का "क्या यही लंकाधिपति है शायद" —यह सोचते हुए प्रतिप्रहार किया। पराक्रम के अधिष्ठाता के समान लगनेवाला वह दानव इस प्रकार से आहत होकर मर गया। ८७३

इडियुण् डाङ्गणो रोङ्ग लिऱ्ऱदॆऩ्
तडियुण् डाऩ्ऱळर्न् दलऱि वीऴ्दलुम्

तॊडियिन् ड्रोळ्विशैत् तॆळ्न्दु शुऱ्ऱिऩार्
पिडियुण् डारॆऩत् तुयिलुम् बॆऱ्ऱियार् 874

आङ्कण्–तब; ओर् ऒङ्कल्–एक पर्वत; इटि उण्टु–वज्राहत हो; इऱ्ऱु ऒऩ्ऱु–ढहकर गिरा हो, ऐसा; अटि उण्टाऩ्–पीटा जाकर; तळर्न्तु–निर्बल हो; अलऱि वीऴ्तलुम्–चिल्लाते हुए जब वह गिरा; पिटि उण्टार् ॲऩ–भूत-ग्रस्तों के समान; तुयिलुम् पॆऱ्ऱियार्–सोने की स्थिति में रहे वे; तॊटियिऩ् तोळ्–कंकणभूषित भुजाओं को; विचैत्तु–हिलाते हुए; ॲऴुन्तु–उठकर आये और; चुऱ्ऱिऩार्–उसे घेर गये। ८७४

अगद से पीटा जाकर वह दानव वज्राहत पर्वत गिरता हो जैसा बल खोकर चिल्लाते हुए नीचे गिर गया। तब भूतग्रस्त के समान जो रहे थे, वे वानर जागे और वलयभूषित भुजाओं को हिलाते हुए आकर अंगद को घेर गये। ८७४

यार् हॊलामिव ऩिळैत्त दॆऩ्ऩॆऩ्ऩाल्, तारै शेयिऩैत् तऩिवि ऩायिऩाऩ्
मारु देयऩ्मऱ् ड्रवऩुम् वाय्मैशाल्, आरि यादॆरिन् दऱिहि लेऩॆऩ्ऱाऩ् 875

इवऩ् यार् कॊल् आम्–यह कौन हो सकता है; इऴैत्तत्तु ॲऩ्–इसका किया हुआ क्या; ॲऩ्ऩा–ऐसा; मारुतेयऩ्–वायुपुत्र ने; तारै चेयिऩै–तारासुत से; तऩि विऩायिऩाऩ्–विशेष रूप से प्रश्न किया; अवऩुम्–उसने भी; वाय्मै चाल्–सत्यनिष्ठ; आरिया–श्रेष्ठ; तॆरिन्तु अऱिकिलेऩ्–जानता-समझता नहीं; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा (उत्तर में)। ८७५

वायुपुत्र ने तारापुत्र से विशेष रूप से प्रश्न किया कि यह कौन है? इसने क्या किया? तब अंगद ने उत्तर दिया कि हे सत्यसन्ध साधु! मैं कुछ नहीं जानता-समझता। ८७५

याऩि वऩ्ऱऩैत् तॆरिय वॆण्णिऩेऩ्, तूनि वन्दवेऱ् ड्रुमिर ऩॆऩ्ऩुम्बे
राऩिव् वाऴ्बुऩऱ् पॊय्है याळुमोर्, ताऩ वऩ्ऩॆऩच् चाम्बन् शाऱ्ऱिऩाऩ् 876

चाम्पऩ्–जाम्बवान ने; याऩ् इवऩ् तऩै–मैंने इसके सम्बन्ध में; तॆरिय ॲण्णिऩेऩ्–जानने के विचार से सोचा; तू निवन्त–(शत्रु-) मांसपूर्ण; वेल्–भालाधारी; तुमिरऩ् ॲऩ्ऩुम् पेराऩ्–धूम्र नाम का है; इ आऴ् पुऩल्–इस गहरे जल के; पॊय्कै–सरोवर का; आळुम्–शासन करनेवाला; ओर् ताऩवऩ्–एक दानव है; ॲऩ–ऐसा; चाऱ्ऱिऩाऩ्–कहा। ८७६

तब जाम्बवान ने कहा कि मैंने इसके सम्बन्ध में खूब सोचकर देखा। शत्रु-मांसावृत भालाधारी यह धूम्र नाम का है। इस सरोवर का स्वामी और रक्षक है एक दानव। ८७६

वेरु मॆय्दुवा रुळर्हॊ लामॆऩ्ऩाल्, तेऱि यिऩ्ऱुयिर् शॊलवु तीर्न्दुळार्
वीरु शॆऩ्ऱुडर्क् कडवुळ् वेलैवाय, नाऱ नाणमलर्प् पॆण्णै नाडुवार् 877

वेरुम्–अन्य भी; ऍय्तुवार् उळर्–आनेवाले होंगे; कॉलाम् ऍन्ता–शायद क्या, ऐसा शंकित होकर; इऩ्ऩ् तुयिल् तेऱ्ऱि–मधुर निद्रा से जागकर; चॅलवु तीर्न्तु उळार्–आगे जाना जिन्होंने रोका था, वे वीर; वीरु–गौरवमय; चॅम् चुटर् कटवुळ्–लाल किरणों के स्वामी सूर्य के; वेलै वाय् नाऱ–सागर के ऊपर उग आने पर; नाण् मलर्–सद्यविकसित कमल की; पॅण्णै–देवी की; नाटुवार्–खोज करते हुए चले । ८७७

वानर वीर यह शंका करते हुए आगे जाना रोककर खड़े रहे कि इसके अनुकरण में और कुछ लोग भी आ सकते हैं। अब गौरववान सूर्य पूर्वी सागर के ऊपर उग आया। इसलिए वे नवविकसित कमलासना श्री लक्ष्मीदेवी (के अवतार, सीता) की खोज में आगे जाने लगे। ८७७

पुण्णै वॅम्मुलैप् पुळिन मेय्तडत्, तुणुण वाम्बलिन् नमिळ्द मूरुवाय्
वण्ण वॅण्णहैत् तरळ वाण्मुहप्, पॅण्णै नण्णिनार् पॅण्णै नाडुवार् 878

पॅण्णै नाटुवार्–देवी को खोजते जानेवाले; पुळ् नै–चक्रवाक पक्षी जिनको देखकर इस बात से दुःखी होते हैं (कि हम इनकी समानता न कर पाते); वॅम् मुलै–ऐसे स्तनों के स्थान में; पुळिनम् एय्–बालू के टीलों से युक्त; तटत्तु–तटों से; उण्ण–पान करने पर; अमिळ्तम् ऊरुम्–अमृत बहानेवाले; आम्पलिन् वाय्–लाल कुमुद रूपी अधरों से; वण्ण वॅळ् नकै–श्वेत रंग के दाँतो के स्थान में; तरळम्–मोतियों से; वाळ् मुकन्–कमल रूपी सुन्दर मुखो से शोभित; पॅण्णै–"पॅण्णै" (के पास); नण्णिनार्–पहुँचे । ८७८

सीताजी की खोज में लगे वे 'पॅण्णै' नाम की नदी पर आये। ('पॅण्' का अर्थ तमिळ में 'स्त्री' है। उसका कर्म कारक 'पॅण्णै' होता है। कवि का चातुर्य यह बताता है कि 'पॅण्' की खोज में लगे वे 'पॅण्णै' के पास आ गये। फिर श्लेष के द्वारा उस नदी और 'पॅण्' या 'स्त्री' में साम्य दिखाता है।) नदी के मध्य बालू के टीले (पुलिन) थे, वे ऐसे स्तनों के स्थान में रहे, जिनके कारण चक्रवाक पक्षी दुःखी होते हैं। (मानव-स्तनों से हार मानकर वे दुःखी होते हैं। पुलिनों पर पहुँचने के लिए वे लालायित होते हैं।) पान करने पर अमृत स्रवनेवाले अधर कुमुद हैं। श्वेत मुक्ताएँ दाँत है। कमल मुख है। ८७८

तुऱैयुन् दोहैनिऩ् ऱाडु सूळ्लुम्, कुऱैयुञ् जोलैयुङ् गुळिर्न्द शारनीर्च्
चिऱैयुन् वॅळ्ळुपून् दडमुन् दॅण्बळिक्, कऱैयुन् देडिऩा रऱिविऩ् कोडियार् 879

अऱिविऩ् कोटियार्–ज्ञानशिखर; तुऱैयुम्–घाटों; तोकै–मोर; निऩ्ऱु आटुम्–जहाँ स्थित होकर नाचते हैं; चूळ्लुम्–उन स्थानों; कुऱैयुम्–पुलिनों; चोलैयुम्–बागों; कुळिर्न्त चारल्–शीतल पवन करनेवाले; नीर् चिऱैयुम्–जलाशयों; तॅळ्ळु पूम् तटमुम्–स्वच्छ, सुन्दर उद्यानों; तॅळ् पळिक्कऱैयुम्–और शुद्ध स्फटिक चट्टानों पर; तेटिऩार्–ढूँढ़ा । ८७९

वे वानर वीर मूर्धन्य ज्ञानी हैं। उन्होंने स्नानघाटों, मयूर-नृत्य-स्थलों, पुलिनों और पास के बागों में सीताजी के लिए ढूँढ़ा। पवन को शीतल करनेवाले जलाशयों और सुगन्धित करनेवाले पुष्पोद्यानों में भी उन्होंने ढूँढ़ देखा। ८७९

अणिहॉ ळ्ठित्तुवन् दॅवरु माडिन्नार्, पिणिहॉ ळ्ठित्तवॅम् बिऱवि वेरिन्वन्
तुणिहॉ ळ्ठित्तरुम् जुळिह डोरुनल्, मणिहॉ ळ्ठित्तिडुन् दुऱैयिन् वैहिनार् 880

अणि कॉळ्ळित्तु वन्तु–सुन्दरता को पछोड़ (संग्रह कर) लेते हुए; आटित्तार् ॲवरुम्–स्नान करनेवाले हर किसी का; पिणि कॉळ्ळित्त–व्याधिग्रस्त; वॅम् पिऱवि वेरिन्–भयंकर जन्ममूल के; वन् तुणि कॉळ्ळित्तु–कठोर अंश लेते हुए; अरुम् चुळिकळ् तोरुम्–अगम भँवरों में; नल् मणि कॉळ्ळित्तिटुम्–श्रेष्ठ रत्न लेते हुए आनेवाली नदी के; तुऱैयिन्–एक घाट में; वैकिनार्–(वे वानर वीर) ठहरे। ८८०

वह पवित्र नदी सुन्दरता को मानों छाँट लेकर ग्रहण किये बहती थी। (वह मनोरम थी।) जो भी उसमें स्नान करते उनके भवबाधा के मूल, कठोर जन्म की जड़ के अंशों, और भँवरों में मणियों को लेती हुई आ रही थी। वे उस नदी के तट पर एक ओर ठहरे। ८८०

आडु पॅण्णैनी राऱु मेऱिनार्, काडु नण्णिनार् मलैह डन्दुळार्
वीडु नण्णिना रॅन्न वीवुनीर्, नाडु नण्णिनार् नाडु नण्णिनार् 881

नाटु नण्णितार्–अन्वेषण में लगे; आटु नीर्–स्नानयोग्य जल से भरी; पॅण्णै आऱुम्–'पॅण्णै' नामक नदी को; एऱितार्–पार करके; काटु नण्णित्तार्–अनेक जंगल पार किये; मलै कटन्तु उळार्–पर्वत पार किये; वीटु नण्णित्तार् ॲन्न–मानो मोक्षलोक गये हों, ऐसा; वीचु नीर्–जल-समृद्ध; नाटु नण्णित्तार्–एक देश के पास आये। ८८१

फिर सीताजी की खोज में प्रवृत्त होकर वे उस पवित्र नदी को तैरकर ऊपर तट पर चढ़े, जिसके जल में लोग आकर स्नान करते थे। आगे अनेक पर्वतों और वनों को पार कर एक जलसमृद्ध देश पर ऐसे आये मानो मोक्षलोक को आ गये हों। ८८१

तशन वप्पॅयर्च् चरळ शण्बहत्, तशन वप्पुलत् तहणि नाडॊरीइ
उशन वप्पॅयर्क् कवियु दित्तपेर्, इशैवि दर्प्पना डॅळिदि नॅय्दिनार् 882

तचनवम् पॅयर्–दशनव नाम के; चरळ चण्पकत्तु–सुन्दर चम्पकतरुओं से भरे; अचत्त अ पुलत्तु–खाद्यपदार्थोत्पादक भूमि से युक्त; अकणि नाटु–'मरुदम' (खेतों के) प्रदेश को; ऑरीइ–पार कर; उचन अ पॅयर्–'उशनस' नाम के; कवि–कवि (भगवान शुक्र); उतित्त–जहाँ जनमे उस; पेर् इचै–बड़े नामी; वितर्प्प नाटु–विदर्भदेश; ऍळितिन्–अनायास; ॲय्तितार्–जा पहुँचे। ८८२

उस देश का नाम दशनव था। उसमें चम्पकवन अधिक थे और खाद्योत्पादक धान के खेतों का 'मरुदम्' प्रदेश था। उसको पार कर वे विदर्भ देश में अनायास आये, जो उशनस-संज्ञित कवि शुक्र का जन्म-स्थान था। ८८२

वैद रुप्पमण् डलनिल् वन्दुपुक्, कॅय्द रुप्पमत् तनैयु मॅय्दिनार्
पॅय्द रुप्पैनूल् पिऱ्ऴु मेनियार्, शॅय्द वत्तुळार् वडिविऱ् ऱेडिनार् 883

वैतरुप्प मण्टलत्तिल्—विदर्भ देश में; वन्तु पुक्कु—आ प्रवेश करके; ॲय्तु अरुप्पम् अत्ततैयुम्—जाने योग्य सभी स्थानों में; ॲय्तितार्—गये; पॅय् तरुप्पै—(कमर में) दर्भ की बनी रस्सी और; नूल्—(वक्ष में) यज्ञोपवीत; पिऱ्ऴु मेत्तियार्—जिनको शोभित करते है, ऐसे शरीर वाले; चॅय् तवत्तु उळार्—श्रेष्ठ तप-मार्ग में प्रवृत्त; वटिविल्—ब्राह्मण (ब्रह्मचारियों के) वेश में; तेटित्तार्—(उन्होंने) सीता को खोजा। ८८३

विदर्भ देश में आकर वे सभी स्थानों में गये, जहाँ जाना था। वहाँ उन्होंने दर्भ की बनी करधनी और यज्ञोपवीत पहने हुए तपस्वी ब्राह्मणों के वेश में घूमकर ढूँढ़ा। ८८३

अन्न तन्मैया लरिञर् नाडियच्, चॅन्नॅल् वेलिशूऴ् तिरुनत् नाडॊरीइत्
तन्नै यॅण्णुमत् तहैपु हुन्दुळार्, तुन्नु दण्डहङ् गडिदु तुन्निनार् 884

अऱिञर्—विज्ञ वे; अन्न तन्मैयाल्—उस प्रकार से; नाटि—सीता का पता लगाने; अ—उस; चॅम् नॅल् वेलि चूऴ्—लाल रंग के धानों के खेतों से घिरे; तिरु नल् नाटु—श्रीसम्पन्न अच्छे देश को; ऒरीइ—छोड़कर; तन्नै ॲण्णुम्—आत्मध्यानलीन; अ तकै—रहने की उस स्थिति (समाधि) में; पुकुन्तुळार्—जो पहुँचे हैं; तुन्नु—उनसे भरे; तण्टकम्—दण्डक वन को; कटितु तुन्नित्तार्—शीघ्र पहुँचे। ८८४

विज्ञ वानर उस रीति से विदर्भ देश में सीताजी को खोजने के बाद लाल धानों के खेतों से पूर्ण उस देश को छोड़कर आगे चले। फिर दण्डकारण्य गये, जहाँ आत्मध्यानरत समाधिस्थ योगी बड़ी संख्या में रहते थे। ८८४

उण्ड हत्तुळा रुऱैयु मैम्बॊऱिक्, कण्ड हर्क्करुङ् गाल नायिनार्
दण्ड हत्तैयुन् दडवि येहिनार्, मुण्ड हत्तुऱै कडिदु मुऱ्ऱिनार् 885

उण्टु—विषय-सुख भोगते हुए; अकत्तुळ् आर्—शरीर में; उऱैयुम्—(रत) रहनेवाले; ऐम्पॊऱि कण्टकर्क्कु—पंचेन्द्रिय रूपी कंटकों के; अरुम् कालन् आयित्तार्—प्रबल यम जो बने हैं; तण्टकत्तैयुम्—उनके (वास के) दण्डक वन में भी; तटवि—खोजकर; एकित्तार्—आगे गये; मुण्टकत् तुऱै—मुण्डकघाट पर; कटितु मुऱ्ऱित्तार्—शीघ्र जा ठहरे। ८८५

वे पाँच इन्द्रिय रूपी कंटकों के, जो विषय-भोग करते हुए शरीर में रहते है, प्रबल शत्रु थे। उनके दण्डक वन को भी उन वीरों ने खूब

टटोलकर देखा। (सीताजी नहीं मिलीं।) वे आगे चले। फिर मुण्डकघाट नामक स्थान पर शीघ्र जा पहुँचे। ८८५

अळ्ळ नीरॅला ममरर् मादरार्, कॊळ्ळै मामुलैक् कलवै कोदैयिर्
कळ्ळु नारलिर् कमल वेलिवाळ्, पुळ्ळु मीनुणा पुलवु तीर्दलाल् 886

अळ्ळल् नीर् ॲलाम्–पंकिल जल सब; अमरर् मातरार्–देवांगनाओं के; मा मुलै–पीन स्तनों पर के; कॊळ्ळै कलवै–अधिक चन्दन ले; कोतैयिल् कळ्ळुम्–और माला के मधु की; नारलिल्–गन्ध से भरा है, इसलिए; कमल वेलि वाळ्–उस मुण्डकघाट में रहनेवाले; पुळ्ळुम्–पक्षी भी; पुलवु तीर्तलाल्–मांसगन्ध से रहित होने के कारण; मीन् उणा–मछलियाँ नहीं खाते। ८८६

वहाँ देवांगनाएँ आकर स्नान करती थीं। उनके स्तनों पर लगा अधिक चन्दनलेप और माला के फूलों पर का शहद वहाँ के जल के तल में रहनेवाला पंक को भी सुवासित कर देता था। अतः वहाँ की मछलियों ने अपनी स्वाभाविक दुर्गन्ध छोड़ दी और वहाँ के पक्षी उनको पकड़कर नहीं खाते थे। ८८६

कुञ्ज रङ्गुडैन् दॊळुहु कॊट्पदाल्, विञ्जै मन्नर्पाल् विरह मङ्गैमार्
नञ्जु वीणैयि नडत्तु पाडलान्, अञ्जु वार्हणी ररुवि यारॊ 887

विञ्चै मन्नर् पाल्–विद्याधर राजाओं की; विरक मङ्कै मार्–विरहिणी विद्याधर-स्त्रियाँ; नञ्चु–मन विगलित होकर; वीणैयिल्–वीणा पर; नटत्तु पाटलाल्–जो गीत स्वरित करते है, उनसे; अञ्चुवार्–प्रभावित स्त्रियों की; कण् नीर् अरुवि आऱु–आँखों के जल की बहनेवाली नदी में; कुञ्चरम्–गज; कुटैन्तु ऒळुकुम्–गोते लगाकर स्नान करते हैं; कॊट्पु अतु–ऐसी स्थिति का है वह। ८८७

उस मुण्डकघाट पर विरहिणी विद्याधर स्त्रियों के अपने विद्याधर राजाओं के विरह में वीणा के साथ गाये गये गानों को सुनकर वहाँ की स्त्रियाँ दुःख करती थीं और उनकी आँखों से अश्रुजल झरनों के समान बहने लग जाता था। वे नदियाँ इतनी बड़ी और गहरी थीं कि मातंग भी उनमें गोते लगाकर स्नान करते थे। ८८७

कमुह वार्नॅडुङ् गनह वूशलिल्, कुमुद वायिनार् कुयिलै येशुवार्
शमुह वाळियुन् दनुवुम् वाण्मुहत्, तमुद पाडलार् मरुवि याडुवार् 888

कुमुत वायिनार्–कुमुदमुख; कुयिलै एचुवार्–पिकहासिनी; चमुकम् वाळियुम्–शरसमूहों (सी आँखों) और; तनुवुम्–धनुओं (भौंहों) वाली; वाळ् मुकत्तु–उज्ज्वल मुखो वाली; अमुत पाटलार्–अमृत-मधुर गान करनेवाली (स्त्रियाँ); कमुक–क्रमुकतरुओं से बद्ध; वार् नॅटुम् कनक ऊचलिल्–लम्बे और ऊँचे झूलों पर; मरुवि आटुवार्–मिलकर झूलती हैं। ८८८

वहाँ क्रमुक पेड़ों से बद्ध स्वर्ण के झूलों पर स्त्रियाँ झूलती हुई आनन्द

मना रही थीं। उन स्त्रियों के अधर लाल कुमुद के समान थे। उनकी वाणी कोयल का परिहास करती थीं। उनके मुख उज्ज्वल थे, जिनमें शर-समूह के समान आँखें और धनुओं के समान भौहें थीं। वे सुधा के समान मधुर गीत गाती हुई झूल रही थीं। ८८८

इनैय वायवोॅण् डुरैयै यॅय्दिनार्, निनैयुम् वेलैवाय् नॅडिदु तेडुवार्
वनैयुम् वार्हुळन् मादैक् कण्डिलार्, पुनैयु नोयिनार् कडिदु पोयिनार् 889

इनैय आय–ऐसे एक; ऑळ् तुरैयै–सुन्दर घाट पर; ऍय्तितार्–पहुँचे; नॅटितु तेटुवार्–बहुत दूर और देर से खोज लगाते आनेवाले वे; वनैयुम् वार् कुळल्–सुन्दर लम्बे केश वाली; मातै–देवी को; कण्टिलार्–देख न पाये; पुनैयुम् नोयितार्–अधिकृत दुःख वाले बनकर; नितैयुम् वेलै वाय्–जब सोच रहे थे, तब; कटितु पोयितार्–शीघ्र चले। ८८९

ऐसे सुन्दर मुण्डकघाट पर आये और वे खूब छान-बीन कर खोजने लगे। बहुत देर तक खोजने पर भी वे सँवारे हुए केश वाली सीताजी को देख न पाये। दुःख से अभिभूत हो वे सोचने लगे। फिर वे वहाँ से आगे चले। ८८९

नीण्ड मेत्तिया नॅडिय ताळिनिन्, ड्रीण्डु कङ्गैवन् दिऴिव दॆन्ननलाय्प्
पाण्डु वम्मलै पडर्वि शुम्बिनैत्, तीण्डु हिन्ऱतण् शिहर मॆय्दिनार् 890

नीण्ट मेनियान्–त्रिविक्रमावतार में जिन्होंने बहुत बड़ा रूप धरा उनके; नॅटिय ताळिन् मिन्ऱु–दीर्घ चरण से; ईण्टु–यहाँ; कङ्कै वन्तु इऴिवतु–आकाशगंगा आकर गिरती है क्या; ऍन्तल् आय्–ऐसा मान्य; पाण्टु अम् मलै–पाण्डु नाम के उस पर्वत के; पटर् विचुम्पिलै तीण्टुकिन्ऱ–विस्तृत आकाश को छूनेवाले; तण् चिकरम्–शीतल शिखर पर; ऍय्तिनार्–पहुँचे ८९०

वे पाण्डुपर्वत के गगनचुम्बी शिखर पर पहुँचे। त्रिविक्रम के श्रीचरण को धोती हुई जो निकली वह गंगा मानो इधर आकर बह रही हो, वैसा शीतल लगता था वह (श्वेत वर्ण) पर्वत। ८९०

इरुळ रुत्तुमी दॆऴुन्द दॆण्णिला, मरुळ् रुत्तुवण् शुडर्व ऴङ्गलाल्
अरुळु रुत्तिला वडल रक्कन्मेल्, उरुळ् रुत्तिण् कयिलै यॊत्तदाल् 891

इरुळ् अऱुत्तु–अन्धकार काटकर; मीतु ऍऴुन्त–आकाश में उठा हुआ; तॆळ्निला–स्वच्छ चाँद; मरुळ् उऱुत्तु–मोहक; वण् चुटर्–घना प्रकाश; वऴङ्कल् आल्–फैलाता है, इसलिए; अरुळ् उऱुत् तुईला–दया के अनुत्पादक मन वाले; अटल् अरक्कन् मेल्–बली राक्षस (रावण) पर; उरुळ् उऱुत्त–उसे लुढ़काते हुए जिसने उसको दबाया; तिण् कयिलै–उस कठोर कैलास; ऒत्ततु–के समान थी (वह पाण्डु गिरि)। ८९१

वह उस कैलासपर्वत के समान लगा, जिसने निर्मम रावण को नीचे

लुढ़काते हुए दबोच दिया; क्योंकि उस पर संसार पर फैले हुए अन्धकार को मिटाते हुए जो चन्द्र आकाश पर उठा था, वह मादक और पुष्कल चाँदनी को उसके ऊपर बरसा रहा था। ८९१

विण्णुऱ निवन्द शोदि वॆळ्ळिय कुन्ऱ मेविक्
कण्णुऱ नोक्क लुऱ्ऱार् कळियुऱक् कत्तिन्द कामर्प्
पण्णुऱु क्किळविच् चॆव्वायप् पडैयुरु नोक्कि नाळै
ऍण्णुरु तिऱत्तुङ् गाणा रिडरुरु मनत्त रॅय्त्तार् 892

विण् उऱ–गगन छूते हुए; निवन्त–उन्नत; चोति–ज्योतिर्मय; वॆळ्ळिय कुन्ऱम् –श्वेत रंग के उस (पाण्डु) पर्वत पर; मेवि–चढ़कर; कण् उऱ नोक्कल् उऱ्ऱार्–सीताजी को (ढूँढ़) देखने के काम में प्रवृत्त; कळि उऱ–उनको आनन्द देते हुए; कत्तिन्त–सम्यक् बने; कामर् पण् उऱु–चाहनीय गीत के समान; किळवि चॆव्वाय्–बोली बोलनेवाले लाल अधर; पटै उऱु–(भाले, तलवार आदि) हथियारों के समान; नोक्कित्ताळै–आँखों वाली सीताजी को; ऍण् उऱु तिऱत्तुम्–ध्यान के साथ ढूंढ़े हुए सभी स्थानों में; काणार्–(कहीं भी) न देख पाकर; इटर् उऱु मनत्तर्–दुःख-ग्रस्त मन वाले होकर; ऍय्त्तार्–शिथिल हुए। ८९२

आकाश का स्पर्श करते हुए उन्नत ज्योतिमय उस श्वेत पर्वत पर जाकर खूब देखने लगे। पर मन को आनन्द देते हुए सुस्वरित मोहक गाने के समान बोली वाली और भाला, तलवार आदि के समान आँखों वाली सीताजी को न देख पाने के कारण दुःखी बनकर श्रान्त हुए। ८९२

ऊदैपोल् विशैयिन् वॆङ्ग णुळुवैपोल् वयव रोङ्गल्
आदियै यहत्तु शॆल्वा ररक्कनाल् वञ्जिप् पुण्ड
शीदपो हित्तराळ् कून्दल् वळीइवन्दु पुवनञ् जेर्न्द
कोदैपोऱ् किडन्द कोदा वरियिनैक् कुऱुहिच् चॆन्ऱार् 893

ऊतै पोल्–पवन-सदृश; विचैयिन्–वेगवान; वॆम् कण्–भयभीत करनेवाली आँखों के; उळुवै पोल्–बाघों के समान; वयवर्–वीर; ओङ्कल् आतियै–पर्वत आदि स्थान को; अकत्तु–छोड़कर; चॆल्वार्–आगे बढ़े; अरक्कनाल्–राक्षस (रावण-) द्वारा; वञ्चिप्पु उण्ट–अपहृत; चीतै पोकित्ताळ्–हो जानेवाली सीता के; कून्तल् वळीई वन्तु–केश से सरक आकर; पुवनम् चेर्न्त–भूमि पर पड़ी; कोतै पोल्–माला के समान; किटन्त–पड़ी हुई; कोतावरियिनै–गोदावरी के; कुऱुकिच् चॆन्ऱार्–समीप गये। ८९३

पवन के समान गति वाले और भयानक आँखों के बाघों के समान बलशाली वे वीर उस पर्वत को भी छोड़कर आगे बढ़े। सामने गोदावरी नदी दिखायी दी। वह सीताजी के, जो रावण से अपहृत हो जा रही थीं, केश से गिरी हुई माला के समान लगती थी। ८९३

ऍळुहिन्ऱ तिरैयिऱ् ऱाहि यिळिहिन्ऱ मणिनीर् याऱु
तॊळुहिन्ऱ शनहऩ् वेळ्वि तॊडङ्गिय शुरुदिच् चॊल्लाल्
उळुहिन्ऱ पॊळुदि नीन्ऱ वॊरुमहट् किरङ्गि ञालम्
अळुहिन्ऱ कलुळि वारि यामॆनप् पॊलिन्द दन्ऱे 894

ऍळुकिन्ऱ–उठनेवाली; तिरैयिऱ्ऱु आकि–तरंगों से युक्त होकर; इळिकिन्ऱ–पर्वत से झरनेवाली; मणि नीर् याऱु–मणिसम जल की नदी; तॊळुकिन्ऱ–वन्दनीय; चनकऩ् वेळ्वि तॊटङ्किय–जनकयज्ञारम्भार्थ; चुरुति चॊल्लाल्–वेदोक्त रीति से; उळुकिन्ऱ पॊळुतिऩ्–जोतते समय; ईन्ऱ–(भूमि द्वारा) दत्त; ऒरु मकट्कु–अप्रमेय देवी के; इरङ्कि–दुःख से सहानुभूति में कातर होकर; ञालम्–माता भूमि; अळुकिन्ऱ–जो रोयीं उससे निकली; कलुळि वारि आम्–अश्रुधारा है, ऐसा; पॊलिन्ततु–दृश्य देती रही। ८९४

उस पर तरंगें उठती-गिरती थीं। मणि-सम स्वच्छता के साथ वह नदी पर्वत से उतर रही थी। जब पूज्य जनक ने यज्ञारम्भ में वेदमन्त्रों के साथ हल चलाया तब भूमिदेवी ने सीता को जनाया था। उस अप्रतिम देवी को रावण हर ले गया और माता भूमि सहानुभूति से आँसू बहाने लगी। यह गोदावरी नदी उस भूमिदेवी की अश्रुधारा के समान लगती थी। ८९४

आशिल्पे रुलहिऱ् काण्बोर् अळवैनू लॆन्नलु माहिक्
काशोडु कऩहऩ् दूविक् कविन्ऱुक् किडन्द कान्या
ऱेशिल्पो ररक्कऩ् मार्बि ऩिडैपऱित् तॆरुवं वेन्दऩ्
वीशिय वडह मीक्को ळीदॆन विळङ्गिऱ् ऱन्ऱे 895

काचॊटु कऩकम् तुवि–रत्न व स्वर्ण छितराते हुए; कविऩ् उऱ–आकर्षणयुक्त; किटन्त काऩ् याऱु–बहनेवाली वह जंगली नदी; आचु इल्–दोषहीन; पेर् उलकिल्–इस बड़ी भूमि पर; काण्पोर्–उसको देखनेवाले; अळवै नूल् ऍऩलुम् आकि–तर्कशास्त्र-सम बनकर; ऍरुवै वेन्तऩ्–गीधों के राजा द्वारा; एचु इल्–अनिन्द्य; पोर् अरक्कऩ्–युद्धचतुर राक्षस (रावण) के; मार्पिऩ् इटै–वक्षमध्य से; पऱित्तु वीचिय–छीनकर फेंके हुए; मी कोळ् वटकम् ईतु ऍऩ–श्रेष्ठ रत्नहार क्या यह, ऐसा; विळङ्किऱ्ऱु–शोभित रही। ८९५

वह उन्मत्त नदी अपनी लहर-हस्तों द्वारा रत्न के साथ स्वर्ण बिखेरती हुई बह रही थी। वह अनिंद्य इस भूमि पर दर्शकों के लिए तर्कशास्त्र के समान शोभायमान थी। (तर्कशास्त्र अनेक अर्थों को देनेवाला है, यह नदी भी अनेक वस्तुओं को देनेवाली है।) वह रावण के रत्नहार के समान भी लगी, जिसको गीधों के राजा जटायु ने छीनकर फेंक दिया था। ८९५

अन्नदि मुळुदु नाडि याय्वलै मयिळै याण्डुम्
शन्निदि युऱ्ऱि लादार् नॆडिदुपिन् ऱविरच् चॆन्ऱार्

इन्ऩदी दिलाद दीदॆऩ् ऱियावैयु मॆण्णुङ् गोळार्
शॊऩ्ऩदी विनैह डीर्क्कुञ् जुवणहत् तुऱैयिऱ् पुक्कार् 896

इन्ऩतु ईतु—यहाँ यह है; इलातवु ईतु—जो नहीं है, वह यह है; यावैयुम्—(ऐसा जानकर) सभी को; ऍण्णुम् कोळार्—सोचकर देखने की प्रवृत्ति वाले; अ नति मुळ्ळुतुम्—उस नदी-प्रदेश भर में; नाटि—खोजकर; आय् वळै मयिलै—(श्रेष्ठ) चुने हुए कंकण-धारिणी मयूर-निभ सीता के; याण्टुम्—कहीं भी; चन्तितियुऱ्ऱिलातार्—दर्शन न करके; नॆटितु—लम्बे मार्ग को; पिन् तविर—पीछे छोड़ते हुए; चॆन्ऱार्—आगे बढ़े; चॊऩ्ऩ—शास्त्रों में कथित; तीविऩैकळ्—पापों का; तीर्क्कुम्—निवारण करनेवाली; चुवणकम्—शोणक (शोन); तुऱैयिऱ् पुक्कार्—के तट के प्रदेश में प्रविष्ट हुए। ८९६

वे वानर वीर बुद्धिमान थे। यहाँ रहता यह है, यहाँ यह नहीं रहता —इस तरह खूब सोच-समझनेवाले उन्होंने नदी तट पर सर्वत्र अन्वेषण किया। पर कहीं भी चुने हुए श्रेष्ठ कंकण वाली कलापी-सी सुन्दरी सीता को देख नही पाये। लम्बे मार्ग को तय करते हुए वे बढ़ते चले। फिर पापनाशक शोण नदी पर आये। ८९६

शुरुम्बॊडु तेनुम् वण्डु मऩ्ऩमुन् दुवन्ऱिप् पुळ्ळुम्
करुम्बॊडु शॆन्नॆऱ् काडुङ् गमलवा विहळु मल्हिप्
पॆरुम्बुनल् मरुदञ् जूळ्न्द किडक्कैपिन् किडक्कच् चॆन्ऱार्
कुरुम्बैनीर् मुरञ्जुञ् जोलैक् कुलिन्दमुम् पुऱत्तुक् कॊण्डार् 897

चुरुम्पॊट—भ्रमरों के साथ; तेतुम् वण्टुम्—मधुमक्खियाँ और अलिकुल; अन्ऩमुम्—और हंस; पुळ्ळुम्—और अन्य पक्षी; तुवन्ऱि—मिलकर; करुम्पॊटु—ईख के साथ; चॆ नॆल् काटुम्—शालि के खेत; कमल वाविकळुम्—कमलसर; मल्कि—अधिक हैं; पॆरुम् पुऩल्—अधिक जल के साथ; मरुतम् चूळ्न्त—'मरुदम्' प्रदेशों से आवृत; किटक्कै—स्थान; पिन् किटक्क—पीछे रह जाये, ऐसा; चॆन्ऱार्—जो गये; कुरुम्पै नीर्—डाभ; मुरञ्चुम्—जहाँ अधिक संख्या में हैं; चोलै—ऐसे नारियल के खेतों के बागों से पूर्ण; कुलिन्तमुम्—कुलिंद देश को भी; पुऱत्तु कॊण्टार्—पीछे छोड़ चले। ८९७

बाद वे उन जलसमृद्ध 'मरुदम' प्रदेशों को पार करके गये, जिनमें ईख और लाल धान के खेत भरपूर थे और जहाँ भ्रमर, मधुमक्खियाँ, हंस और अन्य पक्षी कसरत से पाये गये और अनेक कमल-सर थे। वे कुलिन्द देश में आये, जहाँ नारियल के फलों सहित नारियल के तरुओं के घने भाग थे। वहाँ खोजने के बाद उसको भी छोड़ वे बढ़े। ८९७

कॊङ्गण मेळु नीङ्गिक् कुडहडऱ् ऱरळक् कुप्पै
शङ्गणि पान्न नॆय्द ऱणबुऩ्न ऱविर वेहित्
तिङ्गळिऩ् कॊऴुन्दु शुऱ्ऱुञ् जिमयनीळ् कोट्टुत् तेवर्
अङ्गैहळ् कप्प निन्ऱ वरुन्ददिक् करुह रान्नार् 898

कोङ्कणम् एळुम्–कोंकण के सातों भागों को; नीङ्कि–छोड़कर; कुट कटल्–पश्चिमी सागर में उत्पन्न; तरळक् कुप्पै–मुक्ताओं के ढेर; चङ्कु–शंख; अणि पात्तल्–सुन्दर नीलोत्पल पुष्प; नॅय्तल्–'नॅय्दल' के फूल; तण् पुत्तल्–इनसे पूर्ण शीतल जलाशयों वाले प्रदेशों को; तविर एकि–छोड़ जाकर; तिङ्कळिन् कॉळुन्तु–चन्द्र-पल्लव, चाँदनी से; चुट्रुम्–आवृत; चिमय–शिखरों वाले; नीळ् कोट्टु–लम्बे शीर्ष भागों से युक्त; तेवर् अङ्कैकळ्–देवों के सुन्दर हाथ; कूप्प–जुड़े रहें, ऐसे; निन्ट्र–उन्नत; अरुन्ततिक्कु–अरुन्धती गिरि; अरुकर् आनार्–के समीपस्थ हुए। ८९८

फिर वे कोंकण देश के सातों भागों को पार करके उन स्थानों में गये जहाँ पश्चिमी सागर में उत्पन्न शंख, नीलोत्पल और 'नेय्दल' के फूल से भरी शीतल नीची ज़मीन थी। आगे वे अरुन्धती पर्वत के पास पहुँचे। उस पर्वत के शिखरों को चन्द्र का पल्लव रूपी चाँदनी आवृत करती थी। उसके शिखर ऊँचे थे। वह पर्वत इतना ऊँचा उठा हुआ था कि देवतागण भी उसके सामने अजलिबद्ध खड़े रहे। ८९८

अरुन्ददिक् करुहु शॅन्ट्राण् डळहिनुक् कळहु शॅय्दाळ्
इरुन्ददिक् कुणर्न्दि लादा रेहिना रिडैयर् मादर्
पॅरुन्ददिक् करुन्देन् माट्र मरहदप् पॅरुङ्गुन् ड्रॅय्दि
इरुन्ददिट्र् ट्रीर्न्दु शॅन्ट्रार् वेङ्गडत् तिरुत्त काले 899

अरुन्ततिक्कु–अरुन्धती गिरि के; अरुकु चॅन्ट्र–पास जाकर; आण्ट–वहाँ; अळकिनुक्कु–सुन्दरता को; अळकु चॅय्ताळ्–सुन्दरता प्रदान करनेवाली (अति सुन्दर); इरुन्त तिक्कु–(सीता) जहाँ रहीं, वह दिशा; उणर्न्तिलातार्–न जान सके; एकिनार्–जो जाते हुए; इटैयर् मातर्–ग्वालिन-स्त्रियाँ; पॅरुम् ततिक्कु–अपने अधिक दही को; अरुम् तेन् माट्रम्–वदले में देकर जहाँ अप्राप्य शहद प्राप्त करती हैं; मरकत पॅरुम् कुन्ट्र–बड़ी मरकतगिरि; ऍय्ति–पहुँचकर; इरुन्तु–(कुछ देर) ठहरकर; अतिल् तीरन्तु–उससे हटकर; चॅन्ट्रार्–आगे जाते बने; वेङ्कटत्तु–वेंकटगिरि पर; इरुत्त काले–जब आये रहे, तब। ८९९

अरुंधती के पास जाने पर भी उन्हें 'सुन्दरता कहँ सुन्दरता दिलानेवाली' सीताजी का पता नहीं लगा। वे आगे जाकर मरकतपर्वत पर आये, जहाँ गोपांगनाएँ अपना जमा हुआ दधि देकर उसके वदले में पर्वत-कुमारियों से शहद लेती थीं। वहाँ कुछ देर ठहरने के वाद उसको भी त्यागकर जब वे श्रीवेंकटगिरि पर आये, तो (देखा)। ८९९

मुनैवरु मरैव लोरु मुन्दैनाट् चिन्दै सूण्ड
विनैवरु नॅड्रियै माट्रु मॅय्युणर् वोरुम् विण्णोर्
ऍनैवरु ममरर् मादर् यावरुञ् जित्त रॅन्बोर्
अनैवरु मर्चि नन्नीर् नाळम्वन् दाड हिन्ट्रार् 900

मुत्तैवरुम्–महर्षियों; मऱैवलोरुम्–और वेदवित ब्राह्मणों ने; मुन्तै नाळ्–पूर्व-जन्म में; चिन्तै मूण्ट–मन लगाकर जो किया, उसके फलस्वरूप मिलनेवाले; वित्तै वरु नॅऱियै–जन्म-मार्ग को; माऱ्ऱुम्–बदलनेवाले; मॅय् उणर्वोरुम्–तत्त्वज्ञ और; विण्णोर् ॲत्तैवरुम्–सभी देवता; अमरर् मातर् यावरुम्–सभी देवांगनाएँ; चित्तर् ॲन्पोर् अत्तैवरुम्–सिद्ध जाति के सभी; अरुवि नल् नीर्–नदी के पवित्र जल में; नाळुम्–प्रतिदिन; वन्तु आटुकिन्ऱार्–आकर स्नान करते हैं। ६००

उस गिरि पर महर्षि लोग, वेदपाठी ब्राह्मण, वे तत्त्वज्ञ जो प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मिलनेवाले नरक-मार्ग को रोककर सन्मार्ग अपना सकते है, देवता लोग, देवांगनाएँ और सिद्ध लोग आकर वहाँ की पवित्र नदी में स्नान करते हैं। ९००

पॅय्द वैम्बॊऱि युम्बॅरुङ् गाममुम्, वैद वॅञ्जॊलुम् मङ्गैयर् वाट्कणित्
ॲय्द वञ्जह वाळियु मॅण्णरुच्, चॅय्द वम्बल शॅय्हुनर् देवराल् 901

तेवर्–देवता लोग; पॅय्त–मदमत्त; ऐम् पॊऱियुम्–पंचेन्द्रिय को; पॅरुम् काममुम्–बड़ी कामेच्छा को (और); वैत वॅम् चॊलुम्–गाली के कठोर वचनों; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; वाळ् कणित्–तलवार-सी आँखों से; ॲय्त–प्रेषित; वञ्चक वाळियुम्–वंचक (दृष्टि रूपी) शरों को; ॲण् अऱ–उनके अभिप्राय को नष्ट करते हुए (जीतकर); चॅय् तवम्–करणीय तप; पल चॅय्कुनर्–विविध रूप से करनेवाले बने है। ६०१

उस श्रीवेंकटाद्रि पर देवगण भोगाभिलाषी पञ्चेन्द्रिय, कामवासना, दूसरों की गाली के वचनों और स्त्रियो की तलवार-सम आँखों के फेंके हुए दृष्टि रूपी शरों पर विजय पाकर तपस्या कर रहे थे। ९०१

वलङ्गॊ णेमि मळैनिऱ वानवन्
अलङ्गु ताळिणै ताङ्गिय वम्मलै
विलङ्गुम् वीडुऱ हिन्ऱन मॅय्न्नॅऱिप्
पुलन्गॊळ् वार्हट् कनैयदु पॊय्क्कुमो 902

वलम् कॊळ् नेमि–विजयशील सुदर्शन चक्रधर; मळै निऱ वानवन्–मेघश्याम विष्णुदेव (वेंकटपति) के; अलङ्कु ताळ् इणै–शोभायमान चरणद्वय को; ताङ्किय–धारण करनेवाले; अ मलै–उस वेंकटाद्रि पर रहनेवाले; विलङ्कुम्–जानवर भी; वीटु उऱुकिन्ऱन–मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं; मॅय् नॅऱि–सच्चा मार्ग; पुलन् कॊळ्वार्क्कु–(पर) जाकर जितेंद्रिय बने हुओं के लिए; अनैयतु–वह मोक्षप्राप्ति; पॊय्क्कुमो–अप्राप्य हो सकती है क्या। ६०२

विजयशील सुदर्शनचक्रधर और मेघश्याम श्री विष्णुदेव के उज्ज्वल चरणद्वय के धारक उस वेंकटाचल पर रहनेवाले पशु भी मोक्ष को प्राप्त हो जाते है। तब उत्तम उपायों द्वारा इन्द्रियों का दमन जो कर चुके हैं, उन तपस्वियों के लिए मोक्ष चूका रहेगा क्या ? । ९०२

आय कुन्ऱिनै यॅय्दि यरुन्दवम्, मेय शॅल्वरै मेविन्नर् मॅय्न्नॅऱि
नाय हन्ऱनै नाळुम् वणङ्गिय, तूय नऱ्ऱवर् पादङ्गळ् शूडिनार् 903

आय कुन्ऱिनै—ऐसे उस पर्वत को; ऍय्ति—पहुँचकर; अरुम् तवम् मेय—कठिन तप में लगे हुए; चॅल्वरै—तपोधनों के पास; मेविन्नर्—जाकर; मॅय् नॅऱि नायकन् तन्नै—मोक्षदायक स्वामी श्रीवेंकटनाथ को; नाळुम् वणङ्किय—प्रतिदिन जिन्होंने पूजा की उन; तूय नल् तवर्—पवित्र श्रेष्ठ तपस्वियों के; पातङ्कळ् चूटिन्नार्—चरणों पर अपने सिर धरे। ९०३

वानरयूथप उस श्रीवेकटाचल पर गये। कठिन तप में लीन उन तपोधनो के पास पहुँचे। वे प्रतिदिन मोक्ष के स्वामी श्रीवेंकटाचलपति की पूजा करनेवाले थे। वानरों ने उन पवित्र और उत्तम तपस्वियों के पादारविन्द को अपने शीशों मे धर लिया (दण्डवत की)। ९०३

शूडि याण्डच् चुरिहुळऱ् ऱोहैयैत्, तेडि वार्पुनऱ् ऱॆण्डिरैत् तॊण्डैनन्
नाडु नण्णुहिन्ऱारमऱै नावलर्, वेड मेयिन्नर् वेण्डुरु मेवुवार् 904

वेण्टु उरु—मनमाने रूप; मेवुवार्—ले सकनेवाले वे, चूटि-चरणों पर सिर नवाकर; आण्टु—उस पर्वत पर; अ चुरि कुळल् तोकैयै—उन घुंघराले केशों वाली (सीता) को; तेटि—खोजकर; मऱै नावलर्—वेदवित ब्राह्मणों का; वेटम् मेयिनर्—वेश धरकर; तॆळ् तिरै—स्वच्छ लहरो वाले; वार् पुनल्—अधिक जल से भरे; तॊण्टै नल् नाटु—'तोण्डै' नामक श्रेष्ठ देश में; नण्णुकिन्ऱार्—पहुँचते हैं। ९०४

वे वानर कामरूप थे। वे पूर्वोक्त तपस्वियों के चरणों को नमस्कार करके उस पर्वत पर घुँघराले केश वाली सीताजी की खोज में लगे। पर वे मिलीं नही। अतः वेदवित ब्राह्मणों का वेश धरकर आगे गये और 'तॉण्डै' प्रदेश मे आये, जो तरंगों से पूर्ण श्रेष्ठ जलाशयों से समृद्ध था। ९०४

कुन्ऱु शूळ्न्द कडत्तॊडुङ् गोवलर्, मुन्ऱिल् शूळ्न्द पडप्पैयु मॊय्पुनल्
शॅन्ऱु शूळ्न्द किडक्कैयुन् दॆण्डिरै, मन्ऱु शूळ्न्द परप्पु मरुङ्गॆलाम् 905

कुन्ऱु चूळ्न्त—पर्वतो से घिरे हुए; कटत्तॊटुम्—जंगली (कंकड़ीले) प्रदेश; कोवलर् मुन्ऱिल् चूळ्न्त—ग्वालों के आँगनों को घेरते हुए रहनेवाले; पटप्पैयुम्—बाग और; मॊय् पुनल—अधिक जलराशि; चॅन्ऱु चूळ्न्त—जहाँ भरी रहती है; किटक्कैयुम्—ऐसे खेतों के प्रदेश; तॆळ् तिरै मन्ऱु—स्वच्छ तरंगों से आवृत; मन्ऱु चूळ्न्त—जहाँ बालू के टीले रहते हैं; परप्पुम्—ऐसे समुद्रतटीय प्रदेश; मरुङ्कु ऍलाम्—सर्वत्र (पाये जाते हैं, ऐसा देश है वह देश)। ९०५

उस 'तॉण्डै' देश में पाँचों प्रकार के भूभाग थे। पर्वतावृत कंकड़ीले जंगल (पालै); ग्वालों के आँगनों के सामने बाग; जलसमृद्ध 'मरुदम्' (खेतों के प्रदेश) और स्वच्छ समुद्री लहरों से आवृत बालू के स्थलों से

युक्त 'नॅयदल' (समुद्र-तटीय प्रदेश) आदि पाँचों भूभाग, कुरिञ्जि, मुल्लै, मरुदम्, नॅय्दल और पालै उस देश में पाये गये। ९०५

शूल डिप्पल विन्शुळै तूङ्गुदेन्, कोल डिप्प वॅरीइक्कुल मळ्ळरेर्च्
चाल डित्तरुञ् जालियिन् वॅण्मुळै, तोल डिक्किळै यन्नन् दुवैप्पन 906

कुलम् मळ्ळर्–झुण्डों में कृषक; एर् कोल् अटिप्प–जब जोतते और (बैलों को) वेत्र से मारते हैं; तोल् अटि–चमड़े से संयुक्त पैरों वाले; किळै अन्नम्–हंसों के समूह; वॅरीइ–डरकर; चूल् अटि–गर्भ (फल) को जड़ में ही धारण करनेवाले; पलविन् चुळै–कटहल के फलों से; तूङ्कु तेन्–चूनेवाले शहद द्वारा; चाल् अटि तरुम्–हल के द्वारा बने कूँड़ों में पले हुए; चालियिन् वॅळ् मुळै–शालि के श्वेत अंकुरों को; तुवैप्पन–पैरों से रौंदनेवाले बने हैं। ६०६

झुण्डों में कृषक हल जोतते है और बैलों को अपने बेंतों से पीटते है। उससे डरकर हंसकुल, जिनके पैर चमड़े से मिले हुए होते हैं, भागते हैं और कूँड़ों में उन शालि के अंकुरों को रौंद देते हैं। वे अंकुर उस कटहल के फलों के रस से उगे हैं। वे ऐसे कटहल के तरु हैं, जिनकी जड़ में ही कटहल के फल लगते है। ९०६

शॅरुहु रुङ्गणिर् रेङ्गु वळैक्कुलम्, अरुहु रङ्गुम् वयन्मरुङ् गाय्च्चियर्
इरुहु रङ्गु पिरङ्गिय वाळैयिर्, कुरुहु रङ्गुङ् गुयिलुन् दुयिलुमाल् 907

वयन् मरुङ्कु–खेतों में; चॅरु कुरुम् कणिल्–चंचल पुतलियों की आँखों के समान; तेम् कुवळै कुलम्–मधुमक्खियों-सहित कुवलय; अरुकु उरङ्कुम्–पास-पास सोते हैं (बन्द रहते है); आय्च्चियर्–ग्वालिनों के; इरु कुरङ्कु–दो ऊरुओं के समान; पिरङ्किय–शोभायमान; वाळैयिल्–कदली तरुओं पर; कुरुकु उरङ्कुम्–सारस सोते हैं; कुयिलुम् तुयिलुम्–कोयलें भी सोती हैं। ६०७

वहाँ के खेतों में कुमुद-कलियाँ मीलित हैं, जो अपने ऊपर रहनेवाली मधुमक्खियों के कारण ग्वालिनों की चंचल पुतलियोंसहित आँखों के समान लगती हैं। ग्वालिनों के पुष्ट ऊरुओं के समान केले के तरुओं पर सारस सोते हैं, कोयलें भी सोती हैं। ९०७

तॅरुवि नार्प्पुरुम् बल्लियन् देर्मयिल्, करुवि मामळै यॅन्रु कळिप्पुरा
पॉरुनर् तण्णुमैक् कन्नमुम् बोहल, मरुवि नार्क्कु मयक्कमुण् डाङ्गॉलो 908

तॅरुविन् आर्प्पु उरुम् वीथियों में बजनेवाले; पल्लियम्–वाद्यों को; तेर्–सुनकर समझनेवाले; मयिल्–मोर; करुवि मा मळै ॲन्रु–बारिश के कारणभूत मेघ समझकर; कळिप्पु उरा–मुदित नहीं होते; अन्नमुम्–हंस भी; पॉरुनर् तण्णुमैक्कु–नर्तकों के मृदंग-नाद से डरकर; पोकल–नहीं हटते; मरुविनार्क्कु–चिर-परिचितों में; मयक्कम् उण्टाम् कॉलो–भ्रम होगा क्या। ६०८

वीथियों में (सौधों के अन्दर से) विविध वाद्य बज उठते हैं। उनको सुनकर मोर यह समझकर खुश नहीं होते और नाचते कि वे बारिश के मूलभूत कारण जो मेघ है उनका गर्जन है। वैसे ही नर्तक लोगों के मृदंग की ध्वनि सुनकर हंस इस डर से नहीं भागते कि वह मेघगर्जन है। क्योंकि लोगों को परिचित वस्तुओं के सम्बन्ध में संशय या भ्रम हो सकता है क्या ? । ९०८

तेरै वॅन्ऱुयर् तॅङ्गिळम् पाळैयै, नारै यॅन्ऱिळङ् गॅण्डै नडुङ्गुव
तारै वन्ऱलैत् तण्णिळ वाम्बलैच्, चेरै यॅन्ऱु पुलम्बुव तेरैये 909

तेरै वॅन्ऱु–रथ को जीतकर; उयर्–ऊँचे उगे हुए; तॅङ्कु–नारियल के; इळम् पाळैयै–छोटे डण्ठलों को (बालों को); इळम् कॅण्टै–छोटी 'कॅण्डै' मछलियाँ; नारै ॲन्ऱु–सारस समझकर; नटुङ्कुव–भयभीत होती है; तारै–लम्बी; वन् तलै–बड़े अग्रभाग की; तण् इळ आम्पलै–शीतल छोटी कुमुदकलियों को; तेरै–दादुर (मेंढक); चेरै ॲन्ऱु–"शारै" साँप समझकर; पुलम्पुव–कलपते हैं। ९०९

रथों से भी ऊँचे नारियल के तरुओं पर सफेद डंठल दिखायी देते हैं। उनको देखकर 'केण्डै' नाम की मछलियाँ सारस समझ लेती है और भय खाती है। वैसे ही शीतल और बाल-कुमुद-कलियों को 'शारै' सर्प समझकर दादुर (मेंढक) डरते हैं और चिल्लाते है। ९०९

नळ्ळि वाङ्गु कडयिळ नव्वियर्, वॅळ्ळि वाल्वळै वीशिय वॅण्मणि
पुळ्ळि नारै शिनैपॉरि यादॅन्ऱु, रुळ्ळि यामै मुदुहि नुडैप्पराल् 910

नळ्ळि वाङ्कु–केकड़ों को पकड़नेवाली; इळ–जवान; कटै नव्वियर्–नीच जाति की मृगनयनियाँ; वॅळ्ळि वाल् वळै–श्वेत प्रकाशमय शंखों से; वीचिय–निकली हुई; वॅण् मणि–श्वेत मुक्ताओं को; पुळ्ळि नारै–चित्तियों वाले सारस के; पॉरियात चितै–न टूटे अण्डे; ॲन्ऱु–समझकर; आमै मुतुकिल्–कछुओ की पीठ पर; उटैप्पर्–तोड़ती है। ९१०

उस देश में नीचकुल की मृगनयनी नारियाँ केकड़े पकड़ती है। तब श्वेतशंखों से निकले श्वेत मोती पाये जाते हैं। वे उनको चित्तियों से भरे सारस के अण्डे समझ लेती है और उनको कछुए की पीठ पर मारकर तोड़ने का प्रयास करती है। ९१०

शेट्टि ळङ्गडु वन्शिऱु पुन्गैयिऱ्, कोट्ट तेम्बल विन्गनिक् कून्शुळै
तोट्ट मैन्दवॊ दुम्बरिऱ् ऱूङ्गुतेन्, ईट्ट मङ्गदिऱ् ऱोय्त्तिनि दुण्णुमाल् 911

चेट्टु इळम् कटुवन्–बहुत छोटी उम्र का बन्दर; चिऱु पुन् कैयिल्–अपने बहुत छोटे हाथ से; कोट्ट–डाल पर के; तेम् पलाविन् कनि–मधुर कटहल के फल के; कन् चुळै–वक्र कोओं को; तोट्टु–नोच लेकर; अमैन्त पॊतुम्परिल्–जहाँ वह रहा

उस बाग में; तूङ्कु तेन्–लगातार झरनेवाले शहद की; ईट्टम् अङ्कु अतिल्–वहाँ धार में; तोय्त्तु–मग्न कर लेकर; इन्तु उण्णुम्–मज़े के साथ खाता था। ६११

(उस तॉण्डै देश की समृद्धता देखिए:) एक छोटा वानर अपने छोटे हाथ से मीठे कटहल के फल से कोए नोच लेता है। वहाँ बाग में शहद लगातार झर रहा है। उसमें मग्न करके उस कोए को खाता है। ९११

अन्न तॉण्डैनल् नाडु कडन्दहन्, पॉन्नि नाडु पॉरुविल दॅय्दिनार्
शॅन्नॅ लुङ्गरुम् बुङ्गमु हुन्जॅरिन्, दिन्नल् शॅय्यु नॅरियरि देहुवार् 912

अन्न–ऐसे; तॉण्टै नल् नाटु–'तॉण्डै' नाम के अच्छे देश को; कटन्तु–पार करके; अकल्–विस्तृत; पॉरुवु इलतु–और अनुपम; पॉन्नि नल् नाटु–कावेरी के श्रेष्ठ देश; ऍय्तिनार्–पहुँचे; चॅम् नॅलुम्–लाल शालि के धान और; करुम्पुम्–ईख; कमुकुम्–और गुवाक के तरुओं से; चॅरिनतु–पूर्ण हो; इन्तल् चॅय्युम्–जो मार्ग कष्ट देता था; नॅरि–उस मार्ग में; अरितु एकुवार्–सायास गये। ६१२

ऐसे समृद्ध उस देश को पार कर वे कावेरी (पॉन्नि) देश में आये। उस विशाल देश में मार्ग सुगम नहीं था, क्योंकि ईख, शालि, क्रमुकतरु आदि उतने घने रूप से उगे हुए थे। ९१२

कॉडिरु ताङ्गिय वाय्क्कुळु नारैवाळ्, तडरु ताङ्गिय कूनिळन् दाळैयिन्
मिडरु ताङ्गुम् विरुप्पुडैत् तीङ्गनि, इडरु वार्नरुन् देनि निळुक्कुवार् 913

कॉटिरु ताङ्किय–जबड़ों के साथ युक्त; वाय्–चोंचों वाले; कुळु–झुण्डों में रहनेवाले; नारै वाळ्–सारस जहाँ रहते हैं; तटरु ताङ्किय–पत्ते ढोते हुए; कून–झुके हुए; इळम् ताळैयिन्–छोटी आयु के नारियल के पेड़ों के; मिटरु–गले में; ताङ्कुम्–धत; विरुप्पुटै–प्यारे लगनेवाले; तीम् कनि–मीठे फलों को (जो नीचे गिरे पड़े है); इटरु वार्–पैरों से ठोकर मारकर जो चलते हैं; नरुम् तेनिन्–वे वहाँ के सुवासित शहद में; इळुक्कुवार्–फिसलते बनते हैं। ६१३

सारस की चोंचों से चमड़े की थैली का-सा अंग लगा हुआ है। ऐसी चोंचों से युक्त सारस पक्षी उस देश में कसरत से पाये जाते हैं। उस देश में सब जगह डंठलों वाले नारियल के तरुओं के ऊपर से नारियल के प्यारे लगनेवाले मीठे फल गिर पड़े हैं। लोग पैदल चलते हैं तो उनसे ठोकर खाते हैं; और, पास शहद बहता रहता है और उसमें फिसल जाते हैं। ९१३

कुळुवु मीन्वळर् कुट्ट मॅनक्कॉळा, ऍळुवु पाड लिमिळ्हरुप् पेन्दिरत्
तॉळुहु शार्रहन् कूनेयि नूळ्वुऱै, मुळुहि नीर्क्करुङ् गाक्कै मुळैक्कुमे 914

करु नीर् काक्कै–काले करंड; कुळुवु–मिलकर; मीन् वळर्–मछलियाँ जहाँ पलती हैं; कुट्टम् ऍन्न–छोटे कुण्ड; कॉळा–समझकर; ऍळुवु–उठकर; पाटल् इमिळ्–गाने के समान स्वर देनेवाले; करुप्पेन्तिरत्तु–ईख के यन्त्रों (कोल्हुओं)

से; ओऴुकु–निकलकर जो बह रहा था; चाऱु–वह रस; अकन् कुऴैयिन्–भरे बड़े कुण्डों में; ऊऴ् मुऱै–क्रम से; मुऴुकि मुळैक्कुम्–गोते लगाकर उठते थे। ९१४

वहाँ ईख के कोल्हुओं से वहनेवाले इक्षुरस से भरे कुण्डे है। उनको काले रंग के करंड पक्षी मछलियों के साथ रहनेवाले कुण्ड समझकर उनमें बारी-बारी से गोते लगाते और ऊपर उठते हैं। ९१४

पूनॅ रुङ्गिय पुळ्ळुरै शोलैहळ्, तेनॅ रुङ्गु शॉरिदलिऱ् ऱेर्विल
मीनॅ रुङ्गुरुम् वॅळ्ळ मॅन्नावॅरीइ, वान रङ्गण् मरङ्गळिन् वैहुमाल् 915

पू नॅरुङ्किय–फूलों पर घने रूप से मिलकर मँड़रानेवाले; पुळ् उऱै–भ्रमर जहाँ रहते हैं; चोलैकळ्–वे बाग; तेन्–शहद; ऑरुङ्कु–अधिक; चॉरितलिन्–गिराते हैं, तो; तेर्विल–(सच्चाई) न जानकर; मीन् नॅरुङ्कुरुम्–मछलियों से भरा; वॅळ्ळम् ऍन्ना–प्रवाह समझकर; वॅरीई–डरकर; वानरङ्कळ्–वानर; मरङ्कळिन् वैकुम्–पेड़ों के ऊपर ही रह जाते है। ९१५

वहाँ के बागों में फूल अधिक हैं और उन पर भौंरे गूँजते, मँड़राते रहते हैं। वहाँ शहद इतना बहता है कि वानर उसमें मछलियों के साथ बहनेवाले प्रवाह का धोखा खाते है, और डर के मारे डालों से नीचे नहीं उतरते। ९१५

अनैय पॊन्नि यहन्बुन नाडॊरीइ, मनैयिन् माट्चि कुलामलै मण्डलम्
विनैयि नीङ्गिय पण्बिनर् मेयिनार्, इनिय शॆन्दमिऴ् नाडॆन् ऱॆय्दिनार् 916

विनैयिन् नीङ्किय–बुरे कर्म से छटे हुए; पण्पिनर्–श्रेष्ठ गुणी वे वानर; अनैय–उस समृद्ध; पॊन्नि अकल्–कावेरी-सिंचित विशाल; पुनल् नाटु–उर्वर प्रदेश (चोळ देश) को; ऑरीई–छोड़कर; मनैयिन् माट्चि–गृहस्थी का गौरव; कुलाम्–जहाँ विद्यमान था; मलै मण्टलम्–पार्वत्य देश (चेर देश); मेयिनार्–पहुँचे; इनिय चॅन्तमिऴ् नाटु–मधुर श्रेष्ठ तमिळ देश (पाण्ड्य देश); ऍय्तिनार्–पहुँचे। ९१६

बुरी प्रवृत्तियों से मुक्त और सुसंस्कृत वे वानरयूथप ऐसे समृद्ध, कावेरी-सिंचित और विशाल चोळ देश को पारकर पार्वत्यप्रदेश चेर नाडु मे आये, जहाँ गृहस्थी के सारे श्रेष्ठ गुण विद्यमान थे। बाद वे प्यारे और मधुर तमिळ (पाण्ड्य) देश में आये। ९१६

अत्ति रुत्तहु नाट्टिनै यण्डर्ना, डॊत्ति रुक्कुमॆन् ऱालुरै यॊक्कुमो
ॲत्ति रत्तिनु मेऴुल हुम्बुहऴ्, मुत्तु मुत्तमि ऴुन्दन्दु मुन्दुमो 917

अ तिरु तकु–उस श्रीसम्पन्न; नाट्टिनै–देश को; अण्टर् नाटु–देवलोक की; ऑत्तिरुक्कुम्–समानता करनेवाला; ऍन्ऱाल्–कहें तो; उरै ऑक्कुमो–कथन योग्य होगा क्या; ऍ तिरत्तिनुम्–किसी भी विध; एऴ् उलकुम् पुकऴ्–सातों लोकों में शंसित; मुत्तुम्–मोती और; मु तमिऴुम्–(गद्य, गीत, नाटक की) त्रिविधा तमिळ; तन्तु–देकर; मुन्तुमो–वह देवलोक बढ़ सकेगा क्या। ९१७

'उस श्रेष्ठ श्रीसम्पन्न देश की देवलोक समानता कर सकता है' ऐसा कहें तो क्या वह कथन ठीक हो सकेगा ? नहीं। किसी भी तरह देखें— सभी लोकों में प्रशंसित मोती और त्रिविधा (गद्य, गीत और नाटक तीनों शैलियों में साहित्यसम्पन्न) तमिळ के लिए वह कहाँ जायगा ? स्वर्ग ये दोनों दिला सके तभी न श्रेष्ठता में इतना बढ़ सकेगा ? । ९१७

ॲन्ऱ तॅन्ऱमिळ् नाट्टिनै यॅङ्गणुम्, शॅन्ऱु नाडित् तिरिन्दु तिरुन्दिन्नार्
पॉन्ऱु वारिऱ् पॉरुन्दिनर् पोयिन्नार्, तुन्ऱ ओदियैक् कण्डिलर् तुन्बिन्नार् 918

तिरुन्तिन्नार्—सुसंस्कृत वे वीर; ॲन्ऱ—ऐसे उक्त (यशस्वी); तॅन् तमिळ् नाट्टित्—दक्षिणी तमिळ देश में; ॲङ्कणुम् तिरिन्तु—सर्वत्र घूमकर; तुन्ऱु नल् ओतियै—घने काले केश वाली (सीता) को; कण्टिलर्—न देख पाते; तुन्पिन्नार्—दुःखी होकर; पॉन्ऱुवारिल्—मरणोन्मुख-से; पॉरुन्तिनर्—हतोत्साह; पोयिन्नार्—जाते रहे। ६१८

सुसंस्कृत उन वीरों ने दक्षिणी तमिळ देश में सर्वत्र घूमकर अन्वेषण किया। लेकिन काले घने केश वाली देवी कहीं न मिलीं। वे दुःखमग्न होकर मरणोन्मुख से शिथिल बने जाने लगे। ९१८

वन्ऱि शैक्कलि ऱन्नम येन्दिरक्, कुन्ऱि शैत्तदु वल्लैयिऱ् कूडिन्नार्
तॅन्ऱि शैक्कडऱ् चीहर मारुदम्, निन्ऱि शैक्कु नॅडुनॅऱि नीङ्गिन्नार् 919

तॅन् तिचै कटल्—दक्षिणी सागर की; चीकर मारुतम्—सीकरों से युक्त वायु; निन्ऱु इचैक्कुम्—स्थिर रूप से शब्द के साथ जहाँ बह रही थी; नॅटु नॅऱि नीङ्कित्नार्—लम्बे मार्ग तय करके; वन् तिचै कळिऱु अन्न—सबल दक्षिणी दिशा के वाहक गज के समान; इचैत्ततु—(और सुग्रीव से) जो कहा गया था; मयेन्तिरक् कुन्ऱु—उस महेन्द्र पर्वत पर; वल्लैयिल् कूटिन्नार्—शीघ्र जा पहुँचे। ६१६

वे उस लम्बे मार्ग में गये, जहाँ दक्षिणी सागर की बूँदों से युक्त हवा शब्द के साथ चल रही थी। फिर वे शीघ्र महेन्द्रपर्वत पर आ गये, जिसका संकेत सुग्रीव ने दिया था और जो बलिष्ठ दक्षिणी दिशा के धारक दिग्गज के समान था। ९१९

15. सम्पादिप् पडलम् (सम्पाति पटल)

मळैत्तविण् णहमॅन मुळङ्गि वानुऱ
इळैत्तवॅण् डिरैक्कर मॅडुत्ति लङ्गैयाळ्
उळैत्तडङ् गण्णियॅन् नुळैयॅन् ऱोडिवन्
दळैप्पदे कडुक्कुमद् वाळि नोक्किन्नार् 920

मळैत्त—वर्षागर्भ; विण् अकम् ॲन—मेघों के समान; मुळङ्कि—गर्जन करते हुए; वान् उऱ—आकाश से लगाकर; इळैत्त—उठी हुई; वॅण् तिरै करम्—श्वेत

तरंग रूपी हाथों को; ॲट्टुत्तु–उछालते हुए; इलङ्कैयाळ्–लंकादेवी; उळै तट कण्णि–हरिण की-सी आयत आँखों वाली (सीता); ॲन्नु उळै–मुझमें है; ॲन्ऱु–कहती हुई; ओटि वन्तु–दौड़ती आकर; अऴैप्पते–मानो बुला रही हो; कट्कुम्–ऐसा लगनेवाले; अ आऴि–उस समुद्र को; नोक्कित्तार्–देखा (उन्होंने)। ६२०

उन्होंने दक्षिणी समुद्र को देखा। वह मेघों के समान गर्जन करता हुआ ऐसा लगा, मानो अपने श्वेत तरंग रूपी हाथों को ऊपर उठाते हुए लंका की देवी उनको यह कहते हुए आमन्त्रित कर रही हो कि हरिणी की-सी, आयत आँखों वाली सीता मेरे यहाँ है। ९२०

विरिन्दुनी	ॲण्डिशै	मेवि	नाडिन्निर्
पॊरुन्दुदिर्	मयेन्दिरत्	तॆन्ऱु	पोक्किय
अरुन्दुणैक्	कविहळा	मलहिल्	शेनैयुम्
पॆरुन्दिरैक्	कडलॆनप्	पॆयर्त्तुङ्	गूडिऱ्ऱे 921

नीर्–तुम लोग; विरिन्तु–व्यापकर; ॲण् तिचै–आठों दिशाओं में; मेवि–जाकर; नाटित्तिर्–खोजने के बाद; मयेन्तिरत्तु–महेन्द्र पर्वत पर; पॊरुन्तुतिर्–आकर मिलो; ॲन्ऱु–ऐसा कहकर; पोक्किय–जिनको भेजा था; अरु तुणै–उन प्रिय साथी; कविकळ् आम्–वानरों की; अलकिल् चेतैयुम्–अपार सेना भी; पॆरु तिरै कटल् ॲन्न–उत्तुंग-तरंग-सागर के समान; पॆयर्त्तुम्–लौटकर; कूटिऱ्ऱु–आ मिली। ६२१

वहाँ वह सेना भी उनके पास आ मिल गयी, जिसको अंगदादि वीरों ने वहाँ यह कहकर भेज दिया था कि तुम सब आठों दिशाओं में जाकर सीतादेवी को ढूँढ़ो और बाद महेन्द्रपर्वत पर आकर हमसे मिल जाओ। वह सेना ऐसी आयी मानो बड़ी लहरों वाला दूसरा सागर आया हो। ९२१

अऱ्ऱदु	नाळ्वरै	यवदि	काट्चियुम्
उऱ्ऱिल	मिराहव	नुयिरुम्	पोन्ऱुमाल्
कॊऱ्ऱव	नाणैयुङ्	गुऱित्तु	निन्ऱनम्
इऱ्ऱदु	नञ्जॆय	लिन्नियॆन्	ॲण्णिनार् 922

नाळ् वरै अवति–अवधि के दिन; अऱ्ऱतु–पूरे हो गये; काट्चियुम्–(सीता के) दर्शन भी; उऱ्ऱिलम्–न प्राप्त कर सके; इराकवन्–श्रीराघव के; उयिरुम्–प्राण भी; पोन्ऱुम्–छूट जायँगे; नम् कॊऱ्ऱवन्–हमारे राजा की; आणैयुम्–आज्ञा; कुऱित्तु निन्ऱनम्–मानकर चले; इन्नि–अब; नम् चॆयल्–हमारा काम; इऱ्ऱतु–पूरा हो गया; ॲन्ऱु–ऐसा; ॲण्णिनार्–वीर सोचने लगे। ६२२

तब वानरयूथप सोच में पड़ गये। अवधि बीत गयी। देवी के दर्शन भी नहीं हो सके। यह समाचार पायँगे तो श्रीराम अपने प्राण त्याग देंगे। हमारे राजा की आज्ञा के हम बद्ध है। अब हमारा कार्य इति (अन्त) को पहुँच गया। ९२२

अरुन्दवस्	बुरिदुमो	वन्न	दन्ऱॅनिन्
मरुन्दरु	नॅडुङ्गडु	वुण्डु	माय्दुमो
तिरुन्दिय	दियाददु	शॅय्दु	तीर्दुमॅन्
ड्रिरुन्दन्नर्	तमुयिर्क्	किरुदि	यॅण्णुवार् 923

तन् उयिर्क्कु–अपने प्राणों का अन्त; ऍण्णुवार्–संकल्प करके; अरुम् तवम्–कठोर तप; पुरितुमो–करें; अन्ततु–वह; अन्ऱु ऍनिन्–नहीं तो; मरुन्तु अरुम्–लाइलाज; नॅट्ट–बहुत घातक; कट्टु–विष को; उण्टु–खाकर; माय्तुमो–मर जायें; तिरुन्तियतु यातु–(इन दो में) श्रेष्ठ क्या है; अतु–वह; चॅय्तु तीर्तुम्–कर चुकेंगे; ऍन्ऱु–कहकर; इरुन्तनर्–रहे। ९२३

वे अपने प्राण त्यागने की बात भी सोचने लगे। हम जाकर क्या कठोर तपस्या करें ? नही तो क्या प्रत्यवाय-रहित भयंकर विष खाकर मर जायँ ? इनमें बेहतर क्या है ? वही कर जायँगे। —ऐसा निश्चय किया उन्होंने। ९२३

करैपॊरु	कन्तैहडल्	कनह	माल्वरै
निरैतुवन्	ड्रियवॅन्न	नॅडिदि	रुन्दवर्क्
कुरैशॅयुम्	बॊरुळुळ	दॅनवु	णर्त्तिनान्
अरशिळङ्	गोळरि	ययरुञ्	जिन्दैयान् 924

अरचु इळम्—युवराज; कोळ् अरि–सिंह-सदृश (अंगद); अयरुम् चिन्तैयान्–व्याकुल-मन हो; करै पॊरु–तट से टकरानेवाले; कतै कटल्–गर्जनशील सागर के पास; कनक माल् वरै निरै–स्वर्ण मेरुपर्वतों की श्रेणियाँ; तुवन्ऱिय ऍन्न–भरी खड़ी हों जैसे; नॅटितु इरुन्तवर्क्कु–बड़ी संख्या में रहे वीरों से; उरै चॅयुम् पॊरुळ्–कहने की एक बात; उळतु–है; ऍन्न–कहकर; उणर्त्तिनान्–बताने लगा। ९२४

युवराजकेसरी अंगद बहुत शिथिल-मन हुआ। उसने उन वानर-नायकों से, जिनके कन्धे सागर-तीर के पास रहनेवाले स्वर्णपर्वत के शिखरों की लसी श्रेणियों के समान थे, कहा कि तुमसे कहने की एक बात है। वह कहने लगा। ९२४

नाडिनाङ् गॊणरुदु नळिनत् ताळैवान्, मूडिय वुलहिनै मुऱ्ऱु मुट्टियॅन्
ऱाडवर् तिलहनुक् कन्बि नारॅनप्, पाडवम् बिळम्बिनम् पळियिन् मूळ्हिनोम् 925

नाम्–हम सब; वान् मूटिय–आकाश से आच्छन्न; उलकम्–संसार; मुऱ्ऱुम् मुट्टि नाटि–भर में सामने जाकर खोजते हुए; नळिनत्ताळै–कमलाजी को; कॊणरुतुम् ऍन्ऱु–लाएँगे, कहकर; आटवर् तिलकनुक्कु–पुरुष-तिलक को; अन्पितार् ऍन–प्यारों के समान; पाटवम्–पटु वचन; विळम्पिनम्–कहा; पळियिन् मूळ्किनोम्–अब निंदा में डूब गये। ९२५

हमने पुरुषतिलक श्रीराम से पटुता के साथ यह वादा किया कि हम

आकाश से आच्छादित भूमि पर सर्वत्र ढूँढकर सीताजी को लाकर समर्पित करेंगे; मानो हम बड़े स्नेही हों। पर अब अपयश में मग्न हो गये। ९२५

शॅय्दुमॅन् ऱमैन्ददु शॅय्दु तीर्न्दिलॅम्
नॉय्दुशॅन् ऱुऱ्ऱदु नुवल हिऱ्ऱिलॅम्
ॲय्दुम्वन् दॆन्ऱिदो रिऱैयुङ् गण्डिलॅम्
उय्दुमॅन् ऱालिदो ऱुरिमैत् ताहुमो 926

चॅय्तुम् ॲन्ऱु–कर देंगे, कहकर; अमैन्ततु–जिसको हाथ में लिया; चॅय्तु तीर्न्तिलॅम्–कर नहीं चुके; नॉय्तु चॅन्ऱु–शीघ्र (अवधि के बीत जाने के पहले) जाकर; उऱ्ऱतु–जो घटा उसको; नुवलकिऱ्ऱिलॅम्–निवेदन नहीं कर सके; वन्तु ॲय्तुम्–सिद्धि मिल जायगी; ओर् इऱैयुम्–इसका कोई आसरा; कण्टिलॅम्–नहीं देखते; उय्तुम् ॲन्ऱाल्–जीते रहेंगे तो; इतु–यह; ओर् उरिमैत्तु–कोई योग्य काम; आकुमो–होगा क्या। ९२६

जो कर चुकने का वादा किया, उसे हम कर नहीं पाये। न तो यही कर सके कि अवधि के पूर्व ही उनके पास जाकर सच्ची घटना कह देते। अब कार्यसिद्धि होने का कोई आसरा देखते नहीं। इस स्थिति में जीवित रहना चाहें तो वह क्या योग्य काम होगा ? । ९२६

ॲन्दैयु मुनियुमॅम् मिऱैयि रामनुम्
शिन्दनै वरुन्दुमच् चॅय्है काण्गुरॅन्
नुन्दुवॆ नुयिरिनै नुणङ्गु केळ्वियीर्
पुन्दियि नुऱ्ऱदु पुहल्वि रॅन्ऱान् 927

ॲन्तैयुम् मुनियुम्–मेरे पिता भी कुपित होंगे; ॲम् इऱै–हमारे प्रभु; इरामनुम्–श्रीराम भी; चिन्तनै वरुन्तुम्–खिन्न-मन होंगे; अ चॅय्कै–वह कार्य; काण्कुरॅन्–(अपनी आँखों) देख न सकूँगा; उयिरिनै नुन्तुवॆन्–प्राण त्याग दूंगा; नुणङ्कु–सूक्ष्म; केळ्वियीर्–श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान से युक्त; पुन्तियिन् उऱ्ऱतु–तुम्हारी बुद्धि में जो उठता है; पुकल्विर्–(वह विचार) कहो; ॲन्ऱान्–कहा। ९२७

इस स्थिति में हम उनके पास जायँगे तो मेरे पिता (चाचा) कुपित होंगे। हमारे प्रभु श्रीराम का मन दुःखी होगा। उनको मैं नहीं (देख) सह सकूँगा। इसलिए मैं अपने प्राण त्याग दूँगा। सूक्ष्म श्रवण से प्राप्त ज्ञान रखनेवाले ! तुम जो अपनी बुद्धि में आता है, वह कहो। अंगद ने उनसे कहा। ९२७

विळ्ळुमिय दुरैत्तनै विशयम् वीऱ्ऱिरुन्
दॆळ्ळुवॊडु मलैयॊडु मिहलुन् दोळिनाय्
अळ्दुमो विरुन्दुनम् मनवु पाळ्वडत्
तॊळ्दुमो शॅन्ऱॆनच् चाम्बन् शॊल्लिनान् 928

चाम्पन्-जाम्बवान; विचयम् वीऱ्ऱिरुन्तु-विजयांकित; ऍळुवॊटुम्-स्तम्भ और; मलैयॊटुम्-पर्वत के साथ; इकलुम्-टकरानेवाले (समान रहनेवाले); तोळिनाय्-कन्धों के; विळुमियतु-श्रेष्ठ बात; उरैत्तनै-कही; इरुन्तु-जीवित रहकर; अळुतुमो-रोयेंगे क्या; नम् अन्पु-अपने प्रेम को; पाळ् पट-कलंकित करते हुए; चॅन्ऱु-जाकर; तॊळुतुमो-(श्रीराम और सुग्रीव की) सेवा करेंगे; ऍन-ऐसा; चॊल्लिनान्-कहा। ६२८

तब जाम्बवान ने कहा। विजयांकित व स्तम्भ और पर्वत की टक्कर के कन्धों वाले! तुमने (क्या ही) उत्तम बात कही! (तुम मरो और उसके बाद) हम जीवित रहकर रोते रहें? अपने प्रेम को कलंकित करते हुए हम उनके पास जाकर उनकी सेवा करते रहेंगे क्या? । ९२८

मीण्डिनि यॊन्ऱुनाम् विळम्ब मिक्कदॆन्
माण्डुरु वदुनल मॆन्न लित्तनॅम्
आण्डहै यरशिळङ् गुमर वन्नदु
वेण्डलि निन्नुयिर्क् कुरुदि वेण्डुदुम् 929

आण्टकै-पुरुषश्रेष्ठ; अरचु इळम् कुमर-युवराज कुमार; मीण्टु-लौट जाकर; इनि-अब; नाम्-हमसे; ऒन्ऱु विळम्प-एक बात कहने के लिए; मिक्कतु ऍन्-बची क्या है; माण्टु उरुवतु-मर जाना; नलम् ऍन-श्लाघ्य है, ऐसा; वलित्तनॅम्-निश्चय किया है हमने; अन्नतु वेण्टलिन्-वह चाहते हैं, इसलिए; निन् उयिर्क्कु-तुम्हारे प्राणों की; उऱुति-रक्षा का निश्चय; वेण्टुतुम्-चाहते है। ६२९

पुरुषश्रेष्ठ! राजकुमार अंगद! वहाँ लौटकर हमारे पास उन्हें देने के लिए क्या समाचार बाकी है? इसलिए हमने मरने का निश्चय किया है। जब हम मरना चाहते हैं तब हम यह निश्चय कर लेना चाहते है कि तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहेगा। ९२९

ऍन्ऱव नुरैत्तलु मिरुन्द वालिशेय्
कुन्ऱुऱळ्न् दॆन्नवळर् कुववुत् तोळिनीर्
पॊन्ऱिनीर् मडिययान् पोव नॆलदु
नन्ऱदो वुलहमु नयक्कर् पालदो 930

ऍन्ऱु अवन् उरैत्तलुम्-ऐसा उसके कहते ही; इरुन्त वालि चेय्-उसको जो सुनता रहा वह वाली-पुत्र; कुन्ऱु उऱळ् ऍन-पर्वत से टकराते-से; वळर्-बढ़े हुए; कुववु तोळिनीर्-पुष्ट कन्धों वाले; नीर् पॊन्ऱि मटिय-तुम सब मर जाओ और; यान् पोवनॆल्-मैं वहाँ जाऊँ तो; अतु नन्ऱतो-वह ठीक होगा क्या; उलकमुम्-लोक (श्रेष्ठ लोग) भी; नयक्कल् पालतो-स्वागत करें, ऐसा होगा क्या। ६३०

जाम्बवान ने यों कहा। अंगद जो सुनता रहा कहने लगा। पर्वत से टकरानेवाले के समान बढ़े हुए पुष्ट कन्धों वाले! तुम सबको

मरने देकर मैं अकेले वहाँ जाऊँ तो वह श्लाघ्य होगा क्या ? लोकसम्मत होगा क्या ? । ९३०

शान्ऱवर् पऴियुरैक् कञ्जित् तन्नुयिर्
पोत्ऱवर् मडिदरप् पोन्दु ळानॆन
आत्ऱपे रुलहुळो रऱैदन् मुन्नमयान्
वात्ऱॊडर् हुवॆंन्नॆन मऱित्तुङ् गूऱुवान् 931

चात्ऱवर्–श्रेष्ठ लोगों के; पऴि उरैक्कु–निन्दा-वचन से; अञ्चि–डरकर; तन् उयिर् पोत्ऱवर्–अपने प्राण-सम लोगों को; मटि तर–मरने देकर; पोन्तुळान्–आ गया; ऎंन–ऐसा; आत्ऱ–उत्कृष्ट; पेर् उलकु उळोर्–विशाल लोकों के वासी; अऱैतल् मुन्नम्–कहें, इसके पूर्व ही; यान्–मैं; वान् तॊटर्कुवॆन्–स्वर्ग चला जाऊँगा; ऎंन–कहकर; मऱित्तुम् कूऱुवान्–और भी कहा । ९३१

" 'बड़े लोगो के अपवाद-कथन से डरकर अंगद अपने प्राण-सम मित्रों को मरने देकर स्वयं जीवित आ गया ।' संसार के श्रेष्ठ लोग यह निन्दा करें —इसके पूर्व ही मै स्वर्गवासी हो जाऊँगा ।" —यह कहकर अंगद आगे बोला । ९३१

ऎंल्लैनम् मिऱुदि यायक्कु मॆंन्दैक्कुम् याव रेनुम्
शॊल्लवुङ् गूडुङ् गेट्टाऱ् ऱुञ्जवु मडुक्कुङ् गण्ड
विल्लियु मिळैय कोवुम् वीवदु तिण्ण मच्चॊल्
मल्लनी रयोत्ति पुक्काल् वाऴ्वरो बरतन् मऱ्ऱोर् 932

नम् इऱुति ऎंल्लै–हमारे अन्त का परिणाम; यावरेनुम्–कोई; यायक्कुम्–मेरी माता को; ऎंन्तैक्कुम्–मेरे पिता (सुग्रीव) को; चॊल्लवुम् कूटुम्–(समाचार) दिला सकेगा; केट्टाल्–वे सुनें तो; तुञ्चवुम् अटुक्कुम्–मर भी सकते हैं; कण्ट–देखकर; विल्लियुम्–धन्वी श्रीराम; इळैय कोवुम्–और छोटे राजा (लक्ष्मण) का; वीवतु–मरना; तिण्णम्–ध्रुव है; अ चॊल्–वह समाचार; मल्लल् नीर्–अधिक जलसमृद्ध; अयोत्ति पुक्काल्–अयोध्या पहुँचे तो; परतन् मऱ्ऱोर्–भरत आदि अन्य; वाऴ्वरो–जीवित रहेंगे क्या । ९३२

समझो कि हम सब यहाँ मर गये । तो यह समाचार कोई न कोई मेरे पिता को सुना देगा । तब वे मर जायँगे । उसको देखकर हमारे प्रभु धन्वी श्रीराम और छोटे राजा लक्ष्मण मर जायँगे । यह ध्रुव है । यह समाचार समृद्ध अयोध्या जायगा तो भरत आदि और अन्य लोग जीवित रहेंगे क्या ? । ९३२

बरदनुम् पिन्नु ळोनुम् बयन्दॆडुत् तवरु मूरुम्
शरदमे मुडिवर् कॆट्टेन् शत्तहियॆन् ऱुलहञ् जाऱ्ऱुम्

विरदमा दवत्तिन् मिक्क विळक्किना लुलहत् तियार्क्कुम्
करैर्तेरि विलाद दुन्बम् विळैन्दवा वेंनक्क लुळ्न्दान् 933

परतनुम्–भरत; पिन् उळोनुम्–और उनके अनुज; पयन्तु अॅट्ुत्तवरुम्–और उनकी जननियाँ; ऊरुम्–और नगरवासी; चरतमे मुटिवर्–निश्चय ही मरेंगे; कॅट्टेन–मैं मिटा; चनकि–जानकी; अॅन्ऱु उलकम् चाऱ्ऱुम्–ऐसा लोक-शंसित; विरत मातवत्तिन् मिक्क–व्रतधारिणी, तपस्या में श्रेष्ठ; विळक्किनाल्–दीप-सी देवी के कारण; उलकत्तु–इस संसार में; यार्क्कुम्–सबके लिए; करै तॅरिवु इलात–जिसका पार नहीं दिखता, ऐसा (अपार); तुन्पम्–दुःख; विळैन्त आ–पैदा हो गया तो; अॅन–ऐसा कहकर; कलुळ्न्तान्–उद्विग्न हुआ। ९३३

"भरत, उनके अनुज, इन भ्राताओं की जननियाँ और नगरवासी सभी निश्चय ही मर जायँगे। हाय ! मैं मिटा ! व्रतधारिणी महान तपस्विनी जानकी संज्ञित इन दीप-सी देवी के कारण संसार के सभी लोगों को कितना दुःख पैदा हो गया !" अंगद ऐसा कहते हुए अधीर हुआ। ९३३

पॉरुप्पुरळ् वयिरत् तिण्डोट् पॉरुशिनत् ताळि पोल्वान्
तरिप्पिला दुरैत्त माट्रन् दडुप्परुन् दहैमैत् ताय
नॅरुप्पये विळैत्त पोल नॅञ्जमु मरुहक् केट्टु
विरुप्पिना लवनै नोक्कि विळम्बिन नॅण्गिन् वेन्दन् 934

पॉरुप्पु उरळ्–पर्वत-सम; वयिरम् तिण् तोळ्–वज्र-दृढ़ कन्धों वाला; पॉरु चिनत्तु–युद्ध-सन्नद्ध; आळि पोल्वान्–'याळि'-सा अंगद; तरिप्पु इलातु–अधीर होकर; उरैत्त माट्रम्–जो बोला, वह कथन; तटुप्पु अरुम् तकैमैत्तु आय–अवार्य प्रकार की; नॅरुप्पये–आग को ही; विळैत्त पोल–लगाया हो, ऐसा; नॅञ्चम् मरुक–चित्त के आक्रान्त होने से; केट्टु–सुनकर; अॅण्किन् वेन्तन्–रीछों का राजा; विरुप्पिनाल्–प्यार से; अवनै नोक्कि–उसको देखकर; विळम्पिनन्–बोला। ९३४

पर्वत-सम वज्रदृढ़ कन्धों वाला, युद्धरत 'याळि' के समान वह अंगद अधीर होकर ऐसा जो बोला वह वचन अवार्य आग के समान लगा और जाम्बवान का मन तप्त और उद्विग्न हुआ। रीछों के राजा जाम्बवान ने अंगद से प्यार के साथ यों कहा। ९३४

नीयुनिन् ऱादैयु नीङ्ग निन्गुलत्, तायम्वन् दवर्क्कॉरु तनय रिल्लैयाल्
आयदु करुदिनॅ मल्ल दन्ऱॅनिल्, नायह रिऱुदियुम् नविलर् पालदो 935

नीयुम्–तुम्हारे और; निन् तातैयुम्–तुम्हारे पिता के; नीङ्क–सिवा; निन् कुल तायम् वन्तवर्क्कु–तुम्हारे कुल में अधिकार के साथ उत्पन्न; ऑरु तनयर् इल्लैयाल्–एक पुत्र नहीं है, इसलिए; आयतु करुतिनॅम्–वैसा विचार किया हमने; अन्ऱतु अन्ऱु–वह नहीं; अॅनिल्–तो; नायकर् इऱुतियुम्–हमारे नायकों का मरना भी; नविलल् पालतो–कहना ठीक है क्या। ९३५

अंगद ! तुम भी मर जाओगे और तुम्हारे तात (सुग्रीव) भी चले गये तो तुम्हारे वंश में राजा बनने के लिए कोई पुत्र नहीं है। इसीलिए हमने चाहा कि तुम जीवित रहो। तुम अपने मरने की बात नहीं उठाते तो अपने प्रभुओं की मृत्यु की बात कहाँ उठती ? हमारा यह बात करना उचित भी होता ? । ९३५

एहिनी यव्वऴि यॅय्दि यिव्वऴित्, तोहैयैक् कण्डिला वहैयुञ् जॊल्लियॆम्
शाहैयु मुणर्त्तुदि तविर्दि शोहम्बोर्, वाहैया यॆन्ऱनन् वरम्बि लाऱ्ऱलान् 936

वरम्पु इल् आऱ्ऱलान्–असीम बलशाली; पोर् वाकैयाय्–(अंगद से) युद्धविजयी; नी–तुम; एकि–जाओ; अ वऴि ऍय्ति–वहाँ पहुँचो; इ वऴि–इधर; तोकैयै कण्टिला–मयूराभा सीता की अप्राप्ति का; वकैयुम् चॊल्लि–प्रकार (समाचार) कहकर; ऍम् चाकैयुम्–हमारा मरना भी; उणर्त्तुति–समझा दो; तविर्ति चोकम्–छोड़ो शोक को; ऍन्ऱनन्–कहा। ९३६

असीम बली जाम्बवान ने अंगद को सलाह दी कि युद्ध-विजयी वीर ! तुम वहाँ जाओ। इधर हमारा सीतान्वेषण का विफल प्रयास कहो। हमारी मृत्यु का भी समाचार दो। तुम शोक करना छोड़ दो। ९३६

अवनवै युरैत्तपिन् ऩनुमऩ् शॊल्लुवाऩ्
पुवऩमूऩ् ऱिनुमोरु पुडैयिऱ् पुक्किलॆम्
कवऩमाण् डवरॆऩक् करुत्ति लारॆऩत्
तवऩवे हत्तुनीर् शलित्ति रोवॆऩ्ऱाऩ् 937

अवऩ्–उस (जाम्बवान) के; अवै–वे वचन; उरैत्त पिऩ्–कहने के बाद; अनुमऩ्–हनुमान; चॊल्लुवाऩ्–कहने लगा; पुवनम् मूऩ्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; ऒरु पुटैयिल्–एक भाग में भी; पुक्किलॆम्–पूर्ण रूप से प्रवेश न कर पाये; तवऩ वेकत्तु नीर्–सूर्य की-सी गति वाले तुम; कवऩम् माण्टवर् ऍऩ–गमन-शक्ति मिट गयी हो, ऐसा; करुत्तु इलार् ऍऩ–और मन नहीं हो, ऐसा; चलित्तिरो–चलित हो गये क्या; ऍऩ्ऱाऩ्–बोला। ९३७

जब जाम्बवान ने अपनी बात कही तब हनुमान ने कहा कि वीरो ! हमने अभी तक तीनों लोको में एक कोना भी पूर्णरूप से खोजा नहीं है ! सूर्य की-सी गति रखनेवाले तुम क्या कहने लग गये ? क्या ऐसे चलित गये मानो तुमने जाने की शक्ति खो दी हो, या आगे जाने का मन रखते नहीं हो। ९३७

पिऩ्ऩरुङ् गूरुवाऩ् पिलत्तिल् वाऩत्तिल्
पॊऩ्वरैक् कुडुमियिऱ् पुऱत्ति ऩण्डत्तिल्
नऩ्नुदऱ् ऱेवियैक् काण्डु नामॆऩिल्
शॊऩ्ऩ नाळवदियै यिऱैवऩ् शॊल्लुमो 938

पिन्नुरुम् कूरुवान्–और भी कहा; पिलत्तिल्–बिल (पाताल) में; वानत्तिल्–स्वर्ग में; पोन् वरै–स्वर्ण-पर्वत (मेरु) के; कुटुमियिल्–शिखर में; पुरत्तिन् अण्टत्तिल्–बाह्यांड में; नल् नुतल् तेवियै–मनोरम भाल वाली देवी को; नाम् काण्टुम्–हम पा जायेंगे; ॲन्निल्–तो; इऱैवन्–राजा से; चोन्न नाळ् अवतियै–कथित दिनों की अवधि को; चॊल्लुमो–कहेंगे क्या (सुग्रीव आदि)। ९३८

हनुमान आगे बोला। पाताल में, स्वर्ग में और स्वर्णमय मेरुपर्वत के शिखर पर या बाह्याण्डों में जाकर सुन्दर भाल वाली को खोज पा लें तब भी क्या सुग्रीव अवधि के उल्लंघन की बात कहेंगे ? । ९३८

नाडुद लेनल मिन्नु नाडियत्, तोडलर् कुळलिदन् ऱुयरिऱ् चॆन्ऱमर्
वीडिय शडायुवैप् पोल वीडुदल्, पाडव मल्लदु पळियिऱ् ऱामॆन्ऱान् 939

नाटुतले नलम्–अन्वेषण करना ही अच्छा है; इन्नुम् नाटि–और खोजकर; अ–उन; तोटु अलर्–पुष्पालंकृत; कुळलि तन्–सुकेशिनी को; तुयरिल् चॆन्ऱु–दुःख में जाकर; अमर् वीटिय–जिसने युद्ध में प्राण दिये; चटायुवै पोल–उस जटायु के समान; वीटुतल्–हमारा मरना भी; पाटवम्–पाटव है; अल्लतु–नहीं तो; पळियिऱ्ऱु आम्–अपयशकारी होगा; ॲन्ऱान्–बोला। ९३९

इसलिए अन्वेषण ही अच्छा है। इसलिए आगे ढूँढ़ेंगे और उस जटायु के समान, जिसने सीता के दुःखनिवारणार्थ युद्ध करके अपने प्राण छोड़ दिये थे, अन्वेषण-कार्य में प्राण देना ही पाटव होगा। नहीं तो ऐसा मरना निन्दा का कारण बन जायगा। ९३९

ॲन्ऱलुङ् गेट्टन नॆरुवै वेन्दन्ऱन्, पिन्ऱुणै याहिय पिळैप्पिल् वाय्मैयान्
पॊन्ऱिन नॆन्ऱशॊऱ् पुलम्बु नॆञ्जिनन्, कुन्ऱॆन नडन्दवर्क् कुरुहन् मेयिनान् 940

ॲन्ऱलुम्–कहने पर; ॲरुवै वेन्तन्–गीधों का राजा सम्पाति; तन् पिन् तुणैयाकिय–अपना अनुज; पिळैप्पु इल् वाय्मैयान्–अडिग सत्यसंध; पॊन्ऱिनन्–मरा; ॲन्ऱ चॊल्–यह समाचार; केट्टनन्–सुनकर; पुलम्पु नॆञ्चिनन्–रोते मन के साथ; कुन्ऱु ॲन–पर्वत के समान; नटन्तु–चलकर; अवर् कुरुकल्–उनके समीप; मेयिनान्–आने लगा। ९४०

जब हनुमान ने जटायु का नाम लिया, तब सम्पाति उसे सुन रहा था। गीधों के राजा, सम्पाति ने सुना कि मेरा अनुज, प्रिय जटायु, अडिग सत्यसन्ध मरा। तो उसका मन दुःख से भर गया। वह रोने लगा। वह एक पर्वत के समान चलता हुआ उनके पास जाने लगा। ९४०

मुऱैयुडै यॆम्बियार् मुडिन्द वाऱॆन्नाप्, पऱैयिडु नॆञ्जिनन् पदैक्कु मेनियन्
इऱैयुडैक् कुलिशवे लॆऱिह लामुन्नम्, शिऱैयुऱु मलैयॆनच् चॆल्लुञ् जॆय्हैयान् 941

मुऱैयुटै–न्यायमार्गी; ॲम्पियार्–मेरा भाई; मुटिन्त आ–मरा कैसा; ॲन–ऐसा; पऱै इटु–(ढोल के समान) थर्रानेवाले; नॆञ्चिनन्–मन का; पतैक्कुम्

मेतियत्त्–काँपनेवाले शरीर के साथ; इरै उटै–देवेन्द्र का; कुलिच वेल्–कुलिश नामक हथियार के; ॲरिकला मुत्तम्–फेंकने से पहले; चिरै उऱ–पंखसहित; मलै ॲत्त–रहे पर्वत के समान; चॅल्लुम्–जाने का; चॅय्कैयात्त्–काम करनेवाला। ९४१

'न्यायमार्गी मेरा भाई मरा कैसे ?' इस संशय से उसका मन थर्राने लगा। शरीर काँपने लगा। वह उस पर्वत के समान तेजी से आया, जो देवेन्द्र के वज्रायुध फेंककर काटने से पहले पंखसहित था। ९४१

मिडलुडै यॅम्बियै वीट्टु वॅञ्जित्तप्, पडैयुळ रायिनार् पारिल् यारॅना
उडलिनै यिऴिन्दुपो युवरि नीरुहक्, कडलिनैप् पुरैयुऱ मरुविक् कण्णिनात्त् 942

मिटलुटै ॲम्पियै–शक्तिमन्त मेरे भाई को; वीट्टुम्–मार सकनेवाले; वॅम् चित्तम्–भयंकर क्रोध के साथ; पटैयुळर् आयित्तार्–हथियार रखनेवाले; पारिल्–इस संसार मे; यार् ॲता–कौन है, ऐसा सोचते हुए; उटलितै इऴिन्तु–शरीर से गिरकर; पोय्–चलनेवाले; उवरि नीर् पुक–नमकीन अश्रु वहाने से; अ कटलितै–उस समुद्र को; पुरै उऱम्–समानता करनेवाली; अरुवि कण्णितात्त्–सरिता-सी आँखों वाला। ९४२

उसके मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा था कि अतिवली मेरे भाई को मार सकनेवाले, बड़े क्रोध के साथ हथियार चलानेवाले इस संसार में कौन है ? उसकी आँखों से नमकीन अश्रु निकलकर उसके शरीर पर से गिरा और भूमि पर जमा होने लगा। तव उसकी आँखें समुद्र के समान लगी और अश्रु नदी के समान। ९४२

उळुङ्गदिर् मणियणि युमिऴ् मिन्ननान्
मऴुङ्गिय नॅडुङ्गणित्त् वऴङ्गु मारियात्त्
पुऴुङ्गुवा नऴुङ्गिनान् पुडवि मीदिनिल्
मुऴङ्गिवन् दिऴिवदोर् मुहिलुम् बोल्हिन्ऱात्त् 943

उळुम् कतिर् मणि–तराशी हुई कान्तियुत मणियाँ; अणि–जिनमें जड़ित हों, ऐसे आभरणों से; उमिऴुम्–निःसृत; मिन् अत्तात्–विजली के समान रहनेवाला; मऴुङ्किय–कुण्ठित; नॅटु कणित्त्–दीर्घ आँखों से; वऴङ्कु मारियात्त्–निकलनेवाली (अश्रु) धारा से युक्त; पुऴुङ्कुवात्त्–दुःखतप्त; अऴुङ्किनात्–उद्विग्न; पुटवि मीतितिल्–भूमि पर; मुऴङ्कि वन्तु–शब्द करते हुए; इऴिवतु–उतरकर आनेवाले; ओर् मुकिलुम् पोल्किन्ऱात्त्–एक मेघ के समान दिखनेवाला। ९४३

उसके शरीर से मणि-जटित आभरण से जैसी कान्ति छूट रही थी। उसकी मन्द-प्रभ और दीर्घ आँखों से बारिश के समान आँसू गिर रहा था। उसका मन वेदनाविद्ध था। दुःख के साथ आता हुआ वह गर्जन के साथ आनेवाले एक मेघ के समान भी लग रहा था। ९४३

वळऴियु मरङ्गळु मलैयु मण्णुऱत्
तॅळ्ळुनुण् पॊडिपडक् कडिदु शॅल्हिन्ऱान्

तळ्ळुवन् काल्बॊरत् तरणि यिऱ्ऱवळ्
वॆळ्ळियम् बॆरुमलै पॊरुवु मेनियान् 944

वळ्ळियुम्–लताएँ; मरङ्कळुम्–और वृक्ष; मण् उऱ–भूमि पर गिरते हैं; मलैयुम्–पर्वत भी; तॆळ्ळु तुण् पॊटि पट–स्वच्छ और महीन चूर्ण बनते हैं; कटितु चॆल्किन्ऱान्–ऐसा वेग के साथ चलता है; तळ्ळु वन् काल्–उत्पाटक बलवान पवन; पॊर–ढकेलता है, इसलिए; तरणियिल् तवळ्–भूमि पर मन्द गति से आनेवाले; वॆळ्ळि–चाँदी के; अम् पॆरु मलै–सुन्दर श्रेष्ठ (कैलास) पर्वत की; पॊरुवु–समानता करनेवाले; मेनियान्–आकार का। ९४४

वह इतनी तीव्र गति से आया कि लताएँ और तरु धराशायी हो गये। पर्वत चूर-चूर हो गये। वह सबको उखाड़ फेंक सकनेवाले पवन के ढकेलने से भूमि पर चलते आनेवाले कैलास के चाँदी के बड़े पर्वत के समान भी लग रहा था। ९४४

ऎय्दिन निरुन्दव रिरियल् पोयिनार्
ऐयनम् मारुदि यळ्लुङ् गण्णिनान्
कैदव निशिशर कळ्ळ वेडत्तै
उय्दिहो लिनियॆन्ना वुरुत्तु मुन्निन्ऱान् 945

ऎय्तिनन्–आया; इरुन्तवर्–(वहाँ जो) रहे वे; इरियल् पोयिनार्–तितर-बितर हुए; ऐयन्–नायक; अ मारुति–वह मारुति; अळ्लुम् कण्णिनान्–जलती आँखों के साथ; कैतव–वंचक; निचिचर–निशिचर; कळ्ळ वेटत्तै–कपटवेश-धारी; इति उय्ति कॊल्–अब बचोगे क्या; ऎन्ना–कहते हुए; उरुत्तु–कोप दिखाकर; मुन् निन्ऱान्–उसके सामने जा खड़ा रहा। ९४५

वह वानरों के पास आया। तब वानर डर के मारे तितर-बितर हो गये। तब नायक मारुति ने गुस्से से भरकर सम्पाति को डाँटा। उसकी आँखें जलती आग के समान थीं। उसने कहा— वञ्चक! निशिचर! कपटवेशधारी! अब तुम बचोगे क्या? ऐसा डाँटते हुए हनुमान उसके सामने जा खड़ा हुआ। ९४५

वॆङ्गदम् वीशिय मनत्तन् विम्मलन्
पॊङ्गिय शोरिनीर् पॊळ्ळियुङ् गण्णिनान्
शङ्गैयिऱ् चळक्किल तॆन्नुन् दन्मैयै
इङ्गिद वहैयिन्ना लॆय्द नोक्किनान् 946

वॆम् कतम्–क्रूर कोप से; वीचिय–रिक्त; मनत्तन्–मन वाला; विम्मलन्–सिसकियाँ भरनेवाला; पॊङ्किय चोरी–ऊपर उठी हुई, वर्षा के समान; नीर् पॊळ्ळियुम् कण्णिनान्–अश्रुजल बहाती हुई आँखों वाला; चङ्कै इल्–निस्संदेह;

चळक्कु इलन्–झगड़ालू नहीं; अँन्तुम् तन्मैयै–ऐसे स्वभाव को; इङ्कित वकैयिताल्–इंगितों के प्रकारों से; अँय्त नोक्कितान्–खूब देख लिया (हनुमान ने)। ९४६

हनुमान ने उसे सावधानी से देखा। सम्पाति के मन में नृशंस क्रोध नहीं पाया गया। वह सिसकियाँ भर रहा था और उसकी आँखों से अश्रुजल की वारिश-सी हो रही थी। निस्सन्देह रूप से यह बुरा नहीं है। हनुमान ने उसके स्वभाव को इगितों से जान लिया। ९४६

नोक्कित्त	नित्रुत्न	नुणङ्गु	केळ्वियान्
वाक्कित्ता	लोँरुमोँळि	वळङ्ग	लादमुन्
ताक्करुञ्	जडायुवैत्	तरुक्कि	नालुयिर्
नीक्कित्त	रियारदु	निरप्पु	वीरॅन्त्रान् 947

नुणङ्कु केळ्वियान्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञानी; नोक्किनन्–देखते हुए; नित्रत्तन्–खड़ा रहा; वाक्कित्ताल्–मुख से; ओँरु मोँळि–एक वात; वळङ्कलात मुन्–कहने से पहले ही; ताक्करुम् चटायुवै–अप्रतिहत जटायु को; तरुक्किनाल्–अपने बल से; उयिर् नीक्कित्तर्–प्राणहीन करनेवाला; यार्–कौन था; अतु–उसको; निरप्पुवीर्–विस्तार से कहो; अँन्त्रान्–(सम्पाति ने) प्रश्न किया। ९४७

हनुमान सूक्ष्मश्रवणज्ञानी था। जव वह सम्पाति को देखता ही खड़ा रहा तव उसके मुख से वात निकलने के पूर्व ही सम्पाति ने पूछ लिया कि जटायु पर कोई आक्रमण नही कर सकता। ऐसे जटायु के प्राण निकालनेवाला कौन है? ज़रा सविस्तार कहो। ९४७

उन्नैनी	युळ्ळवा	रुरैप्पि	नुऱ्ऱदु
पिन्नैया	निरप्पुदल्	पिळैप्पिन्	ऱाहुमाल्
अँन्तमा	रुदियॅदि	रॅरुवै	वेन्दनुम्
तन्नैयान्	दन्मैयैच्	चाऱ्ऱन्	मेयिनान् 948

मारुति–हनुमान (के); उन्तै–अपने को (सम्वन्ध में); नी–तुम; उळ्ळ आऱु–यथार्थ रीति से; उरैप्पिन्–कहोगे तो; पिन्तै–वाद; यान्–मैं; उऱ्ऱतु–जो हुआ; निरप्पुतल्–पूरा कहूँगा, यह कहना; पिळैप्पु इन्ऱु–गलत नहीं; आकुम्–होगा; अँन्त–कहने पर; अँतिर्–उत्तर में; अँरुवै वेन्ततुम्–गीधों का राजा भी; तन्तै आम्–अपनी; तन्मैयै–वात; चाऱ्ऱल् मेयितान्–कहने लगा। ९४८

उस पर मारुति ने कहा कि अगर तुम अपने बारे में यथार्थ समाचार कहो तो मैं सारा विवरण दे दूँगा। वही गलती-रहित होगा। उसके उत्तर में गीधों के राजा ने अपना यथार्थ हाल कहा। ९४८

मित्बिऱन् दालॅन विळङ्गॅ यिऱ्ऱिनाय्, अन्बिऱन् दार्हळि नदिह नाहियॅन्
पिन्बिऱन् दान्रुणैप् पिरिन्द पेदैयेन्, मुन्बिऱन् देनॅन्त मुडियक् कूऱिनान् 949

मिन्नु पिऱन्ताल् ॲन्न–बिजली उठी जैसे; विळङ्कु–चमकनेवाले; ॲयिऱ्ऱिनाय्–दन्तुले; अन्‍पु इऱन्तार्कळिन्–स्नेहहीन; अतिकन् आकि–से बढ़कर; ॲन् पिन् पिऱन्तान्–मेरे अनुज से; तुणै पिरिन्त–संग से त्यक्त; पेतैयेन्–बेचारा मैं; मुन् पिऱन्तेन्–उसका अग्रज हूँ; ॲन–कहकर; मुट्टिय–पूरा (वृत्तान्त); कूऱिनान्–कहा। ६४६

हनुमान से सम्पाति ने कहा कि हे विद्युत्-सम दाँत वाले ! अब मैं निर्ममों से अधिक निर्मम हो गया हूँ। अपने भाई के साथ से हीन हो गया हूँ। दयनीय मैं उसका ज्येष्ठ भाई हूँ। फिर उसने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। ९४९

कूऱिय वाशहङ् गेट्ट कोदिलान्, ऊऱिय तुन्बत्ति नुवरि युट्पुहा
एऱिन नुणर्त्तिन निहलि रावणन्, वीऱिय वाळिडै विळैन्द दामॅन्ऱान् 950

कूऱिय वाचकम्–(सम्पाति का) कहा वचन; केट्ट–जिसने सुना; कोतु इलान्–अकलंक; ऊऱिय तुन्पत्तिन्–गहरे दुःख के; उवरियुळ् पुका–सागर में डूबकर; एऱिनन्–कूल पर चढ़ा; इकल्–शत्रु रावण की; वीऱिय वाळ् इटै–शान के साथ चलायी हुई तलवार की वार से; विळैन्ततु आम्–(जटायु का मरण) हुआ; ॲन्ऱान्–(हनुमान ने) कहकर; उणर्त्तिनन्–समझाया। ६५०

सम्पाति का हाल सुनकर अकलंक हनुमान ने गहरे दुःख-सागर से डूबने के बाद कूल पर चढ़कर सम्पाति से कहा कि शत्रु रावण की शान के साथ चलायी गयी तलवार की वार से जटायु का मरण हो गया। ९५०

अव्वुरै केट्टलु मशनि येऱ्ऱिनाल्, तव्विय गिरियॅनत् तरैयिन् वीऴ्न्दनन्
वॅव्वुयि रावुयर् पदैप्प विम्मिनान्, इव्वुरै यिव्वुरै यॅडुत्ति यम्बिनान् 951

अ उरै केट्टलुम्–उस वचन को सुनते ही; अचनि एऱ्ऱिनाल्–भयंकर गाज से; तव्विय–चलित हुई; किरि ॲन्न–गिरि के समान; तरैयिल् वीऴ्न्तनन्–भूमि पर गिरा; वॅव् उयिरा–गरम साँसें छोड़ते हुए; उयिर् पतैप्प–प्राणों के छटपटाते; विम्मिनान्–सिसकियाँ भरीं; इ उरै इ उरै–निम्न बातें; ॲट्टुत्तु इयम्पिनान्–बताने लगा (सम्पाति)। ६५१

वह समाचार सुनते ही सम्पाति वज्राहत गिरि के समान नीचे गिर गया। गरम साँसें निकलीं और प्राण छटपटाने लगे। सिसकते हुए वह यों बोला। ९५१

इळैया नीळ्शिऱ हन्ऱु वॅन्दुहत्, तळैया ननुयिर् पोद ऱक्कदाल्
वळैया नेमियन् वन्मै शाल्वलिक्, किळैया नेयिदु वॅन्न मायमो 952

इळैया–जो कभी नहीं थकते; नीळ् चिऱकु–वे मेरे पक्ष; अन्ऱु वॅन्तु उक–उस दिन जलकर गिर गये तब; तळैयातेन्–प्रतिबद्ध मेरे; उयिर् पोतल्–प्राण चले गये होते तो; तक्कतु–उचित होता; वळैया नेमियन्–नेक आज्ञाचक्रधर (दशरथ)

के; वन्मै चाल् वलिक्कु–कठोर बल से; इळैयाने–कम बली नहीं हो तुम; इतु ॲन्न मायमो–यह क्या ही माया है। ९५२

उस दिन जब मेरे बलवान पंख, जो कभी नहीं थकते थे, जलकर नष्ट हुए उसी दिन प्रतिबद्ध होकर जीवित रहने से मर जाता तो अच्छा होता। हे अनुज! जिसका बल नेक दण्डधर दशरथ के बल से कुछ भी कम नहीं था! यह क्या माया-कार्य हो गया?। ९५२

मलरो निन्ऱ्ळन् मण्णुम् विण्णुमुण्, डुलैया नीडऱ मिन्नु मुण्डरो
निलैयार् कऱ्पमु निन्ऱ दिन्ऱुनी, इलैया नायिटु वॅन्न तन्मैयो 953

मलरोन्–कमलासन; निन्ऱ्ळन्–जीवित है; मण्णुम् विण्णुम्–भूमि और आकाश; उण्टु–ज्यों के त्यों है; उलैया नीट् अऱम्–अक्षय श्रेष्ठ धर्म भी; इन्नुम् उण्टु–अब भी है; निलै आर्–स्थायी; कऱ्पमुम्–काल कल्प भी; निन्ऱतु–रहता है; इन्ऱु–आज; नी इलै आताय्–तुम नहीं रहे हो गये; इतु–यह; ॲन्न तन्मैयो–क्या ही क्रम-गति है। ९५३

अभी कमलासन जीवित है! भूमि, आकाश, अचल धर्म, सतत काल कल्प—सभी अविनष्ट हैं! पर तुम नहीं रहे! यह क्या विधिक्रम है?। ९५३

उडन्ने यण्ड मिरण्डु मुन्दुयिर्त्, तिडनाम् वन्दिरु वेमु मॅय्दिन्नोम्
विडनी येदनिच् चॅनर् वीरमुम्, कडन्नो वॅङ्गलु ळऱ्कु मेन्मैयाय् 954

वॅम् कलुळऱ्कुम्–बली गरुड़ से भी; मेन्मैयाय्–बढ़कर रहनेवाले; मुन्नु–पहले; अण्टम् इरण्टुम्–दो अण्डे; उयिर्त्तिट–हुए तब; उटने–एक साथ; नाम् इरुवेमुम्–हम दोनों; वन्तु ॲय्तिन्नोम्–आकर पैदा हुए; विट–छोड़कर; नीये–तुम ही; तनि चॅन्ऱ–अकेले गये; वीरमुम्–वह वीरता; कटन्नो–क्रम है क्या। ९५४

बलवान गरुड़ से भी अधिक बलशाली! पहले दो अण्डे हुए जिनमें से हम दोनों एक साथ बाहर आये। अब तुम मुझे छोड़कर अकेले ही चले गये! यह कैसा वीरकृत्य?। ९५४

ऒन्ऱा मून्ऱुल हत्तु ळोरॅयुम्, वॅन्ऱा नंत्तिनुम् वीर निऱ्कुनेर्
निन्ऱा नेयव् वरक्क नित्तैयुम्, कॊन्ऱा नेयिः(ह्) दॅनन कॊळ्हैयो 955

वीर–वीर; ऒन्ऱा–अपनी अधीनता न माननेवाले; मून्ऱु उलकत्तु उळोरॅयुम्–तीनों लोकों के वासियों को; अ अरक्कन्–उस राक्षस ने; वॅन्ऱान् ॲन्तिनुम्–जीता तो भी; निऱ्कु नेर् निन्ऱाने–तुम्हारे सामने खड़ा रह सका क्या; नित्तैयुम् कॊन्ऱाने–तुम्हें मार भी सका क्या; इतु ॲन्न कॊळ्कैयो–यह क्या कुसमाचार सुनता हूँ। ९५५

वीर! उस रावण ने अपनी अधीनता न माननेवाले तीनों लोकों को युद्ध में जीत लिया, सही। पर वह क्या युद्ध में तुम्हारे विरुद्ध खड़ा हो सका? तुम्हें मार सका? यह कैसा विचित्र समाचार है?। ९५५

ऎऩ्ऱॆऩ् ऱेङ्गि यिरङ्गि यिऩ्ऩलाल्, पॊऩ्ऱुऩ् दऩ्मै पुहुन्द पोदवर्
कॊऩ्ऱुऱ् जॊऱ्कॊ डुणर्च्चि नल्हिऩाऩ्, वऩ्ऱिण् डोळ्वरै यऩ्ऩ मारुदि 956

ऎऩ्ऱु ऎऩ्ऱु–ऐसा, ऐसा; एङ्कि इरङ्कि–तरसकर रोकर; इऩ्ऩलाल्–दुःख से; पॊऩ्ऱुम् तऩ्मै–मरण-स्थिति को; पुकुन्त पोतु–जब सम्पाति पहुँच गया तब; वऩ् तिण् वरै अऩ्ऩ–कठोर सुदृढ़ पर्वत-सम; तोळ् मारुति–कन्धों वाले मारुति ने; अवर्कु–उससे; ऒऩ्ऱुम् चॊल् कॊट्टु–अनुकूल शब्दों से; उणर्च्चि नल्किऩाऩ्–धीरज बँधाया। ९५६

सम्पाति इस तरह विलाप करते हुए तरस और दुःख के बढ़ने से आसन्नमरण हो गया। तब कठोर सुदृढ़ पर्वत-सम कन्धों वाले हनुमान ने अनुकूल वचन कहकर धीरज दिलाया। ९५६

तेर्ऱत् तेऱि यिरुन्द शॆङ्गणाऩ्, कूऱ्ऱॊप् पाऩ्कॊलै वाळ रक्कऩो
डेऱ्ऱुप् पोर्शॆय्द दॆऩ्ऩि मित्तॆऩक्, काऱ्ऱिऩ् शेयिदु कट्टु रैक्कुमाल् 957

तेर्ऱ–धीरज देने पर; तेऱि इरुन्त–सँभला जो रहा, उस; चॆम् कणाऩ्–अरुणाक्ष (सम्पाति) ने; कूऱ्ऱु ऒप्पाल्–यम-सम (जटायु) को; कॊलै वाळ्–घातक तलवारधारी; अरक्कऩोटु–राक्षस के; एऱ्ऱु–सामने जाकर; पोर् चॆय्ततु–युद्ध करना; ऎऩ् निमित्तु–(पड़ा) किस हेतु; ऎऩ्ऩ–पूछने पर; काऱ्ऱिऩ् चेय्–पवन-पुत्र ने; इतु–यह; कट्टुरैक्कुम्–कहा। ९५७

हनुमान के धैर्य देने से सँभलकर उस अरुणाक्ष सम्पाति ने पूछा कि यम-सम जटायु का घातक तलवार (चन्द्रहास) के धारक रावण से लड़ना किस निमित्त हुआ ? हनुमान ने उत्तर दिया। ९५७

ऎङ्गो माऩव् विराम निल्लुळाळ्, शॆङ्गो लाऩ्महळ् शीदै शॆव्वियाळ्
वॆङ्गोल् वञ्जन् विळैत्त मायैयाल् तङ्गो ऩ्पिरि वुऱ्ऱ तऩ्मैयाळ् 958

ऎम् कोमाऩ्–हमारे नायक; अ इरामऩ्–उन श्रीराम की; इल् उळाळ्–गृहिणी; चॆम् कोलाऩ्–न्यायसम्मत आज्ञा-दण्डधर; मकळ्–(जनक) की दुहिता; चॆव्वियाळ्–उत्तम; चीतै–सीतादेवी; वॆम् कोल् वञ्चऩ्–क्रूर दण्डधर वंचक रावण की; विळैत्त–की हुई; मायैयाल्–माया से; तऩ् कोऩ्–अपने राजा (पति) से; पिरिवुऱ्ऱ तऩ्मैयाळ्–बिछुड़ी हुई स्थिति वाली हो गयी। ९५८

हमारे प्रभु नायक श्रीराम की गृहिणी, नीतिसम्मत शासक जनकराज की दुहिता और उत्तम देवी सीता क्रूर शासक वञ्चक रावण के माया-कार्य से अपने पति से वियुक्त हो गयीं। ९५८

कॊण्डे हुङ्गॊलै वाळ रक्कऩैक्, कण्डा ऩुम्बि यरङ्ग इक्कलाऩ्
वण्डार् कोदैयै वॆत्तु नीङ्गॆऩाऩ्, तिण्डे राऩॆदिर् शिऩ्दै शोरिऩाऩ् 959

कॊण्टु एकुम्–उनको ले जानेवाले; कॊलै वाळ् अरक्कऩै–घातक तलवारधारी

राक्षस को; अऱम् कटक्कलान्–धर्म का उल्लंघन न करनेवाले; उम्पि–तुम्हारे भाई ने; कण्टान्–देखा; वण्टु आर् कोतैयै–भ्रमरावृत मालाधारिणी सीता को; वैतुतु–छोड़कर; नीङ्कु–हट जाओ; अँना–कहकर; तिण् तेरान् ॲतिर्–सुदृढ़ रथ वाले (रावण) के विरुद्ध; चिन्तै चीऱ्ऱिनान्–मन का कोप दिखाया। ९५९

संहारक तलवारधारी रावण उन्हें ले जा रहा था। तब धर्म का उल्लंघन न करनेवाले तुम्हारे भाई जटायु ने उसे देख लिया। उसने रावण से कहा कि भ्रमरावृत मालाधारिणी देवी को यहीं छोड़कर भाग जाओ। फिर क्रुद्धमन उसने रथ पर जानेवाले रावण का सामना किया। ९५९

शीऱित् तीयव नेऱु तेरैयुम्, कीऱित् तोळ्हळ् किऴित्त ऴित्तपिन्
तेऱित् तेवर्ह डेवन् तॅय्ववाळ्, वीऱप् पौन्ऱिननन् मॅय्म्मै योर्नॅन्ऱान् 960

मॅय्म्मैयोन्–सत्यसंध जटायु; चीऱि–कुपित होकर; तीयवन्–खल के; एऱु तेरैयुम्–सवार हुए रथ को; कीऱि–तोड़कर; तोळ्कळ्–उसके कन्धों को; किऴित्तु–चीरकर; अऴित्त पिन्–मिटाने के बाद; तेऱि–(रावण ने) धैर्य अवलम्बित कर; तेवर्कळ् तेवन्–देवाधिदेव की; तॅय्व वाळ्–दिव्य तलवार (चन्द्रहास) को; वीऱ–चलाया; पौन्ऱिनन्–(तब जटायु) मरा; ॲन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ९६०

सत्यसंध जटायु ने क्रोध के साथ रावण के वाहन रथ को तोड़ा; उसके कन्धों को क्षत-विक्षत किया। उसको हरा दिया। बाद रावण ने दृढ़संकल्प हो देवाधिदेव, परमेश्वर-प्रदत्त दिव्य तलवार से वार किया। तब जटायु (पंखों के कट जाने से) मर गया। ९६०

(मूल-टीकाकार इधर एक सरस बात कहते हैं। युद्ध के सिलसिले में रावण ने जटायु से जान लिया कि जटायु का मर्मस्थान पंखों में था। जटायु ने सत्य कह दिया था। पर रावण ने झूठ कहा कि मेरे प्राणों का मर्मस्थान पैर का अँगूठा है। यह वृत्तान्त एक शैवसंत ज्ञानसम्बन्ध मूर्ति के स्तुतिगीतों में पाया जाता है। इसी के आधार पर इस पद्य में जटायु को 'सत्यसंध' कहा गया है।)

पैन्दार्त् तोळ ऩिरामन् पत्तिनि, शॅन्दाळ् वञ्जि तिऱत्ति ऱन्दवन्
मैन्दा रॅम्बि वरम्बिल् शीर्त्तियो, डुय्न्दा नल्ल दुलन्द दुण्मैयो 961

पैन्तार् तोळन्–नवीन पुष्पों की मालाधारी कन्धों वाले; इरामन् पत्तिनि–श्रीराम की धर्मपत्नी; चॅम् ताळ्–लाल चरण की; वञ्चि–वल्लरी-सी सीता; तिऱत्तु–के निमित्त; इऱन्तवन्–जो मरा; मैन्तु आर्–बलयुक्त; ॲम्पि–(वह) मेरा भाई; वरम्पु इल् चीर्त्ति योटु–अपार यश के साथ; उय्न्तान्–अमर हो गया; अल्लतु–ऐसा कहे बिना; उलन्ततु–मरा कहना; उण्मैयो–सत्य (कथन) होगा क्या। ९६१

नवीन पुष्पों की माला से अलंकृत श्रीराम की धर्मपत्नी, लाल (ललाई लिये) चरणों की, लता-सी देवी के निमित्त मरा मेरा भाई! वह बड़ा बलशाली है। अपार यश के साथ वह तर गया! ऐसा कहना छोड़कर 'हत हो गया' कहना क्या सत्यकथन होगा ? । ९६१

अऱमन् ऱानुड ॲम्बि यन्बिनो, डुऱवुन् नावुयिर् ऑन्ऱ वोविन्ऱात्
पॅऱवॊण् णाददोर् पॅऱ्ऱि पॅऱ्ऱवऱ्, किऱवॅन् ऱामिदि लिन्ब मियावदे 962

ॲम्पि–मेरे अनुज भाई ने; अऱम् अन्ऱान्ऱन्–धर्म-विग्रह श्रीराम से; अन्पितोटु उऱवु उन्ऩा–प्रेम का नाता मानकर; उयिर् ऑन्ऱ–प्राण लगाने से; ओवित्ताऩ्–(प्राण) दे दिये; पॆऱ ऑण्णाततु–अप्राप्य; ओर्–अनुपम; पॅऱ्ऱि–लाभ; पॅऱ्ऱवऱ्कु–जिसे मिला उस जटायु के लिए; इऱवु ॲन्ऩाम्–मरा कहना क्या गौरव देगा; इतिल्–इससे बढ़कर; इन्पम्–सुखद; यावते–क्या होगा। ९६२

मेरे भाई ने धर्ममूर्ति श्रीराम के साथ अपना नाता जोड़ लिया। उसमें उसके प्राण मिले हुए थे। इसलिए उसने प्राण छोड़ दिये और सम्बन्ध निबाह लिया! दुष्प्राप्य लाभ उसे मिल गया। ऐसे उसके सम्बन्ध में मृत्यु के शब्द का प्रयोग क्या अर्थ रखेगा ? इस मरण से बढ़कर आनन्द-दायक क्या हो सकता है ? । ९६२

वाऴ्वित् तीरॅनै मैन्दर् वन्दुनीर्, आऴ्वित् तीरलिर् तुन्ब वाऴिवाय्
केऴ्वित् तीविनै कीऱि नीरिरुळ्, पोऴ्वित् तीरुरै पॊय्यि नीङ्गिनीर् 963

केऴ्वि–श्रवण से; तीविनै कीऱ्ऱीर्–पाप का नाश कर चुकनेवाले; इरुळ्–(अज्ञान-) तिमिर को; पोऴ्वित्तीर्–तोड़ चुके; उरै पॊय्यिन्–असत्य-कथन से; नीङ्कित्तीर्–दूर रहनेवाले; मैन्तर्–वीर; नीर् वन्तु–तुम लोगों ने आकर; ॲनै–मुझे; तुन्प आऴि वाय्–दुःख-सागर में; आऴ्वित्तीर् अलीर्–डुबो दिया नहीं; ॲनै वाऴ्वित्तीर्–मुझे तार दिया। ९६३

तुम लोगों ने श्रवण-ज्ञान से अपना पाप नष्ट कर दिया है! अज्ञान-तिमिर को भगा दिया है! असत्य-कथन से दूर रहनेवाले हो गये। हे ऐसे वीर! तुमने इधर आकर जटायु की मृत्यु का समाचार सुनाकर दुःख-सागर में मग्न नहीं कराया। पर मुझे तार दिया। ९६३

ॲल्ली रुम्मव् विराम नाममे, शॊल्ली रॅन्शिऱै तोन्ऱुञ् जोर्विला
नल्ली रप्पय नण्णु नल्लशॊल्, वल्लीर् वाय्मै वळर्क्कुम् माण्बिन्ऱीर् 964

नल्ल चॊल् वल्लीर्–श्रेष्ठ वक्ता; वाय्मै वळर्क्कुम्–सत्यपालक; माण्पित्तीर्–गौरवपूर्ण; ॲल्लीरुम्–तुम सब; अ इराम नाममे–उन श्रीराम का ही नाम; चॊल्लीर्–कहो; ॲन् चिऱै–मेरे पंख; तोन्ऱुम्–प्रकट हो (उग) आयँगे; चोर्वु इला–अक्षय; नल् ईर पयन्–अच्छी कृपा का फल; नण्णुम्–मिलेगा। ९६४

हे मंगलवक्ता! सत्यपालक गौरवशाली! तुम सब अब श्रीराम के

नाम का उच्चारण करो। तो मेरे पंख उग आयँगे। श्रीराम की अचल कृपा का फल मिलेगा। ९६४

ऍऩ्ऱा नऩ्ऩदु काण्डुम् यामॆना, निऩ्ऱार् निऩ्ऱुऴि नील मेनियाऩ्
नऩ्ऱा नाम नविऩ्ऱु नल्हिऩार्, वऩ्ऱो ळाऩ्शिऱै वाऩम् दायवे 965

ऍऩ्ऱाऩ्–(सम्पाति ने) ऐसा कहा; याम् अऩ्ऩतु काण्टुम्–हम वह देखेंगे; ऍऩा–कहकर; निऩ्ऱार्–स्थित हुए; निऩ्ऱुऴि–उसी स्थिति में; नील मेतियाऩ्–नीलवर्ण; नऩ्ऱु आम् नामम्–(श्रीराम का) शुभ नाम; नविऩ्ऱु नल्किऩार्–उच्चारण कर हित किया; वऩ् तोळाऩ् चिऱै–सबल कन्धो वाले सम्पाति के पंख; वाऩम् ताय–आकाश तक बढ़ गये। ९६५

सम्पाति ने ऐसा कहा। वानरों को कुतूहल हुआ। सोचा कि वह करामात देखेंगे। वहीं खड़े होकर उसी स्थिति में वे श्रीराम के शुभनाम का उच्चारण करने लगे, यह बड़ा उपकार हुआ। बलिष्ठ कन्धों वाले सम्पाति के पंख उगकर आकाश को छूते हुए बढ़ गये। ९६५

शिऱैबॆऱ् ऱाऩ्ऱिहऴ् हिऩ्ऱ मेनियाऩ्, मुऱैबॆऱ् ऱामुल हॆङ्गुम् मूडिनाऩ्
निऱैबॆऱ् ऱावि नॆरुप्पु यिर्क्कुम्वाळ्, उऱैपॆऱ् ऱालॆऩ लामु ऱुप्पिनाऩ् 966

चिऱै पॆऱ्ऱाऩ्–पंख-प्राप्त; तिकऴ्किऩ्ऱ–शोभनेवाले; मेतियाऩ्–शरीर का; मुऱै पॆऱ्ऱु आऩ्–क्रम से सृष्ट; उलकु ऍङ्कुम्–सारे भूतल को; मूटिऩाऩ्–ढँककर; निऱै पॆऱ्ऱु–खूब वर्धित होकर; आवि नॆरुप्पु–धुआँ-सहित अग्नि; उयिर्क्कुम्–निकालनेवाली; वाळ्–तलवार; उऱै पॆऱ्ऱाल् ऍऩल् आम्–म्यान पा गयी जैसे; उऱुप्पिऩाऩ्–अंगो-सहित हुआ। ९६६

तब सम्पाति पंखसहित होकर शोभायमान दिखा। उसने क्रम से वढ़े हुए अपने पंखों से सारी भूमि को ढँक दिया। वह पूर्णरूप से सर्वांग-सम्पन्न होकर एक तलवार के समान लगा, जिससे धुआँसहित आग-सी निकल रही हो और जो म्यान में रखी जा चुकी हो। ९६६

तॆरुण्डाऩ् मॆय्प्पॆयर् शॆप्प लोडुमुवऩ्, दुरुण्डा ऩुऱ्ऱ पयत्तै युऩ्ऩिनार्
मरुण्डार् मानवर् कोऩै वाऴ्त्तिनार्, वॆरुण्डार् शिन्दै वियन्दु विम्मुवार् 967

तॆरुण्टाऩ्–ज्ञानियों द्वारा जो परब्रह्म बताये जाते है; मॆय्प्पॆयर्–उन श्रीराम का सत्य नाम; चॆप्पलोटुम्–उच्चारण (जप) करने पर; वन्तु उरुण्टाऩ्–जो लोटता-पोटता आया; उऱ्ऱ पयत्तै–उसको मिली उपलब्धि; उऩ्ऩिऩार्–सोचकर; मरुण्टार्–विस्मय-विमूढ़ हुए; वॆरुण्टार्–डरे; वियन्तु–आश्चर्य से; चिन्तै विम्मुवार्–मन भरा हो; मानवर् कोऩै–नरपुंगव की (या मनुकुलपुंगव की); वाऴ्त्तिऩार्–स्तुति की। ९६७

वानर वीरों ने ज्ञानियों द्वारा परब्रह्मनिर्दिष्ट श्रीराम के नाम की महिमा देखी। सम्पाति लोटता-पोटता हुआ आया था। पर श्रीराम के

नाम के जप करने से उसके पंख उग आये। उस करामात को देखकर वे विस्मित हुए। उन्हें भय भी हुआ। आश्चर्य से भरकर उन्होंने नरपुंगव मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम की स्तुति की। ९६७

अन्ऩा नॆक्कडि दञ्ज लित्तुनी, मुन्ना ळुऱ्ऱु मुऱ्ऱु मोदॆनच्
चॊन्नार् शॊऱ्ऱु शिन्दै तोय्वुऱ्, तन्ना लुऱ्ऱु तान्वि ळम्बुवान् 968

अन्नान्-उससे; कटितु-शीघ्र; अञ्चलित्तु-हाथ जोड़कर; नी-तुम; मुन् नाळ् उऱ्ऱतु-पहले जो घटनाएँ घटीं; मुऱ्ऱुम्-पूरा; ओतु-कहो; ऍन-ऐसा; चॊन्नार्-कहा; तान्-वह; चॊऱ्ऱु-उनका कहना; चिन्तै तोय्वु उऱ-मन में प्रभाव कर गया, इसलिए; तन्नाल् उऱ्ऱतु-आप बीती को; विळम्पुवान्-कहने लगा। ६६८

उन्होंने तुरन्त पंख-प्राप्त सम्पाति को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और याचना की कि पहले जो हुआ वह सारा वृत्तान्त पूर्णरूप से कहो। उनकी बात ने उस पर प्रभाव किया। उसने आप-बीती बातों का यों विवरण दिया। ९६८

तायॆन्नत् तहैय नण्बीर् शम्बादि शडायु वॆन्बेम्
शेयॊळिच् चिऱैय वेहक् कळुहिनुक् करशु शॆय्वेम्
पाय्दिरैप् परवै ञालम् पडरिरुळ् परुहुम् पण्बिन्
आय्हदिर्क् कडवुट् टेरू ररुणनुक् कमैन्द मैन्दर् 969

ताय् ऍन तकैय-माता मानने योग्य; नण्पीर्-मित्रो; चम्पाति चटायु ऍन्पेम्-सम्पाति और जटायु नाम के हम; चेय् ऒळि चिऱैय-लाल प्रकाशमय पंखों वाले; वेक-अति वेगी; कळुकिनुक्कु-गीधों के; अरचु चॆय्वेम्-राजा रहे; पाय् तिरै परवै-लपकती आनेवाली लहरों वाले समुद्र से वलयित; ञालम्-भूमि पर; पटर् इरुळ्-व्याप्त अन्धकार को; परुकुम् पण्पिन्-दूर करने में समर्थ; आय् कतिर् कटवुळ्-श्रेष्ठ किरणों के सूर्यदेव के; तेर् ऊर्-रथ के सारथी; अरुणनुक्कु-अरुण के; अमैन्त मैन्तर्-योग्य पुत्र। ६६६

माता-सम मान्य मित्रो! हम सम्पाति और जटायु नाम के दो भाई हैं। हम लाल प्रकाशमय पंखों वाले और अतिवेगी गीधों पर शासन करनेवाले हैं। लहराती आनेवाली तरंगसकुल सागर से वलयित इस भूमि के अन्धकार के नाशक किरणमाली सूर्यदेव के रथ के सारथी, अरुण के युक्त पुत्र है। ९६९

आयुय रुम्बर् नाडु काण्डुमॆन् ऱॆरिवु तळ्ळ
मीयुयर् विशुम्बि नूडु मेक्कुऱच् चॆल्लुम् वेलै
कायहदिर्क् कडवुट् टेरैक् कण्णुऱ्ऱेङ् गण्ण् ऱामुन्
तीयॆयुन् दीय्क्कुन् दॆय्वच् चॆङ्गदिर्च् चॆल्वन् शीऱि 970

अ उयर् उम्पर् नाट्ट–उस उत्कृष्ट देवलोक को; काण्टुम् ॲन्ऱु–देखने को; ॲम् अऱिवु तळ्ळ–हमारी बुद्धि ने प्रेरित किया तो; मी उयर् विचुम्पिन् ऊट्ट–ऊपर रहनेवाले आकाश मे; मेक्कु उऱ–ऊँचे; चॅल्लुम् वेलै–जब चले तब; काय् कतिर्–सन्तापक किरणों के; कटवुळ् तेरै–देव (सूर्य) के रथ को; कण् उऱ्ऱेम्–आँखों से देखा; कण्णुऱामुन्–देखने से पहले ही; तीयैयुम् तीय्क्कुम्–आग को भी जला सकनेवाले; तॅय्वम्–देवता; चॅम् कतिर् चॅल्वन्–लाल किरणमाली के; चीऱि–कुपित होते । ९७०

हमारी इच्छा हुई की स्वर्गलोक जाकर देखें। उससे प्रेरित होकर हम आकाश में ऊपर उड़े। तब जलानेवाली किरणों के स्वामी सूर्यदेव का रथ दृष्टि में पड़ा। उसको देखते ही आग को भी जला सकनेवाले लाल किरणों के स्वामी सूर्य ने कोप करके— । ९७०

मुन्दिय वॅम्बि मेनि मुरुङ्गऴल् मुडुहुम् वेलै
ॲन्दैनी कात्ति यॅन्ऱान् यानिरुज् जिरैयु मेन्दि
वन्दनॅन् मऱैत्त लोडु मऱ्ऱवन् मऱैयप् पोनान्
वन्दुमॅय् यिऱहु तीय्न्दु विऴुन्दनॅन् विऴिहि लादेन् 971

मुन्तिय–मेरे आगे जो गया; ॲम्पि मेनि–मेरे भाई के शरीर को; मुरुक्कु अऴल्–दाहक अग्नि से; मुट्कुम् वेलै–जलाने लगी, तब; ॲन्तै–तात; नी कात्ति–तुम बचाओ; ॲन्ऱान्–कहा; यान्–मैने भी; इरुम् चिऱैयुम् एन्ति–दोनों पंखो पर (धूप) धारण करके; वन्तनॅन् आकर; मऱैत्तलोट्टुम्–उसको छिपा लिया तब; अवन् मऱैय पोनान्–वह (मेरे पंखों के नीचे) छिपे-छिपे गया; मॅय् वॅन्तु–(इसलिए मेरा) शरीर झुलस गया; इऱकु तीय्न्तु–पंख जल गये; विऴिकिलातेन्–मरा नहीं; विऴुन्तनॅन्–(भूमि पर) गिर गया । ९७१

मेरे आगे (मुझसे पहले) जानेवाले मेरे भाई के शरीर को अपनी किरण की दाहक आग से दग्ध किया। तब अनुज ने मुझसे याचना की कि तात! मुझे बचाओ। मैंने अपने पंख फैला लिये और उसको उनके नीचे कर लिया। वह उनके नीचे छिपे-छिपे आने लगा। पर मेरा शरीर झुलस गया और पंख जल गये। भाग्य से मरा नहीं। मैं नीचे गिर गया। ९७१

मण्णिडै विऴुन्द वॅन्नै वानिडै वयङ्गु वळ्ळल्
कण्णिडै नोक्कि युऱ्ऱ करुणैयाऱ् चनहन् कादऱ्
पॅण्णिडै यीट्टिन् वन्द वानर रिमान् पेरै
ॲण्णिडै युऱ्ऱ कालत् तिऱहुपॅऱ् ऱॅऴुदि यॅन्ऱान् 972

मण् इटै विऴुन्त–भूमि पर गिरे हुए; ॲन्नै–मुझे; वानिटै–आकाश में; वयङ्कुम् वळ्ळल्–शोभनेवाले देवता ने; कण्णिटै नोक्कि–आँखों से देखकर; उऱ्ऱ

करुणैयाल्–हुई करुणा के साथ; चनकन् कातल् पॅण्–जनक की प्यारी दुहिता; इटै ईट्टिन् वन्त–(के निमित्त) मध्य आनेवाले; वानरर्–वानर; इरामन् पेरै–श्रीराम नाम का; ऍण्णिटै उऱ्ऱ कालत्तुतु–जब जाप करेंगे, उस समय; इऱकु पॆऱ्ऱु–पंख पाकर; ऍऴुति–उठोगे; ऎन्ऱान्–यह करुणा-वचन कहा। ६७२

आकाशचारी सूर्यदेव ने भूमि पर गिरे हुए मुझे देखा और मुझ पर हुई करुणा से कृपावचन कहा कि जनक की प्यारी दुहिता के निमित्त (उनकी खोज में) वानर वीर आयँगे। जब वे श्रीराम के दिव्य नाम का जाप करेंगे तब तुम्हारे पंख उग आयँगे और तुम उड़ सकोगे। ९७२

ऍम्बियु मिडरिन् वीऴ्वा नॆयदु मरुक्क वञ्जि
अम्बरत् तियङ्गुम् याणर्क् कऴ्हिनुक् करश नानान्
नम्बिमी रीदॆन् दन्मै नीरिव णडैन्द वाऱ्ऱै
उम्बरु मुवप्पत् तक्की रुणर्त्तुमि नुणर वॆन्ऱान् 973

उम्परुम् उवप्प तक्कीर्–देवों से भी प्रशंसनीय; नम्पिमीर्–श्रेष्ठ वीर; इटरिन् वीऴ्वान्–मेरे दुःख से दुःखमग्न; ऍम्पियुम्–मेरा भाई; एयतु मऱुक्क–मेरी आज्ञा इनकार करने से; अञ्चि–डरकर; अम्परत्तु–आकाश में; इयङ्कुम्–उड़नेवाले; याणर् कऴुकिनुक्कु–बलिष्ठ गीधों का; अरचन् आनान्–राजा बना; ईतु–यही; ऍम् तन्मै–हमारा वृत्तान्त है; नीर्–तुम्हारे; इवण्–यहाँ; अटैन्त आऱ्ऱै–पहुँचने का हाल; उणर उणर्त्तुमिन्–समझाकर बताओ; ऎन्ऱान्–कहा। ६७३

देवों से भी प्रशंसनीय काम करनेवाले! श्रेष्ठ वीरो! मेरा अनुज बहुत दुःखी हुआ। मेरी आज्ञा टालने से डरकर उसने मेरी बात मान ली और वह आकाशचारी बलिष्ठ पंखों वाले गीधों का राजा बना। यही हमारा वृत्तान्त है। अब कहो तुम्हारे इधर आने का वृतान्त। सम्पाति ने यह पूछा। ९७३

ऎन्ऱलु मिरामन् ऱन्नै येत्तिन रिऱैञ्जि यॆन्दाय्
पुन्ऱॊऴि लरक्कन् मऱ्ऱत् तेवियैक् कॊण्डु पोन्दान्
तॆन्ऱिशै यॆन्न वुन्नित् तेडिनाम् वन्दु मॆन्ऱार्
नन्ऱुनीर् वरुन्दल् वेण्डा नानिदु नविल्व लॆन्ऱान् 974

ऎन्ऱलुम्–(सम्पाति के यों) कहने पर; इरामन् तन्नै–श्रीराम की; एत्तिनर्–स्तुति की; इऱैञ्चि–प्रार्थना करके; ऎन्ताय्–तात; पुन् तॊऴिल् अरक्कन्–नीचकर्मी राक्षस; अ तेवियै–उन देवी को; तॆन् तिचै कॊण्टु पोन्तान्–दक्षिण दिशा में ले गया; ऎन्न–ऐसा; उन्नि–विचार कर; नाम् तेटि वन्तुम्–हम खोजते हुए आये; ऎन्ऱार्–कहा (वानरों ने); नन्ऱु–अच्छा; नीर् वरुन्तल् वेण्टा–तुम दुःख न करना; नान् इतु नविल्वल्–मैं इसके सम्बन्ध में कहूँगा; ऎन्ऱान्–कहा। ६७४

सम्पाति के यों पूछने पर वानरों ने श्रीराम की स्तुति की और विनय

प्रकट की। फिर उन्होंने कहा कि तात ! वह क्षुद्रकर्मी राक्षस उन देवी सीता को दक्षिण की ओर ले गया। इस विचार से हम उनकी खोज में इधर आये। तब सम्पाति ने उत्तर में कहा कि अच्छा ! मैं इसके सम्बन्ध मे कहूँगा। सुना। ९७४

पाहीऩ्ऱ कुदलै याळैप् पादह वरक्कऩ् पऱ्ऱिप्
पोहिऩ्ऱ पॉऴुदु कण्डेऩ् पुक्कऩ्ऩ निलङ्गै पुक्कु
वेहिऩ्ऱ वुळ्ळत् ताळै वॅञ्जिऱै यहत्तु वैत्ताऩ्
एहुमिऩ् काण्डि राङ्गे यिरुन्दन ळिऱैवि यिऩ्ऩुम् 975

पाकु ऑऩ्ऱ–चासनी-सम; कुतलैयाळै–मधुरभाषिणी को; पातक अरक्कऩ्–पातक राक्षस; पऱ्ऱि–पकड़कर; पोकिऩ्ऱ पॉऴुतु–जब जा रहा था, तब; कण्टेऩ्–मैंने देखा; इलङ्कै पुक्कऩ्–लंका में घुस गया; पुक्कु–वहाँ जाकर; वेकिऩ्ऱ उळ्ळत्ताळै–दग्धचित्त उनको; वॆम् चिऱै अकत्तु–कठोर कारागृह में; वैत्ताऩ्–रख लिया; इऱैवि–देवी; इऩ्ऩुम्–अब भी; आङ्के–वहीं; इरुन्तऩळ्–रहती है; एकुमिऩ् काण्टिर्–जाकर देख लो। ९७५

जब रावण चासनी-सम मधुरभाषिणी सीता को ले जा रहा था तब मैंने उसे देखा। वह लंका में गया और वहाँ जाकर उसने दग्ध मन वाली सीतादेवी को भयंकर कारागृह में बन्दी बनाकर रखा है। ईश्वरी अब भी वहीं हैं। जाकर देखो। ९७५

ऍल्लीरुञ् जॅऱ्ऱलॆऩ्ब दॆळिदऩ्ऱव् विलङ्गै मूदूर्
वल्लीरे लॊरुवरेहि मऱैन्दव णॊऴुहि वाय्मै
शॊल्लीरे तुयरै नीक्कित् तोहैयैत् तॆरुट्टि मीडिर्
अल्लीरे लॆऩ्शॊऱ् ऱेऱि युणर्त्तुमि नऴहर्क् कम्मा 976

अ इलङ्कै मूतूर–उस प्राचीन नगर, लंका में; ऍल्लीरुम्–तुम सबका; चेऱल् ऍऩ्पतु–पहुँचना; ऍळितु अऩ्ऱु–आसान नहीं; वल्लीरेल्–कर सको तो; ऑरुवर् एकि–एक जाकर; अवण् मऱैन्तु ऑऴुकि–वहाँ छिपे-छिपे चलकर; वाय्मै चॊल्लीर्–श्रीराम के वचनों को कहो; तोकैयै–मयूरनिभ देवी को; तुयरै नीक्कि–दुःखमुक्त करके; तॆरुट्टि–धीरज दिलाकर; मीटिर्–लौट आओ; अल्लीरेल्–नहीं तो; ऍऩ् चॊल् तेऱि–मेरे कहने पर विश्वास करके; अऴकर्क्कु–सुन्दरराज से; उणर्त्तुमिऩ्–बताओ; (अम्मा–पूरक ध्वनि)। ९७६

पर उस प्राचीन लंका नगर में तुम सबका जाना सुलभ काम नहीं है। अगर कर सको तो तुममें से एक जाओ। वहाँ छिपे-छिपे घूमो और देवी से मिलकर श्रीराम के कहे वचन कह दो। देवी को दुःख-मुक्त कर दो और लौट आओ। अगर यह नही कर सको तो तुम मेरी बात पर विश्वास करो और सुन्दरराज श्रीराम से जाकर निवेदन कर दो। ९७६

काक्कुन रिऩ्मै यालक् कळुहिऩ मुळुदुङ् गऩ्ऱिच्
चेक्कैविट् टिरियल् पोहित् तिरिदरु मदऩैत् तीर्प्पान्
पोक्कॆऩक् कडुत्त दाहुम् नल्लदु पुरिमि ऩॆऩ्ऩा
मेक्कुऱ विशैयिऱ् चॆऩ्ऱाऩ् शिऱैयिनाल् विशुम्बु पोर्प्पाऩ् 977

काक्कुनर् इऩ्मैयाल्–रक्षक न होने से; अ कळुकु इऩम्–वह गीधों का समूह; मुळुतुम्–सारा; कऩ्ऱि–दुःखी होकर; चेक्कै विट्टु–वासस्थान छोड़कर; इरियल् पोकि–तितर-बितर जाकर; तिरि तरुम्–फिरेगा; अतऩै तीर्प्पाऩ्–उस (स्थिति) को दूर करने; पोक्कु–उनके पास जाना; ॲऩक्कु अटुत्ततु आकुम्–मेरा योग्य कर्तव्य है; नल्लतु पुरिमिऩ्–जो बेहतर लगे वह करो; ॲऩ्ऩा–कहकर; चिऱैयिऩाल्–अपने पंखों से; विचुम्पु पोर्प्पाऩ्–आकाश को छाता हुआ; मेक्कु उऱ–ऊपर; विचैयिल्–वेग के साथ; चॆऩ्ऱाऩ्–गया। ६७७

गीधों का कुलरक्षक राजा के विना दुःखी होगा और वासस्थान छोड़कर तितर-बितर हो जायगा। उसको कष्ट से बचाने के लिए मेरा उनके पास जाना आवश्यक है। मैंने जो दो उपाय कहे, उनमें जो बेहतर जँचता है वह करो। ऐसा कहकर उसने अपने पंख फलाये जिससे आकाश ही आच्छादित हो गया! वह ऊपर उड़कर अतिवेग से चला गया। ९७७

16 मयेन्दिरप् पडलम् (महेन्द्र पटल)

पॊय्युर शॆय्याऩ् पुळ्ळर शॆऩ्ऱे पुहलुर्ऱार्
कय्युरै नॆल्लित् तऩ्मैयि नॆल्लाङ् गरैहण्डाम्
उय्युरै पॆऱ्ऱा नल्लवै यॆल्ला मुऱवॆण्णिच्
चॆय्युमि नॊय्दिऱ् चॆय्वहै यावुम् शॆयवल्लीर् 978

पुळ् अरचु–गीधों का राजा; पॊय् उरै चॆय्याऩ्–झूठी बात नहीं कहेगा; ॲऩ्ऱे–यही; पुकलुऱ्ऱार्–कहते हुए; कै उरै नॆल्लि तऩ्मैयिऩ्–करतलामलकवत; ॲल्लाम् करै कण्टाम्–सब साफ़ जान गये है; उय् उरै–बचानेवाला समाचार; पॆऱ्ऱाम्–पा गये; नल्लवै ॲल्लाम्–भलाकारी सब; उऱ ॲण्णि–खूब सोचकर; चॆय्वकै यावुम्–करणीय सब; नॊय्तिल् चॆय वल्लीर्–जो शीघ्र कर सकते हो; चॆय्धुमिऩ्–कर लो। ६७८

गीधों का राजा झूठ नहीं बोलेगा। इस विश्वास पर वे आपस में बोलने लगे। किन्हीं ने कहा कि करतलामलकवत हमने सब ठीक-ठीक जान लिया। हमको बचानेवाला शुभवचन मिल गया। अब जो अच्छा होगा वही सोचकर शीघ्र काम करने का सामर्थ्य जिनमें है, वे तुम लोग करो। ९७८

माळ वलित्ते मऩ्ऱुमिस् माळा वशैयोडु
मीळवु मुऱ्ऱे मऩ्ऩवै तीरुम् वॆळिपॆऱ्ऱेम्

काळ निऱत्तो डॊप्पवर् माळक् कडऱावुऱ्
ऱाळु नलत्ती राळुमि नॆम्मा रुयिरम्मा 979

माळ वलित्तेम्–मरने का निश्चय किया; ऍन्ऱुम्–सदा; इ–इस; माळा वचैयोटुम्–अचल अपयश के साथ; मीळवुम् उऱ्ऱेम्–लौट जाना भी सोचा; अन्नवै तीरुम्–उनको दूर करते हुए; वॆळि पॆऱ्ऱेम्–मार्ग पा लिया; काळ निऱत्तोटु–विष-वर्ण का; ऑप्पवर्–साम्य रखनेवाले (राक्षस); माळ–मरे, इसके निमित्त; कटल् तावुऱ्ऱु–समुद्र लाँघकर; आळुम नलत्तीर–जाने का पौरुष रखनेवाले; ऍम् आरुयिर्–हमारे प्यारे प्राणों को; आळुमिन्–सुरक्षित करो। ६७६

उन्होंने आगे कहा। हमने मरने की बात सोची थी। फिर देवी को खोजे विना ही अचल अपयश लेकर लौट जाने का संकल्प भी किया। पर वे दोनों स्थितियाँ अब टल गयी। कुछ अच्छा मार्ग दिखायी देने लगा है। इसलिए हममें, जिनमें काले विष के-से रंग वाले राक्षसों को मारने का मौका पैदा करने के निमित्त समुद्र लाँघकर जाने का सामर्थ्य है, वे हमारे प्राणों की रक्षा करें। ९७९

शूरियन् वॆऱ्ऱिक् कादल तोडुन् जुडर्विऱ्कै
आरिय नैच्चॆन् ऱेदॊळ् दुऱ्ऱ दऱैहिऱ्पिन्
शीरिय दन्ऱु तेरुदल् कोऱ्ऱच् चॆयलम्मा
वारिह डप्पार् याव रॆन्नत्तम् वलिशॊल्वार् 980

वॆऱ्ऱि–विजयी; चूरियन् कातलत्तोटुम्–सूर्य के प्यारे पुत्र के साथ; चुटर् विल्–उज्ज्वल धनु को; कै आरियनै–हाथ में लिये रहनेवाले आर्य को; चॆन्ऱे–जाकर; तॊळुतु–नमस्कार करके; उऱ्ऱतु–बीती बात; अऱैकिऱ्पिन्–कहेंगे तो; चीरियतु अन्ऱु–श्लाघ्य नहीं होगा; तेरुतल्–खोजना; कॊऱ्ऱ चॆयल्–विजयसूचक काम है; वारि कटप्पार्–समुद्र लाँघ सकनेवाले; यावर् ऍन्न–हममें कौन है, पूछने पर; तम् वलि–अपना-अपना बल; चॊल्वार्–बखानने लगे। ६८०

जिस कार्य को करने की आज्ञा ले आये, उसे पूरा किये विना हमारा सूर्य के प्यारे पुत्र सुग्रीव और उज्ज्वल धनु के धारक श्रीराम के पास जाना और नमस्कार करके बीती बातों को कहना श्लाघ्य नहीं होगा। सीताजी का अन्वेषण ही वीरोचित कार्य है। इसलिए हममें कौन हैं, जो इस समुद्र को लाँघ सकते है? इस प्रश्न पर सब अपने-अपने बल का प्रमाण देने लगे। ९८०

नीलन् मुदऱ्पेर् पोर्हॆळु कोऱ्ऱ नॆडुवीरर्
शाल वुरैत्तार् वारि हडक्कुन् दहविन्मै
वेलै कडप्पॆन् मीळ मिडुक्किन् ऱॆनविट्टान्
वालि यळिक्कुम् वीर वयप्पोर् वशैयिल्लान् 981

नीलन् मुतल्–नील आदि; पेर्–बड़े; पोर् कॅळ्ळु–युद्ध-चतुर; कॉऱ्ऱम् नॅट्ट् वीरर्–विजय पाने में श्रेष्ठ वीर; वारि कटक्कुम् तकवु–समुद्र लाँघने की शक्ति का; इन्मै–अभाव; चाल–खूब; उरैत्तार्–बोले; वालि अळिक्कुम्–वाली दत्त; वीर वयम् पोर्–वीरता और विजयशीलता के साथ युद्ध करनेवाला; वचै इल्लात्–अनिंद्य अंगद ने; वेलै कटप्पॅन्–समुद्र लाँघ जाऊँगा; मीळ–लौटने की; मिट्कुकु इन्ऱु–शक्ति नहीं; ॲन्न–ऐसा; विट्टान्–पूरा किया (वचन)। ६८१

नील आदि युद्ध-समर्थ वीरों ने अपने में समुद्र-तरण की शक्ति का अभाव स्पष्ट रूप से मान लिया। वाली के पुत्र, वीरविजयी योद्धा अंगद ने कहा कि मैं समुद्र के उस पार चला जाऊँगा। पर लौट आने की शक्ति मुझमें नहीं है। ऐसा कहकर उसने अपने को छुड़ा लिया। ९८१

वेद मनैत्तुन् देर्दर वॅट्टा वोरुमॅय्यन्
पूदल मुऱ्ऱु मोरडि वैत्तुप् पॉलिपोऴ्दिन्
मादिर मॅट्टुन् जूऴ्परै वैत्ते वरमेरु
मोद विळैत्ते ताळुळै वुऱ्ऱेन् विऱन्मॉय्म्बीर् 982

नालु [मुकत्तान्–चतुर्मुख के; उतवुऱ्ऱान्–दत्त पुत्र (जाम्बवान) ने; विऱल् मॉय्म्पीर्–बलवान कन्धों वाले; वेतम् अनैत्तुम्–सारे वेद; तेर् तर–खोज देखें तब भी; ॲट्टा–अप्राप्य; ओरु मॅय्यन्–एक दिव्यशरीरी; पूतलम् मुऱ्ऱुम्–सारी भूमि को; ओर् अटि वैत्तु–एक पग में समाकर; पॉलि पोऴ्तिन्–जब शोभायमान रहे, तब; मातिरम् ॲट्टुम्–आठों दिशाओं में; परै वैत्ते–ढिंढोरा पीटते हुए; चूऴ् वर–घूमता गया; मेरु मोत–तब मेरु से टकराया और; इळैत्ते–थककर; ताळ् उळैवु उऱ्ऱेन्–मेरे पैरों में दर्द हुआ। ६८२

(चतुर्मुखपुत्र जाम्बवान ने कहा कि) हे शक्तिमन्त वीर! जब सारे वेदों के ज्ञान के परे रहनेवाले दिव्यशरीरी त्रिविक्रम सारी भूमि को एक चरण के अन्दर नापते हुए शोभ रहे थे तब मैं ही भूमि भर में उस बात का ढिंढोरा पीटते हुए घूमा। तब मेरु से टकराया और मेरे पैरों में दर्द हो गया। ९८२

आदलि निप्पे रार्हलि कुप्पुऱ् ऱहळिञ्जि
मीदु कडत्तित् तीयव रुट्कुम् विनैयोडुम्
शीदै तनैत्तेर्न् दिङ्गुडन् मीळुन् दिऱनिन्ऱॅन्
ऱोदि यिऱुत्ता नालु मुहत्ता नुदवुऱ्ऱान् 983

आतलिन्–इसलिए; इ पेर् आर् कलि–इस बड़े समुद्र को; कुप्पुऱ्ऱु–पारकर; अकळ् इञ्चि–खाई और प्राचीरों के; मीतु कटत्ति–पार जाकर; तीयवर् उट्कुम्–क्रूर राक्षसों को भय देनेवाले; विनैयोटुम्–कर्म के साथ; चीतै तनै–सीताजी को; तेर्न्तु–खोज पाकर; इङ्कु उटन् मीळुम्–यहाँ तुरन्त लौट आने का; तिऱन्–बल; इन्ऱु–नहीं; ॲन्ऱु–ऐसा; ओति इऱुत्तान्–कह दिया। ६८३

इसलिए अब इस समुद्र को लाँघने, खाई और प्राचीरों को पार कर जाने और उन बुरे राक्षसों को भयभीत करते हुए साहस दिखाकर सीताजी को खोज पाकर लौट आने की शक्ति मुझमें आज नहीं है। (—कहा चतुर्मुख-सूनु ने)। ९८३

यामिनि यिप्पो दारिडर् तुयुत्तिङ् गिन्नियारैप्
पोमॆत्त वैप्पे मॆन्वदु पुन्मैप् पुहळ्न्ट्रे
कोमुदल् वर्क्के ट्राहिय कॊट्रक् कुमरानम्
नाम निरुत्तिप् पेरिशै तैक्कु नवैयिल्लोन् 984

अयन् मैन्तन्–ब्रह्मा का पुत्र; को मुतल्वर्क्कु–वानर नायकों में; एट्राकिय–सिंह-सम; कॊट्र कुमरा–राजकुमार; याम् इत्ति इ पोतु–हम आगे अब; आर् इटर् तुयुत्तु–बहुत कष्ट सहते हुए; इङ्कु–यहाँ से; इतियारै–इच्छा करनेवालों को; पोम् ऍत्त वैप्पेम्–जाओ कह भेजें; ऍन्पतु–यह; पुन्मै पुकळ् अन्ट्रे–यश पर कलंक होगा न; नम् नामम् निरुत्ति–हमारा नाम अमर करके; पेर् इचै–बड़ा यश; तैक्कुम्–दिलानेवाला; नवै इल्लोन्–निर्दोष। ९८४

जाम्बवान को हनुमान का स्मरण आया। उसने अंगद से कहा। वानरयूथपों में सिंह, अंगद! हम अब क्यों संकट उठा रहे हैं? जो जाने को सम्मत होंगे, उनको भेजने की बात सोच रहे हैं? यह हमारे यश पर बट्टा होगा न? हमारा नाम अमर करनेवाला, बड़ा यश दिलानेवाला निर्दोष—। ९८४

आरियन् मुन्नर्प् पोदुर वुट्र वदन्नानुम्
कारिय मॆण्णिच् चोर्वर मुट्रुङ् गडनानुम्
मारुदि यॊप्पार् वेरिलै यॆन्ना वयन्मैन्दन्
शीरियन् मट्रो ळाण्मै तॆरिप्पा निवैशॆप्पुम् 985

आरियन्–श्रीराम से; मुन्नर्–पहले; पोतुर उट्र–जाकर (सुग्रीव को) सखा बना दिया; अततानुम्–उस कारण; कारियम् ऍण्णि–कर्तव्य समझकर; चोर्वु अर–बिना किसी शैथिल्य के; मुट्रुम्–पूरा करनेवाली; कटन्नानुम्–कर्तव्यपरता के कारण; मारुति ऑप्पार्–मारुति की समानता करनेवाला; वेरु इलै–और कोई नहीं है; ऍन्ना–कहकर; अयन् मैन्तन्–ब्रह्मा के पुत्र ने; चीरियन्–श्रेष्ठ हनुमान का; मल् तोळ् आण्मै–मल्लयुद्ध में चतुर भुजबल; तॆरिप्पान्–समझाने के लिए; इवै चॆप्पुम्–निम्नलिखित ये वचन कहने लगा। ९८५

और श्रीराम से नाता जोड़कर उस कारण और कर्तव्य को समझकर उसको पूरा करने मे तत्पर रहनेवाला जो हनुमान है, उसके समान और कोई नही है। फिर जाम्बवान उस हनुमान से उस मल्लवीर के भुजबल का वर्णन करते हुए यों बोला। ९८५

मेलै विरिञ्जन् वीयिनुम् वीया मिहैनाळीर्
नूलै नयन्दु नुण्णि दुणर्न्दीर् नुवऱ्क्कीर्
कालनु मञ्जुङ् गाय्शिन मॊय्म्बीर् कडनिन्ऱीर्
आल नुहर्न्दा नॊन्न वयप्पो रडर्हिऱ्पीर् 986

मेलै विरिञ्चन्–सर्वश्रेष्ठ विरंचि; वीयिनुम्–मर जायँ तो भी; वीया–अक्षय; मिकै नाळीर–लम्बी आयु वाले हो; नूलै–शास्त्रों को; नयन्तु–चाहकर; नुण्णितु उणर्न्तीर्–सूक्ष्म रूप से जानते हो; नुवल् तक्कीर्–भाषण-समर्थ; कालनुम् अञ्चुम्–यम को भी डरानेवाले; काय् चिन–भयंकर क्रोध के साथ; मॊय्म्पीर–शक्ति रखनेवाले हो; कटन् निन्ऱीर्–कर्तव्य पर अटल रहनेवाले; आलम् नुकर्न्तान् ऑन्न–हलाहल-भोगी (शिवजी) के समान; वय पोर्–विजयी युद्ध में; अटर्किऱ्पीर्–सबका हनन कर सकनेवाले होओगे। ९८६

सर्वश्रेष्ठ देवता ब्रह्मा चाहे मिट जायँ तो भी तुम अचल, अक्षय आयु वाले हो! शास्त्र के सूक्ष्म ज्ञान रखनेवाले; भाषणविदग्ध; यम को भी भयभीत करनेवाले क्रोधयुक्त बलवान; कर्तव्यपरायण और हलाहलभक्षक शिवजी के समान युद्ध में शत्रुसंहारक हो तुम। ९८६

वॆप्पुरु शॆन्दी नीर्वळि यालुम् विळियादीर्
शॆप्पुरु दॆय्वप् पल्बडै यालुञ् जिदैयादीर्
ऑप्पुरि नॊप्पार् नुम्मल दिल्ली रॊरुहाले
कुप्पुऱि नण्डत् तप्पुऱ मेयुङ् गुदिहॊळ्वीर् 987

वॆप्पु उरु–गरम; चॆम् ती–लाल आग से (और); नीर्–जल; वळियालुम्–और पवन से; विळियातीर्–तुम मरनेवाले नहीं; चॆप्पु उरु–कथित; पल् तॆय्व पटैयालुम्–विविध दिव्यास्त्रों से; चितैयातीर्–तुम अभेद्य हो; ऑप्पुरिन्–तुलना करके देखें तो; ऑप्पार्–तुम्हारे समान; नुम् अलतु–तुमको छोड़; इल्लीर्–कोई नहीं है; ऑरु काले कुप्पुऱिन्–एक ही छलाँग में; अण्टत्तु अप्पुऱमेयुम्–इस अण्ड के उस पार भी; कुति कॊळ्वीर्–जाकर कूद सकोगे। ९८७

गरम लाल अग्नि, जल और पवन से भी तुम मर नहीं सकते। प्रशंसित विविध दिव्यास्त्रों द्वारा भी तुम अभेद्य हो। उपमा ढूँढने पर अपने समान तुम ही हो; और कोई तुम्हारी समानता नहीं कर सकता। एक ही छलाँग में तुम इस अण्ड के उस पार कूद सकते हो!। ९८७

नल्लवु मॊन्ऱो तीयवु नाडि नवैतीरच्
चॊल्लवुम् वल्लीर् कारिय नेरे तुणिहिऱ्पीर्
वॆल्लवुम् वल्लीर् मीळवुम् वल्लीर् मिडलुण्डेल्
कॊल्लवुम् वल्लीर् तोळ्वलि यॆन्ऱुङ् गुऱैयादीर् 988

नल्लवम् ऑन्ऱो–अच्छे ही क्या; तीयवुम् नाटि–बुरे भी सोचकर; नवै तीर–

दोष दूरकर; चॊल्लवुम् वल्लीर्–बोलने में चतुर होओगे; कारियम् नीरे तुणिकिऱ्पीर्–कर्तव्य तुम ही निश्चय कर सकते हो; वॆल्लवुम् वल्लीर्–सफल भी होओगे; मीळवुम् वल्लीर्–(कार्य पूरा कर) लौट सकोगे; मिटल् उण्टेल्–युद्ध होगा तो; कॊल्लवुम् वल्लीर्–मार भी सकोगे; तोळ् वलि–भुजवल में; ऎन्ऱुम् कुऱैयातीर्–कभी हीन नहीं होओगे। ९८८

अच्छा, बुरा —सवकी विवेचना करके दोषहीन वातें कहने में तुम समर्थ हो। क्या करना है —यह तुम ही निश्चय करके उसको करने का सफलता पाने का और सफल होकर लौट आने का अद्भुत सामर्थ्य रखनेवाले हो। वहाँ कोई लड़ने आवे और युद्ध छिड़ जाय तो तुम उनको मार भी सकते हो। तुम्हारे भुजवल में कभी क्षीणता नही पड़ेगी। ९८८

मेरु किरिक्कु मीदुऱ् निऱ्कुम् पॆरुमॆय्यीर्
मारि तुळिक्कुन् दारै यिडुक्कुम् वरवल्लीर्
पारै यॆडुक्कुम् नोन्मै वलत्तीर् पळियऱ्ऱीर्
शूरिय नैच्चॆन् ऱॊण्गै यहत्तुन् दॊडवल्लीर् 989

मेरु किरिक्कुम्–मेरु गिरि से भी; मीतु उऱ् निऱ्कुम्–उन्नत रहनेवाले; पॆरु मॆय्यीर्–वड़े शरीर वाले; मारि तुळिक्कुम्–वर्षा से गिरनेवाली; तारै इटुक्कुम्–धार के वीच से भी; वरवल्लीर्–आ सकनेवाले हो; पारै ऎटुक्कुम्–भूमि को भी उठाने की; नोन्मै वलत्तीर्–वड़ी शक्ति रखनेवाले; पळि अऱ्ऱीर्–अनिंद्य हो; चॆन्ऱु–ऊपर जाकर; चूरियनै–सूर्यदेव को; ऒळ्–अपने उज्ज्वल; कै अकत्तुम्–हाथ से; तॊट वल्लीर्–स्पर्श कर सकते हो। ९८९

तुम्हारा शरीर मेरुपर्वत से भी वड़ा है। फिर भी वारिश की दो धारों के बीच से जा निकलने की शक्ति रखते हो! भूमि को उठाने की क्षमता तुममे है। इतना होते हुए भी अनिंद्य हो। ऊपर जाकर सूर्य को अपने उज्ज्वल हाथ से छूने की शक्ति रखनेवाले हो तुम। ९८९

अऱिन्दु तिऱत्ता ऱॆण्णि यऱत्ता ऱ्ऴियामै
मऱिन्दुरु ळप्पोर् वालियै वॆल्लु मदिवल्लीर्
पॊऱिन्दिमै यार्होन् वच्चिर बाणम् बुहमूऴ्ह
ऎऱिन्दुऴि यिऱ्ऱोर् पुन्मयि रेनु मिळवादीर् 990

तिऱत्तु आऱु–श्रेष्ठ मार्ग; ऎण्णि अऱिन्तु–सोच-समझकर; अऱत्तु आऱु अऴियामै–धर्म-मार्ग न विगाड़कर; वालियै–वाली को; पोर्–युद्ध में; मऱिन्तु उरुळ–औंधे गिरकर लोटने देते हुए; वॆल्लुम्–जिताने की; मति वल्लीर्–बुद्धिशक्ति से युक्त थे; इमैयार् कोन्–देवराज; वच्चिर पाणम्–वज्र-वाण; पॊऱिन्तु–आग उगलते हुए; पुक मूऴ्क–शरीर में घुसकर धँस जाय ऐसा; ऎऱिन्तुऴि–फेंकेगा तव भी; ओर् पुन् मयिरेनुम्–एक छोटा वाल भी; इऱ्ऱु इऴवातीर्–नष्ट नहीं होगा, ऐसे बलवान हो तुम। ९९०

दोष दूरकर; चॉल्लवुम् वल्लीर्–बोलने में चतुर होओगे; कारियम् नीरे तुणिकिऱ्पीर्–कर्तव्य तुम ही निश्चय कर सकते हो; वॅल्लवुम् वल्लीर्–सफल भी होओगे; मीळवुम् वल्लीर्–(कार्य पूरा कर) लौट सकोगे; मिटल् उण्टेल्–युद्ध होगा तो; कॉल्लवुम् वल्लीर्–मार भी सकोगे; तोळ् वलि–भुजबल में; ॲन्ऱुम् कुऱैयातीर्–कभी हीन नहीं होओगे । ९८८

अच्छा, बुरा —सबकी विवेचना करके दोषहीन बातें कहने में तुम समर्थ हो। क्या करना है —यह तुम ही निश्चय करके उसको करने का सफलता पाने का और सफल होकर लौट आने का अद्भुत सामर्थ्य रखनेवाले हो। वहाँ कोई लड़ने आवे और युद्ध छिड़ जाय तो तुम उनको मार भी सकते हो। तुम्हारे भुजबल में कभी क्षीणता नही पड़ेगी। ९८८

मेरु किरिक्कु मीदुऱ निऱ्कुम् पॅरुमॅय्यीर्
मारि तुळिक्कुन् दारै यिडुक्कुम् वरवल्लीर्
पारै यॅडुक्कुम् नोन्मै वलत्तीर् पळियऱ्ऱीर्
शूरिय नैच्चॅन् ऱॉण्गै यहत्तुन् दॊडवल्लीर् 989

मेरु किरिक्कुम्–मेरु गिरि से भी; मीतु उऱ निऱ्कुम्–उन्नत रहनेवाले; पॅरु मॅय्यीर्–बड़े शरीर वाले; मारि तुळिक्कुम्–वर्षा से गिरनेवाली; तारै इटुक्कुम्–धार के बीच से भी; वरवल्लीर्–आ सकनेवाले हो; पारै ॲटुक्कुम्–भूमि को भी उठाने की; नोन्मै वलत्तीर्–बड़ी शक्ति रखनेवाले; पळि अऱ्ऱीर्–अनिंद्य हो; चॅन्ऱु–ऊपर जाकर; चूरियनै–सूर्यदेव को; ऑळ्–अपने उज्ज्वल; कै अकत्तुम्–हाथ से; तॊट वल्लीर्–स्पर्श कर सकते हो। ९८९

तुम्हारा शरीर मेरुपर्वत से भी बड़ा है। फिर भी वारिश की दो धारों के बीच से जा निकलने की शक्ति रखते हो! भूमि को उठाने की क्षमता तुममे है। इतना होते हुए भी अनिंद्य हो। ऊपर जाकर सूर्य को अपने उज्ज्वल हाथ से छूने की शक्ति रखनेवाले हो तुम। ९८९

अऱिन्दु तिऱत्ता ऱॆण्णि यऱत्ता ऱळियामै
मऱिन्दुरु ळप्पोर् वालियै वॅल्लु मदिवल्लीर्
पॊऱिन्दिमै यार्होन् वच्चिर बाणम् बुहमूळ्ह
ऍऱिन्दुळि यिऱ्ऱोर् पुन्मयि रेनु मिळवादीर् 990

तिऱत्तु आऱु–श्रेष्ठ मार्ग; ऍण्णि अऱिन्तु–सोच-समझकर; अऱत्तु आऱु अळियामै–धर्म-मार्ग न बिगाड़कर; वालियै–वाली को; पोर्–युद्ध में; मऱिन्तु उरुळ–औंधे गिरकर लोटने देते हुए; वॅल्लुम्–जिताने की; मति वल्लीर्–बुद्धिशक्ति से युक्त थे; इमैयार् कोन्–देवराज; वच्चिर पाणम्–वज्र-बाण; पॊऱिन्तु–आग उगलते हुए; पुक मूळ्क–शरीर में घुसकर धँस जाय ऐसा; ऍऱिन्तुळि–फेंकेगा तब भी; ओर् पुन् मयिरेनुम्–एक छोटा बाल भी; इऱ्ऱु इळवातीर्–नष्ट नहीं होगा, ऐसे बलवान हो तुम। ९९०

तुमने ही श्रेष्ठ उपाय सोचकर धर्म का मार्ग बिगाड़े बिना वाली को युद्ध में मरकर लौटने दिया। वह तुम्हारी ही बुद्धि-शक्ति का परिणाम था। देवराज का वज्र आग उगलते हुए आकर तुम्हारे शरीर पर घुस जाये तो भी वह तुम्हारा एक छोटा बाल भी नष्ट नहीं कर सकता —तुम ऐसे क्षमताशाली वीर हो। ९९०

पोर्मु नॆदिर्न्दाल् मूवुल हेतुम् बॊरुळाहा
ओर्विल् वलङ्गॊण् डॊल्हलिल् वीरत् तुयर्दोळीर्
पारुल हॆङ्गुम् पेरिरुळ् शीक्कुम् पहलोन्मुन्
तेर्मु न्नडन्दे यारिय नूलुन् दॆरिवुट्रीर् 991

मू उलकेतुम्—तीनों लोक भी; पोर् मुन्—युद्ध में सामने; ऎतिर्न्ताल्—लड़ें तो; पॊरुळ् आका—कोई चीज न मानकर; ओर्वु इल्—दूसरों के लिए अगम; वलम् कॊण्टु—बल के साथ; ऒल्कल् इल्—अक्षुण्ण; वीरत्तु—साहस के साथ; उयर्—उन्नत रहनेवाले; तोळीर्—भुजाओं वाले; पार् उलकु ऎङ्कुम्—भूतलों के साथ अन्य लोकों में सर्वत्र; पेर् इरुळ्—घने अन्धकार को; चीक्कुम्—मिटानेवाले; पकलोन् मुन्—दिवाकर के सामने; तेर् मुन् नटन्ते—उसके रथ के सामने (मुख करते हुए) चलते-चलते ही; आरिय नूलुम्—संस्कृत के ग्रन्थों का भी; तॆरिवुट्रीर्—अध्ययन कर चुके हो। ९९१

तीनों लोक भी युद्ध में तुम्हारा सामना करेंगे तो भी वे कुछ चीज़ नहीं रहेंगे। तुम्हारा बल कोई जान भी नहीं सकता। बड़े बलिष्ठ और अक्षय साहसी हो! बल और साहसयुक्त कन्धों वाले! सभी लोकों के अन्धकारनाशक सूर्यदेव के सामने उनकी ओर मुख करके चलते हुए तुमने उनसे सभी संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन किया था। ९९१

नीदिय निन्रीर् वाय्मै यमैन्दीर् निनैवालुम्
मादर् नलम्बे णादु वळर्न्दीर् मरैयॆल्लाम्
ओदि युणर्न्दी रूळि हडन्दी रुलहीनुम्
आदि ययन्ट्रा नॆन्न यादु मरैहिन्रीर् 992

नीतियिन् निन्ड्रीर्—नीति पर अटल रहनेवाले; वाय्मै अमैन्तीर्—सत्यसंध; मातर् नलम्—स्त्री-सुख; निनैवालुम्—मन से भी; पेणातु—न चाहकर; वळर्न्तीर्—बड़े हुए हो; मरै ऎल्लाम्—सारे वेदों का; ओति उणर्न्तीर्—अध्ययन करके अर्थ जानते हो; ऊऴि—युग को भी; कटन्तीर्—बिताकर रहनेवाले हो; उलकु ईनुम्—लोकसर्जक; आति अयन्—आदि ब्रह्मा; ताने—ये ही हैं; ऎन्न—ऐसा; यातुम्—सबसे; अरैकिन्ड्रीर्—कहे जाते हो। ९९२

तुम नीति पर अटल रहनेवाले हो; सत्यसंध हो। मन से भी स्त्री-सुख नहीं चाहकर बड़े हुए ब्रह्मचारी हो! वेदों को पढ़कर उनका अर्थ जान

चुके हो। तुम्हारी आयु युग से भी बड़ी है ! तुमको 'लोग ब्रह्मा ही मान लें', इतने गौरवशाली हो। ९९२

अण्णल मैन्दऱ् कन्नुवुशि ऱन्दी रदनाल
कण्णियु णर्न्दीर् करुमनु मक्के कडनॅन्नत्
तिण्णिद मैन्दीर् शॅय्दुमु डिप्पीर् शिदैयादीर्
पुण्णिय मॉन्ऱे यॅन्ऱु निलैक्कुम् पॉरुळ्हॉण्डीर् 993

अण्णल् अ मैन्तऱ्कु–महिमामय उन श्रीराम के प्रति; अन्पु चिऱन्तीर्–प्रेम में बढ़े हुए हो; अततात्ते–उस निमित्त; करुमम्–कर्तव्य; कण्णि–सोचकर; उणर्न्तीर्–समझ गये; नुमक्के कटन् ऍन्न–अपना ही उत्तरदायित्व समझकर; तिण्णितु अमैन्तीर्–निश्चय कर लिया; चॅय्तु मुटिप्पीर्–पूरा कर चुकोगे; चितैयातीर्–अच्छेद्य हो; निलैक्कुम् पॉरुळ्–शाश्वत वस्तु; पुण्णियम् ऑन्ऱे–पुण्य ही है; ऍन्ऱु कॉण्टीर्–ऐसी धारणा बना ली है। ९९३

महिमामय श्रीराम के भक्तों में तुम सर्वश्रेष्ठ हो। उसी कारण तुमने यह कर्तव्य विचारकर अपना लिया। यह अपना उत्तरदायित्व समझकर कार्यरत हुए। तुम इसमें सफल भी हो जाओगे। तुम अच्छेद्य हो ! 'शाश्वत वस्तु पुण्य ही है' —इस तथ्य पर तुम विश्वास रखनेवाले हो। ९९३

अडङ्गवुम् वल्लीर् कालम दन्ऱे लमर्वन्दाल्
मडङ्गन् मुनिन्दा लन्न वलत्तीर् मदिनाडित्
तॉडङ्गिय वॉन्ऱो मुऱ्ऱुमु डिक्कुन् दॉऴिल्वल्लीर्
इडङ्गॅड वॅव्वा यूऱुकि डैत्ता लिडैयादीर् 994

कालम् अतु अन्ऱेल्–अनुकूल काल नहीं है तो; अटङ्कवुम् वल्लीर्–सब्र करके दबे रह सकनेवाले हो; अमर् वन्ताल्–युद्ध हुआ तो; मटङ्कल् मुनिन्ताल् अन्न–मानो सिंह कुपित हो गया हो; वलत्तीर्–ऐसा बल दिखानेवाले हो; मति नाटि–बुद्धि से तर्क करके; तॉटङ्कियतु ऑन्ऱो–अकेला आरब्ध कर्म ही क्या; मुऱ्ऱुम्–उससे सम्बद्ध सभी कार्य; मुटिक्कुम्–पूरा करने के; तॉऴिल् वल्लीर्–कार्य-कुशल हो; इटम् कॅट–संदर्भ बुरा हो; वॅम् वाय् ऊऱु–और भयंकर बाधा; किटैत्ताल्–आये तो भी; इटैयातीर्–पीछे हटनेवाले नहीं हो। ९९४

काल अनुकूल नहीं लगता तो तुम शान्त रहना जानते हो। युद्ध आया तो क्रुद्ध सिंह के समान बल का प्रयोग कर सकते हो। बुद्धि से सोचकर जो कार्य हाथ में लेते हो वही नहीं, उसके साथ संबद्ध सभी कार्यों को सफलतापूर्वक कर चुकने की कार्यकुशलता रखनेवाले हो। संदर्भ बिगड़ जाय और भयंकर बाधा उपस्थित हो तो तुम डरकर पिछड़नेवाले नहीं हो। ९९४

ईण्डिय कोऱ्ऱत् तिन्दिर नॆन्वान् मुदल्यारुम्
पूण्डुन डक्कु नल्नॆऱि यानुम् पॊऱैयानुम्
पाण्डिदर् नीरे पार्त्तित्ति दुय्क्कुम् बडिवल्लीर्
वेण्डिय पोदे वेण्डुरु वॆय्दुम् वित्तैवल्लीर् 995

कोऱ्ऱत्तु ईण्टिय–वीरतापूर्ण; इन्तिरन् ॲन्पान् मुतल्–इन्द्र आदि; यारुम्–सभी; पूण्टु नटक्कुम्–जिस मार्ग को अपनाकर चलते हैं; नल् नॆऱियानुम्–ऐसे अच्छे आचरण से; पॊऱैयानुम्–क्षमा से; पाण्टितर् नीरे–पण्डित तुम ही हो; पार्त्तु–खूब सोचकर; इत्तिु उय्क्कुम्पटि–अच्छे प्रकार से (कार्य) करने में; वल्लीर्–चतुर हो; वेण्टिय पोते–इच्छा करते ही; वेण्टु उरु ॲय्तुम्–मनचाहा रूप लेने के; वित्तै वल्लीर्–कार्य में भी कुशल हो। ६६५

बलसमृद्ध देवेन्द्र आदि जिस मार्ग को महत्त्व देते हैं, उसी मार्ग पर चलने और क्षमता रखने से तुम पंडित हो ! तर्क-वितर्क करके किसी भी काम को योग्य रीति से चलाने में तुम दक्ष हो । जब चाहो तभी मन-माना रूप लेने के कार्य में तुम बड़े कुशल हो । ९९५

एहुमि नेहि यॆम्मुयिर् नल्हि रिशैकोळ्ळीर्
ओहै कोणर्न्दे मन्नैयु मिन्नर् कुरैयिल्लाच्
चाहर मुऱ्ऱुन् दाविडुम् नीरिक् कडऱावुम्
वेहम मैन्दी रॆन्ऱुवि रिञ्जन् महन्विट्टान् 996

नीर्–तुम; ई–इस; कटल् तावुम्–समुद्र लाँघने की; वेकम् अमैन्तीर्–गमनगति से युक्त हो; एकुमिन्–तुम जाओ; ओकै कोणर्न्तु–खुशखबरी लाकर; ॲम् उयिर्–हमारे प्राण; नल्कीर्–रक्षित करके; इचै कोळ्ळीर्–यश अर्जित कर लो; ॲम् अन्नैयुम्–हमारी जननी (सीतादेवी) भी; कुरैवु इल्ला–अक्षय; इन्तल् चाकरम्–दुःख-सागर; मुऱ्ऱुम्–पूरा लाँघ सकेंगी; ॲन्ऱु–कहकर; विरिञ्चन् मकन्–ब्रह्मा के पुत्र ने; विट्टान्–अपनी बात समाप्त की। ६६६

तुम्हारे पास समुद्र-तरण की गमन-शक्ति है । तुम ही जाओ और सन्तोष-समाचार लाओ । हमारी जान बचाओ और यशस्वी बनो । हमारी जगज्जननी जानकी भी दुःख-सागर-तरण कर लेंगी । जाम्बवान ने अपनी बात यह कहकर समाप्त की । ९९६

चाम्बनि यम्बत् ताळ्वद नत्ता मरैनाप्पण्
आम्बल्वि रिन्दा लन्न शिरिप्पा नऱिवाळन्
कूम्बलो डुञ्जेर् कैक्कम लत्तन् कुलमेल्लाम्
एम्बल्व रत्तन् शिन्दै तॆरिप्पा निवैशोन्नान् 997

चाम्पन् इयम्प–जाम्बवान के कहने पर; अऱिवाळन्–बुद्धिमान-हनुमान; ताळ्वतन्म् तामरै–उतरे हुए चेहरे रूपी कमल; नाप्पण्–के मध्य; आम्पल् विरिन्ताल्

अनृत–कुमुद विकसित हुआ जैसे; चिरिप्पात्–मन्दहास करते हुए; कूम्पलोंट्टम् चेर्–जोड़कर वन्द किये हुए; कै कमलत्तन्–हस्त-कमल; कुलम् ॲल्लाम्–सारे समूह के; एम्पल् वर–(वानरों को) आनन्द देते हुए; तन् चिन्तै–अपने मन की बात; तॅरिप्पात्–प्रकट करने हेतु; इवै चॊन्नान्–ये (निम्न) वचन कहे। ६६७

जाम्बवान की बात सुनकर बुद्धिमान हनुमान के उतरे हुए रहे कमल-मुख में कुमुद-सा एक मन्दहास छिटका। अपने दोनों हाथों को वन्द कमल के समान जोड़कर उसने अपने वानरकुल के सभी के मन में आनन्द भरते हुए निम्नोक्त बातें कहीं। ९९७

नीयिरे निनैयिन् मुन्ने नॆंडुन्दिरैप् परवै येऴुम्
तायुल हनैत्तुम् वॆन्ऱु तैयलैत् तरुदर् कॊत्तीर्
पोयिदु पुरिदि यॆन्ऱु पुलमैतीर् पुन्मै काण्डर्
केयिनि रॆन्नि नॆन्निर् पिऱन्दवर् याव रिन्नुम् 998

नीयिरे निनैयिन्–आप स्वयं सोचें तो; मुन्ने–पहले ही; नॆंट्टम् तिरै–उत्तुंग तरंगों वाले; परवै एऴुम्–सातों समुद्रों को; ताय्–लाँघकर; उलकु अनैत्तुम् वॆन्ऱु–सभी लोकों को जीतकर; तैयलै–सीतादेवी को; तरुतऱ्कु–ले आने; ऑत्तिर्–योग्य हैं; पोय्–तुम जाओ; इतु पुरिति ॲन्ऱु–यह काम करो, कहकर; पुलॅमै तीर् पुन्मै–अपनी बुद्धिहीन जड़ता को; काण्टऱ्कु–देख-समझने को; एयितिर्–(मुझे) प्रेरित किया, आपने; ॲन्नितिल्–तो; ॲन्निल्–मुझसे बढ़कर; पिऱन्तवर्–सफल-जन्म; इन्नुम् यावर्–और कौन है। ६६८

हे जाम्बवान! आप मन करते तो आप स्वयं पहले ही उत्तुंग तरंगोद्वेलित सातों सागरों का तरण करते, सारे लोकों को हरा देते और देवी को ला देते। आपमें इतनी सामर्थ्य है। लेकिन आपने मुझसे आज्ञा दी कि तुम जाओ और यह काम करो, ताकि मैं अपनी बुद्धि-हीनता को जान लूँ! तो मुझसे बढ़कर सफल-जन्म कौन होगा?। ९९८

मुऱ्ऱुनी रुलह मुऱ्ऱुम् विऴुङ्गुवान् मुऴङ्गि मुन्नीर्
उऱ्ऱदे यॆनिनु मण्ड मुडैन्दुपो युयर्न्द दॆनुम्
इऱ्ऱैनुम् मरुळु मॆङ्गो नेवलु मिरण्डु पालुम्
कऱ्ऱैवार् शिऱैह ळाहक् कलुऴनिर् कडप्पल् काण्डिर् 999

नीर् मुऱ्ऱम्–जलवलयित; उलकम् मुऱ्ऱम्–संसार भर को; विऴुङ्कुवान्–निगलने के लिए; मुऴङ्कि–गर्जन करते हुए; मुन्नीर् उऱ्ऱते–समुद्र उमग आये; ॲतितुम्–तो भी; अण्टम्–अण्ड; उटैन्तु पोय्–टूटकर; उयर्न्ततेनुम्–आकाश ऊँचा हो जायगा तो भी; इऱ्ऱै–अव; नुम् अरुळुम्–आपकी कृपा और; ॲम् कोन्–हमारे नाथ श्रीराम की; एवलुम्–आज्ञा; इरण्टु पालुम्–दोनों बाजुओं में; कऱ्ऱै वार् चिऱैकळ् आक–संकुलित और लम्बे पंख बनाकर; कलुऴनिल्–गरुड़ के समान; कटप्पल्–तरण करूँगा; काण्टिर्–देखो। ६६६

अब जल-घिरे भूतल भर को लीलने के लिए (त्रि-विध जल का) समुद्र ही क्यों न उमड़ आए, या अण्ड ही फूटे और आकाश ऊपर उड़ जाए, तो भी आपके आशीर्वाद और हमारे प्रभु की आज्ञा दोनों को दो बाजुओं के पक्ष बनाकर मैं गरुड़ के समान इस सागर को लाँघ लूँगा। देखो। ९९९

ईण्डिनि दुरैमिन् यात्ते यॅरिहड लिलङ्गै यॅय्दि
मीण्डिवण् वरुदल् काऱुम् विडैदम्मिन् विरैवि लॅन्ना
आण्डव रुवनुदु वाळ्त्त वलर्मळै यमरर् तूवच्
चेण्डोडर् शिमयत् तॅय्व मयेन्दिरत् तुम्बर्च् चॅन्ऱान् 1000

यात्ते–मै ही; ॲरि कटल्–तरंगाकुल समुद्र के मध्य रहनेवाली; इलङ्कै–लंका में; ॲय्ति–जाकर; मीण्टु इवण् वरुतल्–लौट यहाँ आऊँ; काऱुम्–तब तक; ईण्टु–यहाँ; इतितु–सुख से; उऱैमिन्–ठहरो; विरैविन्–शीघ्र; विटै तम्मिन्–विदा दो; ॲन्ना–कहने पर; आण्टु–तब; अवर्–उन वीरों के; उवनुतु वाळ्त्त–संतोष के साथ बधाई देते; अमरर्–देवों के; अलर् मळै–पुष्प-वर्षा; तूव–गिराते; चेण् तोटर्–आकाशव्यापी; चिमय–शिखरों-सह; तॅय्व–दिव्य; मयेन्तिरत्तु–महेन्द्र के; उम्पर्–ऊपरी भाग पर; चॅन्ऱान्–गया। १०००

मेरे अकेले ही उठती तरंगों वाले समुद्र-मध्य-स्थित इस लंका में जाकर लौट आते तक तुम लोग निश्चिन्त होकर यहीं रहो। शीघ्र बिदा दो। —हनुमान ने यों कहा। तब उन वानर वीरों ने आनन्द के साथ बधाई दी। देवों ने फूल बरसाये। हनुमान गगनचुंबी शिखरों वाले उस महेन्द्रपर्वत पर चढ़ चला। १०००

पॉरुवरु वेलै तावुम् पुन्दियान् पुवत्तन् दाय
पॅरुवडि वुयर्न्द मायोन् मेक्कुऱप् पॅयर्न्द ताळ्पोल्
उरुवरि वडिवि नुम्ब रोङ्गिन नुवमै यालुम्
तिरुवडि यॅन्नुन् दन्मै यावर्क्कुन् दॅरिय निन्ऱान् 1001

वेलै तावुम्–समुद्र-तरण में लगा हुआ; पॉरुवु अरु–अप्रतिम; पुन्तियान्–बुद्धिमान; पुवत्तम् ताय–भूमि को जिन्होंने नापा; पॅरुवटिवु उयर्न्त–बहुत बड़े आकार में वर्द्धित; मायोन्–उन मायावी श्रीविष्णु के; मेक्कु उऱ–ऊपर जाकर; पॅयर्न्त–व्याप्त; ताळ् पोल्–श्रीचरण के समान; उरुवु अरि–सबके लिए दृश्य; वटिविन्–रूप में; उम्पर्–आकाश में; ओङ्कितन्–ऊँचा बढ़ा; तिरुवटि ॲन्नुम् तन्मै–'श्रीचरण' का युक्तत्व; उवमैयालुम्–उपमा के रूप में भी; यावर्क्कुम् तॅरिय–सबके दृष्टिगोचर होते हुए; निन्ऱान्–खड़ा रहा। १००१

तब समुद्र-तरण में प्रवृत्त बुद्धिमान हनुमान त्रिभुवन-मापक त्रिविक्रम-देव के श्रीचरण के समान लगा, जो आकाश में जाकर व्याप्त हुआ था। उसको विष्णुभक्त 'छोटे विष्णुपाद' (शिऱिय तिरुवडि) के नाम से आदर

करते हैं। वह "तिरुवडि (श्रीचरण)" नाम अव उपमा के रूप में भी सार्थक हुआ। उस स्थिति में वह ऐसा खड़ा रहा कि सब उसको देख सकें। १००१

पार्निऴल् परप्पुम् पॊऩ्ऱेर् वॆयिऱ्कदिर्प् परिदि मैन्दऩ्
पोर्निऴल् परप्प मेलोर् पुहऴॆऩ वुलहम् बुक्कुत्
तार्निऴल् परप्पुन् दोळाऩ् ऱडङ्गड ऱावा मुऩ्ऩम्
नीर्निऴ लुवरि तावि यिलङ्गैमेर् चॆल्ल निऩ्ऱाऩ् 1002

मेलोर् पुकऴ् ऎऩ–उत्तम लोगों के यश के समान; तार् निऴल्–हारों का प्रकाश; परप्पुम् तोळाऩ्–छिटकानेवाली भुजाओं वाला; उलकम् पुक्कु–राक्षस-नगर में घुसकर; निऴल्–अपने प्रकाश को; पार् परप्पुम्–भूमि पर फैलानेवाले; पॊऩ् तेर्–स्वर्ण-रथ का; वॆयिल् कतिर्–और गरम धूप का स्वामी; परिति–सूर्य, उसके कुल के; मैन्तऩ्–पुत्र श्रीराम के; पोर् निऴल् परप्प–युद्ध का साहस फैलाने के लिए; तट कटल् तावा मुऩ्ऩम्–विशाल सागर को लाँघने से पूर्व; नीर् निऴल्–जल में उसकी छाया; उवरि तावि–समुद्र पार करके; इलङ्कै मेल् चॆल्ल–लंका पर गयी, ऐसा; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। १००२

श्रेष्ठ लोगों के यश के समान वह वहुत वड़ा, उत्कृष्ट और उन्नत था। उसके कन्धों से मणियों के हार की कांति छूट रही थी। वह लंका में प्रवेश करके, भूलोक में अपना प्रकाश फैलानेवाले सूर्यदेव के वंशज श्रीराम की युद्ध-वीरता की धूम मचाने हेतु उठनेवाला था। उसके काले सागर के तरण के पूर्व ही उसकी छाया नमक-समुद्र को पार कर लंका नगर पर जा रही। ऐसा खड़ा था वह। १००२

पहुवाय मडङ्गल् वैहुम् पडर्वरै मुऴुदु मूऴ्ह
उहुवाय विडङ्गॊ णाहत् तॊत्तवाल् शुऱ्ऱि यूऴिऩ्
नॆहुवाय शिहर कोडि नॆरिवऩ तॆरिय निऩ्ऱाऩ्
महवामै मुदुहिऱ् ऱोऩ्ऱु मन्दर मॆऩ्ऩलु मायाऩ् 1003

पकु वाय–खुले मुख के; मटङ्कल् वैकुम्–सिंह जहाँ रहते थे; पटर् वरै–वह विशाल पर्वत; मुऴुतुम्–पूर्ण रूप से; मूऴ्क–धँस गया; ऊऴिऩ्–क्रम से; नॆकुवाय–टूटे हुए; चिकर कोटि–अनेक शिखर; नॆरिवऩ–चूर हुए; विटम् उकुवाय–विष निकालनेवाले मुखों के; कॊऴ् नाकत्तु–प्राणहर सर्प; ऒत्त वाल्–के समान अपनी पूँछ को; चुऱ्ऱि–अपने शरीर पर लपेटकर; तॆरिय निऩ्ऱाऩ्–सव देख सकें, इस रीति से खड़ा रहा; मक आमै मुतुकिल्–(तव) वह श्रीविष्णु के अवतार कच्छप की पीठ पर; तोऩ्ऱुम्–जो खड़ा रहा उस; मन्तरम् ऎऩ्ऩलुम्–मन्दरपर्वत जैसा भी; आताऩ्–बना रहा। १००३

वह विशाल महेन्द्रपर्वत मुख-खोले अनेक सिंहों के साथ नीचे पूर्ण रूप से धँस गया। उसके शिखर सभी एक-एक करके फूटे और चूर-चूर हो गये। इस तरह हनुमान विषैले घातक सर्प के समान अपने लांगूल को

अपने शरीर पर लपेटे उस पर्वत पर सबके सामने ऐसा खड़ा रहा, मानो श्रीविष्णु के अवतार कच्छप पर स्थित मन्दर पर्वत हो। १००३

मिन्नॅन्डुङ् गॉण्ड ऱाळिन् वीक्किय कळलि ऩार्प्पत्
तन्नॅन्डुन् दोऱ्ऱम् वानोर् कट्पुलत् तॅल्लै ताव
वन्नॅन्डुञ् जिहर कोडि मयेन्दिर मण्डम् ताङ्गुम्
पॉन्नॅन्डुन् दूणिन् पाद शिलैयॅऩप् पॉलिय निन्ऱान् 1004

मिन् नॅटुम् कॉण्टल्–बिजली-सहित बड़ा मेघ; ताळिन् वीक्किय–अपने पैरों में बद्ध; कळलिन्–पायल के समान; आर्प्प–स्वरित होते; तन् नॅटुम् तोऱ्ऱम्–अपने बड़े आकार के; वानोर् कण् पुलत्तु–देवों की दृष्टि-पथ के; ताव–पार जाते; वल् नॅटुम्–कठोर और बड़े; चिकर कोटि–अनेक शिखरों-सहित; मयेन्तिरम्–महेन्द्र पर्वत; पात चिलै अॅन–पादप्रदेश के समान; पॉलिय–प्रकाशमान दिखा; अण्टम् ताङ्कुम्–इस अण्डगोल को धारण करनेवाले; पॉन् नॅटुम् तूणिन्–स्वर्ण के ऊँचे खम्भे के समान; निन्ऱान्–खड़ा रहा। १००४

विद्युत्सहित मेघ उनके चरणों में बद्ध चरणवलय के समान नाद कर रहे थे। उनका बड़ा रूप देवों के दृष्टिपथ के भी आगे दिख रहा था। शिखर-युत महेन्द्रपर्वत उसके चरणतल के समान लग रहा था। इस रीति से हनुमान अण्डगोल का वहन करते रहनेवाले स्वर्णस्तम्भ के समान खड़ा रहा। १००४

॥ किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ॥



❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

सुन्दरकाण्डम्

1. कडल् तावु पडलम् (समुद्र-तरण पटल)

कडवुळ् वाळ्त्तु (ईश्वर-स्तुति)

❀ अलङ्गलिऱ् ऱोत्ऱुम् बॊय्म्मै यरवॆंनप् पूद मैन्दुम्
विलङ्गिय विहारप् पाट्टिन् वेऱुपा डुऱ्ऱ वीक्कम्
कलङ्गुव दॆवरैक् कण्डा लवरॆन्ब कैवि लेन्दि
इलङ्गैयिऱ् पॊरुदा रन्ऱे मऱैहळुक् किऱुदि यावार् 1

अलङ्कलिल्–माला पर; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; पॊय्म्मै अरवु–मिथ्या सर्प; ऍंत–के समान; पूतम् ऐन्तुम्–पाँचों भूतों के; विलङ्किय–बने; विकारप्पाट्टिन्–परिवर्तन के; वेऱु पाटु उऱ्ऱ–बदले हुए; वीक्कम्–बहुत्व (के रूप); ऍवरै कण्टाल्–जिनके दर्शन से; कलङ्कुवतु–दूर होता है; अवर्–वे ही; मऱैकळुक्कु–वेदों के; इऱुति आवार्–अन्त (उपनिषद्-प्रतिपाद्य) विषय हैं; अन्ऱे–उन्होंने ही न; कै विल् एन्ति–हाथ में धनु लेकर; इलङ्कैयिल् पॊरुतार्–लंका में युद्ध भी किया; ऍन्प–ऐसा (तत्त्वदर्शी लोग) कहते हैं। १

माला पर सर्प का विपरीत ज्ञान जैसा होता हो वैसे पाँचों भूतों के परिवर्तन और मिश्रण पर बने इस प्रपञ्च का निराकरण किनके दर्शन के फलस्वरूप होगा ? वे ही वेदान्त (उपनिषद्)-प्रतिपादित परब्रह्म हैं और उन्होंने हाथ में धनुष लेकर लंका में युद्ध किया था। यही तत्त्वविदों का कहना है। १

नूल् (ग्रन्थ)

आण्डहै याण्ड वानोर् तुऱक्कना डुहिऱ् कण्डान्
ईण्डदु तान्गॊल् वेलै यिलङ्गैयॆंन् ऱैय मॆय्दा
वेण्डरुम् विण्णा डॆन्नुम् मॆय्म्मैहण् डुळ्ळ मीट्टान्
काण्डहुङ् गॊळ्है युम्ब रिल्लॆंनक् करुत्तुट् कॊण्डान् 2

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ (हनुमान) ने; आण्टु–वहाँ; वाऩोर् तुऱक्क नाट्–देवताओं का स्वर्गलोक; अरुकिल् कण्टाऩ्–अपने पास में देखा; ईण्टतु ताऩ् कोल्–यहीं का तो क्या; वेलै इलङ्कै–समुद्रवलयित लंका नगर; ॲऩ्ऩ–ऐसा; ऐयम्–ॲय्ता–संशय करके; वेण्टु अरुम्–(फिर) जिसको देखने की आवश्यकता नहीं; विण्णोट्टु–व्योमलोक; ॲऩ्ऩुम् मॅय्म्मै कण्टु–है, यह सत्य जानकर; उळ्ळम् मीट्टाऩ्–अपने मन को फिरा लिया; काण् तकुम् कोळ्कै–देखने का कार्य; उम्पर् इल्–आकाशलोक में नहीं; ॲऩ–ऐसा; करुत्तु उट् कोण्टाऩ्–विचार मन में कर लिया। २

पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने वहाँ (जब वह अपने बड़े रूप में खड़ा रहा) पास में देवलोक को देखा। एक पल उसे भ्रम हुआ कि क्या यही समुद्र-वलयित लंका नगरी है। फिर उसे ज्ञात हो गया कि यह व्योमलोक है, जहाँ जाना आवश्यक नहीं है। यह सत्य जान लेने पर उसने अपने विचार को बदल लिया। उसने विचारा कि 'मेरा खोजने का कार्य स्वर्ग में नहीं है'। २

कण्डन निलङ्गै मूदूर्क् कडिपॉळिऱ् कनह नाञ्जिल्
मण्डल मदिलुङ् गोऱ्ऱ वायिलु मणियिऱ् चॅय्द
वॅण्डळक् कळब माड वीदियुम् बिऱवु मॅल्लाम्
अण्डमुन् दिशैह ळॅट्टु मदिरत्तोळ् कोट्टि यार्त्ताऩ् 3

इलङ्कै मूतूर्–लंका के प्राचीन नगर के; कटि पॉळिल्–रक्षक उद्यान; कतक नाञ्चिल्–स्वर्णमय प्राचीरों के भाग; मण्टल मतिलुम्–और गोल परकोटे; कोऱ्ऱम् वायिलुम्–विजयद्वार; मणियिऱ् चॅय्द–मणि-जड़ित; वॅण् तळ कळप–श्वेत चूना-लेप लगे हुए; माट वीतियुम्–सौधों की वीथियों; पिऱवुम् ॲल्लाम्–और अन्य सभी को; कण्टऩऩ्–देखकर; अण्टमुम्–अण्डों और; तिचैकळ् ॲट्टुम्–आठों दिशाओं को; अतिर–कँपाते हुए; तोळ् कोट्टि–भुजा ठोंककर; आर्त्ताऩ्–गर्जन किया। ३

उसने पर्वत पर से देखा तो उसे प्राचीन लंका नगर के रक्षक उद्यान, स्वर्ण-प्राचीरों के विशिष्ट भाग, गोलाकार प्राचीर, विजयद्वार, श्वेत चूने की मणिमय दीवारों के बने सौधों वाली वीथियाँ और अन्य विषय भी दिखायी दिये। तब उसने आनन्द और उत्साह के साथ अपने कन्धे ठोकते हुए गर्जन किया, जिससे आठों दिशाएँ और अण्डगोल थर्रा उठे। ३

वऩ्ऩ्द वरिहॉ णाहम् वयङ्गळ लुमिळ्म् वाय
पॊऩ्ऩ्द मुळैह डोरुम् पुऱत्तुरायप् पुरण्डु पोऩ्द
निऩ्ऩ्द मिल्ला नूऩ्ऱ नॅरिन्दुकी ळ्ळुन्दि नीलक्
कुऩ्ऱ्ऩ्दऩ् वयिऱ कोऱिप् पिदुङ्गिऩ कुडर्हण् मान 4

अनुतम् इल्लाऩ्–चिरंजीव के; निऩ्ऱु ऊऩ्ऱ–खड़े होकर पैर दबाने से; नील कुऩ्ऱम्–नीला पर्वत; नॅरिन्तु–टूटकर; कीळ् अऴुन्ति–नीचे धँसकर; तऩ् वयिऱु

कीऱ्ऱि–अपने पेट के चिरने से; पितुङ्कित कुटर्कळ् मान–बाहर निकली आँतों के समान; पोंन् तन्त–स्वर्णदायी; मुळैकळ् तोरुम्–सभी गुहाओं से; वन् तन्त–कठोर दाँतों के; वरि कोळ्–धारीदार; नाकम्–सर्प; वयङ्कु अळल्–जलती (विष की) आग; उमिळुम् वाय–उगलते मुख के साथ; पुऱत्तु–बाहर; उराय्–मलते हुए; पुरण्टु–लोटते हुए; पोन्त–आये। ४

चिरजीव हनुमान ने पर्वत को अपने पैर से दबाया और उससे नीले रंग का वह पर्वत नीचे धँसा। तब उसकी स्वर्णमय कन्दराओं से कठोर दाँतों वाले और धारीदार चमड़े वाले सर्प अपने मुखों से जलता विष निकालते हुए लोटते और टकराते हुए बाहर आये। वे उस पर्वत की आँतों के समान लगे, जो पर्वत के दबने से बाहर निकल रही हों। ४

पुहलरु मुळैयुट् टुञ्जुम् पोंङ्गुळैच् चीयम् बोंङ्गि
उहलरुङ् गुरुदि कक्कि युळ्ळुऱ नॆरिन्द वूळिन्
अहलरुम् बरवै नाण वरऱ्ऱुरु कुरल वाहिप्
पहलोंळि करप्प वानै मऱैत्तन पऱवै यॆल्लाम् 5

पुकल् अरुम्–प्रवेश-निरोधक; मुळैयुळ्–गुफाओं में; तुञ्चुम्–सुप्त; पोंङ्कु उळै–छिटके हुए अयाल वाले; चीयम्–सिंह; पोंङ्कि–उठकर; उकल् अरुम्–जिसको कभी उसने निकाला नहीं था; कुरुति कक्कि–रक्त वमन करते हुए; उळ्–अन्दर; उऱ नॆरिन्त–खूब दब गये; पऱवै ऎल्लाम्–सभी पक्षी; ऊळिन्–युगान्त में; अकल्–विस्तृत; अरुम्–दुस्तर; परवै नाण–समुद्र को लजाते हुए; अरऱ्ऱुरु कुरल–चिल्लाते कण्ठ के; आकि–बनकर; पकल् ओंळि करप्प–सूर्य का प्रकाश छिप जाए, ऐसा; वानै–आकाश को; मऱैत्तन–ढकते हुए छा गये। ५

उस पर्वत में कन्दराएँ थीं, जो दुर्गम थीं। उनमें सिंह सो रहे थे। अब वे सिंह अपने अयालों को उछालते हुए क्रोध और डर से उठे और रक्त बहाते हुए अन्दर ही दब गये और उनके शरीर से रक्त निकल आया, जो कभी बाहर दिख ही नहीं सका था। उस पर जो पक्षी थे, वे युगान्त-कालीन विशाल समुद्र के गर्जन के समान आर्तनाद उठाते हुए ऊपर उड़े और सूर्य का प्रकाश और आकाश छिप गये। ५

मोंय्युरु शॆविह डाळ्न्दु मुदुहुऱ मुऱैका ऱळ्ळ
मैयुरु विशुम्बि नूडु निमिर्न्दवान् मदिय मञ्ज
मॆय्युऱत् तळ्ळिइय मॆल्लॆन् पिडियोंडुम् वॆरुव लोडुम्
कैयुऱ सरङ्गळ् शुऱ्ऱिप् पिळिऱिन कळिनल् यानै 6

कळि नल् यानै–मत्त और उत्तम गज; मोंय् उरु–सबल; चॆविकळ्–कर्ण; ताळ्न्तु–झुककर; मुतुकु उऱ–पीठ से लगे रहें ऐसा; मुऱै काल् तळ्ळ–क्रम से पैर न रख सककर लड़खड़ाते; मै उरु विचुम्पिन् ऊटु–मेघ-भरे आकाश में; निमिर्न्त वाल्–उठायी हुई दुम के कारण; मतियम् अञ्च–चन्द्र डर गया; मॆय् उऱ तळ्विय–

शरीर पर लिपटी हुई; मॆल्लॆन् पिडियॊडुम्–कोमल हथिनियों-सहित और; वॆरुवलोडुम्–भय के साथ; मरङ्कळ् कै उऱ चुऱ्ऱि–पेड़ों को सूँड़ों से पकड़ते हुए; पिळिऱ्ऱ–चिंघाड़ते रहे। ६

उसमें मत्तगज थे। वे डर से चलने लगे। उनके कान पीठ पर लगाये हुए थे। उनके पैर डगमगाये। उनकी दुम ऊपर को आकाश में उठी हुई थी, जिसको देखकर चन्द्र भी डर गया। उनको कोमल हथिनियाँ लपेटे हुए थीं। वे हाथी तरुओं को अपनी सूँड़ों से लपेटकर चिंघाड़े। ६

पॊन्पिऱळ् शिमैयक् कोडु पॊडियुऱप् पॊऱियुञ् जिन्द
मिन्पिऱळ् कुडुमिक् कुन्ऱम् वॆरिनुऱ नॆरियुम् वेलै
पुन्पुऱ मयिरुम् पूवाक् कट्पुलम् पुऱत्तु नाऱा
वन्पऱळ् वायिऱ् कौवि वल्लिय मिरिन्द मादो 7

पॊन् पिऱळ्–स्वर्णमय; चिमयम् कोटु–शिखर-चोटी; पॊटि उऱ–चूर हुई और; पॊऱियुम् चिन्त–अंगारे निकले; मिन् पिऱळ्–विद्युत्-सम चमकते; कुटुमि कुन्ऱम्–शिखर वाले पर्वत की; वॆरिन्–पीठ; उऱ नॆरियुम् वेलै–जब खूब दलकी तब; वल्लियम्–बाघ; पुऱम्–बाहर; पुन् मयिरुम्–छोटे बाल; पूवा–(जिनके) नहीं उगे थे; कण्–(जिनकी) आँखों की; पुलम्–इन्द्रिय; पुऱत्तु नाऱा–बाहर नहीं दिखती थी; वन् पऱळ्–(ऐसे अपने) बलिष्ठ शावकों को; वायिल् कौवि–अपने मुख में पकड़े हुए; इरिन्त–तितर-बितर भागे। ७

उसके स्वर्णमय शिखर चूर हुए और उनसे अंगारे निकलकर छिटके। विद्युत्-सी कान्ति वाले शिखर के उस पर्वत की पीठ खूब दलक गयी। तब बाघ उन शावकों को अपने मुख में पकड़कर ले भागे, जिनके शरीर के बाल उग नहीं आये थे और जिनकी आँखों की इन्द्रिय भी बाहर दिखती नहीं थी। ७

तेक्कुऱु शिहरक् कुन्ऱन् दिरिन्दुमॆय्न् नॆरिन्दु शिन्दत्
तूक्कुऱु तोलर् वाळर् तुरुदत्ति ऎऴुन्द तोऱ्ऱम्
ताक्कुऱु शॆरुवि नेर्न्दार् ताळऱ वीशत् तावि
मेक्कुऱ विशैत्ता रॆन्नप् पॊलिन्दनर् विञ्जै वेन्दर् 8

तेक्कु उऱु–सागौन के पेड़ों से पूर्ण; चिकरम् कुन्ऱम्–शिखर-सह पर्वत के; तिरिन्तु मॆय् नॆरिन्तु–विकृत होकर टूटकर; चिन्त–गिरते; विञ्चै वेन्तर्–विद्याधर राजा; तूक्कुऱु–ऊपर उठाकर पकड़ी हुई; तोलर्–ढाल वाले; वाळर्–और तलवारधारी; तुरुतत्तिन्–त्वरितता से; ऎऴुन्त तोऱ्ऱम्–जो उठे वह दृश्य; ताक्कु उऱु–टकरानेवाले; चॆरुविल् नेर्न्तार्–युद्ध में सामना करने आये हुओं के; ताळ् अऱ–प्रयत्नों को निष्फल करते हुए; वीच–तलवार चलाने के लिए; मेक्कु उऱ–ऊपर उछलते हुए; तावि विचैत्तार्–लपककर चले; ऎन्न–ऐसा; पॊलिन्तनर्–लगे। ८

वह महेन्द्रपर्वत, जिस पर सागौन के वृक्ष थे, विकृत होकर फट गया। तब विद्याधर राजा लोग तलवारों और ढालों को ऊपर उछालते हुए त्वरित-गति से उठे। वह दृश्य ऐसा लगा मानो वे युद्ध में लड़ने आये हुए शत्रुओं के प्रयासों को विफल बनाने के विचार से ऊपर उठते हुए लपककर जा रहे हों। ८

तारहै शुडर्हण् मेह मॆन्ऱिवै तविरत् ताळ्न्दु
पारिडै यळुन्दु हिन्ऱ पडर्नॆडुम् बनिमाक् कुन्ऱम्
कूरुहिर्क् कुववुत् तोळान् कूम्बॆनक् कुमिळि पॊङ्ग
आर्हलि यळुवत् ताळुङ् गलमॆन लायिऱ् ऱन्ऱे 9

तारकै–नक्षत्रमण्डल; चुटर्कळ्–सूर्य-चन्द्र-मण्डल; मेकम्–मेघमण्डल; अॆन्ऱ इवै–आदि इनको; तविर–छोड़कर; ताळ्न्तु–नीचे जाकर; पार् इटै–भूमि में; अळुन्तुकिन्ऱ–धँसनेवाला; नॆट्टुम् पटर्–लम्बा-चौड़ा; पत्ति मा कुन्ऱम्–हिमाच्छादित महेन्द्रपर्वत; कूर् उकिर्–तीक्ष्ण नखों और; कुववु तोळान्–पुष्ट कन्धों वाला हनुमान; कूम्पु अॆन–मस्तूल हो ऐसा; आर् कलि अळुवत्तु–समुद्र में गहरे स्थान में; कुमिळि पॊङ्क–बुल्लों को उठाते हुए; आळुम् कलम्–डूबनेवाला पोत; अॆनल् आयिऱ्ऱु–हो, ऐसा बना। ६

वह पर्वत नक्षत्रमण्डल, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल और मेघमण्डल के निकट तक चला गया था। अब वह उस स्थान को छोड़कर नीचे जाने लगा। तब वह अतिविस्तृत शीतल पर्वत एक पोत के समान लगा, जो बुलबुलो को ऊपर निकालते हुए समुद्र की गहराई में डूब रहा हो; और हनुमान उस मग्नशील पोत के मस्तूल के समान लगा। ९

तादुहु नऱुमॆन् शान्दङ् गुङ्गुमङ् गुलिहन् दण्णॆन्
पोदुहु पॊलन्दा दॆन्ऱित् तॊडक्कतत् यावुम् पूशि
मीदुरु शुनैनी राडि यरुविपो लॊहिन्नम् वीळ्व
ओदिय कुन्ऱङ् गीऱिक् कुरुदिनीर् शॊरिव दॊत्त 10

तातु उकु–चूर्ण के रूप में गिरे; नऱु–सुवासित; मॆन् चान्तम्–मृदु चन्दन; कुङ्कुमम्–केसर; कुलिकम्–इँगुर; तण् अॆन् पोतु–शीतल पुष्पों के; उकु–गिराये; पॊलम् तातु–स्वर्णवर्ण मकरन्द; अॆन्ऱु इ तॊटक्कत्त यावुम्–आदि सभी; पूचि–मलते हुए; मीतु उऱु–ऊपर रहनेवाले; चुनै नीर्–झरने के जल में; आटि–स्नान करके; अरुवि वीळ्व पोल्–नदियाँ गिरतीं जैसे; अॆकित्तम् वीळ्व–हंस पक्षी गिरते है; ओतिय कुन्ऱम्–ऐसा वर्णित पर्वत; कीऱि–शरीर के फटने से; कुरुति नीर् चॊरिवतु–रक्त बहाता हो; ऒत्त–जैसे लगा। १०

उस पर्वत से हंस नीचे झरनों के समान गिरने लगे। उन पर चन्दन का चूर्ण, केसर, इंगुदी, शीतल पुष्पों का स्वर्णवर्ण मकरन्द और ऐसी

बुकनियाँ लगी हुई थीं। (ये सब उन अप्सराओं के शरीर से गिरी थीं, जो वहाँ स्नान करने आयी थीं।) वह दृश्य ऐसा लगा मानो पर्वत के शरीर के टूटने से रक्त की धारा बह रही हो। (इस पद्य में 'अँहिनम्' शब्द है, अतः हंसों की बात कही गयी है। पाठान्तर 'अरुवि' है। तब झरने ही रक्त की नदियों का दृश्य उपस्थित करते थे। यह अर्थ लगाया जा सकता है।)। १०

कडलुऴ मत्ति दॅऩ्ऩक् कार्वरै तिरियुङ् गालै
मिडलुऴ पुलऩ्गळ् वॅऩ्ऱ मॅय्त्तवर् विशुम्बि ऩुऱ्ऱार्
तिडलुऴ किरियिऱ् ऱऩ्दज् जॅय्विनै मुऱ्ऱि मुऱ्ऱा
उडलुऴ पाशम् वीशा दुम्बर्च्चॅल् वारै यॊत्तार् 11

कार् वरै–काला पर्वत; कटल् उऴ मत्तु इतु ऍऩ्ऩ–समुद्र-मध्य मथानी है यह, ऐसा कहने योग्य रीति से; तिरियुम् काले–घूमता रहा; मिटल् उऴ–शक्तिमान; पुलऩ्कळ् वॅऩ्ऱ–इन्द्रियविजेता; मॅय्तवर्–सच्चे तपस्वी; विचुम्पित् उऱ्ऱार्–आकाश में चले गये; तिटल् उऴ–टीलों वाले; किरियिल्–उस पर्वत पर; तम् तम् चॅय्वित्ते मुऱ्ऱि–अपना-अपना कर्तव्य (तप) पूरा करके; उटल् उऴ पाचम्–देहाभिमान; मुऱ्ऱा वीचातु–पूर्ण रूप से न त्यागकर; उम्पर् चॅल्वारै–आकाश में (सशरीर) जानेवालों; ऒत्तार्–के समान दिखे। ११

मेघमण्डित होने से काला दिखनेवाला वह पर्वत समुद्र में मथानी के समान जब घूमा, तब सशक्त इन्द्रियों के निग्रही सच्चे तपस्वी आकाश में जाने लगे। तब वे ऐसे लगे मानो पर्वत के उन्नत समतल स्थलों पर अपना तपोकर्म पूरा करके सशरीर ही, शरीर-सम्बन्ध छोड़े विना ही ऊपर स्वर्ग में जा रहे हों। ११

वॅयिलियर् कुऩ्ऱङ् गीऱि वॅडित्तलु नडुक्क मॅय्दि
मयिलियर् ऱळिर्क्कै मादर् तळीइक्कॊळप् पॊलिन्द वानोर्
अयिलॅयिऱ् ऱरक्क नळ्ळत् तिरिन्दना ळणङ्गु पुल्लक्
कयिलैयि लिरुन्द तेवैत् तनित्तनि कडुत्तल् शॅय्दार् 12

वॅयिल् इयल्–उज्ज्वल; कुऩ्ऱम्–पर्वत; कीऱि वॅटित्तलुम्–जब दरार पड़कर टूटा; मयिल् इयल्–कलापी-सी; तळिर्क्कै मातर्–पल्लव-समान हाथों वाली अप्सराओं ने; नटुक्कम् ऍय्ति–काँपती हुई; तळीइक् कॊळ–आलिंगन कर लिया तो; पॊलिन्त–उस स्थिति में शोभायमान; वानोर्–व्योमवासी; अयिल् ऍयिऱु–तीक्ष्ण दाँतोंवाले; अरक्कऩ्–राक्षस के; अळ्ळ–उठाने पर; तिरिन्त नाळ्–जब कैलास पर्वत घूम उठा, उस दिन; अणङ्कु–देवी उमा के; पुल्ल–आलिंगन कर लेने से; कयिलैयिल्–उस कैलास पर्वत पर; इरुन्त–रहे; तेवै–देव (शिव) के; तनि तनि–एक-एक; कटुत्तल् चॅय्तार्–समान दिखे। १२

वह उज्ज्वल पर्वत दरार खाकर फूटा। तब मयूरनिभ पल्लवहस्त

देवतरुणियों ने डरकर अपने प्रेमियों का आलिंगन कर लिया। उनके साथ शोभनेवाले वे देवगण एक-एक उन परमेश्वर के समान लगे, जिनको उमादेवी ने तीक्ष्ण दाँतों वाले रावण के कैलासपर्वत को उखाड़ लेने और उस पर्वत के घूमने पर कैलासपति का आलिंगन कर लिया था। १२

ऊऱिय नऱवै युण्ड कुऱ्ऱनद मुणर्व युण्णच्
शीऱिय मनत्तर् दॅय्व मडनदैय रूड ड़ीर्वुऱ्
ड़ाऱिन रञ्जु हिऩ्ऱा रन्बरैत् तऴुवि युम्बर्
एऱिऩ रिट्टु नीत्त पैङ्गिळिक् किरङ्गु हिऩ्ऱार् 13

ऊऱिय नऱवै–पुरानी सुरा को; उण्ट कुऱ्ऱम्–पीने के दोष से; तम् उणर्वै–अपनी चेतना को; उणण–नष्ट करने से; चीऱिय मनत्तर्–कुपित मन वाली; तॅय्व मटन्तैयर्–देवरमणियाँ; ऊटल्–रूठन (जो पालती थीं, उस) को; तीर्वुऱ्ऱु–(अब पर्वत की स्थिति के कारण) छोड़कर; आऱितर्–शान्त हुईं; अञ्चुकिन्ऱार्–भय से त्रस्त हैं; अन्परै तऴुवि–प्रियों को आलिंगन में ले; उम्पर् एऱितर्–आकाश में चढ़ गयीं; इट्टु नीत्त–जो छोड़े गये हैं; पैङ्किळिक्कु–छोटे शुकों के लिए; इरङ्कुकिन्ऱार्–दुःखी होती हैं। १३

देवांगनाएँ अपने पतियों से रूठी हुई थीं, क्योंकि उन्होंने पुरातन सुरा का पान कर लिया था, जिसके फलस्वरूप देवों का मन भ्रान्त था और स्त्रियों की इच्छा पूरी नहीं हुई थी। अब चूँकि पर्वत हिलने और धँसने लगा, इसलिए वे अपनी रूठन छोड़कर शान्त हो गयीं और भय खाकर उनसे लिपटकर व्योमलोक जाने लगीं। जाते-जाते वे अपने शुकों को छोड़ जाने के कारण दुःखी हो रही थीं। १३

इत्तिऱ निहऴुम् वेलै यिमैयवर् मुऩिवर् मऱ्ऱुम्
मुत्तिऱत् तुलहत् तारु मुऱैमुऱै विशुम्बिऩ् मॉय्त्तार्
तॊत्तुऱु मलरुञ् जान्दुञ् जुण्णमु मणियुन् दूवि
वित्तह शेऱि यॅऩ्ऱार् वीरनुम् विरैव दाऩाऩ् 14

इ तिऱम् निकऴुम् वेलै–इस तरह जब सब हो रहे थे, तब; इमैयवर्–व्योमवासी; मुऩिवर्–मुनि; मऱ्ऱुम् मु तिऱत्तु उलकत्तारुम्–और अन्य त्रिलोकवासी; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; विचुम्पिऩ् मॉय्त्तार्–आकाश में आकर जुट गये; तॊत्तु उऱु मलरुम्–गुच्छों में फूल; चान्तुम्–चन्दन; चुण्णमुम्–सुगन्ध-चूर्ण; मणियुम्–और रत्न; तूवि–बरसाकर; वित्तक–निपुण; चेऱि–चलो; ऍऩ्ऱार्–कहा (उन्होंने); वीरनुम्–वीर भी; विरैवतु आऩाऩ्–गतिमान हुआ। १४

जब ऐसी बातें हो रही थीं तब देवगण, मुनिवृन्द और तीनों लोकों के वासी पंक्तियों में आकाश में जमा हो गये। उन्होंने फूल के गुच्छों, चन्दन और सुगन्ध-चूर्ण बरसाते हुए हनुमान से कहा कि कार्यनिपुण! चलो! वीर हनुमान भी जाने में वेग दिखाने लगा। १४

कुऱुमुनि कुडित्त वेलै कुप्पुऱ कॊळ्हैत् तादल्
वॆऱुविदु विशयम् वैहुम् विलङ्गऱ्ऱो ळलङ्गल् वीर
शिऱिदॆन्ऱ् इहळ्ऱ् पालै यल्लैनी शेऱि यॆन्ऱाङ्
गुरुवलित् तुणैवर् शॊन्ना रॊरुप्पट्टान् पॊरुप्पै यॊप्पान् 15

विचयम् वैकुम्–विजयनिलय; विलङ्कल् तोळ्–पर्वत-सम कन्धों; अलङ्कल् वीर–और माला से युक्त वीर; कुऱु मुनि कुटित्त–छोटे रूप के मुनि से (अगस्त्य से) जो पिया गया उस; वेलै–समुद्र को; कुप्पुऱ कॊळ्कैत्तु आतल्–लाँघने का उद्देश्य करना; वॆऱुवितु–व्यर्थ है; इतु चिऱितु–यह छोटा है; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; इकळ्र् पालै अल्लै–अवहेलना करनेवाला मत बनो; नी चेऱि–तुम सावधानी से जाओ; ऍन्ऱु–ऐसा; उऱु वलि तुणैवर्–सबल साथियों ने; आङ्कु चॊन्नार्–तब कहा; पॊरुप्पै ऑप्पान्–पर्वत की समानता करनेवाला हनुमान; ऑरुप्पट्टान्–सम्मत हुआ। १५

"विजय-माला-भूषित कन्धों वाले वीर!" उसके अतिबलवान मित्रों ने चेतावनी दी। "छोटे आकार के ऋषि अगस्त्य ने इसको पी लिया था। अतः तुम इसे छोटा मत समझो। मत सोचो कि यह तरण-सुलभ है। वह व्यर्थ होगा। इसको छोटा समझकर इसकी अवहेलना मत करो। तुम सावधान होकर इसको लाँघो और उस पार पहुँच जाओ।" पर्वत-सम हनुमान ने उनकी बात मान ली। १५

इलङ्गैयि नळविऱ् ऱन्ऱा लिव्वुरु वॆडुत्त तोऱ्ऱम्
विलङ्गवु मुळदन् ऱॆन्ऱु विण्णवर् वियन्दु नोक्क
अलङ्गऱाळ् मार्बम् मुन्ऱाळ्न् दडित्तुणै यळुत्त लोडुम्
पुलन्दॆरि मलैयुन् दाळुम् बूदलम् बुक्क मादो 16

ऍडुत्त–जो उसने लिया था; इ उरु तोऱ्ऱम्–इस रूप की ऊँचाई; इलङ्कैयिन् अळविऱ्ऱु अन्ऱु–लंका में समानेवाली नहीं है; विलङ्कवुम् उळतु अन्ऱु–रोकी भी नहीं जा सकती; ऍन्ऱु–कहते हुए; विण्णवर्–व्योमवासी; वियन्तु–विस्मय करके; नोक्क–देखने लगे; अलङ्कल् ताळ्–मालाएँ जिस पर लटकती थीं; मार्पन्–वैसे वक्ष वाला; मुन् ताळ्न्तु–आगे की ओर झुककर; अटि तुणै अळुत्तलोटुम्–ज्योंही जोड़े के पैरों को दबाने लगा, त्योंही; पुलन् तॆरि मलैयुम्–जिसके कुछ भाग दिख रहे थे, वह पर्वत; ताळुम्–उसके पार्श्व के छोटे-छोटे शिखर भी; पूतलम् पुक्क–भूमि में धँस गये। १६

देवों ने उसका रूप देखा। विस्मित हुए कि हनुमान का इतना बड़ा रूप लंका में समा भी नही सकता। यह दुर्वार भी है। तब लटकती माला से अलंकृत वक्ष वाले हनुमान ने दोनों पैरों को दबाया। तो कुछ-कुछ ऊपर दिखनेवाले स्थलों का वह पर्वत भूमि में धँस गया और साथ-साथ पार्श्व में रही गिरियाँ भी धँस गयीं। १६

वाल्विशैत् तॅंड्रुत्तु वन्ऱाण् मडक्किमार् बॉडुक्कि मातत्
तोल्विशैत् तुणैहळ् पॉङ्गक् कळुत्तित्तैच् चुरुक्कित् तूण्डिक्
काल्विशैत् तिमैप्पिल् लोर्क्कुम् कट्पुलन् दॅरिया वण्णम्
मेल्विशैत् तॅळुन्दा नुच्चि विरिञ्जना डुरिञ्ज वीरत् 17

वीरत्–वीर; वाल् विचैत्तु ऑट्टुत्तु–लांगूल को फटकारकर; वन् ताळ् मटक्कि–बलवान पैरों को मोड़कर; मार्पु ऑटुक्कि–वक्ष सिकोड़कर; मात–बड़े; विचै–विजयशील; तोल् तुणैकळ्–जोड़े के कन्धों को; पॉङ्क–फुलाकर; कळुत्तित्तै चुरुक्कि–ग्रीवा को अन्दर खींचकर; तूण्टि–फिर बाहर करके; काल् विचैत्तु–पवन-सी गति पैदा करके; इमैप्पु इल्लोर्क्कुम्–अपलक देवों के लिए भी; कण् पुलम् तॅरिया वण्णम्–आँखों से अदृश्य होकर; मेल् विचैत्तु–ऊपर की तरफ़ वेग करके; उच्चि विरिञ्चन् नाट्टु–बहुत ऊपर के ब्रह्मलोक से; उरिञ्च–टकराते हुए; ऑळुन्तान्–उठा। १७

वीर हनुमान की मुद्रा देखिए। उसने अपना लांगूल फटकारा। अपने सीने को संकुचित किया। बड़े और विजयभूषित कन्धों को फुलाते हुए ग्रीवा को अन्दर खींचकर फिर बाहर उछाला। पवन के समान इतने वेग से वह ऊपर उठा कि अपलक देवों की आँखें भी उसे उठते हुए नहीं देख सकीं और सबसे ऊपर रहनेवाला ब्रह्मा का लोक उससे टकरा गया। १७

आयव नॅळुद लोडु मरुम्बण मरङ्ग डामुम्
वेयुयर् कुन्ऱुम् वॅन्ऱि वेळ्मुम् पिऱवु मॅल्लाम्
नायहन् पणियी दॅन्ना नळिर्हड लिलङ्गै तामुम्
पाय्वन वॅन्न वानम् बडर्न्दन पळुव मान 18

आयवन्–उसके; ऑळुतलोटुम्–उछलने पर; अरुम् पणै–अपूर्व और बड़ी शाखाओं वाले; मरङ्कळ् तामुम्–तरु; वेय् उयर्–और बाँस के पेड़ों के साथ उन्नत रहे; कुन्ऱुम्–छोटे-छोटे पर्वत; वॅन्ऱि वेळमुम्–विजयी गज; पिऱवुम् ऑल्लाम्–अन्य सभी; नायकन् पणि ईतु–नायक (श्रीराम) का कार्य यह है; ऑन्ना–समझकर; तामुम्–वे खुद; नळिर् कटल् इलङ्कै पाय्वन ऑन्न–शीतल समुद्र-मध्य लंका में कूदते-से; वानम् पळुवम् मान–आकाश को उद्यान-सा बनाते हुए (उछलकर); पटर्न्तन–फैले। १८

जब वह उछल उठा तब बड़ी-बड़ी डालों-सहित वृक्ष, ऊँचे बाँसों के पेड़ों के साथ गिरियाँ और विजयी गज और अन्य पदार्थ भी साथ उछल उठे और शीतल समुद्रवलयित लंका की ओर उड़े, मानो वे इसे नायक श्रीराम की सेवा समझकर उड़ते हों और आकाश को ही उपवन का दृश्य देते हुए फैल गये। १८

इशैयुडै यण्णल् शॅन्ऱ वेहत्ता लॅऴुन्द कुन्ऱम्
पशैयुडै मरन्नु मावुम् पल्लुयिर्क् कुलमुम् वल्लै
तिशैयुऱच् चॅन्ऱु शॅन्ऱु शॅऱिहड लिलङ्गै शेरुम्
विशैयिल वाहित् ताऴन्दु वीऴ्न्दन वॅन्न वीऴ्न्द 19

इचै उटै अण्णल्–यशस्वी, महान् हनुमान के; चॅन्ऱ वेकत्ताल्–जाने की गति से; ऍऴुन्त–खुद जो (उखड़) उठे; कुन्ऱम्–चट्टानें; पचै उटै मरनुम्–नमीयुक्त तरु; मावुम्–और जानवर; पल् उयिर्क्कुलमुम्–अनेक जीवराशियाँ; वल्लै–वेग के साथ; तिचै उऱ–हनुमान की दिशा में बढ़ते-बढ़ते; चॅन्ऱु चॅन्ऱु–जा-जाकर; चॅऱि कटल्–पास रहनेवाले समुद्र से वलयित; इलङ्कै चेरुम् विचै–लंका में जाने की वेगशक्ति; इलवाकि–न होने से; ताऴ्न्तु वीऴ्न्तन–नीचे की ओर गिरे; अॅन्न–जैसे; वीऴ्न्त–गिरे । १९

प्रशंसित महानुभाव हनुमान के गति-वेग मे फँसकर गिरियाँ और जीवन्त तरु, गज आदि जानवर और अन्य अनेक जीवराशियाँ जल्दी-जल्दी हनुमान की ओर चल-चलकर समुद्र में गिर गयीं, क्योंकि उनमें स्वत: समृद्ध जल वाले समुद्र से वलयित लंका पहुँचने की शक्ति नहीं थी । १९

मावॊडु मरमु मण्णुम् 'वल्लियु मऱ्ऱु मॅल्लाम्
पोवदु पुरिन्द वीरत् विशैयिनाऱ् पुणरि पोर्क्कत्
तूवित्त कीऴु मेलुन् दूर्न्दत्त शुरुदि यन्न
शेवहन् शीऱ मुन्नञ् जेदुवु मियन्ऱ मादो 20

वीरन् पोवतु–हनुमान ने चलने के लिए; पुरिन्त विचैयिताल्–जो वेग अपनाया उससे; मावॊटु मरमुम्–जानवरों के साथ वृक्ष; मण्णुम्–जमीन और; वल्लियुम्–लताएँ; मऱ्ऱुम् ऍल्लाम्–अन्य सभी; पुणरि पोर्क्क–समुद्र को पाटने के लिए; तूवित्त–बिखरे; कीऴुम् मेलुम्–नीचे और ऊपर; तूर्न्तत्त–फैले; चुरुति अन्न चेवकन्–वेद-सम प्रतापी श्रीराम; चीऱ मुन्नम्–वरुणदेव पर कोप करे, इसके पूर्व ही; चेतुवुम्–सेतु-रूप; इयन्ऱ–बने । २०

वीर हनुमान की गति के वेग के कारण जानवर, तरु, जमीन, लताएँ और अन्य वस्तुएँ इतनी उड़ीं और समुद्र और आकाश में, ऊपर और नीचे बिखरीं । उनको देखकर ऐसा लगा, मानो वेद-से श्रीराम के कोप करने से पूर्व ही सेतु बन रहा हो । २०

कीण्डदु वेलै नन्नीर् कीऴुऱक् किडन्द नाहर्
वेण्डिय वुलह मॅल्लाम् वॅळिप्पड मणिहळ् मिन्न
आण्डहै यदनै नोक्कि यरविनुक् करशन् वाऴ्वुम्
काण्डहु तवत्त नानॆन् यानॆनक् करुत्तिर् कॊण्डान् 21

नल् वेलै नीर्–अच्छे समुद्र का जल; कीण्टतु–चिरा; कीऴ् उऱ किटन्त–

उसके नीचे जो रहा; नाकर् वेण्टिय–नागों का प्यारा; अलकम् ऍल्लाम्–लोक सारा; वॅळिप्पट–बाहर प्रकट हो गया तो; मणिकळ् मिन्न–मणियाँ चमकने लगीं तब; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ ने; अतनै नोक्कि–उसको देखकर; यान्–मैं; अरवितुक्कु अरचन्–नागराज का; वाऴ्वुम्–(वैभव) जीवन भी; काण् तकु–देखने का; तवत्तन् आनेन्–भाग्यवान हुआ; ऍन–ऐसा; करुत्तिल्–मन में; कॉण्टान्–विचार किया। २१

अच्छे समुद्र का जल फट गया। नीचे रहा नागों का प्यारा पाताल-लोक प्रकट हुआ और मणियाँ चमकीं। पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने उनको देखा और अपने को इस कारण बड़ा भाग्यवान समझा कि उसे नागराज के जीवन का वैभव देखने को मिला। २१

वॅय्दुवान् शिऱैयि नानीर् वेलैयैक् किऴिय वीशि
नॉय्दिना लमुदङ् गॉण्ड नोन्मैयै नुवलु नाहर्
उय्दुना मॅन्ब दॅन्ने युरुवलिक् कलुऴ नूऴिन्
ऍय्दिना नामॅन् ऱञ्जि यलक्कणुऱ् ऱिरियल् पोनार् 22

वान् चिऱैयिताल्–बड़े-बड़े पंखों को; नीर् वेलैयै–जलनिधि को; किऴिय–चीरते हुए; वीचि–झटकाकर; वॅय्तु नॉय्तिताल्–बहुत ही क्षिप्र गति से; अमुतम् कॉण्ट–(गरुड़ के) अमृत उठा लेने की; नोन्मैयै–कुशलता को; नुवलुम् नाकर्–हमेशा कहते थे जो, वे नाग; ऊऴिन्–हमारे प्रारब्ध से; उरुवलि–बड़ा पराक्रमी; कलुऴन्–गरुड़; ऍय्तिनान् आम्–आ गया तो; नाम् उय्तुम् ऍन्पतु–हम बचेंगे कहना; ऍन्ने–कैसा, ऐसा; अञ्चि–डरकर; अलक्कण् उऱ्ऱु–उद्विग्न होकर; इरियल् पोनार्–तितर-बितर हो गये। २२

वहाँ के नाग सदा गरुड़ की बात लेकर बात कर रहे थे। गरुड़ ने अपने बड़े पक्षों को झटकाकर समुद्रजल को विभक्त किया और झट अमृत को शीघ्र और अनायास उठा लिया था। उसके बल की बात का स्मरण करते जो रहे वे नाग अब समुद्रजल को दो भागों में विभक्त करते हुए आनेवाले हनुमान को गरुड़ ही समझने लग गये। यह कहते हुए वे डरकर उद्विग्नता के साथ तितर-बितर हो गये कि हमारे प्रारब्ध के कारण भयानक बलयुक्त गरुड़ फिर से आ रहा है। हम बचेंगे कैसे ? । २२

तुळ्ळुऱु महर मीन्ग डुडिप्पुऱच् चुऱवु तूङ्ग
ऑळ्ळिय पनैमीन् ऱुञ्जत् तिवलैय दूऴिक् कालिन्
वळ्ळुहिर् वीरन् शॅल्लुम् विशैपॊऱा मरुहि वारि
तळ्ळिय तिरैहण् मुन्दुऱ् ऱिलङ्गैमेऱ् ऱवऴ्न्द मादो 23

ऊऴि–युगान्तकालीन; तिवलैयतु–सीकर-सहित; कालिन्–पवन के समान; वळ् उकिर् वीरन्–तीक्ष्ण-नख वीर की; चॅल्लुम् विचै–गमन-गति; पॊऱा–न सह सककर; तुळ्ळुऱु–उछलनेवाली; मकर मीन्कळ्–मगर-मछलियाँ; तुटिप्पु उऱ–

छटपटायीं; चुऱवु तुञ्क–'शुऱा' नामक मच्छ निश्चेष्ट पड़े रहे; ऑळ्ळिय–रौनक-दार; पत्तै मीन्–'पत्तै' नामक मच्छ; तुञ्च–मर गये; वारि मरुकि–समुद्र विलोडित हुआ; तळ्ळिय तिरैकळ्–उससे चालित तरंगें; मुन्नु उऱ्ऱु–आगे जाकर; इलङ्कै मेल् तवऴ्न्त–लंका पर बहीं। २३

हनुमान युगान्तकालीन जलसीकरवाही पवन के समान जा रहा था। तीक्ष्ण नाखूनों से युक्त उस वीर के वेग को न सह सकने से चंचल मगरमच्छ छटपटाये। 'शुरा' नामक मच्छ अचेत पड़े रहे। प्रकाशमय 'पत्तै' नामक मच्छ मर गये। समुद्र आलोडित हुआ और तरंगे आगे जाकर लंका पर बहीं। २३

इडुक्कुरुम्	बॉरुळ्ह	ळॅन्ना	मॅण्डिशै	शुमन्द	यानै
नडुक्कुऱ	विशुम्बिऱ्	चॅल्लु	नायहन्	ऱूद	नाहम्
ऑडुक्कुऱु	काल	वन्गाऱ्	ऱडियॉडु	मॊडित्त	वन्नाळ्
मुडुक्कुऱक्	कडलिऱ्	चॅल्लु	मुत्तलैक्	किरियु	मॊत्तान् 24

ऍण् तिचै चुमन्त–आठ दिशाओं के वाहक; यानै–दिग्गज; नटुक्कु उऱ–कोप गये; विचुम्पिल्–ऐसा, आकाश में; चॅल्लुम्–जानेवाला; नायकन् तूतन्–नायक श्रीराम का दूत; नाकम् ऑटुक्कुऱु कालम्–(जब पवन के साथ स्पर्द्धा में) आदिशेषनाग ने (मेरु को) दबाये रखा था; वन् काल्–बलवान पवन ने; तटियॉटुम्–विद्युत् के साथ; ऑटित्त अ नाळ्–तोड़ा था, उस दिन; मुटुक्कुऱ–वेग के साथ; कटलिल् चॅल्लुम्–समुद्र में जानेवाले; मुत्तलै किरियुम्–त्रिकूट पर्वत के भी; ऑत्तान्–समान लगा; इटुक्कु उऱुम्–बीच मे आनेवाली; पॊरुळ्कळ्–वस्तुओं का हाल; ऍन् आम्–क्या होगा। २४

अष्ट दिग्गज काँपे। इस तरह जो आकाश में उड़ा जा रहा था, वह श्रीराम नायक का दूत हनुमान त्रिकूट पर्वत के समान लगा, जो समुद्र की तरफ़ जा रहा था। एक बार शेषनाग और पवन में अपनी-अपनी शक्ति के प्रदर्शन में स्पर्द्धा हो गयी। शेषनाग ने मेरुपर्वत को लपेटकर दबा दिया था। सवल पवन ने उस दिन विद्युत् के साथ उस पर्वत को तोड़ दिया था। तब उस पर्वत का तीन शिखरों वाला अंश अलग टूटा और वही त्रिकोण या त्रिकूट पर्वत कहा गया। (वह समुद्र में जा गिरा। उसी के ऊपर लंका नगर का निर्माण हुआ।) हनुमान जाते हुए उस पर्वत के समान लगा। २४

कॊट्पुऱु	पुरवित्	तॅय्वक्	कूऱ्ऱुदिक्	कुलिशत्	ताऱ्कुम्
कट्पुलङ्	गदुव	लाहा	वेहत्ताऱ्	कडलु	मण्णुम्
उट्पडक्	कूडि	यण्ड	मुऱवुळ	शॅलवि	न्नीऱ्ऱैप्
पुट्पह	विमानन्	दानव्	विलङ्गमेऱ्	पोव	दॊत्तान् 25

कॊट्पु उरु–ज़ोर का चक्कर काटनेवाले; तॆय्व पुरवि–(उच्चैःश्रवा नाम के) दिव्य अश्व के; कूर् नुति–तीक्ष्ण नोक के; तॆय्व कुलिचत्तारकुम्–दिव्य कुलिश के स्वामी (इन्द्र) के लिए भी; कण् पुलम् कतुवल् आका–आँख की इन्द्रिय द्वारा ग्रहण न हो सके ऐसी; वेकत्ताल्–गति के कारण; कटलुम् मण्णुम्–समुद्र और भूमि; उट्पटक्कूटि–दोनों अपने अन्दर समा जायँ इतना बड़ा होकर; अण्टम् उऱ–अण्ड की चोटी के भाग को छूता हुआ; उळ चॆलविन्–चलने की गति के कारण; ऒप्पु पुट्पक विमानम् तान्–अनुपम पुष्पकयान स्वयं; अव् इलङ्कै मेल्–उस लंका पर; पोवतु ऒत्तात्–जाता हो, ऐसा लगा। २५

बहुत तेज़ घूमनेवाले (उच्चैःश्रवा नाम के) अश्व और तीक्ष्ण नोक वाले दिव्य वज्रायुध का स्वामी इन्द्र की आँखें भी उसको नहीं देख सकीं —हनुमान इतनी तेजी से उड़ा जा रहा था। वह इतने बड़े आकार का था कि भूमि और समुद्र दोनों एक साथ उसमें समा जायँ। अण्ड की चोटी के भाग से लगता हुआ वह महान् और अनुपम पुष्पक विमान के समान लगा जो लंका की तरफ़ जा रहा हो। २५

विण्णव रेत्त वेद मुनिवर्हळ् वियन्दु वाळ्त्त
मण्णव रिऱैञ्जच् चॆल्लु मारुदि मऱमुऱ् कूर
अण्णल्वा ळरक्कन् ऱन्नै यमुक्कुवॆ निन्न मॆन्नाक्
कण्णुद लॊळियच् चॆल्लुङ् गयिलैयङ् गिरियु मॊत्तान् 26

विण्णवर् एत्त–स्वर्गवासियों के स्तुति करते; वेत मुनिवर्कळ्–वेदज्ञ मुनियों के; वियन्तु वाळ्त्त–विस्मित होकर साधुवाद देते; मण्णवर् इऱैञ्च–भूलोकवासियों के प्रणमन करते; चॆल्लुम् मारुति–चलनेवाला हनुमान; मऱम् मुऱ् कूर–वैर-भावना के बढ़ने के कारण; इन्नम्–और भी; अण्णल् वाळ्–महिमामय (चन्द्रहास) तलवार के स्वामी; अरक्कन् तन्नै–राक्षस रावण को; अमुक्कुवॆन् ऎन्ना–दबाऊँगा कहकर; कण्णुतल् ऒळिय–भालनेत्र शिवजी से रहित होकर; चॆल्लुम्–जानेवाले; कयिलै अम् किरियुम्–श्रेष्ठ कैलास पर्वत के भी; ऒत्तान्–समान रहा। २६

देवलोग हनुमान की स्तुति कर रहे थे। वेदज्ञ मुनिगण साधुवाद कर रहे थे। भूमि के वासी नमस्कार कर रहे थे। इस रीति से जा रहा था हनुमान। उसके मन में वैर-भाव उमग आ रहा था। तब वह उस सुन्दर कैलास पर्वत के समान लगा जो यह संकल्प करके भालनेत्र शिवजी को त्याग कर दौड़ रहा हो कि मैं महिमामय चन्द्रहास तलवारधारी राक्षस रावण को और भी दबोच लूँगा। २६

केळ्ळा मुळ्ळि लाविर् किळरॊळि यिरुळैक् कीऱप्
पाळिमा मेरु नाण विशुम्बिडैप् पडर्न्द तोळान्
आळिशू ळ्लह मॆल्ला मरुङ्गनत् मुरुङ्ग वुण्णुम्
ऊळिनाळ् वडपाऱ् ऱोन्ऱु मुवामुळ मदियु मॊत्तान् 27

अऱ्ऱत्तकै अरचऩ् तऩ्–धर्मदेवता के; पोर् आऴियुम्–समर-चक्र; अत्तैयऩ् आऩाऩ्–समान रहा। ३१

लगता है कि धर्मदेवता का चक्र क्रूरकर्मी राक्षसों के वासस्थान उस महानगर के बाहर रहने से भी डरकर कहीं दूसरे सुरक्षित स्थान में रहता था। अब वह उस स्थान से बाहर आकर मनुकुलोत्पन्न प्रतापी श्रीराम के बल का आश्रय लेकर लंका पर जा रहा है। ऐसे धर्मदेवता के समरयोग्य चक्र के समान भी लगा हनुमान। ३१

अडलुलाम् दिहिरि मायर् कमैन्ददऩ् नाऱ्ऱल् काट्टक्
कुडलॅला मवुणर् शिन्दक् कुन्ऱॅनक् कुऱित्तु निऩ्ऱ
तिडलॅलाम् तॊडर्न्दु शॅल्लच् चेण्विशुम् बॊदुङ्गत् तॅय्वक्
कडलॅलाङ् गडक्कत् तावुम् कलुळऩु मनैय नानाऩ् 32

अटल् उलाम्–शक्तिसम्पन्न; तिकिरि–चक्रधारी; मायर्कु अमैन्त–मायावी देव श्रीविष्णु के अधीन रहनेवाले; तऩ् आऱ्ऱल् काट्ट–अपने पराक्रम दिखाते हुए; अवुणर् ॲल्लाम्–सभी असुरों की; कुटल् चिन्त–आँतों के गिरते; कुऩ्ऱु ॲऩ कुऱित्तु निऩ्ऱ– पर्वत नाम के साथ रहनेवाले; तिटल् ॲलाम्–सभी टीलों को; तॊटर्न्तु चॆल्ल–लगातार पार करके; चेण् विचुम्पु–ऊपर का आकाश; ऒतुङ्क–दूर हटा; तॅय्वक् कटल् ॲलाम्–सभी दैवी सागरों को; कटक्क तावुम्–पार करने के लिए झपटनेवाले; कलुळऩुम् अत्तैयऩ् आऩाऩ्–गरुड़ के समान भी बना। ३२

प्रबल चक्रधारी मायावी श्रीविष्णु के अधीनस्थ अपना सारा बल प्रदर्शन करते हुए, गरुड़ अपनी माता की दासता के निवारणार्थ पहले गया था न! तब असुरों की आँतें छितरी। वह पर्वतों को टीलों के समान पार करता गया। आकाश भी दूर हट गया। सभी समुद्रों का उसने तरण किया। हनुमान उस गरुड़ के समान गया। (यह कहानी इसके पूर्व भी इंगित की गयी है।)। ३२

नालिऩो डुलह मूऩ्ऱु नडुक्कुऱ वडुक्कु नाहर्
मेलिऩ्मे निऩ्ऱ काऱुम् जॅन्ऱको लत्तिऩ् विण्डु
कालिऩा लळन्द वान मुहट्टैयुङ् गडक्कक् काल
वालिऩा लळन्दा तॅऩ्ऱु वाऩवर् मरुळच् चॅऩ्ऱाऩ् 33

अट्टुक्कु मॅलिऩ् मेल्–एक के ऊपर एक; निऩ्ऱ नालिऩोट मूऩ्ऱु–स्थित चार और तीन (सात); नाकर् उलकम् काऱुम्–सभी नाग (स्वर्ग) लोकों को; नटुक्कुऱच् चॅऩ्ऱ–कँपाते हुए जो बढ़ चले; कोलत्तिऩ्–अति सुन्दर; विण्टु–श्रीविष्णु ने; कालिऩाल् अळन्त–अपने पैरों से जिसको मापा; वाऩ मुकट्टैयुम्–उस आकाश की चोटी को भी; कटक्क–पार करके; काल वालिऩाल्–कालदेव-सम अपनी पूँछ से;

अळन्तान्-(हनुमान ने) माप लिया; ॲन्ऱु-ऐसा; वानवर्-देवता; मरुळ-चक्रित हो जाएँ ऐसा; चॅन्ऱान्-गया। ३३

शोभायमान त्रिविक्रमदेव बनकर श्रीविष्णु ने एक के ऊपर एक रहनेवाले सातों देवलोकों को भय में डालते हुए अपने श्रीचरण से आकाश को नापा था। उस आकाश की चोटी को भी पार करने के निमित्त हनुमान अपनी कालदेव-सम पूँछ से उसको नाप रहा है क्या ? ऐसा सोचते हुए देव चक्रित हुए। ऐसा हनुमान जा रहा था। ३३

वॅळितुतुप्पिन् वेलै तावुम् वीरन्वाल् वेद मेय्क्कुम्
अळित्तुप्पि ननुम नॅन्तु मरुन्दुणै पॅऱ्ऱ तायुम्
कळित्तुप्पुन् डॉळिन्मे नित्ऱ वरक्करहण् णुरुव रॅन्न
ऑळित्तुप्पित् शॅल्लुङ् गाल पाशत्तै यॉत्त दन्ऱे 34

वॅळि तुप्पित्-सविस्तार और प्रवालयुक्त; वेलै तावुम्-समुद्र लाँघनेवाले; वेतम् एय्क्कुम्-वेद से तुल्य; वीरन् वाल्-महावीर (हनुमान) का लांगूल; कळित्तु-ताड़ी पीकर; पुन् तॉळिल् मेल् नित्ऱ-नीच कर्म अपनाए रहनेवाले; अरक्कर् कण् उरुवर्-राक्षस देख लेंगे; ॲन्त-ऐसा सोचकर; अळि-करुणा व; तुप्पित्-बल से युक्त; अनुमन् ॲन्तुम्-हनुमान के रूप में; अरुन्तुणै पॅऱ्ऱताय्-अपूर्व सहायक पाकर; पिन् ऑळित्तु चॅल्लुम्-उसके पीछे-पीछे छिपे-छिपे जानेवाले; काल पाचत्तै-यम-पाश के; ऑत्तनु-समान रहा। ३४

बड़े विस्तार के और प्रवालयुक्त समुद्र को वेद-सम वीर हनुमान लाँघ रहा था। तब उसका लांगूल कालपाश के समान लगा। यह कालपाश (लांगूल) मद्यप और नीचकर्मी राक्षसों की दृष्टि में पड़ने से डरकर करुणामय प्रतापी हनुमान की सहायता पाकर उसके पीछे-पीछे छिपे-छिपे जा रहा हो —ऐसा लग रहा था। ३४

मेरुवै मुळ्दुञ् जूळन्दु मीदुऱ्ऱ वेह नाहम्
कार्निऱत् तण्ण लेवक् कलुळन्वन् दुऱ्ऱ कालेच्
चोर्वुऱु मनत्त दाहिच् चुऱ्ऱिय चुऱ्ऱु नीङ्गिप्
पेर्वुऱु हिन्ऱ वाऱु मॉत्तदप् पिऱङ्गु पेळ्वाल् 35

पिऱङ्कु पेळ्-शोभायमान बड़ा; अ वाल्-वह लांगूल; कार् निऱत्तु-काले वर्ण के; अण्णल्-महिमावान श्रीविष्णु के; एव-आज्ञा देने पर; कलुळन् वन्तु उऱ्ऱ-गरुड़ जब आया; काले-तब; मेरुवै-मेरुपर्वत को; मुळ्तुम् चूळ्न्तु-पूरा लपेटकर; मीतुऱ्ऱ-उसके ऊपर फन फैलाये जो रहा; वेक नाकम्-भयंकर वेगवान शेषनाग; चोर्वुऱु मनत्ततु-थकित-मन; आकि-होकर; चुऱ्ऱिय चुऱ्ऱु नीङ्कि-अपनी लपेटें हटाकर; पेर्वु उऱुकिन्ऱ आऱुम्-अलग हटता जाता हो; ऑत्ततु-ऐसा भी लगा। ३५

एक बार नीलवर्ण श्रीविष्णु की प्रेरणा पर गरुड़ मेरुपर्वत के पास

आया। तब वहाँ शेषनाग उस पर्वत को पूरी तरह से लपेटकर उसके ऊपर अपना फन फैलाये हुए था। गरुड़ को देखकर डर के मारे वह अपनी लपेट निकालकर दूर भागने लगा। हनुमान की बड़ी और शोभायमान पूँछ उस शेषनाग के समान लगी। ३५

कुन्ऱॊडु कुणिक्कुङ् गॊऱ्ऱक् कुववुत्तोट् कुरक्कुच् चीयम्
शॆन्ऱुऴि वेहत् तिण्गा लॆऱ्ऱिदरत् तेवर् वॆहुम्
मिन्ऱॊडर् वानत् तान विमानङ्गळ् विशॆयिऱ् ऱम्मिल्
ऒन्ऱॊडॊन् ऱुडैयत् ताक्कि माक्कड लुऱ्ऱ मादो 36

कुन्ऱॊटु कुणिक्कुम्–पर्वत-तुल्य; कॊऱ्ऱम्–विजय-वाहक; कुववु तोळ्–स्थूल कन्धों वाला; कुरक्कु चीयम्–वानर केसरी; चॆन्ऱ उऴ–उसके गमन से उत्पन्न; वेकम् तिण् काल्–वेगवान और प्रबल प्रभंजन; ऎऱितर–वहा, अतः; मिन् तॊटर्–उज्ज्वल; वानत्तु आन–आकाश में उड़नेवाले; तेवर् वॆकुम् विमानङ्कळ्–देवगण जिनमें बैठे हुए जाते थे, वे यान; विचैयिल्–पवन के झोंकों से; तम्मिल् ऒन्ऱॊट ऒन्ऱु–आपस में एक दूसरे से; ताक्कि उटैय–टकराकर टूटे; मा कटल् उऱ्ऱ–बड़े समुद्र में गिरे। ३६

हनुमान के कन्धे विजय के आगर थे। पर्वत-सम थे। ऐसे वानर-केसरी के गमन से बहुत वेगवान प्रभजन उठा। उसके झोंके खाकर आकाश में बिजली के साथ चलते रहे देव-यान आपस में टकराये, टूटे और समुद्र में गिर गये। ३६

वलङ्गैयिन् वयिर वेदि वैत्तवन् वैहु नाडुम्
कलङ्गुऱ वेहु वान्ऱन् करुत्तॆन्नॊ लॆन्नुङ् गऱ्पाल्
विलङ्गयि लॆयिऱ्ऱु वीरन् मुडुहिय वेहम् वॆय्योर्
इलङ्गैयि नळवन् ऱॆन्ना विम्बर्ना डिरिन्द दन्ऱे 37

वलङ्कैयिन्–दाहिने हाथ में; वयिर एति–वज्रायुध; वैत्तवन्–धारण करनेवाला (इन्द्र); वैकुम् नाटुम्–जहाँ रहता है वह लोक; कलङ्कुऱ–अस्त-व्यस्त हो; एकुवान् तन्–ऐसा जानेवाले का; करुत्तु ऎन् कॊल्–अभिप्राय क्या है; ऎन्नुम् कऱ्पाल्–इस विचार से; इम्पर् नाटु–यह लोक; विलङ्कु अयिल् ऎयिऱ्ऱु–अलग-अलग और तीक्ष्ण रहनेवाले दाँतों का; वीरन्–वीर; मुटुकिय वेकम्–जिसके साथ जाता है, वह वेग; वॆय्योर् इलङ्कैयिन्–क्रूर राक्षसो की लंका; अळवु अन्ऱु–तक का नहीं (को सीमा बनाकर नहीं); ऎन्ना–सोचकर; अन्ऱु–उस दिन; इरिन्तत्तु–डरकर भागा। ३७

उसे देखकर यह लोक सोचने लगा कि यह अपने दाहिने हाथ में वज्रायुध धारण करनेवाले इन्द्र के वासस्थान को भी भयभीत करता हुआ जा रहा है। इसका अभिप्राय क्या होगा? बेढंगे दाँतों से युक्त इस वीर का वेग क्रूर राक्षसों की लंका तक सीमित होगा, ऐसा नही लगता। इस विचार से डरकर वह भाग गया। ३७

ओशत्तै युलप्पि लाद वुडम्बमैन् दुडय वॆन्नत्
तेशमु नूलुम् जॊल्लुन् दिमिङ्गिल किलङ्ग ळोडुम्
आशैयै युट्रू वेलै कलङ्गवन् ट्रुणणल् याक्कै
वीशिय कालिन् वीन्दु मिदन्दन्न मीन्ग ळॆल्लाम् 38

उलप्पिलात–अक्षुण्ण; उटम्पु–शरीर; ओचत्तै अमैन्तुटैय–एक योजन बड़ा है, ऐसा बना; ऍन्नत्–ऐसा; तेचमुम् नूलुम्–देशवासी और ग्रन्थ; चॊल्लुम्–जिनके बारे में कहते हैं; तिमिङ्किल किलङ्कळोटुम्–'तिमिंगिलगिलों' के साथ; आचैयै उट्र वेलै–दिगन्त तक फैला हुआ सागर; कलङ्क–क्षुब्ध हुआ; अन्रु–तब; अण्णल् याक्कै–महान् हनुमान के शरीर से; वीचिय कालिन्–बहे पवन से; मीन्कळ् ऍल्लाम्–सभी मछलियाँ; वीन्तु मितन्तन–मरकर तिरे। ३८

उसके शरीर के वेग से चलने के कारण प्रबल रूप से पवन उठकर बहने लगा। तब ऐसे 'तिमिंगिलगिल' नामक जन्तुओं से, जिनके सम्बन्ध में लोक और ग्रन्थ कहते हैं कि उनका अक्षुण्ण शरीर एक योजन विस्तार का है, भरा समुद्र क्षुब्ध हो उठा। तब सभी मछलियाँ मरकर तिर गयीं। (तिमिंगिल से भी बड़े जन्तु को कवि तिमिंगिलगिल कहते हैं।)। ३८

पॊरुवरु मुरुवत् तन्नान् पोहिन्ट्र पोदु वेहम्
तरुवन्न तडक्कै तळ्ळा निमिर्च्चिय तम्मु ळॊप्प
ऒरुवरुङ् गुणत्तु वळ्ळ लोरुयिर्त् तम्बि यॆन्नुम्
इरुवरु मुन्नर्च् चॆन्ट्रा लॊत्तदव् विरण्डु पालुम् 39

पॊरुवु अरुम्–अप्रमेय; उरुवत्तु अन्तान्–आकार वाला वह; पोकिन्ट्र पोतु–जब जाता रहा तब; वेकम् तरुवन्न–उसे वेग देनेवाले; तळ्ळा निमिर्च्चिय–विना थके बढ़े रहनेवाले; तम्मुळ् ऒप्प–परस्पर समान रहनेवाले; तटक्कै–विशाल हाथ; अ इरण्टु पालुम्–उसके दोनों पार्श्वों में; ऒरुवु अरुम्–अचल; कुणत्तु वळ्ळल्–गुणशील महानुभाव श्रीराम और; ओर् उयिर् तम्पि–उनका अनुपम प्राणप्यारे भाई लक्ष्मण; ऍन्नुम् इरुवरुम्–दोनों; मुन्नर् चॆन्ट्राल् ऒत्त–आगे जाते जैसे लगे। ३९

जब अतुल रूप से बढ़े अपने शरीर को ले हनुमान जा रहा था, तब उसके हस्त उसे गतिवेग दे रहे थे। वे हाथ परस्पर सम थे। वे थकते नहीं थे और सदा आगे रहते थे। उनको देखकर ऐसा लगा, मानो सद्गुण-सम्पन्न श्रीराम और उनके प्राणप्यारे अनुज लक्ष्मण दोनों उसकी रक्षा करते हुए बगल में आगे जा रहे हों। ३९

इन्नाह मन्ना नॆरिहालॆन्न वेहुम् वेलैत्
तिन्नाह माविर् चॆरिकोळ्त्तिशै कावल् शॆय्युम्

कैन्नाह मन्नाट् कडल्वन्ददोर् काट्चि तोऩ्ऱ
मैन्नाह मॅन्नु मलैवाऩुऱ वन्द दऩ्ऱे 40

इ नाकम् अऩ्ऩाऩ्–यह पर्वत-सम हनुमान; ऍऱि काल् ॲत–आँधी की तरह; एकुम् वेलै–जब जा रहा था; मैन्नाकम् ॲऩ्ऱुम् मलै–मैनाक कथित पर्वत; तिक् नाक माविल्–दिग्गजों में; चॅऱि कोऴ् तिचै–धनी पूर्व दिशा की; कावल् चॅय्युम्–रक्षा करनेवाला; कै नाकम्–शुण्डी; अ नाळ्–उस दिन; कटल् वन्ततु–(क्षीर-) सागर से उठ आये; ओर् काट्चि तोऩ्ऱ–ऐसे एक दृश्य-सा उपस्थित करते हुए; वाऩ् उऱ–आकाश को स्पर्श करते हुए; वन्ततु–आया। ४०

जब पर्वत-सम हनुमान आँधी के समान जा रहा था, तब मैनाकपर्वत आकाश को स्पर्श करता हुआ समुद्र से ऊपर उठ आया। तब वह उस ऐरावत गज के समान लगा जो आठ दिग्गजों में धनी पूर्व दिशा की रक्षा करनेवाला है। मैनाक का उठ आना, उस दिन ऐरावत के क्षीरसागर से उठ आने के समान लगा। ४०

मीयोङ्गु शॅम्बोऩ् मुडियायिरम् मिऩ्ऩि मैप्प
ओया वरुवित् तिरळुत्तरि यत्तै यॊप्पत्
तीयो रुळरा हियकालवर् तीमै तीर्प्पाऩ्
मायोऩ् महरक् कडऩ्ऱॆऴु माण्व दाहि 41

मी ओङ्कु–ऊपर उठे हुए; चॅम् पोऩ् आयिरम् मुटि–लाल स्वर्णमय सहस्र शिखर; मिऩ् इमैप्प–चमक रहे थे; ओया अरुवित्तिरळ्–अक्षय नदी-समूह; उत्तरियत्तै ऒप्प–उत्तरीय के समान लगा; तीयोर् उळराकिय काल्–क्रूर लोग जब अत्याचार करते हैं तब; तीमै तीर्प्पाऩ्–उनके दुष्कृत्यों के निराकरणार्थ; मायोऩ्–श्रीविष्णु; मकर कटल् निऩ्ऱु–मकरालय से; ॲऴुम् माण्पतु आकि–उठ आते, जैसी छवि के साथ। ४१

उस पर्वत का मकरालय से बाहर निकलकर आना मायावी श्रीविष्णु के 'दुष्कृतां विनाशाय' क्षीरसागर की शेषशय्या से उठकर आने के समान लगा। 'श्रीविष्णु सहस्रशीर्षा: पुरुष:' हैं। इस पर्वत के भी हजार लाल स्वर्णमय शिखर हैं, जिनसे कान्ति छूट रही है। श्रीविष्णु के उत्तरीय के स्थान पर पर्वत पर भी नित्य पूर्ण सरिताएँ बह रही है। मैनाक का एक नाम हिरण्यनाभ भी है। वह विष्णु का भी नाम है। ४१

नूलेनुु केळ्वि नुहरार्पुल नोक्क लुऱ्ऱार्
पोलेन्दि निऩ्ऱ तनियाण्मॅय् पॊऱादु नोङ्गक्
कालाळ्न्द ऴुन्दिक् कडलपुक्कुळिक् कच्च माहि
मालेन्द वोङ्गु नॅडुमन्दर मेयु माऩ 42

नूल् एनुु केळ्वि–शास्त्रोक्त ज्ञान; नुकरार्–जो नहीं सुनते; पुलऩ् नोक्कल् उऱ्ऱार्–और इन्द्रियानुयायी है उन; पोल्–के समान; एऩ्ऱि निऩ्ऱ–(क्षीरसागर-

मथन के समय मन्दरगिरि को) जो धारण करती रही; तन्नियाळ्-वह निस्सहाय भूदेवी; मॅय् पॊरातु-शरीर न सह सकने से; नीङ्क-डगमगायी; काल्-मन्दरगिरि का नीचे का भाग; आळ्न्तु अळुन्ति-गहरे धँसकर; कटल् पुक्कुळि-समुद्र के अन्दर चला गया तब; माल्-मायापति (श्रीविष्णुदेव); कच्चम् आकि-कच्छप बनकर; एन्त-उसको अपनी पीठ पर धारण करने लगे; ओङ्कुम्-तब जो ऊपर आकर खड़ा रहा; नॆंटु मन्तरमेयुम् मात्त-उस बड़े मन्दर के समान भी। ४२

क्षीरसागर-मथन के समय मन्दरपर्वत भूमि पर रखकर घुमाया गया। तब निस्सहाय भूदेवी उसको धारण नहीं कर सकी और मन्दरपर्वत उन लोगों की तरह नीचे जाने लगा, जो शास्त्रोक्त ज्ञान का अनुसरण न करके इन्द्रियों के दास बनकर विषय-भोग में लीन रहते है। तो श्रीविष्णु कच्छप बने और उन्होंने मन्दरपर्वत को अपनी पीठ पर रखवा लिया। उस मन्दरपर्वत के पुन: उठते वक़्त जैसा दृश्य था वैसा ही दृश्य अब इस उठते हुए मैनाक पर्वत का था। ४२

तळ्ळर् करुनर् चिरैमाडु तळैप्पॊ डोङ्ग
ऍळ्ळर् करुनत् निरमॅल्लै यिलादु पॊङ्ग
वळ्ळर् कडलैक् कॅडनीक्कि मरुन्दु वौवि
उळ्ळुर् रॅळुमो रुवणत्तर शेयु मॊप्प 43

तळ्ळर्कु अरु-दुर्निवार; नल् चिरै-श्रेष्ठ पक्ष; माटु-पार्श्वों में; तळैप्पॊटु ओङ्क-पुष्कल रीति से उठे हुए थे; ऍळ्ळर्कु अरु-अनिंद्य; नल् निरम्-अच्छी छवि; ऍल्लै इलातु-असीम रीति से; पॊङ्क-बिखरी; वळ्ळल् कटलै-समृद्ध सागर को; कॅट नीक्कि-विकृत करते हुए चीरकर; मरुन्तु वौवि-अमृत पकड़ते हुए; उळ्ळुर्रु ऍळुम्-समुद्र के अन्दर से बाहर उठ आनेवाले; ओर् उवणत्तु अरचेयुम्-अनुपम पक्षीराज गरुड़; ऑप्प-के भी समान। ४३

वह गरुड़राज के समान भी लगा। दुर्वार दो घने पक्षों को दोनों बाजुओं में ले, अनिंद्य आकर्षक देहकान्ति बिखेरते हुए जलसमृद्ध समुद्र को चीरकर गरुड़ गया और अमृत ग्रहणकर उस समुद्र से बाहर निकला था। उस समय का-सा दृश्य अब यह पर्वत उपस्थित कर रहा था। ४३

आऩ्राळ् नॆंडुनीरिडै यादियॊ डन्द माहित्
तोऩ्रादु निऩ्रा नरुडोऩ्रिड मुन्दु तोऩ्रुम्
मूऩ्रा मुलहत् तॊडुमुऱ्रुयि राय मुऱ्रुम्
ईऩ्रानै यीऩ्र शुवणत्तनि यण्ड मॅन्न 44

आऩ्रु आळ्-बहुत गहरे; नॆंटु नीरिटै-प्रलयसागर में; आतियॊटु अन्तम् आकि-आदि व अन्त; तोऩ्रातु-न जानने देते हुए; निऩ्राऩ्-जो खड़े रहे; अरुळ् तोऩ्रिट-उन श्रीविष्णु के मन में (सृष्टि की) कृपा के उदित होने पर; मुन्तु तोऩ्रुम्-सर्वप्रथम जो प्रकट हुए; मूऩ्रु आम् उलकत्तॊटुम्-त्रिभुवनों के साथ; मुऱ्रु

उयिराय–पूर्ण जीवों के साथ; मुऱ्ऱुम् ईन्ऱानै–(जिन्होंने) सभी का सृजन किया; ईन्ऱ–उन ब्रह्मा को; ईन्ऱ–जिसने बाहर प्रकट कराया; तनि चुवण अण्टम् अँन्न–उस अप्रतिम स्वर्ण के अण्डे के समान । ४४

प्रलय के दिनों में आदि और अन्त प्रकट न होने देते हुए विश्वरूप में रहे श्रीनारायणदेव । उनके मन में सृष्टि रचने की इच्छा हुई । तब एक अण्ड हुआ, जिससे लोकसर्जक, आदिसृष्टि ब्रह्मा उद्भूत हुए । यह पर्वत उस स्वर्णअण्ड के समान लगा । ४४

इन्नीरि लॅन्नैत् तरुमॅन्दैयै यॅय्दि यन्ऱिच्
चॅन्नीर्मै शॅय्ये नॅनचिन्दत्तै शॅय्तु नॉय्दिन्
अन्नीरिल् वन्द मुदलन्दण नादि नाळम्
मुन्नीरिल् मूऴ्हित् तवमुऱ्ऱि मुळैत्त वापोल् 45

अन् नीरिल्–उस प्रलयजल में; नॉय्तिन् वन्त–शीघ्र जो प्रगट हुए; मुतल् अन्तणन्–पहले ब्राह्मण ब्रह्मा; इन्नीरिल्–इस जल में; ऍन्नै तरुम्–मेरे सर्जक; ऍन्तैयै–मेरे जनक को; ऍय्ति अन्ऱि–प्राप्त किये विना; चॅन्नीर्मै–अपना श्रेष्ठ काम; चॅय्येन् ऍन्न–नहीं करूँगा, ऐसा; चिन्तत्तै चॅय्तु–सोचकर; आति नाळ्–प्रथम दिवस; अ मुन्नीरिन्–उस समुद्र में; मूऴ्कि–मग्न रहकर; तवम् मुऱ्ऱि–तप पूरा करके; मुळैत्तवा पोल्–बाहर उग आये, वैसे ही । ४५

उस प्रलयजल से उत्पन्न ब्रह्मा ने संकल्प किया कि अपने सर्जक नारायण के प्रत्यक्ष दर्शन किये विना मैं अपने सृष्टिकर्म में न लगूँगा; तो उसी प्रथम दिवस में वह उस जल के अन्दर तपस्या करने पैठ गये । तप पूरा करके जो वे बाहर निकल आये, उनके भी समान दिखा यह पर्वत । ४५

पूवालिडै यूऱु पुहुन्दु पॊऱादु नॅञ्जिल्
कोवामुनि शीऱिड वेलै कुळित्त वॅल्लाम्
मूवामुद नायहन् मीळ मुयन्ऱ वन्नाळ्
तेवाशुरर् वेलैयिल् वन्दॅऴु तिङ्ग ळॅन्न 46

पूवाल्–माला के कारण; इटैयूऱु पुकुन्तु–बाधा आयी; नॅञ्चिल् पॊऱातु–मन की क्षमा खोकर; कोवा मुनि–गुस्सेवर (दुर्वासा) मुनि के; चीऱिट–कोप से शाप देने पर; वेलै कुळित्त–जो समुद्र मे चले गये; ऍल्लाम्–वे सब; मीळ–फिर से मिलें, तदर्थ; मूवा–अमर; मुतल् नायकन्–आदिदेव (की आज्ञा से); तेवाचुरर् मुयन्ऱ–देवों और असुरों ने जिस दिन प्रयत्न किया; अनाळ्–उस दिन; वेलैयिल्–उस सागर से; वन्तु ऍऴु–उठ जो आया; तिङ्कळ् ऍन्न–उस चन्द्र के समान । ४६

(दुर्वासा ने श्रीलक्ष्मी की भक्तिन से प्राप्त माला इन्द्र को दी । उसने उसे ऐरावत को पहना दिया ।) उस माला सम्बन्धी (इन्द्र के दर्पपूर्ण अभद्र) व्यवहार से कष्ट हो गया । (अपमान न सह सककर क्रोधी स्वभाव

के) दुर्वासा कुपित हुए। उसके फलस्वरूप देव-वैभव सारे समुद्र में जाकर डूब गये। उनको फिर से बाहर लेने के लिए अमर आदिनायक श्रीविष्णु ने उपाय बताया और तदनुसार देवों और असुरों ने क्षीरसागर-मंथन किया। उस समय पूर्णचन्द्र उग आया था। उसी के समान लगा मैनाक। ४६

निऱङ्गुङ्गुम मॊप्पन्न नीलिऱम् वायन्द नीरिन्
इऱङ्गुम्बव ळक्कॊडि शुऱ्ऱिन शॆम्बॊ नेयन्द
पिऱङ्गुञ्जिह रप्पडर् मुन्ऱि ऱॊरुम्बि णावॊ
डुऱङ्गुम्मह रङ्ग ळुयिर्प्पॊ डुणर्न्दु पेर 47

निऱम्–रंग में; कुङ्कुमम् ऒप्पन्न–कुंकुम के समान हैं; नील् नीऱम् वाय्न्त–नीले रंग से भी युक्त; नीरिन् इऱङ्कुम्–जल में फैलनेवाली; पवळक्कॊटि–प्रवाल-लताओं से; चुऱ्ऱित–आवृत; चॆम् पॊन् एय्न्त–लाल स्वर्णमय; पिऱङ्कुम्–शोभाशाली; चिकरम् पटर्–शिखरों के; मुन्ऱिल् तोऱम्–अग्रभागों में; पिणाओटु–अपनी स्त्री-जातियों के साथ; उऱङ्कुम्–सोनेवाले; मकरङ्कळ्–मगरमच्छ; उयिर्प्पॊटु–निःश्वास के साथ; उणर्न्तु–जागकर; पेर–जाने लगे (ऐसा)। ४७

मैनाक के शिखर कुकुम वर्ण के भी थे। उन पर नीला रंग भी फैला था। जल में फैलनेवाली प्रवाललताएँ उनको लपेटे थीं। उन पर लाल स्वर्ण जमा था और उनसे कान्ति छूट रही थी। उन शिखरों के तलों पर मगरमच्छ अपनी स्त्री-मच्छों के साथ जो रहे थे, अब वे जागकर इधर-उधर भागने लगे। ऐसे दृश्यों के साथ वह पर्वत निकल आ रहा था। ४७

कून्शून्मुदि रिप्पि कुरैक्क निरैत्त पाशि
वान्शून्मळै यॊप्प वयङ्गु पळिङ्गु मुन्ऱिल्
तान्शूलि नाळिऱ् ऱहैमुत्त मुयिर्त्त शङ्गम्
मीन्शूळ्वरु मम्मुळु वॆण्मदि वीऱु कीऱ 48

वान् चूल् मळै ऒप्प–आकाश के जलगर्भित मेघों के समान; निरैत्त पाचि–उस पर्वत पर जमी हुई परतों की काई; वयङ्कु–जिन पर रहती है उन; पळिङ्कु मुन्ऱिल्–स्फटिक पत्थर के आँगनों में; कून्–वक्र; चूल् मुतिर्–पूर्ण-गर्भ; इप्पि–सीपियाँ; कुरैक्क–स्वर करती हैं; चङ्कम्–शंख; चूलि नाळिल्–प्रसव-समय; तान् उयिर्त्त–जनित; तकै मुत्तम्–श्रेष्ठ मोतियों के साथ; मीन् चूळ् वरुम्–ताराओं से घिरे हुए; अ वॆण् मुळु मति–उस श्वेत पूर्ण चन्द्र का; वीऱु कीऱ–शान कम करते हुए। ४८

उस पर्वत के अग्रभाग के स्फटिक पत्थरों पर आकाश के जलगर्भित मेघों के समान काई फैली थी। उसमें रहकर वक्र रूप की गर्भिणी शुक्तियाँ नाद उठा रही थीं। शंखों के जनाये मोती विखरे पड़े थे। इस साज में

वह पर्वत उस श्वेत पूर्णचन्द्र के शान को कम करता हुआ उठ रहा था, जिसके चारों ओर तारागण घेरे आ रहे हों। ४८

पल्लायिर मायिरङ् गाशिऩम् बाडि मैक्कुम्
कल्लार्शिम यत्तडङ् गैत्तल नीण्डु काट्टित्
तॊल्लार्हलि युट्पुह मूऴ्हि वयङ्गु तोऱ्ऱत्
तॆल्लामणि यीट्ट मुहन्दॆऴु वानु मॆऩ्ऩ 49

पल् आयिरम् आयिरम्–अनेक सहस्र-सहस्र; काचु इऩम्–रत्नराशियाँ; पाट्टु इमैक्कुम्–सुन्दर रूप से कान्ति बिखेरती है; कल् आर् चिमय तटम्–प्रस्तरमय शिखर-तल; कै तलम्–(रूपी) हाथों को; नीण्टु काट्टि–बढ़ाते हुए; तॊल् आर् कलियुळ्–प्राचीन समुद्र में; पुक मूऴ्कि–(मोती-संग्रह करने हेतु) गोते लगाकर; वयङ्कु तोऱ्ऱत्तु–उज्ज्वल रूप के; ऍल्ला मणि ईट्टम्–सारे मोतियों के समूहों को; मुकन्तु–लेते हुए; ऍऴुवाऩुम् ऍऩ्ऩ–ऊपर उठ आनेवाले (गोताखोरों) के समान भी। ४९

उसके शिखर ऊपर बढ़े हुए थे और उन पर सहस्र-सहस्र रत्न चमक रहे थे। वे शिखर उसके हाथों के समान थे। इसलिए वह उस गोताखोर के समान लगा जो प्राचीन समुद्र में डूबकर अपने हाथों में अत्युज्ज्वल मणियों की राशियाँ लेते हुए बाहर निकल आ रहा हो। ४९

मनैयिऱ्पॊलि माह नॆडुङ्गॊडि मालै येय्प्प
विऩैयिऱ्पॊलि वॆळ्ळरु वित्तिर डुङ्गि वीऴ
निनैविऱ्कड लूडॆऴ लोडु मुणर्न्दु नीङ्गाच्
चुनैयिऱ्पनै मीऩ्ऱिमि लोडु तॊडर्न्दु तुळ्ळ 50

निऩैविल्–कुछ निश्चय करके; कटलूटु ऍऴलोटुम्–समुद्र से जब पर्वत उठ आया; मऩैयिल् पॊलि–भवनों में शोभा के साथ विद्यमान; माक नॆटुङ्कॊटि मालै–आकाश-व्यापी पताकाओं की श्रेणी; एय्प्प–के समान; विऩैयिल् पॊलि–पुण्य के समान रहनेवाले; वॆळ् अरुवि तिरळ्–श्वेत रंग के झरने; तूङ्कि वीऴ–ऊपर से नीचे बहते हैं; पऩै मीऩ् तिमिलोटु–(जिनमें) पऩै नामक मछलियाँ, तिमिल नामक मच्छों के साथ; नीङ्का–अटल रहती है; चुऩैयिल्–उन पर्वतीय तालाबों से; उणर्न्तु–बात समझकर; तॊटर्न्तु तुळ्ळ–क्रम से उछलती हैं, ऐसे। ५०

वह पर्वत कोई सकल्प लेकर उठ आ रहा था। तब उस पर बहनेवाली सरिताएँ भवनों पर फहरानेवाली आकाशव्यापी पताकाओं की राशियों और सत्कर्मों के समान (जो निरन्तर क्रियाशील है) लगी। तब वहाँ के स्रोतों से 'पनै' और 'तिमिल' नामक मच्छ स्थिति समझकर इधर-उधर तड़पकर भागने लगे। वे उन स्रोतों में बहुत दिनों से थे और उनसे कभी अलग नहीं हुए थे। ५०

कॊडुनालॊ डिरण्डु कुलप्पहै कुट्र मून्ड्रुम्
शुडुञातम् वॆळिप्पड वुय्न्द तुयक्कि लार्बोल्
विडनाह मुळैत्तलै विम्म लुळन्दु वीङ्गि
नॆडुनाळ् पॊरैयुट्र वुयिर्प्पु निमिर्न्दु निट्रप 51

कॊटुम्–क्रूर; नालॊटु इरण्टु–चार के साथ दो (छः); कुल पकै–शत्रुसमूह; मून्ड्रु कुट्रमुम्–तीन दोष; चुटु–दग्धकारी; ञातम्–ज्ञान के; वॆळिप्पट–प्रकट होने पर; उय्न्त–उससे बचे हुए; तुयक्किलार् पोल–निर्लिप्तों के समान; मुळैत्तलै–कन्दराओं में; नॆटु नाळ्–बहुत दिनों से; विम्मल् उळन्तु–दम घुटकर कष्ट उठाने से; वीङ्कि–शरीर सूझकर; पॊरै उट्र–बन्द रहे; विट नाकम्–विषैले सर्प के; उयिर्प्पु–साँस के; निमिर्न्तु निट्रप–उत्थित होते (वह पर्वत उठा)। ५१

काम-क्रोधादि षड्रिपुओं को और त्रिदोषों (अज्ञान, अन्यथा ज्ञान और विपरीत ज्ञान) के दाहक, सच्चे ज्ञान-प्राप्त व निर्लिप्त महात्माओं के समान कन्दराओं में, जो बहुत दिन से दम घुटने से व्यथित पड़े थे, उन व्यालों के श्वास चलने लगे थे। यह साध्य करता हुआ वह पर्वत ऊपर उठा। ५१

ऎळुन्दोडि विण्णोडु मण्णॊक्क विलङ्गु माडि
उळुन्दोडु कालत् तिडैयुम्बरि नुम्ब रोङ्गिक्
कॊळुन्दोडि निन्ड्र कॊळुङ्गुन्ड्रै वियन्दु नोक्कि
अळुन्दामनत् तण्ण लिदॆन्ड्रॊ लॆन्ना यिर्त्तान् 52

इलङ्कुम् आटि–प्रकाशमय आईने पर; उळुन्तु ओटु–उड़द के दौड़ने के; कालत्तु इटै–काल में; ऎळुन्तु ओटि–ऊपर आकर जो फैला रहा; विण्णॊटु मण् ऑक्क–आकाश-भूमि को एक करके; उम्परिन् उम्पर ओङ्कि–आकाश पर सर्वत्र छाकर; कॊळुन्तु ओटि–शिखर फैलाकर; निन्ड्र–जो स्थित रहा; कॊळुम् कुन्ड्रै–बड़े पर्वत को; अळुन्ता मनत्तु–अदम्य-मन; अण्णल्–महिमावान ने; नोक्कि वियन्तु–देखकर विस्मित होकर; इतु ऎन्न कॊल्–यह क्या है; ऎन्ना–ऐसा; अयिर्त्तान्–संशय किया। ५२

एक शीशे पर उड़द का एक दाना जितनी कम देरी में लुढ़कता चला जायगा, उतनी देर के अन्दर मैनाक जल के ऊपर उठा और भूमि और आकाश में सर्वत्र व्याप गया। वह आकाश के ऊपर भी चला गया। अदम्य-मन महान् हनुमान ने इसको देखा, और विस्मित होकर संशय किया कि यह क्या है ? । ५२

नीर्मेर् पडर्नन् नॆडुङ्गुन्ड्रु निमिर्न्दु निट्रल्
शीर्मेर् पडरा दॆन्नच्चिन्दै युणर्न्दु शॆल्वान्
वेर्मेर् पडवन् ट्रलैकीऴ्प्पड नूक्कि विण्णोर्
ऊर्मेर् पडरक् कडिदुम्बरि नूडु पाय्न्दान् 53

नीर् मेल्–समुद्र-जल पर; पटर्–व्याप्त; नल् नॆटुम् कुन्ऱु–अच्छा और बड़ा पर्वत; निमिर्न्तु निऱ्ऱल्–जो उन्नत खड़ा रहा वह काम; चीर् मेल् पटरातु–अच्छे उद्देश्य का नहीं होगा; ऎन्त–ऐसा; चिन्तै उणर्न्तु–मन में सोचकर; चॆल्वान्–जो जाता रहा वह; वेर् मेल् पट–निचले भाग को ऊपर; वन् तलै कीऴ् पट–बलवान सिर का भाग नीचे करके; नूक्कि–ढकेलकर; विण्णोर् ऊर् मेल् पटर–देवलोक पर व्यापने के विचार से; उम्परिन् ऊटु–अन्तरिक्ष में; कटितु पाय्न्तान्–वेग से चला। ५३

इस तरह उस पर्वत का सामने आकर तनकर खड़ा रहना अच्छे आशय का नही हो सकता। यह सोचकर हनुमान ने आगे वढ़कर उसे ऐसा ढकेल दिया कि उसका सिर नीचे की ओर और तल ऊपर की ओर आ गया। हनुमान आकाश में देवलोक की ओर उठा। ५३

उन्दामु नुलैन्तुयर् वेलै यॊऴितत कुन्ऱम्
शिन्दाकुल मुऱ्ऱतु पिन्नरुन् दीर्वि लन्बाल्
वन्दोङ्गि याण्डोर् शिऱुमानिड वेड माहि
ऎन्दायिदु केऴेन विन्न विशैतत दन्ऱे 54

उयर् वेलै–उत्तुंग (तरंगों वाले) समुद्र में; ऒऴितत कुन्ऱम्–छिपा रहा वह (मैनाक) पर्वत; उन्ता मुन्–उससे ढकेला जाकर; उलैन्तु–संकटग्रस्त होकर; चिन्ताकुलम् उऱ्ऱतु–चिन्ताकुल हुआ; पिन्तरुम्–वाद भी; तीर्विल्–अक्षय; अन्पाल्–प्रेम से; आण्टु–वहाँ; ओर् चिऱु–एक छोटे; मानिट वेटम् आकि–मनुष्य का रूप ले; वन्तु ओङ्कि–आकर सीधे खड़े होकर; ऎन्ताय्–मेरे तात; इतु केऴ्–यह सुनो; ऎन्त–ऐसा कहकर; इन्त इचैत्ततु–यों वोला। ५४

इस व्यवहार से मैनाक के शरीर में चोट और मन में टीस लगी। वहुत दिन से समुद्र के अन्दर छिपा-लुका पड़ा रहा वह प्रेम से प्रेरित होकर उठ आया था। अब उस अटल प्रेम के कारण वह एक छोटा मानव-रूप धरकर हनुमान के पास आकर खड़ा हुआ और वोला। मेरे तात ! सुनो। ५४

वेऱ्ऱुप् पुलत्तो नलन्नैय विलङ्ग लॆल्लाम्
माऱ्ऱुच् चिऱैयॆन् ऱरिवच्चिर माण वोच्च
वीऱ्ऱुप् पडनू ऱियवेलैयिन् वेलै युय्त्तुक्
काऱ्ऱुक् किऱैव नॆनैक्कात्तन नन्बु कान्द 55

ऐय–तात; वेऱ्ऱुप् पुलत्तोन्–शत्रु; अलन्–नहीं हूँ; अरि–इन्द्र ने; विलङ्कल् ऎल्लाम्–सभी पर्वतों के; चिऱै माऱ्ऱु–पक्षों को दूर करो; ऎन्ऱु–कहकर; वच्चिरम्–वज्रायुध को; माण ओच्च–खूब चलाया; वीऱ्ऱुप्पट–पक्ष अलग हों ऐसा; नूऱिय वेलैयिन्–काटा जव गया तव; काऱ्ऱुक्कु इऱैवन्–पवनदेव ने; अन्पु कान्त–प्रेम प्रकट करके; ऎनै–मुझे; वेलै उय्त्तु–समुद्र में पहुँचाकर; कात्ततन्–बचाया। ५५

मित्र ! मैं विरोधी पक्ष का नहीं हूँ। जब इन्द्र ने पर्वतों के पक्षों को छेदने के लिए वज्र चलाया तब पवनदेव ने मुझ पर प्रेम प्रकट करके मुझे समुद्र में छोड़ा और मेरी जान बचायी। ५५

अऩ्ऩाऩरुङ् गादल नादलि नन्बु तूण्ड
अॅऩ्ऩालुऩक् कोण्ड़ु शॅयऱ्कुरित् ताय तऩ्मै
पॉऩ्ऩार्शिह रत्तिऱै यारिऩै पोदि यॅऩ्ऱे
उऩ्ऩावुयरन् दैनुयर् विऱ्कु मुयर्न्द तोळाय् 56

उयर्विऱ्कुम्–उन्नत से भी; उयर्न्त–बढ़े हुए; तोळाय्–कन्धों वाले; अऩ्ऩात्–उस (पवनदेव) के; अरुम् कातलन्–प्यारे पुत्र हो तुम; आतलिऩ्–इसलिए; अऩ्पु तूण्ट–प्रेम से प्रेरित होकर; अॅऩ्ताल्–अपने से; उऩक्कु–तुम्हारे प्रति; चॅयऱ्कु उरित्ताकिय–करणीय; तऩ्मै–काम; पॉऩ् आर् चिकरत्तु–स्वर्णमय शिखर-प्रदेश पर; इऱै–थोड़ी देर; आरिऩै–विश्राम कर लो और; पोति–जाओ; अॅऩ्ऱे–ऐसा; उऩ्ऩा–कहने के लिए ही; उयर्न्तेऩ्–समुद्र के ऊपर बढ़ आया। ५६

ऊँचे से ऊँचे कन्धों वाले ! तुम उस वायुदेव के प्यारे पुत्र हो। इसलिए प्रेम से प्रेरित होकर मैं तुम्हें कुछ करूँ वह यही है कि तुम मेरे स्वर्ण-भरे शिखर पर कुछ देर विश्राम करके जाओ। यही सोचकर मैं ऊपर आया हूँ। ५६

कार्मेहवण् णऩ्बणि पूण्डवऩ् कालिऩ् मैन्दऩ्
तेर्वाऩ्वरु हिऩ्ऱनऩ् शीदैयैत् तेव रुय्यप्
पेर्वाऩयल् शेऱि यिदिऱ्पॅरुम् बेऱि लॅऩ्ऩ
नीर्वेलैयु मिऩ्न दुरैत्तदु नीदि निऩ्ऱाय् 57

नीति निऩ्ऱाय्–नीतिनिष्ठ; नीर् वेलैयुम्–जलसमृद्ध समुद्र; कार् मेक वण्णऩ्–मेघश्याम की; पणि पूण्टवऩ्–सेवा का व्रती; कालिऩ् मैन्तऩ्–और पवनकुमार; तेवर् उय्य–देवों को तारने हेतु; चीतैयै तेर्वाऩ्–सीता को खोजते हुए; पेर्वाऩ्–जानेवाला; वरुकिऩ्ऱऩऩ्–आ रहा है; अयल् चेऱि–उसके पास जाओ; इतिल्–इससे; पॅरुम् पेऱु–बड़ा भाग्य; इल्–नहीं; अॅऩ्ऩ–ऐसा; इऩ्ऩतु–ये वचन; उरैत्ततु–बोला। ५७

हे नीतिनिष्ठ ! जल-भरे समुद्र ने भी मुझसे कहा कि मेघश्याम श्रीराम की सेवा में प्रवृत्त पवनकुमार देवों के रक्षणार्थ सीताजी की खोज में जाता हुआ आ रहा है। उसके पास जाओ। इससे बढ़कर कोई सौभाग्य नहीं है। ५७

नऱ्ऱायिनु नल्ल ऩमक्किव ऩॅऩ्ऱु नाडि
इऱ्ऱेयिऱै यॅय्दियि शैन्दवु कोडि यॅऩ्ऩाल्

पॉऱ्ऱारहऩ् माऱ्बद मिल्लुळै वन्द पोदे
उऱ्ऱाऱ्शॅयऩ् मऱ्ऱुमुण् डोवॅऩ वुऱ्ऱु रैत्ताऩ् 58

पोऩ् तार्–स्वर्णहारालंकृत; अकल् मार्प–विशाल वक्ष वाले; इवऩ्–यह; नल् तायित्तुम्–अच्छी माता से भी; नमक्कु नल्लऩ्–हमारे लिए हितकारी है; ॲऩ्ऱु नाटि–ऐसा मानकर; इऱ्ऱे–अभी; इऱ्ऱै ॲय्ति–कुछ देर आकर; ॲऩ्ताल् इचैन्ततु–मुझसे जो हो सकता है; कोटि–उसको ग्रहण करो; तम् इल् उळ्ळै–अपने गृह में; वन्त पोते–आते ही; उऱ्ऱार्–घर का स्वामी; चॅयल् मऱ्ऱम् उण्टो–दूसरा काम करेगा क्या; ॲऩ–ऐसा; उऱ्ऱु–पास आकर; उरैत्ताऩ्–(मैनाक ने) कहा। ५८

मैनाक आगे बोला। स्वर्णहारालंकृत विशाल वक्ष वाले! मेरे सम्बन्ध में यह मानो कि 'यह माता से भी हितू है!' अभी थोड़ी देर मुझ पर विश्राम करो और मेरा अल्प आतिथ्य ग्रहण करो। अपने घर पर किसी को आते देखकर तभी उसका आतिथ्य करो —इससे बढ़कर कर्तव्य क्या है ? । ५८

उरैत्तानुरै यालिव नऱ्ऱिल नॅऩ्ऩव दुऩ्ऩि
विरैत्तामरै वाणमुहम् विट्टुवि ळङ्ग वीरऩ्
शिरित्ताऩळ वेशिऱ्ऱि दत्तिशैच् चॅल्ल नोक्कि
वरैत्ताणॅडुम् पॉऱ्कुडु मित्तलै माडु कॉण्डाऩ् 59

वीरऩ्–प्रतापी; उरैत्ताऩ् उरैयाल्–वक्ता के वचन से; इवऩ् ऊऱु इलऩ्–यह निर्दोष है; ॲऩ्पतु उऩ्ऩि–यह बात मानकर; विरै तामरै मुकम्–सुगन्धित कमल-सा मुख; वाळ् विट्टु विळङ्क–उज्ज्वल रूप से शोभायमान हो, ऐसा (प्रसन्न) हो करके; चिऱ्ऱितु अळवे चिरित्ताऩ्–थोड़ा मुस्कुराया; अ तिचै नोक्कि–उस दिशा की तरफ़; चॅल्ल–गया; ताळ् वरै–तलहटियों-सहित; नॅटुम् पॉऩ् कुटुमि–उन्नत स्वर्णमय शिखरों वाले उस पर्वत के; तलै माटु कॉण्टाऩ्–ऊपरी भाग के पास गया। ५६

महावीर ने मैनाक का वचन सुना। समझ गया कि यह अहित करनेवाला नहीं है। उसके सुगन्धित कमल-सम आनन को अधिक शोभित करते हुए हनुमान के मुख में एक मन्दहास उत्पन्न हुआ। वह उस मैनाक की दिशा में जाकर तलहटियों-सहित उस मैनाक के स्वर्णमय शिखर-प्रदेश में रुका। ५९

वरुन्दॅऩ्ऱु वॅऩ्ऱुणै वानवन् वैत्त - कादल्
अरुन्दॅऩ्ऩि यादुमॅन् ऩाशै निरप्पि यल्लाल्
पॅरुन्दॅऩ्पिळि शारनिऩ् ऩऩ्बु पिणित्त पोदे
इरुन्दॅनुहऱ्ऩ् दैनिदऩ् मेलिऩि योव दॅऩ्ऩो 60

वरुन्तेऩ्–संकट नहीं पाऊँगा; अतु–वह; ॲऩ् तुणै–मेरे सहायक; वाऩवऩ्–देव (श्रीराम); वैत्त कातल्–मुझ पर जो रखते है, उस प्रेम का फल है; इऩि–अब भी; ॲऩ् आचै निरप्पि अल्लाल्–अपनी कामना पूरी किये विना; यातुम्

अरुन्तेन्–कुछ नहीं खाऊँगा; निन् अन्पु–तुम्हारा प्यार; पॅरुम् तेन् पिळि–अति मधुर मधु-रस; चार–मिला है; पिणित्त पोते–उसने जब मुझे बद्ध किया तभी; इरुन्तेन् नुकर्न्तेन्–ठहरकर भुगतनेवाला बन गया; इनि–अब; इतन् मेल्–इससे बढ़कर; ईवतु ॲन्तो–देने के लिए क्या रखा है । ६०

हनुमान ने कहा। मैं यात्रा से श्रांत नही होऊँगा। मेरे सहायक प्रभु श्रीराम की मुझ पर कृपा उसका कारण है। मेरी कामना पूरी नहीं हो तब तक कुछ नही खाऊँगा। तुम्हारे प्रेम ने बहुत ही प्रिय शहद के-से मधुर रस के साथ मुझे बद्ध कर लिया। उसी से मेरा ठहरना और आतिथ्य भोगना हो गया, समझो। इससे बढ़कर तुम दोगे क्या ? । ६०

मुन्बिऱ्चिऱन् दारिडै युळ्ळवर् कादन् मुऱ्ऱप्
पिन्बिऱ्चिऱन् दार्गुण नन्ऱिदु पॅऱ्ऱ याक्कैक्
कॅन्बिऱ्चिऱन् दायदो रूऱ्ऱमुण् डॅन्न लामे
अन्बिऱ्चिऱन् दायदोर् पूशनै यार्ह णुण्डे 61

मुन्पिन्–बल में; चिऱन्तारिटै–श्रेष्ठ लोगों पर; कातल् उळ्ळवर्–प्यार रखनेवाले; मुऱ्ऱ–प्रेम के बढ़ने से; पिन्पिऱ् चिऱन्तार्–पीछे श्रेष्ठ बन जाते हैं; कुणम् नन्ऱितु–यह गुण उत्तम ही है; पॅऱ्ऱ याक्कैक्कु–प्राप्त शरीर को; ॲन्पिल् चिऱन्तायतु–अस्थि से बढ़कर; ओर् ऊऱ्ऱम्–बलदायक; उण्टु–और कोई है; ॲन्नलामे–ऐसा कहा जा सकता है क्या; पूचनै–पूजा-सत्कार में; अन्पिन् चिऱन्तु आयतु–प्यार से बढ़कर कुछ; ऊऱ्ऱम्–बल; यार्कण्–किसके पास; उण्टु–है । ६१

धार्मिक बल में श्रेष्ठ महानों के प्रति प्रेम रखनेवाले पीछे जीवन में श्रेष्ठ बन जाते है। यह गुण अच्छा ही है। (प्रारब्ध-) प्राप्त इस शरीर को बल देनेवाला, अस्थि को छोड़कर और किसी को कह सकते हैं क्या ? वैसे ही वन्दना के लिए प्रेम से बढ़कर बल किसके पास है ? । ६१

ईण्डेकडि देहि विलङ्ग लिलङ्गै यॅय्दि
आण्डान्नडि मैत्तॉळि लाऱ्ऱलि नाऱ्ऱ लुण्डे
मीण्डानुहर् वेनुन् विरुन्दॆन्न वेण्डि मॅय्म्मै
पूण्डानवन् कट्पुलम् बिऱ्पड मुन्बु पोनान् 62

मॅय्म्मै पूण्टान्–सत्यवान; ईण्टे–अभी; कटितु एकि–शीघ्र जाकर; विलङ्कल् इलङ्कै–(त्रिकूट) पर्वत पर स्थित लंका में; ॲय्ति–जाकर; आण्टान्–मेरे स्वामी का; अटिमै तॉळिल्–दास-योग्य काम; आऱ्ऱलिन्–पूरा करने से; आऱ्ऱल् उण्टे–दूसरा कार्य है क्या; मीण्टाल्–लौट आऊँ तब; नुन् विरुन्तु–तुम्हारी दावत; नुकर्वेन्–भोगूँगा; ॲन्न–कहकर; वेण्टि–प्रार्थना करके; अवन् कट्पुलम्–मैनाक की दृष्टि; पिन् पट–बिछुड़ जाय ऐसा; मुन्पु पोनान्–आगे गया । ६२

सत्यसंध हनुमान ने आगे कहा। अभी त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका जाऊँ, अपने स्वामी श्रीराम की सेवा का कर्तव्य अदा करूँ, इसके

अतिरिक्त कोई कर्तव्य है क्या ? वह काम पूरा करके लौट आऊँ, तब मैं तुम्हारा आतिथ्य स्वीकार अवश्य करूँगा। फिर उसने मैनाक से विदा माँगी और वह इतनी तेज़ी से इतनी दूर आगे बढ़ गया कि मैनाक की दृष्टि पीछे रह गयी। ६२

शॅव्वान्कदि रुङ्गुळिर् तिङ्गळुन् देवर् वैहुम्
वॅव्वेरु विमानमु मीन्तॊडु मेह मऱ्ऱुम्
ॲव्वायुल हत्तवु मीण्डि यिरिन्द तम्मिल्
ऑव्वादन वॊत्तिड वूऴिवॅङ् गालु मॊत्तान् 63

चॅव् वान् कतिरुम्–लाल गगन में शोभित किरणमाली; कुळिर् तिङ्कळुम्–और शीतल चन्द्र; तेवर् वैकुम्–देव जिनमे वास करते थे; वॅव्वेऱु विमानमुम्–वे विविध विमान; मीन्तॊटु–नक्षत्र; मेकम्–मेघ; मऱ्ऱुम् ॲवायवुम्–और अन्य सभी स्थानों में रहनेवाले; उलकत्तवुम्–लोकों के; ईण्टि–एक स्थान पर आकृष्ट होकर; इरिन्त तम्मिल्–फिर जो तितर-बितर हुए; ऑव्वातन–कभी जो पहले साथ नहीं थे; ऑत्तिट–उनको साथ करते हुए; ऊऴि वॅम् कालुम् ऑत्तान्–युगान्त की वायु के समान भी रहा। ६३

युगान्त के पवन के वेग में सब वस्तुएँ तितर-बितर हो जाती हैं और आपस में इस तरह मिल जाती है जैसे वे पहले नहीं मिली थीं। उसी पवन के समान हनुमान बढ़ता चला कि लाल गगन के किरणमाली और शीतल चन्द्र, नक्षत्र, देवों के यान और मेघ और अन्य सारे लोकों के सभी पदार्थ ऐसे विक्षिप्त हुए कि उनमें अभूतपूर्व सहवास हो गया। ६३

नीर्मेऱ्कडन् मेनिमिर् हिन्ऱ निमिर्च्चि नोक्काप्
पार्मेऱ्ऱवळ् शेवडि पायनड वाप्प दत्तॆन्
तेर्मेऱ्कुदि कॊण्डव नित्तिऱम् जिन्दै शॅय्दान्
आर्मेऱ्कॊलॆन् ऱॆण्णि यरुक्कनु मैय मुऱ्ऱान् 64

नीर् मेल् कटल् मेल्–जल को अपने ऊपर धारण करनेवाले समुद्र पर; निमिर्किन्ऱ–ऊपर चलनेवाले (हनुमान) की; निमिर्च्चि नोक्का–ऊपर की स्थिति देखकर; तवळ् चेवटि–घुटनों चलनेवाले लाल (मृदु) चरण; पार् मेल् पाय्–भूमि पर दौड़कर; नटवा पतत्तु–जब चले नहीं उस पर्व में; ॲन् तेर् मेल्–मेरे रथ पर; कुति कॊण्टवन्–उछलकर कूदा था; इ तिऱम्–यह इस तरह; आर् मेल् चिन्तै चॅय्तान् कॊल्–किस पर (झपटने का) संकल्प करता है; ॲन्ऱु–ऐसा; अरुक्कनुम् ऍण्णि–सूर्य ने भी सोचकर; एयम् उऱ्ऱान्–संशय किया। ६४

जलधि के ऊपर चलनेवाले हनुमान का वेग और उत्थान देखा अर्क ने। वह सोचने लगा कि यह वही है जो उस शैशव में, जबकि उसके मृदुल चरण भूमि पर नहीं चलने लगे थे, उछलकर मेरे रथ पर कूदा था। सूर्य

के मन में प्रश्न उठा कि यह अब किस पर कूदने का संकल्प लिये जाता है ? । ६४

वाळॊत्तॊळिर् वालॆयि ऱ्ऴिऩ् मरुङ्गि मैप्प
नीळॊत्तुयर् तोळिऩ् विशुम्बु निरैन्द मॆय्यिल्
कोळॊत्तवन् मेनि विशुम्बिरु कूरु शॆय्युम्
नाळॊत्तदु मेलॊळि कीऴिरु ळुऱ्ऱ ञालम् 65

वाळ् ऒत्तु–तलवार के समान; ऒळिर् वाल् ऎयिऱु–चमकनेवाले बड़े दाँत; मरुङ्कु–(दोनों) बाजुओं में; ऊऴिऩ्–क्रम से; इमैप्प–प्रकाश छिटकाते हैं; नीळ् ऒत्तु–लम्बाई में सम; उयर् तोळिऩ्–उन्नत कन्धों के साथ; कोळ् ऒत्तवऩ्–(राहु या केतु के) ग्रह के समान; मेति–(हनुमान का) शरीर; विचुम्पु निऱैन्त–जो आकाश भर में व्यापा; मॆय्यिल्–उस प्रकार में; विचुम्पु–आकाश को; इरु कूऱु चॆय्युम्–दो भागों में विभक्त जिस दिन किया गया; नाळ् ऒत्ततु–उस दिन के समान लगा; मेल् ञालम्–उसके ऊपर के लोकों को; ऒळि–प्रकाश; कीऴ् ञालम्–नीचे के लोकों को; इरुळ्–अन्धकार; उऱ्ऱ–प्राप्त हो गया। ६५

हनुमान के दाँत तलवार के समान थे। और वे दोनों बाजुओं में चमक रहे थे। उसकी भुजाएँ परस्पर सम थीं और उसके कन्धे ऊपर उठे हुए थे। उसका शरीर (राहु या केतु के) ग्रह के समान था। ऐसा वह आकाश भर में छा गया था। इसलिए आकाश को दो भागों में विभक्त करनेवाले काल के समान लगा। उसके ऊपर के लोक प्रकाश से भरे और नीचे के लोक अन्धकार से भर गये। ६५

मूऩ्ऱुऱ्ऱ तलत्तिडै मुऱ्ऱिय तुऩ्बम् वीप्पाऩ्
एऩ्ऱुऱ्ऱु वन्दाऩ् वलिमॆय्म्मै युणर्त्तु नीयॆऩ्
ऱाऩ्ऱुऱ्ऱ वानोर् कुऱैनेर वरक्कि याहित्
तोऩ्ऱुऱ्ऱु निऩ्ऱाळ् शुरशैप्पॆयर्च् चिन्दै तूयाळ् 66

आऩ्ऱु–भीड़ लगाये; उऱ्ऱ–आगत; वाऩोर्–देवों ने; मूऩ्ऱु उऱ्ऱ तलत्तिटै–तीनों (स्वर्ग, मध्य, पाताल) तलों में; मुऱ्ऱिय तुऩ्पम्–प्रवृद्ध दुःख को; वीप्पाऩ्–नाश करने के लिए; एऩ्ऱुऱ्ऱु–दायित्व लेकर; वन्ताऩ्–जो आया है; वलि मॆय्म्मै–उसके बल की स्थिति को; नी उणर्त्तु–तुम बताओ; ऎऩ्ऱु–ऐसा; कुऱै नेर–प्रार्थना की तब; चुरचै पॆयर्–सुरसा नाम की; चिन्तै तूयाळ्–पवित्रमना; अरक्कि आकि–राक्षसी बनकर; तोऩ्ऱुऱ्ऱु–प्रकट होकर; निऩ्ऱाळ्–खड़ी रही। ६६

तब देव उधर एकत्र हो आये। उन्होंने सुरसा से कहा कि यह हनुमान तीनों लोकों की ग्लानि दूर करने का दायित्व अपनाकर आया है। उसकी सच्ची शक्ति की परीक्षा लो और हमको बताओ। इस पर सुरसा नाम की नेक मन वाली देवी एक राक्षसी का रूप धरकर मारुति के सामने आकर प्रकट हुई। (सुरसा को वाल्मीकि नागमाता कहते हैं।) । ६६

पेऴ्वायो ररक्कि युरुक्कोडु पॅट्पि नोङ्गिक्
कोळ्वायरि यिऩ्गुलत् तायहोडुङ् गूऱ्ऱु मुट्क
वाऴ्वायॅऩक् कामिड मायवरु वायहो लॅऩ्ना
नीळ्वाय्विशुम् बिड्रत्त दुच्चि नॅरुक्कि नित्ऱाळ् 67

पेऴ् वाय्–वड़े मुख की; ओर् अरक्कि उरु–एक राक्षसी का रूप; कोंटु–लेकर; पॅट्पित् ओङ्कि–शान के साथ ऊँचा उठकर; कोळ् वाय्–पराक्रमी; अरियित् कुलत्ताय्–वानरकुलज; कोंटुम् कूऱ्ऱुम्–क्रूर यम को भी; उट्क वाऴ्–भयभीत करते हुए रहनेवाले; वाय् ऍनक्कु–मुख वाली मुझे; आमिटमाय्–आमिष भोजन वनकर; वरुवाय् कोल्–आये क्या; ऍऩ्ऩा–ऐसा कहती हुई; तत्तु उच्चिवाय्–अपने सिर से; नीळ् विचुम्पित् मॅरुक्कि–विशाल आकाश को दवाते हुए; नित्ऱाळ्–खड़ी रही। ६७

बहुत ही बड़े मुख के साथ राक्षसी का रूप लेकर वह शान से खड़ी हुई और हनुमान से बोली। हे बलवान वानरकुलोद्भव! आओ! यम को भी भयभीत करनेवाले मेरे मुख का आमिष बनकर आये हो? —यह कहकर अपने सिर को आकाश से लगाती हुई स्थित हो गयी। ६७

तीयेयॅऩ लाय पशिप्पिणि तीर्त्तल् शॅय्वान्
आयेविरै वुड्रॅनै यण्मित्तै वण्मै याळ
नीयेयिन्ति वन्दु निणङ्गोळ् पिणङ्गॅ यिड्रित्
वायेपुहु वाय्वऴि मड्रिलै वानि नॅन्ड्राळ् 68

वण्मैयाळ–दानशील; तीये ऍऩ्लाय–आग ही कहो, ऐसी; पचिप्पिणि–भूख के रोग को; तीर्त्तल् चॅय्वान् आये–दूर करनेवाले ही बनकर; विरैवुड्रु–शीघ्रता अपनाकर; ऍन्तै–मेरे; अण्मित्तै–पास आये; इन्ति–आगे भी; नीये–तुम ही; वन्तु–आकर; निणम् कोळ्–मांसयुक्त; पिणङ्कु ऍयिड्रित्–वेढंगे रूप से रहनेवाली दन्त-पंक्तियों के; वाये–मुख में ही; पुकुवाय्–घुस जाओ; वानित्–आकाश में; मड्र वऴि–दूसरा मार्ग; इलै ऍन्ड्राळ्–नहीं है कहा। ६८

बड़े उपकारी दाता! आग ही कहने योग्य है मेरी बुभुक्षा! उस रोग को शान्त करने के निमित्त तुम त्वरा के साथ मेरे पास आये हो! और भी आप ही आप इस मुख में आ जाओ, जिसके दाँत पंक्तियों में नहीं हैं और जिसके दाँतों के बीच मांस फँसा हुआ है! आकाश में और कोई रास्ता नहीं, जिससे तुम बच निकलो। ६८

पॅण्बालीरु नीपशिप् पीळै यॊरुक्क नीन्दाय्
उण्बायॅन दाक्कैयै यानुद वड्कु नेर्वल्
विण्बालवर् नायह नेव लिळैत्तु मीण्डाल्
नण्बालॅनच् चॊल्लिन नल्लड़ि वाळ नक्काळ् 69

नल् अऱिवाळऩ्–सद्बुद्धि के स्वामी (ने); नी ऑरु पॅण्पाल्–तुम स्त्री-जाति हो; पचि पीळै–भूख का कष्ट; ऑरुक्क–सताने से; नॊन्ताय्–पीड़ित हो; विण्पालवर्–स्वर्गवासियों के; नायकऩ्–नायक श्रीराम की; एवल्–आज्ञा; इळैत्तु–पूरा करके; मीण्टाल्–लौट आऊँ तो; ऍन्तु आक्कैयै–अपने शरीर को; यान्–मैं; उण्पाय् ऍन्–खाओ कहकर; नण्पाल्–मित्रता के साथ; उतवऱ्कु नेर्वल्–देने को सम्मत हो जाऊँगा; ऍन्त चॊल्लिनऩ्–ऐसा कहा हनुमान ने; नक्काळ्–सुरसा हँसी। ६९

अच्छे बुद्धिमान हनुमान ने इसके उत्तर में कहा कि तुम स्त्री-जाति हो ! बेचारी तुम्हें भूख का दुःख सता रहा है और तुम पीड़ित हो रही हो। देवों के नायक श्रीराम की आज्ञा पूरा करके लौट आऊँ तब मैं अपने शरीर को स्नेह के साथ तुम्हें खाने के लिए सौंप दूँगा। यह सुनकर सुरसा हँसी। ('हनुमान यह कहकर हँसा' का भी पाठ है।)। ६९

काय्न्देळुल हङ्गळुङ् गाणनिऩ् याक्कै तऩ्ऩै
आर्न्देपशि तीर्वॅऩ् दाणैयॆऩ् ऱन्नळ् शॊऩ्ऩाळ्
ओर्न्दानुमु वन्दीरु वेनिऩ ढूळिल् पेळ्वाय्च्
चेर्न्देहु हिऩ्ऱे नॆऩैयामॆनिऱ् ऱिऩ्ऱि डॆन्ऱान् 70

अऩ्ऩाळ्–उसने; एळुलकङ्कळुम् काण–सातों लोकों के देखते; काय्न्तु–कोप दिखाकर; निऩ् याक्कै तऩ्ऩै–तुम्हारे शरीर को; आर्न्ते पचि तीर्वॆऩ्–खाकर ही भूख मिटाऊँगी; इतु आणै–यह निश्चित है; ऍऩ्ऱु चॊऩ्ऩाळ्–ऐसा कहा; ओर्न्तातुम्–उसका आशय जिसने ताड़ लिया, उसने भी; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; ऑरुवेऩ्–बचकर नहीं जाऊँगा; निऩतु–तुम्हारे; ऊळिल्–बेढंगे; पेळ् वाय्–बड़े मुख में; चेर्न्तु एकुकिऩ्ऱेऩ्–घुसकर जाऊँगा; आम् ऍऩिल्–हो सका तो; ऍऩ्ऩै तिऩ्ऱिटु–मुझे खा लो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ७०

सुरसा ने कहा कि मैं तुम्हारे शरीर को सातों लोकों के देखते कोप के साथ खाकर ही अपनी भूख मिटाऊँगी। यह निश्चित है। हनुमान ने उसका मन ताड़ लिया। उत्साह के साथ कहा कि ठीक है। मैं हटकर नहीं चलूँगा। तुम्हारे बेढंगे और बड़े मुख से होकर ही जाऊँगा। हो सके तो मुझे खा लो। ७०

अक्कालै यरक्कियु मण्ड मऩ्ऩन्द माहप्
पुक्कानिरै याद पुळैप्पॆरु वाय्ति ऱन्दु
विक्कादुवि ळुङ्गनिऩ् ऱाळदु नोक्कि वीरन्
तिक्कानॆऱि वाय्शिऱि दाम्वहै शेणि नीण्डान् 71

अक्कालै–उस समय; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; अण्टम् अऩ्ऩतमाक पुक्काल्–अनन्त अण्ड भी घुसें तो; निऱैयात पुळै–न भरनेवाले द्वार के; पॆरुवाय् तिऱन्तु–बड़े मुख को खोलकर; विक्कातु–विना हिचकी लिये ही; विळुङ्क–निगलने के लिए; निऩ्ऱाळ्–खड़ी रही; वीरऩ्–महावीर ने; अतु नोक्कि–वह देखकर; तिक्काम्

नॆरि–दिगन्त तक व्याप्त; वाय्–उसके मुख को; चिऱितु आम् वकै–छोटा (अपर्याप्त) बनाते हुए; चेणित्–आकाश में; नीण्टान्–बड़ा रूप लिया। ७१

तब सुरसा ने अपना मुख इतना बढ़ाया कि अगणित अण्ड घुसें तो भी वह पूर्ण न हो। विना हिचकी के ही हनुमान को निगल लेने के लिए वह सन्नद्ध खड़ी रही। वीर ने देखा और दिगंतों में फैले हुए उसके मुख-विवर को छोटा बनाते हुए (यानी उससे बढ़कर) वह आकाश में प्रवृद्ध हुआ। ७१

नीण्डा नुडने शुरुङ्गानिमिर् वायि डत्तित्
ऊण्डा नॆनवुऱ् ऱॊरुयिर्प्पुयि राद मुन्नम्
मीण्डा नदुकण् डनर्विण्णुऱै वोर्ह ळॆम्मै
आण्डा निवनॆन् ऱलर्तूय्नॆडि दाशि शॊन्नार् 72

नीण्टान्–जो बड़ा हुआ; उटते चुरुङ्का–तुरन्त छोटा बना; निमिर् वायिटत्तित्–बढ़े हुए सुरसा के मुखविवर में; ऊण् तान् ॲॆन्न–ग्रास के समान; उऱ्ऱु–प्रविष्ट होकर; ओरु उयिर्प्पु–एक श्वास के; उयिराल मुन्नम्–निकलने से पहले ही; मीण्टान्–बाहर आ गया; विण् उऱैवोर्कळ्–आकाशवासी देवों ने; अतु कण्टनर्–उसको देखकर; इवन् ॲॆम्मै आण्टान्–इसने हमको पालित कर लिया; ॲॆन्ऱु–कहकर; अलर् तूय्–पुष्प बरसाकर; नॆटितु–पुष्कल; आचि चॊन्नार्–आशीर्वाद दिये। ७२

ऐसा बड़ा रूप लेकर हनुमान झट छोटा बन गया और सुरसा के बहुत बड़े मुख में उसके ग्रास के रूप में घुसा और साँस भरने से पहले ही बाहर आ गया। देवों ने यह अद्भुत कार्य देखा और कहा कि इसने हमें पालित कर लिया। उन्होंने उस पर फूल बरसाये और आशीर्वाद के वचन कहे। ७२

मॆन्मेऱ् पडर्मॆय् यिनतान्नवळ् वीक्क नीङ्गित्
तन्मे नियळा यवळ्तायिनु मन्बु ताळ
ॲॆन्मेन् मुडिया दनवॆन्ऱिन्नि देत्ति निन्ऱाळ्
पॊन्मे नियनु मिन्निदाशि पुनैन्दु पोनान् 73

मॆन् मेल् पटर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; मॆय्यिन्नतु–शरीर वाली; आतवळ्–जो बनी थी, वह; वीक्कम् नीङ्कि–सूजन छोड़कर; अवळ् तन् मेनियळाय्–अपना निजी रूप लेकर; तायिनुम् अन्पु ताळ–माता से भी अधिक वात्सल्य के साथ; मेल् मुटियातन–आगे तुमसे जो न हो सके ऐसा; ॲॆन्–क्या है; ॲॆन्ऱु–कहकर; इनितु एत्ति–सुखद रूप से प्रशंसा करती; निन्ऱाळ्–खड़ी रही; पॊन् मेनियनुम्–स्वर्णवर्ण हनुमान भी; इनितु–सुखद; आचि पुनैन्तु–आशीर्वचन कहकर; पोनान्–चला। ७३

सुरसा का शरीर उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। अब वह मोटापा कम करके यथावत बनी। माता से भी अधिक स्नेह के साथ उसने हनुमान को

साधुवाद दिया कि आगे तुमसे जो न हो सकेंगे, ऐसे कौन कार्य हैं ? उसने हनुमान को मुदित करते हुए उसकी संस्तुति की। स्वर्णवर्ण हनुमान भी उसको आशीर्वाद देकर (या उसके आशीर्वाद लेकर) आगे चला। ७३

कीदङ्ग ळिशैत्तनर् किन्नरर् कीद नित्त्र
पेदङ्ग ळियम्बिनर् पेदैय राडन् मिक्क
पूदङ्ग डोडर्न्दु पुकळ्न्दन पूशु रेशर्
वेदङ्ग ळियम्बिनर् -तॆन्ऱल् विरुन्दु शॆय्य 74

तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन के; विरुन्तु चॆय्य–दावत (आनन्द) देते; किन्नरर्–किन्नर लोगों ने; कीतङ्कळ् इचैत्तनर्–गीत गाये; पेतैयर्–स्त्रियों ने; कीतम् नित्त्र पेतङ्कळ्–गीतों के भेद; इयम्पिनर्–गाये; आटल् मिक्क पूतङ्कळ्–नर्तनशील भूत; तॊटर्न्तु–लगातार; पुकळ्न्तन–स्तुति करते रहे; पूचुरेचर्–भूसुरेशों ने (ब्राह्मण-श्रेष्ठों ने); वेतङ्कळ्–वेदमन्त्र; इयम्पिनर्–उच्चारे (मन्त्र-आशीर्वाद कहे)। ७४

मलयपवन ने हनुमान को आनन्दित किया। किन्नर गाये। स्त्रियों ने भेद-प्रभेद के साथ गीत गाये। नर्तनसमर्थ भूतों ने उनके अनुरूप प्रशंसा के वचन उच्चारे। भूसुरों ने वेदमन्त्र उच्चारण कर आशीर्वाद दिया। ७४

मन्दार मुन्दु महरन्द मणन्द वाडै
शॆन्दा मरैवाण् मुहत्तुच् चॆऱिवेर् शिदैक्कत्
तन्दा मुलहत् तिडैविज्जैयर् पाणि ताळाक्
कन्दार वीणैक्कळि शॆञ्जॆविक् कादु नुङ्ग 75

मन्तारम् उन्तु–मन्दार-निःसृत; मकरन्तम् मणन्त–मकरन्द-सुगन्धित; वाटै–उदीची हवा ने; चॆन्तामरै–लाल कमल-सम; वाळ् मुकत्तु–(हनुमान के) उज्ज्वल मुख पर; चॆऱि–बहुत रहनेवाले; वेर् चितैक्क–स्वेदकणों को दूर किया; विज्चैयर्–विद्याधरों के; तम् ताम् उलकत्तिटै–अपने-अपने लोक में रहकर; पाणि ताळा–तालबद्ध; कन्तारम्–गान्धारस्वरकारी; वीणैक् कळि–वीणा का मधु (आनन्द); चॆम् चॆवि कातु–हनुमान के श्रेष्ठ श्रवणेन्द्रियों ने; नुङ्क–सुना (सुनते हुए हनुमान गया)। ७५

मन्दार-सुगन्ध-वाही पराग से युक्त पवन ने (हनुमान के) अरुणकमल-सम और उज्ज्वल मुख में रहे स्वेदकणों को सुखाया। विद्याधर लोग अपने-अपने लोक में स्थित होकर ताल-बद्ध गांधार राग में वीणा के सहारे गा रहे थे। हनुमान अपने कानों में उस मधुर-गीत मधु का ग्रहण करता हुआ चला। ७५

वॆङ्गार् निऱप्पुणरि वेऱ्ऱेयु मीत्तुऱप्
पॊङ्गार् कलिप्पुन्न ऱरप्पॊलिव देपोल्

इङ्गार् कडत्तिरॅन्नै यॅन्ऩा वॅळुन्दाळ्
अङ्गार तारॅपिऱि दालाल मन्ऩाळ् 76

पिऱितु–अन्य एक; आलालम् अन्ऩाळ्–हलाहल-समाना; अङ्कारतारै–अंगारतारा नाम की राक्षसी; ॲन्नै–मुझे; इङ्कु कटत्तिर्–उपेक्षित करके जानेवाले; आर्–कौन हो; ॲन्ऩा–कहती हुई; अ पॉङ्कु आर्कलि पुनल्–उस उमंगभरे समुद्र के जल के; वेऱॆयुम् ऑन्ऱु–दूसरे ही एक; कार् निऱ–काले रंग के; पुणरि–समुद्र को; तर–पैदा करने से; पॉलिवते पोल्–विद्यमान उसके समान; ॲळुन्ताळ्–(उस समुद्र में से) उठ आयी। ७६

तब हलाहल-समाना अंगारतारा नाम की राक्षसी बाधा बनकर आयी। यहाँ कौन है मुझे पार कर जानेवाला ? वह समुद्र के ऊपर ऐसे उठ आयी मानो उमड़ते हुए उस समुद्र ने एक और काले समुद्र को पैदा कर दिया हो। (इसका नाम मूल में सिंहिका है।)। ७६

कादक् कडुङ्गुऱि कणक्किरुदि कण्णाळ्
पादच् चिलम्बिनॊलि वेलैयॊलि पम्ब
वेदक् कॊळुञ्जुडरै नाडिनॆऱि मेन्ऩाळ्
ओदत्ति नोडुमदु कैडवरै यॊत्ताळ् 77

कात कणक्कु–दस मील के हिसाब की; इऱुति–दूरी के अन्त तक; कटुम् कुऱि कण्णाळ्–वेग से देखनेवाली आँखों-सहित वह; पात चिलम्पिन् ऑलि–पायलों की ध्वनि के; वेलै ऑलि–समुद्र-स्वर के समान; पम्प–स्वरित होते; मेल् नाळ्–प्राचीन दिनों में; वेत कॊळुम् चुटरै–वेदान्त-विषय श्रीविष्णु को उद्देश्य करके; नॆऱि नाटि–मार्ग अन्वेषण करते हुए; ओतत्तिन् ओटु–समुद्र में जो दौड़े; मतु कैटवरै–उन मधु-कैटभों के; ऑत्ताळ्–समान थी। ७७

उसकी दृष्टि इतनी तीव्र थी कि वह एक 'काद' (दस मील) की दूरी तक की वस्तुओं को पहचान सके। उसकी पायल की ध्वनि समुद्र-गर्जन के समान उठ रही थी। वह उन मधु-कैटभों के समान थी, जो प्राचीन समय में वेदान्त के विषय श्रीविष्णु की खोज में समुद्र-मार्ग में दौड़े आये थे। ७७

तुण्डप् पिऱैत्तुणै यॅन्ऩच्चुड रॅयिऱ्ऱाळ्
कण्डत् तिडैक्करै युडैक्कडवुळ् कैम्मा
मुण्डत् तुरित्तवुरि यान्मुळरि वन्दान्
अण्डत् तिनुक्कुरै यमैत्तनैय वायाळ् 78

पिऱै तुणै तुण्टम् ॲन्ऩ–चन्द्र के दो खण्डों के समान; चुटर्–प्रकाश छिटकानेवाले; ॲयिऱ्ऱाळ्–वक्र दाँतों से युक्त थी; कण्टत्तु इटै–कण्ठ में; करै उटै–(विष) कलंकसहित; कटवुळ्–देव शिवजी; कैम्मा मुण्टत्तु–शुंडी के शरीर से; उरित्त

उरियाल्–उधेड़ी गयी खाल से; मुळरि वन्तान्–कमलभव ब्रह्माजी द्वारा सृष्ट; अण्टत्तिनुक्कु–अण्ड के लिए; उऱ्ऱै अमैत्तत्तैय–एक आवरण बनाया गया हो ऐसे; वायाळ्–मुखविवर वाली। ७८

उसके दो खड्गदाँत थे, जो चन्द्र के दो खण्डों के समान थे। उसका मुख बहुत बड़ा था और वह भूमि पर आच्छादित उस गज-चर्म के समान था जिसको नीलकण्ठ शिव ने गज से उधेड़कर भूमि को ढँक दिया हो। ७८

निन्ऱा णिमिर्न्दलै नडुङ्गडलि नीर्दन्
वन्ऱा ळलम्बमुडि वान्मुहडु वौव
अन्ऱाय् तिऱत्तव नऱत्तै यरुळोडुम्
तिन्ऱा ळॊरुत्तियिव ळॆन्बदु तॆरिन्दान् 79

नॆट्टुम् अलै–लम्बी लहरों के; कटलिन् नीर्–समुद्र का जल; तन् वन् ताळ् अलम्प–उसके कठोर पैरों को धो रहा था; मुटि–सिर; वान् मुकटु–आकाश की चोटी से; वौव–टकरा गया; निमिर्न्तु निन्ऱाळ्–ऊँची होकर खड़ी रही; आय् तिऱत्तवन्–विवेकपूर्ण हनुमान; अन्ऱु–तब; इवळ्–यह; अऱत्तै–धर्म को; अरुळोटुम्–दया के साथ; तिन्ऱाळ् ऑरुत्ति–भक्षण कर लिया (जिसने) ऐसी एक है; ऎन्पतु–यह बात; तॆरिन्तान्–ताड़ ली। ७९

बहुत बड़ी तरंगों वाला समुद्र उसके सबल पैरों को धो रहा था। उसका सिर आकाश की चोटी को छू रहा था। इस तरह आकर जो खड़ी हुई उसको बुद्धिमान हनुमान ने देखा तो समझ लिया कि यह धर्म-दया की भक्षिका है! । ७९

पेळ्वा यहत्तलदु पेरुलह मूडुम्
नीळ्वा नहत्तिनिडै येहुनॆऱि नेरा
आळ्वा नणुक्कनव ळाळ्पिल वयिऱ्ऱैप्
पोळ्वा निनैत्तिनैय वाय्मॊऴि पुहन्ऱान् 80

आळ्वान्–स्वामी श्रीराम के; अणुक्कन्–अन्तरंग सेवक ने; पेर् उलकम् मूटुम्–विशाल विश्व के आच्छादक; नीळ् वानकत्तिन् इटै–विस्तृत आकाश में; पेळ् वाय् अकत्तु अलतु–इसके बड़े मुखविवर से होकर नहीं तो; एकुम् नॆऱि–गम्य मार्ग; नेरा–न पाकर; अवळ् आळ् पिल वयिऱ्ऱै–उसके गहरे बिल के समान पेट को; पोळ्वान् निनैत्तु–चीरने का विचार करके; इन्नैय वाय्मॊऴि–ये वचन; पुकन्ऱान्–कहे। ८०

स्वामी श्रीराम के अन्तरंग सेवक हनुमान ने यह भी जान लिया कि विशाल विश्व के आच्छादक आकाश में आगे जाने का अंगारतारा के मुख-विवर के अलावा कोई मार्ग नहीं है। उसने निश्चय कर लिया कि उसके

बिल-सम गह्रे पेट को चीरकर जाना पड़ेगा। उसने अंगारतारा से यों कहा। ८०

शाया वरन्दळुवि त्रायतळिय पित्रनुम्
ओया वुयरन्दविशै कण्डुमुणर् किल्लाय्
वाया लळनदुनॅडु वात्रवळि यडॅत्ताय्
नीयारॅ यॅन्नॅयिव णित्रनिलै यॅन्राऩ् 81

चाया वरम् तळुवित्ताय्–छाया (द्वारा) ग्रहण-शक्ति के वर से तुमने मुझे खींच लिया; तळिय पित्रुनुम्–खींचने के बाद भी; ओया उयरन्त–जो थमता नहीं पर बढ़ता है, वह; विचै कण्टुम्–वेग देखकर भी; उणर्किल्लाय्–नहीं समझीं (मेरी शक्ति); नॅटु वात्र–बड़े आकाश में; वायाल् अळन्तु–मुख फैलाकर; वळि अटॅत्ताय्–मार्ग अवरोध किया; नी यारॅ–तुम कौन हो; इवण् नित्र निलै–इधर खड़े होने का कारण; ॲन्तॅ–क्या है; ॲन्राऩ्–पूछा (हनुमान ने)। ८१

तुम्हें किसी की छाया पकड़कर उसे खींच लेने का वर प्राप्त है। उसके बल से तुमने मुझे खींच लिया। तब भी मेरा वेग कम न हुआ। उसको देखकर भी तुम मेरा बल सोच नहीं सकी। लम्बे आकाश को अपने मुख से व्याप्त कर मार्ग रोक दिया। कौन हो तुम? यहाँ खड़े होने का कारण क्या है? हनुमान ने यह प्रश्न किया। ८१

पॅण्बा लॅन्नक्करुदु पॅऱ्ऱियॊळि युऱ्ऱाल्
विण्बा लवरक्कुमुयिर् वीडुवदु मॅय्ये
कण्बा लडुक्कवुयर् कालनवरु मेनुम्
उण्बा लरुत्तियदॊ ळिप्परि दॅन्ऱाळ् 82

पॅण्पाल्–स्त्री-जात; ॲन्न करुतु पॅऱ्ऱि–ऐसा मानने का भाव; ऒळि–त्याग दो; उऱ्ऱाल्–मैं सामने आयी तो; विण्पाल् अवर्क्कुम्–व्योमलोकवासियों का भी; उयिर् विटुवतु–प्राण त्यागना; मॅय्ये–ध्रुव है; उयर् कालन्–बलवर्धित यम भी; कण् पाल् अटुक्क–मेरी आँख में पास; वरुमेनुम्–आया तो; उण्पाल् अरुत्तियतु–खाने की इच्छा; ऒळिप्पतु अरितु–निवारण करना कठिन है; ॲन्ऱाळ्–कहा। ८२

अंगारतारा ने उत्तर दिया कि तुम मुझे स्त्री समझने की बात छोड़ दो। मेरे साथ टकरायें तो देवगणों की जानें भी चली जायँगी, यह निश्चित है। बल में बढ़ा हुआ यम भी मेरी आँखों में पड़ जाय तो उसे खा लेने की मेरी इच्छा दुर्निवार है। ८२

तिऱन्दाळ् वयिऱ्ऱित्रवळि यण्णलिडै शॅन्राऩ्
अऱन्दा नरऱ्ऱिय दयर्त्तमर रॅय्त्तार्
इऱन्दा नॅनक्कॊडा रिमैप्पदनित्र मुन्नम्
पिऱन्दा नॅन्नप्पॅरिय कोळरि पॅयरन्दाऩ् 83

तिऱन्ताळ्–(उसने अपना मुख) खोला; अण्णल्–महिमावान; इटै वऴि–उससे होकर; वयिऱ्ऱिऩ् चॆऩ्ऱाऩ्–पेट में गया; अऱम्–धर्मदेवता; अयर्त्तु–थकित होकर; अरऱ्ऱियतु–रोया; इऱन्ताऩ् ॲॆऩ्त कॊटु–मर गया समझ लेकर; अमरर् ॲॆय्त्तार्–देवगण व्याकुल हुए; इमैप्पततिऩ् मुऩ्ऩम्–पलक मारने के अन्दर; पिऱन्ताऩ् ॲॆऩ–जन्म लिये, ऐसा कहने योग्य रीति से; पॆरिय कोळरि–महान् सिंह; पॆयर्न्ताऩ्–बाहर आया। ८३

यह कहकर अंगारतारा ने अपना मुख खोला। महिमावान हनुमान उस मुख में घुसकर उसके पेट में चला गया। तब धर्मदेवता स्वयं डरकर श्रान्त हुआ और रोने लगा। देव लोग यह सोचकर थकित हुए कि हनुमान मर गया है। पर पलक मारने के अन्दर बली सिंह, हनुमान मानो दूसरा जन्म लिया हो ऐसा, बाहर आ गया। ८३

कळ्वा यरक्किकद ऱक्कुडर् कणत्तिल्
कॊळ्वार् तडक्कैयऩ् विशुम्बिऩ्मिशै कॊण्डाऩ्
मुळ्वाय् पॊरुप्पिऩ्मुळै यॆय्दिमिह नॊय्दिऩ्
उळ्वा ळरक्कॊडॆ्ळु तिण्कलुळ नॊत्ताऩ् 84

कळ् वाय् अरक्कि–ताड़ी पीनेवाले मुख की वह राक्षसी; कतऱ–चिल्लायी; वार् कुटर्–लम्बी आँतों को; कॊळ् तटक्कैयऩ्–जिनमें ले लिया था, ऐसे विशाल हाथों वाला; कणत्तिल्–एक पल में; विचुम्पिऩ् मिचै कॊण्टाऩ्–आकाश पर चला गया; मुळ् वाय्–काँटों-सहित; पॊरुप्पिऩ् मुऴै–पर्वत-कन्दरा में; ॲॆय्ति–घुसकर; मिक नॊय्तिऩ्–बहुत सुगम रीति से; उळ् वाऴ्–(कन्दरा के) अन्दर रहनेवाले; अरकॊटु ॲॆऴु–साँपों के साथ उठनेवाले; तिण्–बलवान; कलुऴऩ् ऒत्ताऩ्–गरुड़ के समान लगा। ८४

सुरापायी मुख वाली अंगारतारा को चिल्लाने देते हुए हनुमान उसकी आँतों को पकड़ लेकर आकाश में उठा। एक ही पल में इस तरह उठते हुए उसे देखकर बलवान गरुड़ का स्मरण आया, जो कंटकाकीर्ण कन्दरा में घुसकर बहुत ही सुगमता से कन्दरा के अन्दर रहे साँपों को पकड़कर ऊपर उठ आ रहा हो। ८४

शाहा वरत्तलैव रिऱ्ऱिलह मऩ्ऩाऩ्
एहा वरक्किकुडर् कॊण्डुड ऩॆऴुन्दाऩ्
माहाल् विशैक्कवड मण्णिलुऱ वालो
डाहाय मुऱ्ऱकद लिक्कुवमै याऩाऩ् 85

चाका वर तलैवरिल्–चिरंजीवी वर-प्राप्त लोगों में; तिलकम् अऩ्ऩाऩ्–तिलक-सम हनुमान; एका–(राक्षसी के पेट में) जाकर; अरक्कि कुटर्–राक्षसी की आँतें; उटऩ् कॊण्टु–साथ लेकर; ॲॆऴुन्ताऩ्–(जो) उठ आया; माकाल् विचैक्क–बड़े पवन के चलने से; वटम् मण्णिल् उऱ–डोरी को भूमि पर छोड़कर; वालोटु आकायम्

83

उड़्ड़्–दुम के साथ आकाश में गये; कतलिक्कु–पतंग का; उवमै आत्तान्–उपमान बना। ८५

चिरंजीवी महानों में तिलक-सम हनुमान, जो उसके पेट में घुसकर आँतें लेकर ऊपर उड़ रहा था, उस पतंग के समान लगा जो वेगवान पवन से चालित हो, जिसका डोरा नीचे भूमि पर पड़ा हो और जो पूँछ के साथ आकाश में उड़ रहा हो। ८५

आर्त्तनर्हळ् वानवर्ह डानव रळुङ्गा
वेर्त्तनर् विरिञ्जनुम् वियन्दुमलर् वॅळ्ळम्
तूर्त्तन नहन्कयिलै यिड़्ड़ॉलै विलोनुम्
पार्त्तनन् मुनित्तलैव राशिहळ् पहर्न्दार् 86

वानवर्कळ् आर्त्तनर्कळ्–व्योमवासियों ने आनन्दघोष किये; तानवर्–दानव; अळुङ्का–दुःखी हुए; वेर्त्तनर्–पसीने से युक्त हो गये; विरिञ्चनुम्–ब्रह्मा ने भी; वियन्तु–विस्मित होकर; मलर् वॅळ्ळम्–पुष्पवर्षा; तूर्त्तनन्–(बरसाकर समुद्र को) पाट दिया; अकन् कयिलैयिल्–विशाल कैलास पर्वत पर (से); तॉलैविलोनुम्–अक्षर पुरुष (श्रीशिव) ने; पार्त्तनन्–भी देखा; मुनि तलैवर्कळ्–ऋषिश्रेष्ठों ने; आचिकळ् पकर्न्तार्–आशीर्वाद दिया। ८६

देवों ने आनन्दनाद उठाया। दानव व्याकुल हुए और उनके शरीर पसीने से भर गये। विरंचि ने भी विस्मित होकर इतने सुमन बरसाये कि समुद्र ही पट गया। विशाल कैलासपर्वतवासी अमर श्रीशिवजी ने भी देखकर आनन्द का अनुभव किया। मुनिवरों ने आशीर्वचन कहे। ८६

माण्डा ळरक्कियवळ् वाय्वयिऱु काऱुम्
कीण्डा निमैप्पिडैयिन् मेरुकिरि कीळाय्
नीण्डान् वयक्कदि निनैप्पिनॅडि दॅन्नप्
पूण्डा नरुक्कनुयर् वानिन्वऴि पोनान् 87

अरक्कि माण्टाळ्–(अंगारतारा) राक्षसी मर गयी; अवळ् वाय्–उसके मुख को; वयिऱु काऱुम्–उदर तक; कीण्टान्–चीर दिया; इमैप्पिटैयिन्–पलक मारने के समय के अन्दर; मेरु किरि–मेरुपर्वत को; कीळाय्–नीचा बनाकर; नीण्टान्–विशाल रूप धर लिया; निनैप्पिन्–मन (की गति) से भी; नॅटितु–बड़ी है; ऍन्न–ऐसी; वयक्कति–गमन-गति; पूण्टान्–अपना ली; अरुक्कन् उयर्–सूर्य के ऊँचे; वानिन् वऴि–आकाश-मार्ग में; पोनान्–गया। ८७

राक्षसी अंगारतारा मर गयी। हनुमान ने उसका मुख पेट तक चीर लिया। फिर एक ही पल में अपना शरीर इतना बढ़ा लिया कि मेरु भी उसके सामने छोटा लगा। मनोवेग से भी अधिक वेग बनाकर वह सूर्य के आकाश के मार्ग में चला। ८७

चॉऱ्ऱाऱ्हळ् चॉऱ्ऱपहै पल्तॉहैय दऩ्ऱो
मुऱ्ऱा मुडिन्दनॅडु वाऩिनिडै मुन्नीर्
इऱ्ऱावि यॅऱ्ऱॅनिनुम् यानिनि यिलङ्गै
उऱ्ऱाल् विलङ्गुमिडै यूऱॅन वुणर्न्दान् 88

चॉऱ्ऱार्कळ्–जिन्होंने मुझसे कहा; चॉऱ्ऱ–उन्होंने जो कहा; पकै–बाधाएँ; पल् तॉकैयतु अन्ऱो–अनेक समूहों की है न; ॲऱ्ऱु ॲनिनुम्–जो भी हों; मुऱ्ऱा मुटिन्त–अनन्त बने; मुन्नीरिल्–समुद्र के ऊपर; नॅटु वानिन् इटै–लम्बे आकाश में; ताविं–लाँघ जाकर; यान् इलङ्कै उऱ्ऱाल्–मैं लंका जाऊँ तो; इनि–उस पर; इटैयूऱु–बाधाएँ; विलङ्कुम्–दूर होंगी; ॲन उणर्न्तान्–ऐसा समझा। ८८

हनुमान ने तब सोचा कि सुग्रीव आदि ने जो कहा वह ठीक ही है। बाधाओं के समूह बहुत होते है। चाहे जो हों इस अनन्त समुद्र को लाँघकर लंका में पहुँच जायँगे तभी बाधाएँ दूर होंगी। हनुमान ने यह समझा। ८८

ऊऱुकडि दूऱुवन वूऱिलऱ मुन्नात्
तेऱलि लरक्कर्पुरि तीमैयवै तीर
एऱुम्वहै यिङ्गुळदि रामवॅन वॅल्लाम्
माऱुमदिन् माऱुपिऱि दिल्लॅन वलित्तान् 89

ऊऱु–कष्ट; कटितु ऊऱुवन–शीघ्र हो जाते है; ऊऱु इल् अऱम्–अक्षय धर्म; उन्ना–न माननेवाले; तेऱल् इल्–विवेकहीन; अरक्कर्–राक्षस; पुरि–जो करते हैं; तीमै अवै तीर–उन हानियों को दूर करने के लिए; एऱुम् वकै–तरण के मार्ग; इङ्कु उळतु–यहाँ है; इराम ॲन–'राम' कहने पर; ॲल्लाम् माऱुम्–सब बदल जायेंगे; अतिन्–उससे बढ़कर; माऱु पिऱितु इल्–विकल्प अन्य नहीं; ॲन–ऐसा; वलित्तान्–निश्चय किया। ८९

कष्ट अकस्मात आ जाते हैं। अक्षय धर्ममार्ग न जाननेवाले और विवेकहीन राक्षसों द्वारा दिये जानेवाले संकटों का सागर तारकर उद्धार पाने का एक मार्ग यही है। वह है 'श्रीराम' नाम का जाप। उससे सभी बाधाएँ दूर हो जायँगी। इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं। हनुमान ने ऐसा निश्चय कर लिया। ८९

तशुम्बुडैक् कनह नाञ्जिऱ् कडिमदि ऱणित्तु नोक्का
अशुम्बुडैप् पिरशत् तॅय्वक् कऱ्पह नाट्टै यणमि
विशुम्बिडैच् चॅल्लुम् वीरन् विलङ्गिवे ऱिलङ्गै मूदूर्प्
पशुम्बुडैच् चोलैत् ताङ्गोऱ् पवळमाल् वरैयिऱ् पायन्दान् 90

अचुम्पु उटै–चिपचिपे; पिरचम्–शहद-भरे; कऱ्पक–कल्पतरुओं से पूर्ण; तॅय्व नाट्टै–देवलोक के; अणमि–पास जाकर; विचुम्पु इटै–व्योममार्ग में; चॅल्लुम्

वीरऩ्—जानेवाले वीर; तणित्तु—झुककर; तचुम्पु उटै—स्वर्णकलशों से युक्त; नाञ्चिल्—'नांजिल' नाम के अंगों के; कतक कटि मतिल्—स्वर्णनिर्मित रक्षा-प्राचीर को; नोक्का—देखा; वेऱु विलङ्कि—मार्ग बदलकर; इलङ्कै मूतूर् अङ्कु—लंका के प्राचीन नगर में एक ओर; पुटै पचुम् चोलैत्तु—पास में हरे बागों के साथ रहनेवाले; ओर् पवऴ माल् वरैयिल्—एक प्रवाल गिरि पर; पाय्न्ताऩ्—कूदा। ९०

हनुमान देवलोक के समीप से जा रहा था, जिसमें चिपचिपे शहद से युक्त कल्पतरु कसरत से पाये जाते है। उसने नीचे झुककर लंका के 'नांजिल' नाम के अंगों और स्वर्ण-कलशों से युक्त नगररक्षक प्राचीरों को देखा। फिर उसने अपना मार्ग बदल लिया। आगे जाकर वह एक प्रवालगिरि पर कूदा, जो प्राचीन लंका नगरी के एक भाग में था और जिस पर हरे-हरे बाग थे। ९०

मेक्कुऱच् चॅल्वोऩ् पाय वेलैमे लिलङ्गै वॅऱ्पु
नूक्कुऱत् तङ्गु मिङ्गुऩ् दऴ्ऴुऱत् तुळङ्गु नोऩ्मै
पोक्कुऱऱ् किडैयू ऱाहप् पुयलॊडु पॊदिऩ्द वाडै
ताक्कुऱत् तहर्ऩ्दु शायुङ् गलमॆऩ्ऩ वायिऱ् ऱऩ्ऱे 91

वेलै मेल्—समुद्र पर; मेक्कु उऱ चॅल्वोऩ्—ऊपर जो चलता रहा वह; पाय—नीचे जब कूदा; इलङ्कै वॅऱ्पु—लंका का (विद्रुम) पर्वत; नूक्कुऱत्तु—झुककर; अङ्कुम् इङ्कुम्—इधर-उधर; तऴ्ऴुऱ—हिला; तुळङ्कुम्—डुला; नोऩ्मै—वह प्रकार; पुयलॊटु पॊतिऩ्त वाटै—वर्षा-सह झंझा से; पोक्कुऱऱ्कु—गमन में; इटैयूऱु आक—बाधा पाकर; ताक्कु उऱ—झकझोरे जाने पर; तकर्न्तु—टूटकर; चायुम्—डूबनेवाले; कलम् ऎऩ्ऩ—पोत के समान; आयिऱ्ऱु—हो गया। ९१

ऊपर जो उड़ रहा था वह हनुमान ज्योंही उस गिरि पर वेग से कूदा तो वह एक ओर झुक गया। इधर-उधर उसके हिलने-डुलने के ढंग से वह उस पोत के समान लगा, जो मेघसहित झंझा द्वारा गमन में बाधा पाकर झकझोरे जाने से टूटकर समुद्र में डूब रहा हो। ९१

मण्णडि युऱ्ऱु मीदु वाऩुऱ वरम्बिऩ् ऱऩ्मै
ऍण्णडि यऱ्ऱ कुऩ्ऱि निलैत्तुनिऩ् ऱुऱ्ऱु नोक्कि
विण्णिडै युलह मॆऩ्ऩु मॆल्लियल् मेनि नोक्कक्
कण्णडि वैत्त दऩ्ऩ विलङ्गैयैत् तॆरियक् कण्डाऩ् 92

अटि मण् उऱ्ऱु—पैर भूमि में लगा रहा; मीतु—चोटी; वाऩ् उऱुम्—आकाश से लगा जो रहा; वरम्पिऩ् तऩ्मै—उसकी माप का हिसाब; ऍण् अटि उऱ्ऱ—न हो सका ऐसे; कुऩ्ऱिऩ्—पर्वत पर; निलैत्तु निऩ्ऱु—स्थिर खड़ा होकर; उऱ्ऱु नोक्कि—ध्यान से देखकर; विण्णिटै उलकम् ऍऩ्ऩुम्—व्योमलोक रूपी; मॆल्लियल्—कोमल स्त्री; मेति नोक्क—अपना शरीर (प्रतिबिम्ब) देखने के लिए; कण्णटि वैत्तत्तु—आईना रखा गया; अऩ्ऩ—जैसी; इलङ्कैयै—लंकापुरी को; तॆरिय कण्टाऩ्—सामने से देखा। ९२

उस पर्वत का पैर भूमि पर था और उसका सिर आकाश को छू रहा था। उसके आकार का नापना कठिन था। उस पर हनुमान स्थिर-रूप से खड़ा हुआ। उसने वहीं से लंका को देखा, जो स्वर्गलोक रूपी अंगना के अपने शरीर का सौन्दर्य देखने के वास्ते रखे हुए आईने के समान लगा। ९२

नन्नहर् तन्नै नोक्कि नळिनक्कै मरित्तु नाहर्
पॉन्नह रिदनै यॊक्कु मॆन्बदु पुल्लि दम्मा
अन्नह रिदनि नन्रे यण्डत्तै मुळ्दु माळवान्
इन्नह रिरुन्दु वाळ्वा निदुवदर् केदु वॆन्रान् 93

नल् नकर् तन्नै–श्रेष्ठ नगर को; नोक्कि–देखकर; नळिन कै मरित्तु–कमलहस्त हिलाकर; नाकर् पॉन्नकर्–देवों की स्वर्णपुरी (अमरावती); इतनै ऑक्कुम्–इसके समान रहेगी; ऍन्पतु–कहना; पुल्लितु–अर्थहीन है; इततिन्–इससे बढ़कर; अ नकर्–वह नगर; नन्रे–सुन्दर होगी क्या; अण्टत्तै मुळुतुम्–सारे अण्डों पर; आळवान्–शासन करनेवाला; इन् नकर् इरुन्तु वाळ्वान्–इस नगर में रहता है; इ–यह गौरव; अतऱ्कु एतु–उसका हेतु है; ऍन्रान्–कहा (अम्मा–विस्मय ध्वनि)। ९३

हनुमान ने उस श्रेष्ठ नगर को देखकर अपने कमलहस्तों को विस्मय-सूचक मुद्राओं में हिलाता हुआ अपने आप कहा कि देवों की स्वर्ण-नगरी अमरावती इसके समान होगी क्या ? ऐसा कहना दोषपूर्ण होगा। क्या वह नगर इससे बढ़कर सुन्दर हो सकेगा ? सारे अण्ड का शासन रावण यहीं रहकर करता है, उसका हेतु ही इसका अमरावती से अधिक सुन्दर होना है ! । ९३

माण्डदोर् निलत्तिर् रामॆन् रुणर्त्तुदल् वाय्मैत् तन्राल्
वेण्डिय वेण्डि नॆय्दि वॆरुप्पित्रि विळैन्दु तुय्क्कुम्
ईण्डरुम् बोह विन्ब मीरिल दियाण्डुक् कण्डाम्
आण्डदु तुरक्क मः(ह्)दे यरुमरैत् तुणिवु मम्मा 94

वेण्टिय–इच्छित वस्तुएँ; वेण्टिन् ऍय्ति–इच्छित प्रकार से प्राप्त करके; वॆरुप्पु इन्रि–अघाये विना; विळैन्तु–चाह के साथ; तुय्क्कुम्–भोगा जानेवाला; ईण्ट अरुम्–अलभ्य; पोक इन्पम्–भोगसुख; ईऱु इलतु–अनन्त रूप से; याण्टु कण्टोम्–जहाँ देखते है हम; आण्टतु तुरक्कम्–वही स्वर्ग है; अरु मरै–श्रेष्ठ वेदों का भी; तुणिवुम् अ.ते–निर्णय भी वही है; अतु–वह; माण्ट–महिमावान; ओर् निलत्तिऱ्ऱु आम्–एक स्थान में होगा; ऍन्रु–ऐसा उणर्त्तुतल्–समझाना; वाय्मैत्तु अन्रु–सच्चा नहीं होगा। ९४

स्वर्ग क्या है ? जो भी चाहें वह सब वैसे ही जहाँ प्राप्त हों; और जहाँ

उनका अलभ्य सुख-भोग अन्तहीन प्रकार से सम्भव हो —उसी को स्वर्ग कहा जाता है। श्रेष्ठ वेद भी वैसा ही कहते हैं। उस स्वर्ग को एक स्थान विशेष में रहता हुआ बताना सच नहीं है ! । ९४

उट्पुल	मॆळनू	ऱॆऩ्ब	रोशनै	युलह	मूऩ्ऱिल्
तॆट्पुरु	पॊरुळ्ह	ळॆल्ला	मिदनुळैच्	चॆऱिन्द	वॆऩ्ऱाल्
नुट्पुल	नुणङ्गु	केळ्वि	नुळैविन	रऱिवि	नोङ्गुम्
कट्पुल	वरम्बिऱ्	ऱऩ्ऱे	काट्चियुङ्	गरैयिऱ्	ऱम्मा 95

उट्पुलम्–(लंका का) आन्तरिक विस्तार; ॲळु नूऱु ओचनै–सात सौ योजन; ॲऩ्पर्—कहते हैं; उलकु मूऩ्ऱिल्–तीनों लोकों में; तॆट्पु उऱु पॊरुळ्कळ्–साफ़ जाने जानेवाली वस्तुएँ; ॲल्लाम्–सभी; इतऩ् उळै–इसमें; चॆऱिन्त–पूर्ण रूप से पायी जाती हैं; ॲऩ्ऱाल्–कहें तो; नुण् पुलम्–सूक्ष्मबुद्धि; नुणङ्कु केळ्वि–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञानी; नुळैवित्तर्–अन्वेषकों के; अऱिविऩ् ओङ्कुम्–बुद्धि से बढ़े हुए; कण् पुल–मन के करण की; वरम्पिऱ्ऱु अऩ्ऱु–सीमा के अन्दर आनेवाला नहीं है; काट्चियुम्–दृष्टि-गत की भी; करैयिऱ्ऱु–सीमा हो जायगी । ९५

लंका नगर का आन्तरिक विस्तार सात सौ योजन का बताया जाता है। तीनों लोकों में प्राप्य सभी चुने हुए पदार्थ इस लंका में भरपूर है। तो यह उन लोगों की मनो-दृष्टि में भी समानेवाला नहीं है, जिनकी सूक्ष्म-बुद्धि का श्रेष्ठ श्रवण-ज्ञान द्वारा खूब विकास हुआ है। आँखों द्वारा दृश्य विस्तार की भी सीमाएँ होती है । ९५

2. ऊर् तेडु पडलम् (लंका-नगर-अन्वेषण पटल)

❀ पॊऩ्गॊण्	डिळैत्तमणि	यैक्कॊडु	पॊदिन्द
मिऩ्गॊण्	डमैत्तवॆयि	लैक्कॊडु	शमैत्त
ॲऩ्गॊण्	डियऱ्ऱियवॆ	नत्तॆरि	विलाद
वऩ्गॊण्डल्	विट्टुमदि	मुट्टुवन	माडम् 96

माटम्–सौध; पॊऩ् कॊण्टु इळैत्त–स्वर्णनिर्मित हैं; मणियै कॊटु पॊतिन्त–मणि-जड़ित है; मिऩ् कॊण्टु अमैत्त–विद्युत् से रचित है; वॆयिलै कॊटु चमैत्त–धूप के बने; ॲऩ् कॊण्टु इयऱ्ऱिय ॲत्त–किसके (साथ) निर्मित है; ॲत्त–यह; तॆरिवु इलात—अज्ञात है; वऩ् कॊण्टल् विट्टु–बलवान मेघों को पार करके; मति मुट्टुवत–चन्द्र से टकरानेवाले है । ९६

लंका नगर के प्रासाद स्वर्णनिर्मित हैं। मणिजड़ित हैं। या विद्युत् के बने हुए है ! शायद सूर्य-रश्मि के बने हैं ! उनको देखकर ऐसे भाव उठते है। पर असल में वे किसके बने हैं —यह जानना कठिन है ! वे मेघमण्डल को पारकर चन्द्रमण्डल से टकरा रहे हैं । ९६

नाहाल यङ्गळोंडु नाहरुल हुनुदम्
पाहार् मरुङ्गुतुयि लॅन्नवुयर् पण्ब
आहाय मञ्जवहन्न् मेरुवै यनुक्कुम्
माहाल् वळङ्गुशिरु तॅन्ऱलॅन निन्ऱ 97

नाकालयङ्कळोंदु–देव-प्रासादाओं के साथ; नाकर् उलकुम्–सुरलोक; तम्–लंका के; पाकु आर् मरुङ्कु–आंशिक रिक्त स्थानों में; तुयिल् ॲन्त–रहते हों, ऐसा; उयर् पण्प–ऊँचाई रखते हैं; आकायम् अञ्च–आकाश को डराते हुए; अकल् मेरुवै–विशाल मेरु को; अनुक्कुम्–शिथिल होने देते है; मा काल्–प्रबल प्रभंजन को; वळङ्कु चिरु तॅन्ऱल् ॲन–बहनेवाले मन्द मलयपवन बनाते हुए; निन्ऱ–स्थित थे (वे लंका के सौध)। ६७

देवों के महलों के साथ देवलोक इन सौधों के मध्य स्थलों में हों, इस तरह ये उन्नत हैं। आकाश को डराते हुए जो खड़ा रहता है, वह मेरुपर्वत भी इसको देखकर काँप जाता है। बहुत प्रबल प्रभञ्जन भी उनके विषय में मन्द दक्षिणी पवन के समान शक्तिहीन बन जाय, ऐसी दृढ़ता के साथ वे खड़े हैं। ९७

माहारिन् मिन्गोंडि मडक्किन रडुक्कि
मीहार सॅङ्गणु नरुन्दुहळ् विळक्कि
आहाय कङ्गैयिनै यङ्गैयिनि लळ्ळिप्
पाहाय शॅञ्जोलवर् वीशुपडु कारम् 98

कारम्–वे सौध; पाकु आय–चासनी-सम; चॅञ् चॊलवर्–मधुर बोली वाली दासियों द्वारा; मा कारिन्–बड़े मेघों की; मिन् कॊटि–बिजली की लताओं को; मटक्कितर् अटुक्कि–मोड़कर गट्ठा बाँधकर; मी कारम् ॲङ्कणुम्–सौधों के ऊपरी भागों में सर्वत्र; नऱुम् तुकळ्–सुगन्धित धूल; विळक्कि–झाड़ देकर; अङ्कैयितिल्–चुल्लू में; आकाय कङ्कैयिनै–आकाशगंगा (के जल) को; अळ्ळि–भर लेकर; वीचु पटु–छिड़के जाते हैं। ६८

उन प्रासादों में चासनी-सम बोली वाली दासियाँ विद्युत्-किरणों का बना झाड़ू लेकर बुहारती है और वहाँ कूड़े के रूप मे जो पड़ा है, उस सुगन्ध-चूर्ण को दूर करती हैं। आकाशगंगा से हाथ में जल लेकर छिड़कती है। ९८

पञ्जि यूट्टिय पाडमै क्विण्किणिप् पदुमच्
चॅञ्जॅ विच्चॅळ्म् बवळत्तिन् कॊळुञ्जुडर् चिदरि
मञ्जि नञ्जन निऱमरैत् तरक्कियर् वडित्त
अञ्जि लोदियो डमैवन ववैदमक् कुवमै 99

पञ्चि ऊट्टिय–लाक्षारस-रंजित; पाटु अमै–कारीगरीयुक्त; किण्किणि–

पायलों से अलंकृत; पतुमम्–पद्मचरणों की; चॆम् चॆवि–ललाई; चॆऴुम् पवळत्तित्–पुष्ट विद्रुम की; कॊऴुम् चुटर्–प्रवृद्ध कांति; चितरि–विखेरकर; मञ्चिन्–मेघों का; अञ्चत्त निरम्–अंजनवर्ण; मरैत्तु–छिपाकर; अरक्कियर् वटित्त–राक्षसियों के अलंकृत; अम् चिल् ओतियॊटु–सुन्दर (लाल रंग के) अल्प केशों से; अवै तमक्कु–उनसे; उवमै अमैवत्त–उपमित होने योग्य बने हैं। ९९

वहाँ देवांगनाएँ दासी का काम कर रही है। लाक्षारस-रंजित और कारीगरीयुक्त पायलों से अलंकृत उनके चरणों की विद्रुमलालिमा मेघों पर पड़ती है, जिससे मेघों की कालिमा छिप जाती है। तब वे मेघ राक्षसियों के अलंकृत (ताम्रवर्ण के) अल्प केशों के समान लगते हैं। ९९

नान नाण्मलर्क् कऱ्पह नऱुविरै नाऱ्ऱ
पानम् वायुऱ वॆऱुत्तदा ळाऱुडैप् पऱवै
तेन वाम्विरैच् चॆऴुङ्गऴु नीर्त्तुयिल् शॆय्य
वान याऱुदम् मरमियत् तलन्दॊऱु मडुप्प 100

नात कऱ्पक–कस्तूरीगन्ध-सुगन्धित कल्पतरु के; नाळ् मलर्–नवविकसित पुष्पों के; नऱु विरै नाऱ्ऱ–अच्छी सुगन्धि से युक्त; पानम्–शहद; वाय् ऊऱ–उनके मुख में झरता है; वॆऱुत्त–उचटकर; आऱु ताळ् उटै पऱवै–षड्पदी (भ्रमर); तेन्–भ्रमरियाँ; अवाम्–जिसको बहुत चाहती है; वान याऱु–आकाशगंगा के; विरै चॆऴुम्–सुवासित और बड़े; कऴुनीर्–'कऴुनीर' नाम के पुष्प में; तुयिल् चॆय्य–सुलाने देते हुए; तम् अरमिय तलम् तॊऱुम्–उनके सभी हर्म्यो में; मटुप्प–आकर भर गये (ऐसे सौध स्थित हैं)। १००

उन सौधों के हर्म्यो में भ्रमर आकर बसते हैं। उनके मुख से कस्तूरी-गन्ध से भरपूर कल्पतरु के नवविकसित फूलों के अच्छे वास के साथ शहद चूता है। वे भ्रमर उसको पीते-पीते उचट जाते है। भ्रमरियाँ आकाश-गंगा के सुगन्धित लाल कुमुद फूलों पर सोना चाहती हैं। इसीलिए वे षड्पद उन हर्म्यो पर आकर ठहरते है। १००

कुऴलुम् वीणैयुम् याऴुमॆन् ऱिन्नैयन कुऴैय
मऴलै मॆन्मॊऴि किळिक्किरुन् दळिक्किन्ऱ महळिर्
शुऴलुम् नन्नॆडुन् दडमणिच् चुवर्दॊऱुन् दुवन्ऱुम्
निऴलुन् दम्मैयुम् मॆय्म्मैनिन् ऱरिवरु निलैय 101

कुऴलुम्–वंशी और; वीणैयुम्–वीणा और; याऴुम्–'याऴ' नामक वाद्य; ऎन्ऱिन्नैयन–आदि ऐसे वाद्य; कुऴैय–शिथिल पड़ जायँ ऐसा; मॆन् मऴलै मॊऴि–कोमल तुतली वोली; इरुन्तु–स्वयं रहकर; किळिक्कु–शुकों को; अळिक्किन्ऱ मकळिर्–जो सिखा रही थीं, वे स्त्रियाँ; चुऴलुम्–प्रकाशवलयित; नल्–श्रेष्ठ; नॆटुम्–वड़े; तटमणि–वड़े रत्नों से युक्त; चुवर् तॊऱुम्–सभी दीवारों पर; तुवन्ऱुम्–(वड़ी संख्या में) दिखनेवाले; निऴलुम्–प्रतिविम्वो और; तम्मैयुम्–अपनों को;

मॅय्म्मै नित्ऱु–सच्चे रूप से; अऱिवु अरु–जानना कठिन है; निलैय–ऐसे प्रासाद थे वे। १०१

उन प्रासादों में स्त्रियाँ रहकर शुकों को वंशी, वीणा और 'याळ्' नामक वाद्य को मधुरता में हरानेवाली बोली सिखाती रहती हैं। तब उनके प्रतिबिम्ब प्रकाश-भरी, ऊँची और सुन्दर दीवारों पर पड़ जाते हैं। ये स्त्रियाँ उनमें और अपने में भेद नहीं कर पातीं। १०१

इन्नैय माडङ्ग ळिन्दिरऱ् कमैवर वॅंडुत्तु
वन्नैयु माट्चिय वॅन्निलच् चॉल्लुमा शुण्णुम्
अन्नैय दामॅन्नि नरक्करदन् दिरुवुक्कु मळवॅ
निनैय लामन्ऱि युवमैयु मन्नदा निऱ्कुम् 102

इत्तैय माटङ्कळ्–ऐसे प्रासाद; इन्तिरऱ्कु अमैवर–इन्द्र के वास के योग्य रीति से; ॲंटुत्तु वत्तैयुम्–रचित और सज्जित; माट्चिय–शानदार है; ॲन्निल्–कहें तो; अ चॉल्लुम्–वह कथन भी; माचु उण्णुम्–दोषपूर्ण होगा; अत्तैयताम् ॲन्निन्–वैसा है तो; अरक्कर् तम् तिरुवुक्कुम्–राक्षसों के वैभव की; अळवॅ–सीमा; निनैयलाम् अन्ऱि–कल्पना कर सकें तो कर सकते हैं, उसको छोड़; उवमैयुम्–उपमा कहने लगें; अन्नता निऱ्कुम्–वह भी (वैसी) दोषपूर्ण होगी। १०२

ये सौध इन्द्र के रहने योग्य रीति से बने है क्या ? ऐसा कहना दोषपूर्ण होगा। तब सोचिए ऐसे सौधों के स्वामी राक्षसों के वैभव का क्या कहा जाय ? मन से अनुमान लगा सकते है, बस। उसको छोड़कर उपमान कहें तो वह भी असफल और निरर्थक ही होगा। १०२

मणिह ळॅत्तुणै पॅरियन माल्तिरु मार्बिन्
अणियुङ् गाशिनु महन्ऱन वुळवॅन्नि लरिदाल्
तिणियु नन्नॅडुन् दिरुनहर् दॅय्वमात् तच्चन्
तुणिविन् वन्दवन् तॉट्टळ हिळैत्तवत् तॉळ्ळिल्हळ् 103

मणिकळ् ॲत्तत्तै पॅरियत्त–मणियाँ कितनी ही बड़ी क्यों न हों; माल्–विष्णुदेव के; तिरु मार्पिन्–श्रीवक्ष में; अणियुम् काचिनुम्–जो पहनते है, उस (कौस्तुभ-) मणि से; अकन्ऱन उळ–बड़ी हैं; ॲन्निल् अरितु–कहा जाय, यह कहना दुर्लभ है; तॅय्व मा तच्चन्–श्रेष्ठ देवशिल्पी; तुणिविन् वन्तु–निश्चय लेकर आया; नल् नॅटुम् तिरु नकर्–अच्छा और बड़ा श्रीनगर (लंका) में; अवन् तॉट्टु–उसने अपने हाथ से स्पर्श करके; अळकु इळैत्तत–जिन्हें सुन्दर बनाया; अत् तॉळिल् कळ्–वे शिल्पकार्य; तिणियुम्–सौन्दर्य से कूट-कूटकर भरे हैं। १०३

अन्यत्र प्राप्य मणियाँ चाहे जितनी बड़ी या उत्कृष्ट हों पर श्रीविष्णु के वक्षःस्थल की कौस्तुभमणि से बड़ी हो ऐसी मणि का मिलना दुर्लभ है। वैसे ही बहुत ही कुशल देवशिल्पी ने इस उत्तम लक्षणों से पूर्ण सुन्दर लंका

नगरी में अपनी कला की जो कारीगरियाँ स्वयं रची हैं, वे अत्यन्त सौन्दर्य से भरपूर हैं। १०३

मरम डङ्गलुङ् गऱ्पह मनैयॅलाङ् गननहम्
अरम डन्दैयर् शिलदिय ररक्कियर्क् कमरर्
उरम डङ्गिवन् दुऴैयरा युळ्ळ्हुव रॉरुवर्
तरम डङ्गुव दन्ऱिदु तवञ्जॅयत् तहुमाल् 104

मरम् अटङ्कलुम्–वहाँ के सारे वृक्ष; कऱ्पकम्–कल्पतरु है; मनै ऍलाम्–सारे गृह; कनकम्–स्वर्णनिर्मित है; अरक्कियर्क्कु–राक्षसियों की; अरमटन्तैयर्–देवस्त्रियाँ; चिलतियर्–दासियाँ हैं; अमरर्–सुर लोग; उरम् अटङ्कि वन्तु–वल खोकर आये; उऴैयराय् उळ्ळ्कुवर्–चपरासियों के रूप में घेरकर आते हैं; इतु–यह; ऑरुवर्–किसी की; तरम् अटङ्कुवतु अन्ऱु–योग्यता के अधीन होनेवाला नहीं है; तवम् चॅयतकुम्–तप ही कर्तव्य है। १०४

वहाँ तरु सब कल्पतरु हैं। भवन सब स्वर्णभवन है। राक्षसियों की दासियाँ देवांगनाएँ है। देवता लोग अपना अधिकार खोकर सेवा-टहल करते घूमते हैं। यह सब किसी की योग्यता के अधीनस्थ हो सकते है क्या ? नही यह सब तपस्या के ही फलस्वरूप मिल सकते हैं। इसलिए तप ही सबके लिए करणीय काम है। १०४

तेव रॅन्बवर् यारुमित् तिरुनहर्क् किऱैवर्
केवल् शॅय्बवर् शॅय्हिला दवरॅव रॅन्निन्
मूवर् तम्मुळ्ळु मिरुवरॅन् ड्रालिनि मुयलिल्
ताविन् मादव मल्लदु पिऱिदॊन्ऱु तहुमो 105

तेवर् ऍन्पवर् यारुम्–देव सभी; इ तिरुनकर्क्कु–इस श्रीनगर के; इऱैवर्क्कु–राजा के; एवल् चॅय्पवर्–कैंकर्य करनेवाले है; चॅय्किलातवर्–न करते; ऍवर्–कौन; ऍन्निन्–पुछें तो; मूवर् तम्मुळुम्–त्रिदेवो में; इरुवर्–दो है; ऍन्ड्राल्–तो; इनि मुयलिल्–अब प्रयास करने; ता इल्–निर्दोष; मा तवम्–महान् तप; अल्लतु–छोड़कर; पिऱितु ऑन्ऱु–दूसरा कोई; तकुमो–योग्य हो सकता है क्या। १०५

सारे देवता इस श्रीनगर के स्वामी रावण की दासता करनेवाले ही है। कौन है जो वैसा नहीं करते ? त्रिमूर्तियों में दो ही हैं —श्रीविष्णु और शिवजी। तो फिर प्रयत्न किस बात का करना है ? निर्दोष महान् तप को छोड़कर और कोई प्रयत्न करने योग्य है क्या ? । १०५

पोरि यन्ऱन तोऱ्ऱवॅन् ऱिहऴ्दलिऱ् पुऱम्बोय्
नेरि यन्ऱवन् ऱिशैदॊऱु निन्ऱमा निऱ्क
आरि यन्ऱ्ऱित् तॅय्दमाक् कळिऱुमो राऴिच्
चूरि यन्ऱ्ऱित् तेरुमे यिन्नहर्त् तॊहाद 106

पोर् इयऩ्ऱ़ऩ–युद्ध करके; तोऱ्ऱ–हार गये; अँऩ्ऱ–ऐसा; इकऴ्तलिल्–अवमाने जाने से; पुऱम् पोय्–अलग एक ओर जाकर; नेर् इयऩ्ऱ–आमने-सामने; वऩ् तिचै तोऱुम्–सुदृढ़ दिशा-दिशा में; निऩ्ऱ मा–जो दिग्गज खड़े हैं, वे; निऱ्क–एक ओर रहें; आरियऩ्–हरिहर-पुत्र शास्ता का; तनि–अप्रमेय; तॅय्व–दिव्य; मा कळिऱुम्–महान् (वाहन) गज और; चूरियऩ्–सूर्य का; ओर आऴि तनि तेरुमे–अनुपम एक-चक्र-रथ ही; इ नकर्–इस नगर में; तॉकात–न मिल पाये। १०६

लंका में सभी गज और रथ थे। पर उनमें केवल निम्नांकित गज और रथ नहीं मिले थे। आठ दिग्गज जो रावण से लड़कर हार गये और अपमानित होकर सभी दिशाओं में जाकर खड़े हो गये थे; और वह उत्तम गज जो हरिहर-पुत्र 'शास्ता' का वाहन है। रथों में सूर्य का एकचक्र-रथ नहीं मिला था। (क्षीरसागर-मंथन से उद्भूत अमृत को प्राप्त करने के लिए देवासुरों में लड़ाई मची। तब विष्णु मोहनी का रूप धर आये थे। तब शिवजी उन पर मोहित हो गये। उनके पुत्र पैदा हो गया। दक्षिण में उन हरिहरपुत्र देव की बड़ी महिमा है। वे 'शास्ता' कहे जाते हैं।)। १०६

वाऴु मऩ्ऩुयिर् यावैयु मॊरुवऴि वाऴुम्
ऊऴि नायकऩ् ऱिरुवयि ऱॊत्तुळ दिव्वूर्
आऴि यण्डत्ति ऩरुक्कऩ्ऱ नलङ्गुदेर्प् पुरवि
एऴु मल्लऩ वीण्डुळ कुदिरैह ळॅल्लाम् 107

इव् वूर्–यह नगर; वाऴुम् मन् उयिर् यावैयुम्–संसार में जीनेवाले अक्षय सभी जीव; ऑरु वऴि वाऴुम्–जिसमें एक साथ मिलकर रहते हैं; ऊऴि नायकऩ्–युगान्त में श्रीविष्णु के; तिरु वयिऱु ऑत्तुळतु–दिव्य उदर के समान था; आऴि अण्टत्तिऩ्–गोल अण्ड के (अश्वों में); अरुक्कऩ् तऩ्–सूर्य के; अलङ्कु तेर्–हिलनेवाले रथ में जुते हुए; पुरवि एऴुम्–सातों अश्व; अल्लऩ–जो नहीं थे; कुतिरैकळ् ऍल्लाम्–वे सभी अश्व; ईण्टु उळ–यहाँ हैं। १०७

यह लंका नगर युगान्तकाल में सभी जीवों का वासस्थान जो श्रीविष्णु का श्रीउदर है, उसके समान लगा। इसमें अण्ड के सभी अश्व पाये गये; केवल सूर्य के हिलते चलनेवाले रथ के सातों अश्व उनमें नही मिले थे। १०७

तऴङ्गु पेरियि ऩरवमुम् तहैनॅडुङ् गळिऱु
मुऴङ्गु मोदैयु मूरिनीर् मुऴक्कॊडु मुऴङ्गुम्
कॊऴुङ्गु रऱ्पुदुक् कुदलैयर् नूबुरक् कुरलुम्
वऴङ्गु पेररुज् जदिहळु वयिऩ्ऱॊऱु मरैयुम् 108

तऴङ्कु–बजनेवाली; पेरियिऩ् अरवमुम्–भेरी का नाद; तकै–श्रेष्ठ; नॅटुम्

कळिऱ-बड़े गजों की; मुळङ्कुम् ओतैयुम्-चिंघाड़ का नाद; मूरि नीर्-अत्यधिक जल से भरे समुद्र के; मुळक्कोंटु मुळङ्कुम्-गर्जन के साथ मिलकर उठते हैं; कोंळुम् कुरल्-गम्भीर कण्ठ के साथ; पुतु कुतलैयर-नित-नवीन रूप से मधुर लगनेवाली तुतली बोली वाली स्त्रियों की; नूपुर कुरलुम्-नुपुर की ध्वनि; वळङ्कु-उनके किये; पेर् अरुम् चतिकळुम्-श्रेष्ठ नर्तन के अपूर्व पदन्यास से उत्पन्न ध्वनि; वयिन् तोरुम्-स्थान-स्थान पर; ओलिक्कुम्-सुनायी देती है। १०८

उस नगर में भेरियों का नाद और श्रेष्ठ गजों के चिंघाड़ने की ध्वनि दोनों विस्तृत जल-तल से युक्त समुद्र के गर्जन के साथ मिलकर सुनाई देते हैं। नितनवीन लगनेवाले पुष्कल, मधुर कठस्वर वाली स्त्रियों के नूपुरों का मोहक नाद उनके नृत्य-मुद्रा में मञ्च पर पड़नेवाले चरण चापों की ध्वनि के साथ मिलकर यत्र-तत्र सुनाई देता है। १०८

मरह दत्तिनु मऱ्ऱुळ मणियिन् नमैत्त
कुरह दत्तनित् तेरॆला मुऱैन्दिडुङ् गूडम्
इरवि वॆट्किड विमैक्किन्ऱ वियऱ्कैय वॆन्ऱाल्
नरह मोक्कुमा नन्नॆडुन् दुऱक्कमिन् नहर्क्कु 109

मरकतत्तिनुम्-मरकत और; मऱ्ऱुळ मणियिनुम्-अन्य मणियों की; अमैत्त-रचित; कुरकत तति तेर् ऎलाम्-अनुपम सभी अश्वरथ; उऱैन्तिटुम्-जहां रहते हैं; कूटम्-वे शालाएँ; इरवि वॆट्किट-सूर्य को लजाते हुए; इमैक्किन्ऱ इयऱ्कैय-छटा बिखेरती हैं, ऐसे स्वभाव की हैं; ऎन्ऱाल्-तो; इ नकर्क्कु-इस नगर के सामने; नल् नॆटुम् तुऱक्कम्-बड़ा अच्छा कहलानेवाला स्वर्ग; नरकम् ऒक्कुम्-नरक के समान लगेगा। १०९

वहाँ की रथ-शालाएँ, जो मरकत और अन्य रत्नों के साथ निर्मित थीं और जिनमें अश्व-जुते रथ रहते थे, सूर्य को भी लजाते हुए तेजोमय लगती थीं। तो सोचें! बहुत ही श्रेष्ठ कहकर प्रशंसित स्वर्ग भी इसके सामने नरक था। १०९

तिरुहु वॆञ्जिनत् तरक्करुङ् गरुनिऱन् दीर्न्दार्
अरुहु पोहिन्ऱ तिङ्गळु मऱुवऱ्ऱ दळहैप्
परुहु मिन्नहर्त् तुन्नॊळि परत्तलिऱ् पशुम्बोन्
उरुहु हिन्ऱदु पोन्ऱुळ दुलहशू ऴुवरि 110

अळकै परुकुम्-सौन्दर्य-समन्वित; इ नकर्-इस नगर की; तुन् ऒळि-पुष्कल कान्ति; परत्तलिन्-व्यापती है, इसलिए; तिरुकु वॆम् चिनत्तु-बुरे और भयंकर कोप वाले; अरक्करुम्-राक्षस भी; करु निऱम् तीर्न्तार्-काले रंग से मुक्त हो गये; अरुकु पोकिन्ऱ-पास से जानेवाला; तिङ्कळुम्-चन्द्र भी; मऱु अऱ्ऱतु-कलंकहीन हो गया; उलकु चूऴ् उवरि-पृथ्वी को घेरे रहनेवाला समुद्र; पचुम् पोन्-चोखा स्वर्ण; उरुकुकिन्ऱतु पोन्ऱ उळतु-पिघलता-सा है। ११०

सौन्दर्य को जिसने अपने में समाहित कर लिया था, उस लंका नगरी की कान्ति के पड़ने से राक्षस भी काले रंग से मुक्त हो गये थे। पास से जानेवाला चन्द्र भी कलंक-हीन हो गया। पृथ्वी को घेरे रहनेवाला सागर भी पिघलते स्वर्ण के समान लगा। ११०

अण्ड मुऱ्ऱवुम् विऴुङ्गिरु ळहऱ्ऱिनिन् ऱहल्वान्
कण्ड वत्तनिक् कडिनहर् नॅडुमनै कदिर्हट्
कुण्ड वाऱ्ऱलॆन् ऱुरैप्परि दॊप्पिडिऱ् ऱम्मुन्
विण्ड वाय्च्चिरु मिन्मिनि यॆन्नवुम् विळङ्गा 111

अ तत्ति कटि नकर्—उस अनुपम सुरक्षित नगर के; नॆंटु मनै—उन्नत प्रासाद; अण्टम् मुऱ्ऱवुम्—अण्ड भर को; विऴुङ्कु इरुळ्—लीलनेवाले अन्धकार को; अकऱ्ऱि निन्ऱु—दूर करके खड़े है; अकल् वान् कण्ट—विस्तृत आकाश को स्पर्श करते है; अ आऱ्ऱल्—वह शक्ति; कतिर् कट्कु—अन्य (सूर्य आदि) ज्योतिपुंजों के पास; उण्टु—है; ऍन्ऱु—ऐसा; उरैप्परितु—कहना कठिन है; ऑप्पिटिल्—तुलना करें तो; तम्मुन्—उनके सामने; विण्ट वाय्—खले मुख के; चिरु मिन्मिनि—छोटे खद्योत; ऍन्नवुम्—सम भी; विळङ्का—प्रकाशमान नहीं होंगे। १११

उस अनुपम व सुरक्षित नगर के उच्च प्रासाद अण्डग्रासक अँधेरे को भगाते हुए और विशाल आकाश में व्याप्त खड़े थे। वह शक्ति द्वादश आदित्य आदि तेजोवानों के पास है —यह कहना ठीक नहीं होगा। तुलना करेंगे तो वे इनके सामने विदीर्ण (खुले) मुख वाले खद्योत-सम भी नहीं रह सकेंगे। १११

तेनुञ् जान्दमु मान्मदच् चॆरिनऱुञ् जेऱुम्
वान नाण्मलर् कऱ्पह मलर्हळु वयमात्
तान वारियि नीरॊडुम् बडुत्तलिऱ् ऱळीइय
मीनुन् दानुमोर् वॆऱिमणङ् गमऴुमाल् वेलै 112

तेतुम्—शहद; चान्तमुम्—चन्दन; मान्मत—कस्तूरी; चॆऱि—मिश्रित; नऱुम् चेऱुम्—सुगन्धित लेप; वान मलर्—स्वर्ग में पुष्पित; नाळ् कऱ्पक मलर्कळुम्—सद्यविकसित कल्पसुमन; वय मा—सशक्त गजों के; तान वारियिन् नीरॊटुम्—मद-धार के जल के साथ; वेलै पटुत्तलिल्—बहकर समुद्र में जा मिलते हैं, अतः; तानुम्—वह समुद्र और; तळीइय मीनुम्—उस पर रहनेवाली मछलियाँ; ओर् वॆऱि मणम्—अनुपम गम्भीर सुगन्ध; कमऴुम्—देती हैं। ११२

शहद, चाँद, मृग-कस्तूरी का लेप, स्वर्गलोक के सदाबहार कल्पतरु के नवविकसित फूल —ये सब सशक्त गजों के मद-नीर के साथ मिलकर समुद्र में पहुँच जाते हैं। इस कारण समुद्र और समुद्र में रहनेवाली मछलियों से एक अनुपम सुगन्ध छिटकती है। ११२

तॅय्वत् तच्चनैप् पुहऴ्दुमो शॅङ्गणवा ळरक्कन्
मॅय्यॉत् ताऱ्ऱिय तवत्तॅये वियत्तुमो विरिञ्जन्
ऐयप् पाडिला वरत्तॅये मदित्तुमो वऱियात्
तॉय्यऱ् चिन्दॅयेम् यावरॅ यावदॅन्ऱु तुदिप्पेम् 113

तॅय्व तच्चत्तॅ–देवशिल्पी विश्वकर्मा की; पुकऴ्तुमो–प्रशंसा करें; चॅङ्कण् वाऴ् अरक्कन्–रक्ताक्ष भयंकर राक्षस; मॅय् ऑत्तु–(को) शरीर को कष्ट देते हुए की गयी; तवत्तॅयॅ वियत्तुमो–तपस्या से विस्मित होंगे; विरिञ्चन्–विरंचि के दिये; ऐयप्पाटु इला–अमोघ; वरत्तॅये–वर को ही; मतित्तुमो–गणना करें; अऱिया–न जानते; तॉय्यल् चिन्तॅयेम्–निर्बल मन वाले हम; यावरॅ–किसकी; यातु ॲन्ऱु–क्या ही कहकर; तुतिप्पेम्–प्रशंसा करें। ११३

इसको देखकर क्या देवशिल्पी विश्वकर्मा की प्रशंसा करें ? या भयंकर रक्ताक्ष रावण की कायक्लेश-सहित की गयी तपस्या की महिमा पर विस्मय करें ? या विरंचि के द्वारा दिये गये अमोघ वरों को मान्यता दें ? किंकर्तव्यविमूढ़ होकर लटनेवाले मन को लेकर हम इन तीनों में किसकी और कैसी प्रशंसा करें ? । ११३

वानुम् निलनुम् वॅऱुमारिनि मऱ्ऱु मुण्डो
कानुम् बॉऴिलु मिवैशॅङ्गन हत्ति नालुम्
एनैम् मणियालु मियऱ्ऱिय वेनुम् यावुम्
तेनुम् मलरुङ् गनियुन्दरच् चॅय्द शॅय्है 114

कानुम् पॉऴिलुम् इवै–वन, उपवन ये हैं; चॅम् कनकत्तितालुम्–लाल (चोखे) कनक से; एनॅ मणियालुम्–अन्य मणियों से; इयऱ्ऱियवेनुम्–निर्मित तो भी; यावुम्–वे सब; तेनुम् मलरुम्–शहद और पुष्प; कनियुम् तर–फल देते हैं; चॅय्त चॅय्कै–ऐसा कार्य; वानुम् निलनुम्–आकाश और भूमि; इनि पॅऱुमाऱु–अब कर पायें; मऱ्ऱुम् उण्टो–यह और कहीं है क्या। ११४

लंका के वन और उद्यान लाल (चोखे) स्वर्ण और अन्य मणियों के पादपों आदि के बने हैं। तो भी उनसे शहद, फूल और फल प्राप्त होते हैं। ऐसा (रत्न-स्वर्ण तरुओं और लताओं से इनको दिलाने का) काम स्वर्ग या भूलोक में और कहीं हो, इसका कोई मार्ग है क्या ? । ११४

नीरुम् वैयमु नॅरुप्पुमे निमिर्नॅडुङ् गालुम्
मारि वानमुम् वऴङ्गल वाहुन्दम् वळर्च्चि
ऊरि निन्नॅडुङ् गोवुरत् तुयर्च्चिहण् डुणर्न्दाल्
मेरु वॅङ्ङनम् विळर्क्कुमो मुऴुमुऱ्ऱुम् वॅळ्हि 115

ऊरिन्–लंकापुरी में की; इ नॅटुम् कोपुरम्–ये लम्बी मीनारें; तम् वळर्च्चि–अपनी ऊँचाई से; नीरुम्–जल; वैयमुम–भूमि; नॅरुप्पुम्–अनल और; मेल् निमिर्

नॆट्टुङ्कालुम्–ऊपर उठकर फैलनेवाला पवन; मारि वान्नुम्–और मेघों से युक्त आकाश; वळङ्कल आकुम्–इनको आने से रोकती हैं; उयर्च्चि कण्टु–ऊँचाई देखकर; उणर्न्ताल्–समझना हो तो; मेरु–मेरुपर्वत; वॆळ्कि–लजाकर; मुळु मुर्ऱुम्–पूर्ण रूप से; ऍङ्ङनम् विळर्क्कुमो–कितना ही पांडुर हो जायगा। ११५

इस नगर की मीनारें बहुत उन्नत रहकर जल, भूमि, अग्नि ऊपर उठकर बहनेवाला पवन और मेघाश्रय आकाश —किसी को लंका के अन्दर आकर संचार करने नहीं देतीं। उनकी ऊँचाई की बात मेरु सोचे तो वह मन में लज्जा का अनुभव कर शरीर का कितना ही पांडुर हो जायगा ? (भय या लाज से शरीर का रंग श्वेत हो जाता है।)। ११५

मुन्नम् यावरु मिरावणन् मुनियुमॆन् ऱॆण्णिप्
पॊन्निन् मानहर् मीच्चॆलान् कदिरॆऩप् पुहल्वार्
कन्नि यारैयि नुयर्च्चिहण् डिदुकडप् परिदॆन्
ऱुन्नि नाडॊऱुम् विलङ्गिनन् पोदलै युणरार् 116

मुन्नम्–पहले; यावरुम्–सब; कतिर्–सूर्य का; कन्नि आरैयिन्–सुरक्षा के प्राचीरों को; उयर्च्चि कण्टु–ऊँचाई देखकर; इतु कटप्परितु–यह लाँघना कठिन है; ऍन्ऱु उन्नि–ऐसा सोचकर; नाटॊऱुम्–प्रतिदिन; विलङ्कितन्–हटकर; पोतलै–जाना; उणरार्–न जानकर; इरावणन् मुनियुम्–रावण कोप करेगा; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; पॊन्निन् मा नकर्–श्रेष्ठ स्वर्णपुरी के; मी चॆलान्–ऊपर से नहीं जाता; ऍन पुकल्वार्–ऐसा कहते रहे। ११६

लंका नगर के रक्षक प्राचीरों की ऊँचाई को देखकर सूर्य ने सोचा कि इसको पार करना असम्भव है। अतः वह प्रतिदिन उनसे हटकर दूर जाता था। पर पहले सबको यह बात नहीं विदित हुई। वे तो यही कहते थे कि 'रावण कोप करेगा' —इस विचार से सूर्य स्वर्णपुरी लंका के ऊपर से नहीं जाता था। ११६

तीय शॅय्हुन रमररा लनैयवर् शेरुम्
वायि लल्लदोर् वरम्बमैक् कुवॅनॆन मदियाक्
काय मॆन्नुमक् कणक्करु पदत्तैयुङ् गडक्क
एयु नन्मदि लिट्टनन् कयिलैयत् तॆडुत्तान् 117

अन्ऱु–उस दिन; कयिलै ऍटुत्तान्–जिसने कैलास को उठा लिया; तीय चॆय्कुनर् अमरर्–हमारी हानि करनेवाले देव हैं; अनैयवर्–वे; चेरुम् ओर् वायिल् अल्लतु–आवें तो एक ही मार्ग से आवें,.यह सोचकर उसको छोड़कर; (ओर्) वरम्पु अमैक्कुवॆन्–रुकावट डालूँगा; ऍन मतिया–यह सोचकर; कायम् ऍन्नुम्–आकाश के; कणक्कु अऱु–असीम; अ पतत्तैयुम् कटक्क–स्थान को भी पार करके; एयुम् नल् मतिल्–बहुत ही बलवान प्राचीर; इट्टनन्–बनाया (उस रावण ने)। ११७

कैलास के उत्थापक रावण ने सोचा कि देवगण हमारे हानिकारक हैं। वे व्योमलोक में हैं और सुगमता से लका में आ सकते हैं। उनका आने का मार्ग एक ही होना चाहिए। अतः राजद्वार को छोड़कर आकाश का मार्ग वन्द कर दूँगा। इसलिए उसने उन प्राचीरों को आकाश से भी अधिक ऊँचा और वलवान बनवा दिया था। ११७

कऱङ्गु कालुपुहा काऱ्पुहा कदिऱ्पुहा कनलि
मऱम्बु हार्वेनिन् वान्नवर् पुहारॆन्नल् वम्वे
तिऱम्बु कालत्तुम् यावैयुञ् जिदैयिनुञ् जिदैया
अऱम्बु हामैया लऴियुमिप् पदियॆन्न वयिऱ्त्तान् 118

कऱङ्कु काल्–ववण्डर वनाकर वहनेवाली हवा; पुका–वहाँ प्रवेश नहीं कर सकती; कार्–मेघ; पुका–घुसेंगे नहीं; कतिर् पुका–सूर्य की किरणें अन्दर नहीं जा सकतीं; कनलि–आग के; मऱम्–क्रूर काम; पुका–नहीं चल सकते; ऍन्निन्–तो; वान्नवर् पुकार्–सुर नहीं आयेंगे; ऍन्नल्–कहना; वम्पे–व्यर्थ है; तिऱम्पु कालत्तुम्–प्रपंचनाश के समय में भी; यावैयुम् चितैयिनुम्–अन्य सभी मिट जायेंगे तो भी; चितैया अऱम्–जो नष्ट नहीं होगा, वह धर्म भी; पुकामैयाल्–नहीं पहुँचता, इसलिए; इप्पति अऴियुम्–(उसी कारण) यह पुर नष्ट होगा; ऍन्न–ऐसा; अयिर्त्तान्–संशय किया (मारुति ने)। ११८

इस नगर के अन्दर चक्रवात प्रवेश नही कर सकता। मेघ नहीं घुसते। किरणे अन्दर नही जाती। आग की क्रूर करनियाँ नही पहुँचती। ऐसा कहने के वाद यह कहना कि 'देव नही आयेगे' व्यर्थ है! लोक-नाश के समय मे भी, जब सभी मिट जाते है, जो नहीं मिटता वह धर्म भी नही प्रवेश कर पाता! उसी एक कारण से यह लंका नगरी नष्ट हो जायगी! यह सोचकर हनुमान ने सन्देह किया। ११८

कॊण्डल् वान्ऱिरैक् कुरैहड लिडैयदायक् कुडुमि
ऍण्ड वाविशुम् बॆट्टनिन् ऱिमैक्किन्ऱ वियल्बाल्
पण्ड रावणप् पळ्ळिया नुन्दियिर् पयन्द
अण्ड मेयुमॊत् तिरुन्ददिव् वणिनह रमैदि 119

कॊण्टल्–मेघमिश्रित; वान् तिरै–वड़ी तरंगें; कुरै कटल्–जिसमें गरजती हैं, उस समुद्र के; इटैयतु आय्–मध्य में स्थित; कुटुमि–मकानों के शिखर; ऍण् तवा–अमाप; विचुम्पु ऍट्ट–आकाश को छूते हुए; निन्ऱु–खड़े है; इमैक्किन्ऱ इयल्पाल्–और प्रकाश विखेरते हैं, उस रीति से; इ अणि नकर्–इस सुन्दर नगर की; अमैति–रचना; अरावणै पळ्ळियान्–शेषशायी (श्रीविष्णु) ने; पण्टु–पहले; उन्तियिल् पयन्त–अपने उदर से जो जनाया था; अण्टमेयुम् ऒत्तिरुन्ततु–उस (हिरण्यगर्भ के) अण्ड के समान भी था। ११९

यह नगर उस समुद्र के मध्य में था, जिसमें मेघ जमे थे और लहरें

गरज रही थीं। उसके सौधों के शिखर अनन्त आकाश को पहुँचे हुए थे और प्रकाशमय थे। इससे वह नगर उस (हिरण्यगर्भ के) अण्ड के समान लगा, जो शेषशायी भगवान श्रीविष्णु के श्रीउदर से उत्पन्न हुआ था। ११९

पाडु वार्पल रॆन्निन्मर् रवरिनुम् बलराल्
आडु वारॆनि नवरिनुम् बलरुळ रमैदि
कूडु वारिडै यिन्नियङ् गॊट्टुवार् वीडिल्
वीडु काण्गुरुन् देवराल् विळुनडङ् गाण्बार् 120

पाट्टुवार्–गानेवाले; पलर्–अनेक है; ऎन्निन्–तो; अवरिनुम् मऱ्ऱु–उनसे अधिक अन्य; पलर्–अनेक; आट्टुवार्–नाचते हैं; ऎन्निन्–तो; अमैति कूट्टुवार्–ताल-मेल (समाँ) बैठानेवाले; इट्टै–मध्य में; इन्नियम् कॊट्टुवार्–मृदंग आदि बजानेवाले; अवरिनुम् पलर् उळर्–उनसे अनेक है; वीटिल् वीटु–अबाध मोक्ष; काण्कुरुम्–देखना चाहनेवाले; तेवराल्–देवों द्वारा; विळु नटम्–श्रेष्ठ नृत्य; काण्पार्–देखते हैं। १२०

गानेवाले बहुसंख्यक हैं तो नाचनेवाले उनसे भी अधिक संख्या में हैं। तो लयन-क्रिया में लगे हुए और 'मर्दल' नामक (ढोल-सा) वाद्य बजानेवाले उनसे भी अधिक संख्या में। ये सब देव (करते) थे, जो अबाध मोक्ष के आकांक्षी थे। राक्षस लोग उनके ये नृत्य देखकर आनन्दानुभव कर रहे थे। १२०

वान मादरो डिहलुवर् विज्जैयर् महळिर्
आन मादरो डाडुव रियक्कियर् रवरॆच्
चोनै वार्हुळ लरक्कियर् तॊडर्हुवर् तॊडर्न्दाल्
एनै नाहिय ररुनडक् किरियैयायन् दिरुप्पार् 121

विज्चैयर् मकळिर्–विद्याधर-स्त्रियाँ; वान मातरोटु–अप्सराओं से; इकलुवर्–(नाच में) होड़ लगातीं; आन मातरोटु–उन (विद्याधर-स्त्रियों) से; इयक्कियर् आटुवर्–यक्षबालाएँ (स्पर्द्धा करके) नाचतीं; अवरै–उनका; चोनै वार् कुळल्–मेघ-सम और लम्बे केश वाली; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; तॊटर्कुवर्–अनुकरण करके नाचती है; अव्वाऱु तॊटर्न्ताल्–वैसा सिलसिला जब रहता; एनै–जो छूटी रहीं वे; नाकियर्–नाग-स्त्रियाँ; अरु नट किरियै–श्रेष्ठ नृत्यकार्य का; आय्न्तु इरुप्पार्–विश्लेषण करती रहतीं। १२१

विद्याधरियाँ देवांगनाओं से स्पर्द्धा करके नाचती हैं। यक्षकन्याएँ उन विद्याधरियों से स्पर्द्धा करती है। काले मेघों के समान केश वाली राक्षसबालाएँ उन यक्षस्त्रियों से स्पर्द्धा करके नाचती हैं। जब वे सब ऐसा नाच रही हैं तब जो बची रही वे नागकन्याएँ उस नृत्य-कार्य के अनुकूल क्रियाओं में ध्यान देती रहतीं। १२१

इऴैयु माडैयु मालैयुञ् जान्दमु मेन्दि
उऴैय रॅन्ननित्त् ऱुदवुव निदियङ्ग ळॊरुवर्
विऴैयुम् बोहमे यिङ्गिदु वाय्हॊडु विळम्बिल्
कुऴैयु नॅञ्जिनाल् निनैयिनु माशॆन्ऱु कॊळ्ळुम् 122

नितियङ्कळ्–नव निधियाँ; उऴैयर् अँन्न–पार्श्ववर्ती दासों के समान; निन्ऱु–रहकर; इऴैयुम्–आभरणों; आटैयुम्–वस्त्रों; मालैयुम्–मालाओं और; चान्तमुम्–चन्दन को; एन्ति–उठाकर; उतवुव–देती है (राक्षस-स्त्रियों को); इङ्कु–यहाँ (लंका में); ऑरुवर् विऴैयुम्–एक राक्षसी जो इच्छा करती और पा लेती है; पोकमे–वह भोग ही; इतु–इतना है (तो); वाय् कॊटु विळम्पिल्–(भोग की महिमा) मुख से कहने लगें तो; कुऴैयुम्–(मुख) थक जायगा; नॅञ्चिनाल् निनैयिनुम्–मन से सोचने लगें तो; माचॆन्ऱु कॊळ्ळुम्–सोचना भी अपराध होगा। १२२

(महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, वर आदि) नवनिधियाँ हमेशा साथ रहनेवाली दासियों की तरह आभरणों, वस्त्रों, मालाओं और चन्दन को उठाते हुए पास रहती है और राक्षसियों को यथा-समय देती हैं। यही वहाँ की एक-एक राक्षसी के मनमाने भोग की स्थिति है। शब्दों द्वारा वर्णन करने का प्रयास करेंगे तो वाणी थक जायगी। मन में सोचना भी अपराध ही होगा। १२२

पॊन्निन् माल्वरै मेन्मणि पॊऴिन्दन्न पॊरुव
उन्नि नान्मुहत् तॊरुवनिन् ऱूऴ्मुऱै युरैप्पप्
पन्नि नाळ्बल पणियुळन् दरिदिनिऱ् पडैत्तान्
शॊन्न वानवर् तच्चना मिन्नहर् तुदिप्पान् 123

इन् नकर्–इस (लंका) नगर को; नान् मुकत्तॊरुवन्–चतुर्मुख; उन्नि निन्ऱु–सोचकर; ऊऴ् मुऱै–रचना-क्रम को; पन्नि उरैप्प–ज्यों-ज्यों कहते रहे; चॊन्न–जिससे कहा गया; वानवर् तच्चन्–उस देवशिल्पी (विश्वकर्मा) ने; तुतिप्पान्–स्तुत्य रीति से; पॊन्निन् माल् वरै मेल्–स्वर्ण (मेरु) महापर्वत पर; मणि पॊऴिन्तन्न पॊरुव–रत्न बरसाये गये हों जैसे; पल नाळ्–अनेक दिन; पणि उऴन्तु–परिश्रम करके; अरितिनिल्–अपूर्व रीति से; पटैत्तान्–रचा। १२३

चतुर्मुख ब्रह्मा खूब सोच-सोचकर रचना का क्रम बताते रहे और देवशिल्पी विश्वकर्मा ने अनेक दिन परिश्रम करके इस नगर को सबसे स्तुत्य रीति से ऐसा अपूर्व रच लिया मानो स्वर्णमेरु पर अनेक रत्न बरसाये गये हों। १२३

महर वीणैयिन् मन्दर कीदत्तु मऱैन्द
शहर वेलैयि नार्हलि दिशैमुहन् दळुवुम्
शिहर माळिहैत् तलन्दॊऱुन् दॆरिवैयर् तीऱ्ऱुम्
अहरु तूमत्ति नळ्नदिन्न मुहिऱ्कुल मनैत्तुम् 124

मकर वीणैयिन्–मकराकार वीणा के; मन्तर कीतत्तु–मन्द स्वर में; चकर वेलैयिन्–सागर की; आर् कलि–बड़ी ध्वनि; मरैन्त–छिप गयी; चिकर माळिकै–सशिखर महलों के; तिचै मुकम् तळुवुम्–दिशाओं के अन्तों को छूनेवाले; तलम् तोऱुम्–तलों में; तॅरिवैयर्–स्त्रियाँ; तीऱ्ऱुम्–जो अपने केशों को रमा रही थीं; अकरु तूमत्तिन्–उस अगरु के धूप में; मुकिर् कुलम्–मेघराशियाँ; अळुन्तित–दब गयीं। १२४

मकर के आकार की वीणा से जो मंथरस्वर उठा उसमें सगरपुत्र-खनित सागर के गर्जन लीन हो गये। सौध-शिखरों के दिगंत तक व्याप्त तलों पर स्त्रियाँ अपने केशों को जो अगरु-धूप लगा रही थीं, उस धूप में मेघसमूह छिप गये। १२४

पळिक्कु माणिहैत् तलन्दोरु मिडन्दोरुम् बशुन्देन्
तुळिक्कुङ् गऱ्पहत् तण्णरुञ् जोलैह डोरुम्
अळिक्कुन् देऱलुण् डाडिनर् पाडिन राहिक्
कळिक्किन् ऱारलाऱ् कवल्हिन्ऱा रॅरुवरैक् काणेम् 125

पळिङ्कु माळिकै–स्फटिकनिर्मित महलों के; तलम् तोऱुम्–स्थल-स्थल में; कऱ्पकम्–कल्पतरु; इटम् तोऱुम्–यत्र-तत्र; पचुम् तेन्–ताज़े शहद को; तुळिक्कुम्–जिनमें गिराते थे; तण् नऱुम्–(उन) शीतल सुगन्धित; चोलैकळ् तोऱुम्–नन्दनवनों में; अळिक्कुम्–(जो प्रेमी) देते हैं; तेऱल् उण्टु–ताड़ी को पीकर; आटिनर् पाटिनर् आकि–नाचनेवाली, गानेवाली बनकर; कळिक्किन्ऱार् अलाल्–मत्त जो रहती हैं (राक्षसियाँ) उनको छोड़कर; कवल्किन्ऱार्–चिन्तित रहनेवाली; ऒरुवरै काणेम्–किसी (एक) को नहीं देखते। १२५

स्फटिक-निर्मित प्रासादों में सर्वत्र, और ऐसे शीतल-सुगन्धित उद्यानों में सर्वत्र, जहाँ कल्पवृक्ष ताज़ा शहद गिराते हैं, प्रेमियों द्वारा दी गयी ताड़ी को पीकर नारियाँ मत्त हो नाचती-गाती हैं। उनको छोड़कर कोई चिन्ता-मग्न रहनेवाले नहीं दिखते। १२५

तेऱन् मान्दिनर् तेनिशै मान्दिनर् शॅव्वाय्
ऊऱन् मान्दिन रिन्नुरै मान्दिन रूडल्
कूऱन् मान्दिन रन्नैयवर्त् तॊळुदवर् कोबत्
ताऱन् मान्दिन ररक्कियर्क् कुयिरन्न वरक्कर् 126

अरक्कियर्क्कु–राक्षसियों के लिए; उयिर् अन्न–प्राण-सम; अरक्कर्–राक्षसों ने; तेऱल् मान्तिनर्–ताड़ी पी; तेनिचै मान्तिनर्–मधु (मधुर) गीत सुना; चॅव्वाय् ऊऱल्–लाल अधर-रस का; मान्तिनर्–पान किया; इन् उरै–मधुर वाणी का; मान्तिनर्–भोग किया; ऊटल् कूऱल्–रूठन के वचन; मान्तिनर्–सन्तोष के साथ सुने; अन्नैयवर् तॊळुतु–उनको नमस्कार करके; अवर् कोपत्तु आऱल्–उनके कोप का शान्त होना; मान्तिनर्–देख आनन्द पाया। १२६

राक्षसियों के प्राणप्यारे राक्षसों ने उनका दिया मद्यपान किया; मधुमधुर संगीत का (पान) स्वादन किया; लाल अधरों के रस का पान किया। उनकी मीठी वाणी का रस पिया। फिर रूठन के समय के कठोर वचन भी आनन्द के साथ सुन लिये। उस पर उनको नमस्कार करके उनके शान्त होने का मोद-रस भोगा। १२६

ऍऱित्त कुङ्गुमत् तिळमुलै यॆळुदिय तॊयिल्हळ्
कऱुत्त मेऩियिऱ् पॊलिन्दन वूडलिऱ् कनऩ्ऱु
मऱिक्क णोक्कियर् मलरडिप् पङ्गयप् पञ्जिल्
कुऱित्त कोलङ्गळ् पॊलिन्दिल वरक्कर्तङ् गुञ्जि 127

इळमुलै–बाल स्तनों पर; कुङ्कुमत्तु ऍळुतिय–कुंकुम से लिखित; ऍऱित्त–प्रकाशमय; तॊयिल्कळ्–श्रृंगारचित्र; कऱुत्त मेऩियिल्–(राक्षसियों के) काले शरीर पर; पोलिन्तन–शोभे; ऊटलिल् कनऩ्ऱु–रूठन में कोप करके; मऱिक्कण् नोक्कियर्–जो तरेरीं उन मृगनयना राक्षसियों के; पङ्कय मलरटि–पंकज-सम चरणों में; कुऱित्त कोलङ्कळ्–(महावर के) लिखित चित्र; अरक्कर् तम् कुञ्चि–राक्षसों के सिरों पर; पॊलिन्तिल–शोभित नहीं लगे। १२७

स्त्रियों के तरुण स्तनों पर कुंकुम-लेप से चित्रकारी जो बनी थी, उसके उज्ज्वल चित्र राक्षसों के काले शरीर पर लगे और चमके। पर रूठकर गुस्से के साथ देखनेवाली राक्षसी-नारियों के पंकज-चरणों पर चित्रित चित्रकारी राक्षसों के सिर पर लगी (राक्षसियों के प्रणय-कलह की चेष्टा में लात मारने से); पर उनके केशों पर नहीं चमकी (क्योंकि उनके केश का रंग पहले ही लाल था)। १२७

विळरिच् चॊल्लियर् कोदैयाल् वेलैयुण् मिडैन्द
पवळक् काडॆनप् पॊलिन्दडु पडॆनॆडुङ् गण्णाल्
कुवळैक् कोट्टहङ् गडुत्तदु कुळिर्मुहक् कुळुवाल्
मुळरिक् कान्नह मान्नदु मुळङ्गुनी रिलङ्गै 128

मुळङ्कु नीर् इलङ्कै–शब्दायमान समुद्र से वलयित लंका; विळरिच् चॊल्लियर्–'विळरि' नाम की तान के समान बोली वाली; कोतैयाल्–(राक्षसियों के) ताम्र-केशों से; वेलैयुळ् मिटैन्त–समुद्र के अन्दर रहनेवाले; पवळक्काटु–प्रवालवन; ऍन–के समान; पॊलिन्ततु–शोभी; पटै नॆटुम् कण्णाल्–हथियारों-सदृश आयत आँखों के कारण; कुवळै कोट्टकम्–कुवलय-भरे तडाग; कटुत्ततु–के समान रही; कुळिर् मुक कुळुवाल्–उनके शीतल (मनोरम) मुखों के समूहों के कारण; मुळरि कान्नकम् आन्नतु–कमल-वन बनी। १२८

गर्जनशील जलमय सागर के मध्य लंका प्रवाल वन के समान दिखी, वहाँ की 'विळरि' राग के समान मीठी बोलनेवाली राक्षस-नारियों के सिर

के केशों के कारण। उनके हथियार-सम नेत्रों के कारण कुवलयसंकुल जलाशय के समान लगी और शीतल (मनोरम) मुखों को लेकर कमलवन (-सी) बन गयी। १२८

ऍळुन्दनर् तिरिन्दु वैहु मिडत्तदा यिन्ऱु काऱुम्
किळिन्दिल तण्ड मॅन्नु मिदनैये किळप्प दल्लाल्
अळिन्दुनिन् ऱाव दॅन्ने यलरुळो नादि याह
ऑळिन्दवे ऱुयिर्ह ळॅल्ला मरक्करुक् कुऱैयुम् बोदा 129

अण्टम्–यह अण्ड; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; ऍळुन्तनर्–(राक्षस) उठे; तिरिन्तु–घूमे; वैकुम्–और रहे; इटत्तताय्–उनको स्थान देती रही; किळिन्तिलतु–तो भी फटी नहीं; ऍन्नुम् इतनैये–इस बात को; किळप्पतु अल्लाल्–विस्मय के साथ कहने के सिवा; अळिन्तु निन्ऱु–मन में थक जाने से; आवतु ऍन्ने–होगा क्या; अलर् उळोन् आतियाक–कमलासन आदि; ऑळिन्त वेऱु–बाकी अन्य सभी; उयिर्कळ् ऍल्लाम्–जीवराशियाँ; अरक्करुक्कु–राक्षसों के लिए; उऱैयुम् पोता–गिनती के निशान भी नहीं बन सकतीं। १२९

यह अण्ड आज तक राक्षसों के घूमने, फिरने और रहने का स्थान रहकर भी बिना चिरे वैसे ही यथावत रहता है! यह विस्मय प्रकट करके मन को तृप्त कर लेने के सिवाय मन मारे रहने से क्या मिलनेवाला है? कमलासन ब्रह्मा से लेकर सारे जीव लंका के राक्षसों की संख्या के प्रतिनिधि-चिह्न भी नहीं बन सकते। १२९

कायत्तार् पॅरियर् वीरङ् गणक्किल रुलहङ् गल्लुम्
आयत्तार् वरत्तिन् ऱन्मै यळवऱ्ऱा रऱिद ऱेऱ्ऱा
मायत्ता रवर्क्कॅङ् गेनुम् वरम्बुमुण् डामे मऱ्ऱोर्
तेयत्तार् तेयञ् जेऱल् तॅऱुविलार् शॅरुविर् चेऱल् 130

कायत्ताल्–(लंकावासी सभी) आकार में; पॅरियर्–बड़े हैं; वीरम्–वीरता में; कणक्कु इलर्–अमाप है; उलकम् कल्लुम्–पृथ्वी को भी उखाड़नेवाले; आयत्तार्–कार्यचतुर हैं; वरत्तिन् तन्मै–वरों की संख्या; अळवऱ्ऱार्–अनगिनत (वाले) है; अऱितल् तेऱ्ऱा–न जानने योग्य; मायत्तार्–मायावी है; अवर्क्कु वरम्पुम्–उनकी सीमा भी; ऍङ्केनुम् उण्टामे–कहीं हो सकती है क्या; मऱ्ऱोर् तेयत्तार्–अन्य देश के लोगों का; तेयम् चेऱल्–इस देश में पहुँचना; तॅऱुविलार्–बलहीन लोगों का; चॅरुविल् चेऱल्–युद्ध में जाना (सा) होगा। १३०

लंका नगर के राक्षस आकार में बड़े हैं। वीरता में भी अमाप हैं। ससार को ही खोद लेने का उपाय रच सकनेवाले है। उनसे प्राप्त वरों की गणना नहीं। ऐसे माया-कार्य करनेवाले, जिन्हें दूसरे जान नहीं सकते। उनकी सख्या या वीरता की सीमा भी है? अन्य देशवासियों का इस लंका

में आना युद्ध-सामर्थ्य न रखनेवाले दुर्बलों का युद्ध में जाने के समान होगा। (तॆरुविलार् चॆरुविऱ् चेऱल्— का यह अर्थ है। पाठान्तर तॆरुविलोर् तॆरुविऱ् चेऱल्— का अर्थ होगा— एक वीथी से दूसरी वीथी में जाना देश से देश जाने के समान होगा।) । १३०

कऴलुलाङ् गालुङ् गाल वेलुलाङ् गैयुम् कान्ऱुम्
अऴलुलाङ् गण्णु मिल्ला वाडव रिल्लै यन्नार्
कुऴलुलाङ् गळिवण् डार्क्कुङ् गुञ्जियार् पञ्जि कुन्ऱा
मऴलैयाऴ्क् कुदलैच् चॆव्वाय् मादरु मिल्लै मादो 131

कऴल् उलाम्–पायलें जिन पर हिलती रहती हैं; कालुम्–वे पैर और; काल वेल्–यम-से भाले; उलाम् कैयुम्–जिनमें क्रियाशील रहते हैं वे हाथ; कान्ऱुम् अऴल्–धधकती आग; उलाम्–जिनमें जलती रहती है; कण्णुम्–वे आँखें; इल्ला–जिनके नहीं हैं; आटवर् इल्लै–ऐसे पुरुष नहीं हैं; अन्नार्–उनके; कळि वण्डु–मत्त भ्रमर; आर्क्कुम्–जिन पर गुंजार करते (मँड़राते) हैं; कुऴल् उलाम्–घुँघुराले और हिलनेवाले; कुञ्चियाल्–केशों से; पञ्चि कुन्ऱा–महावर जिनका पोंछा नहीं गया हो; मऴलै याऴ् कुतलै–(ऐसी) सुस्वर वीणा की-सी बोली और; चॆव्वाय्–लाल अधरों वाली; मातरुम्–स्त्रियाँ; इल्लै–नहीं है। १३१

वहाँ ऐसे पुरुष नहीं पाये जाते जिनके पैरों में पायलें रहकर नहीं हिलतीं; जिनके हाथों में यम के समान भयंकर भाले नहीं घूमते; और जिनकी आँखों में आग (तेज़) नहीं जलती। ऐसी राक्षस-नारियाँ भी पायी नहीं जाती, जो मधुर वीणा के स्वर के समान मीठी वाणी और लाल अधरों से युक्त नहीं थी और जिनके चरणों का महावर उन पुरुषों के मदमत्त भ्रमरों से गुञ्जित और लच्छेदार केशों द्वारा मिटा नहीं हो। १३१

कळ्ळुऱक् कत्तिन्द पङ्गि यरक्करैक् कडुत्त कादल्
पुळ्ळुऱत् तॊडरु मेनि पुलालुऱक् कडिदु पोव
वॆळ्ळुरुप् पॆयिऱ्ऱ चॆय्य तलैयिन करिय मॆय्य
उळ्ळुरुक् कळित्त कुन्ऱि नुयर्च्चिय वोडै यात्तै 132

ओटै यात्तै–मुखपट्टों से अलंकृत गज; कातल्–चाह के साथ; पुळ् उऱ–भ्रमर साथ लगकर; तॊटरुम्–जिनके पीछे जाते हैं; मेनि–शरीर; पुलाल् उऱ–मांस-गन्ध से युक्त है, जैसे; कटितु पोव–तेज़ी से जाते हैं; वॆळ् उरुप्पु ऍयिऱ्ऱ–श्वेत दाँत वाले हैं; चॆय्य तलैयिन–ताम्र रंग के सिर वाले हैं; करिय मॆय्य—काले शरीर वाले हैं; उळ् उऱ–अन्दर से; कळित्त–मोद-भरे हैं; कुन्ऱिन् उयर्च्चिय–पर्वत-सम ऊँचे हैं; कळ् उऱ–शहद-सम; कत्तिन्त–लाल; पङ्कि–केश वाले; अरक्करै–राक्षसों; कटुत्त–के समान हैं। १३२

मुखपट्टालंकृत गज तेज़ भागते हैं। उनके शरीर से मांस की गन्ध निकलती है और कामना के साथ भ्रमर उनके पीछे चलते हैं। वे श्वेतवर्ण

दाँतों वाले हैं; लाल सिरों वाले काले शरीरी; मन में मस्ती लिये हुए; पर्वत के समान ऊँचे। इससे वे शहद के समान लाल रंग वाले केशों से युक्त राक्षसों के समान लगते थे। १३२

वळ्ळिनुण् मरुङ्गु लॅन्न वानवर् महळि रुळ्ळम्
तळ्ळुरप् पाणि तळ्ळा नडम्बुरि तडङ्गण् मादर्
वॅळ्ळिवॅण् मुरुव रोन्ऱ मुहत्तियर् वॅळ्हु हिन्ऱार्
कळ्ळिशै यरक्कर् मादर् कळित्तिडु कुरवै काण्बार् 133

वळ्ळि–लता-समान; नुण् मरुङ्कुल् ॲन्न–अपनी क्षीण कमरों के समान; उळ्ळम् तळ्ळुर–मन के लचकते; पाणि तळ्ळा नटम्–तालबद्ध नृत्य; पुरि–करनेवाली; तटङ्कण् मातर्–आयतनयना स्त्रियाँ; वानवर् मकळिर्–देवांगनाएँ; वॅळ्ळि वॅण्–चाँदी-सम श्वेत; मुरुवल्–हास; तोन्ऱम्–जिन पर प्रकट है; मुकत्तियर्–ऐसे मुख वाली; वॅळ्कुकिन्ऱार्–लजाते हुए; कळ् इच–ताड़ी पीकर गानेवाली; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियों के; कळित्तिटु कुरवै–किये 'कुरवै' नाम के नाच को; काण्पार्–देखती है। १३३

सुरनंदिनियाँ राक्षस-कुमारियों का 'कुरवै' नृत्य लज्जा का अनुभव करती हुई देख रही हैं। विशाल आँखों वाली देवांगनाएँ अपनी कमरों के समान लचकते मन के साथ तालबद्ध लय-सहित नाच सकनेवालियाँ हैं। वे अब श्वेत दाँतों को प्रकट करती हुई उनका नाच देख रही हैं! 'कुरवै' नृत्य में स्त्रियाँ परस्पर तालियाँ पीटते हुए नाचती है। (देवांगनाएँ इसलिए लज्जा का अनुभव करती और मन्दहास करती है कि वे राक्षसियाँ नशे में रहती है और उनके शरीरों पर वस्त्र ठीक नहीं रहते।)। १३३

ऑरुत्तलो निऱ्क मऱ्ऱॅम् मुयर्पडैक् कॉरुङ्गिव् वूर्वन्
दिरुत्तलु मॅळिदा मऱ्ऱम् यावर्क्कु मियक्क मुण्डे
करुत्तवा ळरक्कि मारु मरक्करुङ् गळित्तु वीशि
वॅरुत्तपूण् वॅरुक्कै याले तूरुमिव् वीदि यॅल्लाम् 134

ऑरुत्तलो निऱ्क–युद्ध करना एक ओर रहे; ॲम् उयर् पटैक्कु–हमारी श्रेष्ठ (वानर) सेना के लिए; इव्वूर्–इस नगर में; ऑरुङ्कु वन्तु–एक साथ आकर; इरुत्तलुम्–आ पहुँचना भी; ॲळितु आम्–सुलभ हो सकता है; मऱ्ऱम्–तो भी; यावर्क्कुम्–उन सबके लिए; इयक्कम् उण्टे–संचार के लिए स्थान मिलेगा क्या; करुत्त वाळ्–काली छटा से युक्त; अरक्कि मारुम् अरक्करुम्–राक्षसियों और राक्षसों ने; कळित्तु–उतारकर; वीचि वॅरुत्त–जिनको फेंक दूर किया है; पूण् वॅरुक्कैयाले–आभरणों की पुष्कल राशि से; इ वीति ॲल्लाम्–ये सारी वीथियाँ; तूरुम्–पट गयी है। १३४

(हनुमान सोचता है—) हमारी सेना का इधर आकर युद्ध करना एक ओर रहे; शायद उनका एकत्र होकर इधर आना सुगम होगा। पर

उन वीरों के लिए इधर चलना-फिरना सुगम होगा क्या ? सभी वीथियाँ तो उन आभरणों से पटी हुई हैं, जिनको काले प्रकाश वाले राक्षसों और राक्षसियों ने उकताकर उतार फेंका था। १३४

वडङ्गळुङ् गुऴैयुम् बूणु मालैयुञ् जान्दुम् यानैक्
कडङ्गळुङ् गलिन मावि लाऴियुङ् गणक्कि लाद
इडङ्गऴि निडङ्ग डोरुम् यार्रॊडु मडुत्त वॆल्लाम्
अडङ्गिय दॆन्नि लॆन्ने याऴियि नाऴ्न्द दुण्डो 135

वटङ्कळुम्–हार और; कुऴैयुम्–कुण्डल और; पूणुम्–आभरण; मालैयुम्–मालाएँ; चान्तुम्–चन्दन; यानैक् कटङ्कळुम्–गजों के मदनीर की धाराएँ; कलित्त मा–रास से युक्त अश्वो की; विलाऴियुम्–लार और झाग; कणक्किलात–अमाप है; इटङ्कऴिन् इटङ्कळ् तोरुम्–अनेक स्थलो में; यार्रॊटु मटुत्त–नदियों से मिलकर; ऍल्लाम्–सभी; अटङ्कियतु ऍन्निन्–(इस समुद्र में) समा गये तो; आऴियिन् आऴ्न्ततु–इस समुद्र से अधिक गहरा; ऍन्ने उण्टु–क्या ही है। १३५

(इस पद्य में समुद्र की गहराई का संकेत है।) हार, कुण्डल, आभरण, पुष्प-मालाएँ, चन्दन, हाथियों का मदजल, लगाम-लगे अश्वों के मुख से निकलनेवाला झाग —ये सब यत्र-तत्र अत्यधिक परिमाण में नदियों से मिलकर समुद्र में आ समाहित हो गये। तो उस समुद्र से गहरा क्या है ? । १३५

विऱ्पडै पॆरिदॆन् गेनो वेऱ्पडै मिहुमॆन् गेनो
मऱ्पडै युडैत्तॆन् गेनो वाट्पडै मलिवॆन् गेनो
कऱ्पणन् दण्डु पिण्डि पालमॆन् ऱिनैय कान्दु
नऱ्पडै पॆरिदॆन् गेनो नायहऱ् कुरैक्कु नाळिल् 136

नायकऱ्कु–अपने स्वामी से; उरैक्कुम् नाळिल्–जब कहूँ तब; विऱ्पटै–धनुर्धर वीरों की सेना; पॆरितु–बड़ी है; ऍन्केनो–कहूँ क्या; वेऱ्पटै–भालाधारी वीरों की सेना; मिकुम् ऍन्केनो–अधिक है कहूँ; मल् पटै उटैत्तु–मल्लों की सेना रखता है; ऍन्केनो–कहूँ; वाळ् पटै–तलवार-धारी वीरों की सेना; मलिवु ऍन्केनो–अधिक है कहूँ; कऱ्पणम्–काँटेदार गदा; तण्टु–दण्ड; पिण्टिपालम्–भिंदिपाल; ऍन्ऱु–आदि; इनैय कान्तुम्–ऐसे हथियारो से भूषित; नऱ्पटै–(वीरों की) अच्छी सेना; पॆरितु–बड़ी है; ऍन्केनो–कहूँ क्या। १३६

(हनुमान अपने आप कहने लगा।) जब मैं अपने स्वामी श्रीराम से जा मिलूँ और यहाँ की सेना-स्थिति बताऊँ तो क्या कहूँगा ? धनुर्धर वीरों की सेना बड़ी है, कहूँ ? या भालाधारी वीरों की सेना बड़ी है —कहूँ ? मल्लों की सेना को बड़ा कहूँ या तलवारधारी वीरों की सेना को ? या यही कहूँगा कि 'कर्पणम्' नामक काँटेदार गदा, दण्ड, भिंदिपाल आदि चलानेवाले वीरों की सेना बड़ी है ? । १३६

ऍन्ऱ्ऱ तिलङ्गै नोक्कि यिनैयन पिऱवु मॅण्णि
निन्ऱव णरक्कर् वन्दु नेरिनु नेर्व रॅन्नात्
तन्ऱहै यरिय मेनि शुरुक्कियच् चारल् शार्न्दु
कुन्ऱिडै यिरुन्दान् वॅय्योन् कुडकडर् कुळिप्प दानान् 137

इलङ्कै नोक्कि–लंका को देखकर; ऍन्ऱ्ऱनन्–ऐसा कहते हुए; इनैयन–यों; पिऱवुम्—और अन्य बातें; ऍण्णि निन्ऱ्–सोचते हुए खड़े रहकर; अवण्–वहाँ; अरक्कर् वन्तु–राक्षस आकर; नेरितुम्–मिले तो; नेर्वर्–मिल सकेंगे; ऍन्ऩा–सोचकर; तन् तकै अरिय–अपने ही सम अपूर्व; मेनि–शरीर को; चुरुक्कि–संग्रह करके; अ कुन्ऱिटै–उस (प्रवाल) पर्वत के; चारल्–पार्श्व में; चार्न्तु इरुन्तान्–जाकर रहा; वॅय्योन्–किरणमाली; कुट कटल्–पश्चिमी सागर में; कुळिप्पतु आनान्–डूबने लगा। १३७

हनुमान प्रवाल पर्वत पर विराजे हुए यह सब सोच रहा था। तब उसे विचार आया कि राक्षस लोग वहाँ आ सकेंगे —इसकी सम्भावना है। इसलिए उसने अपने आकार को, जो उसके उन्नत स्वभाव के ही अनुरूप बड़ा था, छोटा कर लिया। फिर वह पर्वत के पाश्र्वस्थल में जाकर रहा। तभी उष्णकिरण सूर्य भी पश्चिमी सागर मे डूबा। १३७

एय्विनै यिरुदियिड् चॅल्व मॅय्दिनान्
आय्विनै मनत्तिला नऱिजर् शॉऱ्कॉळान्
वीविनै निनैक्किला नॉरुवन् मॅय्यिलान्
तीविनै यॅनविरुळ् शॅऱिन्द दॅङ्गुमे 138

एय्विनै–पूर्वकर्म से; इऱुति इल् चॅल्वम्–अपार धन; ऍय्तिनान्–जिसे प्राप्त हो; मनत्तु आय्विनै–मन मे सोचकर कार्य करनेवाला; इलान्–जो नहीं है; अऱिजर् चॉल्–विद्वानों का कहना; कॉळान्–जो ग्रहण नहीं करता; वीविनै–अपने मरण को; निनैक्किलान्–जो नही सोचता; मॅय्यिलान्–जो सत्यसंध नहीं; ऑरुवन्–ऐसे एक के; तीविनै अॅन–पाप के समान; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; इरुळ्–अन्धकार; चॅऱिन्ततु–घने रूप से छा गया। १३८

तब अन्धकार छाने लगा। वह अन्धकार उस पापी के पाप के समान फैला जिसके पास पूर्व-सुकृत्य के फलस्वरूप धन मिला था; पर जिस अविवेकी असत्यवादी और ज्ञानी के उपदेशों को न सुननेवाले ने अपने सम्भाव्य मरण की वात भी नहीं सोची और पापकर्म करना आरम्भ कर दिया। १३८

करित्तमुन् ऱॅयिलुडैक् कणिच्चि वानवन्
ऍरित्तलै यन्दण रिळैत्त यानैये
उरित्तपे रुरिवैया लुलहुक् कोरुऱै
पुरित्तन तान्मुह नॅन्नुम् वीऱपदे 139

करित्तुत मून्ऱु ऍयिल्–दग्ध-त्रिपुर; उट्टै–जिनके द्वारा बना; कणिच्चि वात्तवन्–"तप्त लोहा" के आयुध-धारी देव श्री शिवजी ने; ऍरितलै–यागाग्नि में; अन्तणर्–(दारुका वन के) ऋषियों ने; इळैत्तत–जिसको सृष्ट किया; यात्तैयै–उस गज को; उरित्तुत–उधेड़कर; पेर् उरिवैयाल्–उस बड़े चर्म से; नान्मुकन् उलकुक्कु–चतुर्मुख-सृष्ट इस संसार पर; ओर् उऱै पुरित्ततन्–एक चादर उढ़ा ली; ऍन्नुम्–ऐसा कहने योग्य; पोऱ्पतु–रीति का था (वह अन्धकार)। १३९

दारुका वन के ऋषियों ने त्रिपुरांतक, परशु (या तप्त लोहे को हथियार के रूप में) रखनेवाले शिवजी को मारने के लिए होमाग्नि में एक हाथी को सृष्ट कराया था। शिवजी ने उस गज को मारकर उसका चर्म उधेड़ लिया। अब यह अंधकार उस गजचर्म के समान था, जिसे शिवजी ने चतुर्मुखरचित संसार पर उढ़ा दिया हो। १३९

अणङ्गरा वरशर्हो नलवि लाण्डॅलाम्
पणङ्गिळर् तलैतोऱु मुयिर्त्तत पाय्विडम्
उणङ्गलि लुलहॅला मुऱैयि नुण्डुवन्
दिणङ्गॉरि पुहैयॊडु मॅळुन्द दॅन्नवे 140

अणङ्कु अरा–परपीड़क सर्पों का; अरचर् कोन्–राजा ने; अळविल् आण्टु ऍलाम्–असंख्यक वर्षों से; पणम् किळर् तलै तोऱुम्–खुले फनों के अपने सिरों से; उयिर्त्तत–जो निकाला; पाय् विटम्–वह बहनेवाला विष; उणङ्कल् इल्–अक्षय; उलकॅलाम्–लोकों को; मुऱैयिन्–क्रम से; उण्टु वन्तु–नाश करके आकर; इणङ्कु–मिलित; ऍरि पुकैयॊटुम्–आग और धुएँ के साथ; ऍऴुन्ततु–छा उठा हो; ऍन्नवे–इस रीति से (छाया)। १४०

और भी वह अंधकार विष के समान भी लगा। कष्टदायक सर्पों के राजा आदिशेषनाग के खुले फनों वाले सिरों से अब तक जितना विष निकला था वह सब मिलकर अक्षय लोकों को क्रम से लीलकर आया हो और आग और धुएँ के साथ छा उठा हो—ऐसा लगा वह अंधकार। १४०

वण्मैनीङ् गानॅडु मरबिन् वन्दवप्
पॆण्मैनीङ् गादहर् पुडैय पेदैयैत्
तिण्मैनीङ् गादवन् शिऱैवैत् तान्ऩुम्
वॆण्मैनीङ् गियपुहऴ् विरिन्द दॅन्नवे 141

वण्मै नीङ्का–दानशीलता से जो रहित न हुआ; नॅटु मरपिन् वन्त–उस लम्बे कुल में उत्पन्न; अ पॆण्मै नीङ्कात–उस स्त्रीत्व-संयुक्त; कऱ्पुटैय पेतैयै–चरित्रवती अबोध बाला सीताजी को; तिण्मै नीङ्कातवन्–जो बलहीन नहीं रहा उस (सबल रावण) ने; चिऱै वैत्तान्–कारागृह में बन्द किया; ऍन्नुम्–यह; वॆण्मै नीङ्किय पुकऴ्–(असित यश =) निन्दा; विरिन्ततु–फैली; ऍन्नवे–जैसे (अन्धकार फैला)। १४१

वह अन्धकार प्रकाश (गौरव) से रहित उस अपयश के समान फैला कि दानशीलता से अविच्छिन्न दीर्घ कुल में उत्पन्न और स्त्रीत्व के गौरव से अत्यक्त चरित्रवती सती सीता को अबलहीन रावण ने कठोर कारा में बन्द कर रखा। (वॆण्मै नीङ्किय पुकऴ् की शब्द-योजना अनूठी है। उसका सीधा अर्थ 'यश, जिससे श्वेतता दूर हो गयी हो' —है)। १४१

अव्वऴि यव्विरुळ् परन्द वायिडै
अॆव्वऴि मरुङ्गिनु मरक्क रॆय्दिनार्
शॆव्वऴि मन्दिरत् तिशैय राहैयाल्
वॆव्वऴि यिरुडर मदित्तु मीच्चॆल्वार् 142

अ वऴि–उस रीति से; अ इरुळ्–वह अन्धकार; परन्त आ इटै–जब फैला तब; अरक्कर्–राक्षस; अॆ वऴि मरुङ्कितुम्–सब स्थानों में; अॆय्तितार्–आये; मन्तिर चॆम् वऴि–मन्त्रों के बल से अच्छे मार्ग बनाकर; तिचैयर्–सभी दिशाओं में जा सकनेवाले होने के कारण; वॆम् इरुळ् वऴि तर–भयंकर अन्धकार ने भी मार्ग दिया; मतित्तु–उसका मथन करके; मी चॆल्वार्–आगे गये। १४२

जब अन्धकार वैसा फैल रहा था तब राक्षस सब स्थानों में आ गये और मन्त्रबल से जाने का सामर्थ्य रखने के कारण अन्धकार उन्हें रोक नहीं सका; बल्कि उसने मार्ग दिये। वे उस अन्धकार को रौंदते और पीसते हुए आगे जाने लगे। १४२

इन्दिरन् वळनहर्क् केहु वारॆऴिल्, चन्दिर नुलहिनैच् चार्हु वार्शलत्
तन्दह नुरैयुळै यणुहु वारयिल्, वॆन्दॊऴि लरक्कन देवन् मेयिनार् 143

अयिल्–भालाधारी; वॆम् तॊऴिल्–क्रूरकर्मा; अरक्कततु–राक्षस रावण की; एवल् मेयितार्–आज्ञा धारण कर; इन्तिरन् वळ नकर्क्कु–इन्द्र के समृद्ध नगर; एकुवार्–जाते; अॆऴिल्–सुन्दर; चन्तिरन् उलकितै–चन्द्रलोक; चार्कुवार्–पहुँचते; चलत्तु–कोपिष्ठ; अन्तकन् उरैयुळै–यम के वासस्थान के; अणुकुवार्–निकट जाते। १४३

वे राक्षस क्रूरकर्मा रावण के आज्ञाकारी थे। वे इन्द्र के समृद्ध नगर जाते; सुन्दर चन्द्रलोक पहुँचते। क्रोधशील यम के वासस्थान में ही जा पहुँचते थे। १४३

पॊन्नहर् मडन्दैयर् विज्जैप् पूवैयर्
पन्नह वनिदैय रियक्कर् पावैयर्
मुन्तिनर् पणिमुरै मारि मुन्दुवार्
मिन्निन मिडैन्दॆन विशुम्बिन् मेर्चॆल्वार् 144

पॊन्तकर् मटन्तैयर्–सुररमणियाँ; विज्चै पूवैयर्–विद्याधर-विलासिनियाँ; पन्तक

वऩ्तियर्-पन्नग-कन्याएँ; इयक्कर् पावैयर्-यक्षनन्दिनियाँ; पणि मुऱ्ऱै माऱ्ऱि-अपनी सेवाएँ पूरा करके; मुऩ्ऩित्तर्-एक के पहले एक; मुऩ्ऩुवार्-लौट जातीं; मिऩ् इऩम् मिटैन्ऩत्त-बिजली के समूह एकत्र हो जाएँ, जैसे; विचुम्पिऩ् मेल्-आकाश में; चॆल्वार्-गयीं। १४४

सुरनन्दिनियाँ, विद्याधरबालाएँ, पन्नगकन्याएँ, यक्षकुमारियाँ —ये सब लंका में अपनी सेवाएँ समाप्त करके एक के पहले एक अपने-अपने स्थान को जा रही थीं। वे बिजलियों के समूह के समान आपस में मिलकर आकाशमार्ग में जा रही थीं। १४४

तेवरु	मवुणरुञ्	जॆङ्ग	णाहरुम्
मेवरु	मियक्करुम्	विञ्जै	वेन्दरुम्
एवरुम्	विशुम्बिरु	ळिरिय	वीण्डिनार्
तावरुम्	बणिमुऱ्ऱै	तळुवुन्	दऩ्मैयार् 145

ता अरुम्-निरन्तर; पणि मुऱ्ऱै तऴुवुम्-सेवा-क्रम अपनाने के; तऩ्मैयार्-स्वभाव वाले; तेवरुम् अवुणरुम्-देव और दानव; चॆम् कण् नाकरुम्-लाल आँखों के नाग लोग; मेवरुम् इयक्करुम्-प्यारे लगनेवाले यक्षगण और; विञ्चै वेन्तरुम्-विद्याधर राजा; एवरुम्-आदि सभी; विचुम्पु इरुळ् इरिय-आकाश से अन्धकार को दूर करते हुए; ईण्टिऩार्-एकत्रित हुए। १४५

देवता लोग, दानव, लाल आँखों वाले नाग, मोहक शरीर वाले यक्ष, विद्याधर राजा आदि विविध देव जातियों के समूह भी आकाश में अन्धकार को दूर करते हुए जा रहे थे। वे सब बिना भूल-चूक के अपनी-अपनी सेवाएँ पूरा करके जा रहे थे। १४५

चित्तिरप्	पत्तियिऱ्	ऱेवर्	चॆऩ्ऱनर्
इत्तुणै	ताऴ्त्तनम्	मुऩियु	मॆऩ्ऱुतम्
मुत्तिना	रङ्गळुम्	मुडियु	मालैयुम्
उत्तरी	यङ्गळुम्	शरिय	वोडुवार् 146

चित्तिर पत्तियिल्-चित्रों की पंक्तियों में जैसे; चॆऩ्ऱतर्-जो गये; तेवर्-वे देव लोग; इ तुणै ताऴ्त्तत्तम्-इतनी देर विलम्ब कर लिया; मुऩियुम्-गुस्सा करेगा (रावण); ऍऩ्ऱु-ऐसा सोचकर; तम् मुत्तिऩ् आरङ्कळुम्-उनके मुक्ताहार और; मुटियुम्-किरीट; मालैयुम्-मालाएँ; उत्तरीयङ्कळुम्-और उत्तरीय; चरिय-इनको गिरने देते हुए; ओटुवार्-भागते चले। १४६

चित्रों की पंक्तियों के समान वे देव जाते रहे। "आज इतना विलम्ब हो गया; रावण कुपित होगा।" इस विचार से वे इतनी त्वरित गति से भागे कि उनके मुक्ताहार, किरीट, पुष्पमालाएँ और उत्तरीय शरीर पर से खिसककर नीचे गिरते जाते थे। १४६

तीण्डरुन् दीविनै तीक्कत् तीन्दुपोय्
माण्डऱ़ वुलर्न्ददु मारु दिप्पॆयर्
आण्डहै मारिवन् दळिक्क वायिडै
ईण्डऱ़ मुळैत्तॆन मुळैत्त दिन्दुवे 147

तीण्ट अरुम्–जिनके पास जाना असम्भव है; तीवित्तै तीक्क–उन पापों के जलाने से; अऱ़म्–धर्म; तीन्तु पोय्–जल गया और; माण्टु–मरकर; अऱ़ उलर्न्ततु–पूरा-पूरा सूख गया; मारुति पॆयर्–मारुति नामक; आण्टकै मारि–पुरुषश्रेष्ठ रूपी वर्षा ने; वन्तु अळिक्क–आकर कृपा की, इससे; आयिटै–तब; ईण्टु (अऱ़म्) मुळैत्तु–फिर से (धर्म) अंकुरित हुआ; ॲॆन्त–ऐसा कहने योग्य रीति से; इन्तु मुळैत्ततु–चन्द्र उग आया। १४७

(तब चन्द्र उग आया— उसका वर्णन देखिए।) मानो धर्म को अस्पृश्य भयंकर पाप ने जला दिया। वह जला, मरा और एक दम सूख गया। अब मारुति नाम की वर्षा ने आकर कृपा बरसायी तो वह फिर से जीवित हो आया। उस धर्म के जैसे इन्दु उदित हुआ। १४७

वन्दन निराहवन् ऱूदन् वाऴ्न्दनन्
ऎन्दैये यिन्दिर नामॆन् ऱॆमुऱ़ा
अन्दमिल् कीऴ्त्तिशै यळह वाणुदल्
शुन्दरि मुहमॆनप् पॊलिन्दु तोन्ऱिऱ़्ऱे 148

इराकवन् तूतन् वन्ततन्–श्रीराघव-दूत आया; ॲॆन्तैये इन्तिरन्–हमारे धाता इन्द्र; वाऴ्न्ततन् आम्–जीवन्त हो गये; ॲॆन्ऱ़ु–कहकर; एमुऱ़ा–मुदित होकर; अन्तम् इल् कीऴ्त्तिचै–अनन्त पूर्व दिशा रूपी; अळक वाळ् नुतल्–अलकावृत उज्ज्वल भाल वाली; चुन्तरि–सुन्दरी के; मुकम् ॲॆन–आनन के समान; इन्तु–चन्द्र; पॊलिन्तु तोन्ऱिऱ़्ऱ़ु–शोभायमान लगा। १४८

वह चन्द्र पूर्वदिशा रूपी श्वेत भाल वाली सुन्दरी के मुख के समान शोभा, जो इस विचार से प्रफुल्लित हुई थी कि श्रीराघव का दूत आ गया और मेरे धाता इन्द्र जीवन्त हो गये। १४८

कऱ़्ऱैवॆण् कवरिपोल् कडलिन् वॆण्डिरै
चुऱ़्ऱुनिन् ऱलमरप् पॊलिन्दु तोन्ऱिऱ़ाल्
इऱ़्ऱदॆन् पहैयॆन वॆऴुन्द विन्दिरन्
कॊऱ़्ऱवॆण् गुडैयॆनक् कुळिर्वॆण् डिङ्गळे 149

ॲॆन् पकै–मेरा शत्रु; इऱ़्ऱतु–मिट गया; ॲॆन ॲॆऴुन्त–ऐसा सोचकर जो उठा; इन्तिरन्–इन्द्र के; वॆण् कॊऱ़्ऱ कुटै ॲॆन–श्वेत विजय-छत्र के समान; कुळिर् वॆण् तिङ्कळ्–शीतल श्वेत चन्द्र; कटलिन् वॆण् तिरै कऱ़्ऱै–समुद्र की श्वेत तरंगों के समूह के; वॆण् कवरि पोल्–श्वेत चँवर के समान; चुऱ़्ऱुम् निन्ऱ़ु–चारों ओर रहकर; अलमर–हिलते; पॊलिन्तु तोन्ऱिऱ़्ऱ़ु–शोभायमान प्रकट हुआ। १४९

वह चन्द्र इन्द्र के विजयी श्वेत छत्र के समान उगा जो इस विचार से प्रफुल्लित हो उठे थे कि अब मेरा शत्रु मिट गया। जैसे उस छत्र के आसपास चँवर डुलाये जाते है और हिलते हैं, वैसे ही इस उदीयमान चन्द्र के चारों तरफ़ समुद्र की श्वेत तरंगें लहर रही थीं। १४९

तॅरिन्दॊळिर् तिङ्गळ्वॅण् कुडत्ति नाऱ्ऱिरै
मुरिन्दुयर् पाऱ्कडऩ् मुहन्दु मूरिवाऩ्
शॊरिन्ददे यामॅनत् तुळ्ळि मीऩॊॅडुम्
विरिन्ददु वॅण्णिला मेलुङ् गीऴुमे 150

वॅण्णिला–श्वेत चाँदनी; मूरि वाऩ्–बड़ा आकाश; तेरिन्तु–जान-बूझकर; ऑळिर् तिङ्कळ्–ज्वलन्त चन्द्र रूपी; वॅण् कुटत्तिऩाल्–सफ़ेद घट द्वारा; तिरै मुरिन्तु उयर्–जिसमें लहरें टूटकर गिरतीं और फिर उठती हैं; पाल् कटल् मुकन्तु–उस क्षीर-सागर से भरकर; चॊरिन्तते आम् ॲऩ–उलीच रहा हो, ऐसा; तुळ्ळि मीऩॊटुम्–बूँदों रूपी नक्षत्रों के साथ; मेलुम् कीऴुम्–ऊपर और नीचे; विरिन्ततु–फैली। १५०

(चाँदनी कैसी थी?) मानो बड़े आकाश ने सोच-विचारकर उज्ज्वल चन्द्र रूपी घट में उठती-गिरती लहरों से भरे क्षीरसागर से क्षीर भर लेकर उड़ेल दिया। नक्षत्र रूपी बूँदों के साथ वह चाँदनी ऊपर-नीचे सब जगह फैली। १५०

अरुन्दवऩ् शुरबिये यादि वाऩमा
विरिन्दपे रुदयमा मडिवॅण् डिङ्गळा
वरुन्दलिल् पशुङ्गदिर् वऴङ्गु तारैयाच्
चॊरिन्दपा लॊत्तदु निलविऩ् ऱोऱ्ऱमे 151

अरुन्तवऩ् चुरपिये–अपूर्व तपस्वी वसिष्ठ की सुरभि हो; आति वाऩमा–क्षितिज हो; मटि–उसका थन; विरिन्त पेर् उतयमाम्–विशाल और बड़े 'उदय' का; वॅण् तिङ्कळा–श्वेत चन्द्र हो; वरुन्तलिल्–विना कष्ट के; वऴङ्कु तारै–निकलनेवाली (दुग्ध) धारा ही; पचुम् कतिरा–चन्द्र की बालकिरणें हों; चॊरिन्त पाल् ऑत्ततु–ऐसे गिरे दूध के समान रहा; निलविऩ् तोऱ्ऱम्–चाँदनी का दृश्य। १५१

(कवि की कल्पना में वह चाँदनी सुरभि के दूध के समान भी थी।) अतिश्रेष्ठ तपस्वी (वशिष्ठ मुनि) की कामधेनु ही अन्तरिक्ष बनी हो; उसका थन बड़ा श्वेत चन्द्र हो; उससे अनायास निकलनेवाले दूध की धारा ही चाँदनी हो—ऐसा लगा वह चाँदनी का दृश्य। १५१

ऑण्णुडै यनुमऩ्मे लिऴिन्द पूमऴ
मण्णिडै वीऴ्हिल मऱित्तुम् बोहिल
अण्णल्वा ळरक्कऩै यञ्जि यायुहदिर्
विण्णिडैत् तॊत्तिन पोऩ्ऱ मीऩॆलाम् 152

मीऩ् ऍलाम्–आकाश के नक्षत्र सब; ऍण् उटै–कर्तव्य की चिन्ता में रत; अनुमऩ् मेल्–हनुमान पर; इऴिन्त पू मऴै–गिरी पुष्प-वर्षाएँ हैं; अण्णल् वाळ् अरक्कऩै–गौरवयुक्त तलवारधारी राक्षस (रावण) से; अञ्चि–डरकर; मण्णिटै वीऴ्किल–भूमि पर नहीं गिरीं; मऱित्तुम् पोकिल–लौटकर ऊपर भी नहीं गयीं; आय् कतिर्–शुद्ध किरणों से युक्त; विण् इटै–अन्तरिक्ष में; तॊत्तिऩ पोऩ्ऱ–लटकती जैसे लगीं। १५२

आकाश में तारे प्रकट हुए। वे कर्तव्य-रत हनुमान के ऊपर देवों द्वारा बरसाये गये पुष्पों के समान लगे, जो तलवारधारी रावण से डरकर न नीचे पृथ्वी पर गिरे, न ऊपर ही जा सके और जो बीच में लटके रहे। १५२

ऍल्लियि ऩिमिरिरुट् कुऱैयु मिव्विरुळ्
कल्लिय निलविऩ्वॆण् मुऱियुङ् गौविऩ
पुल्लिय पहैयॆऩप् पॊरुव पोऩ्ऱऩ
मल्लिहै मलर्तॊऱुम् वदिन्द वण्डॆलाम् 153

मल्लिकै मलर् तॊऱुम्–चमेली के सभी फूलों पर; वतिन्त वण्टु ऍलाम्–जो रहे वे सभी भ्रमर; ऍल्लियिऩ्–रात के; निमिर् इरुळ् कुऱैयुम्–भरे अन्धकार के खण्ड; इ इरुळ् कल्लिय–इस अन्धकार द्वारा खोदकर लिये गये; निलविऩ् वॆण् मुऱियुम्–चाँदनी के सफ़ेद खण्ड; कौविऩ–आपस में दाँतों से पकड़ लेकर; पुल्लिय पकै ऍऩ–पकड़ में आये शत्रुओं के समान; पॊरुव पोऩ्ऱऩ–झगड़ते जैसे लगे। १५३

चमेली के फूलों पर भ्रमरों को देखकर ऐसा लगा, मानो रात में व्याप्त अन्धकार के खण्ड और उस अन्धकार को नोचनेवाली चाँदनी के खण्ड आपस में प्रबल शत्रुता के साथ परस्पर ग्रसकर भिड़ रहे हों। १५३

वीशुऱु पशुङ्गदिर्क् कऱ्ऱै वॆण्णिला
आशुऱ वॆङ्गणु नुऴैन्द ळायदु
काशुऱु कडिमदि लिलङ्गैक् कावलूर्त्
तूशुऱै यिट्टदु पोऩ्ऱु तोऩ्ऱिऱ्ऱे 154

पचुम् कतिर् कऱ्ऱै–शीतल किरणों की राशियों को; वीचुऱु वॆण् निला–छिटकानेवाली श्वेत चाँदनी; आचु उऱ–शीघ्रता से; ऍङ्कणुम् नुऴैन्तु–सर्वत्र घुसकर; अळायतु–फैली जो; काचु उऱु–रत्नजड़ित; मतिल् इलङ्कै–प्राचीरों की (घिरी) लंका; कटि कावल् ऊर्–(के) सुरक्षित नगर के; तूचु उऱै–वस्त्रावरण; इट्टतु पोऩ्ऱु–लगाया गया हो, ऐसा; तोऩ्ऱिऱ्ऱु–लगी। १५४

शीतल किरणों की राशियाँ बिखरनेवाली चाँदनी शीघ्र सर्वत्र घुसकर व्याप गयी। उसको देखकर ऐसा लगा मानो मणिमण्डित प्राचीरों वाली व पहरे से सुरक्षित लंका पर श्वेत वस्त्र का खोल चढ़ा दिया गया हो। १५४

इहऌ्ऴवरुम् बॅरुङ्गुणत् तिराम नॅय्ददोर्
पहऌिळयिऩ् शॅलवॅऩ्ऩ वनुमऩ् पऱ्ऱिऩाल्
अहऌ्ऴपुहुन् दरण्पुहुन् दिलङ्गै याङ्गवऩ्
पुहऌ्ऴपुहुन् दुलायदोर् पॉलिवुम् बोऩ्ऱदे 155

इकऴ्वु अरुम्–अनिंद्य; पॅरुङ् कुणत्तु–उन्नत गुणों के; इरामऩ् ऍय्ततु–श्रीराम के चलाये हुए; ओर् पकऴियिऩ्–एक वाण के; चॅलवु ऍऩ्ऩ–जाने के समान; अनुमऩ्–हनुमान के; पऱ्ऱिऩाल्–संग से; इलङ्कै–लंका की; अकऴ् पुकुन्तु–परिखा में घुसकर; अरण् पुकुन्तुम्–अन्य रक्षण-स्थलों में घुसकर; आङ्कु–वहाँ; अवऩ् पुकऴ्–उनका यश; पुकुन्तु उलायतु–घुसकर फैला हो; ओर् पॉलिवुम् पोऩ्ऱतु–ऐसी एक शोभा के समान भी लगी। १५५

अनिंद्य गुणश्रेष्ठ श्रीराम के चलाये एक अमोघ वाण की भाँति हनुमान जा रहा था। उसकी संगति के बल से चाँदनी लंका की खाई में घुसी, और अन्य सुरक्षा के स्थलों में घुसी और ऐसी महिमा पा गयी मानो वह श्रीराम का यश हो जो सर्वत्र व्याप गया था। १५५

अव्वऴि यनुमनु मणुह लाम्वऴि
ऍव्वऴि यॅऩ्बदै युणर्वि नॅण्णिनाऩ्
शॅव्वऴि यॉदुङ्गिनऩ् ऱेव रेत्तप्पोय्
वॅव्वऴि यरक्कर्रूर् मेवऩ् मेयिनाऩ् 156

चॅव्वऴि–श्रेष्ठ मार्ग पर; ऑतुङ्किऩऩ्–चलने के स्वभाव का; अनुमऩुम्–हनुमान भी; तेवर् एत्त–देवों के स्तुति करते; पोय्–जाकर; वॅम् वऴि अरक्कर्–पर-पीड़क मार्ग (व्यवहार) का अवलम्बन करनेवाले राक्षसों के; ऊर् मेवल् मेयिऩाऩ्–नगर में जाना चाहकर; अव् वऴि–तव; ऍव् वऴि–किस मार्ग से; अणुकल् आम् वऴि–अन्दर जाने का रास्ता है; ऍऩ्पतै–उसको; उणर्विऩ् ऍण्णिऩाऩ्–मन में सोचने लगा। १५६

उत्तम मार्गगामी हनुमान का संकल्प था कि देवों की स्तुति का भागी बनकर मैं भयंकर मार्ग पर चलनेवाले राक्षसों की लंका में जाऊँ, इसलिए वह विचारने लगा कि किस विध वहाँ जाऊँ ? । १५६

आऴियह ऴाहवरु कावमरर् वाऴुम्
एऴुलहिऩ् मेलैवॅऴि काऱुमुह डॅऱिक्
केऴरिय पॉऩ्कॉडु शमैत्तकिऴर् वॅळ्ळत्
तूऴिदिरि नाऴुमुलै यामदिलै युऱ्ऱाऩ् 157

आऴि अकऴाक–समुद्र को ही परिखा वनाकर; अरुका–अक्षय; अमरर् वाऴुम्–देवों के वासस्थान; एऴ् उलकिऩ्–सातों लोकों के; मेलै वॅऴि काऱुम्–ऊपर के अन्तस्थल तक; मुकटु एऱि–अपनी चोटी पहुँचाकर; अरिय–अपूर्व; केऴ् पॉऩ्

कोंट्टु–रंग के स्वर्ण से; चमैत्त–निर्मित; ऊऴि किळर् वॆळ्ळत्तु–युगान्त में उठनेवाले प्रलय-समुद्र के कारण; तिरि नाळुम्–जब लोक मिट जाते है उस दिन में भी; उलैया–जो नष्ट नहीं होता; मतिलै–उस प्राचीर पर; उऱ्ऱान्–पहुँचा। १५७

वह लंका के प्राचीर पर जा पहुँचा। उस प्राचीर की खाई समुद्र ही था। वह देवों के वास के सातों लोकों के ऊपर के खुले आकाश तक ऊँचा उठा था। बहुत सुन्दर वर्ण वाले स्वर्ण से निर्मित था। युगांतकालीन व उफनकर आनेवाले प्रवाह में भी वह नष्ट होनेवाला नही था। १५७

कलङ्गलिल्ह डुङ्गदिर्हण् मीदुकडि देहा
अलङ्गलयिल् वञ्जहनै यञ्जियॆनि ननूऱाल्
इलङ्गैमदि लिङ्गिदनै येऱलरि दॆनूऱे
विलङ्गियहल् हिनूऱनवि रैन्दॆन वियनूदान् 158

अलङ्कल्–मालाधारी; अयिल् वञ्चकनै–भाला रखनेवाले वंचक से; अञ्चि–डरकर; कलङ्कल् इल्–अचल; कटुम् कतिर्कळ्–गरम (सूर्य-) किरणें; मीतु–इस प्राचीर पर; कटितु एका–शीघ्र नहीं जा सकतीं; ऍन्निन्–कहें तो; अन्ऱु–नहीं; इङ्कु–यहाँ; इलङ्कै मतिल् इततै–लंका के प्राचीर इस पर; एऱल् अरितु–चढ़ना कठिन है; ऍन्ऱे–समझकर ही; विलङ्कि–उससे हटकर; विरैन्तु अकल्किन्ऱन–शीघ्र दूर चलती है; ऍन्न–ऐसा सोचकर; वियन्तान्–विस्मित हुआ (हनुमान)। १५८

मालालंकृत भालाधारी रावण से डरकर धीर सूर्य किरणें भी इस प्राचीर के ऊपर से शीघ्र नहीं जायँगी —ऐसा कहना युक्तिसंगत नहीं होगा। उन्हें यह विदित था कि वे इस प्राचीर के ऊपर चढ़ नहीं पायँगी। इसलिए वे दूर से ही शीघ्र चली जाती हैं। यह सोचकर हनुमान विस्मय-विभोर हुआ। १५८

तॆव्वळवि लादविऱै तेऱलरि दम्मा
अव्वळव दनूऱरण मण्डमिडै याह
ऍव्वळवि नुण्डुवॆळि यीऱुमदु वॆन्ना
वॆव्वळ वरक्कनै मनक्कॊळ वियनूदान् 159

तॆव् अळवु इलात–शत्रु असंख्यक है; इऱै–थोड़ा भी; तेऱल्–जानना; अरितु–कठिन है; अरणम्–गढ़; अण्टम्–अण्ड को; इटैयाक–अपने मध्य में लेने के लिए; वॆळि–अन्तरिक्ष; ऍ अळविन् उण्टु–जितना है; अ अळवल् अन्ऱु–केवल उतना विस्तृत नहीं है; ईऱम् अतु–उसका अन्त भी वैसे ही (अपार है); ऍन्ना–ऐसा सोचकर; वॆम् वळ अरक्कनै–भयंकर और धनी राक्षस (रावण की समृद्धि) को; मनम् कॊळ–मन में सोचकर; वियन्तान्–विस्मित हुआ। १५९

(हनुमान आगे सोचता है—) शत्रु असंख्यक हैं। उनका बल ताड़ना बहुत कठिन लगता है। गढ़ ऐसा बड़ा है कि उसके मध्य सारा अण्ड समा

जाय —उतने तक सीमित नहीं। उसका अन्त पाना भी वैसे ही कठिन है। इस तरह सोचते-सोचते हनुमान ने भयानक रूप से वैभवशाली रहनेवाले रावण की बात सोची और वह विस्मय से भर गया। १५९

मडङ्गलरि येरुमद मालृहळिरु नाण
नडनृदुदन्ति येपुहुदु नम्‌विनन्ति मूदूर्
अडङ्गरिय तान्नैयियि लन्दहन्त दाणैक्
कडुन्‌दिशैयित् वायन्तैय वायिलॆदिर् कण्डान् 160

मटङ्कल्–यम के समान; अरि एरु–नरसिंह और; मत माल् कळिरुम्–मत्त और बड़े गज को; नाण–शरम का अनुभव करने देते हुए; नटन्तु–चलकर; नन्नि मूतूर्–अति प्राचीन नगर में; तनिये पुकुतुम्–अकेले जानेवाले; नम्पि–महिमामय हनुमान ने; अटङ्करिय तात्तै–गिनती में न आनेवाली सेना के; अयिल् अन्तकन्तु–भालाधारी यम की; आणै–आज्ञा के अधीन रहनेवाले; कटुम् तिचैयित् वाय् अन्नय–क्रूर (दक्षिण) दिशा के द्वार के समान; वायिल्–(लंका के) राजद्वार को; ऍतिर् कण्टान्–सामने देखा। १६०

महिमावान हनुमान पैदल चलकर पुरातन नगरी लंका की ओर गया। उसकी चाल देखकर स्वयं नरकेसरी और बड़ा तथा मत्त गज भी लज्जा का अनुभव करते थे। वह गोद्वार पर पहुँचा जो उस भयंकर (दक्षिण) दिशा के द्वार के समान था, जो असंख्य सेना का स्वामी और भाले के धारक यम की है। १६०

मेरुवै निरुत्तिवॆळि शॆय्ददुहॊल् विण्णोर्
ऊर्बुह वमैत्तपडु कालृहॊलुल हेळुम्
शोर्विल निलैक्कनडु विट्टदॊरु तूणो
नीर्बुहु कडऱ्कुवळि योवॆन्न निनैन्दान् 161

मेरुवै निरुत्ति–मेरुपर्वत को खड़ा करके; वॆळि चॆय्ततु कॊल्–द्वार बनाया गया क्या शायद; विण्णोर् ऊर् पुक–देवलोक में पहुँचने के लिए; अमैत्त–रचित; पटु काल् कॊल्–सीढ़ियाँ हैं क्या; उलकु एळुम्–सातों लोकों को; चोर्विल निलैक्क–शिथिल न होकर स्थिर रखने के लिए; नटु विट्टतु–बीच में निर्मित; ऒरु तूणो–एक खम्भा है क्या; कटऱ्कु–समुद्र का; नीर् पुकु–जल-प्रवेश के लिए; वळियो–मार्ग है क्या; ऍन्न–ऐसा-ऐसा; निनैन्तान्–सोचा। १६१

मेरुपर्वत को लाकर खड़ा किया गया और उसके मध्य (द्वार का) खुला स्थान खोदकर बनाया गया क्या? क्या यह देवों के लंका में प्रवेश करने के लिए रखी गयी सीढ़ी है? सातों लोक शिथिल होकर अस्तव्यस्त गिर न जायँ, तदर्थ उनके मध्य गाड़ा गया खम्भा है? या समुद्र को भरने के लिए ज़ल वहे उसके लिए बनाया गया मार्ग है? —हनुमान तोरण-द्वार के बारे मे ऐसा सोचने लगा। १६१

एऴुलहिऩ् वाऴुमुयिर् यावैयु मॆदिर्ऩ्दाल्
ऊऴिऩ्मुऱै यिऩ्ऱियुड ऩेपुहुमि दॊऩ्ऱो
वाऴियरि यड्गुवऴि यीदॆऩ वहुत्ताल्
आऴियुळ वेऴिऩळ वऩ्ऱुपहै यॆऩ्ऱाऩ् 162

एऴ् उलकिऩ्–सातों लोकों के; वाऴुम् उयिर् यावैयुम्–वासी सभी जीव; ऍतिर्ऩ्ताल्–सामने आवें तो; ऊऴिऩ् मुऱै इऩ्ऱि–विना किसी क्रम के; उटऩे पुकुम्–एक साथ घुस सकेंगे; इतु ओऩ्ऱो–यही एक है क्या; वाऴियर्–यहाँ रहनेवाले; इयङ्कुम् वऴि ईतु–आते-जाते हैं इसी मार्ग से; ऍऩ–ऐसा; वकुत्ताल्–विचार करके सोचें; पकै–तो हमारे शत्रु की शत्रुता का परिमाण; आऴि एऴिऩ् अळवु–सातों समुद्रों की नाप का; उळ अऩ्ऱु–है नहीं (उससे अधिक है); ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १६२

मानो कि सातों लोकों के जीव एक साथ इस नगर में घुसने आयँ तो वे विना क्रम से जाने की आवश्यकता के एक साथ प्रवेश कर सकेंगे — ऐसा विशाल है यह द्वार। उसका गौरव क्या यही एक है? यह लंका नगर के वासियों के आने-जाने का द्वार है —इसको लेकर सोचा जाय तो हमारे शत्रु की शत्रुता का परिमाण सातों समुद्रों का उतना बड़ा है, यह मानना भी सही नहीं होगा (यानी यह उनसे भी अधिक विपुल है)। हनुमान ने यों सोचा। १६२

वॆळ्ळमॊरु नूऱ्ऱॊडिरु नूऱुमिडै वीरर्
कळ्ळविऩै वॆव्वलि यरक्करिरु कैयुम्
मुळ्ळॆयिऱुम् वाळुमुऱ मुऩ्ऩमुऱै निऩ्ऱार्
ऍळ्ळरिय कावलिऩै यण्णलु मॆदिर्ऩ्दाऩ् 163

ऒरु नूऱ्ऱॊटु इरु नूऱु–तीन सौ; वॆळ्ळम्–'वॆळ्ळम' संख्या के; मिटै वीरर्–योद्धा वीर; कळ्ळ विऩै–वंचक काम; वॆम् वलि–और गजब का बल; अरक्कर्–इनसे युक्त राक्षस; इरु कैयुम्–दोनों ओर; मुळ् ऍयिऱुम्–काँटे के समान दाँत; वाळुम्–तलवारें; उऱ–लेकर; मुऩ्ऩ मुऱै–युद्धसन्नद्ध; निऩ्ऱार्–खड़े थे; ऍळ् अरिय–अनुपेक्षणीय; कावलिऩै–पहरे को; अण्णलुम्–महिमावान ने भी; ऍतिर्ऩ्ताऩ्–सामने देखा। १६३

उस द्वार के दोनों ओर राक्षस खड़े थे। उनकी संख्या (एक और दो) तीन सौ 'वॆळ्ळम्' थी। वे मायावी थे और भयंकर वीर थे। उनके मुखों में काँटों के समान तेज़ दाँत थे और हाथों में तलवारें थीं। वे ऐसे खड़े थे मानो युद्ध-सन्नद्ध हों। हनुमान ने उस अनिन्द्य पहरे को अपनी आँखों से देखा। १६३

शूलमऴु वाळॊडयि ऱोमर मुलक्कै
कालवरि विऱ्पहऴि कप्पण मुशुण्डि
कोलकणै नेमिकुलि शज्जुरिहै कुऩ्दम्
पालमुद लायुदम् वलत्तिनर् परित्तार 164

चूलम्–त्रिशूल; मऴु–परशु; वाळॊटु–तलवार के साथ; अयिल्–भाले; तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; काल वरिविल्–यम-सम सबन्ध धनु; पकऴि–अस्त्र; कप्पणम्–काँटेदार गदा; मुचुण्टि–भुशुण्डी नाम का हथियार; कोल कणै–सुन्दर वक्र दण्ड; नेमि–चक्र; कुलिचम्–कुलिश; चुरिकै–छुरा; कुन्तम्–कुन्त; पालम्–भिंदिपाल; मुतल् आयुतम्–आदि आयुध; वलत्तिन्र्–वली वे; परित्तार्–अपने हाथों में लिये रहे। १६४

वे अपने हाथों में निम्नांकित हथियार रखते थे— शूल, परशु, तलवार, भाला, तोमर, मूसल, यम-सम सबन्ध धनु; अस्त्र, काँटेदार गदा, "भुशुण्डी" नाम का हथियार, सुन्दर वक्र-दण्ड, चक्र, कुलिश, छुरी, कुंत और भिंदिपाल आदि। १६४

अङ्गुश नॆंडुङ्गव णडुत्तुडल् विशिक्कुम्
वॆंङ्गुशैय पाशमिवै वॆय्यपयिल् कैयर्
शॆंङ्गुरुदि यन्नशॆरि कुञ्जियर् शिन्नत्तोर्
पङ्गुनि मलर्न्दॊळिर् पलाशवन्न मॊत्तार् 165

अङ्कुचम्–अंकुश; नॆटुम् कवण्–लम्बे ढेलबाँस; अटुत्तु–पास जाकर; उटल् विचिक्कुम्–शरीर को बाँधनेवाला; वॆम् कुचैय पाचम्–भयंकर रास के समान पाश; इवै–आदि इनको; पयिल्–लेकर अभ्यस्त; वॆय्य कैयर्–कठोर हाथों वाले; चॆम् कुरुति अन्न–लाल रक्त के समान; चॆऱि कुञ्चियर्–घने बाल वाले; चित्तत्तोर्–क्रोधी; पङ्कुनि–फाल्गुन में; मलर्न्तु–खिलकर; ऒळिर्–प्रकाश छिटकानेवाले; पलाच वनम् ऒत्तार्–काँटेदार पलाश-वन के समान रहे। १६५

अंकुश, लम्बे ढेलबाँस (गोफना) शत्रु को शरीर में लगकर कसनेवाला भयंकर बन्धन-सा पाश —इनके साथ अभ्यस्त सशक्त हाथो वाले थे वे राक्षस। उनके केश रक्त-सम लाल थे। विना कारण के क्रोध करनेवाले थे। फाल्गुन महीने में फूल-खिले काँटेदार पलाश-तरु-वन के समान लगे। १६५

अळक्कवरि दाहिय कणत्तॊडय निऱ्कुम्
विळक्किन्न मिरुट्टिनै विऴुङ्गियॊळि काल
वळक्करिय कालन्मन मुट्कुमणि वायिल्
इळक्कमिल् कडऱ्पडै यिरुक्कैयै यॆदिर्न्दान् 166

अयल्–उनके पास; अळक्क अरिताकिय–असंख्यक; कणत्तॊटु–गणों के साथ; निऱ्कुम्–रखे हुए; विळक्कु इनम्–दीपों के समूह; इरुट्टिनै–अन्धकार को; विऴुङ्कि–निगलकर; ऒळि काल–प्रकाश दे रहे थे; वळ–घने; करिय–काले रंग के; कालन्–यमदेव के; मनम् उट्कुम्–मन को डरानेवाले; मणि वायिल्–सुन्दर द्वार पर; इळक्कम् इल्–अशिथिल; कटल् पटै–सागर-सी सेना का; इरुक्कैयै–रहना; ऎतिर्न्तान्–सामने देखा। १६६

हनुमान ने उनके पास और एक अचल सागर-सम सेना का विस्तार

पड़ा हुआ देखा। वहाँ असंख्यक दीप जल रहे थे, जो अन्धकार को लील रहे थे। वह सेना उस द्वार के समीप ही थी, जिसे देखकर अत्यन्त काले रंग का यम भी डर जाता था और जो रत्नों से खचित सुन्दर था। १६६

ऍव्वमर रॅव्ववुण रॅव्वरुळ रॅऩ्ऩे
कव्वैमुदु वायिलि नॅडुङ्गडै कडप्पार्
तॅव्वरिवर् शेममिदु शेवहनुम् यामुम्
वॅव्वमरिन् मेलिऩियॅ ऩाय्विळैयु मॅऩ्ऱाऩ् 167

कव्वै–आरवयुक्त; मुतु वायिलिऩ्–प्राचीन किले के द्वार के; नॅटुङ्कटै–लम्बे किनारे को; ऍ अमरर्–कौन देव; ऍ अवुणर्–कौन दानव; कटप्पार्–पार करेंगे; ऍव्वर् उळर्–कौन हैं (अन्य); ऍऩ्ऩे–क्या ही खूब है; इवर् तॅव्वर्–ये हैं शत्रु; इतु चेमम्–यह उनका संरक्षण; चेवकऩुम्–नायक श्रीराम और; यामुम्–हम; इऩि मेल्–आगे जो करेंगे; वॅम् अमरिऩ्–उस भयंकर युद्ध में; ऍऩ्ऩाय् विळैयुम्–क्या होने वाला है; ऍऩ्ऱाऩ्–हनुमान ने आप ही आप कहा। १६७

वह द्वार आरवपूर्ण था। उसका किनारा बहुत लम्बा था। उसको कौन देव पार कर सकता था? कौन असुर था जो उसे पार कर जाये? फिर कितनों के पास इतना साहस था? इसका महत्त्व कितना है? ऐसे हैं हमारे शत्रु! उनके पहरे का बल ऐसा है! तो जब हमारे स्वामी और हम आकर युद्ध छेड़ देंगे तो उस भयंकर युद्ध का फल क्या होगा? —हनुमान इस भाँति अपने आप शंका के स्वर में बोला। १६७

करुङ्गडल् कडप्पतरि दऩ्ऱुनहर्क् कावल्
पॅरुङ्गडल् कडप्पदरि दॅण्णमिड़ै पेरा
दरुङ्गडन् मुडिप्परि दारमर् किडैप्पिऩ्
नॅरुङ्गमर् विळैप्परॅडु नाळॆऩ निऩैन्दाऩ् 168

करुम् कटल्–काले सागर को; कटप्पतु–पार करना; अरितु अऩ्ऱु–असाध्य काम नहीं; नकर् कावल्–नगर की रक्षा (रक्षक सेना) का; पॅरुम् कटल्–बड़ा सागर; कटप्पतु अरितु–पार करना कठिन है; आर् अमर् किटैप्पिऩ्–बड़ा युद्ध होगा तो; नॅटु नाळ्–अनेक दिनों तक; नॅरुङ्कु अमर् विळैप्पर्–घमासान युद्ध करेंगे; ऍण्णम्–(सीताजी के अन्वेषण का) मेरा संकल्प; इड़ै पेरातु–किंचित भी पूरा नहीं होगा; अरुम् कटऩ्–और मेरा महान् कर्तव्य; मुटिप्पतु अरितु–पूरा करना असाध्य होगा; ऍऩ निऩैन्ताऩ्–ऐसा सोचा। १६८

हनुमान ने और सोचा— इस काले सागर का तरण कठिन नहीं होगा। पर नगर-रक्षक सेना-सागर को पार करना अवश्य दुस्तर होगा। अगर बड़ा युद्ध छिड़ जायगा तो ये लोग बहुत काल तक घमासान युद्ध करेंगे। तब सीताजी के अन्वेषण का मेरा मंन्शा कुछ भी सफल नहीं होगा और अपना कर्तव्य पूरा करना दुःसाध्य हो जायगा। १६८

वायिल्वऴि शॆऱ्ऱलरि दन्ऱियुम् वलत्तोर्
आयिलवर् वॆत्तवऴि येहलऴ् हन्ऱाल्
कायहदि रियक्किन्ऱमदि लैक्कडिदु ताविप्
पोयिनहर् पुक्किडुवॆ नॆन्ऱोरयल् पोनान् 169

वायिल् वऴि–तोरण द्वारा; चेऱल् अरितु–अन्दर जाना असाध्य है; अन्ऱियुम्–और भी; वलत्तोर् आयिल्–वलवान हों तो; अवर् वॆत्त वऴि–उनके द्वारा निर्मित मार्ग से; एकल्–जाना; अऴकन्ऱु–ठीक नहीं होगा; काय् कतिर्–जलानेवाले सूर्य का; इयक्कु इल्–संचार जिस पर नहीं है; मतिलै–उस प्राचीर को; कटितु तावि–शीघ्र लाँघकर; पोय्–(पार) जाकर; इ नकर्–इस नगर में; पुक्किटुवॆन्–प्रवेश कर लूँगा; ऍन्ऱु–ऐसा निश्चय करके; ओर् अयल्–एक तरफ़; पोनान्–गया। १६९

इस किले के द्वार से होकर अन्दर जाना असाध्य है! और भी वलवान वीरों के लिए शत्रु के निर्मित द्वार का उपयोग करना अच्छा नही होगा। यह प्राचीर ऐसा है कि जलानेवाले सूर्य की किरणें भी इस पर सञ्चार नही करती। इसको कूदकर पार करूँगा और अन्दर पहुँच जाऊँगा। —ऐसा सोचकर हनुमान द्वार को छोड़कर प्राचीर के पास दूसरे स्थान पर गया। १६९

नाणा ऴुन्दा न्ऩल्हिय काव नन्निमूदूर्
वाणा ऴन्नाऴ् पोवदन् मेले वऴिनिन्ऱाऴ्
तूणा मॆन्नुन् दोऴुडै यानैच् चुडरोनॆक्
काणा वन्द कट्चॆवि यॆन्नक् कनल्हण्णाऴ् 170

नाऴ् नाऴुम्—दिने-दिने; तान् कावल् नल्किय–अपने द्वारा संरक्षित; नति मूतूर्–बहुत पुरातन नगर की; वाऴ् नाऴ् अन्नाऴ्–आयु-सी रहनेवाली; कनल् कण्णाऴ्–अंगार उगलनेवाली आँखों की; चुटरोनॆ काणा वन्त–सूर्य को देखकर आये; कट्चॆवि ऍन्न–श्रवणाक्ष (सर्प) राहु के समान; तूण् आम् ऍन्नुम्—खम्भे ही माने जाने योग्य; तोऴ् उटैयानै–कन्धों वाले के; मेले पोवतन् वऴि–आगे जाने के मार्ग में; निन्ऱाऴ्–(आकर) खड़ी हुई। १७०

(तव लंकादेवी सामने आयी।) लंकादेवी अपनी संरक्षित नगरी की आयु के ही समान थी। उसकी आँखों से अंगारे निकल रहे थे। वह लंकादेवी स्तम्भ-सम कन्धों वाले हनुमान के सामने इस तरह आयी मानो सूर्य को देखकर राहु सर्प आ रहा हो और उसके मार्ग में उसे रोकती हुई खड़ी हो गयी। १७०

ऍट्टुत् तोळा णालु मुहत्ता ळुलहेळुम्
तॊट्टुप् पेरुञ् जोदि निऱत्ताऴ् शुऴल्कण्णाऴ्
मुट्टिप् पोरिन् मूवुल हत्तै मुदलोडुम्
कट्टिच् चीऱुङ् गालन् वलत्ताऴ् कमैयिल्लाऴ् 171

अॅट्टु तोळाळ्–अष्टभुजा; नालु मुकत्ताळ्–चतुर्मुखी; उलकु एळुम्–सातों लोकों को; तॉट्टु पेरुम्–स्पर्श कर लौटनेवाले; चोति निऱत्ताळ्–प्रकाशमय वक्ष वाली; चुळल् कण्णाळ्–चारों ओर घूमनेवाली दृष्टि की; मूवुलकत्तै–तीनों लोकों से; पोरिल् मुट्टि–युद्ध में टकराकर; मुतलोटुम् कट्टि–मूल से बाँधकर; चीऱुम्–कोप करनेवाली; कालन् वलत्ताळ्–यम का-सा बल रखनेवाली; कमै इल्लाळ्–क्षमा न करनेवाली। १७१

(१७०वें पद से १७६वे पद तक लगातार उस लंकादेवी का वर्णन है।) उसके आठ भुजाएँ थीं। चार मुखों की उसका वक्ष ज्योतिर्मय था और वह तेज़ सातों लोकों को छूकर आ सकता था। उसकी आँखें घूम रही थीं। वह इतनी शक्तिमती दिखी कि वह तीनों लोकों को युद्ध में समूल बाँध ले सकती थी। उसका क्रोध भी उतना भयंकर था। यम की-सी शक्ति रखनेवाली उसमें क्षमा करने का गुण नहीं था। १७१

पारा निन्ऱा ऍण्डिशै तोऱुम् बलरप्पाल्
वारा निन्ऱा रोॅवॅन्न मारि मळैयेपोल्
आरा निन्ऱा णूबुर मच्चन् दरुताळाळ्
वेरा- मॅय्याळ् मिन्नि निमैक्कु मिळिर्पूणाळ् 172

अच्चम् तरु–भय पैदा करनेवाले; ताळाळ्–पैरों की; नूपुरम्–नूपुर; मारि मळैये पोल्–वर्षाऋतु की वर्षा के समान; आरा निन्ऱाळ्–बजाते हुए खड़ी रही; वेरा मॅय्याळ्–स्वेद-पूर्ण शरीर वाली; मिन्निन् इमैक्कुम्–बिजली-से चमकनेवाले; मिळिर् पूणाळ्–प्रकाशमय आभरण वाली; ऍण् तिचै तोऱुम्–आठों दिशाओं के; अप्पाल्–उधर से; पलर्–अनेक; वारा निन्ऱारो ऍन्न–आ रहे है क्या; पारा निन्ऱाळ्–ऐसा देखती रही। १७२

उसके भयंकर पैरों पर पायलें पड़ी थीं। वह उन्हें हिला रही थी; जिससे वर्षाऋतु की वर्षा के समान शब्द निकल रहा था। उसके शरीर पर स्वेद वह रहा था। विद्युत्-से चमकनेवाले उज्ज्वल आभरणों से वह अलंकृत थी। वह सारी दिशाओं को देख रही थी। यह टोह लगाने के लिए कि क्या दूर से कोई आ तो नहीं रहा हो ?। १७२

वेल्वाळ् शूलम् वॅङ्गदै पाशम् विळिशङ्गम्
कोल्वाळ् शावङ् गॉण्ड करत्ताळ् वडकुन्ऱम्
पोल्वा डिङ्गट् पोळ्िि नॅयिऱ्ऱाळ् पुहैवायिल्
काल्वाळ् काणिऱ् कालनु मुट्कुङ् गदमिक्काळ् 173

वेल्–भाला; वाळ्–तलवार; चूलम्–शूल; वॅम् कतै–भयंकर गदा; पाचम्–पाश; विळि चङ्कम्–बजनेवाला शंख; कोल्–बाण; वाळ् चापम्–उज्ज्वल चाप; कॉण्ट करत्ताळ्–लिये हुए हाथों वाली; वट कुन्ऱम् पोल्वाळ्–उत्तर के मेरु के समान रहनेवाली; तिङ्कळ् पोळ्िन्–चन्द्र के खण्डों के समान; ऍयिऱ्ऱाळ्–दाँतों वाली; वायिल्–मुख से; पुकै काल्वाळ्–धुआँ निकालनेवाली; काणिल्–देखने पर; कालनुम् उट्कुम्–काल भी डर जाए; कतम् मिक्काळ्–ऐसा अधिक क्रोध से युक्त। १७३

उसके हाथों में भाला, तलवार, शूल, भयानक गदा, पाश, शंख, अस्त्र और प्रकाशमय धनु थे। उत्तर के मेरु पर्वत के समान आकार वाली उसके दाँत चन्द्र के टुकड़ों के समान थे। उसके मुख से धुआँ-सा निकल रहा था। वह इतना क्रोधी लगी कि यम भी देखे तो डर जाय ! । १७३

अञ्जु वणत्ति नाडै युडुत्ता ळरवॆल्लाम्
अञ्जु वणत्तिन् वेह मिहुत्ता ळरुळिल्लाळ्
अञ्जु वणत्ति नुत्तरि यत्ता ळलैयारुम्
अञ्जु वणत्तिन् मुत्तॊळि रारत् तणिकॊण्डाळ् 174

अञ्चु वणत्तिन्–पंचरंगी; आटै उटुत्ताळ्–वस्त्र पहने हुए थी; अरवॆल्लाम्–सभी सर्प; अञ्चु–डरें; उवणत्तिन्–ऐसे गरुड़ की; वेकम् मिकुत्ताळ्–सी गति में बढ़ी हुई; अरुळ् इल्लाळ्–करुणा से हीन; अम् चुवणत्तिन्–श्रेष्ठ स्वर्ण के; उत्तरियत्ताळ्–उत्तरीय से भूषित थी; अलै आरुम्–तरंगों से युक्त; अम्–(समुद्र-) जल में; चु–सुन्दर; वळ्–प्रकाशमय; नत्तिन् मुत्तु–शंख-जनित; ऑळिर्–जिसमें प्रकाश देते रहते हैं, ऐसे; आरत्तु अणि–हार रूपी आभरण; कॊण्टाळ्–धारण किये हुए थी। १७४

वह पञ्चरंगी वस्त्र पहने थी। उसकी गति गरुड़ की-सी थी जिसे देखकर सारे सर्प डर जाते हैं। वह अकरुण थी। स्वर्णोत्तरीय और लहरसंकुल समुद्र-शंख-जनित मोतियों का हार उसके शरीर को अलंकृत कर रहे थे। (इस पद में यमकालंकार है)। १७४

शिन्दा रत्तिन् शॆच्चै यणिन्दा डॆळिनूल्याळ्
अन्दा रत्तिन् नेर्वरु शॊल्ला ळरैतुम्बि
कन्दा रत्ति तिन्निशै पन्निक् कळिकूरुम्
मन्दा रत्तिन् मालै यलम्बु महुडत्ताळ् 175

आरत्तिन्–चन्दन के; चिन्तु–छलककर फैले; चॆच्चै–लेप को; अणिन्ताळ्–मले हुए थी; याळ् तॆळि नूल्–'याळ्' (एक तरह की वीणा) सम्बन्धी शास्त्रों में उक्त; अम् तारत्तिन्–सुन्दर "तारा" स्वर के; नेर् वरु चॊल्लाळ्–समान निकलनेवाली वाणी की; अऱै तुम्पि–गुंजारनेवाले भ्रमर; इन् कन्तारत्तिन् इचै–मधुर 'गांधार' स्वर; इचै पन्नि–संगीत गाते हुए; कळि कूरुम्–(जिन पर) मत्त रहते थे; मन्तारत्तिन्–(वैसे) मन्दार-पुष्पों की; मालै अलम्पुम्–माला हिल रही थी; मकुटत्ताळ्–ऐसे मुकुट वाली। १७५

वह चन्दन-लेप से चर्चित थी। 'याळ्' (वीणा) के स्वरों के सम्बन्ध में बतानेवाले संगीतशास्त्र में वर्णित 'दारा' स्वर (उच्च स्वर) के से स्वर में बोलनेवाली थी। उसके सिर पर एक मुकुट था। उस पर मन्दार-पुष्पों की माला हिल रही थी। उस माला पर गांधार-स्वर में गुंजारते हुए भ्रमर मद-मत्त हो बैठे हुए थे। १७५

ऍल्ला मुट्कु माळियि लङ्गै यिहन्मूदूर्
नल्ला ळव्वूर् वँहुरैँ पोलुम् नयनत्ताळ्
निल्लाय् निल्ला यॅन्ऱुरैँ नेरा नित्तैयामुन्
वल्ले शॅन्ऱाण् मारुदि . कण्डान् वरुहॅन्ऱान् 176

ॲल्लाम् उट्कुम्–सभी जीवों को भय दिलाते हुए; आळि इलङ्कै इकल् मूतूर्–समुद्रवलयित प्राचीन व बलवान (लंका) नगर का; नल्लाळ्–हित करनेवाली; अव्वूर वेंकु–उस नगर के रहने के; उऱै पोलुम्–स्थान के समान; नयनत्ताळ्–आँखों वाली; निल्लाय् निल्लाय्–खड़े रहो, खड़े रहो; ॲन्ऱु उरै नेरा–कहते हुए; नितैया मुन्–सोचने की देर के अन्दर; वल्ले चॆन्ऱाळ्–शीघ्र गयी; मारुति–हनुमान ने; कण्टान्–देखा; वरुक–आओ; ॲन्ऱान्–कहा। १७६

वह सबको भयभीत करनेवाले समुद्र से वलयित प्राचीन नगर लंका की हितैषिणी थी। उसकी आँखें मानो लंका का वासस्थान थीं। उसने हनुमान को देख लिया। रुको, खड़े हो जाओ —चिल्लाती हुई वह सोचने की देर के अन्दर तेज़ चली। हनुमान ने भी उसे देख लिया और बुलाया कि आओ। १७६

आहा शॅय्दा यञ्जलै पोलु मरिविल्लाय्
शाहा मूलन् दिन्ऱुळल् वार्मेऱ् चलमॆन्नाम्
पाहा रिञ्जिप् पॊन्मदि ऱाविप् पहैयादे
पोहा यॅन्ऱाळ् पॊङ्गळ लॅन्नप् पुहैकण्णाळ् 177

पॊङ्कु अळल् ॲन्न–दहकती आग के समान; पुकै कण्णाळ्–धुएँ-सहित आँखों वाली; चाका मूलम्–शाक और कन्द; तिन्ऱु उळलवार् मेल्–खाते फिरनेवालों पर; चलम् ॲन् आम्–क्रोध करने से क्या होगा; अऱिविल्लाय्–बुद्धिहीन; आका–जो करना नहीं चाहिए; चॅय्ताय्–वह काम किया है (तूने); अञ्चलै पोलुम्–शायद भय का अनुभव नहीं किया क्या; पाकु आर्–सुन्दरता से युक्त; पॊन् इञ्चि मतिल्–स्वर्ण-निर्मित किले के प्राचीर को; तावि–लाँघकर; पकैयाते–शत्रुता मत करो; पोकाय्–चले जाओ; ॲन्ऱाळ्–(डाँटकर) कहा। १७७

उसकी आँखें धूम निकाल रही थीं, मानो वे भभककर जलती आग हों। उसने सोचा कि शाखामृग (पेड़ों पर रहनेवाले पशु या शाक-भाजी खानेवाला जीव) पर कोप करके क्या मिलेगा? तो भी उसने डाँट बतायी–मूर्ख! तुमने वह काम किया जो किसी को इस नगर में नहीं करना चाहिए। तुममें भय नहीं है शायद क्या? सुन्दर और स्वर्णमय प्राचीर पर कूदकर मेरी शत्रुता मोल मत लो। चलो दूर। १७७

कळिया वुळ्ळत् तण्णन् मनत्तिऱ् कदमूळ
विळिया निन्ऱे नोदि नलत्तिन् विन्नैयोर्वान्

अळियाऩ् निव्वूर् काणु नलत्ता लणैहिऩ्ऱेऩ्
ऍळिये ऩुऱ्ऱाल् याव दुऩक्किङ् गिळवॆऩ्ऱाऩ् 178

कळिया उळ्ळत्तु–स्वाभाविक रूप से जिसका मन गर्वोन्मत्त न होता था; अण्णल्–उस महिमावान हनुमान ने; मऩत्तिल् कतम् मूळ–मन में क्रोध के उठने से; विळिया निऩ्ऱु–उसको रोककर; नीति नलत्तिऩ्–न्यायमार्ग के हितू; वित्तै ओर्वाऩ्–कार्य का महत्त्व जाननेवाला बनकर; अळियाऩ्–(लंका-दर्शन का) इच्छुक बनकर; इव् ऊर् काणुम्–इस पुरी को देखने की; नलत्ताल्–सदिच्छा से; अणैकिऩ्ऱेऩ्–आता हूँ; ऍळियेऩ्–गरीब मैं; उऱ्ऱाल्–आया तो; उऩक्कु–तेरा; इङ्कु–यहाँ; इळवु–नुक़सान; यावतु–क्या है; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा। १७८

महिमामय हनुमान अनुद्विग्नमन (या कभी डींग मारनेवाला नहीं) था। उसके मन में कोप उठा। पर उसने उसे दबा दिया। नीति-मार्ग के कार्य को जाननेवाले उसने उस लंकादेवी से शांति के साथ कहा कि मैं लका देखने की अच्छी इच्छा करके यहाँ आया। मैं गरीब आया तो तुम्हारी क्या हानि हो गयी ? । १७८

ऍऩ्ऩा मुऩ्ऩ मेहॆऩ वेहा दॆदिर्माऱ्ऱम्
शॊऩ्ऩाय् नीये याव नडातॊल् पुरमट्टाऩ्
अऩ्ऩा रॆय्दऱ् कञ्जुव रम्मा यळियत्ताय्
उऩ्ऩा लॆय्दु मूऱ्हॊ लिव्वूरॆऩ्ऱु रुऱ्ऩक्काळ् 179

ऍऩ्ऩा मुऩ्ऩम्–यह कह चुकने के पूर्व ही; एकु ऍऩ–जाओ कहूँ तब भी; नीये एकातु–तुम ही, न चलकर; ऍतिर् माऱ्ऱम् चॊऩ्ऩाय्–उत्तर में बोलते हो; अटा–रे; नी–तुम; यावऩ्–कौन हो; तॊल्–प्राचीन; पुरम्–त्रिपुरों को; अट्टाऩ्–जिन्होंने जलाया था; अऩ्ऩार्–उन शिवजी के समान (लोग) भी; ऍय्तऱ्कु–यहाँ आने से; अञ्चुवर्–डरते हैं; अळियत्ताय्–करुणा योग्य; इ ऊर्–यह पुर; उऩ्ऩाल् ऍय्तुम् ऊर् कॊल्–तुम्हारे आने योग्य पुर है क्या; ऍऩ्ऱु–कहकर; उऱ–खूब; नक्काळ्–हँसी। १७९

हनुमान अपना वचन पूरा करे इसके पूर्व ही उसने कहा कि जाओ, कहती हूँ; पर जाते नहीं और बात बनाते हो ! रे तुम कौन हो ? त्रिपुरान्तक जैसे देव भी इधर आने से डरते है ! तुम करुणा के योग्य हो ! यह क्या ऐसा सस्ता नगर है कि तुम आओ ? यह कहकर वह खूब हँसी (अम्मा-मैया री !) । १७९

नक्का ळैक्कण् डैयऩ् मऩत्तोर् नहैकॊण्डाऩ्
अक्का नीदा नार्शॊल वन्दा युऩ्दावि
उक्का लऩ्ऱि योडलै यॆऩ्ऱा ळिनियिव्वूर्
पुक्का लऩ्ऱिप् पोहलॆ नॆऩ्ऱाऩ् पुहऴ्हॊण्डाऩ् 180

ऐयऩ्–आदरणीय; नक्काळै कण्टु–हँसनेवाली को देखकर; मऩत्तु–मन में;

ओर् नकै कॉण्टान्–हँसा; अक्काल्–तब; आर् तान् चॉल–किसके ही कहने से; नी वन्ताय्–तुम आये; उनतु आवि–तुम्हारे प्राण; उक्काल् अन्ऱि–मिटे विना; ओटलै–नहीं भागोगे; ऍन्ऱाळ्–कहा (लंकादेवी ने); पुकऴ् कॉण्टान्–यशस्वी हनुमान ने; इति–इतना होने के बाद; इ ऊर् पुक्काल् अन्ऱि–इस पुरी में घुसे विना; पोकलॅन्–नहीं जाऊँगा; ऍन्ऱान्–कहा। १८०

हँसती हुई उसको देखकर महिमावान हनुमान मन में हँसा। तब उससे लंकादेवी ने पूछा कि तुम किसकी आज्ञा से यहाँ आये? मरोगे तभी भागोगे? नहीं तो चलोगे नहीं क्या? तिस पर यशस्वी हनुमान ने अपना हठ दिखाया— अब इसको देखे वग़ैर लौट नहीं जाऊँगा। १८०

वञ्जङ् गॉण्डान् वानर मल्लन् वरुहालन्
तुञ्जुङ् गण्डा लॅन्नै यिवन्सूऴ् तिरैयाऴि
नञ्जङ् गॉण्ड कण्णुद लैप्पो न्नहुहिन्ऱान्
नॅञ्जङ् गण्डे कल्लॅन निन्ऱे निनैहिन्ऱाळ् 181

वरु कालन्–(मेरा शत्रु बनकर) आनेवाला यम भी; ऍन्नै कण्टाल्–मुझे देखे तो; तुञ्चुम्–मर जायगा; इवन्–यह तो; तिरै चूऴ् आऴि–लहरों से आवृत समुद्र के; नञ्चम् उण्ट–विष के खादक; कण्णुतलै पोल्–भाल-नेत्र (शिवजी) के समान; नकुकिन्ऱान्–हँसता है; वञ्चम् कॉण्टान्–मन में वंचना रखता है; वानरम् अल्लन्–वानर नहीं है; नॅञ्चम् कण्टु–मन ताड़कर; कल् ऍन्न–पत्थर के समान; निन्ऱु–अचल खड़ा रहकर; निनैकिन्ऱाळ्–सोचती है। १८१

यह सुनकर लंकादेवी सोचने लगी। मुझसे शत्रुता करने यम आयगा तो वह मर जायगा। यह तो भालनेत्र शिव के समान हँसता है, जिन्होंने लहरावृत समुद्र से निकले विष को निगल लिया। यह वंचक है। सचमुच वानर नहीं होगा। वह हनुमान का मन समझने का प्रयास करती हुई पत्थर के समान अचल खड़ी रही। १८१

कॉल्वा मन्ऱेऱ् कोऴुरु मिव्वू रॅनल्कॉण्डाळ्
वॅल्वाय् नीयेल् वेऱि यॅनत्तन् विऴितोऱुम्
वल्वाय् तोऱुम् वॅङ्गनल् पॉङ्ग मदिवानिल्
शॅल्वा यॅन्ना मूविलै वेलैच् चॅलविट्टाळ् 182

कॉल्वाम्–इसको मार देंगे; अन्ऱेल्–नहीं तो; इव्वूर्–यह पुर; कोऴुम्–नष्ट हो जायगा; ऍनल्–ऐसा; कोण्टाळ्–सोचकर; नी वॅल्वायेल्–तुम जीत सको तो; वेऱि–जीत लो; ऍन्न–ऐसा कहकर; वॅम् कनल्–भयंकर (कोप की) अग्नि; तन् विऴि तोऱुम्–अपनी आँख-आँख में; वल् वाय् तोऱुम्–बलवान मुखों से; पॉङ्क–निकलने देते हुए; मति वानिल्–चन्द्र के आकाश में; चॅल्वाय् ऍन्ना–जाओ कहते हुए; मू इलै वेलै–त्रिशूल को; चॅल विट्टाळ्–(उसने) जाने को फेंका। १८२

उसने संकल्प किया कि हम इसे मार दें। नहीं तो इस नगर का

नाश हो जायगा। उसने हनुमान से कहा कि तुम जीत सकते हो तो जीतो ! फिर उसने अपनी आँखों और बलवान (आठों) मुखों से आग उगलती हुई त्रिशूल को उस पर चलाया और चिल्लायी कि चलो चन्द्र के आकाश में (= स्वर्ग में = मरो।)। १८२

तडित्ता मॅन्नत् तन्नॅदिर् शॅल्लुन् दळल्वेलैक्
कडित्ता ऩाहम् विण्णिन् मुरिक्कुङ् गलुळन्बोल्
ऑडित्तान् कैया लुम्ब रुवप्प वुयर्कालम्
पिडित्ता णॅञ्जन् दुण्णॅन बॅण्णम् बिळैयादान् 183

तटित्तु आम् ऍन्नत–तडित् ही कहने योग्य; तन् ऍतिर् चॅल्लुम्–अपनी ओर आनेवाले; तळल् वेलै–अग्नि-सम शूल को; ऍण्णम् पिळैयातान्–अपने संकल्प में कभी न चूकनेवाले ने; कटित्तातु–अपने दाँतों से काटा; उम्पर् उवप्प–देवों को आनन्द देते हुए; उयर् कालम् पिटित्ताळ्–बहुत काल जो जीवित रह गयी उसके; नॅञ्चम् तुण्णॅन–मन को भय से भरते हुए; कैयाल्–हाथों से; विण्णिल्–आकाश में; कलुळन्–गरुड़; नाकम् मुरिक्कुम् पोल्–सर्प को जैसे तोड़ता हो; ऑटित्तान्–तोड़ दिया। १८३

वह शूल तडित् के समान हनुमान की ओर आ रहा था। दृढ़संकल्प हनुमान ने उस अग्नि-सम शूल को अपने दाँतों से पकड़ लिया। फिर उसने उसको आकाश में गरुड़ साँप को जैसे तोड़े वैसे हाथ से पकड़कर तोड़ दिया। उसे देखकर देव हर्षित हुए और लम्बी आयु वाली लंका का मन दहल उठा। १८३

इऱ्ऱुच् चूल नीरॅळल् काणा वॅरियॉप्पाळ्
मऱ्ऱुत् तॅय्वप् पल्बडै कॉण्डे मलैवाळै
उऱ्ऱुक् कैया लायुद मॅल्ला मॊळियामल्
पऱ्ऱिक् कॊळ्ळा विण्णि लॅऱिन्दान् पळियिल्लान् 184

चूलम् इऱ्ऱु–शूल टूटकर; नीऱु ऍळल् कण्टु–चूर्ण हुआ देखकर; ऍरि ऑप्पाळ्–आग के समान भभककर; मऱ्ऱु–अन्य; पल् तॅय्व पटै–अनेक दिव्य आयुधों को; कॉण्टे–ले; मलैवाळै–लड़नेवाली उसके; उऱ्ऱु–पास जाकर; आयुतम् ऍल्लाम्–सभी आयुधों को; पळियिल्लात्–अपयश से हीन हनुमान ने; ऑळियामल्–विना बाकी छोड़े; कैयाल् पऱ्ऱि कॊळ्ळा–अपने हाथों से पकड़कर; विण्णिल् ऍऱिन्तात्–आकाश में फेंक दिया। १८४

शूल को टूटकर चूर्ण होते देख अग्निसमाना लंकादेवी अन्य दिव्य आयुध चलाकर युद्ध करने लगी। अनिंद्य हनुमान ने उन सबको पकड़कर आकाश में फेंक दिया। १८४

वऴङ्गुन् दॅय्वप् पलबडै काणाण् मऴैवान्मेल्
मुऴङ्गुम् मेह मॅऩ्ऩ मुरऱ्ऱि मुऩिहिऩ्ऱाऴ्
कऴङ्गुम् बनुदुम् कुनूऱुहों डाडुङ् गरमोच्चित्
तऴङ्गुञ् जॅन्दोच् चिन्द वडित्ताऴ् डहविल्लाऴ् 185

तकवु इल्लाऴ्–योग्यताहीन (लंकादेवी); वऴङ्कुम्–अपने द्वारा चलाये गये; तॅय्वप् पल् पटै–अनेक दिव्यायुधों को; काणाऴ्–न देखकर; मेल् वाऩ्–ऊपर आकाश में; मुऴङ्कुम्–गरजनेवाले; मऴै मेकम् ॲऩ्ऩ–जल-भरे मेघ के समान; मुरऱ्ऱि–नारे लगाते हुए; मुऩिकिऩ्ऱाऴ्–कोप करके; तऴङ्कुम् चॅन् ती–शब्द के साथ लाल आग; चिन्त–बरसाती हुई; कुऩ्ऱु कोटु–गिरियों से; कऴङ्कुम् पन्तुम्–"कऴङ्कु" नाम के गोल बीजों और गेंदों को ले; आटुम्–खेलनेवाले; करम् ओच्चि–हाथों को उठाकर; अटित्ताऴ्–मारा । १८५

लंका ने देखा कि वह जो भी हथियार फेंक रही थी उनका कहीं पता नहीं । वह बरसनेवाले घटाटोप के समान गरजकर कोप के साथ पर्वतों को उखाड़कर फेंकने लगी; मानो वह गेंद या 'कऴङ्गु' नाम के गोल बीज को खेल में उछाल रही हो । उनमें से आग निकलने लगी । वह हाथ उठाकर ज़ोर से हनुमान को उन पर्वतों से मारने लगी । १८५

अडिया मुन्ऩ मङ्गै यनैत्तु मॊरुकैयाल्
पिडिया वॅन्ऩे पॅण्णिवऴ् कॊल्लिऱ् पिऴैयॅन्ऩा
ऑडिया नॅञ्जत् तोरडि कॊण्डा नुयिरोडुम्
इडिये रुण्ड माल्वरै पोऩ्मण् णिडैवीऴ्न्दाऴ् 186

अटिया मुऩ्ऩम्–मारने से पहले; अङ्कै अऩैत्तुम्–उसके सुन्दर सभी (आठों) हाथों को; ऑरु कैयाल्–अपने एक हाथ में; पिटिया–पकड़ लेकर; ॲऩ्ऩे–यह क्या है; इवऴ् पॅण्–यह स्त्री है; कॊल्लिल् पिऴै–मारने पर (ही तो) अपराध लगेगा; ॲऩ्ऩा–सोचकर; ऑटियाऩ्–न हिचककर; नॅञ्चत्तु–उसके हृदय पर; ओर् अटि कॊण्टाऩ्–एक प्रहार किया; इटि एऱु–बहुत बड़े वज्र से; उण्ट–आहत; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उयिरोटुम्–प्राणों के साथ; मण्णिटै वीऴ्न्ताऴ्–पृथ्वी पर गिरी । १८६

लंका के उन्हें छोड़ने से पूर्व ही हनुमान ने अपने हाथ से उसके आठों हाथों को ग्रस लिया । वह इस विचार से थकित नहीं हुआ कि यह क्या ? यह तो स्त्री है । इसको जान से मारना ही तो अपराध होगा । (हम जान से नहीं मारेंगे) । उसने लंका के वक्ष पर एक प्रहार किया । वह प्रहार पाकर अशनि-प्रहरित बड़े पर्वत के समान लंका पृथ्वी पर गिर गयी । उसके प्राण नहीं गये । १८६

विऴुन्दा णॊन्दाऴ् वॅङ्गुरु दिच्चॅम् बुनल्वॅळ्ळत्
तऴुन्दा नित्ऱा णान्मुह नाऱ्द मरुळून्ऱि

ऍऴुन्दाळ् यारुम् यावैयु मॅल्ला वुलहत्तुम्
तॉऴुन्दाळ् वीरऩ् ऱूदुवन् मुनन्निऩ् ऱिवैशॉऩ्ऩाळ् 187

विऴुन्ताळ्–गिरी और; नॉन्ताळ्–पीड़ित हुई; वॆम् कुरुति–गरम रक्त के; चॆम् पुतल् वॆळ्ळत्तु–लाल जल के प्रवाह में; अऴुन्ता निन्ऱाळ्–मग्न हुई; नाऩ् मुकत्तारतम्–चतुर्मुख ब्रह्मा का; अरुळ् ऊऩ्ऱि–कृपावचन मन में ले; ऍऴुन्ताळ्–उठी; ऍल्ला उलकत्तुम्–सभी लोकों में; यारुम् यावैयुम्–सभी विवेकी जीव (देव, मानव आदि) और सभी अविवेकी जीव (पशु, पक्षी आदि); तॉऴुम्–जिनकी स्तुति करते हैं; ताळ्–ऐसे चरणों के; वीरऩ्–वीर नायक श्रीराम के; तूतुवन् मुऩ् निऩ्ऱु–दूत के सामने खड़ी होकर; इवै–ये बातें; चॊऩ्ऩाळ्–कहीं। १८७

लंकादेवी जो, नीचे गिरी, बहुत दुःखी हुई। गरम रक्त के प्रवाह में डूबी। फिर चतुर्मुख ब्रह्माजी ने कृपा करके जो कहा था उसका चिंतन करती हुई वह उठी। फिर सर्ववन्द्यचरण श्रीराम के दूत हनुमान के सामने खड़ी होकर यों बोली। १८७

ऐयके ळवय नल्हु मयनरु ळमैदि याहि
ऍय्दियिम् मूदूर् काप्पॆ ऩिलङ्गैया वेऩ्ऩम् याऩे
शॆय्दॊऴि लिऴुक्कि युळ्ळन् दिहैत्तिन्दच् चिऱुमै युऱ्ऱेऩ्
उय्दियॆऩ् ऱळित्ति याऩु मुणर्त्तुव लुण्मै यॆऩ्ऱाळ् 188

ऐय–आदरणीय; केळ्–सुनो; अपयम् नल्कुम्–अभयप्रदान करनेवाले; अयऩ्–ब्रह्माजी की; अरुळ् अमैतियाकि–कृपा का सम्बल लेकर; इ मूतूर ऍय्ति–इस प्राचीन नगर में आकर; काप्पॆऩ्–संरक्षण करती आ रही हूँ; याऩे इलङ्कै आवेऩ्ऩुम्–मैं स्वयं लंका (नाम की) हूँ; चॆय् तॊऴिल्–अपने कर्तव्य (संरक्षण) कार्य में; इऴुक्कि–चूक गयी; उळ्ळम् तिकैत्तु–मन भ्रमित हो गया; इन्त चिऱुमै–यह लघुता; उऱ्ऱेऩ्–पा गयी; उय्ति–बच जाओ; ऍऩ्ऱु–कहकर; अळित्ति–अभयदान दो; याऩुम्–मैं भी; उण्मै–सत्य; उणर्त्तुवल्–बता दूंगी; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। १८८

आदरणीय! सुनो। अभयप्रदायक अजदेव की कृपा का सम्बल लेकर मैं इस लंका का संरक्षण करती आयी। मेरा नाम भी लंका है। अपने पहरे के काम में ज़रा-सी चूक हुई और मन भ्रमित हो गया। उसके फलस्वरूप इस लघुता को पहुँच गयी हूँ। तुम अभयदान दो और मुझे जीवित छोड़ दो। मैं तुमको सत्य घटना बताऊँगी। १८८

ऍत्तनै कालङ् गाप्पॆऩ् याऩिन्द मूदू रॆऩ्ऱु
मुत्तनै विनवि नेऱ्कु मुरण्वलिक् कुरङ्गॊऩ् ऱुन्नैक्
कॆत्तलन् दन्नाऱ् ऱॆण्डिक् कायन्दवन् ऱॆऩ्ऩैक् काण्डि
चित्तिर नहरम् बिऩ्ऩैच् चिदैवदु तिण्ण मॆऩ्ऱाऩ् 189

मुत्तनै–मुक्त (उन ब्रह्माजी) से; याऩ्–मैं; इन्त मूतूर्–इस प्राचीन नगर को; ऍत्तनै कालम्–कितना समय; काप्पॆऩ्–रक्षा करूँगी; ऍऩ्ऱु–ऐसा;

वितविन्नेऱ्कु–पूछनेवाली मुझसे; मुरण् वलि–बहुत सबल; कुरङ्कु ऑन्ऱु–एक वानर; उन्ऩै–तुम्हें; कै तलम् तन्ऩाल्–हाथ से; तीण्टि–स्पर्श कर; कायन्त अन्ऱु–जब क्रोध दिखायगा; ॲन्ऩै काण्टि–उस दिन मुझसे मिलोगी; चित्तिर नकरम्–सुन्दर (लंका) नगर; पिन्ऩै–बाद; चितैवतु–मिट जायगा; तिण्णम्–ध्रुव है; ॲन्ऱान्–कहा (ब्रह्मा ने)। १८९

मुक्त ब्रह्माजी से मैंने पूछा कि मैं कितने दिन इस प्राचीन नगर पर पहरा दूँ ? तब उन्होंने कहा कि अति बलिष्ठ एक वानर आयगा और अपने हाथ से स्पर्श कर तुम्हें दण्ड देगा। तब तुम अपना कार्य छोड़कर मुझसे आकर मिलोगी। उसके पश्चात उस सुन्दर नगर का नाश हो जायेगा। यह ध्रुव है। १८९

अन्ऩदे मुडिन्द दैय वऱम्वॅल्लुम् बावन् दोऱ्कुम्
ॲन्ऩुमी दियम्ब वेण्डुन् दहैयदो यिन्निमऱ् ऱुन्ऩाल्
उन्ऩिय वॅल्ला मुऱ्ऱु मुनक्कुमुऱ् ऱाद वुण्डो
पॊन्ऩहर् पुहुदि यॅन्ऩाप् पुहऴ्न्दव ळिऱैञ्जिप् पोनाऴ् 190

ऐय–आदरणीय; अन्ऩते–वही; मुटिन्ततु–क्रियान्वित हुआ; अऱम् वॅल्लुम्–धर्म की जय होगी; पावम् तोऱ्कुम्–पाप की पराजय होगी; ॲन्ऩुम् ईतु–यह कथन; इयम्प वेण्टुम् तकैयतो–समझाने की आवश्यकता भी है क्या; इन्नि–आगे; उन्ऩाल्–तुमसे; उन्ऩिय ॲल्लाम्–सोचा जो जायगा वह सभी; मुऱ्ऱुम्–पूरा होगा; उनक्कुम्–तुमसे; मुऱ्ऱातु–असाध्य; उण्टो–कुछ होगा क्या; पॊन् नकर् पुकुति–स्वर्णनगरी में प्रवेश करो; ॲन्ऩा–ऐसा; पुकऴ्न्तवऴ्–उसकी महिमा गाकर; इऱैञ्चि–विनय करके; पोनाऴ्–चली। १९०

महिमावान ! ब्रह्माजी की वाणी अब चरितार्थ हो गयी। हाँ ! धर्म जीतेगा और पाप हार जायगा। यह कथन दुहराने की आवश्यकता भी है क्या ? आगे तुम जो भी चाहोगे वह सब पूरा होगा। तुमसे बन नहीं पड़े, ऐसा कोई कार्य भी होगा क्या ? जाओ ! स्वर्णनगर में प्रवेश करो। यह कहकर लंकादेवी ने हनुमान की सम्मान-सहित स्तुति की और विनय प्रदर्शन करके चली गयी। १९०

वीरनुम् विरुम्बि नोक्कि मॅय्म्मैये विळैवु मः(ह्)दॅन्
ऱारियन् कमल पाद महत्तुऱ वणङ्गि याण्डप्
पूरिय रिलङ्गै मूदूरप् पॊन्मदि ऱाविप् पुक्कान्
शोरिय पालिन् वेलैच् चिऱुपिरै तॅळित्त दन्ऩान् 191

वीरनुम्–वीर हनुमान; विरुम्पि नोक्कि–प्यार से देखकर; मॅय्म्मैये–सच ही; विळैवुम् अ(ह्)तु–सम्भाव्य भी वही; ॲन्ऱु–सोचकर; आरियन् कमल पातम्–आर्य श्रीराम के कमल-चरणों का; अकत्तु उऱ–मन में लगाकर (स्मरण कर); वणङ्कि–नमस्कार करके; चीरिय–श्रेष्ठ; पालिन् वेलै–क्षीर-सागर में; चिऱु पिरै–

छोटा-सा जामन; तॆळित्ततु अऩ्ऩाऩ्–जो छिड़का गया हो उसके समान; आण्टु–तव; अ–उन; पूरियर्–नीच लोगों के; इलङ्कै मूतूर्–प्राचीन लंका नगर में; पॊऩ् मतिल् तावि–स्वर्ण-प्राचीर को लाँघकर; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुआ। १६१

वीर हनुमान ने उस पर प्यार की दृष्टि डाली। मन में सोचा कि उसका कहना सच है। वही होनेवाला है। उसने आर्य श्रेष्ठ श्रीराम के चरण-कमलों का ध्यान किया। फिर उसने जग-विख्यात नीच राक्षस लोगों के उस प्राचीन लंका नगर में, स्वर्णप्राचीर को लाँघकर प्रवेश किया। उसका प्रवेश श्रेष्ठ क्षीरसागर में जामन की बूँद के छिड़कने के समान था (सब बिगड़ जानेवाला है)। १९१

वाऩ्ऱॊडर् मणियिऩ् चॆय्द मैयऱु माड कोडि
आऩ्ऱपे रिरुळैच् चीत्तुप् पहल्शॆय्द वऴहै नोक्कि
ऊऩ्ऱिय वुदयत् तुच्चि यॊऱ्ऱॆवा ऩुरुळैत् तेरोऩ्
तोऩ्ऱिनऩ् कॊल्लो वॆऩ्ऩा वऱिवऩुम् दुणुक्कङ् गॊण्डाऩ् 192

वाऩ् तॊटर्–आकाश से लगे; मणियिऩ् चॆय्त–रत्ननिर्मित; मै अऱु–निर्दोष; माट कोटि–(कोटि-कोटि) असंख्यक सौध; आऩ्ऱ–घने; पेर् इरुळै–गहरे अन्धकार को; चीत्तु–दूर करके; पकल् चॆय्त–(रात को) दिन में बदल रहे थे, उस; अऴकै नोक्कि–सौन्दर्य को देखकर; ऊऩ्ऱिय–स्थायी; उतयत्तु उच्चि–उदय के वर्धन में; वाऩ्–आकाशचारी; ऑऱ्ऱै उरुळैत्तेरोऩ्–एकचक्ररथी; तोऩ्ऱिऩऩ् कॊल्लो–उग आया क्या; ऍऩ्ऩा–ऐसा; अऱिवऩुम्–बुद्धिमान हनुमान भी; तुणुक्कम् कॊण्टाऩ्–ठिठक गया। १६२

उस नगर में कितने ही प्रासाद थे। सब गगनव्यापी थे। रत्नों से जड़ित थे। वे घने और विशाल अन्धकार को दूर करके दिन-सा बना रहे थे। उस सौंदर्य को देखकर बुद्धिमान हनुमान भी ज़रा ठिठक गया कि क्या स्थायी और उदयकालीन वर्धन ले एकचक्ररथी सूर्य आ गया है! । १९२

मॊय्म्मणि माड मूदूर् मुऴुदिरु ळहऱ्ऱुऩ् दाऩे
मॆय्म्मैयै युणर्वि ऩाऩो मिहैयॆऩ विलङ्गिप् पोऩाऩ्
इम्मदि लिलङ्गै नाप्प णॆय्दुमेऱ् ऱऩ्मु ऩॆय्दुम्
मिम्मिनि यल्ल ऩोवव् वॆयिऱ्कदिर् वॆऩ्द ऩम्मा 193

मॊय् मणि–घने रत्नों से जड़ित; माट–सौधों से भरे; मूतूर्–वह प्राचीन नगर; ताऩे–अकेले; इरुळ् मुऴुतु–सारे अन्धकार को; अकऱ्ऱुम् मॆय्म्मैयै–हटा रहा था, इस तथ्य को; उणर्विताऩ्–समझकर; अ–वह; वॆयिल् कतिर् वॆऩ्तऩ्–गरम किरणों का अधिपति (सूर्य); मिकै–(अपना आना) अनावश्यक; ऍऩ–समझकर; विलङ्किप् पोऩाऩ्–दूर से चला गया; इ मतिल् इलङ्कै नाप्पण्–इस प्राचीरवलयित

लंका के मध्य; अँय्तुमेल्–आयगा तो; तन् मुन्–उसके सामने; अँय्तुम्–आनेवाले; मिम्मिनि अल्लतो–खद्योत नहीं होगा क्या। १९३

घने रूप से रत्नों से निर्मित सौधों से भरा नगर स्वयं और अकेले सारे अन्धकार को मिटा रहा था। इस तत्त्व को हनुमान ने देखा और सोचा कि गरम किरणों का स्वामी सूर्य यह सोचकर लंका के पास न आकर दूर ही से चला गया कि वहाँ मेरा जाना अनावश्यक है। अगर वह प्राचीरों से युक्त इस नगर के मध्य आयगा तो वह खद्योत के समान क्या अल्प-प्रकाश न हो जायगा? । १९३

पॊशिवुरु पशुम्बॊऱ् कुन्ऱिऱ् पॊन्मदि नडुवद् पूत्तु
वशैयऱ विळङ्गुञ् जोदि मणियिना लमैत्त माडत्
तशैविलिव् विलङ्गै मुट्ट रारिरु ळिन्मै यालो
निशिशर रायि नारन् नॆडुनहर् निरुद रॆल्लाम् 194

पॊचिवु उरु–पिघलनेवाले; पचुम् पॊन्–हरे (चोखे और पीले) स्वर्ण के; कुन्ऱिल्–(त्रिकूट) पर्वत पर; पॊन् मतिल् नटुवण्–स्वर्ण-प्राचीरों के मध्य; पूत्तु–खिलकर; वचैयऱ–निर्दोष; विळङ्कुम्–शोभित; चोति मणियिताल्–ज्योतिमय मणियों से निर्मित; माटत्तु–सौधों से युक्त; अचैवु इल्–अचल; इ इलङ्कै मुट्टर्–इस प्राचीन लंका में; आर् इरुळ्–भरा अन्धकार; इन्मैयालो–नहीं है, क्या इसलिए; अ नॆट्टु नकर्–उस विशाल नगर के; निरुतर् ॲल्लाम्–राक्षस सभी; निचिचरर् आयितार्–निशिचर बन गये। १९४

पिघलने का स्वभाव रखनेवाले उस पीले स्वर्ण के पर्वत पर वह प्राचीन लंका बसा था। स्वर्ण प्राचीरों के मध्य था। उसमें निर्दोष रत्नों से युक्त और प्रकाश फैलानेवाले अनेक प्रासाद थे। वह अकंपन था। उस नगर में कभी अँधेरा नही होता था। हनुमान ने यह सोचा तो उसे एक बात सूझी। "तब क्या इसी कारण इस विशाल नगर के राक्षस लोग निशाचर (रात में चलनेवाले) बन गये?" । १९४

ऎन्ऱन्न नियम्बि वीदि येहुद लिळुक्क मॆन्नात्
तन्ऱहै यरिय मेन्नि शुरुक्किमा ळिहैयिऱ् चारच्
चॆन्ऱन तॆन्ब मन्नो तेवरुक् कमुद मीन्द
कुन्ऱॆन्न वयोत्ति वेन्दन् पुहऴॆन्नक कुववुत् तोळान् 195

तेवरुक्कु–देवों को; अमुतम् ईन्त–जिसने अमृत दिलाया; कुन्ऱु ॲन्न–उस मन्दर पर्वत के समान रहनेवाले; अयोत्ति वेन्तन्–अयोध्याधिपति के; पुकऴ् ॲन्न–यश के समान; कुववु–विशाल; तोळान्–भुजा वाला; ॲन्ऱन्न इयम्पि–ऐसा आप ही आप कहते हुए; वीति एकुतल्–वीथियो पर जाना; इऴुक्कम् ॲन्ना–गलत समझकर; तन् तकै–अपने स्वभाव के अनुरूप रहनेवाले; अरिय–अतिशय वृहत्; मेन्नि–

शरीर को; चुरुक्कि–छोटा बनाकर; माळिकैयिल् चार–प्रासादों से लगे-लगे; चॅन्ऱनन्–गया; ॲन्नप–ऐसा लोग कहते है। १९५

हनुमान के कन्धे देवो को अमृत दिलानेवाले मन्दरपर्वत के समान (ऊँचे) थे और अयोध्याधिप के यश के समान विशाल। ऐसे हनुमान ने यह सोचा कि वीथियों के मध्य से जाना गलत होगा। उसने अपने गुणों के अनुरूप वृहत्, अपने अनोखे शरीर को छोटा कर लिया। वह भवनों के पास लगे-लगे जाने लगा। १९५

आत्तुरु शालै तोरु मानैयिन् कूडन् दोरुम्
मात्तुरु माडन् दोरुम् वाशियिन् पन्दि तोरुम्
कात्तुरुञ् जोलै तोरुङ् गरुङ्गडल् कडन्द कालाल्
पूत्तोरुम् वाविच् चॅल्लुम् बॉरिवरि वण्डिऱ् पोनान् 196

करुम् कटल्–काले (रंग के) समुद्र को; कटन्त कालाल्–जिन (पैरों) से लाँघा उन पैरों से; आ तुरु–गायों से भरी; चालै तोरुम्–गोशालाओं में; आनैयिन् कूटम् तोरुम्–गजशालाओं में; मा तुरु–अनेक पशुओं के; माटम् तोरुम्–स्थलों में; वाचियिन् पन्ति तोरुम्–अश्वशालाओं में; का तुरुम्–संरक्षित; चोलै तोरुम्–उद्यानों में; पू तोरुम्–हर फूल पर; वावि चॅल्लुम्–बैठकर फिर उड़ जानेवाले; पॉरि वरि वण्टिन्–चित्तियों और रेखाओं से युक्त भ्रमर की भाँति; पोनान्–हनुमान गया। १९६

हनुमान पैदल चलकर गया। उसके वे पैर थे जिन्होने काले सागर को लाँघकर पार किया था। गोशालाएँ, गजशालाएँ, विविध पशुओं के बाँधने के स्थान, अश्वशालाएँ आदि देखता चला। संरक्षण-युक्त उद्यानों में भी अन्वेषण करता हुआ वह बिन्दियों और धारियों से युक्त भ्रमर के समान चला जा रहा था। १९६

पॅरियना ळॉळिकॉ णाना विदमणिप् पित्तिप् पत्ति
शॉरियुमा निळलङ् गङ्गे शुऱ्ऱलाल् कालिन् ऱोन्ऱल्
करियनाय् वॅळिय नाहिच् चॅय्यनाय्क् काट्टुङ् गाण्डऱ्
करियना यॅळिय नान्दन् नहत्तुऱै यळह नेपोल् 197

पॅरिय–बड़े; नाळ्–नक्षत्रों के; ऑळि कॉळ्–प्रकाश से युक्त; नानावित मणि पित्ति पत्ति–विविध मणि-जड़ित भित्तियों की पंक्तियाँ; चॉरियुम्–जो छिटकाती हैं; मा निळल्–वे श्रेष्ठ ज्योतियाँ; अङ्कङ्के–यत्र-तत्र; चुऱ्ऱलाल्–घेरती है, इसलिए; कालिन् तोन्ऱल्–वायुपुत्र; काण्टऱ्कु–देखने के लिए; अरियनाय्–दुर्लभ; ऍळियनाम्–पर सुलभप्राप्य रहकर; तन् अकत्तु उऱै–अपने हृदय में स्थित; अळकन् पोल्–सुन्दर श्रीराम के समान; करियनाय्–(एक स्थान पर विष्णु की भाँति) काला; वॅळियन् आकि–दूसरे स्थान श्वेत (ब्रह्मा) बनता; चॅय्यनाय्–(तीसरे स्थान पर रुद्र की तरह) लाल; काट्टम्–दरसाता। १९७

वहाँ के प्रासादों की दीवारें नाना मणियों से जड़ित थीं, जो नक्षत्रों के समान प्रकाश बिखेर रही थीं। स्थल-स्थल पर वह प्रकाश पुञ्जीभूत था। उनके बीच से जाते हुए हनुमान कभी लाल, कभी काला और कभी श्वेत वर्ण का हो जाता था। तब वह शिवजी, विष्णु और ब्रह्माजी के समान लगा। ये तीनों उन सुन्दर श्रीराम के ही विविध रूप हैं जो कि प्रत्यक्ष देखने को कठिन और ध्यान में प्राप्त करने को सुलभ होकर हनुमान के मन में विराजे हुए थे। १९७

ईट्टुवार् तवम लान्मर् ऱीट्टिना लियैव दिन्मै
काट्टुवार् विदिया रिन्नुङ् गाण्गिऱ्पार् काण्मि नम्मा
पूट्टुवार् मुलैपॉ ऱाद पॉय्यिडै नैयप् पूनीर्
आट्टुवा रमरर् माद राडुवा ररक्कर् मादर् 198

वितियार्–विधाता; ईट्टुवार्–अर्जन करनेवाले; तवम् अलाल्–तप के सिवा; मऱ्ऱु ईट्टिनाल्–अन्य (धन आदि) अर्जन करें तो; इयैवतु इन्मै–युक्त नहीं होता इसको; काट्टुवार्–अनेक प्रकार से दरसा देंगे; इन्नुम् काण्किऱ्पार्–और भी देखना चाहनेवाले; काण्मिन्–देख लें; अमरर् मातर्–देवांगनाएँ; पूट्टु वार् मुलै–अँगियाबद्ध स्तनों के; पॉऱात पॉय् इटै–भार को न सह सकनेवाली, और नहीं है ऐसा क्षीण रहनेवाली कमर के; नैय–दुःखी होते; पू नीर्–पुष्प-मिले जल से; आट्टुवार्–स्नान करातीं; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियाँ; आटुवार्–स्नान करतीं; अम्मा–आश्चर्य है मैया। १९८

विधाता लोगों को यह दरसाते हैं कि कमाना हो तो तप का फल कमाना है। अन्य धन आदि कमाने में कोई युक्तता नहीं है। यह आगे भी वे साबित करते रहेंगे। और जो इस बात का प्रमाण देखना चाहते हैं वे इधर देख लें। देवांगनाएँ अँगियाबद्ध भारी कुचों को सह न सकनेवाली और अभाव का सन्देह पैदा करने की उतनी क्षीण अपनी कमरों को दुःख देती हुई राक्षस-स्त्रियों को पुष्प (वास) -भरे जल से नहलाती हैं और वे राक्षस-स्त्रियाँ स्नान कर रही हैं। १९८

कानह मयिलह ळॅन्नक् कळिमड वन्न मॅन्न
आनन कमलप् पोदु पॉलिदर वरक्कर् मादर्
तेनुह शरळच् चोलैत् तॅय्वनी राऱ्ऱिऱ् ऱॅण्णीर्
वानवर् महळि राट्ट मज्जन माडु वारे 199

तेन् उकु–शहद जहाँ चूता है; चरळ चोलै–(तरुओं से भरे) उन उद्यानों में; तॅय्व नीर्–दैवी जल से भरी; आऱ्ऱु–(आकाशगंगा) नदी के; तॅळ् नीरिल्–स्वच्छ जल में; वानवर् मकळिर्–देवबालाएँ; मज्चनम् आट्ट–मज्जन कराती हैं और; कानक मयिल्कळ् ॲन्न–वन-मयूरों के समान; कळि मट अन्नम् अन्न–मत्त बाल-मरालों के भी समान; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियाँ; आनन कमलम् पोतु–

मुख-कमल; पॉलितर–शोभें ऐसा; मञ्चतम् आट्वारै–मज्जन करनेवाली जो हैं, उनको। १९९

शहद चूनेवाले पेड़ों से भरे उद्यानों में देवललनाएँ दिव्य आकाशगंगा के स्वच्छ जल में राक्षसियों को स्नान करा रही हैं और वे राक्षसियाँ वन-मयूरों और मत्त वालमरालों के समान मुख रूपी कमलों को खिलाते हुए स्नान कर रही थीं। हनुमान ने उनको देखा। १९९

इलक्कण मरबिऱ् केऱ्ऱ वॅऴुवहै नरम्वि नल्याऴ्
अलत्तहत् तळिर्क्कै नोव वळन्दॅडुत् तमैत्त पाडल्
कलक्कुऱ मुऴङ्ग नोक्किक् कन्नियर् शेडि माऱ्हळ्
मलर्क्कैयान् माडत् तुम्बर् मळैयिन्वाय् पॉत्तु वारै 200

इलक्कण मरपिऱ्कु–शास्त्रोक्त रीति से; एऱ्ऱ–युक्त; ॲऴु वकै–सात तरह के; नरम्पिन्–(स्वर निकालनेवाली) तन्त्रियों के साथ रहनेवाली; नल् याऴ्–श्रेष्ठ 'याऴ्' नाम की वीणा को; अलत्तक–लाक्षारससिक्त; तळिर्क्कै–पल्लव-समान उँगलियों को; नोव–दुखाते हुए; अळन्तु ॲटुत्तु–ताल के अनुसार मापकर; अमैत्त पाटल–गाया गाना; कलक्कुऱ–विगाड़ते हुए; मुऴङ्क–(मेघ) गरजे तव; नोक्कि–देखकर; कन्नियर् चेटिमार्कळ्–देवकन्याएँ जो चेरियाँ थीं; मलर् कैयाल्–अपने पुष्पहस्तों से; माटत्तु उम्पर्–सौधों के ऊपर; मळैयिन् वाय्–मेघों के मुखों को; पॉत्तुवारै–वन्द करनेवालियों को। २००

स्त्रियाँ (याऴ नाम की) वीणा का वादन कर रही थीं। उनमें सात स्वरों के लिए सात तंत्रियाँ लगी थीं। उनका वादन शास्त्र-शुद्ध था। उस संगीत में खलल पहुँचाते हुए प्रासादों के ऊपर आकाश में मेघ गरजने लगे तो चेरियों ने अपने पुष्प-सम हाथों से उनका मुख वन्द कराया। २००

शन्दप्पूम् बन्दर् वेयन्द तमनिय वरङ्गिऱ् ऱङ्गिच्
चिन्दित्त दुदवुम् दॅय्व मणिविळक् कॉळिरुञ् जेक्कै
वन्दुऱ्ऱ निरुत्त माक्कळ् विळम्बित्त नॅऱिव ऴामल्
कन्दर्प्प महळि राडु नाडहङ् गाण्गिन् ऱारै 201

चन्त–सुन्दर; पूम् पन्तर् वेयन्त–पुष्पों के वितान जहाँ तने थे; तमनिय अरङ्किल्–स्वर्णनिर्मित नाट्यभवनों में; चिन्तित्तवु उतवुम्–मन की चाही चीज देनेवाला; तॅय्व मणि विळक्कु–दिव्य मणिदीप; ऑळिरुम्–प्रकाश दे रहा था; चेक्कै तङ्कि–आसनों पर आसीन होकर; वन्तुऱ्ऱ निरुत्त माक्कळ्–आकर खड़े हुए नृत्य-आचार्यों के; विळम्पित्त नॅऱि–कहे मार्ग से; वऴामल्–न डिगकर; कन्तर्प्प मकळिर्–गन्धर्वकन्याएँ; आटुम् नाटकम्–जो नाटक प्रदर्शन करती हैं, उन नाटकों को; काण्किन्ऱारै–देखनेवालों को (हनुमान देखता गया)। २०१

(हनुमान कैसे-कैसे लोगों को देखता गया ? —उनकी सूची दी जाती

है।) स्वर्ण-निर्मित रंगमञ्च है। उसमें सुन्दर पुष्पों का वितान तना है। चिन्तामणि (जो माँगी हुई वस्तु दिला सकती है) दीप का काम दे रही है। उधर आसनों पर बैठे हैं राक्षस लोग। गंधर्व-स्त्रियाँ नर्तन-शास्त्र के ज्ञाताओं के निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार नाच दिखा रही हैं। उनको और राक्षस दर्शकों को (हनुमान ने देखा)। २०१

तिरुत्तिय पळिक्कु वेदित् तॆळ्ळिय वेलह ळॆन्नक्
करुत्तियल् पुरैक्कु मुणगट् करुङ्गयल् शॆम्मै काट्ट
वरुत्तिय कॊळ्ळुनर् तम्बाल् वरम्बिन्ऱि वळर्न्द कामम्
अरुत्तिय पयिर्क्कु नीर्पो लरुनऱ् वरुन्दु वारै 202

तिरुत्तिय–सुनिर्मित; पळिङ्कु वेति–स्फटिक वेदियों पर; तॆळ्ळिय वेल्कळ् ऍन्न–साफ़ (तीक्ष्ण) भालों के समान; करुत्तु इयल्पु–मन की बात; उरैक्कुम्–कहनेवाले; उण् कण्–काजलयुक्त; करुम् कयल्–काली आँखें रूपी कयल मछलियाँ; चॆम्मै काट्ट–लाल दिखें ऐसा; वरुत्तिय–दुःख देनेवाले; कॊळ्ळुनर्–पति लोग; तम् पाल्–अपने पास; वरम्पु इन्ऱि–सीमा-रहित; अरुत्तिय–प्यार से जनाकर; वळर्न्त–पालित; काम पयिर्क्कु–काम रूपी पौधे को; नीर् पोल्-जलवत; अरु नऱवु–श्रेष्ठ सुरा को; अरुन्तुवारै–पीनेवालियों को। २०२

उसने सुरचित स्फटिक-वेदियों पर राक्षस-स्त्रियों को देखा जो सुरापान कर रही थीं। (उनके पति उनको दुःख देकर चले गये थे। अब लौटने पर स्त्रियाँ रूठी हुई थीं।) उनकी कजरारी आँखें भाले के समान तीक्ष्ण थी और उनके मन (के रोष) को प्रतिबिम्बित कर रही थीं। पतियों ने मनवा लिया और उन्हें असीम प्रेम (काम की तृप्ति द्वारा) दे रहे थे। उस काम रूपी पौधे को मानो वे सुरा रूपी जल से सींच रही थीं। २०२

कोदऱु कुवळै नाट्टङ् गॊळ्ळुनर्हण् वण्णम् कॊळ्ळत्
तूदुळङ् गनियै वॆन्ऱु तुवर्त्तवाय् वॆण्मै तोन्ऱ
मादरु मैन्दर् तामु मॊरुवर्पा लॊरुवर् वैत्त
कादलङ् गळ्ळुण् डार्पोन् मुऱैमुऱै कळिक्किन् ऱारै 203

कोतु अऱु–निर्दोष; कुवळै नाट्टम्–कुवलय-सी आँखों ने (राक्षसियों की); कॊळ्ळुनर्–प्रेमी पतियों को; कण् वण्णम्–आँखों का रंग; कॊळ्ळ–अपना लिया; तूतुळङ् कनियै वॆन्ऱु–"तूदुळम्" नाम की लता के लाल फलों को (रंग में) हराकर; तुवर्त्त वाय्–जो लाल था, उस मुख के; वॆण्मै तोन्ऱ–श्वेत दिखते; मातरुम् मैन्तर् तामुम्–पुरुष और स्त्रियाँ जो; ऒरुवर् पाल् ऒरुवर् वैत्त–परस्पर करते थे; कातल् अम् कळ्ळुण्टार् पोल्–उस प्रेम रूपी सुरा का पान कर रहे हों; मुऱै मुऱै कळिक्किन्ऱारै–बारी-बारी से सुखानुभव करनेवालों को। २०३

(इस पद्य में भी संगम का दृश्य है।) स्त्रियों की निर्दोष नील

कुवलय-सी आँखों में वीर पतियों की आँखों का रंग उतर आया। (उनकी आँखें लाल हो गयी।) 'तूदुळम्' नामक लता के लाल फलों के समान जो उनके लाल अधर थे वे अब श्वेत हो गये। स्त्रियाँ और पुरुष आपसी प्रेम की सुरा को पान कर वारी-बारी से सुखभोग का रस लूट रहे थे। उनको हनुमान ने देखा। २०३

विऱ्पडर् पवळप् पादत् तलत्तह मॆॅळ्ळुदि मेनि
पॊॅऱ्पळ विल्ला वाशम् बुनैनरुङ् गलवै पूशि
अऱ्पुद वडिक्कण् वाळिक् कञ्जनं मॆॅळ्ळुदि यम्बॊन्
कऱ्पहङ् गॊॅडुक्क वाङ्गिक् कलन्ऱॆॅरिन् दणिहिन् ऱारै 204

विल् पटर्–शोभा छिटकानेवाले; पवळ पाततुतु–प्रवाल-सम पैरों पर; अलत्तकम् ॲॅळुति–महावर लगाकर; अळवु इल्ला–असीम; पॊॅऱ्पु मेनि–सुन्दरता से शोभनेवाले अपने शरीरों पर; वाचम् पुनै–सुवासित; नऱुङ् कलवै–श्रेष्ठ चन्दन; पूचि–र्चाचत करके; अऱ्पुत कण्–अद्भुत आँखों रूपी; वटि वाळिक्कु–तीक्ष्ण शरों पर; अञ्चनम् ॲॅळुति–अंजन लगाकर; अम् पॊॅन् कऱ्पकम्–श्रेष्ठ स्वर्ण-कल्पतरु; कलन् कॊॅटुक्क–आभरण देते; वाङ्कि–उन्हें लेकर; तॆॅरिन्तु–उनमें से चुनकर; अणिकिन्ऱारै–जो पहनती हैं उनको। २०४

कुछ राक्षसियाँ श्रृंगार कर रही हैं। कान्ति फैलाते रहे प्रवालरंग के चरणों पर महावर लगातीं; अपार सुन्दर शरीर पर सुगन्धित चन्दन का लेप लगा लेती; विस्मयकारी आँखों के शरों में अञ्जन लगाती और मनोरम स्वर्ण कल्पतरु के दिये हुए आभरण लेकर अपने को विभूषित करतीं। इस दृश्य को हनुमान ने देखा। २०४

पुलियडु मदुहै मैन्दर् पुदुप्पिळै युयिरैप् पुक्कु
नलिविड वमुद वाया नच्चुयिर्त् तयिऱ्क णल्लार्
मॆॅलिवुडै मरुङ्गुन् मिन्नि नलमरच् चिलम्बु विम्मि
ऑॅळिपड वुदैक्कुन् दोऱु मयिर्पुळ हुदिक्किन् ऱारै 205

अयिल् कण् नल्लार्–भाले के समान आँखों वाली राक्षसियाँ; पुलि अटु–व्याघ्र-जेता; मतुकै मैन्तर्–वलवान (उनके) वीर पतियों द्वारा; पुतु पिऴै–(कृत) नवीन अपराध; पुक्कु–मन में घुसकर; उयिरै नलिवु इट–प्राणों को त्रस्त कर रहा है, इसलिए; अमुत वायाल्–अमृत-मुख से; नच्चु उयिर्त्तु–विष निकालते हुए; मॆॅलिवु उटै मरुङ्कुल्–क्षीण कमर को; मिन्नित् अलमर–बिजली के समान तड़पने देते हुए; चिलम्पु–नूपुरों के; विम्मि ऑॅळि पट–उमग कर शब्द देते; उतैक्कुम् तोऱुम्–(पतियों पर) लातें लगाते समय; मयिर् पुळकु उतिक्किन्ऱारै–जिनके शरीर पुलकित होते है, उनको। २०५

भाले-सी आँखों वाली राक्षसी नारियाँ अपने व्याघ्रजयी वीर पतियों के किसी नये अपराध से रूठ गयीं। वह अपराध उनके मर्म पर लग

गया। प्राण विह्वल हो गये। वे अब अमृत-भरे मुख के द्वारा विष-भरी लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। उनकी कमरें बिजली के समान तड़पकर शिथिल हुई। तब वे नूपुरों को शब्दित करते हुए लातें मारने लगीं तो उन स्त्रियों के (या पतियों के) शरीर पुलक से भर गये। २०५

उळ्ळडै मयक्का लुण्गण् शिवन्दुवाय् वॆण्मै यूरित्
तुळ्ळिडैप् पुरुवङ् गोट्टित् तुडिक्कवेर् पॉडिक्कत् तूय
वॆळ्ळिडै मरुङ्गु लार्दम् मदिमुहम् वेऱॊन् ऱाहिक्
कळ्ळिडैत् तोन्ऱ नोक्किक् कणवरैक् कन्नल्हिन् ऱारै 206

तूय–स्वच्छ; वॆळ् इटै–शून्य स्थान के समान; मरुङ्कुलार्–कमर वालियाँ; उळ् उटै मयक्काल्–(सुरा-पान के) आन्तरिक नशे से; उण् कण्–कजरारी आँखें; चिवन्तु–लाल करके; वाय् वॆण्मै ऊरि–मुखों के सफ़ेद बनते; तुळ् पुरुवम्–चलित भौंहों के; इटै कोट्टि–मध्यभाग के कुंचित होकर; तुटिक्क–तड़पते; वेर् पॊटिक्क–स्वेद के बूँदों में निकलते; कळ् इटै–सुरा के (पात्र के) अन्दर; तम् मति मुकम्–उनके मुख के; वेऱॊन्ऱाकित् तोन्ऱ–दूसरे रूप में प्रतिबिंबित होते; नोक्कि–उसको देखकर; कणवरै–अपने पतियों के साथ; कन्नल्किन्ऱारै–(उस प्रतिबिंब को अपने पति द्वारा छिपाये रखी गयी अन्य स्त्री समझकर) कोप करनेवालियों को। २०६

राक्षसी नारियों की कमरें इतनी महीन थीं कि स्वच्छ शून्य स्थान-सी लग रही थी। सुरापान से उत्पन्न नशे में उनकी आँखें लाल हो गयीं, अधर श्वेत बन गये। चञ्चल भौंहों के मध्यभाग कुचित होकर फड़क उठे। शरीर पर स्वेदकण भर आये। उन्होंने अपने सुरापात्र के अन्दर अपने ही मुखों को देखा। पर उनके चन्द्रानन विकृत लगे। तो उन्होंने समझ लिया कि उनके पतियों ने अन्य स्त्री को छिपा रखा है। वे अपने पतियों से कोप करने लगीं। ऐसी नारियों को भी हनुमान ने देखा। २०६

आलैयिन् मलैयिर् चालि मुळैयित्ति लमुद वाशच्
चोलैयिऱ् ऱुवश रिल्लिर् चोनहर् मनैयिर् ऱूय
वेलैयिऱ् कॊळवॊ णाद वेऱ्कणार् कुमुदच् चॆव्वाय्
वालॅयिऱ् ऱूऱु तोन्देन् मान्दिनर् मयङ्गु वारै 207

आलैयिल्–ईख में; मलैयिल्–पर्वत में; चालि मुळैयितिल्–शालि के अंकुर में; अमुत वाच–मधुर सुगन्धित; चोलैयिल्–उद्यानों में; तुवचर् इल्लिल्–मधु-विक्रेता के घर में; चोनकर् मनैयिल्–यवनों के घरों में; तूय वेलैयिल्–पवित्र क्षीरसागर में; कॊळ ऒणात–अप्राप्य; वेल् कणार्–भाला-सी आँखों वाली स्त्रियों के; कुमुत चॆव्वाय्–कुमुद-मुख के; वाल् ऎयिऱ्ऊ–श्वेत दाँतों के मध्य; ऊऱु तोन्तेन्–बहनेवाले मधुर रस को; मान्तिनर्–पान करके; मयङ्कुवारै–मोहित रहनेवालों को। २०७

उसने पुरुषों को भी देखा, जो अपनी प्रेमिकाओं का अधर-रस पी कर मदमत्त हुए थे। वह रस ऐसा था, जो ईख में, पर्वतों पर, शालि के

अंकुरों में, सुवासित उद्यानों में मधुविक्रेता के घर में, यवनों के भवनों में या पवित्र क्षीरसागर से भी प्राप्य नहीं था। २०७

नलनुरु कणवर् तम्मै नवैयुऱप् पिरिन्दु विम्मुम्
मुलैयुरु कलवै तीय मुळ्ळिला मुळरिच् चॆङ्गेळ्
मलर्मिशै मलर्पूत् तॆन्न वळैक्कैयाल् वदनन् दाङ्गि
अलमरु मुयिरि नोडु नॆडिदुयिर्त् तयर्हिन् ऱारै 208

नलन् उरु–हित करनेवाले; कणवर् तम्मै–पतियो से; नवै उऱ–दुःखग्रस्त होकर; पिरिन्तु–बिछुड़कर; विम्मुम्–उभर उठनेवाले; मुलै उरु–स्तनों में लिप्त; कलवै तीय–लेप के सूखते; मुळ्ळिल्ला–काँटा-हीन; चॆम् केळ् मुळरि मलर् मिचै–लाल, सुन्दर कमल फूल पर; मलर् पूत्तॆन्न–और एक फूल फूला हो जैसे; वळै कैयाल्–ककणमण्डित हाथ पर; वतनम् ताङ्कि–वदन का धारण करके; अलमरुम् उयिरित्तोटुम्–अकुलाते प्राणों के साथ; नॆटितु उयिर्त्तु–ठंडी लम्बी आहें भरकर; अयर्किन्ऱारै–थकित होनेवालियों को। २०८

कुछ स्त्रियाँ अपने प्रेमियो से विछुड़ी थी। वे अच्छे और अच्छे गुणों से भरे प्रेमी थे। प्रेमिकाओं को वियोग-दुःख सताने लगा। उनके फड़कते स्तनों का चन्दन-लेप सूख गया। उनके प्राण छटपटाने लगे। इस स्थिति में वे अपनी हथेलियो पर मुख रखे गुमसुम वैठी थीं। तव ऐसा लगा मानो काँटे-रहित नाल वाले कमल के एक लाल फूल पर और एक कमल फूला हो। वे निःश्वास छोड़ते हुए शोक-थकित हो रही थी। २०८

एदियङ् गौळुनर् दम्वा लॆय्दिय काद लाले
तादियङ् गमळिच् चेक्कै युयिरिला वुडलिऱ् चार्वार्
मादुयर् काद रूण्ड वळियिन्मेल् वैत्त कण्णार्
तूदियर् मुरुव नोक्कि युयिर्वन्दु तुडिक्किन् ऱारै 209

एति–आयुधधारी; अम्–रूपवान; कौळुनर् तम् पाल्–पतियों पर; ऎय्तिय–रखे हुए; कातलाले–प्रेम के कारण; उयिरिला उटलिन्–निर्जीव शरीर के समान; तातु इयङ्कु–पराग से भरी; अमळि चेक्कै–गद्देदार शय्या पर; चार्वार्–जा गिरतीं; मा तुयर्–वहुत दुःख देनेवाली; कातल् तूण्ट–कामेच्छा की प्रेरणा से; वळियिन् मेल्–राह पर; वैत्त कण्णार्–विछाई आँखों के साथ; तूतियर् मुरुवल् नोक्कि–दूतियों की मुस्कुराहट देखने से; उयिर् वन्तु–प्राण फिर से पाकर; तुटिक्किन्ऱारै–तड़पनेवालियों को। २०९

(और कुछ विरहिणियों का चित्रण है—) ये स्त्रियाँ अपने प्यारे वीर पतियों पर अगाध प्रेम रखती है। वे वीर हथियारधारी हैं। वे दूर गये हैं और ये विरहिणियाँ अपनी सुध-बुध खोकर निर्जीव-सी वन जाती हैं और शय्या पर जाकर गिर जाती है, जिस पर पराग फैलाया गया है। उनकी

कामेच्छा तीव्र हो जाती है और उनकी आँखें पतियों के आने की राह पर लगी हुई हैं। तब दूतियाँ आती है और उनके मुखों में हँसी की झलक देखकर नायिकाएँ आश्वासन पाती हैं। उनके गये प्राण फिर आ जाते हैं और वे बेचैन होती हैं। हनुमान ने उनको देखा। २०९

शङ्गोंडु शिलम्बु नूलुम् बादशा लहमुन् दाळ्प्
पोंङ्गुपेर् मुरश मार्प्प विल्लुउ़ै तॅय्वम् बोऱ्ऱिक्
कोंङ्गलर् कून्दर् चॅव्वा यरम्बैयर् पाणि कोट्टि
मङ्गल कीदम् पाड मलर्प्पलि वहुक्किन् ऱार्ऱै 210

चङ्कोंटु–शंख-कंगनों के साथ; नूलुम् चिलम्पुम्–मंगलसूत्र और नूपुर; पातचालकमुम्–'पादजालक' नामक पैजनियाँ; ताळ्–लटकीं; पोंङ्कु पेर् मुरचम्–ऊँचा शब्द करनेवाली भेरियाँ; आर्प्प–बजीं; कोंङ्कु अलर्–सुगन्धित फूलों के साथ शोभनेवाले; कून्तल्–केश; चॅव्वाय्–लाल अधर; अरम्पैयर्–(इनसे युक्त) अप्सराएँ; पाणि कोट्टि–तालियाँ पीटती हुई; मङ्कल कीतम् पाट–मंगल-गीत गा रही है; इल् उऱै तॅय्वम्–गृहस्थ देवताओं को; पोऱ्ऱि–पूजा करके; मलर् पलि–फूलों की बलि; वकुक्किन्ऱार्ऱै–जो चढ़ाते हैं उन लोगों को। २१०

अप्सराएँ तालियाँ पीटकर मंगल-गीत गा रही थीं। तब उनके शंख-कंगन, मंगलसूत्र, पैरों के नूपुर, पैजनी आदि आभरण लटके। भेरियाँ ठनकती थीं। सुवासित पुष्पों से अलकृत केश और लाल अधरों वाली अप्सराएँ गा रही थीं और राक्षसियाँ अपने घर के देवताओं को पुष्प-बलि (पुष्पाञ्जलि) चढ़ा रही थी। हनुमान ने उनको देखा। २१०

इळैतोंडर् विल्लुम् वाळु मिरुळोंडु मलैय याणर्क्
कुळैतोंडर् नयनक् कूर्वेल् कुमरर्नॅञ् जुरुवक् कोट्टि
मुळैतोंडर् शङ्गु पेरि मुहिलॅन्न मुळङ्ग मूरि
मळैतोंडर् मञ्ञै यॅन्न विळावोंडु वरुहिन् ऱार्ऱै 211

इळै तोंटर्–आभरणों से छूटनेवाले; विल्लुम् वाळुम्–धनु और तलवार के आकार के प्रकाश की रेखाएँ; इरुळोंटु मलैय–अन्धकार के साथ युद्ध करतीं; याणर् कुळै तोंटर्–सुन्दर कुण्डलों तक आयत; नयऩम्–आँखें; कूर् वेल्–रूपी तीक्ष्ण भालों को; कुमरर्–वीर तरुणों के; नॅञ्चु उरुव–वक्षों को छेदते हुए; कोट्टि–वक्र गति से चलाकर; मुळै तोंटर् चङ्कु–अन्दर छेद के साथ रहनेवाले शंख; पेरि–भेरियाँ; मुकिलॅन्न मुळङ्क–मेघों के समान गरजती है; मूरि मळै तोंटर्–मेघ को देखकर नाचनेवाले; मञ्ञै अॅऩ्ऩ–मोरों के समान; विळावोंटु–मंगल उत्सव मनाते हुए; वरुकिन्ऱार्ऱै–आनेवाली नवोढ़ा स्त्रियों को। २११

हनुमान ने नवोढ़ा युवतियों को देखा। उनके अंगों में आभरण शोभ रहे थे, जिनसे प्रकाश छूटता था और वह प्रकाश तलवारों और धनुओं के रूप में था और अन्धकार से युद्ध कर रहा था। वे सुन्दर कर्ण-कुण्डलों

तक आयत आँखों रूपी तीक्ष्ण भालों को अपने तरुण प्रेमियों के दिलों को निफर जाय, ऐसा वक्र-रीति से फेंक रही थीं। भेरियाँ और शंख मेघों के गर्जन के समान नाद उठा रहे थे। इस साज के साथ वे मेघ देखकर नाचनेवाले मोरों के समान विवाहोत्सव में लगे आ रही थीं। २११

पऴ्ळियिन् मैन्द रोडु मूडिय पण्बु नीङ्गि
उऴ्ळिय कलविप् पूश लुडऱ्ऱुदऱ् कुरिय नॆञ्जर्
मॆऴ्ळवे यिमैयै नीक्कि यञ्जन विऴ्दु वेय्न्द
कऴ्ळवा णयन मॆऩ्ऩुम् वाळुऱै कऴिक्किन् ऱारै 212

पऴ्ळियिल्–शय्या में; मैन्तरोटु–अपने प्रेमियों के साथ; ऊटिय पण्पु–रूठने की वात; नीङ्कि–छोड़कर; उऴ्ळिय–वाँछित; कलविप् पूचल्–संगम-समर; उटऱ्ऱुतऱ्कु उरिय–करने में दत्त; नॆञ्चर्–चित्तवालियाँ; मॆऴ्ळवे–धीरे-धीरे; इमैयै नीक्कि–पलकें खोलकर; अञ्चत्त इऴुतु वेय्न्त–अंजनरंजित; कऴ्ळ वाळ् नयत्तम्–वंचक और उज्ज्वल आँखों; ऎऩ्ऩुम्–रूपी; वाळ्–तलवारों को; उऱै कऴिक्किऩ्ऱारै–म्यान से वाहर जो निकालती रहीं, उनको। २१२

शय्या में विनोदपूर्ण दृश्य उपस्थित हो रहे थे। प्रेमिका, जो पति से रूठ गयी थी, अब रूठन छोड़कर सम्भोग की इच्छा करती है। वह धीरे-धीरे मनोरम नयन रूपी तलवारों को अपनी (म्यान-) पलकों को खोलकर वाहर निकाल रही है! ऐसी प्रेमिकाओं को हनुमान ने देखा। २१२

ओविय मनैय माद रूडिन रुणर्वो डुऴ्ळम्
मेविय करण मऱ्ऱुङ् गॊऴुनरो डॊऴिय मीण्डु
तूवियम् बेडै यॆन्न मिऩ्ऩिडै तुवळ वेहि
आवियुन् दामु मेपुक् करुङ्गद वडैक्किऩ् ऱारै 213

ओवियम् अन्नैय मातर्–चित्र-सम स्त्रियाँ; ऊटितर्–रूठीं; उणर्वोटु–बोध के साथ; उऴ्ळम् मेविय करणम् मऱ्ऱुम्–मन आदि अन्तःकरण और अन्य सब; कॊऴुनरोटु ऒऴिय–प्रेमियों के साथ चले गये; तूवि अम् पेटै–मृदु पर वाली हंसिनी; ऎऩ्ऩ–के समान; मिऩ् इटै–विजली-सी कमर; तुवळ–वल खा गयी; मीण्टु–फिर; आवियुम् तामुमे–प्राण और स्वयं; पुक्कु एकि–प्रविष्ट हो, जाकर; अरुम् कतवु–कष्ट के साथ कपाट को; अटैक्किऩ्ऱारै–वन्द करनेवालियों को। २१३

चित्र-सम स्त्रियाँ अपने प्रेमियों के चले जाने से रुष्ट थीं। वे वाहर आकर खड़ी रहीं। उनके मन आदि अन्तःकरण प्रेमियों के साथ चले गये। अब वे ठहरना निरर्थक समझकर अन्दर आयी। तब वे कोमल परों वाली हंसिनी के समान कमरों को लचकाती हुई केवल अपने प्राणों को अपने साथ ले वहुत कष्ट के साथ किवाड़ वन्द कर रही थी। हनुमान ने ऐसी स्त्रियों को देखा। २१३

कित्तर मिदुनम् बाडक् किळरमळै किळित्तुत् तोन्ऱुम्
मित्तॅनत् तरळम् वेय्न्द वॅण्णिऱ विमान मूर्न्दु
पन्नह महळिर् शुऱ्ऱिप् पलाण्डिशै परवप् पण्णेप्
पॊन्नहर् वीदि तोऱुम् बुदुमनै पुहुहिन् ऱारै 214

पण्णै–स्त्रियों की भीड़ से भरी; पॊन्नकर्–स्वर्णनगरी की; वीति तोऱुम्–सड़क-सड़क में; कित्तर मितुतम् पाट–किन्नर-मिथुन गा रहे हैं; चुऱ्ऱि–घेरकर; पन्नक मकळिर्–पन्नगकन्याएँ; पलाण्टिचै परव–'अनेक बरस जिओ' (जयजीव) का मंगल-गान गाती है; किळर् मळै–शोभायमान मेघों को; किळित्तु तोन्ऱुम्–चीरकर प्रकट होनेवाली; मिन् ॲन्न–बिजली के समान; तरळम् वेय्न्त–मुक्ताओं से अलंकृत; वॅण्णिऱ विमानम् ऊर्न्तु–श्वेतवर्ण विमानों पर सवार होकर; पुतु मनै पुकुकिन्ऱारै–नये घरों में प्रवेश करनेवालों को। २१४

उस स्वर्ण नगरी की, जिसमें नारियाँ बहुत संख्या में पायी गयीं, वीथी-वीथी में किन्नर (जाति के पक्षी) -जोड़े गाते पाये गये। पन्नग-रमणियाँ घूम-घूमकर जयजीव के गान गा रही थीं। मेघ चीरकर प्रकट होनेवाली बिजली के समान मुक्ताओं से अलंकृत यानों पर बैठे हुए लोग अपने नये घरों में प्रवेश कर रहे थे। हनुमान ने उनको देखा। २१४

कोवैयुङ् गुळैयु मिन्नक् कॊण्डलिन् मुरश मार्प्पत्
तेवर्निन् ऱाशि कूऱ मुनिवर्शो बनङ्गळ् शॅप्पप्
पावैयर् कुळाङ्गळ् शूळप् पाट्टॊडु वान नाट्टुप्
पूवैयर् पलाण्डु कूऱप् पुदुमणम् बुणर्हिन् ऱारै 215

कॊण्टलिन्–मेघ के समान; मुरचम् आर्प्प–भेरियाँ बजती है; तेवर्–देव; निन्ऱु–खड़े होकर; आचि कूऱ–आशीर्वाद देते हैं; मुनिवर्–मुनिगण; चोपनङ्कळ्–चॅप्प–वेदमन्त्र द्वारा मंगल शब्द उच्चारण करते हैं; पावैयर् कुळाङ्कळ्–स्त्रियों के समूह; पाट्टॊटु–गाना गाते हुए; चूळ–घेरकर आते हैं; वान नाट्टुप् पूवैयर्–व्योमलोक की अंगनाएँ; पलाण्टु कूऱ–जयजीव का गान करती हैं; कोवैयुम् कुळैयुम्–हार और कुण्डल; मिन्न–चमकते है; पुतु मणम् पुणर्किन्ऱारै–इस साज के साथ अभिनव विवाहोत्सव में लगे हुओं को। २१५

जल-भरे मेघों के समान भेरियाँ नर्दन कर उठीं। देवगण स्थित होकर आशीर्वाद दे रहे थे। मुनिगण मंगल-वचन कह रहे थे। स्त्रियों के समूह गाते हुए घेरे आये। अप्सराएँ जयजीव के गान गा रही थीं। इस साज के साथ आभरणों और कुण्डलों को चमकने देते हुए नवविवाह में लगे रहे लोगों को भी देखा, हनुमान ने। २१५

इयक्किय रक्कि मार्ह णाहिय रॅन्जिल् विञ्जै
मुयङ्कै यिलाद तिङ्गण् मुहत्तियर् मुदलि नोरै

मयक्कऱ नाडि यॆङ्गुम् मारुदि मलैयिऩ् वैहुम्
कयक्कमि ऱुयिऱ्चिक् कुम्ब कऩ्ऩऩैक् कण्णिऱ् कण्डाऩ् 216

इयक्कियर्–यक्षस्त्रियाँ; अरक्किमार्कळ्–राक्षसनारियाँ; नाकियर्–नागकन्याएँ; अँञ्चिल् विञ्चै–निर्दोष विद्या के लोक की; मुयल् कऱै इलात–शशककलंक से हीन; तिङ्कळ् मुकत्तियर्–पूर्णचन्द्र के समान आननवालियाँ; मुतलिनोरै–आदि स्त्रियों को; ॲङ्कुम् मयक्कु अऱ–विना कहीं भूल-चूक के; नाटि–खोजकर; मारुति–हनुमान ने; मलैयिऩ् वैकुम्–पर्वत के समान रहनेवाले; कयक्कम् इल्–अचल; तुयऱ्चि–निद्रा में मग्न; कुम्पकऩ्ऩऩै–कुम्भकर्ण को; कण्णिल् कण्टाऩ्–अपनी आँखों से देखा। २१६

हनुमान ने इस रीति से सीताजी को यक्ष-स्त्रियों में खोजा। राक्षसियों, नागिनों, विद्याधर लोक की शशक-कलंक-हीन चन्द्रानना स्त्रियों और अन्य स्त्रीवृन्दों में खोजा। कोई सन्देह का स्थान न छोड़कर सर्वत्र और सावधानी के साथ उसने खोज लगायी। फिर उसकी आँखें कुम्भकर्ण पर लगीं, जो बड़े पर्वत के समान आकार के साथ अचल और गहरी निद्रा में चूर पड़ा था। २१६

ओशऩै येऴहऩ् ऱुयर्न्द दुम्बरिऩ्, वाशवऩ् मणिमुडि कवित्त मण्डवम्
एशऱ विळङ्गुव दिरुळै यॆण्वहै, आशैयि ऩिलैहॆड वहऱ्ऱि याऩ्ऱदु 217

वाचवऩ् मणि मुटि–देवेन्द्र का रत्नकिरीट; उम्परिऩ् कवित्त–जिसके ऊपर औंधा रखा हुआ था; मण्टपम्–वह मण्डप; एऴु योचऩै–सात योजन; अकऩ्ऱु उयर्न्ततु–चौड़ा और ऊँचा था; एचऱ–अक्षय; विळङ्कुवतु–शोभा से भरा था; इरुळै–अन्धकार को; निलै कॆट–स्थान न देकर; ॲण् वकै आचैयिऩ्–आठों दिशाओं में; अकऱ्ऱि–भगाकर; आऩ्ऱतु–उज्ज्वल बना रहता था। २१७

(कुम्भकर्ण का वर्णन—)कुम्भकर्ण जिस महल में सो रहा था, उसकी ऊँचाई और चौड़ाई सात योजन थी। उस मण्डप के ऊपर इन्द्र का मणि-मुकुट रखा हुआ था। वह निरन्तर शुद्ध प्रकाश फैला रहा था। अन्धकार को रहने का स्थान न देकर आठों दिशाओं में भगाते हुए उन्नत खड़ा था वह मकान। २१७

अऩ्ऩद नडुवणो रमळि मीमिशैप्, पऩ्ऩह वरशॆनप् परवै ताऩॆऩत्
तुऩ्ऩिरु ळॊरुवऴित् तॊक्क दामॆऩ, उऩ्ऩरुन् दीविऩै युरुक्कॊण् डॆऩ्ऩवे 218

अऩ्ऩतत् नटुवण्–उसके मध्य; ओर् अमळि मीमिचै–एक शय्या पर; पऩ्ऩक अरचु ॲऩ–नागराज के समान; परवै ताऩ् ॲऩ–समुद्र ही की भाँति; तुऩ् इरुळ्–घना अन्धकार; ओरु वऴि–एक स्थान में; तॊक्कतु आम् ॲऩ–पुंजीभूत हो गया हो ऐसा; उऩ्ऩ अरुम् तीविऩै–अचिन्त्य पाप; उरु कॊण्टॆऩ्ऩवे–साकार बन आये हों ऐसा। २१८

उस भवन के मण्डप के मध्य एक शय्या थी। उस पर वह पन्नग-

राजा के समान लेटा हुआ था। वह समुद्र के भी समान लगा। सारा अन्धकार एक स्थान पर एकत्र हो गया हो, ऐसा और सभी पापों ने आकार लिया हो, ऐसा भी (वह दिख रहा था)। २१८

मुऩ्ऩिय कऩैहडऩ् मुऴुहि मूवहैत्, तऩ्ऩियल् कदियॊडुन् दऴुवित् तादुहु
मऩ्ऩॆंडुङ् गऱ्पह वऩत्तु वैहिय, इऩ्ऩिळन् दॆन्ऱल्वन् दिऴुहि येहवे 219

तातु उकु–पराग चूनेवाले; मन् नॆंटुम्–स्थायी तथा विशाल; कऱ्पक वऩत्तु–कल्पक तरुओं के वन में; वैकिय–जो रहा; इन् इळम् तॆन्ऱल्–वह मधुर मन्द मलयपवन; मुऩ्ऩिय–अपने सामने रहे; कऩै कटल् मुऴुकि–गर्जनशील सागर में डूबकर; तन् इयल्–अपने स्वभाव की; मूवकै कतियॊटुम् तऴुवि–त्रिविध (मन्द, साधारण, त्वरित) गति अपनाकर; वन्तु इऴुकि–आकर (उसके शरीर में) लगकर; एकवे–जाता रहा, तब। २१९

मन्द मलयपवन, जो पराग चूनेवाले अमर कल्पवन में संचार कर रहा था, समक्ष रहे शब्दायमान समुद्र में डूबकर अपनी त्रिविध (मन्द, साधारण और तीव्र) गतियों में आता था और उसके शरीर का स्पर्श करके जाता था। २१९

वानवर् महळिर्हाल् वरुड मामदि, आननङ् गण्डमण् डबत्तु ळाय्हदिर्क्
कानहु कान्दमीक् काऩ्ऱ कामर्नीर्त्, तूनिऱ नऱुन्दुळि मुहत्तिऱ् ऱोऱ्ऱवे 220

वानवर् मकळिर्–सुरनन्दिनियाँ; काल् वरुट–उसके पैर सहला रही थीं; आननम् मामति–उनके आनन रूपी श्रेष्ठ चन्द्र को; कण्ट–जहाँ देख सके; मण्टपत्तुळ्–उस मण्डप के अन्दर; आय् कतिर्–श्रेष्ठ प्रकाश-किरणों को; काल्–प्रकट करनेवाले; नकु–शोभायमान; कान्तम्–चन्द्रकान्त पत्थर; मी काऩ्ऱ–ऊपर जो निकाला; कामर्–मधुर; तू निऱ–स्वच्छ रंग की; नऱुम्–सुबासित; नीर् तुळि–जल की बूँदें; मुकत्तिल् तोऱ्ऱवे–उसके मुख पर पड़कर झलक रही हैं, उस स्थिति में। २२०

देवललनाएँ उसके पैर सहला रही थीं। उनके आनन रूपी चन्द्र की सन्निधि के कारण, उस मण्डप के अन्दर श्रेष्ठ प्रभा फैलानेवाली चन्द्रकान्त मणियों से जल की बूँदें निस्रित हुईं। वे शुद्ध और सुगन्धित बूँदें कुम्भकर्ण के मुख पर छितरी दिखीं। २२०

मूशिय वुयिर्प्पॆऩ्ऩु मुडुहु वादमुम्
आशैयिऩ् पुऱत्तिडै यळवि वऩ्मैयाल्
नाशियि ऩळवैयि नडत्तक् कण्डवऩ्
कूशिनऩ् कॊदित्तनऩ् विदिर्त्त कैयिनान् 221

मूचिय–गहरा; उयिर्प्पु ऎऩ्ऩुम्–साँस रूपी; मुटुकु वातमुम्–तीव्र पवन भी; आचैयिऩ् पुऱत्तिटै–दिशाओं के पार; अळवि–फैलकर; वऩ्मैयाल्–जोर के कारण;

नाचियिऩ् अळवैयिऩ्–नाक तक; नट्टुतक् कण्टु–लौटाना देखकर; अवऩ्–वह (हनुमान); वितिर्त्त कैयिताऩ्–हाथ उछालते हुए; कूचिऩऩ्–हवा के लगने से डरकर; कोतित्तऩऩ्–कुपित हुआ। २२१

उसका श्वास बहुत ही घना, झञ्झा के समान था और वह दिगन्त तक फैलता गया। फिर कुम्भकर्ण के अन्दर खींचने के बल से लौट आया। उसको उसकी नासिका से छूटने और लौट आने का प्रकार देखकर हनुमान हाथ हिलाते हुए प्रभावित हुआ। उसे भय लगा और उसने उस हवा के मार्ग से अपने को बचाये रखा। उसे अपार क्रोध आया। २२१

पूळियिऩ्	ऱॊहैविशुम्	बणवप्	पोय्प्पुहुम्
केळिल्वॅङ्	ग़ॊडियव	ऩुयिर्प्पुक्	केडिला
वाळिय	वुलहॅलाऩ्	दुडैक्कु	मारुदम्
ऊळियिऩ्	वरवुपार्त्	तुळल्व	दॊत्तवे 222

पूळियिऩ् तोकै–धूल का समूह; विचुम्पु अणव–आकाश छूते हुए; पोय् पुकुम्–जा लगता है; केळ् इल्–अनुपम; वॅम् कोटियवऩ्–भयंकर क्रूर (कुम्भकर्ण) का; उयिर्प्पु–श्वास; केटिला–अक्षय रीति से; वाळिय–रहनेवाले; उलकॅलाम्–सारे लोकों को; तुटैक्कुम् मारुतम्–मिटानेवाला चण्डमारुत है; ऊळियिऩ् वरवु–प्रलय का आगमन; पार्त्तु–देखकर (प्रतीक्षा करते हुए); उळल्वतु ऒत्त–घूम रहा हो, ऐसा लगा। २२२

कुम्भकर्ण ने जो उच्छ्वास छोड़े उनके कारण धूलपटल उठी और आकाश तक छा गयी। उस अनुपम क्रूर राक्षस के भयंकर श्वास क्या थे साक्षात् लोकनाशक चण्डमारुत थे, जो युगान्त की प्रतीक्षा में घूमता रहा हो। २२२

पहैयॆऩ	मदियिऩैप्	पहुत्तुप	पाडुऱ
अहैयिल्पेळ्	वाय्मडुत्	तरुन्दु	वाऩॆऩप्
पुहैयॊडु	मुळङ्गुपे	रुयिर्प्पुप्	पॊङ्गिय
नहैयिला	मुळ्मुहत्	तॆयिऱु	ताऱवे 223

मतियिऩै–चन्द्र को; पकै ऎऩ पकुत्तु–शत्रु समझकर उसको दो भागों में चीरकर; अकै इल्–न बिगड़नेवाले; पेळ् वाय्–अपने बड़े मुख के (दोनों ओर); पाटु उऱ–युक्त रीति से; मटुत्तु–घुसाकर; अरुन्तुवाऩ् ऎऩ–खाता हो जैसे; पुकैयॊटु मुळङ्कु–धुएँ के साथ शब्द करनेवाला; पेर् उयिर्प्पु–बड़ा श्वास; पॊङ्किय–जिसमें उभर आता था; नकैयिला–उस हास-हीन; मुळ्मुकत्तु–बड़े मुख में; ऎयिऱु तोऩ्ऱ–वक्र दांत प्रकट करते हुए। २२३

उसके मुख के दोनों ओर वक्रदन्त दिखायी दिये। वे पूर्णचन्द्र के दो खण्डों के समान लगे। ऐसा लगा कि कुम्भकर्ण ने चन्द्र को शत्रु

मानकर उसके दो टुकड़े किये और अपने मुख में दोनों कोरों में डालकर उसे खा रहा हो ! धुएँ के साथ (खुर्राटे के) शब्द निकालनेवाले उसके हास-हीन भयंकर बड़े मुख में उसके वक्रदाँत ऐसे लगे। २२३

तडैपुहु मन्दिरन् दहैन्द नाहम्बोल्
इडैपुह लरियदो रुऱक्क मॅय्दिनान्
कडैयुह मुडिवॅनुङ् गाल मोर्न्दयल्
पुडैपॅय रानॅडुङ् गडलुम् बोलवे 224

तटै पुकु मन्तिरम्–वेग मिटानेवाले मन्त्र द्वारा; तकॅन्त नाकम् पोल्–रोके गये नाग की तरह; कटै युक मुटिवॅत्तुम्–(चौथे) आख़िरी युग का अन्त; कालम्–काल; ओर्न्तु–देखकर (प्रतीक्षा करके); अयल् पुटै पॅयरा–बाजू में न हटनेवाले (और चुप पड़े रहनेवाले); नॅटुम् कटलुम्–विशाल सागर; पोल–के समान; इटै पुकल् अरियतु–मध्य पहुँचकर जिसका भंग न किया जा सका; ओर् उऱक्कम्–ऐसी एक निद्रा में; ॲय्तिनान्–मग्न रहा। २२४

अवरोधनमन्त्र-बद्ध नाग के समान, और युगांत की प्रतीक्षा में, इधर-उधर न चलकर अवरुद्ध पड़े हुए विशाल सागर के समान कुम्भकर्ण अभग्न, गहरी निद्रा में मग्न पड़ा था। २२४

आव दाहिय तन्मैय वरक्कनै यरक्कर्
कोवॅ नानिन्ऱ कुणमिलि यिवनॅनक् कॉण्डान्
काव नाट्टङ्गळ् पॉऱियुहक् कनलॅनक् कनन्ऱान्
एव नोविव निऱैवर् मूवर्हळॅ नुमीट्टान् 225

आवताकिय–ऐसी; तन्मैय–स्थिति में रहे; अरक्कनै–राक्षस (कुम्भकर्ण) को; इवन् मूवर् इऱैवर्कळ्–यह तीन राक्षस-पतियों के; ॲनुम् ईट्टान्–समूह में एक है; एवनो–कौन है; इवन्–यह; अरक्कर् को ॲना निन्ऱ–राक्षसों का राजा जो है वह; कुणमिलि–गुणहीन (रावण) ही; ॲनक् कॉण्टान्–ऐसा मान लिया; कावल् नाट्टङ्कळ्–रक्षणसमर्थ आँखों में; पॉऱि उक–अंगारे उगलते हुए; कनलॅन–आग के समान; कनन्ऱान्–कुपित हुआ। २२५

हनुमान ने इस तरह सोते हुए कुम्भकर्ण को देखकर विचार किया कि यह तीन राक्षसों में एक होगा। वह उनमें कौन होगा ? फिर उसने सोचा कि यही वह राक्षसाधिपति, गुणहीन रावण होगा। यह विचार करते ही उसके मन में अत्यन्त क्रोध उमड़ उठा। उसकी आँखों से अंगारे छूटने लगे। वह ऐसा आग-बबूला हो गया मानो वही आग बना हो। २२५

कुरुहि नोक्किमऱ् ऱवन्ऱलै यॉरुबदुङ् गुन्ऱत्
तिरुहु तिण्बुय मिरुबदु मिवऱ्किलै यॅन्ना
मरुहि येऱिय मुनिवॅनुम् वडवैवॅङ् गनलै
अऱिवॅ नम्बॅरुम् बरवैयम् बुनलिना लवित्तान् 226

मऱ्ऱु–फिर; कुऱुकि नोक्कि–पास जा, देखकर; अवन्–उसके; तलै ओर् पतुम्–दस सिर; कुन्ऱत्तु इऱुकु–पर्वत सम सुदृढ़; तिण् पुयम्–कठोर भुजाएँ; इरुपतुम्–बीसों; इवन् कु इलै–इसके नहीं है; ऍन्ता–यह देखकर; मऱुकि–अस्त-व्यस्त होकर; एऱिय–जो चढ़ा; मुतिवु ऍंतुम्–उस क्रोध रूपी; वटवै वॅम् कत्तलै–भयंकर बड़वाग्नि को; अऱिवु ऍंतुम्–विवेक रूपी; पॅरुम् अम् परवै–विशाल, सुन्दर सागर के; पुत्तलित्ताल्–जल से; अवित्तान्–बुझा दिया। २२६

हनुमान ने फिर भी उसके निकट जाकर निहारा। इसके रावणोचित दस सिर और पर्वत-सम कठोर बीस हाथ नहीं थे। तव वह भ्रमित हुआ और उसने क्रोध रूपी बड़वाग्नि को विवेक के विशाल समुद्र के जल से शान्त किया। २२६

अवित्तु निन्ऱॅव नाहिलु माहवॅन् ऱङ्गै
कवित्तु नीङ्गिडच् चिलपह लॅन्बदु करुदाच्
चॅविक्कुत् तेन्ऱॅन विराहवन् पुहळ्निलैत् तिरुत्तुम्
कविक्कु नायह ननैयव नुऱैयुळैक् कडन्दान् 227

इराकवन् पुकळ्निलै–श्रीराम के यशोगान को; चॅविक्कु–कानों के लिए; तेन्ऱॅन–मधु के रूप में; तिरुत्तुम्–जो बना रहा था; कविक्कु नायकन्–वह कपिश्रेष्ठ; अवित्तु निन्ऱु–कोप को शान्त करके; ऍवनाकिलुम् आक–कोई भी हो; ऍन्ऱु–कहकर; चिल पकल्–कुछ दिन; नीङ्किट–जायँ; ऍन्पतु करुता–यह सोचकर; अङ्कै कवित्तु–हथेली को औंधा करके (मुद्रा दिखाकर); अनैयवन्–उसके; उऱैयुळै–वासस्थान, भवन को; कटन्तान्–पार कर गया। २२७

वानरनायक हनुमान, जो श्रीराम के यश को श्रवणामृतकारी बनाता था, अपने क्रोध को बुझाकर कुछ देर खड़ा रहा। फिर सोचा कि खैर! चाहे जो कोई भी हो! बेचारा कुछ दिन निश्चिन्त सोये! अपनी हथेली को तदनुकूल मुद्रा बनाकर अभयदान किया और तत्पश्चात वह कुम्भकर्ण के वासगृह को पार कर आगे गया। २२७

माड कूडङ्गण् माळिहै योळिहण् महळिर्
आड रङ्गुह ळम्बलन् देवरा लयङ्गळ्
पाडल् वेदिहै पट्टिमण् डबमुदऱ् पलवुम्
नाडि येहिऩ निराहवऩ् पुहऴॆऩु नलत्ताऩ् 228

इराकवन् पुकळ्–यह श्रीराम के यश का ही दूसरा रूप है; ऍन्ऩुम्–ऐसा मान्य; नलत्तान्–गुणों वाला; माटम् कूटङ्कळ्–अट्टालिकाओं, भवनों; माळिकै ओळिकळ्–भवनों की कतारों में; मकळिर्–स्त्रियों के; आटु अरङ्कुकळ्–खेल के मंचों; अम्पलम्–सभामण्डपों; तेवरालयङ्कळ्–देवालयों; पाटल् वेतिकै–गान के भवनों; पट्टि मण्टपम्–विद्या-विवादमण्डपों; मुतल् पलवुम्–आदि अनेक स्थानो मे; नाटि–खोजता हुआ; एकिनन्–गया। २२८

हनुमान श्रीराम का यश ही माना जाय ऐसा श्रेष्ठ और गुणपूर्ण था। वह सीताजी को ख़ोजते हुए अनेक सौधो, भवनों की पंक्तियो, स्त्रियों के खेल के मञ्चों, विद्या-विवादमण्डपों, देवालयों, संगीतसभामण्डपों आदि सभी स्थानों में भ्रमण करता गया। २२८

मणिहॊळ् वायिलिऱ् चाळरत् तलङ्गळिऩ् मलरिल्
कणिहॊ णाळत्तिऱ् कालॆऩप् पुहैयॆनक् कलक्कुम्
नुणुहुम् वीङ्गुमऱ् ऱिवनिलै यावरे नुवल्वार्
अणुविऩ् मेरुवि ऩाऴियाऩ् ऎऩच्चॆलु मऱिवोऩ् 229

आऴियाऩ् ऎंत–चक्रधारी (विष्णु भगवान) के समान; अणुविऩ्–अणु के रूप में; मेरुविऩ्–मेरु के समान; चॆलुम्–जा सकनेवाला; अऱिवोऩ्–बुद्धिमान; मणि कॊळ् वायिलिल्–रत्नालंकृत द्वारों; चाळरत् तलङ्कळिल्–झरोखों में; मलरिल्–पुष्पों; कणि कॊळ्–सूक्ष्म; नाळत्तिल्–नालों में; काल् ऎंत–हवा के समान; पुकै ऎंत–धुएँ के समान; कलक्कुम्–जाता; नुणुकुम्–बहुत ही महीन रूप में पहुँचता; वीङ्कुम्–स्थूल हो जाता; इवऩ् निलै–इसकी स्थिति; यावरे–कौन ही; नुवल्वार्–बता सकता है। २२९

हनुमान बुद्धिमान और चतुर था। वह कभी धुएँ के समान जाता, कभी हवा के समान। मणिमण्डित कपाटों वाले द्वारों, झरोखों में ही क्या? सूक्ष्म नालों में और फूलों पर भी खोज लगाता जा रहा था। अणु से भी छोटा और मेरु से भी बड़ा बनकर चक्रधारी विष्णुदेव के समान जाने का सामर्थ्य रखनेवाले उसके सम्बन्ध मे कौन बता सकेगा?। २२९

एऩ्द लिव्वहै यॆव्वऴि मरुङ्गिऩु मॆय्दिक्
काऩ्दण् मॆल्विरऩ् मडऩ्दैयर् यारैयुङ् गाण्बाऩ्
वेऩ्दर् वेदियर् मेलुळोर् कीऴुळोर् विरुम्बप्
पोऩ्द पुण्णियऩ् कण्णहऩ् कोयिलुट् पुक्काऩ् 230

एऩ्तल्–सम्मान्य; काऩ्तळ् मॆल् विरल्–'कान्दळ' (नामक पुष्प) के समान मृदु उँगलियों वाली; मटऩ्तैयर्–रमणियाँ; यारैयुम्–सभी को; काण्पाऩ्–देखता; इव्वकै–इस रीति से; ऎ वऴि मरुङ्किऩुम्–सभी मार्गो व स्थलों में; ऎय्ति–जाकर; वेऩ्तर्–राजा; वेतियर्–ब्राह्मण; मेलुळोर्–उच्च; कीऴुळोर्–और नीच; विरुम्प–सभी के प्रिय; पोऩ्त पुण्णियऩ्–जो प्रकट हुआ था, उस धर्मात्मा (विभीषण) के; कण् अकऩ् कोयिलुळ्–विशाल महल में; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुआ। २३०

सम्मान्य हनुमान 'कान्दळ' पुष्प के समान उँगली वाली रमणियों मे भी सीताजी की खोज करता चला। इस तरह सभी भागों और स्थलों मे घूमते हुए वह विभीषण के विशाल महल में आया। विभीषण राजा लोग, ब्राह्मण, देव, नाग सभी लोगों के प्यार और सम्मान का पात्र था। २३०

पळिक्कु वेदिहैप् पवळत्तिऩ् कूडत्तुप् पशुऩ्देऩ्
तुळिक्कुङ् गऱ्पहप् पऩ्दरिऱ् करुनिऱत् तोऱ्वाल्
वॆळुत्तु वैहुद लरिदॆंऩ ववरुरु मेवि
ऒळित्तु वाऴ्हिऩ्ऱ दरुममऩ् ऩाऩ्ऱऩै युऱ्ऱाऩ् 231

पळिङ्कु वेतिकै–स्फटिक के चबूतरे पर; पवळत्तिऩ् कूटत्तु–प्रवाल-मण्डप में; पचुऩ् तेऩ्–नव मधु; तुळिक्कुम्–बूंदों में गिरानेवाले; कऱ्पक पऩ्तरिल्–कल्पपुष्प-वितान के नीचे; करु निऱत्तोर् पाल्–काले रंग वाले राक्षसों के मध्य; वॆळुत्तु–श्वेत-रंग में; वैकुतल् अरितु–रहना कठिन है; ऎऩ–समझकर; अवर् उरु–उनका रंग; मेवि–लेकर; ऒळित्तु–छिपे; वाऴ्किऩ्ऱ–रहनेवाले; तरुमम् अऩ्ऩाऩ् तऩै–धर्म-सम उसके; उऱ्ऱाऩ्–पास आया। २३१

विभीषण धर्मदेवता के समान लगा, जो काले रंग वाले राक्षसों के मध्य श्वेत रंग के साथ रहना खतरे की बात समझकर उनका-सा काला रंग अपनाये हुए रहा ! एक प्रवालमण्डप में मधुवर्षी कल्प सुमनों के वितान के नीचे स्फटिक के चबूतरे पर विभीषण सो रहा था। हनुमान ने उसको देखा। २३१

उऱ्ऱु निऩ्ऱव नुणर्वैत्तऩ् नुणर्विना लुणर्न्दाऩ्
कुऱ्ऱ मिल्लदोर् कुणत्तिन निवऩॆंऩक् कॊण्डाऩ्
शॆऱ्ऱ नीङ्गिय मऩत्तिऩ ऩॊरुदिशै शॆऩ्ऱाऩ्
पॊऱ्ऱै माडङ्गळ् कोडियोर् नॊडियिडैप् पुक्काऩ् 232

उऱ्ऱु निऩ्ऱु–पास स्थित होकर; अवऩ् उणर्वै–उसके मनोभाव को; तऩ् उणर्विताल्–अपनी मनोशक्ति द्वारा; उणर्न्ताऩ्–समझ गया; इवऩ्–यह; कुऱ्ऱम् इल्लतु–अकलंक; ओर् कुणत्तितऩ्–गुण वाला सज्जन है; ऎऩ कॊण्टाऩ्–यह जान लिया; चॆऱ्ऱम् नीङ्किय–क्रोधहीन; मऩत्तितऩ्–मन वाला बनकर; ऒरु तिचै चॆऩ्ऱाऩ्–एक ओर गया; ओर् नॊटि इटै–एक पल में; पॊऱ्ऱै माटङ्कळ् कोटि–पर्वत-सम सौधों की पंक्ति में; पुक्काऩ्–जाकर खोजने लगा। २३२

हनुमान ने विभीषण के निकट जाकर अपने मन की शक्ति से उसका सच्चा स्वभाव समझ लिया। यह अकलंक गुणश्रेष्ठ सज्जन है। यह जानकर हनुमान का क्रोध दूर हो गया। वहाँ से निकलकर वह एक ही पल के अन्दर अनेक पर्वतोपम प्रासादों में घुसकर सीताजी की खोज लगाता चला। २३२

मुन्द रम्बैयर् मुदलिनर् मुळुमदि मुहत्तुच्
चिन्दु रम्बयिल् वायच्चियर् पलरैयुन् दॆरिन्दु
मन्दि रम्बल फडन्दुदन् मनत्तिन्मुन् शॆल्वान्
इन्दि रन्शिऱै यिरुन्दवा यिलिन्कडॆ यॆदिर्न्दान् 233

मुन्नुतु–पहली श्रेणी के; मुळुमति मुकत्तु–पूर्णचन्द्र के समान आननों में; चिन्तुरम् पयिल्–लाल रंग के; वाय्च्चियर्–अधरों के साथ रहनेवाली; अरमपैयर् मुतलित्तर् पलरैयुम्–रम्भा आदि अनेक स्त्रियों को; तॅरिन्तु–देखकर; पल मन्तिरम् कटन्तु–अनेक घरों को पार कर; तन् मत्तत्तिन् मुन् चॅल्वान्–अपने मन से भी आगे जाता हुआ; इन्तिरन् इरुन्त–(पहले) इन्द्र जहाँ कैद रहा; चिरै वायिलिन् कटै–उस कारागृह के द्वार को; ऍतिर्न्तान्–सामने देखा। २३३

उनमें रम्भा आदि चन्द्रानना सिंदूराधरा देवांगनाओं को देखकर हनुमान आगे गया। अनेक प्रासादों को पार करके हनुमान अपने मन की गति से भी अधिक तीव्र गति से चलकर उस कारागृह के द्वार पर पहुँचा जिसमें देवेन्द्र कभी बन्दी रहा। २३३

एदि येन्दिय तडक्कैयर् पिरैयॅयि ऱिलङ्ग
सूदु रैप्पॅरुङ् गदैहळुम् बिदिर्हळु मॊळिवार्
ओदि लायिर मायिर मुरुवलि यरक्कर्
कादु वॅञ्जिनक कळियित्तर् कावलैक् कडन्दान् 234

ओतिल्–कहें तो; एति एन्तिय–आयुधधारी; तटक्कैयर्–विशाल हाथों के; कातु वॅञ्चित्त–घातक भयंकर क्रोध रूपी सुरापान से; कळियित्तर्–मत्त; पिरै ऍयिऱु इलङ्क–अर्धचन्द्राकार (वक्र) दाँतों को प्रकट करते हुए; मूतुरै पॅरु कतैकळुम्–पुराने बड़े चरित्रों और; पितिर्कळुम्–पहेलियों को; मॊळिवार्–आपस में कहते हुए; आयिरम् आयिरम्–सहस्र-सहस्र; उरु वलि अरक्कर्–अतिबली राक्षसों के बने; कावलै–पहरे को; कटन्तान्–पार करके अन्दर गया। २३४

वहाँ की स्थिति कहनी हो— तो आयुधधारी, शत्रुसंहारक और क्रोध रूपी आसवपान से मत्त सहस्र-सहस्र अति बली राक्षस आपस में पुराने चरित्र और पहेलियाँ कहते हुए पहरा दे रहे थे। हनुमान उस पहरे को पार कर आगे गया। २३४

मुक्क णोक्किनन् मुरैमह नरुवहै मुहमुम्
तिक्कु नोक्किय पुयङ्गळुञ् जिलकरन् दनैयान्
ऒक्क नोक्कियर् कुळात्तिडै युरङ्गुहिन् ऱानैप्
पुक्कु नोक्कितन् पुहैपुहा वायिन्नुम् बुहुवान् 235

पुकै पुका–जहाँ धुआँ भी प्रवेश नहीं कर सकता; वायित्तुम्–वहाँ भी; पुकुवान्–जो घुस सकता था, वह हनुमान; पुक्कु–प्रविष्ट होकर; मुक्कण् नोक्कितन्–त्रिनेत्र शिवजी के; मुरै मकन्–औरस पुत्र; अरुवकै मुकमुम्–(कार्तिकेय) छः मुखों; तिक्कु नोक्किय पुयङ्कळुम्–दिशाओं की ओर बढ़े हुए करों में; चिल करन्तत्तैयान्–कुछ को छिपा लिया हो ऐसा; ऒक्क नोक्कियर्–एक समान उसकी ओर आँखें किये; कुळात्तिटै–सोनेवाली स्त्रियों के समूह के मध्य; उरङ्कुकित्ऱानै–जो सो रहा था उसको (इन्द्रजित् को); नोक्कित्तन्–देखा (हनुमान ने)। २३५

धुएँ के लिए भी अगम्य स्थानों में घुसकर जा सकनेवाला हनुमान इन्द्रजित् के शय्यागृह में भी घुस गया। परमेश्वर के औरस पुत्र कार्तिकेय के समान इन्द्रजित् पड़ा हुआ सो रहा था, जिन्होंने अपने अन्य हाथों और दिशाव्यापी करों को छिपा लिया हो। उसके पास उसी की ओर आँखें लगाये रहनेवाली स्त्रियों का समूह लेटा था। २३५

वळैयुम् वाळॅयिऱ् ऱरक्कनो कणिच्चियान् महनो
अळैयिल् वाळरि यनैयवन् यावनो वऱियेन्
इळैय वीरनु मेन्दलु मिरुवरुम् बलनाळ्
उळैयुम् वॅञ्जम मिवनुड नुळदॆन वुणर्न्दान् 236

अळैयिल्–कन्दरा में; वाळ् अरि–भयंकर सिंह; अनैयवन्–सदृश यह; वळैयुम्–वक्र; वाळ् ऍयिऱ्–उज्ज्वल दाँतों का; अरक्कनो–राक्षस है क्या; कणिच्चियान् मकनो–परशुधर (या जलते लोहे का आयुध रखनेवाले शिवजी) का पुत्र है: यावनो—और कौन है; अऱियेन्–नहीं जानता; इळैय वीरनुम्–छोटे वीर (लक्ष्मण); एन्तलुम्–और सम्मान्य बड़े वीर श्रीराम; इरुवरुम्–दोनों; पलनाळ्–अनेक दिन; इवनुटन् उळैयुम्–इसके साथ भिड़ेंगे; वॅम् चमम्–ऐसा भयंकर युद्ध; उळतु–होने को है; ऍन उणर्न्तान्–ऐसा अनुमान कर लिया, हनुमान ने। २३६

हनुमान ने उसको देखकर मन में सन्देह किया— क्या यह, जो कन्दरा में रहनेवाले क्रूर सिंह के समान सो रहा है, वक्रदन्त राक्षस है? या शिवजी का सुपुत्र 'मुरुगन' (कार्तिकेय) ही है? कौन है? मैं नहीं जान पाता। जो हो, इसके साथ छोटे राजा लक्ष्मण और सम्मान्य श्रीराम को अनेक दिन लड़ना पड़ेगा। ऐसा घमासान युद्ध होने को है! —हनुमान ने यह विश्वास कर लिया। २३६

इवनै यिन्नुणै युडैयपो रिरावण नॅन्नै
पुवन मून्ऱैयुम् वॅन्ऱदोर् पॊरुळॆनप् पुहऱल्
शिवनै नान्मुहत् तॊरुवनैत् तिरुनॆडु मालाम्
अवनै यल्लवर् निहर्प्पव रॆन्बदु मऱिवो 237

चिवनै–शिवजी को; नान् मुकत्तु ऒरुवनै–चतुर्मुख ब्रह्मा को; तिरु नॆटु मालाम् अवनै–श्री त्रिविक्रम विष्णु को; अल्लवर्–छोड़ अन्य कोई; निकर्प्पवर्–इसकी समानता करेंगे; ऍन्पतुम्–ऐसा कहना भी; अऱिवो–बुद्धिमत्ता होगा क्या; इवनै–इसको; इन् तुणै–विश्वस्त सहायक के रूप में; उटैय–जिसने प्राप्त किया है; पोर् इरावणन्–युद्धोत्साही रावण; पुवनम् मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों का; वॅन्ऱतु–जयी हुआ; ओर् पॊरुळ्–(सो) कोई (बड़ी) बात हो; ऍन पुकऱल्–ऐसा कहना; ऍन्नॆ–क्या बात है। २३७

इसकी समानता शिव, चतुर्मुख और त्रिविक्रम इन त्रिदेवों से अन्य कोई भी कर सकेंगे —यह कहना बुद्धिसंगत होगा क्या? (नहीं होगा)। इसको

रावण ने अपने सहायक के रूप में पाया है, तो युद्धप्रिय उसके तीनों लोकों के जीतने में कौन सी बड़ाई है ? । २३७

ॲन्ऱु	कैम्मरित्	तिडैनिन्ऱु	कालत्तै	यिहप्प
दन्ऱु	पोवदॆन्	ऱायिर	मायिरत्	तडङ्गात्
तुन्ऱु	माळिहै	योळिह	डुरिशऱत्	तुरुविच्
चॆन्ऱु	तेडिन	ऩिन्दिर	शित्तिनैत्	तीर्न्दान् 238

ॲन्ऱु–ऐसा कहकर; कै मऱित्तु–हाथ मटकाकर; इटै निन्ऱु–बीच में खड़ा रहकर; कालत्तै इकप्पतु–समय नष्ट करना; अन्ऱु–(उचित) नहीं; पोवतु–जाना; ॲन्ऱु–सोचकर; इन्तिर चित्तितै–इन्द्रजित् को; तीर्न्तान्–छोड़ गया; आयिरम् आयिरत्तु–सहस्र-सहस्र की गिनती में भी; अटङ्का–जो समा नहीं सके; तुन्ऱु–सटे रहे; माळिकै ओळिकळ्–सौधों की पंक्तियों में; तुरिचु अऱ–विना भूल-चूक के; तुरुवि चॆन्ऱु–टटोलते हुए जाकर; तेटिऩऩ्–खोजा । २३८

यह कहते हुए उस भाव के समर्थन में उसने अपना हाथ झटकाया। फिर विचार किया कि स्थान-स्थान में खड़ा होकर समय नष्ट करना अच्छा नहीं है, पर जाना ही कर्तव्य है। उसने इन्द्रजित् को रहने देकर आगे सहस्र-सहस्र सौधों की पंक्तियों में घुस-घुसकर विना भूल या चूक के टटोलता हुआ जाता रहा । २३८

अक्कन्	माळिहै	कडन्दुपोय्	मेलदि	हायन्
तॊक्क	कोयिलुन्	दम्बिय	रिल्लमुन्	दुरुवित्
तक्क	मन्दिरत्	तलैवर्हण्	मनैहळुन्	दडविप्
पुक्कु	नीङ्गिन	ऩिराहवन्	शरमॆनप्	पुहळोन् 239

पुकळोन्–यशस्वी; अक्कन् माळिकै–अक्षकुमार के महल को; कटन्तु–पार करके; मेल् पोय्–आगे जाकर; अतिकायन् तॊक्क–अतिकायनिवसित; कोयिलुम्–प्रासाद में भी; तम्पियर् इल्लमुम्–कनिष्ठ भ्राताओं के गृहों में भी; तुरुवि–खोजकर; तक्क–योग्य; मन्तिरत् तलैवर्कळ्–मन्त्रीश्रेष्ठों के; मनैकळुम्–गृहों में भी; इराकवन् चरमॆन–श्रीराघव के बाण की तरह; पुक्कु–प्रवेश करके; तटवि–खोजकर; नीङ्कितन्–आगे गया । २३६

यशस्वी हनुमान अक्षकुमार के महल को पार कर अतिकाय के प्रासाद में आया। उसको भी छोड़कर उनके कनिष्ठ भ्राताओं के भवनों में गया। वहाँ खोजने के बाद सुयोग्य मन्त्रीवर्यों के महलों में जाकर खोज लगायी। वह श्रीराघव के शर के समान चलता रहा । २३९

इन्न	रामिरुम्	बॆरुम्बडैत्	तलैवर्ह	ळिरुक्कैप्
पॊन्निन्	माळिहै	यायिर	कोडियुम्	बुक्कान्
कन्नि	मामदिऱ्	पुऱत्तवन्	करन्दुऱै	काण्बान्
शॊन्न	मून्ऱिनु	णडुवण	दहळियैत्	तॊडर्न्दान् 240

इन्नतर् आम्–ऐसे ही; इरुमॅरुम्–बहुत बड़े; पटैत्तलैवर्कळ्–सेनापतियों के; इरुक्कै–वासस्थान; आयिर कोटि–सहस्र कोटि; पॉन्तिन् माळिकैयुम्–स्वर्णप्रासादों में भी; पुक्कान्–प्रवेश करके; कन्ति मा मतिल् पुरत्तु–नित्य और बड़े प्राचीरों के अन्दर; अवन्–रावण के; करन्तु उरै–छिपकर रहने का स्थान; काण्पान्–देखने के लिए; चॉन्न मून्ऱिनुळ्–(पहले) कथित तीन रक्षक खाइयों में; नट्टुवणतु–बीच की; अकळियै–खाई के पास; तॉटर्न्तान्–जा पहुँचा। २४०

इस तरह ऐसे बहुत बड़े-बड़े सेनापतियों के सहस्र-सहस्र स्वर्णनिर्मित सौधों में गया। वह रावण के स्थान को देखने को उत्सुक था, जहाँ रावण छिपा रहता था। पहले ही कहा गया है कि उस अचल और अविनश्वर प्राचीर के अन्दर तीन महल थे, जो तीन खाइयों के मध्य थे। अब वह उनके बीच में रहनेवाली खाई के पास गया। २४०

तनिक्क डक्कळि ऱॅन्नवॊरु तुणैयिलान् ऱाय
पनिक्क डऱ्पॅरुङ् गडवुडन् परिववन् दुडैप्पान्
इनिक्क डप्पदन् ऱेऴुहडल् किडन्ददॅन् ऱिशैत्तान्
कनिक्क डऱ्कदिर् तॉडर्न्दव नहळियैक् कण्डान् 241

कनिक्कु–(सूर्य को फल समझकर उस) फल के लिए; अटल् कतिर्–गरम किरणमाली पर; तॉटर्न्तवन्–जो झपटा था; तनि–अप्रमेय; कटम् कळिरु ऑन्न–मत्त गज के समान; ऑरु तुणैयिलान्–अकेला; ताय–लाँघ गया, इसलिए; पनिक् कटल् पॅरुम् कटवुळ्–शीतल सागर का अधिष्ठाता बड़ा देवता (वरुण); तन् परिपवम् तुटैप्पान्–(हनुमान के तरण से प्राप्त) अपने परिभव को पोंछने के लिए; इनि कटप्पतु अन्ऱु–अब नहीं लाँघ सकेगा; एऴ् कटल् किटन्ततु–सात समुद्र मिलकर एक हो पड़ा है; ऑन्ऱु इचैत्तान्–ऐसा सोचा (हनुमान ने); अकळियै कण्टान्–उस खाई को देखा। २४१

यह हनुमान वही है जिसने अपने बचपन में सूर्य को फल समझकर उस पर छलाँग मारी थी। वह अकेले मदमत्त गज के समान समुद्र लाँघ आया था। इस पर जल के अधिष्ठाता वरुणदेव ने अपना अपमान मान लिया और अब सातों समुद्र अलंघ्य बनकर हनुमान के सामने आकर पड़े रहे! ऐसी खाई को हनुमान ने सामने देखा। २४१

पाळि नन्नॅडुङ् गिडङ्गॅन वुणर्वॅनेल् पल्पेर्
ऊळि कालनिन् ऱुलहॅलाङ् गल्लिनु मुलवा
आळि वॅञ्जिनत् तरक्कनै यञ्जियाळ् कडल्हळ्
एळु मिन्नहर्च् चुलायकॉ लामॅन निनैन्दान् 242

पाळि–बड़ी; नल् नॅटुम् किटङ्कु–अच्छी और लम्बी परिखा; ऑन–ऐसा; उणर्वॅनेल्–मानूँगा तो (नहीं); पल् पेर् निन्ऱु–अनेक लोग खड़े होकर; ऊळि कालम्–युगों तक; उलकॅलाम् कल्लिनुम्–सारे लोकों को खोद डालें; उलवा–तो भी ऐसा नहीं बन सकता; आऴ् कटल्कळ् एऴुम्–सातों गहरे समुद्र; आळि वॅम्

चित्तत्तु–आज्ञाचक्र चलानेवाले क्रूर क्रोधी; अरक्कतै अञ्चि–राक्षस से डरकर; इ नकर्–इस नगर को; चुलाय कॊल् आम्–घेर आये हैं शायद क्या; ॲन्न नितैन्तान्–ऐसा सोचा (हनुमान ने)। २४२

हनुमान ने विस्मय के साथ विचारा। इसको लम्बी खाई समझना कोई मतलब नही रखता! अनेक लोग युग-युगान्तर में सारे लोकों को खोद डालें तब भी ऐसी खाई नहीं बन सकती। लगता है कि सातों समुद्र आज्ञाचक्रधारी, क्रूर और क्रोधी रावण से डरकर इस नगर को घेरे पड़े हैं! । २४२

आय दाहिय वहन्नबुन्न लहळियै यडैन्दान्
ताय वेलैयि न्निरुमडि विशैकॊण्डु ताविप्
पोय कालत्तुम् बोक्करि दामॆन्रु पुहन्रान्
नाय हन्पुहळ् नडायपे रुलहॆला नडन्दान् 243

नायकन् पुकळ् नटाय–नायक श्रीराम का यश जहाँ फैला था; पेरुलकॆलाम्–उस बड़े विश्व में सर्वत्र; नटन्तान्–जो घूम आया; आयतु आकिय–ऐसी; अकन् पुनल्–विशाल जलराशि की; अकळियै अटैन्तान्–खाई को पहुँचा; ताय वेलैयिन्–पहले तरित समुद्र से; इरु मटि विचै–दुगुनी तीव्र-गति; कॊण्टु–अपनाकर; तावि पोय कालत्तुम्–लाँघ चलूँ तो भी; पोक्कु अरितु आम्–तारना कठिन होगा; ॲन्रु पूकन्रान्–ऐसा (आप ही आप) बोला। २४३

हनुमान उन सभी लोकों में घूम आया था (या व्याप आया था), जहाँ हमारे नायक प्रभु श्रीराम का यश व्याप्त है। वह उस खाई के पास आया। आप ही आप कहने लगा कि जिस गति से मैंने समुद्र को लाँघा उसकी दुगुनी तीव्र गति से लाँघने पर भी यह खाई पार नहीं कर सकूँगा। २४३

मेक्कु नाल्वहै मेहमुङ् गीळ्विळत्, तूक्कि न्नालन्न तोयत्त दाय्त्तुयर्
आक्कि न्नान्बडै यन्न वहळियै, वाक्कि नालुरै वैक्कवु माहुमो 244

मेक्कु–ऊपर के; नाल् वकै मेकमुम्–नानाविध मेघ; कीळ् विळ–नीचे गिरे; तूक्कित्ताल् अन्न–उनको उठा रही हो ऐसी; तोयत्तताय्–जलमय; तुयर् आक्कितान्–लोकों को क्षुब्ध करनेवाली; पटै अन्न–(रावण की) सेना के समान रही; अकळियै–खाई को; वाक्किताल्–शब्दों से; उरै वैक्कवुम् आकुमो–वर्णित किया जा सकता है क्या। २४४

उसमें इतना जल भरा था कि लगता था कि नानाविध मेघ नीचे गिर गये हों और उस खाई ने उन्हें अपने में धारण कर लिया हो। वह लोक-त्रासक रावण की सेना के समान विशाल थी। उस खाई की महिमा शब्दों द्वारा वर्ण्य हो सकेगी क्या ? । २४४

आतै मुम्मद मुम्बरि याऴियुम्, मान मङ्गैयर् कुङ्गुम वारियुम्
नात्त मादर् नऱैहुळ् नावियुम्, तेनु मारमुन् देय्वैयु नाऱुमे 245

आतै मुम्मतमुम्–गजों के त्रिमद-नीर; परि आऴियुम्–अश्वों के मुख का झाग; मात–मान्य; मङ्कैयर् कुङ्कुम वारियुम्–स्त्रियों के कुंकुम-जल के प्रवाह; नातम् मातर्–स्नान करनेवाली स्त्रियों के; कुळल् नऱै नावियुम्–केशों पर लगी खुशबूदार कस्तूरी; तेतुम्–शहद; आरमुम्–और मालाएँ; तेय्वैयुम्–और अन्य लेप; नाऱुम्–(उसमें) गन्ध देते थे। २४५

उसमें गजों के (बीज, आँखों और गण्डस्थल के) तीनों मदनीर; अश्वों की लारें, मान्य महिलाओं के कुंकुम का जल, स्नान करनेवाली स्त्रियों के केश मे मली कस्तूरी, शहद, मालाएँ; अन्य सुगन्धित लेप —सभी की गन्ध पायी गयी। २४५

उन्न नारै महत्ऱिल् पुदावुळिल्, अन्नम् कोऴिवण् डानङ्ग ळाऴिप्पुळ्
किन्न रङ्गुरण् डङ्गिलुक् कञ्जिरल्, चॅन्नङ् गाहङ् गुणालम् शिलम्बुमे 246

उन्नम्–(एक तरह का) हंस; नारै–सारस; मकन्ऱिल्–करांकुल पक्षी; पुता–'पुता' नामक (बड़ा) पक्षी; उळिल्–'उळळु' नामक पक्षी; अन्नम्–हंस; कोऴि–जलमुर्गा; वण्टानम्–और एक तरह के बड़े सारस; आऴिप् पुळ्–चक्रवाक; किन्नरम्–किन्नर; कुरण्टम्–करंड; किलुक्कम्–किलुक नामक पक्षी; अम् चिरल् चॅन्नम्–चिरल और चेन्नम नाम के पक्षीगण; काकम्–कौए; कुणालम्–कुणाल नामक पक्षी; चिलम्पुमे–चहकते रहे। २४६

उसमें सभी जलपक्षी चहक रहे थे। 'उन्नम', नारै (सारस), करांकुल, पुदा (दूसरी तरह का सारस), 'उळिल', हंस, 'जलकुक्कुट', 'वंडानम' (तीसरी तरह का बड़ा सारस), चक्रवाक, किन्नर, करण्ड, 'किलुक', चिरल, चेन्नम, कौए, कुणाल आदि पक्षी थे। २४६

नलत्त मादर् नऱैयहि लावियुम्, अलत्त हक्कुळम् बुञ्जॅऱिन् दाडिन
इलक्क णक्करि योडिळ मॅन्नडैक्, कुलप्पि डिक्कुमो रूडल् कॊडुक्कुमाल् 247

नलत्त मातर्–मनोरम रमणियों के; नऱै अकिल्–सुवासित अगरु का; आवियुम्–धुआँ और; अलत्तकक् कुळम्पुम्–लाक्षा का लेप; चॅऱिन्तु आटिन–खूब अपने शरीरों पर लग जाएँ, ऐसा जो स्नान कर आये; इलक्कणक् करियोटु–उन लक्षणयुक्त हाथियों से; इळ मॅन्नटै–अतिमन्द गति वाली; कुल पिटिक्कुम्–उत्तम जाति की करिणियों की; ओर् ऊटल् कॊटुक्कुम्–रूठन पैदा कर देते। २४७

उसमें सुलक्षण मत्तगज स्नान कर आए तो उनके शरीर पर से सौंदर्यगुणपूर्ण स्त्रियों के केश का अगरुधूम, लाक्षारस आदि की गन्ध लग गयी। वह छोटी आयु की मन्द गति वाली हथिनियों की, इन हाथियों से रूठन का कारण बन गयी और वे रूठ गयीं। २४७

नऱवु नाऱिय नाणरुन् दामरै, तुऱैह् डोरु मुहिऴ्त्तन तोन्ऱुमाल्
शिऱैयि नॆय्दिय शॆल्वि मुहत्तिनो, डुऱवु तामुडै यारॊडुङ् गार्हळो 248

नऱवु नाऱिय–मधु-गन्ध भरे; नाळ् नरुम् तामरै–नवविकसित सुगन्धित कमल; तुऱैकळ् तोऱुम्–सभी घाटों में; मुकिऴ्त्तन–बन्द; तोन्ऱुम्–दिखते हैं; चिऱैयिन् ऎय्तिय–कारा में आयी; चॆल्वि–देवी के; मुकत्तिनोटु उऱवु उटैयार्–मुख से रिश्ता माननेवाले; ताम् ऒटुङ्कार्कळो–स्वयं म्लान नहीं होंगे क्या। २४८

उस खाई के घाट में शहद की गन्ध से युक्त उसी दिन खिले कमल बन्द दिखे। कारण ? कारा में वन्दिनी रही देवी सीता के मुख के साथ नाता रखनेवाले कौन म्लान हुए विना रह सकेंगे ? । २४८

पळिङ्गु शॆऱ्ऱिक् कुयिऱ्ऱिय पायॊळि, विळिम्बुम् वॆळ्ळमु मॆय्दॆरि यादुमाल्
तॆळिन्त शिन्दैय रुञ्जिऱि यार्हळो, डळिन्द पोदऱि दऱ्कॊळि दावरो 249

पळिङ्कु चॆऱ्ऱि–स्फटिक पत्थर खूब सटा बिछाकर; कुयिऱ्ऱिय–सम बनाया गया; पाय् ऒळि–उज्ज्वल; विळिम्पुम्–किनारा और; वॆळ्ळमुम्–जल; मॆय् तॆरियातु–सत्य न जाना जाय ऐसा रहते हैं; माल् तॆळिन्त चिन्तैयरुम्–मोह-रहित शुद्धमन; चिऱियार्कळोटु–अशुद्धमन नीचों के साथ; अळिन्त पोतु–जब मिले रहते है; अऱितऱ्कु–पृथक्-पृथक् जानने के लिए; ऎळितु आवरो–सुलभ रहेंगे क्या। २४९

खाई के किनारे स्फटिक-पत्थरों से निर्मित थे। अतः जल में और उसमें भेद नहीं दिखायी दे रहा था। वह ऐसा है मानो मोहमुक्त परिशुद्ध मन वाले ज्ञानी कलक-मन नीच लोगों से मिल गये हों ! तब उनमें भेद परखना सुलभ होगा क्या ? २४९

नील मेमुद नन्मणि नित्तिलम्, मेल कीऴयल् माऱॊळि वीशलाल्
पालिन् वेलै मुदऱ्पल वेलैयुम्, काल्ह लन्दन वॆय्ऩक् काट्टुमाल् 250

नीलमे मुतल्–नीलम आदि; नन्मणि–श्रेष्ठ रत्न; नित्तिलम्–मोती; मेल् कीऴ्–ऊपर, नीचे; अयल्–पार्श्वों में; माऱु ऒळि–विभिन्न प्रकाश; वीचलाल्–बिखेरते है, इसलिए; पालिन् वेलै मुतल्–क्षीर-सागर आदि; पल वेलैयुम्–अनेक सागर; काल्–युगान्त के पवन के कारण; कलन्तनवे–मिश्रित हो गये; ऎन–ऐसा; काट्टुम्–दरसाते है। २५०

उस खाई में नीलम आदि श्रेष्ठ रत्न बारी-बारी से विभिन्न तथा विविध छटाएँ बिखेर रहे थे। इसलिए वह, क्षीरसागर आदि अनेक समुद्र पवनचालित हो एक हो गये हों —ऐसी लगी। (समुद्र सात हैं —लवण, इक्षु, सुरा, घृत, दधि, क्षीर और जल के)। २५०

अन्न वेलै यहऴियै यार्हलि, ऎन्न वेहडन् दिञ्जियुम् बिऱ्पडत्
तुन्न रुङ्गडि मानहर् तुन्निनान्, पिन्न रॆय्दिय तन्मैयुम् बेशुवाम् 251

अऩ्ऩ–ऐसी; वेलै अकऴियै–सागर-सम खाई को; आर् कलि ॲऩ्ऩवे–बड़े शब्दायमान सागर को जैसे; कटन्दु–लाँघकर; इञ्चियुम् पिऱ्पट–प्राचीरों को भी पीछे छोड़ करके; तुऩ्ऩरुम्–अगम; कटि मा नकर्–सुरक्षित बड़े नगर में; तुऩ्ऩिऩाऩ्–पहुँचा; पिऩ्ऩर्–उसके बाद; ऎय्तिय तऩ्मैयुम्–जो हुआ वह समाचार; पेचुवाम्–कहेंगे। २५१

ऐसी परिखा को हनुमान ने शब्दायमान सागर को जैसे लाँघकर पार किया। फिर प्राचीरों को भी पार करके अगम उस सुरक्षित नगर में प्रविष्ट हुआ। फिर क्या हुआ? —यह बताएँगे। २५१

करिय नाऴिहै पादियिल् कालऩुम्, वॆरुवि योडु मरक्करदम् वॆम्वदि
ऒरुव नेयॊरु पऩ्ऩिरण् डियोशऩैत्, तॆरुवु मुम्मैनू ऱायिरन् देडिऩाऩ् 252

कालऩुम्–यम भी; वॆरुवि ओटुम्–डर कर भाग जाए, ऐसा; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; वॆम् पति–उस भयंकर नगर में; करिय नाऴिकै–काली रात के समय; पातियिल्–के आधे में; ऒरु पऩ्ऩिरण्टु योचऩै–बारह योजन की; मुम्मै नूऱायिरम् तॆरुवुम्–तीन लाख की वीथियों में; ऒरुवऩे–अकेले ही; तेटिऩाऩ्–(हनुमान ने) खोजा। २५२

वह राक्षसों का भयंकर नगर यम को मन में भय भरकर भगानेवाला था। उसमें काली अँधेरी रात के आधे समय के अन्दर वह अकेले बारह योजन लम्बी तीन लाख वीथियों में सीताजी की खोज कर चुका। २५२

वेरियु मडङ्गिऩ नॆडुङ्गऴि विऴैक्कुम्
पारियु मडङ्गिऩ वडङ्गियदु पाडल्
कारिय मडङ्गिनर्हळ् कम्मियर्हण् मुम्मैत्
तूरिय मडङ्गिऩ तॊडङ्गिय दुऱक्कम् 253

वेरियुम् अटङ्किऩ–मद्यपों का शब्द थम गया; नॆटुम् कऴि विऴैक्कुम्–अधिक आनन्ददायी; पारियुम्–वाद्य भी; अटङ्किऩ–थम गये; पाटल् अटङ्कियतु–गाने बन्द हुए; कम्मियर्कळ्–कारीगरों ने; कारियम् अटङ्किऩर्कळ्–अपने काम बन्द किये; मुम्मै तूरियम्–तीन तरह की भेरियाँ; अटङ्किऩ–रुक गयीं; उऱक्कम्–नींद; तॊटङ्कियतु–आरम्भ हो गयी। २५३

उस अर्धनिशा में सुरापायी लोगों का शोर बन्द हो गया। अधिक आनन्ददायी वाद्यों का बजना बन्द हो गया। गाने, कारीगरों के कार्य और तीनों तरह की भेरी-ध्वनियाँ —सभी बन्द हो गये। सबको निद्रा ने घेर लिया। २५३

इऱङ्गिऩ निऱङ्गॊऴ्परि येममुऱ वॆङ्गुम्
कऱङ्गिऩ मऱङ्गॊळैयिल् कावलर् तुडिक्कण्
पिऱङ्गिऩ नऱुङ्गुऴल रऩ्ऩवर्पिरि यादोर्
उऱङ्गिऩर् पिणङ्गियॆदि रूडिऩर्ह ळल्लार् 254

निऱम् कोळ् परि–विविध रंगों के अश्व; इऱङ्कित्त–सिर लटकाकर सोये; मऱम् कोळ्–वीरता युक्त; ऍयिल् कावलर्–प्राचीरों के रक्षकों के; तुटि कण्–डमरुओं की आँखों ने; एमम् उऱ–सुरक्षा प्रदान करते हुए; ऍङ्कुम् करङ्कित्त–सर्वत्र शब्द किये; ऍतिर् पिणङ्कि–सामने से झगड़ा करके; ऊटित्तर्कळ् अल्लार्–जो नहीं रूठीं वे; अऩ्पर् पिरियातोर्–प्रेमियों से जो अलग नहीं रहीं वे; पिऱङ्कित्त नऱुङ्कुळलर्–घने और सुवासित केश वालियाँ; उऱङ्कित्तर्–सोयीं । २५४

विविध रंगों के अश्व सिर लटकाकर सो गये। प्राचीरों के रक्षक, वीरता-भरे पहरेदारों के डमरू का नाद सबको रक्षा का आश्वासन दिलाते हुए सर्वत्र फैला। जो अपने पतियों से नहीं रूठी थीं और जो अपने प्रेमियों से अलग नहीं हुई थी वे शोभायमान सुगन्धित केशिनियाँ सोयीं। २५४

वडन्दरु तडङ्गोळ्पुय मैन्दर्कल विप्पोर्
कडन्दन रिडैन्दनर् कळित्तमयिल् पोलुम्
मडन्दैयर् तडन्दन मुहट्टिडै मयङ्गिक्
किडन्दनर् नडन्ददु पुणर्च्चितरु केदम् 255

वटम् तरु–(हार की) लड़ियों से भूषित; तटम् कोळ–विशाल; पुय मैन्तर्–भुजाओं वाले तरुण; कलविप् पोर् कटन्तत्तर्–सम्भोग-समर पूरा करके; इटैन्तत्तर्–थकित हुए; कळित्त मयिल् पोलुम्–मत्त मयूरों के समान; मटन्तैयर्–जो मनोहर थीं, उन अपनी प्रियतमा स्त्रियों के; तटम् तन मुकट्टिटै–विशाल स्तनों की चोटी पर; मयङ्कि किटन्तत्तर्–मोहित पड़े रहे; पुणर्च्चि तरु–संसर्गजनित; केतम्–थकावट; नटन्ततु–क्रियमाण रही। २५५

हारालंकृत विशाल भुजा वाले कुलीन राक्षस तरुण संभोग-समर पूरा कर थक चुके। वे मत्त मयूरों की-सी आभा वाली अपनी प्रेमिकाओं के विशाल स्तनशिखरों पर सिर रखे सोये। संसर्ग-आयास अपना राज्य चला रहा था। २५५

वामनऱै यिन्ऱुऱै नुहर्न्दवर् मऱन्दार्
कामनऱै यिऩ्ऱिऱम् नुहर्न्दवर् कळित्तार्
पूमनऱै वण्डुऱै यिलङ्गमळि पुक्कार्
तूमनऱै यिऩ्ऱुऱै ययिऩ्ऱिलर् तुयिऩ्ऱार् 256

वाम तुऱैयिऩ्–वाममार्ग की; नऱै नुकर्न्तवर्–सुरा जिन्होंने पी थी वे; मऱन्तार्–विस्मृति की दशा में थे; काम नऱैयिऩ् तिऱम्–काम-भोग की सुरा का पान; नुकर्न्तवर्–जिन्होंने किया था वे; कळित्तार्–मत्त होकर; पूम नऱै–अति सुगन्धित; वण् तुऱै–समृद्ध शय्यागृह में; इलङ्कु अमळि–मनोरम रहनेवाली शय्या में; पुक्कार्–लेटकर; तूम नऱैयिऩ् तुऱै–धुएँ के बास के सुख को; अयिऩ्ऱिलर्–न भोगते हुए; तुयिऩ्ऱार्–सोये। २५६

वाममार्गावलम्बी लोग उसके अंग के रूप में सुरापान करके अपने

को भूले सोते रहे। कामोत्तेजक के रूप में मद्य जो पी चुके वे अधिक सुवासपूर्ण शय्यागृह में सुन्दर लगनेवाली शय्या में लेटे, अगरुधूम आदि का भी सुख न भोगते हुए निद्रा में चूर हो गये। २५६

पण्णिमै यडैत्तपल कट्पॊरुनर् पाडल्
विण्णिमै यडैत्तन विळैन्ददिरुळ् वीणैत्
तण्णिमै यडैत्तन तळङ्गिशै वळङ्गुम्
कण्णिमै यडैत्तन वडैत्तन्न कवाडम् 257

पल कट् पॊरुनर्–अनेक सुरापायी नर्तकों के; पाटल् पण्–गाने के स्वर; इमै अटैत्त–(पलक बद्ध) बन्द हुए; विण् इमै अटैत्तत–आकाश ने पलकें गिरा दीं; इरुळ् विळैन्ततु–अँधेरा बढ़ा; तळङ्कु इचै–स्वरित संगीत; वळङ्कुम्–निकालनेवाली; वीणै–वीणा के; तण् इमै–श्रुति मधुर स्वरस्थान; अटैत्तत–बन्द हुए; कण्–लोगों की आँखों को; इमै अटैत्तन–पलकों ने बन्द कर दिया; कपाटम् अटैत्तत–किवाड़ भी बन्द हुए। २५७

अनेक मद्यप नर्तकों के गाने के स्वर थम गये। आकाश ने भी पलकें गिरा लीं (मन्द हो गया)। अन्धकार घना फैल आया। स्वरमय वीणा के श्रुतिमधुर स्वरस्थल बन्द हुए। लोगों की आँखें भी पलकों के अन्दर बन्द हो गयीं। घरों के कपाट भी बन्द हो गये। २५७

विरिन्दन नरन्दमुदल् मॆन्मलर् हळाहत्
तुरिञ्जिवरु तॆन्ऱलुणर् वुण्डय लुलावच्
चॊरिन्दन करुङ्गण्वरु तुळ्ळिदरु वॆळ्ळम्
ऎरिन्दन्न पिरिन्दवर्द मॆञ्जुतनि नॆञ्जम् 258

नरन्तम् मुतल्–'नरंद' आदि के; मॆन् मलर्कळ्–कोमल पुष्प; विरिन्तत–विकसित हुए; पिरिन्तवर् तम्–वियोगिनियों के; आकत्तु–शरीरों में; उरिञ्चि–लगकर; वरु–आनेवाला; तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन; उणर्वु उण्टु–उनकी सुध को हरकर; अयल् उलाव–बाहर चला तो; करुङ्कण्–उनके काले नेत्रों से; वरु–आनेवाली; तुळ्ळि तरु वॆळ्ळम्–(आँसू की) बूंदों का प्रवाह; चॊरिन्तत–बह निकला; अञ्चु तति नॆञ्चम्–बचे रहे मन; ऎरिन्तत–विरह-ताप से जल रहे थे। २५८

'नरन्द' आदि कोमल (रात के फूलनेवाले) पुष्प फूले। मलयपवन वियोगिनियों के शरीर से लगकर उनकी सुध हर लेकर बहा। तब उनकी आँखों से निकली अश्रुबिंदुएँ धारा बनकर बहीं। उनके मन जो बचे थे विरहाग्नि में जल रहे थे। २५८

इळक्कमिऴु दॆञ्जविऴु मॆण्णरु विळक्कैत्
तुळक्कियदु तॆन्ऱल्पहै शोरवुयर् वोरित्

अळक्करी डळक्करिय वाशैयुर् वीया
विळक्कॅन्न विळङ्गुमणि मॅय्युरु विळक्कम् 259

पकै चोर–शत्रुओं के शिथिल पड़ते समय; उयर्वोरिन्–ऊँचा उठनेवालों के समान; इळक्कम् इळुतु–स्निग्ध तेल के; ॲज्च–बाकी न रहने पर; विळुम्–बुझनेवाले; ॲण् अरुम् विळक्कै–असंख्यक दीपों को; तॅन्ऱल्–मलयपवन ने; तुळक्कियतु–पूर्णरूप से शान्त कर दिया; अळक्करॉटु–समुद्र-सदृश; अळक्करिय–अपार; आचै उऱ–प्रेम बढ़ाते हुए; मणि मॅय् उरु विळक्कम्–सुन्दर (स्त्रियों के) शरीरों की कान्ति; वीया विळक्कु ॲन्न–अमर दीप के समान; विळङ्कुम्–छिटकी। २५९

घृत पूरा हो गया और असंख्य दीप बुझ गये। तब मलयपवन ने उनको बुझा दिया। यह ऐसा था मानो शत्रु के शिथिल-पड़ते समय कोई अपना सिर उठाए आरूढ़ हो रहा हो! तब भी सागर की समानता पार कर जो प्रेम बढ़ गया था उसको उत्तेजना देते हुए सुन्दरी प्रेमिकाओं के मनोरम शरीरों की कांति अक्षय दीप के समान उज्ज्वल बनी रही। २५९

नित्तनिय मत्तॊळिल रायनिऱैयु ञानत्
तुत्तमरु ऱङ्गिनर्हळ् योहियर् तुयिन्ऱार्
मत्तमद वॅङ्गळि ऱुऱङ्गिन मयङ्गिप्
पित्तरु मुऱङ्गिन रिनिप्पिऱरि दॅन्नाम् 260

नित्त नियमत् तॊळिलराय्–नित्य नियमित कर्म पूरा करते हुए; निऱैयुम्–पूर्ण बने; ञानत्तु उत्तमर्–ज्ञान श्रेष्ठ; उऱङ्कितर्कळ्–सोये; योकियर् तुयिन्ऱार्–योगी भी सुप्त रहे; मत्त मत वॅम् कळिऱु–मद मत्त भयंकर गज; मयङ्कि उऱङ्कित–मुग्ध हो सोये; पित्तरुम् उऱङ्कितर्–पागल लोग भी सोये; इनि–इस स्थिति में; पिऱर् इतु–अन्यों की यह (निद्रित दशा); ॲन् आम्–क्या होगी। २६०

ज्ञान में बढ़े हुए वे नित्य-नियम करनेवाले कर्मयोगी भी सो गये। योगियों को भी निद्रा ने अपनी चपेट में ले लिया। मदमत्त मातंग भी निद्रित हो गये। दीवाने भी सो गये। फिर दूसरों की निद्रा की स्थिति का क्या कहना है? । २६०

आयपॊळु दम्मदि लहत्तरशर् वैहुम्
तूयतॆरु वॊन्ऱॊडॊरु कोडितुरु विप्पोयत्
तीयव निरुक्कैययल् शॅय्दवह ळिञ्जि
मेयदु कडन्दनन् विनैप्पहैयै वॅन्ऱान् 261

आय पॊळुतु–ऐसे उस समय; वितैप् पकैयै वॅन्ऱान्–कर्म रूपी शत्रु का विजेता; अम् मतिल् अकत्तु–(मध्य स्थित उस नगर के) प्राचीर के अन्दर; अरचर् वैकुम्–राजा लोग जहाँ रहते थे; तूय–उन साफ; ऑन्ऱॊडु ऑरु कोटि तॆरु–दो करोड़ वीथियाँ; तुरुवि पोय्–खोज लगाते पार कर; तीयवन्–खल (रावण) के; इरुक्कै

अयल् चॅय्त-वासस्थान के निकट बनी; मेयतु अकळ् इञ्चि-युक्त खाई और प्राचीर को; कटन्ततन्-पार कर गया। २६१

जब इस भाँति सारा नगर निद्रा के वश में रहता था, तब कर्म-शत्रु-विजेता हनुमान उस प्राचीर-वलय के मध्य में स्थित नगर की राजवीथियों में गया, जहाँ राजा लोगों का निवास था। वैसी दो करोड़ वीथियों में खोज लेने के बाद वह क्रूर रावण के महल की खाई और प्राचीर को पार कर अन्दर गया। २६१

पोरि यऱ्कै यिरावणऩ् पॊऩ्मऩै, शोरि यऱ्कै निरम्बिय तिङ्गळाय्त्
तार हैक्कुळु विऱ्ऱळैत् तोङ्गिय, नारि यऱ्क्कुऱै वामिड नण्णिऩाऩ् 262

पोर् इयऱ्कै-युद्ध करना जिसका स्वभाव था; इरावणऩ् पॊऩ् मऩै-उस रावण का प्रासाद; चोर् इयऱ्कै निरम्पिय-श्रेष्ठताओं (कलाओं) से युक्त; तिङ्कळाय्-चन्द्र बना; तारकै कुळुविल्-ताराओं के समूह के समान; तळैत्तु ओङ्किय-प्रकाशमय और उन्नत रहे; नारियर्क्कु उऱैवु आम् इटम्-उसकी स्त्रियों के वासस्थानों; नण्णिताऩ्-के पास पहुँचा। २६२

रावण स्वभाव से युद्धप्रिय था। उसका स्वर्णमहल सभी कला-कृतियों व वैभवों से पूर्ण था। उसके चारों ओर उसकी प्रिय नारियों के निवासस्थान थे। रावण का महल कलापूर्ण चन्द्र के समान लगा और नारियों के भवन उज्ज्वल तारा-समूह के समान लगे। २६२

मुयऱ्क रुङ्गऱै नीङ्गिय मॊय्म्मदि, अयिर्क्कुम् वाण्मुहत् तारमु दऩ्नवर्
इयक्कर् मङ्गैयर् यावरु मिऩ्बुऱ, नयक्कुम् माळिहै वीदियै नण्णिऩाऩ् 263

मुयल्-शशक के; करुम् कऱै नीङ्किय-कलंक से रहित; मॊय् मति-प्रकाशमय पूर्णचन्द्र; अयिर्क्कुम्-जिसको देखकर मोहित हो जाए; वाळ् मुकत्तु-ऐसे सुन्दर मुख की; आर् अमुतु अऩ्ऩवर्-पूर्ण अमृत के समान; इयक्कर् मङ्कैयर् यावरुम्-यक्षकन्याएँ सब; इऩ्पुऱ नयक्कुम्-जिनको बहुत पसन्द करती थीं; माळिकै वीतियै-उन सौधों की वीथी को; नण्णिताऩ्-पहुँचा। २६३

पहले वह यक्ष-रमणियों के प्रासादों की वीथी में गया। वे यक्षिणियाँ अति सुन्दर थीं। शशकलंकहीन चन्द्र भी उनके मुख को देखकर स्तब्ध रह जाता! कांतिमय आनन वाली वे समृद्ध अमृत-समान थीं। २६३

तळैन्द पेरॊळि मॊय्मणित् ताडॊऱुम्, इळैन्द नूलिनु मिऩ्ऩिळङ् गालितुम्
नुळैन्दु नॊय्दिनिऩ् मैयऱ नोक्किऩाऩ्, विळैन्द तीविऩै वेरऱ वीशिऩाऩ् 264

विळैन्त तीविऩै-राग के कारण उत्पन्न पाप को; वेर् अऱ वीचिताऩ्-जिसने निर्मूल कर दिया था (उसने); पेर् ऑळि तळैन्त-बहुत प्रकाशमय; मॊय् मणि ताळ् तॊऱुम्-घने रूप से रत्नों को जड़कर निर्मित ताले-ताले में; इळैन्त नूलितुम्-

पतले कते सूत्र से भी; इत् इळम् कालितुम्–मन्द मधुर पवन से भी; नोय्तितिन्–महीन रूप से; तुळैन्तु–घुसकर; मै अऱ्–विना चूक के; नोक्कितान्–देखा। २६४

हनुमान रागविमुक्त था और उसने राग से उत्पन्न होनेवाले सभी पापों को दूर कर दिया था। ऐसा वह सूत्र और पवन से भी महीन रूप में रत्नजटित तालों के द्वार में घुसकर अन्दर गया और विना नागा के सब जगह खोजने लगा। २६४

अत्ति रम्बुनै यातै यरक्कत्मेल्, वैत्त शिन्दैयर् वाङ्गु मुयिर्प्पित्तर्
पत्ति रम्बुरै नाट्टम् बदैप्पऱच्, चित्ति रङ्ग ळॅनविरुन् दार्शिलर् 265

चिलर्–(उन यक्षनन्दिनियों में) कुछ; अत्तिरम् पुतै–कामास्त्र लगे; यातै अरक्कत् मेल्–गज-सम राक्षस पर; वैत्त चिन्तैयर्–मन ललचाकर; वाङ्कुम् उयिर्प्पितर्–निःश्वास छोड़ती हुई; पत्तिरम् पुरै नाट्टम्–अस्त्र-सम आँखें; पतैप्पऱ–निश्चेष्ट रखते हुए; चित्तिरङ्कळ् ॲत्त–चित्रवत; इरुन्तार्–रहीं। २६५

(वे कैसी स्थिति में थीं? —इसका वर्णन देखिए।) उनमें कुछ अपना मन मदनास्त्राहत गज के समान रहनेवाले रावण पर लगाए दीर्घ निःश्वास छोड़ रही थी। उनकी आँखें टकटकी लगाये निस्पद थीं। वे चित्रवत रहीं। २६५

अळ्ळल् वॅञ्जिलै मारनै यञ्जियो, मॅळ्ळ वित्गत्त विन्बयत् वेण्डियो
कळ्ळ मॅन्गॊ लरिन्दिलङ् गण्मुहिऴ्त्, तुळ्ळ मिन्ऱि युऱङ्गुहित् ऱार्शिलर् 266

चिलर्–और कुछ; कण् मुकिऴ्त्तु–आँखें बन्द करके; उळ्ळमिन्ऱि–विना इच्छा के; उऱङ्कुकिन्ऱार्–सोने का बहाना करती है; अळ्ळल्–पंकीले खेत में उत्पन्न होनेवाली ईख का; वॅम् चिलै–भयानक धनु; मारतै अञ्चियो–रखनेवाले कामदेव से डरकर क्या; मॅळ्ळ–चुपके-चुपके; इत् कतवित्–(रावण सम्बन्धी) मधुर स्वप्न; पयत् वेण्टियो–का सुख चाहकर; कळ्ळम्–वंचना; ॲत् कॊल्–क्या है; अऱिन्तिलम्–नहीं जानते। २६६

और कुछ थी, जो आँखें बन्द किये पड़ी थीं; पर सो नहीं रही थीं। सोने का बहाना कर रही थी। वे क्यों ऐसा कर रही थी? पंकजनित इक्षुधनुधर काम से डरकर? या कोई मधुर स्वप्न देख रही थी जिसका सुख छोड़ना नहो चाह रही थीं? हम उनकी वञ्चना क्या जानें?। २६६

पऴुदिन् मन्मद नेय्हणै पन्मुऱै, उऴुद कॊङ्गैय रूश लुयिर्प्पिनर्
अऴुदु शॅय्वदॆ नाणै यरक्कनै, ॲऴुद लाङ्गॊलॆन् ऱॆण्णुहिन् ऱार्शिलर् 267

चिलर्–और कुछ; मन्मतन् ॲय्–मन्मथप्रेषित; पऴुतिल् कणै–अचूक शर; पल् मुऱै उऴुत–जिनको अनेक बार जोत (विद्ध कर) चुके; कॊङ्कैयर्–उन स्तनों के साथ; ऊचल्–झूले की तरह आने-जानेवाले; उयिर्प्पितर्–श्वास छोड़ती हुई;

अळुतु चॅय्वतु ॲंत्त–रोकर करें क्या; आणै अरक्कतै—आज्ञाकारी रावण का चित्र; ॲळुतलाम् कॊल्–लिखें क्या; ॲंन्ऱु–ऐसा; ॲण्णुकिन्ऱार्–सोच रही हैं। २६७

और कुछ स्त्रियों की हालत देखिए। उनके स्तन बार-बार मन्मथ-शर द्वारा विद्ध हो चुके। उनके प्राण झूले के समान झूल रहे थे। वे सोच रही थीं कि अब रोने से क्या होनेवाला है? आज्ञापति रावण का चित्र बना लें। २६७

आव दॊन्ऱरु ळायॆन दावियैक्, कूवु हिन्ऱिलै कूऱलै शॆन्ऱॆनाप्
पावै पेशुव पोऱ्कण् पनिप्पुरप्, पूवै योडुम् बुलम्बुहिन्ऱ ऱार्शिलर् 268

चिलर्–और कुछ; कण् पत्तिप्पु उऱ–आँखों से आँसू बहाते हुए; पूवैयोटुम्–सारिका के साथ; पावै पेचुव पोल्–चित्र भाषण करते हों जैसे; आवतु—होनेवाला कार्य; ऑन्ऱु अरुळाय्—एक करने की दया नही करते; ॲंत्तु आवियै–मेरे प्राण (-सम रावण) को; कूवुकिन्ऱिलै–नही पुकारते; चॅन्ऱु कूऱलै—जाकर नहीं कहते; ॲंना–ऐसा कहकर; पुलम्पुकिन्ऱार्–विलापती है। २६८

और कुछ यक्षांगनाएँ गीली आँखों से आँसू बहाते हुए अपनी सारिकाओं को बोलते चित्र के समान उलाहना दे रही थी। तू मेरा कोई हित नहीं करती! मेरे प्राण, रावण को नही बुलाती। ऐसा कहते हुए वे विलाप रही थी। २६८

ईरत् तॆन्ऱ लिळुह मॆलिन्दुतम्, पारक् कॊङ्गैयैप् पार्त्तनदप् पादहन्
वीरत् तोळ्हळिन् वीक्कमॆण् णावुयिर्, शोरच् चोरत् तुळङ्गुहिन् ऱार्शिलर् 269

ईर–शीतल; तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन; इळुक–मन्द-मन्द बह रहा है; मॆलिन्तु–पतली होकर; तम् पार कॊङ्कैयैप् पार्त्तु–अपने भारी स्तनों को देखकर; अन्त पातकन्–उस पातक (रावण) के; वीर तोळ्कळिन्–वीर भुजाओ का; वीक्कम्–सूजन (मुटापा); ॲण्णा–सोचकर; उयिर् चोर चोर–प्राणो के शिथिल पड़ते; चिलर् तुळङ्कुकिन्ऱार्–कुछ यक्ष स्त्रियाँ छटपटाती है। २६९

शीतल मलयपवन मन्द-मन्द बह रहा था। उससे कुछ स्त्रियों के शरीर कृश हो गये। उन्होने अपने भारी स्तनों को देखा और रावण के स्थूल कन्धों का स्मरण किया। प्राण सूखने-से लगे और वे तड़पने लगी। २६९

नक्क शॆम्मणि नाऱिय नीणिळल्, पक्कम् वीशुरु पळ्ळियिर् पल्पहल्
ऒक्क वाशै युलर्त्त वुलर्न्दवर्, शॆक्क वान्ऱरुन् दिङ्गळॊत् तार्शिलर् 270

चिलर्–कुछ; नक्क–उज्ज्वल; चॅम्मणि–लाल माणिक पत्थरों से; नाऱिय–प्रकट; नीळ् निऴल्–लम्बी कान्तियाँ; पक्कम् वीचुऱु–जिसके पार्श्व में पड़ती है उस; पळ्ळियिल्–शय्या में; पल् पकल्–अनेक दिनों से; ऒक्क आचै उलर्त्त–लगातार

उनकी कामना के सूख जाने (असफल रह जाने) से; उलर्न्तवर्–सूखकर; चॅंकुक वान् तरुम्–लाल गगन में उदित; तिङ्कळ् ऑत्तार्–(अर्ध) चन्द्र के समान दिखीं। २७०

कुछ पलंग पर लेटी हुई थीं। पलग के चारों ओर लाल पत्थर कांति दे रहे थे। वे स्त्रियाँ अनेक दिनों से वियोगाग्नि में तप चुकी थीं, सूखकर काँटे हो गयी थीं। उस स्थिति में वे अपनी शय्याओं पर लाल गगन में प्रकट अर्द्धचन्द्र के समान लगीं। २७०

वाळि ऩाऱ्ऱिय कऱ्पह वल्लियर्, तोळि ऩाऱ्ऱिय तूङ्गम ळित्तुयिल्
नाळि ऩाऱ्चॅवि यिऱ्पुहु नामयाळ्त्, तेळि ऩाऱ्ऱिहैप् पॅय्दुहिऩ् ऱार्शिलर् 271

वाळित्–कान्ति के द्वारा; आऱ्ऱिय–प्रदत्त; कऱ्पक वल्लियर्–कल्पलताएँ-सी (यक्ष बालाएँ); तोळिऩ्–दोले के समान; नाऱ्ऱिय–लटकाये जाकर; तूङ्कु–लटकनेवाली (झूलनेवाली); अमळि तुयिल् नाळिताल्–शय्या पर सोते समय; चॅवियिल् पकु–कानों में घुसनेवाले; नाम याळ् तेळिताल्–भयावह 'याळ्' के स्वर रूपी बिच्छू से; चिलर्–कुछ; तिकैप्पु ॲय्तुकिऩ्ऱार्–भ्रान्त और बेसुध हो जाती है। २७१

कुछ प्रकाश की बनी कल्पवल्ली-सी यक्षस्त्रियाँ झूले की तरह की लटकनेवाली शय्या में पड़ी 'याळ' नामक वीणा के मधुर स्वर से ऐसा कष्ट पाती हैं और बेसुध हो जाती हैं, मानो वह संगीत बिच्छू हो। २७१

कव्वु तीक्कणै मेरुवैक् काल्वळैत्, तॅव्वि ताऩ्मलै येन्दिय वेन्दऱोळ्
वव्वु शान्दुदम् मामुलै वौविय, शॅव्वि कण्डु कुलावुहिऩ् ऱार्शिलर् 272

चिलर्–कुछ; मेरुवै काल् वळैत्तु–मेरु को धनु के रूप में झुकाकर; कव्वु–उस पर चढ़ाये गये; ती कणै–अग्नि-सदृश (विष्णु रूपी) अस्त्र को; ॲव्वियताऩ्–जिन्होंने चलाया था; मलै–उन शिवजी के कैलास पर्वत को; एन्तिय–जिसने उखाड़कर उठाया; एन्तल्–उस राजा रावण के; तोळ्–कन्धों में; वव्वु चान्तु–जो लग गया था वह चन्दन का लेप; तम् मा मुलै वौविय–अपने स्तनों ने जो अपनों पर मलवा लिया था (आलिंगन के समय); चॅव्वि कण्टु–उस सौष्ठव को देखकर; कुलावुकिऩ्ऱार्–मोद का अनुभव कर रही हैं। २७२

शिवजी ने मेरु को धनु के रूप में दोनों बाजुओं में झुकाया था और श्रीविष्णु को अग्निवर्षक अस्त्र बनाकर चलाया था। ऐसे शिवजी के कलास पर्वत को रावण ने उखाड़कर अपने हाथों पर उठा लिया। कुछ यक्षस्त्रियाँ अपने स्तनों पर उस रावण के सबल कन्धों पर लिप्त चन्दन को मला देखती है। यह तब मला था, जब रावण ने उन्हें आलिंगन किया था। अब ये यक्षस्त्रियाँ उस चन्दनापहरण की खूबी पर इठला रही हैं। २७२

कूडि नानुगुयर् वेलैयुङ् गोक्कनिन्, ऱाडि नान्पुह ऴङ्गै नरम्बिनाल्
नाडि नाऱ्पॆरुम् बण्णु नयप्पुऱप्, पाडि नान्बुहऴ् पाडुहिन् ऱार्शिलर् 273

चिलर्–(और) कुछ (यक्ष ललनाएँ); नान्कु–चारों ओर के; उयर् वेलैयुम्–बड़े समुद्रों के; कूटि कोक्क–मिलकर प्रलय बनते समय; निन्ऱु आटितान्–जिन्होंने ताण्डव नृत्य किया; पुकऴ्–उस शिवजी के यश को; नाटि–स्मरण व अन्वेषण करके; अङ्कै नरम्पिनाल्–अपने सुन्दर हाथों की नसों को मीड़कर; नाल् पॆरुम् पण्णुम्–चारों श्रेष्ठ रागों को; नयप्पु उऱ पाटितान्–जिसने मनोहारी रूप से गाया था; पुकऴ्–उस रावण के यश का; पाटुकिन्ऱार्–गान करती है। २७३

कुछ यक्षांगनाएँ रावण के यशोगान में मन बहला रही हैं। रावण ने शिवजी के यश का गान किया था। शिवजी ऐसे थे, जिन्होंने प्रलय के समय में, जब चारों ओर के बड़े-बड़े समुद्र मिलकर एक हो गये थे, ताण्डव नृत्य किया था। २७३

इनैय तन्मै यियक्किय रीण्डिय, मनैयॊ रायिर मायिरम् वायिल्पोय्
अनैय वन्गुलत् तायवळै यारिडम्, निनैवि नॆय्दिन नीदियि नॆय्दिनान् 274

नीतियिन् ऍय्तिनान्–न्यायमार्गगामी; इनैय तन्मै इयक्कियर्–ऐसी स्थितियों में जो रहीं, उन यक्षिणियों की; ईण्टिय–भरी; ओर् आयिरम् आयिरम्–सहस्र-सहस्र; मनै वायिल् पोय्–ड्योढ़ियों में घुसकर; अनैयवन् कुलत्तु–(पश्चात) उसके कुल की; आय् वळैयारिटम्–चुने हुए कंकणो की धारिणी राक्षसियों के स्थान में; निनैविन्–सीतान्वेषणचित्त होकर; ऍय्तिनन्–पहुँचा। २७४

न्यायमार्गगामी हनुमान ऐसी स्थितियों में रहनेवाली सहस्र-सहस्र यक्षिणियो के घरों में जाकर देखा। पश्चात वह सीतान्वेषण में चित्त देकर रावण के ही कुल की (राक्षस-) नारियों के वासस्थान पर गया। २७४

ऍरिशुडर् मणियिन् शङ्गे ऴिळवॆयि लिडैवि डादु
विरियिरुळ् परुहि नाळुम् विळक्किन्ऱि विळङ्गु माडत्
तरिवैयर् कुऴुवु नीङ्ग वाशैयुन् दामु मेयाय्
ऒरुशिऱै यिरुन्दु पोन वुळ्ळत्तो डूडु वारुम् 275

विळक्कु इन्ऱि–दीप के विना ही; ऍरि चुटर्–रोशनी देनेवाले; मणियिन्–लाल पत्थरों की; चॆम् केऴ्–लाल और सुन्दर; इळ वॆयिल्–शीतल प्रभा; इटै विटातु विरि–निरन्तर जहाँ फैल रही थी; इरुळ् नाळुम् परुकि–अँधेरे को सदा चाटती; विळङ्कुम् माटत्तु–रहती थी (जहाँ) उस प्रासाद के; ऒरु चिऱै–एक ओर; अरिवैयर् कुऴुवु–चेरियों के समूहों के; नीङ्क–हट जाने पर; आचैयुम् तामुमेयाय्–कामना और स्वयं अकेले रहकर; पोन–उसके पास गये; उळ्ळत्तोटु–मन के साथ; ऊटुवारुम्–रुष्ट जो रहीं, वे। २७५

वे क्या कर रही थीं ? एक महल था। उसमें दीप नहीं थे, पर

प्रकाश देनेवाले लाल पत्थर थे। उनसे लाल रंग की सुखद रोशनी छूट रही थी। उसमें एक नायिका अकेली खड़ी थी। उसने दासीवृन्दों को हटा दिया था। वह केवल अपने प्रेम को ही संगिनी बनाकर अकेली खड़ी अपने मन से रूठ रही थी। ऐसी कुछ राक्षसियों को हनुमान ने देखा। २७५

नहैयॆरिक् कऱ्ऱै नॆऱ्ऱि नावितोयुन् दत्तैय वोदि
पुहैयॆन्नत् तुम्बि शुऱ्ऱप् पुदुमलर् पोङ्गु शेक्कै
पहैयॆन्न वेहि यान्ऱ पळिङ्गुडैच् चीदप् पळ्ळि
मिहैयोडुङ् गाद काम विम्मलिन् वॆंदुम्बु वारुम् 276

नकै ऍरि कऱ्ऱै–ज्वलन्त अग्नि-लपट के; नॆऱ्ऱि–छोर में; नावि तोयुन्तत्तैय–कस्तूरी-मले से; ओति–केश को; पुकै ऍन्त–धुआँ समझकर; तुम्पि–भ्रमर; चुऱ्ऱ–घूमकर भागते हैं; पुतु मलर् पोङ्कु–ताजे सुमनों से भरी; चेक्कै–शय्या को; पकै ऍन्त–शत्रुवत; एकि–छोड़ दूर जाकर; आन्ऱ पळिङ्कु उटै–चौड़े स्फटिक-पत्थरों से बनी; चीत पळ्ळि–शीतल शय्या पर; मिकै ओटुङ्कात–बढ़ना कम जिसका नहीं हुआ; काम विम्मलिन्–काम के वर्धन से; वॆंतुम्पुवारुम्—जो तप रही थीं, वे और। २७६

राक्षसियों के केश कस्तूरी-लगी आग की लपटों के समान थे। उसे देखकर भ्रमर धुआँ समझते और डरकर उड़ जाते। उन राक्षसियों ने नवीन सुमनों की शय्या को भी शत्रुवत त्याग दिया। फिर वे स्फटिक के चबूतरे पर जाकर लेटीं, जो शीतल था। तो भी उनका ताप कम नहीं हुआ और वे झुलस रही थीं। २७६

शविपडु तहैशाल् वानम् तानॊरु मेनि याहक्
कुवियुमी नार माह मिन्कॊडि मरुङ्गु लाहक्
कविरॊळिच् चॆक्कर् कऱ्ऱै योदिया मळैयॊण् कण्णा
अविर्मदि नॆऱ्ऱि याह वन्दिया ळॊक्किन् ऱारुम् 277

चवि पटु–छविमान; तकै चाल् वानम् तान्–श्रेष्ठ आकाश ही; ऑरु–अद्वितीय; मेनि आक–शरीर बना और; कुवियुम् मीन्–भीड़ बने रहनेवाले तारे; आरमाक–हार बने; मिन् कॊटि–बिजली की लताएँ; मरुङ्कुल् आक–कमर बनीं; कविर् ऑळि–काँटेदार पलाश के फूलों की-सी; चॆक्कर् कऱ्ऱै–लाल गगन की ज्योति; ओति आ–केश बनी; मळै–मेघ; ऑण् कण् आ–प्रकाशमय आँखें बने; अविर् मति–न्यून कला चन्द्र; नॆऱ्ऱि आक–ललाट बना; अन्तियाळ्–ऐसी सन्ध्यादेवी की; ऑक्किन्ऱारुम्–समता करनेवाली राक्षसियाँ और। २७७

कुछ राक्षसियाँ स्वयं सायं सन्ध्यादेवी के समान लगी, जो ज्वलंत आकाश का शरीर ले, तारागणों का हार पहने हुए, विद्युत् की कमर से

युक्त और काँटेदार पलाशफूलों के समान लाल गगन के केश से शोभित और मेघों के उज्ज्वल नेत्रों के साथ और अर्द्धचन्द्र के भाल से युक्त पायी जाती हों। २७७

पाऩलुण् कण्णुम् वण्णप् पडिमुऱै माऱप् पण्णैच्
चोऩैपोऩ् ऱळिहळ् पम्बुल् जुरिहुळऱ् कऱ्ऱै शोर
मेनिवन् दॅळुन्द माड वॅण्णिला मुन्ऱिल् नण्णि
वानमीऩ् कैयिऩ् वारि मणिक्ककळङ् गाडु वारुम् 278

मेल् निवन्तु ऍळुन्त–ऊपर की ओर उन्नत उठे हुए; माट–प्रासादों की; वॅळ् निला मुन्ऱिल्–चन्द्रशाला, नण्णि–जाकर; कैयिऩ्–अपने हाथों से; वान मीऩ् वारि–आकाश के तारों को उठा लेकर; पानल् उण् वण्ण कण्णुम्–नीलोत्पलजयी रंग वाली आँखें; पटि मुऱै माऱ्–ऊपर नीचे देखें ऐसा; पण्णै अळिकळ्–झुण्डों में अलि; चोनै पोन्ऱ–मेघ के समान; पम्पुम्–जिन पर मँड़राते है; चुरि कुळल् कऱ्ऱै–वे घुंघराले बाल की लटें; चोर–शिथिल पड़ें ऐसा; मणि कळङ्कु–उन नक्षत्रों के गेंद; आटुवारुम्–खेलनेवाली नारियाँ। २७८

कुछ राक्षसियाँ ताराओं को लेकर 'कळङ्गु' का खेल खेल रही थीं। (यह तीन या उससे भी अधिक काठ के रंगीन गोल गेंदों से खेला जाता है। कुछ विशिष्ट बीज भी ऐसे होते हैं। स्त्रियाँ अपने एक या दोनों हथेलियों से उन गेंदों को उछालती हैं और पकड़ती हैं। यह उनके उठने या गिरने का क्रम कुछ इतना तीव्र और विचित्र व मनोरम लगता है।) वे उन्नत सौधों की चन्द्रशालाओं मे गयी। वे जब ताराओं से 'कळङ्गु' खेलती है तब उनकी नीलोत्पल-सी आँखे ऊपर-नीचे जाती हैं। उनके केश, जिन पर झुंडों में भ्रमर मँड़राते है, खुलकर शिथिल पड़ जाते है। २७८

उळैपुळैप् परन्द वाऩ याऱ्ऱुनिऩ् ऱुम्बर् नाट्टुक्
कुळैमुहत् तवर्ह डन्द पुनल्कुळिर्प् पिलवॆंऩ् ऱूडि
इळैतॊडुत् तिलङ्गु माडत् तिडैतडु माऱ वेऱि
मळैपॊदुत् तॊळुहु नीराऩ् मञ्जऩ माडु वारुम् 279

उळै उळै–सर्वत्र; परन्त–फैली; वान याऱ्ऱु–आकाशगंगा नदी से; उम्पर् ऩाट्टु–व्योम लोक की; कुळै मुकत्तवर्कळ्–स्निग्ध मुख वाली; तन्त–(देवांगनाओं ने) जो लाकर दिया; पुनल्–वह जल; कुळिर्प्पु इल–शीतल नहीं; ऍन्ऱु–कहकर; ऊटि–रुष्ट होकर; इळै तॊटुत्तु इलङ्कुम्–पंक्तियों में आभरणों से अलंकृत रहनेवाली; माटत्तु–अटारी पर; इटै तटुमाऱ्–कमरों को दुःख देती हुई; एऱि–चढ़ जाकर; मळै पॊतुत्तु–मेघ को छेदकर; ऒळुकुम् नीराल्–गिरनेवाले जल से; मञ्चनम् आटुवारुम्–स्नान करनेवाली नारियाँ। २७९

राक्षसियों के सौधों पर सर्वत्र आकाशगंगा फली बहती है। देवांगनाएँ मुखों पर खुश रहने का भाव दिखाती हुई उससे जल लाकर राक्षसियों

को दे रही हैं। पर वे 'पर्याप्त शीतल नहीं' कहकर रुष्ट हो जाती हैं और सीढ़ियों पर कमर को दुखाते हुए चढ़ती हैं और मेघों में छेद बनाकर गिरनेवाले जल में स्नान करती हैं। २७९

पन्नह वरशऱ् चॅङ्गेळ्प् पणामणि वलियिऱ् पऱ्ऱि
इन्नुयिर्क् कणव नीन्दा नीॅन विरुत्ति विज्जै
मन्नवर् मुडियुम् बूणु मारमुम् बणैय माहप्
पॊन्निनम् बलहैच् चूदु तुयिल्हिलर् पॊरुहिन्ऱारुम् 280

तुयिल्किलर्–नहीं सोतीं; इन् उयिर् कणवन्–बड़े मधुर प्राणप्यारे पति ने; पन्नक अरचन्–पन्नगराज के; पणा चॅम् केळ् मणि–फनों पर के लाल सुन्दर रत्नों को; वलियिल् पऱ्ऱि–वलात छीनकर; ईन्तान्–मुझे दिया; ईतु ऍन्न–यही कहकर; इरुत्ति–दाँव पर चढ़ाकर; विज्जै मन्नवर्–विद्याधर राजाओं के; मुडियुम्–मुकुटों; पूणुम्–आभरणों और; आरमुम्–हारों को; पणैयमाक–दाँव के रूप में; पॊन्नितन् अम् पलकै–स्वर्ण के चौपट में; चूतु पॊरुकिन्ऱारुम्–जुआ खेलनेवाली राक्षसनारियाँ और। २८०

कुछ राक्षसियाँ थीं जो सो नहीं पायीं। वे द्यूत खेल रही हैं। बाज़ी क्या लगाती हैं? मेरे प्राणप्यारे रावण ने ये रत्न पन्नगराजा के फनों से छीनकर मुझे दिये थे। लो इसे दाँव पर चढ़ाती हूँ। या ये लो— विद्याधर-राजाओं के किरीट, हार और अन्य आभरण! ऐसी वस्तुएँ वे दाँव पर लगा रही हैं। उनकी बिसात स्वर्णनिर्मित है। ऐसी स्त्रियों को हनुमान ने देखा। २८०

तॅन्नवॅन् ऱमुदप् पाडल् शित्तिय रिशैप्पत् तीञ्जॊल्
पन्नह महळिर् वळ्वार्त् तणणुमैप् पाणि पेणप्
पॊन्नहर्त् तरळप् पन्दर्क् कऱ्पहप् पॊदुम्बर्प् पॊऱ्ऱोळ्
इन्नहै यरम्बै मारै याडल्हण् डिरुक्किन्ऱारुम् 281

कऱ्पक पॊतुम्पर्–कल्पोद्यान में; पॊन्नकर्–स्वर्णनगरी अमरावती से लाये गये; तरळ पन्तर्–मोतियों के वितान के नीचे; चित्तियर्–सिद्धजाति की स्त्रियाँ; तॅन्न ऍन्ऱु–'तेन्न' के संगीत संकेत के साथ; अमुत पाटल् इचैप्प–अमृत-सम मधुर गीत गा रही थीं; तीम् चॊल्–मधुर स्वर वाली; पन्नक मकळिर्–पन्नग-नारियाँ; वळ्–घने; वार्–फीतों से बँधे; तणणुमै–मर्दल के; पाणि पेण–ताल देते; पॊन् तोळ्–मनोरम भुजा वाली; इन् नकै अरम्पै मारै–मनोहर दाँतों वाली अप्सराओं को; आटल् कण्टु–नर्तन करने की आज्ञा देकर उसे देखकर; इरुक्किन्ऱारुम्–आनन्द के साथ रहनेवालियों को। २८१

और कुछ स्त्रियाँ नाच-गान का आनन्द भोग रही थीं। कल्पवन में स्वर्णनगरी अमरावती से लाये गये मोतियों से निर्मित वितान के नीचे सिद्ध जाति की स्त्रियाँ 'तेन्न' नाम के संगीत-संकेत के अनुसार अमृत-सम

गान गा रही थीं। मधुर वाणी पन्नगकन्याएँ 'मर्दल' वजा रही थीं। और मनोरम कन्धों वाली और मनोहर दाँतों वाली अप्सराएँ नाच रही थीं। २८१

आणियिऱ् किडन्द काद लहऴ्जुड वरुवि युण्गण्
शेणुय रुऱक्कन् दीऱ्न्द शिन्दैयर् शॅय्व दोरार्
वीणैयुम् कुऴलुन् दत्तम् मिडऱुम्वेऱ् ऱुमैयिऱ् ऱीऱ्न्द
पाणितळ् ळाद पाड लमुदुहप् पाड् वारुम् 282

आणियिल्—कील के समान; किटन्त कातल्—गड़ा रहा जो प्रेम; अकम् चुट—हृदय को जलाता है; अरुवि उण् कण्—सरिता के समान आँसू बहाती आँखों में; चेण् उयर् उऱक्कम्—गहरी नींद; तीऱ्न्त—नहीं रही; चिन्तैयर्—चिन्तित रहने वालियाँ; चॅय्वतु ओरार्—क्या करना यह नहीं जानतीं; वीणैयुम् कुऴलुम्—वीणा और वंशी; तत्तम् मिटऱुम्—और उनके कण्ठ; वेऱ्ऱुमैयिल् तीऱ्न्त—परस्पर भिन्न न रहे; पाणि तळ्ळात—ताल से अवद्ध जो नहीं; पाटल्—वैसे गाने; अमुतु उक—अमृत बरसाते हुए; पाटुवारुम्—जो गाती रहीं उनको। २८२

कुछ स्त्रियाँ वीणा और वंशी के साथ अपने कण्ठ को भी मिलाकर समाँ बँधाकर तालमेल के साथ गा रही थीं। उनके मन में कील के समान रावण-प्रेम गड़ा पड़ा था। विरह-वेदना उनके हृदय को जला रही थी। आँखों से सरिता के समान आँसू वह रहा था। मन दुःखी था। नहीं मालूम हुआ कि क्या किया जाय! तव वे गाने में समय बिताने लगीं। हनुमान ने उनको भी देखा। २८२

तण्डलै वाऴै यनृत कुरङ्गिडै यलहुर् ऱट्टिल्
कॉण्डपून् दुहिलुङ् गोवैक् कलन्गळुज् जोरक् कूऱ्ङ्गळ्
उण्डल मन्द कण्णा रूशलिट् टुलावु हितृऱ्
कुण्डलन् दिरुविल् वीशक् कुरवैयिर् कुऴऱु वारुम् 283

कूऱ्म् कळ्—अति मादक ताड़ी; उण्टु—पीकर; अलमन्त कण्णार्—उससे चञ्चल बनी आँखों वाली कुछ राक्षसियाँ; तण्टलै वाऴै अनृत—वाग के केले के समान; कुरङ्किटै—ऊरुओं पर; तट्टु अल्कुलिल्—रथ के समान भगों पर; कॉण्ट—पहने हुए; पूम् तुकिलुम्—महीन वस्त्र; कोवै कलन्कळुम्—मेखला आदि आभरण; चोर—शिथिल पड़ जाते; ऊचलिट्टु उलावुकितृऱ्—झूलते हुए डोलनेवाले; कुण्टलम्—कुण्डल; तिरु विल् वीच—मनोहर आभा विखेरते; कुरवैयिल—"कुरवै" गीत गाते हुए नाचने में; कुऴऱुवारुम्—लड़खड़ाती जो हैं उनको भी। २८३

कुछ स्त्रियों ने खूव मादक ताड़ी पी ली। वे 'कुरवै' नाच गीतों के साथ नाच रही थीं। उनके वाग के केले के पेड़ के समान अपने ऊरुओं और रथ के समान जघन-प्रदेशों पर पहने हुए वस्त्र खिसक गये। मेखला आदि आभरण भी गिर गये। इस स्थिति में वे 'कुरवै' नाच नाचने

लगीं तो उनके कानों के कुण्डल ज़ोर से डोल रहे थे और वे स्वयं लड़खड़ा रही थीं। २८३

नच्चॅनक् कॊडिय कण्णार् कळ्ळॊडु कुरुदि नक्किप्
पिच्चरिऱ् पिदऱ्ऱि यलहुऱ् पूनुदुहिऱ् कलाबम् बीऱ्ऱिक्
कुच्चरित् तिऱत्ति नोशै कळङ्गॊळक् कुळ्क्कॊण् डीण्डिच्
चच्चरिप् पाणि कॊट्टि निऱैतडु माऱु वारुम् 284

नच्चु अँत–विष के समान; कॊटिय कण्णार्–घातक आँखों वाली कुछ राक्षसियाँ; कळ्ळॊटु कुरुति नक्कि–ताड़ी के साथ रक्त चाटकर; पिच्चरिल्–पागल के समान; पितऱ्ऱि–बकती हुई; अल्कुल्–कटि प्रदेश के; पून् तुकिल्–महीन वस्त्रों और; कलापम् पीऱ्ऱि–मेखला को चीरकर; कुच्चरि तिऱत्तिन्–'गुर्जर' राग में; ओचै–जो गाती हैं वह ध्वनि; कळम् कॊळ–उनके गलों में निकलता है; कुळुक् कॊण्टु–समूह बनाकर; ईण्टि–जमा हो; चच्चरि पाणि कॊट्टि–चञ्चरी नामक वाद्य को बजाते हुए; निऱै तटुमाऱुवारुम्–मन में अस्त-व्यस्त रहनेवालियों को भी। २८४

कुछ विष-सी घातक (मादक) आँखों वाली राक्षसियों ने ताड़ी के साथ रक्त भी पी लिया। पागलों के समान बकते हुए उन्होंने अपनी कटि के वस्त्र को और मेखला आदि आभरणों को उतार फेंका। वे सब मिलकर 'गुर्जर' राग में 'चञ्चरी' के वाद्य को बजाते हुए चंचल मन के साथ लड़खड़ा रही थीं। २८४

तयिर्निऱक् कळ्ळुण् डुळ्ळन् दळ्ळत्त मऱिवु तळ्ळप्
पयिरुऱत् तॆय्व मॆन्मेऱ् पडिन्दडु पार्मि ऩॆन्ऩा
उयिरुयिर्त् तिरण्डु कैयु मुच्चिमे लुयर नीट्टि
मयिर्शिलिर्त् तुडलङ् गूशि वाय्विरित् तॊडुङ्गु वारुम् 285

तयिर् निऱ–दही के रंग की; कळ् उण्टु–ताड़ी पीकर; उळ्ळम् तळ्ळ–मन के झूलते; तम् अऱिवु तळ्ळ–विवेक के भ्रमित होते; पयिर् उऱ–पुकार मचाते हुए; तॆय्वम् अॆन् मेल् पटिन्ततु–देव मुझ पर उतर आया है; पार्मिऩ्–देखो; ऎन्ऩा–कहकर; उयिर् उयिर्त्तु–लम्बी साँसें छोड़कर; उच्चि मेल्–सिर पर; इरण्टु कैयुम्–दोनों हाथों को; उयर–ऊँचा; नीट्टि–बढ़ाते हुए; मयिर् चिलिर्त्तु–पुलक से भरकर; उटलम् कूचि–शरीर के कम्पन के साथ; वाय् विरित्तु–मुख बाकर; ऒटुङ्कुवारुम्–फिर थकी हो जानेवालियाँ और। २८५

कुछ स्त्रियों ने दही के समान ताड़ी पी ली थी। उनका मन चक्रित हुआ और बुद्धि भ्रमित हो गयी। वे चिल्ला रही थीं— मुझ पर देवता का आवेश हुआ है! देखो। वे लम्बी श्वास छोड़ रही थीं। उनके हाथ सिर के ऊपर बढ़े हुए थे। उनके रोंगटे खड़े हुए थे। शरीर काँप रहा था और मुख खुला। कुछ देर के बाद वे थकी गिर गयीं। २८५

इत्तिऱत् तरक्कि माऱ्ह ळीरिरु कोडि योट्टम्
पत्तियि नुऱैयुम् वत्तिप् पडऱ्नॆंडुन् दॆरुवुम् बाऱ्त्तान्
चित्तिय रुऱैयुम् माडत् तॆरुवुम्विन् नाहच् चॆन्ऱान्
उत्तिशै विज्जै माद रुऱैयुळै मुऱैयि लुऱ्ऱान् 286

इत्तिऱत्तु–इस प्रकार ऐसी स्थितियों में; ईरिरु कोटि ईट्टम्–(दो के दो) चार करोड़ की संख्या की; अरक्किमाऱ्कळ्–राक्षसियाँ; पत्तियिन्–रावण के प्रति भक्ति के साथ; उऱैयुम्–जिनमे रहती थीं; पत्ति पटर्–उन प्रासादों की पंक्तियों के साथ; नॆंटुम्–चलनेवाली बड़ी; तॆरुवुम्–वीथी में भी; पाऱ्त्तान्–(हनुमान ने खोजकर) देखा; चित्तियर् उऱैयुम्–सिद्धस्त्रियाँ जहाँ रहती थीं; माट तॆरुवुम्–मंजिल वाले मकानो की वीथी को भी; पिन्ताक–पीछे छोड़कर; चॆन्ऱान्–(पार करके) गया; उत्तिचै–उस बीच; विज्चै मातर् उऱैयुळै–विद्याधरस्त्रियों के वासस्थान को; मुऱैयिल्–गमन से सिलसिले में; उऱ्ऱान्–जा पहुँचा। २८६

ऐसी स्थिति मे रही चार करोड़ राक्षसनारियों के प्रासादों की लम्बी वीथी में हनुमान सीताजी को खोजता हुआ गया। फिर सिद्धस्त्रियों के घरों में ढूँढ़ते हुए उनकी वीथी पार कर आगे गया। उसी दिशा में वह विद्याधरस्त्रियो के प्रासादों में भी गया। २८६

वळर्न्द कादलिन् महळिर्हण् मणिमुडि यरक्कनै वरक्काणार्
तळर्न्द शिन्दैद मिडैयिनुम् नुडङ्गिड वुयिर्कॊंडु तडुमाऱिक्
कळन्द वानॆंडुङ् गरुवियिऱ् कैहळिऱ् चॆयिरियर् कळैकण्णा
अळन्द पाडल्वॆंव् वरवुदज् जॆविपुह वलम्वर वुयिर्क्किन्ऱार् 287

मकळिर्कळ्–विद्याधरस्त्रियाँ; वळर्न्त कातलिल्–बढ़े हुए रावण-प्रेम से; मणि मुटि अरक्कनै–रत्नकिरीटधारी राक्षस को; वर काणार्–न आता देख; तळर्न्त चिन्तै–शिथिल हुए मन को; तम् इटैयिनुम् नुटङ्किट–अपनी कमर से भी अधिक काँपने देते हुए; उयिर् कॊंटु तटुमाऱि–प्राण न छोड़कर तड़पतीं; चॆयिरियर्–गानेवालियों के; कळम् तवा–गले के स्वर से अभिन्न; नॆंटुम् करुवियिल्–स्वर देनेवाले लम्बे वाद्य (याऴ्) में; कळै कण्णा–सहारे के रूप में पकड़कर; कैकळिल् अळन्त पाटल्–उँगली चलाकर जो गीत गाया वह उचित काल-गणित संगीत; वॆंव् अरवु–रूपी भयंकर नाग; तम् चॆवि पुक–अपने कानों में जब घुसा तब; अलम् वर–दुःख के होने से; उयिर्क्किन्ऱार्–ठण्डी आहें भरती हैं। २८७

उधर विद्याधरस्त्रियों की भी हालत देखिए। उनके मन में प्रेम खूब वर्द्धित था। उन्होंने रावण को न आते देख बहुत वेदना का अनुभव किया। उनका मन उनकी कमर से भी अधिक क्षीण होकर काँपने लगा। प्राण तो नहीं गए पर वे अस्त-व्यस्त थीं। तब गानेवाली स्त्रियाँ वीणा का सहारा लेकर कण्ठस्वर के साथ मिलाकर गीत स्वरित कर रही थीं। वह स्वर इनके कानों में नाग के समान घुसा और दुःख पाकर ये ठण्डी आहें भरने लगीं। २८७

पुरियु नन्नॆंऱि मुनिवरुम् पुलवरुम् पुहलिलाप् पॊऱैहूर
अॆरियुम् वॆञ्जिनत् तिहलडु कॊडुन्दिऱत् तिरावणऱ् कॆञ्ञान्ऱुम्
परियु नॆञ्जिन रिवरॆन वयिर्त्तॊरु पहैयॊडु पनित्तिङ्गळ्
शॊरियुम् वॆङ्गदिर्प् पणैमुलैक् कुवैशुड वमळियिऱ् ऱुडिक्किन्ऱार् 288

पनि तिङ्कळ्—शीतल चन्द्र; इवर्—ये स्त्रियाँ; अॆरियुम् वॆम् चिनत्तु—आग-से जलनेवाले क्रोध के साथ; इकल् अटु—शत्रु का संहार करनेवाले; कॊटुम् तिऱत्तु—भयंकर बलशाली; इरावणऱ्कु—रावण के प्रति; नन्नॆंऱि पुरियुम्—सत्कार्य ही करनेवाले; मुनिवरुम् पुलवरुम्—मुनि और देवता लोग; पुकल्किला—विना खोलकर कहे; पॊऱै कूर—सहते रहे; अॆञ्ञान्ऱुम्—सदा; पारियुम् नॆञ्चित्तर्—प्रेम करनेवाले मन की है; अॆन्न अयिर्त्तु—ऐसा सन्देह करके; ऒरु पकैयॊटुम्—एक शत्रुता के साथ; चॊरियुम् वॆम् कतिर्—जो छिटकाता है वह गरम किरणें; पणै मुलै कुवै—पीन स्तनों के समूहों को; चुट—जलाती है; अमळियिल्—शय्या में; तुटिक्किन्ऱार्—(उस गरमी से) तड़पती हैं। २८८

शीतल चन्द्र को यह गुस्सा था कि ये स्त्रियाँ अग्नि के समान दाहक और बड़े क्रोध के साथ शत्रु का संहार करनेवाले रावण पर सदा प्रेम रखती है। उसके द्वारा सत्कार्यरत ऋषि और देवगण अपार कष्ट पाते है, पर भय से मुख तक न खोलकर कष्ट सह रहे है। अतः वह एक शत्रुता के साथ उनके पीन स्तनों के समूह को अपनी क्रूर किरणों से जला रहा था। वे इससे आहत होकर अपनी-अपनी शय्या में पड़ी तड़प रही थीं। २८८

शिऱुहु कालङ्ग ळूळिह ळाम्वहै तिरिन्दुशिन् दनैशिन्द
मुऱुहु कादलिन् वेदनै युळप्पवर् मुयङ्गिय मुलैमुन्ऱिल्
इऱुहु शान्दमु मॆळुदिय कुऱिहळु मिन्नुयिर्प् पॊऱैयीर
मऱुहु वाट्कण्गळ् शिवप्पुर नोक्कित्तर् मयङ्गित्त ऱुयिर्क्किन्ऱार् 289

मुऱुकु कातलिन्—परिपक्व प्रेम से; चिऱुकु कालङ्कळ्—छोटी-छोटी अवधियाँ भी; ऊळिकळ् आम् वकै—युग दिखे ऐसा; चिन्तनै—मन के; तिरिन्तु चिन्त—बदलकर टूटने पर; वेतनै उळप्पवर्—पीड़ित हो; मुयङ्किय—पहले रावण के साथ संश्लिष्ट जो रहे; मुलै मुन्ऱिल्—उन स्तनों के तटों में; इऱुकु चान्तमुम्—जमा चन्दन; अॆळुतिय कुऱिकळुम्—और बने नखक्षत; इन् उयिर्प्पॊऱै ईर—प्यारे प्राणों को चीरते है; मऱुकु वाळ् कण्कळ्—चंचल और उज्ज्वल नेत्र; चिवप्पु उऱ—लाल करते; नोक्कित्तर्—देखतीं; मयङ्कित्तर्—मोहित होती और; उयिर्क्किन्ऱार्—आहें भरती है। २८९

कुछ विद्याधरियों को रावण-विरह में अल्पकाल भी युग के समान लग रहा था। उनका मन टूट गया। रावणालिंगनसुखमुक्त स्तन वेदनाविद्ध हो गये और उन पर का चन्दन-लेप और उन पर पड़े नखक्षत उनके शरीरों को चीर रहे थे। उनके दुःखविलोडित नेत्र लाल हो गये। वे उन आँखों से देखती हुई भ्रमित होकर लम्बी साँसें छोड़ रही थीं। २८९

आय विज्जेयर् मडनदेय रुरैविड मारिरण् डमैकोडि
तूय माळिहै नॅडुनदॅरुत् तुरुविप्पोयत् तोलैविन्मून् ऱुलहिर्कुम्
नाय हन्बॅरुङ् गोयिलै नण्णुवान् कण्डन नळिर्तिङ्गळ्
माय ननदिय वाण्मुहत् तोरुदनि मयन्महण् मणिमाडम् 290

आय–ऐसी; विज्चेयर् मटन्तैयर्–विद्याधर स्त्रियों का; उरैविटम्–वासस्थान; आरिरण्टु कोटि–बारह करोड़; तूय माळिकै अमै–पवित्र प्रासादों की; नॅटुम् तॅरु–लम्बी सड़क में; तुरुवि पोय्–टटोलते जाकर; तोलैवु इल्–जो कभी न हारता उस; मून्ऱु उलकिर्कुम्–तीनों लोकों के; नायकन्–नायक रावण के; पॅरुम् कोयिलै–बड़े महल को; नण्णुवान्–जा पहुँचा; नळिर् तिङ्कळ्–शीतल चांद; माय–मरा सा हो जाय, ऐसा; ननतिय–शोभाशाली; वाळ् मुकत्तु–आभामय मुख की; ओरु तनि–अनुपम; मयन् मकळ्–मयसुता के; मणि माटम्–रत्नमय प्रासाद को; कण्टनन्–देखा (हनुमान ने)। २६०

ऐसी विद्याधरी स्त्रियों के प्रासाद बारह करोड़ थे। उन पवित्र मकानों की वीथी में हनुमान सीताजी को ढूँढ़ता हुआ गया। वह तीनों लोकों का अजेय नायक रावण के महल को जाना चाहता था। उसके पहले वह मयसुता मन्दोदरी के सुन्दर महल में आया। मन्दोदरी ऐसे शोभा-भरे मुख की थी कि शीतल चन्द्र भी उसके सामने लज्जा से मर जाय! । २९०

कण्डु कण्णोडुङ् गरुत्तोडुङ् गडायिनन् कारणङ् गडैनिन्ऱ
दुण्डु वेऱोरु शिऱप्पॅङ्ग णायहर् कुयिरिनु मिनियाळैक्
कोण्डु पोन्दवन् वैत्तदो रुरैयुळाङ् गुलमणि मनैक्कॅल्लाम्
विण्डु विन्ऱिरु मार्विनिन् मणियोत्त दिदुवॅन वियप्पुऱ्ऱान् 291

कण्टु–उस महल को देखकर; कण्णोटुम्–आँखों से और; करुत्तोटुम्–मन से; कटायितन्–मापा; वेऱोरु चिऱप्पु–एक अनोखी विशेषता; उण्टु–(इस प्रासाद की) है; कुल मणि मतैक्कॅल्लाम्–सभी श्रेष्ठ रत्नमय प्रासादों में; इतु–यह; विण्टु वित्–श्रीविष्णु के; तिरु मार्पित्तिन्–श्रीवक्ष की; मणि ओत्ततु–(श्री कौस्तुभ) मणि के समान है; कारणम् कटै निन्ऱतु–उद्देश्य अपनी मंजिल पर आया है; ऍङ्कळ् नायकर्कु–हमारे नायक की; उयिरितुम् इतियाळै–प्राणों से प्यारी सीताजी को; अवन् कोण्टु पोन्तु–उसने ले आकर; वैत्ततु–जहाँ रखा है; ओर् उरैयुळ् आम्–वह स्थान यही है; ऍन–ऐसा सोचकर; वियप्पुऱ्ऱान्–विस्मित हुआ। २६१

हनुमान ने उस महल को अपनी आँखों से खूब देखा और मन से उस पर सोच-विचार करने लगा। उसे लगा कि इस महल की अनोखी विशेषता है। मणियों में जैसे श्रीविष्णुवक्ष की श्रीकौस्तुभमणि श्रेष्ठतम है, वैसे यह महल सर्वश्रेष्ठ है। मेरी यात्रा का उद्देश्य यहाँ पूर्ण हो गया। यह वही स्थान है, जहाँ रावण ने हमारे नायक श्रीराम की प्राणों से भी प्यारी सीताजी को लाकर रखा है। हनुमान विस्मयाभिभूत हो गया। २९१

अरम्बै मेतहै तिलोत्तमै युरुप्पशि यादिया यवर्कामन्
शरम्बॆय् तूणिपॊऱ् ऱळिरडि करन्दीडच् चामरै तडुमाऱ्क्
करुम्बै यिन्शुवै कऱ्पित्त शॊल्लियर् कामरङ् गनिहित्ऱ
नरम्बि निन्तिशै शॆविपुह नाशियिऱ् कऱ्पह विरैनाऱ 292

अरम्पै–रम्भा; मेतकै–मेनका; तिलोत्तमै–तिलोत्तमा; उरुप्पचि–उर्वशी; आतियायवर्–आदि अप्सराएँ; कामन् चरम् पॆय् तूणि–कामशरों का पात्र, तूणीर-सी; कणॆक्कालिल् विळङ्कुम्–पिंडलियों के नीचे रहनेवाले; पॊन् तळिरटि–सुन्दर पल्लव-चरणों को; करम् तॊट–अपने हाथों से सहला रही थीं; चामरै तट्माऱ–चँवर बारी-बारी से डुल रहे थे; करुम्पै इन् चुवै कऱ्पित्त–ईख को जिसने मधुरता सिखा दी; चॊल्लियर्–ऐसी मधुर वाणी बोलनेवाली स्त्रियाँ; कामरम् कतिकित्ऱ–'कामर' नामक राग में गाये जानेवाले; नरम्पिन् इन् इचै–(याळ्) तन्त्री से उत्पन्न संगीत; चॆवि पुक–कानों में प्रवेश कर रहा था; नाचियिल्–नाकों में; कऱ्पक विरै नाऱ–कल्पसुमन की सुगन्धि घुस रही थी। २९२

रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी आदि अप्सराएँ उस स्त्री के कामदेव के तूणीर-सम पिंडलियों-सहित पल्लव-चरणों को सहला रही थीं। चँवर डुल रहे थे। इक्षुरस-सम मधुरवाणी स्त्रियाँ 'कामर' राग में वीणा पर गा रही थीं और उस स्वर को अपने कानों से सुनती हुई और कल्पसुमन की सुगन्धि को नाक से सूँघती हुई वह लेटी हुई थी। हनुमान ने उसको देखा। २९२

विळैवु नीङ्गिय मेत्मैयो रायितुङ् गीळ्मैयोर् वॆंहुळ्वुऱ्ऱाल्
पिळैहॊ नत्मैहॊल् पॆऱुवदॆन् ऱैयुऱु पीळैबोर् पॆरुन्दॆन्ऱल्
उळैयर् कूवप्पुक् केहॆनप् पॆयर्वदो रूशलि नुळदाहुम्
पळैयम् यामॆनप् पण्बिल शॆय्वरो परिणदर् पयमोर्वार् 293

विळैवु नीङ्किय–वैरागी; मेत्मैयोर् आयितुम्–श्रेष्ठ लोग हों तो भी; कीळ्मैयोर् वॆंकुळ्वुऱ्ऱाल्–नीच लोग गुस्सा करें तब; पॆऱुवतु–जो मिलेगा वह फल; पिळै कॊल् नत्मै कॊल्–बुरा होगा या अच्छा; ऎंत्ऱु–ऐसा; ऐयुऱु पीळै पेरल्–संदेह करके दुःखी होते जैसे; पॆरुन् तॆंन्ऱल्–गौरवयुक्त मलयपवन; उळैयर् कव–मन्दोदरी की पास वाली दासियों के बुलाने पर; पुक्कु–प्रवेश करके; एकु ऎंत–जाओ कहने पर; पॆयर्वतु–लौट जो जाता है वह; ओर् ऊचलिन् उळताकुम्–एक झूले का-सा काम था; परिणतर्–परिपक्व लोग; पयम् ओर्वार्–फल का विचार करके; याम् पळैयम् ऎंत–हम चिर परिचित हैं, ऐसा समझकर; पण्पु इल–अनुचित काम; चॆय्वरो–करेंगे क्या। २९३

(और भी आश्चर्य की बात देखी।) गौरवमय मलयपवन उसकी दासियों के 'आओ' कहने पर आता, 'जाओ' कहने पर जाता और झूले की तरह पेंग भरता रहता। उसको देखकर उन वैरागी बड़ों का स्मरण हो आता जो नीच लोगों के क्रोध दिखाने पर इस पसोपेश में पड़ जाते

हैं कि इसका फल क्या होगा, अच्छा या बुरा ? परिपक्व लोग भय का नतीजा जानते हैं और परिचितों के साथ भी सतर्क व्यवहार करते हैं ! अनुचित काम नही करते । २९३

इऩ्ऩ तऩ्मैयि नॆरिमणि विळक्कङ्ग ळॆऴिल्हॆडप् पॊलिहिऩ्ऱ
दऩ्ऩ दिऩ्ऩॊळि तळैप्पुऱत् तुयिलुऱुऩ् दैयलैत् तहॆविल्लाऩ्
अऩ्ऩ ळाहिय शानहि यिवळॆऩ वयिर्त्तहत् तॆळुवॆऩ्दी
तुऩ्ऩु तऩ्ऩुयि रुडलॊडु शुडुवदोर् तुयरुळऩ् दिवैशॊऩ्ऩाऩ् 294

तकैवु इल्लाऩ्–अनवरुद्ध; इऩ्ऩ तऩ्मैयिऩ्–इस तरह; ऍरि मणि विळक्कङ्कळ्–प्रकाश देनेवाले मणि-दीपों के; ऍऴिल् कॅट–प्रकाश को मन्द करते हुए; पॊलिकिऩ्ऱतु अऩ्ऩतु–प्रकाश देता है, ऐसा कहने योग्य; इऩ् ऑळि–शरीर की ज्योति; तळैप्पु उऱ–बढ़ी रहती है, इस स्थिति में; तुयिलुऱुम् तैयलै–निद्रित रमणी को; इवळ्–यह; अऩ्ऩळ् आकिय–वह; चातकि–जानकी है क्या; ऍऩ–ऐसा; अयिर्त्तु–संशय करके; अकत्तु ऍऴु–मन में उठनेवाली; वॆम् ती–भयंकर आग; तऩ् उटलॊटु–अपने शरीर के साथ; तुऩ्ऩु उयिर्–लगी जान को भी; चुटुवतु–जलाती हो ऐसा; ओर् तुयर्–एक वेदना में; उळऩ्ऱु–पड़कर संकट उठाते हुए; इवै चॊऩ्ऩाऩ्–ये बातें कहने लगा । २९४

हनुमान को रोक सकनेवाला कोई नही था। वह इस तरह सोनेवाली को देखकर, जिसके शरीर की आभा मणि-दीपों के प्रकाश को निष्प्रभ बनाती हुई फूट रही थी, अनुमान करने लगा कि क्या यह स्त्री देवी सीता होगी ? इस संशय पर उसके मन में आग-सी लग गयी। उसे इतनी पीड़ा हुई कि 'मैं जल रहा हूँ' ऐसा लगा। उस विषम दु:ख से पीड़ित होकर वह कहने लगा। २९४

ऍऩ्पु वाऩ्ऱॊडर् याक्कैयार् पॆऱुम्बय ऩिळऩ्दॆऩॆ ऩिदुनिऱ्क
अऩ्पु वाऩ्ऱळै यिऱ्पिऱप् पदऩ्ऩॊडु मिहऩ्दुतऩ् ऩऱुऩ्दॆय्वक्
कऱ्पु नीङ्गिय कऩङ्गुऴै यिवळॆऩिऩ् काहुत्तऩ् बुहऴॊडुम्
पॊऱ्पुम् याऩुमिव् विलङ्गैयु मरक्करुम् पॊऩ्ऱुदु मिऩ्ऱॆऩ्ऱाऩ् 295

ऍऩ्पु तॊटर्–अस्थिसंकुल; वाऩ् याक्कैयाल्–इस श्रेष्ठ शरीर के लेने से; पॆऱुम् पयऩ् इऴऩ्तऩॆऩ्–प्राप्य फल खो दिया; इतु निऱ्क–यह एक ओर रहे; इ कऩङ्कुऴै–यह भारी कुण्डलधारिणी; अऩ्पु वाऩ् तळै–प्रेम के पवित्र बन्धन को; अतऩॊटु इल् पिऱप्पुम्–और उसके साथ श्रेष्ठ कुल में जन्म को; इकऩ्ऱु–उपेक्षित करके; तऩ् अऱुम् तॆय्व कऱ्पुम्–अपने उत्तम दिव्य पातिव्रत से भी; नीङ्कियवळ्–च्युत है; ऍऩिऩ्–तो; काकुत्तऩ् पुकऴॊटुम्–काकुत्स्थ के यश के साथ; पॊऱ्पुम्–गौरव की उज्ज्वलता भी; याऩुम्–मैं; इव् इलङ्कैयुम् अरक्करुम्–यह लंका और राक्षस भी; इऩ्ऱु–अभी; पॊऩ्ऱुतुम्–मिट जायँगे; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । २९५

यह दृश्य देखकर मेरे अस्थिसंकुल यह शरीर लेने से प्राप्य सौभाग्य

मिट गया। वह एक ओर रहे ! भारी कर्णकुण्डलधारिणी ने श्रेष्ठ प्रेम-बन्धन को, उत्तम कुल में जन्म (के गौरव) को छोड़ दिया और दिव्य पातिव्रत धर्म को भी तिलाञ्जलि दे दी, ऐसा लगता है। अगर यह बात सच हुई तो सब गया— श्रीराम का यश और गौरव; मैं, यह लंका और उसके राक्षस सभी अभी मिट जायँगे। २९५

मानु यर्त्तिरु वडिविन ळवळिवण् मारुहोंण् डत्तळकूरिल्
तानि यक्कियो तानवर् तैयलो वेंयुरुन् दहैयानाळ्
कानु यिर्त्तदा रिरामन्मे नोक्किय कादलोंन् ड्रुकाणेन्
मीनु यर्त्तवन् मरुङ्गुरा निड्कुमे निनैन्ददु मिहैयेंन्ड्रान् 296

अवळ्—वे; मानुयर्—मानव-स्त्री; तिरु वटिवित्तळ्—के पवित्र रूप वाली हैं; इवळ—यह तो; मारु कोंण्टत्तळ्—भिन्न रूपधारिणी है; कूरिल्—कहें तो; तान्—यह; इयक्कियो—यक्षिणी है; तानवर् तैयलो—दानव-स्त्री है; ऐयुरुम्—ऐसी संशय योग्य; तकैयाताळ्—स्त्री लगती है; कान् उयिर्त्त तार्—सुगन्धित मालाधारी; इरामन् मेल् नोक्किय—श्रीराम पर रखा हुआ; कातल् ओंन्ड्र अतु काणेन्—कोई प्रेम नहीं देखता; मीन् उयर्त्तवन्—मकरध्वज; मरुङ्कु उरा निड्कुमे—पास आये बिना रहेगा क्या; निनैन्तदु मिकै—हमारा विचार सत्य का उल्लंघन कर गया है; ऍन्ड्रान्—हनुमान ने ऐसा सोचा। २९६

(फिर भी बुद्धिमान उसने गहराई से विचारा और अपना अभिप्राय बदल लिया।) सीता तो मानवशरीरी है। यह भिन्न शरीर वाली है। विचारकर कहें तो इसके सम्बन्ध में यही संशय हो सकता है कि यह यक्षिणी है या दानवदयिता ? पुष्पमालाधारी श्रीराम पर प्रेम रहता हो या विरह का अनुभव कर रही हो, ऐसा कोई लक्षण नहीं दिखता ! मकरध्वज इतना निष्क्रिय होकर पास खड़ा रहेगा क्या ? नहीं, नहीं ! यह देवी जानकी नहीं है। मेरा विचार उद्दण्ड था, असत्य था। हनुमान को यही ठीक लगा। २९६

इलक्क णङ्गळुञ् जिलवुळ वेंन्निनु मॅल्लैशेंन् ड्रिरुक्किल्ला
अलक्क णॅय्दुव दणियदुण् डॅन्ड्रॅडुत् तड्रैहिन्ड्र दिवळ्याक्कै
मलर्क्क रुङ्गुळल् शोर्न्दुवाय् वॅरीइच्चिल माड्रङ्गळ् पड्रैहिन्ड्राळ्
उलक्कु मिङ्गिवळ् कणवनु मळिवुमिव् वियनहर्क् कुळदॅन्ड्रान् 297

चिल इलक्कणङ्कळुम् उळ—और भी कुछ लक्षण हैं; ऍन्तितुम्—तो भी; इवळ् याक्कै—इसका शरीर; ऍल्लै चेंन्ड्रु—सीमा तक जाकर भी; इरुक्कु इल्ला—जिसका अन्त नहीं होगा ऐसे; अलक्कण् ऍय्तुवतु—दुःख की प्राप्ति; अणियतु उण्टु—पास ही है; ऍन्ड्र—ऐसा; ऍटुत्तु अड्रैकिन्ड्रतु—साफ़ बताता है; इवळ् मलर् करुङ्कुळल्—इसका पुष्पालंकृत केश; चोर्न्तु—खुला है; वाय् वॅरीइ—जीभ लड़खड़ाती है; चिल माड्रङ्कळ्—कुछ शब्द; पड्रैकिन्ड्राळ्—बोलती है; इवळ् कणवनुम्—इसका

पति भी; इङ्कु उलक्कुम्—यहाँ मरेगा; इ वियन् नकर्क्कुम्—इस विशाल नगर का भी; अऴिवु उळतु—नाश होनेवाला है। २९७

हनुमान ने आगे भी सोचा। इसके पास उत्तम स्त्रीलक्षण कुछ पाये जाते है। फिर भी इसके शरीर को देखने पर ऐसा लगता है कि इसके असीम दुःख पाने का समय निकट ही है। इसके पुष्पालंकृत केश अस्त-व्यस्त है। जीभ लड़खड़ाती है और कुछ अपशब्द उच्चारण करती है। लगता है कि इसका पति भी शीघ्र यहाँ मर जायगा। इस विशाल नगर का नाश भी निश्चित है। हनुमान ने यह भविष्यवाणी कही। २९७

ऑन्ऱु णर्न्दुनिन्ऱ् ऱेमुऱ निनैविन निऱ्कवित् तिऱत्तॅन्नाप्
पिन्ऱु शिन्दैयत् पॅयर्न्दन न्मनै पिऱ्पडप् पॅरुमेरुक्
कुन्ऱु यर्न्ददर् कैयुर् वोङ्गिय कॊऱ्ऱत्तु मणिक्कोयिल्
शॅन्ऱु पुक्कन निरावणऱ् कॅडुप्परुङ् गिरियॅनत् तिरडोळान् 298

इरावणऱ्कु ऍडुप्प अरुम्—रावण के लिए उखाड़ने में कठिन; किरि ऍत्त–गिरि-सम; तिरळ् तोळान्—पुष्ट कन्धों वाला; ऍन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तु निन्ऱु—(भविष्यवाणी) समझकर खड़ा रहा; एम् उऱ नितैवितत्—सन्तोषयुक्त मन के साथ; इ तिऱत् निऱ्क ऍन्ता—यह बात रहे, कहकर; पिन्ऱु चिन्तैयत्—मन को लौटाकर; अ मनै पिऱ्पट—उस महल को पीछे छोड़कर; पॅयर्न्ततत्—आगे गया; पॅरु मेरु कुन्ऱु—बड़ा मेरुपर्वत; उयर्न्ततऱ्कु—(महल के रूप में) उन्नत हो गया क्या; ऐयुऱ—इस तरह संशय दिलाते हुए; ओङ्किय—जो ऊँचा बना था; कॊऱ्ऱत्तु—(रावण के) विजयी और; मणि कोयिल्—रत्नमय प्रासाद; चॅन्ऱु पुक्कतत्—जा पहुँचा। २९८

हनुमान के कन्धे ऐसे पर्वत थे, जिन्हें रावण भी हिला नही सके। जब उसे यह भविष्यवाणी सूझी तो उसे सुख हुआ। फिर उस विचार के सिलसिले को, रहे यह, कहकर छोड़ दिया। फिर वह मन्दोदरी का महल त्यागकर आगे गया। फिर रावण के महल में घुसा, जो मणिमण्डित था और इतना ऊँचा था कि भ्रम होता था कि मेरुपर्वत महल के रूप में बढ़ा खड़ा है! । २९८

निलन्दु डित्तन नॆडुवरै तुडित्तन निरुदर्दङ् गुलमादर्
पॊलन्दु डित्तनुण् मरुङ्गुल्पोऱ् कण्गळुम् बुरुवमुम् बॊऱ्ऱोळुम्
वलन्दु डित्तन मादिरन् दुडित्तन तडित्तिन्ऱि मदिवानम्
कलन्दि डित्तन वॆडित्तन पूरण मङ्गलक् कलशङ्गळ् 299

निलम् तुटित्तत—अनेक स्थल कंपित हुए; नॆटु वरै—बड़े पर्वत; तुटित्तत—कॉपे; निरुतर् तम् कुलमातर्—राक्षसों की कुलीन स्त्रियों के; पॊलम् तुटित्त—सौन्दर्य-भरे (शरीरों में); नुण् मरुङ्कुल् पोल्—क्षीण कटि के समान; कण्कळुम् पुरुवमुम्—आँखें, भौंहें और; पॊन् तोळुम्—सुन्दर कन्धे; वलम् तुटित्तत—दायीं ओर फड़के; मातिरम् तुटित्तत—दिशाएँ कॉपी; मति वातम्—चन्द्र-सहित आकाश के मेघ;

कलन्तु–मिलकर; तटित्तु इन्ऱि–विद्युत् के विना ही; इटित्तत्त–गरजे; मङ्कल पूरण कलचङ्कळ्–मंगलद्योतक पूर्णकुम्भ; वॆटित्तत्त–आप ही आप टूट गये। २९९

जब वह रावण के महल में प्रविष्ट हुआ तब भूमि के कुछ भागों में कम्पन हुआ। बड़े-बड़े पर्वत हिल उठे। राक्षसियों के बायें अंग, आँखें, भौंहें और मनोरम कन्धे— उनकी कमरों के समान फड़के। दिशाएँ काँप उठीं। चन्द्र-सहित आकाश के घटाटोप से, विना विद्युत् के ही गाजें गिरीं। मंगलकलश स्वतः फूटे। २९९

पुक्कु नित्ऱुदन् पुलत्तॊळ नोक्कित्तल् पॊरुवरुन् दिरुवुळ्ळम्
नॆक्कु नित्ऱन नीङ्गुमन् दोविन्द नॆडुनहर्त् तिरुवॆन्ना
ऎक्कु लङ्गळिल् यावरे यायिनु मिरुविनै यॆल्लार्क्कुम्
ऒक्कु मूळ्मुरै यल्लदु वलियदॊन् ऱिल्लॆन वुणर्वुऱ्ऱान् 300

पुक्कु नित्ऱु–प्रवेश करके स्थित होकर; तन् पुलन् कॊळ–अपनी बुद्धि को खूब लगाकर; नोक्कितन्–उसको (हनुमान ने) देखा; पॊरुवु अरुम्–अनुपम; तिरु उळ्ळम्–श्रेष्ठ मन; नॆक्कु नित्ऱतन्–पिघला, ऐसा खड़ा रहा; अन्तो–हन्त; इन्त नॆटु नकर्–इस बड़े नगर की; तिरु–श्री; नीङ्कुम्–मिट जायगी; ऎन्ना–ऐसा सोचकर; ऎक्कुलङ्कळिल् यावरे आयिनुम्–किसी भी कुल का कोई भी क्यों न हो; इरु वितै ऎल्लार्क्कुम् ऒक्कुम्–दोनों (पाप व पुण्य) कर्म सब पर समान रूप से लागू होगा; ऊळ् मुऱै अल्लतु–विधि के क्रम को छोड़; वलियतु ऒन्ऱु–बलवान अन्य कुछ; इल्–नहीं है; ऎन–ऐसा; उणर्वुऱ्ऱान्–सोचा। ३००

रावण के प्रासाद में प्रवेश करके हनुमान ने रावण पर खूब दृष्टि गड़ाकर देखा। उसका अनुपम मन पिघल उठा। उसे यह सोचते हुए दुःख हुआ कि हन्त! इस विशाल नगर की सारी श्री और सारे वैभव इसके कारण मिट जायँगे। उसे यह मसल सूझा कि चाहे जो हों, जिस किसी कुल के भी हों, पाप और पुण्य के दोनों कर्म सभी पर समान रूप से अपना प्रभाव डालेंगे ही। विधि के विधान से अधिक बलवान कोई वस्तु नहीं है। ३००

नूऱ्पॆ रुङ्गड नुणङ्गिय केळ्विया नोक्कित्तन् मऱङ्गूरुम्
वेऱ्पॆ रुम्बडै पुडैपरन् दीण्डिय वॆळ्ळिडै वियन्गोयिल्
पाऱ्पॆ रुङ्गडऱ् पन्मणिप् पः(ह्)ऱलैप् पाप्पिडैप् पडर्वेलै
माऱ्करुङ् गडल् वदिन्ददे यन्नैयदोर् वन्नप्पिनिऱ् ऱुयिल्वानै 301

पॆरुङ् कटल्–विशाल सागर-सम; नल्–शास्त्रों का; नुणङ्किय केळ्वियात्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान रखनेवाले ने; मऱम् कूरुम्–वीरता से पूर्ण; वेल् पॆरुम् पटै–भालाधारियों की बड़ी सेना; पुटै परन्तु ईण्टिय–जिसको पार्श्वों से घेरकर ठस खड़ी रही; वॆळ्ळिटै–ऐसे खुले मैदान के मध्य रहनेवाले; वियन् कोयिल्–बड़े राजमहल में; पॆरुम् पाल् कटल्–बड़े क्षीर-सागर मध्य; पल् मणि–अनेक रत्नों के साथ; पल्

तलै पाप्पु इटै–अनेक सिरों के पन्नगराज पर; पटर् वेलै–लम्बे किनारे वाले; माल् करुङ्कटल्–बड़ा काला समुद्र; वतिन्तते–पड़ा हो; अत्तैयतु ओर् वनप्पिऩ्ऩिल्–ऐसी सुन्दरता के साथ; तुयिल्वात्तै–जो सो रहा था, उसको; नोक्कित्तन्–देखा। ३०१

हनुमान ने देखा। रावण सो रहा था। हनुमान विशाल सागर-सम शास्त्रों का सूक्ष्म श्रौतज्ञानी था। रावण का बड़ा राजमहल विशाल मैदान के मध्य था। उस मैदान में वीरता में अत्यधिक बढ़े भालाधारी राक्षस महल को घेरे रहकर पहरा दे रहे थे। महल के अन्दर विशाल क्षीरसागर-मध्य अनेक रत्न-सहित फनों वाले नाग पर लम्बे किनारे वाला बड़ा काला सागर फैला पड़ा हो, ऐसे दर्शनीय आकर्षण के साथ रावण सो रहा था। ३०१

कुऴवि ञायिऱु कुऩ्ऱिवर्न् दनैयन कुरुमणि नॆंडुमोलि
इऴैह ळोडुनिन् ऱिऴवॆयि लॆऱिन्दिड विरवॆनुम् बॊरुळ्वीय
मुऴैहॊण् मेरुविन् मुहट्टिडैक् कनहनै मुरुक्किय मुरट्चीयम्
तऴैहॊ डोळॊडुन् दलैपल परप्पिमुन् ऱुयिल्वदोर् तहैयानै 302

कुऴवि ञायिऱु–बालसूर्य; कुऩ्ऱु इवर्न्ततैयन–उदयाचल पर चढ़ा हो ऐसे; कुरुमणि नॆंटु मोलि–रंगीन रत्नों से युक्त बड़े किरीट; इऴैकळोटु निऩ्ऱु–आभरणों के साथ रहकर; इऴ वॆयिल्–सुखद प्रकाश; ऍऱित्तिट–छिटक रहे थे; इरवु ऍऩुम् पॊरुळ्–(उससे) रात्रि नामक वस्तु; वीय–मिटी; मुऴै कॊळ् मेरुविऩ्–कन्दराओं से युक्त मेरु के; मुकट्टिटै–शिखर पर; कनकत्तै–हिरण्य को; मुरुक्किय मुरण् चीयम्–जिन्होंने मार दिया, वे सशक्त नृसिंह; मुऩ्–पहले; तऴै कॊळ्–अनेक; तोळॊटुम्–कन्धों के साथ; पल तलै परप्पि–अनेक सिरों को रखते हुए; तुयिल्वतोर् तकैयात्तै–सो रहे हों, इस प्रकार सोते रहनेवाले को। ३०२

उदयगिरि पर उगे चन्द्रों के समान श्रेष्ठ रंगों के रत्न-जड़ित मुकुट अन्य आभरणों के साथ मिलकर बालातप-सा प्रकाश बिखेर रहे थे। रात नामक वस्तु 'नहीं' हो रही थी। कन्दरापूर्ण मेरुपर्वत की चोटी पर, कनककशयप के संहारक नृसिंह-मूर्ति जैसे अनेक भुजाओं के साथ, अनेक हाथों को फैलाये रखकर जो सो रहा था उस रावण को (हनुमान ने देखा)। ३०२

कुऴन्दै वॆण्मदिक् कुडुमिय नॆंडुवरै कुलुक्किय कुलत्तोळैक्
कऴिन्दु पुक्किडै करन्दन वनङ्गवेळ् कडङ्गणै पलपाय
उऴन्द वॆञ्जमत् तुयर्दिशै यानैयि नॊळिर्मरुप् पुऱ्ऱिऱ्ऱ
पऴन्द ऴम्बिनुक् किडैयिडै येशिल पशुम्बुण्ग ऴशुम्बूऱ 303

कुऴन्तै वॆण्मति–बालचन्द्र को; कुटुमियन्–सिर पर धारण करनेवाले शिवजी के; नॆंटुवरै–बड़े पर्वत (कैलास) को; कुलुक्किय–जिन्होंने हिला दिया; कुलत्तोळै–

उन श्रेष्ठ भुजाओं को; कळिन्तु–पार करके; पुक्कु–प्रवेश करके; इटै करन्तत–शरीर में जो छिपे रहे; अनङ्क नेळ् कटुम् कणै–मारदेव के भयंकर शर; पाय–निफर गये; वॅम् चमत्तु उळन्त–भयंकर युद्ध में जो पीड़ित हुए; तिचै उयर् यानैयित्–उन बड़े दिग्गजों के; ऑळिर् मरुप्पु उऱ्‍ऱ–उज्ज्वल दाँत गये; इऱ्‍ऱ–जहाँ टूटे; पळम् तळुम्पिनुक्कु इटै इटैये–उन पुराने चिह्नों के बीच-बीच; चिल पचुम्पुण्कळ्–कुछ ताज़े घाव; अचुम्पु ऊऱ–रक्त बहा रहे थे, (इस भाँति सो रहा था रावण, उसे) । ३०३

बालचन्द्रशेखर शिवजी के कैलास को जिन्होंने हिला दिया, उन रावण की भुजाओं को पार कर क्रूर अनंगशर उसके शरीर के अन्दर घुस रहे थे। कठोर युद्ध में रावण ने कभी दिग्गजों को त्रस्त किया था। तब उनके उज्ज्वल दाँत इसके वक्ष में गड़ गये थे। उन दागों के मध्य अब ताजे घाव लगे थे और उनसे होकर रक्त रिस रहा था। ३०३

आय पॊऱ्‍ऱलत् तायवळै यरम्बैय रायिर रणिनिऩ्‍ऱु
तूय पॊऱ्‍कव रित्तिर ळियक्किडच् चुळिपडु पचुङ्गाऱ्‍ऱिऩ्
वीय कऱ्‍पहत् तेऩ्‍ऱुळि विरायत्त वीऴ्‍तॊऱु नॆडुमेऩि
तीय नऱ्‍ऱॊडिच् चीदैयै निनैतॊऱु मुयिर्त्तुयिर् तेय्वाऩै 304

पॊऩ् तलत्तु आय–स्वर्णनगरी अमरावती-वासिनी; आय् वळै–श्रेष्ठ कंकणधारिणी; अरम्पैयर् आयिरर्–सहस्र अप्सराएँ; अणि निऩ्‍ऱु–पास खड़ी होकर; तूय पॊऱ्‍कवरित्तिरळ्–शुद्ध, स्वर्णमूठ वाले चँवर डोल रही है; चुळि पटु–उससे वर्तुल उठनेवाले; पचुम् काऱ्‍ऱिऩ्–मन्द पवन से; कऱ्‍पक वीय–कल्पसुमन के; तॆऩ् तुळि–शहद की बूंदें; विरायत्त वीऴ् तॊऱुम्–जब-जब छितरकर गिरती है; नॆटु मेऩि तीय–उसका बड़ा शरीर झुलसता है; नल् तॊटि–श्रेष्ठ कंकणधारिणी; चीतैयै निऩैतॊऱुम्–सीता का ज्यों-ज्यों स्मरण करता है; उयिर्त्तु–त्यों-त्यों लम्बी साँसें छोड़ते हुए; उयिर् तेय्वाऩै–जिसके प्राण क्षीण हो रहे थे, उसको। ३०४

स्वर्णनगरी अमरावती की वासिनी और श्रेष्ठ चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराएँ उसके पास खड़े होकर स्वर्णमूठ के चँवर डुला रही थीं। उससे जो घूमकर पवन उठा उससे कल्पसुमन से शहद चूने लगा। ज्यों-ज्यों वे शहद-कण उसके शरीर पर गिरे, त्यों-त्यो उसका शरीर तप्त हो उठा। ज्यों-ज्यों वह सीताजी का स्मरण करता, त्यों-त्यों उसकी ठण्डी आहें निकलीं और उसके प्राण क्षीण होते जा रहे थे। (ऐसे रावण को हनुमान ने देखा)। ३०४

चान्द ळाविय कलवैमेऱ् ऱवळ्वुऱु तण्डमिऴ्प् पशुन्दॆन्‍ऱल्
एन्दु कामवॆङ् गऩलिनुक् कुमिळ्तट् टुरुत्तियि नुयिर्प्पॆऱक्
कान्दण् मॆन्विरऱ् चऩहिमेन् मनमुदऱ् करणङ्गळ् कडिदोडप्
पान्द णीङ्गिय मुळैयॆनक् कुळैवुऱु नॆञ्जुपाऴ् पट्टाऩै 305

कलवै अळाविय–अनेक गन्धद्रव्य-मिश्रित; चान्तु मेल्–चन्दन के लेप पर; तवऴ्वुरु–मन्द-मन्द बहनेवाली; तण् तमिऴ् पचुम् तॆन्ऱल्–शीतल मधुर मन्द दक्षिणी हवा (मलयपवन); एन्तु काम–सही हुई काम रूपी; वॆम् कऩलितुक्कु–गरम आग के लिए; उमिऴ् अतळ् तुरुत्तियित्–लगनेवाली चमड़े की भाथी की; उयिर्प्पु–हवा के समान; एऱ–लगने से; मऩम् मुतल् करणङ्कळ्–मन आदि अंतःकरण; कान्तळ् मॆऩ् विरल् चऩकि मेल्–'कांदळ' पुष्प-सदृश उँगली वाली देवी जानकी के प्रति; कटितु ओट–दौड़ते है, इसलिए; पान्तळ् नीङ्किय–सर्प जिससे बाहर चला गया हो उस; मुळै अॆन–बाँबी के समान; कुऴैवुऱ नॆञ्चु–दुर्बल हुए हृदय के साथ; पाऴ् पट्टाऩ्–छिन्नवल जो हो गया, उसको। ३०५

उसके शरीर पर विविध गन्ध-द्रव्य से मिश्रित चन्दन-लेप पड़ा था। उसके ऊपर से मधुर मलयपवन मन्द-मन्द बहा। वह रावण के अवलम्बित काम की अग्नि के लिए आँधी की हवा के समान लगा। तब उसके मन आदि अन्तःकरण 'कांदळ' के समान उँगली वाली जानकी के पास कूच कर गये। सर्पविहीन बाँबी के समान उसका हृदय सारहीन बन गया। उसका पिघला दिल दुर्बल हो गया। (ऐसा उसको)। ३०५

कॊण्डपे रूक्क मूळत् तिशैदॊरुङ् गुरित्तु मेनाळ्
मण्डिय शॆरुविन् मानत् तोळ्हळाल् वारि वारि
उण्डदु तॆविट्टिप् पेऴ्वाय्क् कडैहडो रॊऴुहिप् पायुम्
अण्डर्दम् बुहऴिऱ् ऱोऩ्ऱुम् वॆळ्ळॆयिऱ् ऱमैदि यात्तै 306

कॊण्ट–जो अपनाया; पेर् ऊक्कम्–बड़ा उत्साह; मूळ–और बढ़ा; मेल् नाळ्–प्राचीन दिन; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; कुऱित्तु–लक्ष्य बनाकर; मण्टिय चॆरुविऩ्–घने युद्ध में; मात तोळ्कळाल्–अपनी बड़ी भुजाओं से; वारि वारि उण्टतु–उठा-उठाकर जिसको खाया; पेऴ् वाय् तॆविट्टि–बड़ा मुख अघा गया; कटैकळ् तोऱुम्–मुख के कोनों से; ऒऴुकि–रिसकर; पायुम्–जो बहा; अण्टर् तम् पुकऴिल्–उस देवों के यश के समान; तोऩ्ऱुम्–जो लगे; वॆळ् ऎयिऱ्ऱु अमैतियात्तै–उन श्वेत (वक्र) दाँतों के साथ रहनेवाले को। ३०६

पहले बढ़ते उत्साह के साथ रावण ने दिग्विजय की और सभी दिशाओं में घमासान युद्ध किया। तब अपने बड़े हाथों से उसने उठा-उठाकर विजययश का अशन किया था। वह यश इतने अधिक परिमाण में अन्दर लिया गया कि उसका वहुत बड़ा मुख भी उसको समा नहीं सका और उसके दोनों कोरों से वह बहने लगा। उस यश के समान प्रकट रहे खड्ग दाँतों के साथ वह सो रहा था। (उसको)। ३०६

वॆळ्ळिवॆण् शेक्कै वॆन्दु पॊऱियॆऴ वॆदुम्बु मेनि
पुळ्ळिवॆण् मॊक्कु ळॆऩ्ऩप् पॊडित्तुवेर् कॊदित्तुप् पॊङ्गक्

कळ्ळविऴ् मालै तुम्बि वण्डोडुङ् गरिन्दु शाम्ब
ऒळ्ळिय मालै तीय वुयिर्क्किन्ऱ वुयिर्प्पि ताऩै 307

वॆळ्ळि वॆण् चेक्कै–चाँदी के समान श्वेत शय्या; वॆन्तु–झुलसी; पॊरि ऒळ–अंगारे छूटे; वॆतुम्पुम् मेत्ति–तप्त शरीर में; वेर्–स्वेद; पुळ्ळि–बूंदों में; वॆण् मॊक्कुळ् ऎन्ऩ–श्वेत फफोलों के समान; पॊटित्तु–छिटककर; कॊतित्तु पॊङ्क–उबलकर उभरी; कळ् अविऴ् मालै–मधु-चूती मालाएँ; तुम्पि वण्टॊटुम्–अलियों और भ्रमरों के साथ; करिन्तु चाम्प–जलकर मिटीं; ऒळ्ळिय मालै–उज्ज्वल (मुक्ता-) हार; तीय–झुलस गये; उयिर्क्किन्ऱ उयिर्प्पिताऩै–ऐसा साँस छोड़नेवाले को। ३०७

उसकी शय्या चाँदी के समान श्वेत थी। उसके शरीर के ताप से वह जली और उससे अंगारे छूटने लगे। उसके तप्त शरीर पर स्वेदकण फफोले के समान खिल गये। उनसे गरमी उठी जिससे शहदस्रावी मालाएँ सूखकर राख बनी। उनके साथ भ्रमर और अलिकुल झुलसे। हार भी राख बन जायँ, ऐसा जो साँसें छोड़ रहा था उसको (देखा हनुमान ने)। ३०७

तेविय नेमि यानिऱ् चिन्दैमॆय्त् तिरुवि नेहप्
पूविय लमळि मेलाप् पॊय्युऱक् कुऱङ्गु वानैप्
कावियङ् गण्णि तन्बाऱ् कण्णिय काद नीरिन्
आवियै युयिर्प्पॆन् ऱोदु मम्मियिट् टरैक्कित् ऱानै 308

ते इयल्–दिव्य; नेमियाऩिल्–चक्रधारी श्रीविष्णु के समान; चिन्तै–मन; मॆय् तिरुविन् एक–सच्ची श्रीसीता की ओर गया; पू इयल् अमळि मेला–पुष्पमय शय्या पर; पॊय् उऱक्कु–झूठी नींद; उऱङ्कुवाऩै–सोनेवाले को; कावि अम् कण्णि तम् पाल्–नीलकमल-सम आँख वाली के प्रति; कण्णिय कातल् नीरिन्–रखे हुए प्रेम के जल से; आवियै–अपने प्राणों को; उयिर्प्पु ऎन्ऱु ओतुम्–साँस कहलानेवाले; अम्मि इट्टु–सिल पर रखकर; अरैक्किन्ऱाऩै–जो पीस रहा था, उसको। ३०८

दिव्य चक्रधारी श्रीविष्णु के मन के समान इसका चित्त सच्ची श्री सीताजी के पास चला गया था। वह पुष्पकलित शय्या पर झूठी नींद सो रहा था। नीले कमल के समान आँखों वाली सीता के प्रति प्रेम रूपी जल सींच-सींचकर वह अपने प्राणों को साँस रूपी सिल पर रखकर पीस रहा था। (उसको—)। ३०८

मिहुन्दहै निनैप्पु मुऱ्ऱ वुरुवळिप् पट्ट वेलै
नहुन्दहै मुहत्तन् काद नडुक्कुरु मनत्तन् वान्ऱेन्
उहुन्दहै मॊऴियाण् मुन्नि यॊरुवहै युळ्ळि नुळ्ळे
पुहुन्दन ळॆन्ऱो वॆन्ऱु मयिर्पुऱम् बॊडिक्किन् ऱानै 309

निनैप्पु मुऱ्ऱ मिकुम् तकै–(सीता का) स्मरण अधिक होता गया; उरु वऴि पट्ट वेलै–(सीता का) रूप आँखों में लगा तब; कातल्–प्रेम से; नकुम् तकै मुकत्तन्–

सहास मुख वाला; नट्कुकुरु मत्तुतन्–कम्पित मन वाला; वात् तेन् उकुम् तर्कै–उत्कृष्ट मधु बरसाती-सी; मोंळियाळ्–बोली वाली; ओंरु वकै मुन्नि–एक तरह से सोचकर; उळ्ळिन् उळ्ळे पुकुन्तनळ् अन्रो–अपने मन में घुस गयी है न; ॲन्रु–ऐसा सोचकर; पुरम् मयिर् पोंटिक्किन्राने–बाहर वालों को पुलकित पानेवाले को। ३०८

स्मरण की तीव्रता के बढ़ने से रावण की आँखों के पथ पर सीता का रूप आया। उसका मुख हास के साथ खिल उठा। और मन कम्पित हुआ। उसके रोंगटे खड़े हो गये शायद इस विचार से कि श्रेष्ठ मधुवर्षी बोली वाली वह देवी मेरे अन्दर घुस गयी। ३०९

मॆन्रॊळिर् कलाब मञ्ञै वेट्कैमीक् कूर मेलुम्
कुन्रॊळित् तोंरुमाक् कुन्रि नरिदिर्चेर् कोंळ्है पोंल
वन्रॊळिर् कोंर्रप् पोंर्रोळ् मणन्दिडु मडन्दै मार्हट्
कोंन्रॊळित् तोंन्रि नेह वरियदो ळॊळुक्कि नानै 310

मॆल् तोंळिल्–सूक्ष्म कलात्मकता से पूर्ण; कलाप मञ्ञै–कलाप-सहित मयूर; वेट्कै मी कूर–इच्छा के बढ़ने से; कुन्रु ओंळितुतु–गिरि से उतरकर; मेलुम् ओंरु मा कुन्रित्–और एक बड़े पर्वत पर; अरितिल् चेर् कोंळ्कै पोल–प्रयास करके जाने में असफल रह जाता जैसे; वन् तोंळिल्–कठिन कार्य करनेवाली; कोंर्रम्–विजयी; पोंन्तोळ् मणन्तिटुम्–सुन्दर भुजाओं पर आश्रित; मटन्तैमार्कट्कु–स्त्रियों के लिए; ओंन्रु ओंळितुतु–एक को छोड़कर; ओंन्रित् एक–दूसरी पर चढ़ने में; अरिय–दुर्लभ; तोळ् ओंळुक्कितानै–भुजाओं की पंक्ति वाले को। ३१०

सूक्ष्म कलापूर्ण कलाप वाला मोर, जब इच्छा होती है तब एक गिरि से उतरकर दूसरे अधिक उच्च पर्वत पर जाने का श्रम करता है, पर असफल रह जाता है। उसी तरह उसकी विजयी और मनोरम भुजाओं की आश्रिता नारियाँ एक भुजा को छोड़कर दूसरी का अवलम्बन लेने में असमर्थ है। ऐसी भुजाओं की पंक्ति के स्वामी, उसको (हनुमान ने देखा)। ३१०

तळुवा निन्रु करुङ्गडन्मी दुदय गिरियिर् चुडर्तयङ्ग
ॲळुवा नॆन्न मिन्निमैक्कु मार्बत् तिहळु मियल्विर्रा
मुळुवा नवरा युलहमोंरु मून्रुङ् गाक्कु मुदर्रेवर्
मळुवा णेमि कुलिशत्तिन् वाय्मै तुडैत्त वलियानै 311

तळुवा निन्रु–अपने (उदयाचल) से लगे रहे; करुम् कटल् मीतु–काले रंग के सागर-मध्य; उतय किरियिल्–उदयाचल पर; चुटर् तयङ्क–किरणों को प्रकाश फैलाने देते हुए; ॲळुवान् ॲन्न–उगनेवाले सूर्य के समान; मिन् इमैक्कुम्–विद्युत् जैसा चमकनेवाला; मार्पम्–वक्ष; तिकळुम् इयल्पिर्रु आ–शोभनेवाला बन; मुळु वानवराय्–पूर्ण रूप से दैवी बनकर; ओंरु मून्रु उलकुम्–तीनों लोकों की; काक्कुम्–रक्षा करनेवाले; मुतल् तेवर्–प्रथम त्रिदेवों के; मळुवाळ्–परशु; नेमि–

सुदर्शन चक्र; कुलिचत्तितन्–कुलिश के; वाय्मै–बल को; तुटैत्त–जिसने मिटाया; वलियानै–उस बलिष्ठ रावण को। ३११

रावण का वक्ष आभरणों से भूषित था, जो उसको घेरे लगे रहे काले सागर के मध्य रहनेवाले उदयाचल पर उगे सूर्य के समान आभा बिखेर रहे थे। और उस वक्ष ने पूर्ण देवत्व का भागी तीनों देवों के परशु, चक्र और कुलिश की सच्ची शक्ति को निकम्मा बना दिया था। ऐसे बलवान रावण को हनुमान ने देखा। ३११

तोडुळुद तार्वण्डुन् दिशैयानै मदनुदुदैन्द वण्डुम् जुऱ्ऱि
माडुळुद नऱुङ्गलवै वयक्कळिऱ्ऱिन् शिन्दुरत्तै माऱु हॊळ्ळक्
कोडुळुद मार्बानैक् कॊलैयुळुद वडिवेलिन् कॊऱ्ऱ मञ्जित्
ताडॊळुद पहैवेन्दर् मुडियुळुद तळुम्बिरुन्द शरणत्तानै 312

तार् तोटु–(रावण के वक्ष की) माला के फूलों को; उळुत वण्टुम्–जो कुरेद रहे थे, वे भ्रमर; तिचै यानै मतम्–दिग्गजों के मद पर; तुतैन्त वण्टुम्–जो अधिक मँड़रा रहे थे, वे भ्रमर; चुऱ्ऱि–मिलकर मँड़राते हुए; माटु उळुत–पार्श्वों में जिसकी कुरेद रहे थे; नऱुम् कलवै–वह चन्दन का लेप; वय कळिऱ्ऱिन्–सशक्त गजों के (मस्तक पर मले); चिन्तुरत्तै–सिन्दूर से; माऱुकॊळ्ळ–स्थान बदल ले ऐसा; कोटु उळुत मार्पानै–हाथी दाँतों से कुरेदे गये वक्ष वाले को; कॊलै उळुत–संहारक; वटि वेलिन्–तीक्ष्ण भाले की; कॊऱ्ऱम् अञ्चि–विजयशीलता से डरकर; ताळ् तॊळुत–पैरों पर जिन्होंने विनय की; पकै वेन्तर्–उन शत्रु राजाओं के; मुटि उळुत–किरीटों के रगड़ने से; तळुम्पिरुन्त–बने चिह्न जिन पर रहे; चरणत्तानै–उन चरणों वाले को। ३१२

उसने कभी दिग्गजों से युद्ध किया था। तब उसकी माला के फूलों को जो कुरेद रहे थे वे भ्रमर और दिग्गजों के मदजल पर जो मँड़रा रहे थे वे भ्रमर आपस में स्थान बदलते हुए मँड़राने लगे। तब दिग्गजों के मस्तक के सिन्दूर में और रावण के वक्षःस्थल के चन्दन-लेप में स्थानांतरण हुआ था। ऐसे, दिग्गजों के दाँतों द्वारा जिसका वक्ष खुद गया था उस रावण को; और जिसके चरणों में उसके संहारक तीक्ष्ण भाले से डरकर (उसके चरणों में) पड़े राजाओं के किरीटों के रगड़ने के दाग लगे थे उसे (हनुमान ने देखा)। ३१२

कण्डनन् काण्ड लोडुङ् गरुत्तिन्मुन् कालच् चॅन्दी
विण्डन कण्गळ् शिन्दि वॅडित्तन कोळु मेलुम्
कॊण्डदो रुरुव मायोन् कुऱळिनुङ् गुऱुहि निन्ऱान्
तिण्डलै पत्तुन् दोळ्ह ळिरुवदुन् दॅरिय नोक्कि 313

मायोन् कॊण्टतु–मायावी विष्णु ने जो लिया था; ओर् उरुव–उस रूप; कुऱळिनुम्–वामन से; कुऱुकि निन्ऱान्–जो छोटा बना रहा; तिण् तलै पत्तुम्–

सुदृढ़ दसों सिर; तोळ्कळ् इरुपतुम्–बीसों कन्धे; तॆरिय–प्रकट; नोक्कि–देखकर; कण्टतन्–समझा; काण्टल् ओटुम्–समझते ही; करुत्तिन् मुन्–उसके मन के पहले ही; कण्कळ्–उसकी आँखें; कीऴुम् मेलुम्–नीचे और ऊपर; वॆटित्तत–विस्फारित हुईं; काल चॆम्ती–युगान्तकालीन अग्नि उगलकर; विण्टत–खुलीं। ३१३

हनुमान मायावी श्रीविष्णु के अपनाये वामन-रूप से भी छोटे रूप में था। उसने रावण को दस सिरों और बीस हाथों के साथ पड़ा हुआ देखा तो समझ लिया कि यही रावण है। यह ज्ञान पाते ही उसका मन क्रोध से फूटने लगा। उसके पहले ही उसकी आँखें ऊपर और नीचे विस्फारित हुईं। उनसे लाल आग निकली और वे और भी खुल गयीं। ३१३

तोळाऱ्ऱ लॆन्नाहु मेनिऱ्कुञ् जॊल्लॆन्नाम्
वाळाऱ्ऱऱ् कण्णाळै वञ्जित्तान् मणिमुडियॆन्
ताळाऱ्ऱ लालिडित्तुत् तलपत्तुन् दहर्त्तुरुट्टि
आळाऱ्ऱल् काट्टॆने लडियेनाय् मुडियेने 314

वाळ् आऱ्ऱल्–तलवार की शक्ति का प्रदर्शन करनेवाली; कण्णाळै–आँखों वाली (सीताजी) को; वञ्चित्तान्–जो छल से हर लाया; मणि मुटि–उसके रत्न-किरीटों को; ऎन् ताळ् आऱ्ऱलाल्–अपने पैरों के बल से; इटित्तु–छितराकर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; तकर्त्तु–तोड़ गिराकर; उरुट्टि–लुढ़काकर; आळ् आऱ्ऱल्–अपनी पुरुष-शक्ति; काट्टेनेल्–प्रदर्शित नहीं करूँ तो; अटियेनाय्–श्रीराम का दास; मुटियेने–नहीं बनूँगा; तोळ् आऱ्ऱल्–भुजबल; ऎन्न आकुम्–क्या होगा; मेल् निऱ्कुम् चॊल्–आगे का यश-वचन; ऎन् आम्–क्या होगा। ३१४

तैश में आकर हनुमान ने यों सोचा। तलवार की-सी शक्ति रखनेवाली आँखों की स्वामिनी सीतादेवी को छल से हर लानेवाले इसके मणिमय किरीटों को अपने पैरों के बल से ठुकराकर, दसों सिरों को गिराकर भूमि पर लुढ़का न दूँ और इस तरह अपने बल का प्रदर्शन न कराऊँ तो श्रीराम का दास कहाँ रहूँगा मैं! बना नहीं रहूँगा! और मेरा बाहुबल क्या होगा? मेरा भावी यश भी क्या होगा?। ३१४

नडित्तुवाऴ् तहैमैयदो वडिमैता नन्नुदलैप्
पिडित्तवा ळरक्कनार् यान्कण्डुम् बिऴैप्पारो
ऒडित्तुवान् ऱोळनैत्तुन् दलैपत्तु मुदैत्तुरुट्टि
मुडित्तिव्वूर् मुडित्तान्मेन् मुडिन्दवा मुडिन्दॊऴिह 315

अटिमै तान्–सेवकाई; नटित्तु वाऴ्–बनावटी जीवन के; तकैमैयतो–स्वभाव की है क्या; नन्नुतलै–सुन्दर भाल वाली देवी को; पिटित्त–जो पकड़ लाया; वाळ् अरक्कनार्–क्रूर राक्षस; यान् कण्टुम्–मेरे दृष्टिगोचर होने के बाद भी; पिऴैप्पारो–बचा रहे क्या; वान् तोळ् अनैत्तुम् ऒटित्तु–उसकी सभी बड़ी भुजाओं को तोड़कर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; उतैत्तु उरुट्टि–लात मारकर लुढ़काकर; इव्वर्

मुटित्तु–इस नगर का नाश करके; मुटित्ताल्–कार्य पूरा करूँ तो; मेल् मुटिन्तवा–आगे जो होगा; मुटिन्तु ऑळिक–हो जाय। ३१५

सेवा क्या केवल अभिनय की वस्तु है ? यह क्रूर राक्षस, जिसने सुरम्य भाल वाली देवी को हर लिया, मेरी दृष्टि लगने के बाद भी जी जाए ? उसकी सारी बड़ी भुजाओं को तोड़ दूँगा; उसके सारे सिरों को लात मारकर लुढ़का दूँगा और इस नगर को ही मिटा दूँगा। आगे जो होगा वही हो ! । ३१५

ऍन्ऱूक्कि ऍयिऱुकडित् तिरुहरमुम् बिशैन्दॅळुन्दु
निन्ऱूक्कि युणर्न्दुरैप्पा नेमिया नरुळन्ऱाल्
ऑन्ऱूक्कि यॉन्ऱिऴैत्त लुणर्वुडैयोर्क् कुरित्तन्ऱाल्
पिन्ऱूक्कि लिवैशालप् पिऴैपयक्कु मॅनप्पॅयर्न्दान् 316

ऍन्ऱु–ऐसा कहते हुए; ऊक्कि–(मन में) उमंग से भरकर; ऍयिऱु कटित्तु–दाँत पीसकर; इरु करमुम् पिचैन्तु–दोनों हाथों को मलकर; ऍऴुन्तु निन्ऱु–ऊँचा खड़ा होकर; ऊक्कि उणर्न्तु–फिर उद्‌बुद्ध हो विचारकर; उरैप्पान्–कहने लगा; ऑन्ऱु ऊक्कि–एक संकल्प करके; ऑन्ऱु इऴैत्तल्–दूसरा कार्य करना; उणर्वुटैयोर्क्कु–समझदारों के लिए; उरित्तन्ऱु–उचित नहीं होगा; नेमियान्–चक्रधारी श्रीराम की; अरुळ् अन्ऱु–आज्ञा भी नहीं; पिन्–फिर; तूक्किल्–तोलकर देखें तो; इवै–ये कार्य; चाल–बहुत; पिऴै–अपराधों को; पयक्कुम्–पैदा कर देंगे; ऍन–सोचकर; पॅयर्न्तान्–(शान्तचित्त हो) कोप छोड़ गया। ३१६

ऐसा कहते-कहते उसका मन उमंग से भर गया। उसने दाँत पीसे और हाथ मले। इस तरह उमड़ने के बाद वह थोड़ा शान्त हुआ। विचार कर कहने लगा कि एक कार्य करने को उत्साह से बढ़ना और मध्य में दूसरे कार्य में प्रवृत्त होना समझदार को नहीं सोहता। यह प्रभु श्रीराम की आज्ञा के अनुसार भी नहीं होगा। सोचकर देखा जाय तो ये कृत्य बहुत ही दुष्ट हैं; अपराध होंगे। तब वह कोप को लाँघ गया। ३१६

आलम्बार्त् तुण्डवन्बो लाऱ्ऱलमैन् दुळरॅनिनुम्
शीलम्बार्क् कुरियोर्ह ळॅण्णादु शॅय्बवो
मूलम्बार्क् कुऱिनुलहै मुऱ्ऱुविक्कु मुऱैतॅरिनुम्
कालम्बार्त् तिऱैवेलै कडवादक् कडलॉत्तान् 317

चीलम्–शील-चरित्र पर; पार्क्क उरियोर्कळ्–दृष्टि रखने अर्ह लोग; आलम् पार्त्तु उण्टवन् पोल्–हलाहल निकलता देख उसको जिन्होंने खाया, उन शिवजी के समान; आऱ्ऱल् अमैन्तुळर् ऍनिनुम्–शक्तिमन्त हों तो भी; ऍण्णातु–विचारे विना; चॅय्पवो–कर्म करेंगे क्या; मूलम् पार्क्कुऱिन्–आधार देखना हो तो; उलकै मुऱ्ऱुविक्कुम् मुऱै–लोक-संहार का उपाय; तॅरितम्–जानने पर भी; कालम् पार्त्तु–

समय देखकर; वेलै–समुद्र; इऱ़ै कटवातु–उल्लंघन नहीं करता; अ कटल् ऑत्ताऩ्–(हनुमान भी) उसी समुद्र के समान था। ३१७

शील-चरित्र का आचरण करना चाहनेवाले, हलाहल को क्षीरसागर से निकलता देखकर जिन्होंने पी लिया, उसके समान बलयुक्त होने पर भी फल का विचार किये विना कार्य करेंगे क्या? इस तथ्य का आधार (मिसाल) देखना हो तो समुद्र को देखो। सारे प्रपञ्च को लीलने का सामर्थ्य रखने पर भी सागर समय की प्रतीक्षा करता रहता है और ज़रा भी तीर को पार नहीं करता। हनुमान उस सागर के समान था। ३१७

इऱ़ैप्पोर्प् पॅरुञ्जीऱ़ऱ़ मॅऩ्ऩोडु मुडिऩ्दिडुह
कऱ़ैप्पूङ् गुळ्लाळैच् चिऱ़ैवैत्त कण्डहऩै
मुऱ़ऱ़प्पोर् मुडित्तदोरु कुरङ्गॅऩ्ऱाऩ् मुऩ्वीरऩ्
कॊऱ़ऱ़प्पोर्च् चिलैत्तॊऴिऱ़्कुक् कुऱ़ैयुण्डा मॅनक्कुऱ़ैन्दाऩ् 318

इऱ़ै–अब; पोर्–युद्ध का; पॅरुम् चीऱ़ऱ़म्–बड़ा क्रोध; ऍऩ्ऩोटु मुटिन्तिटुक–मुझमें ही दब जाय; पूङ् कऱ़ै कुळ्लाळै–कोमल घने केश वाली (सीता) को; चिऱ़ै वैत्त–जिसने कारा में बन्द किया; कण्टकऩै–उस कंटक को; ऑरु कुरङ्कु–एक वानर ने; मुऱ़ऱ़–मिटाते हुए; पोर् मुटित्ततु–युद्ध किया; ऍऩ्ऱाल्–तो; मुऩ् वीरऩ्–श्रेष्ठ वीर के; कॊऱ़ऱ़प् पोर्–विजयदायी युद्ध करनेवाले; चिलै तॊऴिऱ़्कु–धनु के कर्म पर; कुऱ़ै उण्टाम्–बट्टा लगेगा; ऍन–सोचकर; कुऱ़ैन्ताऩ्–कोप को शान्त कर लिया। ३१८

अब जो युद्ध करने का बड़ा कोप मुझमें उठा वह मुझी में दब जाए! सौम्य और घने केश वाली सीताजी को जिसने कारागृह में बन्द कर रखा, उस कण्टक को एक छोटे वानर ने मिटाते हुए युद्ध किया तो योद्धा वीर श्रीराम के युद्ध विजयशील धनु पर बट्टा लग जायगा। इस विचार से उसका कोप शान्त हो गया। ३१८

अऩ्निलैयाऩ् पॅयर्न्दुरैप्पा ऩाय्वळैक्कै यणियिऴैयार्
इऩ्निलैया ऩुडऩ्ऱुयिल्वा रुळरल्ल रिवऩ्निलैयुम्
पुऩ्निलैय कामत्ताऱ़् पुलर्हिऩ्ऱ निलैपूवै
नऩ्निलैयि ऩुळळॅऩ्ऩु नलऩॅनक्कु नल्हुमाल् 319

अन् निलैयाऩ्–वैसी स्थिति का; पॅयर्न्तु उरैप्पाऩ्–फिर भी बोला; आय् वळैकै–चुने हुए कंकणधारी हस्तों की; अणि इऴैयार्–और सुन्दर आभरणभूषिता स्त्रियाँ; इन् निलैयाऩ् उटऩ्–इस स्थिति वाले के पास; तुयिल्वार् उळर् अल्लर्–सोती नहीं रहतीं; इवऩ् निलैयुम्–इसकी स्थिति भी; पुल् निलैय कामत्ताल्–अल्प काम-वासना से; पुलर्किऩ्ऱ निलै–सूखने की दशा है; पूवै–चिड़िया-सी सीता; नल् निलैयिल् उळळ्–कुशल-स्थिति में है; ऍऩ्ऩुम् नलऩ्–यह संतोष-समाचार; ऍनक्कु नल्कुम्–मुझे दे रही है। ३१९

उस (शान्त) स्थिति में खड़ा रहा वह आगे यों बोला। चुने हुए कंकणों की धारिणी और आभरणभूषिता स्त्रियाँ इसके साथ सोती नहीं। इसकी स्थिति भी घृणायोग्य कामताप से तपनेवाली स्थिति है और यह बता रही है कि चिड़िया-सी सीता स्वस्थ दशा में हैं। ३१९

ॲन्ऱॅण्णि यीण्डिनियोर् पयनिल्लै यॅन्ननिनैयाक्
कुन्ऱन्न तोळवन्ऱन् कॊडुङ्गोयिर् पुऱङ्गॊण्डान्
निन्ऱॅण्णि युन्नुवा ऩन्दोविन् नॅडनहरिल्
पॊन्ऱुन्नु मणिप्पूणा ळिलळॆन्नप् पॊरुमुवान् 320

ॲन्ऱु ॲण्णि–ऐसा सोचकर; इति ईण्टु–अब यहाँ; ओर् पयन् इल्लै–कोई काम नहीं; ॲन्न निनैया–ऐसा सोचकर; कुन्ऱु अन्न–पर्वत-सम; तोळवन् तन्–भुजाओं वाले रावण के; कॊटुङ् कोयिल्–गोलाकार महल को; पुऱम् कॊण्टान्–छोड़ जाकर; निन्ऱु ॲण्णि–खड़ा होकर सोचने; उन्नुवान्–विचारने लगा; अन्तो–हंत; इ नॆटु नकरिल्–बड़े नगर में; पॊन् तुन्नुम्–स्वर्ण में जड़ित; मणि पूणाळ्–रत्नमय आभरण-भूषिता; इलळ्–नहीं है; ॲन्न–यह सोचकर; पॊरुमुवान्–दुःख से भर गया। ३२०

इस तरह विचार करके उसने निश्चय किया कि अब यहाँ रहने से कोई लाभ नहीं। वह पर्वत-सम भुजा वाले रावण के गोलाकार महल को छोड़कर आगे गया। फिर चिन्ता उसे सताने लगी। हन्त! शायद इस विशाल नगर में स्वर्ण-रत्न आभरणधारिणी सीताजी नहीं हैं। उसके मन में दुःख उमड़ आया। ३२०

कॊन्ऱानो कऱ्पऴियाक् कुलमहळैक् कॊडुन्दॊऴिलाल्
तिन्ऱानो वप्पुऱत्तो शॅऱित्तानो, शिऱैयऱियेन्
ऒन्ऱानु मुणरहिलेन् मीण्डिनिप्पो यॅन्नुरैक्केन्
पॊन्ऱाद पॊऴुदॆनक्किक् कॊडुन्दुयरम् बोहादाल् 321

कऱ्पु अऴिया–अच्युतचरित्रा; कुल मकळै–श्रेष्ठ कुल-जाता सीता को; कॊटुम् तॊऴिलाल्–क्रूर घातक कर्म करके; कॊन्ऱानो–मार दिया क्या; तिन्ऱानो–खा लिया क्या; अ पुऱत्ते–उधर दूर पर; चिऱै चॆऱित्तानो–जेल में डाल दिया क्या; अऱियेन्–जान नहीं पाता; ऒन्ऱानुम् उणरकिलेन्–किसी भी विध समझ नहीं सकता; इनि–आगे; मीण्टु पोय्–लौट जाकर; ॲन् उरैक्केन्–क्या बताऊँ; इ कॊटुम् तुयरम्–यह कठोर दुःख; पॊन्ऱात पॊऴुतु–नहीं मरने पर; ॲनक्कु पोकातु–मुझसे दूर नहीं होगा। ३२१

(हनुमान पसोपेश में पड़ गया। उसे सन्देह होने लगा।) क्या रावण ने अच्युतशीला श्रेष्ठकुलकन्या सीताजी की हत्या करके मिटा दिया? या उसे खा लिया? या उनको सुदूर कहीं बन्द कर रखा है? कुछ समझ में नहीं आता, जान नहीं पाता। जानने का कोई मार्ग भी

नहीं दीखता ! अब लौट जाकर मैं क्या कहूँगा ? यह असफलता का दुःख मेरे मरे विना मुझे नहीं छोड़ेगा । ३२१

कण्डुवरु मॅन्ऱिरुक्कुङ् गाहुत्तन् कविक्कुलक्कोन्
कॊण्डुवरु मॅन्ऱिरुक्कुम् यान्मुडित्त कोळिदुवाल्
पुण्डरिह नयनत्तान् बालिनियान् पोवेन्नो
विण्डवरो डुडन्वीया दियान्वाळा विळिवेन्नो 322

काकुत्तन्–काकुत्स्थ श्रीराम; कण्टु वरुम्–देख आएगा; ॲन्ऱु इरुक्कुम्–ऐसा सोचते रहेंगे; कवि कुल कोन्–कपिकुलपति; कॊण्टु वरुम्–सीता को लिवा लायगा; ॲन्ऱु इरुक्कुम्–यह सोचते रहेंगे; यान् मुटित्त कोळ्–पर जो मैं कर चुका वह अनर्थ; इतु–यही है; पुण्टरिक नयनत्तान्–पुण्डरीकाक्ष; पाल्–के पास; यान् इनि पोवेनो–मैं अब जाऊँ क्या; विण्टवरोटु–जो मुझे कहकर इधर भेज चुके उनके साथ; यान्–मैं; उटन् वीयातु–समकाल में मरे विना; वाळा–वृथा; विळिवेनो–मरूँ क्या । ३२२

काकुत्स्थ श्रीराम यही सोचते रहेंगे कि मैं सीताजी को देखकर समाचार लाऊँगा । वानरकुलपति सोचते होंगे कि मैं सीताजी को लिवा लाऊँगा । पर मेरा किया हुआ अनर्थ यही है ! पुण्डरीकाक्ष श्रीराम के पास जाऊँ ? जिन्होंने मुझे साहस के वचन कहकर यहाँ भेजा उन वानर यूथपों के साथ मैं नहीं मरा । अब अकेले व्यर्थ मर जाऊँगा क्या ? । ३२२

कण्णियनाळ् कळिन्दुळवाऱ् कण्डिलॅन्नाऱ् कनङ्गुळैयै
विण्णडैदु मॅन्ऱारै याण्डिरुत्ति विरैन्दयान्
ॲण्णियदु मुडिक्कहिलेन् यान्मुडिया दिरुप्पेन्नो
पुण्णियमॅन् ऱॊरुपॊरुळॅन् नुळ्ळॆनिन्ऱुम् बोयदाल् 323

कण्णिय नाळ्–निर्धारित दिन; कळिन्तुळ–बीत गये; कनङ्कुळैयै कण्टिलॅन्–भारी कुण्डलधारिणी को देख नहीं पाया; विण् अटैतुम् ॲन्ऱारै–जो वहाँ स्वर्ग जाना (मरना) चाहते थे उन्हें; याण्टु–वहाँ; इरुत्ति–ठहराकर; विरैन्त–जो यहाँ शीघ्र आया; यान्–वह मै; ॲण्णियतु मुटिक्ककिलेन्–सोचा पूरा नहीं कर सका; यान् मुटियातु इरुप्पेनो–मै मरे विना रहूँ; पुण्णियम् ॲन्ऱु ऑरु पॊरुळ्–पुण्यभाग्य नाम की एक वस्तु; ॲन् उळ्ळै निन्ऱुम्–मेरे पास से; पोयतु–हट गयी । ३२३

सुग्रीव द्वारा निर्धारित दिन बीत गये । भारी कुण्डलधारिणी सीताजी के दर्शन नही हुए । महेन्द्र पर्वत पर वानर वीर मरने को उद्यत हुए । मैंने उनको वहीं रोका और मैं इधर शीघ्र आया । पर मैं अपने कार्य में असफल हो गया । मैं अपना अन्त किये विना रहूँगा क्या ? पुण्य-भाग्य नाम की वस्तु मेरे पास से दूर हो गयी । ३२३

एळ्नू ऱोशनैशूळ्न् दॅयिल्हिडन्द विव्विलङ्गै
वाळ्मा मन्ननियर्यान् काणाद मऱ्ऱिल्लै

ऊऴियान् पॅरुन्देवि यॊरुत्तियुमे यान्गाणत्
आऴिता यिडराऴिक् किडैयेवीऴ्न् दऴिवेनो 324

एऴु नूरु ओचनै–सात सौ योजन; चूऴ्नतु–घेराव के; ऍयिल्–प्राचीर के साथ; किटन्त–रहनेवाले; इ इलङ्कै–इस लंका नगर में; वाऴुम्–जीनेवाले; मा मन् उयिर्–श्रेष्ठ नित्य जीवन के प्राणियों में; यान् काणात इल्लै–जो मैंने नहीं देखा, वह कोई नहीं है; ऊऴियान्–युगान्त के बाद भी रहनेवाले देव की; पॅरुन् तेवि ऑरुत्तियुमे–आदरणीय देवी एक को; यान् काणेन्–मैंने नहीं देखा; आऴि ताय्–(जल का) समुद्र लाँघकर; इटर् आऴिक्कु इटैये–दुःख के समुद्रमध्य; वीऴ्नतु अऴिवेनो–गिरकर मर जाऊँगा क्या। ३२४

सात सौ योजन लम्बे प्राचीर के अन्दर रहनेवाली इस लंका नगरी के जीवों में कोई नहीं बचा, जिसको मैंने नहीं देखा हो ! पर युगान्त में अमर रहनेवाले श्रीराम की आदरणीया देवी, एक ही दृष्टि में नहीं आयीं। जल का समुद्र पार करके दुःख-सागर में गिरकर मर जाऊँगा क्या ? । ३२४

वल्लरक्कन् रनैप्पट्रि वाय्पत्तुङ् गुरुदिवरक्
कल्लरक्कुङ् गरदलत्ताऌ् काट्टॆन्रु काण्गेनो
ऍल्लरक्कु मयिलार्वे लिरावणनु मिव्वूरुम्
मॆल्लरक्कि नुरुहिविऴ वॆन्दळलिट् टेहेनो 325

वल् अरक्कन् तनै–क्रूर राक्षस को; कल् अरक्कुम्–चट्टान को चूर कर सकनेवाले; कर तलत्ताल्–करतल से; वाय् पत्तुम्–दसों मुखों से; कुरुति वर–रक्त बहता आए ऐसा; पट्रि–पकड़कर; काट्टु ऍन्रु–दिखाओ उन्हें, कहकर; काण्केनो–नहीं देखूँ क्या; ऍल्–सूर्य को; अरक्कुम्–त्रास देनेवाले; अयिल् आर्–तीक्ष्णता से युक्त; वेल् इरावणतुम्–भालाधारी रावण और; इ ऊरुम्–यह नगर; मॆल् अरक्किन्–कोमल लाख के समान; उरुकि विऴ–पिघलकर गिर जाएँ ऐसा; वॅम् तऴल् इट्टु–गरम आग लगाकर; एकेनो–नहीं जाऊँगा क्या। ३२५

कितना चाहता हूँ कि पर्वत-चूर्णकारी अपने हाथों से निर्मम राक्षस रावण को उसके मुखों से रक्त बहने देते हुए पकड़ूँ और कहूँ कि सीताजी को दिखाओ और उसके दिखाने पर देवी को देख लूँ ! सूर्य को भी अपनी चमक से कष्ट देनेवाले तीक्ष्ण भाले के धारक रावण को और इस नगर को क्या आग लगा देकर नहीं जाऊँगा, ताकि वे लाख के समान पिघलकर गिर जाएँ ? । ३२५

वानवरे मुदलोरै विनवुवनेल् वल्लरक्कन्
तानॊरुव नुळनाह वुरैशॆय्युन् दरुक्किलराल्
एनैयव रॆङ्गुरैप्पा रॆव्वण्णन् दॆरिक्केनो
ऊनॊऴिय नीङ्गाद वुयिर्शुमन्द वुणर्विलियेन् 326

ऊन् ऑऴिय–यह शरीर छूट जाए ऐसा; नीङ्कात–जो नहीं जाता; उयिर्–

उस जान को; चुमन्त–जो ढो रहा हूँ; उणर्विलियेन्–वह भावहीन मैं; वानवरे मुतलोरै–देवों आदि से; वित्तवुवॅत्तेल्–पूछूँ तो; वल् अरक्कन् तान्–कठोर राक्षस; ऑरुवन्–एक; उळन् आक–जब रहता है तब; उरै चॅयुम् तरुक्कु इलर्–उनमें उत्तर देने का साहस नहीं; एत्तैयवर्–अन्य कोई; ऍङ्कु उरैप्पार्–कहाँ बताएँगे; ऍव् वण्णम् तॅरिक्केत्तो—कैसे जान पाऊँगा। ३२६

मेरा शरीर नहीं छूटता। प्राण नहीं निकलते और मैं उन्हें व्यर्थ ढो रहा हूँ। निर्लज्ज मैं देवों से पूछूँ तो उनमें क्रूर राक्षस की उपस्थिति में सच्ची बात बताने का साहस नहीं रहेगा। फिर और कोई कहाँ कहेंगे? फिर मैं कैसे जान लूँगा?। ३२६

ऍरुवैक्कु मुदलाय शम्बादि यिलङ्गैयिलत्
तिरुवैक्कण् डनॅत्तन्ऱा नवन्उरैयुञ् जिदैन्ददाल्
करुवैक्कु नॅडुनहरैक्. कडलिडैये करैयादे
उरुवैक्कॉण् डिन्ऩमुना नुळॅन्ताहि युऴल्वेत्तो 327

ऍरुवैक्कु मुतलाय–गीधों के अधिपति; चम्पाति–सम्पाति (ने); अ तिरुवै–उन श्री को; इलङ्कैयिल् कण्टत्तॅन्–लंका में देखा; ऍन्ऱान्–कहा; अवन् उरैयुम् चितैन्ततु–उसका वचन वृथा हो गया; करु वैक्कुम् नॅटु नकरै–(ब्रह्मा द्वारा) जिसकी रत्न-गर्भ-नेमि-क्रिया की गयी उस बड़े नगर को; कटलिटैये करैयाते–समुद्र के बीच में गलाये विना; नान्–मैं; इन्नमुम्–अब भी; उरुवै कॉण्टु उळॅन् आकि–अपना शरीर धारण करनेवाला बना; उऴल्वेत्तो–कष्ट उठाता रहूँ क्या। ३२७

गीधों के नायक सम्पाती ने तो कहा था कि मैंने सीताजी को लंका में देखा है। उसका कहा भी झूठा हो गया है। ब्रह्मदेव ने नींव के "गर्भ" में रत्न आदि रखने का रस्म अदा करके इस नगर की सृष्टि करायी थी। इस नगर को समुद्र में गलाये विना मैं अपना शरीर ढोता हुआ दुःख करता फिरूँगा क्या? ("करु वैक्कु" के गर्भ रखकर; गर्भ में रख कर. दोनों अर्थ हैं। "नींव" डालते समय रत्न, स्वर्ण आदि रखकर उसके ऊपर दीवार चुनना प्रचलित है। उसके आधार पर इस पद्य में हमने ब्रह्मा द्वारा "गर्भ" न्यास का अर्थ किया है। अपने गर्भ में यानी अपने अन्दर सुरक्षित स्थान में जो लंका नगर सीताजी को रखता था उस नगर को —यह अर्थ भी संगत है ही।)। ३२७

वडित्तार्पूङ् गुऴलाळै वानरिय मण्णरियप्
पिडित्तानिव् वडलरक्क नॅनुमाऱ्ऱम् बिळैयादाल्
ऍडुत्ताऴि यिलङ्गैयिनै यिरुङ्गडलि निट्टिवनै
मुडित्ताले यान्मुडिदन् मुऱैमत्ऱ वॅन्ऱुणर्वान् 328

वटित्तु आर्–सजाए-सँवारे; पूङ् कुऴलाळै–मनोरम केश वाली सीता को;

इ अटल् अरक्कन्–इस बलिष्ठ राक्षस ने; वान् अरिय–स्वर्ग के लोक के जानते; मण् अरिय–भूलोक के जाने; पिटित्तान्–ग्रस लिया; अँतुम् माट्रम्–यह प्रवाद; पिळैयातु–झूठा नहीं होगा; आऴि इलङ्कैयितै–समुद्रवलयित लंका को; अँटुत्तु–उत्पाटित कर; इरुम् कटलिन् इट्टु–विशाल सागर में डालकर; इवनै मुटित्ताले–इसका अन्त करूँ, तभी; यान् मुटितल्–मेरा मरना; मन्नुर मुरै–उत्तम क्रम होगा; अँन्रु उणर्वान्–ऐसा विचार किया। ३२८

सँवारे-सँजोये सुन्दर केश वाली सीताजी को यह बलिष्ठ राक्षस देवों के और भूलोकवासियों के जाने, ग्रस लाया था। यह अपवाद दूर नहीं होगा। इसलिए समुद्रमध्य लंका को उखाड़ लेकर समुद्र में फेंक कर इसको भी मारकर मिटा दूँ तभी जाकर अपना अन्त कर लूँ, यही श्रेष्ठ मार्ग है। ३२८

अँळ्ळुरैयु मौऴियामल् याण्डैयितु मुळनाहि
उळ्ळुरैयु मौरुवनैप्पो लॅम्मरुङ्गु मुलावितान्
पुळ्ळुरैयु मानत्तै युरनोक्किप् पुरम्बेर्वान्
कळ्ळुरैयु नरुञ्जोलै ययलौन्रु कण्णुट्रान् 329

अँळ् उरैयुम्–तिल जहाँ रह सकता है, उस छोटे स्थान को भी; ओऴियामल्–विना छोड़े; याण्टैयितुम्–सर्वत्र; उळनाकि–विद्यमान होकर; उळ् उरैयुम् ओरुवनैप् पोल्–अन्तर्यामी की तरह; अँ मरुङ्कुम् उलावितान्–सब स्थानों में घूमा; पुळ् उरैयुम्–जहाँ पक्षी रहे; मानत्तै–एक चैत्य को; उरु नोक्कि–ध्यान से देखकर; पुरम् पेर्वान्–बाहर जो आया; कळ् उरैयुम्–शहद जहाँ था; नरुम् चोलै ओन्रु–ऐसे सुगन्धपूर्ण एक उद्यान को; अयल्–पास में; कण् उट्रान्–(उसने) देखा। ३२९

वह अन्तर्यामी श्रीराम के समान तिल रखने का उतना स्थान भी नहीं छोड़कर सर्वत्र घूमकर आया। फिर एक चैत्य में गया जिसके गुम्बज में पक्षी रहते थे और उसे ध्यान से देखने के बाद बाहर गया। वहाँ उसके पास उसने एक उपवन को देखा, जो शहद और सुबास से भरा था। ३२९

3. काट्चिप् पडलम् (सीता-दर्शन पटल)

माडु निन्ट्रवम् मणिमलर्च् चोलैयै मरुवित्
तेडि यिव्वऴिक् काण्बॅनेर् डीरुमॅन् शिरुमै
ऊडु कण्डिलॅ नॅन्ट्रपि नुरियदौन् ट्रिल्लै
वीडु वॅन्मरुऴिव् विलङ्गत्मे लिलङ्गैयै वीट्टि 330

माटु निन्ट्र–पार्श्व में स्थित; अ मणि मलर् चोलैयै–उस सुन्दर पुष्पोद्यान को; मरुवि–जाकर; इ वऴि तेटि–यहाँ खोजकर; काण्पॅनेल्–देखूँगा तो; अँन् चिरुमै–मेरा दुःख; तीरुम्–दूर होगा; ऊटु–उसके अन्दर; कण्टिलॅन् अँन्रु पिन्–नहीं देख पाया तो फिर; इ विलङ्कल् मेल् इलङ्कैयै–इस पर्वत पर की लंका को; वीट्टि–

नाश करके; वीट्टुवॅन्-मैं भी मर जाऊँगा; मऱ्ऱु-और; उरियतु-करने योग्य; ऑन्ऱु-कुछ; इल्लै-नहीं। ३३०

हनुमान (चैत्य के) पास रहे उस वन में गया। उसने सोचा कि मैं यहाँ खोजूँगा। अगर देवी मिल गयीं तो मेरा कष्ट दूर हो जायगा। नहीं तो त्रिकूट पर्वतस्थ इस लंका को मिटाकर मैं भी खुद अपना अन्त कर लूँगा। कोई मेरा दूसरा करने योग्य कार्य नहीं है। ३३०

ॲन्ऱु शोलैपुक् कॅय्दिन निराहवन् ऱूदन्
ऑन्ऱि वानवर् पूमऴै पॊऴिन्दन रुवन्दार्
अन्ऱु वाळरक् कन्शिऱै यव्वऴि वैत्त
तुन्ऱु लोदितन् निलैयिनिच् चॊल्लुवान् ऱुणिन्दाम् 331

ॲन्ऱु-ऐसा निश्चय करके; इराकवन् तूतन्-श्रीराघव का दूत; चोलै पुक्कु-उद्यान में पहुँच; ॲय्तितन्-गया; वानवर्-देव; ऑन्ऱि-जमा होकर; पू मऴै-पुष्पवर्षा; पॊऴिन्तनर्-करके; उवन्तार्-नन्दित हुए; वाळ् अरक्कन्-तलवारधारी राक्षस रावण ने; अन्ऱु-उस दिन; अ वऴि-वहाँ; चिऱै वैत्त-जिनको बन्दी बनाकर रखा था; तुन्ऱु अल् ओति तन्-घने काले केश वाली की; निलै-स्थिति; इनि-अब; चॊल्लुवान् तुणिन्ताम्-कहने को ठाना (हमने)। ३३१

प्रभु श्रीराघव का दूत हनुमान ऐसा सोचकर उस उद्यान में जा पहुँचा। सभी देवों ने मिलकर उस पर फूल बरसाये। और वे हर्षित हुए। हम (कवि) अब उन घने अन्धकार-सम केश वाली सीताजी का हाल बयान करने का साहस करते है, जिन्हें तलवारधारी रावण ने उस उपवन में बन्दी बना के रखा था। (साहस करना पड़ता है इसलिए कि देवी का दुःख असह्य है।)। ३३१

वन्म रुङ्गिल्वा ळरक्कियर् नॅरुक्कवङ् गिरुन्दाळ्
कन्म रुङ्गॅऴुन् दॅन्ऱुमोर् तुळिवरक् काणा
नन्म रुन्दुपो नलनऱ वुणङ्गिय नङ्गै
मॅन्म रुङ्गुल्पोल् वेऱुळ वङ्गमु मॅलिन्दाळ् 332

कल् मरुङ्कु-पत्थर में; ॲऴुन्तु-उगकर; ॲन्ऱुम्-कभी भी; ओर् तुळि-(जल की) एक बूंद भी; वर काणा-आती जो न देखती; नल् मरुन्तु पोल्-उस श्रेष्ठ ओषधि के समान; नलन् अऱ-सुभीते से रहित; उणङ्किय-जो मुरझायी रहीं; नङ्कै-देवी; मॅल् मरुङ्कुल् पोल्-क्षीण कमर के समान; वेऱु उळ अङ्कमुम्-अन्य अंगों में भी; मॅलिन्ताळ्-क्षीणता पाकर; मरुङ्किल्-पास में; वल्-कठोर; वाळ्-तलवारधारिणी; अरक्कियर् नॅरुक्क-राक्षसियों के त्रास देते; अङ्कु इरुन्ताळ्-वहाँ रहीं। ३३२

देवी उस श्रेष्ठ ओषधि के समान मुरझायी हुई थीं, जो पत्थर के

मध्य उगी थी और जिसे जल की एक बूंद भी देखने का भाग्य नहीं हुआ था। विगतसौन्दर्य उन देवी के सारे अंग उनकी ही कमर के समान क्षीण हो गये थे। उनके पास चारों ओर कठोर और तलवारधारिणी निशाचरियाँ रहकर उनको त्रास दे रही थीं। देवी उस स्थिति में पायी गयीं। ३३२

तुयिलॅ नक्कणग ळिमैत्तलु मुहिळ्त्तलुन् दुऱन्दाळ्
वॅयिलि डैत्तन्द विळक्कॅन वॊळियिला मॅय्याळ्
मयिलि यऱ्कुयिल् मळलैयाण् मान्ऱिळम् बेडै
अयिलॅ यिऱुवॅम् बुलिक्कुळात् तहप्पट्ट दन्नाळ् 333

तुयिल् ऍन्न–नींद के नाम पर; कण्कळ् इमैत्तलुम्–पलक उठाना और; मुकिळ्त्तलुम्–बन्द करना; तुऱन्ताळ्–जिन्होंने छोड़ दिया था; वॅयिल् इटै–धूप में; तन्त विळक्कु ऍन्न–रखे हुए दीप के समान; ऒळि इला मॅय्याळ्–निष्प्रभ शरीर वाली; मयिल् इयल्–मयूराभा; कुयिल् मळलैयाळ्–कोकिल-मधुरभाषिणी; इळम् मान् पेटै–बाल-हरिणी; अयिल् ऍयिऱु–तीक्ष्ण दाँत वाले; वॅम् पुलि कुळात्तु–भयंकर व्याघ्रों के झुण्ड में; अकप्पट्टतु अन्नाळ्–फँस गयी हो, ऐसी स्थिति में रहीं। ३३३

देवी ने नींद के नाम पर पलकें बन्द करना और खोलना छोड़ दिया था। वे आतप-मध्य दीप के समान निष्प्रभ-शरीर थीं। मयूर-सम सुन्दरी और कोकिल-सम मधुर-वाणी देवी उस बाल-हरिणी के समान लग रही थीं, जो तीक्ष्ण दाँत वाले क्रूर व्याघ्रों के झुण्ड के मध्य फँस गयी हो। ३३३

विळुदल् विम्मुदन् मॅय्युऱ वॅदुम्बुदल् वॅरुवा
ऍळुद लेङ्गुद लिरङ्गुद लिरामनै यॆण्णित्
तॊळुदल् शोरुद ऱुळङ्गुद ऱुयरुळन् दुयिर्त्तल्
अळुद लन्ऱिमऱ् ऱयलॊन्ऱुञ् जॅय्हुव दऱियाळ् 334

विळुतल्–गिरना; विम्मुतल्–सिसकना; मॅय्–शरीर का; उऱ वॅतुम्पुतल्–बहुत तप्त होना; वॅरुवा–डरकर; ऍळुतल्–उठना; एङ्कुतल्–तरसना; इरङ्कुतल्–रोना; इरामनै ऍण्णि–श्रीराम का स्मरण करके; तॊळुतल्–नमस्कार करना; चोरुतल्–शिथिल पड़ना; तुळङ्कुतल्–काँपना; तुयर् उळन्तु–दुःखपीड़ित हो; उयिर्त्तल्–निःश्वास छोड़ना; अळुतल्–मुख खोलकर रोना; अन्ऱि–अलावा; मऱ्ऱु अयल् ऒन्ऱुम्–अन्य कोई काम; चॅय्कुवतु अऱियाळ्–करना नहीं जानतीं। ३३४

नीचे गिरना, सिसक-सिसककर रोना, शरीर का तप्त होना, डरकर फिर उठना, तरसना, दुःखी होकर रोना, श्रीराम का स्मरण करके नमस्कार करना, शिथिल पड़ना, काँपना, वेदना-विदग्ध हो निःश्वास छोड़ना, फूट-फूटकर रोना —इनको छोड़कर वे और कोई काम ही नहीं जानती हों, ऐसा व्यवहार कर रही थीं। ३३४

तऴैत्त पॊन्मुलैत् तडङ्गडन् दरुविपोऱ् ऱाऴ्प्
पुऴैत्त पोलनीर् निरन्दरम् बॊऴिहिन्ऱ पॊलिवाल्
इऴैक्कु नुण्णिय मरुङ्गुला ळिणनॆडुङ् गण्गळ्
मऴैक्क णॆन्बदु कारणक् कुऱियिन्नाल् वहुत्ताळ् 335

इऴैक्कुम् नुण्णिय–सूत्र से भी महीन; मरुङ्कुलाळ्–कमर वाली; नीर्–(अश्रु) जल; पुऴैत्त पोल–छेदकर जाता हो जैसे; तऴैत्तत–पुष्ट; पॊन् मुलै तटम्–स्वर्ण-स्तन-तट; कटन्तु–पार कर; अरुवि पोल्–सरिता के समान; ताऴ–नीचे की ओर बहता है; निरन्तरम्–निरन्तर; पॊऴिकिन्ऱ–गिरता रहता है जो; पॊलिवाल्–उस दृश्य से; इणै नॆटुम् कण्कळ्–आयत अक्षद्वय को; मऴैक्कण् ऎन्पतु–'बरसाती आँखें' की उपाधि के; कारणक् कुऱियिताल्–हेतुबोधक नाम के अनुकूल; वकुत्ताळ्–(देवी ने) बना लिया था। ३३५

सूत्र से भी क्षीण कटि वाली देवी का अश्रुजल स्तन-तटों पर छेदते-से गिरकर सरिता के समान वहा। उस दृश्य से "वरसाती आँखें" का नाम उनकी आँखों के लिए सार्थक साबित हो रहा था। "वरसाती आँखें या मेघ-सदृश आँखें" इस अर्थ में कही जाती हैं— 'कृपा वरसानेवाली शीतल आँखें'। इधर वरसात के समान आँसू वहता था। अतः यह नाम सार्थक बन गया। ३३५

❀ अरिय मञ्जिनो डञ्जन मिवैमुद लदिहम्
करिय काण्डलुङ् गण्णिन्नीर् कडल्पुहक् कलुऴ्वाळ्
उरिय कादल रॊरुवरो डॊरुवरै युलहिल्
पिरिवॆ नुन्दुय रुरुवुहॊण् डालन्न पिणियाळ् 336

अरिय मञ्चितोटु–अपूर्व मेघों के साथ; अञ्चतम् मुतल्–अंजन आदि; इवै अतिकम् करिय–ऐसे अधिक काले पदार्थों को; काण्टलुम्–देखने पर; कण्णिन् नीर्–आँखों के अश्रु; कटल् पुक–सागर मे प्रवेश कर जायें ऐसा (इतना); कलुऴ्वाळ्–दुःख करती रोतीं; उलकिन्–इस संसार में; उरिय कातलर् ऑरुवरोटु ऑरुवरै–प्रणय-बद्ध प्रेमी एक-दूसरे से; पिरिवु ऎंतम् तुयर्–वियोगजन्य दुःख (ने); उरुवु कॊण्टाल् अन्न–मानो रूप धरा हो ऐसा; पिणियाळ्–रोगपीड़ित लगीं। ३३६

सीताजी काले मेघों, अंजन आदि को देखतीं तो उनको श्रीराम का स्मरण हो आता। तब उनकी आँखों से आँसू जो बहता वह समुद्र में जाकर मिले इतना अधिक होता। देवी परस्पर वशवर्ती सच्चे प्रेमी-युगलों के वियोग-दु.ख के साकार रोग के समान लग रही थीं। ३३६

तुप्पि नाऱ्चॆय्द कैयॊडु काल्पॆऱ्ऱ तुळिमञ्
जॊप्पि नान्ऱनै निनैतॊऱुम् नॆडुङ्गण्ग ळुहुत्त
अप्पि नालनैन् दरुन्दुय रुयिर्प्पुडै याक्कै
वॆप्पि नाऱ्पुलर्न् दॊरुनिलै युऱादमॆन् ऱुहिलाळ् 337

तुप्पित्ताल् चॅय्त–प्रवाल के बने; कैयोटु काल् पॅऱ्ऱ–हाथों के साथ पैर पाये हुए; तुळि मऴ्चु–जलकण बरसानेवाले मेघों के; ऑप्पित्तान् तनै–समान रहनेवाले श्रीराम को; नितै तॉऱुम्–जब-जब स्मरण करतीं; नॅटुम् कण्कळ्–दीर्घ आँखों ने; उकुत्त–जो आँसू गिराये; अप्पित्ताल्–उस जल से; ननैन्तु–भीगकर; अरुम् तुयर्–कठोर दुःख के कारण; उयिर्प्पु उटै याक्कै–निःश्वास छोड़नेवाले शरीर के; वॅप्पित्ताल्–ताप से; पुलर्न्तु–सूखकर; ओरु निलै उऱात–एक स्थिति में जो नहीं रहा; मॅन्न् तुकिलाळ्–वैसे महीन वस्त्रावृता। ३३७

जब कभी वे विद्रुमनिर्मित चरणों और हस्तों-सहित मेघ के समान शोभनेवाले श्रीराम का स्मरण करतीं तब उनकी आँखों से जल बहता। उस जल से उनका महीन वस्त्र भीग जाता। फिर गरम निःश्वास छोड़नेवाली उनके शरीर का ताप उस वस्त्र को सुखा देता। इस तरह वे ऐसे महीन वस्त्र से आवृत थीं, जो एक स्थिति में नहीं रह पाता था। ३३७

❀ अरिदु पोहवो विदिवलि कडत्तलॅन् ऱञ्जिप्
परिदि वात्तवन् कुलत्तैयुम् बऴियैयुम् बाराच्
चुरुदि नायहन् वरुम्वरु मॅन्बदोर् तुणिवाल्
करुदि मादिर मनैत्तैयु मळक्किन्ऱ कण्णाळ् 338

विदिवलि कटत्तल्–विधि के बल को परास्त करना; पोकवो अरितु–अगम है; ॲन्ऱु–ऐसा; अञ्चि–डरकर; चुरुति नायकन्–वेदनायक; परिति वात्तवन् कुलत्तैयुम्–सूर्यकुल का और; पऴियैयुम्–उस पर (अपने कारण) लगे कलंक का; पारा–विचार करके; वरुम् वरुम्–आयेंगे, आयेंगे; ॲन्पतोर् तुणिवाल्–ऐसे एक निश्चय से; करुति–सोचकर; मातिरम् अनैत्तैयुम्–सारी दिशाओं को; अळक्किन्ऱ कण्णाळ्–नाप रही आँखों वाली। ३३८

वे दिशा-दिशा में दृष्टि डालकर श्रीराम के आने की बाट जोह रही थीं। उनका विचार था कि वेदनायक श्रीराम अवार्य विधि-बल को मानकर अपने सूर्यकुल के अपयश को दूर करने हेतु अवश्य और शीघ्र आ जायेंगे। ३३८

कमैयि ऩाडिरु मुहत्तयऱ् कदुप्पुऱ्क् कदुविच्
चुमैयु डैक्कऱ्ऱै निलत्तिडैक् किडन्दतू मदियै
अमैय वायिऱ्पॅय् दुमिऴ्हिन्ऱ वयिलॅयिऱ् ऱरविल्
कुमैयु ऱत्तिरण् डॉरुशडै याहिय कुऴलाळ् 339

कमैयित्ताळ्–क्षमाशालिनी के; तिरुमुकत्तु अयल्–श्रीमुख के दोनों ओर; कतुप्पु उऱ्–गालों पर लगे; कतुवि–पकड़कर; चुमै उटै–भारी; कऱ्ऱै–केश-लटों की राशि; निलत्तु इटै किटन्त–भूमि पर रहे; तू मतियै–पवित्र पूर्णचन्द्र को; अमैय–खब लगे; वायिल् पॅय्तु–मुख में निगलकर; उमिऴ्किन्ऱ–जो उगलता है; अयिल्

ॲयिऱ्ऱु—उस तीक्ष्णदाँत; अरविल्–(राहु) सर्प के समान; कुमै उऱ–पुष्ट; तिरण्टु–मिलकर; ऑरु चटै आकिय–एक ही जटा जो बने थे; कुऴलाळ्–वैसे केश वाली। ३३९

क्षमाशीला श्री सीतादेवी के मुख के पार्श्व में भारी केशों की लटें मानो उनके गालों को ग्रसे हुए थीं। वे बटकर जटा की एक लड़ी बनी हुई थीं। उसे देखकर ऐसा लगा मानो तीक्ष्ण दाँत वाला राहु सर्प भूमि पर रहे अकलंक चन्द्र को निगलकर फिर उगल रहा हो! । ३३९

आवि यन्दुहिल् पुनैवदॊन् ऱन्ऱिवे ऱऱियाळ्
तूवि यन्नमॆन् पुनलिडैत् तोय्हिला मॆय्याळ्
तेवु तॆण्कड लमिऴ्दुहॊण् डनङ्गवेळ् शॆय्द
ओवि यम्बुहै युण्डदे यॊक्कितॣ वुरुवाळ् 340

आवि अम् तुकिल्–प्राण-सम श्रेष्ठ वस्त्र; पुनैवतु ऑन्ऱु अन्ऱि–जो पहना है उस एक को छोड़; वेऱु अऱियाळ्–दूसरा नहीं जानतीं; तूवि अन्न–परों के समान; मॆन् पुनलिटै–स्वच्छ जल में; तोय्किला–जो नहीं डूबा; मॆय्याळ्–वैसे शरीर वाली; तेवु तॆण् कटल्–दिव्य स्वच्छ क्षीरसागर से सम्भूत; अमिऴ्तु कॊण्टु–अमृत लेकर; अनङ्क वेळ् चॆय्त–अनंगदेव द्वारा निर्मित; ओवियम्–चित्र; पुकै उण्टते ऑक्कितॣ–धूमाच्छन्न हो गया हो जैसे; उरुवाळ्–आकार वाली। ३४०

सीताजी के पास एक ही वस्त्र था, जो पवित्र और शरीर के लिए प्राण-सम था। उनका शरीर (काग-) पर के समान स्वच्छ जल में स्नान किया हुआ नहीं था। उनका रूप-रंग ऐसा था मानो दिव्य स्वच्छ क्षीरसागर से उत्पन्न अमृत का मन्मथ द्वारा निर्मित चित्र धूमिल पड़ा हुआ हो। ३४०

❀ कण्डि लन्गॊला मिऴवलुङ् गनैहड ऩडुवण्
उण्डि लङ्गैयॆन् ऱुणर्न्दिल रुलहॆला मॊऱुप्पान्
कॊण्डि ऱन्दमै यऱिन्दिल रामॆनक् कुऴैयाप्
पुण्डि ऱन्ददि ऩॆरिनुऴैन् दालॆनप् पुहैवाळ् 341

इळवलुम्–लघुराज ने भी; कण्टिलन् कॊल्–(श्रीराम को) नहीं देखा है क्या शायद; कनैकटल् नटुवण्–गरजनेवाले सागर-मध्य; इलङ्कै उण्टु–लंका है; ऎन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तिलर् आम्–नहीं जाना है; उलकु ऎलाम्–सारे लोकों को; ऑऱुप्पान्–त्रस्त करनेवाला रावण; कॊण्टु इऱन्तमै–लाया यह बात; अऱिन्तिलर् आम्–नहीं जानते; ऎन–यह सोचकर; कुऴैया–दुःख कर; पुण् तिऱन्ततिल्–खुले व्रण में; ऎरि नुऴैन्ताल् ऎन–आग घुसी हो जैसे; पुकैवाळ्–वेदनायुक्त हुईं। ३४१

सीताजी सोचने लगीं। शायद देवर लक्ष्मण ने मेरे नाथ को नहीं देखा क्या? शायद दोनों गरजते सागर-मध्य रहनेवाली लंका की बात नहीं जानते। लोकनिकायत्रासक रावण के मुझे हर ले आने की बात शायद

नहीं जानते ! ऐसी बात सोचती हुई वह इस तरह वेदनाविद्ध हुईं मानो खुले व्रण में आग घुस गयी हो। ३४१

❀ माण्डु पोयिन नॅरुवैयरक् करशन्मर् ऱवरो
डाण्डै यॅन्निलै युरैप्पव रिल्लैयिप् पिऱप्पिल्
काण्ड लोवरि दॅन्ऱुळम् विम्मुरुङ् गलङ्गुम्
मीण्डु मीण्डुपुक् कॅरिनुळैन् दालॅन मॅलिवाळ् 342

ऍरुवैयर्क्कु अरचन्–गीधों के राजा; माण्टु पोयिनन्–मर गये शायद; अवरोटु–श्रीराम के पास; ऍन् निलै–मेरी स्थिति; आण्टै–वहाँ; उरैप्पवर् इल्लै–कहनेवाले नहीं रहे; इप्पिऱप्पिल्–इस जन्म में; काण्टलो अरितु–दर्शन दुर्लभ है; ऍन्ऱु–कहती हुई; उळम् विम्मुरुम्–चिन्ता से भर जातीं; कलङ्कुम्–व्याकुल बनतीं; मीण्टुम् मीण्टुम्–फिर-फिर; ऍरि पुक्कु नुळैन्ताल् ऍन्न–आग (व्रण में) घुस गयी हो जैसे; मॅलिवाळ्–दुर्बल पड़तीं। ३४२

गीधों के राजा जटायु भी मर गये शायद ! उनके सिवा उधर कोई नहीं हैं, जो मेरे पति से मेरा हाल कहे। इसलिए इस जन्म में फिर उनसे मिलना असम्भव हो गया। यह सोचकर वे पीड़ा से भर जातीं। उनका मन आकुलित हो जाता। फिर-फिर आग घुस रही हो, ऐसा वे दुर्बल पड़ती जातीं। ३४२

ऍन्नै नायह निळवलै यॅण्णिला विनैयेन्
शॊन्न वार्त्तैकेट् टऱिविल ळॅनत्तुऱन् दानो
मुन्नै यूळ्विनै मुडिन्ददो वॅन्ऱॅन्ऱु मुऱैयाल्
पन्नि वाय्पुलर्न् दुणर्वुतेय्न् दारुयिर् पदैप्पाळ् 343

ऍण् इला विनैयेन्–अगणित पापकर्म जो कर चुकी उस मैंने; इळवलै चॊन्न–लघु भाई के प्रति जो कहे; वार्त्तै केट्टु–वे वचन सुनकर; नायकन्–मेरे नाथ; ऍन्नै–मुझे; अऱिवु इलळ्–बुद्धिहीन; ऍन–समझकर; तुऱन्तानो–छोड़ गये क्या; मुन्नै ऊळ्विनै–मेरे पूर्वकर्मों का; मुटिन्ततो–फल मिला है क्या; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा; मुऱैयाल्–क्रम से; पन्नि–कहकर; वाय् पुलर्न्तु–मुख सूखा; उणर्वु तेय्न्तु–सुध क्षीण हुई; आरुयिर् पतैप्पाळ्–प्राण छटपटाने लगे ऐसा, तड़प रही थीं। ३४३

मैं बड़ी पापिनी हूँ, जिसने असंख्यक पाप किये हैं। मैंने देवर से कुवचन कहे। शायद मेरे पति ने वह बात सुनकर मुझे मूर्ख समझकर त्याग दिया है क्या ? मेरे पूर्वजन्म के पाप ने अब फल दे दिया क्या ? वे क्रम से ऐसे विचार प्रकट करती हुई सूखते मुख और क्षीण होती सुध लेकर विकलप्राण हो रही थीं। ३४३

अरुन्दुम् मॆल्लड हारिड वरुन्दुमॆन् ऱळुङ्गुम्
विरुन्दु कण्डपो दॆन्नुरु मोवॆन्ऱु विम्मुम्

मरुन्दु मुण्डुकॊल् यान्कॊण्ड नोय्क्कॆन्ऱु मयङ्गुम्
इरुन्द मानिलज् जॆल्लरित् तॆऴवुमाण् डॆऴादाऴ् 344

इरुन्त मानिलम्–जहाँ बैठी थीं उस स्थान को; चॆल् अरित्तु ऎऴवुम्–दीमकों ने खोखला बनाकर बिल बना लिया; आण्टु ऎऴाताऴ्–तो भी वे वहाँ से नहीं उठीं; अरुन्तुम् मॆल् अटकु–भोग्य नरम भोजन को; आर्–कौन; इट–(पत्तल पर) परोसे और; अरुन्तुम्–श्रीराम खाएँ; ऎन्ऱु अऴुङ्कुम्–कहकर रोतीं; विरुन्तु कण्ट पोतु–अतिथि के आने पर; ऎन् उऱुमो–क्या करेंगे; ऎन्ऱु–ऐसा सोचकर; विम्मुम्–दुःख से भर जातीं; यान् कॊण्ट नोय्क्कु–मेरे प्राप्त रोग का; मरुन्तुम् उण्टु कॊल्–औषध भी है क्या; ऎन्ऱु–यह सोचकर; मयङ्कुम्–बेहोश हो जातीं। ३४४

सीताजी जहाँ बैठी थीं, वहाँ दीमकों ने मिट्टी काटकर बाँबी बनायी थीं तो भी वे वहाँ से नहीं उठी। वे इस प्रश्न को लेकर चिंतित थीं कि श्रीराम पत्तल पर किसके द्वारा परोसा भोजन खायँगे ? कोई अतिथि आया तो कितने दुःखी होंगे ? यह कहते हुए वे अकुलाहट से भर गयीं। 'मेरे दुःख-रोग की कोई दवा भी होगी क्या ?' —इस विचार पर वे सुध-बुध खो जातीं। ३४४

वन्गण् वञ्जनै यरक्करित् तुणैप्पहल् वैयार्
तिन्ब रॆन्निनिच् चॆयत्तक्क दॆन्ऱुदीर्न् दात्तो
तन्गु लप्पॊऱै तन्बॊऱै यॆनत्तणिन् दात्तो
ऎन्गॊ लॆण्णुव दॆन्नुमङ् गिराप्पह लिल्लाऴ् 345

अङ्कु–वहाँ; इरा पकल् इल्लाऴ्–रात-दिन का भेद जो नहीं करती थीं; वन्कण्–क्रूर; वञ्चनै–वंचक; अरक्कर्–राक्षस; इत्तुणै पकल्–इतने दिन; वैयार्–जीवित नहीं छोड़ेंगे; तिन्पर्–खा लेंगे; ऎन् इति चॆयत्तक्कतु–अब क्या करने को है; ऎन्ऱु तीर्न्तात्तो–ऐसा सोचकर विरत हो गये है क्या; तन् कुलप्पॊऱै–अपने कुल की स्वाभाविक क्षमाशीलता को; तन् पॊऱै ऎन–अपनी क्षमाशीलता बनाकर; तणिन्तात्तो–कोप छोड़ शान्त हो गये क्या; ऎन् कॊल् ऎण्णुवतु–मैं क्या सोचूँ; ऎन्नुम्–ऐसा सोचकर दुःखी होती। ३४५

सीताजी दिन और रात में कोई भेद किये विना सदा रोती रहीं। वे सोचती— क्रूर और ठग राक्षस लोग सीता को उतने दिन जीवित नहीं छोड़ेंगे। उसे मारकर खा लेंगे अवश्य। अब क्या करने को है मेरे पास —ऐसा सोचकर श्रीराम ने मुझे त्याग दिया क्या ? या अपने कुल के भूषण-रूप क्षमा को अपनाकर रोष को त्याग दिया है ? क्या सोचूँ ? वे ऐसा-ऐसा सोचती हुई दुःख-मग्न हो रही थीं। ३४५

पॆऱ्ऱ तायरुन् दम्बियुम् बॆयर्त्तुम्वन् दॆय्दिक्
कॊऱ्ऱ मानहर्क् कॊण्डॆऴुन् दार्हळो कुऱित्तुच्

चोऱ्ऱ वाण्डॆला मुऱैन्दत्ऱि यन्नहर्त् तुन्नान्
उऱ्ऱ दुण्डॆन्नाप् पडरुळन् दुऱादन वुऱुवाळ् 346

पॆऱ्ऱ तायरुम्–जननी माताएँ; तम्पियुम्–छोटे भाई भरत; पॆयर्त्तुम् वन्तु ऎय्ति–फिरकर आ पहुँचकर; कॊऱ्ऱ मा नकर् कॊण्टु–विजयी नगर को लेकर; ऎळुन्तार्कळो–गये हैं क्या; कुऱित्तु चॊऱ्ऱ–निर्धारित कर कहे हुए; आण्टु ऎलाम्–पूरे वर्ष; उऱैन्तु अन्ऱि–(जंगल में) रहे बिना; अ नकर् तुन्नान्–उस नगर को नहीं जायँगे; उऱ्ऱतु उण्टु–(इसलिए) कुछ आफ़त होगी; ऎन्ना–ऐसा विचार करके; पटर् उळन्तु–दुःख में पड़कर; उऱातन–अभूतपूर्व; उऱुवाळ्–कष्ट से पीड़ित हुईं। ३४६

उधेड़बुन में लगकर वे आगे सोचतीं कि क्या उनकी जननी माताएँ और अनुज भरत फिर से वहाँ आकर उन्हें विजयशील बड़े नगर अयोध्या लिवा ले गये हैं ? पर श्रीराम तो अवधि पूरा होते तक अयोध्या नहीं लौटेंगे। तब इसलिए लगता है कि कुछ (अनिष्ट) हो अवश्य गया है। इस विचार के आते ही वे बहुत उद्विग्न हो गयीं और उन्हें अभूतपूर्व दुःख सताने लगा। ३४६

मुरन् तत्तहु मॊय्म्बिन्नोर् मुन्बॊरु दवर्पोल्
वरनुम् मायमुम् वञ्जमुम् वरम्बिल वल्लार्
पॊरनि हळ्न्ददोर् पूशलुण् डामॆनप् पॊरुमाक्
करनॆ दिर्न्ददु कण्डन्न ळामॆन्नक् कवल्वाळ् 347

मुरन् ऎन्तत्तकुम्–मुर आदि; मॊय्म्पित्तोर्–सबल; मुन् पॊरुतवर् पोल्–पहले श्रीविष्णु से जो लड़े उनके समान; वरम्पु इल वरनुम्–असीम वर-प्राप्त; मायमुम् वञ्चमुम्–माया और वञ्चना में; वल्लार्–समर्थ; पॊर–लड़ने आए हों; निकळ्न्ततोर् पूचल् उण्टाम्–और युद्ध हुआ हो; ऎन्न–सोचकर; पॊरुमा–दुःखी होकर; करन् ऎतिर्न्ततु–खर ने जो सामना किया; कण्टन्नळ् आम् ऎन्न–उसको (फिर से) प्रत्यक्ष मानो देखतीं; कवल्वाळ्–वैसे पीड़ित होतीं। ३४७

'मुर' नामक राक्षस आदि अनेक बलवानों ने जैसे (श्रीविष्णु से) युद्ध किया था वैसे अगाध वर, माया और वंचना के धनी राक्षस आकर भिड़ गये हैं; इसलिए घमासान युद्ध हो गया है ! यह सन्देह मन में उठा तो वे ऐसे उद्विग्न हुईं, मानो अभी खर के साथ हुए युद्ध को फिर से देख रही हों। ३४७

❀तॆम्म डङ्गिय शेणिलङ् गेहयर्, तम्म डन्दॆनिन् ऱम्बिय दामॆन
मुम्म डङ्गु पॊलिन्द मुहत्तिनन्, वॆम्म डङ्गलै युन्नि वॆदुम्बुवाळ् 348

केकयर् तम् मटन्तै–केकयपुत्री ने; तॆम् मटक्किय–शत्रु जिसको देखकर फिरकर भाग जाएँ वह; चेण् निलम्–श्रेष्ठ (कोसल) देश; निन् तम्पियतु आम्–तुम्हारे भाई का होगा; ऎन्न–कहा तो; मु मटङ्कु–तिगुना; पॊलिन्त मुकत्तिनन्–शोभायमान

मुख जिनका बना उन; वॅम् मटङ्कलै–बहादुर सिंह (श्रीराम) को; उऩ्ऩि–स्मरण करके; वॅतुम्पुवाळ्–मुरझा जातीं। ३४८

केकयराजकुमारी (कैकेयी) ने जब कहा कि यह कोसल देश, जिससे शत्रु लोग डर से मुड़कर भाग जाते हैं, तुम्हारे भाई का होगा तब श्रीराम का श्रीमुख तिगुना शोभायमान हुआ। ऐसे सबल केसरी का स्मरण करके वे मुरझायीं। ३४८

ॐ मॅय्त्ति रुप्पद मेवॅन्ऱ पोदिनुम्, इत्ति रुत्तुऱन् देहॅन्ऱ पोदिनुम्
शित्ति रत्तित्त लरन्दशॅन् दामरै, ऑत्ति रुन्दमु हत्तिऩै युऩ्ऩुवाळ् 349

मॅय् तिरुप्पतम्–अक्षय श्रीमन्त राजा के पद को; मेवु ऍन्ऱ पोतिऩुम्–ले लो, कहने पर भी; इ तिरु–यह श्री; तुऱन्तु–छोड़कर; एकु–जाओ; ऍन्ऱ पोतिऩुम्–यह कहते समय भी; चित्तिरत्तिऩ् अलर्न्त–चित्र में के खिले; चॅन्तामरै–लाल कमल की; ऑत्तिरुन्त–समानता करनेवाले; मुकत्तिऩै–मुख की सुन्दरता को; उऩ्ऩुवाळ्–बार-बार स्मरण करतीं। ३४६

जब उनसे कहा गया कि सच्ची राज्यश्री को तुम अपना लो; या यह कहा गया कि इस श्री को त्यागकर चले जाओ, दोनों हालतों में चित्रलिखित सुन्दर कमल के समान उनका श्रीमुख खिला ही था। उस श्रीमुख की सुन्दरता का स्मरण करके उनका मन कचोट उठा। ३४९

तेङ्गु कङ्गैत् तिरुमुडिच् चॅङ्गणाऩ्, वाङ्गु कोल वडवरै वार्शिलै
एङ्गु मात्तिरत् तिऱ्ऱिरण् डाय्विऴ़, वीङ्गु तोळै निऩैत्तु मॅलिन्दुळाळ् 350

कङ्कै तेङ्कु–गंगा जिस पर ठहरी हैं; तिरुमुटि–ऐसी जटाधारी और; चॅङ्कणाऩ्–अरुणाक्ष शिवजी के; वाङ्कु कोल–झुके हुए सुन्दर; वटवरै वार् चिलै–उत्तर के मेरुपर्वत के समान लम्बे धनुष को; एङ्कु मात्तिरत्तु–जब जनक आदि संशय करके दुःखी हो रहे थे तब; इऱ्ऱु इरण्टाय् विऴ़–टूटकर दो टुकड़े बनकर गिरे तब; वीङ्कु तोळै–जो कन्धे वर्धित हुए उन कन्धों को; निऩैन्तु–सोचकर; मॅलिन्तुळाळ्–दुबली-पतली हुई थीं। ३५०

गंगाधारी जटाजूट वाले और अरुणाक्ष शिवजी के झुके हुए उत्तर के मेरु-समान रहे धनु को क्या कोई उठा सकेगा ? इस सन्देह में जब जनक आदि पड़कर चिन्तित रहे, तब जिन भुजाओं ने उसे दो टुकड़े बनाते हुए तोड़ दिया उन फूले कन्धों का स्मरण करके वे दुर्बल हो गयी थीं। ३५०

इन्ऩ लम्बर वेन्दऱ् कियऱ्ऱिय
पन्ऩ लम्बदि ऩालायि रम्बडै
कन्ऩन् मून्ऱिऱ् कळप्पडक् काल्वळै
विन्ऩ लम्बुहऴ़्न् देङ्गि वॅदुम्बुवाळ् 351

अम्पर वेन्तऱ्कु–देवराज को; इन्ऩल् इयऱ्ऱिय–जिन्होंने त्रास दिया; पल्

नलम्–उन अनेक विशेषताओं से युक्त; पतितालायिरम् पटै–चौदह सहस्र सेनाओं को; कन्नल् मून्रिल्–तीन (घड़ियों) 'नाळियों' के अन्दर; कळप्पट–खेल रहे ऐसा; काल् वळै–पार्श्वों में झुके; विल् नलम्–धनु के युद्ध की कुशलता की; पुकळ्नतु–प्रशंसा करते हुए; एङ्कि–तरसकर; वॅतुमपुवाळ्–मुरझायीं । ३५१

सीताजी ने श्रीराम के खर-दूषण आदि के साथ युद्ध का स्मरण किया । उनका धनुष— जिसने देवेन्द्र को भी त्रास देनेवाली और विशेष रूप से विविध गुणों से युक्त चौदह सहस्र सेनाओं का एक ही मुहूर्त में नाश किया । वे उसकी प्रशंसा करतीं और तरसतीं और मुरझा जातीं । ३५१

***आळ नोर्क्कङ्गै यम्बि कडाविय, एळै वेडनुक् कॅम्बिनिन् उम्बिनी**
तोळन् मङ्गै कॉळुन्दि यॅनच्चॊन्न, वाळि नण्बिनै युन्नि मयङ्गुवाळ् 352

आळम् नीर् कङ्कै–गहरे जल की गंगा पर; अमृपि कटाविय–नावें चलानेवाले; एळै वेटनुक्कु–साधारण निषाद से; ॲम्पि–मेरा छोटा भाई; निन् तम्पि–तुम्हारा छोटा भाई है; नी तोळन्–तुम मेरे मित्र हो; मङ्कै–यह देवी; कॊळुन्ति–तुम्हारी भाभी है; ॲन चॊन्न–ऐसा जो कहा; नण्पिनै–उस मित्रता को; उन्नि–सोचकर; मयङ्कुवाळ्–दुःख-विह्वल होतीं । ३५२

(सीताजी ने प्रभु की शक्ति का स्मरण किया । अब वे शील व सौलभ्य गुण का स्मरण करती हैं ।) गहरी गंगा नदी पर नाव चलानेवाला था गरीब निषाद गुह । श्रीराम ने उससे कहा कि यह जो मेरा छोटा भाई लक्ष्मण है, वह तुम्हारा छोटा भाई है । तुम मेरे मित्र हो । यह देवी तुम्हारी भाभी है । उस मित्रता का स्मरण करके सीताजी व्याकुल हुईं । ३५२

मॅय्त्त तादै विरुप्पिन नीट्टिय, कैत्त लङ्गळैक् कैहळि नीक्किवे
उय्त्त पोदु तरुप्पैयि लॊण्पदम्, वैत्त वैदिहच् चॅय्है मनक्कॊळ्वाळ् 353

मॅय्त्तत तातै–सत्यज्ञानी जनक के; विरुप्पितन्–चाह के साथ; नीट्टिय कै तलङ्कळै–बढ़ाये (सीता के) करतलों को; कैकळिन् नीक्कि–उनके करों से अलग करके; वेरु उय्त्त पोतु–दूसरे स्थान पर जब (उन्हें) रखा तब; तरुप्पैयिल्–दर्भ पर; ऑळ् पतम् वैत्त–उज्ज्वल उनके चरण को जो पकड़कर रखा; वैतिक चॅय्कै–उस वैदिक-क्रिया को; मनक्कॊळ्वाळ्–मन में लातीं । ३५३

(अब वे अपने विवाह के समय हुए रस्मों का स्मरण करती हैं ।) विवाह के अवसर पर सत्यज्ञ जनक ने बड़ी ही उत्कंठा तथा प्यार के साथ सीताजी के हाथों को अपने हाथों में ले उनको आगे किया । श्रीराम ने जनक के हाथों को दूर कर सीताजी के करतलों को ग्रहण कर लिया । फिर सीता के दक्षिण चरण को पकड़कर सिल पर रखे दर्भ पर रखवाया ।

(यह रस्म सप्तपदी कहाता है।) उस वैदिक अनुष्ठान का अव सीताजी ने स्मरण किया। ३५३

❀ उरङ्गॉ डेमलर्च् चॅन्ऩि युरिमैशाल्
वरङ्गॉळ् पॉन्ऩ्मुडि तम्वि वन्ऩैन्दिलन्
तिरङ्गु शॅञ्जडै कट्टिय शॅय्विन्ऩैक्
किरङ्गि येङ्गिय दॅण्णि यिरङ्गुवाळ् 354

तम्पि–भाई भरत ने; उरिमै चाल्–अपने हक़ में आये; वरम् कॉळ्–वर द्वारा प्राप्त; उरम् कॉळ् पॉन्ऩ् मुटि–सारयुक्त स्वर्णकिरीट को; ते मलर्–सुन्दर पुष्पों से अलंकृत; चॅन्ऩि–सिर पर; वन्ऩैन्तिलन्–धारण नहीं किया; तिरङ्कु–वटी हुई; चॅञ्चटै कट्टिय–श्रेष्ठ जटा जो वना ली; चॅय् विन्ऩैक्कु–उस कृत्य पर; इरङ्कि–दुःखी होकर; एङ्कियतु–श्रीराम जो व्याकुल हुए; ऍण्णि–वह सोचकर; इरङ्कुवाळ्–व्यग्र होतीं। ३५४

उनके भाई भरत ने वर द्वारा प्राप्त अधिकार होते हुए भी श्रेष्ठ स्वर्ण-निर्मित किरीट धारण नहीं किया; वरन् वटी हुई जटा धर ली। यह देखकर श्रीराम अत्यन्त दुःखी हो उठे। प्रभु का वह काम सोचकर देवी व्यग्र हुईं। ३५४

परित्त शॅल्व मॉऴियप् पडरुनाळ्
अरुत्ति वेदियर् कान्गुल मीन्दवन्
करुत्ति ताशै करैयिन्मै कण्डिरै
शिरित्त शॅय्है निनैन्दऴि शिन्दैयाळ् 355

परित्त–जिसका भरण-भार उठा लिया गया; चॅल्वम्–उस राज्यश्री को; ऑऴिय–दूर कर; पटरुम् नाळ्–जव वन को गये उस दिन; अरुत्ति वेतियर्कु–याचक ब्राह्मण को; आन् कुलम् ईन्तु–गोवृन्द दान करके; अवन् करुत्तिन् आचै–उसके मन की इच्छा को; करै इन्मै–अपारता को; कण्ट–देखकर; इऱै चिरित्त चॅय्कै–प्रभु जो थोड़ा हँसे वह कार्य; निनैन्तु–सोचकर; अऴि चिन्तैयाळ्–मरनेवाले मन की वनीं। ३५५

श्रीराम अपने भरण में आये राज्य को त्यागकर जव वनगमन की तैयारी में थे, तव लालसा से भरे (त्रिजट नाम के) ब्राह्मण को गोदान किया। तव उस ब्राह्मण की वड़ी लालसा को देखकर प्रभु को हँसी आ गयी। तव वे किञ्चित हँसे। उस हँसी का स्मरण करके देवी खिन्नमना हुई। (यह समाचार अयोध्याकाण्ड में नहीं कहा गया है। उसके लालच की कल्पित कहानी यों है— उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं अपनी छड़ी फेंकूँगा। वह जहाँ गिरती है वहाँ तक की गायों का समूह मुझे दान में दिये जायँ। श्रीराम ने उसकी आकृति देखकर सोचा कि यह आखिर कितनी दूर

तक फेंकेगा ? पर उस शरीर से दुर्बल ब्राह्मण के लालच का बल इतना था कि छड़ी अप्रतीक्षित दूरी पर जा गिरी। तब श्रीराम मुस्करा उठे।)। ३५५

मऴुवि ऩाऩ्मुऩ् मऩ्ऩरै मूवॅऴु
पॉऴुदु नूऱिप् पुलवुरु पुण्णिनीर्
मुऴुहि ऩाऩ्ऱवम् मॉय्म्बॉडु मूरिविल्
तऴुवु मेऩ्मै निनैन्दुयिर् शाम्बुवाळ् 356

मऴुविऩाऩ्–परशुधर; मऩ्ऩरै–राजाओं को; मुऩ्–पहले; मू ॲऴु पॉऴुतु–तीन के सात (इक्कीस) बार; नूऱि–मारकर; पुलवु उरु–मांसगन्ध; पुण्णिऩ् नीर्–रक्त में; मुऴुकिऩाऩ्–जिसने स्नान किया; तवम्–उसके तप को; मॉय्म्पु ऑटु–उसके बल के साथ; मूरि विल्–सशक्त उसके धनुष को; तऴुवु–हस्तगत कर लेने का; मेऩ्मै निऩैन्तु–श्रेष्ठ सामर्थ्य सोचकर; उयिर् चाम्पुवाळ्–प्राण जिनके क्षीण हो रहे थे, वे। ३५६

सीताजी अपने नाथ की परशुराम-विजय की स्मृति करती हैं। परशुधर ने राजाओं को इक्कीस पीढ़ियों तक लगातार मारकर उनके मांसगन्धयुक्त रक्त में स्नान किया था। श्रीराम का उनके तप के साथ बल और धनु को भी हथिया लेना सोचकर वे क्षीणप्राण हुई। ३५६

एह वाळियव् विन्दिरऩ् शॅम्मऩ्मेल्
पोह वेवि यदुकण् पॉडित्तनाळ्
काह मुऱ्ऱुमोर् कण्णिल वाक्किय
वेह वॅन्ऱियैत् तन्ऱलै मेऱ्कॉळ्वाळ् 357

एक वाळि–एक ही बाण; अ इन्तिरऩ् चॅम्मल् मेल्–उस इन्द्रकुमार (जयन्त) पर; पोक एवि–जा लगे ऐसा प्रेषित करके; अतु–वह बाण; कण् पॉटित्त नाळ्–जिस दिन उसकी आँख का नाश कर गया उस दिन; काकम् मुऱ्ऱुम्–सारे कागों को; ओर् कण् इल–एक आँख से हीन; आक्किय–जो बना दिया; वेक वॅऩ्ऱियै–उस शीघ्र की विजय को; तऩ् तलै मेल् कॉळ्वाळ्–अपने सिर चढ़ाकर गर्व का जो अनुभव करतीं। ३५७

श्रीराम ने इन्द्र के प्रिय पुत्र जयन्त पर एक बाण प्रेरित किया और उससे उसकी ही एक आँख नहीं गयी, बल्कि सारे कौए काने हो गये। अतिशीघ्र सम्पन्न उस विजय की बात का स्मरण करके सीताजी इतना हर्ष मानी, मानो उस विजय के गौरव का भार उन्हीं के सिर पर लगा हो। ३५७

वॅव्वि रादऩै मेवरुन् दीविऩै
वव्वि माऱ्ऱरुञ् जाबमुम् माऱ्ऱिय

अव्वि रामऩै युऩ्ऩित्तऩ् ऩारुयिर्
शॅव्वि रादुणर् वोय्न्दुड ऱेम्बुवाळ् 358

वॅम् विराततै—क्रूर विराध को; मेवु अरुम्तीविऩै–उस पर लगे कठोर पाप को; वव्वि–पकड़कर दूर करके; माट्रु अरुम्–अवार्य; चापमुम् माट्रिय–शाप का भी निवारण जिन्होंने किया; अ इरामऩै–उन श्रीराम का; उऩ्ऩि–स्मरण करके; तऩ् आरुयिर्–अपने प्राणों के; चॅव् इरातु–स्थिर न रहते; उणर्वु ओय्न्दु–सुध-बुध खोकर; उटल् तेम्पुवाळ्–शरीर को कँपाते हुए सिसकतीं। ३५८

विराध भयंकर राक्षस था। उस पर लगे कठोर पाप का और शाप का निराकरण किया श्रीराम ने। उन श्रीराम को बार-बार सोचकर अस्थिर-प्राण हुईं; बेसुध हुईं और शरीर कँपाती हुई रोयीं। ३५८

इरुन्दऩ डिरिशडै यॅऩ्ऩु मिऩ्शॊलाल्
तिरुन्दिऩा ळॊऴियमऱ् ऱिरुन्द तीविऩै
अरुन्दिऱ लरक्किय रल्लु नळ्ळुऱप्
पॊरुन्दलुन् दुयिऩऱैक् कळिप्पॊ रुन्दिऩार् 359

इरुन्तऩळ्–(सीताजी पर प्रेम रखती) रहनेवाली; तिरिचटै ॲऩ्ऩुम्–त्रिजटा नाम की; इऩ् चॊलाल्–मधुर भाषण से; तिरुन्तिऩाळ्–श्रेष्ठ जो बनी थी; ऑऴिय–उसको छोड़कर; मट्रु इरुन्त–अन्य जो रहीं; ती विऩै–क्रूर-कर्म; अरुम् तिऱल्–अधिक बल रखनेवाली; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; अल्लुम्–रात के; नळ् उऱ–मध्य में; पॊरुन्तलुम्–आते ही; तुयिल् नऱैक्कळि–निद्रा रूपी नशे में; पॊरुन्तिऩार्–मग्न हो गयीं। ३५९

तब उनके साथ त्रिजटा नाम की राक्षसी थी, जो हितभाषिणी थी। उसे छोड़ जो अन्य क्रूर और नृशंसकारिणी राक्षसियाँ थीं वे सब, अर्द्धरात्रि के होने पर निद्रा के नशे में डूबी रहीं। ३५९

आयिडैत् तिरिशडै यॅऩ्ऩु मऩ्बिऩाल्
तायिऩु मिऩियव डऩ्ऩै नोक्किऩाळ्
तूयनी केट्टियॅऩ् ऱुणैवि यामॅऩा
मेयदोर् कट्टुरै विळम्बत् मेयिऩाळ् 360

आयिटै–तब; तिरिचटै ॲऩ्ऩुम्–त्रिजटा नाम की; अऩ्पिऩाल्–वात्सल्य में; तायिऩुम् इऩियवळ् तऩ्ऩै–माता से भी बढ़कर प्यारी को; नोक्किऩाळ्–देखा (सीता ने); ॲऩ् तुणैवि आम्–मेरी सखी; तूय नी–पवित्र तुम; केट्टि–सुनो; ॲऩा–कहकर; मेयतु ओर् कट्टुरै–योग्य एक वचन; विळम्पल् मेयिऩाळ्–कहने लगी। ३६०

तब सीताजी ने माँ से भी प्यारी त्रिजटा को देखकर उससे कहा कि मेरी साथिन, पवित्र त्रिजटा! सुनो। फिर वे अर्थ-भरा संकल्प-वचन कहने लगी। ३६०

नलन्दुडिक् किन्ऱदो नान्शॅय् तीविनै
शलन्दुडित् तिन्नमुन् दरुव दुण्मैयो
पॊलन्दुडि मरुङ्गुलाय् पुरुवङ् गण्णुदल्
वलन्दुडिक् किन्ऱिल वरुव दोर्हिलेन् 361

पॊलन् तुटि–स्वर्ण-डमरू-सम; मरुङ्कुलाय्–कमर वाली; पुरुवम् कण् नुतल्–भौंहें, आँखें और भाल; वलम् तुटिक्किन्ऱिल्–दायीं ओर नहीं फड़कते; नलम् तुटिक्किन्ऱतो–सौभाग्य आने को है क्या; नान् चॅय् तीविनै–मेरा कृत कुकर्म; तुटित्तु–उठकर; इन्तमुम् चलम् तरुवतु–और दुःख देने को है; उण्मैयो–वही होगा क्या; वरुवतु ओर्किलेन्–भविष्य नहीं जानती। ३६१

स्वर्ण के डमरू-सी कटि वाली त्रिजटा ! मेरी दाहिनी भौंह, आँखें और मेरा दाहिनी तरफ़ का भाल नहीं फड़कता। (यानी बायें अंग फड़कते हैं।) क्या कोई हित आनेवाला है ? या मेरा पूर्वकृत पाप जल्दी आकर कष्ट देने को है ? क्या आनेवाला है, समझ नहीं पाती। ३६१

मुनियॊडु मिदिलैयिन् मुन्नैवन् मुन्दुनाळ्
तुनियरु पुरुवमुन् दोळु नाट्टमुम्
इनियन तुडित्तन वीण्डु माण्डैन
ननितुडिक् किन्ऱन वायि नल्हुवाय् 362

मुन्नैवन्–मेरे नायक; मुनियॊटु–(विश्वामित्र) मुनि के साथ; मितिलैयिन् मुन्तु नाळ्–जब मिथिला में आये उस दिन; तुनि-अऱु–अकलंक; पुरुवमुम् तोळुम् नाट्टमुम्–भौंहें, भुजाएँ और आँखें; इनियन तुटित्तन–सुखद रूप से फड़कीं; ईण्टुम्–अब भी; आण्टु अॅन–वहाँ के समान; नति तुटिक्किन्ऱन–खूब फड़कती हैं; वायिल् नल्कुवाय्–हेतु बताओ। ३६२

मेरे नाथ जब विश्वामित्र ऋषि के साथ मिथिला पधारे, उस दिन मेरी अनिन्द्य भौंह, भुजा और आँख (बायी) हित का संकेत देती हुई फड़की थीं। अब भी मिथिला में जैसे बायें अंग अच्छे फड़कते हैं। इसका हेतु क्या है ? बताओ। ३६२

मऱन्दनॅ निदुवुमोर् माट्ऱङ् गेट्टियाल्
अऱन्दरु शिन्दैयॆन् नावि नायहन्
पिऱन्दपार् मुळुवदुन् दम्बि येॅपॆऱत्
तुऱन्दुहान् पुहुन्दनाळ् वलन्दु डित्तदे 363

मऱन्ततॅन्–भूल गयी; इतुवुम् ओर् माट्ऱम् केट्टि–यह भी एक बात सुनो; अऱम् तरु चिन्तै–धर्मचित्त; अॅन् आवि नायकन्–मेरे प्राणनाथ; पिऱन्त पार्–जन्म-सिद्ध अधिकार जिस पर था, उस भूमि को; मुळुवतुम्–पूर्ण; तम्पियै पॆऱ–कनिष्ठ भ्राता को लेने देते हुए; तुऱन्तु–त्यागकर; कान् पुकुन्त नाळ्–जिस दिन जंगल आये उस दिन; वलम् तुटित्तततु–मेरे दाहिने अंग फड़के। ३६३

मैं तुमसे एक बात कहना भूल गयी थी। वह बात भी सुन लो। धर्ममन मेरे प्राणनाथ जन्मसिद्ध-अधिकार से प्राप्त अपने राज्य को अपने भाई को लेने देकर जिस दिन वन में पधारे, उस दिन मेरे दाहिने अंग फड़के थे। ३६३

नञ्जनै	यात्वन्नत्	तिऴैक्क	नण्णिय
वञ्जनै	नाळ्वलन्	तुडित्त	वाय्मैयाल्
ॲञ्जलिल्	नन्मैया	लिडन्दु	डिक्कुमाल्
अञ्जलॅन्	रिरङ्गुवा	यडुप्पदि	यादॅन्ऱाळ् 364

नञ्चु अनैयान्–विष-सदृश; वञ्चनै इऴैक्क–वंचक कार्य करने; वन्नतु नण्णिय नाळ्–जिस दिन जंगल में आया उस दिन; वलम् तुटित्त वाय्मैयाल्–दाहिने अंग जो फड़के उस तथ्य से; ॲञ्चलिल् नन्मैयाल्–अक्षुण्ण हित के लिए; इटम् तुटिक्कुमाल्–बाएँ फड़कते हैं, इसलिए; अञ्चल्–मत डरो; ॲन्ऱु इरङ्कुवाय्–ऐसा तुम सहानुभूति करो तदर्थ; अटुप्पतु–जो आयगा; यातु–वह कौन होगा; ॲन्ऱाळ्–(सीताजी ने) पूछा। ३६४

जिस दिन विष-सा क्रूर रावण प्रवंचना करने वन में आया था तब मेरे दाहिने अंग फड़के थे। उस बात से, और आज बायें अंग फड़कते हैं इस बात से, 'तुम क्या समझती हो? मुझ पर तरस खाकर 'मत डरो' का आश्वासन देना साध्य बनाता हुआ आनेवाला हित क्या हो सकता है? । ३६४

ॲन्ऱलुन्	दिरिशडै	यियॅन्द	शोबनम्
नन्ऱिदु	नन्ऱॅना	नयन्द	शिन्दैयाळ्
उन्ऱुणैक्	कणवनै	युरुव	दुण्मैयाल्
अन्ऱियुङ्	गेट्टियॅन्	ऱऱैदन्	मेयिनाळ् 365

ॲन्ऱलुम्–ऐसा कहते ही; तिरिचटै–त्रिजटा; इयॅन्त चोपनम्–आया शोभन; नन्ऱितु नन्ऱु–अच्छा होगा अच्छा; ॲना–कहकर; नयन्त चिन्तैयाळ्–(सीता के प्रति) स्निग्ध मन वाली; उन् तुणै–अपने साजन; कणवनै–नाथ को; उऱुवतु–प्राप्त करो; उण्मै–यह अवश्य होगा; अन्ऱियुम्–और भी; केट्टि ॲन्ऱु–सुनो कहकर; अऱैतल् मेयिनाळ्–कहने लगी। ३६५

देवी के यों कहते ही त्रिजटा ने उत्तर में कहा। यह सब तुम्हारे शोभन के लक्षण है! बहुत ही मंगलकारी लक्षण हैं। यह कहकर सीता के प्रति प्यार रखनेवाली वह बोली— तुम अपने संगी प्यारे नाथ को प्राप्त कर लोगी यह निश्चित है। और भी सुनो। वह आगे कहने लगी। ३६५

उन्निऱम् बशप्पऱ वुयिरु यिर्प्पुऱ
इन्निऱत् तॅन्निशै यिनिय नण्बिऩाल्
मिऩ्निऱ मरुङ्गुलाय् शॅवियिऩ् मॅळ्ळवे
पॉन्निऱत् तुम्बिवन् दूदिप् पोयदाल् 366

मिऩ् निऱ–विद्युत्-से रंग वाली; मरुङ्कुलाय्–कमर वाली; उन् निऱम् पचप्पु–आपके रंग में हुई (विरह-जन्य) विवर्णता; अऱ–दूर हो; उयिर् उयिर्प्पु उऱ–प्राणवन्त रहें इसलिए; इन् निऱ–मधुर स्वभाव और; तॅन् इचै–मीठे स्वर का; पॉन् निऱ तुम्पि–स्वर्णवर्ण भ्रमर; वन्तु–आपके पास आकर; चॅवियिल्–आपके कान में; इऩिय नण्पिऩाल्–मधुर मित्रता से; मॅळ्ळ ऊति–धीमे-धीमे फूँककर; पोयतु–गया। ३६६

विद्युत्-सी (रंग में और आकार में) कटि वाली ! मैंने एक स्वर्णवर्ण भ्रमर को आपके कान के पास आकर फूँकते हुए[1] (गुंजारते हुए) देखा। उसका आशय था कि आपके शरीर में विरहजन्य पाण्डुरता जो फैली है, वह दूर होगी और आपके प्राण नहीं जायँगे। वह भ्रमर मधुर और हितकर प्रेम के साथ धीरे-धीरे गुंजार कर गया। ३६६

आयदु तेरिनुन् नावि नायहन्, एयदु तूदुवन् दॅदिर्द लुण्मैयाल्
तीयदु तीयवर्क् कॅय्द ऱिण्णमॅऩ्, वायदु केळॅऩ मऱित्तुङ् गूऱुवाळ् 367

आयतु तेरिऩ्–उस पर सोचें तो; उन् आवि नायकन्–आपके प्राणनाथ द्वारा; एयतु–प्रेषित; तूतु वन्तु–दूत आकर; ऍतिर्तल्–भेंट करेगा; उण्मै–वह ध्रुव है; तीयवर्क्कु–बुरों को; तीयतु ऍय्तल्–हानि मिलना; तिण्णम्–निश्चित है; ऍन् वायतु केळ्–मेरा समाचार भी सुनो; ऍऩ्ऩ–कहकर; मऱित्तुम्–फिर भी; कूऱुवाळ्–कहने लगी। ३६७

उसके कृत्य पर विचार किया जाय तो यह निश्चित है कि आपके प्राणपति द्वारा प्रेषित एक दूत आयगा और आपसे भेंट करेगा। खलों का नाश निश्चित है। और भी मुझ पर बीते समाचार सुनिए। ३६७

तुयिलिलै यादलिऱ् कनवु तोऩ्ऱल
अयिल्विऴि यन्नैकण् णमैय नोक्किनेऩ्
पयिल्वन पऴुदिल पण्बि ऩाण्डन
वॅयिलिलु मॅय्यन विळम्बक् केट्टियाल् 368

अयिल् विऴि अऩ्ऩै–भाले-सी आँख वाली माते; तुयिल् इलै आतलिऱ्–अनिद्र हो, इसलिए; कनवु तोऩ्ऱल–स्वप्न नहीं आते; कण् अमैय–खूब आँखों में प्रकट; नोक्किनेऩ्–मैंने देखा; पयिल्वन–देखे सो; पऴुतु इल–व्यर्थ नहीं जायँगे; पण्पिऩ् आण्टन–श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण हैं; वॅयिलिलुम् मॅय्यन–सूर्य जैसे सत्य हैं; विळम्प केट्टि–कहूँगी, सुनो। ३६८

भाले-सी आँखों वाली माते ! आप कभी सोती नहीं। अतः स्वप्न होता नहीं। पर मैंने खूब दृष्टि लगाकर देखा। मेरे स्वप्न में हुए समाचार व्यर्थ नहीं जायँगे। और वे श्रेष्ठ गुणों से भरे हैं। सूर्य से भी सत्य हैं। कहती हूँ, सुनिए। ३६८

ऍण्णॆय्दत् मुडितॊरु मिऴुहि येऱिये
तिण्णॆडुङ् गऴुदैपेय् पूण्ड तेरिन्मेल्
अण्णल्वे लिरावण न्ररत्त वाडैयन्
नण्णिनन् ऱॆन्बुलम् नवैयिल् कऱ्पिनाय् 369

नवै इल् कऱ्पिनाय्–अनिंद्य पातिव्रत्यशीले; अण्णल् वेल्–सम्मान्य भाले का; इरावणन्–रावण; अरत्त आटैयन्–रक्तवस्त्र पहनकर; ऍण्णॆय्–तेल को; तन् मुटि तॊरुम्–अपने सभी सिरों पर; इऴुकि–ऐसा लगाये हुए कि वह झरता आये; कऴुतै पेय् पूण्ट–खरों और भूतों के जुते; तिण् नॆटुम्–सबल और बड़े; तेरिन् मेल् एऱि–रथ पर चढ़कर; तॆन् पुलम्–दक्षिण दिशा में; नण्णिनन्–जा पहुँचा। ३६९

निर्दोष पातिव्रत्यशीले ! सम्मान्य भालाधारी है रावण। वह रक्त-वर्ण वस्त्र धारण कर, अपने सिरों पर तेल कसरत से मले, खरों और पिशाचों के जुते सबल और बड़े रथ पर सवार हो दक्षिण दिशा में जा रहा था। (मैंने ऐसा स्वप्न देखा)। ३६९

मक्कळुञ् जुऱ्ऱमुम् मऱ्ऱु ळोर्हळुम्
पुक्कन रप्पुलम् बोन्द दिल्लैयाल्
चिक्कऱ नोक्किनॆन् ऱीय विन्नमुम्
मिक्कन केट्कॆन विळम्बन् मेयिनाळ् 370

मक्कळुम् चुऱ्ऱमुम्–उसके पुत्र और बन्धु; मऱ्ऱुळोर्कळुम्–और अन्य परिवार; अ पुलम्–उसी दिशा को; पुक्कनर्–चले गये; पोन्तत्तु इल्लै–लौटना नहीं हुआ; चिक्कु अऱ–अबाध रूप से; नोक्किनॆन्–देखा; तीय–ये बुरे हैं; इन्नमुम् मिक्कन–और भी अधिक बुरे; केट्कु ऍन–सुनो कहकर; विळम्पल् मेयिनाळ्–कहने लगी। ३७०

रावण के पुत्र, बन्धु-बान्धव और परिवार भी उसी दिशा में गये। वे लौट आये नहीं। अबाध रूप से मैंने देखा। ये अवश्य खलों के पक्ष में अहितकारी है। इससे भी अधिक बुरा समाचार भी है, सुनिए। ३७०

आण्डहै यिरावणन् वळर्क्कु मव्वनल्
ईण्डिल पिऱन्दवा लिनङ्गॊळ् शॆञ्जिदल्
तूण्डरु मणिविळक् कळ्ळुन् दीन्मनै
कोण्डदाल् वानवे ऱॆरियक् कीऴैनाळ् 371

आणटकै–पुरुषश्रेष्ठ; इरावणन् वळर्क्कुम्–रावणपालित; अ अनल्–वह

अग्नि; ईण्टिल–वर्द्धित नहीं हुई; इतम् कोळ्–झुण्डों में; चॅम् चितल्–लाल दीमकें; पिऱन्त–निकलीं; तूण्टु अरु–जिनकी बत्तियों को तेज़ करने की आवश्यकता न हो ऐसे; मणि विळक्कु–मणिमय दीप; अऴलुम्–जिनमें जलते हैं; तॊल् मतै–प्राचीन प्रासाद; वात्त एऱु–आकाश के वज्र के; ॲऱिय–प्रहार से; कोऴै नाळ्–उषाकाल में; कीण्टतु–टूट गये। ३७१

रावण पुरुषश्रेष्ठ है। वह अपने घर में अग्नि का पालन करता है। वह वैदिकी अनुष्ठान की अग्नि वर्धित नही हुई पर बुझ चली। उस स्थान में लाल दीमकों के झुण्ड पैदा हो आये। जिन दीपकों को उकसाने की भी आवश्यकता नही पड़ती, वे मणिमय दीप प्रासादों में जलते रहते थे। वे प्रासाद आकाश के वज्र के उन पर गिरने से, सवेरे-सवेरे, टूट गिरे। ३७१

पिडिमदम् पिऱन्दन पिऱङ्गु पेरियुम्
इडियॅन मुऴङ्गिन विरट्ट लिन्ऱिये
तडियुडै मुहिऱ्कुल मिन्ऱित् ताविल्वान्
वॅडिपड वदिरुमा लुदिरु मीनॅलाम् 372

पिटि मतम् पिऱन्तन–हथिनियाँ मत्त हुईं; पिऱङ्कु पेरियुम्–श्रेष्ठ भेरियाँ; इरट्टल् इन्ऱिये–विना पिटे ही; इटि ॲन–वज्र के समान; मुऴङ्कित–नर्दित हुईं; तटि उटै–तडित्-सह; मुकिल् कुलम् इन्ऱि–मेघ समूह के विना ही; तावु इल् वान्–निराधार आकाश; वॅटि पट–दलक जाय ऐसा; अतिरुम्–थर्रा उठा; मीन् ॲलाम्–नक्षत्र, सभी; उतिरुम्–गिर गये। ३७२

(यह विपरीत बात देखने में आयी कि) हथिनियाँ मदमत्त हो गयीं। श्रेष्ठ भेरियाँ विना बजाये ही नर्दन कर उठीं। निराधार आकाश, तडित्-सहित मेघों के विना ही फट गया और थर्रा गया। नक्षत्र सब चू गये। ३७२

विऱ्पह लिन्ऱिये यिरवु विण्डऱ
ॲऱ्पह लॅऱितुळ दॅन्नत् तोन्ऱुमाल्
मऱ्पह मलर्न्ददोण् मैन्दर् शूडिय
कऱ्पह मालैयुम् बुलवु कालुमाल् 373

विल् पकल्–प्रकाशमय अहस्; इन्ऱिये–नहीं हुआ तभी; इरवु–रात्रि; विण्टु अऱ–मिट जाए ऐसा; ॲल् पकल्–सूर्य दिन में; ॲऱितुळतु–जल रहा है; ॲन्न–ऐसा; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; मल् पक मलर्न्त–सशक्त; तोळ्–कन्धों के; मैन्तर् चूटिय–राक्षस-युवकों की पहनी हुई; कऱ्पक मालैयुम्–कल्पसुमन-मालाएँ भी; पुलवु कालुम्–मांसगन्ध निकालती है। ३७३

राक्षस युवकों के कन्धे इतने प्रकाशमय हैं, मानो दिन के अभाव में भी रात को भगाते हुए सूर्य अहस् के अवसर पर प्रकाश दे रहा हो।

ऐसे सवल स्कन्धों के राक्षस-वीरों की पहनी हुई कल्पसुमन मालाएँ अपनी स्वाभाविक गन्ध छोड़कर मांस-दुर्गन्ध निसृत करने लगीं। ३७३

तिरियुमा	लिलङ्गैयुम्	मदिलुन्	दिक्कॅलाम्
ॲरियुमाड्	कन्दर्प्प	नहर	मॅङ्गणुम्
तॅरियुमान्	मङ्गल	कलशत्	जिन्दिन
विरियुमाल्	विळक्किनै	विळुङ्गु	मालिरुळ् 374

इलङ्कैयुम्–लंका नगर और; मतिलुम्–प्राचीर; तिरियुम्–घूम जाते; तिक्कु ॲलाम्–सारी दिशाएँ; ॲरियुम्–जल उठीं; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; कन्तर्प्प नकरम्–गन्धर्वनगर; तॅरियुम्–दिखायी देते; मङ्कल कलचम्–मंगल-कलश; चिन्तित्त विरियुम्–जल वहाते हुए फूट जाते; विळक्किनै–दीपों को; इरुळ् विळुङ्कुम्–अन्धकार लील जाता (वुझ जाते)। ३७४

लंका नगर और प्राचीर घूम उठे। सारी दिशाएँ जल उठीं। सर्वत्र गन्धर्व-नगर दिखे। (यह वहुत ही वुरा स्वप्न समझा जाता है।) मंगल-कलश टूट पड़े और उनका पवित्र जल वह गया। दीपों को अँधेरे ने निगल लिया। दीप वुझ गये। ३७४

तोरण	मुऱियुमाड्	रुळङ्गिच्	चूळिमा
वारण	मुऱियुमाल्	वलत्त	वान्मरुप्
पारण	मन्दिरत्	तऱिजर्	नाट्टिय
पूरण	कुडत्तुनीर्	नऱविर्	पॉङ्गुमाल् 375

तोरणम् मुऱियुम्–तोरण-स्तम्भ टूट जाते; चूळि–मुखपट्टालंकृत; मा वारणम्–वड़े गजों के; वलत्त वान् मरुप्पु–सवल श्वेत दाँत; तुळङ्कि–काँपकर; मुऱियुम्–टूटते; आरण मन्तिरत्तु–वेदमन्त्रविदग्ध; अऱिजर् नाट्टिय–ब्राह्मणों द्वारा स्थापित; पूरण कुटत्तु–पूर्णकुम्भ का; नीर्–पवित्र जल; नऱविल् पॉङ्कुम्–सुरा के समान उफनता। ३७५

मैंने देखा— तोरण खम्भे टूटते। मुखपट्टालंकृत वड़े-वड़े गजों के सवल श्वेत दाँत लचकते और टूटते। वेदमंत्रविदों द्वारा स्थापित पूर्ण-कुम्भो के पवित्र जल में ताड़ी के समान उफन पैदा होता। ३७५

विण्डॉडर्	मदियित्तैप्	पिळन्दु	मीन्ॅळुम्
पुण्डॉडर्	कुरुदियिऱ्	पॉळियुम्	बोर्मळै
तण्डॉडु	तिहिरिवा	डनुवॅन्	ऱिन्नन
मण्डमर्	पुरियुमा	लाळि	माऱुऱ 376

मीन्–नक्षत्र; विण् तॉटर्–आकाश में चलायमान; मतियित्तै पिळन्तु–चन्द्र को चीरते हुए; ॲळुम्–ऊपर जाते; पोर् मळै–आच्छादित रहनेवाले मेघ; पुण् तॉटर् कुरुतियिल्–व्रण के रक्त के समान; पॉळियुम्–(जल) वरसाते; तण्टु

ऒट्टु–दण्ड और; तिकिरि–चक्र; वाळ्–तलवार; तनु ऎन्ऱु–धनु आदि; इन्नन–ऐसे (हथियार); आऴि माऱु उऱ–समुद्र अस्थिर हो जाए ऐसा; मण्टु अमर् पुरियुम्–आपस में स्वतः भिड़ जाते। ३७६

नक्षत्र आकाशचारी चन्द्रमण्डल को भेदकर ऊपर जाते। आच्छादित-से रहनेवाले मेघों से व्रण से बहनेवाले रक्त के समान बारिश होती। दण्ड के साथ चक्र, तलवार, धनु आदि ऐसे हथियार आपस में युद्ध करते और सागर में उथल-पुथल मच जाता। ३७६

मङ्गैयर् मङ्गलत् तालि मऱ्ऱवर्
अङ्गैयिन् वाङ्गुवा रॆवरु मन्ऱिये
कॊङ्गैयिन् वीऴ्न्दन कुऱित्त वाऱ्ऱिनाल्
इङ्गिदि नऱ्पुद मिन्नुङ् गेट्टियाल् 377

मङ्कैयर्–राक्षस-दयिताओं का; मङ्कल तालि–मंगलमय अहिवात-सूत्र; मऱ्ऱवर् ऎवरुम्–दूसरे किसी के; अङ्कैयिन् वाङ्कुवार् अन्ऱि–अपने हाथ से छीने विना ही; कॊङ्कैयिन्–(कटकर) स्तनों पर; वीऴ्न्तन–गिरे; कुऱित्त आऱ्ऱिनाल्–मेरे सूचित इन कार्यों से; इङ्कु–यहाँ; इतिन् अऱ्पुतम्–इन दुर्निमित्तों से भी (विपरीत और) विचित्र; इन्नुम् केट्टि–और भी सुनिए। ३७७

राक्षस-स्त्रियों के मंगलसूत्र स्वयं विना किसी के छीने ही कट जाते और उनके स्तनों पर गिरते। मै जो कह रहीं हूँ, उसी रीति से और भी क्या-क्या विस्मयकारी कुनिमित्त हुए, सुनिए। (त्रिजटा आगे भी अपने स्वप्नदृष्ट विषय बताने लगीं।)। ३७७

मन्नवन् ऱेवियम् मयन्म डन्दैतन्
पिन्नवि ऴोदियुम् बिऱङ्गि वीऴ्न्दन
तुन्नरुञ् जुडर्शुडच् चुरुक्कॊण् डेऱिऱ्ऱाल्
इन्नलुण् डॆनुमिदऱ् केदु वॆन्बदे 378

मन्नवन् तेवि–राक्षसराज की देवी; अम् मयन् मटन्तै तन्–उस मयसुता (मन्दोदरी) के; पिन् अविऴ् ओतियुम्–बिखरे और पीछे लटकते केश भी; पिऱङ्कि वीऴ्न्तन–फैलकर गिरे; तुन् अरुम् चुटर्–अगम अग्नि के; चुट–जलाने से; चुरुक् कॊण्टु ऐऱिऱ्ऱु–दुर्गन्ध के साथ ऊपर उठे; इतऱ्कु एतु–इसका हेतु है; इन्नल् उण्टु–अवश्य कष्ट होगा; ऎनुम् ऎन्पते–यही बताना है। ३७८

राक्षसराज रावण की पत्नी मयसुता, मन्दोदरी के वेणी-बने केश खुले और बेतरह बिखरे। उनमें आग लगी और दुर्गन्ध निकालती हुई बढ़ी। इसका अर्थ 'अनर्थ होगा' यही है। ३७८

ऎन्ऱिवै यियम्बिवे ऱिन्नुङ् गेट्टियाल्
इन्ऱिव णिपपॊऴ् दॆदिर्न्द दोर्कना

वऩ्ऱुणैक् कोळरि यिरण्डु माऱिलाक्
कुऩ्ऱिडै युळ्वैयाङ् गुळ्क्कोण् डीण्डिये 379

ऍऩ्ऱु इवै इयम्पि–ऐसा यों कहकर; इऩ्ऩुम् वेऱु केट्टि–और भी अन्य बातें सुनिए; इऩ्ऱु इवण् इप्पॊऴुतु–आज, यहाँ, अब; ऍतिर्न्ततु ओर् कऩा–एक स्वप्न हुआ; वऩ् तुणै कोळरि इरण्टु–सबल और जोड़ी के दो सिंह; माऱु इला–बेमिसाल; कुऩ्ऱु इटै–पर्वत पर; उळ्वै आम् कुऴु कॊण्टु–बाघों को सहायता के लिए लेकर; ईण्टिये–सटे हुए। ३७९

त्रिजटा ने ये स्वप्न-समाचार वर्णित किये। आगे भी बोली कि और भी समाचार सुनिए। अब मेरे जागने से तुरन्त पूर्व जो स्वप्न हुआ उसका विषय बताऊँगी। दो परस्पर मित्र बलवान सिंह व्याघ्रवृन्दों को लेकर आये और एक अनुपम पर्वत को घेर गये। ३७९

उरम्बॊरु मदमलै युऱैयु मव्वऩम्
निरम्बुऱ वळैन्दऩ नॆरुक्कि नेर्न्दऩ
वरम्बऱु पिणम्बडक् कॊऩ्ऱु वाऴ्न्दम्
पुरम्बुह मयिलैयुङ् गॊण्डु पोऩ्वाल् 380

उरम् पॊरु मतमलै–कठोर रूप से भिड़नेवाले मत्तगज; उऱैयुम्–जिसमें रहते हैं; अ वऩम्–वह वन; निरम्पु उऱ–भर जाए ऐसा; वळैन्तऩ–घेर आये (सिंह तथा व्याघ्रों का समूह); नॆरुक्कि नेर्न्तऩ–आक्रमण करके लड़े; वरम्पु अऱु–असंख्यक; पिणम् पट–शव हो जायें ऐसा; कॊऩ्ऱु–मारकर; वाऴुम् तम् पुरम्–अपने वासस्थान को; पुक–चले गये; मयिलैयुम् कॊण्टु पोऩ–एक मयूर को भी साथ ले गये। ३८०

वह एक वन था, जिसमें ज़ोर के साथ लड़नेवाले मत्तगज रहते थे। उसमें आकर सिंहों और व्याघ्रवृन्दों ने आक्रमण किया। कठोर युद्ध किया और उनको अनगिनत संख्या में मारकर शवों को गिराया। फिर वे अपने वासस्थान को लौट गये। वे अपने साथ एक मयूर को भी ले गये। ३८०

आयिरन् दिरिविळक् कमैय माट्टिय
शेयॊळि विळक्कमॊऩ् ऱेन्दिच् चॆय्यवळ्
नायहऩ् ऱऩिमनै निऩ्ऱु नण्णुदल्
मेयिऩळ् वीडणऩ् कोयिन् मॆऩ्शॊलाय् 381

मॆऩ् चॊलाय्–मधुरभाषिणी; आयिरम् तिरि विळक्कु–सहस्र वर्तिकाओं से युक्त दीपक; अमैय–सुन्दर रूप से; माट्टिय–जिसमें लगे थे; चेय् ऒळि विळक्कम्–लाल रोशनी की एक दीपावली; ऒऩ्ऱु एन्ति–एक लेते हुए; चॆय्यवळ्–लाल रंग की एक स्त्री; नायकऩ् तऩि मनै निऩ्ऱु–राक्षसपति (रावण) के अद्वितीय महल से; वीटणऩ् कोयिल्–विभीषण के महल में; नण्णुतल् मेयिऩळ्–जाने लगी। ३८१

मधुरभाषिणी भामिनी सीते ! एक लाल रंग की स्त्री सहस्र बत्तियों की लाल रोशनी की एक दीपावली हाथ में लिये राक्षसनायक रावण के महल से निकली और विभीषण के प्रासाद में घुसी । ३८१

पॊऩ्मतै पुक्कवप् पॊरुविऱ् पोदिऩिल्
ॲऩ्ऩैनी युणर्त्तिऩै मुडिन्द दिल्लॆऩ
अऩ्ऩैये यदऩ्कुऱै काणॆऩ् ऱायिऴै
इऩ्ऩमुन् दुयिलॆऩ विरुहै कूप्पिऩाळ् 382

पॊऩ्मतै पुक्क–स्वर्ण-प्रासाद में जो प्रविष्ट हुई; अ पॊरुवु इल् पोतिऩिल्–उस अनुपम शुभ घड़ी में; ॲऩ्ऩै नी उणर्त्तिऩै–तुमने मुझे जगा दिया; मुटिन्ततु इल्–स्वप्न पूर्ण नहीं हुआ; ॲऩ–(त्रिजटा के) यों कहने पर; आयिऴै–चुने हुए आभरणों से अलंकृत देवी ने; अऩ्ऩैये–माते; अतऩ् कुऱै काण्–उसका बचा भाग देखो; ॲऩ्ऱु–कहकर; इऩ्ऩमुम् तुयिल् ॲऩ–और भी सोओ; ॲऩ्ऱु–प्रार्थना करके; इरु कै कूप्पिऩाळ्–अपने दोनों हाथ जोड़े । ३८२

विभीषण का महल स्वर्णमहल था । जब वह उस प्रासाद में घुसी तभी तुमने मुझे जगा दिया । मेरा देखा स्वप्न अधूरा रह गया । तब चुने हुए आभरणधारिणी सीताजी ने उससे हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि माते ! बाकी स्वप्न को भी देख लो । और तुम सोओ । ३८२

❀ इव्विडै यण्णलव् विराम ऩविय
वॆव्विडै यऩैयपोर् वीरत् तूदऩुम्
अव्विडै यॆय्दिन ऩरिदि ऩोक्कुवाऩ्
नॊव्विडै मडन्दैदऩ् ऩिरुक्कै नोक्किनाऩ् 383

इ इटै–इतने में; अण्णल् अ इरामऩ्–महिमावान उन श्रीराम का; एविय–प्रेषित; वॆम् विटै अऩैय–भयंकर ऋषभ-सम; पोर् वीर–युद्धवीर; तूतऩुम्–दूत हनुमान भी; अरितिऩ् नोक्कुवाऩ्–कष्ट के साथ सर्वत्र खोजते हुए; अ इटै ॲय्तिऩऩ्–वहाँ आ पहुँचा; नॊ इटै मटन्तै तऩ्–उस क्षीणकटि देवी के; इरुक्कै–रहने का स्थान; नोक्किताऩ्–देखा । ३८३

इसी समय महिमावान श्रीराम से प्रेषित, दर्शक के दिल में भय उत्पन्न कर सकनेवाले ऋषभ-सम दूत हनुमान भी सर्वत्र कष्ट के साथ खोज लेने के बाद वहाँ आ पहुँचा । उसने क्षीणकटि देवी सीता के रहने के स्थान को देख लिया । ३८३

अव्वयि ऩरक्किय रऴिवुऱ् ऱम्मवो
शॆव्वॆयि ऱुयिनमैच् चॆय्द तीङ्गॆऩ
ॲव्वयिन् मरुङ्गिनु मॆऴुन्दु वीङ्गिऩार्
वॆव्वयिन् मऴुवॆऴुच् चूल मेन्दिये 384

अ वयित्-तव; अरक्कियर्-राक्षस-स्त्रियाँ; अऱिवुऱ्ऱु-जाग्रत् होकर; अम्मवो-हाय, हाय; चॆव्वै इल् तुयिल्-जो अच्छी नहीं, उस नींद ने; नमै ईङ्कु चॆय्ततु-हमें अब यह (दुर्गत) करा दी; ॲन्न-कहती हुई; ॲऴुन्तु-उठकर; वॆम् अयिल्-भयंकर भाले; मऴु-परशु; ॲऴु-वक्रदण्ड; चूलम् एन्ति-शूल आदि उठाये हुए; ॲ वयित् मरुङ्किलुम्-सब ओर; वीङ्कितार्-भीड़ में खड़ी हो गयीं। ३८४

तभी राक्षसियाँ भी जाग उठीं। वे भयातुर हो गयीं। हाय! यह बुरी नींद है। उसने हमारी यह दुर्गत कर दी है। वे उठीं। हाथ में शूल, भाले, परशु, वक्रदण्ड आदि हथियार लेकर चारों ओर से आ जुट गयीं। ३८४

वयिऱ्ऱिडै	वायिनर्	वऴैन्द	नऱ्ऱियिल्
कुयिऱ्ऱिय	विऴियिन्नर्	कॊडिय	नोक्किनर्
ॲयिऱ्ऱिनुक्	किडैयिडै	यानै	याऴिपेय्
तुयिऱ्कॊऴ्वॆम्	बिलत्तन्नत्	तॊट्ट	वायिनार् 385

वयिऱ्ऱिटै वायित्तर्-पेट-मध्य मुखवालियाँ; वऴैन्त नॆऱ्ऱियिल्-बाहर निकले भाले पर; कुयिऱ्ऱिय-जड़ित; विऴियित्तर्-आँखों वालियाँ; कॊटिय नोक्कितर्-क्रूर दृष्टि वालियाँ; ॲयिऱ्ऱितुक्कु इटै इटै-दाँत के मध्य; यानै-गज; याऴि-शरभ; पेय्-भूत; तुयिल् कॊऴ्-सोते रहे ऐसे; वॆय् पिलन् ॲन्न-भयंकर गुफा के समान; तॊट्ट वायित्तर्-वड़े मुखों वालियाँ। ३८५

(वे भी भयंकर तथा स्वभाव-विपरीत आकृति वालियाँ थीं।) कुछ के पेटों के मध्य मुख थे। कुछ के भाल बाहर निकले हुए थे और उनमें आँखें जड़ी हुई-सी लगती थीं। उनकी दृष्टि वड़ी क्रूर थी। उनके बड़े, भयंकर गुहा के समान मुखों के अन्दर दाँत-दाँत के मध्य गज, 'याऴि' (शरभ) नामक भयंकर जानवर, भूत आदि सोते थे। ३८५

ऒरुपदु	कैयिन	रॊऱ्ऱैच्	चॆन्नियर्
इरुबदु	तलैयिन	रिरण्डु	कैयिन्नर्
वॆरुवरु	तोऱ्ऱत्तर्	विहड	वेडत्तर्
परुवरै	यॆनमुलै	पलवु	नाऱ्ऱिनार् 386

ऒरुपतु कैयित्तर्-दस हाथों वालियाँ; ऒऱ्ऱै चॆन्नियर्-(वे) एक ही सिर वालियाँ थीं; इरुपतु तलैयित्तर्-बीस हाथों वालियाँ; इरण्टु कैयित्तर्-पर दो हाथों वालियाँ; वॆरुवरु तोऱ्ऱत्तर्-भयावने आकार वालियाँ; विकट वेटत्तर्-विचित्र रूप वालियाँ; परुवरै ॲन्न-मोटे पर्वत के समान; मुलै पलवुम्-अनेक स्तनों को; नाऱ्ऱितर्-लटकाते रहनेवालियाँ। ३८६

किन्हीं के सिर तो एक-एक ही थे, पर हाथ दस-दस थे। किन्हीं के सिर बीस-बीस थे, पर हाथ तो दो-दो ही थे। भयभीत करनेवाले

आकार की थीं राक्षसियाँ। निपट विधि-विपरीत रूप वाली थीं। उनके स्तन बड़े-बड़े पर्वतों के समान थे और लटकते थे। ३८६

शूलम्वाळ् शक्करन् दोट्टि तोमरम्
कालवेल् कप्पणङ् गर्रू कैयिन्नार्
आलमे युरुवुहोंण् डन्नैय मेन्नियार्
पालमे तरित्तवन् वॅरुवुम् बान्मैयार् 387

चूलम्–शूल; वाळ्–तलवार; चक्करम्–चक्र; तोट्टि–अंकुश; तोमरम्–तोमर; काल्वेल्–यम-से भाले; कप्पणम्–'कप्पण' नामक हथियार; कर्रु–चलाने में अभ्यस्त; कैयिन्नार्–हाथों वालियाँ; आलमे उरुवु कॉण्टन्नैय–हलाहल के ही साकार बने से; मेन्नियार्–शरीर वालियाँ; पालमे तरित्तवन्–कपालधारी (भैरव); वॅरुवुम्–डरे ऐसे; पान्मैयर्–स्वभाव वाली। ३८७

इन राक्षसियों के हाथ शूल, चक्र, अंकुश, तोमर, यम-से भाले, कप्पण नामक हथियार आदि चलाने के अभ्यस्त थे। हलाहल के ही मूर्तरूप-सम थीं। कपाली भैरवजी को भी भयातुर करनेवाले स्वभाव वालियाँ थीं। ३८७

करिपरि वेङ्गैमाक् करडि याळिपेय्
अरिनरि नायॅन्न वणिमु हत्तिन्नर्
वॅरिनुरु मुहत्तिन्नर् विळिहण् मून्ऱिन्नर्
पुरितरु कॉडुमैयर् पुहैयुम् वायिन्नार् 388

करि–गज; परि–अश्व; वेङ्कै–व्याघ्र; मा करटि–बड़े रीछ; याळि–'याळि' (नाम के जानवर); पेय्–भूत; अरि–सिंह; नरि–गीदड़; नाय ॲन्न–कुत्ते आदि; अणि मुकत्तिन्नर्–पहने हुए मुखों वालियाँ; वॅरित् उरु–पीठ पर बने; मुकत्तिन्नर्–मुख वालियाँ; विळिकळ् मून्ऱिन्नर्–तीन आँखों वालियाँ; पुरि तरु कॉटुमैयर्–क्रूर काम करनेवालियाँ हैं; पुकैयुम् वायिन्नार्–धुआँ निकालनेवाले मुखों वालियाँ। ३८८

गज, अश्व, बाघ, बड़ा रीछ, 'याळि', पिशाच, सिंह, शृगाल और कुत्ते आदियों के (-से) मुखों से वे युक्त थी। उनकी पीठ के मध्य मुख भी थे। वे बड़े ही क्रूर काम करनेवालियाँ थी। उनके मुखों से धुआँ निकलता था। ३८८

ॲण्णिनुक् कळविड लरिय वीट्टिन्नार्
कण्णिनुक् कळविड लरिय काट्चियार्
पॅण्णॅनप् पॅयर्होंडु तिरियुम् बॅर्ऱियार्
तुण्णॅनत् तुयिलुणर्न् दॅळुन्दु शुर्ऱिन्नार् 389

ऍण्णितुक्कु अळवु इटल् अरिय–संख्या कहकर गिनने में असाध्य (अपार); ईट्टिऩार्–बलशालिनियाँ; कण्णितुक्कु–आँखों द्वारा; अळवु इटल् अरिय–मापा नहीं जा सके, ऐसे; काट्चियार्–आकार वालियाँ; पॆण् ऍऩ्ऩ पॆयर् कॊट्टु–स्त्री नाम धारण करके; तिरियुम् पॆट्रियार्–घूम-फिरने का भाग्य-प्राप्त; तुण् ऍऩ्ऩ–अकस्मात; तुयिल् उणर्न्तु–नींद से जागकर; ऍऴुन्तु–उठीं और; चुट्रिऩार्–सीता को घेर आयीं। ३८८

वे अपार शक्ति से समन्वित थी। आँखें पूरा देख नही सकें —ऐसे डील-डौल वालियाँ थीं। विडम्बना यह थी कि स्त्री नामधारिणी होकर फिरती थी। वे झट नीद से जागी और उठकर सीताजी को घेर आयी। ३८९

आयिडै युरैयविन् दळहन् ऱेवियुम्
तीयन्नै यवर्मुह नोक्कित् तेम्बिऩाळ्
नायहन् ऱूदनुम् विरैवि ऩण्णिऩान्
ओय्विल नुयर्मरप् पणैयि नुम्बरान् 390

आयिटै–तब; अळकन् तेवियुम्–सुन्दर श्रीराम की देवी; उरै अविन्तु–अवाक् होकर; ती अन्नैयवर् मुकम् नोक्कि–अग्नि-सम उनके मुखों को देखकर; तेम्पिऩाळ्–संकटग्रस्त हुई; नायकन् तूततुम्–नायक श्रीराम का दूत भी; विरैविल् नण्णिऩान्–शीघ्र आया; ओय्वु इलन्–अविलम्ब; उयर् मर–ऊँचे वृक्ष की; पणैयिन् उम्परान्–शाखा पर का (स्थित) होकर। ३९०

तब सुन्दर पुरुष श्रीराम की देवी उनको देख स्तब्ध और अवाक् रह गयी। उनके अग्नि-सम मुखों को देखकर संकटग्रस्त हुई और सहमीं। नायक का दूत हनुमान भी शीघ्र आया और अविलम्ब एक अत्युन्नत तरु की शाखा पर चढ़ बैठा (और —)। ३९०

अरक्किय रयित्मुद लेन्दु मङ्गैयर्
नॆरुक्किय कुऴुविनर् तुयिलु नीङ्गिऩार्
इरुक्कुनर् मऱ्ऱिदऱ् केदु वॆन्ऩॆन्ऩप्
पॊरुक्कॆन्ऩ ववरिडैप् पॊरुन्द नोक्किऩान् 391

अरक्कियर्–(पहरा देती रही) राक्षसियाँ; अयिल् मुतल्–भाला आदि; एन्तुम् अङ्कैयर्–धारण करनेवाले हाथों की होकर; नॆरुक्किय कुऴुविनर्–भरी भीड़ की; तुयिलुम् नीङ्किनार्–निद्रा त्यागकर; इरुक्कुनर्–(सतर्क) रहती हैं; इतऱ्कु एतु ऍन्–इसका हेतु क्या है; ऍन्ऩ–सोचकर; पॊरुक्कु ऍन्ऩ–शीघ्र; अवर् इटै–उनके मध्य; पॊरुन्त नोक्किनान्–ध्यान के साथ देखा। ३९१

पहरे में रही राक्षसियाँ हाथों में भाले आदि लिये हुए, सटे समूह में मिले निद्रा त्यागकर सचेत रहीं। इसका हेतु क्या है ? यह जानने के लिए हनुमान ने शीघ्र उन राक्षसियों के बीच में सावधानी से दृष्टि लगाकर देखा। ३९१

❀ विरिमळैक् कुलङ्गिळित् तॊळिरु मिन्नॆन्नक्
करुनिऱत् तरक्कियर् कुळुविऱ् कण्डनन्
कुरुनिऱत् तॊरुदनिक् कॊण्ड लामॆनत्
तिरुवुऱप् पॊलियुमोर् चॆल्वन् ऱेवियै 392

कुरु निऱत्तु–गहरे रंग के साथ; ऒरु तनि कॊण्टल् आम् ऎन–एक अनुपम मेघ के समान; तिरु उऱ–अतिसौन्दर्य के साथ; पॊलियुम्–शोभनेवाले; ओर् चॆल्वन्–श्रियःपति की; तेवियै–देवी को; विरि मळै कुलम्–फैले हुए मेघसमूह को; किळित्तु–चीरकर; ऒळिरुम्–चमकनेवाली; मिन् ऎन–विद्युत् के समान; करु निऱत्तु अरक्कियर्–काले रंग की राक्षसियों के; कुळुविल्–दल में; कण्टनन्–(हनुमान ने) देखा। ३९२

उसने गहरे नीले रंग के श्रेष्ठ मेघ-सम सौन्दर्ययुक्त श्रियःपति श्रीराम की देवी सीता को विशाल मेघसमूह को चीरकर प्रकाश छिटकानेवाली विद्युत् के समान राक्षसियों के समूह-मध्य देखा। ३९२

कडक्करु मरक्कियर् कावऱ् चुऱ्ऱुळाळ्
मडक्कॊडि शीदैया माद रेहॊलाम्
कडऱ्ऱुणै नॆडियदन् कण्णि नीर्प्पॆरुन्
दडत्तिडै यिरुन्ददो रन्नत् तन्मैयाळ् 393

कटल् तुणै नॆटिय–सागर-सम विशाल; तन् कण्णित्–अपनी आँखों के; नीर् पॆरुम् तटत्तिटै–अश्रुजल के बड़े जलाशय-मध्य; इरुन्ततु–जो रही; ओर् अन्न तन्मैयाळ्–एक हंसिनी-सी ये; कटक्करुम्–अलंघ्य; अरक्कियर् कावल् चुऱ्ऱु–राक्षसियों के पहरे के घेरे में; उळाळ्–रहती है; मटक्कॊटि–बाल-लता; चीतैयाम् मातरे आम्–सीतादेवी ही होंगी। ३९३

उनकी समुद्र-सम विशाल आँखों से जो अश्रुजल बहता रहा वह विशाल जलाशय के समान था, और उसके मध्य सीताजी हंसिनी के समान रहती है तथा राक्षसियों के अलंघ्य पहरे के अन्दर रहती हैं। इसलिए यह अवश्य वही बाल-लता सीताजी ही होंगी। हनुमान ने अनुमान किया। ३९३

❀ ऎळ्ळरु मुरुवुळ विलक्क णङ्गळुम्
वळ्ळऱत् तुरैयॊडु माऱु कॊण्डिल
कळ्ळवा ळरक्कनक् कमलक् कण्णनार्
उळ्ळुऱै युयिरिनै यॊळित्तु वैत्तवा 394

ऎळ्ळरुम्–अनिंद्य; उरु उळ–अंगलक्षण हैं; इलक्कणङ्कळुम्–वे लक्षण भी; वळ्ळल् तन् उरैयॊटु–वदान्य श्रीराम के वर्णन से; माऱु कॊण्टिल–भिन्न नहीं हैं; कळ्ळ वाळ् अरक्कन्–वंचक और तलवारधारी राक्षस ने; अ कमल कण्णतार्–उन

पुण्डरीकाक्ष के; उळ् उऱ उयिरितै–हृदयस्थ प्राण (सीता) को; ऑळित्तु वैत्त आ– छिपा रखा है, क्या ही अन्याय है। ३९४

इनके अंग-लक्षण अनिंद्य है। और भी वे लक्षण वदान्य श्रीराम के वर्णन से भिन्न नहीं है। हा! तलवारधारी वंचक रावण ने उन पुण्डरीकाक्ष श्रीराम के हृदयस्थ प्राणों-सी इनको लाकर छिपा रखा है! क्या ही अन्याय है! । ३९४

मूवहै युलहैयुम् मुऱैयि नीक्किय
पाविय रुयिर्हॉळ्वा निळैत्त पण्बिदाल्
आवदे यरवणॆत् तुयिलि नीङ्गिय
तेवने यवत्तिवळ् कमलच् चॅल्वियॆ 395

मू वकै उलकैयुम्–त्रिविध लोकों को; मुऱैयित् नीक्किय–सन्मार्ग से जिन्होंने हटा दिया; पावियर्—उन पापियों के; उयिर् कॉळ्वान्–प्राण हरने हेतु; इऴैत्त पण्पु–किया गया काम; इतु आवते–यह है अवश्य; अवन्—वे; अरवणै तुयिलिन् नीङ्किय–शेषनागनिद्रात्यागी; तेवते–श्रीविष्णु भगवान ही हैं; इवळ् कमलच् चॅल्वियॆ– ये कमलासना लक्ष्मीदेवी ही है। ३९५

हा! यह कार्य त्रिलोकवासियो को अपने अच्छे मार्ग से हटानेवाले पापी राक्षसों के नाश का हेतु बन गया। श्रीराम शेषनागनिद्रात्यागी श्रीविष्णुदेव ही हैं। और ये देवी कमलासना श्री ही है। ३९५

वीडिन्र दऩ्ऱऩ् यानुम् वीहलेन्
तेडिनॆन् कण्डनॆन् ऱॆवि येऎन्ना
आडिनन् पाडिन नाण्डु मीण्डुम्बायन्
दोडिन्न नुलाविन नुवहैत् तेन्नुण्डान् 396

अऱन् वीटितु अन्ऱु–धर्म मिटा नहीं; यानुम् वीकलेन्–मैं भी नहीं मरूँगा; तेटिनॆन्–अन्वेषण किया; कण्टनॆन्–देख लिया; तेवियॆ ॲन्ना–देवी सीता ही हैं, कहकर; उवकै तेन्–मोदमधु; उण्टान्–पीकर हनुमान; आटिनन्–नाचा; पाटिनन्–गाया; आण्टुम् ईण्टुम्—उधर और इधर; पायन्तु ओटिनन्–छलांग मारकर दौड़ा; उलाविनन्–घूमा। ३९६

अच्छा, अब धर्म नष्ट नही होगा। मैं भी मरूँगा नहीं। जिनकी खोज लगाता रहा उनको मैने देख लिया। ये अवश्य सीतादेवी ही हैं। हनुमान ने ऐसा दृढ़ विचार कर लिया तो मोदमधुपीत हो गया। नाचने-गाने लग गया। इधर से उधर दौड़ता हुआ घूमा। ३९६

माशुण्ड मणियत्ताळ् वयङ्गु वॆङ्गदिर्त्
तेशुण्ड तिङ्गळ मॆन्नत् तेय्न्दुळाळ्

काशुण्ड कून्दलाळ् कऱ्पुङ् गावलुम्
एशुण्ड दिल्लैया लऱत्तुक् कीऱुण्डो 397

माचु उण्ट–मैल-लगे; मणि अत्ताळ्–रत्न-सम; वयङ्कु वॅम् कतिर् तेचु उण्ट–पृथुल गरम (सूर्य-) किरणों में डूबे; तिङ्कळुम् अॅन्न–(नष्टप्रभ) चन्द्र के समान; तेय्न्तु उळाळ्–जो मलिन हुई थीं; काचु उण्ट कून्तलाळ्–धूलि-धूसरित केशिनी की; कऱ्पुम्–चरित्र-दृढ़ता और; कावलुम्–उसके पालन की रीति पर; एचु उण्टतु इल्लै–दोष नहीं लगा है; आल्–इसलिए; अऱत्तुक्कु ईऱु–धर्म का नाश; उण्टो–होगा क्या (नहीं)। ३९७

सीताजी मैल-लगे रत्न के समान और सूर्य की गरम किरणों से मन्दप्रद बने चन्द्र के समान लगीं। वे मलिन थीं और उनके केश पर धूल जमी थी। उनके चरित्र और चरित्र-पालन-दृढ़ता पर कोई आँच नहीं आयी थी। अतः धर्म नष्ट होगा क्या ? नष्ट नही होगा। ३९७

पुनैहऴ् लिराहवन् पॉऱ्पु यत्तैयो
वनिदैयर् तिलहत्तिन् मनत्तिन् माण्बैयो
वनैहऴ् लरशरिन् वण्मै मिक्किडुम्
जनहर्दङ् गुलत्तैयो यादु शाऱ्ऱुहेन् 398

कऴल् पुनै–पायलधारी; इराकवन् पॊन् पुयत्तैयो–श्रीराघव की मनोरम भुजाओं को; वनितैयर् तिलकत्तिन्–स्त्री-तिलक सीता के; मनत्तिन् माण्पैयो–मन की दृढ़ता के गौरव को; वनैकऴल् अरचरिन्–पायलधारी राजाओं से; वण्मै मिक्किटुम्–अधिक उदार; चनकर् तम् कुलत्तैयो–जनक के कुल को; यातु चाऱ्ऱुकेन्–किसको गाऊँ। ३९८

अब हनुमान विस्मय से अभिभूत हो गया। पायलधारी श्रीराम की भुजाओं की प्रशंसा की जाय, या स्त्रीतिलक सीताजी के मन की दृढ़ता की ? या पायलधारी राजाओं में सर्वश्रेष्ठ उदार दानी जनक के कुल के गौरव का यशोगान किया जाय ? किसका गान करूँगा ? हनुमान ने कहा। ३९८

तेवरुम् बिऴैत्तिलर् तॅय्व वेदियर्
एवरुम् बिऴैत्तिल रऱमु मीऱिन्ऱाल्
यावदिङ् गिनिच्चॅय लरिय दॅम्बिराऱ्
कावॅन्न् नडिमैयुम् बिऴैप्पिन् ऱामरो 399

तेवरुम् पिऴैत्तिलर्–देव भी अपराधी नहीं बने; तॅय्व वेतियर् ॲवरुम्–दिव्य ब्राह्मण कोई भी; पिऴैत्तिलर्–दोषी नहीं बने; अऱमुम् ईऱु इन्ऱु–धर्म का भी अन्त नहीं हुआ; ॲम्पिराऱ्कु आव–मेरे आराध्य के प्रति; ॲन् अटिमैयुम्–मेरी दासता भी; पिऴैप्पिन्ऱाम्–निर्दोष रही; इति–अब; इङ्कु–यहाँ; चॅयल् अरियतु–कार्य असाध्य; यावतु–क्या है (कुछ भी नहीं)। ३९९

देव अपराधी नहीं रहे। दिव्य गुणी ब्राह्मण भी अपराधी नहीं रहे। धर्म का अन्त नही हुआ। मेरे आराध्य नायक की मेरी दासता भी निर्दोष हो रही। अब कौन सा कार्य है, जो दुस्साध्य होगा ? । ३९९

केऴिला	णिऱैयिऱै	कीण्ड	दामॆऩ्ऩिऩ्
आऴियाऩ्	मुऩिवॆऩु	माऴि	मीक्कॊऴ
ऊऴियि	निऱुदिवऩ्	दुऱुमॆऩ्	ऱुऩ्ऩिऩेऩ्
वाऴिय	वुलहिऩि	वरम्बि	ऩाळॆलाम् 400

केऴ् इलाऴ्–अप्रतिम; निऱै–(सीताजी का) संयम; इऱै कीण्टतु आम् ॲऩ्ऩिऩ्–थोड़ा भी दरार खा गया तो; आऴियाऩ्–चक्रधर श्रीराम का; मुऩिवु ॲऩुम् आऴि–कोपसागर; मी कॊळ–उमग उठेगा; ऊऴियिऩ् इऱुति–युगान्त; वऩ्तु उऱुम्–आ जायगा; ॲऩ्ऱु उऩ्ऩिऩेऩ्–ऐसा सोचा; इऩि–अब; उलकु–संसार; वरम्पिल् नाळ् ॲलाम्–अनन्त काल तक; वाऴिय–जीते रहें। ४००

हनुमान ने विचार व्यक्त किया कि मैंने सोचा था कि अप्रतिम देवी के चरित्र मे कियत् अंश में दरार पड़ गयी तो चक्रधर श्रीराम के कोपसागर के उमँग आने से सारे लोकों का अन्त करनेवाला प्रलय हो जायगा। अब ऐसा कुछ नहीं होगा। अब लोक अनन्त काल तक जिएँ ! । ४००

वॆङ्गऩऩ्	मुऴुहियुम्	पुलऩ्गळ्	वीक्कियुम्
नुङ्गुव	वरुन्दुव	नीक्कि	नोऱ्ऱवर्
ॲङ्गुळर्	कुलत्तिल्वऩ्	दिल्लिऩ्	माण्बुडै
नङ्गैयर्	मऩत्तव	नविलर्	पालदे 401

वॆम् कऩल्–संतापक पंचाग्नि में; मुऴुकियुम्–रहकर (तपस्या करके); पुलऩ्कळ् वीक्कियुम्–इन्द्रिय-निग्रह करके और; नुङ्कुव अरुन्तुव–निगलने योग्य और पेय भोजन; नीक्कि–त्यागकर; नोऱ्ऱवर्–व्रतपालन करनेवाले; ॲङ्कुळर्–कहाँ हैं; कुलत्तिल् वन्तु–श्रेष्ठकुल में पैदा होकर; इल्लिऩ् माण्पु उटै–गृहस्थी योग्य श्रेष्ठता से युक्त; नङ्कैयर् मऩ तवम्–स्त्रियों का मनोतप; नविलल् पालते–वर्णन योग्य है क्या (वर्णनातीत है) । ४०१

कठोर पंचाग्नि-मध्य स्थित हो तपस्या करनेवाले इन्द्रियनिग्रही, निगलने योग्य या पेय भोजन-पदार्थों के त्यागी तपस्वी कहाँ मिलते हैं ? श्रेष्ठकुलजाता, गृहस्थधर्म-परिपालिका के मनोतप का वर्णन करना हमारे बस का है क्या ? । ४०१

❀ पेणनोऱ्	ऱवुमऩ्ऩैप्	पिऱवि	पॆण्मैपोल्
नाणनोऱ्	ऱुयर्न्ददु	नङ्गै	तोऩ्ऱलाल्

माणनोड्‌ ड्रीण्डिव ळिरुन्द वार्‌ऎलाम्‌
काणनोड्‌ ड्रिलन्नवन्‌ कमलक्‌ कण्गळाल्‌ 402

नङ्कै तोन्‌ड्रलाल्‌–इस देवी के जन्म होने से; मतं पिड्रवि–कुलजन्म; पेण–सबके द्वारा पालन-योग्य हो; नोड्‌ड्रतु–इसका तप कर चुका; पॆण्मै पोल्‌–स्त्रीत्व के समान; नाणम्‌–लज्जा भी; नोड्‌ड्रु उयर्‌न्ततु–तपस्या करके श्रेष्ठ हो गयी; ईण्ड्‌टु–यहाँ; इवळ्‌–ये; माण नोड्‌ड्रु–चरित्रतपस्या करती; इरुन्त–रहीं; आड्रु ऎलाम्‌–वह प्रकार सब; अवन्‌–उन्होंने (श्रीराम ने); कमल कण्कळाल्‌–अपने कमल-नेत्रों से; काण–देखने का; नोड्‌ड्रिलन्‌–व्रत (भाग्य) नहीं किया। ४०२

इन देवी के जन्म से उत्तम कुल में जन्म लेना तप कर गया, जिसके फलस्वरूप सब उसका पालन करेंगे। (सब उत्तम कुल में जन्म लेना चाहेंगे।) स्त्रीत्व के समान लज्जा भी भाग्यशालिनी बन गयी। ये देवी इधर जो तपस्या कर रहीं हैं, इसकी रीति अपनी आँखों से देखने का भाग्य पुण्डरीकाक्ष श्रीराम का नहीं रहा। ४०२

मुनिवर्‌ह ळरुन्दवर्‌ मुर्‌ऐयिन्‌ निन्‌ड्रुळार्‌
इनियव डानला दियारु मिल्‌लैयाल्‌
तनिमैयुम्‌ पॆण्मैयुन्‌ दवमु मिन्‌नदे
वनिदैयर्‌क्‌ काहनल्‌ लड्रत्‌तिन्‌ माण्‌बॆलाम्‌ 403

अवळ्‌ तान्‌ अलातु–उनके सिवा; यारुम्‌ इल्‌लैयाल्‌–कोई अन्य नहीं हैं ये, इसलिए; मुनिवर्‌कळ्‌ अरुन्तवर्‌–मुनि जो श्रेष्ठ तपस्वी हैं; इनि मुर्‌ऐयिन्‌ निन्‌ड्रुळार्‌–अब व्रती जीवन के क्रम में स्थिर रहेंगे; तनिमैयुम्‌–एकाकीपन; पॆण्मैयुम्‌–स्त्रीत्व; तवमुम्‌–पातिव्रत्य तप; इन्‌नते–यही है; नल्ल अड्रत्तिन्‌ माण्पु ऎलाम्‌–श्रेष्ठ धर्म का सारा गौरव; वनितैयर्‌क्कु आक–स्त्रियों का हो। ४०३

अवश्य ये सीताजी हैं। अन्य कोई नहीं। इससे यह ध्रुव हो गया कि कठिन तपस्यारत मुनि लोग अपने आचरण में स्थिर रहेंगे। यही एकाकीपन, स्त्रीत्व और (पातिव्रत्य के) सद्धर्म का गौरव (इनका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण) हैं। अच्छे धर्म की सारी श्रेष्ठताएँ स्त्रियों को प्राप्त हो जायँ। ४०३

तरुममे कात्तदो जनह नल्‌विन्नैक्‌
करुममे कात्तदो कड्‌पिन्‌ कावलो
अरुमैये यरुमैये यारि दाड्‌ड्रुवार्‌
ऒरुमैये यॆम्मनोर्‌क्‌ कुरैक्‌कर्‌ पालदो 404

तरुममे कात्ततो–धर्मदेवता ने (इनके शील को) बचाया; चनकन्‌ नल्‌ विनै करुममे–जनक के सत्कर्म ने; कात्ततो–बचाया; कड्‌पिन्‌ कावलो–इनके पातिव्रत्य-पालन ने रक्षा की; अरुमैये अरुमैये–अपूर्व है, अपूर्व है; इतु आड्‌ड्रुवार्‌ यार्‌–यह करनेवाला कौन होगा; ऒरुमैये–अद्वितीय है; ऎम्मनोर्‌क्कु–हम जैसों के लिए; उरैक्कल्‌ पालतो–कथनशक्य है क्या। ४०४

इनकी इस तरह रक्षा कैसे हो सकी ? धर्म ने इसकी रक्षा की ? या जनक के कर्मों के पुण्य ने इसका पालन किया ? या इसके चरित्र की दृढ़ता इसकी रक्षक हुई ? ओह ! अपूर्व, कितना अपूर्व ? ऐसा कौन कर सकेगा? यह इनकी अद्वितीय विशेषता है । हम जैसों से अवर्ण्य है ! । ४०४

शॅल्वमो वदुववर् तीमै योविदु
अल्लुनल् पहलुनिन्नु ऱमर राट्चॅय्वार्
ऑल्लुमो वॊरुवर्क्की दुरुहण् यादिन्नि
वॅल्लुमो तीविनै यऱत्तै मॅय्म्मैयाल् 405

चॅल्वमो अतु–(राक्षसों का) वैभव वैसा है; अवर् तीमैयो इतु–उनका नृशंस कार्य है यह; अमरर्–देव; अल्लुम् नल् पकलुम्–अहोरात्रि; निन्नुऱ आळ् चॅय्वार्–स्थित होकर गुलामी करते हैं; ईतु ऑल्लुमो ऑरुवर्क्कु–यह (चरित्र-पालन) किसी के लिए शक्य हो सकता है क्या; उऱुकण् इन्नि यातु–(इससे बढ़कर) संकट क्या हो सकेगा; मॅय्मैयाल्–असल में; ती विनै अऱत्तै वॅल्लुमो–पाप धर्म को जीत सकेगा क्या । ४०५

वहाँ मैंने देखा— राक्षसों का वैभव वहाँ वैसा । उनका क्रूर-कार्य ऐसा । देवगण अहोरात्र रहकर उनकी गुलामी कर रहे हैं । इस स्थिति में ऐसा अपना पालन करा लेना किसी के लिए साध्य होगा क्या ? देवी ही यह असाध्य कार्य कर सकीं । इससे बढकर इन पर क्या कष्ट आ सकेगा ? सच है पाप पुण्य को जीत नहीं सकता । ४०५

ॲन्ऱिवै यिन्नैयन्न वॅण्णि वण्णवान्
पॊन्ऱिणि मुदुमरप् पॊदुम्बर्प् पुक्कवण्
निन्ऱन नव्वळि निहळ्न्ददि यावॅनिल्
तुन्ऱुपूम् जोलैवा यरक्कन् ऱोन्ऱिनान् 406

ॲन्ऱु–यों; इवै इन्नैयन्न–ये और ऐसी बातें; ॲण्णि–सोचकर; वण्ण वान्–सुन्दर और उन्नत; पॊन् तिणि–स्वर्णलसित; मुतु मर पॊतुम्पर्–प्राचीन तरु के कोटर में; पुक्कु–घुसकर; अवण् निन्ऱनन्–वहाँ रहा; अ वळि–वहाँ (तब); निकळ्न्ततु–घटा; यातु ॲनिल्–क्या है पूछो तो; तुन्ऱु पूम् चोलै वाय्–पुष्प-भरे उस अशोकवन में; अरक्कन् तोन्ऱिनान्–राक्षस (रावण) प्रकट हुआ । ४०६

हनुमान इस तरह की बातें सोचते हुए एक सुन्दर और ऊँचे सुनहले तरु के कोटर में जाकर ठहरा । तब हुआ क्या ? स्वयं राक्षसाधिपति रावण उस पुष्पकलित अशोक वन में आया । ४०६

शिहरवण् कुडुमि नॅडुवरै यॅवैयु मॊरुवळित् तिरण्डन शिवण
महरिहै वयिर कुण्डल मलम्बु तिण्डिऱल् तोळ्पुडै वयङ्गच्

शहरनीर् वेलै तळुविय कदिरि ऱ्लैदोऱुन् दलैदोऱुन् दयङ्गुम्
वहैयपन् महुड मिळवॅयि लॅऱिप्पक् कङ्गुलुम् बहल्पड वन्दान् 407

चिकर वण् कुटुमि–शिखर रूपी समृद्ध चोटियों वाले; नॅटुवरै ॲवैयुम्–सभी पर्वत; ऑरु वळि तिरण्टत्त–एक स्थान पर इकट्ठे हुए; चिवण–जैसे; मकरिकै–मकराकार बाहुवलय; वयिर कुण्डलम्–हीरे के कुण्डल; अलम्पु–जिन पर हिलते थे; तिण् तिरळ् तोळ्–बहुत बलवान कन्धे; पुटै वयङ्क–पार्श्व में शोभे; चकर नीर् वेलै–सगरपुत्र-खनित जल-भरे सागर को; तळुविय कतिरिन्–आलिंगन करते हुए उठनेवाले सूर्य की तरह; तलै तॉऱुम् तलै तॉऱुम्–हर सिर पर; तयङ्कुम् वकैय–शोभायमान; पल् मकुटम्–अनेक किरीट; इळ वॅयिल् ॲऱिप्प–बाल आतप-समान प्रभा छिटकाते रहे; कङ्कुलुम् पकल् पट–रात भी दिन बनी; वन्तान्–(ऐसा) आया। ४०७

उसके कन्धे, शिखर-सहित लम्बे पर्वत सभी एकत्र हुए हों, ऐसे शोभ रहे थे। उनको मकराकार बाहुवलय अलंकृत कर रहे थे और कानों के हीरे के कुण्डल उन पर लगे डोल रहे थे। ऐसी बीस भुजाएँ उसके दोनों बाजुओं में विद्यमान थीं। उसके सिरों पर मुकुट जो थे, वे सगरपुत्र-खनित सागर से उठनेवाले सूर्य के समान लगे और बालआतप-सी कान्ति बिखेर रहे थे; जिसके कारण रात भी दिन में बदली हुई लगी। इस ठाट के साथ रावण आया। ४०७

उरुप्पशि युडैवा ळेन्दित्त डॉडर मेनहै वॅळ्ळडै युदवच्
चॅरुप्पिनैत् ताङ्गित् तिलोत्तमै शॅल्ल वरम्बैयर् कुळाम्बुडै शुऱ्ऱक्
करुप्पुरञ् जान्दुङ् गलवैयु मलरुङ् गलन्दुमिळ् परिमळ गन्दम्
मरुप्पुडैप् पॉरुप्पेर् मादिरक् कळिऱ्ऱिन् वरिक्कैवाय् मूक्किडै मडुप्प 408

उरुप्पचि–उर्वशी के; उटैवाळ् एन्तित्तळ्–तलवार लिये हुए; तॉटर–पीछे आते; मेनकै–मेनका के; वॅळ्ळटै उतव–पान देते रहते; चॅरुप्पित्तै ताङ्कि–चप्पलें उठाए हुए; तिलोत्तमै चॅल्ल–तिलोत्तमा के साथ आते; अरम्पैयर् कुळाम्–अप्सराओं के समूह के; पुटै चुऱ्ऱ–चारों ओर घेरे आते; करुप्पुर चान्तुम् कलवैयुम्–कर्पूर-चन्दन-लेप; मलरुम्–और पुष्प; कलन्तु–मिलकर; उमिळ्–जो निकालते हैं; परिमळ कन्तम्–श्रेष्ठ गन्ध; मरुप्पु उटै–दाँतों से युक्त; पॉरुप्पु एर्–पर्वत-सम; मातिर कळिऱ्ऱिन्–दिग्गजों की; वरि कै–झुर्रियों से युक्त, सूँड़ों के; वाय् मूक्किटै–मुख और नाकों में; मटुप्प–भरकर ठहरी, ऐसा। ४०८

(और भी) उर्वशी तलवार लिये साथ आ रही थी। मेनका ताम्बूलवाहिनी के रूप में उसे पान देती आ रही थी। तिलोत्तमा चप्पल लिये जा रही थी। अन्य अप्सराओं के समूह उसके चारों ओर घेरे आ रहे थे। कर्पूरचन्दन-लेप और विविध फूलों से उठती महक दाँत-सहित पर्वतों के समान रहनेवाले दिग्गजों की झुर्रियों-सहित सूँड़ों के द्वारों और मुखों में जा भर रही थी। ४०८

नाऩ्ऩॆय् विळक्क नालिरु कोडि नङ्गैय रङ्गैया लॆंडुप्प
मेनिमिर्न् दुयर्न्द मुडिहळिऩ् मणियिऩ् विरिहदि रिरुळॆलाम् विऴुङ्ग
काऩ्मुद ऱ्ऱॊडर्न्द नूबुरञ् जिलम्बक् किण्किणि कलैयींडुङ् गलिनप्
पालिऱत् तऩ्ऩक् कुऴाम्बडर्न् दॆऩ्ऩप् पऱ्पल मऴलैयुम् बहर 409

नात नॆय् विळक्कम्—कस्तूरी आदि से मिश्रित घी के दीपक; नाल् इरु कोटि–आठ करोड़; नङ्कैयर्—सुन्दरी स्त्रियाँ; अम् कैयाल् ऎंडुप्प–मनोरम हाथ में लेती आयीं; मेल् निमिर्न्तु–ऊपर उठे और; उयर्न्त–उन्नत; मुटिकळिऩ्–किरीटों के; मणियिऩ्–रत्नों से; विरि कतिर्–छूटी प्रभा; इरुळ् ऎलाम्–सारा अन्धकार; विऴुङ्क–निगल लेती है; काल् मुतल्–पैर से; तॊटर्न्तु–लगातार (पहने); नपुरम् चिलम्प–नूपुर आदि के क्वणित होते; किण्किणि–घण्टियों के; कलैयॊटुम्–मेखलाओं के साथ; कलिऩ–ध्वनित होते; पाल् निऱत्तु–दुग्धधवल; अऩ्ऩक् कुऴाम्–हंससमूह; पटर्न्तॆऩ्ऩ–फैले जैसे; पऱ्पल मऴलैयुम् पकर–विविध तुतली मधुर बोलियाँ बोलते आते। ४०९

सुन्दर स्त्रियाँ अपने मनोरम हाथों पर कस्तूरीगन्धद्रव्य-मिश्रित घी के दीये लिये आ रही थीं। रावण के किरीटों में जटित रत्नों की फैलती कान्ति अन्धकार को निगल रही थी। स्त्रियों के पादादि केश आभरणों से अलंकृत थे। नूपुर बोल रहे थे और घंटियों के साथ मेखलाएँ क्वणन कर रही थीं। वे भी आपस में तुतली और मधुर बोलियों में बात करती आ रही थीं। उनका समूह दुग्ध-धवल हंसों के समूहों के समान लगा। ४०९

अन्दरम् बुहुन्द दुण्डॆऩ्ऩ मुऩिवुऱ् ऱुरुन्दुयि ऩीङ्गिऩा ऩऩ्ऱो
शन्दिर वदऩत् तरुन्ददि यिरुन्द तण्णऱुम् शोलैयिऱ् ऱाऩो
मन्दिरम् यादो यारॊडुम् बोमो वॆऩ्ऱुदम् मनमऴु हुदलाल्
इन्दिरऩ् मुदलो रिमैप्पिला नाट्टत् तॆऩैवरु मुयिर्प्पविन् दिरुप्प 410

अन्तरम् पुकुन्तत्तु उण्टु–(कोई) आफ़त आ गयी है; ऎंऩ–ऐसा; मुऩिवुऱ्ऱु–कोप करके; अरुन्तुयिल्–प्यारी नींद को; नीङ्कित्ताऩ् अऩ्ऱो–छोड़कर इधर आया न (रावण); चन्तिर वतऩत्तु–चन्द्रवदना; अरुन्तति इरुन्त–अरुन्धती-सम सीता जहाँ रहीं; तण् नऱुम्–शीतल सुगन्धित; चोलैयिल् ताऩो–उद्यान में क्या; मन्तिरम् यातो–रहस्य क्या; यारॊटुम् पोमो–किसके सिर पर उतरेगा; ऎंऩ्ऱु–ऐसा; तम् मऩम् मऴुकुतलाल्–मन के व्यग्र होकर संकट करने से; इन्तिरऩ् मुतलोर्–इन्द्र आदि; इमैप्पिला नाट्टत्तु ऎऩैवरुम्–उन आँखों के जिनकी पलकें न गिरतीं, वे देव सब; उयिर्प्पु अविन्तु इरुप्प–श्वास रोके रहे। ४१०

रावण का अशोक वन में आना जानकर देवगण डर गये। कोई संकट आया है—ऐसा समझकर रावण कुपित हो गया और प्यारी नींद त्यागकर इधर आया है न? तब क्या उसका उद्देश्य इसी वन में आना ा, जहाँ चन्द्रवदना अरुन्धती-समाना सीताजी है? तब इसका रहस्य क्या

है ? इसका क्रोध किस पर उतरने के बाद किसके अहित के बाद शान्त होगा ? ऐसा सोचकर देव व्यग्र हुए और अपलक वे श्वास को भी रोके रहे। ४१०

नीनिऱक् कुऩ्ऱि ऩॆडिदुडऩ् ऱाऴ्ऩ्द नीत्तवॆळ् ळरुवियि ऩिमिर्ऩ्द
पानिऱप् पट्टु मालैयुत् तरियम् पशप्पुऱ पशुम्बॊऩ्ऩा रत्तिन्
मानिऱ मणिह ळिडैयुऱप् पडर्न्दु वरुहदि रिळवॆयिल् पॊरुवच्
चूनिऱक् कॊण्मूच् चुऴित्तिडै किऴिक्कु मिऩ्ऩॆऩ मार्बिऩ् ऱुळङ्ग 411

नील् निऱ कुऩ्ऱिऩ्–नीले पर्वत पर; नॆंटिटु उटऩ् ताऴ्न्त–अधिक लम्बे आकार की; नीत्त वॆळ् अरुवियिऩ्–प्रवहमान श्वेत सरिता के समान; निमिर्न्त–लम्बी; पाल् निऱ–दुग्धवर्ण; पट्टु–कौशेय; मालै उत्तरियम्–माला के समान उत्तरीय; पचप्पु उऱ–वर्ण बदलकर रहा; पचुम् पॊऩ् आरत्तिऩ्–चोखे स्वर्ण के हार के; माल् निऱ मणिकळ्–श्रेष्ठ रंग के रत्न; इटैयुऱ–बीच-बीच में; पटर्न्तु–रहकर; वरु कतिर्–उदीयमान सूर्य की; इळवॆयिल् पॊरुव–बाल-किरणों के समान; चूल् निऱ–गर्भ-सहित और घने रंग के; कॊण्मू–मेघ को; चुऴित्तु–लपेटकर; इटै किऴिक्कुम्–बीच में चीरकर चमकनेवाली; मिऩ् अॆऩ–बिजली के समान; मार्पिऩ्–वक्ष में; नूल् तुळङ्क–यज्ञोपवीत हिल रहा था, इस रीति से। ४११

उसका श्वेत कौशेय उत्तरीय उसके वक्षःस्थल पर ऐसा लग रहा था, जैसे नीले रंग के पर्वत पर लम्बी सरिता गिर रही हो। उसके रंग को बदलते हुए चोखे स्वर्णहार में जटित श्रेष्ठ कान्तिमय रत्न बीच-बीच में रहकर उदय-सूर्य की किरणों के समान प्रकाश फैला रहे थे। उसके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभ रहा था, जो जलगर्भित मेघ को लपेटे रहकर उसको चीर कर चमकनेवाली बिजली के समान शोभायमान था। ४११

तोडॊऱुन् दॊडर्न्द महरवाय् वयिरक् किम्बुरि वलयमाच् चुडर्हळ्
नाडॊऱुञ् जुडरुङ् गलिहॆळु विशुम्बि ऩाळॊडु कोळिऩै नक्कत्
ताडॊऱुन् दॊडर्न्दु तळङ्गुपॊऱ् कऴलिन् तहैयॊळि नॆडुनिलन् दडवक्
केडॊऱुन् दॊडर्न्द मुरुवल्वॆण् णिलविऩ् मुहमल रिरविनुङ् गिळर 412

तोळ् तॊऱुम् तॊटर्न्त–हर भुजा में पहने हुए; मकरवाय्–मकरमुख के; वयिर किम्पुरि वलय–हीरे-जड़ित किंपुरी नामक वलयों के; मा चुटर्कळ्–पृथुल प्रकाश; नाळ् तॊऱुम् चुटरुम्–हर दिन प्रकाश देनेवाले; कलि कॆळु विचुम्पिऩ्–खूब विशाल आकाश के; नाळॊटु कोळिऩै नक्क–नक्षत्रों को और ग्रहों को मानो चाट लेते हैं; ताळ् तॊऱुम् तॊटर्न्तु–दोनों पैरों में लगाये जाकर; तळङ्कु–जो स्वर निकालती हैं; पॊऱ्कऴलिऩ्–उन स्वर्ण-पायलों की; तकै ऒळि–श्रेष्ठ प्रभा; नॆटु निलम् तटव–लम्बी भूमि को सहलाती आती है; केळ् तॊऱुम् तॊटर्न्त–(उसके साथ आनेवाले) परिवार के हर सदस्य के प्रति दिखाये गये; मुऱुवल् वॆळ् निलविऩ्–हास रूपी श्वेत चाँदनी से; मुक मलर्–मुख रूपी सुमन; इरविऩुम् किळर–रात के समय में भी खिला रहता है, इस रीति से। ४१२

उसकी सभी भुजाओं में मकरमुख के आकार के किंपुरी नामक वाहुवलय थे। उनमें हीरे के रत्न जड़े थे। उनसे जो कान्ति छूटी वह घने आकाश में प्रतिदिन चमकनेवाले तारों और ग्रहों को चाट रही थी। उसके परों में क्वणनशील स्वर्ण-पायलें थीं। उनसे जो कान्ति छूट रही थी, वह भूमि को सहलाती-सी लग रही थी। वह अपने साथ आनेवाले परिवार के हर सदस्य को हासयुक्त वदन के साथ देख रहा था। उस हास रूपी श्वेत चाँदनी में उसके मुखसुमन रात में भी खिल रहे थे। ४१२

तन्निऱत् तोडु माऱुतन् दिमैक्कु नीवियिन् ऱळैपड वुडुत्त
पॊन्निऱत् तूशु करुवरै मरुङ्गि ऱळुविय विळवॆयिल् पॊरुव
मिन्निऱक् कदिरिऱ् चुऱ्ऱिय पशुम्बॊन् विरऱ्ऱलै वीऱॊळिक् काशिन्
कन्निऱक् कऱ्ऱै नॆडुनिळल् पूत्त कऱ्पह मुळुवनङ् गविन 413

तन् निऱत्तोटु–उसके रंग से; माऱु तन्तु–विपरीत वनकर; इमैक्कुम्–छवि देनेवाला; नीवियिन् तळैपट–नीवि में बद्ध होकर अधिक घने सिलवटों से युक्त; उटुत्त–पहने हुए; पॊन् निऱ तूचु–सुनहले वस्त्र; करुवरै मरुङ्किल्–काले पर्वत-मध्य; तळुविय–पड़े; इळ वॆयिल् पॊरुव–वाल आतप-से लगे; मिन् निऱ–विजली के रंग की; कतिरिन्–प्रभा से; चुऱ्ऱिय–घिरी; पचुम् पॊन्–चोखे स्वर्ण की; विरल् तलै–उँगलियों पर की; वीऱु ऒळि काचिन्–(मुँदरियों की) चमकदार श्रेष्ठ रत्न रूपी; कल् निऱ कऱ्ऱै–पत्थरों की प्रभा की लटें; नॆटु निळल्–दीर्घ प्रकाश-सहित; पूत्त–विकसित; कऱ्पक मुळुवनम् कविन–बड़े कल्पवन के समान शोभीं। ४१३

उसकी धोती में नीवि के नीचे सिलवटें अधिक लगी थीं। वह सुनहला रेशमी वस्त्र था। वह काले पर्वत पर पड़नेवाली वालसूर्य की रोशनी के समान लग रहा था। बिजली के-से रंग वाले, चमकदार स्वर्ण की, उँगलियों पर पहनी हुई मुँदरियों के रत्नों से निकलनेवाली कान्ति की लटें दीर्घ प्रकाश से शोभायमान कल्पवन के समान लगीं। ४१३

शन्नवी रत्त कोवैवॆण् डरळ मूळियि निऱुदियिऱ् ऱळवि
पॊन्नॆडु वरैयै तीत्तिय कोळु नाळुमोत् तिडैयिडै पॊलिय
मिन्नॊळिर् मौलि युदयमाल् वरैयिन् मीप्पडर् वॆङ्गदिर्च् चॆल्वर्
पन्निरु वरिनु मिरुवरुन् दविर वुदित्तदोर् पडियॊळि परप्प 414

चन्न वीरत्त–'शन्नवीर' नामक हार के; कोवै वॆळ् तरळम्–लड़ियों में रहे श्वेत मोती; ऊळियिन् इऱुतियिल्–युगान्त में; पॊन् नॆटु वरैयै–स्वर्ण के बड़े (मेरु) पर्वत को; तळुवि तीत्तिय–लपेटकर जो लटक रहे हैं; कोळुम् नाळुम् ऒत्तु–तारे और ग्रहों की समानता पाकर; इटै इटै पॊलिय–मध्य-मध्य चमकते हैं; मिन् ऒळिर् मौलि–विद्युत् के समान चमकनेवाले किरीट; उतयमाल् वरैयिन् मी–उदयगिरि पर; पटर्–फैली रही; वॆम् कतिर्–गरम किरणों के; चॆल्वर्–देवता (द्वादश) रुद्रों

में; पन्निरुवरिनुम् इरुवरुम् तविर–दो को छोड़ अन्य; उतित्ततु ओर् पटि–उदित हों जैसे; ऑळि परप्प–प्रकाश फैला रहे थे, इस रीति से। ४१४

उसने 'शन्नवीर' नाम का हार पहन रखा था। उसमें मोती लड़ियों में लगे थे, वे युगान्त में स्वर्ण-मेरुपर्वत पर लगे लटकनेवाले नक्षत्रों और ग्रहों के समान उस हार में मध्य-मध्य लग रहे थे। बिजली के समान कान्ति विखेरनेवाले किरीट बारह आदित्यों में दो कम करके बाकी दस आदित्यों के समान लगे, जो बड़ी उदयगिरि पर दिखायी देते हों। किरीट उनके समान प्रकाश बिखेर रहे थे। ४१४

पयिलॅयिऱ् ऱिरट्टैप् पणैमरुप् पोडियप् पडियिनिऱ् परिबवञ् जुमन्द
मयिलडित् तॊळुक्कि नन्नैयमा मदत्त मादिरक् कावल्माल् यानै
कयिलैयिऱ् ऱिरण्ड मुरण्डोडर् तडन्दोळ् कनहन्न दुयर्वरङ् गडन्द
अयिलॅयिऱ् ऱरियिन् शुवडुतन् करत्ता लळैन्दमाक् करियिनिन् ऱञ्ज 415

पयिल् ऍयिऱ्ऱु इरट्टै–युक्त दो-दो; पणै मरुप्पु–बलवान दाँत; ऑटिय–टूटे, इसलिए; पटियिनिल्–भूमि पर; परिपवम् चुमन्त–अयश धारण करनेवाले; मयिल् अटित्तु–मोर के पैर के; ऑळुक्किन् अनैय–प्रकार के समान तीन धाराओं में बहनेवाले; मा मतत्त–अधिक बहाव से मदयुक्त; मातिर कावल्–दिग्पालक; मा यानै–बड़े गज; कयिलैयिल् तिरण्ट–कैलास पर्वत के समान पुष्ट; मुरण् तॊटर्–सबल; तटम् तोळ् कनकनतु–विशाल भुजा वाले कनककशिपु के; उयर् वरम् कटन्त–बहुत श्रेष्ठ वरों को जीतनेवाले; अयिल् ऍयिऱ्ऱु–तीक्ष्ण दाँतों से युक्त; अरियिन्–नृसिंह की; चुवटु–पदछाप को; तन् करत्ताल्–अपनी सूँड़ से; अळैन्त–टटोलनेवाले; मा करियिन्–बड़े गज; निन्ऱु अञ्च–खड़े होकर डर रहे हैं; इस रीति से रावण आया। ४१५

दिग्गजों के चार-चार दाँत (रावण के साथ युद्ध में) टूटे और उन्हें अपमान लगा। उनके गण्डस्थल में तीन धाराओं में मदनीर बह रहा था, जो मोर के पैरों के तीन नाखूनों का-सा दृश्य उपस्थित कर रहा था। वे दिग्गज रावण की पद-छाप को देखकर ऐसे डरे, मानो कैलासपर्वत के समान कठोर और बलवान कन्धों वाले हिरण्यकशिपु के बहुत श्रेष्ठ वरों को भी जो व्यर्थ कर चुके थे, उन नृसिंह की पद-छाप को अपनी सूँड़ों से टटोलते हुए डर रहे हों। ४१५

अङ्गयऱ् करुङ्ग णियक्कियर् तुयक्कि लरम्बैयर् विञ्जैयर्क् कमैन्द
नङ्गैयर् नाह मडन्दैयर् शित्त नारिय रक्कियर् मुदलाम्
कुङ्गुमक् कॊम्मैक् कुविमुलैक् कनिवायक् कोहिलन् दुयरुङ् गुदलै
मङ्गैय रीट्ट माल्वरै तळीइय मञ्जैयङ् गुळुवॆन वयङ्ग 416

अम् कयल्–सुन्दर 'कयल' मछली-सी; करुम् कण् इयक्कियर्–काली आँखों की

यक्षस्त्रियाँ; तुयक्कु इल्–अथक; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; विऴ्चैयर्क्कु अमैन्त नङ्कैयर्–विद्याधर कुल की दयिताएँ; नाक मटन्तैयर्–नागांगनाएँ; चित्त नारियर्–सिद्धस्त्रियाँ; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मुतलाम्–आदि; कुङ्कुम–कुंकुम-लिप्त; कॉम्मै–पीन; कुवि मुलै–सुडौल स्तन; कऩिवाय्–बिम्बाधर; कोकिलम् तुयरुऱुम्–कोकिल को दुःखी करनेवाली; कुतलै–मधुर वाणी; मङ्कैयर् ईट्टम्–इनसे युक्त स्त्रियों के समूह; माल् वरै तऴीइय–बड़े पर्वत पर रहे; मञ्ञै अम् कुऴु–मोरों के मनोरम वृन्दों; अऩ्ऩ–के समान; वयङ्क–शोभायमान लगे। ४१६

रावण के साथ स्त्रियों का समूह आ रहा था। यक्षस्त्रियाँ, जिनकी काली आँखें मनोहर कयल मछली के समान थीं; अथक अप्सराएँ; विद्याधर जाति की स्त्रियाँ; नागकन्याएँ; सिद्धनारियाँ; राक्षसियाँ आदि उस समूह में थीं। सबकी सब सुन्दरियाँ थीं, कुंकुम-लिप्त पुष्टस्तनी, बिंबाधरा और कोकिलपीडक मधुरवाणी रमणियाँ। वे उन मोरनीयों के समान थीं, जो किसी पर्वत का आश्रय लेकर उसी पर रहती हैं। वे रावण के साथ मिली आ रही थीं। (रावण ऐसा आ रहा था।)। ४१६

तॉळैयुऱु पुऴैवेय् तूङ्गिशैक् काऩम् तुयलुऱा दॉरुनिलै तॉडर
इळैयवर् मिडऱु मिऩ्निलै यियक्क किऩ्नर मुऱैनिऱुत् तॅडुत्त
किळैयुऱु पाडल् चिल्लरिप् पाण्डि ऱऴुविय मुऴवॉडुङ् गॉऴुमि
अळैयुऱै अरवु ममुदुवा युहुप्प वण्डमुम् वैयमु मळप्प 417

तॉळै उऱु–रन्ध्र-सहित; पुऴै वेय्–पोली बाँस की वंशी से उत्पन्न; तूङ्कु इचै काऩम्–मृदु स्वर का गाना; तुयल् उऱातु–बिना बिगड़े; ऑरु निलै तॉटर–समान रीति से हो रहा था; इळैयवर्–छोटी उम्र की कन्याओं का; मिटऱुम्–कण्ठस्वर भी; इऩ् निलै इयक्क–मनोहर रीति से गा रहा था; किऩ्नरम्–किन्नर नाम की वीणा का; मुऱै निऱुत्तु ॲटुत्त–उचित प्रकार से निकाला; किळै उऱु पाटल्–स्वर-शुद्ध संगीत; चिल्लरि पाण्टिल् तऴुविय–छोटे कंकड़-भरे 'पांडिल' नामक वाद्य से मिलकर निकली; मुऴवॉटुम्–मृदंग(-ध्वनि) के साथ; कॉऴुमि–लय होकर; अळै उऱै अरवुम्–बाँबी में रहनेवाले नाग भी; अमुतु वाय् उकुप्प–अमृत अपने मुख से उगले ऐसा; अण्टमुम्–बाह्याण्डों और; वैयमुम्–इस भूमि को; अळप्प–मानो माप रहा हो (अण्डों और भूमि पर सर्वत्र वह संगीत व्याप्त हो रहा था)। ४१७

अनेक छिद्रों से युक्त बाँस की वनी वंशी का मृदु संगीत बिना किसी दोष या रुकावट के, समरस हो सुनायी दे रहा था। कमसिन रमणियों का कण्ठस्वर-संगीत भी साथ-साथ हो रहा था। 'किन्नर' नामक वाद्य का संगीत, जो तंत्रियों के मीड़ने से होता है, छोटे कंकड़ों से भरे 'पांडिल' नामक तालवाद्य के तालस्वर के और मर्दल के नाद के साथ मिलकर ऐसा मधुर चल रहा था कि बाँबी के सर्प का मुख भी (विष के बदले) अमृत बहावे। यह संगीत-स्वर मानो बाह्यांडों और इस अण्ड को भी नाप रहा था (यानी सर्वत्र व्याप्त हो रहा था)। ४१७

अऩ्ऩपूम् जवुक्कम् जामरै युक्क मादियाय् वरिशैयि ऩमैऩ्द
उऩ्ऩरुम् पॊऩ्ऩिऩ् मणियिऩिऱ् पुऩैऩ्द वुऴैक्कुलम् मऴैक्कुल मऩैय
मिऩ्ऩिडैच् चॆव्वायक् कुविमुलैप् पणैत्तोळ् वीङ्गुदे रलहुलार् ताङ्गि
नऩ्ऩिऱक् कारिऩ् वरवुहण् डुवक्कुम् नाडह मयिलॆऩ नडप्प 418

अऩ्ऩ–इस भाँति; मऴैक्कुलम् अऩैय–मेघवृन्दों के समान; मिऩ् इटै–बिजली-सी कमर; चॆव्वाय्–लाल अधर; कुवि मुलै–और सुडौल स्तन; पणै तोळ्–बाँस के समान कन्धे; वीङ्कु तेर्–बड़े रथ के समान; अल्कुलार्–भग, इनके साथ शोभित राक्षसियाँ; पूम् चवुक्कम्–पुष्प-चतुष्कोण वितान; चामरै–चँवर; उक्कम्–पंखे; आतियाय् वरिचैयिऩ् अमैऩ्त–आदि यथाक्रम जो थे वे; उऩ्ऩरुम्–अचिंत्य रूप से उत्कृष्ट; पॊऩ्ऩिऩ्–स्वर्ण से; मणियिऩिल्–और रत्नों से; पुऩैऩ्त–रचित; उऴै कुलम्–हरिणों को; ताङ्कि–धारण करके; नल् निऱ कारिऩ्–अच्छे रंग के मेघ का; वरवु कण्टु–प्रकट होना देखकर; उवक्कुम्–मुदित होनेवाले; नाटक मयिल् अॆऩ–नर्तक मयूर के समान; नटप्प–साथ चलती आतीं। ४१८

इस रीति से रावण जा रहा था। उसके साथ मेघसमूह के समान राक्षसियों का झुण्ड भी जा रहा था। वे राक्षसियाँ, विद्युत्कटि, अरुणाधरा, पीनस्तनी, वंशस्कन्धा, रथनितंबिनी स्त्रियाँ थीं। वे चौकोर पुष्पवितान, चामर, पंखे आदि राजोचित मर्यादा-चिह्न और अत्यन्त मनोहर स्वर्ण और रत्नों से निर्मित हरिणों को लेकर श्रेष्ठ काली घटा को देखकर मुदित होनेवाले नर्तनशील मोरों के समान जा रही थीं। ४१८

तन्दिरिक् कण्णिऱ् ऱाक्कुऱु करुवि तूक्किऩ रॆऴुविय शदियिऩ्
मुऩ्दुऱु कुणिलो डियैवुऱु कुऱट्टिऱ् चिल्लरिप् पाण्डिलिऩ् मुऱैयिऩ्
मन्दर कीदत् तिशैप्पदऩ् दॊडर्न्द वहैयुऱु कट्टळै वऴामल्
अन्दर वाऩत् तरम्बैयर् करुम्बिऩ् पाडला रुहुवन् दाड 419

तन्तिरिक् कण्णिल्–तन्त्रियों पर; ताक्कुऱु करुवि–जो चोट खाती है (और स्वर निकालती है), उस वीणा आदि वाद्यों को; तूक्किऩर्–बजानेवाले; अॆऴुविय चतियिऩ्–जो 'यति' निर्धारित करते हैं, उनके अनुरूप; मुऩ्तुऱु–पहले शब्दित होनेवाले; कुणिलॊटु इयैवु उऱु–चोब के प्रहार से स्वर निकालनेवाले; कुऱट्टिल्–'कुरडु' नाम के चमड़े के वाद्य के; चिल्लरि पाण्टिलिऩ्–छोटे कंकड़-भरे 'पाण्डिल' नामक वाद्य के; मुऱैयिऩ्–उचित क्रम से; मऩ्तर कीतत्तु–मध्य स्वर के गीत के; इचै पतम् तॊटर्ऩ्त–स्वरित शब्दों के अनुरूप; वकै उऱु कट्टळै–विधिक्रम का; वऴामल्–उल्लंघन किये विना; अन्तर वाऩत्तु–अन्तरिक्ष की; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; करुम्पिऩ् पाटलार्–इक्षु-सदृश मधुर संगीत जाननेवालियाँ; अरुकिल् वन्तु–रावण के पास आकर; आट–नाचती आयीं। ४१९

व्योमलोक की अप्सराएँ, जो इक्षुरसमधुर गान में भी चतुर थीं, रावण के पास-पास नाचती हुई आ रही थीं। तब तंत्रीनाद-वीणावादक भी आ

रहे थे। उन अप्सराओं का नाच उनके वादन द्वारा निर्धारित 'यति' के अनुरूप हो रहा था। चोत्र से प्रताड़ित 'कुरडु' नामक चमड़ा-मढ़े वाद्य से निकला नाद, छोटे कंकड़ों से भरे 'पांडिल' नामक वाद्य से निकला नाद, शास्त्रनिर्धारित और मद्धिम स्वर में गाया कण्ठ-संगीत —इन सबका अच्छा समाँ बँधा था और नाच उससे ताल-मेल के साथ हो रहा था। ४१९

अन्दियि ननङ्ग नळल्पडत् तुरन्द वयिन्मुहप् पहळिवा यरुत्त
वॆन्दुरु पुण्णिन् वेल्नुळैन् दॆन्नन् वॆण्मदिप् पशुङ्गदिर् विरव
मन्दमा रुदम्बोय् मलर्तॊरुम् वारि वयङ्गुनीर् मारियिन् वरुतेन्
शिन्दुनुण् डुळियिन् शीहरत् तिवलै युरुक्किय शॆम्बॆनत् तॆरिप्प 420

अनृतियिन्–सायंकाल में; अनङ्कन्–मन्मथ द्वारा; अळल् पट–जलाने के लिए; तुरन्त–प्रेरित; अयिल् मुक–तीक्ष्णमुख; पकळि वाय्–शरों से; अरुत्त–काटकर बने; वॆन्तुरु पुण्णिन्—ताजे व्रणों में; वेल् नुळैन्तॆन्न–भाला घुसा हो जैसे; वॆण् मति पचुम् कतिर्–श्वेत चन्द्र की शीतल किरणें; विरव–मिल गयीं; मन्त मारुतम्–मन्दमारुत; मलर् तॊरुम् पोय्–पुष्प-पुष्प पर जाकर; वारि वरु–जो ले आता है; वयङ्कु नीर् वारियिन्–अंगीभूत रहनेवाले जल की मेघ-वर्षा के समान; तेन्–शहद की; चिन्तु नुण् तुळियिन्–टपकनेवाली छोटी बूँदों के; चीकर तिवलै–छोटे कणों के; उरुक्किय चॆम्पु–पिघले ताम्र; ॲन–के समान; तॆरिप्प–छिटकते (रावण आया)। ४२०

श्वेत चाँद की शीतल चाँदनी छिटक रही थी, वह रावण को ऐसा लग रहा था, मानो सन्ध्या-वेला में मन्मथ द्वारा जलाने के लिए प्रेषित शरविद्ध व्रण में भाला घुसा हो। मन्द मलयमारुत के साथ पुष्प-पुष्प पर जा संगृहीत मधु-धारा के छोटे-छोटे कण आ रहे थे और वे रावण पर पिघले ताम्र के कणों के समान पड़कर ताप दे रहे थे। ४२०

इळैपुरै मरुङ्गु लिरुमिरु मॆन्नवु मिरुहिला वन्नमुलै यिरट्टै
उळैपुहु शॆप्पि नॊळिदर मरैत्त वुत्तरी यत्तिन रॊल्हिक्
कुळैपॊरुङ् गमलक् कोट्टिन्नर् नोक्कुङ् गुरुनहैक् कुमुदवाय् महळिर्
मळैपुरै यॊण्गण् शॆङ्गडै यीट्ट मार्बिनुन् दोळिनुम् वयङ्ग 421

इळैपुरै–सूत्रसम; मरुङ्कुल्–कमर; इरुम् इरुम् ॲॅनवुम्–टूटेगी, टूटेगी, ऐसा कहने योग्य; इरुकिला–तो भी नही टूटेंगे, ऐसा(कठिन); वन्न मुलै इरट्टै–मनोरम स्तनद्वय; उळै पुकु–अन्दर धँसे हुए; चॆप्पिन्–कटोरियो के समान; ऑळितर–शोभा देते है; मरैत्त–उनको आच्छादित करनेवाले; उत्तरीयत्तिनर्–उत्तरीयों से अलंकृत; ऑल्कि–नरम बनकर; कुळै पॊरुम्–कुण्डलों से टकरानेवाली; कमलम्–कमलनयनों वालियाँ (जो); कोट्टिनर् नोक्कुम्–तिरछी रीति से रावण को देखती हैं; कुरुनकै–मन्दहास-सहित; कुमुत वाय् मकळिर्–कुमुदाधरा स्त्रियों के; मळै पुरै–मेघ-सम (काली); ऑण् कण्–प्रकाशमय आँखों की; चॆम् कटै ईट्टम्–लाल कोरों का

समूह; मार्पित्तुम् तोळित्तुम्-(रावण के) वक्ष और भुजाओं पर; वयङ्क-लगा रहता है, ऐसा। ४२१

सुन्दरी स्त्रियों की दृष्टि रावण पर लगी हुई थी। सूत्र-सम उनकी कमरें अभी टूटी, अभी टूटी की स्थिति में थीं। तो भी नहीं टूटीं। सुदृढ़ स्तनद्वय वक्षों में धँसे हुए कटोरों के समान शोभ रहे थे। उन स्तनों को उत्तरीय आच्छादित कर रहा था। उनकी आँखें कुण्डलों तक गयी थीं, मानो उनसे भिड़ने चली हों। मन्दहासवदना कुमुदाधरा स्त्रियाँ अपनी आँखें तिरछी करके मेघ-सम काली, उज्ज्वल उन आँखों की लाल बनी कोरों से रावण पर अपनी दृष्टियों को डाले जा रही थीं। ४२१

मालैयुञ् जान्दुङ् गलवैयुम् बूणुम् वयङ्गुतुण् डूशॊडु काशुम्
शोलैयिन् ऱॊळ्दिक् कऱ्पहत् तरुवु निदिहळुङ् गॊण्डुपिन् ऱॊडरप्
पालिन्वॆण् परवैत् तिरैकरुङ् गिरिमेऱ् परन्दॆनच् चामरै पदैप्प
वेलैनिन् ऱुयरु मुयलिल्वाल् मदियिन् वॆण्गुडै मीदुऱ विळङ्ग 422

चोलैयिन् तॊळुति-वन के समान घने; कऱ्पक तरुवुम्-कल्पतरु; नितिकळुम्-(शंख, पद्म आदि नव) निधियाँ; मालैयुम्-मालाएँ; चान्तुम्-चन्दन; कलवैयुम्-मिश्रित लेप; पूणुम्-आभरण; वयङ्कु तुण् तूचॊटु-शोभायमान महीन वस्त्रों के साथ; काचुम्-और रत्न; कॊण्टु पिन् तॊटर-लेकर पीछे आते है; पालिन्-क्षीर; परवै वॆण् तिरै-सागर की श्वेत तरंगें; करुम् किरि मेल्-काले पर्वत पर; परन्तॆन-फैलीं जैसे; चामरै पतैप्प-चामर डुलते हैं; वेलै निन्ऱु-समुद्र से; उयरुम्-उत्तरोत्तर ऊँचा चढ़नेवाले; मुयल् इल्-शशकहीन; वाल् मतियिन्-श्वेत चन्द्र के समान; वॆण् कुटै-श्वेत छत्र; मीतु उऱ विळङ्क-ऊपर सुन्दर रूप से शोभता है, इस तरह। ४२२

वन के समान अधिक संख्या में कल्पतरु और शंख, पद्म आदि नव-निधियाँ भी साथ आ रही थी। वे मालाएँ, चन्दन, मिश्रगन्ध-लेप, आभरण, शोभायमान महीन वस्त्र, रत्न आदि लेकर उसका अनुगमन कर रही थीं। चामर डुल रहे थे, और वे क्षीरसागर की तरंगों के काले पर्वत पर फैलने का दृश्य पैदा कर रहे थे। श्वेत छत्र उसके ऊपर एक कलंकहीन चन्द्र के समान शोभित हो रहा था, जो समुद्र से उत्तरोत्तर ऊपर उठ रहा हो। ४२२

आर्हलि यहळि यरुवरै यिलङ्गै यडिपॆयर्त् तिडुतॊऱु मळत्त
नेर्करुम् बरवैप् पिऱळ्दिरै तवळ्न्दु नॆडुन्दडन् दिशैतॊऱुम् निमिरच्
चार्वरुङ् गडुवि नॆयिऱुडैप् पहुवा यनन्दनुन् दलैतडु माऱ
मूरिनी राडै यिरुनिलप् पावै मुडुहुळुक् कुऱ्ऱन ळॊळिय 423

आर् कलि अकळि-समुद्र जिसकी परिखा हो; अरु वरै इलङ्कै-श्रेष्ठ (त्रिकूट) पर्वत पर बसी लंका; अटि पॆयर्त्तिटुम् तॊऱुम्-जब पग धरता है; अळुत्त-दवाने

से; नेर्–सामने के; करुम् परवै–काले सागर पर; पिऱळ् तिरै–लहरानेवाली तरंगें; तवऴ्न्तु–चलकर; नॅट्टुम् तटम्–उसकी लम्बी और चौड़ी; तिचै तॉऱुम्–सारी दिशाओं में; निमिर–भर जाती हैं; चार्वु अरुम्–अगम; कट्टुविन् ऍयिऱुटै–विषैले दाँतों वाले; पकुवाय् अतन्ततुम्–फटे जैसे बड़े मुख वाले अनन्तनाग के भी; तलै तटुमाऱ–भार के कारण (अपने) सिर लड़खड़ाते हैं; मूरि नीर्–सबल जल; आटै–जिसका वसन है; इरु निल पावै–वह भूदेवी; मुतुकु उळुक्कुर्ऱ्तळ्–पीठ पर बल पड़ने से; नॅळिय–हिल उठी। ४२३

लंका नगरी बड़े त्रिकूट पर्वत पर स्थित थी और उसके चारों ओर शब्दायमान सागर घेरे हुए था। ज्यों-ज्यों रावण अपना एक चरण उठाकर दूसरा रखता, त्यों-त्यों लंका दब जाती। तब सामने के बड़े सागर पर उठनेवाली तरंगें चारों दिशाओं में फैलतीं और विकट तथा विषैले दाँतों के और फटे हुए-से दिखनेवाले बड़े मुखों के अनन्तनाग के सिर डगमगा जाते और भूदेवी की पीठ में वेदना के साथ बल पड़ जाता। ४२३

केडहत् तोडु मळुवॅळुच् चूल मङ्गुशङ् गप्पणङ् गिडुहो
डाडहच् चुडर्वा ळयिल्शिलै कुलिश मुदलिय वायुद मनैत्तुम्
ताडहैक् किरट्टि यॅरुळ्वलि तळैत्त तहैमैयर् तडवरै पॉरुक्कुम्
चूडहत् तडक्कैच् चुडुशिनत् तडुपो ररक्कियर् तलैदॉरुञ् जुमप्प 424

ताटकैक्कु इरट्टि–ताड़का के दुगुने; ॲरुळ्वलि तळैत्त–अधिक बलसंयुक्त; तकैमैयर्–योग्य; तटवरै पॉरुक्कुम्–बड़े पर्वतों को धारण करनेवाले; चूटक तटकै–कंकणालंकृत बड़े हाथों से युक्त; चुटु चित्ततु–संतापक क्रोधी; अटु पोर् अरक्कियर्–संहारक युद्धकुशल राक्षसियाँ; केटकत्तोटु–ढालों के साथ; मळु–परशु; ॲळु–मूसल; चूलम्–और शूल; अङ्कुचम्–अंकुश; कप्पणम्–और 'कप्पण' नामक हथियार; किटुकु ओटु–'किटुकु' नामक हथियार के साथ; आटक चुटर् वाळ्–सुनहली उज्ज्वल तलवार; अयिल्–और भाला; चिलै–धनु; कुलिचम्–और कुलिश; मुतलिय–आदि; आयुतम् अनैत्तुम्–सारे हथियार; तलै तॉऱुम्–अपने-अपने सिर पर; चुमप्प–धारण किये आ रही हैं। ४२४

उस रावण के साथ ताड़का से दुगने बल से संयुक्त, बड़े-बड़े पर्वतों को भी उठा सकनेवाले कंकणशोभित हाथों की और संतापक क्रोधशीला और युद्ध में त्रास मचानेवाली अनेक राक्षसियाँ ढाल, परशु, लोहे का मूसल, त्रिशूल, अंकुश और 'कप्पण' नामक काँटेदार गदा, काठ की बनी 'किडुहु' नामक ढाल और सुनहली उज्ज्वल तलवारें आदि सभी हथियार अपने-अपने सिर पर ढोते हुए जा रही थी। ४२४

विरितळिर् मुहैपूक् कॉम्बडै मुदल्वे रिवैयॅला मणिपॉन्नाल् वेय्न्द
तरुवुयर् शोलै तिशैदॉरुङ् गरियत् तळलुमि ळयिर्प्पुमुन् ऱवळत्

तिरुमह ळिरुन्द दिशैयऱिन् दिरुन्दुन् दिहैप्पुरु शिन्दैयाल् कॅडुत्त
दोरुमणि नेडुम् प:(ह्)रलै यरवि नुळैदोरु मुळैदोरु मुलावि 425

विरि तळिर्–विकसित पल्लव; मुकै–कलियाँ; पू–और फूल; कॉम्पु–और टहनियाँ; अटै–पत्ते; मुतल्–तने; वेर्–जड़ें; इवै ॲलाम्–ये सब; मणि पॊन्नाल् वेय्न्न–रत्न और स्वर्ण-निर्मित जैसे (जिसमें थे); तरु उयर् चोलै–तरुलसित वन; तिचै तोरुम्–(रावण जिस-जिस दिशा में देखता है) उस-उस दिशा में; करिय–झुलस जाता है, ऐसा; तळल् उमिळ्–आग उगलता हुआ; उयिर्प्पु–श्वास जो छोड़ता है; मुन् तवळ–वह आगे-आगे जाता है; तिरु मकळ् इरुन्त–जहाँ श्रीलक्ष्मी रहीं वह; तिचै–दिशा; अऱिन्तिरुन्तुम्–जानता था तो भी; तिकैप्पु उरु चिन्तैयाल्–भ्रान्त मन का था, इसलिए; कॅटुत्ततु ओरु मणि–खोयी हुई श्रेष्ठ मणि को; नेटुम्—खोजनेवाले; प'.रलै अरविन्–अनेक सिरों के सर्प के समान; उळैतोरुम् उळैतोरुम्–स्थान-स्थान पर; उलावि–फिरता हुआ। ४२५

विकसित कल किसलय, कुडमल, सुमन, छोटी टहनियाँ, पत्ते, तने और जड़ें ये सब मानो स्वर्ण और रत्न के बने लगे। ऐसे तरुओं से परिपूर्ण वह वन, जिस दिशा में रावण की दृष्टि पड़ी, उस दिशा में जल, झुलस जाता था। ऐसा अग्निमय श्वास को आगे जाने देते हुए वह जा रहा था। उसे मालूम था कि देवी कहाँ थीं। तो भी उसका मन वश में नहीं रहा इसलिए भ्रमित होकर खोई हुई अपनी मणि की खोज में जानेवाले बहुसिर नागसर्प के समान स्थान-स्थान पर घूमता फिरता। ४२५

इन्नैयदोर् तन्मै यॅरुळ्वलि यरक्क रेन्दल्वन् दॅय्दुहिन् ऱान्नै
अन्नैयदोर् तन्मै यञ्जनैच् चिऱुवन् कण्डनन् नमैवुऱ नोक्कि
विन्नैयमुञ् जॅयलुम् मेल्विळै पॊरुळु मिव्वळि विळङ्गुमॅन् ऱॅण्णि
वन्नैहळ लिरामन् पॅरुम्बॅय रोदि यिरुन्दनन् वन्दयन् मऱैन्दे 426

इन्नैयतु ओर् तन्मै–ऐसे अपूर्व स्वभाव का; ॲरुळ् वलि–अपार बल का; अरक्कर् एन्तल्–राक्षसों का राजा (रावण); वन्तु ॲय्तुकिन्ऱान्नै–वहाँ जो आ रहा था उसे; अन्नैयतु ओर् तन्मै–वैसे स्वभाव के; अञ्चनै चिऱुवन्–अंजनासुत ने; कण्टनन्–देखा; अमै उऱ नोक्कि–सावधानी से सोचकर; विन्नैयमुम् चॅयलुम्–उपाय, कार्य और; मेल् विळै पॊरुळुम्–आगे होनेवाला नतीजा; इ वळि विळङ्कुम्–अब विदित हो जायगा; ॲन्ऱु ॲण्णि–यह सोचकर; वन्नै कळल् इरामन्–वीरपायलधारी श्रीराम के; पॅरुम् पॅयर् ओति–श्रेष्ठ पावन नाम का जप करके; अयल् वन्तु–पास आकर; मऱैन्तु इरुन्तनन्–छिपा बैठा रहा। ४२६

इस तरह के ठाट के साथ अपार वलवान राक्षसों का राजा रावण वहाँ आ रहा था और ऊपर वर्णित अञ्जनासुत ने उसे देखा। मन लगाकर सोचा। रावण क्या करेगा, क्या नीति अपनाएगा और उसका फल क्या होगा —आदि बातें अब ज्ञात हो जायँगी। ऐसा सोचकर हनुमान

वीर पायलधारी श्रीराम के पावन नाम का जप करता हुआ पास आकर एक स्थान पर छिपा रहा। ४२६

आयिडै यरक्क नरम्बैयर् कुऴुवु मल्लवुम् वेरुय लहल
मेयिनन् पॅण्णिन् विळक्कॅनुन् दहैया ळिरुनदुळि याण्डवळ् वॅरुविप्
पोयिन्न युयिर ळामॅन नडुङ्गिप् पॉऱिवरि यॅरुऴ्वलिप् पुहैक्कण्
काय्शिन् वुऴुवै तिन्निय वन्द कलैयिळम् बिणैयॅनक् करैन्दाळ् 427

आ इटै–तब; अरक्कन्–राक्षस (रावण); अरम्पैयर् कुऴुवुम्–अप्सराओं के समूह; अल्लवुम्–और अन्य वृन्दों के; वेरु अयल् अकल–अलग दूर जाते; पॅण्णिन् विळक्कु–स्त्रियों में दीपक; ऍनुम् तकैयाळ्–कहने योग्य सीतादेवी; इरुनतुळि–जहाँ रहीं वहाँ; मेयिनन्–गया; आण्टु–तब; अवळ्–देवी; वॅरुवि–डरकर; पोयित्त उयिरळ् आम् ऍन–विगतप्राणा-सी; नटुङ्कि–काँपकर; पॉरि वरि–बिंदियों और धारियो से युक्त; ऍरुऴ् वलि–अपार बलवान; पुकै कण्–धुआँ निकालनेवाली आँखों के; काय् चित्त–त्रासक क्रोध वाले; उऴुवै–व्याघ्र के; तिन्निय वन्त–खाने के लिए (रूप में) आयी; कलै इळम् पिणै ऍन–बाल-मृगी के समान; करैन्ताळ्–दुर्बल पड़ गयीं। ४२७

तब अप्सरा स्त्रियों और अन्य स्त्रियों के दल रावण से अलग दूर हो गये। रावण वहाँ गया, जहाँ स्त्रीकुलदीपक-सी सीताजी रहीं। तब सीताजी डरकर विगतप्राणा हुई-सी काँप उठीं। वह उस मृगी के समान दुर्बल पड़ी, जो बिंदियों और धारियों से युक्त, धुआँ निकालनेवाली आँखों और तापक क्रोध के अपार शक्तियुत व्याघ्र के सामने उसके खाने के रूप में आयी हो। ४२७

❀ कूशि	यावि	कुलैवुरु	वाळैयुम्
आशै	यालुयि	राशरु	वानैयुम्
काशिल्	कण्णिणै	शान्रॅनक्	कण्डनन्
ऊश	लाड	लॉऴिन्द	वुळ्ळत्तान् 428

ऊचल् आटल्–झूले की तरह चंचलता से; ऑऴिन्त उळ्ळत्तान्–रहित मन वाला; कूचि–सिमटकर; आवि कुलैवु उरुवाळैयुम्–प्राण जिनके डोल रहे है, उन सीता को और; आचैयाल्–कामना के कारण; उयिर् आचु–प्राणबन्धन; अरुवानैयुम्–जिसका नष्ट हो रहा था उस (रावण) को; काचु इल्–निर्दोष; कण् इणै–अक्षद्वय; चान्रु ऍन–साक्षी बनाकर; कण्टनन्–देखा। ४२८

अचंचल-मन हनुमान ने, सिमटकर प्राणविकम्पित रहनेवाली सीता को और कामेच्छा के कारण प्राणबन्धन-विमुक्त होनेवाले रावण को अपने निर्दोष नेत्रद्वय को साक्षी बनाकर (यानी निर्विकल्प रीति से) देखा। ४२८

❀ वाऴि शानहि वाऴियि राहवन्, वाऴि नान्मरै वाऴिय रन्दणर्
वाऴि नल्लर मॅन्रॅन्रु वाऴ्त्तिनान्, ऊऴि तोरु मुयर्बरुङ् गीर्त्तियान् 429

ऊऴि तोऱुम्–प्रतियुग; उयर्वु उऱुम्–उत्तरोत्तर उन्नत होनेवाले; कीर्त्तियान्–यशस्वी; वाऴि चानकि–जानकी जिएँ; वाऴि इराकवन्–श्रीराघव जिएँ; वाऴि नान् मऱै–जिएँ चतुर्वेद; वाऴियर् अन्तणर्–ब्राह्मण जिएँ; वाऴि नल्लऱम्–जिए सद्धर्म; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा अनेक बार; वाऴ्त्तितान्–जय बोला। ४२९

हनुमान एकदम भावोद्वेलित हो गया। प्रतियुगविवर्धितयश उसने जय-जयकार किया; जानकी जिएँ; श्रीराघव की जय हो। चतुर्वेद जिएँ; ब्राह्मण जिएँ! सद्धर्म जीता रहे! । ४२९

अव्वि डत्तरु हॅय्दिय रक्कन्ऱान्, ऍव्वि डत्तॅनक् किन्नरु ळीवदु
नॊव्वि डैक्कुयि लेनुवल् हॅन्ऱनन्, वॅव्वि डत्तै यमुदॅन वेण्डुवान् 430

वॅम् विटत्तै–भयंकर गरल को; अमुतु ऍन–अमृत समझकर; वेण्टुवान्–चाहनेवाले; अरक्कन्–राक्षस ने; अ इटत्तु अरुकु–उस स्थान के पास; ऍय्ति–पहुँचकर; नॊ इटै कुयिले–क्षीणकटि कोकिला; ऍनक्कु–मुझे; इन् अरुळ् ईवतु–मधुर करुणा का दान करना; ऍ इटत्तु–कब; नुवल्क–बताओ; ऍन्ऱनन्–पूछा। ४३०

रावण भयंकर गरल को अमृत समझकर कामना करता था। वह श्रीसीताजी के पास आकर बोला— क्षीणकटि सीते! मुझ पर दया करोगी कब? कहो न। ४३०

❀ ईशर् कायिनु मीडऴि वुर्ऱिऱै, वाशिप् पाडऴि याद मनत्तिनान्
आशैप् पाडमॅय्न् नाणु मडर्त्तिडक्, कूशिक् कूशि यिवैयिवै कूर्ऱिनान् 431

ईचर्कु आयिनुम्–शिवजी के सम्बन्ध में भी; ईटु अऴिवु उऱ्ऱु–बल खोकर; इऱै–थोड़ा भी; वाचिप्पाटु अऴियात–अहंभाव जिसने नहीं खोया वैसे; मनत्तितान्–मन वाला रावण; आचैप्पाटुम्–कामना; मॅय् नाणुम्–और (असफलता पर) सच्ची शरम के; अटर्त्तिट–कष्ट देने से; कूचि कूचि–सकुचाकर-सकुचाकर; इवै इवै कूऱ्ऱितान्–यों, यों बोला। ४३१

शिवजी के सामने हारकर भी उसका मन अहंभाव नहीं छोड़ता था। अब उसे सीता-प्रेम और उसे प्राप्त करने में असफलता के कारण उठी शरम क्लेश दे रही थी। इसलिए वह सकुचाते हुए यों कहने लगा। ४३१

इन्ऱि ऱन्दन नाळैयि ऱन्दन, ऍन्ऱि ऱन्दरुन् दन्मैयि दालॅन्नैक्
कॊन्ऱि ऱन्दपिन् कूडुदि योकुऴै, शॅन्ऱि ऱङ्गि मऱन्दरु शॅङ्गणाय् 432

कुऴै चॅन्ऱु इऱङ्कि–कर्णकुण्डल तक जाकर; मऱम् तरु–(मुझे) कष्ट देनेवाली; चॅम् कणाय्–अरुण आँखों की देवी; इन्ऱु इऱन्तत–'आज' अनेक अदृश्य हो गये; नाळै इऱन्तत–अनेक 'कल' भी बीत चले; ऍन् तिऱम्–मेरे प्रति; तरुम् तन्मै–जो तुम दया करती हो वह; इताल्–इस प्रकार है तो; ऍन्नै कॊन्ऱु–मुझे मारकर; इऱन्त पिन्–मेरे मरने के बाद; कूटतियो–मिलोगी क्या। ४३२

कर्णकुण्डल तक आयत और मेरे साथ क्रूरता बरतनेवाली आँखों की सीते ! आज कहके कितने ही दिन बीत गये ! वैसे ही कितने 'कल' भी बीत गये ! यही मेरे प्रति तुम्हारा रुख है तो क्या तुम्हारे मारने के कारण मेरे मरने के बाद ही मुझे प्राप्त होओगी ? । ४३२

उलह मॉन्ऱ्ऱो डिरण्डु मोम्बुमॅन्, अलहिल् शॅल्वत् तरशिय लाणॅयिल्
तिलह मेयुन् ऱिऱत्तनङ् गन्ऱ्ऱु, कलह मल्ल दॅळिमैयुङ् गाण्डियो 433

उलकम् ऑन्ऱ्ऱोटु इरण्टुम्–(एक और दो) तीनों लोकों का; ओम्पुम्–पालन करनेवाले; ऍन्–मेरे; अलकु इल् चॅल्वत्तु–अगणित सम्पत्ति के; अरचियल् आणॅयिल्–राज्यशासन में; तिलकमे–स्त्रीतिलक; उन् तिऱत्तु–तुम्हारे लिए; अनङ्कन् तरु–मन्मथ-दत्त; कलकम् अल्लतु–कलह छोड़कर; ऍळिमैयुम्–अन्य लघुता; काण्टियो–देखती हो क्या । ४३३

मैं त्रिलोकाधिपति हूँ । मेरे अनन्त वैभवपूर्ण राज्य-शासन में, हे स्त्रीकुलतिलक ! अनंग-कलह को छोड़ कोई दूसरा मुझे लघुता दिलानेवाला कार्य होता हुआ देखती हो क्या ? । ४३३

पून्दण् वार्हुळऱ् पॉऱ्कॉऴुन् देपुहऴ्, एन्दु शॅल्व.मिहऴ्न्दनै यिन्नुयिर्क्
कान्दन् माण्डिलन् काडुह डन्दुपोय्, वाय्न्दु वाऴ्वदु मात्तिड रोडन्ऱ्ऱो 434

पूम् तण् वार्कुऴल्–पुष्पालंकृत शीतल लम्बे केश वाली; पॉन् कॉऴुन्ते–स्वर्ण-किसलय; पुकऴ् एन्तु–प्रकीर्तित; चॅल्वम् इकऴ्न्तनै–धन-वैभव की निन्दा करती हो; इन् उयिर् कान्तन्–मधुर प्राणनाथ; इरामन्–राम; माण्टिलन्–बिना मरे; काटु कटन्तु पोय्–वनवास पूरा करके जाकर; वाय्न्तु वाऴ्वतु–सुख के साथ जीना भी; मात्तिटरोटु अन्ऱ्ऱो–मनुज के साथ ही न । ४३४

पुष्पालंकृत लम्बे केश की स्वर्णकिसलय-समान सीते ! यशोधर मेरे वैभव की अवहेलना करती हो ! (पर सोचो) तुम्हारा प्यारा प्राणनाथ वनवास की अवधि पूरा करके अयोध्या जाएगा और तुम उसके साथ मिलकर रहोगी— समझो ! तो भी तुम्हारा जीवन एक मानव के साथ ही न होगा ? । ४३४

नोऱ्किन् ऱाऱ्हळु नुण्बॉरु णुण्णिदिल्
पाऱ्क्किन् ऱारुम् पॅरुम्बयन् पाऱ्त्तियेल्
वाऱ्क्कुन्ऱ् ऱामुलै यॅन्शॉन् मवुलियाल्
एऱ्किन् ऱारॊ डुडनुऱै यिन्नबमाल् 435

वार् कुन्ऱा मुलै–अँगिया में न समानेवाले स्तनों की सीते; नोऱ्किन्ऱाऱ्कळुम्–व्रतपालन करनेवाले और; नुण् पॉरुळ्–सूक्ष्म तत्त्वों के; नुण्णितिल् पाऱ्क्किन्ऱारुम्–सूक्ष्मदर्शी भी; पॅरुम् पयन्–जो प्राप्त करेंगे वह फल; पाऱ्त्तियेल्–देखोगी तो;

ऑन्नु चोल्-मेरी आज्ञा; मवुलियाल्-सिर पर; एऱ्किन्ऱारोंट्टु-धारण करनेवाले; उटन् उऱै-(देवों) के साथ रहने का; इन्पम्-सुख ही है। ४३५

अँगिया में न समानेवाले स्तनों से शोभित सीते ! सोचो ! व्रतधारी और सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी लोग आखिर क्या पद पाते हैं ? देवों का सहवास ही न ? वे देव आखिर मेरी आज्ञा को अपने सिर पर धारण करनेवाले ही हैं ? । ४३५

पॉरुळुम् याळुम् विळरियुम् बूवैयुम्, मरुळ नाळु मऴलै वळङ्गुवाय्
तॅरुळु नान्मुहन् शॅय्ददुन् शिन्दैयिल्, अरुळु मिन्मरुङ् गुम्मरि दाक्कियो 436

पॉरुळुम्-(तोतले) बच्चे और; याळुम्-वीणा; विळरियुम्-'धैवत' स्वर; पूवैयुम्-सारिका; मरुळ-भ्रमित रह जाएँ ऐसा; नाळुम्-हमेशा; मऴलै वळङ्कुवाय्-मधुर वचन बोलनेवाली; तॅरुळुम्-सुलझी हुई बुद्धिवाले; नान्मुकन्-ब्रह्मा ने; उन् चिन्तैयिल्-तुम्हारे मन में; अरुळुम्-कृपा; मिन् मरुङ्कुम्-और बिजली-सी कमर; अरितु आक्कियो-अभाव करके (तुम्हें) रचा है क्या। ४३६

ऐसी मधुरभाषिणी, जिसके सामने तोतले शिशु, वीणा, धैवत स्वर और सारिका आदि मधुर स्वरवाले भ्रमित होकर तरसें ! सुलझी हुई बुद्धि वाले ब्रह्मा ने तुम्हारे शरीर में विद्युत्-सी कमर के और मन में दया के विना ही तुम्हारी सृष्टि की क्या ? । ४३६

ईण्डु नाळु मिळमैयु मीण्डिल, माण्डु माण्डु पिऱिदुरु मालैय
वेण्डु नाळ्वॅऱि देविळिन् दालिन्ऱि, याण्डु वाऴ्व दिडरुऴन् ऱाऴ्दियो 437

ईण्टु-इस संसार में; नाळुम्-जीवन के दिन; इळमैयुम्-और यौवन के दिन; मीण्टिल-लौट नहीं आते; माण्टु माण्टु-धीरे-धीरे बीतकर; पिऱितु उरु मालैय-बिगड़कर नष्ट होनेवाले स्वभाव के हैं; वेण्टु नाळ्-वांछनीय यौवन के दिन; वॅऱिते विळिन्ताल्-व्यर्थ बीत गये तो; इन्ऱि-फिर; याण्टु वाऴ्वतु-कहाँ सुखी रहना; इटर् उऴन्ऱु-संकट में पड़कर; आऴ्तियो-मग्न रहना चाहती हो क्या। ४३७

इस संसार में आयु और यौवन अगर बीत गये तो फिर लौट नहीं आयेंगे। उनकी प्रकृति भी धीरे-धीरे बिगड़कर नष्ट होने की है। वांछनीय यौवन व्यर्थ बीत गया तो तुम्हें सुखी जीवन कब मिलेगा और तुम संतुष्ट कैसे रहोगी ? संकटमग्न ही रहोगी क्या ? । ४३७

पॅण्मै युम्मळ हुम्बिऱ ऴामतत्, तिण्मै युम्मुदल् यावैयुञ् जॅय्यवाय्क्
कण्मै युम्बॊरुन् दिक्करु णैप्पडा, वण्मै यॆन्गॊल् शनहन् मडन्दैये 438

चनकन् मटन्तैये-जनकसुता; पॅण्मैयुम्-स्त्रीत्व; अऴकुम्-सौन्दर्य; पिऱऴा-अचंचल; मत तिण्मैयुम्-मन की दृढ़ता; मुतल् यावैयुम्-आदि सभी गुणों से; चॅय्यवाय्-खूब भरी होकर भी; कण्मैयुम् पॊरुन्ति-दाक्षिण्ययुक्त हो; करुणैप्पटा वण्मै-करुणा-सह न रहने का स्वभाव; ऍन् कॊल्-क्यों। ४३८

हे जनकराजदुहिते ! स्त्रीत्व, सौन्दर्य और अचंचल मन की स्थिरता आदि अच्छे गुण तुममें खूब भरे हैं। तो भी दाक्षिण्य और दया से रहित क्यों हो ? । ४३८

इऴवॆ नक्कुयि रॆय्दिनु मॆय्दुह, कुऴैमु हत्तुनिऩ् शिऩ्दनै कोडिऩाल्
पऴहि निऱ्पुरु पण्बियै कामत्तो, डऴहि नुक्किऩि यारुळ रावरो 439

कुऴै मुकत्तु–मुरझाये मन को; निऩ्–तुम्हारा; चिऩ्तनै कोटिऩाल्–मन भी विमुख हुआ तो; ॲऩक्कु उयिर् इऴवु ॲय्तिऩुम्–मुझे प्राणनाश मिला तो भी; ॲय्तुक–मिल जाए; पऴकि निऱ्पु उरु–मेरे साथ हिल-मिलकर रहनेवाली; पण्पु इयै–सुसंस्कृत; कामत्तोटु अऴकितुक्कु–प्यार और कमनीयता के लिए; इनि यार् उळर् आवर्–(मुझे छोड़) आगे कौन होगा। ४३९

मुरझाये मुख वाली तुम्हारे मन की विमुखता के कारण मेरी मृत्यु हो तो हो जाय ! पर तुम्हें कौन मिलेगा, जिसमें मेरे पास लगा रहनेवाला प्रेम और सौन्दर्य पाया जाय ? । ४३९

वीट्टुङ्	गालत्	तलऱिय	मॆय्क्कुरल्
केट्टुङ्	गाण्डऱ्	किरुत्तिहॊल्	किळ्ळैनी
नाट्टुङ्	गानॆडु	नल्लऱत्	तिऩ्बयन्
ऊट्टुङ्	गालत्	तिहऴ्व	दुरुङ्गॊलो 440

किळ्ळै–शुक; वीट्टुम् कालत्तु–(जब राम ने मारीच को) मारा उस समय; अलऱिय–राम चिल्लाया; मॆय् कुरल्–उसका सच्चा स्वर; केट्टुम्–सुनकर भी; नी–तुम; काण्टऱ्कु–देखने की इच्छा लेकर; इरुत्ति कॊल्–रहती क्या; नाट्टुम् काल्–दृढ़ रूप से समझाऊँ तो; नॆटु नल् अऱत्तिऩ्–दीर्घ श्रेष्ठ धर्म के; पयन्–फल को; ऊट्टुम् कालत्तु–जब तुमको भुगताया जा रहा है तब; इकऴ्वतु उरुम् कॊलो–अवहेलना करना, उचित काम करना (हुआ) क्या। ४४०

शुक-समाना ! मारीच के मरते समय तुमने श्रीराम की चिल्लाहट में राम का ही असली स्वर सुना था। तो भी क्या आशा करती हो कि उसे देख सकोगी ? सच्ची बात कहूँ तो दीर्घ और अच्छे धर्मों का फल तुम्हारे पास तुम्हारे भोगने के लिए आया है। तब उसकी उपेक्षा करना उचित काम होगा क्या ? । ४४०

तक्क वॆऩ्ऩुयिर् वीडुऱत् ताऴ्हिलात्, तॊक्क शॆल्वन् दॊलैयु मॊरुत्तिनी
पुक्कु यर्न्द वॆनुम्बुहऴ् पोक्किवे, ऱुक्क वॆऩ्नु मुरुपऴि कोडियो 441

तक्कतु ॲऩ् उयिर्–श्रेष्ठ मेरे प्राण; वीटु उऱ–छूट जाएँ; ताऴ्किला–विना कम हुए; तॊक्क चॆल्वम्–जुटी सम्पत्ति; तॊलैयुम्–नष्ट हो जाएगी; ऒरुत्ति नी–अनुपम तुम; पुक्कु–मेरे घर में आयीं; उयर्न्ततु–और मेरा कुल उन्नत हुआ;

ॲन्नुम् पुकऴ् पोक्कि–ऐसी कीर्ति छोड़कर; वेऱु उक्कतु–उसके विपरीत नष्ट हुआ; ॲन्नुम्–ऐसा; उऱु पऴि–बड़ा अपयश; कोटियो–लोगी क्या। ४४१

सब तरह से श्रेष्ठ मेरे प्राण छूट जायँगे तो मेरी अक्षय धनराशि भी नष्ट हो जायगी। तुम मेरे गृह में आयीं और मेरा कुल उन्नत हुआ, तो तुम्हें उसका यश मिलेगा। उसे त्यागकर, "उसका नाश हो गया"—यह बड़ा अपयश लेना चाहोगी क्या ? । ४४१

❀ तेवर् तेवियर् शेवडि कैतॊऴुम्, ताविल् मूवुल हिन्ऱनि नायहम्
मेवु हिन्ऱदु नुनगण् विलक्किनै, एव रेऴैयर् निन्निनि लिलङ्गिऴाय् 442

इलङ्किऴाय्–शोभनेवाले आभरणधारिणी; तेवर् तेवियर्–देवता और देवियाँ; चेवटि कै तॊऴुम्–तुम्हारे मनोरम पैरों के आगे हाथ जोड़ें, ऐसा; तावु इल्–अक्षय; मू उलकिन्–तीनों लोकों का; तनि नायकम्–अद्वितीय आधिपत्य; नुन् कण् मेवुकिन्ऱतु–तुम्हारे हाथ में आ रहा है; विलक्कितै–तुम उसे दूर हटा रही हो; निन्निनिन्–तुमसे बढ़कर; एवर्–कौन; एऴैयर्–अबोध है। ४४२

शोभायमान आभरणधारिणी ! निर्दोष त्रिलोकाधिपत्य तुम्हारे पास आ रहा है, जिससे देवी और देवता तुम्हारे लाल (मनोरम) चरणों में गिरकर नमस्कार करेंगे। पर तुम उसको छोड़ रही हो ! तुमसे बढ़कर बुद्धिहीन कौन होगा ? । ४४२

❀ कुडिमै मून्ऱुल गुन्जॆयुङ् गॊऱ्ऱत्तॆन्
अडिमै कॊडि यरुळुदि यालॆना
मुडियिन् मीदु मुहिऴ्त्तुयर् कैयिनन्
पडियिन् मेऱ्पडिन् दान्पऴि पार्क्कलान् 443

पऴि पार्क्कलान्–अपयश की परवाह न करनेवाला; मून्ऱु उलकुम्–तीनों लोक; कुटिमै चॆय्युम्–अपनी प्रजा बनाकर शासन करनेवाली; कॊऱ्ऱत्तु–विजयशीलता का स्वामी; ॲन् अटिमै–मेरी दासता; कोटि–अपनाकर; अरुळुति–कृपा करो; ॲना–कहकर; मुटियिन् मीतु–सिर पर; मुकिऴ्त्तु उयर्–जुड़कर बढ़े; कैयिनन्–हाथों वाला बनकर; पटियिन् मेल्–धरती पर; पटिन्तान्–गिरा। ४४३

रावण अपने कार्य में कोई दोष या उससे मिलनेवाले अपयश को देख नहीं रहा था। तीनों लोकों को प्रजा बनाकर पालने की विजयशीलता के स्वामी, मुझे अपना दास बना लो और मुझ पर कृपा करो —कहकर वह सिर पर हाथ जोड़े भूमि पर गिरा। ४४३

❀ कायन्दन शलाहै यन्न वुरैवन्दु कदुवा मुन्नम्
तोन्दन शॆविह ळुळन् दिरिन्ददु शिवन्द शोरि

पायन्दन कण्ग ळीन्रुम् वरिन्दिल ळुयिर्क्कुम् वॆण्मैक्
केयन्दन वल्ल वॆय्य माऱ्ऱङ्ग ळिन्नैय शॊन्नाळ् 444

कायन्तत्त चलाकै अन्न–तप्त शलाकाओं के समान; उरै–वचन; वन्तु कतुवा मुन्नम्–आकर लगें, इसके पूर्व ही; चॆविकळ् तीन्तत्त–(देवी के) कान जल उठे; उळ्ळम् तिरिन्ततु–मन व्यथित हुआ; चिवन्त चोरि–लाल रक्त; कण्कळ् पायन्तत्त–आँखों में बहा; उयिर्क्कुम्–अपनी जान का; ऒन्रुम् परिन्तिलळ्–कुछ भी विचार नहीं करतीं; पॆण्मैक्कु एय्न्तत्त–स्त्रीत्व के लिए उचित; वल्ल–और समर्थ; वॆय्य–और कठोर; इन्नैय माऱ्ऱङ्कळ्–ऐसे वचन; चॊन्नाळ्–कहे (सीता ने)। ४४४

रावण के वचन के तप्त शलाकाओं के समान सीताजी के कानों में लगते ही उनके कान मानो जल गये। मन विकल हुआ। लाल रक्त आँखों में बह आया। उन्होंने अपनी जान की कोई चिन्ता नहीं की; पर स्त्री के लिए उचित, सराहनीय और कठोर ये (निम्न) शब्द कहे। ४४४

मल्लॊडु तिरडोण् मैन्दर् मनम्विऴि दाहुम् वण्णम्
कल्लॊडुन् दॊडर्न्द नॆञ्जङ् गऱ्पिन्मेऱ् कण्ड दुण्डो
इल्लॊडुन् दॊडर्न्द मादर्क् केय्वन वल्ल वॆय्य
शॊल्लॊडुन् दॊडर्हे केट्टुत् तुरुम्बिनै नोक्किच् चॊल्वाळ् 445

इल् ऒटुम् तॊटर्न्त–गृहस्थी में लगी; मातर्क्कु–स्त्रियों के लिए; एय्वत अल्ल–अयोग्य; वॆय्य–क्रूर; चॊल्लॊटुम् तॊटर्कै–शब्दों से युक्त वचन; केट्टु–सुनकर; तुरुम्पितै नोक्कि–(सामने रखे) तृण को देखकर; चॊल्वाळ्–कहने लगीं; मल् ऒटुम्–बल के साथ; तिरळ् तोळ् मैन्तर्–पुष्ट कन्धों वाले वीरों का; मनम्–मन; विऴिताकुम् वण्णम्–बदलकर सन्मार्ग पर जाए, ऐसा; कल्लॊटुम् तॊटर्न्त–पत्थर के समान अडिग; नॆञ्चम्–दिलेर; कऱ्पिन् मेल्–पातिव्रत्य से श्रेष्ठ कुछ; कण्टतु उण्टो–किसी ने देखा है क्या। ४४५

रावण के वचन गृहस्थी में लगी श्रेष्ठ कुलस्त्रियों के सामने कहने योग्य वचन नहीं थे। ऐसे वचनों को सुनकर सीताजी ने अपने सामने एक तृण डालकर उसे (और रावण को तृण बनाकर) सम्बोधित कर कहा। सबल पुष्ट कन्धों वाले वीरों के (कुमार्गगामी) मन को बदलने में समर्थ पत्थर-सम दृढ़ मन के पातिव्रत्य से अन्य किसी को किसी ने देखा है क्या ? । ४४५

❀ मेरुवै युरुव वेण्डिन् विण्पिळन् देह वेण्डिन्
ईरेळ् पुवन्नम् यावुम् मुऱ्ऱुवित् तिडुदल् वेण्डिन्
आरियन् पहऴि वल्ल दऱिन्दिरुन् दऱिवि लादाय्
शीरिय वल्ल शॊल्लित् तलैपत्तुञ् जिन्दु वायो 446

अऱिवु इलाताय्–मतिहीन; आरियन् पकऴि–आर्य (श्रीराम) का बाण; मेरुवै उरुव वेण्टिन्–मेरु को निफर जाना चाहे; विण् पिळन्तु–आकाश फाड़कर; एक

वेण्टिन्–जाना चाहे; ईर् एळु–चौदह; पुवतम् यावुम्–भुवनों में सभी को; मुर्रु वित्तिट्टतल्–नष्ट करना; वेण्टिन्–चाहे; वल्लतु–समर्थ है; अरिन्तिरुन्तु–जानते हो तो भी; चीरिय अल्ल चॊल्लि–अशिष्ट कहकर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; चिन्तुवायो–गिरा लोगे क्या। ४४६

मूर्ख ! आर्य श्रीराम का शर मेरु को वेध चलना चाहे, या आकाश को चीर चलना चाहे, या सातों लोकों का अन्त करना चाहे तो करने में समर्थ है। यह तुम जानते हो। तो भी अशिष्ट (अनर्थकारी) वचन कहकर दसों सिरों को गिराना चाहते हो क्या ? । ४४६

अञ्जितै याद लाले याण्डहै यर्र् नोक्कि
वञ्जतै मार्नोत् रेवि मायैयाल् मरैत्तु वन्दाय्
उञ्जनै पोदि याहिल् विडुदियुन् कुलत्तुक् कॆल्लाम्
नञ्जितै यॆदिर्न्द पोदु नोक्कुमे नित्तु नाट्टम् 447

अञ्चितै आतलाल्–डरे थे, इसलिए; वञ्चतै माल् ऒन्रु–मायामृग एक; एवि–भेजकर; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ की; अर्रम् नोक्कि–अनुपस्थिति जानकर; मायैयाल्–माया से; मरैत्तु वन्ताय–छद्मवेश में आये; उञ्चतै–बचकर; पोति आकिल्–जाना चाहो तो; विटुति–(मुझे रामचन्द्रजी के पास ले जा) छोड़ो; उन् कुलत्तुक्कॆल्लाम्–तुम्हारे कुल के सारे लोगों के लिए; नञ्चितै–विष (-सदृश श्रीराम) का; ऎतिर्न्त पोतु–सामना करोगे तो; नोक्कुमे–देख सकेगी क्या; नित्तु नाट्टम्–तुम्हारी आँखें उन्हें। ४४७

तुम भयभीत थे; तभी तो तुम वंचक मृग को प्रेरित करके श्रीराम की अनुपस्थिति कराके रूप छिपाकर आये ! तुम बचना चाहो तो मुझे छोड़ दो। तुम्हारे कुल के राक्षसों के लिए घातक विष (के समान) हैं श्रीराम। जब उनका सामना करोगे तब क्या तुममें इतनी हिम्मत होगी कि तुम अपनी आँखें उठाकर उन्हें देख सको ? । ४४७

❋ पत्तुळ तलैयुन् दोळुम् पलवुळ पहळि तूवि
वित्तह विल्लि नार्कुत् तिरुविळै याडर् केर्र्
चित्तिर विलक्क माहु मल्लदु शॆरुवि लेर्कुम्
शत्तियै पोलु मेन्नाट् चडायुवाऱ् ऱरैयिन् वीळ्न्दाय् 448

मेल् नाळ्–पहले (उस) दिन; चटायुवाल्–जटायु द्वारा; तरैयिल् वीळ्न्ताय्–भूमि पर गिरे; पत्तु उळ तलैयुम्–दहाई के सिर; तोळुम्–और हाथ; पलवुळ पकळि–विविध शर; तूवि–छितराकर; वित्तक विल्लितार्कु–अपूर्व कोदण्ड धनु के धारक के लिए; तिरु विळैयाटर्कु एर्र्–श्री केलि के लिए; चित्तिर–चित्र; इलक्कमाकुम्–लक्ष्य बनेंगे; अल्लतु–नहीं तो; चॆरुविल् एर्कुम्–युद्धयोग्य; चत्तियै पोलुम्–शक्तिमान हो क्या। ४४८

(मुझे जब ले आये) उस दिन जटायु द्वारा प्रहरित होकर तुम धरती

पर गिरे। तुम्हारे दहाई के सिर और हाथ धनुर्विद्या-विदग्ध श्रीराम के लिए विविध अस्त्र प्रेरित करके खेलने के योग्य खिलौने मात्र हैं! वे चित्रमय लक्ष्य बनेंगे। नहीं तो क्या तुम युद्ध करने की शक्ति भी रखते हो? । ४४८

ॐतोऱ्ऱनै   पऱवैक्   कन्ऱु   तुळ्ळुनीर्   वॆळ्ळम्   चॆन्नि
एऱ्ऱवन्   वाळाल्   वॆन्ऱा   यिन्ऱेन्नि   निऱत्ति   यन्ऱे
नोऱ्ऱनोन्   बुडैय   वाणाळ्   वरमियै   नुनित्त   वॆल्लाम्
कूऱ्ऱिनुक्   कन्ऱे   वीरन्   शरत्तुक्कुङ्   गूऱ्ऱिऱ्   ऱुण्डो 449

अन्ऱु–उस दिन; पऱवैक्कु तोऱ्ऱनै–एक पक्षी से हारे; तुळ्ळुनीर्–उछलते आनेवाले जल के; वॆळ्ळम्–प्रवाह (गंगा) को; चॆन्नि एऱ्ऱवन्–जिन्होंने सिर पर धारण किया उनको; वाळाल् वॆन्ऱाय्–तलवार का प्रयोग करके जीते; इन्ऱु ॲनिन्–नहीं तो; इऱत्ति अन्ऱे–मर जाते न; नोऱ्ऱ नोन्पुडैय–तपोव्रतप्राप्त; वाणाळ् वरम्–आयु का वर; इवै नुनित्त ॲल्लाम्–आदि प्राप्त सभी; कूऱ्ऱिऩुक्कु अन्ऱे कूऱिऱ्ऱु–यम के सम्बन्ध में ही न कहे गये; वीरन् चरत्तुक्कुम्–वीर(श्रीराघव) के शर के सम्बन्ध में भी; कूऱिऱ्ऱु उण्टो–कहे गये क्या। ४४६

उस दिन तुम एक पक्षी से हारे! प्रवाहमय जल की गंगा को अपने सिर पर धारण करनेवाले शिवजी की दी गयी चन्द्रहास तलवार के बल से तुम जटायु पर जीत पा सके! नहीं तो मर जाते न? तपस्या के कारण जो वर और आयु आदि तुम्हें दिये गये हैं, वे यम की बनिस्बत दिये गये हैं। श्रीवीरराघव के शरों को उद्देश्य मानकर कहे गये थे क्या? । ४४९

पॆऱ्ऱुडै   वरनुम्   नाळुम्   पिऱन्दुडै   युरनुम्   बिन्नुम्
मऱ्ऱुडै   यॆवैयुन्   दन्द   मलरवन्   मुदलोर्   वार्त्तै
विऱ्ऱॊडै   यिरामन्   कोत्तु   विडुदलुम्   विलक्कुण्   डॆल्लाम्
इऱ्ऱुडैन्   दिऴवन्   मॆय्ये   विळक्किन्मुन्   निरुळुण्   डामो 450

पॆऱ्ऱटै वरनुम्–प्राप्त वर और; नाळुम्–आयु के दिन; पिऱन्तु उटै उरनुम्–जन्मप्राप्त बल; पिन्नुम् मऱ्ऱु उटै ॲवैयुम्–और अन्य सभी; तन्त–जिन्होंने दिया; मलरवन् मुतलोर् वार्त्तै–कमलासन आदि के वचन; इरामन्–श्रीराम (जब); विल् तॊटै कोत्तु–धनु में शर संधान कर; विटुतलुम्–छोड़ेंगे तब; ॲल्लाम् विलक्कु उण्टु–सभी निवारित होकर; इऱ्ऱु उटैन्तु–बन्धन टूटकर; इऴतल् मॆय्ये–नष्ट होंगे, यह सत्य है; विळक्किन् मुन्–दीपक के सामने; इरुळ् उण्टामो–अन्धकार रहेगा क्या। ४५०

तुम्हारे प्राप्त वर, आयु के दिन, जन्मसिद्ध बल और अन्य सभी विषय जिनके वर से प्राप्त हुए वे चतुर्मुख आदि के वचनों द्वारा दिये गये हैं। वे सब श्रीराम के शर को धनु पर रखकर छोड़ते ही अपनी रक्षणशक्ति

खो देंगे और तुम्हारा नाश होगा। यह ध्रुव सत्य है। दीपक के सामने अन्धकार ठहर सकेगा क्या ? । ४५०

कुन्ऱुनी यॅडुत्त नाडन् शेवडिक् कॉळुन्दा लुन्नै
वॅन्ऱवन् पुरङ्गळ् वेवत् तनिच्चरन् दुरन्द मेरु
ॲन्ऱुणैक् कणव नाऱ्ऱऱ् कुरनिला दिऱ्ऱु वीळ्न्द
अन्ऱॅळुन् दुयर्न्द वोशै केट्टिलै पोलु मम्मा 451

नी कुन्ऱु ॲट्टुत्त नाळ्–जब तुमने कैलासपर्वत को उठाया, उस दिन; तन् चेवटि कॉळुन्ताल्–अपने दिव्य चरण की उँगली के छोर से; उन्नै वॅन्ऱवन्–जिन्होंने तुमको हराया, उन शिवजी ने; पुरङ्कळ् वेव–त्रिपुर जलाते हुए; तनि चरम् तुरन्त–(जिस पर रखकर) अनुपम शर छोड़ा वह; मेरु–मेरु जैसे त्र्यंबक धनु; ॲन् तुणै कणवन्–मेरे संगी प्रिय नाथ के; आऱ्ऱऱ्कु–बल के सामने; उरन् इलातु–शक्ति के विना; इऱ्ऱु वीळ्न्त अन्ऱु–जिस दिन टूटकर गिरा उस दिन; ॲळुन्तु उयर्न्त ओचै–जो उठा और बढ़ा वह नाद; केट्टिलै पोलुम्–तुमने सुना नहीं शायद क्या। ४५१

शिवजी के त्र्यंबक धनुष में मेरे प्रिय संगी पति श्रीराम की शक्ति के सामने ठहरने की शक्ति नहीं थी और वह टूट गया। वे शिव कौन थे ? जब तुमने कैलास को उठाया तब अपने श्रीचरण की उँगली के छोर से उन्होंने तुम्हारे ऊपर जीत पायी थी। वह धनु भी वही धनु था, जिस पर शर रखकर शिवजी ने छोड़े थे और त्रिपुर को जलाया था। उस धनु के टूटने के दिन जो उच्च नाद उठा और फैला उसे शायद तुमने सुना नहीं था क्या ? । ४५१

मलैयॅडुत् तॅण्डिशै काक्कु माक्कळै
निलैहॅडुत् तेन्नेनु माऱ्ऱ नेरुनी
शिलैयॅडुत् तिळैयव निऱ्कच् चेऱ्न्दिलै
तलैयॅडुत् तिन्नमु महळिर्त् ताळ्दियो 452

मलै ॲट्टुत्तु–पर्वत उठाकर; ॲण् तिचै काक्कुम्–आठ दिशाओं के पालक; माक्कळै–गजों को; निलै कॅट्टुत्तेन्–स्थिति मैंने बिगाड़ दी; ॲन्नुम् माऱ्ऱम् नेरुम् नी–ऐसी डींग के वचन कहनेवाले तुम; इळैयवन्–(श्रीराम के) कनिष्ठ भ्राता; चिलै ॲट्टुत्तु निऱ्क–जब धनु लेकर खड़े थे; चेर्न्तिलै–नहीं आये; तलै ॲट्टुत्तु–सिरों को लेकर; इन्नमुम्–अब भी; मकळिर् ताळ्तियो–स्त्रियों के सामने झुकाओगे क्या। ४५२

तुम डींग मारते हो कि मैंने कैलास को उठाया था और आठों दिशाओं के पालक, गजों की दुर्गति करा दी थी। ऐसे तुम तब नहीं आये जब मेरे देवर लक्ष्मण धनु लेकर मेरी रक्षा में खड़े थे। अब भी सिर

उठाए हुए रहोगे और स्त्रियों के सामने वह सिर झुकाओगे क्या ? (शरम नहीं होती ?) । ४५२

एऴैनी यॉळित्तुरै यिन्नि डत्तॅन, वाऴियॅङ् गोमह नरिय वन्दनाळ्
आऴियु मिलङ्गैयु मऴियत् ताऴ्मो, ऊऴियुन् दिरियुनिन् नुयिरो डोयुमो 453

एऴै–मूर्ख; नी–तुम; ऑळित्तु उऱै–जहाँ छिपे रहते हो वह स्थान; इन् इटत्तु–कहाँ है; ॲत–यह बात; वाऴि–संसार को जीवन दिलानेवाले; ॲम् कोमकन्–हमारे चक्रवर्ती-सुत; अऱिय वन्त नाळ्–जिस दिन समझेंगे उस दिन; आऴियुम्–समुद्र और; इलङ्कैयुम्–लंका; अऴिय–मिट जायगी, उसी तक; ताऴ्मो–रुक जायगा क्या; निन् उयिरॊटु–तुम्हारे प्राणों को लेकर; ओयुमो–समाप्त होगा; ऊऴियुम् तिरियुम्–युग का काल भी विगड़ जायगा । ४५३

मूर्ख ! जब मेरे चक्रवर्तीसुत जान लेंगे कि वह स्थान यहाँ है, जिसमें तुम छिपे-छिपे जीते हो तब क्या इस समुद्र और इस लंका के नष्ट होने तक से अनर्थ रुक जायगा ? तुम्हारी जान लेकर समाप्त होगा ? नहीं ! युग भी विगड़ जायगा ! । ४५३

वॅञ्जिन वरक्करै वीय्त्तुम् वीयुमो, वञ्जनै नीशॅय वळ्ळल् शीऱ्ऱन्दान्
ॲञ्जलि लुलहॅला मॅञ्जु मॅञ्जुमॅन्, ऱञ्जुहिन् ऱेनिदऱ् कऱमुञ् जान्ऱरो 454

वञ्चनै नीचॅय–वंचना तुमने की, इससे; वळ्ळल् चीऱ्ऱम् तान्–उदार प्रभु का जो होगा वह कोप; वॅम् चिन–भयंकर क्रोधी; अरक्करै–राक्षसों को; वीय्त्तुम्–मारने तक से; वीयुमो–शान्त होगा क्या; ॲञ्चल् इल्–अक्षय; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों का; ॲञ्चुम् ॲञ्चुम्–क्षय हो जायगा, नष्ट हो जायगा; ॲन्ऱु–ऐसा; अञ्चुकिन्ऱेन्–डरती हूँ; इतऱ्कु–इसके; अऱमुम् चान्ऱु–धर्मग्रन्थ प्रमाण होंगे । ४५४

तुमने जो वंचक काम किया उससे प्रभु का कोप होगा । क्या वह कोप भयंकर क्रोधी राक्षससमूह को नष्ट कर शान्त हो जायगा ? अक्षय लोकों का क्षय हो जायगा, अवश्य क्षय हो जायगा । यह ध्रुव सत्य है । यही मेरा डर है । इसके धर्मग्रन्थ ही प्रमाण हैं । ४५४

अङ्गण्मा ञालमुम् विशुम्बु मञ्जवाऴ्
वॅङ्गणाय् पुन्ऱॊऴिल् विलक्क वुट्कॊळाय्
शॅङ्गण्मा नान्मुहन् शिवनॅन् ऱेॅलो
एङ्गणा यहतैयु निनैन्द देऴैनी 455

अम् कण् मा ञालमुम्–विशाल स्थल का भूतल और; विचुम्पुम्–आकाश को; अञ्च–डरने को मजबूर करते हुए; वाऴ्–जीवन वितानेवाले; वॅङ्कणाय्–क्रूर; एऴै नी–मूर्ख तुमने; ॲङ्कळ् नायकतैयुम्–हमारे नाथ को भी; चॅम् कण् माल्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु; नान् मुकन्–चतुर्मुख और; चिवन्–शिव; ॲन्ऱे कॊल्–ही;

निर्तैनृतनु–समझ लिया गया; पुन् तॉळिल् विलक्क–नीच कार्य छोड़ना; उळ् कोळाय्–ठानो । ४५५

रे क्रूर ! जो विशाल स्थल के भूतल को और आकाश को भयभीत करते हुए जी रहे हो ! मूर्ख ! तुमने मेरे श्रीराम को भी अरुणाक्ष विष्णु समझ रखा है ? या चतुर्मुख, या शिव ? अपना नीच काम छोड़ने का विचार करो । ४५५

मानुय रिवरॅन् मनक्कॉण् डायॅनिन्
कानुयर् वरैनिहर् कार्त्त वीरियन्
तानॉरु मनिदनाल् तळर्न्दु ळानॅनिल्
तेनुयर् तॅरियलान् र्‌नमै तेर्दियाल् 456

इवर्–ये; मानुयर् ॲन–मनुष्य है, ऐसा; मनम्–मन में; कॉण्टाय् ॲनिन्–विचार रखोगे तो; कान्–जंगल में; उयर् वरै निकर्–उन्नत बाँस के पेड़ों के समान; कार्त्त वीरियन् तान्–(हाथों वाले) कार्तवीर्य स्वयं; ऑरु मनितनाल्–एक मानव से; तळर्न्तुळान्–नष्ट हुआ; ॲनिल्–तो; तेन् उयर्–अधिक शहद से युक्त; तॅरियलान्–मालाधारी श्रीराम के; तन्मै–महत्व को; तेर्ति–जान लो । ४५६

अगर तुम इनको मानव मानकर हेय समझोगे तो जंगली बाँसों के समान उन्नत हाथों वाला कार्तवीर्य स्वयं एक मानव (परशुराम) द्वारा पराजित हुआ, यह सोचो और शहद बरसानेवाली माला के धारक श्रीराम का (परशुराम को पराजित करनेवाला) बल-पराक्रम जान लो । ४५६

इरुवरॅन् रिहळ्न्दनै यॅन्निन् याण्डिनुम्
ऑरुवनन् रेयुल हळिक्कु मूळियान्
शॅरुवरुङ् गालमॅन् मॅय्मै तेर्दियाल्
पॉरुवरुन् दिरुविळन् दावि पॉन्रुवाय् 457

पॉरुवु अरुम्–उपमाहीन; तिरु इळन्तु–श्री खोकर; आवि पॉन्रुवाय्–प्राण खोनेवाले; इरुवर्–दो ही हैं; ॲन्रु–ऐसा इकळ्न्तनै–हेय मानोगे; ॲन्निन्–तो; याण्टिनुम्–सर्वत्र; उलकु अळिक्कुम्–लोकनाशक; ऊळियान्–प्रलयकारी रुद्र; ऑरुवन् अन्रे–अकेला है न; चॅरु वरुम् कालम्–युद्ध प्राप्ति के दिन; ॲन मॅय्मै–मेरे वचन का सत्य; तेर्ति–जान लोगे । ४५७

हे, अनुपम श्री को भी खोकर प्राण छोड़ने को उद्यत मूर्ख ! अगर तुम समझते हो कि वे केवल दो ही हैं और हेय हैं तो युगनाशक प्रलयंकर रुद्र सदा अकेले ही है न ? जब श्रीराम से युद्ध करने का समय आयगा, तब मेरी बात की सत्यता जान लोगे । ४५७

पॉर्कणान् र्‌मबियॅन् रिनैय पोर्त्तॉळिल्
विर्कणाण् पॉरुददो ळवुणर् वेरुळार्

नऱ्कणार् नल्लऱन् दुऱन्द नाळिनुम्
इऱ्कणा रिऱन्दिल रिऱन्दु नीङ्गिनार् 458

पॊन् कणान्–हिरण्याक्ष; तम्पि ऍन्ऱु–उसका भाई मानित; इन्नैय–ऐसे; पोर्त् तॊळिल् विल्कण्–युद्ध योग्य धनु के; नाण्–डोरे से; पॊरुत तोळ्–रगड़े हुए कन्धे जिनके थे; वेऱु उळार् अवुणर्–अन्य दानव; नल् कण् आर्–सन्मार्गरत; नल्लऱम् तुऱन्त नाळितुम्–जिस दिन धर्मच्युत हुए; इल् कणार्–परदारा से; इऱन्तिलर्–अभद्र व्यवहार किये विना रहने पर भी; इऱन्तु नीङ्किनार्–मर गये। ४५८

हिरण्याक्ष, उसका भाई आदि दानव, जिनके कन्धे युद्धयोग्य धनु के डोरे से रगड़े गये थे, सन्मार्ग का सद्धर्म छोड़ने पर परदारा-प्रेम का पाप न करने पर भी मर गये। ४५८

पूविलो नादि याहप् पुलन्गळ्पो नॆऱियिऱ् पोहात्
तेवरो ववुणर् तामो निलैनिन्ऱु विनैयिऱ् ऱीर्न्दार्
एवलॆव् वुलहुञ् जॆय्यच् चॆल्वनिऱ् किशैन्द दॆन्ऱाल्
पावमो मुन्नी शॆय्द तरुममो तॆरियप् पाराय् 459

पुलन्कळ् पोम्–इन्द्रियाँ जिस मार्ग में जाती हैं; नॆऱियिल् पोका–उसमें न जानेवाले; पूविलोन् आतियाक–कमलदेव आदि; तेवरो–देव हों या; अवुणर् तामो–(इन्द्रियाराम) दानव हों; निलै निन्ऱु–स्थायी रहकर; विनैयिल् तीर्न्तार्–(कौन) कर्ममुक्त हुए; ऍव् उलकुम्–सारे लोक; निऱ्कु एवल् चॆय्य–तुम्हारी आज्ञा मानते हैं; चॆल्वम इचैन्ततु–ऐसा वैभव से युक्त हो; ऍन्ऱाल्–तो; मुन् नी चॆय्त–पहले जो तुमने किया; तरुममो–वह धर्म है या; पावमो–पाप (के कारण) है; तॆरिय पाराय्–खूब समझकर देखो। ४५९

इन्द्रिय-निग्रही ब्रह्मा आदि देव हों चाहे दानव, कौन स्थायी रहकर कर्ममुक्त हुए? तुम्हें ऐसा धनवैभव मिला है कि सारे लोक तुम्हारे आज्ञाकारी बने हैं—तो यह तुम्हारे पूर्वकृत पुण्य का फल है या पाप का। खूब सोचो और समझो। ४५९

इप्पॆरुञ् जॆल्व निन्ग णीन्दपे रीशन् याण्डुम्
अप्पॆरुञ् जॆल्वन् दुय्प्पा निन्ऱुमा दवत्ति नन्ऱे
ऒप्परुन् दिरुवु नीङ्गि युऱवॊडु मुलक्क वुन्नित्
तप्पुदि यऱत्तै येळाय् तरुमत्तैक् कामि यादे 460

पेर् ईचन्–महेश्वर ने; निन् कण ईन्त–जो तुम्हारे पास दिया है; इ पॆरुम् चॆल्वम्–यह विशाल धन; मातवत्तिन्–महान् तप में; याण्टुम् निन्ऱु–हमेशा स्थित रहकर; अ पॆरुम् चॆल्वम्–उस विशाल धन को; तुय्प्पान् अन्ऱे–भोगने के लिए न; एळाय्–मूर्ख; ऒप्पु अरुम्–अनुपम; तिरुवु नीङ्कि–श्री को त्यागकर; उऱवॊटुम् उलक्क उन्नि–बन्धुओं के साथ मरना सोचकर; तरुमत्तै कामियाते–धर्म पर आस्था छोड़कर; अऱत्तै तप्पुति–धर्म से हट जाते हो। ४६०

यह परमेश्वर की दी हुई विशाल धन-सम्पत्ति क्या इसीलिए नहीं कि तुम महान् तप के मार्ग में स्थित रहकर उस विपुल धन का भोग करो। मूर्ख ! अनुपम इस श्री से हाथ धोकर अपने बन्धुजनों के साथ मर-मिटने के लिए धर्म पर आस्था छोड़कर धर्म से हट रहे हो ! । ४६०

मऱन्दिऱम् बाद तोला वलियिन रॅनितु माण्डार्
अऱन्दिऱम् बिन्ऱु मक्कट् करुडिऱम् बिन्ऱु मन्ऱे
पिऱन्दिऱन् दुळ्ळुस् बाशप् पिणक्कुडैप् पिणियिऱ् ऱीर्न्दार्
तुऱन्दरुम् बहैहळ् मून्ऱुन् दुडैत्तवर् पिऱर्यार् शॊल्लाय् 461

मऱम् तिऱम्पात–बल में निरन्तर स्थिर रहनेवाले; तोला–कभी न हारनेवाले; वलियितर् ॲतितुम्–बलवान हों तो भी; अऱम् तिऱम्पितरुम्–धर्मच्युत और; मक्कट्कु–लोगों के प्रति; अरुळ् तिऱम्पितरुम्–दया न दिखानेवाले; माण्टार् अन्ऱे–मर गये न; तुऱन्तु–आसक्ति छोड़कर; अरुम् पकैकळ् मून्ऱुम्–अन्तशत्रु तीनों को; तुटैत्तवर्–मिटा चुकनेवाले; पिऱन्तु इऱन्तु–मरकर जन्म लेकर; उळ्ळुम्–संकट उठाना जिसमें हो; पाच पिणक्कु उटै–पाशबन्ध रूपी; पिणियिल्–रोग से; तीर्न्तार्–मुक्त हुए; पिऱर् यार्–अन्य कौन; चॊल्लाय्–कहो । ४६१

जो बलवान अपने बल-पराक्रम में विना किसी परिवर्तन के रहते हैं और कभी नहीं हारते वे अगर धर्ममार्ग छोड़नेवाले, लोगों पर दया न दिखानेवाले हों तो वे मर ही गये न ? अनासक्त और तीनों शत्रुओं (काम, क्रोध, मोह) के जयी ही जन्म-मरण-कष्ट रूपी पाशबन्धन के रोग से विमुक्त हुए । फिर कौन है ? तुम ही कहो । ४६१

तॅन्ऱमि ळुरैत्तोन् मुन्नात् तोदुतीर् मुनिवर् यारुम्
पुन्ऱॊळि लरक्कर्क् काऱ्ऱे नोऱ्किलम् बुहुन्द पोदे
कॊन्ऱरु ळुन्ना लन्नार् कुऱैवदु शरदङ् गोवे
ॲन्ऱनर् याने केट्टे नीयदऱ् कियैव शॅय्दाय् 462

पुकुन्त पोते–जब (श्रीराम दण्डकवन में) प्रविष्ट हुए तभी; तॅन् तमिळ् उरैत्तोन्–दक्षिणी (मधुर) तमिळ् के व्याकरणकार (अगस्त्य) के; मुन्ता–नेतृत्व में; तीतु तीर्–निर्दोष; मुनिवर् यारुम्–सभी मुनि; पुन् तॊऴिल् अरक्कर्क्कु–नीचकर्मी राक्षसों (के दुष्कृत्यों) का; आऱ्ऱेम्–सहन नहीं कर सकते; नोऱ्किलम्–व्रतपालन नहीं करते; कॊन्ऱु अरुळ्–उनका नाश कर हम पर कृपा कीजिए; कोवे–राजा; उन्ताल्–तुमसे; अन्तार् कुऱैवतु–उनका मरना; चरतम्–निश्चित है; ॲन्ऱतर्–बोले; यान् केट्टेन्–मैंने स्वयं सुना; नी–तुमने; अतऱ्कु इयैव–उसके ही अनुरूप; चॅय्ताय्–(कार्य) किया है । ४६२

जब श्रीराम दण्डकारण्य में घुसे तभी तमिळ् के (व्याकरण के) रचयिता अगस्त्य के नेतृत्व में निर्दोष मुनिगण आये और उन्होंने श्रीराम से निवेदन किया कि नीचकर्मी राक्षसों से हम बेचैन हैं। उनके दिये कष्ट सह नहीं

सकते हैं। व्रत आदि का पालन भी कर नहीं पाते। उनको मारो और हम पर दया करो, हे राजन! तुम्हारे हाथ वे मरेंगे। यह निश्चित है। यह मैंने अपने कानों से ही सुना था। तुमने भी वैसे ही, उनकी शिकायत को सत्य प्रमाणित करते हुए काम किये हैं। ४६२

उन्नैयुङ् गेट्टु मऱ्ऱुन् नूऱ्ऱमु मुडैय नाळुम्
पिन्नैयिव् वरक्कर् शेनैप् पॅरुमैयु मुनिवर् पेणिच्
चॊन्नबि नुङ्गै मूक्कु मुम्बियर् तोळुन् दाळुम्
चिन्नबिन् नङ्गळ् शॅय्द वदनैनी शिन्दि यायो 463

मुनिवर्–मुनियों के; पेणि–आतुर होकर; उन्नैयुम्–तुम्हारा चरित्र; उन् ऊऱ्ऱमुम्–तुम्हारा बल; उटैय नाळुम्–तुम्हारी आयु के दिन; इ अरक्कर् चेनै पॅरुमैयुम्–इस राक्षस-सेना का गौरव; चॊन्नपिन्–कहने पर; केट्टु–(अन्य सूत्रों से भी) सुनकर; पिन्नै–उसके वाद; उङ्कै मूक्कुम्–तुम्हारी वहन की नाक को और; उम्पियर् तोळुम्–तुम्हारे भाइयों के कन्धों को; ताळुम्–पैरों को; चिन्न पिन्नङ्कळ् चॅय्त–जो खण्ड-खण्ड किया; अतनै–उस (श्रीराम और लक्ष्मण के) काम को; नी चिन्तियायो–तुम सोचोगे नहीं क्या। ४६३

उन मुनियों ने आतुरता के साथ तुम्हारा चरित्र, वल, तुम्हारी आयु की बात, इन राक्षसों की सेना का गौरव आदि कहा। श्रीराम ने अन्य सूत्रों से भी वे बातें सुनीं। इसके वाद ही उन्होंने तुम्हारी वहिन की नाक के और तुम्हारे भाइयों के कन्धों और पैरों के खण्ड-खण्ड किये थे। उस पराक्रम के कार्य को तुम सोचोगे नहीं क्या ? । ४६३

आयिरन् दडक्कै यानिन् नैन्नान्गु करमुम् बऱ्ऱि
वाय्वळि कुरुदि शोरक् कुत्तिवान् शिऱैयिल् वैत्त
तूयवन् वयिरत् तोळ्ह डुणित्तवन् ऱॊलैन्द माऱ्ऱम्
नीयऱिन् दिलैयो नीदि नॆऱियऱिन् दिलाद नीशा 464

नीति नॆऱि–धर्मन्याय; अऱिन्तिलात–न जाननेवाले; नीचा–नीच; निन्–तुम्हारे; ऐ नान्कु करमुम्–वीसों हाथों को; पऱ्ऱि–पकड़कर; वाय् वळि–मुख से; कुरुति चोर–खून वह निकले ऐसा; कुत्ति–घूँसा मारकर; वान् चिऱैयिल् वैत्त–वड़ी कारा में जिसने वन्द किया; तूयवन्–उस श्रेष्ठ; आयिरम् तट कैयान्–सहस्र बड़े हाथों वाले (कार्तवीर्य) के; वयिर तोळ्कळ्–वज्र (-कठोर) कन्धों को; तुणित्तवन्–जिन्होंने काट दिया; तॊलैन्त माऱ्ऱम्–उन परशुराम के हारने का समाचार; नी अऱिन्तिलैयो–तुमने जाना नहीं है क्या। ४६४

नीति-न्याय न जाननेवाले नीच! श्रेष्ठ और सहस्रहस्त कार्तवीर्य ने तुम्हारे बीसों हाथों को पकड़कर, तुम्हारे मुखों से रक्त बहाते हुए घूँसा मारा और तुम्हें वड़े कारागृह में वन्दी वनाकर रखा। उसके वज्र-कठोर

कन्धों को जिन्होंने काटा था वे परशुराम श्रीराम से हारकर भागे। क्या यह समाचार तुमने नहीं जाना ? । ४६४

❀ कडिक्कुम्वा ळरवुङ् गेट्कु मन्दिरङ् गळिक्कित् ऱोयै
अडुक्कुमी दडाद दीदॆंत्‌ ऱरिविना लेदुक् काट्टि
इडिक्कुन रिल्लै नीये यॆण्णिय दॆण्णि युन्नै
मुडिक्कुन रॆन्ऱ पोदु मुडिवित्ऱि मुडिव दुण्डो 465

कटिक्कुम् वाळ् अरवुम्–डसनेवाला क्रूर सर्प भी; मन्तिरम् केट्कुम्–मन्त्र सुनता है (मानकर चुप रहता है); कळिक्कित्ऱोयै–मदमत्त तुम्हें; अटुक्कुम् ईतु–यह कर्तव्य है; अटाततु ईतु–अकर्तव्य यह है; ऍन्ऱु–ऐसा; अऱिविनाल् एतु काट्टि–बुद्धि से हेतु समझाकर; इटिक्कुनर् इल्लै–टोकनेवाले नहीं है; नी–तुम; ऍण्णियते ऍण्णि–जैसा सोचते हो वैसा ही खुद सोचकर; उन्नै मुटिक्कुनर्–तुम्हें मिटानेवाले (मन्त्री) है; ऍन्ऱ पोतु–ऐसी स्थिति में; मुटिवु इन्ऱि–सर्वनाश के सिवा; मुटिवतु उण्टो–कोई (अन्य) अन्त होगा क्या। ४६५

काटनेवाला सर्प भी मन्त्र सुनकर दबा रहता है! तुम मदमत्त हो। तुम्हें यह कर्तव्य है, यह अकर्तव्य —ऐसा कहकर टोकनेवाले नहीं हैं। जो तुम्हारे मन्त्री हैं वे तुम जैसा सोचते हो, वैसा ही सोचते हैं और तुम्हारा नाश कर रहे हैं। उस हालत में सर्वनाश के सिवा अन्त क्या (शुभ) होगा ? । ४६५

❀ ऍन्ऱ ऱत्तुरै केट्टलु मिरुबदु नयनम्
मिन्ऱि ऱप्पन वॊत्तन वॆयिल्विडु पहुवाय्
कुन्ऱि ऱत्तॆळित् दुरप्पिनन् कुऱिप्पदॆन् कामन्
तन्ऱि ऱत्तैयुङ् गडन्ददु शीऱ्ऱत्तिन् ऱहैमै 466

ऍन्ऱु–ऐसा; अऱत्तु उरै–धर्म-वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; इरुपतु नयनम्–बीसों आँखें; मिन् तिऱप्पन–बिजली प्रगटी; ऒत्तन–जैसे लगीं; वॆयिल् विट्–धूप-सा निकालनेवाले; पकुवाय्–फटे बड़े मुखो से; कुन्ऱु इऱ–पर्वतों को फोड़कर; तॆळित्तु उरप्पिनन्–(रावण ने) डाँट बतायी और गर्जन किया; कुऱिप्पतु ऍन्–क्या कहा जाय; चीऱ्ऱत्तिन् तकैमै–कोप का प्रकार; कामन् तन् तिऱत्तैयुम्–मन्मथ की शक्ति को भी; कटन्ततु–पार कर गया। ४६६

सीताजी के ये धर्मोपदेश-वचन कहते ही रावण की बीसों आँखों से बिजली-सी छूटी। उसने अपने मुख खोलकर धूप-सा निकालते हुए गरज कर डाँट बतायी कि पर्वत भी टूट गये। तात्पर्य क्या बताया जाय? कोप का वेग मन्मथ की शक्ति को भी लाँघ गया। ४६६

वळर्न्द ताळिनन् मादिर मनैत्तैयु मऱैवित्
तळन्द तोळिन नन्लॊरि कण्णिन नॆवळैप्

पिळन्दु तिन्बॅनॅन् ऱुडन्ऱुनित् ऱन्नडि पॅयरान्
किळर्न्द शीऱ्ऱमुङ् गादलु मॅदिरॅदिर् किडॅप्प 467

वळर्न्त ताळितन्–लम्बे पैरों वाला; मातिरम् अत्तॅत्तैयुम्–सभी दिशाओं को; मऱैवित्तु अळन्त–समा लेकर नापनेवाले; तोळिनन्–कन्धों का; अतल् चॉरि कण्णितन्–आग उगलनेवाली आँखों का; इवळै पिळन्तु तिन्पॅन्–इसको खण्ड बनाकर खाऊँगा; ऍन्ऱु–कहकर; किळर्न्त चीऱ्ऱमुम्–उमगते क्रोध; कातलुम्–और प्रेम के; ऍतिर् ऍतिर् किटॅप्प–आमने-सामने हो टकराते; अटि पॅयरान्–आगे कदम न रखता हुआ; उटन्ऱु निन्ऱतन्–कोप कर खड़ा रहा। ४६७

कोप के कारण वह उछला तो उसके पैर अधिक लम्बे दिखे। भुजाएँ दिशाओं को छिपाते हुए दिशाओं को मानो नाप रही थीं। अंगारे निकालती आँखों के साथ उसने कहा कि मैं इसे तोड़कर खा लूँगा। पर उसके मन में वर्धनशील काम और क्रोध का संघर्ष हो गया। इसलिए वह आगे नहीं बढ़ा, पर कोप के साथ खड़ा रह गया। ४६७

अन्न कालैयि लनुमनु मरुन्ददिक् कऱ्पिन्
ऍन्नै याळुडै नायहन् ऱेवियै यॅन्मुन्
शॊन्न नीशन्कै तॊडुवदन् मुन्ऱुहैत् तुळक्किप्
पिन्नै निन्ऱदु शॅय्हुवॅ नॅन्बदु पिडित्तान् 468

अन्न कालैयिल्–तब; अनुमनुम्–हनुमान ने भी; अरुन्तति कऱ्पिन्–अरुन्धती के समान पतिव्रता; ऍन्नै आळुटै–मुझे अपना दास बनाये रखनेवाले; नायकन् तेवियै–नायक श्रीराम की देवी को; ऍन् मुन्–मेरे ही सामने; चॉन्न नीचन्–ऐसे वचन जिसने कहे, उस नीच के; कै तॊटुवतन् मुन्–हाथ से स्पर्श करने के पहले; तुकैत्तु उळक्कि–उसको रौंदकर मारकर; पिन्नै निन्ऱतु–बाद जो हो; चॅय्कुवॅन्–कर लूँगा; ऍन्पतु पिटित्तान्–ऐसा ठान लिया। ४६८

तब हनुमान ने सोचा कि मेरे ही सामने अनुचित वचन कहनेवाला यह नीच राक्षस अरुन्धती-सी सीताजी को, जो मुझे दास का गौरव देनेवाले मेरे स्वामी श्रीराम की देवी हैं, हाथ से स्पर्श करे, इसके पूर्व ही मैं उसे रौंदकर मार दूँगा और वाद जो करना है वह करूँगा। हनुमान ने मन में ठाना। ४६८

तनिय निन्ऱनन् ऱलैपत्तुङ् गडिदुहत् ताक्किप्
पनियिन् वेलयि लिलङ्गैयैक् कीळुऱप् पाय्च्चिप्
पुनिद मादवत् तणङ्गनैच् चुमन्दनन् पोवॅन्
इनिदि नॅन्बदु निनैन्दुदन् करम्बिशैन् दिरुन्दान् 469

तनियन्–एकाकी मैं; निन्ऱतन्–सामने स्थित; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; कटितु उक–शीघ्र गिराते हुए; ताक्कि–प्रहरित कर; इलङ्कैयै–लंका को; पनियिन् वेलैयिल्–शीतल समुद्र के अन्दर; कीळ् उऱ पाय्च्चि–धँसाते हुए भिजवाकर;

पुतित-पावन; मा तवत्तु-महती तपस्विनी; अणङ्कितै-देवी को; चुमन्ततन्-धारण करके; इतितिन् पोवॆन्-सुख से जाऊँगा; ॲन्पतुम् नितैन्तु-यह भी सोचकर; तन् करम् पिचैन्तु-अपने हाथ मलते हुए; इरुन्तान्-(मौके की ताक में) रहा। ४६९

एकाकी मैं सामने स्थित रावण के दसो सिरों को गिराते हुए प्रहार करूँगा; लंका को शीतल सागर के अन्दर नीचे पहुँचा दूँगा और पवित्र महान् तपस्विनी देवी को धारण कर सुख से चला जाऊँगा। यह भी सोचकर हनुमान अपने हाथ मलते हुए मौके की ताक मे बैठा रहा। ४६९

आण्ड वाळरक् कन्नहत् तण्डत्तै यळिप्पान्
मूण्ड कालवॆन् दीयॆन मुऱ्ऱिय शीऱ्ऱम्
नीण्ड कामनीर् नीत्तत्तिन् वीवुऱ निनैविन्
मीण्डु निन्ऱोरु तन्मैया लिनैयन विळम्बुम् 470

आणटु-तब; अ वाळ् अरक्कन्-उस निर्मम राक्षस के; अकत्तु-मन में जो उठा; अण्टत्तै अळिप्पान्-अण्डों का नाश करने; मूणट-उठी; काल वॆम् ती ॲन-युगान्त की भयंकर आग के समान; मुऱ्ऱिय चीऱ्ऱम्-सुवर्धित कोप; नीणट काम नीर् नीत्तत्तिन्-दीर्घ काम रूपी जलप्रवाह में; वीवु उऱ-बुझ गया; निनैविन् मीणटु निन्ऱु-अपनी सुध में फिर आकर; ओरु तन्मैयाल्-एक प्रकार से; इनैयन विळम्पुम्-यों कहने लगा। ४७०

तब क्रूर रावण के मन मे जो गम्भीर क्रोध अण्डनाशक युगान्त की भयंकर अग्नि के समान उठा था, वह दीर्घ प्रेम रूपी जल-प्रवाह में बुझ गया। फिर अपनी पुरानी स्मृति पाकर एक स्थिति में वह यों कहने लगा। ४७०

कॊल्वॆनॆन् ऱुडन्ऱे नुन्नैक् कोऱ्लॆन् कुऱित्तुच् चॊन्न
शॊल्लुळ ववऱ्ऱुक् कॆल्लाङ् गारणन् दॆरियच् चॊल्लिन्
ऒल्वदो दॊल्ला दीदॆन् ऱॆनक्कुमॊन् ऱुलहत् तुण्डो
वॆल्वदुन् दोऱ्ऱ ऱानुम् विळैयाट्टिन् विळैन्द मेनाळ् 471

उन्नै कॊल्वॆन् ॲन्ऱु-तुमको मारूँगा कहकर; उटन्ऱेन्-कुपित हो उठा; कोऱ्लॆन्-पर नहीं मारूँगा; कुऱित्तु चॊन्न-मुझे उद्देश्य करके जो तुमने कहा; अवऱ्ऱिक्कु ॲल्लाम्-उस सबका; कारणम् तॆरिय चॊल्लिन्-कारण समझाकर कहना चाहूँ तो; चॊल् उळ-मेरे पास कहने को विषय हैं; ॲनक्कु ऒल्वतु ईतु-मुझसे साध्य यह; ऒल्लातु ईतु-असाध्य यह; ॲन्ऱु-ऐसा; ऒन्ऱु-कुछ; उलकत्तु उणटो-दुनिया में है क्या; मेनाळ्-पहले; वॆल्वतुम् तोऱ्ऱल् तानुम्-जीतना या हारना; विळैयाट्टिन् विळैन्त-खेल में हुए थे। ४७१

मैंने कोप के कारण तुम्हें मारने की बात कही। पर अब मैं तुम्हें नहीं मारूँगा। तुमने जो भी अपराध मुझ पर लगाये, उन सबका हेतु-सहित खण्डन करूँ, इसके लिए मेरे पास विषय (तर्क) है। इस संसार में

मेरे लिए साध्य-असाध्य ऐसा कुछ है क्या ? आगे जो जय या पराजय हुईं, वे सब खेल-खेल में हुई बातें हैं। ४७१

ऑन्ऱुके ऴुरैक्क निऱ्को रुयिरॅन वुरियोन् ऱन्नैक्
कॊन्ऱुको ळिऴैत्ता नीनिन् नुयिर्विडिऱ् कुऱ्ऱङ् गूडुम्
ऎन्ऱना रुयिरु नीङ्गु मॆन्नववै यियॆय वॆण्णि
अन्ऱुनान् वञ्जञ् जॆय्द दारॆन्नक् कमरि नेर्वार् 472

ऑन्ऱु उरैक्क केळ्-एक बात कहूँगा, सुनो; निऱ्कु ओर् उयिरॆन-तुम्हारे श्रेष्ठ प्राण-सम; उरियोन् तन्नै-तुम्हारे स्वामी को; कॊन्ऱु-मारकर; कोळ् इऴैत्ताल्-अपना बल दिखाऊँ तो; नी-तुम; निन् उयिर् विटिल्-अपने प्राण त्याग दोगी तो; कुऱ्ऱम् कूटुम्-अपराध होगा; ऎन्ऱन् आरुयिरुम्-मेरे प्रिय प्राण भी; नीङ्कुम्-छूट जायँगे; ऎन्पतै-इसको; इयैय ऎण्णि-खब सोचकर ही; अन्ऱु नान् वञ्चम् चॆय्ततु-उस दिन मैंने वञ्चक काम किया; आर्-कौन; ऎनक्कु-मुझसे; अमरिल् नेर्वार्-युद्ध में लड़ सकते हैं। ४७२

सुनो, एक बात कहता हूँ। अगर मैं तुम्हारे प्राण-सम प्यारे स्वामी को मारकर अपना बल दिखलाऊँ और तुम अपनी जान छोड़ दो तो मेरे कार्य मे बाधा पड़ जायगी। और मेरे प्यारे प्राण भी छूट जायँगे। यह सब खूब सोचकर ही मैंने उस दिन प्रवंचना से काम लिया। नहीं तो कौन है जो मेरे विरुद्ध समर में लड़ सके ? । ४७२

मानॆन्ब दऱिन्दु पोन मानिड रावार् मीण्डि
यानॆन्ब दऱिन्दाल् वारा रेऴैमै यॆण्णि नोक्कल्
तेनॆन्ब दऱिन्द शॊल्लाय् तेवर्दाम् याव रेयॆङ्
गोनॆन्ब दऱिन्द पिन्नैत् तिऱम्बुवार् कुऱैयि नल्लाल् 473

तेन् ऎन्पतु अऱिन्त-शहद मानने योग्य; चॊल्लाय्-मधुरभाषिणी; मान् ऎन्पतु-हरिण; अऱिन्तु पोन-समझकर जो गये; मानिटर् आवार्-मानव लोग; मीण्टु-लौट आकर; यान् ऎन्पतु-मैं था यह; अऱिन्ताल्-समझेंगे तो; वारार्-इधर नहीं आएँगे; एऴैमै ऎण्णि नोक्कल्-कायरता मत समझो; ऎम् कोन्-हमारे शासक रावण (का) यह काम है; ऎन्पतु अऱिन्त पिन्नै-यह जानने के बाद; यावरे तेवर् ताम्-कौन देव ही सही; कुऱैयिन् अल्लाल्-मन्दवेग हुए विना; तिऱम्पुवार्-विरोध में काम करेंगे। ४७३

शहद-सी बोली वाली सीते ! वे दोनों दुर्बल मनुष्य (मारीच को) सच्चा मृग समझकर गये थे। वे लौट आकर यह जान लेंगे कि यह कार्य मेरा है तो वे इधर नहीं आएँगे। तुम मुझे कायर मत समझो। देवों में ही सही कौन है जो यह जानने पर कि यह हमारे नाथ रावण का ही काम है वेग न खोकर मेरे विरोध में वर्ताव करेंगे ? । ४७३

वॅन्ड्रोरु मिरुप्प यार्क्कु मेलवर् विळिवि लादोर्
ॲन्ड्रोरु मिरुप्प वन्ड्रे यिन्दिर ऩेवल् शॅय्य
ऑन्ड्राह वुलह मून्ड्रु माळ्हिन्ड्र वॊरुवन् याने
मॅन्ड्रोळा यिदर्कु वेड्रोर् कारणम् विरिप्प दुण्डो 474

मॅन् तोळाय्–मृदुल भुजाओं वाली; वॅन्ड्रोरुम् इरुप्प–मेरे विजयी (वाली आदि) के रहते; यार्क्कुम् मेलवर्–सबके ऊपर रहनेवाले; विळिवु इलातोर ॲन्ड्रोरुम् इरुप्प–अमर कहलानेवाले देवों के भी रहते; अन्ड्रे–न; इन्तिरन् एवल् चॅय्य–इन्द्र मेरी भृत्यता करे ऐसा; यान्–मैं; ऑन्ड्राक उलकम् मून्ड्रुम्–अकेले तीनों लोकों को; आळ्किन्ड्र ऑरुवन्–पालनेवाला एक बना रहता हूँ; इतर्कु–इसका; वेड्रु ओर् कारणम्–(मेरे बल के सिवा) कोई अन्य कारण; विरिप्पतु उण्टो–विस्तार से कहना भी है क्या। ४७४

मृदु कन्धों वाली। तुम मेरे विजेताओं की बात कहती हो! जब वे हैं और ये सर्वोच्च अमर देख ही रहे हैं; तब भी न इन्द्र मेरी सेवा-टहल करता है और मैं अकेला त्रैलोकाधिपत्य का काम कर रहा हूँ। इसका कोई अन्य हेतु है, विना मेरे पराक्रम के, जिसका मुझे वर्णन करना पड़े ? । ४७४

मूवरुन् देवर् तामु मुरणह मुड्रुङ् गॊड्ड्रम्
पावैनिन् पॊरुट्टि ऩालोर् पळिपॆड्रप् पयन्ड्रीर् नोन्बिन्
आवियन् मऩिदर् तम्मै यडुहिलॆ नवरै यीण्डुक्
कूविनिन् ड्रेवल् कॊळ्वॆन् काणुदि कुदलैच् चॊल्लाय् 475

कुतलै चॊल्लाय्–तोतली (मधुर) भाषिणी; मूवरुम्–त्रिमूर्ति; तेवर् तामुम्–देव; मुरण् उक–बल खो जायँ ऐसा; मुड्रुम् कॊड्ड्रम्–जो पूर्ण हुई वह विजय; पावै–स्त्री; निन् पॊरुट्टिनाल्–तुम्हारे कारण; ओर् पळि पॆड्र–एक अपवाद पा ले; पयन् तीर् नोन्पिन्–असफल व्रतधारी; आ इयल्–गाय के-से स्वभाव वाले; मऩितर् तम्मै–मनुष्यों को; अटुकिलॆन्–नहीं मारूँगा; अवरै–उनको; ईण्टु–यहाँ; कूवि–बुलाकर; निन्ड्रु एवल् कॊळ्वॆन्–सामने खड़ा करके आज्ञा का पालन करवा लूँगा; काणुति–देखोगी। ४७५

तोतली (मधुर) बोली वाली! मैंने त्रिमूर्ति और अन्य इन्द्रादि देवों के बल का नाश करके विजय का गौरव पाया है। उस विजय पर कलंक लगाते हुए निरर्थक व्रतधारी, गऊ-सम मानवों को नहीं मारूँगा। उन्हें इधर लाऊँगा, और वे मेरे सामने खड़े होकर मेरी सेवा-टहल करें—ऐसा करूँगा। तुम देख लो। ४७५

चिड्ड्रियर् चिरुमै याड्ड्रर् चिरुतॊळिन् मऩिद रोडे
मुड्ड्रिय दायिन् वीर मुनिवॆन्ड्रण् विळैया देऩुम्
इड्ड्रैयिप् पहलि ऩॊय्दि निरुवरै यॊरुहै याल्यान्
पड्ड्रिनॆन् कॊणरुन् दन्मै काणुदि पळिप्पि लादाय् 476

पऴिप्पु इलाताय्–अनिंद्य (सुन्दरी); चिऱ्ऱियल्–अल्प-स्वभाव; चिऱुमै आऱ्ऱल्–अल्पशक्ति; चिऱु तॉऴिल्–क्षुद्रकर्म; मनितरोटु–मानवों के साथ; मुऱ्ऱियतु आयिऩ्–शत्रुता पूर्णरूप से बढ़ी तो; वीर मुऩिवु–वीरोचित कोप; ॲऩ्ऩ कण्–मुझमें; विळैयातॆऩुम्–पैदा नहीं होगा तो भी; इऩ्ऱे इ पकलिल्–अभी, आज, इसी मुहूर्त में; नोय्तिऩ्–सुगम रूप से; इरुवरै–दोनों को; ऑरु कैयाल्–एक हाथ से; याऩ्–मैं; पऱ्ऱितॆंन् कॊणरुम्–पकड़ लाऊँगा वह; तऩ्मै–(बल का) प्रकार; काणुति–देखोगी। ४७६

अनिंद्य सुन्दरी ! मानव क्षुद्र हैं, अल्पबल हैं और अल्पकर्म हैं। उनसे शत्रुता पक्की हो गयी तो, यद्यपि मुझमे वीरता योग्य कोप नहीं होगा तो भी तुम देखोगी कि अभी इसी घड़ी दोनों को एक ही हाथ से अनायास पकड़कर इधर लाऊँगा। ४७६

पदवियिऩ् मनिद रेनुम् पैन्दॉडि निऩ्ऩैत् तन्द
उदवियै युणर नोक्कि नुयिर्क्कॉलैक् कुरिय रल्लर्
शिदैवुऱ लवर्क्कु वेण्डिऱ् चॅय्दिनी यॆंऩ्ऱु शॅप्पिल्
इदमुनक् कीदे याहि लियऱ्ऱुवॆन् काण्डि यिऩ्ऩुम् 477

पैन्तॉटि–मनोरम कंकणशोभिते; इऩ्ऩुम्–और भी; पतवि इल्–श्रेष्ठ पद में न रहनेवाले; मनितर् एऩुम्–मनुज हों तो भी; निऩ्ऩै तन्त–तुम्हें जो मुझे दिया; उतवियै–वह उपकार; उणर नोक्किऩ्–विचार कर देखें तो; उयिर् कॉलैक्कु उरियर् अल्लर्–जान से मारे जाने योग्य नहीं है; अवर्क्कु–उनका; चितैवु उऱल्–मरना; वेण्टिल्–तुम चाहोगी (कि वे मरें) तो; चॅय्ति नी–तुम करो; ॲऩ्ऱु चॅप्पिल्–ऐसा कहोगी तो; ईते उऩक्कु इतम् आकिल्–यही तुम्हारे हित में होगा तो; इयऱ्ऱुवॆऩ्–करूँगा; काण्टि–देखो। ४७७

मनोरम कंकणधारिणी ! वे उच्चपद मनुष्य नहीं हैं। तो भी तुमको उन्होंने मुझे दिलाया है। उस उपकार को लेकर सोचा जाय तो वे मारे जाने योग्य नहीं हैं। पर अगर तुम चाहो कि वे मर जायँ, इसी में तुम्हारा भला है तो मैं वही करूँगा। ४७७

पळ्ळनी रयोत्ति नण्णिप् परदऩे मुदलि ऩोराण्
डुळ्ळवर् तम्मै यॅल्ला मुयिर्कुडित् तूऴित् तीयिऩ्
वॅळ्ळनीर् मिदिलै योरै वेरुत् तॅऴिदि ऩॅय्दिक्
कॊळ्वॅऩिऩ् ऩुयिरु मॅऩ्ऩै यरिन्दिलै कुऱैन्द नाळोय् 478

कुऱैन्त नाळोय्–क्षीण हुई आयु वाली; पळ्ळ नीर्–गम्भीर जलसमृद्ध; अयोत्ति नण्णि–अयोध्या में जाकर; परतऩे मुतलितोर्–भरत आदि; आण्टु उळ्ळवर् तम्मै ॲल्लाम्–वहाँ रहनेवाले सबों को; उयिर् कुटित्तु–प्राण पीकर (मारकर); ऊऴि तीयिऩ्–युगान्त अग्नि के समान; वॅळ्ळ नीर् मितिलैयोरै–प्रवाह जलपूर्ण

मिथिलावासियों को; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल करके; ॲळितिऩ् ॲयृति–आसानी से (लौट) आकर; निऩ् उयिरुम् कॊळ्वॆऩ्–तुम्हारी भी जान हर लूँगा; ॲऩ्ऩै अऱिन्तिलै–मुझे नहीं समझतीं। ४७८

हे क्षीण हुई आयु वाली ! गहरे जल से समृद्ध अयोध्या जाकर भरत आदि वहाँ के सभी को मारकर फिर युगान्तकालीन अग्नि के समान जल-प्रवाह समृद्ध मिथिला जाऊँगा। वहाँ के सभी को मारूँगा। फिर अनायास इधर आकर तुम्हारे प्राण भी हर लूँगा। तुम मुझे नहीं समझीं ! । ४७८

ईदुरैत् तळऩ्ऱु पॊङ्गि यॆरिहदिर् वाळै नोक्कित्
तीदुयिर्क् किळैक्कु नाळुन् दिङ्गळो रिरण्डिर् ऱॆय्ऩ्द
दादलिर् पिऩ्ऩर् नीये यऱिऩ्दवा ऱऱिदि यॆऩ्ऩाप्
पोदरिक् कण्णि नाळै यहत्तुवैत् तुरप्पिप् पोऩाऩ् 479

ईतु उरैत्तु–यह (सब) कहकर; अऴऩ्ऱु पॊङ्कि–क्रोध में भभककर; ॲरि कतिर्–जलती-सी कान्ति वाली; वाळै नोक्कि–तलवार को देखकर; उयिर्क्कु तीतु इऴैक्कुम् नाळुम्–तुम्हारे प्राणों की हानि करने का दिन भी; तिङ्कळ् ओर् इरण्टिल्–दो मासों में; तेय्न्ततु–(पूरा) हो जायगा; आतलिऩ्–इसलिए; पिऩ्ऩर्–बाद; नीये अऱिन्त आऱु अऱिति–तुम जो समझो वही समझो; ॲऩ्ऩा–कहकर; पोतु अरि कण्णिनाळै–कमल-सम और लाल डोरों-सहित आँख वाली सीता को; अकत्तु वैत्तु–मन में रखते हुए; उरप्पि–डाँट बताकर; पोऩाऩ्–गया। ४७९

यह कहकर रावण ने भभकते क्रोध के साथ अग्नि के समान तेज उगलनेवाली अपनी तलवार को देखा। 'अब तुम्हारे मरने का दिन भी दो महीने मे आ गया। इसलिए फिर तुम जैसा समझो वैसा समझो।' उसने कमल-सम और डोरों-सहित आँखों वाली सीताजी से कहा और उनके रूप को अपने मन में लिए हुए, उन्हें डाँट बताकर चला। ४७९

अञ्जुवित् तानु मॆऩ्मै यऱिवुऱत् तेऱ्ऱि यानुम्
वञ्जियिऱ् चॆव्वि याळै वशित्तॆऩ्बाल् वरच्चॆय् यीरेल्
नञ्जुमक् काॅवॆ ऩॆऩ्ऩा नहैयिला मुहत्तुप् पेळ्वाय्
वॆञ्जिनत् तरक्कि मार्क्कु वेऱुवे ऱुणर्त्तिप् पोऩाऩ् 480

वञ्चियिल् चॆव्वियाळै–स्त्रियों में अति सुन्दर सीतादेवी को; अञ्चुवित्ताऩुम्–डरा-धमकाकर ही सही; मॆऩ्मै–नरमी से; अऱिवु उऱ–बात समझे ऐसा; तेऱ्ऱियाऩुम्–समझाकर; वचित्तु–मेरे वशीभूत करके; ॲऩ पाल्–मेरे पास; वर चॆय्यीरेल्–आने को मजबूर न करोगी तो; उमक्कु नञ्चु आवॆऩ्–तुम लोगों के लिए विष बन जाऊँगा; ॲऩ्ऩा–ऐसा; नकैयिला मुकत्तु–हासहीन वदन की; पेळ्वाय्–बड़े मुखों की; वॆम् चिऩत्तु–भयंकर क्रोधशीला; अरक्किमार्क्कु–राक्षसियों से; वेऱु वेऱु–अलग-अलग; उणर्त्ति–सीख देकर; पोऩाऩ्–गया। ४८०

जाने से पहले, उसने वहाँ रही हासहीन-वदना और फटे-से मुखों वाली राक्षसियों को अलग-अलग समझाया कि स्त्रियों में श्रेष्ठ इस सीता को भय दिखाओ या कोमल शब्दों में समझाओ। उसे मेरी वशवर्तिनी बनाकर मेरे पास नहीं भेजोगी तो मैं तुम्हारे लिए विष बन जाऊँगा। ४८०

पोयिऩ ऩरक्कऩ् पिऩ्ऩैप् पॊङ्गरा नुङ्गिक् कान्ऱ
तूयवॆण् मदिय मॊत्त तोहैयैत् तॊडर्न्दु शुऱ्ऱित्
तीयवल् लरक्कि मारुह डिरण्डॆऴुन् दुरप्पिच् चिन्दै
मेयिऩ वण्ण मॆल्लाम् विळम्बुवान् ऱॊडङ्गि नाराल् 481

अरक्कऩ् पोयिऩऩ्–राक्षस (रावण) चला गया; पिऩ्ऩै–पश्चात्; पॊङ्कु अरा–फुफकार उठनेवाले (राहु) द्वारा; नुङ्कि कान्ऱ–निगलकर उगले हुए; तूय वॆण् मतियम् ऒत्त–शुद्ध श्वेत चन्द्र के समान; तोकैयै–कलापी-सी सीताजी को; तीय–क्रूर; वल्–बलयुक्त; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; तॊटर्न्तु चुऱ्ऱि–लगातार घेरकर; तिरण्टु ऎऴुन्तु–एक साथ उठकर; उरप्पि–डाँटकर; चिन्तै मेयिऩ वण्णम् ऎल्लाम्–मनमाने प्रकार से; विळम्पुवाऩ् तॊटङ्कितार्–कहने लगीं। ४८१

निशाचर चला गया; बाद क्रूर और बलयुक्त राक्षसियाँ फुफकार उठे राहु सर्प द्वारा निगलकर उगले हुए शुद्ध श्वेत चन्द्र-सी और कलापी-सी मनोरम सीता को लगातार घेर गईं। डाँटने लगीं और मनमाना कहने लगीं। ४८१

मुऩ्मुऩ् निऩ्ऱार् कण्गनल् शिन्द मुडुहुऱ्ऱार्
मिऩ्मिऩ् ऩॆऩ्ऩुञ् जूलमुम् वाळुम् मिशैयोच्चिक्
कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्ऱु कुऱैत्तुक् कुडरारत्
तिऩ्मिऩ् ऱिऩ्मिऩ् ऩॆऩ्ऱु तॆऴित्तार् शिलरॆल्लाम् 482

चिलर् ऎल्लाम्–कुछ लोग; कण् कऩल् चिन्त–आँखों के अंगारे उगलते; मुऩ् मुऩ् निऩ्ऱार्–एक के आगे एक खड़ी हुईं; मुटुकुऱ्ऱार्–फिर सतेज उनके पास गयीं; मिऩ् मिऩ् ऎऩ्ऩुम्–चमाचम; चूलमुम् वाळुम्–शूल और तलवार को; मिचै ओच्चि–ऊपर हिलाते हुए; कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्मिऩ्–मारो, मारो; कॊऩ्ऱु कुऱैत्तु–मारकर टुकड़े बनाकर; कुटर् आर–पेट भरके; तिऩ्मिऩ् तिऩ्मिऩ्–खाओ, खाओ; ऎऩ्ऱु–ऐसा; तॆऴित्तार्–डाँटीं। ४८२

कुछ राक्षसियाँ आँखो से अंगारे छितराते हुए एक के आगे एक उनके सम्मुख आयीं; और चमाचम अपने शूलों और तलवारों को ऊपर हिलाते हुए चिल्लायीं कि मारो, इसे मार दो। मारकर शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके पेट भर खा लो और उन्होंने डाँट बतायी। ४८२

वैयन् दन्द नान्मुहन् मैन्दऩ् महऩ्मैन्दऩ्
ऐयन् वेद मायिरम् वल्लो ऩऱिवाळऩ्

मॅय्यत् बुन्बाल् वैत्तुळ दल्लाल् वित्तैवॅन्ड्रोन्
शॅय्युम् बुन्मै यादुहॉ लॅन्ड्रार् शिलरॅल्लाम् 483

चिलर् ऍल्लाम्–(अन्य) कुछ राक्षसियों ने; वैयम् तनूल–लोकोत्पादक; नान्मुकन् मैन्तन्–चतुर्मुख के पुत्र (पुलस्त्य) के; मकन् मैन्तन्–पुत्र विश्रवा के पुत्र; ऐयन्–(रावण) त्रिलोकाधिपति है; वेतम् आयिरम् वल्लोन्–सहस्रशाखा वेद के ज्ञाता; अऱिवाळन्–बुद्धिमान; उन् पाल्–तेरे प्रति; मॅय् अनपु–सच्चा प्रेम; वैत्तुळतु अल्लाल्–रखता है वही नहीं; वित्तै वॅन्ड्रोन्–इष्ट कार्य में सफलता पानेवाले; चॅय्युम् पुन्मै–(तो भी तेरी) यह मूर्खता; यातु कॉल्–क्यों; ऍन्ड्रार्–पूछा। ४८३

कुछ राक्षसियों ने समझाया कि लोकसर्जक चतुर्मुख के पुत्र पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा के पुत्र हैं हमारे अधिपति रावण। त्रिलोकाधिपति हैं, सहस्रशाखा वेद के ज्ञाता। महा बुद्धिशाली। तुमसे प्रेम जो करते हैं, उस एक कार्य को छोड़कर उन्होंने सभी अभीष्ट कार्यों में सफलता ही पायी है। फिर क्यों तुम यह अज्ञता का काम कर रही हो? । ४८३

मण्णिड् ड्रेय्वोर् मानिडर् तत्तम् वळियोडुम्
पॅण्णिड् ड्रीयोय् निन्मुदन् माळुम् बिणिशॅय्दाय्
पुण्णिड् कोलिट् टालन शॉल्लल् पॉदुनोक्काय्
ऍण्णिड् काणाय् मॅय्म्मैयै यॅन्ड्रार् शिलरॅल्लाम् 484

चिलर् ऍल्लाम्–कुछ; मानिटर्–मनुष्य; मण्णिल्–भूमि पर; तेय्वोर्–क्षय होनेवाले हैं; पॅण्णिल् तीयोय्–स्त्रियों में क्रूरी; निन् मुतल्–तुझसे लेकर; तत्तम् वळियोडुम्–अपनी परम्परा के साथ; माळुम् पिणि–वे मर जाएँ ऐसा रोग (बुरा-कार्य); चॅय्ताय्–तूने कर दिया; पुण्णिल् कोलिट्टाल् अन–व्रण में लकड़ी घुसी जैसे; चॉल्लल्–मत कहो; मॅय्म्मैयै–सत्य को; पॉतु नोक्काय्–निष्पक्ष रहकर देखती नहीं; ऍण्णिल् काणाय्–सोचकर भी नहीं देखती; ऍन्ड्रार्–बोलीं। ४८४

कुछ राक्षसियों ने बताया कि मानव मर्त्य हैं। तू स्त्रियों में क्रूर है। अपने से लेकर वे मानव अपने-अपने परिवारों के साथ मर जाएँ, तूने उनके लिए ऐसा रोग उत्पन्न किया है! व्रण में लकड़ी घुसेड़ते-से वचन मत बोल। निष्पक्ष होकर सत्य नहीं देखती। सोचकर भी नहीं देखती। ४८४

पुक्क वळिक्कुम् बोन्द वळिक्कुम् बुहैवॅन्दी
ऑक्क विदैप्पा नुड्ड्रनै यन्ड्रो वुणर्विल्लाय्
इक्कण मिड्ड्रा युन्निन मॅल्ला मुयिर्वाळा
शिक्क वुरैत्तो मॅन्ड्रु कदित्तार् शिलरॅल्लाम् 485

चिलर्–कुछ; ऍल्लाम्–सभी; उणर्वु इल्लाय्–विवेकहीन; पुक्क वळिक्कुम्–वधू बनकर जिस कुल में आयी है, उस कुल में; पोन्त वळिक्कुम्–और जहाँ जनमी

उस कुल में; पुकै वॅम् ती–धुआँ-सहित आग; ऑक्क वितैप्पान्–एक साथ लगाने के लिए; उऱ्ऱतै अन्ऱो–तत्पर है न; इ कणम् इऱ्ऱाय्–इसी क्षण नष्ट हो जाएगी; उन् इऩम् ॲल्लाम्–तेरे वर्ग के सभी; उयिर् वाऴा–जीवित नहीं रहेंगे; चिक्क उरैत्तोम्–साफ़-साफ़ कह दिया हमने; ॲन्ऱु कतित्तार्–ऐसा कोप के साथ वोलीं। ४८५

कुछ लोगों ने गुस्सा दिखाया। विवेकहीन स्त्री ! जिस कुल में तू वधू वनके गयी, उस वंश में और जिसमें तू जनमी, उसमें तू धुएँ-सहित भयंकर आग को एक साथ बीज के समान वोने का काम कर चुकी। मरी तू अभी। तेरे वर्ग के सभी (कोई) जीवित नहीं रहेंगे। हमने साफ़-साफ़ बता दिया। ध्यान रखो। ४८५

कॉल्वा तुऱ्ऱोर् पॅऱ्ऱिमै यादुङ् गुऱैयादोन्
वॅल्वा नॅङ्गॉन् ऱिन्नुमिन् वम्मि ऩिवणमॅय्यै
वल्वाय् वॅय्यो नॆवलि नॅन्ना मनम्वैत्तार्
नल्वाय् नल्लाळ् कण्गळ् कलुऴन्दा णहुहिन्ऱाळ् 486

कॉल्वान् उऱ्ऱोर्–मारने जो आयीं वे; ॲम् कोन्–हमारे राजा; पॅऱ्ऱिमै यातुम्–निश्चत कार्य में सफलता पाने में कोई भी; कुऱैयातोन्–कमी रखनेवाले नहीं हैं; वॅल्वान्–वे अवश्य सफल होंगे; वॅय्योन्–वे भयानक हैं; वल् वाय् एवलिन्–कठोर उनकी सुनायी गयी आज्ञा के अनुसार; वम्मिन्–आओ; इवळ् मॅय्यै–इसके शरीर को; तिन्नुमिन्–खाओ; ॲन्ना–कहकर; मनम् वैत्तार्–मन लगाने लगीं; नल्वाय्–श्रेष्ठ वचन वोलनेवाली; नल्लाळ्–अच्छी देवी; कण्कळ् कलुऴ्न्ताळ्–आँखों से अश्रु बहाती हुई; नकुकिन्ऱाळ्–अपनी दशा पर हँसीं। ४८६

वे सीताजी को मारने उठ आयीं। हमारे राजा का गुण है कि वे अपने किसी निश्चित कार्य में असफल नहीं होते। वे हमेशा जीत जाते हैं। वे निर्मम हैं। उनकी कठोर आज्ञा का अभी हम पालन कर लेंगे। आओ सभी। इसके शरीर को खा लेंगे। कहते हुए वे ऐसा बढ़ीं, मानो उन्होंने दृढ़ संकल्प कर लिये हों। श्रेष्ठ वचन वोलनेवाली सीताजी की आँखों से आँसू वहने लगा। वे अपनी विचित्र स्थिति पर हँसी। ४८६

इन्नो रन्न वॅय्दिय कालत् तिडैनिन्ऱाळ्
मुन्ने शॊन्नेन् कण्ड कनाविन् मुडिवम्मा
पिन्ने वाळा पेदुरु वीरेऱ् पिऴैयॅन्ऱाळ्
अन्ने नन्ऱॆन् ऱारव रॅल्ला मऱिवुऱ्ऱार् 487

इन्नोर् अन्न–ऐसी (बुरी) स्थिति; ॲय्तिय कालत्तु–जव हो गयी तव; इटै निन्ऱाळ्–जो उनके मध्य खड़ी रही उस (त्रिजटा) ने; कण्ट कनाविन्–अपने देखे स्वप्न का; मुटिवु–अन्त; मुन्ने चॊन्नेन्–पहले ही मैंने कहा; वाळा–व्यर्थ; पेतुऱ्वीरेल्–भ्रमित हो दुःख करोगी तो; पिन्ने–वाद; पिऴै–गलत होगा; ॲन्ऱाळ्–

कहा; अवर् ऍल्लाम्–सभी राक्षसियाँ; अऱिवुऱ्ऱार्–समझदार बनीं; अन्ऩत्ते नन्ऱु–वही ठीक है; ऍन्ऱार्–कहा; (अम्मा–माँ) । ४८७

इस तरह की विकट स्थिति में उनके मध्य जो खड़ी थी, उस त्रिजटा नाम की राक्षसी ने उनसे कहा कि देखो। मैंने अपना देखा स्वप्न पहले ही बताया और उसका सम्भाव्य फल भी। व्यर्थ भ्रम में पड़कर संकट उठाओगी तो पीछे अपराध होगा। उसका समझाना सुनकर सभी राक्षसियाँ चेत गयी। उन्होंने त्रिजटा से कहा कि तुम्हारा कहना सही है। ४८७

अऱिन्दा रन्न मुच्चडै यॅन्ऩबा ळवळ्शॊल्लप्
पिऱिन्दार् शोऱ्ऱ मन्ननै यञ्जिप् पिऱिहिल्लार्
शॆऱिन्दा राय तीविनै यन्ऩार् तॆऱ्ऱलॆण्णार्
नॆऱिन्दा रोदिप् पेदैयु मावि निलैनिन्ऱाळ् 488

मुच्चटै ॲन्ऩ्पाळ् अवळ्–त्रिजटा नाम की उसके; अन्ऩ चॊल्ल–वैसा कहने पर; चॅऱिन्तार् आय–(देवी को) ठस घेर आये; तीविनै अन्ऩार्–बुरे कर्म के समान वे; अऱिन्तार्–स्थिति समझकर; चीऱ्ऱम् पिऱिन्तार्–कोप छोड़ गयीं; मन्ऩनै अञ्चि–राजा से डरकर; पिऱिकिल्लार्–हटीं नहीं (तो भी); तॆऱ्ऱल् ऍण्णार्–(देवी से) शत्रुता करना नहीं चाहती; नॆऱिन्तार् ओति पेतैयुम्–घुँघराले घने केश वाली देवी भी; आवि निलै निन्ऱाळ्–प्राण धारण किये रहीं। ४८८

त्रिजटा के वैसा कहने पर, जो सीता के घने बुरे कर्म के समान थीं, वे सब सत्य जानकर शान्तक्रोध हुईं। राजा से डर था; इसलिए वे दूर नहीं गयीं। फिर भी उन्होंने शत्रुता दिखाने की बात छोड़ दी। घने घुँघराले केश वाली सीताजी भी किसी तरह प्राणधारण किये रह गयी। ४८८

4. उरुक्काट्टु पडलम् (रूप-प्रकटन पटल)

❀ काण्डऱ् कौत्त कालमु मीदे तॆरुकावल्
तूण्डऱ् कुऱ्ऱ तीयव रॆल्लान् दुयिल्वुऱ्ऱार्
ईण्डत् तुञ्जुम् विञ्जैहळ् शॆय्दा ऩिहल्वीरऩ्
माण्डऱ् ऱारा मॆन्ऱिड वन्ना रयर्वुऱ्ऱार् 489

इकल् वीरऩ्–युद्धवीर हनुमान ने; तॆऱु कावल्–त्रासपूर्ण पहरे में; तूण्टऱ्कु उऱ्ऱ–अधिक सतर्कता दिखाने को उद्यत; तीयवर् ऍल्लाम्–क्रूर सभी राक्षसियाँ; तुयिल्वु उऱ्ऱार्–सोने लगी है; काण्टऱ्कु–देवी से भेट करने; औत्त कालमुम् योग्य समय भी; ईते–यही है; ईण्टत् तुञ्चुम्–खूब सोने को प्रेरित करनेवाली; विञ्चैकळ् चॆय्तान्–विद्या का प्रयोग किया; माण्टु अऱ्ऱार् आम्–मर-मिट गयीं; ऍन्ऱिट–कहने योग्य रीति से; अन्ऩार्–वे; अयर्वुऱ्ऱार्–चूर पड़ी रहीं। ४८९

युद्धवीर हनुमान ने सोचा कि अब त्रास देने के लिए पहरे को उत्तरोत्तर कड़ा करने पर तुली राक्षसियाँ सोने लगी हैं। यही सीताजी से भेंट करने के लिए उचित समय है। फिर उसने ऐसी विद्या का प्रयोग किया, जिससे वे खूब गहरी नीद सोएँ। वे भी मरी पड़ी-सी चूर हो पड़ी रही। (यह जादू की बात मूल में नहीं है)। ४८९

❀ तुञ्जा	दारुन्	डुञ्जुदल्	कण्डा	डुयराऱ्ऱाळ्
नॆञ्जा	लॊन्ऱु	मुय्वळि	काणा	णॆहुहिन्ऱाळ्
अञ्जा	निन्ऱाळ्	पन्नॆडु	नाळु	मळिवुऱ्ऱाळ्
अॆञ्जा	वन्बा	लिन्नप	हऱ्ऱ्दाङ्	गिडरुऱ्ऱाळ् 490

तुञ्चातारुम्–जो (पहरे में) कभी नहीं सोयीं; तुञ्चुतल् कण्टाळ्–सोयीं यह देखा और; तुयर् आऱ्ऱाळ्–दुःख न सह सकीं; नॆञ्चाल्–मन में; ऒन्ऱुम् उयवळि–एक भी बचने का उपाय; काणाळ्–जो न देख सकीं; नॆकुकिन्ऱाळ्–व्यग्रमना; अञ्चा निन्ऱाळ्–भयभीत; पल् नॆटु नाळुम्–अनेक लम्बे दिन; अळिवुऱ्ऱाळ्–त्रस्त जो रहीं; अॆञ्चा अन्पाल्–(श्रीराम के प्रति) अक्षय प्रेम से; आङ्कु–तब; इन्न पकर्न्तु–ऐसा कहती हुई; इटर् उऱ्ऱाळ्–शोक में पड़ीं। ४९०

सीताजी ने देखा कि पहरे में जो कभी नहीं सोयीं, वे अब सो गयी हैं। उन्हें दुःख असह्य लगा। मन में बचने का कोई उपाय नहीं सूझा। विदीर्णमना वे भयभीत हुईं। बहुत दिनों से दुःखी वे श्रीराम के प्रति अक्षय प्रेम से यों विलपती हुई शोकमग्न हुईं। ४९०

❀ करुमे हनॆडुङ् गडल्हा वन्नैयान्, तरुमे तमियेन् ऱन्नदा रुयिर्दान्
उरुमे ऱुमिळ्वॆञ् जिलैना णॊलिदान्, वरुमे युरैयाय् वलियार् विदिये 491

वलि आर् वितिये–सबल विधि; करु मेक–काला मेघ; नॆटुम् कटल्–बड़ा सागर; का–उपवन; अन्नैयान्–जैसे श्रीराम; तमियेन् तन्तु–अकेली मेरे; आरुयिर् तान्–प्यारे प्राण; तरुमे–बचाएँगे क्या; उरुम् एऱु–अशनि-श्रेष्ठ-सम गर्जन; अमिळ्–निकालनेवाले; वॆम् चिलै–भयंकर धनु का; नाण् ऒलि तान्–ज्यास्वन भी; वरुमे–आयगा क्या; उरैयाय्–कहो। ४९१

री, सबल विधि! काला मेघ, विशाल समुद्र और हरा उद्यान —इनके समान शोभायमान श्रीराम आकर एकाकिनी मेरे प्राण बचाएँगे क्या? बड़े वज्र के समान नर्दन करनेवाले उनके भयंकर धनु का ज्यास्वन भी सुनाई देगा क्या?। ४९१

कल्ला मदियेॆ कदिर्वा णिलवे, शॆल्ला विरवे शिऱुहा विरुळे
अॆल्ला मॆन्नैये मुन्निवीर् निनैया, विल्ला ळनैया दुस्विळित् तिलिरो 492

कल्ला मतिये–विद्याहीन चन्द्र; कतिर् वाळ् निलवे–अति प्रकाशमय चाँदनी;

चॆल्ला इरवे–अचल रात; चिरुका इरुळे–अक्षय अन्धकार; ऎंतैये मुतिवीर्–तुम सब मुझी पर रुष्ट हो; नितैया–जो मेरे स्मरण नहीं करते; विल्लाळतॆ–उन कोदण्डपाणी से; यातुम् विळितुतिलिरो–कुछ भी गुस्सा नहीं करोगे क्या। ४६२

हे अशिक्षित चन्द्र ! अत्युज्ज्वल चाँदनी ! अगतिशील रात ! अक्षय अन्धकार; तुम सब मुझी पर रुष्ट हो ! उन धनुर्धर से, जो मेरा स्मरण ही नहीं करते, कुछ गुस्सा नहीं करोगे क्या ? । ४९२

तऴल्वी शियुला वरुवा डैदऴीइ, अऴल्वी रॆंनदा वियऱिन् दिलिरो
निऴल्वी रैयना नुडने नॆंडुनाळ्, उऴल्वीर् कॊडियी रुरैया डिलिरो 493

कॊटियीर्–हे निर्मम; तऴल् वीचि–आग बरसाकर; उला वरु–यात्रा करनेवाली; वाटै तऴीइ–उदीची हवा को साथ ले; अऴल्वीर्–मुझे सताते हो; ऎंतनु आवि अऱिन्तिलिरो–मेरी जान (की स्थिति) नहीं जानते हो क्या; निऴल् वीरै अत्तान्–छवि में सागर-सम श्रीराम; उटने–के साथ; नॆंटु नाळ् उऴल्वीर्–बहुत दिनों से फिरते हो; उरै आटिलिरो–बात नहीं बताओगे क्या। ४६३

रे क्रूर (चन्द्र, चाँदनी, रात और अन्धकार) ! अंगार बिखेरते हुए विजययात्रा करती आनेवाली उदीची हवा के साथ मिलकर मुझे जला रहे हो ! मेरे प्राणों पर जो बन आयी है वह नहीं समझते क्या ? सागर-छवि श्रीराम से बहुत दिनों से मिले रहते हो। उनसे मेरी बात नहीं कहते क्या ? । ४९३

वारा दॊऴिया तॆंनुम्वन् मैयिनाल्, ओरा यिरको डियिडर्क् कुडैवेन्
तीरा वॊरुनाळ् वलिशे वहने, नारा यणने तनिना यहने 494

वलि चेवकने–सबल वीर; तनि नायकने–अनुपम स्वामी; नारायणने–नारायण; वारातु ऒऴियान्–विना आये नहीं रहेंगे; ऎंनुम् वन्मैयिनाल्–इस दृढ़ विचार से; ऒरुनाळ् तीरा–एक दिन के लिए भी जो नहीं छोड़ते; ओर् आयिर कोटि–एक सहस्र कोटि; इटर्क्कु उटैवेन्–संकटों से पीड़ित हूँ। ४६४

सबल पराक्रमी ! अनुपम नायक, नारायण ! श्रीराम विना आये नहीं रहेंगे —इस दृढ़ विचार से मैं कितने ही सहस्र कोटि संकटों में पड़ी रहती हूँ जो एक दिन के लिए भी मुझे नहीं छोड़ते। ४९४

तरुवॊन् ऱियका नडैवाय् तविर्नी, वरुवॆन् शिलना ऴिनिन्मा नहर्वाय्
इरुवॆन् ऱनैयित् ऱरुडा न्रिदुवो, ऒरुवॆन् ऱनिया वियैयुण् णुदियो 495

तरु ऒन्ऱिय–तरुसंकुल; कान् अटैवाय्–वन जाना चाहनेवाली; नी तविर्–(वह इच्छा) तुम त्याग दो; चिल नाऴिनिन्–कुछ दिनों में; वरुवॆन्–आ जाऊँगा; मा नकर् वाय् इरु–बड़े (अयोध्या) नगर में रहो; ऎंन्ऱनै–ऐसा समझाया; ऒरु–एकाकिनी; ऎंन् तनि आवियै–मेरे प्राणों को; उणणुतियो–त्रास देंगे क्या; इन् अरुळ् तान्–हितकारिणी कृपा भी; इतुवो–यही क्या। ४६५

"हे तरु-संकुल-कानन-गमन-कामिनी ! वह विचार छोड़ो। कुछ ही दिनों में लौट आऊँगा। तुम इस महानगर (अयोध्या) में ही रहो।" आपने मुझे ऐसा कहा। अकेली दुःख सहनेवाली मेरे प्राणों को आप खा लेंगे क्या ? यही आपकी कृपा का प्रकार है ? । ४९५

❀ पेणुम् मुणर्वे युयिरे पॆरुनाळ्, नाणिऩ् ऱुळ्ळ्वीर् तनि नायहनैक्
काणुन् दुणैयुङ् गळिवी रलिर्नाऩ्, पूणुम् बळियो डुपॊरुन् दुवदो 496

पेणुम् उणर्वे–परिपालित बुद्धि; उयिरे–मेरे प्राण; पॆरु नाळ्–अनेक दिनों से; नाण् इऩ्ऱु–बेशरम होकर; उळ्ळ्वीर्–(मेरे साथ रहकर) संकट उठा रहे हो; तनि नायकनै–अप्रतिम नायक को; काणुम् तुणैयुम्–देखते समय तक; कळिवीर् अलीर्–हटोगे नहीं; नाऩ् पूणुम् पळियोटु–मैं जो (अपयश) धारण करती हूँ, उस अपयश के साथ; पॊरुन्तुवतो–तुम भी लगे रहोगे क्या। ४९६

ऐ मेरी परिपालित सुध ! मेरे प्राण ! अनेक दिनों से तुम निर्लज्ज होकर मेरे साथ संकट उठा रहे हो। जब तक मैं अपने अनुपम प्राणनाथ से नहीं मिलूँ तब तक छोड़ोगे नहीं, शायद। मुझे जो अपयश लगेगा उसी से तुम भी लगे रहोगे क्या ? । ४९६

मुडिया मुडिमऩ् नऩ्मुडिन् दिडवुन्, पडिये ळुनॆडुन् दुयर्पा विडवुम्
पॊडियेय् नॆऱिवन् दुवऩम् बुहुदुम्, कॊडियान् वरुमॆऩ् ऱुहुला वुवदो 497

मुटिया–दीर्घजीवी; मुटि मऩ्ऩऩ्–किरीटधारी चक्रवर्ती; मुटिन्तिटवुम्–मर जाएँ; पटि एळुम्–सातों लोकों में; नॆटुम् तुयर्–अधिक दुःख; पाविटवुम्–फैल जाए; पॊटि एय्–धूलि-भरे; नॆऱि वन्तु–मार्ग में आकर; वऩम् पुकुतुम् कॊटियाऩ्–वन में आये निर्मम श्रीराम; वरुम् ऎऩ्ऱु–आएँगे समझकर; कुलावुवतो–विनोद में रहूँ। ४९७

दीर्घजीवी, किरीटधारी चक्रवर्ती मर गये; सातों लोकों को दुःख ने व्यापकर सताया —ऐसी स्थिति पैदा करते हुए धूलिमण्डित मार्ग से आकर वन में आये श्रीराम। वे निर्मम आयँगे —ऐसा मानकर विनोद करती रहूँ क्या ? । ४९७

❀ ॲऩ्ऱॆऩ् ऱुयिर्विम् मियिरुन् दयर्वाळ्
मिऩ्ऱुन् नुमरुङ् गुल्विळङ् गिळैयाळ्
ऒऩ्ऱॆन् नुयिरुण् डॆऩिनुण् डिडर्याऩ्
पॊऩ्ऱुम् बॊळुदे पुहळ्पू णुमॆना 498

ॲऩ्ऱु ॲऩ्ऱु–ऐसा-ऐसा; उयिर् विम्मि–श्वास भरते हुए; इरुन्तु अयर्वाळ्–रहकर शिथिल हो रही थीं; मिऩ् तुऩ्ऱुम्–विद्युत् का आश्रय; मरुङ्कुल्–कमर; विळङ्कु इळैयाळ्–और चमकते आभरणधारिणी; ॲऩ् उयिर् ऒऩ्ऱु उण्टु ॲनिऩ्–

मेरे प्राण नामक कुछ हो तो; इटर् उण्डु–पीड़ा होगी; यान् पोन्ऱुम् पोऴुते–अपने मरते समय ही; पुकऴ् पूणुम्–यशोधारिणी बनूँगी; ॲन्ना–सोचकर। ४६८

ऐसी-ऐसी बातें कहती हुई सीताजी विकलप्राण होकर शिथिल पड़ रही थी। क्षीण विद्युत्कटि और उज्ज्वल आभरणधारिणी सीता ने सोचा कि जब तब प्राण रहेंगे तब तक कष्ट साथ रहेगा। मरूँगी तभी यश होगा। ऐसा सोचकर—। ४९८

***पोऱैयिरुन् दाऱ्ऱियॅन् नुयिरुम् बोऱ्ऱिनेन्**
अऱैयिरुङ् गऴलवऩ् काणु माशैयाल्
निऱैयिरुम् बल्बह निरुदर् नीणहर्च्
चिऱैयिरुन् देनैयुम् बुनिदन् ऱीण्डुमो 499

अऱै–स्वरित; इरुम् कऴल्–बड़ी पायलधारी; अवऩ्–उन (श्रीराम) को; काणुम् आचैयाल्–देखने की इच्छा से; इरुन्तु–यहाँ रहकर; पोऱै आऱ्ऱि–सहनशील बनकर; ॲन् उयिरुम् पोऱ्ऱिनेन्–अपने प्राण पालित किये; निऱै इरुम्–अक्षय बड़े; पल् पकल्–अनेक दिन; निरुतर् नीळ् नकर्–राक्षसों के विशाल नगर में; चिऱै इरुन्तेनैयुम्–कारागृह में रही मुझे; पुनितन्–पावन मूर्ति श्रीराम; तीण्टुमो–अपनाएँगे क्या। ४६६

क्वणनशील बड़ी पायलधारी श्रीराम के दर्शन की आशा से मैंने यहाँ रहकर, कष्ट सहकर प्राण पाल लिये। अक्षय अनेक दिनों से राक्षस-नगर में बन्दिनी रहती हूँ। क्या वे पावन मूर्ति श्रीराम मुझे अपनायेंगे ?। ४९९

***उन्निन वुन्निन वुणर्न्दु शूऴ्न्दवर्**
शॊन्नन शॊन्नन शॆवियिऱ् ऱूङ्गवुम्
मन्नुयिर् कात्तिरुङ् गालम् वैहिनेन्
ॲन्निन्वे ऱरक्कियर् याण्डे यार्हॊलो 500

उन्निन उन्निन–रावण ने जो-जो मेरे प्रति सोचे; उणर्न्तुम्–उनको जानने के बाद; चूऴ्न्तवर्–जो मुझे घेरे रहीं उनके; चॊन्नन चॊन्नन–कहे गये; चॆवियिल् तूङ्कवुम्–मेरे कानों में ठहरे रहने पर भी; मन् उयिर् कात्तु–(शरीर से) लगे प्राणों की रक्षा करके; इरुम् कालम् वैकिनेन्–लम्बे काल तक रह गयी; ॲन्निन् वेऱु अरक्कियर्–मुझे छोड़ अन्य (क्रूर) राक्षसियाँ; याण्टै यार् कॊलो–कहाँ कौन रहेंगी। ५००

रावण जो-जो विचार मेरे प्रति रखता है, वह सब मैं जान रही हूँ। मुझे घेरे रहनेवाली राक्षसियों के बार-बार कहे जा रहे शब्दों से मेरे कान भरे रहते हैं। तो भी प्यारे प्राणों को पालती हुई मैं अनेक दिनों से रह रही हूँ। मुझसे निकृष्ट राक्षसी कहाँ होगी, कौन होगी ? । ५००

❀ शीऱ्पिरि यापपऴि शुमन्दु तूङ्गुवेन्
नऱ्पिऱप् पुडैमैयु नाणु नन्ऱरो
कऱ्पुडै मडन्दैयर् कदैयु ळोर्हडाम्
इऱ्पिरिन् दुय्न्दवर् यावर् यानलाल् 501

पऴि पिरियाच् चॊल्–निन्दायुक्त वचन; चुमन्तु–धारण करते हुए; तूङ्कुवेन्–निश्चिन्त (निद्रामग्न) रहनेवाली मेरा; नल् पिऱप्पु उटैमैयुम्–उच्चकुल जन्म और; नाणुम्–लज्जा का गुण; नन्ऱु–खूब है; कर्तैयुळोर्कळ्–चरित्रचित्रित; कऱ्पुटै मटन्तैयर्–पतिव्रता स्त्रियाँ; इल् पिरिन्तु–घर-गृहस्थी छोड़कर; उय्न्तवर्–जीती जो रहीं; यान् अलाल्–मेरे सिवा; यावर्–कौन है; (अरो, ताम्) । ५०१

कलंकयुक्त अपयशवचन ढोती हुई निश्चिन्त रह रही हूँ, मैं ! मेरे कुलजन्म और लज्जागुण भी कितने खूब हैं ! चरित्रवर्णित पतिव्रता स्त्रियों में घर से बाहर जीवित रहीं, मेरे सिवा अन्य कौन ? । ५०१

❀ पिऱर्मनै यॆय्दिय पॆण्णैप् पेणुदल्
तिऱनल दॆन्ऱुयिर्क् किऱैवन् ऱीर्न्दनन्
पुऱनलर् तूऱ्ऱवे पॊऴुदु पोक्कियान्
अऱनल दियऱ्ऱिवे ऱॆन्गॊण् डाऱ्ऱुहेन् 502

पिऱर् मनै–दूसरे के घर में; ऍय्तिय–जा गई रही; पॆण्णै पेणुतल्–उस स्त्री को बुलाकर पालना; तिऱन् अलतु–श्लाघ्य नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; उयिर्क्कु इऱैवन्–मेरे प्राणनाथ ने; तीर्न्तनन्–मुझे त्याग दिया है; पुऱन् अलर् तूऱ्ऱवे–दूसरे लोगों के निन्दा करते; पॊऴुतु पोक्कि–समय बिताकर; अऱन् अलतु–अधर्म; इयऱ्ऱि–करते हुए; वेऱु ऍन् कॊण्टु–और किस (लाभ) के लिए; यान् आऱ्ऱुकेन्–अपने प्राण रखूँगी । ५०२

मेरे प्राणनाथ ने मुझे यह समझकर त्याग दिया है कि यह पराये घर में रह चुकी है। पराये घर में रही स्त्री को फिर से अपना लेना श्लाघनीय कार्य नहीं है। लोकनिन्दा का पात्र बनकर जीवन बिताती हुई, मैं अधार्मिक काम कर रही हूँ। फिर क्योंकर जीने के अर्ह हूँगी ? । ५०२

❀ ऍप्पॊऴु दिप्पॆरुम् बऴियि नॆय्दिनेन्
अप्पॊऴु दॆयुयिर् तुऱक्कु माणैयेन्
ऒप्परुम् बॆरुमऱु वुलह मोदयान्
तुप्पऴिन् दुय्वदु तुऱक्कन् दुन्नवा 503

ऍ पॊऴुतु–जब; इ पॆरुम् पऴियिन् ऍय्तिनेन्–इस अपयश का पात्र बनी; अ पॊऴुते–तभी; उयिर् तुऱक्कुम् आणैयेन्–प्राण त्यागने को बाध्य मैं; ऒप्पु अरुम्–अमान्य; पॆरु मऱु–बड़ा कलंक; उलकम् ओत–लोक के कहते; यान्–मैं; तुप्पु

अऴिन्तु–योग्यता खोकर; उय्वतु–जीवित रहूँ, यह; तुड़क्कम् तुन्तवो–स्वर्ग पहुँचूँ, यह विचार लेकर क्या। ५०३

जब इस बड़े अपयश का पात्र बनी तभी मर जाना ही मेरा कर्तव्य था। बड़े लोग जिसको (क्षम्य) मान ही नहीं सकते वैसा बड़ा कलंक मुझ पर लग गया है और लोग इसकी चर्चा करेंगे। अपमानित होकर जीवन रखना क्या स्वर्ग पाने के विचार से है ? । ५०३

❀ अन्बऴि शिन्दैय राय वाडवर्
वन्बऴि शुमक्किनुञ् जुमक्क मऱ्ऱियान्
तुन्बऴि पॅरुम्बुहऴ्क् कुलत्तुद् टोन्ऱिनेन्
ॲन्बऴि तुडेप्पव रॅन्निन् यावरे 504

अन्पु अऴि चिन्तैयर् आय–विगत प्रेम; आटवर्–वे दोनों पुरुष; वन् पऴि–कठोर अपयश; चुमक्किनुम् चुमक्क–धारण करें तो करें; यान्–मैं; तुन्पु अऴि–दुःखरहित; पॅरुम् पुकऴ्–बड़े यशस्वी; कुलत्तुळ् तोन्ऱिनेन्–कुल में पैदा हुई; ॲन् पऴि तुटैप्पवर्–मेरा अपयश मिटानेवाले; ॲन्नितिन् यावर्–मेरे सिवा कौन हैं। ५०४

श्रीराम और लक्ष्मण दोनों ने मेरे प्रति प्रेम और स्नेह त्याग दिया है ! वे (मुझे न बचाकर) अपयश धारण करना चाहें तो करें। मैं दुःखरहित बड़े यशस्वी कुल में आयी हूँ। इसलिए मेरे अपयश को पोंछनेवाला मुझसे अन्य कौन रहेगा ? । ५०४

❀ वञ्जनै मानिन्बिन् मन्नैप् पोक्कियॅन्
मञ्जनै वैदुपिन् वऴिक्कॊळ् वायॅना
नञ्जनै यानहम् बुहुन्द नङ्गैयान्
उय्ञ्जनॅन् निरुत्तलु मुलहङ् गॊळ्ळुमो 505

वञ्चनै मानिन् पिन्–वंचक मृग के पीछे; मन्नै पोक्कि–अपने पति को भेजकर; ॲन् मञ्चनै वैतु–अपने पुत्र-सम देवर को गाली देकर; पिन् वऴि कॊळ्वाय्–उनके पीछे राह पकड़ो; ॲना–ऐसा कहकर; नञ्चु अनैयान् अकम्–विष सदृश-राक्षस के घर में; पुकुन्त नङ्कै यान्–जो आ गयी, वह मैं; उय्ञ्चनॅन्–जीवित; इरुत्तलुम्–रहती जो यह; उलकम् कॊळ्ळुमो–लोक (श्रेष्ठ लोग) मानेंगे क्या। ५०५

मैंने वञ्चक मृग के पीछे अपने पति को भेजा। अपने पुत्र-सम देवर को गाली दी और कहा कि उनकी खोज में जाओ। फिर विष-सदृश राक्षस के (घर या) मन में (सूक्ष्म स्मरण के रूप में ही सही) घुस गयी। ऐसी स्त्री हूँ मैं। मेरा जीवित रहना क्या संसार ठीक मानेगा ? । ५०५

❀ वल्लियन् मऱवर्दन् वरुक्क माशऱ्
वॅल्लिनम् वॅल्हपोर् विळिन्दु वीडह

इल्लिय लऱत्तैया निऱन्दु वाऴ्न्दपिन्
शॊल्लिय वॆन्वऴि यवरैच् चुऱ्ऱुमो 506

वल् इयन्–सबल; मऱवर्–वीर (श्रीराम और लक्ष्मण); तम् वरुक्कम् माचु अऱ–अपने कुल का कलंक दूर करने हेतु; वॆल्लिनुम् वॆल्लुक–जीतें तो जीतें; पोर् विऴिन्तु–या युद्ध में मरकर; वीटुक–मिट जाएँ; इल् इयल् अऱत्तै–गृहस्थ धर्म को; यान्–मेरे; इऱन्तु वाऴ्न्त पिन्–छोड़कर जीवित रहने के बाद; चॊल्लिय ॲन् पऴि–लोकोक्त मेरा अपयश; अवरै चुऱ्ऱुमो–उनको घेरेगा क्या (नहीं)। ५०६

पराक्रमी वीर, श्रीराम और लक्ष्मण अपने कुल पर लगा कलंक मिटाने हेतु चाहें तो युद्ध करें और जीतें, चाहे युद्ध में मर जाएँ। मै तो गृहस्थ धर्म से बाहर आ गयी हूँ। लोग जो कलक मुझ पर लगाएँगे, वह उनको घेर लेगा क्या ? । ५०६

❀ वरुन्दलिन् मानमा वनैय माट्चियार्
पॆरुन्दव मडन्दैयर् मुन्बु पेदैयेन्
करुन्दनि मुहिलिनैप् पिरिन्दु कळ्वनूर्
इरुन्दव ळिवळॆन वेश निऱ्पॆनो 507

मानम् वरुन्तलिल्–मान को धक्का लगने पर; मा अनैय माट्चियार्–मृग के-से स्वभाव की श्रेष्ठ; पॆरुम् तव मटन्तैयर् मुन्पु–उत्तम (पातिव्रत्य रूपी) तप वाली स्त्रियों के सामने; पेतैयेन्–जड़मति मैं; करुम् तनि मुकिलिनै–काले और अनुपम मेघ (-श्याम श्रीराम) से; पिरिन्तु–अलग होकर; कळ्वन् ऊर्–चोर के नगर में; इरुनतवळ् इवळ्–रही यह; ॲन–ऐसा; एच निऱ्पॆनो–निन्दा सुनती रहूँगी क्या। ५०७

श्रेष्ठ पातिव्रत्य-तपस्विनी स्त्रियों के सामने, जो 'कवरी मृग' के समान अपमान लगने पर प्राण त्याग देती है, क्या यह निन्दा सुनते हुए जीवित रहूँगी कि यह अप्रतिम मेघश्याम से अलग होकर एक चोर के घर में रहती है ? । ५०७

❀ अऱ्पुद नरक्करदम् वरुक्क माशऱ
विऱ्पणि कॊण्डरुऴ् जिऱैयिन् मीट्टनाळ्
इऱ्पुहत् तक्कलै यॆन्ऱिन् यानुडैक्
कऱ्पिनै यॆप्परि शिऴैत्तुक् काट्टुहेन् 508

अऱ्पुतन्–अत्यद्भुत गुणों वाले; अरक्कर् तम् वरुक्कम्–राक्षस वर्ग; आचु अऱ–निराधार निर्मूल कर; विल् पणि कॊण्टु–धनुकर्म द्वारा; अरुम् चिऱैयिन्–इस कठोर कारा से; मीट्ट नाळ्–मुक्त जिस दिन करेंगे, उस दिन; इल् पुक–मेरे घर में प्रवेश करने; तक्कलै ॲन्ऱिन्–योग्य नहीं हो कहें तो; यानुटै कऱ्पिनै–अपने शील को· ॲ परिचु इऴैत्तु काट्टकेन्–किस तरीके से प्रमाणित कर दिखाऊँगी। ५०८

अद्भुत गुण वाले श्रीराम जिस दिन राक्षसवर्ग को अपने धनुकर्म से निराधार बनाकर निर्मूल कर देंगे और मुझे इस कठोर कारा से मुक्त कर देंगे, तब अगर मुझसे कहें कि तुम मेरे घर में प्रवेश करने योग्य नहीं रह गयी हो, तो मैं अपने पातिव्रत्य को कैसे प्रमाणित कर दिखा पाऊँगी? । ५०८

❀ आदला लिऱ्त्तले यऱ्त्ति लाऱॆनाच्
चादल्काप् पवरुमॆऩ् ऱवत्तिऱ् चाम्बिनाऱ्
ईदला दिडमुम्वे ऱिल्लै यॆऩ्ऱॊरु
पोदुला मादविप् पॊदुम्ब रॆय्दिनाळ् 509

आतलाल्–इसलिए; इऱ्त्तले–मरना ही; अऱ्त्तिऩ् आऱु–धर्ममार्ग होगा; ऍता–यह निश्चय करके; चातल् काप्पवरुम्–मुझे मरने से बचाये रहनेवाली राक्षसियाँ भी; ऍऩ् तवत्तिल्–मेरे तप (भाग्य) के कारण; चाम्पिताऱ्–अचेत पड़ी है; ईतु अलातु–इसको छोड़कर; वेऱु इटमुम् इल्लै–दूसरा स्थान (सन्दर्भ) नहीं मिलेगा; ऍऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; पोतु उलाम्–पुष्प जिसमें हिलते थे; ऑरु मातवि पॊतुम्पर्–उस एक माधवी-झाड़ के पास; ऍय्तिताळ्–पहुँची। ५०९

इसलिए मरना ही धर्ममार्ग है। मुझे मरने न देने का कर्तव्य लेकर जो मेरी रक्षा करती रहती है, वे राक्षसियाँ भी अब नींद में बेहोश पड़ी हैं। इस समय को जाने दूँ तो दूसरा अच्छा स्थान या समय नहीं मिलेगा। ऐसा निश्चय करके सीताजी एक पुष्पसहित माधवी के झाड़ के पास गयीं। ५०९

❀ कण्डन ननुमनुङ् गरुत्तु मॆण्णिऩाऩ्
कॊण्डनऩ् ऱुणुक्कमॆय् तीण्डक् कूशुवाऩ्
अण्डर्ना यहऩरु डूदऩ् यालॆनात्
तॊण्डैवाय् मयिलिऩैत् तॊऴुदु तोऩ्ऱिऩाऩ् 510

अनुमऩुम् कण्टऩऩ्–हनुमान ने भी देखा; करुत्तुम् ऍण्णिऩाऩ्–अभिप्राय ताड़ लिया; तुणुक्कम् कॊण्टऩऩ्–दहल उठा; मॆय् तीण्ट–शरीर स्पर्श करने से; कूचुवाऩ्–संकोच करता; अंण्टर् नायकऩ्–अण्डनायक श्रीराम की; अरुळ् तूतऩ्–आज्ञा का पालक दूत; याऩ्–मै हूँ; ऍता–कहते हुए; तॊण्टै वाय्–बिम्बाधरा; मयिलिऩै–कलापी-सी देवी को; तॊऴुतु–नमस्कार करते हुए; तोऩ्ऱिऩाऩ्–प्रकट हुआ। ५१०

हनुमान ने यह देखा और ताड़ लिया कि सीताजी के मन में क्या भाव उठा है। उसे भय का अनुभव हुआ। वह उनका स्पर्श करने से सकुचाया। अतः वह यह कहते हुए बिम्बाधरा, कलापीनिभ सीताजी के सामने अंजलिबद्ध हो प्रकट हुआ कि मैं अण्डनायक श्रीराम का उनकी आज्ञा द्वारा प्रेषित दूत हूँ। ५१०

❀अडैन्दनॅ नडियने निराम नाणैयाल्
कुडैन्दुल हनैत्तैयु नाडुङ् गोट्पिनाल्
मिडैन्दव रुलप्पिलर् तवत्तै मेवलाल्
मडन्दैनिन् शेवडि वन्दु नोक्किनेन् 511

मटन्तै–देवी; इरामन् आणैयाल्–श्रीराम की आज्ञा से; अटियनेन्–मैं, दास; अटैन्तनॅन्–आ पहुँचा; उलकु अनैत्तैयुम्–सारे लोकों में; कुटैन्तु नाटुम्–पैठकर ढूँढ़ने के; कोट्पिताल्–संकल्प से; मिटैन्तवर्–मिलकर जानेवाले; उलप्पु इलर्–असंख्यक है; तवत्तै मेवलाल्–तपबल के प्राप्त होने से; निन् चेवटि–आपके लाल (दिव्य) चरण; वन्तु नोक्किनेन्–(मैंने) आकर दर्शन किये। ५११

देवी! श्रीराम की आज्ञा से मैं इधर आ पहुँचा हूँ। यों तो सारे लोकों की खाक छानने के इरादे से जो मिलकर चले वे असंख्यक है। पर मेरा भाग्य रहा। सुकृत्य का फल मिला; तभी मैं आपके दिव्य चरणों के दर्शन कर पाया। ५११

❀ईण्डुनी यिरुन्ददै यिडरिन् वॆहुरुम्
आण्डहै यरिन्दिल नदर्कुक् कारणम्
वेण्डुमे यरक्कर्तम् वरुक्कम् वेरोडु
माण्डिल वीदलान् मर्रुम् वेण्टुमो 512

ईण्टु नी इरुन्ततै–आपका इधर रहना; इटरिन् वॆकुरुम्–वियोग-दुःख मे मग्न रहनेवाले; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; अरिन्तिलन्–नहीं जानते; अतर्कु कारणम्–उसका प्रमाण; वेण्टुमे–कहना हो तो; अरक्कर् तम् वरुक्कम्–राक्षसों के वर्ग; वेरोटु माण्टिल–निर्मूल नष्ट नहीं हुए; ईतु अलाल्–इसके सिवा; मर्रुम् वेण्टुमो–और कोई चाहिए क्या। ५१२

वियोगदु:खतप्त पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम आपका यहाँ रहना नही जानते। उसका प्रमाण चाहती हों तो यही प्रमाण है कि राक्षसों के वर्ग निर्मूल नष्ट नहीं हुए। और कोई प्रमाण चाहिए क्या?। ५१२

❀ऐयुर लुळदडै याळ मारियन्
मॅय्युर वुणर्त्तिय वुरैयुम् वेरुळ
कैयुरु नॅल्लियङ् गन्नियिर् काण्डियाल्
नॅय्युरु विळक्कनाय् नितैयल् वेरॅन्रान् 513

नॅय् उरु विळक्कु अनाय्–घृत-भरे दीप के समान देवी; ऐयुरल्–सन्देह मत करें; अटैयाळम् उळतु–अभिज्ञान है; आरियन्–आदरणीय श्रीराम के; मॅय् उर–सत्य परिचायक; उणर्त्तिय उरैयुम्–समझाये गये वचन भी; वेरु उळ–अलग हैं; कै उरु नॅल्लि अम् कनियिल्–करतलामलकवत; काण्टि–देख लें; वेरु नितैयल्–अन्यथा न समझे; ऍन्रान्–कहा (हनुमान ने)। ५१३

घृतपूर्ण दीप-सी देवी ! आप कोई सन्देह न करें। मेरे पास अभिज्ञान हैं। और आदरणीय श्रीराम के कहे सत्यवचन के संदेश अलग हैं। आप करतलामलकवत समझ लेंगी। अन्यथा मत समझिए। हनुमान ने यों विनय के साथ कहा। ५१३

ऍन्ऱव निऱैञ्ज नोक्कि यिरक्कमु मुनिवु मॅय्दि
निऩ्ऱव निरुद नल्ल नॆऱिनिन्ऱु पॉऱिह ळैन्दुम्
वॅन्ऱव नल्ल नाहिल् विण्णव ऩाह वेण्डुम्
नन्ऱुणर् वुरैयुन् दूय नवैयिलन् पोलु मॅन्ना 514

ऍन्ऱु अवऩ् इऱैञ्च–उसके ऐसा विनय करने पर; नोक्कि–देखकर; इरक्कमुम्–अनुताप और; मुनिवुम्–रंज; ऍय्दि निन्ऱवन्–गाकर जो रहता है; इवन्–वह यह; निरुतन् अल्लन्–नैर्ऋत नहीं हो सकता; नॆऱि निन्ऱु–सदाचारस्थित; पॉऱिकळ् ऐन्तुम्–पाँचों इन्द्रियों पर; वॆन्ऱवन्–विजय पा चुका; अल्लन् आकिल्–नहीं तो; विण्णवन् आक वेण्टुम्–कोई देव होगा; उणर्वु नन्ऱु–इसके भाव श्रेष्ठ हैं; उरैयुम् तूयन्–पवित्रवचन; नवै इलन् पोलुम्–निर्दोष-सा लगता है; ऍन्ना–सोचकर। ५१४

जब हनुमान ने यों विनय की तो सीताजी ने उसको ध्यान लगाकर देखा। हनुमान करुणा और दुःख से भरा है। यह राक्षस नहीं हो सकता। यह सन्मार्गावलम्बी इन्द्रियजयी मुनि होगा; नही तो कोई देव होगा। इसकी भावनाएँ श्रेष्ठ हैं। वचन पवित्र है। यह निर्दोष ही लगता है। ५१४

❀ अरक्कने याह वेऱो रमरने याह वन्ऱिक्
कुरक्किनत् तॊरुव नेदा नाहुह कॊडुमै याह
इरक्कमे याह वन्दिङ् गॆम्बिरा ऩामज् जॊल्लि
उरुक्कियॆन् नुणर्वैत् तन्दा नुयिरिदि नुदवि युण्डो 515

अरक्कने आक–चाहे राक्षस हो; वेऱु ओर् अमरने आक–कोई दूसरा देव हो; अन्ऱि–चाहे वे न रहकर; कुरङ्कु इनत्तु ऒरुवने–वानर-वंश का एक; तान् आकुक–ही हो; कॊटुमै आक–(इसके द्वारा) हानि ही क्यों न मिले; इरक्कमे आक–सहानुभूति (का फल) ही मिले; इङ्कु वन्तु–यहाँ आकर; ऍम्पिरान् नामम् चॊल्लि–मेरे आराध्यदेव का नाम उच्चारण करके; ऍन् उणर्वै उरुक्कि–मेरे मन को द्रवीभूत करके; उयिर् तन्तान्–(इसने) मुझे प्राणदान किया; इतिन् उतवि उण्टो–इससे बढ़कर सहायता हो सकती है क्या। ५१५

फिर देवी ने सोचा। यह राक्षस ही हो तो क्या ? या कोई देव ही हो। नही तो वानर-कुल का ही कोई हो ! उसके हाथों मेरी हानि भी हो जाय ! या वह करुणा करके हित ही करे। इसने इधर आकर मेरे आराध्य पति का नाम कहकर मेरे मन को द्रवीभूत कर दिया और मुझे प्राणदान किया। इससे बढ़कर कोई हित है क्या ? । ५१५

ॲन्निनैत् तॅय्द नोक्कि यिरङ्गुमॆ नुळ्ळङ् गळ्ळ
मन्नहत् तुडैय राय वञ्जहर् माऱ्ऱ मल्लन्
निनैवुडैच् चॊऱ्कळ् कण्णीर् निलम्बुहप् पुलम्बा निन्ड्रान्
विनवुदऱ् कुरिय नॆ़न्ना वीरनी याव नॆ़न्ड्राळ् 516

ॲन्न निनैन्तु–ऐसा सोचकर; ॲय्त नोक्कि–खूब देखकर; ॲन् उळ्ळम् इरङ्कुम् मेरा मन (सत्य समझकर) सहानुभूति करता है; कळ्ळम् मनत्–चोर स्वभाव के; अकत्तु उटैयराय–मन वाले; वञ्चकर्–वंचकों का; माऱ्ऱम् अल्लन्–वचन नहीं कहता; निनैवु उटै–सच्ची भावना के; चॊऱ्कळ्–वचनों को; कण्णीर्–आँसुओं को; निलम् पुक–भूमि पर गिराते हुए; पुलम्पा निन्ड्रान्–कहकर प्रलाप करता है; विनवुतऱ्कु उरियन्–प्रश्न करने योग्य है; ॲन्ना–सोचकर; वीर–वीर; नी–तुम; यावन्–कौन; ॲन्ड्राळ्–कहा। ५१६

ऐसा सोचकर देवी ने हनुमान पर खूब दृष्टि डाली। इसको देखकर मेरा मन स्वयं पिघल जाता है। यह मन में चोरी रखनेवाले वंचक राक्षसों का-सा वचन कहनेवाला नहीं हो सकता। यह अपनी सद्भावना की बातें, आँखों से आँसू को भूमि पर गिराते हुए कह रहा है। अतः यह आगे प्रश्न करने (वार्तालाप करने) योग्य ही है। ऐसा निर्णय करके देवी ने उससे पूछा कि हे वीर, तुम कौन हो ? । ५१६

आयिडैत् तलैमेऱ् कॊण्ड वङ्गैय नन्नै निन्नैत्
तूयवन् पिरिन्द पिन्नैत् तेडिय तुणैवन् ऱॊल्लैक्
कायहदिर्च् चॆल्वन् मैन्दन् कविक्कुल मदनुक् कॆल्लाम्
नायहन् शुक्कि रोव नॆ़न्ऱुळ नवैयिऱ् ऱीरन्दान् 517

आयिटै–तव; तलै मेल् कॊण्ट–सिर पर धरे; अम् कैयन्–सुन्दर हाथों वाला (बोला); अन्नै–माताजी; तूयवन्–पवित्र श्रीराम के; निन्नै पिरिन्त पिन्नै–आपसे अलग होने के बाद; तेटिय–ढूँढ़कर प्राप्त; तुणैवन्–मित्र; तॊल्लै–अति प्राचीन काल से; काय् कतिर् चॆल्वन्–जलानेवाले उष्ण किरण सूर्यदेव का; मैन्तन्–पुत्र; कविक् कुलम् अतनुक्कु ॲल्लाम्–कपिकुलसर्व का; नायकन्–नायक; नवैयिल् तीर्न्तान्–निर्दोष; चुक्किरवीन् ॲन्ऱु–सुग्रीव नाम का एक; उळन्–है। ५१७

तब हनुमान ने अपने सुन्दर हाथ जोड़कर अपने सिर पर रखे और विनय-निवेदन किया। माते ! सुग्रीव नामक एक है, जिसे आपके वियोग के बाद पवित्र श्रीराम ने ढूँढ़ लेकर अपना मित्र बना लिया। वह अति पुरातन और तापक किरणमाली सूर्यदेव का पुत्र है और वानरकुलों का अधिपति है। वह निर्दोष (अच्छा) है। ५१७

मऱ्ऱवन् मुन्नो नन्ना ळिरावणन् वलिदन् वालिन्
इऱ्ऱक् कट्टि यॆट्टुत् तिशैयिनु मॆळुन्दु पायन्त

वॆऱ्ऱियन् ऱेवर् वेण्ड वेलैयै विलङ्गन् मत्तिल्
शुऱ्ऱिमा नाहन् देय वमुदॆळ्क् कडैन्द तोळान् 518

अवन् मुन्तोन्—उसका बड़ा भाई; अ नाळ्—उस दिन; इरावणन् वलि इऱ्ऱु उऱ—रावण के बल को तोड़ते हुए; तन् वालिल् कट्टि—अपनी पूँछ में बाँधकर; ॲट्टु तिचैयित्तुम्—आठों दिशाओं में; ॲळुन्तु पाय्न्त—फाँदता जो गया; वॆऱ्ऱियन्—वैसा विजयी है; तेवर् वेण्ट—देवों के प्रार्थना करने पर; वेलैयै—समुद्र को; विलङ्कल् मत्तिन्—(मन्दर-) पर्वत की मथानी से; मा नाकम् चुऱ्ऱि—बड़े (वासुकि) सर्प को लपेटकर; तेय—उसको रगड़ते हुए; अमुतु ॲळ—अमृत उठ आए ऐसा; कटैन्त तोळान्—मथनेवाली भुजाओं का है। ५१८

उसका ज्येष्ठ भ्राता रावण के बल को तोड़कर उसे अपनी पूँछ में बाँध लेकर आठों दिशाओं में उछल चला। वह ऐसा विजयी वीर था। देवों ने उससे प्रार्थना की तो उसने मन्दरपर्वत की मथानी पर वासुकि नाग को लपेटकर क्षीरसागर को मथा और अमृत निकाला। वह ऐसा भुजबली था। ५१८

अन्नवन् ऱन्नै युङ्गो नम्बोन्ऱा लावि वाङ्गिप्
पिन्नवऱ् करशु नल्हित् तुणैयॆनप् पिडित्ता नॆङ्गळ्
अन्नवन् ऱनक्कु नायेन् मन्दिरत् तुळ्ळेन् वानिन्
नन्नॆडुङ् गालिन् मैन्द नाममु मनुम नॆन्बेन् 519

अन्नवन् तन्नै—उस (बली) वाली को; उम् कोन्—आपके नाथ ने; अम्पु ऑन्ऱाल्—एक ही शर से; आवि वाङ्कि—प्राण हरकर; पिन्नवऱ्कु—उसके छोटे भाई को; अरचु नल्कि—राज्य देकर; तुणै ॲन्न पिटित्तान्—मित्र बना लिया; नायेन्—(कुत्ते-सा) दास मैं; ॲङ्कळ् मन्नवन् तनक्कु—हमारे राजा (सुग्रीव) के; मन्तिरत्तु उळ्ळेन्—मन्त्रीमण्डल का सदस्य हूँ; वानिन्—आकाशचारी; नल् नॆटुम् कालिन्—अति विपुल पवन का; मैन्तन्—पुत्र हूँ; नाममुम्—नाम का भी; अनुमन् ॲन्पेन्—हनुमान कहा जाता हूँ। ५१६

उस वाली को आपके नाथ ने एक ही शर से मार दिया और उसके कनिष्ठ सुग्रीव को राज्य दिलाया तथा सुग्रीव से मित्रता बना ली। कुत्ता-सम दास मै अपने राजा सुग्रीव के मन्त्रीमण्डल का एक सदस्य हूँ। आकाशचारी अति महान् वायुदेव का पुत्र हूँ। मैं हनुमान नाम का हूँ। ५१९

ॲळुबदु वॆळ्ळङ् गॊण्ड वॆण्णन वुलह मॆल्लाम्
तळुविनिन् ऱॆडुप्प वेलै तनित्तनि कडक्कुन् दाळ
कुळुविन वुङ्गोन् शॆय्यक् कुऱित्तदु कुऱिप्पि नुन्नि
वळुविल शॆय्दऱ् कॊत्त वानरम् वानि नीण्ड 520

वानरम्—वानर; ॲळुपतु वॆळ्ळम् कॊण्ट ॲण्णन—सत्तर प्रवाह (वॆळ्ळम) संख्या के है; उलकम् ॲल्लाम्—सारे लोकों को; तळुवि निन्ऱु ॲटुप्प—लपेटकर लेने

की शक्ति रखनेवाले हैं; वेलै–समुद्र को; तत्ति तत्ति कटक्कुम् ताळ–अलग-अलग फाँदने में समर्थ पैरों वाले हैं; कुऴुविऩ–समूहगत हैं; उम् कोऩ् चॅय्य कुऱित्ततु–आपके नाथ जो करना चाहेंगे; कुऱिप्पिऩ् उऩ्ऩि–इंगित से जानकर; वऴुविल–त्रुटिहीन रीति से; चॅय्तऱ्कु ऒत्त–करने योग्य हैं; वाऩिऩ् नीण्ट–आकाश की तरह सर्वत्र फैले हैं। ५२०

मेरे राजा के अधीन जो वानर वीर हैं, उनकी संख्या 'सत्तर वॅळ्ळम्' की है। वे ऐसे पराक्रमी है कि वे संसार को अपने हाथों से लपेटकर उठा लें; समुद्र को अकेले लाँघ सकें; आपके पति की इच्छा को इंगित से जानकर विना किसी दोष के पूरा कर दें। वे आकाश की तरह सर्वत्र व्याप्त है। ५२०

तुप्पुरु परव येऴुऩ् जूऴ्न्दपा रेऴु माऴ्न्द
ऒप्पुरु नाहर् नाडु मुम्बर्निऩ् ड्रिम्बर् काडुम्
इप्पुरन् देडि निऩ्ऩै यॅदिऱ्न्दिल वॅऩ्ऱि नण्डत्
तप्पुऱम् बोयुन् देड ववदियि नमैन्दु पोन 521

तुप्पु उरु–सशक्त; परवै एऴुम्–सातों समुद्र; चूऴ्न्त–उनसे घिरे; पार् एऴुम्–सातों लोक; आऴ्न्त–गहरे; ऒप्पु उरु–सुन्दर; नाकर् नाटुम्–नागलोक; उम्पर् निऩ्ऱु–आकाश से लेकर; इम्पर् काऱुम्–इस लोक तक; इ पुऱम् तेटि–इन स्थानों में अन्वेषण कर; निऩ्ऩै ऎतिर्न्तिल–आपको नहीं देख सकें तो; अण्टत्तु–अण्ड के; अ पुऱम्–उस तरफ़ भी; पोयुम् तेट–जाकर तलाश करने के लिए; अवतियिन्–एक अवधि से; अमैन्तु–बद्ध होकर; पोऩ–चले थे। ५२१

प्रवल सातों सागर, इनसे घिरी सात खण्डों में विभक्त भूमि, सुन्दर नागों का अधोलोक और भूमि के ऊपर आकाश के मध्य स्थित सभी लोक —इन सब स्थानों में खोजकर, अगर आपसे मिल नहीं पाएँ तो अण्ड के उस पार भी जाकर निश्चित अवधि के अन्दर खोजेंगे। यह संकल्प लेकर वे वानर गये हैं। ५२१

पुऩ्ऱॊऴि लरक्कन् कॊण्डु पोन्दनाट् पॊदिन्द तूशिल्
कुऩ्ऱिनॅम् मरुङ्गि ऩिट्ट वणिहलक् कुऱियि ऩाले
वॅऩ्ऱिया ऩडियेऩ् ऱन्नै वेऱुहॊण् डिरुन्दु कूऱित्
तॅऩ्ऱिशैच् चेऱि यॅऩ्ऱा ऩवऩरुळ् शिदैव दामो 522

पुऩ् तॊऴिल् अरक्कऩ्–नीचकर्म राक्षस; कॊण्टु पोन्त नाळ्–जिस दिन आपको ले गया उस दिन; ऎम् कुऩ्ऱिऩ् मरुङ्किऩ्–हमारे पर्वत पर; इट्ट–आपने जो डाले; तूचिल् पॊतिन्त–वस्त्र मे बद्ध; अणिकल कुऱियिताले–आभरणों के निशान से; वॅऩ्ऱियाऩ्–विजयशील श्रीराम ने; अटियेऩ् तऩ्ऩै–मुझ दास को; वेऱु कॊण्टु इरुन्तु–अलग ले जा रहकर; कूऱि–(कुछ) कहकर: तॅऩ् तिचै–दक्षिण दिशा; चेऱि–जाओ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा; अवऩ् अरुळ्–उनकी कृपा; चितैवतु आमो–व्यर्थ होगी क्या। ५२२

जब नीच रावण आपको हर ले जा रहा था, तब आपने वस्त्र में बाँधकर कुछ आभरण हमारे पर्वत पर फेंके थे। उनको देखकर विजयी वीर श्रीराम ने कुछ सोचा और मुझे अलग ले जाकर आज्ञा दी कि तुम दक्षिण दिशा में जाओ। उनकी आज्ञा निरर्थक हो सकती है क्या? । ५२२

कॉऱ्ऱवऱ् काण्डुक् काट्टिक् कॉडुत्तपो दडुत्त तन्मै
पॅऱ्ऱियि नुणर्दऱ् पाऱ्ऱो वुयिर्निलै पिऱिदु मुण्डो
इऱ्ऱैना ळळवु मन्ना यन्ऩुनी यिळित्तु नीत्त
मऱ्ऱैनल् लणिहळ् काणुन् मङ्गलङ् गात्त मन्नो 523

अन्नाय्–माते; कॉऱ्ऱवर्कु–श्रीविजयराघव को; आण्ट्ट काट्टि–वहाँ (उन आभरणों को) दिखाकर; कॉट्टुत्त पोतु–जब उन्हें दिया गया; अटुत्त तन्मै–जो हुई वह स्थिति; पॅऱ्ऱियिन्–किसी प्रकार से; उणर्तल् पाऱ्ऱो–समझने योग्य है क्या; उयिर्निलै पिऱितुम् उण्टो–उनके प्राणों के हेतु और कुछ है क्या; नी इळित्तु नीत्त–आपने जो उतारकर फेंके; मऱ्ऱै नल् अणिकळ्–वे दूसरे आभरण ही; इऱ्ऱै नाळ् अळवुम्–आज तक; उन् मङ्कलम् कात्त–आपके मंगल-सूत्र (सुहाग) को बचाते आ रहे हैं। ५२३

माते! जब हमने उन आभरणों को दिखाया तब श्रीराम की स्थिति क्या हुई —उसको अब वर्णन करूँ तो भी उस प्रकार से वह समझी जा सकेगी क्या? उनके जीने का और कोई हेतु है क्या? आपने जो आभरण उतारकर फेंके थे, उन्हींने आपके मंगल-सूत्र (अहिवात) को बचा दिया है! । ५२३

आयवन् ऱन्मै निऱ्क वङ्गदन् वालि मैन्दन्
एयवन् ऱॅन्बाल् वॅळ्ळ मिरण्डिनो डॅळुन्द शेनै
मेयिनन् ऱॊडर्न्दु तोरा विनैयवन् विडुत्ता नॆन्नैप्
पाय्दिरै यिलङ्गै मूदूरक् कॅन्ऱनन् पळियै वॅन्ऱान् 524

पळियै वॅन्ऱान्–निन्दापार (हनुमान); आयवन् तन्मै निऱ्क–उनकी स्थिति वैसी रही वह बात रहे; तॅन् पाल् एयवन्–दक्षिण की तरफ़ प्रेषित; ॲळुन्त चेनै–साथ आयी; वॅळ्ळम् इरण्टिनोटु–दो 'वॅळ्ळम्' सेना के साथ; मेयिनन्–जो आया; तॊटर्न्तु–लगातार; तीरा विनैयवन्–प्रयास करनेवाला; वालि मैन्तन्–वालीपुत्र; अङ्कतन्–अंगद ने; पाय् तिरै–लहराती तरंगों वाले समुद्र वलयित; इलङ्कै मूतूर्क्कु–प्राचीन लंका नगरी को; ॲन्नै विट्टुत्तान्–मुझे भेजा; ॲन्ऱनन्–कहा। ५२४

अपयशजयी हनुमान ने आगे कहा कि उनकी स्थिति एक ओर रहे। अंगद ने भी मुझे इस लहरायमान सागरवलयित प्राचीन लंका नगरी की तरफ़ भेजा। उसे सुग्रीव ने इधर भेजा था। उसके साथ दो "वॅळ्ळम्" की सेना आयी है। वह भी सततपरिश्रमी है और वाली का पुत्र है। ५२४

तेण्डिन्नेन् कण्डेन् वाऴि तीदिले नॅङ्गो नॅविप्
पूण्डमॅय् युयिरो पोहाप् पॉय्युयि रोडु निन्ऱान्
आण्डहै नॅञ्जि निन्ऱु महन्ऱिलै यऴिवुण् डामो
ईण्डुनी यिरुक्क वाण्डङ् गॅव्वुयिर् विडुमि रामन् 525

ॲम् कोन् एवि–अपने राजा से प्रेषित हो; तेण्टिन्नेन्–जो खोजता आया, उस मैंने; कण्टेन्–आपको देख लिया; तीतु इलेन्–(असफलता के) कलंक से रहित हो गया; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; पोका–अछूट; पॉय् उयिरोटु–मिथ्या प्राणों के साथ; निन्ऱान्–रहते हैं; पूण्ट मॅय् उयिरो–उनके धृत सच्चे प्राण (आप); नॅञ्चिन् निन्ऱुम्–उनके मन से; अकन्ऱिलै–हटे नहीं; ईण्टु–यहाँ; नी इरुक्क–आपके रहते; आण्टु–वहाँ; इरामन्–श्रीराम; ॲ उयिर् विटुम्–किस जान को छोड़ेंगे; अऴिवु उण्टामो–नाश होगा क्या। ५२५

मेरे राजा ने मुझे भेजा और मैंने सभी स्थानों में आपको ढूँढ़ा। आखिर आपके दर्शन मिल गये और मैं असफलता के अपयश से बच गया हूँ। पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के प्राण नहीं छूटे, सही। पर अब के उनके प्राण मिथ्या प्राण हैं। उनके सच्चे प्राण आप हैं; वह आप उनके हृदय से दूर नहीं हुई हैं। आप यहाँ हैं तो वे वहाँ कौन से प्राण खो सकते हैं? उनके प्राणों की हानि नहीं हो सकती। ५२५

इः(ह्)दव निशैत्त लोडु मॅळ्नन्दपे रुवहै पॉङ्गि
वॅय्दुयिर्प् पॉडुङ्गि मेनि वानुऱ विम्मि वीङ्ग
उय्दल्वन् दुऱ्ऱ दोवॅन् ऱुविनी रॉऴुहुङ् गण्णाऴ्
अय्यशोल् लवन्ऱन् मेनि यॅप्पडित् तऱिवॅ यॅन्ऱाऴ् 526

इ∴तु अवन्–यों उसके; इचैत्तलोटुम्–कहने पर; ॲऴुन्त पेर् उवकै–उठा आनन्द; पॉङ्कि–उमगा; वॅय्तुयिर्प्पु–लम्बी साँस छोड़ना; ऑटुङ्कि–बन्द हुआ; मेनि–शरीर; वान् उऱ–आकाश तक; विम्मि वीङ्क–फूलकर बढ़ा; उय्तल् वन्तु उऱ्ऱतो–सुखी जीवन का सौभाग्य आ गया क्या; ॲन्ऱु–सोचकर; अरुवि नीर्–सरिता-से आँसू; ऑऴुकुम्–बहानेवाली; कण्णाऴ्–आँखों की होकर; अय्य–तात; अवन् तन् मेनि–उनका श्रीशरीर; ॲप्पटित्तु–कैसा है; अऱिवॅ–तुम जानते हो; चॉल् ॲन्ऱाऴ्–कहो, कहा। ५२६

जब हनुमान ने यह कहा तब सीताजी के मन में आनन्द उठकर उमड़ा। दीर्घ श्वास स्वस्थ पड़ गये। शरीर आकाश तक बढ़ता हुआ फूल उठा। "ओफ़! मेरा भी भाग्य जाग गया क्या?" यह सोचा। उनकी आँखों से आँसू की नदी उमड़ आयी। उन्होंने हनुमान से पूछा कि तात! तुमने क्या जाना है कि श्रीराम का रूपलक्षण कैसा है? । ५२६

पडियुरैत् तॅडुत्तुक् काट्टुम् वडित्तनऱु पडिवम् बण्बिन्
पुडिवऴ ववमैक् कॅल्ला मिलक्कण मुरैक्किन् मुन्दा

तुडियिडै यडैया ळत्तिन् ऱॊडर्वैये तॊडर्दि यॆन्ना
अडिमुदन् मुडियो ऱाह वऱिवुऱ वनुमन् शॊल्वान् 527

तुटि इटै–डमरू-सी कमर वाली; 'पटिवम्–दिव्यरूप; पटि उरैत्तु–उपमान कहकर; ऍट्टुत्तु काट्टुम् पटित्तु अन्ऱु–वर्णन-योग्य नहीं; उवमैक्कु ऍल्लाम्–सभी उपमाओं की; इलक्कणम् पण्पिन्–व्याकरणविधिसम्मत; मुटिवु उळ–सीमाएँ होती हैं; उरैक्किन्–उन उपमाओं को कहें तो; मुन्ना–श्रेष्ठ नहीं होंगी; अटैयाळत्तिन् तॊटर्वैग्रे–लक्षण के आगे; तॊटर्ति–जाकर समझ लें; ऍन्ना–कहकर; अटि मुतल् मुटि ईरु आक–पादादि केश तक; अऱिवु उऱ–समझाते हुए; अनुमन् चॊल्वान्–हनुमान कहने लगा। ५२७

हनुमान ने उत्तर दिया। डमरू-सी कमर वाली! श्रीराम का दिव्य रूप उपमा-उदाहरण कहकर वर्ण्य नहीं है; क्योंकि अलंकार-शास्त्रों में उपमाओं के अर्थों की सीमा निश्चित है। उनको कहें तो वे उपमाएँ समर्थ नहीं रहेंगी। मेरे वर्णन को संकेत मात्र मानिए और अपनी कल्पना से उसी दिशा में आगे जाकर समझ लीजिए। हनुमान श्रीराम का नख-शिख-वर्णन करने लगा। ५२७

शेयिदळ्त् तामरै यॆन्ऱु शेणुळोर्
एयिन दन्ऱुणै यॆळिय दिल्लैयाल्
नायहन् ऱिरुवडि कुऱित्तु नाट्टुहिल्
पाय्दिरैप् पवळमुङ् गुवळैप् पण्बिऱ्ऱाल् 528

नायकन् तिरुवटि–हमारे नायक के श्रीचरण; चेय् इतळ् तामरै ऍन्ऱु–लाल दलों का कमल ऐसा; चेण् उळोर्–प्राचीन विद्वानों ने; एयिन्–विधान किया हैं; कुऱित्तु नाट्टुकिल्–स्पष्ट निर्धारण करना चाहें तो; अतन् तुणै–उसके समान; ऍळियतु इल्लै–अल्प नहीं है; पाय तिरै–उछलती लहरों के समुद्र में उत्पन्न; पवळमुम्–प्रवाल भी; कुवळैप् पण्पिऱ्ऱु–कुवलय-पुष्प के समान हो जायगा (काला लगेगा)। ५२८

हमारे नायक के श्रीचरण प्राचीन विद्वानों की भाषा में लाल दलों के कमल कहें तो स्पष्ट सोचने पर वे चरण कमलों के समान अल्प नहीं हैं। उनके सामने उछलती लहरों वाले सागर में उत्पन्न प्रवाल भी कुवलय के समान काले लगेंगे। ५२८

तळङ्गिळर् कऱ्पह मुहिळुन् दण्डुऱै
इळङ्गोडिप् पवळमुङ् गिडक्क वॆन्नवै
तुळङ्गॊळि विरऱ्कॆदि रुदिक्कुञ् ज़ूरियन्
इळङ्गदि रॊक्किनु मॊक्कु मेन्दिळाय् 529

एन्तिळाय्–धृत आभरण वाली; तळम् किळर्–दल-बहुल; कऱ्पक मुकिळुम्–कल्पकली भी; तण् तुऱै–शीतल घाटों वाले समुद्र में मिलनेवाली; इळम् कॊटि पवळमुम्–बाल-प्रवाल-लता भी; किटक्क–एक ओर रहें; अवै ऍन्–उनकी क्या

हस्ती है; तुळङ्कु ऑळि–प्रोज्ज्वल; विरऱ्कु ॲतिर्–उँगली के सामने; उतिक्कुम् चूरियऩ्–उदीयमान सूर्य की; इळम् कतिर्–बाल-किरणें; ऑक्कितुम् ऑक्कुम्–समता करें तो कर सकती हैं। ५२९

आभरणधारिणी देवी ! उनकी शोभायमान उँगलियों के बारे में क्या कहा जाय ? दलसकुल कल्पकली और शीतल घाटों से युक्त सागर की बाल-प्रवाल-वल्लरी को एक ओर डाल दीजिए। उनकी क्या बिसात है ? उदीयमान सूर्य की बालकिरणें समता कर सकती हैं, तो एक प्रकार से कर सकती हैं। ५२९

शिऱियवुम्	पॅरियवु	माहित्	तिङ्गळो
मऱुविल	पत्तुळ	वल्ल	मऱ्ऱिनि
ॲऱिशुडर्	वयिरमो	तिरट्चि	यॅय्दिल
अऱिहिलॅ	नुहिर्क्किया	नुवम	मावन 530

तिङ्कळो–चन्द्र तो; चिऱियवुम् पॅरियवुम् आकि–छोटा और बड़ा बनकर; मऱु इल–कलंकहीन; पत्तु उळ अल्ल–दस नहीं हैं; मऱ्ऱु इऩि–उसके अलावा; ॲऱि चुटर्–ज्वलन्त; वयिरमो–हीरे कहें तो; तिरट्चि ॲय्तिल–पुष्ट नहीं है; उकिर्क्कु उवमम् आवत–चरणनखों की उपमाएँ जो बन सकेंगी; याऩ् अऱिकिलॅऩ्–मैं नहीं जानता। ५३०

उनके नखों को क्या चन्द्र कहें ? पर छोटे-बड़े और कलंकरहित दस चाँद कहाँ ? फिर हीरे कहें ? पर हीरे की कांति इतनी घनी कहाँ होती है ? इसलिए उँगलियों की उपमाएँ मुझे ढूँढ़े नहीं मिलतीं। ५३०

पॉरुन्दिन	निलनॉडु	पोन्दु	कानिडै
वरुन्दिन	वॅनिऩ्दु	नूलै	माऱुहॉण
डिरुन्ददु	निऩ्ऱदु	पुवनम्	यावैयुम्
ऑरुङ्गुडन्	पुणर्वन	वुणर्त्तर्	पालदो 531

निऩ्ऱतु पुवतम् यावैयुम्–स्थिर सभी भुवनों में; ऑरुङ्कु उटऩ् पुणर्वत–एक साथ (जो) व्याप्त थे; निलत्तॉटु–(वे चरण) अब धरती पर; पॉरुन्तित–लगे; पोन्तु–चलकर; काऩ् इटै–जंगल में; वरुन्तिऩ–दुःख पाते हैं; ॲतिऩ्–तो; अतु–वह; नूलै माऱु कॉण्टिरुन्ततु–तर्क आदि शास्त्र के विपरीत लगता है; उणर्त्तल् पालतो–वे वर्ण्य हैं क्या। ५३१

श्रीराम के चरण (त्रिविक्रमावतार के अवसर पर) सभी लोकों पर एक साथ लगे थे। ऐसे चरण अब वन में चलते हुए दुःख पा रहे है —ऐसा कहना तर्क-सगत नहीं लगता। ऐसे चरणों की महिमा क्या कही जाय ?। ५३१

ताङ्गणैप् पणिलमुम् वळैयुन् दाङ्गरा
वीङ्गणैप् पळ्ळिया नॅनिनुम् वेरिलिप्
पूङ्गणैक् काऱ्कौरु परिशु तान्पौरुम्
आङ्गणैक् कावमो वाव दन्नैये 532

अन्नैये–माताजी; अणै ताङ्कु पणिलमुम्–विषम तल वाला (झुर्रीदार) शंख; वळैयुम्–चक्र; ताङ्कुम्–धारण करनेवाले; वीङ्कु अरा–मोटे नाग रूपी; अणै पळ्ळियान्–शय्या-शायी; पूम् कणै काऱ्कु–(श्रीराम की) सुन्दर पिंडलियों को; तान् पौरुम्–उनके द्वारा युद्ध में प्रयुक्त; कणैक्कु आम्–शरों के; आवमो–तूणीर; औरु परिचु ऍन्निनुम्–एक उपमा है तो; इन्नि वेऱु आवतु–और कोई तूणीर उपमान बन सकता है क्या। ५३२

सीढ़ीदार बाँधों के समान शिकनों के साथ रहनेवाले शंख और सुदर्शन चक्र के धारक, बहुत बड़ी शेषशय्याशायी विष्णु के अवतार श्रीराम की सुन्दर पिंडलियों की उपमा एक तरह से उनका ही युद्धशरों का तूणीर हो सकता हैं। और कोई तूणीर हो सकता है क्या ? । ५३२

अऱङ्गिळर् पऱवैयि नरशि नोङ्गिय
पिऱङ्गॅरुत् तनैयन वॅवरुम् बॅऱ्ऱुडै
मऱङ्गिळर् मदहरिक् करत्तै माऱ्ऱिन
कुऱङ्गिनुक् कुवमैयिव् वुलहिऱ् कूडुमो 533

अऱम् किळर्–(मूर्त-) धर्म-सम शोभायमान; पऱवैयिन् अरचिन्–पक्षीराज गरुड़ के; ओङ्किय पिऱङ्कु–उन्नत और पुष्ट; ऍरुत्तु अनैयन–गलों के समान हैं; ऍवरुम् पॅऱ्ऱुटै–सभी के लिए सुलभ; मऱम् किळर्–बलवान; मत करि करत्तै–मत्त गज की सूँड़ को; माऱ्ऱिन–निरर्थक कर गये; कुऱङ्कितुक्कु–ऐसे ऊरुओं को; उवमै–उपमा; इव्वुलकिल् कूटुमो–इस संसार में मिल सकती है क्या। ५३३

श्रीराम के ऊरु धर्मरूप पक्षीराज गरुड़ के उन्नत और स्थूल गले के समान रहते हैं। सभी आसानी से जिसकी उपमा देते हैं, उस सबल मत्तगज की सूँड़ को ठुकरा देनेवाले है। ऐसे जाँघों की उपमा इस संसार में कहीं मिल सकती है क्या ? । ५३३

वलञ्जुळित् तॊळुहुनीर् वळङ्गु गङ्गैयिन्
पॊलञ्जुळि यॆन्ऱलुम् बुन्मै पूवॊडु
निलञ्जुळित् तॊळुमणि युन्दि नेरिनि
इलञ्जियुम् बोलुमवे ऱुवमै याण्डरो 534

पू ऑटु–कमल के फूल में; निलम्–लोकों को भी; चुळित्तु ऍळु–मिलाकर जिसने उत्पन्न किया; मणि उन्ति–वह सुन्दर नाभि; वलम् चुळित्तु–दाहिनी आवर्तन की भँवरों के साथ; ऑळुकु–बहनेवाली; नीर वळङ्कु–जल देनेवाली; कङ्कै–

गंगा नदी की; पॊलम् चुऴि-सुन्दर भँवर (उपमा) है; अँनुरलुम्-कहना भी; पुन्मै-अल्प है; इत्ति नेर्-अब सम; इलञ्चियुम् पोलुम्-वकुल-सुमन होगा; वेरु उवमै याण्टु-अन्य उपमान कहाँ है। ५३४

श्रीराम की नाभि ने कमल पर सारे लोकों को भी सृष्ट किया। ऐसी नाभि को दक्षिणावर्त भँवरों के साथ वहनेवाली गंगा नदी का सुन्दर भँवर (-सम) कहना भी क्षुद्र उपमान होगा। शायद वकुल का फूल हो सकता है! फिर और कोई उपमा कहाँ से मिले ? । ५३४

पॊरुवरु मरहदप् पॊलङ्गॊण् माल्वरै
वॆरुवुऱ विरिन्दुयर् विलङ्ग लाहत्तप्
पिरिवऱ नोऱ्ऱन ळॆन्तिऱ् पिन्तैयत्
तिरुवितिऱ् ऱिरुवुळार् यावर् तॆय्वमे 535

तॆय्वमे-भगवती; पॊरु अरु-उपमाहीन; पॊलम कॊळ्-सुन्दरतायुक्त; मरकत माल् वरै-वड़ा मरकतपर्वत; वॆरु उऱ-डर जाय ऐसा; विरिन्तु उयर्-विशाल और उन्नत; विलङ्कल् आकत्तै-पर्वत-सम वक्ष में; पिरिवु अऱ-विना अलग हुए रहने का; नोऱ्ऱतळ् अँन्तिल्-भाग्य किया (जिसने); अ तिरुवितिल्-उस श्री से बढ़कर; तिरु उळार्-श्रीसम्पन्न; पिन्नै यावर्-और कौन हैं। ५३५

भगवती! श्रीराम का वक्षःस्थल पर्वत-सम है। अनुपम सौन्दर्य से युक्त मरकत-पर्वत को भी लजानेवाली रीति से उन्नत और विशाल है। श्रीदेवी की तपस्या का फल है कि वह उसमें निरन्तर वास करती हैं। उनसे बढ़कर भाग्यशालिनी कौन है ? । ५३५

नीडुरु कीट्टिशै निन्ऱ यान्तैयिन्, कोडुरु करमॆन्नच् चिऱिदु कूऱलाम्
तोडुरु मलरॆन्नच् चुरुम्बु शुऱ्ऱऱात्, ताडुरु तडक्कैवे ऱुवमै शालुमो 536

तोटु उरु-दलयुक्त; मलर् अँन्न-कमल है ऐसा; चुरुम्पु चुऱ्ऱु अऱा-जिन पर भ्रमरों का मँड़राना कभी नहीं रुकता; ताळ् तुरु तटक्कै-आजानुलम्बित विशाल हाथ; कीऴ्तिचै निन्ऱ यान्तैयिन्-पूर्व दिशा में स्थित (ऐरावत) गज के; कोटु उरु-लकीरों के साथ रहनेवाली; नीटु उरु करम् अँन्न-लम्बी सूँड़ है, ऐसा; चिऱितु कूऱलाम्-थोड़ा कह सकते हैं; वेरु उवमै चालुमो-कोई और उपमान मिल सकेगा क्या। ५३६

श्रीराम के आजानुलम्बे हाथों की, जिन पर भ्रमर दलसंकुल कमल-सुमन समझकर, घेरकर मँड़राना नहीं छोड़ते, उपमा पूर्व दिशा में स्थित ऐरावत गज की शिकनों (झुर्रियों) से भरी सूँड़ थोड़ा (संकोच से) कही जा सकती है। और कोई उपमा कही जा सकती है क्या ? । ५३६

पच्चिलैत् तामरै पहल्कण् डालन्न, कैच्चॆरि मुहिऴ्हिर् कनह नॆन्बवन्
वच्चिर याक्कैयै वहिर्न्द वन्ऱॊऴिल्, निच्चय मन्ऱॆन्ति नैय नीड्गुमे 537

पचुमै इलै तामरै–चिकने पत्रों-सहित कमल का फूल; पकल् कण्टाल् अँत–सूर्य को देख चुका हो ऐसा; कै चॅरि–हाथों में लगे रहे; मुकिळ् उकिर्–कली के समान नख; कतकत् अँत्पवत्–हिरण्य के; वच्चिर याक्कैयै–वज्रकठोर शरीर को; वकिर्न्त वन् तॊळिल्–जिन्होंने चीर लिया था उनका काम; निच्चयम् अन्ऱु–संशय-रहित नहीं है; अँतिन्–ऐसा कहें तो; ऐयम्–वह संशय; नीङ्कुम्–(श्रीराम के नखों को देखने पर स्वयं) मिट जायगा। ५३७

श्रीराम के हाथों की उँगलियों के कलियाँ जैसे नख चिकने पत्रों-सहित रहनेवाले कमल के फूल सूर्य को देख गये —जैसे प्रकाशमान हैं। कनककशिपु के वज्र-सम शरीर को उन नखों ने चीरा था। क्या नख भी शरीर को चीर सकते हैं? यह संशय जो उठ सकता है, उन नखों को देखने पर स्वतः दूर हो जायगा। ५३७

तिरण्डिल वॊळियिल तिरुवुञ् जेर्हिल
मुरण्डरु मेरुवित् शिलैयित् मूरिनाण्
पुरण्डिल पुहळिल पॊरुप्पॊत् ऱॊत्ऱुपोत्
ऱिरण्डिल पुयङ्गळुक् कुवमै येऱ्कुमो 538

तिरण्टु इल–पुष्ट नहीं हैं; ऑळि इल–कान्तियुत नहीं; तिरुवुम् चेर्किल–श्री से नहीं मिले हैं; मुरण् तरु–बलवान; मेरुवित्–मेरु के समान; चिलैयित्–धनु को; मूरि नाण् पुरण्टु इल–बलवान डोरा उन पर लगा नहीं है; पुकळ् इल–यशस्वी नहीं; पॊरुप्पु–पर्वत; ऑन्ऱु ऑन्ऱु पोन्ऱु–एक के समान·एक (परस्पर सम); इरण्टु इल–द्वय नहीं हैं; पुयङ्कळुक्कु–(इसलिए पर्वत) श्रीराम के कन्धों की; उवमै–उपमा का गौरव; एऱ्कुमो–धारण कर सकेंगे क्या। ५३८

श्रीराम के कन्धों को पर्वतों से उपमित करें क्या? वे उतने पुष्ट और वर्तुल कहाँ? कान्तियुत नहीं; श्रीयुत नहीं और उन पर बलवान मेरु के समान धनु की डोरी नहीं लोटी है। वे प्रशंसा के पात्र भी नहीं हैं। और परस्पर सम पर्वतद्वय कहाँ प्राप्य हैं? इसलिए वे श्रीराम की भुजाओं की उपमा का गौरव धारण नहीं कर सकते। ५३८

कडऱ्पडु पणिलमुङ् गन्निप् पूहमुम्
मिडऱ्ऱिनुक् कुवमैयॆन् ऱुरैक्कुम् वॆळ्ळियोर्क्
कुडऱ्पड वॊण्णुमो वुरहप् पळ्ळियान्
इडत्तुऱै शङ्गमॊन् ऱिरुक्क वॆङ्गळाल् 539

उरकप् पळ्ळियान्–शेषशायी; इटत्तु उऱै–के पास रहनेवाला; चङ्कम् ऑन्ऱु इरुक्क–शंख एक जब रहता है; कटल् पटु पणिलमुम्–सागर में उत्पन्न होनेवाला शंख; कन्निप् पूकमुम्–छोटी आयु का पूग-तरु; मिटऱ्ऱितुक्कु उवमै–कण्ठ की उपमा है; ॲन्ऱु–ऐसा; उरैक्कुम् वॆळ्ळियोर्क्कु–जो कहते हैं उन अल्पमतियों के साथ; उटन् पट ऑण्णुमो–हम सहमत हो सकेंगे क्या। ५३९

शेषशायी श्रीराम के बायें हाथ में ही पाञ्चजन्य नामक शंख है। उस स्थिति में, अन्य सागरोत्पन्न शंख या बाल-पूग-तरु को उनके कण्ठ से उपमित करनेवाले अल्पमतियों के साथ हम सहमत हो सकते हैं क्या ? । ५३९

अण्णऱन् ऱिरुमुहङ् गमल मामॆंऩिल्
कण्णिनुक् कुवमैवे ऱियादु काट्टुहेऩ्
तण्मदि यामॆंन वुरैक्कत् तक्कदो
विण्णुडल् पॊलिन्ददु मॆलिन्दु तेयुमाल् 540

अण्णल् तन् तिरुमुकम्–महिमावान श्रीराम का श्रीमुख; कमलम् आम् ऍनिल्–कमल कहा जाय तो; कण्णिनुक्कु–फिर आँखों के लिए; उवमै–उपमा; वेऱु यातु काट्टुकेन्–और क्या दिखाऊँगा; अतु–वह; उटल् विण् पॊलिन्तु–शरीर आकाश में शोभित होकर; मॆलिन्तु तेयुमाल्–क्षीण होकर घटेगा इसलिए; तण् मति आम्–(इसलिए) शीतल चन्द्र होगा; ऍन्त उरैक्क तक्कतो–ऐसा कहना उचित होगा क्या । ५४०

महिमावान श्रीराम के मुख को कमल कह दूँ तो फिर आँखों की उपमा क्या बताऊँगा ? फिर चन्द्र कहूँ ? वह आकाश में एक वार पूर्णत्व के साथ प्रगट होने के वाद घटता जाता है ! अतः शीतल चन्द्र को मुख का उपमान कहना उचित होगा क्या ? । ५४०

आरमु महिलु नीवि यहऩ्ऱदो ळमलन् शॆव्वाय्
नारमुण् डलर्न्द शॆङ्गेऴ् नळिनमॆंऩ् ऱुरैक्क नाणिल्
ईरमुण् डमुद मूऱा वित्तुरै यियम्बा देनुम्
मूरल्वॆण् मुऱुवल् पूवाप् पवऴमो मॊऴियप् पाऱ्ऱे 541

आरमुम् अक्लिुम् नीवि–चन्दन और अगरु का लेप-मली; अकन्ऱ तोळ्–विशाल भुजाओं वाले; अमलन् चॆव्वाय्–विमल देव का लाल मुख; नारम् उण्टु अलर्न्त–जल पीकर जो खिला है; चॆम् केऴ् नळितम्–लाल रंग का कमल है; ऍन्ऱु उरैक्क नाणिल्–यह कहने से लाज (संकोच) करेंगे तो; ईरम् उण्टु–आर्द्रता के साथ; अमुतम् ऊऱा–अमृत जिससे (नहीं) रिसता है; इन् उरै इयम्पातेनुम्–मधुर वचन न कहने पर भी; मूरल् वॆण् मुऱुवल्–(कम से कम) जो दाँतों द्वारा उज्ज्वल हँसी; पूवा–नहीं विखा सकता है; पवऴमो–वह प्रवाल क्या; मॊऴियप् पाऱ्ऱु–कहे जाने अर्ह होगा। ५४१

चन्दन और अगरु के लेप से भूषित विशाल भुजाओं वाले पावनमूर्ति श्रीराम के लाल मुख से जल पीकर उगे हुए प्रफुल्ल लाल रंग के कमल को उपमित करने से हम लजाएँगे। तो आर्द्रता से रहित, अमृत न सरसाते हुए, मधुर वचन न कहें तो भी कम से कम सफ़ेद दन्तावली खोलकर जो हँस नहीं सकता, वह प्रवाल उपमा के रूप में वताया जा सकता है क्या ? । ५४१

मुत्तङ् गोल्लो मुळुनिलविन् मुऱियिन् ऱिऱमो मोऴियमिर्दिन्
कोत्तिन् ऱुळिळ वॆळ्ळियॆनत् तॊडुत्त कोल्लो तुऱैयऱत्तिन्
वित्तिन् मुळैत्त वङ्गुरङ्गोल् वेऱे शिलकोन् मॆय्म्मुहिऴ्त्त
दोत्तिन् ऱोहैकोल् यादॆन्ऱु पल्लुक् कुवमै शोल्लुहेन् 542

पल्लुक्कु उवमै–दाँतों की उपमा; मुत्तम् कोल्लो–मोती होंगे क्या; मुळु निलविन्–पूर्णचन्द्र के; मुऱियिन् तिऱमो–टुकड़ों की पंक्ति हैं क्या; मोऴि–प्रशंसित; अमिर्तिन् कोत्तिन्–अमृत-राशि की; तुळिळ–बूंदों को; वॆळ्ळि ॲन्त तॊडुत्त कोल्लो–चाँदी कहने योग्य रीति से गूँथा गया है क्या; तुऱै अऱत्तिन्–(बत्तीस) अंशों में विभक्त धर्म के; वित्तिन् मुळैत्त–बीज से अंकुरित; अङ्कुरम् कोल्–अंकुर हैं क्या; वेऱे चिल कोल्–या अन्य कुछ है; मॆय् मुकिऴ्त्त–सत्य (तरु) में पुष्पित; तोत्तिन् तोकै कोल्–फूलों के गुच्छे हैं क्या; यातु ॲन्ऱु–क्या है ऐसा; चोल्लुकेन्–कहूँगा। ५४२

श्रीराम के दाँतों की उपमा मोती बन सकते हैं ? पूर्णचन्द्र के टुकड़ों की पंक्ति है ? प्रशसित अमृतराशि की बूँदों को चाँदी कहकर गूँथा गया है ? बत्तीस अंशों के बने धर्म से अंकुरित अकुर है ? या और कुछ ? या सत्यतरु पर पुष्पित फूलों का गुच्छा है। क्या कहूँ मैं ? । ५४२

ऍळ्ळा नीरिन् दिरनीलत् तॆऴुन्द कोऴुन्दु मरहदत्तिन्
विळ्ळा मुऴुवा णिऴऱ्पिऴम्बुम् वेण्ड वेण्डु मेन्नियदे
तळ्ळा वोदि कोपत्तैक् कौव वन्दु शार्न्ददुवुम्
कोळ्ळा वळ्ळ ऱिरुमूक्किऱ् कुवमै पिन्नुङ् गुऱिप्पामो 543

ऍळ्ळा नीर्–अनिंद्य पानी वाले; इन्तिर नीलत्तु–इन्द्रनील नग से; ऍऴुन्त कोऴुन्तुम्–उठे किसलय और; मरकतत्तिन्–मरकत की; विळ्ळा–अखण्डित; वाळ् निऴल् मुऴु पिऴम्पुम्–लम्बी कान्ति की सम्पूर्ण राशि और; वेण्ट वेण्टुम् मेन्नियतु–चाहकर तपस्या करें ऐसा दिव्य शरीर है उनका; तळ्ळा–संयुक्त; ओति–गिरगिट; कोपत्तै–इन्द्रगोप को; कौव–ग्रसने; वन्तु चार्न्ततु–आ पहुँचा है, यह कहना; कोळ्ळा–मान्य नहीं है; वळ्ळल् तिरु मूक्किऱ्कु–उदार प्रभु की नासिका का; उवमै–उपमान; पिन्नुम् कुऱिप्पु आमो–और किसी वस्तु को बता सकते हैं क्या। ५४३

श्रीराम के दिव्य शरीर का रंग ऐसा है कि निर्दोप पानी वाले इन्द्रनील की किसलय-सी आभा और मरकत नग की दीर्घ और अक्षुण्ण आभा वैसा रंग पाने के लिए तपस्या करें। (उनकी नाक की उपमा क्या कहें ?) गिरगिट इन्द्रगोप को ग्रसने के लिए आ पहुँचा है —ऐसा कहना भी मान्य नहीं हो सकता। तो फिर कौन सी उपमा कही जाय ? (अधर का लाल रंग और नासिका का नीला रंग दोनों के आधार पर यह उपमा कही गयी है। जहाँ जयशंकर प्रसाद का "है हंस न शुक यह चुगने को मुक्ता ऐसे" —ये पंक्तियाँ स्मरण आती है। कम्बन् ऐसी चित्रमय कल्पना दस-बारह सौ वर्ष पहले कर सके।) । ५४३

पनिक्कट् चुरत्तुक् करन्मुदलोर् कवन्दप् पडैयुम् वल्पेयुम्
तनिक्कैच् चिलैयुम् वानवरु मुनिवर् कुळुवुन् दनियऱमुम्
इनिक्कट् टळिन्द दरक्कर्कुल मॆन्नुज् जुरुदि यीयिरण्डुम्
कुनिक्कक् कुनित्त पुरुवत्तुक् कुवमै नीये कोडियाल् 544

पनि कल्–शीतल पर्वतों-सहित; चुरत्तु–वन में; करन् मुतलोर्–खर आदि राक्षसों की; कवन्त पटैयुम्–कबन्धों की सेना; पल् पेयुम्–अनेक पिशाच; तनि कै चिलैयुम्–अप्रतिम हस्त-धनु; वानवरुम्–और व्योमलोकवासी; मुनिवर् कुळुवुम्–मुनिवृन्द और; तनि अऱमुम्–अद्वितीय धर्म; इनि–अब; अरक्कर् कुलम्–राक्षसों का कुल; कट्टळिन्ततु–एक दम मिट गया; ऎन्नुम्–कहनेवाले; चुरुति ईर् इरण्टुम्–चारों वेदों के; कुनिक्क–नाच उठते; कुनित्त पुरुवत्तुक्कु–आकुंचित श्रीराम की भौंहों की; उवमै नीये कोटि–उपमा आप ही ढूंढ़ लें। ५४४

श्रीराम की भौंहें तनी और कुंचित हुईं। तब क्या-क्या हुए? शीतल पर्वतों-सहित भयंकर जंगल में खर आदि राक्षसों की कबन्ध सेना, अनेक भूत-पिशाच, श्रीराम के अप्रमेय हस्त का धनुष, देव, मुनिगण, अनुपम धर्म और चारों वेद —ये सभी यह समझकर नाच उठे कि राक्षसकुल अब एकदम निर्मूल हो गया। ऐसी जो झुकीं, उन भौहों की उपमा आप ही ढूँढ़ लें। ५४४

वरुनाट् टोन्ऱुन् दनिमऱुवुम् वळर्वुन् देय्वुम् वाळरवम्
ऑरुनाट् कव्वु मुऱुहोळु मिऱप्पुम् पिऱप्पु मॊळिवुऱ्ऱ
इरुनाऱ् पहलि निलङ्गुमदि यलङ्ग लिरुळि नॆळिनिळऱ्कीळ्प्
पॆरुना णिऱ्पि नवनॆऱ्ऱिप् पॆऱ्ऱित् ताहप् पॆऱुमन्ऱो 545

वरुनाळ्–जन्म के दिन से ही; तोन्ऱुम्–उत्पन्न; तनि मऱुवुम्–अनुपम कलंक; वळर्वुम् तेय्वुम्–और बढ़ना-घटना; वाळ् अरवम्–तलवार के समान सर्प (राहु) के; ऑरु नाळ् कव्वुम्–एक दिन ग्रहण कर लेने से; उऱु कोळुम्–मिलनेवाला दुःख; इऱप्पुम्–एक दिन पूर्ण रूप से अदृश्य होना और; पिऱप्पुम्–फिर एक दिन प्रकट होना; ऑळिवु उऱ्ऱ–इन दोषों से विमुक्त; इरु नाल् पकलिल्–अष्टमी के दिन; इलङ्कुम् मति–शोभायमान चन्द्र; अलङ्कल् इरुळिन्–भ्रामक अन्धकार में; ऎळिल् निळल् कीळ्–सबल अन्धकार के नीचे; पॆरु नाळ् निऱ्पिन्–अनेक दिन एक ही स्थिति में रह सकता हो तो; अवन् नॆऱ्ऱि–उनके भाल की; पॆऱ्ऱित्तु आकप् पॆऱुम्–स्थिति पायगा कहा जा सकता है। ५४५

(भाल की उपमा की अप्रस्तुत योजना देखिए।) अष्टमी का चन्द्र जन्म से ही प्राप्त कलंक से हीन होकर, वैसे ही घटना और बढ़ना छोड़कर, भयंकर सर्प राहु या केतु द्वारा निगले जाने के दुःख से विमुक्त हो, अमावास्या के दिन पूर्णरूप से मर (अदृश्य हो) जाना और दूसरे दिन प्रगट होना —इन बाधाओं से भी मुक्ति पाकर भ्रामक अन्धकार में नीली छाया के नीचे

अनेक दिन एक ही स्थिति में रह सकता हो तो वह श्रीराम के भाल से उपमित किया जा सकेगा ! । ५४५

नीण्ड्ु कुळऩ्ऱ नॅय्त्तिरुण्डु नॅरिन्दु शॅरिन्दु नॅडुनीलम्
पूण्डु पुरिन्दु शरिन्दुकडै शुरुण्डु पुहैयु नऱुम्बूवुम्
वेण्डु मल्ल वॅनत्तॅय्व वॅरिये कमळु नऱुङ्गुञ्जि
ईण्डु शडैया यिनदॅन्ऱाऩ् मळैयॅऩ् ऱुरैत्त लिळिवन्ऱो 546

नीण्टु–लम्बे; कुळऩ्ऱ–घुँघुराले; नॅय्त्तु–चिकने; इरुण्टु–अन्धकार-सम काले; नॅरित्तु–परतों में दबे; चॅरिन्तु–घने; नॅटुनीलम् पूण्टु–पूरा-पूरा नीले रंग के; पुरिन्तु–बटे हुए; चरिन्तु–पीछे लटकते हुए; कटै चुरुण्टु–अन्त में कुंचित होकर; पुकैयुम्–धुआँ और; नऱुम्पूवुम्–सुगन्धित सुमन; वेण्टुम् अल्ल–नहीं चाहिए; अॅत–ऐसा; तॅय्व वॅरिये–दिव्य गन्ध ही; कमळुम्–देनेवाले; नऱुम् कुञ्चि–सुवासपूर्ण केश; ईण्टु–इधर: चटै आयिनतु–जटा बने; अॅन्ऱाल्–ऐसा कहा जाय तो; मळै अॅन्ऱ उरैत्तल्–मेघ (-सम) कहना; इळिवु अन्ऱो–गलत होगा न । ५४६

केश को क्या मेघ-धारा कहें ? लम्बे, घुँघराले, चिकने अन्धकार-सम काले, परतों में दबे, घने, नीला रंग लिये बटे हुए, पीछे की ओर अन्त में कुंचित होकर लटकनेवाले केश, जो विना अगरु-धुएँ के और पुष्पों के ही स्वत: सुवासित रहते है, आज जटा बने हैं। तो उनका उपमान मेघ है कहना क्षुद्र उपमा होगा न ? । ५४६

पुल्ल लेऱ्ऱ तिरुमहळुम् बूवुम् बॊरुन्दप् पुवियेळिऩ्
अॅल्लै येऱ्ऱ नॅडुञ्जॅल्व मॅदिर्न्द ञाऩ्ऱु मः(ह्)दन्ऱि
अल्ल लेऱ्ऱ कानहत्तु मळिया नडैय यिळिवान
मल्ल लेऱ्ऱि नुळदॅन्ऱाऩ् मत्त यानै वरुन्दादो 547

पुल्लल् एऱ्ऱ–सदा आलिंगन में रहनेवाली; तिरुमकळुम्–श्रीदेवी और; पूवुम्–भूदेवी; पॊरुन्त–उनके पास जा लगें ऐसा; पुवि एळिऩ्–सप्तखण्डों की भूमि के; अॅल्लै एऱ्ऱ–समाहित; नॅटुम् चॅल्वम्–विशाल-धन-वैभव को; अॅतिर्न्त ञाऩ्ऱुम्–प्राप्त करते समय भी; अ:तु इन्ऱि–उसके नहीं होने से; अल्लल् एऱ्ऱ–संकट उठाते हुए; कानकत्तुम्–जंगल (में आने) पर भी; अळिया–जिसका शान कम नहीं हुआ; नटैये–उस गमन-गति को; इळिवान–अल्प एक; मल्लल् एऱ्ऱिऩ्–पुष्ट बैल में; उळतु–है; अॅन्ऱाल्–कहें तो; मत्त यानै वरुन्तातो–मत्तगज दुःखी नहीं होगा क्या । ५४७

सदा आलिंगन में रहनेवाली श्रीदेवी और भूदेवी दोनों एक साथ उनकी बनीं, जब सप्तांश भूमि के वे पति हुए। उस समय भी, और राज्यश्री को छोड़कर कष्ट ·ेनेवाले काननगमन के समय भी उनकी चाल समान रूप से [illegible] ुछ भी कमी नहीं हुई। ऐसी चाल को

क्षुद्र बैल की चाल में (के समान) रहनेवाला कहें तो मत्तगज दुःखी नहीं होगा क्या ? । ५४७

इऩ्ऩ मॊऴिय वम्मॊऴिहॆट्टॆरियि ऩिट्ट मॆऴुहॆऩ्ऩत्
तऩ्ऩै यऱिया दऴिवाळैत् तरॆयिऩ् वणङ्गि नायहऩार्
शॊऩ्ऩ कुऱिहॊ ळडैयाळच् चॊल्लु मुळवा लवैतोहै
अऩ्ऩ नडैयाय् केट्कॆऩ्ऩ वऱिव ऩऱैवा ऩायिऩाऩ् 548

इऩ्ऩ मॊऴिय–ऐसा हनुमान के कहने पर; अम् मॊऴि केट्टु–वे वचन सुनकर; ऎरियिऩ् इट्ट–आग में पड़े; मॆऴुकु ऎऩ्ऩ–मोम के समान; तऩ्ऩै अऱियातु–सुध खोकर; अऴिवाळै–शिथिल पड़नेवाली को; तरैयिल् वणङ्कि–भूमि पर दण्डवत करके; नायकऩार् चॊऩ्ऩ कुऱि–श्रीराम-कथित निशान और; कॊळ् अटैयाळ चॊल्लुम्–आपसे ग्राह्य अभिज्ञान-वचन; उळ–हैं; अवै–उन्हें; तोकै अऩ्ऩ–कलापी के समान; नटैयाय्–चाल वाली देवी; केट्क–सुनिए; ऎऩ–ऐसा; अऱिवऩ्–बुद्धिमान; अऱैवाऩ् आयिऩाऩ्–कहने लगा । ५४८

हनुमान ने इस विध श्रीराम के रूप का वर्णन किया तो सीताजी उसके वचनों को सुनकर आग में पड़े मोम के समान अपनी सुध होकर छीजने लगी । तो हनुमान ने भूमि पर गिरकर दण्डवत की और निवेदन किया कि देवी ! मेरे पास आपसे मान्य अभिज्ञान-वचन और संकेत हैं । कलापी-सी चाल की देवी ! उनको सुनें । वह आगे वोलने लगा । ५४८

❀ नडत्तलरि दाहुनॆऱि नाळ्हळ्शिल तायर्क्
कडुत्तपणि शॆय्दिवणि रुत्तियॆऩ वच्चुऱ्
ऱुडुत्ततुहि लोडुमुयि रुक्कवुड लोडुम्
ऎडुत्तमुऩि वोडुमय ऩिऩ्ऱुदुमि शैप्पाय् 549

नॆऱि नटत्तल्–मार्ग चलना; अरितु आकुम्–कठिन होगा; नाळ्कळ् चिल–दिन कुछ ही है; तायर्क्कु–माताओं की; अटुत्त पणि चॆय्तु–योग्य सेवाएँ करती हुई; इवण् इरुत्ति–यहीं रहो; ऎऩ–ऐसा कहने पर; अच्चुऱ्ऱु- दहलकर; उटुत्त तुकिलोटुम्–पहने (अकेले) वस्त्र के साथ; उयिर् उक्क–प्राणरहित-से; उट लोटुम्–शरीर के साथ; ऎटुत्त मुऩिवोटुम्–उठे क्रोध के साथ; अयल् निऩ्ऱुतुम्–मेरे पास आकर जो खड़ी हुईं; इचैप्पाय्–वह कहो । ५४९

श्रीराम ने आपको समझाया कि काननमार्गगमन कष्ट का आह्वान होगा । आखिर थोड़े ही दिन है ! माताओं की आवश्यक सेवा करती हुई इधर,ही रह जाओ । पर आप दहलकर पहने हुए अकेले वस्त्र ही के साथ, प्राणहीन-से शरीर के साथ और उठे क्रोध के साथ उनके पास जाकर खड़ी हो गयीं । श्रीराम ने मुझसे कहा कि यह वात तुम उनसे कहो । ५४९

❀ नीण्डमुडि वेऩ्दऩरु ळॆऩ्दिऩिऱै शॊल्वम्
पूण्डवऩै नीङ्गिनॆऱि पोदलुऱु नाळिऩ्

आण्डनह रारैयोडु वायिलह लामुन्
याण्डैयदु कानॅनवि शैत्तदुमि शैप्पाय् 550

नीण्ट मुटि–बड़े किरीटधारी; वेन्तत्–चक्रवर्ती की; अरुळ् एन्ति–कृपापूर्ण आज्ञा धारण करके; निरै चॅल्वम् पूण्टु–विशाल धन अपनाकर; अतत्तै नीङ्कि–फिर उसे छोड़कर; नॅरि पोतल् उरु–जंगल की राह जाने के; नाळिल्–दिन में; आण्टु–तब; अ नकर्–उस नगर के; आरै ऑटु वायिल्–प्राचीर के राजद्वार से; अकला मुन्–निकलने से पहले ही; कान् याण्टैयतु–जंगल कहाँ रहता है; ऍन्न–ऐसा; इचैत्ततुम्–देवी का पूछना भी; इचैप्पाय्–तुम उनसे कहो। ५५०

'दीर्घ किरीटधारी (किरीट बड़ा था और शासनकाल भी लम्बा —दोनों अर्थ हैं।) चक्रवर्ती की आज्ञा धारण करके पहले राज्य-धन को स्वीकृत किया; फिर उसे छोड़कर जंगल की राह ली मैंने। तब सीताजी प्राचीर के राजद्वार छोड़ने से पूर्व ही मुझसे पूछ बैठीं कि जंगल कहाँ है ? (अभी दिखायी नहीं देता !) यह उन्हें स्मरण दिलाओ।' (तुलसी की कवितावली में भी यही बात आती है।)। ५५०

❀ ऍळ्ळरिय तेर्दरु शुमन्दिर निशैप्पाय्
वळ्ळन्मॊळि वाशह मॅनत्तुयर् मरन्दाळ्
किळ्ळैयॊडु पूवैहळ् किळर्त्तलकिळ वॅन्नुम्
पिळ्ळैयुरै यित्तिरु मुणर्त्तुदि पॅयर्त्तुम् 551

ऍळ्ळरिय–अनिंद्य; तेर् तरु–रथचालक; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र के; वळ्ळल् मॊळि–अर्थपूर्ण; वाचकम् इचैप्पाय्–सन्देश-वचन कहिए; ऍन्न–कहने पर; तुयर् मरन्ताळ्–अपना दुःख भूलकर; किळ्ळैयॊटु पूवैकळ्–शुकों के साथ सारिकाएँ; किळर्त्तल्–पालना; किळ–कहिए; ऍन्नुम्–ऐसा कहने में; पिळ्ळै उरैयित् तिरम्–(जो) नादान शिशु-वचन का गुण है; पॅयर्त्तुम्–(वह) फिर से; उणर्त्तुति–स्मरण कराओ। ५५१

अनिंद्य रथ के सारथी सुमन्त्र ने सीता से कहा कि देवी ! अर्थपूर्ण वाक्यों में अपना संदेश-वचन कहें। तब सीताजी ने अपना कष्ट भूलकर कहा कि शुक-सारिकाओं को ठीक तरह से पालना —यह सन्देश पहुँचा दीजिए। शिशु-सम कपटहीन उसके वचन का प्रकार उसे स्मरण कराओ। ५५१

❀ मीट्टुमुरै वेण्डुवन विल्लैयॅन सॅय्प्पेर्
तीट्टियदु तीट्टरिय शॅय्हैयदु शॅव्वे
नीट्टिदॅन नेर्न्दतनॅ नानॅडिय कैयाल्
काट्टिननॊ राळियदु वाणुदलि कण्डाळ् 552

मीट्टुम्–फिर भी; उरै वेण्टुवत इल्लै–कहना कुछ नहीं चाहिए; ऍन्न–ऐसा

कहकर; मॅय्प्पेर् तीट्टियतु–मेरा सच्चा नाम अंकित है; तीट्टरिय चॅय्कैयतु–दुर्लभ रचना-कौशल से बना है; चॅव्वे नीट्टु–सामने बढ़ाओ; इतु–इसे; ऍऩ्ऩ–कहकर; नेर्न्तऩऩ्–(श्रीराम ने) मेरे पास दिया; ऍऩ्ऩा–कहकर; ओर् आऴि–एक मणि-मुंदरी को; नॅटिय कैयाल्–अपने लम्बे हाथ में ले; काट्टिऩऩ्–दिखाया; अतु–उसको; वाळ् नुतलि–उज्ज्वल भाल वाली देवी ने; कण्टाळ्–देखा । ५५२

श्रीराम ने आगे कहा कि फिर कुछ कहना नहीं है। फिर उन्होंने एक दिव्य मुँदरी मुझे दी और कहा कि इसमें मेरा सत्यनाम अंकित है। दुर्लभ कारीगरी से युक्त है। इसे तुम सीताजी के पास दे दो। ऐसा कहकर हनुमान ने अपना लम्बा हाथ बढ़ाकर एक सुन्दर मुँदरी दिखायी। उज्ज्वल भाल वाली सीता ने उसे देखा। ५५२

❀ इऱन्दवर् पिऱन्दपय नॅय्दिनर्कॉ लॅऩ्गो
मऱन्दव रऱिन्दुणर्वु वन्दनर्कॉ लॅऩ्गो
तुऱन्दवुयिर् वन्दिडैतॉ डर्न्ददुकॉ लॅऩ्गो
तिऱन्दॅरिव दॅऩ्ऩैकॉलि नऩ्ऩुदलि शॅय्है 553

इ नल् नुतलि–इन सुन्दर भाल वाली देवी का; चॅयकै–कृत्य; इऱन्तवर्–निरर्थक जीवन बितानेवाले ने; पिऱन्त पयऩ् ऍय्तितर्–सफल जन्म का फल पा लिया हो; चॅय्कै कॉल् ऍऩ्को–उसका-सा कृत्य है कहूँ; मऱन्तवर्–जो किसी को भूल गये; अऱिन्तु–उसने उसको जानकर; उणर्वु वन्तऩर्–सुधि कर ली; चॅय्कै कॉल् ऍऩ्को–उसका-सा कृत्य कहूँ; तुऱन्तु–प्राण छूटकर; अ उयिर्–फिर वे प्राण; वन्तु–आकर; इटै तॉटर्न्ततु कॉल्–मध्य में लग गये; ऍऩ्को–कहूँ; तिऱम् तॅरिवतु–प्रकार जानना; ऍऩ्ऩै कॉल्–कैसा । ५५३

तब सुन्दर ललाटिनी सीताजी ने जो मोद-चेष्टाएँ प्रगट कीं उनको क्या कहा जाय? जिसने योग्य कर्म न करके अपना जीवन व्यर्थ किया उसे कृतार्थ-जन्म का फल मिल गया तो उसकी स्थिति जैसी होगी वैसी ही सीताजी की रही। —यह कहूँ? या— विस्मृति के बाद स्मृतिप्राप्त मनुष्य की-सी रही —कहूँ? या छूटे प्राण फिर बीच में ही आ गये —वैसी स्थिति उनकी हो रही —यह कहूँ? उनकी स्थिति का प्रकार कैसे जानूँ और वर्णन करूँ। ५५३

इऴन्दमणि पुऱ्ऱर वॅदिर्न्ददॅऩ लाऩाळ्
पऴन्दऩ मिऴन्दऩ पडैत्तवरै यॉत्ताळ्
कुऴन्दैयै युयिर्त्तमल डिक्कुवमै कॉण्डाळ्
ऒऴिन्दविऴि पॅऱ्ऱदॉ रुयिर्प्पॊरैयु मॊत्ताळ् 554

पुऱ्ऱु अरवु–बिल-वासी सर्प; इऴन्त मणि–अपने खोये नागरत्न को; ऍतिर्न्ततु–प्राप्त कर गया हो; ऍऩल् आऩाळ्–ऐसा बनीं; इऴन्तऩ–खोये गये; पऴम् तऩम्–प्राचीन धनों को; पटैत्तवरै–जिन्होंने पा लिया उनके; ऒत्ताळ्–समान बनीं;

मलटि–वंध्या; कुळन्तैयै उयिर्त्ततट्कु–पुत्र पा गयी हो उसकी; उवमै कॉण्टाळ्–उपमा बनीं; ऑळित्त विळि–खोयी दृष्टि; पॅऱ्ऱतोर् उयिर्प्पॉऱैयुम्–जिसने पा ली उस जीवधारी शरीर के; ऑत्ताळ्–समान भी बनीं। ५५४

वे उस सर्प के समान हो रहीं, जिसने अपना (नाग-) रत्न खोकर फिर से पा लिया हो। खोये प्राचीन धन को फिर से प्राप्त करनेवाले मनुष्य के समान भी हो गयीं। वंध्या ने पुत्र को जन्म दिया हो जैसी उनकी स्थिति हुई। और खोयी दृष्टि को जिसने पुनः प्राप्त कर लिया, उस जीव की जैसी भी हो गयीं। ५५४

वाङ्गिनण् मुलैक्कुवैयिल् वैत्तनळ् शिरत्ताल्
ताङ्गिनण् मलर्क्कण्मिशै यॉत्तिन्न डडन्दोळ्
वीङ्गिनण् मॅलिन्दन्नळ् कुळिर्न्दन्नळ् वॅदुप्पो
डेङ्गिल ळुयिर्त्तनळि दिन्नदॆन लामे 555

वाङ्कित्तळ्–(देवी ने) उसे लिया; मुलैक् कुवैयिल् वैत्तन्नळ्–स्तनाग्र पर रखा; शिरत्ताल् ताङ्कित्तळ्–सिर पर धारण किया; मलर् कण् मिचै–कमल-सी आँखों पर; ऑत्तित्तळ्–(बार-बार रखा; तटम् तोळ्–विशाल भुजाएँ; वीङ्कित्तळ्–फूल गयीं ऐसी हो गयीं; कुळिर्न्ततळ्–शीतल-(मुदित)-मना हुईं; मॅलिन्ततळ्–दुर्बल हुईं; वॅतुप्पोटु–मुरझाकर; एङ्कित्तळ्–तरसीं; उयिर्त्ततळ्–दीर्घ निःश्वास छोड़े; इतु–यह; इत्ततु ॲन्तल्–(क्यों) ऐसा है कहना; आमे–हो सकता है क्या। ५५५

सीतादेवी ने उस मणि-मुँदरी को हाथ में लिया। फिर कुचाग्र पर रखा। सिर पर धारण कर लिया। पंकज-नेत्रों पर रखा। उनकी भुजाएँ फूल उठीं। उनका मन शान्त-शीतल हुआ। श्रीराम का स्मरण कर क्षीण हुई। मुरझायीं और तरसने लगीं। लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। यह स्थिति क्या है —यह कहा जा सकता है क्या ? । ५५५

❀ मोक्कुमुलै वैत्तुउऱमु यङ्गुमिळि नन्नीर्
नीक्किनिऱै कण्णिणैत तुम्बनॅडु नीळ
नोक्कुनुव लक्करुदु मॊत्तुऱुनुवल् हिल्लाळ
मेक्कुनिमिर् विम्मलळ्वि ळङ्गलुऱु हिन्ऱाळ् 556

मोक्कुम्–(सीताजी) सूँघतीं; मुलै वैत्तु–स्तनों पर रखकर; उऱ मुयङ्कुम्–गाढ़ा आलिंगन करतीं; इळि–नीचे की ओर बहनेवाले; निऱै नल् नीर्–अधिक आनन्दाश्रुजल को; नीक्कि–पोंछकर; कण् इणै–दोनों आँखों में; ततुम्प–फिर से अश्रु के भरते; नॅटु नीळ नोक्कुम्–बहुत देर तक उसे देखतीं; नुवलक् करुतुम्–(उससे) बात करना चाहतीं; ऑत्तुऱुम् नुवल् किल्लाळ्–कुछ कह नहीं पातीं; मेक्कु निमिर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; विम्मलळ्–तरस के साथ; विळुङ्कल् उऱुकिन्ऱाळ्–उसको दबाने का प्रयास करतीं। ५५६

और सीताजी ने उसे सूँघा। स्तनों पर रखकर कस लिया। जो

आँखों से आनन्दाश्रुजल बहा उसे पोंछा। फिर भी उनकी आँखों में आँसू भर आये। उसी स्थिति में उन्होंने उस पर दृष्टि जमा की। कुछ उससे कहना चाहा; पर कुछ नहीं कहा। उत्तरोत्तर बढ़नेवाली आतुरता से भर गयीं; पर उसे दबा लिया। ५५६

नीण्डविऴि नेरिऴैतन् मिऩ्ऩिनिऱ मॅल्लाम्
पूण्डदॊऴिर् पॊऩ्ऩनैय पॊम्मलनिऱ मॅय्ये
आण्डहैदन् मोदिरम डुत्तपॊरु ळॅल्लाम्
तीण्डळविल् वेदिहैशॆय् दॆय्वमणि कॊल्लो 557

नीण्ट विऴि नेरिऴै तऩ्–आयताक्षी (सीता) का; मिऩ्ऩिऩ् निऱम् ऍल्लाम्–बिजली-सम कान्तियुत रूप सब; ऒऴिर् पॊऩ् अऩैय–ज्वलन्त स्वर्ण-सम; पॊम्मल् निऱम्–चमकदार रंग से; पूण्टतु–रंगीन हो गया; आण्टकै तऩ्–पुरुष-श्रेष्ठ की; मोतिरम् अट्टुत्त–दिव्य मणिमुँदरी से लगे; पॊरुळ् ऍल्लाम्–पदार्थ सारे; तीण्टु अळविल्–स्पर्श करते ही; वेतिकै चॆय्–बदलनेवाली; मॆय्ये–सचमुच ही; तॆय्व मणि कॊल्लो–दिव्य रसायन-मणि है क्या। ५५७

आयताक्षी सीताजी का चमकता सारा शरीर ज्वलन्त स्वर्णवर्ण का हो गया। पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम की मुँदरी के सम्पर्क में आये सभी पदार्थों ने स्पर्शमात्र से रंग बदल लिया। क्या वह सचमुच एक पारसमणि थी ? । ५५७

❀ इरुन्दुपशि यालिडरु ऴन्दवर्ह ळॅय्दुम्
अरुन्दुममु दाहियद ऱत्तवरै यण्डुम्
विरुन्दुमॅन्न लाहियदु वीयुमुयिर् मीळुम्
मरुन्दुमॅन्न लाहियदु वाऴिमणि याऴि 558

मणि आऴि–वह मणिमुँदरी; पचियाल्–भूख के साथ; इरुन्तु–रहकर; इटर् उऴन्तवर्कळ्–जो दुःखी रहे; ऍय्तुम्–उन्हें प्राप्त; अरुन्तुम् अमुतु–भोज्य अमृत; आकियतु–बनी; अऱत्तवरै–गृहस्थ-धर्म-रत लोगों के; अणुमुम्–पास आये; विरुन्तुम्–अतिथि; ऍन्नल् आकियतु–के समान बनी; वीयुम् उयिर्–मरे प्राणों को; मीळुम् मरुन्तुम् ऍन्नल्–लौटानेवाली औषध के समान भी; आकियतु–बनी; वाऴि–जिए वह। ५५८

वह मुँदरी भूख से पीड़ित लोगों को प्राप्त भोज्य अमृत-सा रहा। गृहस्थधर्मरत लोगों के पास आये अतिथि के समान रहा। गये प्राणों को लौटानेवाली औषध के समान भी रहा। जिए वह मणि-मुँदरी ! । ५५८

❀ इत्तहैय ळाहियुयि रेमुऱवि ळङ्गुम्
मुत्तनहै याळ्विऴियि ऩालिमुलै मुऩ्ऱिल्

तत्तियुह मॅन्गुदलै तळ्ळवुयिर् तन्दाय्
उत्तमवॆ न्नाविन्नैय वाशहमु रॆत्ताळ् 559

इत्तकैयळ् आकि–इस तरह की बनकर; उयिर–प्राणों के; एम् उऱ–लहलहाते; **विळङ्कुम्**–शोभायमान; मुत्त नकैयाळ्–मोतियों के समान दाँतों वाली; **विऴियिन्** आलि–आँखों की बूँदों के; मुलै मुत्तिऱ्‌ल् तत्ति–कुचाग्र पर गिरकर उछलकर; उक–नीचे गिरते; मॆन् कुतलै–कोमल तुतली बोली; तळ्ळ–लड़खड़ाये ऐसा; उत्तम–उत्तम; उयिर् तन्ताय्–प्राणदान किया; ॲन्ना–कहकर; इत्तैय वाचकम्–ये वाक्य; उरॆत्ताळ्–(हनुमान से) बोलीं। ५५६

सीताजी इस स्थिति में आयीं। उनके प्राण लहलहा उठे। उज्ज्वल दाँतों से युक्त देवी के अश्रु उनके स्तनाग्र पर गिरे, उछले और नीचे जा रहे। उनकी मधुर बोली गद्‌गद हो गयी। उन्होंने उद्‌गार निकाली कि उत्तम, तुमने मुझे प्राणदान किया। वे आगे यों बोलीं। ५५९

❀ मुम्मैया मुलहन् दन्द मुदल्वऱ्‌कु मुदल्वन् ऱूदाय्च्
चॅम्मैया लुयिर्तन् दाय्क्कुच् चॅयलॅन्ना लॆळिय दुण्डे
अम्मैया यप्प नाय वत्तनें यरुळिन् वाळ्वे
इम्मैये मऱुमै दानु नल्हिनै यिशैयो डॆन्ऱाळ् 560

मुम्मैयाम्–त्रिविध (स्वर्ग, भूमि, पाताल) के; उलकम् तन्त–लोकों के सर्जक; मुतल्वऱ्‌कु–आदिदेव ब्रह्मा के भी; मुतल्वन्–धाता श्रीराम का; तूताय्–दूत बनकर; चॅम्मैयाल्–अपने कौशल से; उयिर् तन्ताय्क्कु–तुमने मुझे प्राणदान किया, ऐसे तुम्हारे प्रति; ॲन्नाल् चॅयल्–मेरा प्रत्युपकार; ॲळियतु उण्टे–सुलभ है क्या; अम्मैयाय् अप्पताय–माता हो, पिता हो; अत्तने–दैव हो; अरुळिन् वाळ्वे–दया के जीवाधार; इम्मैये मऱुमै तानुम्–इह और पर (सुख) को; इचैयोटु–यश के साथ; नल्कितै–मुझे दिया; ॲन्ऱाळ्–कहा (सीताजी ने)। ५६०

त्रिविध लोकों के आदिनाथ ब्रह्मा के भी आदि हैं, विष्णु के अवतार श्रीराम। उनका दूत बनकर तुम आये और अपने सामर्थ्य से मुझे प्राणवान बनाया। ऐसे तुम्हें प्रत्युपकार में क्या दे सकूँगी? क्या प्रत्युपकार उतना सुगम है? माता हो तुम; पिता भी! दैव भी तुम्हीं हो। करुणा के जीवनाधार! तुमने इह-पर दोनों सुख दिलाया और वह भी यश-सहित!। ५६०

❀ पाऴिय पणैत्तोळ् वीर तुणैयिलेन् परिवु तीर्त्त
वाऴिय वळ्ळ लेयान् मऱुविला मनत्ते नॆन्निन्
ऊऴियोर् पहला योदुम् याण्डॆला मुलह मेऴुम्
एऴ्‌मुवी वुऱ्‌ऱ ञान्ऱु मिन्ऱॆन विरुत्ति यॆन्ऱाळ् 561

पाऴिय–सशक्त; पणै तोळ् वीर–स्थूल कन्धों वाले वीर; तुणैयिलेन्–असहाय मेरा; परिव तीर्त्त–दुःखनिवारक; वळ्ळले–उदार पुरुष; यान्–मैं; मऱ इला

मततुतेन्–निष्कलंकमन हूँ; ॲन्तिल्–तो; ऊऴि ओर् पकलाय्–एक युग की एक दिन की गणना से; ओतुम् याण्टु ॲलाम्–गणित सारे वर्ष; उलकम् एऴुम् एऴुम्–चौदहों भुवन; वीवु उऱ्ऱ ञातृरुम्–जब मिट जायँगे उस महाप्रलयकाल में भी; इन्ऱु ॲत–आज के समान; वाऴिय इरुत्ति–जीते रहो; ॲन्ऱाळ्–ऐसा आशीर्वाद दिया। ५६१

सबल और स्थूल कन्धों वाले वीर ! मैं निःसहाय थी। मेरा दुःख दूर करनेवाले उदार पुरुष ! अगर मैं अकलंक पवित्रमना हूँ, तो एक युग को एक दिन बनाकर अनेक वर्षों तक जिओ; चौदहों लोकों के नाश होने के वाद भी तुम आज के जैसे जीवित रहोगे। ऐसा देवी ने हनुमान को आशिष दी। ५६१

मीण्डुरै विळम्व लुऱ्ऱाळ् विऴुमिय कुणत्तोय् वीरन्
याण्डैया निळव लोडु मॅव्वऴि यॅय्दिऱ् ऱुन्नै
आण्डहै यडियेत् ऱन्नै यार्शॊल वऱिन्दा नॆन्ऱाळ्
तूण्डिरण् डनैय तोळा नुऱ्ऱदु शॊल्ल लुऱ्ऱान् 562

मीण्टु–फिर; उरै विळम्पल् उऱ्ऱाळ्–वचन कहने लगीं; विऴुमिय–श्रेष्ठ; कुणत्तोय्–गुणों वाले; वीरन्–श्रीरघुवीर; इळवलोटुम्–अपने लघु भाई के साथ; याण्टैयान्–कहाँ है; ॲव्वऴि–कहाँ; ॲय्तिऱ्ऱु उन्तै–तुम्हें प्राप्त हुए; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ ने; अटियेन् तन्तै–दासी मेरे बारे में; यार् चॊल–किसके कहने पर; अऱिन्तान्–जाना; ॲन्ऱाळ्–पूछा (देवी ने); तूण् तिरण्टनैय–स्थूल खम्भे-से; तोळान्–कन्धों वाले ने; उऱ्ऱतु–घटी कहानी; चॊल्लल् उऱ्ऱान्–कहना आरम्भ किया। ५६२

वे और भी वोलीं। श्रेष्ठ गुणों वाले ! अव श्रीरघुवीर और उनके लघुवीर कहाँ हैं ? वे तुमसे कहाँ मिले ? मेरे बारे में किसके कहने से उन्होंने जाना ? यह प्रश्न सुनकर स्थूल स्तम्भ-सम कन्धों वाले हनुमान ने उत्तर में यों कहना आरम्भ किया। ५६२

उऴैक्कुलत् तिशैयु माय वुरुवुकॊण् डुरुदल् शॆय्दान्
मऴैक्करु निऱत्तु माय वरक्कन्मा रीश नॆन्बान्
इऴैत्तड मार्बत् तण्ण लॆय्यप्पोय् वैयञ् जेर्वान्
अऴैत्तवल् लोशै युन्नै मयक्कुदऱ् कण्णल् शॊल्लाल् 563

मऴै करु निऱत्तु–मेघ-सम काले रंग का; मारीचन् ॲन्पान्–मारीच कथित; माय अरक्कन्–मायावी राक्षस; उऴै कुलत्तु इचैयुम्–हरिण की जाति से मिला हुआ; माय उरुवु कॊण्टु–माया-रूप धरकर; उऱुतल् चॆय्तान्–आया; इऴै तट मार्पत्तु–आभरणालंकृत विशाल वक्ष वाले; अण्णल्–महिमामय श्रीराम के; ॲय्य–शर चलाने पर; पोय्–जाकर; वैयम् चेर्वान्–भूमि पर गिरा; अण्णल् चॊल्लाल्–महिमावान श्रीराम के-से स्वर में; अऴैत्त–जो टेर लगायी; वल् ओचै–वह उच्च नाद; उन्नै मयक्कुतऱ्कु–आपको भ्रम में डालने के लिए था। ५६३

मेघ-सम काले रंग का मायावी और मारीच नामक राक्षस मृग जाति का झूठा रूप धारण कर आया। आभरणालंकृत विशाल वक्षःस्थल वाले श्रीराम के शर चलाने पर वह भूमि पर गिरा। तब महिमावान श्रीराम के स्वर में उसने जो पुकारा, वह तुमुल नाद आपको भ्रम मे डालने के लिए ही था। ५६३

इक्कुर लिळवल् केळा दॊळिहॆन विऱैव लिट्टान्
मॆय्क्कुरऱ् चाबम् बिन्नै विळैन्ददु विदियिन् मॆय्म्मै
पॊय्क्कुर लिऩ्ऱु पॊल्लाप् पॊरुळ्पिन्नर् पयक्कु मॆन्बान्
कैक्कुरल् वरिविल् लानु मिळैयवन् वरवु कण्डान् 564

इऱैवन्–भगवान श्रीराम; इक् कुरल्–यह ध्वनि; इळवल् केळातु–लघु भाई के सुनने में न आकर; ऒळिक–दब जाय; ऎन्न–ऐसा सोचकर; मॆय् कुरल्–सच्चे स्वर को; चापम् इट्टान्–अपने चाप से पैदा किया; पिन्नै विळैन्ततु–बाद जो घटा; वितियिन् मॆय्म्मै–विधि की सच्ची करतूत है; पॊय्क्कुरल्–मारीच का मिथ्यानाद; इन्ऱु–अभी; पिन्नर्–बाद; पॊल्ला पॊरुळ् पयक्कुम्–विपरीत हानिकारक कार्य करा देगा; ऎन्पान्–ऐसा सोचकर; कै कुरल्–हाथ में रहे; वरि विल्लानुम्–सबन्ध धनु के धारक श्रीराम ने भी; इळैयवन् वरवु–छोटे भाई का आना; कण्टान्–देखा। ५६४

श्रीराम ने चाहा कि यह ध्वनि छोटा भाई न सुने। इसलिए उन्होंने अपने सत्य-धनु का स्वन निकाला। फिर जो घटनाएँ घटीं, वे असल में विधि की करतूत हैं। मारीच का मिथ्या स्वर अवश्य कुछ अनर्थ करनेवाला है —इस डर के साथ आनेवाले सबन्धधनुर्हस्त श्रीराम ने अपने भाई को आता देख लिया। ५६४

कण्डपि निळैय वीरन् मुहत्तिनाऱ् करुत्तै योर्न्द
पुण्डरि हक्क णानु मुऱ्ऱदु पुहलक् केट्टान्
वण्डुऱै शालै वन्दा निन्ऱिरु वडिवु काणान्
उण्डुयि रिरुन्दा निन्न लुळत्तऱ्कॆ वेदु वन्ऱो 565

कण्ट पिन्–देखने के बाद; इळैय वीरन् मुकत्तिनाल्–छोटे वीर के मुखभाव से; करुत्तै–उनके मन का भाव; ओर्न्त–जो ताड़ गये; पुण्टरिकक् कणानुम्–उन पुण्डरीकाक्ष ने भी; उऱ्ऱतु–जो बीता; पुकल–उसको लक्ष्मण के कहने पर; केट्टान्–सुना; वण्टु उऱै–भ्रमर जहाँ रहते थे; चालै वन्तान्–उस पर्णशाला में आये; निन् तिरु वटिवु–आपका दिव्य रूप; काणान्–न देखा; उयिर् उण्टु इरुन्तान्–केवल प्राण ही रहे, ऐसी स्थिति में रहे; इन्नल् उळत्तऱ्कॆ–कष्ट उठाने का; एतु अन्ऱो–हेतु नहीं था क्या। ५६५

श्रीराम ने लक्ष्मण को देखा, उनकी मुखमुद्रा से मन का भाव ताड़ लिया। पुण्डरीकाक्ष ने लक्ष्मण के मुख से बीता समाचार सुना। फिर

वे आश्रम में आये, जहाँ तरुओं के पुष्पों के कारण भ्रमर खूब मँड़रा रहे थे। वहाँ उन्होंने आपका श्रीरूप नहीं देखा। तब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी कि केवल प्राण ही रह गये, शरीर निस्पन्द-सा हो गया। क्या वह स्थिति दुःख का हेतु नहीं थी? । ५६५

अऩ्ऩिलै याय वण्ण लाण्डुनिऩ् ऱुऩ्ऩै निऩ्ऩैत्
तुऩ्ऩरुङ् गाऩुम् याऱु मलैहळुम् दॊडर्न्दु नाडि
इऩ्ऩुयि रिऩ्ऱि येहु मॆन्दिरप् पडिव मॊप्पाऩ्
तऩ्ऩुयिर् पुहऴ्क्कु विऱ्ऱ शडायुवै वन्दु शार्न्दाऩ् 566

अऩ्ऩै–माते; अऩ् निलै आय–उस स्थिति में जो पड़े; अण्णल्–महिमावान श्रीराम; इऩ् उयिर् इऩ्ऱि–प्यारे प्राणों से रहित; एकुम्–चलनेवाले; ऍन्तिर पटिवम् ऒप्पाऩ्–यन्त्ररूप रहे; आण्टु निऩ्ऱु–वहाँ से; निऩ्ऩै–आपको; तुऩ् अरुम्–अगम; काऩुम्–वनों; याऱुम् मलैकळुम्–नदियों और पर्वतों पर; तॊटर्न्तु नाटि–क्रम से खोजते हुए; तऩ् उयिर्–अपने प्राणों को; पुकऴ्क्कु विऱ्ऱ–यश के बदले जिन्होंने दे दिये; चटायुवै वन्तु चार्न्ताऩ्–जटायु के पास आ पहुँचे। ५६६

माते! उस स्थिति में श्रीराम प्राणहीन चलने वाले यंत्रवत हो गये। वहाँ से चलकर वे अगम जंगलों, पर्वतों और नदियों पर खोजते हुए उस स्थान पर आये, जहाँ प्राण देकर यशस्वी हुआ जटायु पड़ा हुआ था। (प्राणों का दान देकर यश का खरीदार जो बना –यह सरस प्रयोग है।) । ५६६

वन्दवऩ् मेऩि नोक्कि वाऩुयर् तुयरिऩ् वैहि
ऍन्दैनी युऱ्ऱ तऩ्मै यियम्बॆऩ विलङ्गै वेन्दऩ्
शुन्दरि निऩ्ऩैच् चॆय्द वञ्जनै शॊल्लच् चॊल्ल
वॆन्दन वुलह मॆऩ्ऩ निमिर्न्ददु शीऱ्ऱ वॆन्दी 567

चुन्तरि–सुन्दरी देवी; वन्तु–आकर; अवऩ् मेऩि नोक्कि–उसका शरीर देखकर; वाऩ् उयर्–बहुत अधिक; तुयरिऩ् वैकि–दुःख में पड़कर; ऍन्तै–पितृतुल्य; नी–आप; उऱ्ऱतऩ्मै–इस स्थिति को प्राप्त होने का प्रकार; इयम्पु–कहिए; ऍऩ–पूछा; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंकाधिपति ने; निऩ्ऩै चॆय्त–आपके प्रति जो किया; वञ्चऩै चॊल्ल चॊल्ल–वह वंचक काम वर्णन करते-करते; चीऱ्ऱ वॆम् ती–श्रीराम की भयंकर क्रोधाग्नि; उलकम् वॆन्तऩ ऍऩ्ऩ–सारे लोक जल गये, ऐसा भय पैदा करते हुए; निमिर्न्ततु–उठी। ५६७

सुन्दरी देवी! श्रीराम ने उसके शरीर पर दृष्टि डाली। उन्हें अत्यधिक दुःख हुआ। उन्होंने उससे पूछा कि तात! इस स्थिति को कैसे प्राप्त हुए? वह प्रकार बताइए। जटायु ने रावण का आपके प्रति किया हुआ वंचक काम कहा। ज्यों-ज्यों वह कहता जाता था, त्यों-त्यों

श्रीराम की कोपाग्नि ऐसी उठ बढ़ी मानो सारे लोकों को जला डालेगी। ५६७

शीऱियिव् वुलह मूऩ्ऱुन् दीन्दुहच् चित्तवा यम्बाल्
नूऱुवॅ ऍऩ्ऱु कैवि ऩोक्किय काले नोक्कि
ऊऱीरु शिऱियोऩ् शॅय्य मुऩिदियो वुलहै युळ्ळम्
आऱुदि यॅऩ्ऱु तादै याऱ्ऱलिऱ् चीऱ्ऱ मारि 568

चीऱि–कुपित होकर; इ उलकम् मूऩ्ऱुम्–ये तीनों लोक; तीन्तु उक–जलकर भस्म हो जायँ ऐसा; चित्तवाय् अम्पाल्–कोपमुख शरों से; नूऱुवॅऩ् ऍऩ्ऱु–मिटा दूँगा कहकर; कै विल्–अपने हाथ के धनु को; नोक्किय कालै–जब श्रीराम ने देखा तब; तातै–तात जटायु ने; नोक्कि–देखकर; ऑरु चिऱियोऩ्–एक अल्प (राक्षस) के; ऊरु चॅय्य–दुःख देने पर; उलकै मुऩितियो–लोकों पर गुस्सा करोगे क्या; उळ्ळम् आऱुति–मन शान्त करो; ऍऩ्ऱु–कहकर; आऱ्ऱलिऩ्–आश्वस्त करने पर; चीऱ्ऱम् आऱि–कोप शान्त करके। ५६८

कुपित होकर श्रीराम ने यह कहते हुए अपने धनु को निहारा कि सारे लोकों को जलाकर भस्म करते हुए मिटा दूँगा। तब पिता-सम जटायु ने उनका गुस्सा देखकर कहा कि किसी क्षुद्र ने तुम्हें कष्ट दिया तो तुम प्रपञ्च पर गुस्सा उतारोगे क्या? मन को शान्त करो। उनके आश्वासन देने पर श्रीराम ने अपना कोप शान्त करके (पूछा)। ५६८

ऍव्वऴि यॅय्दिऱ् ऱऩ्ऩाऩ् याण्डैया नुऱैयुळ् यादु
शॅव्वियोय् कूऱु ऍऩ्ऩच् चॅप्पुवा ऩुऱ्ऱ कालै
वॅव्विय विदियिऩ् कॉट्पाल् वीडिऩाऩ् कऴुहिऩ् वेन्दऩ्
ऍव्वियल् वरिविऱ् चॅङ्गै यिरुवरु मिडरिऩ् वीऴ्न्दार् 569

चॅव्वियोय्–श्रेष्ठ गुण वाले; अऩ्ऩाऩ्–वह; ऍव् वऴि–किस मार्ग पर; ऍय्तिऱ्ऱु–गया; याण्टैयाऩ्–कहाँ का है; उऱैयुळ् यातु–वासस्थान कौन सा; कूऱुक ऍऩ्ऩ–कहो, पूछने पर; कऴुकिऩ् वेन्तऩ्–गीधों के राजा ने; चॅप्पुवाऩ् उऱ्ऱ कालै–जब कहना आरम्भ किया तब; वॅव्विय वितियिऩ्–क्रूर विधि के; कॉट्पाल्–विधान से; वीटिऩाऩ्–जटायु मर गया; ऍव्वु इयल्–शरप्रेरक; वरिविल् चॅङ्कै–सबन्ध धनु वाले सुन्दर हाथों के; इरुवरुम्–दोनों; इटरिऩ् वीऴ्न्तार्–दुःख में गिर गये। ५६९

श्रेष्ठ गुण वाले! वह रावण किस मार्ग पर गया? वह कहाँ का है? उसका निवासस्थान कौन सा है? तब गीधों के राजा उत्तर देने ही लगे थे कि क्रूर विधि के विधान से वे मर गये। शरप्रेरक सबन्ध धनुर्धर लाल (सुन्दर) हाथों वाले वीर, श्रीराम और लक्ष्मण शोकमग्न हो गये। ५६९

अयर्त्तव ररिदिऱ् ऱॆऱि याण्डॊऴिऱ् ऱादैक् काण्डुच्
चॆयत्तहु कडन्गळ् यावुन् देवरु मरुळच् चॆय्दार्
कयत्तॊऴि लरक्कन् ऱन्नै नाडिनाङ् गाण्डु मॆन्नाप्
पुयऱ्ऱॊडु कुडुमिक् कन्ऱुङ् कानमुङ् गडिदु पोनार् 570

अयर्त्तवर्–जो शिथिल हुए, उन्होंने; अरितिल् तॆऱि–बहुत कष्ट के साथ सँभलकर; आण् तॊऴिल्–पुरुषोचित कार्य जो कर चुका; तातैक्कु–उस पिता के; आण्डु–तब; चॆयत्तकु–कर्तव्य; कटन्कळ् यावुम्–दाहकर्म सब; तेवरुम् मरुळ–देव भी चकित हों, ऐसा; चॆय्तार्–किये; कय तॊऴिल्–नीचकर्म; अरक्कन् तन्नै–राक्षस को; नाटि नाम् काण्टुम्–ढूँढ़कर हम देख लेंगे; ऍन्ना–सोचकर; पुयल् तोटु–मेघस्पर्शी; कुटुमि कुन्ऱुम्–शिखरों वाले पर्वतों पर और; कानमुम्–जंगल में; कटितु पोनार्–तेज चले। ५७०

शिथिल पड़े वे कष्ट के साथ सँभले। फिर उन्होंने पुरुषोचित काम करके जो मरे थे, उन पिता-सम जटायु का कर्तव्य दाहकर्म आदि इतनी अच्छी तरह पूरा किया कि देवगण भी विस्मित और चक्रित रह गये। फिर वे यह संकल्प लेकर मेघस्पर्शी शिखरों वाले पर्वतों और वनों को पार करके जाने लगे कि हम उसको ढूँढ़कर देखेंगे। ५७०

अव्वऴि निन्नैक् काणा दयर्विना नरिदिऱ् ऱॆऱिच्
चॆव्वऴि नयनज् जॆल्लु नॆडुवऴि शेरु शॆय्य
वॆव्वळ ऱन्नि लुऱ्ऱ मॆऴुहॆन वऴिय मेनि
इव्वऴि यिन्नैय पन्नि यऱिवऴिन् दिरङ्ग लुऱ्ऱान् 571

अव्वऴि–उन स्थलों में; निन्नै काणातु–आपको न देखकर; अयर्वित्तान्–श्लथ होकर; अरितिल् तेऱि–बहुत कष्ट से धीरज धरकर; चॆल्लुम् नॆटु वऴि–जाने का लम्बा मार्ग; नयनम्–उनकी आँखों के (अपने जल से); चॆव्वऴि–खूब; चेऱु चॆय्य–पंक बनाते; वॆव् अऴल् तन्निल्–घोर आग में; उऱ्ऱ–पड़े; मॆऴुकु ऍन–मोम के समान; मेनि अऴिय–शरीर के गलते; इव्वऴि–इस स्थिति में; इन्नैय पन्नि–ये वचन कहकर; अऱिवु अऴिन्तु–सुध-बुध खोकर; इरङ्कल् उऱ्ऱान्–दुःखी हुए। ५७१

श्रीराम आपको वहाँ कहीं भी न पाकर निर्जीव-से हो गये। फिर बहुत कष्ट के साथ सँभलकर आगे बढ़े। उनके गमन का सारा मार्ग उनकी आँखों से बहती हुई अश्रुधारा से कीच बन गया। घोर आग में पड़े मोम के समान उनका शरीर क्षीण हो गया। उस स्थिति में यों विलापते हुए भ्रान्त मन के साथ अधिक व्याकुल हुए। ५७१

कन्मत्तै जालत् तवर्यारुळ रेह डन्दार्
पॊन्मॊय्त्त तोळान् मयल्कॊण्डु पुलन्गळ् वेऱाय्

नन्मत्त नाहन् दलैशूडिय नम्ब नेपोल्
उन्मत्त नानान् रुनैयोनूरु मुणर्न्दि लादान् 572

आलत्तवर् उळर्–संसार में रहनेवाले; यारे–कौन ही; कन्मत्तै कटन्तार्–कर्म के बाहर आ सके; पॉन् मॉय्त्त तोळान्–श्रीनिलयस्कन्ध श्रीराम; मयल् कॉण्टु–भ्रान्त होकर; पुलन्कळ् वेऱाय्–इन्द्रिय-संवेदना से दूर; तत्तै ऑन्ऱुम् उणर्न्तिलातान्–अपना कुछ न स्मरण करके; नल् मत्तम्–अच्छा धतूरा; नाकम्–और सर्प को; तलै चूटिय–सिर पर धारण करनेवाले; नम्पत्ते पोल्–नायक शिवजी के समान; उन्मत्तन् आत्तान्–उन्मत्त बने। ५७२

कौन संसारी जीव कर्म को तार सका ? श्रीराम मोहित मन वाले, इन्द्रियों के व्यवहारों से निर्लिप्त हो और अपनी सुध-बुध खोकर सर्प और धतूरे से अलंकृत सिर वाले श्रीशिवजी के समान उन्मत्त हो गये। ५७२

पोदायिन्न पोदुन्न तण्बुन्न लाडल् पॉय्यो
शीदापव ळक्कोंडि यन्नवट् टेडि यॅन्गण्
नीदातरु हिड्रिलै येनॅरुप् पादि यॅन्नाक्
कोदावरि यैच्चिनङ् गॉण्डनन् कॉण्ड लॉप्पान् 573

कॉण्टल् ऑप्पान्–मेघसदृश श्रीराम; कोतावरियै–गोदावरी से; पोतु आयित्त पोतु–जब सूर्योदय हुआ; पवळक्कोटि अन्नवळ्–प्रवालवल्लरी-सी; चीता–सीता का; उन तण् पुनल्–तुम्हारे शीतल जल में; आटल् पॉय्यो–स्नान करना झूठ है क्या; अन्नवळ् तेटि–उसको खोजकर; ऍन् कण्–मेरे पास; नी ता–तुम दे दो; तरुकिड्रिलैयेल्–नहीं दोगी तो; नॅरुप्पु आति–आग बन जाओगी (आग लगा दूँगा); ऍन्ना–ऐसा; चित्तम् कॉण्टनन्–कुपित हुए। ५७३

मेघ-सदृश श्रीराम ने गोदावरी को सम्बोधित कर कहा कि गोदावरी ! सूर्योदय के समय जो प्रवालवल्लरी-सी मेरी सीता तुममें स्नान किया करती थी क्या वह असत्य है ? तुम उसे जाकर ढूँढ़ो और मेरे पास लिवा ला दो। अगर नहीं दोगी तो तुम जल जाओगी ! श्रीराम ने गोदावरी पर कोप दिखाया। ५७३

कुन्ऱेकडि दोडिनै कोमळक् कॉम्ब रन्न
ऍन्ऱेवियैक् काट्टुदि काट्टलै यॅन्नि निव्वम्
पॉन्ऱेयमै युम्मुनु डैक्कुल मुळ्ळ वॅल्लाम्
इन्ऱेपिळ वावॅरि याक्करि याक्क वॅन्ड्रान् 574

कुन्ऱे–हे पर्वत; कटितु ओटित्तै–तेज दौड़कर; कोमळ कॉम्पर् अन्न–कोमल पुष्पशाखा-सी; ऍन् तेवियै काट्टुति–मेरी देवी को दिखाओ; काट्टलै ऍन्निल्–नहीं दिखाओगे तो; उन् उटै कुलम्–तुम्हारे कुल के; उळ्ळ–जो है; ऍल्लाम्–उन सभी को; इन्ऱे पिळवा–आज ही तोड़कर; ऍरिया–जलाकर; करियाक्क–भस्म कराने के लिए; इ अम्पु ऑन्ऱे–यह शर एक ही; अमैयुम्–पर्याप्त होगा; ऍन्ड्रान्–कहा। ५७४

हे पर्वतो ! जल्दी भागो और कोमल पुष्पशाखा-सी मेरी सीता को मुझे दिखाओ। नहीं दिखाओगे तो तुम्हारे कुल के सारे पर्वतों को चूर-चूर कर दूँगा; जलाकर राख बना दूँगा। यह एक अस्त्र पर्याप्त है वह काम करने के लिए। श्रीराम ने कोप के साथ कहा। ५७४

पॉन्मानुरु	वाऱ्चिल	मायै	पुणर्क्क	वन्ऱो
ऍन्मानहल्	वुऱ्ऱन	ळिप्पॉळु	दॅन्ग	णॅन्ना
नन्मान्गळै	नोक्किनुन्	नाममु	माय्प्पॅ	निन्ऱे
विन्मान्गॉलै	वाळियि	नॅन्ऱु	वॅहुण्डु	निन्ऱान् 575

पॉन् मान् उरुवाल्–स्वर्ण-हिरण के रूप में; चिल मायै–कुछ माया; पुणर्क्क अन्ऱो–करने से तो; ऍन् मान्–मेरी हरिणी; इप्पॉळुतु–अब; ऍन् कण्–मुझसे; अकल्वुऱ्ऱनळ्–अलग हो गयी; ऍन्ना–कहकर; नन् मान्कळै नोक्कि–असली मृगों को देखकर; विल् मान्–धनु में लगे श्रेष्ठ; कॉलै वाळियिन्–घातक शर से; इन्ऱे–अभी; नुम् नाममुम् माय्प्पॅन्–तुम्हारा नाम ही मिटा दूँगा; ऍन्ऱु–कहकर; वॅकुण्टु निन्ऱान्–कुपित हुए। ५७५

वंचना करनेवाले स्वर्णमृग के वेश में तो छल कर सके ! और मेरी हरिणी-सी सीता मुझसे अलग हो गयी ! हे मृगो ! मै इन शरों से, जो मेरे धनु से लगने का भाग्य प्राप्त कर चुके है और घातक हैं, तुम्हारा नामोनिशान मिटा दूँगा। श्रीराम मृगों पर गुस्सा करके खड़े रहे। ५७५

वेऱुऱ्ऱ	मनत्तव	निन्न	विळम्बि	नोव
आऱुऱ्ऱ	नॅञ्जिऱ्	ऱनदारुयि	रन्न	तम्बि
कूऱुऱ्ऱ	शॉल्लॅन्	ऱुळकोदरु	नन्म	रुन्दाल्
तेऱुऱ्	ऱुयिर्पॅऱ्	ऱियल्बुञ्जिल	तेर	लुऱ्ऱान् 576

वेऱु उऱ्ऱ–बिगड़े हुए; मनत्तवन्–मन वाले श्रीराम; इन्न विळम्पि–यों कहकर; नोव–व्यग्र हुए तव; आऱुऱ्ऱ नॅञ्चिल्–शान्तमन; तननु आरुयिर् अन्न–उनके प्यारे प्राण-सम; तम्पि–लघु भ्राता के; कूऱु उऱ्ऱ–कहे हुए; चॉल् ऍन्ऱु उळ–वचन रूपी; कोतु अऱु–दोषहीन; नल् मरुन्ताल्–अच्छे औषध से; तेऱुऱ्ऱु–धैर्य का अवलम्बन कर; उयिर् पॅऱ्ऱु–प्राणवान बनकर; इयल्पुम् चिल–कुछ उपायों को; तेरल् उऱ्ऱान्–विचारने लगे। ५७६

श्रीराम का मन बिगड़ा हुआ था। वे ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए वेदना-विदग्ध हो रहे थे। उनके प्यारे छोटे भाई शान्तमन थे। उन्होंने औषध के समान कुछ शमनकारी वचन कहे। उस पर श्रीराम का धीरज बँधा। उनके प्राण स्वस्थ हुए और आपके प्राप्त्यर्थ उपाय सोचने लगे। ५७६

वन्दानिळै	यानॉडु	वानुयर्	तेरिन्	वॅहुम्
नन्दाविळक्	किन्वरु	मॅङ्गुल	नादन्	वाळुम्

शन्दार्तडङ् गुन्ऱिनिऱ् ऱन्नुयिर्क कादलोनुम्
शॅन्दामरैक् कण्णनु नट्टनर् तेव रुय्य 577

वान्–आकाश में; उयर् तेरिन् वॅकुम्–श्रेष्ठ रथ पर रहनेवाले; नन्ता विळक्किन्–अमन्द दीप-से सूर्य के वंश में; वरुम्–आये; ॲम् कुल नातन्–मेरे कुल के नायक के; वाळुम्–वासस्थान; चन्तु आर्–चन्दनतरु-लसे; तटम् कुन्ऱितिल्–विशाल पर्वत पर; इळैयातोंटु–छोटे भ्राता के साथ; वन्तान्–आये; चॅन्तामरैक् कण्णनुम्–अरुणपंकजाक्ष श्रीराम और; तन् उयिर् कातलोनुम्–उनका प्राणप्रिय (सुग्रीव); तेवर् उय्य–देवों को उबारने के लिए; नट्टनर्–मित्र बन गये। ५७७

आकाश में श्रेष्ठ रथ पर संचार करनेवाले और ऐसे दीप के समान सदा जलनेवाले, जिसको उकसाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, सूर्यदेव के वंश में आए हुए हैं हमारे कुल के नायक सुग्रीव। वे चन्दन-तरु-संकुल और विशाल ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे। श्रीराम अपने लघुभ्राता के साथ उस पर आये। अरुणपद्माक्ष श्रीराम और उनके प्राणप्यारे मित्र सुग्रीव दोनों ने आपस मे सख्य कर लिया। ५७७

उण्डायदु मऱ्ऱदु मुऱ्ऱु मुणर्त्ति युळ्ळम्
पुण्डानॅन नोवुऱ विम्मुऱु हिन्ऱ पोदिल्
ॲण्डानुळन् दिट्टनुम् मेन्दिळै याङ्गळ् काट्टक्
कण्डानुयर् वेदमुम् बोदमुम् काण्गि लादान् 578

उयर् वेतमुम्–उत्कृष्ट वेदों; पोतमुम्–और ज्ञान से; काण्किलातान्–अलक्ष्य श्रीराम; उण्टायतुम्–जो दुःख हुआ वह; मऱ्ऱतुम्–बाद जो बीता वह; मुऱ्ऱुम् उणर्त्ति–पूरा बताकर; उळ्ळम् पुण् तान् ॲन–मन ही व्रण बन गया हो, ऐसा; नोवु उऱ–पीड़ित हो; विम्मुऱुकिन्ऱ पोतिल्–सिसकते समय; ॲण् तान् उळन्तु–चित्त में व्याकुल होकर; इट्ट–आपने जो डाला था; नुम् एन्तिळै–आपके आभरणों को; याङ्कळ् काट्ट–हमारे दिखाने पर; कण्टान्–श्रीराम ने देखा। ५७८

अवेदबोधगोचर श्रीराम आप-बीती बातें सारी सुग्रीव को बताकर जब व्रणमन हो वेदना के साथ दुःखी हो रहे थे, तब हमने आपके उन श्रेष्ठ आभरणों को दिखाया, जिन्हें आपने व्याकुलता में कुछ सोचकर नीचे डाला था। उन्होंने उन्हें देखा। ५७८

तणिहिन्ऱनॅञ्ज् जिऱ्ऱीडर् वॅम्मैयत् तन्मै तन्नै
तुणिहॉण्डिलङ् गुञ्जुडर् वेलवन् ऱूय निन्गण्
अणिहण्डुळि येयमु दन्दॅळित् तालु माऱाप्
पिणिहॉण्डदु पण्डदुण् डायिनुम् बेर्प्प दन्ऱाल् 579

तुणि कॉण्टु इलङ्कुम्–(शत्रु-शरीर के) टुकड़े बनाकर शोभित रहनेवाले; चुटर् वेलवन्–ज्वलन्त भाले के धारक श्रीराम; तूय–पावन; निन् कण् अणि–आपसे पहने

गये आभरणों को; कण्टुळ्ियै–देखते ही; अतु पण्टु उण्टायितुम्–वह (दुःख) पहले ही रहा तो भी; तणिकिन्ऱ नॆञ्चिल्–जो शान्त हो रहा था उस मन में; तोंटर्–अब जो उठा; अ वॆम्मै तन्मै तन्तॆ–वह असह्य दुःख; अमुतम् तॆळित्तालुम्–अमृत छिड़काने पर भी; आऱा पिणि कोण्टतु–दूर न हो, इस तरह से बँध गया; पेर्प्पतु अन्ऱु–हटाने योग्य नहीं था। ५७६

शत्रुशरीरभेदक उज्ज्वल भालाधारी श्रीराम ने ज्योंही उन आभरणों को देखा त्योंही उनका वियोग-दुःख जो पहले से ही था, पर जो थोड़ा थम रहा था फिर से पनप उठा और वह सन्ताप इतना था कि अमृत छिड़काने पर भी शान्त नहीं हो सके और वह इतना उनसे बँध गया कि अलग करना असम्भव हो रहा। ५७९

अयर्वुऱ्ऱरि दिऱ्ऱॆळिन् दम्मलैक् कप्पु ऱत्तोर्
उयर्पोऱ्किरि यानुळन् वालियॆन् ऱोङ्ग लोप्पान्
तुयर्वुऱ्ऱवि रावणन् वालिडेप् पण्डु तूङ्ग
मयर्वुऱ्ऱपॊ रुप्पॊडु माल्हड ऱाविवन्दान् 580

अयरवु उऱ्ऱु–थककर; अरितिल् तॆळिन्तु–बहुत कष्ट के साथ सँभलकर; अम् मलैक्कु अप्पुऱत्तु–उस (ऋष्यमूक) पर्वत के उस पार; ओर् उयर् पोंन् किरियान् उळन्–एक उन्नत स्वर्णमय गिरि का अधिपति; वालि ऎन्ऱु–वाली नाम का; ओङ्कल् ओप्पान्–पर्वत-सम; तुयर्वु उऱ्ऱु–(उसकी पूँछ मे बँधकर) दुःखी हो; अ इरावणन्–वह रावण; वालिटै–पूँछ से; पण्टु तूङ्कु–पहले कभी लटका, उसे लेकर; मयर्वु उऱ्ऱ–(वाली के वेग के कारण) चक्रित हुए; पॊरुप्पॊटु–पर्वतों और; माल् कटल्–बड़े समुद्रों को; तावि वन्तान्–लाँघकर पार कर जो आया। ५८०

श्रीराम शोक-शिथिल हुए; फिर ज्यों-त्यों करके सँभले। ऋष्यमूक पर्वत के उस पार एक उन्नत स्वर्ण-गिरि थी। उस पर वाली नाम का वानरराज रहता था। वह स्वयं पर्वत के समान था। वह एक बार रावण को अपनी पूँछ से बाँधकर दुःखी करके लटकाते हुए इतनी तेज़ी से पर्वतों और समुद्रों को लाँघकर आया था कि वे भी चक्रित हुए थे। श्रीराम ने —। ५८०

आयानैयॊ रम्बिनि लारुयिर् वाङ्गि यन्बिन्
ऱूयान्वयि नव्वर शीन्दवन् शुऱ्ऱु शेनै
मेयान्वरु वायॆन विट्टनन् मेवु काऱुम्
एयानिरुन् दानिडे तिङ्ग ळिरण्डि रण्डुम् 581

आयानै–उस (वाली) को; ओर् अम्पिनिल्–एक ही शर से; आरुयिर् वाङ्कि–जान से मारकर; अन्पिल् तूयान् वयिन्–स्नेह में शुद्ध सुग्रीव के पास; अ अरचु ईन्तु–वह राज्य देकर; अवन्–उस (सुग्रीव) को; चुऱ्ऱु चेनै मेयान्–घिरी सेना के साथ; वरुवाय्–आओ; ऎन–ऐसा कहकर; विट्टनन्–बिदा दी; मेवु काऱुम्–

उसके आते तक; तिङ्कळ् इरण्टु इरण्टुम्–चार महीने; इटै–उस (ऋष्यमूक पर्वत) पर; एयान् इरुन्तान्–ठहरे रहे। ५८१

ऐसे वाली को एक ही शर द्वारा प्राणहीन कर दिया। फिर अपने स्नेही पवित्रमन सुग्रीव को वानरराजपद दिलाया। दिलाकर उससे कहा कि अपनी सेना-सहित आ जाओ। फिर वे चार महीने उस (ऋष्यमूक) पर्वत पर ठहरे रहे। ५८१

पिऱ्कूडिय शेनैप् रुन्दिशै पिन्न वाह
विऱ्कूडुनु दऱ्ऱिरु निन्निडै मेव वेवित्
तॆऱ्कूडुरु वक्कडि देविनन् शेऱ्न्द दॆन्न
मुऱ्कूडिन्न कूऱिनन् कालमोर् मून्ऱुम् वल्लान् 582

विल् कूटु–धनु-सम; नुतल् तिरु–भाल वाली श्रीदेवी; पिन् कूटिय चेनै–पश्चात् एकत्रित सेना को; पॆरुम् तिचै–बड़ी दिशाओं को; पिन्न आक–पीछे छोड़कर; निन् इटै–आपके पास; मेव–(ढूँढ़कर) आने के लिए; एवि–भेजकर; तॆऱ्कु ऊटु उरुव–दक्षिण दिशा में छानकर खोजने के लिए; कटितु एवितन्–(मुझे) शीघ्र भेजा; चेर्न्ततु–(यही मेरे इधर) आने का वृत्तान्त है; ऎन्न–ऐसा; कालम् ओर् मून्ऱुम् वल्लान्–त्रिकालज्ञ ने; मुऱ्कूटिन कूऱितन्–पहले जो घटीं वह सारी बातें बतायीं। ५८२

उज्ज्वल धनु-सम ललाटिनी! पश्चात् जब वे वानर-सेनाएँ एकत्रित हो आयीं, तब सुग्रीव ने उन्हें सभी दिशाओं में इतनी दूर-दूर भेज दिया कि दिशाएँ स्वयं पीछे रह जायँ! फिर दक्षिण दिशा में खोजने के लिए मुझे शीघ्र प्रेषित किया। यही मेरे इधर आने का वृत्तान्त है। इस तरह त्रिकालज्ञ हनुमान ने घटित घटनाएँ बतायीं। ५८२

❀ अन्बिन नम्मौळि युरैक्क वारियन्
वन्बॊऱै नॆञ्जिनन् वरुत्त मुन्नुवाळ्
ऎन्बुरु वुरुहिन ळिरङ्गि येङ्गिनळ्
तुन्बमु मुवहैयुञ् जुमन्द वुळ्ळत्ताळ् 583

अन्पितन्–भक्त के; अ मौळि उरैक्क–वह वचन कहने पर; वन् पॊऱै–अतिशय क्षमाशील; नॆञ्चितन् आरियन्–मन वाले पुरुषोत्तम का; वरुत्तम् उन्नुवाळ्–दु:ख सोचती हुई; तुन्पमुम् उवकैयुम्–दु:ख और आनन्द; चुमन्त उळ्ळत्ताळ्–धारक चित्त वाली; ऎन्पु उरु–हड्डी तक (दु:ख के) लगने के कारण; उरुकितळ्–द्रवीभूत हो गयीं; इरङ्कि एङ्कितळ्–दु:खी हो तरसीं। ५८३

श्रीराम के भक्त हनुमान ने जब यह सब कहा, तब सीता ने बहुत क्षमाशील श्रीराम का दु:ख सोचा। वे स्वयं अधिक दु:ख और सुख दोनों से भर गयी। उनकी हड्डी तक जलप्राय हो जाय, वे इतनी दु:खिनी हुई और तरसने लगी। ५८३

❀ नेयुरु शिन्दैय णयन वारियिन्
तॉय्यल्वॆर् चुऴियिडैच् चुरिक्कु मेऩियळ्
ऐयनी यळप्परु मळक्कर् नीन्दिनै
ॲय्दिय दॆप्परि शियम्बु वायॆन्ऱाळ् 584

नै उरु चिन्तैयळ्–शिथिलमना; नयन वारियिन् तॉय्यल्–अश्रुजलधारा के; वॆम् चुऴियिटै–भयंकर आवर्तों में; चुरिक्कुम् मेनियळ्–घूमनेवाले शरीर की देवी ने; ऐय–तात; नी–तुम; अळप्परुम् अळक्कर्–अपार सागर; नीन्तिनै–तैरकर; ॲय्तियतु–यहाँ आये; ॲ परिचु–कैसे; इयम्पुवाय्–कहो; ॲन्ऱाळ्–पूछा देवी ने। ५८४

विगलित मन वाली, और नयनवर्षा की भँवरों में घूमनेवाली सीताजी ने हनुमान से कहा कि तात ! यह अपार सागर तुम कैसे तैर आये ? कहो। ५८४

❀ शुरुङ्गिडै युन्नॊरु तुणैवन् ऱुयताळ्
ऑरुङ्गुडै युणर्विनो रोय्विन् मायैयिन्
पॆरुङ्गडल् कडन्दिडु मॆन्नुम् बॆऱ्ऱिपोल्
करुङ्गडल् कडन्दनॆन् कालि नालॆन्ऱान् 585

चुरुङ्कु इटै–क्षीणकटि; उन् ऑरु तुणैवन्–आपके अनुपम नाथ के; तुय ताळ्–पवित्र चरणों पर; ऑरुङ्कु उटै–एकाग्रता से; उणर्विनोर्–ध्यान रखनेवाले; ओय्विन् मायैयिन्–अनन्त माया का; पॆरुङ् कटल्–बड़ा सागर; कटन्तिटुम्–पार कर देंगे; ॲन्नुम् पॆऱ्ऱि पोल्–ऐसी रीति से; कालिनाल्–अपने पैरों से (या श्रीराम-चरण-महिमा से); करुम् कटल्–काला (या बड़ा) सागर; कटन्तनॆन्–पार कर आया; ॲन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ५८५

हनुमान ने कहा कि क्षीणकटि देवी ! आपके संगी नाथ श्रीराम का पावन चरण एकाग्रचित्त से स्मरण करनेवाले महान् लोग अक्षय माया-सागर तर लेते हैं। उसी प्रकार से मैं भी अपने पैरों (या श्रीराम की चरण-महिमा) से इस काले (या वड़े) समुद्र को लाँघ आया हूँ। ५८५

इत्तुणैच् चिऱ्ऱियदो रॆण्णिल् याक्कैयै
तत्तिनै कडलदु तवत्ति नायदो
शित्तियि ऩियन्ऱदो शॆप्पु वायॆन्ऱाळ्
मुत्तिनु निलविनु मुरुवन् मुऱ्ऱिनाळ् 586

मुत्तितुम्–मोती से; निलवितुम्–और चन्द्रिका से बढ़कर; मुऱुवल्–दाँतों की; मुऱ्ऱिनाळ्–अधिक प्रभावती ने; इत्तुणै चिऱ्ऱियतु–इतना छोटा; ॲण् इल्–कुछ भी न मान्य; ओर् याक्कैयै–एक शरीर के तुम; कटल् तत्तिनै–समुद्र लाँघ आये; अतु–वह काम; तवत्तिन् आयतो–तप के फलस्वरूप हुआ; चित्तियिन् इयन्ऱतो–सिद्धि के बल से साध्य हुआ; चॆप्पुवाय्–कहो; ॲन्ऱाळ्–कहा। ५८६

सीताजी के दाँत मोतियों और चाँदनी से बढ़कर सुन्दर थे। (कवि उनकी याद करते हैं यह संकेत करने के लिए कि सीताजी किंचित हँसती हुई बोलीं। यह कवि की विदग्धता है, जो सर्वत्र पायी जाती है।) सीताजी ने पूछा कि इतने छोटे से शरीर के होकर तुमने समुद्र लाँघा; यह काम तपस्या का फल था या सिद्धि द्वारा साध्य हुआ? बताओ। ५८६

शुट्टिन् निन्ऱनन् ट्टौळ्द कैयिनन्
विट्टुयर् तोळिनन् विशुम्बिन् मेक्कुयर्
ॲट्टरु नॅडुमुह डॅय्द नीळुमेल्
मुट्टुमॅन् ऱुरुवॉडु वळैन्द मूर्त्तियान् 587

तॊळुत कैयितन्–अंजलिबद्धहस्त; विट्टु–विशाल और; उयर् तोळितन्–उन्नत कन्धों वाला; विचुम्पिन् मेक्कु उयर्–आकाश के भी ऊपर; ऎय्त नीळुमेल्–पहुँच जाय इतना बढ़ेगा तो; ऎट्टु अरु–अगम; नॆटु मुकटु–विशाल चोटी; मुट्टुम्–टकरायगी; ऎन्ऱु–यह सोचकर; उरुवॊटु–उस बड़े शरीर के साथ; वळैन्त मूर्त्तियान्–कुछ झुके हुए रूप वाला; चुट्टितन्–अपना बड़ा रूप दिखाता हुआ; निन्ऱनन्–खड़ा रहा। ५८७

यह सुनकर हनुमान ने अपने हाथों को जोड़ लिया। अपने विशाल कन्धों को उन्नत करते हुए वह बढ़ने लगा। आकाश के भी ऊपर बढ़ेगा तो उसका सिर आकाश की चोटी से टकरा जाय और वह ढह जाय, ऐसी स्थिति हो गयी। इसलिए अपने विश्वरूप में थोड़ा झुका हुआ रहकर उसने अपना विराट् रूप देवी को दिखाया। ५८७

शॅव्वळिप् पॅरुमैयॅन् ऱुरैक्कुज् जॅम्मैदान्
वॅव्वळिप् पूदमो रैन्दिन् मेलदो
अव्वळित् तन्ऱॅनि नुनुमन् पालदो
ॲव्वळित् ताहुमॅन् ऱॅण्णु मीट्टदे 588

चॆव् वळि पॆरुमै ऎन्ऱु उरैक्कुम्–उत्कृष्ट मान्य; चॆम्मै तान्–श्रेष्ठता; वॆम् वळि–सबल; पूतम् ओर् ऐन्तिन् मेलतो–पाँच भूतों के पास है; अ वळित्तु अन्ऱु ऎनिल्–वहाँ नहीं हो तो; अनुमन् पालतो–हनुमान के वश में है; ऎ वळित्तु आकुम्–कहाँ होगी; ऎन्ऱु ऎण्णुम्–ऐसा सोचने को विवश करनेवाले; ईट्टतु–प्रकार का था हनुमान का विश्वरूप। ५८८

(उसके उस विश्वरूप की महिमा देखिए।) उत्कृष्ट, श्रेष्ठता सबल भूतों में है या इस हनुमान के पास है? कहाँ है? उसका रूप दर्शक के मन मे यह सशय पैदा कर रहा था। ५८८

ऒत्तुयर् कनहवान् किरियि ऩोङ्गिय
मॅय्त्तुरु मरन्दॊरु मिऩ्सि ऩिक्कुलम्

मॉय्त्तुळ वामॅन मुन्नुम् बिन्नरुम्
तॉत्तिन्न तारहै मयिरिन् शुऱ्ऱॅलाम् 589

कतक वान् किरियिन्–बड़े स्वर्ण (-मेरु) पर्वत पर; ओङ्किय मरम् तॉऱुम्–उन्नत उगे तरु-तरु में; मिन् मिनि कुलम्–खद्योतकुल; मॉय्त्तु उळवाम् ॲॅन–लसे बैठे हैं जैसे; ऑत्तु उयर्–(मेरु-) सम रूप से उन्नत; मॅय्–शरीर पर; तुऱु–घने; मयिरिन् चुऱ्ऱु ॲॅलाम्–रोम के पार्श्व प्रदेशों पर; मुन्नुम् पिन्नरुम्–आगे और पीछे; तारकै तॉत्तिन–तारागण पकड़े लटके रहे। ५८९

मेरु के समान बढ़े हुए उसके शरीर में बालों के बीच-बीच में तारागण लटके रहे। तब कनकगिरि मेरु का स्मरण होता था जिस पर के ऊँचे तरुओं में खद्योतकुल लसे रहे हों। ५८९

कण्डल मऱिवॉडु कडन्द काट्चियन्
विण्डल मिरुपुडै विळङ्गुम् मॅय्मैयक्
कुण्डल मिरण्डुमक् कोळिन् माच्चुडर्
मण्डल मिरण्डॉडु माऱु कॉण्डवे 590

कण् तलम् ओटु–आँखों के साथ; अऱिवु–बुद्धि के भी; कटन्त काट्चियन्–पार गये रूप वाले के; विण् तलम्–आकाश के; इरु पुटै–दोनों ओर; विळङ्कुम्–शोभायमान; मॅम्मै अ कुण्टलम् इरण्टुम्–वे दोनों कर्णकुण्डल; अ कोळिन्–उन नव-ग्रहों में; मा चुटर्य् मण्टलम् इरण्टु ऑटु–बहुत उज्ज्वल (सूर्य-चन्द्र के) दो मण्डलों के साथ; माऱु कॉण्ट–अलग दिखायी दिये। ५९०

उसका रूप आँखों को क्या बुद्धि को भी पार कर गया था। (न आँखों द्वारा देखा जा सका, न कल्पना द्वारा अनुमान भी किया जा सका।) आकाश में उसके दोनों पार्श्वों में जो उसके कर्णकुण्डल लटक रहे थे वे आकाश में रहनेवाले नवों ग्रहों में दो अत्यधिक उज्ज्वल ग्रह, सूर्य और चन्द्र के मण्डलों से भिन्न अत्युज्ज्वल दिखायी दिये। ५९०

एणिल दॉरुकुरङ् गीदॅन् ऱॅण्णला, आणियै यनुमनै यमैय नोक्कुवान्
शेणुयर् पॅरुमैयोर् तिऱत्त दन्ऱॅना, नाणुऱु मुलहॅला मळन्द नायहन् 591

ईतु ऑरु कुरङ्कु–यह एक मरकट है; एण् इलतु–बलहीन है; ॲॅन्ऱु–ऐसा; ॲॅण्णला–जिसके सम्बन्ध में न सोचा जा सके; आणियै–उस धुर के समान; अनुमनै–हनुमान को; अमैय नोक्कुवान्–भलीभाँति देखनेवाले (त्रिविक्रम मूर्ति); उलकु ॲॅलाम् अळन्त–विश्वमापक; नायकन्–जगन्नाथ; चेण् उयर् पॅरुमै–अत्युत्कृष्ट गौरव; ओर् तिऱत्ततु अन्ऱु–एक ही स्थान में पाया जानेवाला नहीं; ॲॅना–ऐसा सोचकर नाण् उऱुम्–लज्जित होंगे। ५९१

सर्वलोकमापक त्रिविक्रम भी इस हनुमान को खूब देखेंगे, तो यह समझेंगे कि इसे एक बन्दर और वह भी निर्बल बन्दर नहीं समझना चाहिए।

यह तो लोकों की धुरी के समान है। लगता है कि बहुत उन्नत गौरव केवल एक (मेरे पास) ही नहीं है! यह सोचकर वे लज्जित होंगे। ५९१

ऍण्डिशै मरुङ्गिनुं मुलहम् याविनुम्, तण्डलि लुयिरॅलाम् दन्नै नोक्किन
अण्डमॅन् ट्रदिनुऱै यमरर् यारैयुम्, कण्डनन् ट्रानुन्दन् कमलक् कण्गळाल् 592

ऍण् तिचै—आठों दिशाओं के; मरुङ्किनुम्—स्थानों में; उलकम् याविनुम्—सभी लोकों में; तण्टल् इल्—अक्षुण्ण; उयिर् ऍलाम्—सभी जीवों ने; तन्नै नोक्किन—उसको देखा; तानुम्—उसने भी; तन् कमल कण्कळाल्—अपने कमलनेत्रों से; अण्टम् ऍन्ऱतिन् उऱै—आकाश के अण्ड के वासी; अमरर् यारैयुम्—सभी देवों को; कण्टनन्—समक्ष देखा। ५९२

आठों दिशाओं के स्थानों के और सभी लोकों के सभी जीवों ने हनुमान को देखा। हनुमान ने भी अपने कमलनेत्रों से व्योमलोकवासी देवों को देखा। ५९२

ऍळुन्दुयर् नडुन्दहै यिरण्डु पादमुम्
अळुन्दुऱ वळुत्तलि निलङ्गै याळ्हडल्
विळुन्ददु निलमिशै विरिन्द वॅण्डिरै
तळैत्तन पुरण्डन मीनन् दामॅलाम् 593

ऍळुन्तु उयर्—इस तरह जो बढ़ा; नॅटुम् तकै—उस विश्वरूप हनुमान के; इरण्टु पातमुम्—दोनों पैर; अळुन्तुऱ—खूब दबाते हुए; अळुत्तलिल्—जमे रहे इसलिए; इलङ्कै—लंका; आळ् कटल्—गहरे समुद्र में; विळुन्ततु—मग्न हो गया; वॅण् तिरै—श्वेत तरंगें; निल मिचै विरिन्त—भूमि पर फैलीं; तळैन्तन—सब जगह भरीं; मीनम् तामॅलाम्—मछलियाँ; पुरण्टन—लोटती हुई इधर-उधर चलीं। ५९३

इस तरह जो बढ़ा था उसके दोनों पैरों ने ज़मीन को खूब दबाया। इसलिए लंका का द्वीप समुद्र में धँस गया। तब श्वेत ऊर्मियाँ भूमि पर फैल आयीं और व्याप गयीं। मछलियाँ उन तरंगों पर लोटती हुई चलने लगीं। ५९३

वञ्जियम् मरुङ्गुलम् मऱुविल् कऱ्पिनाळ्
कञ्जमुम् बुरैवन कळ्ळुङ् गण्डिलाळ्
तुञ्जिन ररक्करॅन् ऱुवक्कुञ् जूळ्च्चियाळ्
अञ्जिनॅन् निव्वुरु वडक्कु वायॅन्ऱाळ् 594

वञ्चि अम् मरुङ्कुल्—'वञ्चि' नाम की वल्लरी के समान कटि वाली; अ मऱु इल् कऱ्पिनाळ्—उस अनिंद्य पातिव्रत्यशीला; कञ्चमुम् पुरैवन—कंज-सदृश; कळ्ळुम् कण्टिलाळ्—(हनुमान के) पैर नहीं देखे; अरक्कर् तुञ्चिनर्—राक्षस मर गये; ऍन्ऱु उवक्कुम्—ऐसा सोचकर सुख; चूळ्च्चियाळ्—माननेवाली सीता ने; अञ्चिनॅन्—भय खाती हूँ; इव् उरु—यह रूप; अटक्कुवाय्—छोटा बना लो; ऍन्ऱाळ्—कहा। ५९४

'वञ्जि' नाम की लता के समान पतली और सुन्दर कमर वाली और अनिंद्य पावन चरित्र वाली सीताजी हनुमान के कमल-चरणों को भी देख न सकीं। "बस ! अब राक्षस मर गये" —यह आनन्ददायक विचार उनके मन में आया। उन्होंने हनुमान से कहा कि हनुमान अपना रूप छोटा कर लो। मुझे डर लगता है। ५९४

❀ मुळ्वदु मिव्वुरुक् काण मुऱ्ऱिय
कुळ्विल दुलहिनिक् कुरुहु वार्यॆन्ऱाळ्
ॲळ्विनु मॆळ्िलिलङ् गिरामन् ऱोळ्हळॆत्
तळ्विन ळामॆनत् तळिर्क्कुज् जिन्दैयाळ् 595

ॲळ्वितुम्-(स्थूल) खम्भे से बढ़कर; ॲळ्िल् इलङ्कु-सुन्दरतायुक्त; इरामन् तोळ्कळै-श्रीराम की भुजाओं का; तळ्वितळ् आम्—आलिंगन कर चुकी हो; ॲत-ऐसा; तळिर्क्कुम्-लहलहानेवाले; चिन्तैयाळ्-चित्त वाली (सीता) ने; उलकु-यह लोक; इव् वुरु मुळ्वतुम् काण-यह सम्पूर्ण रूप देखने का; मुऱ्ऱिय कुळ् इलतु-पक्व सामर्थ्य नहीं रखता; इनि कुरुकुवाय्-अब छोटे बन जाओ; ॲन्ऱाळ्-कहा। ५९५

देवी का मन ऐसा लहलहा उठा, मानो वह स्थूल खम्भों से भी सुन्दर श्रीराम की भुजाओं से लिपट गयी हों ! उन्होंने हनुमान की महिमा जताते हुए कहा कि इस लोक में तुम्हारे इस रूप को पूर्णरूप से देखने का सामर्थ्य नहीं है। अब इसको समेट लो और अपने यथार्थ रूप में रहो। ५९५

❀ आण्डहै यनुमनु मरुळ दामॆता
मीण्डनन् विशुम्बॆनुम् बदत्तिन् मीच्चॆल्वान्
काण्डलुक् कॆळियदो रुरुवङ् गाट्टिनान्
तूण्डरु विळक्कना ळिन्नैय शॊल्लिनाळ् 596

विचुम्पु ॲनुम् पतत्तिन्-आकाश के तल से भी; मी चॆल्वान्-ऊपर बढ़ता चलनेवाला; आण्टकै अनुमनुम्-पुरुषश्रेष्ठ हनुमान भी; अरुळ् अताम् ॲता-आपकी आज्ञा, वही हो कहकर; मीण्टनन्-लौटकर छोटा हो गया; काण्टलुक्कु ॲळियतु-देखने में सुलभ; ओर् उरुवम् काट्टिनान्-एक रूप धर लिया; तूण्टु अरु-जिसको उकसाने की आवश्यकता न रहे ऐसे; विळक्कु अन्नाळ्-दीप-सी सीताजी; इन्नैय चॊल्लिनाळ्-यों बोलीं। ५९६

आकाश से भी ऊपर बढ़ता चलनेवाला हनुमान भी, 'जैसी आपकी आज्ञा' कहकर यथापूर्व हो गया। अब वह दर्शनसुलभ हो रहा। विना प्रयत्न के ही सदा प्रज्वलित रहनेवाले दीये के समान शोभापूर्ण सीताजी उससे यों बोलीं। ५९६

❀ इडन्दा युलहै मलैयोडु मिडित्ताय् विशुम्बै यिवैशुमक्कुम्
पडन्दा ळरवै यॊरुकरत्ताऱ् पऱित्ता यॆनिनुम् वयनिन्ऱाल्

नडन्दा यिडैये यॅन्ड्रालु नाणा निन्क्कु नळिकडलैक्
कडन्दा यॅन्ड्रा लॅन्नाहुङ् गाड्रा मनैय कडुमैयाय् 597

काड्रु आम् अनैय–पवन ही सम; कडुमैयाय्–वेगवान; मलैयोडुम्–पर्वत-सहित; उलकै इटन्ताय्–भूतल को (तुमने) उखाड़ लिया; विचुम्पै इटित्ताय्–आकाश को ढहा लिया; इवै चुमक्कुम्–इनको धारण करनेवाले; पटम् ताळ् अरवै–फनों के साथ रहनेवाले साँप को; ओर करत्ताल् पड़ित्ताय्–एक हाथ से छीन लिया; ऍन्तिनुम्–ऐसा सुना जाय तो भी; पयन् इन्ड्रु–वह तुम्हारे बल का सबूत नहीं हो सकता; इटैये नटन्ताय् ऍन्ड्रालुम्–समुद्र-मध्य पैदल चलकर आये तो भी; निन्क्कु नाण् आम्–(तुम्हारे बल की दृष्टि से) वह तुम्हारे लिए शरम की बात होगी; नळि कटलै–बड़े सागर को; कटन्ताय् ऍन्ड्राल्–पार किया कहना; ऍन् आकुम्–उससे तुम्हारा क्या गौरव बढ़ता। ५९७

पवन के ही समान वेगवान ! पर्वत-सहित भूमि को उखाड़ दिया; आकाश को ढहा दिया; या इनके धारक शेषनाग को एक हाथ से छीनकर दूर पटक दिया। तब भी कोई बड़ा काम नहीं हुआ ! समुद्र में पैदल चलकर आए होते तो भी वह काम तुम्हारे लिए (गौरवजनक नहीं) लज्जाजनक ही रहेगा ! इस स्थिति में तुमने समुद्र को लाँघ दिया —कहने से तुम्हारा क्या गौरव बढ़ेगा ? । ५९७

❀आळि नॅडुङ्गै याण्डहैद न्नरुळुम् बुहळु मळिविन्ड्रि
ऊळि पलवु निलैनिड्रुत्तर् कॉरुव नीये युळैयानाय्
पाळि नॅडुन्दोळ् वीरानिन् पॅरुमैक् केड्पप् पहैयिलङ्गै
एळु कडड्कु मप्पुड्रत्त दाहा दिरुन्द दिळिवन्ड्रो 598

पाळि नॅटुम् तोळ्–स्थूल और दीर्घ भुजाओं वाले; वीरा–वीर; आळि–चक्रधर; नॅटुम् कै–दीर्घ भुजाओं वाले; आण्टकै तन्–पुरुषश्रेष्ठ की; अरुळुम् पुकळुम्–कृपा और यश के; अळिवु इन्ड्रि–विना क्षय हुए ही; ऊळि पलवुम्–अनेक युग; निलै निड्रुत्तड्कु–स्थापित करने के लिए; नी ऑरुवने–तुम एक ही; उळै आनाय्–योग्य रहे; निन् पॅरुमैक्कु एड्प–तुम्हारे गौरव के अनुरूप; पकै इलङ्कै–शत्रुनगरी लंका; एळु कटड्कुम् अप्पुड्रत्तु–सातों समुद्रों के उस पार की; आकातु इरुन्तनु–बनी नहीं रही यह बात; इळिवु अन्ड्रो–गौरव घटानेवाली हो गयी न। ५९८

स्थूल और दीर्घ भुजाओं वाले ! चक्रधर दीर्घ हाथों के श्रीराम की कृपा और यश को अनेक युगों तक अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए अकेले तुम पर्याप्त बन गये हो ! यह शत्रु-नगरी लंका सातों समुद्रों के उस पार रहती तो वह तुम्हारे गौरव के अनुरूप होता। यह ऐसा नहीं रही (पर एक ही छोटे समुद्र के मध्य रही)। यह बात तुम्हारे लिए गौरववर्द्धक नहीं रही, महिमा पर कम करनेवाली रह गयी। ५९८

अऱिवु मीदे युरुवीदे याऱ्ऱ लीदे यॆम्बुलत्तिन्
शॆऱिवु मीदे शॆयलीदे तेऱ्ऱ मीदे तेऱ्ऱत्तिन्
नॆऱियु मीदे निन्नैवीदे नीदि यीदे निन्नक्कॆन्ऱाल्
वॆऱिय रन्ऱे कुणङ्गळाल् विरिञ्जन् मुदला मेलानार् 599

निन्नक्कु–तुम्हारी; अऱिवुम्–बुद्धि और; उरुवुम्–रूप और; आऱ्ऱल्–शक्ति; ऐम्पुलत्तिन् चॆऱिवुम्–पंचेन्द्रियों का संयम; चॆयलुम्–कृत्य; तेऱ्ऱम्–विवेक; तेऱ्ऱत्तिन् नॆऱियुम्–विवेक का फल; निन्नैवुम्–विचार; नीति–नय; ईते–यही; ऎन्ऱाल्–कहा जाय तो; विरिञ्चन् मुतलाम्–विरंचि आदि; मेलानार्–उत्तम देव; कुणङ्कळाल्–अपने गुणों में; वॆऱियर् अन्ऱे–अभाव-ग्रस्त हैं न। ५९९

तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारा रूप, बल-विक्रम, तुम्हारा इन्द्रियसंयम, तुम्हारे कृत्य, तुम्हारा विवेक, विवेक का फल, तुम्हारे विचार, तुम्हारा नय —ओह! ऐसा है तो विरंचि आदि देवों के पास गुणों का अभाव ही मानना चाहिए। ५९९

मिन्ने रॆयिऱ्ऱु वल्लरक्कर् वीक्क नोक्कि वीरऱ्कुप्
पिन्ने पिऱन्दा नल्लादोर् तुणैयि लाद पिऴैनोक्कि
उन्ना निन्ऱे नुडैहिन्ऱे नॊऴिन्दे नॆल्ला मुयिरुयिर्त्तेन्
ऎन्ने निरुद रॆन्नावार् नीये यॆङ्गोन् ऱुणैयानाल् 600

मिन् नेर्–विद्युत्-सदृश; ऎयिऱ्ऱु–दन्तोरे; वल् अरक्कर्–सबल राक्षसों की; वीक्कम् नोक्कि–बहुलता देखकर; वीरऱ्कु–वीर श्रीराम का; पिन्ने पिऱन्तान् अल्लातु–अनुज को छोड़; ओर् तुणै इलात–एक सहायक न रहा; पिऴै नोक्कि–वह कमी देखकर; उन्ना निन्ऱेन्–सोच-सोचकर; उटैकिन्ऱेन्–जो भग्न हो रही थी वह मैं; ऎल्लाम् ऒऴिन्तेन–सर्वसंशयविमुक्त हो गयी; उयिर् उयिर्त्तेन–राहत की साँस ली; नीये–तुम ही; ऎन् कोन्–मेरे राजा के; तुणै आनाल्–साथी होगे तो; निरुतर् ऎन् आवार्–राक्षस क्या होंगे। ६००

मैंने बिजली-से दंतोरे राक्षसों की बड़ी संख्या देखकर सोचा कि श्रीवीरराघव का उनके छोटे भाई के अलावा कोई सहायक नहीं है। यह अभाव सोचकर मैं भग्नमन हो रही थी। अब वह संशय सब मिट गया। राहत की साँस ले रही हूँ। जब तुम्हीं मेरे पतिदेव के सहायक हो गये तो राक्षस क्या होंगे ? —मिट जायँगे। क्या ही आश्चर्य (हो गया) है ! । ६००

❀ माण्डे नॆन्निनुम् बऴुदन्ऱे यिन्ऱे मायाच् चिऱैनिन्ऱु
मीण्डे नॆन्ने यॊऱुत्तार्दङ् गुलङ्ग ळोडुम् वेरऱुत्तेन्
पूण्डे नॆङ्गोन् पॊलङ्गऴलुम् बुहऴे यन्ऱिप् पुन्बऴियुम्
तीण्डे नॆन्ऱु मनमहिऴ्न्दा डिरुविन् कऴत्तुत् तिरुवन्नाळ् 601

तिरुविन्–श्रीलक्ष्मीदेवी के; कळुत्तु तिरु अन्ताळ्–कण्ठ के अहिवातसूत्र के समान देवी; माण्टेन् ॲत्तिनुम्–मर जाऊँगी तो भी; पळुतु अन्ऱे–हानि नहीं; इन्ऱे–आज ही; माया चिऱै नित्ऱु–कभी न छूटनेवाली कारा से; मीण्टेन्–मुक्त हो गयी; ॲन्नै ऑऱुत्तार्–मुझे सतानेवालों को; तम् कुलङ्कळोटुम्–उनके कुलों के साथ; वेर् अऱुत्तेन्–निर्मूल कर दिया; ॲन् कोन्–अपने पतिदेव के; पॊलम् कळलुम्–सुन्दर चरण; पूण्टेन्–धर लिये; पुकळे अन्ऱि–यश के सिवा; पुन् पळियुम्–नीच अपयश; तीण्टेन्–स्पर्श नहीं करूँगी; ॲन्ऱु–कहकर; मतम् मकिळ्न्ताळ्–आह्लादित हुईं। ६०१

स्वयं श्रीलक्ष्मीदेवी के कंठ के मंगलसूत्र (सुहाग-चिह्न) -सी देवी ने आनन्द के साथ कहा कि अब मैं मर जाऊँ तो भी कुछ नहीं बिगड़ेगा। क्योंकि मैं आज लम्बे कारागृहवास से छूट गयी। मुझे त्रास देनेवाले राक्षसों के कुल को मैंने जड़ से काट मिटा दिया। अपने पतिराज के सुन्दर चरणों को सिर पर धारण कर लिया है। यश ही यश मिल गया; अपयश से सम्पर्क नहीं रहा। ६०१

अण्णऱ् पॆरियो नडिवणङ्गि यऱिय वुरैप्पा नरुन्ददिये
वण्णक् कडलि निडैक्किडन्द मणलिऱ् पलराल् वानरत्तिन्
ॲण्णऱ् करिय पडैत्तलैव रिरामऱ् कडियार् यानवर्तम्
पण्णैक् कॊरुव नॆनप्पॊन्दे नेवक् कडव पणिसॆय्वेन् 602

अण्णल् पॆरियोन्–बहुत महिमामय हनुमान; अटि वणङ्कि–चरण-वन्दना करके; अऱिय उरैप्पान्–समझाते हुए बोला; अरुन्ततिये–अरुन्धती (-समाना); इरामऱ्कु अटियार्–श्रीराम के दास; ॲण्णऱ्कु अरिय–अगणित; वानरत्तिन् पटै तलैवर्–वानरयूथपति; वण्णक् कटलिन् इटै–(काले) रंगीन समुद्र में; किटन्त–पड़े रहनेवाले; मणलिल् पलर्–बालुओं से भी अधिक अनेक हैं; यान् अवर् तम् पण्णैक्कु–मैं उनकी भीड़ में; ऑरुवन्–एक दास हूँ; ॲन पोन्तेन्–ऐसा भाग्य पाया हूँ; एव कटव–आज्ञापित; पणि चॆय्वेन्–सेवाएँ अदा करूँगा। ६०२

महिमा में बढ़े हुए हनुमान ने देवी से वानर-सेना की महत्ता यों कही। उसने सीताजी के चरणों पर नमस्कार करके कहा कि अरुन्धती-समाना देवी! श्रीराम के अधीन जो वानरयूथप है, उनकी संख्या समुद्र-तल में के बालुओं की संख्या से भी अधिक है। उनका मैं एक दास बना हूँ। उनकी आज्ञा मानकर उनकी सेवाएँ अदा करता रहता हूँ। ६०२

वॆळ्ळ मॆळ्ळ दुळदन्ऱो वीरन् शेनै यिव्वेलैप्
पळ्ळ मीरुहैन् नीरळिक्क् कुडिक्कप् पोदुम् बान्मैयदो
कळ्ळ वरक्कर् कडियिलङ्गै काणा दॊळिन्द दालन्ऱो
उळ्ळ दुणेयु मुळदाव दऱिन्दु पिन्नु मुळदामो 603

वीरन् चेनै–श्रीराम की सेना; वॆळ्ळम् ॲळुपतु उळतु–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की है;

इ वेलै पळ्ळम् नीर्–इस समुद्र के गढ़े का जल; ऑरु कै अळ्ळि कुटिक्क–एक चुल्लू भर लेकर पीने के लिए; पोतुम् पान्मैयतो–काफ़ी होने की स्थिति में है क्या; कळ्ळ अरक्कर्–चोर राक्षसों की; कटि इलङ्कै–सुरक्षित लंका; काणातु ऑळिन्तताल् अन्रो–मरी (निगोड़ी) अलक्षित रह गयी, तभी न; उळ्ळ तुणैयुम्–अभी तक; उळतु आवतु–रही, हो गयी; अऱिन्तु–जान लेने; पिन्तुम्–के बाद; उळतु आमो–रह सकेगी क्या। ६०३

श्रीराम के साथ जो सेना है, उसकी संख्या सत्तर वॅळ्ळम् ('प्रवाह') है। यह समुद्र उनके सामने गढ़ा है। एक चुल्लू पीने के लिए भी इसका जल पर्याप्त न पड़ेगा। यह चोरों की लंका अदृश्य रह गयी। तभी न अब तक वह विद्यमान रही। उसका अस्तित्व जान लेने के बाद भी उसका अस्तित्व भी रहेगा क्या? । ६०३

वालि यिळव लवन्मैन्दन् मयिन्दन् ऱुमिन्दन् वयक्कुमुदन्
नील निडबन् कुमुदाक्कन् पनशन् शाम्ब नॅडुम्जाम्बन्
काल नतैय दुन्मरुडन् करम्बन् कवयन् कवयाक्कन्
ञाल मऱियु नळन्शङ्गन् विन्दन् ऱुविन्दन् मदन्नॅन्बोन् 604

वालि इळवल्–वाली का छोटा भाई; अवन् मैन्तन्–उस (वाली) का पुत्र; मयिन्तन्–मैन्द; तुमिन्तन्–दुर्मिद; वय कुमुतन्–वलिष्ठ कुमुद; नीलन्–नील; इटपन्–ऋषभ; कुमुताक्कन्–कुमुदाक्ष; पनचन्–पनश; चाम्पन्–जाम्ब; नॅडुम् चाम्पन्–वृद्ध जाम्बवान; कालन् अनैय–काल-सम; तुन्मरुटन्–दुर्मर्ष; करम्पन्–करम्ब; कवयन्–गवय; कवयाक्कन्–गवयाक्ष; ञालम् अऱियुम्–विश्वविख्यात; नळन्–नल; चङ्कन्–शंख; विन्तन्–विन्द; तुविन्तन्–दुविन्द; मतन् ऍन्पोन्–मदन। ६०४

वाली का भाई सुग्रीव, वाली का पुत्र अंगद, मैन्द, दुर्मिद, वली कुमुद, नील, ऋषभ, कुमुदाक्ष, पनश, जाम्ब, वृद्ध जाम्बवान, कालदेव-सम दुर्मर्ष, करंब, गवय, गवयाक्ष और विश्वविख्यात नल, शंख, विन्द द्विन्द, मदन; । ६०४

तम्बन् ऱूमत् तनिप्पेरोन् ऱदियिन् वदन्नन् शदवलियॅन्
ऱिम्ब रुलहो डॅव्वुलहु मॅडुक्कु मिडुक्क रिरामन्गै
अम्बि नुदवुम् पडैत्तलैव रवरै नोक्कि निव्वरक्कर्
वम्बिन् मुलैया युरैयिडवुम् वोदार् कणक्कु वरम्बुण्डो 605

तम्पन्–थम्ब; तूम तनि पॅयरोन्–धूम्र नाम का वह; ततियिन् वतनन्–दधिमुख; चतवलि–शतबली; ऍन्ऱु–नाम के; इम्पर् उलकोटु–इस भूलोक के साथ; ऍव्वुलकुम्–सभी लोकों को; ऍटुक्कुम्–उठाने की; मिटुक्कर्–शक्ति रखनेवाले; इरामन् कै अम्पिन्–श्रीराम के हस्तशर के समान; उतवुम्–सहायता देनेवाले; पटै

तलैवर्-यूथप; वरम्पु उण्टो-(क्या) सीमा भी है; अवरै नोक्किन्-उनको लेकर विचार करें तो; वम्पिन् मुलैयाय्-अँगियाबद्ध स्तनों वाली देवी; इव् अरक्कर्-ये राक्षस; उरै इटवुम् पोतार्-अदद के रूप में भी काफ़ी नहीं होंगे। ६०५

थम्व, धूम्र, दधिमुख, शतबली —ऐसे नामों के वे इस लोक के साथ सारे लोकों को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले हैं। श्रीराम के हाथ के शरों के समान सद्योपकारी हैं। उनकी शक्ति और संख्या की कोई भी सीमा है क्या ? (नहीं)। अँगियाबद्ध स्तनों वाली माते ! उनकी संख्या देखो तो ये राक्षस सांकेतिक अदद के लिए भी पर्याप्त नहीं होंगे। (तमिऴ में 'उरै' उसको कहते हैं जिसे अत्यधिक संख्या के पदार्थों को गिनते वक़्त प्रतिनिधि अदद के रूप में रखा जाता है। उदाहरणार्थ— किसी पदार्थ के एक हज़ार को गिनने पर उन पदार्थों में से एक लेकर अलग रखा जाता है। पूरा गिनने के बाद "उरै यों" की संख्या का हज़ार से गुना करके पूरी संख्या आँकी जाती है।)। ६०५

शॅन्ऱे नडियेऩ् नुनक्किन्नल् शिऱिदे युणर्त्तु मत्तुणैयुम्
अन्ऱे यरक्कर् वरुक्कमुड नडैव दल्ला दरियिऩ्गै
मन्ऱे कमळुन् दॊडैयन्ऱे निरुदन् कुळुवु मानहरुम्
ॲन्ऱे यिरैञ्जिप् पिन्नरुमोल् ऱिशैप्पा नुणर्न्दा नीऱिल्लान् 606

अटियेन् चॆन्ऱेन्-मैं जाकर; उनक्कु इन्नल्—आपके दुःख को; चिऱिते-किंचित् भी; उणर्त्तुम्-ज्योंही बताऊँगा; अत्तुणैयुम्-त्योंही; अरक्कर् वरुक्कम्-राक्षसवर्ग; उटन् अटैवतु-एक साथ (वानरों के हाथ) पड़ जायँगे; अल्लातु-वही नहीं; निरुतन्- कुळुवुम्-रावण का सारा परिवार; मा नकरुम्-और उसका बड़ा नगर; अरियिन् कै-वानरों के हाथ में; मन्ऱे कमळुम्-सुगन्धि-निसारक; तॊटै अन्ऱे-पुष्पमाला बन जायँगे न; ॲन्ऱे-ऐसा, साफ़ कहकर; इऱैञ्चि-नमस्कार करके; पिन्नरुम्-फिर भी; ईऱिल्लान्-अनन्तआयु ने; ओन्ऱु इचैप्पान्—एक बात कहने की; उणर्न्तान्-सोची। ६०६

दास मैं जाऊँ और आपका संकट थोड़ा ही समझाऊँ, इतने में ही राक्षसों का वर्ग ही नहीं, पर रावण के सारे परिवार और लंका नगर वानरहस्तगत सुगन्धित पुष्पमाला (यानी छिन्न-भिन्न) बन जायगी। (तमिऴ में मसल मशहूर है— वानरहस्तगत पुष्पमाला-सा। —वन्दर उसका नाश कर देता है।) हनुमान ने देवी को वानरों की शक्ति का साफ़ परिचय दिया। फिर उसने उनके चरणों पर नमस्कार किया। अनन्तआयु (चिरंजीव) हनुमान ने और एक बात कहनी चाही। ६०६

5. चूडामणिप् पडलम् (चूडामणि पटल)

❀ उण्डुतुणै यॆऩ्ऩलॊंऴि दोवुलहि ऩम्मा
पुण्डरिहै पोलुमिव ळिऩ्ऩलपुरि हिऩ्ऱाळ्
अण्डमुद ऩायहऩ दावियऩै याळैक्
कॊण्डहल्व देहरुम मॆऩ्ऱुणर्वु कॊण्डाऩ् 607

पुण्टरिकै पोलुम् इवळ्–पुण्डरीकनिलया-सी ये; इऩ्ऩल् पुरिकिऩ्ऱाळ्–दुःख करती हैं; उलकिल्–संसार में; तुणै उण्टु–इसकी समानता है; ऎंऩ्ऩल्–कहना; ऎंळितो–सुलभ है क्या; अण्टम्–अण्डों के; मुतल् नायकऩतु–आदिनायक श्रीराम के; आवि अऩैयाळै–प्राण-समाना को; कॊण्टु अकल्वते–ले जाना ही; करुमम्–उचित कर्म है; ऎंऩ्ऱु उणर्वु कॊण्टाऩ्–ऐसा विचार किया; अम्मा–माँ। ६०७

हनुमान ने यों सोचा— पुण्डरीकनिलया श्रीलक्ष्मीदेवी, ये बहुत कष्ट पा रही हैं। मैया! इनके दुःख के समान दुःख कहीं पाना भी सुलभ है क्या? इन आदि अण्डनायक श्रीराम की देवी को ले जाना ही श्लाघ्य होगा। ६०७

❀ केट्टियडि येऩुरै मुऩिन्दरुळल् केळाऩ्
वीट्टियिडु मेलवऩै वेऱल्विऩै यऩ्ऱाल्
ईट्टियिऩि यॆऩ्बयऩि रामऩॆंदिर् निऩ्ऩैक्
काट्टियडि ताळ्वॆंऩिडु काण्डियिदु कालम् 608

अटियेऩ् उरै–मेरा वचन; केट्टि–सुनिए; मुऩिन्तरुळल्–कोप मत करें; केळाऩ्–शत्रु रावण; वीट्टियिटुमेल्–मार देगा तो; अवऩै वेऱल्–(बाद) उसको मारना; विऩै अऩ्ऱु–(अर्थपूर्ण) काम नहीं होगा; ईट्टि–बातें बनाने से; इति ऎंऩ् पयऩ्–अब क्या लाभ है; निऩ्ऩै–आपको; इरामऩ् ऎंतिर् काट्टि–श्रीराम के (पास ले जाकर) समक्ष दिखाकर; अटि ताळ्वॆंऩ्–चरणों पर नमस्कार करूँगा; इतु काण्टि–आप यह देख लें; इतु कालम्–यही योग्य काल है। ६०८

मेरी बात सुनिए। कोप मत कीजिए। रावण आपको मार देगा तो उसके बाद उसे मारना कोई सार्थक कार्य नहीं होगा। बातें करने से क्या लाभ? आपको श्रीराम के सामने (ले जा) दिखाकर मैं उनके चरणों में नमस्कार करूँगा। आप देखें। यही समय है। ६०८

❀ पॊऩ्ऱिणि पॊलङ्गॊडियॆऩ् मॆऩ्मयिर् पॊरुन्दिऩ्
तुऩ्ऱिय पुयत्तिऩि दिरुत्तिडुयर् विट्टाय्
इऩ्ऱुयिल् विळैक्कवॊ रिमैप्पिऩिऱै वैहुम्
कुऩ्ऱिडै युनैक्कॊडु कुदिप्पॆंऩिडै कॊळ्ळेऩ् 609

पॊऩ् तिणि–स्वर्णमय; पॊलम् कॊटि–सुन्दर लता-सी देवी; ऎंऩ्–मेरे; मॆऩ्

मयिर् तुऩ्ऱि पौरुऩ्तिय–कोमल बालों से भरे; पुयत्तु–कन्धों पर; इऩितु इरुत्ति–सुख से रहिए; तुयर् विट्टाय्–दुःख दूर कर लेंगी; इऩ् तुयिल् विळैक्क–सुखद निद्रा होगी और; ओर् इमैप्पिऩ्–पलक झपकते; इऱै वैकुम्–जहाँ भगवान श्रीराम रहते हैं; कुऩ्ऱिटै–उस पर्वत पर; उऩ्ऩै कौंटु–आपको लिये हुए; कुतिप्पॆऩ्–कूदूँगा; इटै कौळ्ळेऩ्–बीच में नहीं ठहरूँगा। ६०९

स्वर्णमय सुन्दर लता-समाना देवी ! आप मेरे कोमल बालों से युक्त कन्धों पर सुख से आसीन हो जाइए, दुःख से विमुक्त हो जाइए ! सुख से सो जाइए; एक पल में आपको ले उस पर्वत पर कूद पड़ूँगा जिसमें हमारे देव प्रभु श्रीराम ठहरे हुए है। ६०९

❀ अऱिन्दिडै यरक्कर्तोडर् वार्हळुळ रामेल्
मुऱिन्दुदिर नूऱियॆऩ् मनच्चिन मुडिप्पॆऩ्
नॆऱिन्दकुळ निऩ्निलैमै कण्डुनॆडि योऩ्बाल्
वॆरुङ्गैयॆय रेऩोरुव रानुम्विळि यादेऩ् 610

नॆरिन्त कुळल्–घुँघुराली केशिनी; अरक्कर् अऱिन्तु–राक्षस जानकर; इटै तॊटर्वार्कळ् उळर्–बीच में लड़ते; आमेल्–बनेंगे तो; औरुवरानुम्–किसी से भी; विळियातेऩ्–मारा नहीं जाऊँगा; मुऱिन्तु–छिन्न-भिन्न होकर; उतिर–गिर जायँ ऐसा; नूऱि–उन्हें मारकर; ऍऩ् मऩ चिऩम्–अपने मन का क्रोध; मुटिप्पॆऩ्–उतारूँगा; निऩ् निलैमै–आपकी स्थिति; कण्टुम्–देखने के बाद भी; नॆटियोऩ् पाल्–ऊँचे क़द के श्रीराम के पास; वॆरुम् कै–खाली हाथ; पॆयरेऩ्–नहीं जाऊँगा। ६१०

घुँघराले केश वाली देवी ! अगर राक्षस लोग इसकी टोह पाकर बीच में रुकावट डालेंगे तो मैं मरूँगा नहीं। (मुझे अमरता का वर मिला है।) उनको चूर-चूर करके मार दूँगा और अपना कोप साध लूँगा। आपको इस स्थिति में देखने के बाद मैं विष्णु-रूप श्रीरामचन्द्र के पास खाली हाथ नहीं जाऊँगा। ६१०

इलङ्गैयॊडु मेहुदिहॊ लॆऩ्निनु मिडन्दॆऩ्
वलङ्गॊळॊरु कैत्तलैयिऩ् वैत्तॆदिर् तडुप्पाऩ्
विलङ्गिनरै नूऱिवरि वॆञ्जिलैयि नोर्दम्
पॊलङ्गॊळ्कळ ऱाळ्हुवॆनि दन्नैपॊरु ळऩ्ऱाल् 611

अऩ्ऩै–माते; इलङ्कैयॊटुम् एकुति–लंका के साथ ही ले जाओ; ऍऩ्ऩितुम्–कहेंगी तो भी; इटन्तु–उखाड़ लेकर; ऍऩ्–अपने; वलम् कौळ् औरु कैत्तलैयिल् वैत्तु–दाहिने हाथ पर रखे; ऍतिर् तटुप्पाऩ्–सामने रोकने आये; विलङ्किनरै–शत्रुओं को; नूऱि–मारकर; वरि वॆम् चिलैयितोर् तम्–सबन्ध भयंकर धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण के; पॊलम् कौळ् कळल्–सौन्दर्ययुक्त चरणों पर; ताळ्कुवॆऩ्–नमन करूँगा; इतु पॊरुळ् अऩ्ऱु–यह कोई (बड़ी) बात नहीं है। ६११

माते ! अगर आप यह कहें कि लंका के साथ मुझे ले जाओ, तो उसे

उखाड़ लेकर अपने दाहिने हाथ में रख लूँगा और सामने रोकने आनेवालों को मारकर सबंध कठोर धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण के पास जाऊँगा और उनके सुन्दर पायलधारी चरणों पर नमस्कार करूँगा। यह कोई बड़ी चीज़ नहीं है। ६११

❀ अरुन्ददियु रैत्तियऴ हङ्करुहु शॅन्ऱुन्
मरुन्दत्तैय देविनॅंडु वञ्जर्शिऱै वैप्पिल्
पॅरुन्दुयरि नोडुमॉरु वीडुपॅऱु हिल्लाळ्
इरुन्दनळॅ नप्पहरि नॆन्नडिमै यॆन्नाम् 612

अरुन्तति–अरुन्धती-समाना; अऴकरुकु अरुकु चॅन्ऱु–श्री सुन्दर राम के पास जाकर; उन्न् मरुनुतु अन्नैय तेवि–आपकी अमृत-सम देवी; वञ्चर्–वंचकों की; नॅंटु चिऱै वैप्पिल्–बड़ी कारा में; पॅरुम् तुयरित्तोटुम्–बड़े दुःख के साथ; ऑरु वीटु पॅऱुकिल्लाऴ–मुक्ति पाये विना; इरुन्तनऴ्–रहीं; ॲन–यह; पकरिन्–कहूँगा तो; ॲन् अटिमै–मेरी दासता; ॲन् आम्–क्या (अर्थ रखती) होगी; उरैत्ति–बताइए। ६१२

अरुन्धती-सी देवी! अगर मैं सुन्दरमूर्ति श्रीराम के पास जाकर यह कहूँ कि 'आपकी अमृत-सम देवी वंचकों की दीर्घ वन्दिनी की स्थिति में हैं; किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं' तो मेरी सेवकाई क्या रही? आप ही सोचकर कहें। ६१२

❀ पुण्डॉडर्व हङ्ऱियपु यत्तिन्नॉडु पुक्केन्
विण्डवर्व लत्तैयुम् विरित्तुरै शॅय्हेन्नो
कॉण्डुवरु हिङ्ऱिलॅं नुयिर्क्कुऱुदि कॉण्डेन्
कण्डुवरु हिङ्ऱिलॅंन नक्कऴरु हेनो 613

पुण् तॉटर्वु अकङ्ऱिय–व्रण न लगी; पुयत्तिन्नॊटु–भुजाओं के साथ; पुक्केन्–पहुँचूँ; विण्टवर् वलत्तैयुम्–शत्रुओं का बल और; विरित्तु–विस्तार के साथ; उरै चॅय्केनो–बखानूँ; कॉण्टु वरुकिङ्ऱिलॅन्–नहीं ले आया; उयिर्क्कु उऱुति कॉण्टेन्–प्राणों का हित कर लिया; कण्टु वरुकिङ्ऱिलॅन्–देख न आ सका; ॲन–ऐसा; कऴऱुकेनो–कहूँ क्या। ६१३

मैं स्वयं व्रणविहीन भुजाएँ लेकर जाऊँ और शत्रु का बल बखानूँ? उनसे कहूँ कि सीताजी को नहीं ले आ सका! अपने प्राण ही बचा सका। सीताजी से मिला भी नहीं!। ६१३

इरुक्कुमदिल् शूऴ्हडियि लङ्गैयॆयि मैप्पिन्
उरुक्कियॅरि यालिहल रक्करैयु मॉन्ऱा
मुरुक्किनिरु दक्कुलमु डित्तुविनै मुऱ्ऱिप्
पॊरुक्कवहल् हॆन्निनुम दिन्ऱुपुरि हिन्ऱेन् 614

मतिल् चूऴ् इरुक्कुम्–प्राचीरों से घिरी; कटि इलङ्कैयै–सुरक्षित लंका को; इमैप्पितृ–पलक झपकते; ॲरियाल् उरुक्कि–आग में पिघला कर; इकल् अरक्करैयुम्–शत्रु राक्षसों को; ऑतुरा मुरुक्कि–एकत्र मारकर; निरुत कुलम् मुटित्तु–राक्षस कुल का नाश करके; वित्तै मुट्रि–कर्तव्य पूरा करके; पोरुक्क अकल्क–शीघ्र जाओ; ॲन्नितिनुम्–कहेंगी तो भी; अतु–वह; इन्ऱु–आज; पुरिकिन्ट्रेन्–करूँगा। ६१४

प्राचीर-सहित लंका को पलक झपकते आग से पिघला डालो; युद्ध करने आनेवाले राक्षसों को एक साथ मारो। राक्षसकुल को ही मटिया-मेट कर दो। यह सब करके शीघ्र चलो। —अगर आपकी यही आज्ञा हो तो अभी वैसा कर दूँगा। ६१४

इन्दुनुद नित्र्नोडव णॅय्दियिहल् वीरन्
शिन्दैयुरु वॅन्दुयरद विर्न्दर्तळि वोडुम्
अन्दमिल रक्करहुल मर्रविय नूरि
नन्दलिलपु विक्कणिडर् पिर्कळैद नन्ऱाल् 615

इनुतु नुतल्–चन्द्र-ललाटिनी; निन्नोटु–आपके साथ; अवण् ॲय्ति–वहाँ जाकर; इकल् वीरन्–युद्धवीर श्रीराम का; चिन्तै उऱु वॅम् तुयर्–मानसिक सन्ताप; तविर्न्त तॅळिवोटुम्–दूर होने से जो होगी उस निश्चिन्तता के साथ; अन्तम् इल्–निस्सीम; अरक्कर् कुलम्–राक्षसकुल को; अऱ्ऱु अविय–मार मिटाते हुए; नूरि–हत कर; नन्तल् इल्–अक्षय; पुविक्कण्—भूतल में; इटर्–दुःख को; पिन् कळैतल्–बाद दूर करना; नन्ऱु–अच्छा होगा। ६१५

चन्द्र-सम भाल वाली! आपको उधर ले जाऊँगा। युद्धवीर श्रीराम का कठोर दुःख दूर हो जायगा। उससे उत्पन्न निश्चिन्तता के साथ, बाद, इधर आऊँ राक्षसों के वर्गों को निर्मूल करूँ और उनका नाश करके अक्षय भूमि का संकट दूर करूँ —यही श्लाघ्य लगता है। ६१५

❀ वेरिनिवि ळम्बवुळ दन्ऱुविदि यालिप्
पेरुपॅर् वॅन्गणरु डन्दरुळु पिन्बोय्
आऱुदुय रञ्जोलिळ वञ्जियडि यन्ऱोळ्
एरुहडि दॅन्ऱुतोळु दिन्नडिप णिन्दान् 616

अम् चॊल्–मधुरवाणी; इळ वञ्चि–बाललता-सी भगवती; वेऱु–अन्य; इत्ति विळम्प–अब कहने के लिए; उळतु अन्ऱु–है नहीं; वितियाल्–आज्ञा करें तो; इप्पेऱु पॅऱ–यह सौभाग्य पाने का; ॲन् कण्–मुझे; अरुळ् तन्तरुळु–मौका देने की कृपा कीजिए; पिन् पोय्–बाद; तुयरम् आऱु–दुःख शान्त कर लीजिए; अटियन् तोळ्–मेरे कन्धों पर; कटितु एऱु–शीघ्र चढ़ जाएँ; ॲन्ऱु–ऐसा; तॊऴुतु–विनय करके; इन् अटि–सुखदायक चरणों पर; पणिन्तान्–नमस्कार किया। ६१६

मधुरभाषिणी 'वञ्जि' लता-सी भगवती! आगे कहने को कुछ नहीं है। आप आज्ञा दें और मुझे यह सौभाग्य प्राप्त कराने की दया करें

आप भी उनके पास पहुँचकर दुःखविमुक्त हो सुखी रहें। चढ़िए मेरे कन्धे पर शीघ्र। हनुमान ने यह विनय करके उनके सुखद चरणों में नमस्कार किया। ६१६

एय नन्मौळि यॅय्द विळम्बिय, तायै मुन्निय कन्ऱनै यान्ऱनक्
काय दन्मै यरियदन् ऱामॅनत्, तूय मॅन्शॊ लितैयन्न शॊल्लिनाळ् 617

एय नल् मौळि–योग्य अच्छे वचन; ऍय्त विळम्पिय–उचित रीति से जिसने कहा; तायित् मुन्निय–अपनी माता (गाय) के सामने स्थित; कन्ऱु अनैयान् तन्नक्कु–बछड़े-समान उससे; आय तन्मै–वह प्रकार; अरियतु अन्ऱाम्–(तुम्हारे लिए) कठिन नहीं; ऍन्न–कहकर; इत्तैयन्न–यों; तूय मॅन् चॊल्–पवित्र कोमल बातें; चॊल्लिनाळ्–सीताजी बोलीं। ६१७

हनुमान ने योग्य ही शब्द उचित प्रकार से कहा। गाय के समक्ष बछड़े के समान उससे देवी ने यों कहा। तुमने जो कहा, वह तुम्हारे लिए असाध्य नहीं। उन्होंने आगे पवित्र और कोमल ये वाक्य कहे। ६१७

अरिय दन्ऱुनिन् नाऱ्ऱलुक् केऱ्ऱदे, तॅरिय वॅण्णिनै शॅय्वदुञ् जॅय्दियै
उरिय दन्ऱॆन वोर्हिन्ऱ दुण्डदॆन्, पॅरिय पेदैमैच् चिन्मदिप् पॅण्मैयाल् 618

अरियतु अन्ऱु–कठिन नहीं; निन् आऱ्ऱलुक्कु–तुम्हारे बल-विक्रम के; एऱ्ऱते–योग्य ही; तॅरिय ऍण्णिनै–सोच-समझकर विचारा है; चॅय्वतुम् चॅय्तिये–कर भी दोगे; अतु–वह कार्य; ऍन्–अपने; पॅरिय पेतैमै–बड़ी मूर्खता; चिन्मति–कम बुद्धिमत्ता; पॅण्मैयाल्–के स्त्रीत्व के कारण; उरियतु अन्ऱु–उचित नहीं; ऍन्न–ऐसा; ओर्किन्ऱतु–सोचना; उण्टु–(पड़ता) है। ६१८

हाँ! वह काम असाध्य नहीं। अपनी शक्ति के अनुसार ही तुमने विचारा है। तुम करोगे भी। पर मेरी तुच्छ बुद्धि के स्त्रीत्व के कारण वह ठीक नहीं लगता। ६१८

वेलै यिन्निडै येवन्दु वॅय्यवर्, कोलि वॅञ्जर निन्नॊडुङ् गोत्तपो
दाल मन्नवरक् कल्लैयॆर् कल्लैयाल्, शाल वुन्दडु माऱुन् दनिमैयोय् 619

वॅय्यवर्–सन्तापक (राक्षस); वेलैयित् इटैये वन्तु–समुद्र में (जाते समय) बीच में आकर; कोलि–तुम्हें घेरकर; निन्तॊटुम्–तुम पर; वॅम् चरम्–भयंकर शर; कोत्त पोतु–(धनु पर) लगाकर जब मारें तब; आलम् अन्नवर्क्कु–हलाहल-सम उनसे; अल्लै–न लड़ सको; ऍऱ्कु–और मुझे; अल्लै आल्–बचा न सको, बनोगे; तनिमैयोय्–एकाकी; चालवुम् तटुमाऱुम्–तब हमारा मन अस्त-व्यस्त हो जायगा। ६१९

मानो कि मुझे समुद्र के ऊपर ले जाते समय बीच में राक्षस आ जाते है और तुम पर भयंकर शर-वर्षा करते हैं। तब तुम न अपने (हितकारी) हो सकते हो, न मेरे। एकाकी हो तब मेरा मन भी अस्त-व्यस्त होगा और तुम्हारा मन भी। ६१९

अऩ्ऱि युम्बिऱि दुळ्ळदोन् ऱारियन्, वॆन्ऱि वॆञ्जिलै माशुणुम् वेऱिति
नन्ऱि यॆन्बदम् वञ्जितुत नायहळिन्, निऩ्ऱ वञ्जनै नीयु निनैत्तियो 620

अऩ्ऱियुम्–और भी; पिऱितु ऒन्ऱु–अन्य एक (बात); उळ्ळतु–है; आरियन्–पूज्य श्रीराम के; वॆन्ऱि वॆम् चिलै–विजयी कठोर धनु; माचु उणुम्–कलंकित हो जायगा; इति वेऱु–और भी एक दूसरी बात है; नन्ऱि ऎन्पतम्–लोकक्षेमार्थ रचित यज्ञ की हवि को; वञ्चित्त–वंचना से ले जानेवाले; नाय्कळिन् निऩ्ऱ–कुत्तों के पास जो रहती है; वञ्चनै–वह वंचक बुद्धि; नीयुम् निनैत्तियो–तुमने भी सोची क्या। ६२०

और भी एक बात है। पूज्य श्रीराम के विजयी धनु पर कलक लग जायगा। इसके अलावा और भी एक कारण है। तुम भी उन वंचक कुत्तों का-सा विचार अपने मन में लाये जो लोकरक्षक यज्ञ की हवि को वंचना से चुरा ले जाते हों! । ६२०

कॊण्ड पोरिनॆङ् गोऱ्ऱवन् विऱ्ऱॊळिल्, अण्ड रेवरु नोक्कवॆन् ऩाक्कैयैक्
कण्ड पोररक् कन्विऴि काहङ्गळ्, उण्ड पोदन्ऱि यानुळॆ नावॆन्तो 621

कॊण्ट पोरिन्–आगामी युद्ध में; ऎम् कोऱ्ऱवन्–मेरे राजा के; विल् तॊऴिल्–धनुकर्म को; अण्टर् एवरुम् नोक्क–सभी देवों के देखते (विस्मय करते) रहते; ऎन् आक्कैयै–मेरे शरीर को; कण्ट–जिसने देखा; पोर् अरक्कन् विऴि–युद्धरत राक्षसों की आँखों को; काकङ्कळ्–कौए; उण्ट पोतु अन्ऱि–जब खाएँगे तब के सिवा; यान् उळॆन् आवेनो–मैं सचमुच जीऊँगी क्या। ६२१

देखो। आगामी युद्ध में देवों के मेरे श्रीराजाराम का धनुकार्य देखते रहते कौए राक्षस रावण की उन आँखों को खाएँगे, जिन्होंने मेरे पावन शरीर को कुदृष्टि से देखा था। तभी मै कृतकृत्य होऊँगी। अन्यथा नहीं। ६२१

वॆऱ्ऱि नाणुडै विल्लियर् विऱ्ऱॊळिल्, मुऱ्ऱ नाणिल रक्कियर् मूक्कॊडुम्
अऱ्ऱ नाणिन रायिन पोदन्ऱिप्, पॆऱ्ऱ नाणमुम् बॆऱ्ऱिय दाहुमो 622

वॆऱ्ऱि नाण् उटै–विजयी डोरे-सहित; विल्लियर्–धनुर्धर; विल् तॊऴिल् मुऱ्ऱ–अपने धनुओं का कार्य साध लें; नाण् इल् अरक्कियर्–निर्लज्ज राक्षसियाँ; अऱ्ऱ मूक्कॊटुम्–नासिकाहीन और; अऱ्ऱ नाणिनर्–मंगल-सूत्र-रहित (विधवाएँ बनकर); आयिन पोतन्ऱि–नही बनेंगी तब तक; पॆऱ्ऱ नाणमुम्–मेरी लज्जा (मेरा मान); पॆऱ्ऱियतु आकुमो–अर्थयुक्त रहेगी क्या। ६२२

विजयशील डोरों-सहित धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण धनु का कार्य साधेंगे और निर्लज्ज राक्षसियाँ नासिका (आभरणों) से और मंगलसूत्रों से हीन हो जायँगी। तभी न मेरी लाज रहेगी! नहीं तो रहेगी क्या? (इस पद में आये 'नाण्' शब्द के तीन अर्थ हैं— धनु का डोरा,

लज्जा या मान और मंगल-सूत्र जो दक्षिण में अहिवात के चिह्न के रूप में विवाह के अवसर पर वर द्वारा वधू को पहनाया जाता है। वह सूत्र हमेशा नूतन रखा जाता है। जर्जर होने पर तुरन्त बदल दिया जाता है।)। ६२२

पॊऱ्पि ऱङ्गलि लङ्गै पॊरुन्दलर्
ऎऱ्पु माल्वरै याहिल दॆय्ंनिन्
इऱ्पि ऱप्पुमॊ ऴुक्कुमि ऴुक्कमिल्
कऱ्पुम् यान्बिऱर्क् कॆङ्ङनङ् गाट्टुहेन् 623

पॊन् पिऱङ्कल्-स्वर्ण-पर्वत पर स्थित; इलङ्कै-लंका; पॊरुन्तलर्-अमित्रों को; ऎऱ्पु माल् वरै-हड्डियों का बड़ा पर्वत; आकिलते ऎतिन्-नहीं बनेगी तो; इल् पिऱप्पुम्-उत्तम कुल में जन्म; ऒऴुक्कुम्-और अपना सदाचरण; इऴुक्कम् इल् कऱ्पुम्-निर्दोष पातिव्रत्य; यान्-मैं; पिऱर्क्कु-दूसरों को; ऎङ्ङतम्-कैसे; काट्टुकेन्-प्रमाणित करूँगी। ६२३

यह स्वर्णनगरी लंका हड्डियों की गिरि न बनी तो मैं अपने उत्तमकुल-जन्म, सदाचार और अनिंद्य पातिव्रत्य को कैसे प्रमाणित कर सकूँगी ?। ६२३

अल्लन् माक्क ळिलङ्गैय दाहुमो, ऎल्लै नीत्त वुलहङ्गळ् यावुमॆन्
शॊल्लि नाऱ्चुडु वेन्दु तूयवन्, विल्लि नाऱ्ऱर्कु माशॆन्ऱु वीशिनेन् 624

अल्लल् माक्कळ्-परपीडक पशु के समान राक्षसों की; इलङ्कैयतु आकुमो-लंका तक सीमित रहेगी क्या; ऎल्लै नीत्त-निस्सीम; उलकङ्कळ् यावुम्-सारे लोकों को; ऎन् चॊल्लिताल्-अपने शाप से; चुट्टुवेन्-जला डालूँगा; अतु-वह; तूयवन्-पवित्र श्रीराम के; विल्लित् आऱ्ऱर्कु-धनु की शक्ति के लिए; माचु-कलंक होगा; ऎन्ऱु-मानकर; वीचितेन्-फेंक दिया। ६२४

सुनो ! मैं शाप दे दूँ तो केवल लंका तक ही उसकी नाशकारी शक्ति सीमित रहेगी ? नहीं, निस्सीम सारे लोकों को जला डालूँगी। पर ऐसा करने से पावनमूर्ति श्रीराम के विजयकोदण्ड की शक्ति पर बट्टा लग जायगा। इसलिए मैंने उस विचार को एक दम त्याग दिया है !। ६२४

वेऱु मुण्डुरै केळदु मॆय्म्मैयोय्, एऱु शेवहन् मेनियल् लालिडै
आऱु मैम्बॊऱि निन्नैयु माणॆनक्, कूऱु मिव्वुरुत् तीण्डुदल् कूडुमो 625

मॆय्मैयोय्-सत्यव्रती; उरै वेऱुम् उण्टु-बात और भी है; अतु केळ्-वह भी सुनो; एऱु चेवकन्-बढ़ते यश के वीर के; मेनि अल्लाल्-शरीर के सिवा; इटै-मध्य; आऱुम् ऐम्पॊऱि-संयत पञ्चेन्द्रिय के; निन्नैयुम्-तुमको भी; इ उरु-यह आकार; आण् ऎत-पुरुष ही; कूऱुम्-(जिसको) लोग कहेंगे; तीण्टुतल्-स्पर्श करना; कटुमो-(सही) हो सकेगा क्या। ६२५

सत्यानुगामी ! और भी एक कारण है ! दिने-दिने बढ़नेवाली वीरता के अपने नाथ श्रीराम के शरीर के सिवा इन्द्रिय-संयमी तुम्हारा भी स्पर्श कर सकूँगी क्या ? क्योंकि लोग तुम्हारे इस शरीर को पुरुष ही तो मानते हैं ! । ६२५

तीण्डि नान्निन् नित्तनै शेण्बहल्, ईण्डु मोवुयिर् मॅय्यि निमैप्पिन्मुन्
माण्डु तीर्वनॅन् ड्रेनिलम् वन्कैयाल्, कीण्डु हॉण्डॅळुन् देहिनन् कीळ्मैयान् 626

कीळ्मैयान्–नीच-स्वभाव रावण; तीण्टिनान् ॲनिन्–स्पर्श करता तो; इत्तनै चेण् पकल्–इतने लम्बे दिन; उयिर्–प्राण; मॅय्यिल्–शरीर में; ईण्टुमो–टिके रहते क्या; इमैप्पित् मुन्–पलक मारने की देर के अन्दर ही; माण्टु तीर्वन् ॲन्ड्रे–मर जाती, समझकर ही तो; निलम्–भूमि को ही (मेरे साथ); वन् कैयाल्–कठोर हाथों से; कीण्टु कॉण्टु–उखाड़ लेकर; ॲळुन्तु एकिनन्–ऊपर उठकर (आकाशमार्ग से) गया । ६२६

नीच-मन रावण ने मेरा स्पर्श किया होता तो क्या इतने दीर्घ दिन मेरे प्राण शरीर में टिके रहते ? रावण को मालूम था कि अगर वह मुझे छूता तो पलक झपते मैं मर जाती । इसीलिए वह अपने कठोर हाथों से पर्णशाला के साथ भूमि को भी खोद ले आकाश में उठ आया । ६२६

मेवु शिन्दैयिन् मादरै मॅय्तॉडिल्, तेवु पॉन्दलै शिन्दुह नीयॅनप्
पूविन् वन्द पुरादन नेपुहल्, शाव मुण्डॅन दारुयिर् तन्ददाल् 627

मेवु चिन्तै इल्–मिलने की इच्छा न रखनेवाली; मातरै–स्त्रियों को; नी मॅय् तॉटिल्–तुम शरीर छुओगे तो; तेवु–दैवी वर प्राप्त; पॉन् तलै–स्वर्णकिरीटयुक्त सिर; चिन्तुक–कटकर गिर जायें; ॲन–ऐसा; पूविन् वन्त–कमलपुष्प पर प्रकट; पुरातनने पुकल्–पुरातन पुरुष ब्रह्मा का ही कहा हुआ; चावम् उण्टु–शाप एक है; ॲन्तु–(उसी ने); आरुयिर्–मेरे प्राण; तन्ततु–सुरक्षित रखे । ६२७

और एक शाप है जिसको कमलपुष्प पर प्रगट पुरातनदेव ब्रह्मा ने स्वयं उसे दिया था । जो तुमको नहीं चाहतीं उन स्त्रियों को बलात् स्पर्श करोगे तो तुम्हारे दिव्यवरसंयुक्त और स्वर्णकिरीटयुक्त सिर खण्डित होकर चू जायँगे । उसी शाप ने मुझे प्राणदान दिया है ! । ६२७

अन्न शाब मुळदॅन वाणैयाल्, मिन्नु मौलियन् वीडणन् मॅय्म्मैयान्
कन्नि यॅन्वयिन् वैत्त करुणैयाल्, शॉन्न दुण्डु तुणुक्क महड्रुवाळ् 628

अन्न चापम्–वह शाप; उळतु ॲन–है ऐसा; आणैयाल्–शपथ खाकर; मिन्नु मौलियन्–चमकदार किरीटधारी; मॅय्म्मैयान्–सत्यसंध; वीटणन् कन्नि–विभीषण की कन्या (त्रिजटा) ने; तुणुक्कम् अकड्रुवाळ्–मेरा डर दूर करने हेतु; ॲन् वयिन्–मेरे प्रति; वैत्त करुणैयाल्–रखी दया के कारण; चॉन्नतु–जो कहा; उण्टु–वह समाचार है । ६२८

यह बात चमकदार किरीटी धर्मात्मा सत्यव्रती विभीषण की तनया त्रिजटा ने मुझसे कसम खाकर कही थी। उसने मेरा भय निवारण करने के लिए दया करके मुझसे कही थी। ६२८

आय दुण्मैयि ऩानुम दऩ्ऱॆऩिऩ्, माय्वॆन् मऩ्ऱ वऱम्वऴु वादॆऩ्ऱुम्
नाय हऩ्वलि यॆण्णियु नाऩुडॆत्, तूय्मै काट्टवु मित्तुणै तूङ्गित्तेन् 629

आयतु–वह; उण्मैयित्तालुम्–सत्य है, उससे; अऱम्–धर्म; मऩ्ऱ वऴुवातु–अवश्य बेकार नहीं होगा; ॲऩ्ऱुम्–यह मानकर और; नायकऩ्–नाथ श्रीराम का; वलि ॲण्णियुम्–बल सोचकर; नाऩुटै तूय्मै–और अपनी पवित्रता; काट्टवुम्–दिखाने; इ तुणै—इतना समय; तूङ्कित्तेऩ्–ठहरे रही; अतु अऩ्ऱु ॲतिल्—वह नहीं होता तो; माय्वॆऩ्–मर जाती। ६२९

मैं इतने दिन रही भी इसी विश्वास पर कि वह शाप है। धर्म अवश्य बेकार नही होगा और श्रीराम का बल अमोघ है; और मैं अपनी पतिव्रता को भी लोगों के सामने प्रमाणित करना चाहती थी। अगर वह शाप न होता तो मर ही गयी होती। ६२९

आण्डु निऩ्ऱु मरक्क ऩहऴ्ऩ्दुहॊण्, डीण्डु वैत्त दिळव लियऱ्ऱिय
नीण्ड शालै यॊडुनिलै निऩ्ऱदु, काण्डि यॆयनिऩ् मॆय्युणर् कण्गळाल् 630

आण्टु निऩ्ऱुम्—वहाँ से; अरक्कऩ् अकऴ्ऩ्तु कॊण्टु—राक्षस जिस भूमि को खोद ले आकर; ईण्टु वैत्ततु–इधर रखा है, वह; इळवल् इयऱ्ऱिय—देवर द्वारा निर्मित; नीण्ट चालै ऑटुम्—बड़ी पर्णकुटीर के साथ; निलै निऩ्ऱतु—स्थिर रूप से इधर है; ऐय–तात; निऩ् मॆय् उणर्—तुम अपने सत्यदर्शी नेत्रों से; काण्टि—देखो। ६३०

यह भूमि का अंश तुम अपने सत्यपरक नेत्रों से देख लो। इसमें देवर द्वारा निर्मित बड़ी पर्णकुटीर भी देख लो। राक्षस इसी को पंचवटी प्रदेश से खोद लाया था। ६३०

तीर्वि लेऩि दॊरुपह लुञ्जिलै, वीरऩ् मेनियै मानुमिव् वीङ्गुनीर्
नार नाण्मलर्प् पॊय्हैयै नण्णुवेऩ्, चोरु मारुयिर् काक्कुन् दुणिविनाल् 631

ऑरु पकलुम्—एक दिन के लिए भी; इतु तीर्वु इलेऩ्—इससे अलग नहीं हुई; चोरुम् आरुयिर्–शिथिल शरीर से लगे प्राणों को; काक्कुम् तुणिवित्ताल्—बचा लेने के संकल्प से; चिलै वीरऩ्–धनुर्धर श्रीराम के; मेऩियै मानुम्–शरीर की तरह (रंग में) रहनेवाले; इ वीङ्कु नीर्—इस विशाल; नार नाण् मलर्–जलसमृद्ध और सद्यविकसित कमल-पुष्पों से भरे; पॊय्कैयै—तडाग के; नण्णुवेऩ्—पास आती। ६३१

इस पर्णशाला से मै एक दिन भी अलग नही हुई। शिथिल शरीर से लगे प्राणों को बचाए रखने के निश्चय के कारण मै कभी-कभी उस जल-समृद्ध और सद्यविकसित कमलपुष्प-भरे तडाग के पास जाती, क्योंकि वह जलाशय धनुर्धर श्रीवीरराघव के (रंग में) शरीर के समान है। ६३१

आद लातदु कारिय मन्ऱैय, वेद नायहऩ् बालिनि मीण्डनै
पोदल् कारिय मॆन्ऱनळ् पूवैयक्, कोदि लानु मितैयन कूऱिनान् 632

ऐय–तात; आतलाल्–इसलिए; अतु–वह (तुम्हारा विचार); कारियम् अऩ्ऱु–करने योग्य कार्य नहीं; इऩि–आगे; वेतनायकऩ् पाल्–वेदनायक के पास; मीण्टऩै पोतल्–लौट जाना; कारियम्–कर्तव्य है; ऎऩ्ऱनळ्–कहा; पूवै–देवी ने; अ कोतु इलाऩुम्–वह निर्दोष हनुमान ने भी; इवैयऩ–ये बातें; कूऱिनाऩ्–कहीं। ६३२

तात ! इन कारणों से तुम्हारा विचार कार्यान्वित करने योग्य नहीं है। अब तुम्हारा वेदनाथ श्रीराम के पास लौट जाना ही कर्तव्य है। —देवी ने यों कहा। उस अनिंद्य हनुमान ने भी निम्नोक्त बातें कहीं। ६३२

नऩ्ऱु नऩ्ऱिव् वुलहुडै नायहऩ्, तऩ्ऱु णैप्पॆरुन् देवि तवत्तॊऴिल्
ऎऩ्ऱु शिन्दै कळित्तुवन् देत्तिनान्, निन्ऱ शङ्गै यिडरॊडु नीङ्गिनान् 633

निऩ्ऱ इटरोटु–विद्यमान कष्टों के साथ; चङ्कै नीङ्किनाऩ्–शंकाओं से छूटकर; उलकुटै नायकऩ् तऩ्–सर्वलोकनायक की; तुणै–संगिनी; इ पॆरुम् तेवि–इन महीयसी देवी का; तवत् तॊऴिल्–तपकर्म; नऩ्ऱु नऩ्ऱु–साधु है, साधु; ऎऩ्ऱु–ऐसा; चिन्तै कळित्तु–मन में मुदित होकर; उवन्तु–उत्साह के साथ; एत्तिनाऩ्–उनकी संस्तुति की। ६३३

हनुमान के मन में जो कष्ट और शंकाएँ थीं, उन सभी से अब वह निवृत्त हो गया। उसने सोचा कि सर्वलोकपति श्रीराम की संगिनी इन महीयसी देवी का तपकर्म बहुत ही उत्कृष्ट है। उसे अपार हर्ष हुआ। उसने देवी को बड़े ही उत्साह के साथ संस्तुति की। ६३३

इरुळु ञाल मिरावणा नालिदु, तॆरुळु नीयिनिच् चिल्पह ऴङ्गुऱिऩ्
मरुळु मऩ्नवर्क् कियाऩ्शॊलुम् वाशहम्, अरुळु वायॆन् ऱडियि ऩिऱैञ्जिनान् 634

नी–आप; इऩि–अब; चिल् पकल्–कुछ दिन; तङ्कुऱिऩ्–ठहरेंगी तो; इरावणऩाल्–रावण के कारण; इरुळुम् ञालम् इतु–अन्धकारमग्न यह संसार; तॆरुळुम्–प्रकाशमय हो जायगा; मरुळुम् मऩ्नवर्क्कु–दुःखमोहित राजा को; याऩ् चॊल्लुम्–मुझसे कथनीय; वाचकम्–सन्देश; अरुळ्वाय्–कहने की कृपा करें; ऎऩ्ऱु–कहकर; अटियिऩ् इऱैञ्चिनाऩ्–उनके चरणों पर विनय की। ६३४

देवी ! आप और थोड़े दिन यहाँ ठहरेंगी तो रावण के कारण अन्धकार में मग्न यह संसार प्रकाशमय हो जायगा। अब मैं आपके वियोग के कारण दुःख-मोहित श्रीराम के पास क्या कहूँ ? वह सन्देश कहने की कृपा कीजिए। हनुमान ने उनके चरणों में नमस्कार करके विनय की। ६३४

❀ इन्नु	मीण्डोरु	तिङ्ग	ळिरुप्पल्यान्
निन्नै	नोक्किप्	पहर्न्ददु	नीदियोय्
पिन्नै	यावि	पिडिक्किन्	ऱिलेनन्द
मन्न	नाणै	यिदनै	मनक्कोणो 635

नीतियोय्—नीतिश्रेष्ठ; यान्—मैं; इन्नुम्-और; ओर तिङ्कळ्-एक महीना; ईण्टु इरुप्पल्-यहाँ रहूँगी; पिन्नै-बाद; आयि पिटिक्किन्ऱिलेन्-प्राण धारण नहीं करूँगी; अन्त मन्नन् आणै—उन राजाराम की कसम; निन्नै नोक्कि—तुम्हारे समक्ष; पकर्न्ततु-जो मैंने कही; इतनै—यह; नी-तुम; मनक्कोळ्—दृढ़ रूप से मन में धारण कर लो। ६३५

सीताजी ने उत्तर में कहा कि हे नीतिमान ! मैं यहाँ और एक महीने तक ही (जीवित) रहूँगी। उसके बाद प्राण धारण नहीं करूँगी। श्रीराजाराम की क़सम ! तुमसे जो यह कहती हूँ तुम उसे खूब मन में धारण कर लो। ६३५

❀ आरन्	दाळ्दिरु	मार्वर्क्	कमैन्ददोर्
तारन्	दातल	ळेन्नुन्	दयावेनुम्
ईरन्	दान्हत्	तिलूलैयेन्	ऱालुन्दन्
वीरङ्	गात्तलै	वेण्डुन्रु	वेण्डुवाय् 636

आरम् ताळ्-हारालंकृत; तिरुमार्पर्कु—श्रीवक्ष वाले श्रीराम के; अमैन्ततु-योग्य; ओर् तारम् तान् अलळ्—एक पत्नी हूँ नहीं मैं; एनुम्—तो भी; तया ऎनुम्-दया नाम की; ईरम् तान्-आर्द्रता; अकत्तु इल्लै-मन में नहीं हो; ऎन्ऱालुम्-तो भी; तन् वीरम् कात्तलै-अपनी वीरता (का नाम) बचाना; वेण्टु—आपको चाहना है; ऎन्ऱु-ऐसा; वेण्टुवाय्—(तुम श्रीराम से) अर्ज कर लो। ६३६

हारालंकृत वक्ष वाले श्रीराम के योग्य पत्नी नहीं हूँ, सही। उनके मन में दयार्द्रता नहीं हो तो भी अपनी वीरता के यश को सुरक्षित कर लेना आवश्यक है —यह उनसे कहो। ६३६

❀ एत्तुम्	वेन्ऱि	यिळैयवर्	कीदोरु
वार्त्तै	शोल्लुदि	मन्नरु	ळालेनैक्
कात्ति	रुन्द	तनक्के	कडनिडै
कोत्त	वेंजिरै	वीडेन्ऱु	कूरुवाय् 637

कूऱुवाय्-मेरा वृत्तान्त कहनेवाले तुम; एत्तुम्—स्तुत्य; वेन्ऱि इळैयवर्कु-विजयी देवर से; मन् अरुळाल्—राजाराम की आज्ञा के अनुसार; ऎनै कात्तु इरुन्त तनक्के—मेरी जो रक्षा करते रहे, उन्हें; इटै कोत्त—बीच में आये; वेम् चिऱै-कठोर कारावास से; वीटु—छुड़ाना; कटन्—कर्तव्य है; ऎन्ऱु—ऐसा; ईतु—यह; ओरु वार्त्तै—एक सन्देश; चोल्लुति—कहो। ६३७

मेरा वृत्तांत वहाँ जाकर जब कहोगे तब प्रकीर्तित विजयशाली मेरे देवर से कहो कि श्रीराम की आज्ञा से जो मेरी रक्षा के कार्य में लगे रहे उनका अब मध्य में मुझे प्राप्त कारावास से छुड़ाना भी उन्ही का कर्तव्य होगा। ६३७

❀ तिङ्ग	ळॊन्ऱिनॆन्	शॆय्दवन्	दीऱ्न्ददाल्
इङ्गु	वन्दिल	नेयॆनिन्	याणर्नीर्क्
कङ्गै	याऱ्ऱङ्	गरैयडि	येऱ्कुन्दन्
शॆङ्गै	याऱ्कडन्	शॆय्हॆन्ऱु	शॆप्पुवाय् 638

तिङ्कळ् ऑन्ऱिन्—एक महीने में; ऍन् चॆय् तवम्—मेरी क्रियमाण तपस्या; तीर्न्तताल्—पूरी होगी, इसलिए; इङ्कु—यहाँ; वन्तिलनॆ ऍनिन्—नहीं आयेंगे तो; याणर् नीर्—सुन्दर जल-प्रवाह की; कङ्कैयाऱ्ऱङ् करै—गंगा के किनारे; अटियेऱ्कुम्—दासी, मेरा भी; तन् चॆम् कैयाल्—अपने मनोरम हाथों से; कटन् चॆय्क—क्रियाकर्म कर दें; ऍन्ऱु—ऐसा; चॆप्पुवाय्—कहो। ६३८

एक महीना जीवित रहने का मेरा संकल्प है। एक महीने में वह तप पूरा हो जायगा। तब तक वे इधर न आएँगे तो वे वहीं सुन्दर प्रवाह की गंगानदी के जल से मेरा क्रिया-कर्म अपने सुन्दर हाथों से कर दें। ऐसा उनसे कह दो। ६३८

❀ शिऱक्कु	मामियर्	मूवर्क्कुम्	जीदैयाण्
डिऱक्किन्	ऱाडॊळु	दाळॆनु	मिन्नशॊल्
अऱत्ति	नायहन्	बालरु	ळिन्मैयाल्
मऱक्कु	मायिनु	नीमऱ	वेलैया 639

ऐया—तात; चिऱक्कुम्—गौरवपूर्ण; मामियर् मूवर्क्कुम्—तीनों सासों से; आण्टु इऱक्किन्ऱाळ् चीतै—वहाँ मरती रही सीता; तॊऴुताळ्—उसने आपको नमस्कार किया; ऍनुम्—ऐसा; इन्न चॊल्—यह वचन; अऱत्तिन् नायकन्—धर्म के नायक; पाल्—के पास; अरुळ् इन्मैयाल्—दया नहीं होने के कारण; मऱक्कुमायिनुम्—भूल जाएँगे तो भी; नी मऱवेल्—तुम मत भूलो। ६३६

तात! मेरी श्रेष्ठ सासों से कहो कि वहाँ मरती रही सीता ने आपको नमस्कार किया। यह धर्ममूर्ति श्रीराम दयाहीनता के कारण भूल जाएँगे तो भी तुम मत भूलो। ६३९

वन्दै	नैक्करम्	बऱ्ऱिय	वेहल्वाय्
इन्द	विप्पिऱ	विक्किरु	मादरैच्
चिन्दै	यालुन्दॊ	डेनॆन्ऱ	शॆव्वरम्
तन्द	वाऱ्ऱै	तिरुच्चॆवि	शाऱ्ऱुवाय् 640

वन्तु—आकर; अँतै—मुझे; करम् पट्रिय—जब पाणिग्रहण किया; वैकल्वाय्—उस दिन; इन्त इ पिऱविक्कु—इस मनुष्य-जन्म में; इरु मातरै—दो स्त्रियों का; चिन्तैयालुम् तॊटेन्—मन से भी स्पर्श नहीं करूँगा; अँन्र—ऐसा; चॆव्वरम् तन्त—दत्त श्रेष्ठ वर का; वार्त्तै—वचन; तिरुच्चॆवि चाऱ्ऱुवाय्—श्रीकर्णों में डाल दो। ६४०

हनुमान ! तुम उनके दिव्य कानों में यह एक रहस्य ही बात कहो। जब उन्होंने मेरा पाणिग्रहण किया तब उन्होंने अपना यह निश्चय सुनाया कि इस जन्म में मै दो स्त्रियों को अपने मन से भी स्पर्श नहीं करूँगा। यह मेरे लिये वरदान-सा वाक्य था। उसे उन्हें कहो। ६४०

❀ ईण्डु नानिरुन् दिन्नुयिर् मायिनुम्
मीण्डु वन्दु पिऱन्दुतन् मेनियैत्
तीण्ड लावदोर् तीविनै तीर्वरम्
वेण्डि नाडॊऴु दॆन्ऩुऱु विळम्बुवाय् 641

ईण्टु नान् इरुन्तु—इधर मैं रहकर; इन् उयिर् मायितुम्—प्यारे प्राण छोड़ भी दूं; मीण्टु वन्तु—फिर आकर; पिऱन्तु—जन्म लेकर; तन् मेनियै—उनके शरीर को; तीण्टल् आवतु—स्पर्श करने का; ओर् तीवितै तीर् वरम्—एक निष्पाप वर; तॊऴुतु—नमस्कार करके; वेण्टित्ताळ्—(सीता ने) माँगा; अँन्ऱु विळम्पुवाय्—ऐसा कहो। ६४१

समझो कि मुझे इधर मरना ही पड़ा। तो भी मैं फिर जन्म लूँ और आपके ही शरीर का आलिंगन करने का भाग्य मुझे मिले। उनसे कहो कि मैंने यह वर उनसे नमस्कार करते हुए याचित किया। ६४१

❀ अरशु वीऱ्ऱिरुन् दाळवु माय्मणिप्
पुरशै यानैयिन् वीदियिऱ् पोदवुम्
विरशु कोलङ्गळ् काण विदियिलेन्
उरैशॆय् दॆन्नैयॆन् नूऴ्विनै युन्नुवेन् 642

वीऱ्ऱिरुन्तु—सिंहासन पर विराजमान होकर; अरचु आळवुम्—श्रीराम राज करेंगे; आय् मणि—घण्टियों-सहित; पुरचै यानैयिन्—गले की रस्सी (कलापक) वाले राजगज पर; वीतियिल् पोतवुम्—वीथियो मे विजययात्रा करेंगे; विरचु कोलङ्कळ्—ये मनोरम दृश्य; काण विति इलेन्—देखने के भाग्य से वंचित हूँ मैं; उरै चॆय्तु—कुछ कहूँ, इससे; अँन्नै—क्या लाभ है; अँन् ऊऴ्वितै—अपना पूर्वकृत पाप; उन्नुवेन्—सोचती रहूँगी। ६४२

श्रीराम का सिंहासनस्थ होकर राज करना और कलापक-सहित घटियों वाले राजगज पर विराजमान होकर वीथियों में भ्रमण करना देखने का मेरा भाग्य नही रहा। अब कुछ कहने से क्या लाभ है ? बैठकर अपना पूर्वकर्म सोचती रहूँगी। ६४२

❀ तऩ्ऩै नोक्कि युलहऩ् दळर्दर्कुम्
अऩ्ऩै नोय्क्कुम् बरदऩङ् गाऱ्ऱुम्
इऩ्ऩ नोय्क्कुमङ् गेहुव दऩ्ऱियें
ऍऩ्ऩै नोक्कियिङ् गॆङ्ङऩ मॆय्दुमो 643

तऩ्ऩै नोक्कि–अपने वनगमन के कारण हुए; उलकम् तळर्तऱ्कुम्–संसार के कष्ट को; अऩ्ऩै नोय्क्कुम्–माता के दुःख को; परतऩ्–भरत के; अङ्कु–वहाँ रहकर; आऱ्ऱुम्–जो सहते रहते है; इऩ्ऩल् नोय्क्कुम्–उस संकट को; अङ्कु एकुवतु अऩ्ऱि–(दूर करने) उधर पधारने के सिवा; ऍऩ्ऩै नोक्कि–मेरी तरफ़; इङ्कु ऍङ्ङऩम् ऍय्तुम्–इधर क्योंकर पधारेंगे। ६४३

अपने ही कारण लोकों, अपनी माता और भरत को दुःखपीडित हुए देखकर उनको अयोध्या ही जाना ठीक लगेगा। उसे छोड़कर मेरी सुध लेकर वे इधर क्योंकर पधारेंगे? । ६४३

ऍऩ्दैयर् मुदलिऩर् किळैञर् यार्क्कुमॆऩ्
वन्दनै विळम्बुदि कवियिऩ् मऩ्ऩऩैच्
चुन्दरत् तोळनैत् तॊडर्न्दु कात्तुप्पोय्
अऩ्दमि ऱिरुनहर्क् करश ऩाक्कॆऩ्बाय् 644

ऍऩ्तैयर् मुतलिऩर्–मेरे पिताजी आदि; किळैञर् यार्क्कुम्–सभी बन्धु-बान्धओं से; ऍऩ् वन्तऩै–मेरा नमस्कार; विळम्पुति–कहो; कवियिऩ् मऩ्ऩऩै–कपियों के राजा से; चुन्तरत् तोळऩै–सुन्दरबाहु (श्रीराम) को; तॊटर्न्तु कात्तु–लगातार रक्षा करते हुए; पोय्–जाकर; अन्तम् इल्–अक्षय; तिरु नकर्क्कु–श्रीसमृद्ध नगर का; अरचऩ् आक्कु–राजा बनाओ; ऍऩ्पाय्–यह कहो। ६४४

मेरे पिता और अन्य बन्धु-बान्धवों से मेरी वन्दना सुना दो। कपीश सुग्रीव से मेरी ओर से प्रार्थना करो कि वे अयोध्या नगर को सुन्दरबाहु श्रीराम के पीछे जाएँ और उन्हें उसके राजा बना दें। ६४४

❀ इत्तिऱ मनैयव ळियम्ब वित्तऩमुम्, तत्तुऱ वॊऴिन्दिलै तैय नीयॆना
ऍत्तिऱत् तेदुवु मियैन्द वित्ऩुरै, यॊत्तऩ तॆरिवुऱ वुणर्त्ति नाऩरो 645

अत्तैयवळ्–उनके; इ तिऱम्–इस भाँति; इयम्प–कहने पर; तैयल्–देवी; नी इऩ्ऩमुम्–आपने अब भी; तत्तुऱवु–दुःख करना; ऒऴिन्तिलै–नहीं छोड़ा है; ऍऩा–कहकर; ऍ तिऱत्तु एतुवुम्–सभी तरह के हेतुओ से; इयैन्त–युक्त; इऩ् उरै–मधुर (आश्वासन के) शब्दों से; ऒत्तऩ–युक्त; तॆरिवु उऱ–समझ में आएँ ऐसा; उणर्त्तिऩाऩ्–कहकर समझाया। ६४५

जब देवी ने इस रीति से बातें कहीं तो हनुमान को बिल्कुल बुरा लगा। उसने कहा कि देवी! आपने अब भी दुःख करना छोड़ा नहीं

है। फिर सब तरह के हेतुओं से युक्त और सब तरह से समीचीन वचन समझाते हुए कहने लगा। ६४५

❀ वीवाय् नीयिवण् मॅय्यः(ह्)दे, ओय्वा निऩ्ऩुयि रुय्वानाम्
पोय्वा नऩ्नहर् पुक्कऩ्ऱो, वेय्वाऩ् मौलियुम् मॅय्यऩ्ऱो 646

नी इवण् वीवाय्–आप इधर मरेंगी; मॅय् अ.·.ते–वह सत्य है; इऩ्ऩुयिर् ओय्वाऩ्–जिनके प्यारे प्राण शिथिल हो रहे हैं; उय्वाऩ् आम्–वे श्रीराम जीवित रहेंगे; पोय्–(जंगल से) जाकर; वाऩ् अ नकर्–श्रेष्ठ उस (अयोध्या) नगर में; पुक्कु–प्रवेश करके; मौलियुम् वेय्वाऩ् अऩ्ऱो–मुकुट पहनेंगे न; मॅय् अऩ्ऱो–सच है न। ६४६

हनुमान ने तीखे व्यंग्य के साथ कहा कि ऐसा! आप इधर मर जायँगी! सच! फिर वियोगरुग्ण और म्रियमाणप्राण श्रीरामजी जिएँगे! जंगल छोड़कर उत्कृष्ट अयोध्या नगर पहुँचेंगे और मुकुट धारण कर लेंगे। सचमुच यही होगा न? (तमिऴ में शब्द के अन्त में 'आम्' लगाने से किसी की धारणा की निपट अस्वाभाविकता और असाध्यता को लेकर तीव्र व्यंग्य द्योतित हो जाता है।)। ६४६

❀ कैत्तो डुञ्जिरै कऱ्पोयै, वैत्तो निऩ्ऩुयिर् वाऴ्वानाम्
पॊय्त्तोर् विल्लिहऴ् पोवाराम्, इत्तो डॊप्पदि यादुण्डे 647

कऱ्पोयै–पतिव्रता आपको; कैत्तु ओट्टम्–घृणा से जिससे दूर भागते हैं; चिऱै वैत्तोऩ्–उस कारागृह में जिसने रखा; इऩ् उयिर् वाऴ्वाऩ् आम्–वह (रावण) अपने प्राण लेकर जिएगा; ओर् विल्लिकऴ्–अनुपम धनुर्धर; पॊय्त्तु पोवाराम्–अपने कर्तव्य को झुठला देंगे; इत्तोट्टु ऒप्पतु–इनकी समानता करनेवाली बात; यातु उण्टु–दूसरी कौन सी है। ६४७

और पतिव्रता आपको घृणित कठोर कैदखाने में डालनेवाला रावण अपने प्राण लेकर जीता रहेगा! रहेगा न! अनुपम धनुर्वीर श्रीराम और लक्ष्मण झूठे बन जाएँगे! आहा! इसकी समता में और क्या बात होगी? । ६४७

❀ नल्लोय् निऩ्ऩै नलिऩ्दोरैक्, कॊल्लो मॅम्मुयिर् कॊण्डङ्गे
ऎॅल्लो मुञ्जॅल वॅङ्गोनुम्, विल्लो डुञ्जॅल वेण्डावो 648

नल्लोय्–भली देवी; निऩ्ऩै–आपको; नलिऩ्तोरै–त्रस्त करनेवालों को; कॊल्लोम्–हम नहीं मारेंगे और; ऎॅम् उयिर् कॊण्टु–प्राण बचाकर; ऎॅल्लोमुम्–हम सभी; अङ्के चॅल–अयोध्या जाते; ऎॅम् कोऩुम्–हमारे राजा श्रीराम को भी; विल्लोटुम्–धनु के साथ; चॅल वेण्टावो–नहीं जाना चाहिए क्या। ६४८

भली देवी! आपको त्रस्त करनेवाले राक्षसों को हम नहीं मारेंगे! अपने प्राणों की रक्षा करते हुए हम सब अयोध्या जाएँगे और हमारे राजा

श्रीराम भी धनु लेकर अयोध्या जाना चाहेंगे—यही न आप कहती हैं ? । ६४८

नीन्दा विन्नलि नीन्दामे तेय्न्दा ऱाद पॆरुञ्जॆल्वम्
ईन्दा नुक्कुनै यीयादे, ओय्न्दा लॆम्मि नुयरन्दार्यार् 649

नीन्ता इन्नलिन्–अतरणयोग्य दुःख-सागर में; नीन्तामे–विना तैरते संकट उठाए ही; तेय्न्तु आऱात–अक्षय और अक्षुण्ण; पॆरुम् चॆल्वम्–बड़ा धन; ईन्तातुक्कु–जिन्होंने हमें दिया उन्हें; उनै ईयाते–आपको दिए विना; ओय्न्ताल्–हम विरत रहें तो; ऎम्मिल्–हमसे; उयरन्तार् यार्–श्रेष्ठ कौन होंगे । ६४९

श्रीराम ने अतरण योग्य दुःखसागर में तैरते रहे हमें अक्षय और अक्षुण्ण धन दिलाया था। उन्हें आपको न देकर अगर हम निष्क्रिय रहेंगे तो हमसे बढ़कर भलेमानुस कौन होंगे ? । ६४९

नन्ऱाय् नल्विनै नल्लोरैत्, तिन्ऱार् तङ्गुडर् पेय्दिन्नक्
कॊन्ऱा लल्लदु कॊळ्ळेना, वॆन्ऱा नुक्किवै येलावो 650

नल् विनै–तपादि श्रेष्ठ कर्म; नन्ऱु आय्–खूब सोच-परखकर करनेवाले (मुनियों) को; तिन्ऱार् तम्–मारकर जो खाते हैं, उनकी; कुटर्–आँतों को; पेय् तिन्न–पिशाचों को खाने देते हुए; कॊन्ऱाल् अल्लतु–विना मारे; नाटु कॊळ्ळेन्–(कोसल) देश जाना न मानूँगा; ऎन्ऱानुक्कु–ऐसा जिन्होंने कहा उन्हें; इवै एलावो–ये बातें नहीं सुहाएँगी न । ६५०

तप, यागादि कर्म खूब सोच-परखकर जो करते रहते हैं, उन उत्तम लोगों को मारकर खानेवाले हैं राक्षस ! उनकी आँतों को पिशाचों को खाने देते हुए उनको मारे विना मैं अयोध्या लौटना नहीं सोचूँगा। यह क़सम जिन्होंने खायी उन श्रीराम के लिए ये सब योग्य कर्म नहीं रहेंगे क्या ? । ६५०

माट्टा दार्शिऱै वैत्तायै, मीट्टा मॆन्गिल मीळ्वामे
नाट्टार् नल्लवर् नन्नूलुम्, केट्टा रिव्वुरै केट्पारो 651

माट्टातार्–शत्रुओं द्वारा; चिऱै वैत्तायै–कारा में रखी गयी आपको; मीट्टाम् ऎन्किलम्–छुड़ाया, यह यश कहे विना; मीळ्वामे–हम लौट जाएँगे क्या; नाट्टार्–देशवासी; नल्लवर्–भले लोग; नल् नूलुम्–उत्कृष्ट शास्त्र के; केट्टार्–श्रोता (ज्ञानी); इ उरै–यह बात; केट्पारो–सुनेंगे (और मानेंगे) क्या । ६५१

'शत्रुओं द्वारा कारागार में बन्द रखी हुई आपको छुड़ा दिया हमने।' यह प्रशंसा का वचन न कहाते हुए हम लौट जाएँगे क्या ? देश के भले लोग और श्रेष्ठ शास्त्रज्ञ यह बात सुनेंगे और मानेंगे क्या ? । ६५१

पूण्डाळ् कऱ्पुडै याळ्पॊय्याळ्, तीण्डा वज्जहर् तीण्डामुन्
माण्डा ळॆन्ऱु मन्नदेरि, मीण्डाल् वीरम् विळङ्गादो 652

पूण्टु–धारण करके; आऴ्–पालित; कऱ्पु उटैयाऴ्–पातिव्रत्य वाली; पोय्पाऴ्–(सीतादेवी) अपने वचन को झूठा न बनाकर; तीण्टा वञ्चकर्–अछूत वंचकों के; तीण्टा मुन्–स्पर्श करने से पहले; माण्टाऴ्–मर गयीं; ऍन्ऱु–जानकर; मनम् तेऱि–मन मे आश्वासन पाकर; मीण्टाल्–लौट जाएँगे तो; वीरम् विळङ्कातो–वीरता क्या चमक नहीं उठेगी। ६५२

पातिव्रत्य का धारण और पालन करनेवाली देवी अस्पृश्य वंचकों के स्पर्श करने से पहले ही मर गयी। यह जानकर और इस बात का आश्वासन लेकर हम (और श्रीराम) लौट जायँगे तो हमारी वीरता की तूती वोलेगी न ? । ६५२

कॅट्टेन् नीयुयिर् केदत्ताल्, विट्टा यॅन्ऱिडिन् वॅव्वम्वाल्
ऑट्टा रोडुल होरेऴुम्, शुट्टा लुन्दॉलै यादन्ऱो 653

कॅट्टेन्–मरा मैं; नी–आपने; केतत्ताल्–शोक के कारण; उयिर् विट्टाय्–प्राण त्याग दिये; ऍन्ऱिटिल्–तो; वॅम् अम्पाल्–भयंकर शर से; ऑट्टारोटु–शत्रुओ के साथ; ओर् उलकु एऴुन्–सातों लोको को; चुट्टालुम्–जला देंगे तो भी; तॉलैयातु अन्ऱो–अपयश मिटेगा न। ६५३

मरा मैं! (भगवान न करें) अगर आप शोक के कारण मर जायँगी तो फिर भयंकर शर से शत्रुओं के साथ सातों लोकों को जलाया गया तो भी निन्दा नहीं छूटेगी न ? । ६५३

मुन्ने कॉल्वान् मूवुलहुम्, पॊन्ने पॊङ्गिय पोर्विल्लान्
ऍन्ने निन्निलै यीदॆन्ऱाल्, पिन्ने शॆम्मै पिडिप्पानो 654

पॊन्ने–कांचने; मुन्ने–पहले ही; मूवुलकुम्–तीनों लोकों को; कॉल्वान् पॊङ्किय–मारने को जो उत्तेजित हो उठे; पोर् विल्लान्–वे युद्धधनुर्धर; निन् निलै–आपकी स्थिति; ईतु ऍन्ऱाल्–ऐसी है जानकर; पिन्ने–वाद भी; चॆम्मै पिटिप्पातो–क्षमा का गुण धारण करते रहेंगे क्या; ऍन्ने–कैसी वात। ६५४

कांचने! (तमिऴ में स्वर्ण लक्ष्मी को भी कहते हैं। 'कांचना' नाम इधर वहुत प्रचलित है।) पहले ही श्रीराम तीनों लोकों को मिटाने का निश्चय करके युद्धधनु हाथ में ले चुके थे। अगर उनको विदित हो गया कि आपकी ऐसी स्थिति है तो क्या वे आगे भी क्षमा के गुण को धारण किये रहेंगे ? । ६५४

कोळा नारुयिर् कोळोडुम्, मूळा वॅञ्जिन मुऱ्ऱाहा
मीळा वेलयल् वेऱुण्डो, माळा दोपुवि वानोडुम् 655

मूळा—साधारण रूप से जो नहीं उठता; वॅम् चितम्–वह (श्रीराम का) भयंकर कोप; कोळ् आतार्–वुरे लोगों के; उयिर् कोळ् ओटुम्–प्राण-हरण के साथ; मुऱ्ऱु आका–अन्त नहीं होगा; मीळावेल्–(कोप) शान्त न होगा तो; पुवि–भूमि;

वानोडुम्–आकाश के साथ; माळातो–मिट नहीं जायगी क्या; अयल् वेरु–भिन्न कुछ; उण्टो–हो सकता है क्या। ६५५

साधारण रूप से श्रीराम का क्रोध प्रकट नहीं होता। पर अब क्रोध उठा तो वह केवल बुरे राक्षसों को मारकर वहाँ शान्त हो जायगा ? नहीं होगा। अगर क्रोध शान्त नहीं हुआ तो क्या यह भूतल व्योमलोक के साथ मिलकर नष्ट नहीं हो जायगा ? उससे भिन्न कोई काम हो सकता है क्या ? । ६५५

❀ ताळित् तण्गड ऱ्रम्मोडुम्, एळुक् केळुल हॅल्लामन्
ऱ्राळिक् कैयव नम्बम्मा, ऊळित्, तीयॅन वुण्णादो 656

अम्मा–माते; अन्ऱु–उस दिन; आळि कै–चक्रहस्त; अवन् अम्पु–उनका शर; ताळि–गहरे; तण् कटल् तम्मोटुम्–शीतल समुद्रों के साथ; एळुक्कु एळु उलकु ॲल्लाम्–सात और सात लोकों को; ऊळि ती ॲन–प्रलयाग्नि के समान; उण्णातो–नहीं खायगा क्या। ६५६

माँ ! (जिस दिन मैं जाकर श्रीराम से आपकी बात कहूँगा) उस दिन चक्रहस्त श्रीराम का शर गहरे शीतल समुद्र को चौदहों लोकों के साथ युगान्तकाल की अग्नि की तरह सोख नहीं देगा ? । ६५६

पडुत्तान् वानवर् पऱ्ऱारैत्, तडुत्तात् ऱीविनै तक्कोरै
ॲडुत्तात् नल्विनै यॅन्नाळुम्, कॊडुत्ता नॅन्ऱिशै कॊळ्ळायो 657

वानवर् पऱ्ऱारै–देव-शत्रुओं को; पटुत्तान्–मिटा दिया; ती विनै तटुत्तान्–पाप को रोका; तक्कोरै ॲटुत्तान्–साधुओं को उद्धारा; नल् विनै–अच्छे कामों को; ॲन्नाळुम्–सदा; कॊटुत्तान्–बढ़ने दिया; ॲन्ऱु–ऐसा; इचै–यश; कॊळ्ळायो–आप प्राप्त नहीं करेंगी क्या। ६५७

श्रीराम ने देवारियों को मिटाया; पाप को रोक दिया; साधुओं को उद्धारा और सत्कर्मों को वर्धित होने दिया। यह यश आप भी नहीं लेंगी क्या ? । ६५७

शिन्ना णीयिडर् तीरादे, इन्ना वैहलि नॅल्लोरुम्
नन्नाळ् काणुद नन्ऱन्ऱो, उन्ना नल्लर मुण्डामाल् 658

नी–आप; चिल नाळ्–कुछ दिन; इटर् तीराते–संकट-रहित न होकर; इन्ना वैकलिन्–दुःख के साथ रहेंगी तो; ॲल्लोरुम्–सभी का; नल् नाळ् काणुतल्–अच्छा दिन देखना; नन्ऱु अन्ऱो–श्लाघनीय नहीं है क्या; उन्नाल्–आपके द्वारा; नल् अऱम्–भला धर्म; उण्टाम्–पनपेगा। ६५८

आपके इधर और थोड़े दिन संकटग्रस्त होकर रहने से संसार के सारे लोग अच्छा दिन देख पायँगे। क्या वह भला नही है ? आपकी दया से उत्कृष्ट धर्म बढ़ेंगे। ६५८

❀पुळिक्कुङ् गण्डहर् पुण्णीरुळ्, कुळिक्कुम् बेय्हुडै युन्दोरुम्
ऑळिक्कुन् देव रुवन्दुळ्ळम्, कळिक्कुन् नल्विनै काणायो 659

पुळिक्कुम्–सबको खट्टा लगनेवाले; कण्टकर्–कंटकों के; पुण् नीरुळ्–व्रण से बहनेवाले रक्तप्रवाह में; कुळिक्कुम्–स्नान करनेवाले; पेय्–भूतों के; कुटैयुम् तोरुम्–गोता लगाते समय; ऑळिक्कुम् तेवर्–अब छिपे रहनेवाले देव; उळ्ळम् उवन्तु–मन आह्लादित होकर; कळिक्कुम्–आनन्द मनाएँगे जो; नल् विनै–वह अच्छा कार्य; काणायो–आप नहीं देखेंगी क्या। ६५९

देखिए, समय आयगा जब सबके घृणा के योग्य कंटक राक्षसों के व्रणों से रक्त प्रवहित होगा और उसकी बाढ़ बन जायगी। पिशाच आदि उसमें स्नान करेंगे। ज्यों-ज्यों वे गोते लगाएँगे त्यों-त्यों अब रावण से छिपे जो रहते हैं वे खुश होकर आनन्दानुभव करेंगे। क्या वह अच्छा काम आप देखना नहीं चाहेंगी ? । ६५९

ऊऴियि त्तिरुदियि नुरुमॅ रिन्दॅन्तक्, केळ्हिळर् शुडुकणै किळित्त पुण्बॊऴि
ताऴिरुङ् गुरुदियिर् ररङ्ग वेलैहळ्, एऴुमॊन् राहिनिन् ऱिरैप्पक् काण्डियाल् 660

ऊऴियिन् इरुतियिन्–युगान्त में; उरुम् ऍरिन्तॅन–गाज गिरती जैसे; केळ् किळर्–ज्वलन्त; चुटु कणै–तापक शर; किळित्त पुण्–खुले व्रणों से; पॊऴि–बहनेवाले; ताऴ् इरुम् कुरुतियिल्–गहरे, विशाल रक्ताशय में; तरङ्क वेलैकळ् एऴुम्–तरंगायमान सातों समुद्र; ऑन्रु आकि निन्रु–एक बनकर; इरैप्प–जो गरजेंगे वह; काण्टि–आप देखेंगी। ६६०

युगान्त में गिरनेवाले गाज जैसे श्रीराम के ज्वलन्त तथा दाहक शर राक्षसों के शरीर को चीर देंगे। उन व्रणों से रक्त बहेगा और गहरा रक्ताशय बन जायगा। उसमें सातों तरंगायमान समुद्र मिलकर एक हो जायँगे और गरजेंगे। यह आप देखेंगी। ६६०

शूलिरुम् बॅरुवयि ऱलैत्तुच् चोर्वुरुम्
आलियङ् गण्णिय रऱुत्तु नीत्तन
वालियुङ् गडप्परुम् वलत्त वान्उयर्
तालियम् बॅरुमलै तयङ्गक् काण्डियाल् 661

चूल् इरुम्–गर्भयुक्त-से; पॅरु वयिरु–बड़े पेटों को; अलैत्तु–पीटते हुए; चोर्वु उरुम्–बहनेवाले; आलि अम् कण्णियर्–अश्रुजल से भरी सुन्दर आँखों वाली राक्षसियों ने; अऱुत्तु नीत्तन–जिनको तोड़कर फेंक दिया है; वालियुम् कटप्प अरुम्–वाली द्वारा भी अलंघ्य; वान् उयर्–आकाश तक उन्नत; वलत्त तालि अम् पॅरु मलै–बलवान मंगलसूत्रों के पर्वत (के समान राशियाँ); तयङ्क–शोभते हुए; काण्टि–देखेंगी। ६६१

राक्षसियाँ अपने गर्भसहित-से बड़े पेट को पीटती हुई आँखों से

बहनेवाले अश्रुजल-सहित हो अपने मंगल-सूत्र तोड़कर नीचे डाल देंगी और वे कठिन सूत्र वाली द्वारा भी अलंघ्य बड़े पर्वत बन जायँगे। उनको आप देखेंगी। ६६१

विण्णित्ती ळियनॅडुङ् गळुदुम् वॅञ्जिऱै
ॲण्णित्ती ळियपॅरुम् बऱवै यीट्टमुम्
पुण्णित्तीर्प् पुणरियिऱ् पडिन्दु पूवैयर्
कण्णित्ती राऱ्ऱित्तिऱ् कुळिप्पक् काण्डियाल् 662

विण्णिन् नीळिय–आकाश तक बढ़े हुए; नॅटुम् कळुतुम्—लम्बे क़द के पिशाच और; ॲण्णिन् नीळिय–संख्या में बढ़े; वॅम् चिऱै–भयंकर पंखों के; पॅरुम् पऱवै ईट्टमुम्–बड़े पक्षियों के झुण्ड; पुण्णिन् नीर् पुणरियिल्–व्रणनिर्गत रक्त में; पटिन्तु–मग्न होकर; पूवैयर्–स्त्रियों के; कण्णिन् नीर् आऱ्ऱिनिल्–अश्रुजल-सरिताओं में; कुळिप्प–(शरीर को साफ़ करने के लिए) स्नान करेंगे; काण्टि–आप देखेंगी। ६६२

आकाश तक बढ़े हुए बड़े-बड़े भूत, पिशाच आदि और असंख्यक भयंकर पंखों के बड़े-बड़े पक्षियों के वृन्द राक्षसों के व्रणों से बहनेवाले रक्त-प्रवाह में पहले स्नान करेंगे और बाद स्त्रियों के अश्रुजल-प्रवाह में स्नान (करके अपने शरीर पर लगे खून, मांस आदि दूर) करेंगे। देखेंगी आप। ६६२

करम्बयिन् मुरशित्तङ् गऱङ्गक् कैतॊडर्
नरम्बुह ळिमिळिशै .नविल नाडहम्
अरम्बैय राडिय वरङ्गि ताण्डॊळिल्
कुरङ्गुहण् मुऱैमुऱै कुत्तिप्पक् काण्डियाल् 663

करम् पयिल्–हाथ से पीटी जानेवाली; मुरचु इत्तम्–भेरियों के वर्गों के; कऱङ्क–शब्द करते; कै तॊटर्–उँगलियों से सहलाये जानेवाली; नरम्पुकळ् इमिळ्–(जिनकी) तन्त्रियाँ स्वर निकालती है, उन वीणा आदि वाद्यों के; इचै नविल–संगीत निकालते; अरम्पैयर्–(जिन पर) अप्सराएँ; नाटकम् आटिय–नृत्य करती हैं; अरङ्किन्–(उन) मंचों पर; आण् तॊऴिल्–पुरुषोचित काम करनेवाले; कुरङ्कुकळ्–वानर; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; कुत्तिप्प–कूदेंगे, उसे; काण्टि–देखेंगे। ६६३

उन मंचों पर, जहाँ अप्सराएँ भेरियों के नाद और तन्त्री-सहित वीणा आदि वाद्यों के नाद के मेल में नाच रही थीं, अब पौरुषयुक्त वानर क्रम से नाचेंगे, कूदेंगे —आप वह भी देखिएगा। ६६३

पुरैयुरु पुन्ऱॊळि लरक्कर् पुण्वॊळि
तिरैयुरु कुरुदिया ऱीर्प्पच् चॅल्वन
वरैयुरु पिण्प्पॅरुम् बिऱक्क मण्डिन
करैयुरु नॅडुङ्गड ऱुर्प्पक् काण्डियाल् 664

पुरै उरु–अपराधी; पुन् तॊऴिल्–नीचकर्म; अरक्कर्–राक्षसों के; पुण् पॊऴि–व्रणों से बहनेवाली; तिरै उरु–तरंगसहित; कुरुति आरु–रक्त-नदी के; ईर्प्प–खींच लेने से; चॆल्वत्त–जो जाते हैं; वरै उरु–(वे) पर्वत-सम; पिण पॆरुम् पिरक्कम्–लाशों के बड़े-बड़े ढेर; मण्टित्त–एकत्र होकर; करै उरु–तीरों पर टकरानेवाली तरंगों से युक्त; नॆट्टुम् कटल्–विशाल सागर को; तूर्प्प–पाट देंगे; काण्टि–देखिए। ६६४

दुष्ट और नीच-कर्म राक्षसों के व्रणों के रक्त की नदी वह निकलेगी और वह पर्वत-सम बड़ी-बड़ी लाशों को खींच लेती हुई बहेगी। वे लाशें अधिक संख्या में जाकर तीर से टकरानेवाली तरंग-सहित विशाल समुद्र को पाट देंगी। देखते रहिए। ६६४

वित्तैयुडै यरक्करा मिरुन्दै वॆन्दुहच्
चत्तहियॆन् ऱॊरुतऴ नडुवट् टङ्गलात्
अत्तहन्गै यम्बॆन्नु मऴवि लूदैयाल्
कत्तहनी डिलङ्गैनिन् ऱुरहक् काण्डियाल् 665

चत्तकि ऎन्रु–जानकी के रूप में; ऒरु तऴल्–एक आग; नट्टुवण्–बीच में; तङ्कल् आल्–रहती है, इसलिए; अत्तकन्–अनघ श्रीराम के; कै अम्पु ऎन्नुम्–हाथ के शरों रूपी; अऴवु इल्–अपार; ऊतैयाल्–तेज पवन से; वित्तै उटै–पापी; अरक्कर् आम् इरुन्तै–राक्षस रूपी कोयले; वॆन्तु उक–जलकर (राख के रूप में) चू पड़ेंगे; कत्तक नीटु इलङ्कै–बड़ी स्वर्णलंका; निन्रु उरुक–स्थित होकर पिघलेगी; काण्टि–आप देखेंगी। ६६५

जानकी के रूप में लंका के मध्य आग रहती है इस कारण; और अनघ श्रीराम के हाथ के शरों रूपी अपार पवन बहेगा, इस कारण पापी राक्षस रूपी कोयले जलेंगे और राख बनकर चू पड़ेंगे; और सोने की बड़ी लंका उनके मध्य रहकर पिघल जायगी। उसे आप देखें। ६६५

ताक्कलि लिरावणन् ऱलैयिऱ् ऱायित
पाक्किय मत्तैयनित् पऴिप्पिन् मेत्तियै
नोक्किय कण्गऴै नुदिहॊण् मूक्कित्ताल्
काक्कैहऴ् कवर्न्दुहॊण् डुण्णक् काण्डियाल् 666

काक्कैकऴ्–कौए; ताक्कल् इल्–अप्रहरित; इरावणन् तलैयिल्–रावण के सिरों पर; तायित्त–कूदकर; पाक्कियम् अत्तैय–सौभाग्य ही सम; नित्–आपके; पऴिप्पु इल् मेत्तियै–अनिंद्य शरीर को; नोक्किय कण्कऴै–जिन आँखों ने बुरे विचार के साथ देखा, उन आँखों को; नुति कॊऴ् मूक्कित्ताल्–तीक्ष्ण चोंचों से; कवर्न्तु कॊण्टु–छीन लेकर; उण्ण काण्टि–खायेंगे, देखिए। ६६६

कौए अप्रतिहत रावण के सिर पर चढ़ बैठेंगे और उन आँखों को अपनी तीक्ष्ण चोंचों से नोचकर खाएँगे; जिन आँखों ने आपके सौभाग्य-सम

अप्राकृत दिव्य और अनिन्द्य मंगल-विग्रह को बुरी कामना के साथ देखा था। ६६६

मेलुऱ् विरावणऱ् कऴिन्दु वॆंळ्हिय
नीलुऱु तिशैक्करि तिरिन्दु निऱ्पत्
आलुऱ् वत्तैयवऩ् ऱलैयै यव्ववै
कालुऱक् कणैतडिन् दिडुव काण्डियाल् 667

मेल्–पहले; इरावणऱ्कु–रावण से; उऱ् अऴिन्तु–पूर्ण रूप से हारकर; वॆंळ्किय–लज्जित; नील् उऱु–नील रंग की; तिचै करि–दिशाओं के दिग्गज; तिरिन्तु निऱ्पत–मन मारकर (जो) खड़े है; आल् उऱ्वु अत्तैयवऩ्–बरगद के वृक्ष के समान रावण के; तलैयै–सिरों को; अव्ववै–उन दिग्गजों के; काल् उऱ–पैरों पर जा गिरें, ऐसा; कणै–श्रीराम के शर; तटिन्तु–काटकर; इटुव–डालेंगे; काण्टि–आप देखिए। ६६७

नीली दिशाओं के दिग्गज पहले रावण से लड़े, बुरी तरह हारे और शरमाते हुए पस्त खड़े हैं। अब श्रीराम के बाण बरगद के समान दिखने वाले रावण के सिरों को काटकर उन दिग्गजों के चरणों पर डाल देंगे। वह आप देखेंगी। ६६७

नीर्त्तॆऴु मुहिल्मऴै वऴङ्गु नीलवाऩ्
वेर्त्तदॆऩ्ऩ् ऱिडैयिडै वीशुम् वेरऱप्
पोर्त्तॆऴु पॉलङ्गॉडि यिलङ्गैप् पूऴियो
डार्त्तॆऴु कऴुहिरैत् ताडक् काण्डियाल् 668

नीर्त्तु ऍऴु–जल के साथ उठे; मुकिल् मऴै–मेघों की वर्षा; वऴङ्कु–करनेवाला; नील वाऩ्–नीला आकाश; वेर्त्ततु ऍऩ्ऱु–स्वेदयुक्त हुआ ऐसा मानकर; इटै इटै–रह-रहकर; वेर् अऱ–पसीना पोंछने के लिए; वीचुम्–फहरते हुए (हवा करते हुए); पोर्त्तु ऍऴु–आच्छादित कर उठनेवाली; पॉलम् कॉटि–सुन्दर पताकाओं से शोभित; इलङ्कै–लंका में; पूऴियोटु–धूल के साथ; आर्त्तु ऍऴु–जोर-शोर के साथ उठनेवाले; कऴुकु इरैत्तु आट–गीध शब्द करते हुए घूमेंगे; काण्टि–देखिए। ६६८

लका में ध्वजाएँ फहर रही हैं। जल-भरे मेघों द्वारा वर्षा करानेवाला आकाश स्वेदयुक्त हो गया —यह समझकर वे ध्वजाएँ हवा कर रही हों, ऐसा लगता है। अब उनकी जगह धूल के साथ शोर मचाते हुए गीध ऊपर उड़ेंगे। आप देखेंगी। ६६८

नोनिऱ् वरक्कर्दङ् गुरुदि नीत्तनीर्
वेलैमिक् काऱ्ऱॊडु मीळ वेलैशूऴ्
ञालमुऱ् ऱुऱुहडै युहत्तु नच्चऱाक्
कालनुम् वॆऱुत्तुयिर् कालक् काण्डियाल् 669

नील् निऱ–काले रंग के; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुरुति नीत्तम्–रक्त का प्रवाह; नीर् वेलै मिक्कु–जल-समुद्र में भरकर; आऱ्ऱीट्टु–उसी नदी द्वारा; मीळ–लौट आयगा; वेलै चूऴ् ञालम्–समुद्र-मेखला पृथ्वी को; मुऱ्ऱु उऱ–अन्त करनेवाले; कटै युकत्तु–युगान्त में; नच्चु अऱा कालत्तुम्–अतृप्त कालदेव भी; वॆऱुत्तु–अघाकर; उयिर् काल–जीवों को उगल देगा; काण्टि–देखिए। ६६९

काले रंग के राक्षसों का रक्तप्रवाह जल-भरे समुद्र में जाकर गिरेगा। और समुद्र से छलककर फिर लौट के उसी नदी में वहता आयगा। समुद्रमेखला भूमि का अन्त करानेवाले युगान्त में भी जो यम नहीं अघाता, वह अब अधिक हो जाने से घृणा करके जीवों को उगल देगा। आप वह भी देखेंगी। ६६९

अणङ्गिऴ महळिरॊ डरक्क राडुऱुम्
मणङ्गिऴर् कऱ्पहच् चोलै वाविवायप्
पिणङ्गुऱु वाऩ्मुऱै पिडित्त मालैय
कणङ्गॊडु कुरक्किऩङ् गुऩिप्पक् काण्डियाल् 670

अणङ्कु इऴ मकळिरॊट्टु–कमसिन अप्सराओं के साथ; अरक्कर् आट्टु उऱुम्–जहाँ राक्षस स्नान करते हैं; मणम् किऴर्–सुगन्धियुक्त; कऱ्पक चोलै–कल्पवन के; वावि वाय्–तडाग में; पिणङ्कु उऱ–वक्र; वाल् मुऱै पिटित्त–क्रम से पूँछ पकड़कर; मालैय–पंक्तिबद्ध; कणम् कॊटु–झुण्डों में रहनेवाले; कुरक्कु इऩम्–वानर-समूह; कुऩिप्प–उछल-कूद मचाएँगे; काण्टि–देखेंगी। ६७०

युवावस्था की अप्सराओं के साथ राक्षस कल्पवनों के तडाग में स्नान करके आनन्द मना रहे है। अब उन कल्पवनों में वन्दर क्रम से एक-दूसरे की पूँछ पकड़े वृन्द में नाचेंगे-कूदेंगे। देखिए। ६७०

चॆप्पुऱ लॆऩ्बल तॆय्व वाळिकळ्
इप्पुऱत् तरक्करै मुरुक्कि येहिऩ
मुप्पुऱत् तुलहैयुम् मुडुक्कि मुट्टलाल्
अप्पुऱत् तरक्करु मवियक् काण्डियाल् 671

पल–विविध; चॆप्पुऱल्–(वातें) कहना; ऎऩ्–क्यों; तॆय्व वाळिकळ्–(श्रीराम के) दिव्य शर; इ पुऱत्तु–यहाँ के; अरक्करै–राक्षसों को; मुरुक्कि–मारकर; एकित–जाकर; पुऱत्तु–उस पार; मु उलकैयुम्–तीनों लोकों को; मुटुक्कि–आक्रमण कर; मुट्टलाल्–प्रहरित करेंगे, इसलिए; अ पुऱत्तु–वहाँ के; अरक्करुम्–राक्षस भी; अविय–मिट जायेंगे; काण्टि–देखिए। ६७१

किं बहुना ? श्रीराम के दिव्यास्त्र इस अण्ड में रहनेवाले राक्षसों को मारेंगे, आगे जायँगे और त्रिविध लोकों को प्रहरित करके टकराएँगे। तब अण्ड-पार राक्षस भी मिटेंगे। यह आप देखेंगी। ६७१

❀ईण्डीरु तिङ्गणी यिडरिन् वैहवुम्
वेण्डुव दन्ऱियान् विरैविन् वीरनैक्
काण्डले कुऱैवुपिन् कालम् वेण्डुमो
आण्डहै यिन्नियोरु पॊऴुदु माऱ्ऱुमो 672

ईण्टु–यहाँ; नी–आपको; ओरु तिङ्कळ्–एक महीना; इटरिन् वैकवुम्–दुःख में रहना; वेण्टुवतु अन्ऱु–नहीं पड़ेगा; यान्–मैं; विरैविन्–तुरन्त; वीरनै काण्टले–वीर से मिलूं; कुऱैवु–उतना ही कसर है; पिन् कालम् वेण्टुमो–फिर देरी भी चाहिए क्या; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; इन्ऩि–अब; ओरु पॊऴुतुम्–कभी; आऱ्ऱुमो–सहेंगे क्या। ६७२

आपको और एक महीना संकट में रहना नहीं पड़ेगा। मैं शीघ्र जाऊँ और वीर श्रीराम से मिलूँ, इतना ही कसर है, फिर विलम्ब काहे का ? क्या पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम एक पल (का विलम्ब) भी सहेंगे ? । ६७२

आवियुण् डॆन्नुमी दुण्डुन् नारुयिर्च्
चेवहन् ऱिरुवुरुत् तीण्डत् तीन्दिलाप्
पूविलै तळिरिलै पॊरिन्दु वॆन्दिलाक्
काविलै कॊडियिलै नॆडिय कानॆलाम् 673

आवि उण्टु–प्राण है; ऎन्नुम् ईतु उण्टु–यह कहने का स्थान है; नॆटिय कान् ऎलाम्–बड़े वन में सर्वत्र; उन् आरुयिर्–आपके प्राणप्यारे; चेवकन्–वीर श्रीराम के; तिरु उरु तीण्ट–श्रीशरीर के लगने से; तीन्तिला–जो नहीं जले; पू इलै तळिर् इलै–पुष्प नहीं, पत्ते नहीं; पॊरिन्तु वॆन्तिला–लाजा-सम जो नहीं भुने; का इलै–उपवन नहीं; कॊटि इलै–लताएँ नहीं हैं। ६७३

श्रीराम की स्थिति ऐसी है कि प्राण ज्यों-त्यों करके टिके रहते हैं—यही कहा जाय। आपके प्राणप्यारे वीर के श्रीशरीर के बड़े कानन में सर्वत्र स्पर्श से जो नहीं मुरझाए ऐसे फूल नहीं है, ऐसे पत्ते नहीं हैं। लाजे के समान जो नहीं भुने ऐसे वन नही हैं, ऐसी लताएँ भी नहीं। (श्रीराम की विरहाग्नि ऐसी है।) । ६७३

शोहम्वन् दुरुवदु तॆळिवु तोय्न्दन्ऱो
मेहम्वन् दिडित्तुरु मेरु वीऴिनुम्
आहमुम् बुयङ्गळु मळुन्द वैन्दलै
नाहम्वन् दडर्प्पिनु मुणर्वु नाऱुमो 674

चोकम् वन्तु उरुवतु–शोक का आकर भरना; तॆळिवु तोय्न्तन्ऱो–वह मन निश्चिन्त रहे तभी न होगा; मेकम् वन्तु–मेघ आकर; उरुम् एऱु–वज्र; इटित्तु वीऴिनुम्–टूटकर गिरें, तब भी; आकमुम् पुयङ्कळुम्–वक्ष और भुजाओं में; अऴुन्त–दाँत गड़ाकर; ऐम् तलै नाकम् वन्तु–पंच-सिर नाग आकर; अटर्प्पितुम्–दुःख दे तो भी; उणर्वु नाऱुमो–सुध होगी क्या। ६७४

मन निश्चिन्तता से रहे तभी न शोक आकर अपना घर बसा लेगा! मेघों से गाज गिरें या पाँच सिर का भयंकर नाग उनके वक्ष पर और भुजाओं पर दंशन करके दुःख दे तो भी श्रीराम को उसकी अनुभूति होगी क्या? (उनका मन इतना विरह-मोहित है।)। ६७४

मत्तुउ़ तयिरॆन वन्दु शॆन्उ़िडै, तत्तुउ़ मुयिरोडु पुलऩ्ग उळ्ळुउ़म्
पित्तनिन् पिरिविनिऱ् पिउ़न्द वेदऩै, ऎत्तऩै युळववै यॆण्णु मीट्टवो 675

मत्तु उउ़–मथानी-मथित; तयिर् ऎन–दही के समान; वन्तु चॆन्उ़–आते-जाते; इटै तत्तुउ़म्–बीच में लड़खड़ानेवाले; उयिर् ओटुम्–प्राणों के साथ; पुलऩ्कळ् तळ्ळुउ़म्–इन्द्रियों को अस्त-व्यस्त करनेवाले; पित्तम्–दीवानापन; ऎत्तऩै उळ–कितनी ही तरह के हैं; अवै–वे; निऩ् पिरिविनिल्–आपके विरह में; पिउ़न्त–जनित; वेतऩै–वेदनाएँ हैं; ऎण्णुम् ईट्टवो–गिने जा सकते हैं क्या। ६७५

प्राण मथानी-मथित दही के समान मथे जाकर आते-जाते और बीच में लड़खड़ाते हैं। इन्द्रियों को बेकार करते हुए उनको अपने वश में रखता है पागलपन; उसके भी कितने ही प्रकार हैं! वे सब आपके वियोग में जनित दुःख के प्रगटन हैं। वे गिने भी जा सकते हैं क्या?। ६७५

इऩ्निलै युडैयवऩ् उ़रिक्कु मॆऩ्उ़ॆणुम्
पॊय्न्निलै काण्डियाऩ् पुहऩ्उ़ यावुमुऩ्
कैन्निलै नॆल्लियङ् गतियिऱ् काट्टुहेऩ्
मॆय्न्निलै युणर्न्दुनी विडैतन् दीयॆऩ्उ़ाऩ् 676

इ निलै उटैयवऩ्–इस स्थिति के; तरिक्कुम्–श्रीराम प्राणधारण कर सकेंगे; ऎऩ्उ़–ऐसा; ऎणुम्–जो सोचती हैं; पॊय् निलै–उसकी असत्यता; काण्टि–आप देख लेंगी; मॆय् निलै–यही सच्ची स्थिति; नी उणर्न्तु–आप जानकर; विटै तन्तु ई–विदा देने की कृपा करें; याऩ् पुकऩ्उ़ यावुम्–अपना कहा सारा; उऩ् कै निलै नॆल्लि अम् कतियिल्–अपने करतल में रखे सुन्दर आमले के फल के समान; काट्टुकेऩ्–दिखा सकूँगा; ऎऩ्उ़ाऩ्–हनुमान ने कहा। ६७६

ऐसी स्थिति में रहनेवाले श्रीराम प्राणधारण करके जीवित रह सकेंगे—यह जो आप सोचती हैं वह कितना मिथ्यामूलक है यह आप स्वयं देख लेंगी, पीछे। इसलिए यह सच्ची स्थिति जानकर आप मुझे विदा दे दें। अपना कहा सारा मैं करतलामलकवत सच प्रमाणित कर दिखा सकता हूँ। हनुमान ने कहा। ६७६

तीर्त्तनुङ् गविक्कुलत् तिऱैयुन् देविनिऩ्
वार्त्तैहेट् टुवप्पदन् मुन्न माक्कडल्
तूर्त्तन विलङ्गैयैच् चूऴ्न्दु माक्कुरङ्
गार्त्तन केट्टुवन् दिरुत्ति यन्नैनी 677

अन्नै–माते; तीर्त्ततुम्–तीर्थ श्रीराम और; कवि कुलत्तु इऱैयुम्–कपिकुल-पति; तेवि–देवी; निन् वार्त्तै केट्टु–आपके सन्देश-वचन सुनकर; उवप्पतन् मुन्नम्–मुदित हों, इसके पहले ही; मा कटल् तूर्त्तुतत–बड़े समुद्र को जो पाट देंगे; इलङ्कैयै चूळ्न्तु–और लंका को घेरेंगे; मा कुरङ्कु–वे बड़े वानर; आर्त्तुतत–गरजेंगे; केट्टु–सुनकर; उवन्तु–हर्ष करके; नी इरुत्ति–आप रहिए। ६७७

(उसने आगे कहा।) माँ! तीर्थ श्रीराम और कपिकुलाधिपति आपकी बात सुनकर मुदित हों, इसके पूर्व ही बड़े सागर को पाटकर लंका को आ घेर लेंगे वानर और उनका गर्जन सुनकर आप आनन्द के साथ रहेंगी। ६७७

अॅण्णरुम् बॅरुम्बडै यीण्डि यिन्नहर्
नण्णिय पॉऴुददु नडुव णङ्गैनी
विण्णुरु कलुऴन्मेल् विळङ्गुम् विण्डुविन्
कण्णनै यॅन्नॅडु पुयत्तिड् काण्डियाल् 678

नङ्कै–नायिका देवी; अॅण् अरुम्–अगणित; पॅरुम् पटै–बड़ी सेना; ईण्टि–एकत्र होकर; इ नकर्–इस नगर में; नण्णिय पॉऴुतु–जब आएँगे तब; अतु नटुवण्–उस सेना के मध्य; विण् उरु–आकाशचारी; कलुऴन् मेल्–गरुड़ पर; विळङ्कुम्–शोभित रहनेवाले; विण्टुविन्–श्रीविष्णु की तरह; कण्णनै–श्रीराम को; अॅन् नॅटु पुयत्तिल्–मेरे बड़े कन्धों पर; नी काण्टि–आप देखेंगी। ६७८

देवी! असंख्यक सेना एकत्र हो आएगी। तब उसके बीच आप देखेंगी नेत्राभिराम श्रीराम को मेरे बड़े कन्धों पर, आकाशचारी गरुड़ के कन्धों पर श्रीविष्णु के समान शोभायमान! । ६७८

अङ्गदन् ड़ोण्मिशै यिळव लम्मलैप्
पॉङ्गिळङ् गदिरॅन्नप् पॉलियप् पोर्प्पडै
इङ्गुवन् दिरुक्कुनी यिडरि नॅय्दुरुम्
शङ्गैयु नीङ्गुदि तनिमै नीङ्गुवाय् 679

अङ्कतन् तोळ् मिचै–अंगद के कन्धों पर; इळवल्–लघुराज; अम् मलै–सुन्दर (उदय) गिरि पर; पॉङ्कु–उठनेवाले; इळम् कतिर् अॅन्न–बाल सूर्य के समान; पॉलिय–शोभेंगे और; पोर्प्पटै–समरोद्यत सेना; इङ्कु वन्तु इरुक्कुम्–यहाँ आकर डेरा डालेगी; नी–आप; इटरिन् अॅय्तुरुम्–संकट में रहेंगे, यह; चङ्कैयुम्–शंका भी; नीङ्कुति–दूर कर दीजिए; तनिमै–एकाकीपन; नीङ्कुवाय्–दूर कर लेंगी। ६७९

अंगद के कन्धे पर, सुन्दर उदयाचल पर उगनेवाले बाल-रवि के समान लघुराज लक्ष्मण रहेंगे। समरोद्यत वानर-सेना यहाँ आकर पड़ाव डालेगी। अब संकटग्रस्त रहने का संशय त्याग दीजिए। एकाकिनी रहने की स्थिति भी हट जायगी। ६७९

❀कुरावरुङ् गुऴलिनी कुऱ़ित्त नाळिनिल्
विरावरु नॅडुञ्जिऱ़ै मीट्क लानॅनिल्
परावरुम् वऴियॊडु पावम् मुऱ़्ऱुदऱ़्
किरावण तल्लने यिराम नॅन्ऱनन् 680

कुरा अरुम् कुऴलि–'कुरा' नामक पुष्पों से अलंकृत सुन्दर केशिनी; नी कुऱ़ित्त नाळित्तिल्–आपके निर्दिष्ट दिन में; विरावरु–घेरते रहनेवाले; नॅटञ्चिऱ़ै–दीर्घ कारावास से; मीट्कलान् ॲतिल्–न छुड़ा सकेंगे तो; परावरुम्–फैलाते आनेवाले; पऴियॊटु–अपयश के साथ; पावम् मुऱ़्ऱुतऱ़्कु–पाप भी पूर्ण रूप से लगे, इसके लिए; इरावणन् अल्लत्ते–रावण नहीं हैं; इरामन्–श्रीराम; ॲन्ऱनन्–कहा, हनुमान ने। ६८०

'कुरा' नामक पुष्पों से अलंकृत केशिनी! आपसे निर्दिष्ट अवधि के अन्दर, घेरते रहनेवाले दीर्घ कारावास से श्रीराम आपको मुक्त नहीं करें तो वे क्या रावण हैं कि फैलते अपयश के साथ पाप का भी पूर्ण रूप से सम्पादन कर लें। वे श्रीराम हैं —यह स्मरण रहे। हनुमान ने इस भाँति धैर्य-वचन कहे। ६८०

आह विम्मॊऴि याशिल केट्टऱ़ि वुऱ़्ऱाळ्
ओहै कॊण्डु कऴिक्कु मनत्त ळुयर्न्दाळ्
पोहै नन्ऱिव नॅन्बदु पुन्दियिन् वॆत्ताळ्
तोहै युञ्जिल वाशह मिन्नन शॊन्नाळ् 681

आक–इस भाँति; आचु इल–निर्दोष; इम्मॊऴि–ये वचन; केट्टु–सुनकर; अऱ़िवु उऱ़्ऱाळ्–स्वस्थचित्त हुईं; ओकै कॊण्टु कऴिक्कुम्–हर्ष की बात से मुदित होनेवाले; मनत्तळ्–मन की होकर; उयर्न्ताळ्–सँभल गयीं; इवन् पोकै–इसका जाना; नन्ऱु–भला है; ॲन्पतु–इसको; पुन्तियिन् वॆत्ताळ्–मन में विचार कर; तोकैयुम्–मयूराभा देवी ने भी; इन्नन–यों; चिल वाचकम्–कुछ वचन; चॊन्नाळ्–कहे। ६८१

हनुमान के ये दोष-रहित वचन सुनकर सीताजी स्वस्थचित्त हुईं। उनके मन में आनन्द उमँग आया और वे उन्नत अवस्था में आ गयीं। उन्होंने सोचा कि अब इसका जाना ही अच्छा है। बुद्धि में यह सोचकर कलापी-सी छटा वाली देवी ने निम्नांकित वचन कहे। ६८१

शेऱ़ि यैय विरैन्दनै तीयवै यॅल्लाम्
वेऱ़ि यानिनि यॊन्ऱुम् विळम्बलॅन् मेलोय्
कूऱ़ु हिन्ऱन मुन्गुऱ़ि युऱ़्ऱन कोमाऱ़्
केऱ़ु मॆन्ऱवै शॊल्लॅन विन्नन विशैप्पाळ् 682

ऐय–तात; मेलोय्–श्रेष्ठ; विरैन्तनै चेऱ़ि–त्वरित गति से जाओ; तीयवै ॲल्लाम्–सभी संकटों को; वेऱ़ि–जीतो; इनि–अब; यान्–मैं; ऒन्ऱुम् विळम्पलॅन्–कोई बात नहीं कहूँगी; कूऱ़ुकिन्ऱन–अब जो कहूँगी; मुन् कुऱ़ि उऱ़्ऱन–पहले ही

घटित हो गयी हैं; कोमाऱ्कु एऱुम्–हमारे अधिपति श्रीराम से स्वीकार्य हैं; ॲन्ऱु–कहकर; अवै चोल्–उनको जाकर सुनाओ; ॲत्त–कहकर; इन्न इचैप्पाळ्–निम्नांकित बातें कहने लगीं। ६८२

बाबा! उत्तम! शीघ्र चलो। सभी बुराइयों को जीतो। आगे कुछ अधिक ऐसी बातें नहीं कहूँगी। पर अब जो कहूँगी वह पूर्वघटित बातें हैं और अभिज्ञान के रूप में श्रीराम से स्वीकार्य होंगी। उनसे वे बातें कहो। यह कहकर वे बताने लगीं। ६८२

नाह मोंन्ऱिय नल्वरै यित्ऱलै मेनाळ्
आहम् वन्दनै वळ्ळुहिर् वाळि नळैन्द
काह मोंन्ऱै मुऩिन्दयल् कल्लॅळु पुल्लाल्
वेह वॅम्बडै विट्टदु मॅल्ल विरिप्पाय् 683

मेल् नाळ्–पहले कभी एक दिन; नाकम् ऑन्ऱिय–आकाशस्पर्शी; नल् वरैयिन् तलै–सुन्दर (चित्रकूट) पर्वत पर; काकम् ऑन्ऱु–एक कौए का; वन्तु–आकर; ॲत्तै–मेरे; आकम्—वक्ष को; वळ् उकिर् वाळिन्–तीक्ष्ण नाखून रूपी तलवार से; अळैन्ततै–नोचना; मुऩिन्तु–(देखकर) कोप करके; अयल्–पास में; कल् ॲळु–पत्थर-मध्य उठी; पुल्लाल्–घास को; वेक–वेगवान; वॅम् पटै–भयंकर (ब्रह्म-) अस्त्र (बनाकर); विट्टतु–जो (श्रीराम ने) चलाया; मॅल्ल विरिप्पाय्–धीरे-धीरे बताओ। ६८३

पहले एक दिन जब हम गगनचुम्बी चित्रकूट पर्वत पर रहे, तब एक कौआ आया और अपने तीक्ष्ण नाखून रूपी तलवार से मेरे वक्षःस्थल को नोचने लगा। उसे देखकर श्रीराम ने गुस्से में आकर पास पत्थरों के बीच उगी रही एक (दर्भ की) घास को ब्रह्मास्त्र के रूप में अभिमंत्रित किया और उस भयंकर अस्त्र को उस पर छोड़ा। यह बात तुम धीरे से उनसे कहो। ६८३

[आगे कुछ संस्करणों में पाँच पद पाये जाते हैं, जिनमें जयन्त का भागना और सभी देवताओं द्वारा अरक्षित होकर लौट आना और श्रीराम के चरणों पर गिरना आदि बातें विस्तार के साथ कही गयी हैं। श्रीराम ने उसको एक आँख से हीन कर उसे क्षमा कर दिया। यह कहानी है। उ० वे० स्वामीनाथय्यर का विचार है कि ये क्षेपक हैं।]

ॲन्नॉ रिन्नुयिर् मॅन्गिळिक् कार्पॅय रोहेन्
मन्न वॅन्ऱलु माशऱु केहयन् मादॅन्
अन्नै तन्बॅय राहॅन वन्बिनॉ डन्नाळ्
शॊन्न मॅय्म्मॊऴि शॊलुदि मॅय्म्मै तॊडर्न्दोय् 684

मन्न–राजा; ॲन्–मेरे; ऑर् इन् उयिर्–मधुर प्राण-सम; मॅन् किळिक्कु–

कोमल शुक को; आर् पॅयर्–किसके नाम से; ईकेन्–नामकरण करूँगा; ऍन्ऱुलुम्–पूछते ही; माचु अऱु–अकलंक; केकयन् मातु–केकय-पुत्री; ऍन् अन्नै तन्–मेरी माता का; पॅयर् आक–नाम हो; ऍन–ऐसा; अन्पित्तोटु–प्रेम के साथ; अ नाळ् चॊन्न–उस दिन जो कहा गया; मॅय् मॊऴि–वह सत्य वचन; मॅय्म्मै तॊटर्न्तोय्–सत्यनिष्ठ; चॊल्लुति–कहो। ६८४

मै एक कोमल शुक को अपने ही प्राण-सम पाल रही थी। मैंने श्रीराम से पूछा कि राजा! इसको किसका नाम दूँ? तब प्रभु ने कहा, अकलंक मेरी माता केकयतनया का नाम रख लो। उन पर अपना अतिशय मातृप्रेम प्रकट करते हुए उन्होंने जो कहा था, वह सत्यवचन, सत्यनिष्ठ हनुमान! उनसे कहो। ६८४

ऍन्ऱु	रैत्तिनि	दित्तनै	पेरडै	याळम्
ऒन्ऱु	णर्त्तुव	दिल्लॅन	वॅण्णि	युणर्न्दाळ्
तन्ऱि	रुत्तुहि	लिऱ्पॊदि	वुऱ्ऱदु	ताने
वॅन्ऱ	दच्चुडर्	मेलॊडु	कीऴुर	मॅय्याल् 685

ऍन्ऱु–ऐसा; इत्तनै पेर् अटैयाळम्–इतना मुख्य अभिज्ञान; इनितु उरैत्तु–मधुर रीति से कहकर; ऒन्ऱु उणर्त्तुवतु इल्–आगे कहने के लिए कुछ नहीं है; ऍन–ऐसा; ऍण्णि उणर्न्ताळ्–सोचकर जाना; तन् तिरु तुकिलिल्–अपने श्रीवस्त्र में; पॊतिवु उऱ्ऱतु–जो बाँध रखा गया था; मॅय्याल्–सचमुच; मेलॊटु कीऴुर–आकाश और भूमि में समान रहनेवाले; अच् चुटर् तानॆ–उस तेजःपुञ्ज (सूर्य) को; वॅन्ऱतु–जिसने (अपनी ज्योति से) हरा दिया था। ६८५

इतने श्रेष्ठ संकेत के वचन कहने के बाद देवी ने सोचा कि आगे कहने के लिए कुछ नही है। तब उन्होंने अपने वस्त्र में बँधा रहा और आकाश तथा भूमि पर समान रूप से ज्योतिपुजों में शीर्षस्थ सूर्य के समान शोभित—। ६८५

वाङ्गि	नाडन्	मलर्क्कैयि	नन्नदु	मुन्ना
एङ्गि	नानव्	वनुमनु	मॅन्गॊलि	दॅन्ना
वीङ्गि	नान्वियन्	दानुल	हेऴुम्	विऴुङ्गित्
तूङ्गु	कारिरुण्	मुऱ्ऱु	मिरिन्ददु	शुऱ्ऱुम् 686

अन्नतु–उसको; मुन्ना–देना चाहकर; तन् मलर् कैयिन्–अपने कमलहस्त पर; वाङ्किनाळ्–लिया; इतु ऍन् कॊल्–यह क्या है; ऍन्ना–ऐसा; अ अनुमनुम्–उस हनुमान ने भी; एङ्किनान्–उत्सुक हुआ; वियन्तान्–विस्मित हुआ; वीङ्किनान्–फूला न समाया; उलकु एऴुम्–सातो लोकों को; विऴुङ्कि–लीलकर; तूङ्कुम्–रहनेवाला; कार् इरुळ्–काला अन्धकार; चुऱ्ऱुम्–चारो ओर; मुऱ्ऱुम् इरिन्ततु–पूर्ण रूप से भाग गया। ६८६

चूडामणि अपने कमल-से हाथ में लिया। हनुमान विस्मित और आतुर

हुआ कि ओफ़ ! यह कौन सी वस्तु है ? उसका शरीर फूल गया। सातों लोकों को लीलकर जो फैला रहा वह अन्धकार भी सभी ओर से भाग गया। ६८६

मञ्ज लङ्गोळि योनुमिस् मानहर् वन्दान्
अञ्ज लन्नॆन्न वॆङ्गण ररक्क रयिर्त्तार्
शञ्ज लम्बुरि चक्कर वाहन् दळिर्त्त
कञ्ज मुम्मलर् वुड्रन्न कान्दिन कान्दम् 687

मञ्चु अलङ्कु—मेघों को छितरानेवाली; ऑळियोनुम्—ज्योति का सूर्य भी; अञ्चलन्—निर्भय होकर; इ मानकर्—इस बड़े नगर; वन्तान् अॅन्न—आया जैसे; वॆम् कण्—भयंकर आँख वाले; अरक्कर्—राक्षस; अयिर्त्तार्—शंकित हुए; चञ्चलम् पुरि—शंकित रहे; चक्करवाकम्—चक्रवाक पक्षी; तळिर्त्त—लहलहा उठे; कञ्चमुम्—कंजपुष्प; मलर्वु उड्रन—विकसित हुए; कान्तम्—सूर्यकान्त पत्थर; कान्तिन—चमके। ६८७

मेघों को छितरा देनेवाली किरणों के स्वामी सूर्य को डर छोड़कर इस बड़े नगर में आया समझकर भयानक आँखों वाले राक्षस सशंक हो गये। भयचंचल चक्रवाक पक्षी लहलहा उठे। कञ्ज भी खिल उठे। सूर्यकान्त मणियाँ कान्ति बिखरने लगीं। ६८७

कून्दन् मॆन्मळैक् कॊणमुहिल् मेलॆळु कोळिन्
वेन्द नन्नदु मॆल्लिय ड्रन्ड्रिरु मेनि
शेन्द दन्दमिल् शेवहन् शेवडि यॆन्नक्
कान्दु हिन्ड्रदु काट्टिनण् मारुदि कण्डान् 688

मळै कॊळ्—शीतल; मॆल् कून्तल्—कोमल केश रूपी; मुकिल् मेल्—मेघ पर; ॲळु कोळिन् वेन्तन्—सातों ग्रहों के राजा, सूर्य; अन्ततु—सरीखा; मॆल्लियल् तन्—कोमल स्वभाव वाली देवी के; तिरुमेनि चेन्ततु—श्रीशरीर के समान अरुण; अन्तम् इल्—अनन्त; चेवकन्—वीरता से पूर्ण श्रीराम के; चेवटि—श्रीचरण; ॲन्न—सदृश; कान्तुकिन्ड्रतु—चमकनेवाला वह चूडामणि; काट्टिनळ्—(सीता ने) दिखाया; मारुति कण्टान्—मारुति ने देखा। ६८८

देवी के शीतल कोमल केश-मेघ पर सप्तग्रहों के राजा सूर्य के समान जो रहा करता था; सीताजी के श्रीशरीर के समान जो लाल था; अपार वीरता के साथ शोभायमान श्रीराम के चरणों के समान जो तेज निसृत करता था, उस चूडामणि को देवी ने दिखाया और हनुमान ने देखा। ६८८

❀ शूडै यिम्मणि कण्मणि यॊप्पदु तॊन्नाळ्
आडै यिन्गणि रुन्ददु पेरडै याळम्
नाडि वन्दॆन दिन्नुयिर् नल्हिनै नल्लोय्
कोडि यॆन्रु कॊडुत्तनण् मॆय्प्पुहळ् कॊण्डाळ् 689

मॅय् पुकऴ् कॉण्टाळ्–सच्ची यशस्विनी (सीताजी) ने; नाटि वन्तु–खोजते आकर; ॲत्तु इन् उयिर्–मेरे प्रिय प्राण; नल्कित्तै–(रक्षित किये) दिये; नल्लोय्–उत्तम; चूटै इ मणि–यह चूडामणि; कण् मणि ऑप्पतु–आँखों की पुतली के समान है; तॉल् नाळ्–बहुत पहले से; आटैयिन् कण्–मेरे वस्त्र में (बँधा); इरुन्ततु–रहा; पेर् अटैयाळम्–बहुत बड़ा अभिज्ञान है; कोटि–लो; ॲन्ऱु–कहकर; कॉटुत्ततळ्–दिया । ६८६

सत्य यशस्विनी देवी ने कहा कि खोजते आकर तुमने मुझे प्राणदान किया। हे उत्तम ! यह चूडामणि मेरी आँख की पुतली (के समान) है। बहुत दिनों से वस्त्र में बाँधे रखा था। यह सर्वश्रेष्ठ अभिज्ञान है। लो इसे, यह कहकर देवी ने उसे हनुमान के पास दे दिया। ६८९

❀ तॉऴुदु वाङ्गिनन् शुट्रिय तूशिनिन् मुट्रप्
पऴुदु उरावहै पन्दत्तै शॅय्दनन् पल्हाल्
अऴुदु मुम्मै वलङ्गॉ डिरैञ्जिनन् नन्वो
डॅऴुदु पावैयु मेत्तिन ळेहिन निप्पाल् 690

तॉऴुतु वाङ्कित्तन्–नमस्कार करके हनुमान ने ग्रहण किया; मुट्रु–भलीभाँति; पऴुतु उरा वकै–कोई हानि न हो इस रीति से; चुट्रिय तूचिनिन्–पहने हुए वस्त्र में; पन्तत्तै चॅय्तत्तन्–बाँध लिया; पल् काल्–कई बार; अऴुतु–रोकर; मुम्मै वलम् कॉटु–तीन बार प्रदक्षिणा करके; इरैञ्चित्तन्–फिर विनय दरसायी; ॲऴुतु पावैयुम्–लिखित चित्र-सी देवी ने भी; अन्पॉटु–वात्सल्य के साथ; एत्तित्तळ्–आशीर्वाद किया; इप्पाल्–इसके बाद । ६९०

हनुमान ने नमस्कार करके चूडामणि को हाथ में ग्रहण किया। उसकी कोई हानि नहीं हो, इस रीति से उसने उसे अपने वस्त्र में बाँध लिया। उसे रुलाई आ गयी और कई बार रोया। फिर उसने सीताजी की तीन बार परिक्रमा की और फिर से अपनी विनय जतायी। लिखित चित्र-सी देवी ने भी स्नेह के साथ उसे आशीर्वाद दिया। हनुमान् वहाँ से चला। बाद (जो घटा वह वृत्तान्त आगे कहेंगे।)। ६९०

6. पॉऴिलिरुत्त पडलम् (उद्यान-विध्वंस पटल)

नॅऱिक्कॉडु वडक्कुऱ नित्तैप्पित्ति न्निमिर्न्दान्
पॉऱिक्कुल मॅळ्प्पॉऴि लिडैक्कडिदु पोवान्
शिऱुत्तॉऴिन् मुडित्तहऱ ऱीदॅन्न ऱॅरिन्दान्
मऱित्तुमॉर् शॅयऱ्कुरिय कारिय मदित्तान् 691

नॅऱि कॉटु–मार्ग पकड़कर; वटक्कु उऱ–उत्तर की ओर; नित्तैप्पितिल्–जाने के संकल्प के साथ; निमिर्न्तात्–आकार बढ़ा लिया; पॉऱि कुलम् ॲळ–भ्रमरों को

भय से उड़ने को विवश करते हुए; पॉऴिल् इटै–उस अशोकवन-मध्य; कटितु पोवान्–शीघ्र जो गया; चिऱ् तॉऴिल् मुटित्तु–यह छोटा सा काम करके; अकऱल्–छोड़ना; तीतु–भला नहीं; ऍनल्–ऐसा; तॆरिन्तान्–(उसने) सोचा; मऱ्ऱुम्–फिर भी; ओर् चॆयऱ्कु उरिय कारियम्–करने योग्य एक कार्य; मतित्तान्–सोचा। ६९१

हनुमान ने अपना मार्ग लेकर उत्तर दिशा में जाने की बात सोची। इसलिए वह अपना विराट् रूप लेकर अशोकवन-मध्य शीघ्र-शीघ्र जाने लगा तो भ्रमर आक्रान्त होकर ऊपर उड़ने लगे। तब उसने सोचा कि केवल यह छोटा सा काम करके लौट जाना कुछ अच्छा नहीं है। इसलिए करणीय किसी काम के बारे में सोचने लगा। ६९१

ईनमुऱ् पऱ्ऱलरै यॆऱ्ऱि यॆयिऩ्मूदूर्
मीननिल यत्तिऩुह वीशि विऴिमाऩै
माऩवन् मलर्क्कऴलिन् वैत्तुमिलॆ नॆन्ऱाल्
आऩपॊऴु दॆप्परिशि नाऩडिय नावेन् 692

ईनम् उऱ्–नीचकर्म; पऱ्ऱलरै–शत्रुओं को; ऍऱ्ऱि–पीटकर, मारकर; ऍयिल् मूतूर्–प्राचीरवलयित पुरातन नगर लंका को; मीन् तिलयत्तिऩ्–मकरालय में; उक वीचि–छितराते हुए फेंककर; विऴि माऩै–मृगनयनी सीता को; माऩवन्–सम्मान्य श्रीराम के; मलर् कऴलिल्–कमलचरणों पर; वैत्तुमिलॆन्–ले जाकर नहीं छोड़ा; ऍन्ऱाल्–तो; आऩ पॊऴुतु–तब; ऍ परिचिन् नाऩ–किस रीति से मैं; अटियन् आवेन्–दास बना। ६९२

नीच-कर्म शत्रु राक्षसों को पीटकर, प्राचीरवलयित पुरातन नगर लंका को मकरालय में खण्ड-खण्ड करके न फेंककर मृगनयनी सीताजी को श्रीराम के कमल-चरण पर अर्पित नहीं किया मैंने। तो मैं किस तरह का सेवक बना ? । ६९२

वञ्जनै यरक्कनै नॆरुक्किनॆडु वालाल्
अञ्जिनुड नञ्जुदलै तोळुऱ् वशैत्ते
वॆञ्जिरैयिल् वैत्तुमिलॆन् वॆन्ऱुमिलॆ नॆन्ऱाल्
तञ्जमीरु वर्क्कीरुव रॆन्ऱ्रह वामो 693

वञ्चतै अरक्कतै–चोर राक्षस को; नॆटु वालाल्–लम्बी पूंछ से; अञ्चिन् उटन्–पाँच जोड़; अञ्चु तलै–पाँच सिरों; तोळ् उऱ्–कन्धों को लगाकर; नॆरुक्कि अचैत्तु–कसकर बाँधकर; वॆम् चिऱैयिल्–भयानक जेल में; वैत्तुम् इलॆन्–न डाला भी; वॆन्ऱुम् इलॆन्–न हराया भी; ऍन्ऱाल्–तो; ऒरुवर्क्कु ऒरुवर्–एक का दूसरा; तञ्चम् ऍन्ऱल्–आश्रयदाता है कहना; तकवु आमो–युक्त होगा क्या। ६९३

मैंने अपनी लम्बी पूंछ में चोर रावण के दसों सिरों और बीसों भुजाओं को मिलाकर कस के बाँधकर कठोर कारागार में भी नहीं डाला। न

उसे युद्ध करके हराया। तब एक के दूसरे (श्रीराम के सुग्रीव) आश्रय-दाता है —यह कथन उचित (अर्थपूर्ण) हो सकता है क्या ?। ६९३

कण्डनिरु दक्कडल् कलक्कियॆऩ् वलत्ताल्
तिण्डिऱ् लरक्कनु मिरुक्कवॊर् तिऱत्तिऩ्
मण्डवुद रत्तवळ् वडिक्कुऴल् पिडित्तुक्
कॊण्डुशिऱै वैत्तिडुद लिऱ्कुऱैयु मुण्डो 694

कण्ट–अपना देखा हुआ; निरुत कटल्–राक्षस-सागर; ऎऩ् वलत्ताल्–अपने बल से; कलक्कि–मथकर; तिण् तिऱल् अरक्कतुम्–अति बलवान राक्षस के भी; इरुक्क–देखते रहते; ओर् तिऱत्तिऩ्–अपनी अनुपम शक्ति से; मण्ट उतरत्तवळ्–मन्द उदर वाली (मन्दोदरी) का; वटि कुऴल्–सँवारा केश; पिटित्तु–पकड़कर; चिऱै कॊण्टु वैत्तिटुतलिल्–जेल में ले जा डाल देना; कुऱैयुम् उण्टो–दोषयुक्त होगा क्या। ६९४

अपने देखे राक्षस-सागर को अपने बल से मथकर अति बलिष्ठ रावण के देखते-देखते अपने अप्रतिम बल से मंद उदर वाली मन्दोदरी का सँवारा केश पकड़ खींच ले जाकर जेल में डाल दूँ तो वह क्या अपराध बन सकता है ?। ६९४

मीट्टुमिनि यॆण्णुम्विनै वेऱुमुळ दन्ऱाल्
ओट्टियिव् वरक्करुयि रुण्डुरिमै यॆल्लाम्
काट्टुमदु वेहरुम मऱ्ऱवर् कडुम्बोर्
मूट्टुम्वहै यावदुहॊ लॆन्ऱुमुयल् हिन्ऱान् 695

मीट्टुम्–फिरकर; इति–अब; ऎण्णुम् विनै–सोचने योग्य काम; वेऱुम् उळतु अन्ऱु–अन्य कुछ नहीं है; इ अरक्कर् उयिर्–इन राक्षसों के प्राण; ओट्टि–दूरकर; उण्टु–उनको मारकर; उरिमै ऎल्लाम्–श्रीराम के दास का कर्तव्य सब; काट्टुम् अतुवे–कर दिखाना ही; करुमम्–करणीय काम है; अवर्–वे; कटुम् पोर्–घोर युद्ध; मूट्टुम्–आरम्भ करें; वकै यावतु कॊल्–इसका उपाय कौन सा है; ऎन्ऱु–ऐसा; मुयल्किन्ऱान्–उपाय सोचने लगा। ६९५

आगे क्या कोई काम है जो किया जाना चाहिए। इन राक्षसों के प्राण हर लेना ही कर्तव्य कार्य है। तभी सेवक के नाते अपना अधिकार जताने का काम होगा। अब राक्षसों को घोर युद्ध करने आने को मजबूर करूँ, इसका उपाय क्या है ? हनुमान उपाय सोचने लगा। ६९५

इप्पॊऴि लिनैक्कडि दिऱक्कुवॆ निऱुत्ताल्
अप्पॆरिय पूशल्शॆवि शार्दलु मरक्कर्
वॆप्पुऱु शिनत्तरॆदिर् मेल्वरुवर् वन्दाल्
तुप्पुऱ मुरुक्कियुयि रुण्वलिदु शूदाल् 696

इ पॊऴिलिनै–इस अशोक वन को; कटितु इऱुक्कुवॆऩ्–शीघ्र तोड़कर नष्ट करूँगा; इऱुत्ताल्–मिटाऊँ तो; अ पॆरिय पूचल्–वह बड़ा शोर; चॆवि चार्तलुम्–कान में पड़ेगा तो तुरन्त; अरक्कर्–राक्षस; वॆप्पु उऱ–गरम हो; चिऩत्तर्–कोप से भरे; ऍतिर् मेल् वरुवर्–मुझ पर आक्रमण करने आएँगे; वन्ताल्–आएँ तो; तुप्पु उऱ–बल लगाकर; मुरुक्कि–मारूँगा और; उयिर् उण्पल्–जान खा लूँगा; इतु चूतु–यही उपाय है। ६९६

अब मैं इस अशोक वन को शीघ्र मिटाऊँगा। उसका शोर उनके कानों में पड़ेगा तो वे भयकर क्रोध के साथ मुझ पर धावा बोलने आएँगे; जब वे आएँगे तब उन्हें अपना बल दरसाकर उनके प्राण हर लूँगा। यही अच्छा उपाय है। ६९६

वन्दवर्हळ् वन्दवर्हण् मीळ्हिलर् मडिन्दाल्
वॆन्दिऱ लरक्कनुम् विलक्करु वलत्ताल्
मुन्दुमॆंदि लन्नवन् मुडित्तलै मुडित्तॆन्
शिन्दैयुरु वॆन्दुयर् तविर्त्तिनिदु शॆल्वेन् 697

वन्तवर्कळ्–आनेवाले; वन्तवर्कळ्–और आनेवाले; मीळ्किलर्–न लौट कर; मटिन्ताल्–मर जाएँगे तो; वॆम् तिऱल् अरक्कनुम्–कठोर बलशाली राक्षस रावण भी; विलक्कु अरु वलत्ताल्–अवार्य बल के साथ; मुन्तुम् ऍतिल्–सामने आया तो; अन्नवन् मुटि तलै–उसके किरीटधारी सिरों को; मुटित्तु–तोड़कर उसको मारकर; ऍऩ् चिन्तै उऱ–अपने मन में रहनेवाले; वॆम् तुयर्–कठोर दुःख को; तविर्त्तु–दूर करके; इतितु चॆल्वेऩ्–खुशी से लौट जाऊँगा। ६९७

जब चढ़ आनेवाले मरेंगे और लौट नही जाएँगे, तब कठोर बलिष्ठ रावण स्वयं अपार बल लेकर आयगा। तब उसके किरीटधारी सिरों को तोड़ दूँगा और उसे मार दूँगा। तब मेरे मन का बड़ा सन्तापक दुःख दूर हो जायगा और मैं ख़ुशी से लौट जाऊँगा। ६९७

ऍन्ऱुनिनै याविरवि चन्दिर नियङ्गुम्
कुन्ऱमिरु तोळनैय तन्नुरुवु कॊण्डान्
अन्ऱुल हॆयिऱ्ऱिडैकॊ ळेन्ऱॆन लानान्
तुन्ऱुहडि काविनै यडिक्कॊडु तुहैत्तान् 698

ऍन्ऱु निनैया–ऐसा सोचकर; इरवि चन्तिरन्–रवि और शशि; इयङ्कुम्–जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुन्ऱम् अनैय–उस मेरु के समान; इरु तोळ्–दो कन्धों वाला; तन् उरुवु–अपना विराट् रूप; कॊण्टान्–धर लिया (हनुमान ने); अन्ऱु–उस (प्राचीन) दिन; उलकु–भूमि को; ऍयिऱ्ऱु इटै–दाँतों के मध्य; कॊळ् एन्ऱ ऍनल् आनान्–जिन्होंने उठा लिया उन वराहावतार के समान बना; तुन्ऱु–तरुओं से खूब भरे; कटि काविनै–सुरक्षित अशोक वन को; अटि कॊटु–पैरों से; तुकैत्तान्–रौंदकर मिटाने लगा। ६९८

ऐसा सोचकर हनुमान ने अपना विश्वरूप ले लिया। उसके कन्धे दो मेरुओं के समान फूल उठे, जिसके चारों ओर रवि और शशि परिक्रमा करते घूमते है। वह उन वराहावतार के समान भी लगा, जिन्होंने प्राचीन समय में भूमि को अपने दाँतों के मध्य उठा लिया था। अब वह उस वन को अपने पैरों से तोड़ने-रौंदने लगा। ६९८

मुडिन्दन पिळन्दन मुरिन्दन नॅरिन्द
मडिन्दन पॉडिन्दन मऴिन्दन मुऴिन्द
इडिन्दन तहर्न्दन वॅरिन्दन करिन्द
ऑडिन्दन वॉशिन्दन वुदिर्न्दन पिदिर्न्द 699

मुटिन्तत्त-(अनेक) वृक्ष मिटे; पिळन्तत्त-टूटे; मुरिन्तत्त-झुके; नॅरिन्त-आपस में टकराकर टूटे; मटिन्तत्त-सिर कटकर गिरे; पॉटिन्तत्त-चूर-चूर हुए; मऴिन्तत्त-औंधे गिरे; मुऴिन्त-खण्ड-खण्ड हुए; इटिन्तत्त-प्रहरित होकर मिटे; तकर्न्तत्त-छिन्न-भिन्न हुए; ऍरिन्तत्त--जले; करिन्त-राख बने; ऑटिन्तत्त-फूटे; ओचिन्तत्त-लचककर लटके; उतिर्न्तत्त-चू पड़े; पितिर्न्त-फटे। ६९९

उसके प्रहारों से अनेक वृक्ष मिटे। अनेक चिरे। अनेक झुके। अनेक आपस में टकराकर टूटे। अनेक सिर के वल औंधे गिरे। अनेक चूर्ण हुए। अनेक अस्त-व्यस्त हुए। अनेक टकराकर नष्ट हुए। अनेक खण्ड-खण्ड हुए। अनेक जल गये। अनेक राख वने। अनेक कटे। अनेक लचककर झुक गये। अनेक दुर्वल होकर टूटे। और अनेक फट गये। ६९९

वेरॊडु परिन्दशिल वॅन्दशिल विण्णिल्
कारॊडु शॅऴिन्दशिल कालित्तॊडु वेलैत्
तूरॊडु मऴिन्दशिल तुम्बियॊडु वात्तोर्
ऊरॊडु मलैन्दशिल वुक्कशिल नॅक्क 700

चिल-कुछ; वेरॊटु परिन्त-जड़ खोकर गिरे; चिल वॅन्त-कुछ झुलसे; चिल-कुछ; विण्णिल्-आकाश में; कारॊटु-मेघों के साथ; चॅऴिन्त-सट गये; चिल-कुछ; कालित्तॊटु-हवा से; वेलै-समुद्र के; तूरॊटु-पंक में; मऴिन्त-धँसकर मिटे; चिल-कुछ; तुम्पियॊटु-भ्रमरों के साथ; वात्तोर् ऊरॊटु-देवों के नगर पर; मलैन्त-टकराए; चिल-कुछ; उक्क-चूर्ण होकर गिरे; चिल नॅक्क-कुछ पिचक गये। ७००

कुछ तरु छिन्नमूल हुए। कुछ झुलसे। कुछ आकाश में जाकर मेघों के साथ सट गये। कुछ हवा के साथ उड़कर समुद्र में गिरे और पंक में धँसकर मिटे। कुछ भ्रमरों के साथ उठकर स्वर्ग से जाकर टकराए। कुछ चूर-चूर होकर चू पड़े। कुछ दबकर विकृत हो गये। ७००

शोलैमुदन् मऱ्ऱवै शुळऱ्ऱिय तिशैप्पोर्
आलैनुह रक्कुळहु मालवडि पऱ्ऱा
मेलिनिमिर विट्टन विशुम्बिलवळि मीप्पोय्
वालवर्ह णन्दन वनत्तैयु मडित्त 701

चोलै मुतल्–मेघ-सहित रहे; मऱ्ऱवै–अन्य कुछ पेड़; चुळऱ्ऱिय–घूमते हुए; तिचै पोर् यालै–युद्धोत्साही दिग्गजों के; नुकर–खाने के लिए; कुळकुम् आत–पत्तों के गोलक बने; अटि पऱ्ऱा–तना पकड़कर; मेल् निमिर विट्टत–जो ऊपर उछाले गये; विचुम्पिल् वळि–उन्होंने आकाश मार्ग से; मी पोय्–ऊपर जाकर; वालवर्कळ् नन्तत वनत्तैयुम्–देवों के नन्दनवनों को भी; मटित्त–मिटा दिये। ७०१

मेघाच्छादित कुछ पेड़, जो हनुमान से फेंके गये, युद्धोत्साही दिग्गजों के खाने के 'गोलक' बने। हनुमान ने कुछ पेड़ों के निम्न भाग को पकड़कर ऊपर फेंका। उन्होंने आकाश में जाकर देवों के नन्दनवनों को मिटा दिया। ७०१

अलैन्दन कडऱ्ऱिरै यरक्करहन् माडम्
कुलैन्दुह विडिन्दन कुलक्किरिह ळोडु
मलैन्दुपॉडि युऱ्ऱन मयङ्गिनॅडु वानत्
तुलैन्दुविळु मीनिनॊडु वॅण्मल रुदिर्न्द 702

कटल् तिरै–समुद्र की तरंगें; अलैन्तत–हिलोरे लेने लगीं; अरक्कर्–राक्षसों के; अकल् माटम्–बड़े-बड़े मकान; कुलैन्तु उक–ढहकर गिरते हुए; इटिन्तत–टूटे; कुल किरिकळोटु–आठ कुलगिरियों के साथ; मलैन्तु–वे तरु टकराकर; पॊटि उऱ्ऱत–चूर-चूर हो गये; नॅटु वालत्तु–लम्बे आकाश में; उलैन्तु विळु–अस्त-व्यस्त होकर; गिरनेवाले; मीतितॊटु–नक्षत्रों के साथ; मयङ्कि–मिश्रित होकर; वॅण्मलर्–श्वेत पुष्प; उतिर्न्त–नीचे गिरे। ७०२

कुछ पेड़ समुद्र में जाकर गिरे और उसकी तरंगें उद्वेलित हुईं। ऐसे पेड़ों के गिरने से उस नगर के राक्षसों के विशाल प्रासाद टूट-फूट गये। कुछ तरु आठ कुलगिरियों (हिमालय, मन्दर, कैलास, विन्ध्य, निषाद, हेमकूट, नील, गन्धमादन) से जाकर टकराये और चूर-चूर हो गये। आकाश से नक्षत्र अस्त-व्यस्त होकर गिरे और इन पेड़ों के श्वेत रंग के पुष्प भी मिश्रित होकर नीचे गिरे। ७०२

मुडक्कुनॅडु वेरॊडु मुहन्दुलह मुऱ्ऱुम्
कडक्कुम्वहै वीशिन कळित्तदिशै यानै
मडप्पिडियि नुक्कुदव मैयिनिमिर् कैवैत्
तिडुक्कियन वॊत्तन वॅयिऱ्ऱिनिडै नालव 703

मुटक्कु–कुंचित; नॅटु वेरॊटु–लम्बी जड़ों के साथ; मुकन्तु–उठाकर; उलकम्

मुर्रुम् कटक्कुम् वर्क–भूमि भर को पार कर जाएँ, ऐसा; वीचित्त–हनुमान द्वारा फेंके गये वृक्ष; कळितृत तिचै यात्तै–मत्त दिग्गजों के; अयिर्र्रित् इटै–दाँतों के मध्य; नालुव–लटकते हैं; मट पिटियित्तुक्कु–बाल हथिनियों को; उतव–देने के लिए; मैयित् निमिर्–मेघ के समान उठी हुई; कै वैत्तु–अपनी सूँड़ में लेकर; इटुक्कियत्त ओत्तत–पकड़ लिये गये, जैसे लगे। ७०३

हनुमान ने कुछ पेड़ों को इस वेग के साथ फेंका कि वे कुञ्चित जड़ों के साथ संसार भर को पार करते हुए गये और दिग्गजों के दाँतों पर अटके लटके रहे। तब ऐसा लगा, मानो उन दिग्गजों ने अपनी सुन्दर बाल हथिनियों को खिलाने के लिए अपने दाँतों के बीच उन्हें पकड़ रखा हो। ७०३

विञ्जैयुल हत्तिनु मियक्कर्मलै मेलुम्
तुञ्जुदलिल् वानवर् तुरक्कनह रत्तुम्
पञ्जियडि वञ्जियर्हण् मॊय्त्ततर् परित्तार्
नञ्जमनै यानुडैय शोलैयि नरुम्बू 704

नञ्चम् अतैयातुटैय–विष-सम रावण के; चोलैयिन् नरुम् पू–उद्यान के सुवासित फूल; विञ्चै उलकत्तित्तुम्–विद्याधरलोक में और; इयक्कर् मलै मेलुम्–यक्षों के पर्वतो पर; तुञ्चुतल् इल्–अनिद्र; वानवर् तुरक्क नकरत्तुम्–देवों के स्वर्गलोक में; पञ्चि अटि–लाक्षारसरंजित चरणों वाली; वञ्चियर्कळ्–अप्सराओं ने; मॊय्त्ततर्–भीड़ में आकर; परित्तार्–तोड़ लिये। ७०४

विष-समान राक्षस रावण के अशोक वन के पेड़ सब जगह आकर गिर गये। इसलिए उनके सुगन्धित फूलों को विद्याधरों के लोकों में, यक्षों के पर्वतों पर, और अनिद्र देवों के स्वर्गलोक में, सर्वत्र लाक्षारसरंजित चरण वाली सुन्दरियाँ भीड़ लगाए आकर चुनने लगी। ७०४

पॊन्रिणि मणिप्परु मरन्दिशैहळ् पोव
मिन्रिरिव वॊत्तन वॆयिरिरिव वॊत्त
ऒन्रिनॊडु मॊन्रिडै पुडैत्तुदिर्व वूळि
तन्रिरळ्ह ळोडुविळ् तारहैयु मॊत्त 705

पॊन् तिणि–स्वर्ण में जड़ित मणियों के बने; परु मरम्–स्थूल तरु; तिचैकळ् पोव–नाना दिशाओ में जो गये; मिन् तिरिव–बिजलियाँ संचार करतीं; ऒत्तन–जैसे लगे; वॆयिल् तिरिव ऒत्त–(अनेक) सूर्य चलते जैसे लगे; ऒन्रितॊटुम् ऒन्रु इटै पुटैत्तु–एक-दूसरे से बीच में टकराकर; उतिर्व–चूर-चूर होकर गिरे; ऊळि–युगान्त में; तन् तिरळ्कळोटु विळुम्–अपने समूहों के साथ गिरनेवाले; तारकैयुम् ऒत्त–ताराओ के समान भी लगे। ७०५

अनेक वृक्ष मणि-जटित स्वर्ण के थे। वे जब चारों दिशाओं में जा रहे थे, तब वे बिजली के समान लगे; अनेक सूर्य चलते हों, ऐसा भी

लगे। वे आपस में टकराकर जब चूर-चूर हो चू पड़े, तब युगान्त में गिरनेवाले तारासमूहों के समान लगे। ७०५

पुळ्ळिनॉडु वण्डुमिजि कुडगडिहॉळ् पूवुम्
कळ्ळुमुहै युन्दळिर्ह ळोडिनिय कायुम्
वॆळ्ळनॆडु वेलैयिडै मीऩिनम् बिळुङ्गित्
तुळ्ळिऩ मरऩ्बड नॆरिन्दऩ तुडित्त 706

पुळ्ळिनॊटु–खगों के साथ; वण्टुम् मिजिरुम्–भ्रमर और ततैये; कटि कॊळ् पूवुम्–सुगन्धित फूल; कळ्ळुम्–शहद; मुकैयुम्–कलियाँ; तळिर्कळोटु इनिय कायुम्–पल्लवों के साथ मधुर अपक्व फल; वॆळ्ळ नॆटु वेलैयिटै–जल-भरे विशाल समुद्र-मध्य; मीऩ् इनम्–मछलियों का झुण्ड; विळुङ्कि–निगलकर; तुळ्ळिऩ–उछले; मरऩ् पट–पेड़ों के लगने से; नॆरिन्तऩ तुटित्त–दबकर तड़पे। ७०६

समुद्र की मछलियाँ पक्षियों, भ्रमरों, सुगन्धित पुष्पों, मधु, कलियों, पत्रों और फलों को खाकर उछल-कूद मचाने लगी। पर पेड़ों के लगने से, बेचारी दबकर तड़पने लगीं। ७०६

तूविय मलर्त्तॊहै शुमन्दुतिशै तोऱुम्
पूविऩ्मण नाऱुव पुलाल्कमळ्हि लाद
तेवियर्ह ळोडुमुयर् तेवरिऩि दाडुम्
आवियॆऩ लायदिशै यार्हलिह ळम्मा 707

तूविय मलर् तॊकै–बिखरी पुष्प-राशियाँ; चुमन्तु–धारण करके; तिचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; पूविऩ् मणम् नाऱुव–पुष्पगन्धगन्धित; पुलाल् कमळ्किलात–मांसगन्धरहित; तिचै आर्कलिकळ्–चारो दिशाओं में रहनेवाले सागर; तेवर्–देव; उयर् तेवियर्कळोटुम्–उत्तम देवियों के साथ; इऩितु आटुम्–आराम से जिनमें स्नान करते हैं; आवि ऎऩल्–वापियों के समान; आय–बने। ७०७

चारों दिशाओं में स्थित सागरों पर सुगन्धित फूल तैर रहे थे। इसलिए वे सर्वत्र पुष्पवास से बासित थे और उनमें मांसगन्ध नहीं पाया गया। इस कारण वे उन वापियों के समान लगे, जिनमे देवी और देवता लोग आराम और आनन्द के साथ स्नान करते है। ७०७

इडन्दमणि वेदियु मिऱुत्तकडि कावुम्
तॊडर्न्दन तुरन्दऩ पडिन्दुनॆरि दूरक्
कडन्दुशॆल वॆऩ्बदु कडन्ददिऱ कालाल्
नडन्दुशॆल लाहुमॆऩ लाहियदु नऩ्नीर् 708

इटन्त–हनुमान द्वारा फेंकी गयी; मणि वेतियुम्–मणिमय वेदियाँ; इऱुत्त कटि कावुम्–और नष्ट हुआ सुरक्षित अशोक वन; तॊटर्न्तऩ–एक के पीछे एक

लगकर; तुरन्तत्त–जो तेज़ चले; पटिन्तु–(समुद्र में) जाकर गिरे और; नॅरि तूर–पाटकर मार्ग के समान बना दिया, इसलिए; नत्तीर्–अच्छे जल का वह सागर; कटन्तु चॅलवु ॲऩ्पतु–तैरकर या लाँघकर जाने योग्य; कटन्ततु–यह स्थिति छोड़कर; इरु कालाल्–दोनों पैरों से; नटन्तु–चलकर; चॅलल् आकुम्–चल सकते हैं; ॲऩ्ऩल् आकियतु–ऐसा बन गया। ७०८

हनुमान ने रत्न-वेदिकाओं को उखाड़कर फेंका; उनके पीछे पेड़ों को फेंका। वे एक के पीछे एक जाते रहे और समुद्र में गिरकर उसे पाट गये। अब समुद्र पर पक्का मार्ग हो गया और लाँघकर या तैरकर पार किया जाय ऐसी स्थिति में नहीं था। कोई उस पर पैदल चलकर ही उसे पार कर सकता था। ७०८

वेत्तिल्विळै याडुशुड रोनित्तॊळि विम्मुम्
वानित्तिडै वीशिय विरुम्बणै मरत्ताल्
तानवर्हण् माळिहै तहर्न्दुपॊडि यात्त
वानविडि यालिडियु माल्वरैहण् मात्त 709

वेत्तिल्–ग्रीष्म ऋतु में; विळैयाटु–अपनी पूरी उमंग में रहनेवाले; चुटरोत्तिन्–किरणमाली की तरह; ऑळि विम्मुम्–प्रकाश से भरे; वात्तिन् इटै–आकाश में; वीचिय–फेंके गये; इरुम् पणै मरत्ताल्–बड़े और स्थूल तरुओं से; वात्त इटियाल्–आकाश के वज्र से; इटियुम् माल् वरैकळ् मात्त–टूटनेवाले बड़े पर्वतों की भाँति; तानवर्कळ् माळिकै–दानवों के प्रासाद; तकर्न्तु पॊटि आत्त–ढहकर चूर्ण हुए। ७०९

आकाश ग्रीष्म-विलासी सूर्य के समान बहुत ही ज्वलन्त बन गया। तब हनुमान-प्रेरित तरुओं से आकाश-वज्राहत पर्वतों के समान दानवों के प्रासाद टूटे-फूटे और चूर हुए। ७०९

ऍण्णिऱरु कोडिहळ् ऍरिन्दत्त शॅरिन्दे
तण्णॅन्मळै पोलिडै तळैत्तत्तु शलत्ताल्
अण्णलनु मात्तड लिरावणन दन्नाळ्
विण्णिनुमॊर् शोलैयुळ दामॆन्न विरित्तान् 710

चलत्ताल्–क्रोध के साथ; ऍरिन्तत्त–हनुमान से जो फेंके गये; ऍण् इल्–असंख्यक; तरु कोटिकळ्–वृक्षवृन्द; चॅरिन्तु–ठस भरकर; तण् ऍन् मळैपोल्–शीतल मेघों के समान; इटै तळैत्ततु–अन्तरिक्ष में घने रूप से लटके रहे; अण्णल् अनुमान्–महिमावान हनुमान ने; अ नाळ्–उस दिन; अटल् इरावणततु–बलवान रावण का; विण्णिलुम् ऑर् चोलै–आकाश में भी एक अशोक वन; उळतु आम् ऍन्न–हो जैसे; विरित्तान्–फैला दिया। ७१०

हनुमान के द्वारा अपार क्रोध के साथ फेंके गये असंख्य तरुओं के समूह अन्तरिक्ष में मेघों के समान दिखे। महिमामय हनुमान ने इस तरह

उन तरुओं को बिखेर दिया, मानो वहाँ (अन्तरिक्ष में) बलवान रावण का और एक उपवन बन गया हो। ७१०

तेनुऱै तुळिप्पनिऱै पुट्पल शिलम्बप्
पूनिऱै मणित्तरु विशुम्बिनिडै पोव
मीन्मुऱै नॅरुक्कवॊळि वाळॊडुविल् वीश
वानिडै नडक्कुनॆडु मानमॆन लान 711

तेन् उऱै—शहद की बूँदें; तुळिप्प—टपकीं; निऱैपुळ्—वहाँ मिले रहे पक्षी; पल चिलम्प—अनेक चहक उठे; पू निऱै—पुष्पकलित; मणि तरु—मणिमय तरु; विचुम्पिन् इटै—आकाश-मध्य; पोव—जाकर; मीन् मुऱै नॅरुक्क—नक्षत्रों को आक्रान्त करने लगे; ऑळि वाळ् ऑटु—प्रकाश तलवार के समान; विल् वीच—और धनु के समान छिटका; वानिटै नटक्कुम्—आकाशचारी; नॅटु मानम् ॲन्तल् आन—बड़े यानों के समान लगे। ७११

पुष्पों से भरे रत्नमय तरु आकाश में जा रहे थे और उनसे शहद की बूँदें टपक रही थीं; और उन पर से अनेक पक्षी चहक रहे थे। नक्षत्र उनसे मिल गये। तब प्रकाश तलवार और धनु के आकार में छूट रहा था। ये तरु इस साज में आकाश में चलनेवाले यान के समान दिखे। ७११

शाकनॆडु माप्पणै तळैत्तन तनिप्पोर्, नाहमनै यानॆऱिय मेनिमिर्व नाळुम्
माहनॆडु वानिडै यिऴिन्दुपुनल् वारुम्, मेहमॆन लाननॆडु माहडलिन् वीऴ्व 712

तनि—अप्रतिम; पोर् नाकम् अनैयान्—युद्धगज के समान (जो रहा) उस हनुमान के; ऍऱिय—फेंकने के कारण; नॅटु मा पणै चाकम्—लम्बी बहुत मोटी शाखाओं और; तळैत्तन—पत्रों से युक्त; मेल् निमिर्व—उद्गत; नॅटु मा कटलिन्—अति विशाल समुद्र में; वीऴ्व—गिरनेवाले तरु; नाळुम्—सदा; नॅटु माक वान्—अति विस्तृत आकाश; इटै इऴिन्तु—मध्य से उतरकर; पुनल् वारुम् मेकम्—जल-ग्राही मेघों; ॲन्तल् आन—के समान भी बने। ७१२

अप्रतिम और युद्धगज के समान उस हनुमान के फेंकने के कारण, लम्बी और मोटी शाखाओं से युक्त, आकाश में उड़कर समुद्र में गिरनेवाले वृक्ष, अति विस्तृत नभ के मध्य से उतरकर आनेवाले जल-ग्राही मेघों के समान लगे। ७१२

ऊन मुऱ्ऱिड मण्णि नुदित्तवर्, आन मुऱ्ऱुबु नण्णिनर् वीडॆनत्
तान कऱ्पहत् तण्डलै विण्डलम्, पोन पुक्कन मुन्नुऱै पॊन्नहर् 713

ऊनम् उऱ्ऱिट—मल (अज्ञान) के होने से; मण्णिल् उतित्तवर्—जो भूमि में जन्म ले चुके वे; आनम् मुऱ्ऱुपु—ज्ञान पूर्ण होने पर; वीटु नण्णिनर् ॲन—स्वर्ग पहुँच जाते जैसे; तान कऱ्पक—दानशील कल्पतरुओं का; तण्टलै—वह अशोक वन; विण् तलम्

पोत्त–आकाश में जाकर; मुन्नु उऱै–पूर्व वास के; पोन्नकर् पुक्कन–स्वर्गलोक पहुँच गये। ७१३

कोई (अविद्याजन्य) अपकृत्य होने से स्वर्ग छोड़कर जो भूमि पर जन्म ले चुके हैं, वे जैसे ज्ञान की पूर्णता प्राप्त करने पर स्वर्ग पहुँच जाते हैं, वैसे ही कल्पतरु-लसित अशोक वन के तरु व्योम में जाकर अपने पूर्ववासस्थल स्वर्गलोक में पहुँच गये हों, ऐसे लगे। ७१३

मणिहॊळ् कुट्टिम मट्टित्तु मण्डवम्
तुणिव डुत्तयल् वाविह डूर्त्तॊळिर्
तिणिशु वर्त्तलज् जिन्दिच् चॆयऱ्करुम्
पणिव डुत्तुयर् कुन्ऱम् वडुत्तरो 714

मणि कोळ्–मणिमण्डित; कुट्टिमम्–चबूतरों को; मट्टित्तु–मटियामेट करके; मण्टपम् तुणि पट्टुत्तु–मण्डपों को छिन्न-भिन्न करके; अयल्–पास की; वाविकळ्–वापियों को; तूर्त्तु–पाटकर; ऑळिर् तिणि–शोभायमान और सुदृढ़; चुवर्–दीवारों को; तलम् चिन्दि–तोड़-फोड़कर भूमि पर बिखेरकर; चॆयऱ्कु अरुम्–दुष्कर; पणि पट्टुत्तु–कार्यों द्वारा बने पदार्थों का नाश करके; उयर् कुन्ऱम्–ऊँचे पर्वतों को; पट्टुत्तु–मिटाकर। ७१४

हनुमान ने मणिमय चबूतरों को तोड़ा-फोड़ा। मण्डपों को तहस-नहस किया। पास रहे जलाशयों को पाट दिया। और पास रही सबल दीवारों को ढहाकर छितरा दिया। बहुत परिश्रम के साथ जो बनाये गये थे, उन सब (मण्डप, मार्ग, उद्यान) का नाश करा दिया। ऊँची गिरियों (या ऊँचे टीलों) को भी मिटा दिया। ७१४

वेङ्गै शॆऱ्ऱु मरामरम् वेर्पऱित्
तोङ्गु कऱ्पहम् पूवॊ डॊडित्तुराय्प्
पाङ्गर्च् चण्बहप् पत्ति पऱित्तयल्
माङ्ग निप्पणै मट्टित्तु माऱ्ऱिये 715

वेङ्कै चॆऱ्ऱु–"वेंगै" तरुओं को तहस-नहस करके; मरामरम्–सालवृक्षों का; वेर् पऱित्तु–उन्मूलन करके; ओङ्कु कऱ्पकम्–ऊँचे कल्पतरुओ को; पू ऑटु ऑटित्तु–पुष्पों के साथ मिटाकर; पाङ्कर् उराय्–पार्श्व में रहे; चण्पक पत्ति–चम्पकतरु-पंक्तियों को; पऱित्तु–उखाड़ फेंककर; अयल् मा कनि पणै–पास में रहे आम के फलों से युक्त डालों को; मट्टित्तु माऱ्ऱि–तोड़कर बिगाड़कर (नष्ट-भ्रष्ट किया)। ७१५

हनुमान ने 'वेंगै' नाम के पेड़, सालवृक्ष, कल्पतरु, चंपक-तरु-पंक्ति सबको निर्मूल किया, पुष्पों के साथ मटियामेट कर दिया। आम के पेड़ थे। उन्हें भी फलों के साथ डालियाँ तोड़कर नष्ट कर दिया। ७१५

शन्द नङ्ग उहर्न्दन ताम्बडर्, इन्द नङ्गळिऩ् वॅन्दॅरि शिन्दिऩ
मुन्द नङ्गऩ् वशन्दऩ् मुहङ्गॉड, नन्द नङ्गळ् कलङ्गि नडुङ्गवे 716

तकर्न्तत–उत्पाटित; चन्ततङ्कळ् ताम्–चन्दन-तरुओं ने; अतङ्कऩ् मुन्तु–मन्मथ के पहले आनेवाले; वचन्तऩ् मुकम् कॅट–वसंत का चेहरा (तेज) बिगाड़ते हुए; नन्तऩङ्कळ्–आकाश के नन्दनवनों को; कलङ्कि नटुङ्क–व्याकुल और भयभीत करते हुए; इन्तऩङ्कळिऩ्–ईंधन की भाँति; वॅन्तु–जलकर; पटर् ॲरि–लगातार आग; चिन्तिऩ–बरसायी। ७१६

चन्दनतरु, जो छिन्न-भिन्न किये गये, ईंधनों के समान निरन्तर आग उगलते रहे, जिससे अनंगमित्र वसन्त का मुख निष्प्रभ हुआ और व्योम के नन्दनवन भयभीत हुए। ७१६

काम रङ्गति वण्डु कलङ्गिड, माम रङ्गण् मडिन्दन मण्णोंड
ताम रङ्ग वरङ्गु तहर्न्दुहप्, पूम रङ्ग ळॅरिन्दु पॉरिन्दवे 717

कामरम् कति–कामर राग सधे रूप से गानेवाले; वण्टु कलङ्किट–भ्रमर बेचैन हुए; मा मरङ्कळ्–बड़े-बड़े वृक्ष; मण्णोंटु मटिन्तऩ–भूमि पर मुड़कर गिरे; अरङ्कु ताम्–नाट्यमंच; अरङ्क–मिट गये; तकर्न्तु उक–टूटकर गिरे ऐसा; पू मरङ्कळ्–पुष्पतरु; ॲरिन्तु पॉरिन्त–जले-भुने। ७१७

'कामर' राग का गान सधे रूप से गानेवाले भ्रमरों को अस्त-व्यस्त करते हुए बड़े-बड़े वृक्ष मिट्टी में मिल गये। अनेक पुष्पतरु जल-भुन गये, जिससे नृत्यशालाएँ मिटी और ढहकर खाक में मिल गयीं। ७१७

कुळैयुङ् गॉम्बुङ् गॉडियुङ् गुयिऱ्कुलम्
विळैयुन् दण्डळिर्च् चूळ्लु मॅऩ्मलर्प्
पुळैयुम् वाशप् पॉदुम्बुम् बॉलन्गॉडेन्
मळैयुम् वण्डु मयिलु मडिन्दवे 718

कुळैयुम्–पत्ते; कॉम्पुम्–और टहनियाँ; कॉटियुम्–लताएँ; कुयिल् कुलम् विळैयुम्–कोकिलकुल के प्यारे; तण् तळिर् चूळ्लुम्–शीतल लताकुंज; मॅऩ् मलर् पुळैयुम्–कोमल फूलों से भरे मार्ग; वाच पॉतुम्पुम्–सुगन्धपूर्ण झाड़ियाँ; पॉलन् कॉळ्–स्वर्णवर्ण में; तेऩ् मळैयुम्–गिरनेवाली शहद की धारें; वण्टुम्–भ्रमर; मयिलुम्–और मयूर; मटिन्त–मिट गये। ७१८

क्या-क्या मिटे ! पत्ते, टहनियाँ, लताएँ, कोकिलकुल, प्यारे शीतल लताकुंज, कोमल पुष्पावृत मार्ग, सुबासित झाड़, स्वर्ण के रंग की शहदवर्षा, भ्रमर और मयूर सब मटियामेट हो गये। ७१८

पवळ माक्कॉडि वोशिन पन्मळै
तुवळु मिऩ्ऩॅऩ्च् चुड्रिडच् चूळ्वरै

तिवळुम् पॉऱ्पणै मामरञ् जेऱ्न्दन
कवळ यानैयि ऩोडैयिऱ् कानुदुव 719

वीचित्त—(हनुमान द्वारा) फेंकी गयी; पवळ मा कॉटि—प्रवाल-लाल-लताओं ने; पल् मळै तुवळुम्—मेघमध्य लचकनेवाली; मिन् ॲत्त—विजली के समान; चूळ् वरै—लंका को घेरे रहे पर्वतों को; चुऱ्ऱिट—लपेट लिया; चेर्न्तत्त—वहाँ जो पहुँचे; तिवळुम्—वे शोभायमान; पॉन् पणै—स्वर्ण-डालों के; मा मरम्—बड़े वृक्ष; कवळ यानैयिन्—कौर खानेवाले गजों के; ओटैयिल्—मुखपट्टों के समान; कानुतुव—तेजोमय रहे। ७१९

हनुमान द्वारा फेंकी हुई प्रवाल-वर्ण लताएँ मेघमध्य चमकनेवाली बिजली के समान पर्वतों पर लिपट गयीं। और स्वर्णमय डालियों-सहित बड़े-बड़े पेड़ बड़े-बड़े कौर खानेवाले गजों के मुखपट्ट के समान प्रकाशमय दिखे। ७१९

पऱवै यार्त्तॆळु मोशैयुम् बन्मरम्, इऱवॆ डुत्त विडिक्कुर लोशैयुम्
अऱव नार्त्तॆळु मोशैयु मण्डत्तिन्, पुऱनि लत्तैयुङ् गैम्मिहप् पोयदे 720

पऱवै आर्त्तु ॲळुम् ओचैयुम्—पक्षी रव कर उठे, वह शोर; पल् मरम् इऱ—अनेक वृक्ष टूटे; ॲटुत्त—तब निकला; इटि कुरल् ओचैयुम्—वज्र-सम नाद; अऱवन्—धर्मवान; आर्त्तु ॲळुम्—(हनुमान) गरज उठा, वह; ओचैयुम्—शोर; अण्टत्तिन् पुऱ निलत्तैयुम्—अण्ड-पार तल को भी; कै मिक पोयतु—पार कर दूर गये। ७२०

पक्षी ध्वनि कर उठे, वह शोर; अनेक तरु टूटकर गिरे, तब उठा वज्र-सम शोर; धर्मरूप हनुमान गर्जन कर उठा, वह शोर —सब अण्ड-पार सर्वत्र पार कर सुनायी दिया। ७२०

पाड लम्बडर् कोङ्गॊडुम् बन्निशैप्, पाड लम्वनि वण्डॊडुम् बः(ह्)ऱिरैप्
पाड लम्बुऱु वेलैयिऱ् पाय्न्दत्त, पाड लम्बॆऱप् पुळ्ळिऩम् बाऱवे 721

पुळ्ळित्तम्—पक्षीगण; पाटु अलम् पॆऱ—बहुत कष्ट पाकर; पाऱ—छितरकर भागे; पाटलम्—पाटलवृक्ष; पटर् कोङ्कॊटुम्—विशाल 'कोङ्गु' वृक्षों के साथ; पन् इचै—उत्कृष्ट राग के साथ; पाटल्—गानेवाले; अम् पति वण्टॊटम्—सुन्दर शीतल (मनोमुग्धकारी) भ्रमरों के साथ; पल् तिरै—अनेक तरंगों से; पाटु अलम्पु उऱ—जिसका तीर नहलाया जाता है; वेलैयिल्—उस समुद्र में; पाय्न्तत्त—जाकर गिरे। ७२१

पाटल और विशाल कोंगु के पेड़ रागयुक्त स्वर निकालनेवाले भ्रमरों के साथ समुद्र में जा गिरे, जिससे पक्षीगण संकट पाकर तितर-बितर हुए और समुद्र में लहरें उठकर तीर से टकराकर उसे नहलाने लगीं। (इसमें यमकालंकार है।)। ७२१

वण्ड लम्बुन लाऱ्ऱिन् मरामरम्, वण्ड लम्बुन लाऱ्ऱिन् मडिन्दत्त
विण्ड लम्बुह नीङ्गिय वॆण्बुनल्, विण्ड लम्बुह नीण्मरम् वीऴ्न्दन 722

वण्टु अलमृपु–भ्रमर जिन पर मँड़राते भन्ना रहे थे; नल् आऱ्ऱिन्–उद्यान के सुन्दर मार्गों में रहे; मरामरम्–(वे) सालवृक्ष; वण्टल्–तलौंछ (पंक) के साथ बहनेवाली; अम् पुत्तल्–और मनोरम जल वाली; आऱ्ऱिन्–नदी में गिरकर; मटिन्तन–नष्ट हुए; विण् तलम् पुक–व्योमलोक में जा गिरे ऐसा; नीङ्किय नीळ् मरम्–फेंके गये लम्बे वृक्ष; विण्टु अलमृपु–श्रीविष्णु के चरण जिससे प्रक्षालित किये गये; कम्–जो आकाश में बहती थी; वॆण् पुत्तल्–उस (आकाशगंगा) के श्वेत जल में; वीळ्न्तन–गिरे। ७२२

उस अशोक वन के मध्य मार्गों पर सालवृक्ष थे और उन पर भ्रमर भन्नाते हुए मँड़रा रहे थे। वे तलौंछ के साथ बहनेवाली नदी में गिरकर पंक में मग्न होकर मिट गये। हनुमान द्वारा आकाश पहुँचाते हुए फेंके गये कुछ वृक्ष आकाशगंगा के श्वेत जल में गिरे; जिस नदी के दिव्य जल से श्रीविष्णु भगवान के श्रीचरणों का प्रक्षालन (ब्रह्मा द्वारा) किया गया था। ७२२

ताम रैत्तडम् बॊय्हैशॆञ् जन्दनम्
ताम रैत्तन वॊत्तदु कॆत्तलिन्
काम रङ्गळि वण्डॊडुङ् गळ्ळॊडुम्
काम रङ्गमळ् पूक्कडल् कण्डवे 723

उकॆत्तलित्–फेकने से; तामरै तटम् पॊय्कै–विशाल कमल-सर; चॆम् चन्तनम् ताम्–लाल चन्दन की लकड़ियों को; अरैत्तन–पीसकर वह लेप उसमें घोल दिया गया हो; ऒत्तलु–वैसा हो गया; का मरम्–उस वन के वृक्षों ने; कामरम् कळि–कामर राग स्वरित करते हुए मत्त रहनेवाले; वण्टॊटुम्–भ्रमरों के साथ; कळ्ळॊटुम्–शहद के साथ और; कमळ् पू कटल् कण्ट–सुगन्ध-भरा पुष्प-सागर (के दृश्य) प्रस्तुत किये। ७२३

हनुमान द्वारा फेंके गये पेड़ों की वजह से कमल-सर चन्दनजलपूर्ण जलाशय-से हो गये। और वे सर अशोक वन के उन पेड़ों, कामर-राग गानेवाले मत्त भ्रमरों और शहदों के कारण पुष्पसागर-से बन गये। ७२३

शिन्दु वारन् दिशैतॊऱुञ् जॆल्ऱन, शिन्दु वारम् बुरैतिरै चेर्न्दन
तन्दु वारम् बुहनॆडुन् दाळ्वरै, तन्दु वारन् दुहळ्पडच् चाय्न्दवे 724

चिन्तुवारम्–काली निर्गुण्डी के पेड़; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; चॆन्ऱन–गये; चिन्तु–सिन्धु में; वार्–लम्बी; अम् पुरै तिरै–ऊँची सुन्दर तरंगें बनाते हुए; चेर्न्तन–गिरे; तम् तुवारम् पुक–गुफाओं में वे तरंगें घुसीं, इसलिए; नॆटुम् ताळ् वरै–विशाल सानुओं से युक्त पर्वत; तम् तुवारम् तुकळ् पट–लंका के द्वारों को चूर करते हुए; चाय्न्त–लुढ़क गये। ७२४

(सिंदुवार) काली निर्गुण्डी के पेड़ चारों ओर गये और सिन्धु में उन्नत तरंगें उठाते हुए गिरे। वे तरंगें पर्वतों की गुफाओं में घुसीं और

उन पर्वतों ने लंका के प्रासादों के द्वारों को तोड़कर उन पर गिरे और उनको ढहा दिये । ७२४

नन्द वानत्तु नाण्मलर् नाऱ्ऱिन, नन्द वानत्तु नाण्मलर् नाऱ्ऱिन
शिन्द वानन् दिरिन्दुहच् चॅम्मणि, शिन्द वाऩन् दिरिन्द तिरॅक्कडल् 725

नन्त वाऩत्तु–अशोक वन नाम के उस नन्दनवन के; नाऱ्ऱ नाळ् मलर्–सुवासपूर्ण ताजे फूल; नन्त–बहुत संख्या में; वाऩत्तु–आकाश में; नाळ् मलर्–नक्षत्र खिले हों जैसे; नाऱ्ऱिन–भर गये; चिन्तु–इमली के पेड़; अ वाऩम् तिरिन्तु उक–उस आकाश में जो फिरकर गिरे तो; तिरै कटल्–तरंग-सहित सागर; वाल् नन्तु–उज्ज्वल शंखों ने; चॅम्मणि चिन्त–लाल मोती छितराए; तिरिन्त–इधर-उधर फिरे । ७२५

अशोक वन नाम के उस नन्दन वन के फूल आकाश में बिखरे और नक्षत्रों के समान लगे । इमली के पेड़, जो फेंके गये थे, आकाश में ऊँचाई तक जाकर तरंग-भरे समुद्र में गिरे, तो चमकदार शंख लाल रत्न (मोती) बिखेरते हुए इधर-उधर फिरे । (७२२ से ७२५वें पद्य तक के सभी पद्यों में यमकालंकार है ।) । ७२५

पुल्लुम् बॉऱ्पणॅप् पन्मणिप् पूमरम्, कॉल्लु मिप्पॉऴ्दु दॅयॅनुङ् गॉळ्हैयाल्
ॲल्लिल् विट्टु विळङ्गिय विन्दिरन्, विल्लु मॊत्तन विण्णुऱ वीशिन 726

विण् उऱ वीचिन–आकाश में पहुँच जाएँ, ऐसा जो फेंके गये; पॊन् पणै पुल्लुम्–स्वर्णशाखा-युक्त; पल् मणि पू मरम्–विविध रत्न-पुष्प-तरु; इप्पॊऴ्ते कॊल्लुम्–अभी नाश कर देगा; ॲतुम् कॊळ्कैयाल्–इस संकेत के कारण; ॲल्लिल्–रात में; विट्टु विळङ्किय–खूब ज्वलन्त; इन्तिरन् विल्लुम्–इन्द्रधनुष के भी; ऒत्तन–समान लगे । ७२६

हनुमान द्वारा स्वर्णडालियों-सहित विविध मणिमय तरु आकाश की ओर फेंके गये । वे रात में उत्पात-संकेत देते हुए इन्द्रधनुष के समान लगे, जिससे यह भासित होता था कि अभी (बड़ा उत्पात होनेवाला है यानी) हनुमान लंका का नाश करा देगा । (रात में इन्द्रधनुष का दिखना उत्पात का द्योतक है ।) । ७२६

मयक्किल् पॉऱ्कुल वल्लिहळ् वारिनेर्, इयक्क ऱत्तिशै तोऱु मॅऱ्ऱिन्दन
वॅयिऱ्क दिर्क्कऱ्ऱै यिऱ्ऱुवि ऴुन्दॅत्त, पुयऱ्क डऱ्ऱलै पुक्कन पोवन 727

मयक्कु इल्–असंशय; पॊन् कुल वल्लिकळ्–स्वर्णलताएँ; वारि–उठाकर; नेर् इयक्कु अऱ–घुमाकर (हनुमान द्वारा); तिचै तोऱम् ऍऱिन्तत–सभी दिशाओं में (जो) फेंकी गयीं; वॆयिल् कतिर् कऱ्ऱै–धूप की किरणों की लटें; इऱ्ऱु–कटकर; विऴुन्त ऍत्त–गिरीं जैसे; पुयल् कटल् तलै–मेघाच्छादित समुद्र में; पुक्कन पोवन–घुसती गयीं । ७२७

शुद्ध स्वर्णमय वल्लरियों को हनुमान ने उठाकर, घुमाकर चारों दिशाओं में दूर फेंका। वे मेघाच्छादित समुद्र में गिरीं जैसे धूप की किरणें कटकर गिरी हों। ७२७

आनैत् तानमु माड लरङ्गमुम्, पानत् तानमुम् वाय्परिप् पन्दियुम्
एनैत् तारणि तेरोंडु मिऱ्ऱन, कानत् तार्दरु वण्णल् कडाववे 728

अण्णल्–महिमावान हनुमान के; कानत्तु आर् तरु–अशोक वन में रहे तरुओं को; कटाव–फेंकने पर; आनै तानमुम्–गजशालाएँ और; आटल् अरङ्कमुम्–नृत्य-शालाएँ; पान तानमुम्–मधुशालाएँ; पाय् परि–सरपट दौड़नेवाले अश्वों को; पन्तियुम्–शालाएँ; ऐनै–और; तार् अणि–हारालंकृत; तेरोटुम्–रथों के साथ; इऱ्ऱन–मिटे। ७२८

महिमामय हनुमान ने अशोक वन के पेड़ों को उखाड़कर फेंका जिससे गजशालाएँ, नृत्यशालाएँ, मधुशालाएँ और अश्वशालाएँ हारालंकृत रथों के साथ तहस-नहस हो गयीं। ७२८

पॅरिय मामर नुम्बॅरुङ् गुन्ऱमुम्, विरिय वीशलिन् मिन्नॅडुम् बॊन्मदिल्
नॅरिय माड नॅरुप्पॅऴ नीऱॅऴ, इरियल् पोन विलङ्गैयु मॅङ्गणुम् 729

पॅरिय मा मरत्तुम्–बड़े-बड़े पेड़ों को; पॅरुम् कुन्ऱमुम्–और बड़े पर्वतों को; विरिय वीचलिन्–दूर-दूर तक फेंकने से; मिन्–चमकदार; नॅटुम् पॊन् मतिल्–दीर्घ स्वर्ण-प्राचीर; नॅरिय–दरार-लगे हो गये; माटम्–प्रासाद; नॅरुप्पु ॲऴ–जल उठे; नीऱु ॲऴ–राख उड़े; इलङ्कैयुम्–लंका नगरी के सभी; ऍङ्कणुम्–सब ओर; इरियल् पोन–भाग गये। ७२९

हनुमान बहुत बड़े-बड़े तरुओं और गिरियों को उखाड़कर फेंक रहा था, जिससे प्रभापूर्ण प्राचीर दरारें खा गये। प्रासाद आग हो उठे और राख निकली। लंकावासी सभी भयभीत हो सर्वत्र तितर-बितर भाग गये। ७२९

तॊण्डैयङ् गनिवाय्च् चीदै तुवक्किना लॅन्नैच् चुट्टाय्
विण्डवा नवर्हण् मुन्ने विरिपॊऴि लिऱुत्तु वीक्कक्
कण्डनै निन्ऱा यॆन्ऱु काणुमे लरक्कन् काय्दल्
उण्डॆन वॆरुवि नान्नो लॊऴित्तन नुडिविन् कोमान् 730

तॊण्टै अम् कनि वाय्–सुन्दर बिम्बाधरा; चीतै तुवक्किनाल्–सीता के (स्नेह) बन्धन से; ऍन्नै चुट्टाय्–तुमने मुझे ताप दिया; विण्ट वानवर्कळ्–मुझसे डरकर पलायित देवों; मुन्नें–के सामने; विरि पॊऴिल्–विस्तृत उपवन को; इऱुत्तु वीक्क–(हनुमान द्वारा) नष्ट होते; कण्टनै–देखते (चुप); निन्ऱाय्–खड़े रहे; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; काणुमेल्–देखेगा तो; अरक्कन् कायतल् उण्टु ऍन–राक्षस रावण त्रास देगा, ऐसा सोचकर; वॆरुविनान् पोल्–डर गया हो जैसे; उटुविन् कोमान्–उडुपति; ऒऴित्तनन्–छिप गया। ७३०

चन्द्र छिप गया। (कवि की उत्प्रेक्षा है कि) चन्द्र ने सोचा कि रावण मुझे देखेगा तो सताएगा, क्योंकि वह सोचता होगा कि मैंने बिम्बाधरा सीता के स्नेहबन्धन के कारण उसे जलाया। फिर किसी वानर ने अशोक वन के विशाल उद्यान को मिट्टी में मिलाया और मैं चुप देखते खड़ा रहा। उडुपति मानो इससे डरकर छिप गया। ७३०

काशरु मणियुम् वॉन्नुङ् कान्दमुङ् गजल्व वाय
माशरु मरङ्ग ळाहक् कुयिऱ्ऱिय मदनच् चोलै
आशैह डोरु मैयत् कैहळा लळ्ळि यळ्ळि
वीशिन विळक्क लाले विळङ्गिन वुलह मॅल्लाम् 731

काचु अरु–दोषहीन; मणियुम्–रत्न; पॊन्नुम्–और स्वर्ण; कान्तमुम्–सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त मणियाँ; कजल्व आय–जो मनोहारी रूप से विद्यमान हैं; माचु अरु–त्रुटिहीन; मरङ्कळाक कुयिऱ्ऱिय–पेड़ों के रूप में जटित; मतनच् चोलै–मदन-वास-योग्य वह अशोक वन; आचैकळ् तोऱुम्–सभी दिशाओ में; ऐयत्–सम्मान्य हनुमान के; कैक्कळाल् अळ्ळि अळ्ळि वीचित–हाथों से उठा-उठाकर फेंके गये; विळक्कलाले–बड़ा प्रकाश फैला रहे थे, इसलिए; उलकमॅल्लाम्–सारे लोक; विळङ्किन–(अन्धकार में भी) साफ़ रूप से दिखायी दिये। ७३१

वह मदनवास-योग्य अशोक वन निर्दोष रत्नों, स्वर्ण, सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त मणियों आदि से जटित प्रकाशमान पेड़ों से भरा था। हनुमान ने उनको अपने दोनों हाथों से उठा-उठाकर आकाश में फेंका तो सारे लोक अन्धकार में भी उज्ज्वल दिखे। ७३१

कदऱिन वॅरुवि युळ्ळङ् गलङ्गिन विलङ्गु कण्गळ्
कुदऱिन परवै वेलै कुळित्तन कुळित्ति लाद
पदऱिन पदैत्त वानिऱ् परन्दन मऱिन्दु पार्वीळ्न्
दुदऱिन शिऱहै मीळ वॊडुक्किन वुलन्दु पोन 732

विलङ्कु कतऱिन–पशु चिल्ला उठे; वॅरुवि–डरकर; उळ्ळम् कलङ्कित–मन में भ्रमित हुए; कण्कळ् कुतऱिन–उनकी आँखें घाव बनकर रक्त से भर गयीं; परवै–पक्षीगण; वेलै कुळित्तन–समुद्र में डूब गये; कुळित्तु इलात–जो डूबे नहीं वे; पतऱिन पतैत्त–घबड़ा गये, बेचैन हुए; वानिल् परन्तन–आकाश में उड़े; मऱिन्तु–लौटकर; पार् वीळ्न्तु–भूमि पर गिरकर; उतऱिन चिऱकै–पंख फड़फड़ाकर; मीळ ऒटुक्किन–फिर उन्हें समेटकर; उलन्तु पोन–सूख गये (मर गये)। ७३२

उस अशोक वन के पशु चिल्लाये। डरकर व्याकुलमन हुए। उनकी आँखे व्रण-सी हो गयी और उनसे रक्त उमग आया। पक्षीगण समुद्र में गिरकर डूब गये। जो नही डूबे वे बेचैन हो छटपटाये। आकाश में उड़े, फिर नीचे गिरे। उन्होंने अपने पंख फड़फड़ाये फिर समेट लिया और प्राण त्याग दिये। ७३२

तोट्टोडुन् दुदैन्द तॆय्व मरन्दोरुम् तॊडुत्त पुट्टङ्
गूट्टोडुन् दुऱक्कम् बुक्क कुन्ऱन्न कुववुत् तिण्डोळ्
शेट्टहत् परिदि मार्बन् शीऱियुन् दीण्ड ऱन्नाल्
मीट्टवन् करुणै शॆय्दाऱ् पॆरुम्बदम् विळम्ब लामो 733

कुन्ऱु अन्न–पर्वत-सम; कुववु तिण् तोळ्–पुष्ट और सबल कन्धों; चेट्ट अकल्–(और) सुन्दरता में विशाल; परिति मार्पन्–सूर्य-सम प्रकाशमय वक्ष का; चीऱियुम्–(हनुमान की) कोप के साथ भी; तीण्टल् तन्नाल्–स्पर्श-महिमा से; तॆय्व मरम् तोरुम्–हर दिव्य तरु पर; पुळ्–पक्षी; तोट्टोटुम्–पत्रों के साथ; तुतैन्त तॊटुत्त–घने रूप से निर्मित; तम् कूट्टोटुम्–अपने घोंसलों-सहित; तुऱक्कम् पुक्क–स्वर्ग पहुँचे; मीट्टु–फिर; अवन् करुणै चॆय्ताल्–वह कृपा करे तो; पॆरुम् पतम्–(कृपापात्र) जो पद प्राप्त करेंगे; विळम्पल् आमो–उसको कह सकेंगे क्या। ७३३

हनुमान के कन्धे पुष्ट और सबल थे। उसका वक्ष अति सुन्दर रूप से विशाल था। वह क्रोध में ही पेड़ों का नाश करता था और खगकुल मरे। तो भी उसके स्पर्श की महिमा थी कि वे मृत पक्षी स्वर्ग पहुँचे। अगर वह इसके विपरीत कृपा दिखाता तो वे किस (अत्युन्नत) पद को प्राप्त होंगे ? यह हम कह सकते हैं क्या ? । ७३३

पॊय्म्मुरै यरक्कर् काक्कुम् बुळ्ळुरै पुदुमॆन् शोलै
विम्मुरु मुळ्ळत् तन्न मिरुक्कुमव् विरुक्क मॊन्ऱुम्
मुम्मुरै युलह मॆल्ला मुऱ्ऱुऱ मुडिव दान
अम्मुरै यैयन् वैहु मालॆन निन्ऱ दन्ऱे 734

पॊय् मुरै–असत्य के मार्गगामी; अरक्कर् काक्कुम्–राक्षस-पालित; पुळ् उरै–पक्षी के वास के; पुतु मॆन् चोलै–नवीन और कोमल उद्यान में; विम् उरुम्–दुःख-भरे; उळ्ळत्तु अन्नम्–मन की हंसिनी-सी देवी; इरुक्कुम् अ विरुक्कम् ऒन्ऱुम्–(जिसके नीचे) रहती थीं, केवल वह एक शिशुपा वृक्ष; मु मुरै उलकम् ऎल्लाम्–त्रिविध (भू, पाताल, स्वर्ग के) सारे लोक; मुऱ्ऱु उऱ–सम्पूर्ण रूप से; मुटिवतु आन–नष्ट करने आनेवाले; अ मुरै–उस प्रलयकाल में; ऐयन् वैकुम्–प्रभु श्रीविष्णु जिस पर रहते हैं; आल् ऎन्–उस वटपत्र के समान; निन्ऱतु–स्थिर रहा। ७३४

असत्यमार्गगामी राक्षसपालित, खगावास उस अशोक वन में सिर्फ़ वह एक 'शिशुपा' वृक्ष बचा, जिसके तले दुःख-विलोडित मन वाली हंसिनी-सी सीताजी बैठी थीं। वह वृक्ष उस वटपत्र के समान बचा रहा, जिस पर त्रिलोकनाशक प्रलयकाल में प्रभु श्रीविष्णु शयन करते रहते हैं। ७३४

उऱुशुडर्च् चूडैक् काशुक् करशिनै युयिरॊप् पानुक्
करिहुऱि याह विट्टा ळादलान् वऱिय ळन्दो
शॆऱिहुळऱ् चोदैक् कन्ऱोर् शिहामणि तॆरिन्दु वाङ्गि
अॆऱिहड लीव दॆन्न वॆळ्ळुन्दन निरवि यॆन्बान् 735

उरु चुटर्–कान्तियुत; चूटै काचुक्कु अरचिनै–चूडामणियों में राजा को; उयिर् ऑप्पानुक्कु–अपने प्राण-सम श्रीराम के पास; अरि कुरि आक–अभिज्ञान के रूप में; विट्टाळ्–(सीताजी ने) भेज दिया; आतलान्–इसलिए; अन्तो–हाय; वरियळ्–अब किसी आभरण से हीन; चेरिकुळल्–घने केश वाली; चीतैक्कु–सीता को; ऍरि कटल्–तरंग फेंकनेवाला सागर; अन्रु–तब; ओर् चिकामणि–एक चूडामणि; तॅरिन्तु वाङ्कि–चुन लेकर; ईवतु ऍन्न–प्रदान करता हो जैसे; इरवि ऍन्पान्–रवि वह; ऍळुन्तनन्–उग आया। ७३५

तब सूर्य उग आया। सूर्य दूसरे चूडामणि के समान लगा। देवी ने चूडामणियों में राजा अपने चूडामणि को अपने प्राण (-सम) नाथ श्रीराम के पास अभिज्ञान के रूप में भेज दिया। अब उनके पास कोई आभरण नहीं रह गया और वे गरीब हो गयीं। उन घने केश वाली सीताजी को तरंगायमान समुद्र ने दूसरा चूडामणि देना चाहा और चुन लेकर यह चूडामणि दिया हो —ऐसा लगा सूर्य। ७३५

ताळिरुम् पॉळिल्ह ळॅल्लान् दुडैत्तॊरु तमिय निन्रान्
एळिनो डॅळु नाडु मळन्दव नॅन्नलु मानान्
आळियि नडुव णिन्र वरुवरैक् करशु मॊत्तान्
ऊळियि निरुदिक् कालत् तुरुत्तिर मूर्त्ति यॊत्तान् 736

ताळ् इरुम्–हरे-भरे और विशाल; पॉळिल्कळ् ऍल्लाम्–अशोक वन की सारी चीजों को; तुटैत्तु–मिटाकर; ऑरु तमियन् निन्रान्–एकाकी खड़ा रहा (हनुमान); एळिनोटु एळु नाटुम्–सात और सात (चौदह) भुवनों को; अळन्तवनुम्–नापनेवाले (त्रिविक्रम मूर्ति); ऍन्नलुम् आनान्–के समान भी रहा; आळियिन् नटुवण् निन्र–समुद्र-मध्य स्थित; अरुवरैक्कु अरचुम्–श्रेष्ठ पर्वतराज (मेरु) के भी; ऑत्तान्–समान दिखा; ऊळियिन् इरुति कालत्तु–युगान्त के समय; उरुत्तिर मूर्त्ति ऑत्तान्–(प्रलयकालाग्नि-) रुद्र के समान भी दिखा। ७३६

खूब पनपे पल्लवफूल-सहित रहे अशोक वन में रही सभी वस्तुओं को मिट्टी में मिलाकर एकाकी जो खड़ा रहा वह हनुमान, सातों लोकों के मापक त्रिविक्रम श्रीविष्णुदेव के समान दिख रहा था; क्षीरसागर-मध्य स्थित पर्वतराज मेरु के समान भी लगा। वही नहीं; युगान्त के प्रलयकालाग्नि-रुद्र के समान भी शोभा। ७३६

इन्नन्न निहळुम् वेलै यरक्किय रॅळुन्दु पॊङ्गिप्
पॊन्मलै यॅन्न निन्र पुन्तिदनैप् पुरिन्दु नोक्कि
अन्नैयो वॅन्न मेनि यार्हॊलॅन् ररुच मुर्रार्
नन्नुद रुन्नै नोक्कि यरिदियो नङ्गै यॅन्रार् 737

इन्नन्न–इस भाँति काम; निकळुम् वेलै–जब होता रहा, तब; अरक्कियर्–

राक्षसियाँ; ऍळुन्तु–जाग उठीं और; पोङ्कि–खौल उठीं; पोन् मलै ऍन्न–स्वर्ण-गिरि-समान; निन्ऱ पुनितनै–स्थित पावन हनुमान को; पुरिन्तु नोक्कि–खूब देखकर; अन्नै–मैया; ईतु ऍन्न मेनि–यह कैसा रूप है; यार् कॉल्–कौन है; ऍन्ऱु–ऐसा; अच्चम् उऱ्ऱार्–भयभीत हुईं; नन्नुतल् तन्नै–मनोरम ललाटिनी को; नोक्कि–देखकर; नङ्कै–स्त्री; अऱितियो–जानती हो; ऍन्ऱार्–पूछा (उनसे)। ७३७

जब अशोक वन इस भाँति मिट रहा था तब राक्षसियाँ जाग उठीं। यह नाश देखा तो उनका मन उबल उठा। स्वर्णमेरु-सदृश खड़े रहे पावन हनुमान को उन्होंने खूब आँखें गड़ाकर देखा और उद्गार निकाला कि मैया! यह क्या रूप है? यह है कौन? उन्होंने भयभीत होकर मनोरम ललाटिनी सीताजी से पूछा कि देवी! तुम इसे जानती हो क्या?। ७३७

तीयवर् तीय शॅय्द ट्रीयवर् तॅरियि नल्लाल्
तूयवर् तुणिद लुण्डे नुम्मुडैच् चूळ् ऑल्लाम्
आयमा नॅय्द वम्मा निळैयव नरक्कर् शॅय्द
मायमॅन् ऱुरैक्क वेयु मॅय्यॅन मैयल् कॉण्डेन् 738

तीयवर्–बुरे लोग; तीय चॅय्तल्–बुरा काम करें, वह; तीयवर् तॅरियिन् अल्लाल्–बुरे लोग ही जानें, नहीं तो; तूयवर् तुणितल् उण्टे–अच्छे लोग जान सकेंगे क्या; ऍल्लाम्–सब; नुम्मुटै चूळल्–तुम लोगों का षड्यन्त्र है; आय मान्–मृग बना; ऍय्त–(मारीच) मेरे पास आया; अ मान्–वह हरिण; अरक्कर् चॅय्त मायम्–राक्षसों की की हुई माया है; ऍन्ऱु–ऐसा; इळैयवन् उरैक्कवेयुम्–देवर लक्ष्मण ने कहा तो भी; मॅय् ऍन्न–सच के; मैयल् कॉण्टेन्–भ्रम में पड़ी। ७३८

देवी ने कुछ विचित्र उत्तर दिया। बुरे मनुष्य ही बुरों की बात जानते है। नहीं तो अच्छे मनुष्य जान सकेंगे क्या? यह सब तुम लोगों का ही षड्यन्त्र होगा। जंगल में हरिण बनकर मारीच आया और मेरे देवर ने कहा कि यह माया-मृग है। पर मैं उसे सच्चा मृग मानकर मोहित हुई थी। ७३८

ऍन्ऱन ळरक्कि मार्हळ् वयिऱलैत् तिरियल् पोहिक्
कुन्ऱमु मुलहुम् वानुङ् गडल्हळुङ् गुलैय वोड
निन्ऱदोर् शयित्तङ् गण्डा नीक्कुव लिदनै यॅन्ऱात्
तन्ऱडक् कॅह णीट्टिप् पऱ्ऱिनात् ऱादै यॉप्पान् 739

ऍन्ऱतळ्–ऐसा कहा; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटती हुई; इरियल् पोकि–तितर-बितर होकर; कुन्ऱमुम्–पर्वतों; उलकुम्–लोक; वानुम्–आकाश; कटल्कळुम्–समुद्रों के; कुलैय–अस्त-व्यस्त होकर; ओट–भागते; तातै ऑप्पान्–अपने पिता (वायु-) सम जो रहा उसने; निन्ऱतु–वहाँ स्थित; ओर् चयित्तम्–एक 'चैत्य' (यज्ञशाला) को; कण्टान्–देखा; इतनै नीक्कुवल्–इसको

उखाड़ दूँगा; ऍन्नुता–सोचकर; तन् तट कैकळ्–अपना विशाल हाथ; नीट्टि–बढ़ाकर; पऱ्ऱितान्–उसको पकड़ लिया। ७३९

सीताजी ने यह उत्तर दिया। राक्षसियाँ पेट पीटकर तितर-वितर हो भागीं, जिससे पर्वत, भूतल, आकाश और सागर व्यथित हुए। तव अपने पिता, पवन-सदृश हनुमान ने वहाँ एक चैत्य (यज्ञमण्डप) को देख लिया। 'इसको हटाऊँगा' —यह विचार करके उसने अपने वड़े हाथ से उसे पकड़ लिया। ७३९

कण्गॊळ वरिदु मीदु कार्हॊळ वरिदु तिण्गाल्
ऍण्गॊळ वरिदु तीरा विरुळ्हॊळ वरिदु माह
विण्गॊळ निवन्द मेरु वॆळ्हुऱ वॆदुम्बि युळ्ळम्
पुण्गॊळ वुयर्न्द दिप्पार् पॊऱैहॊळ वरिदु पोलाम् 740

कण् कॊळ अरितु–(वह चैत्य) पूर्णरूप से देखने में कठिन (इतना वड़ा) था; कार्–मेघ भी; मीतु कॊळ–उसके ऊपर जाएँ; अरितु–वह कठिन था; तिण् काल्–सबल पवन भी; ऍण् कॊळ–उसको उखाड़ने का विचार करे; अरितु–वह दुस्तर था; तीरा–अक्षय; इरुळ्–युगान्त के अन्धकार के लिए भी; कॊळ अरितु–ढक लेना दुस्साध्य था; माक विण्–वड़े आकाश को; कॊळ–अपना स्थान बना लेने के विचार से; निवन्त–ऊँचा वढ़ा हुआ; मेरु–मेरु पर्वत भी; वॆळ्कु उऱ–शरम करके; उळ्ळम् वॆतुम्पि–मन में ताप का अनुभव कर; पुण् कॊळ–दुःखव्रण पा जाए ऐसा; उयर्न्ततु–उन्नत बना था; इ पार्–यह भूमि; पॊऱै कॊळ–भार सहे; अरितु पोल्–यह कठिन हो जैसे; आम्–था। ७४०

वह चैत्य इतना वड़ा और चमकीला था कि कोई भी अपनी आँखों से उसे पूरा नहीं देख सके। मेघ भी उसके ऊपर न जा सके, उतना ऊँचा था। सबल पवन उसके पास नहीं जा सकता था। अक्षय प्रलयान्धकार भी उसे अपने अन्दर ले नहीं जा सकता था। आकाशव्यापी मेरु भी उससे शरमाकर चित्त में तपकर व्रणमन हो जाय, इतना उन्नत वढ़ा था वह चैत्य। यह धरती उसके भार को वहन नहीं कर सकेगी, ऐसा कहा जा सकता था। ७४०

पॊङ्गॊळि नॆडुना ळोट्टिप् पुदियपाल् पॊऴिव दॊक्कुम्
तिङ्गळै नक्कु हिन्ऱ विरुळॆल्लाम् वारित् तिन्न
अङ्गैबत् तिरट्टि यान्ऱ नाणैया लळ्हु मानप्
पङ्गयत् तॊरुवन् ऱाने पशुम्बॊनाऱ् पडैत्त दम्मा 741

पुतिय पाल्–ताजा दूध; पॊऴिवतु–बहाते; ऒक्कुम्–जैसे; तिङ्कळै–चन्द्र को; नक्कुकिन्ऱ–चाटनेवाले; इरुळ् ऍलाम्–सभी अन्धकार को; वारि तिन्न–उठाकर खाने के लिए; अम् कै पत्तु इरट्टियान्–सुन्दर बीस हाथों वाले; तन् आणैयाल्–(रावण) की आज्ञा से; पङ्कयत्तु ऒरुवन् तान्–कमलासन स्वयं; पॊङ्कु

ऑळि–वर्धनशील प्रकाश को; नॅट्टु नाळ्–अनेक दिनों से; ईट्टि–खोजकर एकत्रित कर; अळकु मात–सुन्दरता में बढ़े हुए; पचुम् पॉन्नाल्–चोखे स्वर्ण से; पटॅत्ततु–रचित किया शायद जो था वह था यह चैत्य; अम्मा–मैया। ७४१

दुग्ध-सम प्रकाश फैलानेवाले चन्द्र को भी जो अन्धकार चाट लेता है, उस अन्धकार को एक दम उठाकर खाने के लिए बीस हाथों वाले राक्षसराज रावण की आज्ञा के अनुसार स्वयं कमलासन ने अनेक-अनेक दिन प्रकाश को एकत्रित कर, उस पुञ्जीभूत प्रकाश से, सुन्दरता में बढ़े हुए उस चैत्य को निर्मित किया था —ऐसा लगता था वह चैत्य। ७४१

तूणॅलाञ् जुडरुङ् गाशु शुर्ड्रॅला मुत्तञ् जॅम्बॊन्
पेणला मणियिन् पित्तिप् पिडरॅला मॊळिहळ् विम्मच्
चेणॅलाम् विरियुङ् गर्ड्रैच् चेयॊळिच् चॅल्वर् केयुम्
पूणला मॅम्म नोराड् पुहललाम् बॊदुमैत् तन्ड्रे 742

तूण् ऍलाम्–खम्भे सब; चुटरुम् काचु–चमकीले रत्नमय; चुट्रु ऍलाम्–घेरे सब; मुत्तम् चॅम्पॊन्–मोती और लाल स्वर्ण के; पेणल् आम् पित्ति पिटर् ऍलाम्–दर्शनीय दीवारों के ऊपर सर्वत्र; मणि–रत्नमय; ऑळिकळिन्–छटाओं की; चेण् ऍलाम् विम्म–आकाश भर को भरते हुए; विरियुम् कट्रै–व्यापनेवाली लटें; चेय् ऑळि चॅल्वर्कु एयुम्–लाल किरणों के धनी सूर्य के लिए भी; पूणल् आम्–अपनाने योग्य हैं; ऍम्मनोराल्–हम जैसों से; पुकलल् आम्–वर्णन योग्य; पॊतुमैत्तु अन्ड्रु–साधारण वस्तुएँ नहीं। ७४२

खम्भे चमकते रत्नों के; घेरे सब मोतियों और लाल स्वर्ण के; और मनोरम भित्तियों के ऊपरी भाग रत्नों के थे। इनके प्रकाश की व्योमव्यापी लटें ऐसी थीं कि लाल किरणों के धनी सूर्य भी उनकी चाह करे! फिर हम जैसों द्वारा उसका वर्णन कैसे किया जाय? वह वैसी कोई साधारण चीज़ नहीं। ७४२

वॆळ्ळियङ् गिरियैप् पण्डु वॆन्दॊळि लरक्कन् वेरो
डळ्ळिना नॆन्नक् केट्टा नत्तॊळिर् कळिवु तोन्ड्रप्
पुळ्ळिमा मेरु वॆन्नुम् पॊन्मलै यॆडुप्पान् पोल
वळ्ळुहिर्त् तडक्कै तन्नान् मण्णिन्ड्रुम् वाङ्गि यण्णल् 743

अण्णल्–उत्तम हनुमान; वॆम् तॊळिल् अरक्कन्–क्रूरकर्म राक्षस रावण ने; पण्टु–पहले; वॆळ्ळि अम् किरियै–चाँदी की गिरि कैलास को; वेरोटु अळ्ळिनान्–जड़ के साथ उठा लिया; ऍन्न केट्टान्–ऐसा सुनकर; अ तॊळिर्कु–उस काम को; अळिवु तोन्ड्र–नीचा दिखाने के लिए; पुळ्ळि–बिंदियों के समान विविध रंगों से रंगीन; मा मेरु–बड़े मेरु के; पॊन् मलै ऍटुप्पान् पोल–स्वर्णगिरि को उठाता हो जैसे; वळ् उकिर् तट कै तन्नाल्–तीक्ष्ण नखों के अपने विशाल हाथों से; मण् निन्ड्रुम्–भूमि से; वाङ्कि–उस चैत्य को उठाकर। ७४३

हनुमान ने सुन रखा था कि पहले क्रूरकर्म रावण ने रजतगिरि कैलास को जड़ से उठाया था। मानो उस कार्य के गौरव को मिटाने के वास्ते हनुमान ने चित्तियों (विविध रंगों) सहित महामेरु पर्वत को उठाता जैसे अपने तेज़ नाखूनों वाले हाथ से उस चैत्य को उठा लिया। ७४३

विट्टऩ्ऩ निलङ्गै तन्मेल् विण्णुऱ्ऱु विरिन्द माडम्
पट्टऩ्ऩ पॊडिहळ् आऩ परन्दऩ्ऩ पाङ्गु निऩ्ऱ
शुट्टन पॊऱिहळ् वीऴत् तुळङ्गिन ररक्कर् तामुम्
कॆट्टनर् वीरर् रम्मा पिऴैप्परो केडु शूऴ्न्दार् 744

इलङ्कै तऩ् मेल्–लंका पर; विट्टऩऩ्–फेंका; विण् उऱ्–आकाश में लगे; विरिन्त माटम्–विशाल बने रहे प्रासाद; पट्टऩ–टकराकर; पॊटिकळ् आऩ–चूर हुए; पाङ्कु परन्तऩ निऩ्ऱ–पास जो स्थित थे उन सबको; चुट्टऩ–उठी अग्नि से उन प्रासादों ने जला दिया; पॊऱिकळ् वीऴ–अंगारे गिरने से; अरक्कर् तामुम्–राक्षस भी; तुळङ्कितर्–भयभीत हुए; वीरर् कॆट्टऩर्–वीर मरे; केटु चूऴ्न्तार्–बुराई करनेवाले; पिऴैप्परो–बचेंगे क्या; अम्मा–मैया। ७४४

और उसको हनुमान ने लंका पर ज़ोर से फेंका। उसके टकराने से लंका के गगनचुम्बी प्रासाद चूर हुए। उससे आग उठी जिससे पास रहे पदार्थ जल उठे। अंगारे छितरे और राक्षस डरे। वीर मरे। पर-पीडक बचेंगे क्या? मैया!। ७४४

नीरिडु तुहिल रच्च नॆरुप्पिडु नॆञ्जर् नॆक्कुप्
पीरिडु मुरुवर् तॆऱ्ऱिप् पिणङ्गिडु ताळर् पॆऴ्वाय्
ऊरिडु पूश लार वुळैत्तन रोडि युऱ्ऱार्
पारिडु पऴुवच् चोलै पालिक्कुम् बरुवत् तेवर् 745

पार् इटु–भूमि पर लाकर पालित; पऴुव चोलै–तरुसंकुल (अशोक-) वन; पालिक्कुम् परुव तेवर्–(उसको) पालनेवाले ऋतुओं के देवता; नीर् इटु तुकिलर्–मूत्र से भीगे हुए कपड़ों वाले; अच्च नॆरुप्पु इटु–भय की अग्नि-सहित; नॆञ्चर–मन वाले; नॆक्कु पीर् इटुम्–चोट खाकर उछलनेवाले रक्तमय; उरुवर्–शरीर वाले; तॆऱ्ऱि पिणङ्किटु–आपस में मिलकर लड़खड़ाते हुए; ताळर्–पैरों वाले; पॆऴ्वाय्–विवरित अपने बड़े मुखो से; ऊर् इटु पूचल् आर–लंका नगर में बड़ा शोर मचाते हुए; उळैत्तऩर्–रोते-चिल्लाते हुए; ओटि उऱ्ऱार्–भागे और रावण के पास गये। ७४५

रावण ने व्योमलोक से तरु लाकर अशोक वन उगाया था। उसका पालन करते रहे ऋतुदेवता। उनकी अब दुर्गति हो गयी। मूत्र-भीगे वस्त्र, भय की अग्नि-लगे मन, रक्त-निस्सारक शरीर और लड़खड़ाते पैरों वाले होकर वे अपने बड़े मुखों को खोलकर लंका भर में व्याप जाय, ऐसी ज़ोर की ध्वनि निकालते हुए चिल्लाकर रावण के पास दौड़ पड़े। ७४५

अरिपडु शीऱ्ऱत् ताऩ्ऱ तरुहुशॆऩ् ऱडियिऩ् वीऴ्ऩ्दार्
करिपडु तिशैयि नीण्ड कावलाय् काव लाऱ्ऱोम्
किरिपडु कुववुत् तिण्डोट् कुरङ्गिडै किऴित्तु वीश
अॆरिपडु पञ्जि नॊय्दि निऱ्ऱदु कडिहा वॆऩ्ऱार् 746

अरि पट—सिंह का-सा; चीऱ्ऱत्तान् तन्—क्रोध करनेवाले (रावण) के; अरुकु चॆन्ऱु—पास जाकर; अटियिन् वीऴ्न्तार्—पैरों पर गिरे; करि पटु—गजों से रक्षित; तिचैयिन् नीण्ट—दिगन्त तक फैले; कावलाय्—शासन वाले; कावल् आऱ्ऱोम्—रक्षण में असमर्थ हो गये; किरिपटु—गिरि को पछाड़नेवाले; कुववु तिण् तोळ्—पुष्ट सबल कन्धों के; कुरङ्कु—एक वानर के; इटै किऴित्तु वीच—मध्य में घुसकर नष्ट करने से; कटि का—रक्षण में रहा, वह अशोक वन; ऎरि पटु पञ्चिन्—आग में पड़ी रूई के समान; नॊय्तिन् इऱ्ऱतु—शीघ्र मिट गया; ऎन्ऱार्—कहा। ७४६

सिंह-सदृश क्रोधी रावण के पास जाकर वे उसके पैरों पर गिरे। गज-रक्षित दिगंतों तक व्याप्त शासनक्षेत्र के स्वामी! हम अब अशोक वन का रक्षण नहीं कर सके। गिरिनाशक पुष्ट कन्धों वाले एक वानर ने उसके मध्य घुसकर उसको मिटा दिया। वह सुरक्षित वन आग में पड़ी रूई के समान बहुत शीघ्र मटियामेट हो गया। ७४६

चॊल्लिड वॆळिय दऩ्ऱार् चोलैयैक् कालिऩ् कैयिल्
पुल्लॊडु तुहळु मिऩ्ऱिप् पॊडिपड नूऱिप् पॊऩ्नाल्
विल्लिडु वोमन् दऩ्ऩै वेरॊडुम् वाङ्गि वीशच्
चिल्लिड मॊऴियत् तॆय्व विलङ्गैयुञ् जिदैन्द दॆऩ्ऱार् 747

चॊल्लिट—कहना; ऎळियतु अन्ऱु—सुलभ नहीं; चोलैयै—उस अशोक वन को; कालिल् कैयिल्—पैरों और हाथों से; पुल् ऒटु तुकळुम् इन्ऱि—घास, धूल से रहित करके; पॊटि पट नूऱि—चूर करते हुए मिटाकर; पॊन्नाल्—स्वर्ण से; विल् इटु—धनु के समान प्रकाश देनेवाले; ओमम् तन्नै—चैत्य को; वेरॊटु वाङ्कि वीच—नींव-सहित उखाड़कर फेंकने से; चिल् इटम् ऒऴिय—बहुत थोड़े से स्थान को छोड़कर; तॆय्व इलङ्कैयुम्—दिव्य लंका नगरी भी; चितैन्ततु—मिट गयी; ऎन्ऱार्—कहा (ऋतुदेवताओं ने)। ७४७

ऋतुदेवताओं ने आगे कहा कि उस वानर के कृत्य हमसे कथ्य नहीं हैं। उसने अपने पैरों और हाथों से अशोक वन को मिटा दिया। उसमें न घास बची, न धूल ही। स्वर्णमय चमकदार चैत्य को भी उसने जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। कुछ ही स्थानों को छोड़कर सारी दिव्य लंका नगरी तहस-नहस हो गयी। ७४७

7. किङ्गरर् वदैप् पडलम् (किङ्कर-वध पटल)

आडहत् तरुविऩ् शोलै पॊडिपडुत् तरक्कर् काक्कुम्
तेडरु मोमम् वाङ्गि यिलङ्गैयुञ् जिदैत्त दम्मा

कोडर मौऩ्ऱे नऩ्ऱि दिराक्कदर् कौऱ्ऱज् जौऱ्ऱल्
मूडरु मौऴियारॆऩ् मऩ्ऩऩु मुऱुवल् शॆय्दाऩ् 748

कोटरम् ऑऩ्ऱे–वन्दर एक ही ने; आटक तरुविऩ् चोलै–स्वर्ण-तरुओं के वन को; पॉटि पट्टुत्तु–धूल बनाकर; अरक्कर् काक्कुम्–राक्षस-रक्षित; तेट्टु अरुम् ओमम् वाङ्कि–अपूर्व यज्ञमण्डप (चैत्य) उखाड़कर; इलङ्कैयुम् चितैत्ततु–लंका का भी नाश किया; इराक्कतर्–राक्षसों की; कौऱ्ऱम्–वीरता; नऩ्ऱितु–भली है; चौऱ्ऱल्–यह कथन; मूटरुम् मौऴियार्–मूर्ख भी नहीं करते; ऍऩ्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; मऩ्ऩवऩुम्–राजा ने; मुऱुवल् चॆय्ताऩ्–मन्दहास दिखाया। ७४८

रावण ने यह बात सुनी तो उसे आश्चर्य हुआ। उसने कहा कि क्या एकाकी वानर ने स्वर्णमय तरुओं के भरे उस वन को चूर कर दिया? राक्षस-रक्षित अपूर्व चैत्य को उखाड़ दिया? लंका को भी छिन्न-भिन्न कर दिया? हा! राक्षसों की वीरता भी भली रही! यह बात मूर्ख लोग भी नहीं कहेंगे। रावण यह कहकर मुस्कुराया। ७४८

तेवर्हळ् मुऩ्ऩुम् बिऩ्ऩु मदनुरुच् चुमक्कुन् दिण्मैप्
पूवल यत्तै यन्ऱो पुहऴ्वदु पुलवर् पोऱ्ऱुम्
मूवरि नौरुव नॆऩ्ऱे पुहलिनु मुडिवि लाद
एवम रलैक्कुम् शॆङ्गैक् कुरङ्गुहा णिऩ्ऩु मॆऩ्ऱार् 749

तेवर्कळ्–उन ऋतुदेवताओं ने; अतऩ् उरु–उसका रूप; मुऩ्ऩुम् पिऩ्ऩुम्–आगे-पीछे कभी; चुमक्कुम्–ढोते रहनेवाले; तिण्मै पूवलयत्तै अऩ्ऱो–सशक्त भूवलय को न; पुकऴ्वतु–प्रशंसित करना है; पुलवर् पोऱ्ऱुम्–देवशंसित; मूवरिऩ्–त्रिदेवों में; ऑरुवऩ् ऍऩ्ऱे–एक ही है; पुकलिऩुम्–कहने पर भी; मुटिवु इलात–उसकी शक्ति अनन्त है; चॆङ्कै कुरङ्कु–अरुणहस्त वानर; इऩ्ऩुम् एवु अमर्–आगे भी जो छिड़ेगा वह युद्ध भी; अलैक्कुम्–लाचार कर देगा; काण्–आप देख लें; ऍऩ्ऱार्–कहा। ७४९

ऋतुदेवताओं ने उत्तर में कहा कि उस धरती की न सराहना करनी चाहिए, जो सदा से इस वानर के शरीर (के भार) को वहन करती रहती है? उसे देवशंसित त्रिदेवों में एक कह सकते है तो भी वह उसकी अपार शक्ति का द्योतक नही हो सकता। वह लाल (रक्तरंजित) हाथ वाला वानर आगे भी, अगर आपकी आज्ञा से युद्ध होगा तो बड़ा अनर्थ मचा देगा। आप ही देखे। ७४९

मण्डलङ् गिऴिय वायिन् मऱिहडन् मोऴै मण्ड
ऍण्डिशै शुमन्द मावुन् देवरु मिरियल् पोहत्
तॊण्डैवा यरक्कि मार्हळ् शूल्वयि ऱुडैन्दु शोर
अण्डमुम् बिळन्दु विण्ड दामॆन वनुम नार्त्ताऩ् 750

अनुमऩ्–हनुमान ने; मण्टलम् किऴिय–भूमण्डल को (और व्योममण्डल को)

चीरते हुए; मऱि कटल्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों वाले समुद्र का जल; मोऴै–भूमि के नीचे की नदी बनकर; वायिल् मण्ट–लंका-द्वार पर बहे ऐसा; ऍण् तिचै चुमन्त मावुम्–अष्ट दिग्गजों को; तेवरुम्–देवों को; इरियल् पोक–भगाते हुए; तॊण्टै वाय् अरक्किमार्कळ्–बिम्बाधरा राक्षसियों के; चूल् वयिऱु–गर्भ सहित पेट; उटैन्तु चोर–टूटकर गिर जाएँ, ऐसा; अण्टमुम् पिळन्तु–अण्ड दरार खाकर; विण्टतु आम् ॲन्न–फूटा हो, ऐसा; आर्त्तान्–एक गर्जन किया। ७५०

ये यह कह ही रहे थे कि हनुमान ने गर्जन का ऐसा स्वर निकाला कि भू तथा व्योममण्डल दरार खाकर फूटे; प्रत्यावर्तनशील तरंगों का सागर भूमि के नीचे से नदी के रूप में बहकर लंका के द्वार के पास चला; दिग्गज और देवता लोग तितर-बितर हो भाग गये; और बिम्बाधरा राक्षसियों के गर्भ गिर गये। अण्ड ही फट गया हो ऐसा था वह शोर। ७५०

अरुवरै मुऴैयिऩ् मुट्टु मशनियि निडिप्पु माऴि
वॆरुवरु मुऴक्कु मीशऩ् विल्लिऱु मॊलियु मॆऩ्नक्
कुरुमणि महुड कोडि मुडित्तलै कुलुङ्गुम् वण्णम्
इरुबदु शॆवियि नूडु नुऴैन्ददव् वॆऴुन्द वोशै 751

अरुवरै–बड़े पर्वतों की; मुऴैयिऩ् मुट्टुम्–गुहाओं पर जा लगनेवाले; अचत्तियिऩ् इटिप्पुम्–वज्र का निनाद; आऴि–(और) सागर का; वॆरुवरु मुऴक्कुम्–भयावना गर्जन; ईचऩ् विल् इऱुम्–परमेश्वर के धनु के टूटने का; ऒलियुम्–शोर; ॲऩ्ऩ–ऐसा; कुरुमणि–बड़े-बड़े रत्नों से अलंकृत; मकुट कोटि–किरीटपंक्ति से भूषित; मुटि तलै–केशयुक्त रावण के सिर; कुलुङ्कुम् वण्णम्–हिल जाएँ, ऐसा; ॲऴुन्त–जो उठा; ओचै–वह शोर; इरुपतु चॆवियिऩ् ऊटु–बीसों कर्णों के द्वार से; नुऴैन्ततु–घुस चला। ७५१

बड़े पर्वत की गुहा पर गिरनेवाले वज्र का नाद; प्रलयकालीन डरावना समुद्रगर्जन, परमेश्वर के धनु की टंकार का घोर नाद-जैसा उसका गर्जन मोटे रत्नों से युक्त किरीट-पंक्ति से अलंकृत रावण के सिरों को हिलाते हुए उसके बीसों कर्ण-विवरों में जा घुसा। ७५१

पुल्लिय मुऱुव ऱोऩ्ऱप् पॊऱामैयुञ् जिऱिदु पॊङ्ग
एल्लैयि लाऱ्ऱऩ् माक्क ळॆण्णिऱऩ् दारै येवि
वल्लैयि नहला वण्णम् वाऩैयुम् वऴियै माऱ्ऱिक्
कॊल्ललिर् कुरङ्गै नॊय्दिऱ् पऱ्ऱुदिर् कॊणर्मि ऩॆऩ्ऱाऩ् 752

पुल्लिय मुऱुवल्–अल्पहास; तोऩ्ऱ–प्रकट करके; पॊऱामैयुम्–ईर्ष्या; चिऱितु पॊङ्क–किञ्चित उठी; ॲल्लै इल् आऱ्ऱल्–अपार बलशाली; माक्कळ् ॲण् इऱन्तारै–दासों, असंख्यकों को; एवि–प्रेरित करके; वाऩैयुम्–आकाश को भी; वऴियै माऱ्ऱि–मार्गहीन बनाकर; कुरङ्कै–उस बन्दर को; अकला वण्णम्–बचने न देकर; वल्लैयिल्–शीघ्र; कॊल्ललिर्–बिना मारे; नॊय्तिल्–सुगम रीति से; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो और; कॊणर्मिऩ्–लाओ; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा (आज्ञा सुनायी)। ७५२

रावण के अधरों में मन्दहास खेल गया। मन में किंचित ईर्ष्या उठी। उसने अपार वली असंख्यक दासों को बुलाया। आज्ञा सुनायी कि जाओ। आकाश-मार्ग को भी रोको। उस वानर को वचने न दो। उसे मारो भी मत। शीघ्र पकड़कर लाओ। ७५२

शूलम्वाण् मुशलङ् गूर्वे ऱोमरन् दण्ड‌ु पिण्डि
पालमे मुदला वुळ्ळ पडैक्कलम् वरित्त कैयर्
आलमे यनैय मॅय्य रहलिड मऴिवु शॅय्युम्
कालमे लॅऴुन्द मूरिक् कडलॅन्नक् कडिदु शॅल्वार् 753

चूलम्–त्रिशूल; वाळ्–तलवार; मुचलम्–मूसल; कूर् वेल्–तीक्ष्ण भाले; तोमरम्–तोमर; तण्टु–दण्ड; पिण्टिपालम्—भिंडिपाल; मुतला उळ्ळ–आदि जो थे; पटैक्कलम्–हथियार; परित्त कैयर्–(उनको) हाथ में लिये हुए; आलमे अत्तैय–हलाहल ही सम; मॅय्यर्–आकार वाले; अकल् इटम्–विशाल भूमि को; अऴिवु चॅय्युम्–नष्ट करनेवाले; कालम्–प्रलयकाल में; मेल् ॲऴुन्त–उठे हुए; मूरि कटल् ॲन्त–प्रवल समुद्र के समान; कटितु चॅल्वार्–सवेग जाने लगे। ७५३

वे वीर त्रिशूल, तलवारें, मूसल, तीक्ष्ण भाले, तोमर, दण्डायुध, भिंडिपाल आदि हथियार हाथ में लिये हुए चले। हलाहल ही सम काले आकार के वे विशाल लोक के नाशक युगान्तकालीन मेघों के समान शीघ्र-शीघ्र कूच कर जाने लगे। ७५३

नाऩिल मदऩि नुण्डु पोरॅऩ्ऩ नविलि ऩच्चॉल्
तेनिनुङ् गळिप्पुच् चॅय्युञ् जिन्दैयर् तॅरित्तु मॅन्ऩिऩ्
काऩिनुम् वॅरिय रोशै कडलिनुम् वॅरियर् कीर्त्ति
वाऩिनुम् वॅरियर् मेऩि मलैयिनुम् वॅरियर् मादो 754

नाऩिलम् अतऩिल्—(चतुर्विधा) भूमि पर; पोर् उण्टु–युद्ध चलेगा; ॲऩ्ऩ नविलिऩ्–ऐसा जब कहा जाता है तब; अ चॉल्–वह वचन; तेऩिऩुम् कळिप्पु चॅय्युम्–शहद से भी मधुर लगे; चिन्तैयर्–ऐसे मन वाले; तॅरित्तुम् ॲऩ्ऩिऩ्–समझाना चाहें तो; काऩिऩुम् पॅरियर्–जंगल से भी अधिक (काले रंग वाले) हैं; ओचै–नाद करने में; कटलिऩुम् पॅरियर्–समुद्र से भी बड़े हैं; कीर्त्ति–कीर्ति में; वाऩिऩुम् पॅरियर्–आकाश से भी अधिक बड़े हैं; मेऩि–शरीर से; मलैयिऩुम्–पर्वत से भी; पॅरियर्–अधिक बड़े हैं। ७५४

वे कैसे वीर थे? कही इस चतुर्विधा भूमि पर युद्ध होनेवाला है—यह समाचार उन्हें शहद से भी अधिक मधुर लगता और उनके मन को मत्त कर देता। उनका स्वभाव आदि का वर्णन करना हो, तो सुनिए; वे घने जंगल से भी रंग में अधिक बड़े (काले) थे। गर्जन में समुद्र से बड़े थे। उनका यश आकाश से भी वड़ा था। उनका आकार पर्वत से भी वड़ा था। ७५४

तिरुहुरुञ् जिनत्तुत् तेवर् तानव रॅन्नुन् दॅव्वर्
इरुहुरुम् बॅरिन्दु नित्र विशैयित्ताल् वशैयॅन् ड्रॅण्णिप्
पॊरुहुरुम् बॅन्रु वॅन्रि पुणर्वदु पूवुण् वाळ्क्कै
ऑरुहुरुङ् गुरङ्गॅन् रुळ्ळि नॅडिदुना णुळ्क्कु नॅञ्जर् 755

तिरुकु उरुम्–ऐंठे हुए; चिनत्तु–क्रोधी; तेवर् तानवर् ॲन्नुम्–देव और दानव-कथित; तॅव्वर्–शत्रु; इरु कुरुम्पु–छोटे-छोटे अधीन राजाओं को; ॲरिन्तु नित्र–हराकर प्राप्त; इचैयिताल्–यश से; पॊरु कुरुम्पु ॲन्रु–युद्धयोग्य शत्रु मानकर; वॅन्रि पुणर्वतु–लड़ाई में विजय पाना; वचै–निंद्य; ॲन्रु ॲण्णि–ऐसा समझकर; पू उण् वाळ्क्कै–फूल आदि पर जीवित रहनेवाला; ऑरु कुरुम् कुरङ्कु–एक छोटे आकार का शाखामृग; ॲन्रु उळ्ळि–ऐसा समझकर; नॅटितु–गम्भीर रूप से; नाण् उळ्क्कुम्–लज्जा से व्याकुल; नॅञ्चर्–मन वाले। ७५५

ऐंठे हुए क्रोध में उन्होंने देवों और दानवों पर जीत पायी थी। यद्यपि वह छोटे मातहत राजाओं पर प्राप्त जीत के समान ही थी, तो भी उनमें इतना घमण्ड हो गया था कि वे सोचने लगे कि आखिर इस सुमनाहारी और छोटे आकार वाले शाखामृग के साथ युद्ध करना निंद्य है। इसलिए उनके मन को गम्भीर लज्जा से उत्पन्न दुःख संकट दे रहा था। ७५५

कट्टिय वाळ रिट्ट कवशत्तर् कळ्ळर् तिक्कैत्
तट्टिय तोळर् मेहन् दडविय कैयर् वानै
अॅट्टिय मुडियर् ताळा लिडरिय पॊरुप्प रोट्टिक्
कॊट्टिय बेरि यॅन्न मळैयॅनक् कुमुरुञ् जॊल्लार् 756

कट्टिय वाळर्–कमर में बद्ध तलवार वाले; इट्ट कवचत्तर्–कवच से लैस; कळ्ळर्–पायलधारी; तिक्कै तट्टिय–दिगन्त को ढकेलनेवाले; तोळर्–कन्धों वाले; मेकम् तटविय–मेघ को सहलाए; कैयर्–ऐसे बढ़े हुए हाथों वाले; वानै ॲट्टिय–आकाश-स्पर्शी; मुटियर्–सिर वाले; ताळाल्–पैरों से; इटरिय–ठुकराये गये; पॊरुप्पर्–पर्वत वाले (पर्वतों को भी ठुकरा दे, ऐसे पैर वाले); ईट्टि कॊट्टिय–एक साथ बजी; पेरि ॲन्न–भेरियों के समान; मळै ॲन्न–मेघों के समान; कुमुरुम् चॊल्लार्–घहरते शब्द वाले। ७५६

उनकी कमरों में तलवारें बँधी थीं। वे कवच और पायलधारी थे। उनके कन्धे दिगन्तों से टकरा रहे थे। उनके हाथ मेघों को सहला रहे थे। सिर आकाश को ढकेलते थे। पर्वतों को अपने पैरों से ढकेलनेवाले थे। अनेक भेरियाँ एक साथ बज उठी हों या अनेक मेघ मिलकर गरजते हों, ऐसे नर्दनयुक्त थे उनके शब्द। ७५६

वानव रॅरिन्द दॅय्वप् पडैयिडुम् वडुक्कण् मऱ्ऱैत्
तानवर् तुरन्द वेदित् तळुम्बॊडु तयङ्गु तोळर्

यानैयुम् बिडियुम् वारि यिडुम्बिल वाय रीन्ऱ
कूनल्वॅण् पिऱैयिऱ् ऱोन्ऱु मॅयिऱ्ऱित्तर् कॉदिक्कुङ् गण्णार् 757

वान्तवर् ऍऱिन्त–देवप्रेषित; तॅय्व पटै इटुम्–दिव्यास्त्रों द्वारा बने; वटुक्कळ्–दाग़; मऱ्ऱै–अन्य; तात्तवर् तुरन्त–दानव-प्रेषित; वेति तळुम्पॉटु–हथियारों के दाग़ों के साथ; तयङ्कु तोळर्–शोभायमान कन्धों वाले; यानैयुम् पिटियुम्–गज और गजनियों को; वारि इटुम्–उठाकर जिनके अन्दर डाला जाय, ऐसे; पिल वायर्–बिल-सदृश मुख वाले; ईन्ऱ–उत्पन्न; कूनल् वॅण्पिऱैयिल्–वक्र अर्धचन्द्र के समान; तोन्ऱुम् ऍयिऱ्ऱित्तर्–दिखते दाँतों के है; कॉतिक्कुम् कण्णार्–खौलती आँखों के हैं। ७५७

उनके कन्धे देवप्रेषित दिव्य अस्त्रों द्वारा लगे व्रणों के दाग़ों और दानवों के हथियारों द्वारा प्रेषित अस्त्रों के बने व्रणों के दाग़ों के साथ शोभ रहे थे। उनके मुख बिल के समान इतने बड़े थे कि गज और गजनियों को एक साथ उठाकर उनमें डाला जा सकता था। उनके मुखों में वक्र कलाचन्द्र के समान दाँत ज्वलन्त दिखते थे। उनकी आँखें कोप से खौलती थीं। ७५७

चक्कर मुलक्कै तण्डु तारैवाळ् परिहञ् जङ्गु
मुऱ्कर मुशुण्डि पिण्डि पालम्वेल् शूल मुट्कोल्
पॉऱ्करक् कुलिशम् पाशम् बुहर्मळु वॅळुहोल् कुन्दम्
विऱ्करुङ् गणैविट् टेऱु कळुक्कडै यॅळुक्कण् मिन्न 758

चक्करम्–चक्रायुध; उलक्कै–मूसल; तण्टु–दण्डायुध; तारै वाळ्–धारदार तलवारें; परिकम्–परिघ; चङ्कु–शंख; मुऱ्करम्–मुद्गर; मुचुण्टि–मुशुण्डि (भुशंडी?) नाम के हथियार; पिण्टिपालम्–भिंडिपाल; वेल्–बर्छियाँ; चूलम्–त्रिशूल; मुट्कोल्–काँटेदार छड़ियाँ; पॊन् कर–सोने की मूठ के; कुलिचम्–कुलिश; पाचम्–पाश; पुकर् मळु–उज्ज्वल परशु; ऍळु–लोहे के गदे; कोल्–शर; कुन्तम्–कुन्त; विल्–धनु; करुम् कणै–दीर्घ शर; विट्टेऱु–फेंके जानेवाले हथियार; कळुक्कटै–नोकदार; ऍळुक्कळ्–दण्ड; मिन्न–इनको चमकने देते हुए। ७५८

वे जब गये तब निम्नलिखित हथियार चमचमा रहे थे। चक्रायुध, मूसल, दण्ड, धारदार तलवारें, परिघ, शंखवाद्य, मुद्गर, 'मुशुण्डि' (भुशंडी?) भिंडिपाल, भाले, त्रिशूल, स्वर्णमूठ वाले कुलिश, पाश, उज्ज्वल परशु, लोहे के दण्ड, शर, कुन्त, धनु, दीर्घ शर, फेंके जानेवाले 'विट्टेऱु' हथियार-विशेष और नोकदार लौहदण्ड। ७५८

पॉन्निन्ऱु कजलुन् दॅय्वप पूणिनर् पॉरुप्पुत् तोळर्
मिन्निन्ऱ पडैयुङ् गण्णुम् वॅयिल्विरिक् किन्ऱ मॅय्यर्
ऍन्नॅन्ऱारक् कॅन्नॅन् नॅन्ऱा रॅय्दिय दरिन्दि लादार्
मुन्निन्ऱार् मुडुहु तीयप् पिन्निन्ऱार् मुडुहु हिन्ऱार् 759

पॊन् निन्ऱु–स्वर्ण के साथ; कजलुम्–प्रकाशमय; तॅय्व पूणितर्–दिव्य आभरण

वाले; पॉरुप्पु तोळर्–पर्वत-सम कन्धों वाले; मिन् निन्ऱ पटैयुम्–बिजली-सम हथियार; कण्णुम्–और आँखे; वैयिल् विरिक्किन्ऱ–जिसमें रहकर प्रकाश छिटका रही थीं, वैसे; मॅय्यर्–शरीर वाले; ॲन्–क्यों (रुके हो); ॲन्ऱार्क्कु–पूछनेवालों से; ॲय्तियतु अरिन्तिलातार्–जो हुआ वह न जाननेवाले; पिन् निन्ऱार्–जो पीछे खड़े थे; मुन् निन्ऱार् मुतुकु तीय–सामने खड़े रहनेवालों की पीठ को (गरम साँस से) जलाते हुए; ॲन् ॲन् ॲन्ऱार्–क्या, क्या पूछते हुए; मुट्टुकिन्ऱार्–सवेग आगे बढ़ते हैं। ७५६

वे स्वर्ण की चमक लिये हुए दिव्य आभरणो से भूषित थे। पर्वत-सम कन्धों वाले, विद्युत् के समान हथियारों और आँखों की चमक से विशिष्ट शरीर वाले। जब वे जाते रहे तो भीड़ की वजह से सामने वाला रुक गया तो पीछे वाले "क्यों" कहकर ढकेलते। तव सामने वाले झुँझलाकर अपने सामने वाले की पीठ पर झुलसानेवाली गरम साँस छोड़ते हुए "क्या, क्या हुआ ?" पूछते और ढकेलते हुए बढ़ते जाते। ७५९

वॅय्दुरु पडैयिन् मिन्नर् विल्लिनर् वीशु कालर्
मैयुरु विशुम्बिर् ऱोन्ऱु मेनियर् मडिक्कुम् वायर्
कैपरन् दुलहु पॉङ्गिक् कडैयुह मुडियुङ् गालैप्
पॅय्यवॅन् ऱॅळुन्द मारिक् कुवमैशाल् पॅरुमै पॅऱ्ऱार् 760

वॅय्तुरु–पीडक; पटैयिन्–हथियारों की; मिन्नर्–चमक वाले; विल्लिनर्–धनुर्धर; वीचु कालर्–अपनी गति से पवन को चालित करनेवाले; मै उरु विचुम्पिल्–मेघ-मण्डित आकाश के समान (काले); तोन्ऱुम् मेनियर्–दिखनेवाले शरीर वाले; मटिक्कुम् वायर्–चबाए हुए ओंठ वाले; कै परन्तु–पार्श्वों में फैलकर; उलकु पॉङ्कि–भूतल पर उमगकर; कटैयुकम्–युगान्त; मुटियुम् कालै–जब पूरा होगा तब; पॅय्य ॲन्ऱु ॲळुन्त–बरसने के लिए जो उठेंगे; मारिक्कु–उन प्रलय-मेघों की वर्षा की; उवमै चाल्–समानता करने का; पॅरुमै पॅऱ्ऱार्–गौरव प्राप्त। ७६०

बहुत ही हिंस्र हथियारों की चमक उनके साथ थी। धनुर्धर वे अपनी गति से पवन को चालित करते हुए गये। मेघाच्छन्न आकाश के समान रंग वाले वे अपना ओंठ चबाते हुए गये। तब, समुद्र फैलकर भूतल पर जब बहता है, उस युगान्तकाल में बरसने के लिए उठनेवाली प्रलयवर्षा की समानता करने का गौरव उन्हें प्राप्त हो रहा था। ७६०

पनियुरु शॅयलैच् चिन्दि योममुम् बरित्त दम्मा
तनियॉरु कुरङ्गु पोला नन्ऱुनन् दरुक्कॅन् गिन्ऱार्
इनियॉरु पळिमऱ् ऱुण्डो विदनिन्ऱॅन् ऱिरैत्तुप् पॉङ्गि
मुनिवुरु मनत्तिऱ् ऱावि मुन्दुर मुडुहु हिन्ऱार् 761

पनि उरु–शीतल (मनोरम); चॅयलै चिन्ति–अशोक वन को नष्ट करके; ओममुम् परित्ततु–होम-मण्डप को भी उखाड़ा; तनि ऑरु कुरङ्कु पोल् आम्–एकाकी

एक वानर है तो; नन्ऱु–भला है; नम् तरुक्कु–हमारा बल; ॲन्ऱिकिन्ऱार्–कहते हुए; इततिन्–इससे; इनि–अब; ओरु पऴि–एक निन्दा; मऱ्ऱु उण्टो–अन्य हो सकती है क्या; ॲन्ऱु इरैत्तु–कहते हुए शोर मचाकर; पोङ्कि–खौलकर; मुत्तिवु उऱु–रुष्ट; मत्तत्तिल्–मन के साथ; मुन्नु उऱ तावि–एक-दूसरे को पीछे छोड़ सामने उछलकर; मुट्टुकिन्ऱार्–दौड़ते हैं। ७६१

वे यों कहते हुए जा रहे थे कि एकाकी एक वानर ने शीतल अशोक वन को मिटा दिया और यज्ञमंडप को भी उखाड़कर फेंक दिया तो हमारा बल भी बहुत (प्रशंसनीय) भला रहा! इससे बढ़कर क्या अपयश होगा? इस विचार से उनके मन में अपार कोप भर आया। वे शोर मचाते हुए एक-एक आगे जानेवाले दूसरे को पीछे ढकेलते हुए उछलकर बढ़ रहे थे। ७६१

ॲऱ्ऱुऱु मुरशुम् विन्ना णेऱविट् टॅडुत्त वार्प्पुम्
चुऱ्ऱुऱु कऴलुम् जङ्गुन् दॅऴिदॅऴित् तुरप्पुम् जॊल्लुम्
उऱ्ऱुडन् ऱॊन्ऱा योङ्गि यॊलित्तॆऴुन् दूऴिप् पेर्विल्
नऱ्ऱिरैक् कडल्ह ळोडु मऴैहळै नाव डक्क 762

ॲऱ्ऱु उऱु–पिटनेवाली; मुरचुम्–भेरियाँ और; विल्–धनु पर; नाण् एऱ विट्टु–प्रत्यंचा चढ़ाकर; ॲट्टुत्त आर्प्पुम्–उठाया गया स्वन; चुऱ्ऱुऱु–पैरों पर बँधी; कऴलुम्–पायलों का नाद; चङ्कुम्–शंखनाद और; तॆऴि तॆऴित्तु–डाँट-डपट के साथ; उरप्पुम् चॊल्लुम्–कहे हुए कठोर शब्द; उटन् उऱ्ऱु–साथ मिलकर; ऒन्ऱाय् ओङ्कि–एक बन उठे; ऒलित्तु ॲऴुन्तु–स्वरित हुए; ऊऴि पेर्विल्–युगान्त में; नल् तिरै कटल्कळोटु–बड़ी तरंगों वाले समुद्र के शोर के साथ; मऴैकळै–(उस प्रलयकालीन) मेघों की; ना अटक्क–जीभ (घोर ध्वनि) को दबाते। ७६२

उनकी भीड़ में से ये नाद उठे— पिटनेवाली भेरियों का नाद, धनु पर चढ़ी प्रत्यंचा की टंकार का नाद, पैरों की पायलों का क्वणन, शंखनाद और डाँट-डपट का शोर। इन सबों ने उठकर युगान्त के समुद्र के गर्जन और मेघों की जीभ को (ध्वनि को) चुप करा दिया। ७६२

तॆरुविड मिल्लॆन् ऱॆण्णि वानिडैच् चॆल्हिन् ऱारुम्
ऒरुवरि नॊरुवर् मुन्दि मुऱैमऱुत् तुरैक्किन् ऱारुम्
पुरुवमुञ् जिलैयुङ् गोट्टिप् पुहैयुयिर्त् तुयिर्क्किन् ऱारुम्
विरिविल दिलङ्गै यॆन्ऱु वऴिपॆऱा विऴिक्किन् ऱारुम् 763

तॆरु इटम् इल्–सड़कों पर स्थान नहीं; ॲन्ऱु ॲण्णि–यह सोचकर; वान् इटै–नभ में; चॆल्किन्ऱारुम्–चलनेवाले और; मुऱै मऱुत्तु–कूच का क्रम तोड़कर; ऒरुवरिन् ऒरुवर् मुन्ति–एक-दूसरे के आगे जाकर; उरैक्किन्ऱारुम्–बोलनेवाले; पुरुवमुम् चिलैयुम् कोट्टि–भौंहों और धनु को झुकाकर; पुकै उयिर्त्तु–धुआँधार श्वास; उयिर्क्किन्ऱारुम्–छोड़नेवाले; विरिवु इलतु–विस्तृत नहीं; इलङ्कै–लंका; ॲन्ऱु–इस

कारण से; वऴि पॅऱा–जाने का मार्ग न पाकर; विऴिक्किन्ऱारुम्–ताकने वाले। ७६३

उस भीड़ में, भूमि पर मार्ग न पाकर अन्तरिक्ष में उड़ते जानेवाले थे; कूच का क्रम भंगकर आगे जानेवाले थे; आपस में स्थान के लिए झगड़ने वाले थे; धनु और भौंहों को झुकाते हुए धुआँधार श्वास निकालनेवाले थे। लंका पर्याप्त विस्तृत न रहा देख मार्ग न पाने की वजह से आँखें फाड़कर देखते खड़े के खड़े रहनेवाले भी थे। ७६३

वाळित्तै विदिर्क्किन् ऱारुम् वायित्तै मडिक्किन् ऱारुम्
तोळुऱक् कॉट्टिक् कल्लैत् तुहळ्पडत् तुहैक्किन् ऱारुम्
ताळ्पॅयर्त् तिडम्बॅ ऱादु तरुक्किनर् नॅरुक्कु वारुम्
कोळ्वळै यॅयिऱु तिन्ऱु तीयॅनक् कॉदिक्किन् ऱारुम् 764

वाळित्तै वितिर्क्किन्ऱारुम्–तलवारों को हिलानेवाले; वायित्तै मटिक्किन्ऱारुम्–ओंठ काटनेवाले; तोळ्–कन्धों को; उऱ–खूब; कॉट्टि–ठोंककर; कल्लै–पत्थरों को; तुकळ् पट–धूल में परिवर्तित करते हुए; तुकैक्किन्ऱारुम्–रौंदनेवाले; ताळ् पॅयर्त्तु–डग बदलने; इटम् पॅऱातु–स्थान न पाकर; तरुक्कित्तर्–घमण्ड करके; नॅरुक्कुवारुम्–पिल पड़नेवाले; कोळ् वळै ऍयिऱु–कठोर वक्र दाँत; तिन्ऱु–पीसते हुए; ती ऍन्न–आग के समान; कॉतिक्किन्ऱारुम्–खौलनेवाले-बने। ७६४

तलवार घुमानेवाले, ओंठ चबानेवाले, कन्धे ठोंकनेवाले, पत्थर को चूर-चूरकर रौंदनेवाले, पैर उठाकर रखने का स्थान न पाने से खीझकर दूसरों को ढकेलनेवाले, अपने सुदृढ़ वक्र दाँतों को पीसनेवाले और आग-से खौलने वाले (होकर वे जा रहे थे।)। ७६४

अन्नैवरु मलैयॅन्न निन्ऱा रळवऱु पडैहळ् पयिन्ऱार्
अन्नैवरु मरियि नुयर्न्दा रहलिड नॅळिय नडन्दार्
अन्नैवरुम् वरत्ति नमैन्दा रशनिमि न्नणिह ळणिन्दार्
अन्नैवरु ममरै वॅन्ऱा रशुररै युयिरै ययित्ऱार् 765

अन्नैवरुम्–सब; मलै ऍन्न–पर्वत के समान; निन्ऱार्–खड़े रहे; अळवु अऱु–अगणित; पटैकळ् पयिन्ऱार्–अस्त्राभ्यस्त; अन्नैवरुम्–सभी; अरियिन् उयर्न्तार्–सिंह-सदृश (बल-विक्रम में) उन्नत; अकल् इटम्–विशाल भूमि को; नॅळिय–लचकाते हुए; नटन्तार्–चले; अन्नैवरुम्–सभी; वरत्तिल् अमैन्तार्–अनेक वरों को प्राप्त कर चुके थे; अचनि मिन्–वज्र के साथ कौंधनेवाली बिजली के समान; अणिकळ् अणिन्तार्–आभरण पहने हुए; अन्नैवरुम् अमररै वॅन्ऱार्–सब देवजयी हैं; अचुररै उयिरै–असुरों के प्राणों को; अयिन्ऱार्–खा (हर चुके) थे। ७६५

राक्षस पर्वतों के समान खड़े रहे। वे सब असंख्य-अस्त्राभ्यस्त थे। सब सिंह-सदृश बल में बढ़े हुए थे। जब वे चलते तब भूमि लचक जाती थी। सबको अनेक वर मिले थे। उनके आभरण अशनि के साथ

कौंधनेवाली बिजली की-सी चमक और नाद से युक्त थे। वे सब देव-विजयी थे। असुरों की भी जान के गाहक थे। ७६५

कुऱुहिन कवशरु मिन्नुबोऱ् कुरैहऴ्‌ लुरहरुम् वन्नुबोऱ्
मुऱुहिन पॊऴुदि नुडैन्दाऱ् मुदुहिड मुऱुवल् पयिन्ऱाऱ्
इऱुहिन निदिहिऴ्‌ वन्बे रिशैहॆड वऴहै यॆरिन्दाऱ्
तॆऱुहुन्न रिन्मैयिन् वन्ऱो डिन्नवुऱ वुलहु तिरिन्दाऱ् 766

कुऱुकिन्न कवचरुम्–कसे लगे कवच वाले निवातकवच जाति के दैत्य; मिन्पोल्–विजली-सम और; कुरैकऴल्–क्वणनशील पायलधारी; उरकरुम्–नाग; वन्पोर्–कठोर युद्ध; मुऱुकिन पॊऴुतिन्–जब उच्च स्थिति मे आया; उटैन्तार्–हारकर; मुतुकु इट–पीठ दिखाते हुए भागे; मुऱुवल् पयिन्ऱार–(तब ये राक्षस) हँसे थे; इऱुकिन्न निति किऴवन्–अक्षय-धन कुवेर का; पेर् इचै कॆट–वड़ा यश नष्ट करते हुए; अऴकै ऍरिन्तार्–अलकापुरी का ये नाश कर चुके; तॆऱुकुनर् इन्मैयिन्–भिड़नेवाले नहीं मिले, इसलिए; वन् तोऴ्–कठोर कन्धों में; तिनवु उऱ–खुजली (युद्ध की चाह) हुई; उलकु तिरिन्तार्–लोक भर में विजय-याता कर आये थे। ७६६

जब उनके विरुद्ध निवातकवच जाति के असुरों और विजली के समान चमकनेवाली और क्वणनशील पायलधारी नागों ने युद्ध ठाना था, तब वे ही हारकर पीठ दिखाते हुए भागे और ये राक्षस हँसी उड़ाते खड़े रहे। इन्होंने अक्षय निधि के देवता कुवेर की वड़ी कीर्ति को मिटाते हुए अलकापुरी को नष्ट कर दिया था। इनसे भिड़ने को कोई नही आ रहे थे, इसलिए वे अपने कन्धों पर की खुजली लेकर (युद्ध की भूख के कारण) संसार भर में विजययाता कर चुके थे। (वाल्मीकि के अनुसार निवातकवचों के और उरगों के साथ रावण का दिग्विजय के अवसर पर युद्ध छिड़ा था। ये राक्षस वीर भी तव उसके साथ थे।)। ७६६

वरैहऴै यिडऱुमि नॆन्ऱान् मऱिहडल् परुहुमि नॆन्ऱाल्
इरवियै विऴविडु मॆन्ऱा लॆऴमऴै पिऴियुमि नॆन्ऱाल्
अरविन्न दरशिनै यॊन्ऱो तरैयिनॊ डरैयुमि नॆन्ऱाल्
तरैयिनै यॆडुमॆडु मॆन्ऱा लॊरुवरः(ह्) दमैदल् शमैन्दाऱ् 767

वरैकऴै–पर्वतों को; इटऱुमिन्–ठुकराओ; ऍन्ऱाल्–कहें तो; मऱिकटल्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों के सागर को; परुकुमिन् ऍन्ऱाल्–पी जाओ, कहा जाय तो; इरवियै–रवि को; विऴ विटुमिन्–गिराओ; ऍन्ऱाल्–कहा जाय तो; ऍऴु मऴै–उत्थित मेघों को; पिऴियुमिन्–निचोड़ो; ऍन्ऱाल्–कहा जाय तो; अरविन्तु अरचिनै–सर्पराज; ऑन्ऱो–एक क्या; तरैयिनोटु अरैयुमिन्–सवको भूमि पर दे मारो; ऍन्ऱाल्–कहा जाय तो; तरैयिनै ऍटुम् ऍटुम्–भूमि को उठा लो; ऍन्ऱाल्–कहा जाय; ऑरुवर्–एक-एक; अ.'.तु–वह; अमैतल्–करने; चमैन्तार्–योग्य बने रहे। ७६७

इन लोगों से (रावण द्वारा) कहा जाय कि पर्वतों को ठुकरा दो,

तरंगायमान सागर को पी लो, रवि को ढहा दो, उठते मेघों को निचोड़ दो या एक क्या अनेक सर्पराजों को भूमि पर ले पटक दो या भूमि को उठाओ, तो वे एक-एक वे सब कार्य करने का सामर्थ्य रखते थे। ७६७

तूळियि न्निमिर्पड लम्बो यिमैयवर् विळिदुर वॅम्बोर्
आळियि नित्रमॅन वन्ऱा ळडुपुलि निरैयॅन्न विण्डोय्
मोळियि नणियॅन वन्ऱो ललैहडल् विडमॅन्न वॅञ्जार्
वाळियिन् विशैहॉडु तिण्गार् वरैवरु वन्नवॅन वन्दार् 768

निमिर् तूळियिन् पटलम्–उठी धूल के पटल ने; पोय्–ऊपर जाकर; इमैयवर् विळि–देवों की आँखों को; तुर–मीच दिया; वॅम् पोर्–कठोर युद्ध करनेवाले; आळियिन् इत्तम् ॲन–सिंह-समूहों के समान; वल् ताळ्–सुदृढ़ पैरों वाले; अट्टु पुलि–संहारक व्याघ्रों की; निरै ॲन–पंक्ति के समान; विण् तोय्–गगनोन्नत; मीळियिन् अणि ॲन–भूतों के वृन्द के समान; ओल् अलै कटल्–शब्दायमान तरंगों के सागर के; अन्ऱु विटम् ॲन–उस दिन उत्पन्न विष के समान; ॲञ्चार्–अथक; वाळियिन् विचै कॉटु–शर-गति अपना लेकर; तिण् कार् वरै–प्रबल काले पर्वत; वरुवन ॲन–चलते आते हों, जैसे; वन्तार्–(हनुमान पर चढ़) आये। ७६८

उनके कूच से धूलपटल उठा और उससे देवों की आँखें मुँद गयीं। वे घातक युद्ध-रत सिंहों के झुण्डों के समान, सबल पैरों वाले संहारक व्याघ्रवृन्द के समान और गगनोन्नत पिशाचों के समूहों के समान, पूर्वकाल में गर्जनशील सागर से उत्पन्न हलाहल के समान अथक रूप से अस्त्रगति-सी गति में बढ़ते जा रहे थे। वे काले पर्वतों के समान हनुमान को घेर आये। ७६८

पॉऱिदर विळियुयि रॉन्ऱो पुहैयुह वयिलॉळि मिन्बोल्
शॅऱिदर वुरुमदिर् हिन्ऱार् तिशैदॉऱुम् विशैहॉडु शॅन्ऱार्
ॲऱिदरु कडैयुह वन्गा लिडऱिड वुरुमि निलम्बोय्
मऱिदर मळैयहल् विण्बोल् वडिवळि पॉळिलै वळैन्दार् 769

उयिर् ऑन्ऱो–केवल श्वास एक से नहीं; विळि–आँखें भी; पॉऱि तर–अंगारे निकालते रहे; पुकै उक–धुआँ उगलते; अयिल् ऑळि–शक्तियों का तेज; मिन् पोल्–बिजली के समान; चॅऱि तर–घने रूप से चमका; उरुम् अतिर्किन्ऱार्–वज्रनाद करते; तिचै तॉऱु–दिशाओं से; विचै कॉटु–क्षिप्रगति से; चॅन्ऱार्–घेर आये; कटै युकम्–युगान्त में; ॲऱि तरु–बहनेवाले; वन् काल् इटऱिट–प्रचण्ड पवन से उत्पाटित; उरुम् इत्तम् पोय् मऱि तर–वज्रसमूह स्थानान्तर में गिरे हों जैसे; मळै अकल्–मेघरहित; विण् पोल्–आकाश के समान; वटिवु अऴि–(जिसमें थे और जो अपना) मनोरम रूप खो चुका था; पॉऴिलै–अशोक वन को; वळैन्तार्–घेर गये। ७६९

उनके श्वास से ही नहीं, आँखों से भी अंगारे निकल रहे थे। धुआँ भी

को तोड़ते हुए डग भरनेवाले और बाँस-वन जलता जैसे हथियार चलानेवाले —ऐसे राक्षस आ जुटे। ७७३

अऱवनु मदनै यऱिन्दा नऱुहिनि नमैय वडैन्दान्
इऱविनि नुदवु नॆडुन्दा रुयर्मर मॊरुहै यियैन्दान्
उऱवरु तुणैयॆन वॊन्ऱे युदविय वदनै युहन्दान्
निऱैहडल् कडैयु नॆडुन्दाण् मलैयॆन नडुव णिमिर्न्दान् 774

अऱवनुम् अतनै अऱिन्तान्–धर्मरूप हनुमान ने भी वह जाना; इऱविनिन् उतवुम्–बेकार होने (टूटने) पर भी सहायता (प्रहार) करनेवाले; नॆटुम् तार्–सीधे और; उयर् मरम्–ऊँचे एक पेड़ के; अरुकिनिन्–पास; अमैय अटैन्तान्–लगा गया; उऱ वरु–सन्दर्भ आये तब आनेवाले; तुणै ऎन–सहायक के समान; ऒन्ऱे उतविय अतनै–अकेले बचे रहे सहायक उसे; उकन्तान्–चाह से; ऒरु कै इयैन्तान्–एक हाथ में लेकर; निऱै कटल् कटैयुम्–भरे समुद्र को मथनेवाले; नॆटुम् ताळ्–बड़े निचले भाग के साथ; मलै ऎन–पर्वत के समान; नटुवण् निमिर्न्तान्–(अशोक वन के मध्य) तना खड़ा रहा। ७७४

धर्मरूप हनुमान ने यह जाना। वह एक ऊँचे पेड़ के पास गया। वह मिटकर भी सहायता करनेवाला निकला। एकाकी आपत्काल-सहायक उसे उसने चाव के साथ एक हाथ में पकड़ लिया। फिर वह उस मैदान में सागरमथनकारी विशाल तलप्रदेश वाले पर्वत के समान तन कर खड़ा हुआ। ७७४

परुवरै पुरळ्वन वॊन्ऱो पडर्मऴै यरुवि नॆडुङ्गाल्
शॊरिवन पलवॆन मण्डोय् तुऱैपॊरु कुरुदि शॊरिन्दार्
ऒरुवरै यॊरुवर् तॊडर्न्दा रुयर्तलै युडैय वुरुण्डार्
अरुवरै नॆरिय विऴुम्बे रशनियु मऱैय वऱैन्दान् 775

अरुवरै–बड़े-बड़े पर्वतों को; नॆरिय विऴुम्–चूर करते हुए गिरनेवाले; पेर् अचनियुम्–बड़े वज्रों (के घोष) को भी; मऱैय–अपने में दबा लेते हुए; अऱैन्तान्–(हनुमान ने उस तरु से) मारा; परुवरै बड़े पर्वत; पुरळ्वन ऒन्ऱो–लुढ़के-से लगे, क्या इतना ही; पटर् मऴै अरुवि–उन पर फैले रहे मेघों के जल की बनी नदियाँ रूपी; नॆटुम् काल्–लम्बे नाले; पल चॊरिवन ऎन–अनेक बहते जैसे; मण् तोय्–भूमि पर रहे; तुऱै पॊरु–घाटों को ढकेलते हुए भरनेवाले; कुरुति चॊरिन्तार्–रक्त-प्रवाह बहाते हुए; ऒरुवरै ऒरुवर्–एक-दूसरे का; तॊटर्न्तार्–पीछा किया; उयर् तलै–बड़े सिर; उटैय–टूटे; उरुण्टार्–लुढ़के। ७७५

हनुमान ने उस तरु से उनको मारा, जिससे ऐसी ध्वनि निकली जिसके सामने पर्वतचूर्णकारी तुमुल वज्र भी मौन हो रहे! तब पर्वत लुढ़के-जैसे राक्षस लोट गये। वहीं तक बात नहीं रुकी। पर्वतों पर जैसे मेघ-वर्षा से उत्पन्न नदियाँ बहती हैं, वैसे ही उनके शरीर पर से रक्त-नदियाँ

बह निकलीं जिससे घाट भर गये। वे एक-दूसरे के अनुकरण में अपना उन्नत सिर तुड़वा लेकर मरे। ७७५

परैपुरै विऴिहळ् पऱिन्दार् पडियिडै नॆडिदु पडिन्दार्
पिऱैपुरै यॆयिऱु मिऴन्दार् पिडरॊडु तलैहळ् पिळन्दार्
कुऱैयुयिर् शिदऱि नॆरिन्दार् कुडरॊडु कुरुदि शॊरिन्दार्
मुऱैमुऱै पडैह ळॆरिन्दार् मुडैयुडल् मऱिय मुऱिन्दार् 776

मुऱै मुऱै–अनेक बार; पटैकळ् तॆरिन्तार्–हथियार चुनकर फेंके; पऱै पुरै–ढोल के (गोल चमड़े के) समान; विऴिकळ् पऱिन्तार्–आँखें-उखड़े हो गये; पटि इटै–भूमि पर; नॆटितु पटिन्तार्–लम्बे तान गये; पिऱै पुरै–कलाचन्द्र-समान; ऍयिऱुम् इऴन्तार्–दाँत खो गये; पिटर् ओटु–गलाओं के साथ; तलैकळ् पिळन्तार्–फटे-सिर हो गये; कुऱै उयिर्–विकल-प्राण होकर; चितऱि नॆरिन्तार्–अस्त-व्यस्त गिरकर दब गये; कुटर् ओटु–आँतड़ों के साथ; कुरुति–रक्त; चॊरिन्तार्–बाहर निकाला; मुटै उटल्–दुर्गन्धपूर्ण शरीर; मऱिय–मिटाते हुए; मुऱिन्तार्–टूटे और मरे, कुछ। ७७६

उन राक्षसों ने अनेक बार हनुमान पर चुन-चुनकर हथियार चलाए। पर क्या लाभ? उनकी आँखें, जो ढोल के चमड़े के समान बड़ी और वर्तुल थी, फूट गयीं। वे भूमि पर लम्बा तान गये। चन्द्रकला के समान दाँत खोये। उनके गले चिरे और सिर फूटे। कुछ के थोड़े से प्राण बचे थे। वे भी एक-दूसरे पर गिरकर दबकर मर गये। कुछ की अँतड़ियाँ और रक्त बाहर निकल गया। कुछ अपने दुर्गन्धपूर्ण शरीर को तोड़ते हुए गिरे और मरे। ७७६

पुडैयुडै विऴिहऩ् लिऩ्गाय् पॊऱियिडै मयिर्हळ् पुहैन्दार्
तॊडैयॊडु मुदुहु तुणिन्दार् शुऴिपडु कुरुदि शॊरिन्दार्
पडैयिडै यॊडिय नॆडुन्दोळ् पऱिदर वयिऱु तिऱन्दार्
इडैयिडै मलैयिन् विऴुन्दा रिहल्पॊर मुडुहि यॆऴुन्दार् 777

इकल् पॊर–युद्ध लड़ने के लिए; मुटुकि ऍऴुन्तार्–शीघ्र उठ आये; पुटै उटै–दोनों ओर रहनेवाली; विऴि कऩलिऩ्–आँखों से निकली आग के; काय् पॊऱि इटै–जलते अंगारों के मध्य; मयिर्कळ्–रोम; पुकैन्तार्–धुआँ-बने हुए; तॊटै ओटु–जंघाओं के साथ; मुतुकु तुणिन्तार्–पीठ-कटे हुए; चुऴि पटु–आवर्तयुक्त; कुरुति चॊरिन्तार्–रक्त-नदियाँ बहायीं; पटै–हथियारों के; इटै ऑटिय–बीच में टूटने से; नॆटुम् तोळ्–लम्बी भुजाओं के; पऱि तर–छिन जाते; वयिऱु तिऱन्तार्–पेट फट गये; इटै इटै–इधर-उधर; मलैयिऩ् विऴुन्तार्–पर्वत के समान भूमि पर गिरे। ७७७

युद्ध में लड़ने के लिए राक्षस वेग के साथ आये। उनके नेत्रों से निकली आग के अंगारे में उनके केश जल उठे। उनकी जाँघें और पीठें कट गयीं। उन्होंने रक्त का इतना बड़ा प्रवाह उगला कि उसमें भँवरें

उठीं। उनके हथियार बीच में टूट गये, कन्धे शरीर से अलग हुए; पेट खुले और भागते-भागते पर्वतों के समान जगह-जगह पर गिरे पड़े रहे। ७७७

पुदैपड विरुळिऩ् मिडैन्दार् पॊडियिडै नॆडिदु पुरण्डार्
विदैपडु मुयिरर् विऴुन्दार् विऴियॊडु विळियु मिऴन्दार्
कदैहॊडु मुदिर मलैन्दार् कणैपॊरु शिलैयर् कलन्दार्
उदैपड वुरत्तु नॆरिन्दा रुयिरॊडु कुरुदि युमिऴ्न्दार् 778

कतै कॊट्टु–गदा लेकर; मुतिर मलैन्तार्–घोर युद्ध करनेवाले; कणै पॊरु चिलैयर्–शर चलाकर युद्ध करनेवाले धनुर्धर; कलन्तार्–जो वहाँ आ मिले; उतै पट–हनुमान की लातें खाकर; उरत्तुम् नॆरिन्तार्–वक्ष के दबकर फटने से; उयिरॊटु–प्राणों के साथ; कुरुति–रक्त भी; उमिऴ्न्तार्–उगले; इरुळिऩ् मिटैन्तार्–अन्धकार के समान जो जुटे थे; पॊटि इटै–धूल के मध्य; पुतै पट–गड़कर; नॆटितु पुरण्टार्–बहुत दूर लोटे; वितै पटुम्–बोये बीज के समान गिरे; उयिरर्–जीव; विऴुन्तार्–मरे गिरे; विऴि ऒटु–आँखों के साथ; विळियुम्–वाक्-शक्ति भी; इऴन्तार्–खोये बने। ७७८

राक्षस गदा लेकर लड़ने आये। कुछ लोग शर चलाने धनु के साथ आये। उन सबने लातें खायी, जिससे उनके वक्ष हत हुए और रक्त-वमन के साथ प्राण भी निकल गये। अन्धकार के समान आ जुटे वे धूल में धँसकर दूर तक लोटे। कुछ तो बोये बीजों के समान यत्र-तत्र गिरकर विगत-प्राण हुए। उनकी आँखें भी गयी और बोलने की शक्ति भी। ७७८

अयलयत् मलैहॊ डऱैन्दा रडुपहै यळवै यडैन्दार्
वियलिड मऱैय विरिन्दार् मिशैयुल हडैय मिडैन्दार्
पुयऱॊडु मलैयित् विऴुन्दार् पुडैपुडै तिशैतॊऱु शॆन्ऱार्
उयर्वुऱ विशैयि नॆदिर्न्दा रुडलॊडु मुलहु तुऱन्दार् 779

अयल् अयल्–पास इधर-उधर के; मलै कॊट्टु–पर्वतों को लाकर; अऱैन्तार्–फेंके (उन राक्षसों ने); अटु पकै–घातक शत्रुता के; अळवै अटैन्तार्–उच्चतम माप पर गये; वियल् इटम्–विशाल स्थल; मऱैय–आच्छादित करते हुए; विरिन्तार्–फैले खड़े रहे; मिचै उलकु–ऊपर के लोक; अटैय मिटैन्तार्–भर में जा भर गये; पुयल् तॊटु–मेघस्पर्शी; मलैयिऩ्–पर्वतों के समान; विऴुन्तार्–(हनुमान द्वारा हत होकर) गिरे; पुटै पुटै–पार्श्व-पार्श्व में; तिचै तॊऱु–सभी दिशाओं में; चॆऩ्ऱार्–गये; उयर्वु उऱ–नामवरी के लिए; विचैयिऩ् ऎतिर्न्तार्–वेग के साथ जो भिड़े; उटल् ऒटुम्–(उन्होंने) शरीर के साथ; उलकु तुऱन्तार्–इहलोक भी छोड़ दिया। ७७९

राक्षसों ने पास के स्थानों से पर्वत उठाकर फेंके। वे शत्रुता की पराकाष्ठा तक पहुँच गये थे। विशाल भूमि पर फैले खड़े हुए। वे आकाश-

लोक को भरते हुए जा पहुँचे। मेघाच्छादित पर्वतों के समान वे हनुमान के प्रहारों से आहत होकर गिर गये। सब ओर सभी दिशाओं में भाग चले। कुछ लोग कीर्ति-लिप्सा लेकर हनुमान से भिड़े, तो बेचारे उनको शरीर के साथ इहलोक को भी छोड़ना पड़ा। ७७९

पऱ्ऱित् ताळोंडु तोळ्परित् तॅऱिन्दनन् पारिन्
इऱ्ऱ वॅञ्जिऱै वॅऱ्पिन मामॅनक् किडन्दार्
कॊऱ्ऱ वालिडैक् कॊडुन्दॊऴि लरक्करै यडङ्गच्
चुऱ्ऱि वीशलिऱ पम्बर मामॅनच् चुऴन्ऱार् 780

पऱ्ऱि–(हनुमान ने) उनको पकड़कर; ताळ् ओटु तोळ् परित्तु–पैरों के साथ हाथों को अलग छीन लेकर; ऍऱिन्तनन्–फेंक दिया; वॅम् चिऱै इऱ्ऱ–कठोर पंख-कटे; वॅऱ्पु इनम् आम् ॲन–पर्वतकुल के समान; पारिऩ्–भूमि पर; किटन्तार्–पड़े रहे; कॊटुम् तॊऴिल् अरक्करै–नृशंसकारी राक्षसों को; कॊऱ्ऱ वाल् इटै–अपनी सबल पूँछ से; अटङ्क–दबा लेकर; चुऱ्ऱि वीचलिल्–घुमाकर फेंका (हनुमान ने) तो; पम्परम् आम् ॲन–लट्टू के समान; चुऴन्ऱार्–घूमे। ७८०

हनुमान ने उनको पकड़ा और पैरों तथा कन्धों को नोच लिया और दूर फेंक दिया। वे पंखहीन बड़े पर्वतों के समान भूमि पर पड़े रहे। हनुमान ने कुछ नृशंसकारी राक्षसों को अपनी पूँछ से लपेटकर घुमाया और झटका दिया और वे लट्टू के समान घूमे। ७८०

वाळ्ह ळिऱ्ऱन विऱ्ऱन वरिशिलै वयिरत्
तोळ्ह ळिऱ्ऱन विऱ्ऱन शुडर्मऴुच् चूलम्
नाळ्ह ळिऱ्ऱन विऱ्ऱन नहैयॅयिऱ् ऱीट्टम्
ताळ्ह ळिऱ्ऱन विऱ्ऱन पडैयुडैत् तडक्कै 781

वाळ्कळ् इऱ्ऱन–तलवारें खण्डित हुईं; वरि चिलै इऱ्ऱन–सबन्ध धनु टूटे; वयिर तोळ्कळ् इऱ्ऱन–वज्र-सम कन्धे कटे; चुटर् मऴु–तप्त लोहे के समान; चूलम् इऱ्ऱन–(तेजोमय) त्रिशूल टूटे; नाळ्कळ् इऱ्ऱु अन–नक्षत्र टूट गिरे जैसे; नकै ऍयिऱ्ऱु ईट्टम्–उज्ज्वल दाँतों के समूह; इऱ्ऱन–चू गये; ताळ्कळ् इऱ्ऱन–पैर कटे; पटै उटै–हथियारवाही; तटक्कै–विशाल हाथ; इऱ्ऱन–कटकर गिरे। ७८१

हनुमान के प्रहारों से राक्षसों की तलवारें टूटीं; सबन्ध धनु टूटे; वज्र-सम कन्धे टूटे; तप्त लोहे के समान उज्ज्वल त्रिशूल टूटे; और नक्षत्र टूटकर गिरे जैसे वक्र दन्तों के समूह टूटे। पैर टूटे और हथियारवाही विशाल हाथ भी टूटे। ७८१

तॅऱित्त वन्ऱलै तॅऱित्तन शॆऱिशुडर्क् कवशम्
तॅऱित्त पॆङ्गऴल् तॅऱित्तन शिलम्बॊडु पॊलन्दार्

तॅऱितत पन्मणि तॅऱितत्तन पॅरुम्बॊऱित् तिरळ्गळ्
तॅऱितत कुण्डलन् दॅऱितत्तन कण्मणि शिदऱि 782

वन् तलै–सबल सिर; तॅऱितत–छितर गये; चुटर् चॅऱि–प्रकाशमय; कवचम् तॅऱितत्तन–कवच टूट गये; पैम् कऴल्–चोखे स्वर्ण की बनी पायलें; तॅऱितत–टूटीं; चिलम्पॊटु–नूपुरों के साथ; पॊलम् तार्–स्वर्णहार; तॅऱितत्तन–कटकर गिरे; पल् मणि–अनेक रत्न; तॅऱितत–बिखर गये; पॅरुम् पॊऱि तिरळ्कळ्–बड़े-बड़े वीरपट्ट आदि तमग़े; तॅऱितत्तन–अलग-अलग हो गये; कुण्टलम् तॅऱितत–कुण्डल कटे; कण् मणि चितऱि तॅऱितत्तन–आँखों की पुतलियाँ छितरीं, बिखरीं। ७८२

उनके भारी सिर फूटे; तेजोमय कवच फूटे; चोखे स्वर्ण की बनी पायलें फूटीं; नूपुर फूटे और हार फूटे। मणियाँ फूटीं और गौरव के चिह्न वीरपट्ट और तमग़े फूटे। कुण्डल फूटे और आँखें फूटीं। ७८२

उक्क पऱ्कुवै युक्कन तुवक्कॅलुम् बुदिर्वुऱ्
ऱुक्क मुऱ्कर मुक्कन मुशुण्डिह ळुडैयुऱ्
ऱुक्क शक्कर मुक्कन वुडऱिऱन् दुयिर्हळ्
उक्क कप्पण मुक्कन वुयर्मणि महुडम् 783

पल् कुवै उक्क–दाँतों के समूह गिरे; तुवक्कु–खाल और; ॲलुम्पु–हड्डियाँ; उक्कत–चूर-चूर हो गिरीं; मुऱ्करम् उतिर्वु उऱ्ऱु उक्क–मुद्गर खण्ड-खण्ड होकर बिखरे; मुचुण्टिकळ् उटैवु उऱ्ऱु उक्कत–'भुशण्डी' हथियार बिखरे; चक्करम् उक्क–चक्रायुध के टुकड़े बने और बिखरे; उटल् तिऱन्तु–शरीर चिरे और; उयिर्कळ् उक्कन–प्राण उड़े; कप्पणम्–'कप्पण' नाम के हथियार; उक्क–चूर हो बिखरे; उयर्मणि–श्रेष्ठ रत्नों के बने; मकुटम् उक्कत–मुकुट टूटे, गिरे। ७८३

दाँतों की पंक्तियाँ बिखरीं; चमड़े और हड्डियाँ बिखरीं; मुद्गर खण्ड-खण्ड होकर बिखरे। भुशण्डि नाम के हथियार बिखरे। चक्रायुध बिखरे। शरीर खुले और प्राण बिखरे। कप्पण नामक हथियार (जिनको अरिकण्ठ भी कहा जाता है) बिखरे। श्रेष्ठ रत्नमुकुट बिखरे। (७८१वें पद्य में "इऱ्ऱन," ७८२वें पद्य में "तॅऱितन" और ७८३वें पद्य में "उक्कन" शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'इऱुतल्'— टूटकर बिखरना है; 'तॅऱितल'— खण्ड-खण्ड होकर या फूटकर बिखरना है और 'उकुतल्'— दरार खाकर चूर-चूर हो बिखरना है। भेद बारीक है।)। ७८३

ताळ्ह ळाऱ्पलर् तडक्कैह ळाऱ्पलर् ताक्कुम्
तोळ्ह ळाऱ्पलर् शुडर्विऴि याऱ्पलर् तॊडरुम्
कोळ्ह ळाऱ्पलर् कुत्तुह ळाऱ्पलर् तत्तम्
वाळ्ह ळाऱ्पलर् मरङ्गळि नाऱ्पलर् मडिन्दार् 784

ताळ्कळाल्–(हनुमान के) पैरों (के प्रहार) से; पलर्–अनेक; तट कैकळाल्–

विशाल हाथों से; पलर्—अनेक; ताक्कुम्—टकरानेवाले; तोळ्कळाल्—कन्धों से; पलर्—अनेक; चुटर् विळियाल्—आँखों की आग से; पलर्—अनेक; तोंटरुम् कोळ्कळाल्—पकड़कर दबाने से अनेक; कुत्तुकळाल् पलर्—घूँसों से अनेक; तत्तम् वाळ्कळाल्—अपनी-अपनी तलवारों से; पलर्—अनेक; मरङ्कळिताल् पलर्—पेड़ों से अनेक (राक्षस); मट्टिन्तार्—हत हुए। ७८४

हनुमान के पैरों के प्रहार से अनेक राक्षस मरे। विशाल हाथों से अनेक, कन्धों से अनेक, ज्वलन्त दृष्टि की आग से अनेक, उसके पकड़ने से अनेक और घूँसों से अनेक मरे। अपनी-अपनी तलवार की वार से भी अनेक मरे। उसने पेड़ों से पीटकर अनेकों को निपात दिया। ७८४

ईर्क्कप् पट्टऩर् शिलर्शिल रिडियुण्डु पट्टार्
पेर्क्कप् पट्टऩर् शिलर्शिलर् पिडियुण्डु पट्टार्
आर्क्कप् पट्टनर् शिलर्शिल रडियुण्डु पट्टार्
पार्क्कप् पट्टनर् शिलर्शिलर् पयमुण्टु पट्टार् 785

चिलर्—कुछ; ईर्क्क—खींचने से; पट्टत्तर्—मरे; चिलर्—कुछ; इटि उण्टु—धक्के खाकर; पट्टार्—मरे; चिलर्—कुछ; पेर्क्क—फेंके जाकर; पट्टत्तर्—मरे; चिलर्—कुछ; पिटि उण्टु—मुट्ठी में पिसकर; पट्टार्—मरे; चिलर्—कुछ; आर्क्क—बँध जाकर; पट्टनर्—मरे; चिलर्—कुछ; अटि उण्टु—पिटकर; पट्टार्—मरे; चिलर्—कुछ; पार्क्क—हनुमान की दृष्टि पड़ने से ही; पट्टत्तर्—मरे; चिलर् पयम् उण्टु—कुछ भय खाकर; पट्टार्—मरे। ७८५

कुछ लोगों को हनुमान ने पकड़कर खींचा और वे मर गये। धक्का खाकर कुछ लोग, फेंके जाने से कुछ लोग, केवल गह लेने से अनेक और कुछ लोग बँध जाने से मरे। पिटकर कुछ मरे और कुछ राक्षसों पर हनुमान ने दृष्टि डाली और वे मर गये। कुछ भय खाकर प्राण त्याग गये। ७८५

ओडिक् कॉन्ऱनऩ् शिलवरै युडलुड ऱोरुम्
कूडिक् कॉन्ऱनऩ् शिलवरैक् कॉडिनॆंडु मरत्ताल्
शाडिक् कॉन्ऱनन् शिलवरैप् पिणन्दॊरुन् दडवित्
तेडिक् कॉन्ऱनन् शिलवरैक् करङ्गॊनत् तिरिवान् 786

करङ्कु अँन—चक्र के समान; तिरिवान्—घूमनेवाले (हनुमान) ने; चिलवरै—कुछ राक्षसों को; ओटि कॉन्ऱनऩ्—दौड़कर पकड़ा और निपाता; चिलवरै—कुछ राक्षसों को; उटल् उटल् तोरुम्—शरीर से शरीर; कूटि—भिड़ाकर; कॉन्ऱत्तन्—मारा; चिलवरै—कुछ राक्षसों को; कॉटि नॆंटु मरत्ताल्—लम्बे ध्वज-स्तम्भ से; चाटि—पीटकर; कॉन्ऱत्तन्—मारा; चिलवरै—कुछ लोगों को; पिणम् तोरुम्—लाशों के बीच; तटवि तेटि—ढूँढ़ पाकर; कॉन्ऱत्तन्—मारा। ७८६

वातचक्र के समान हनुमान घूमता रहा। उसने दौड़कर कुछ

राक्षसों को निपाता। कुछ राक्षसों को एक-दूसरे के शरीर से भिड़ाकर मारा। कुछ राक्षसों को लम्बे ध्वजस्तम्भ से पीटकर मारा। लाशों के मध्य ढूँढ़ पाकर कुछ राक्षसों को मारा। ७८६

मुट्टि नाऱ्पड मुट्टिऩाऩ् मुऱैमुऱै मुडुहिक्
किट्टि नाऱ्पडक् किट्टिऩाऩ् किरियॅऩ नॆरुङ्गिक्
कट्टि नाऱ्पडक् कट्टिऩाऩ् कैहळाऩ् मॅय्यिल्
तट्टि नाऱ्पडत् तट्टिऩाऩ् मलैयॅऩत् तहुवाऩ् 787

मलै ॲऩ तकुवाऩ्–पर्वत-सम मान्य हनुमान; मुट्टिऩार्–अपने से भिड़नेवालों को; पट–निपातते हुए; मुट्टिऩाऩ्–उनसे भिड़ा; मुऱै मुऱै–पंक्तियों में; मुटुकि–शीघ्र आकर; किट्टिनार्–जो पास पहुँचे; पट–उनको मारने; किट्टिऩाऩ्–उनके पास पहुँचा; किरि ॲऩ–पर्वत के समान; नॆरुक्कि–पास जाकर; कट्टिऩार्–जिन्होंने उसे बाँधा; पट–उन्हें मारते हुए उसने; कट्टिनाऩ्–पाशबद्ध कर दिया; कैकळाल्–अपने हाथों से; मॅय्यिल् तट्टिऩार्–जिन्होंने उसके शरीर पर थप्पड़ मारा; पट–उन्हें हत करते हुए; तटटिऩाऩ्–उसने भी थप्पड़ मारा। ७८७

पर्वत-समान हनुमान ने भिड़नेवालों से भिड़कर उन्हें प्राणहीन किया। क्रम से जो उसके पास दौड़े आये उन्हें उनके पास स्वयं दौड़ जाकर मारा। पर्वत के समान आकर जिन्होंने उसे पाश में लेना चाहा उन्हें उसने बाँधकर निपाता। कुछ लोगों ने उस पर हाथ लगाए तो उन्हें हाथ से पीटकर उसने हत कर दिया। ७८७

उऱक्कि नुङ्गॉल्लु मुणरिनुङ् गॉल्लुमाल् विशुम्बिल्
पऱक्कि नुङ्गॉल्लुम् बडरिनुङ् गॉल्लुमिऩ् बडैक्कुम्
निऱक्क रुङ्गळ लरक्कर्हळ् नॆऱिदॊऱुम् बॊऱिहळ्
पिऱक्क निऩ्ऱॆऱि पडैहळैक् कैहळाऱ् पिशैयुम् 788

उऱक्किऩुम्–(राक्षस) शिथिल रहे, तब भी; कॉल्लुम्–उन्हें मारता; उणरिऩुम् कॉल्लुम्–होश में रहते तब भी मारता; विचुम्पिल्–आकाश में; पऱक्किऩुम्–उड़ते तब भी; कॉल्लुम्–मारता; पटरिऩुम् कॉल्लुम्–भूमि पर चलनेवालों को भी मारता; मिऩ् पटैक्कुम्–बिजली उत्पन्न करनेवाले; करुम् निऱ–काले मेघों के-से रंग वाले; कऴल् अरक्कर्कळ्–पायलधारी राक्षस; नॆऱि तॊऱुम्–मार्गों में; पॊऱिकळ् पिऱक्क–अंगारे छोड़ते हुए; निऩ्ऱु–खड़े होकर; ॲऱि पटैकळै–जो फेंकते थे, उन हथियारों को; कैकळाल् पिचैयुम्–(हनुमान) अपने हाथों से पीस लेता। ७८८

हनुमान उनको भी मारता, जो शिथिल या अपने को भूले रहते; उनको भी मारता, जो सतर्क रहते। आकाश में उड़नेवालों को भी मारता, पैदल चलनेवालों को भी, विद्युज्जनक मेघ-सम काले व पायल-धारी राक्षस हथियार फेंकते और वे अपने मार्ग में अंगारे बिखेरते हुए आते। हनुमान उन हथियारों को पकड़कर पीस लेता। ७८८

शेऱुम् वण्डलु मूळैयु निणमुमाय्च् चॆऱ्रिय
नीऱु शेर्नॆडुन् दॆरुवॆला नीत्तमाय् निरम्ब
आऱु पोल्वरुङ् गुरुदियव् वनुमना ललैप्पुण्
डीऱिल् वाय्दॊऱु मुमिऴ्वदे यॊत्तदव् विलङ्गै 789

मूळैयुम्–भेजा; निणमुम्–और चर्बी; चेऱुम् वण्टलुमाय्–पंक और तलौंछ बनकर; चॆऱ्रिय–घने रूप से मिली रही; नीऱु चेर्–धूल-मिली; नॆटुम् तॆरु ऎलाम्–लम्बी सड़कों में; नीत्तमाय् निरम्प–प्रवाहमय हो जाएँ, ऐसा; आऱु पोल् वरुम्–नदियों के समान आनेवाला; कुरुति–रक्त; अ अनुमऩाल्–उस हनुमान द्वारा; अलैप्पुण्टु–हिलाया जाकर; अ इलङ्कै–वह लंका; ईऱु इल्–अनन्त; वाय् तॊऱुम्–मुखों से; उमिऴ्वतु ऒत्ततु–क़ै करता हो जैसे लगा। ७८६

राक्षसों के भेजे और मज्जे के पंक और तलौंछ बने। उनका रक्त नदी बना। वह धूल-भरी लंका की सड़कों पर वह चली। वह रक्त-नदी हनुमान द्वारा हिल गयी और ऐसा लगा कि वह लंका नगर असंख्य मुखों से रक्त वमन कर रहा हो। ७८९

करुदि वालिनुङ् गैयिनुम् कडिहैयिऱ् कट्टिच्
चुरुदि येयनन मारुदि मरत्तिडैत् तुरप्प
निरुद रॆन्दिरत् तिडुहरुम् बामॆन नॆरियक्
कुरुदि शारॆनप् पाय्न्ददु कुरैहडऱ् कूनै 790

चुरुतिये अऩ्ऩ–वेद ही सम; मारुति–मारुति के; करुति–सोचकर; वालिनुम् कैयिनुम्–पूँछ और हाथों से; कटिकैयिल्–ईख के टुकड़ों को जैसे; कट्टि–बाँधकर; मरत्तु इटै तुरप्प–पेड़ों के बीच में फेंकने पर; निरुतर्–राक्षस; ऎन्तिरत्तु इटु–यन्त्रों में डाले गये; करुम्पु आम् ऎऩ्ऩ–ईखों के समान; नॆरिय–पिसे; कुरुति–(और) रक्त; चाऱु ऎऩ्ऩ–इक्षुरस के समान; कुरै कटल्–गर्जनशील सागर रूपी; कूऩै–कड़ाहे में; पाय्न्ततु–बहकर भरा। ७६०

वेद-समान (स्थिर, अमर, अक्षय और हितकारी) हनुमान ने खूब ध्यान लगाकर पूँछ और हाथों से उन्हें बाँध लेकर इक्षुखण्डों को जैसे पेड़ों के मध्य फेंका। वे राक्षस यन्त्र (कोल्हू) में ग्रस्त (इक्षुखण्ड-जैसे) पिर गये। रस के समान रक्त जो निकला, वह शब्दायमान समुद्र रूपी कड़ाहे के अन्दर वहा। ७९०

ऎडुत्त रक्करै यॆऱिदॊऱु मवरुड लॆऱ्ऱुक्
कॊडित्तिण् माळिहै यिडिन्दन मण्डवङ् गुलैन्द
तडक्कै यानैहण् मडिन्दन गोबुरन् दहर्न्द
पिडिक्कु लङ्गळुम् बुरवियु मविन्दन पॆरिय 791

अरक्करै ऎट्टुत्तु–राक्षसों को उठाकर; ऎऱि तॊऱुम्–ज्यों-ज्यों फेंकता; अवर्

उटल् ऍऱ्ऱ–त्यों-त्यों उनके शरीरों के टकराने से; कॉटि–ध्वजा-सहित; तिण् माळिकै–प्रबल प्रासाद; इटिन्तऩ–टूट गये; मण्टपम्–मण्डप; कुलैन्त–ढह गये; तट कै यानैकळ्–लम्बी सूँड़ वाले गज; मटिन्तऩ–हत हुए; कोपुरम् तकर्न्त–मीनारें टूटीं; पॅरिय पिटि कुलङ्कळुम्–बड़ी-बड़ी गजनियों के वर्ग और; पुरवियुम्–अश्व; अविन्तऩ–मिटे। ७९१

ज्यों-ज्यों हनुमान ने राक्षसों को उठाकर फेंका, त्यों-त्यों उनके शरीरों के धक्के खाकर ध्वजा-सहित सुदृढ़ प्रासाद ढहकर गिरे। मण्डप मटियामेट हुए। बड़ी सूँड़ों के गज मरे। मीनारें टूटकर गिरीं। बड़ी-बड़ी हथिनियों के समूह और अश्व मर मिटे। ७९१

तत्त माडङ्ग डम्मुड लाऱ्चिलर् तहर्त्तार्
तत्त मादरैत् तङ्गळ लाऱ्चिलर् चमैत्तार्
तत्त माक्कळैत् तम्बडै याऱ्चिलर् तडिन्दार्
ऍत्ति मारुदि तडक्कैह ळान्विशैत् तॅऱिय 792

मारुति–मारुति के; तट कैकळाल्–अपने विशाल हाथों से; ऍत्ति विचैत्तु ऍऱिय–जोर से फेंक देने से; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; तत्तम् माटङ्कळ्–अपने-अपने प्रासादों को; तम् उटलाल्–अपने ही शरीरों से; तकर्त्तार्–तोड़ दिये; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; तत्तम् मातरै–अपनी अपनी स्त्री को; तम् कळलाल् चमैत्तार्–अपने पैरों से रौंद दिया; चिलर्–कुछ (राक्षसों) ने; तत्तम् माक्कळै–अपनी-अपनी सन्तानों को; तम् पटैयाल्–अपने हथियारों से; तटिन्तार्–आहत कर मार दिया। ७९२

मारुति के अपने बड़े हाथों से पीटकर तेज़ी से फेंकने से कुछ राक्षसों के शरीर उन-उनके घरों से जाकर टकराए और वे टूटकर गिरे। कुछ राक्षसों ने अपनी-अपनी पत्नी को अपने पैरों से रौंदा। कुछ राक्षसों की संतानें उनके ही हथियारों से आहत होकर मरीं। ७९२

आडन् माक्कळि ऱनैयव नरक्कियर्क् करुळि
वीडु नोक्किय शॅलुहॅन्ऱु शिलवरै विट्टान्
कूडि नाऱ्क्कव रुयिरॅन्नच् चिलवरैक् कॉडुत्तान्
ऊडि नाऱ्क्कवर् मनैदॉऱुम् जिलवरै युय्त्तान् 793

आटल्–शत्रु-संहारक; मा कळिऱु अनैयवन्–बड़े गज के समान हनुमान; अरक्कियर्क्कु अरुळि–राक्षसियों पर कृपा करके; चिलवरै–कुछ (राक्षसों) को; वीटु नोक्किय–घर की राह देखकर; चॅल्क ऍन्ऱु–जाओ, कहकर; विट्टान्–(जीवित) छोड़ दिया; कूटिनार्क्कु–तभी विवाहित स्त्रियों को; अवर् उयिर् ऍन्न–उनके प्राण-सम पति समझकर; चिलवरै कॉटुत्तान्–कुछ लोगों को (उनके पास जाने) दे दिया; ऊटिनार्क्कु–जो रूठी हुई थीं, उनके पास; अवर् मनै तॉऱुम्–उनके घर-घर में; चिलवरै उय्त्तान्–कुछ को भेज दिया। ७९३

शत्रुघातक बड़े गज-जैसे हनुमान ने राक्षसियों पर कृपा करके कुछ राक्षसों को, 'घर जाओ' कहकर उन-उनके घर को भेज दिया। कुछ राक्षस नवविवाहित थे। उनको उनकी वधुओं को प्रदान कर दिया। कुछ स्त्रियाँ रूठन की अवस्था में रहीं। उनके पति राक्षसों को उनके पास भेज दिया। ७९३

तरुवॆ लामुडर् ऱडमदि लॆलामुडर् चदुक्कत्
तुरुवॆ लामुड लुवरियॆ लामुड लुळ्ळूर्क्
करुवॆ लामुडर् कावुमॆ लामुड लरक्कर्
तॆरुवॆ लामुड ऱेशमॆ लामुडर् चिदऱि 794

चितऱि–बिखरकर; तरु ऍलाम् उटल्–तरु-तरु पर शरीर (लाश); तट मतिल् ऍलाम् उटल्–चौड़े प्राचीरों पर सर्वत्र लाशें; चतुक्कत्तु उरु ऍलाम् उटल्–चौराहों के स्थलों पर लाशें; उवरि ऍलाम् उटल्–समुद्र भर लाशें; उळ्ळूर् करु ऍलाम्–उस नगर के गर्भ-स्थानों में लाशें; कावुम् ऍलाम् उटल्–उद्यान-उद्यान में लाशें; अरक्कर् तॆरु ऍलाम्–राक्षसों की सभी वीथियों पर; उटल्–लाशे; तेचम् ऍलाम् उटल्–देश भर में शरीर (लाशे)। ७९४

हनुमान के उछालने से पेड़-पेड़ पर लाशें पायी गयीं। विशाल प्राचीरो पर, चौराहों पर, समुद्र में, लंका नगर के गर्भस्थानों में, उद्यानों में, राक्षसों की सड़कों पर, क्यों देश में सर्वत्र लाशें हो गयीं। ७९४

ऊऩॆ लामुयिर् कवर्वुरुङ् गालऩॊय्न् दुलन्दाऩ्
ताऩॆ लारैयु मारुदि शाडुहै तविराऩ्
मीऩॆ लामुयिर् मेह मॆलामुयिर् मेन्मेल्
वाऩॆ लामुयिर् मऱ्ऱुमॆ लामुयिर् शुऱ्ऱि 795

ऊऩ् ऍलाम्–शरीरों से; उयिर् कवर्वु उरुम्–प्राणों को हर लेनेवाले; कालऩ्–यम; ओय्न्तु उलन्ताऩ्–मिचलाकर थक गया; मारुति–मारुति ने; ऍलारैयुम्–सबको; ताऩ्–तो; चाटुकै–आहत करना; तविराऩ्–नहीं छोड़ा; चुऱ्ऱि–(इसलिए) घूम-घूमकर; मीऩ् ऍलाम् उयिर्–नक्षत्र-मण्डलों में जानें; मेकम् ऍलाम् उयिर्–मेघों में उनके आत्मा; मेल् मेल् वाऩ् ऍलाम्–ऊपर आकाश के सारे लोकों में; उयिर्–आत्मा; मऱ्ऱुम् ऍलाम्–उनके पार भी सर्वत्र आत्मा ही आत्मा। ७९५

शरीरों से प्राण हरनेवाला यम भी मिचलाकर थक गया। मारुति तो मारने से विरत नहीं हुआ। इस कारण से उनके जीवात्मा नक्षत्र-मण्डलों, मेघमण्डलों और ऊपर के सभी लोकों, क्यों उनके परे अन्य लोकों में भी सर्वत्र पाये गये। ७९५

आह विच्चॆरु विळैवुरु ममैदियि लरक्कर्
मोह मुऱ्ऱिऩ रामॆऩ मुऱैमुऱै मुतिन्दार्

माह मुऱ्ऱवु मादिर मुऱ्ऱवुम् वळैन्दार्
मेह् मॊत्तनर् मारुदि वॆय्यव नॊत्तान् 796

आक–इस भाँति; इ चॆरु–यह युद्ध; विळैवु उरुम् अमैतियिल्–जब होता रहा, तब; अरक्कर्–राक्षस; मोकम् मुऱ्ऱित्तर् आम्–मोह में बढ़े हुए; ऍन–जैसे; मुऱ्ऱ मुऱ्ऱ मुऩिन्दार्–उत्तरोत्तर क्रोधवन्त होकर; माकम् मुऱ्ऱवुम्–आकाश भर में; मातिरम् मुऱ्ऱवुम्–सभी दिशाओ में सर्वत्र; वळैन्तार्–घेरकर; मेकम् ऒत्तनर्–मेघों के समान लगे; मारुति–मारुति; वॆय्यवन् ऒत्तान्–सूर्य के समान दिखा। ७९६

इस तरह जब युद्ध हो रहा था, तब राक्षस निपट मोहमग्न हुए-से उत्तरोत्तर बढ़नेवाले कोप के साथ आकाश और दिशाओं में घेरे काले मेघों के समान रहे। तो मारुति सूर्य के समान लगा। ७९६

अडल रक्करु मार्त्तलि नलैत्तलि नारप्
पुडैव ळैत्तुयर् पॆरुमैयिर् करुमैयिर् पॊलिविन्
मिडल यिऱ्पडै मीनॆन विलङ्गलिऱ् कलङ्गुम्
कडनि हर्त्तनर् मारुदि मन्दरङ् गडुत्तान् 797

अटल् अरक्करुम्–सशक्त वे राक्षस भी; आर्त्तलिन्–नर्दन करने से; अलैत्तलिन्–झकझोरने से; आर–पूर्ण रूप से; पुटै वळैत्तु–पार्श्व में घेरकर; उयर् पॆरुमैयिल्–उन्नतिशील गौरव से; करुमैयिल्–काले रंग से; पॊलिविल्–आकार से; मिटल्–सबल; अयिल् पटै–भालाओं के हथियारों के; मीन् ऍन–नक्षत्रों के समान; इलङ्कलिल्–शोभित रहने से; कलङ्कुम् कटल्–मथनशील समुद्र; निकर्त्तनर्–के समान रहे; मारुति–मारुति भी; मन्तरम् कटुत्तान्–मन्दरपर्वत-सम लगा। ७९७

वे राक्षस गर्जन के कारण, इधर-उधर जाकर हिलने से, सभी ओर घेरे बढ़ने से, काले रंग के कारण और सबल हथियारों के मकरों के समान शोभित रहने के कारण विलोडित समुद्र के समान रहे तो मारुति समुद्र-मध्य मन्दरपर्वत के समान दिखा। (इस पद मे समुद्र और राक्षस-समूह में श्लेष है।)। ७९७

करद लततिनुङ् गालिनुम् वालिनुङ् गदुव
निरैम णित्तलै नॆरिन्दुहच् चाय्न्दुयिर् नीप्पार्
शुरर्न डुक्कुऱ वमुदुहॊण् डॆऴुन्दना डॊडरुम्
उरह रॊत्तन रनुमनुङ् गलुळनै यॊत्तान् 798

करतलत्तिनुम्–करतलों से; कालिनुम्–पैरों से; वालिनुम्–पूँछ से; कतुव–कसे जाने से; निरै तलै–पंक्तियों में सिर; नॆरिन्तु–पिसे और; मणि उक–रत्न गिरे; चुरर् नटुक्कु उऱ–देव थर्राए; चाय्न्तु–ऐसा गिरकर; उयिर् नीप्पार्–प्राण त्यागते; अमुतु कॊण्टु–अमृत लेकर; ऍऴुन्त नाळ्–जिस दिन गरुड़ उड़ आया; तॊटरुम् उरकर् ऒत्तनर्–उसके पीछे लगे आये नागों के समान लगे; अनुमनुम्–हनुमान भी; कलुळनै–गरुड़ के भी; ऒत्तान्–समान रहा। ७९८

हनुमान ने राक्षसों को अपनी पूँछ, हाथों और पैरों से जकड़कर दबाया तो उनके सिर पिसे और रत्न गिरकर छितरे। सुर काँपे। इस रीति से जो गिरकर मरे, वे राक्षस उन नागों की समता करते थे जो गरुड़ के अमृत ले आने के दिन उसका पीछा कर आये थे। तो हनुमान गरुड़ के समान रहा। ७९८

मान मुऱ्ऱदन् पहैयिनाऩ् मुऩिवुऱ्ऱु वळैन्द
मीनु डैक्कड लिडैयिनि नुलहॅला मिडैन्द
ऊऩ ऱक्कॊऩ्ऱु तुहैक्कवु मॊऴिविला निरुदर्
आनै यॊत्तन राळरि यॊत्तन ऩनुमऩ् 799

मानम् उऱ्ऱ–गर्वीले; तन् पकैयिनाल्–अपने शत्रु राक्षसों पर; मुनिवुऱ्ऱु–गुस्सा करके; वळैन्त–गोल; मीन् उटै–मकर-सहित; कटल् इटैयिनिन्–समुद्र-मध्यस्थ; उलकु ऍलाम्–लंका भर में; मिटैन्त–अपने पास जुड़े आये; ऊन् अऱ–शत्रुओं के शरीरों को बिलकुल; कॊन्ऱु तुकैक्कवुम्–रौंदकर मारता रहा; ऑऴिवु इला–अक्षय रहे; निरुतर्–राक्षस; आनै ऑत्तनर्–गज-सम रहे; अनुमन्–हनुमान; आळ् अरि–वीर सिंह; ऑत्तनन्–के समान रहा। ७९९

गर्वीले शत्रु राक्षसों से गुस्सा करके हनुमान ने गोलाकार मकरालय मध्यस्थ लंका में अपने से भिड़नेवाले राक्षसों को रौंदकर मार दिया। पर अक्षय बने रहे राक्षस गजों के समान दिखे और हनुमान वीरता में बढ़े हुए सिंह के समान लगा। ७९९

ऍय्द वॅऱ्ऱिन वॅऱिन्दन वीर्त्तन विहलिल्
पॅय्द कुत्तिन पॉदुत्तन तुळैत्तन पिळन्द
कॉय्द शुऱ्ऱिन पऱ्ऱिन कुडैन्दन पॉलिन्द
अय्यन् मऱ्पॅरुम् बुयत्तन पुण्णळप् परिय 800

इकलिल्–युद्ध में; ऍय्त–चलाये गये; ऍऱ्ऱिन–आघात करनेवाले; ऍऱिन्तन–फेंके गये; ईर्त्तन–छिने; पॅय्त–बरसाये गये; कुत्तिन–चुभाये गये; पॉतुत्तन–घुसाये गये; तुळैत्तन–भेदनेवाले; पिळन्त–चीरनेवाले; कॉय्त–चुने गये; चुऱ्ऱिन–लपेटे गये; पऱ्ऱिन–पकड़े गये; कुटैन्तन–कुरेदनेवाले; पॉलिन्त–(हथियारों के व्रणों के साथ) शोभित; ऐयन्–सम्मान्य हनुमान के; मल् पॅरुम् पुयत्तन–अति बलवान कन्धों पर के; पुण्–व्रण; अळप्पु अरिय–अनगिनत थे। ८००

उस युद्ध में विविध हथियारों ने हनुमान पर चोट की। कुछ हथियार चलाये जानेवाले थे। कुछों से प्रहार किया जा सकता था। कुछ उछाले जानेवाले थे। कुछ खींचे जानेवाले थे। कुछ चुभनेवाले, कुछ गड़नेवाले, कुछ भेदनेवाले, कुछ चीरनेवाले और कुछ कुरेदनेवाले हथियार थे। उनसे सम्मान्य हनुमान के कन्धों पर जो व्रण हुए वे अनगिनत थे। ८००

कार्क्क रुन्दडङ् गडल्हळुम् मळैमुहिऱ् कणनुम्
वेर्क्क वॅञ्जॅरु विळैत्तॅळुम् वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरक्कर्
पोर्क्कु ऴात्तॅळु पूशलि नैयत्तॅप् पुहळ्वुऱ्
ऱार्क्कुम् विण्णव रमलैये युयर्न्ददन् ऱमरिल् 801

कार्–काले; करुम्–बड़े; तटम्–विशाल; कटल्कळुम्–समुद्र; मळै मुकिल् कणनुम्–जल-भरे मेघों के समूह; वेर्क्क–पसीने से भर जाएँ, ऐसा; वॅम् चॅरु विळैत्तु–घमासान युद्ध करते; ॲळुम्–बढ़ आनेवाले; वॅळ् ॲयिऱ्ऱु अरक्कर्–सफ़ेद दाँतों के राक्षसों के; पोर् कुऴात्तु–युद्धदलों में; ॲळु पूचलिन्–उठनेवाले शोर से अधिक; विण्णवर्–देवों के; ऐयत्तॅ पुकऴ्वु उऱ्ऱु–सम्मान्य हनुमान की प्रशंसा करते हुए; आर्क्कुम्–आरव करने का; अमलैये–शोर ही; अन्ऱु–उस दिन; अमरिल्–युद्ध मे; उयर्न्ततु–ज़ोरदार रहा। ८०१

व्योमलोकवासियों ने महिमावान हनुमान की वाहवाही बड़े ज़ोर-शोर से की। वह आरव उन सफ़ेद दाँत वाले राक्षसों के युद्ध-कोलाहल से भी अधिक ज़ोरदार रहा, जो अपने घमासान युद्ध से काले और बड़े समुद्रों को और जलवर्षी मेघों को भी स्वेदयुक्त (भयभीत) कर रहे थे। ८०१

मेवुम् वॅञ्जिनत् तरक्कर्हण् मुऱैमुऱै विशैयाल्
एवुम् पल्पडै यॅत्तनै कोडिह ळॅन्निनुम्
तूवुन् देवरु मुनिवरु महळिरुञ् जॉरिन्द
पूवुम् बुण्गळुन् दॅरिन्दिल मारुदि पुयत्तिल् 802

मेवुम्–आरूढ़; वॅम् चिनत्तु–भयंकर क्रोधी; अरक्कर्–राक्षस द्वारा; मुऱै मुऱै–अनेक बार; विचैयाल्–वेग के साथ; एवुम्–चलाये गये; पल् पटै–विविध हथियार; ॲत्तनै कोटिकळ् ॲन्निनुम्–कितने ही करोड़ थे तो भी; पुण्कळुम्–व्रणों में; तूवुम्–बरसानेवाले; तेवरुम् मुनिवरुम् मकळिरुम् चॉरिन्त–देवों, मुनियों और अन्यों द्वारा बरसाये गये; पूवुम्–फूलों में; मारुति पुयत्तिल्–मारुति के कन्धों पर; तॅरिन्तिल–भेद विदित नहीं हुआ। ८०२

उत्तरोत्तर बढ़ते हुए कोपिष्ठ राक्षसों ने अनेक बार विविध तरह के कितने ही करोड़ हथियार चलाये! तो भी हनुमान के कन्धों पर उनसे बने व्रणो और देवों, मुनियों और अन्यों के द्वारा बरसाये फूलों में कोई भेद नही रहा। हनुमान के लिए दोनों बराबर थे। ८०२

पॅयर्क्कुञ् जारिहै करऱ्ङॅन्नत् तिशैदोऱुम् बॅयर्विन्
उयर्क्कुम् विण्मिशै योङ्गलिन् मण्णित्वन् दुऱलिन्
अयर्त्तु वीऴ्न्दन रऴिन्दन ररक्करा युळ्ळार्
वॅयर्त्ति लन्मिशै युयिर्त्तिल नल्लऱ वीरन् 803

नल् अऱ वीरन्–श्रेष्ठ धर्मवीर; करऱ्ङ्कु ॲन्न–वातचक्र के समान; चारिकै

पॅयर्क्कुम्–पैतरा बदलता; तिचै तॉरुम् पॅयर्वित्–आठों दिशाओं में घूमने से; विण्मिचै उयर्क्कुम्–आकाश में उछलता; ओङ्कलित्–पर्वत के समान; मण्णित्वन्तु–भूमि पर आकर; उऱलित्–लगने से; अरक्कराय् उळ्ळार्–राक्षस जो थे; अयर्त्तु–थकित हो; वीऴ्न्तन्र्–गिरते; अऴिन्तन्र्–मरते; वॅयर्त्तिलन्–(हनुमान थका नहीं) स्वेदयुक्त नहीं हुआ; मिचै उयिर्त्तिलन्–श्वास भी तेज़ न हुआ। ८०३

धर्मवीर हनुमान ने क्षिप्रगति से पैतरे बदले। इधर-उधर घूमा। दिशाओं में चलता, आकाश मे उछलता। कभी पर्वत के समान भूमि पर आकर गिरता; तब राक्षस चोट खाकर शिथिल हो गिरते और मर जाते। तो भी न हनुमान के शरीर पर स्वेद बहा, न उसका श्वास तेज़ हुआ। ८०३

ॲञ्ज लिल्कणक् करिन्दिल मिरावण नेव
नञ्ज मुण्डव रामॅन वनुमन्नमे नडन्दार्
तुञ्जि नारल्ल दियावरु ममर्त्तॉऴिऱ् ऱॉलैवुऱ्
ऱञ्जि नारिल्लै यरक्करिल् वीरर्मऱ् ऱियारो 804

इरावणन् एव–रावण के प्रेरित करने से; अनुमन् मेल्–हनुमान पर; नटन्तार्–जो चढ़ आये; ॲञ्चल् इल् कणक्कु–(उनका) अक्षय हिसाब; अरिन्तिलम्–हमने नहीं जाना; नञ्चम् उण्टवर् आम् ॲन–विष खाये हुओं के समान; तुञ्चिनार्–मरे; अल्लतु–(मरना) छोड़कर; यावरुम्–कोई भी; अमर् तॉऴिल्–युद्ध का काम; तॉलैवु उऱु–त्यागकर; अञ्चिनार् इल्लै–डर मे भागे नहीं; अरक्करिल् वीरर्–राक्षसों से बढ़कर वीर; यारे–कौन है। ८०४

रावण की आज्ञा से जो किंकर लड़ने आये, उनकी अक्षय संख्या का हिसाब हमने नहीं जाना। पर इतना जानते हैं कि वे, विष खानेवाले जैसे मरते, वैसे ही मरे। पर युद्ध छोड़कर डर से नहीं भागे। उन राक्षसों से अधिक वीर कौन होंगे ?। ८०४

वन्द किङ्गर रेयॅनु मात्तिरै मडिन्दार्
नन्द वानत्तु नायह रोडिन्नर् नडुङ्गिप्
पिन्दु कालिन्नर् कैयिन्नर् पॅरुम्बयम् बिडरिल्
उन्द वायिरम् बिणक्कुवै मेल्विऴुन् दुळैवार् 805

वन्त किङ्करर्–(हनुमान के साथ लड़ने) आगत राक्षस; एय् ॲनुम् मात्तिरै–'ऐ' कहने की मात्रा में; मटिन्तार्–मरे; नन्त वानत्तु नायकर्–नन्दन वन के रक्षक; ओटिन्नर्–दौड़े; नटुङ्कि–डर से; पिन्तु कालिन्नर् कैयिन्नर्–पिछड़नेवाले पैरों और हाथों के; पॅरुम् पयम्–बड़े भय के; पिटरिल् उन्त–गले में बैठकर उकसाते; आयिरम् पिण कुवै मेल्–हज़ारों लाशों के ढेरों पर; विऴुन्तु–गिरकर; उळैवार्–व्याकुल हुए। ८०५

वे किंकर 'रे' कहने के समय के अन्दर मृतक हो गये। अशोक वन के रक्षक तुरन्त भागे। डर से उनके पैर नहीं उठ रहे थे और हाथ काँप रहे थे। पीछे पड़ते थे। पर डर ने उनके गले के पीछे से उनको ढकेला। वे सहस्र-सहस्र लाशों के ढेर पर ठोकर खाकर गिरे और दुःखी हुए। ८०५

विरैवि तुऱ्ऱनर् विम्मिनर् यादॊन्ऱुम् विळम्वार्
करद लत्तिनाऱ् पट्टदु कट्टुरैक् किन्ऱार्
तरैयि निऱ्किलर् तिशैदॊऱु नोक्किनर् शलिप्पार्
अरशन् मऱ्ऱव रलक्कणे युरैशॆय वऱिन्दान् 806

विरैविन् उऱ्ऱनर्–शीघ्र जाकर; विम्मिनर्–दुःख से भरकर; यातॊन्ऱुम्–कुछ भी; विळम्पार्–न कह सके; पट्टतु–जो घटा; करतलत्तिनाल्–हाथों के इशारे से; कट्टुरैक्किन्ऱार्–समझाते; तरैयिन् निऱ्किलर्–धरती पर खड़े नहीं रह पाते; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; नोक्किनर्–दृष्टि दौड़ाते; चलिप्पार्–चंचल होते; अरचन्–राजा ने; अवर् अलक्कणे–उनके संकटपूर्ण स्थिति के; उरै चॆय–कहने से ही (द्वारा ही); अऱिन्तान्–समझ लिया। ८०६

वे (जितना हो सके उतनी) जल्दी रावण के सम्मुख आये। दुःख से भरपूर वे कुछ बोल नहीं सके। अपने हाथों से इशारे करने लगे। उनके पैर लड़खड़ा रहे थे और वे स्थिर रूप से खड़े नहीं हो पाये। सभी दिशाओं पर दृष्टि दौड़ाते हुए चंचल रहे। उनके कष्ट से रावण ने जान लिया कि उनका अभिप्राय क्या है? । ८०६

इऱन्दु नीङ्गिन रोविन्ऱॆ नाणैयि निहन्दार्
तुऱन्दु नीङ्गिन्न रोवत्ऱि वॆञ्जमन् दॊलैन्दार्
मऱन्दु नीङ्गिन रोवॆन्गॊल् वन्ददॆन् ऱुरैत्तान्
निऱञ्जॆ रुक्कुऱ वाय्दॊऱु नॆरुप्पुमिऴ् हिन्ऱान् 807

निऱम् चॆरुक्कु उऱ–शरीर घमण्ड से सीधा हुआ; वाय् तॊऱुम्–सभी मुखों से; नॆरुप्पु–आग; उमिऴ्किन्ऱान्–उगलता; इन्ऱु–आज; इऱन्तु नीङ्किनरो–मर मिटे क्या; ऍन् आणैयिन् इकन्तार्–मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके; तुऱन्तु–(युद्ध) त्यागकर; नीङ्किनरो–भाग गये; अन्ऱि–नहीं तो; वॆम् चमम् तॊलैन्तार्–घोर युद्ध हारकर; मऱन्तु–मुझे भूलकर; नीङ्किनरो–भाग गये क्या; ऍन् कॊल् वन्ततु–क्या ही हो गया; ऍन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा प्रश्न किया। ८०७

रावण का शरीर गर्व से तन उठा। अपने दसों मुखों से आग उगलते हुए रावण ने पूछा कि क्या वे आज मारे जाकर मिटे ? या मेरी आज्ञा की अवज्ञा करके युद्ध से भाग गये ? या युद्ध हारकर अपमान से मेरी उपेक्षा करके भाग गये ? क्या ही हुआ है ? वताओ। ८०७

चलन्दलैक् कॊण्डन्न राय तन्मैयार्
अलन्दिलर् शॆरुक्कळत् तञ्जि नारलर्

पुलन्दॅरि पॉय्क्करि पुहलुम् बुन्गणार्
कुलङ्गळि नविन्दनर् कुरङ्गि नालॅन्ड्रार् 808

चलम्–क्रोध; तलै कॉण्टनराय–सिर पर चढ़ गया, ऐसी; तन्मैयार्–स्थिति में रहे वे; अलन्तिलर्–दुखी हो भागे नहीं; चॅह कळत्तु–युद्धभूमि से; अञ्चिनार् अलर्–डरकर नहीं भागे; पुलम् तॅरि–मन के जाने; पॉय् करि–झूठी गवाही; पुकलुम्–कहनेवाले (देनेवाले); पुन्कणार् कुलङ्कळिन्–नीच लोगों के कुलों के समान; कुरङ्किनाल्–मर्कट द्वारा; अविन्ततर्–मृतक हुए; ऍन्ड्रार्–कहा (रक्षकों ने)। ८०८

नन्दनवन-रक्षकों ने उत्तर दिया। क्रोध से भरे वे वीर किंकर कष्ट से दुखी हो नहीं भागे। न समरांगन से भय खाकर भागे। पर वे, जान-बूझकर झूठी गवाही देनेवाले नीच लोगों के कुल के समान मर्कट से मारे जाकर मिटे। रक्षकों ने कहा। ८०८

एवलि नॅय्दिन रिरुन्द वॅण्डिशैत्
तेवरै नोक्किना नाणुञ् जिन्दैयान्
यावदॅन् ड्रिन्दिलिर् पोलु मालॅन्ड्रान्
मुवहै पुलहैयुम् विळुङ्ग मूळ्हिन्ड्रान् 809

मूवकै उलकैयुम्–त्रिविध लोकों को; विळुङ्क–निगलने को जैसे; मूळ्किन्ड्रान्–कोपाक्रान्त होकर; नाणुम् चिन्तैयान्–लज्जित-मन (रावण ने); एवलिन् ऍय्तितर् इरुन्त–सेवार्थ आकर स्थित; ऍण् तिचै–आठों दिशाओं के पालक; तेवरै–देवताओं को; नोक्किनान्–देखकर; यावतु ऍन्ड्रु–क्या हुआ यह; अड्रिन्तिलिर् पोलुम्–नहीं जानते शायद; ऍन्ड्रान्–ऐसा डाँटकर प्रश्न किया। ८०९

यह सुनकर रावण का कोप इतना तीव्र उठ आया कि ऐसा लगा कि वह तीनों लोको को निगल लेगा। उसे किंचित लाज भी आयी। रावण ने पास सेवार्थ आगत दिग्पालक देवताओं को देखकर उनसे डाँटकर प्रश्न किया कि तुम लोग नहीं जानते कि क्या हुआ ? । ८०९

मीट्टव रुरैत्तिलर् पयत्तिन् विम्मुवार्
तोट्टल रिणर्मलर्त् तॉङ्गन् मोलियान्
वीट्टिय दरक्करै यॅन्नुम् वॅव्वुरै
केट्टदो कण्डदो किळत्तु वीरॅन्ड्रान् 810

अवर्–वे; पयत्तिन् विम्मुवार्–भय में पड़कर; मीट्टु उरैत्तिलर्–उत्तर नहीं दे रहे थे; तोट्टु अलर्–दल-विकच; इणर् मलर्–गुच्छों में रहे; तॉङ्कल्–पुष्पों की माला से अलंकृत; मोलियान्–किरीटधारी (रावण) ने; वीट्टियतु अरक्करै–निपाता राक्षसों को (एक वानर ने); ऍन्नुम्–ऐसा; वॅम् उरै–दिल जलानेवाला समाचार; केट्टतो–सुनी हुई बात है; कण्टतो–(आँख) देखी हुई; किळत्तुवीर्–साफ़ कहो; ऍन्ड्रान्–कहा। ८१०

नन्दनवन-पालकों ने भय से भरकर फिर कुछ उत्तर नहीं दिया। दलविकसित और गुच्छों में रहे फूलों की माला से अलंकृत किरीटधारी रावण ने उनसे पूछा कि तुमने जो कहा कि वानर ने राक्षसों को मिटा दिया, वह क्रूर समाचार तुम्हारा सुना हुआ समाचार है ? या तुमने अपनी आँखों से देखा था ? बताओ। ८१०

कण्डन मॊरुपुडै निन्ऱ कण्गळाल्
तॆण्डिरैक् कडलॆन वळैन्द शेनैयै
मण्डलन् दिरिन्दोरु मरत्ति ऩालुयिर्
उण्डदक् कुरङ्गिति यॊऴिव दन्ऱॆन्ऱार् 811

ऒरु पुडै निन्ऱु–एक ओर खड़े रहकर; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; कण्टतम्–देखा; तॆळ् तिरै कटल्–स्वच्छ तरंगोंवाले सागर; ॲन–के समान; वळैन्त–जो घेर आयी; चेनैयै–उस सेना को; मण्टलम् तिरिन्तु–मण्डलाकार घूमकर; ऒरु मरत्तिताल्–एक पेड़ से; उयिर् उण्टतु–उनकी जानें उसने खा लीं; अ कुरङ्कु–वह वानर; इति–अब; ऒऴिवतु अन्ऱु–छोड़ जाने का नहीं दिखता; ऎन्ऱार्–कहा (उन रक्षकों ने)। ८११

वनपालों ने उत्तर दिया कि हमने एक ओर स्थित होकर यह स्वयं देखा था। स्वच्छ लहरों वाले समुद्र के समान जो सेना घेर गयी थी, उसको उस वानर ने मण्डलाकार घूमकर एक बड़े वृक्ष से मारकर उनके प्राण हर लिये। और भी वह वानर छोड़ जानेवाला नहीं लगता। ८११

8. शम्बुमालि वदैप् पडलम् (जम्बुमाली-वध पटल)

ऎन्ऱलु मरक्कर् वेन्द नॆरिहदिर् वाळै नोक्किक्
कन्ऱिय पवळच् चॆव्वा यॆयिऱुपुक् कऴुन्दक् कव्वि
ऒन्ऱुरै याडर् किल्ला तुडलमुम् विऴियुम् चेप्प
नित्ऱवा ळरक्कर् तम्मै नॆडिदुऱ नोक्कुङ् गालै 812

ऎन्ऱलुम्–(उनके ऐसा) कहने पर; अरक्कर् वेन्तन्–राक्षसराज ने; ऎरि कतिर्–अग्नि-तेज; वाळै–तलवार को; नोक्कि–देखकर; कन्ऱिय–कोपप्रकाशक; पवळम् चॆव्वाय्–प्रवालाधर को; ऎयिऱु पुक्कु अऴुन्त–दाँत से, घुसकर दबाएँ; कव्वि–ऐसा काटकर; ऒन्ऱु–कुछ भी; उरै आटर्कु इल्लान्–कहने के लिए न पाकर; उटलमुम्–शरीर और; विऴियुम्–आँखों के; चेप्प–लाल होते; नित्ऱ–पास स्थित; वाळ् अरक्कर् तम्मै–तलवारधारी राक्षसों को; नॆटितु उऱ–लम्बी देर तक खूब; नोक्कुम् काले–जब देखा, तब। ८१२

वनपालों ने ज्योंही यह कहा, त्योंही रावण ने अग्नि-जैसे प्रकाश निकालनेवाली अपनी चन्द्रहास नामक तलवार पर दृष्टि दौड़ायी। उसने प्रवाल-लाल अधर को खूब दाँत गड़ाकर काटा, जिससे उसके बढ़े

क्रोध का प्रकटन हो रहा था।. उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं रह गया था। अपनी आँखों और शरीर को लाल बनाते हुए जब वह अपने पास खड़े रहे तलवारधारी राक्षसों को बहुत देर तक घूरता रहा— । ८१२

कूम्बित्त कैयि न्निऩ्ऱ कुऩ्ऱिवर् कुववुत् तिण्डोळ्
पाम्बिवर् तरुहट् चम्बु मालियॅऩ् बाऩैप् पारा
वाम्बरित् तानै योडु वळैत्तदऩ् वलियै माऱ्ऱित्
ताम्बिऩिऱ् पऱ्ऱित् तन्दॅऩ् मऩच्चिऩम् दणित्ति यॅऩ्ऱाऩ् 813

कूम्पित्त कैयिन्–हाथ जोड़कर; निन्ऱ–जो खड़ा रहा, उस; कुन्ऱु इवर्–पर्वत-सम; कुववु–पुष्ट; तिण् तोळ्–कठोर कन्धों वाले; पाम्पु इवर्–सर्प के समान; तरुकण्–निडर; चम्पुमालि ऎन्पाऩै पारा–जम्बुमाली को देखकर; वाम् परि तानैयोटु–सरपट दौड़नेवाले अश्वों की सेना के साथ जाकर; वळैत्तु–उसे घेरकर; अतन् वलियै माऱ्ऱि–उसके बल को व्यर्थ करके; ताम्पिनिल् पऱ्ऱि–रस्सी से बाँध; तन्तु–(लाकर) मुझे देकर; ऎन् मऩ चिऩम्–मेरे मन का क्रोध; तणित्ति–शान्त करो; ऎन्ऱाऩ्–कहा। ८१३

तब जम्बुमाली पर उसकी दृष्टि गयी। वह हाथ जोड़े खड़ा था। उसके कन्धे पर्वत-सम पुष्ट और कठोर थे। वह सर्प-जैसा निडर था। रावण ने उसे आज्ञा दी कि अश्व-सेना लेकर जाओ। उस वानर के बल को चूर कर पकड़ लाओ और मुझे सौंप दो; तभी मेरा कोप शान्त होगा। ८१३

आयवऩ् वणङ्गि यैय वळप्परु मरक्कर् मुऩ्ऩे
नीयिदु मुडित्ति यॅऩ्ऱु नेर्न्दऩै निऩैवि ऩॅण्णि
एयिऩै यॅऩ्ऩप् पॅऱ्ऱा लॅऩ्ऩिलुया रुयर्न्दा रॅऩ्ऩाप्
पोयिऩ ऩिलङ्गै वेन्दऩ् पोर्च्चिऩम् बोव दॊप्पाऩ् 814

आयवन्–उस जम्बुमाली ने; वणङ्कि–नमस्कार करके; ऐय–प्रभु; अळप्पु अरुम्–अनगिनत; अरक्कर्–राक्षसों के; मुन्ऩे–सामने; निऩैविन् ऎण्णि–स्मरण करके; नी इतु मुटित्ति–तुम इसे साध लो; ऎन्ऱु–ऐसा; नेर्न्तनै एयितै–आज्ञा दी (आपने); ऎन्नप् पॆऱ्ऱाल्–यह भाग्य प्राप्त हुआ तो; ऎन्निऩ् यार् उयर्न्तार्–मुझसे कौन बड़े है; ऎन्ऩा–कहकर; इलङ्कै वेन्तन्–लंकाधिपति का; पोर् चिऩम्–युद्धरोष ही; पोवतु ऒप्पाऩ्–निकलकर जाता हो जैसे; पोयिऩऩ्–चला। ८१४

जम्बुमाली ने नमस्कार करके रावण से विनय के साथ निवेदन किया कि प्रभु ! असंख्यक राक्षसों के रहते आपने मुझे खूब सोच-समझकर चुना और आज्ञा सुनायी कि यह काम साधो। मेरा ऐसा भाग्य रहा तो कौन मुझसे बड़ा हो सकेगा ? कहकर वह ऐसा जाने लगा, मानो रावण का क्रोध ही साकार बन जा रहा हो। ८१४

तन्नुडैत् तानै योडुन् दयमुहन् ररुहॅन् ऱेय
मन्नुडैच् चेनै योडुन् दादैवन् दीन्द वाळित्
मिन्नुडैप् परवै योडुम् वेरुळोर् शिऱप्पित् विट्ट
पिन्नुडै यनिहत् तोडुम् बॅयर्न्दनन् पॅरुम्बोर् पॅट्राऩ् 815

पॅरुम् पोर्–बड़ा युद्ध; पॅट्रान्–(लड़ने का अवसर) जिसे मिल गया; तन्नुटै तानैयोटुम्–अपनी सेनाओ के साथ; तयमुकन्–दशग्रीव द्वारा; तरुकॅन्ऱ एय–'दो' कहने पर आयी; मन् उटै चेनैयोटुम्–स्थायी बड़ी सेनाओं के साथ; तातै वनुतु ईनुत–पिता प्रहस्त द्वारा दी गयी; मिन् उटै वाळित्–चमकदार तलवारधारी वीरों की; परवैयोटुम्–विशाल सेना के सागर के साथ; वेरु उळोर्–अन्यो द्वारा; चिऱप्पित् विट्ट–गौरव हेतु प्रेषित; पिन् उटै अतिकत्तोटुम्–पीछे आनेवाले अनीक के साथ; पॅयर्न्ततन्–गया। ८१५

उसे बड़ा युद्ध करने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। वह गया तो उसके साथ उसकी निजी सेना, रावण द्वारा प्रेषित सेना और उसके पिता प्रहस्त की विद्युत्-सी चमकदार तलवारधारी वीरों की सागर-सी विपुल सेना गयी। उसके पीछे-पीछे अन्यों द्वारा गौरव-लिप्सा के कारण प्रेषित सेना भी गयी। ८१५

उरुमॊत्त मुळक्किऱ् चॅङ्गण् वॅळ्ळॅयिऱ् ऱोडै नॅट्रिप्
परुमित्त किरियिऱ् ऱोन्ऱुम् वेळमुम् बदुमत् तण्णल्
निरुमित्त वेळ्वि मुट्रि यॅन्नला निलैय नेमि
चॉरिमुत्त वॅण्गोट् टुच्चित् तुहिऱ्कॉडित् तडन्देर् शुट्र 816

उरुम् ऑत्त–वज्र-सम; मुळक्किन्–चिंघाड़ वाले; चॅम् कण्–लाल आँखें; वॅळ् ऍयिऱ्ऱ–(और) श्वेत दाँतों वाले; ओटै नॅट्रि–मुखपट्ट पहने भाल वाले; परुमित्त–सजे हुए; किरियिल्–गिरियों के समान; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; वेळमुम्–गज; नेमि–पहियों के साथ; वॅण् कोट्टु उच्चि–श्वेत स्तम्भ के ऊपर; चॉरि मुत्त–मोती गिरानेवाली; तुकिल् कॉटि–वस्त्रध्वजाओं के साथ; पतुमत्तु अण्णल्–कमलासन ब्रह्मा द्वारा; निरुमित्त–निर्मित; वेळ्वि–यज्ञ; मुट्रि–पूरा करके प्राप्त; अॅन्नल् आम् निलैय–ऐसी मान्य स्थिति में रहनेवाले; तटम् तेर्–बड़े-बड़े रथों के; चुट्र–घेरे आते। ८१६

उस सेना-समूह में गज गये, जिनकी चिंघाड़ का स्वर अशनि के समान था; जो सफ़ेद दाँतों वाले और मुखपट्ट पहने, सजे हुए पर्वत के समान जा रहे थे। रथ घेरे आये; पहियेदार रथ, जिनके सफ़ेद और ऊँचे स्तम्भों पर मोती गिरानेवाली ध्वजाएँ फहर रही थी और जो ब्रह्मदेव द्वारा यज्ञ करने के बाद निर्मित-से लग रहे थे। (यज्ञ करके श्रेष्ठ वस्तुओं को प्राप्त करने की बात यहाँ स्मरण की गयी है।)। ८१६

कार्ऱिऩै मरुङ्गिऱ् कट्टिक् काल्वहुत् तुयिरुङ् गूट्टिक्
कूर्ऱिऩै यियऱ्ऱि यऩ्ऩ कुलप्परि कुऴुवक् कुऩ्ऱिऩ्
तूर्ऱिऩि ऩॆऴुप्पि याण्डुत् तॊहुत्तऩ शुळल्पॆङ् गण्ण
वेर्ऱिऩप् पुलियॆ ऱॆऩ्ऩ विरिन्दहु पदादि यीट्टम् 817

मरुङ्किल्–पास के; कार्ऱिऩै कट्टि–पवन को बाँधकर; काल् वकुत्तु–उसके चार पैर बनाकर; उयिरुम् कूट्टि–जीवन्त बनाकर; कूर्ऱिऩै इयर्ऱि अऩ्ऩ–यम को सृष्ट किया गया हो, ऐसा; कुल परि–श्रेष्ठ जाति के अश्वों के; कुऴुव–एकत्रित होकर आते; कुऩ्ऱिऩ्–पर्वतों से; तूर्ऱिऩिऩ्–व झाड़ियों से; ऍऴुप्पि–उठाकर; आण्टु तॊकुत्तऩ–वहाँ (सेना में) मिला दिये गये जो; चुळल्–चंचल; पॆम् कण्ण–रंगीन आँखों वाले; वेऱ्ऱु इऩ–विविध जाति के; पुलि एऱु ऍऩ्ऩ–नर व्याघ्र के समान; पताति ईट्टम्–पदाति वीरों के दल; विरिन्ततु–बहुत विस्तृत रहे। ८१७

श्रेष्ठ जाति के अश्व भी साथ गये। पास के पवन को एकत्र करके उसके चार पैर लगाकर और उसे जीवन्त बनाकर यम-सा बनाया गया हो, ऐसा था एक-एक अश्व! पदाति वीर गये। पर्वतों की गुफाओं में से और झाड़ियों से उठाकर लाये विविध, विवृत्तनयन व्याघ्र-समूह के समान थे वे वीर। ८१७

तोमर मुलक्कै कूर्वाळ् शुडर्मऴु कुलिशन् दोट्टि
तामरन् दिऩ्ऩ कूर्वेल् चक्कर मॆऴुक्कळ् चापम्
कामरन् दण्डु पिण्डि कप्पणङ् गाल पाशम्
मामरम् वलयम् वॆङ्गोल् मुदलिय वयङ्ग मादो 818

तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; कूर् वाळ्–तेज़ तलवारें; चुटर् मऴु–उज्ज्वल परशु; कुलिचम्–कुलिश; तोट्टि–अंकुश; ताम् अरम् तिऩ्ऩ–रेती से पैनाये गये; कूर् वेल्–तीक्ष्ण भाले; चक्करम्–चक्रायुध; ऍऴुक्कळ्–लौहदण्ड; चापम्–धनु; कामरम्–'कामर'; तण्ट—गदाएँ; पिण्टि–भिन्दिपाल; कप्पणम्–'कप्पण'; काल पाचम्–कालपाश; मा मरम्–बड़े पेड़; वलयम्–छल्ले; वॆम् कोल्–भयंकर बाण; मुतलिय–आदि; वयङ्क–रहे। ८१८

उनके पास तोमर, मूसल, तेज़ तलवारें, ज्वलन्त परशु, कुलिश, अंकुश, रेती से पैनाये गये भाले, चक्रायुध, लौहदण्ड, चाप, 'कामर' नामक हथियार, दण्ड, भिंदिपाल, 'कप्पण' नामक काँटेदार गदाएँ, कालपाश, बड़े-बड़े तरु, वलय और भयंकर शर आदि विविध हथियार विद्यमान रहे। ८१८

ऍत्तिय वयिल्वेल् कुन्द मॆऴुमुद लिऩैय वेन्दिक्
कुत्तिय तिळैप्प मीदिऱ् कुऴुविऩ मळैमाक् कॊण्डल्
पॊत्तुहळ् पॊरुवि नऩ्ऩॊर् शॊरिवऩ पोव पोलच्
चित्तिरप् पदाहै यीट्टन् दिशैतॊऱुञ् जॆरिव चॆल्ल 819

ॲत्तिय-फेंके जानेवाले; अयिल् वेल्-तेज भाले और; कुन्तम्-कुन्त; ॲऴु मुतल्-लौहदण्ड आदि; इत्तैय-ऐसे; एन्ति-हाथ में लेकर; कुत्तिय तिळैप्प-छेद लगाने पर; मीतिल् कुऴुवित्त-आकाश में एकत्रित; मऴै मा कॉण्टल्-वर्षा करनेवाले बड़े मेघ; पॉत्तु उकळ-जब विद्ध होकर गिराएँगे; पॉरुवु इल्-अनुपम; नल् नीर्-शुद्ध जल; चॉरिवत्त पोव पोल-जो गिराते जाते है, उनके समान; चित्तिर पताकै ईट्टम्-चित्रमयी पताकाओ की राशियाँ; तिचै तॉऱुम्-सभी दिशाओं में; चॅऱिव चॅल्ल-घने रूप से मिलकर गयीं। ८१९

वे चलने योग्य तीक्ष्ण भाले, कुन्त, लौहदण्ड आदि हाथों में लिये हुए चले। चारों दिशाओं में चित्रमय पताकाओं के घने वृन्द चले, जिनको देखकर ऐसा लगा मानो आकाशचारी मेघों में छेद लगे हों और मेघ उन छेदों द्वारा अनुपम शुद्ध जल बरसाते जा रहे हों। ८१९

पल्लियन् दुवैप्प नन्माप् पणिलङ्गण् मुरलप् पॉऱ्ऱेर्च्
चिल्लिह ळिडिप्प वाशि शिरित्तिडच् चॅऱिपॉऱ् ऱारुम्
विल्लुनिन् ऱिशैप्प यानै मुऴक्कम्विट् टार्प्प विण्डोय्
ऑल्लॉलि वानिऱ् ऱेव रुरैदॅरि वॉऴिक्क मन्नो 820

पल्लियम्-विविध वाद्यों के; तुवैप्प-बजते; नल् मा पणिलङ्कळ्-श्रेष्ठ और बड़े शंखों के; मुरल-बजते; पॉन् तेर् चिल्लिकळ्-स्वर्ण-रथों के पहियों के; इटिप्प-शब्द निकालते; वाचि चिरित्तिट-वाजियों के हिनहिनाते; चॅऱि पॉन्-स्वर्णमय; तारुम्-हारों और; विल्लुम्-धनुओं के; निन्ऱु इचैप्प-स्थिर स्वन करते; यानै-गजों के; मुऴक्कम् विट्टु आर्प्प-बड़े स्वर में चिंघाड़ते; विण् तोय्-आकाश को लगे; ऑल् ऑलि-बड़े शोर के; वानिन्-आकाश में; तेवर् उरै तॅरिवु-देवों की बोली को समझने में; ऑऴिक्क-कठिन बनाते रहते। ८२०

विविध वाद्य बजते जा रहे थे। शंखनाद हो रहा था। स्वयं रथों के पहिये घरघराते जा रहे थे। वाजी हिनहिनाते जा रहे थे। स्वर्णमय हारों की घंटियाँ बज रही थीं और धनु की टंकार हो रही थी। हाथी चिंघाड़ते शोर मचा रहे थे। ऐसे बहुत से मिश्रित नाद आकाश मे छाये और वह आकाश के देवों की बोली को अश्राव्य बना दिया। ८२०

मिननहु किरिहळ् यावु मेरुविन् विळङ्गित् तोन्ऱत्
तॉन्नहर् पिऱवु मॅल्लाम् बॉलिन्दन तुऱक्क मॅन्न
अन्नवन् शेनै शॅल्ल वार्हलि यिलङ्गै याय
पॉन्नहर् तहर्न्दु पॉङ्गि यार्त्तॅऴु तूळि पोर्प्प 821

अन्नवन् चेनै-उसकी सेना के; चॅल्ल-चलने से; आर् कलि इलङ्कै आय-समुद्रवलयित लंका की; पॉन् नकर्-स्वर्ण-नगरी; तकर्न्तु-जर्जर होकर; आर्त्तु ॲऴु-उससे शोर के साथ उठी; तूळि-धूल; पॉङ्कि-उठी और; पोर्प्प-छा गयी; मिन् नकु-प्रकाशमय; किरिकळ् यावुम्-सभी गिरियाँ; मेरुविन् विळङ्कि-मेरु-से (या मेरु से) प्रकाशमान; तोन्ऱ-दिखीं; तॉल् नकर्-प्राचीन नगर; पिऱवुम्

ॲल्लाम्–और अन्य सभी; तुरक्कम् ॲन्न–स्वर्ण के समान (स्वर्णमय); पॉलिन्तत–चमके। ८२१

ऐसे उसकी सेना जब चली तब समुद्रावृत स्वर्णनगरी लंका पिसी और शब्द के साथ धूल जो उठी वह सब जगह छा गयी। इसलिए सारी प्रभामय गिरियाँ (स्वर्णमय) मेरु के समान लगीं और प्राचीन वह नगर और अन्य स्थल व पदार्थ स्वर्ग के समान बन गये। ८२१

आयिर मैन्दॉ डैन्दा माळियन् दडन्दे रत्तेरक्
केयिन विरट्टि याने यानैयि निरट्टि पाय्मा
पोयिन पदादि शॉन्न पुरवियि निरट्टि पोलाम्
तीयवन् रुडन्देर् शुर्रित् तॅरुॅनच् चॅन्र् शेनै 822

तीयवन्–क्रूर (जम्बुमाली) के; तटम् तेर् चुर्रि–विशाल रथ को घेरकर; तॅरुॅ ॲन–क्षिप्रगति से; चॅन्र चेनै–जो गयी उस सेना में; ऐन्तोट्टु ऐन्तु आयिरम्–पाँच और पाँच (= दस) सहस्र; आळि अम् तटम तेर् आम्–पहियेदार सुन्दर बड़े रथ थे; अ तेर्क्कु–उन रथों के; इरट्टि एयिन–दुगुने रहे; यानै–गज; यानैयिन् इरट्टि–गजों के दुगुने; पाय् मा–अश्व; पोयिन पताति–जो पदाति वीर चले; चॉन्न पुरवियिन्–उक्त अश्वों के; इरट्टि पोल् आम्–दुगुने हैं। ८२२

क्रूर जम्बुमाली के विशाल रथ को घेरे बड़ी सेना गयी। उसमें दस सहस्र पहियोंदार रथ, उनके दुगुने गज और उनके दुगुने अश्व थे। पदाति वीर उनके दुगुने थे। ८२२

वित्मरैक् किळवर् नाना विञ्जैयर् वरत्तिन् मिक्कार्
वन्मरक् कण्ण रार्रल् वरम्बिला वयिरत् तोळार्
तॉन्मरक् कुलत्तर् तूणि तूक्किय पुरत्तर् मार्बाम्
कन्मरैत् तॉळिरुञ् जॅम्बॉर् कवशत्तर् कडुन्दे राळर् 823

कडुम् तेराळर्–वेगवान रथी; विल् मरै किळवर्–धनुर्विद्या-विशारद; नाना विञ्चैयर्–विविध कलाविद; वरत्तिन् मिक्कार्–बड़े-बड़े वरों के धनी; वन् मर कण्णर्–कठोर वीरता-प्रदर्शक नेत्रों वाले; वरम्पु इला–असीम; आर्रल्–शक्तिमान; वयिर तोळार्–वज्रस्कन्ध; तॉल् मर कुलत्तर्–प्राचीन वीरकुल में जनमे; तूणि तूक्किय–तूणीर-बँधी; पुरत्तर्–पीठ वाले; मार्पु आम् कल्–वक्ष रूपी गिरि को; मरैत्तु–छिपाते हुए; ऑळिरुम्–शोभायमान; चॅम् पॉन् कवचत्तर्–लाल स्वर्ण-कवचधारी। ८२३

रथी वीर तीव्र गति में रथ चला सकनेवाले थे। उन्हें धनुर्विद्या के अलावा अन्य नाना विद्याएँ भी आती थीं। उन्हें अनेक वर प्राप्त थे। उनकी आँखें वीरता-प्रदर्शक थीं और कन्धे वज्र-सम सुदृढ़। वे प्राचीन वीरों के कुल में जनमे थे। पीठ पर तूणीर बाँधकर और वक्ष पर लाल स्वर्ण-कवच पहने (जा रहे) थे। ८२३

पॊरुदिशै यात्तै यूरुम् पुत्तिदरैप् पॊरुवुम् पॊऱ्पर्
शुरिपडैत् तॊऴिलु मऱ्ऱै यङ्गुशत् तॊऴिलुन् दॊक्कार्
निरुदियिऱ् पिऱन्द वीरर् नॆरुप्पिडै पॊऴियुम् कण्णर्
परिदियिऱ् पॊलियु मॆय्यर् पडुमदक् कळिऱ्ऱिन् पाहर् 824

पटु मत कळिऱ्ऱिन्–स्रवणशील मद वाले गजों के; पाकर्–चलानेवाले वीर; पॊरु तिचै यात्तै–युद्धतत्पर दिग्गजों पर; ऊरुम्–सवारी करनेवाले; पुतितरै–पवित्र दिग्पालों को; पॊरुवुम्–समता करनेवाले; पॊऱ्पर्–शोभा वाले; चुरि पटै तॊऴिलुम्–तलवार की लड़ाई में; मऱ्ऱै–और; अङ्कुच तॊऴिलुम्–अंकुश-कर्म में (गज चलाने में); तॊक्कार्–निपुण; निरुतियिन्–(दक्षिण-पश्चिम दिशा की पालिका देवी) निऋति के; पिऱन्त वीरर्–जनाए वीर; नॆरुप्पु इटै पॊऴियुम्–रह-रहकर आग बरसानेवाले; कण्णर्–नेत्रों के; परितियिल्–सूर्य के समान; पॊलियुम् मॆय्यर्–शोभित शरीर वाले। ८२४

स्रवणशील मदनीर के गजों के वीर युद्धोत्साही दिग्गजों के पालकों के समान सौन्दर्ययुक्त थे। तलवार लेकर युद्ध करने में और वैसे ही अंकुश लेकर (गज चलाते हुए) लड़ने मे भी निपुण थे। दक्षिण-पश्चिम दिशा की (पालिका) निऋति के वंशज थे। [इसी निऋति का पुत्र था नैऋति या जिसके वशज तमिऴ में निरुदर्हळ और (संस्कृत) हिन्दी में नऋत कहते हैं। नैऋति को भी दिग्पालक कहा गया है, कहीं-कहीं।] उनकी आँखें आग बरसाती थीं और उनके शरीर सूर्य के समान तेजोवान थे। ८२४

एर्हॆळु तिशैयुञ् जारि पदिनॆट्टु मियल्वि नॆण्णिप्
पोर्हॆळु पडैयुङ् गऱ्ऱ वित्तहप् पुलवर् पोरिल्
तेर्हॆळु मऱवर् यानैच् चेवहर् तिऱत्तिऱ् चॆल्लुम्
तार्हॆळु पुरवि यॆन्नत् तम्मनन् दावप् पोनार् 825

एर् कॆळु तिचैयुम्–गम्य दिशाओं और; चारि पतिनॆट्टुम्–अठारह तरह की अश्वचर्याएँ; इयल्पिल् ऍण्णि–यथाक्रम विचारकर; पोर् कॆळु–युद्धप्रयुक्त; पटैयुम् कऱ्ऱ–हथियार चलाना जिन्होंने सीखा था; वित्तक पुलवर्–वे विद्यापारंगत; पोरिल्–युद्ध में; तेर् कॆळु मऱवर्–रथ चलानेवाले वीरों और; यानै चेवकर्–गज चलानेवाले वीरों के; तिऱत्तिल्–समान प्रकार में; चॆल्लुम्–जानेवाले; तार् कॆळु पुरवि ऍन्न–घंटियों-सहित हारो से अलंकृत अश्वों के ही समान; तम् मनम् ताव–अपने मनों के लपकते चलते; पोनार्–जा रहे थे। ८२५

अश्वसेना के वीर अपनी गम्य दिशाओं और अश्वों की अठारह विध गतियों का, और खूब सोच-समझकर युद्धायुधों को चलाने का अपार ज्ञान रखनेवाले विद्वान् थे। वे भी रथी वीरों और गजसेना के वीरों के समान प्रकार से अपने ही घंटियों-सहित हार से अलंकृत अश्वों के समान अपने मन के लपककर चलते आगे बढ़ते गये। ८२५

अन्नॅडुन् दात्तै शुऱ्ऱ वमररै यच्चञ् जुऱ्ऱप्
पॉन्नॅडुन् देरिऱ् पोन्ऱान् पॉरुप्पिडै नॅरुप्पिऱ् पॉङ्गित्
तन्नॅडुङ् गण्गळ् कान्दत् तमनियक् कवश मार्बिन्
मिन्निड वॅयिलुम् वीश विल्लिडु मॅयिऱ्ऱु वीरन् 826

विल् इटुम्–प्रकाश निकालनेवाले; ऍयिऱ्ऱु वीरन्–दंतोरा वीर; पॉरुप्पु इटै–पर्वतमध्य; नॅरुप्पिल् पॉङ्कि–आग के समान भभककर; तन् नॅटुम् कण्कळ्–अपनी दीर्घ आँखों को; कान्त–तेज से भरते हुए; तमनिय कवचम्–स्वर्ण-कवच के; मार्पिन् मिन्निट–वक्ष पर चमकते; वॅयिलुम् वीच–धूप के समान प्रकाश भी छिटकाते; अ नॅटुम् तानै चुऱ्ऱ–(चतुर्विधा) सेना के घेरते आते; अमररै–देवों को; अच्चम् चुऱ्ऱ–भय के घेरते; पॉन् नॅटुम् तेरिल्–स्वर्ण के बड़े रथ में; पोन्ऱान्–गया (जम्बुमाली)। ८२६

उज्ज्वल दाँत वाला जम्बुमाली पर्वत-मध्य उठती आग के समान अपनी आँखों से आग उगलते हुए बड़े रथ पर सवार हो गया। उसके वक्ष पर स्वर्ण-कवच चमक रहा था। वह कवच गर्मी भी उगल रहा था। उसके चारों ओर वह बड़ी सेना जा रही थी। इसका साज देखकर देवतागण दहशत खा रहे थे। ८२६

नन्दन वनत्तु णिन्ऱ नायहन् ऱूदन् ऱानुम्
वन्दिल ररक्क रॅन्नु मनत्तिनन् वळियै नोक्किच्
चन्दिरन् मुदल वान मीनॅलान् दळुव निन्ऱ
इन्दिर तनुविऱ् ऱोन्ऱुन् दोरण मिवर्न्दु निन्ऱान् 827

नन्तन वनत्तुळ् निन्ऱ–नन्दन वन में जो खड़ा रहा; नायकन् तूतन् तानुम्–नायक श्रीराम का दूत वह हनुमान भी; वन्तिलर् अरक्कर्–नहीं आये राक्षस; ऍन्नुम् मनत्तिनन्–ऐसा सोचनेवाले मन का होकर; वळियै नोक्कि–रास्ता देखते हुए; चन्तिरन्–चन्द्र के; मुतलवान मीन् ऍलाम्–आदि सभी नक्षत्रों; तळुव निन्ऱ–के साथ स्थित; इन्तिर तनुविल्–इन्द्रधनुष के समान; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; तोरणम्–तोरण पर; इवर्न्तु निन्ऱान्–चढ़कर खड़ा रहा। ८२७

उधर नन्दनवन में महावीर हनुमान बैठे हुए यह सोच रहा था कि अभी कोई वीर क्यों लड़ने नहीं आया ? वह एक तोरण पर चढ़ा बैठा वह तोरण उस इन्द्रधनुष के समान था, जो चन्द्र और अन्य नक्षत्रों के मध्य; शोभ रहा हो। ८२७

केळिरु मणियुम् बॉन्नुम् विशुम्बिरुळ् किळित्तु नीक्कुम्
ऊळिरुङ् गदिर्ह ळोडुन् दोरणत् तुम्बर् मेलान्
शूळिरुङ् गदिर्ह ळॅल्लान् दॉक्किडच् चुडरुज् जोदि
आळियि नडुवट् टोन्ऱु मरुक्कने यनैय नानान् 828

केळ् इरु मणियुम्–रंगीन रत्न; पॉन्नुम्–और स्वर्ण; विचुम्पु इरुळ्–आकाश के

अँधेरे को; किळिनतु नीक्कुम्–विदीर्ण कर हटानेवाली; ऊळ् इरुम् कतिर्कळोटु–पक्की और बड़ी किरणो के साथ रहे; तोरणत्तु उम्पर् मेलान्–तोरण पर जो रहा; चूळ् इरुम् कतिर्कळ् अॅल्लाम्–उसको घेरे सभी ज्योतिपुञ्जों के; तॉक्किट–मिले रहते; आळियिन् नटुवण् तोन्रुम्–समुद्रमध्य दिखनेवाले; चुटरुम् चोति अरुक्कतें–ज्योतिर्मय किरणमाली अर्क के ही; अत्तैयन् आन्नान्–समान बना। ८२८

वह तोरण चमकीले रंगीन रत्नों और स्वर्ण के साथ आकाश के अन्धकार को चीरकर हटानेवाले प्रकाश की पक्की किरणों से संयुक्त था। उस पर विद्यमान वह समुद्र-मध्य प्रकाशमान सूर्य के समान लगा; जिसके चारों ओर उसकी किरणें फैली हों। ८२८

शॅल्लॉडु मेहन् जिन्दत् तिरैक्कडल् शिलैप्पुत् तीरक्
कल्लळै किडन्द नाह मुयिरॉडु विडमुङ् गालक्
कॉल्लिय लरक्कर् नंञ्जिर् कुडिपुह वच्चम् वीरन्
विल्लॅन्न विडिक्क विण्णोर् नडुक्कुर वीर न्नार्त्तात् 829

चॅल् ऑटु–गाजों के साथ; मेकम् चिन्त–मेघ गिरकर छितरे; तिरै कटल्–तरंगमय सागर; चिलैप्पु तीर–गर्जन त्याग चुका; कल् अळै किटन्त नाकम्–चट्टानों के बिलों में पड़े रहे सर्पों ने; उयिर् ओटु विटमुम् काल–प्राणों के साथ विष को भी उगल दिया; कॉल्लियल्–परांतक; अरक्कर् नॅन्चिल्–राक्षसों के दिलों में; अच्चम्–भय ने; कुटि पुक–अड्डा बना लिया; विण्णोर् नटुक्कु उर–देव काँप उठे; वीरन् विल् अॅन्न–(इन सबका हेतु बनाते हुए) वीर श्रीराम के धनु (कोदण्ड) के समान; इटिक्क–शोर मचाते हुए; वीरन् आर्त्तात्–महावीर (हनुमान) ने गर्जन किया। ८२९

तब वीर हनुमान ने ऐसा श्रीराम-धनु की टंकार के समान गर्जन किया कि मेघ वज्रों के साथ गिर पड़े; तरंगायमान समुद्र रवहीन बन गया। पर्वत की दरारों में रहे साँपों ने अपने प्राण रक्त के साथ वमन कर लिये! परसंहारक राक्षसों के मन में भय ने घर कर लिया। और देवगण भी दहशत खा गये। ८२९

निन्रन तिशैक्कण् वेळ नॅडुङ्गळिच् चॅरुक्कु नीङ्गत्
तॅन्रिशै नमनु मुळ्ळन् दुणुक्कॅन्नच् चिन्द वानिल्
पॊन्रलिन् मीन्ग ळॅल्लाम् पूवॅन वुदिरप् पूवुम्
कुन्रमुम् बिळक्क वेलै तुळक्कुरक् कॉट्टि न्नान्रोळ् 830

तिचै कण् निन्रन–दिशाओं में जो खड़े रहे; वेळम्–उन गजो के; नॅटुम् कळि चॅरुक्कु–अधिक मदमत्तता से उत्पन्न गर्व को; नीङ्क–दूर करते हुए; तॅन् तिचै नमनुम्–दक्षिण दिशा के देवता यम के भी; तुणुक्कु अॅन–दहलकर; उळ्ळम् चिन्त–मन के विदीर्ण होते; वानिल्–आकाश में; पॊन्रल् इल्–अविनश्वर; मीन्कळ् अॅल्लाम्–सभी नक्षत्र; पू अॅन उतिर–फूलो के समान चू पड़े; पूवुम् कुन्रमुम् पिळक्क–भूमि और पर्वत दलक गये; वेलै तुळक्कु उर–समुद्र मथ गया; तोळ् कॉट्टितान्–(इन सबको होने देते हुए) हनुमान ने कन्धे ठोंके। ८३०

हनुमान ने अपने कन्धे ठोंके, जिससे दिग्गजों के मदमत्तता से उत्पन्न गर्व चूर हो गये। दक्षिणी दिशा के पालक यम का भी मन दहल उठा। आकाश के अविनश्वर नक्षत्र सभी फूलों के समान गिर गये। भूमि और पर्वत दलक गये। समुद्र विलोडित हो गये। ८३०

अव्वऴि यरक्क रॅल्ला मलैनॅडुङ् गडलि ऩार्त्तार्
शॅव्वऴिच् चेऱ लाऱ्ऱार् पिणप्पॅरुङ् गुऩ्ऱन् दॅऱ्ऱि
वॅव्वऴिक् कुरुदि वॆळ्ळम् बुडैमिडैन् दुयर्न्दु वीङ्ग
ॲव्वऴिच् चेरु मॅन्ऱार् तमरुडम् बिडऱि वीऴ्वार् 831

अ वऴि–तब; अरक्कर् ॲल्लाम्–सभी राक्षसों ने; अलै नॅट्टम् कटलिन्–तरंगायमान विशाल सागर के समान; आर्त्तार्–नारे निकाले; चॅम् वऴि–सीधे मार्ग से; चेऱल् आऱ्ऱार्–जा नहीं सके; पिण पॅरुम् कुन्ऱम्–बड़े शव-पर्वतों से; तॅऱ्ऱि–ठोकर खाकर; वॅम् वऴि–भयंकर मार्ग में; कुरुति वॆळ्ळम्–(आया) रक्तप्रवाह; पुटै मिटैन्तु–पार्श्व में अधिक हो; उयर्न्तु वीङ्क–बढ़ा और ऊँचा उठा; ॲ वऴि चेरुम्–किस मार्ग से जाएँ; ॲन्ऱार्–इसमें भ्रम करते हुए; तमर्–अपनों के; उटम्पु इटऱि–शवों से ठोकर खाकर; वीऴ्वार्–गिरे। ८३१

तब सभी राक्षसों ने मिलकर तरंगायमान विशाल समुद्र के समान नर्दन किया। वे सीधे मार्ग से जा नहीं सके, क्योंकि मार्ग में शवों के पर्वत-सम ढेर पड़े थे। उनसे ठोकर खा गये। पार्श्व में और सामने भयंकर मार्ग में रक्त बहा, बढ़ा और भयकर बाढ़ बना। किस तरह समराजिर जायँगे? इस संशयजनित हड़बड़ाहट में वे अपने ही लोगों के शवों से ठोकर खाकर गिरते जा रहे थे। ८३१

आण्डुनिन् ऱरक्कन् वॅव्वे ऱणिवहुत् तऩिहन् दऩ्ऩै
मूण्डिरु पुडैयु मुऩ्ऩु मुरैमुरै मुडुह वेवित्
तूण्डिनन् ऱाऩुन् दिण्डेर् तोरणत् तिरुन्द शूरऩ्
वेण्डिय दॅदिर्न्द दॅन्न वीङ्गिनऩ् विशयत् तिण्डोळ् 832

अरक्कन्–राक्षस जम्बुमाली ने; आण्टु निन्ऱु–वहाँ से; अऩिकम् तऩ्ऩै–सेना को; वॅव्वेऱु अणि वकुत्तु–अलग-अलग पलटनों में विभाजित करके; इरु पुटैयुम्–दोनों पार्श्वों में; मुऩ्ऩुम्–और सामने; मूण्टु–कूच कर; मुरै मुरै मुटुक–दलों में जाने को; एवि–आज्ञा देकर; ताऩुम्–स्वयं; तिण् तेर् तूण्टिऩऩ्–अपना प्रबल रथ चलाया; तोरणत्तु इरुन्त–तोरण पर जो रहा; चूरऩ्–उस शूर ने; वेण्टियतु ॲतिर्न्ततु–मन-वाञ्छित मिल गया; ॲन्ऩ–समझकर; विचय तिण् तोळ्–विजयी सुदृढ़ कन्धों को; वीङ्कितऩ्–फुला दिया। ८३२

जम्बुमाली ने वहाँ अपनी सेना को पलटनों में बाँटकर व्यूह बना लिये। उसके दोनों पार्श्वों में आगे और पीछे सेना के भाग आने लगे। वह इनके मध्य अपना सबल रथ चलाता गया। तोरणद्वार पर जो बैठा

रहा, उस हनुमान ने यह देखा और हमारा मनचाहा युद्ध आ गया, इस विचार से उसके कन्धे फूल उठे। ८३२

ऐयनु ममैनुदु निन्ऱा ऩाऴियान् नळवि ऩाऱ्ऱल्
नॅय्शुडर् विळक्किऩ् ऱोन्ऱुम् नॅऱ्ऱिये नॅऱ्ऱि याह
मॉय्म्मयिर्च् चेनै पॉङ्ग मुरणमै युहिर्वाण् मॉय्त्त
कैहळे कैह ळाहक् कडैक्कूळै तिरुवा लाह 833

आऴियान्–चक्रधारी (श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम) का; अळवु इल् आऱ्ऱल्–अपार वलवान; ऐयनुम्–सम्मान्य (हनुमान) भी; नॅय् चुटर् विळक्किल्–घी डालकर जलाये गये दीप के; तोन्ऱुम्–समान दिखनेवाले; नॅऱ्ऱिये–भाल को ही; नॅऱ्ऱि आक–अग्रगामी सेना वनाकर; मॉय् मयिर्–शरीर के वालों के ही; चेनै पॉङ्क–सेना के वीरों के समान खड़े रहते; मुरण् अमै–सवल; उकिर् वाळ्–नख रूपी तलवारें; मॉय्त्त कैकळे–जिनमें लगी थीं, उन हाथों को; कैकळाक–पार्श्व की सेनाएँ वनाकर; तिरु वाल्–सुन्दर पूँछ को; कटै कळै आक–पिछले भाग की सेना वनाकर; अमैन्तु निन्ऱान्–सम्पूर्ण व्यूह वना खड़ा रहा। ८३३

हनुमान की सेना के व्यूहों की विचित्रता देखिए। चक्रधारी (श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम) के उस अतिवली महावीर दूत का घृत की दीप की ज्वाला के समान ज्वलन्त भाल ही आगे की पलटन वना।) उसके शरीर के घने वाल ही सेना के वीर थे। सुदृढ़ नाखून रूपी तलवारों से युक्त उसके दोनों हाथ दोनों ओर की पलटनें वने। उसका मनोरम लांगूल ही पीछे आनेवाली सेना वनी। ८३३

वयिर्हळ्वाल् वळैहळ् विम्म वरिशिलै शिलैप्प मायाप्
पयिर्हळार्प् पॅडुप्प मूरिप् पल्लियङ् गुमुऱप् पऱ्ऱिच्
चॅयिर्हॉळ्वा ळरक्कर् शोऱ्ऱज् जॅरुक्किऩर् पडैहळ् शिन्द
वॅयिल्हळ्पो लॉळिहळ् वीश वीरऩ्मेऱ् कडिदु विट्टार् 834

वयिर्कळ्–तुरहियाँ और; वाल् वळैकळ् विम्म–और सफ़ेद शंख वज उठे; वरि चिलै चिलैप्प–सवन्ध धनु के डोरे की टंकार उठी; माया पयिर्कळ्–पक्षियों का निरन्तर कलरव; आर्प्पु ॲटुप्प–उच्च स्वर मे सुनायी दिया; मूरि पल्लियम्–ज़ोरदार अनेक वाजे; कुमुऱ–नाद कर उठे; चॅयिर् कॉळ्–द्वेष-भरे; वाळ् अरक्कर्–तलवारधारी राक्षस; चोऱ्ऱम् चॅरुक्कित्तर्–क्रोधोन्मत्त होकर; वॅयिल्कळ् पोल्–धूप के समान; ऑळिकळ् वीच–प्रकाश निकालते हुए; पटैकळ् पऱ्ऱि–हथियार पकड़कर; चिन्त–फेंकते हुए; वीरन् मेल्–महावीर हनुमान पर; कटितु विट्टार्–तेज़ी से चलाये। ८३४

तव तुरहियाँ और श्वेत शंख वज उठे। धनु की टंकारें उठीं। पक्षियों का कलरव उच्च हुआ। विविध वाद्य घुमर उठे। द्वेषपूर्ण

राक्षसों ने कोपाक्रान्त होकर धूप के समान गरम प्रकाश छितराते हुए जानेवाले हथियार लेकर महावीर पर बरसा दिये। ८३४

करुङ्गळ लरक्करतम् बडैक्कलङ् गरत्ताल्
पॅरुङ्गड लुऱप्पुडैत् तिऱुत्तुहप् पिशैन्दान्
विरिन्दत्त पॉरिक्कुल नॅरुप्पॅन वॅहुण्डाण्
डिरुन्दवन् किडन्दर्दो रॅळुत्तरिन् दॅडुत्तान् 835

आण्टु इरुन्तवन्–वहाँ जो रहा; करुम् क़ळल्–बड़ी-बड़ी पायलधारी; अरक्कर्तम् पटैक्कलम्–राक्षसों के हथियारों को; पॅरुम् कटल् उऱ–बड़े सागर में चले जायँ, ऐसा; करत्ताल्–अपने हाथों से; पुटैत्तु–पीटकर; इऱुत्तु–तोड़कर; उक पिचैन्तान्–(हनुमान ने) चूर करते हुए पीस दिया; विरिन्तत्त–जो फैलती है; पॉरि कुल नॅरुप्पु ॲॅन–अंगारों की राशियों के साथ आग के समान; वॅकुण्टु–गुस्सा करके; किटन्ततु ओर् ॲॅळु–वहाँ जो पड़ा रहा, उस लौहदण्ड को; तॅरिन्तु–चुनकर; ॲॅटुत्तान्–लिया। ८३५

महावीर ने, जो वहाँ बैठा था, उन बड़ी वीरपायल-धारी राक्षसों के हथियारों को पकड़ा, तोड़ा, पीसा और समुद्र में जा गिरें, ऐसा उछाल दिया। तब अंगारे-मध्य आग के समान (या "पॉऱि" के भ्रमर और अंगारे दो अर्थ होने से—भ्रमरों को उड़ाते हुए) क्रुद्ध बने उसने वहाँ पड़े रहे एक लौहदण्ड को चुन लिया। ८३५

इरुन्दन नॅळुन्दन्न तिऴिन्दन्न नुयर्न्दान्
तिरिन्दनन् पुरिन्दन नॅन्ननन्नि तॅरियार्
विरिन्दवर् कुविन्दवर् विलङ्गिनर् कलन्दार्
पॉरुन्दिनर् नॅरुङ्गिनर् कळम्बडप् पुडैत्तान् 836

इरुन्तनन्–जो बैठा रहा; ॲॅळुन्तनन्–उठा; इऴिन्तनन्–उतरा; उयर्न्तान्–तना; तिरिन्तनन्–घूमा; पुरिन्तनन्–युद्ध किया; ॲॅन्न–ऐसा; नन्नि तॅरियार्–ठीक जो जान नहीं सके; विरिन्तवर्–ऐसा फैले; कुविन्तवर्–एकत्र हुए; विलङ्किनर्–अलग हुए; कलन्तार्–मिले; पॉरुन्तिनर्–युद्ध में लगे रहे; नॅरुङ्किनर्–सटे खड़े रहे; कळम् पट–(उन सभी को) खेत रहने देकर; पुटैत्तान्–पीटकर मार दिया। ८३६

जो बैठा रहा वह उठा, नीचे उतरा और तनकर सीधा हुआ। वह कहाँ रहता, कहाँ घूमता और युद्ध करता है, यह न जानते हुए राक्षस सर्वत्र फैले, इकट्ठे हुए और हटे और सटे। युद्ध में लगे और पास आ जुटे। उन सबको हनुमान ने खूब आहत कर खेत रहने दिया। ८३६

ॲॅऱिन्दन्न वॅय्दन विडिक्कुमुरु मॅन्नच्
चॅऱिन्दन्न पडैक्कल मिडक्कैयिर् चिदैत्तान्

मुऱिन्दऩ दॆरुङ्गरि मुडिन्दन तडन्देर्
मऱिन्दन परित्तिरळ् वलक्कैयिल् मलॆक्क 837

ऍऱिन्तऩ-जो फेंके गये; ऍय्तऩ-जो चलाये गये; इटिक्कुम् उरुम् ऍऩ्ऩ-टूटनेवाली अशनि के समान; चॆऱिन्तऩ-सटे जो रहे; पटैक्कलम्-उन हथियारों को; इट कैयिन्-बायें हाथ से; चितैत्तान्-छिन्न-भिन्न कर दिया; वल कैयिन् मलैक्क-दायें हाथ से युद्ध करने पर; तॆऱुम् करि-युद्धसमर्थ गज; मुऱिन्तऩ-टूटकर मरे; तटम् तेर्-विशाल रथ; मुटिन्तऩ-मिटे; परि तिरळ्-अश्ववृन्द; मऱिन्तऩ-गिरकर मरे। ८३७

राक्षसों ने जो हथियार फेंके, जिनको चलाया और जो अशनि के समान सामने आये, उन सब हथियारों को हनुमान ने अपने बायें हाथ से बेकार कर दिया। दाहिने हाथ से पीटकर शत्रुसंहारक गजों को मरोड़ दिया। बड़े-बड़े रथ भी मिट गये। अश्ववृन्द भी टूट गिरे और मरे। ८३७

नॆरिन्दन . तडञ्जुवर् नॆरिन्दऩ पॆरुम्बार्
नॆरिन्दऩ नुहम्बुडै नॆरिन्दन वदन्गाल्
नॆरिन्दन कॊडिञ्जुह णॆरिन्दऩ वियन्ऱार्
नॆरिन्दऩ कडुम्बरि नॆरिन्दन नॆडुन्देर् 838

तटम् चुवर्-(रथों की) बड़ी भित्तियाँ; नॆरिन्तऩ-दलक गयीं; पॆरुम् पार्-बड़े पाट; नॆरिन्तऩ-चिर गये; नुकम् पुटै नॆरिन्तऩ-कूवर टूटे; अतन् काल्-उनके पहिये; नॆरिन्तऩ-दलक गये; कॊटिञ्चुकळ्-पीठ; नॆरिन्तऩ-टूटे; वियन् तार्-श्रेष्ठ हार; नॆरिन्तऩ-टूटे; कटुम् परि नॆरिन्तऩ-तीव्रगति अश्व पिस गये; नॆटुम् तेर् नॆरिन्तऩ-बड़े रथ दलक गये। ८३८

रथों की भित्तियाँ, पाट, और कूवर सब दलक गये। उनके पहिये टूटे। आसन टूटे। श्रेष्ठ घंटियोंदार दाम टूटे। तीव्रगामी अश्व टूट मरे। इस भाँति बड़े-बड़े रथ मिट गये। ८३८

इऴन्दन नॆडुङ्गॊडि यिऴन्दऩ विरुङ्गो
डिऴन्दन नॆडुङ्गर मिऴन्दन वियन्ऱाळ्
इऴन्दन मुऴङ्गॊलि यिऴन्दन मदम्बा
डिऴन्दन पॆरुङ्गद मिरुङ्गवु ळियानै 839

इरुम् कवुळ् यानै-बड़े गण्डस्थल वाले गज; नॆटुम् कॊटि-दीर्घ ध्वजाओं से; इऴन्तऩ-हीन हो गये; इरुम् कोटु-बड़े दाँत; इऴन्तऩ-खो गये; नॆटुम् करम्-लम्बी सूँड़ो से; इऴन्तऩ-हीन हो गये; वियन् ताळ्-श्रेष्ठ पैर; इऴन्तऩ-खो गये; मुऴङ्कु ऒलि-चिंघाड़ने का स्वर; इऴन्तऩ-खो गये; मतम् पाटु इऴन्तऩ-मदजल निकाल बहाना छोड़ गये; पॆरुम् कतम्-अपना बड़ा रोष; इऴन्तऩ-खो गये। ८३९

बड़े-बड़े गालों वाले गजो पर की ध्वजाएँ ध्वस्त हुई और वे ध्वजाहीन हो गये। वे दाँतों, सूँड़ो और बड़े पैरों से भी विहीन हो गये। उनकी

चिंघाड़ने की शक्ति भी छूट गयी। मद का बहना भी रुक गया। उनका क्रोध भी उन्हें छोड़ गया। ८३९

ऑडिन्दत्त वुरुण्डत्त वुलन्दन पौलत्ऱार्
इडिन्दन वॅरिन्दन नॅरिन्दत्त वॅळुन्दाळ्
मडिन्दत्त मऱिन्दत्त मुऱिन्दन वयप्पोर्
पडिन्दत्त मुडिन्दत्त किडन्दत्त परिमा 840

परिमा–अश्व; ऑटिन्तत्त–टूटे; उरुण्टत्त–लुढ़के; उलन्तत्त–मरे; पौलत्तार्–उनके स्वर्ण-दाम (घंटियों वाले); इटिन्तत्त–खण्ड-खण्ड हुए; ऍरिन्तत्त–जले; नॅरिन्तत्त–पिसे; ऍळुम् ताळ्–उठने को उद्यत अश्वों के पैर; मटिन्तत्त–मुड़े; मुऱिन्तत्त–विकृत हुए; मुऱिन्तत्त–टूटे; वय पोर्–कठोर युद्ध में; पटिन्तत्त–भूमि पर गिरे; मुटिन्तत्त–मरे; किटन्तत्त–पड़े रहे। ८४०

अश्ववृन्द मरोड़ खाकर लोटे और मरे। उनके स्वर्णमय दाम टूटे, जले और छितर गये। कुछ अश्व उठने लगे तो उनके पैर मुड़ गये, विकृत हुए और टूट गये। घोर युद्ध में वे भूमि पर गिरे, मरे और पड़े रहे। ८४०

वॅरुण्डनर् वियन्दनर् विळुन्दन ऍळुन्दार्
मरुण्डनर् मयङ्गिनर् मऱिन्दत्त इऱन्दार्
उरुण्डत्त उलैन्दत्त उळैन्दत्तर् कुळैन्दार्
शुरुण्डत्तर् पुरण्डत्तर् तॉलैन्दत्तर् मलैन्दार् 841

मलैन्तार्–(हनुमान से) जो भिड़े थे; वॅरुण्टत्तर्–(उनमें कुछ) भयातुर हुए; वियन्तत्तर्–विस्मित हुए; विळुन्तत्तर्–भूमि पर लोट गये; ऍळुन्तार्–उनमें कुछ उठे; मरुण्टत्तर्–भ्रमित हुए; मयङ्कित्तर्–बेहोश हुए; मऱिन्तत्तर्–औंधे गिरे; इऱन्तार्–मरे; उरुण्टत्तर्–(और कुछ) लुढ़के; उलैन्तत्तर्–पीड़ा का अनुभव किया; उळैन्तत्तर्–मुरझाये; कुळैन्तार्–पिसकर मर गये; चुरुण्टत्तर्–(और कुछ) गोल हुए; पुरण्टत्तर्–लोटे; तॉलैन्तत्तर्–मरे। ८४१

हनुमान से जो भिड़े, वे भयातुर हुए, विस्मित हुए और धराशायी हुए। कुछ लोग उठे पर वे भ्रान्त हुए, बेहोश हुए और औंधे गिरे। कुछ लोग लोटे, मुरझाये और पिस गये। कितने ही लुढ़के, लोटे और मिट गये। ८४१

करिहॉडु करिहळैक् कळप्पडप् पुडैत्तान्
परिहॉडु परिहळैत् तलत्तिडैप् पडुत्तान्
वरिशिलै वयवरै वयवरित् मडित्तान्
निरैमणित् तेर्हळैत् तेर्हळि नॅरित्तान् 842

करि कॉटु–गजों से ही; करिकळै–गजों को; कळप्पट–खेत रहें, ऐसा;

पुटैत्तान्–प्रहार किया; परि कॊट्टु–अश्वों से ही; परिकळै–अश्वों को; तलत्तु इटै–भूमि पर; पटुत्तान्–सुला दिया; वरि चिलै वयवरै–सबन्ध धनुर्धरों को; वयवरित् मटित्तान्–वीरों से मारकर ही निपाता; निरै मणि तेर्कळै–पंक्तियों में मणियों से अलंकृत रथों को; तेर्कळित् नॆरित्तान्–रथों से ही चूर कर दिया। ८४२

हनुमान ने गजों को गजों द्वारा पिटवाकर मार दिया। अश्वों को अश्वों से प्रहरित करके धराशायी बना दिया। सबन्ध धनुर्धरों को वीरों से पिटवाकर निपाता। पंक्तियों में मणियों से अलंकृत रथों को रथों से आहत करके तहस-नहस कर दिया। ८४२

मूळैयु मुदिरमु मुळङ्गिरुङ् गुळम्वाय्
मीळरुङ् गुळैपडक् करिविळुन् दळुन्दत्
ताळोडुन् दलैयुहत् तडनॆडुङ् गिरिपोल्
तॊळोडु निरुदरै वाळोडुन् दुहैत्तान् 843

मूळैयुम्–भेजा; उतिरमुम्–और रक्त; मुळङ्कु–शब्दित; इरुम्–विपुल; कुळम्पाय्–मिश्रण बनकर; मीळ् अरुम्–जिससे बाहर आना असाध्य हो, ऐसा; कुळै पट–कर्दम बने; करि विळुन्तु अळुन्त–गज गिरकर मग्न हुए; ताळोटुम्–पैरों के साथ; तलै उक–सिर बिखरे; तट नॆटुम् किरि पोल्–विशाल और ऊँचे पर्वतों के समान; निरुतरै राक्षसों को; तोळोटुम्–कन्धों के साथ; वाळोटुम्–और तलवारों के साथ; तुकैत्तान्–रौंद दिया। ८४३

भेजे और रुधिर मिश्रित हुए और ऐसा कर्दम बन गये कि उसमें गिरे लोग बाहर निकल नहीं सके। उसमें गज गिरे और मरे। हनुमान ने पैरों और सिरों को तोड़कर बड़े और ऊँचे पर्वतों-जैसे राक्षसों को उनके कन्धों और तलवारों के साथ रौंद दिया। ८४३-

मल्लॊडु मलैमलैत् तोळरै वळैवायप्
पल्लॊडु नॆडुङ्गरप् पहट्टॊडुम् बरुन्दाळ्
विल्लॊडु मयिलॊडुम् विऱलॊडुम् विळिक्कुम्
शॊल्लॊडु मुयिरॊडु निलत्तॊडुन् दुहैत्तान् 844

मल्लॊटु मलै–मल्लयुद्ध से लड़नेवाले; मलै तोळरै–पर्वत-से कन्धों के राक्षसों को; वळै वाय् पल्लॊटुम्–वक्र मुख के दाँतों के साथ; नॆटुम्–लम्बे; पकटु करम् ऒटुम्–कठोर हाथों से; परुम् ताळ्–मोटे बाजुओं के; विल्लॊटुम्–धनुओं के साथ; अयिलॊटुम्–शक्तियों के साथ; विऱलॊटुम्–वीरता के साथ; विळिक्कुम् चॊल्लॊटुम्–उच्चरित शब्दों के साथ; उयिरॊटुम्–प्राणों के साथ; निलत्तॊटुम्–भूमि के साथ; तुकैत्तान्–रौंद दिया। ८४४

हनुमान ने मल्लयुद्ध करके पर्वत-स्कन्ध राक्षसों को वक्र दाँतों, बड़े और सबल हाथों, मोटे कोरों के चापों, शक्तियों, वीरता, उच्च स्वर और उनके प्राणों के साथ भूमि पर पटककर रौंद दिया। ८४४

पुहैनॅडुम् बॉरिपुहुन् दिशैतॉरुम् बॉलिन्दान्
चिहैनॅडुञ् जुडर्विडुन् देर्तॉरुञ् जॅन्ऱान्
तहैनॅडुङ् गरिदॉरुम् बरितॉरुञ् जरित्तान्
नहैनॅडु पडैदॉरुन् दलैदॉरु नडन्दान् 845

पुकै–धुएँ के साथ; नॅटुम् पॉरि–बड़े-बड़े अंगारे; पुकुम् तिचै तॉरुम्–जहाँ घुसते चले उन सभी दिशाओं में; पॉलिन्तान्–शान के साथ दिखायी दिया; चिकै–सिरों पर से; नॅटुम् चुटर् विटुम्–दीर्घ द्युति निःसृत करनेवाले; तेर् तॉरुम्–रथ जहाँ-जहाँ थे; चॅन्ऱान्–वहाँ गया; तकै नॅटुम्–श्रेष्ठता में बढ़े हुए; करि तॉरुम् परि तॉरुम्–गज और अश्व जहाँ-जहाँ थे वहाँ; चरित्तान्–संचार किया; नकै–उसकी हँसी उड़ानेवाले; नॅटुम् पटै तॉरुम्–विशाल सेना के हर वीर के पास; तलै तॉरुम्–हर सिर पर; नटन्तान्–चला और ध्वस्त किया। ८४५

चारों दिशाओं में धुएँ-सहित अंगारे फैले और उनके साथ हनुमान भी दिखायी दिया। अपने सिरों से प्रकाश निकालनेवाले रथ-रथ पर, श्रेष्ठ गज-गज पर, अश्व-अश्व पर कूदा। उसकी हँसी जो उड़ा रहे थे, उन राक्षसों के सिरों पर चलकर उसने उनको निहत कर दिया। ८४५

वॅन्ऱिवॅम् बुरवियिन् वॅरिनिनुम् विरवार्
मन्ऱलन् दारणि मार्बिनु मणित्तेर्
ऑन्ऱिनिन् ड्रॉन्ऱिनु मुयर्मद मळैताळ्
कुन्ऱिनुङ् गडैयुहत् तुरुमॅनक् कुदित्तान् 846

वॅन्ऱि–विजयशील; वॅम् पुरवियिन्–भयानक अश्वों की; वॅरिनिनुम्–पीठों पर; विरवार्–शत्रुओं के; मन्ऱल् अम् तार्–सुगन्धपूर्ण माला से; अणि मार्पिनुम्–अलंकृत सुन्दर वक्षों पर; मणि तेर्–मनोरम रथ; ऑन्ऱिन् निन्ऱु–एक से; ऑन्ऱिनुम्–दूसरे पर; उयर् मत मळै–अधिक मद-वर्षा; ताळ्–बहानेवाले; कुन्ऱिनुम्–पर्वत-सम गजों पर; कटै युकत्तु–युगान्त में; उरुम् ऍन–गिरनेवाली अशनि के समान; कुतित्तान्–कूदा। ८४६

वह विजयशील अश्व की पीठों पर, सुगन्धित पुष्पमालालंकृत (राक्षसों के) वक्षों पर, सुन्दर रथों में एक से दूसरे पर और अधिक मदस्रावी गजों पर प्रलयकालीन अशनि के समान कूदा। ८४६

पिरिवरु मॊरुपॆरुङ् गोलॆनप् पॆयरा
इरुविनै तुडैत्तव रऱिवॆन वॆवरक्कुम्
वरुमुलै विलैक्कॊन मदित्तनर् वळङ्गुम्
तॆरिवैयर् मनमॆनक् कडुङ्गॊनत् तिरिन्दान् 847

पिरिवु अरुम्–निरन्तर वर्तमान; ऑरु पॆरुम् कोल् ऍन–एक बड़े राजा के दण्ड (शासन) के समान; पॆयरा–अपृथक्; इरुविनै तुटैत्तवर्–कर्मद्वयमुक्त ज्ञानी के; अऱिवु पोलवुम्–ज्ञान के समान; ऍवरक्कुम्–किसी से भी; वरु मुलै–पुष्ट उरोज;

विलैक्कु अँत्त मतित्तुतत्तर्–पण्य बनाकर; वळङ्कुम्–भुगतने देनेवाली; तॅरिवैयर् मत्तम् अँन–वारांगनाओं के मन के समान; करङ्कु अँत्त–वातचक्र के समान; तिरिन्तान्–हनुमान घूम-घूमकर लड़ा। ८४७

वह कैसे घूमा ? इसका विवरण देखिए— निरन्तर वर्तमान बड़े राजा के शासन-दण्ड के समान (सजग), कर्मद्वयविमुक्त ज्ञानियों के ज्ञान के समान (सूक्ष्म) और अपने मनोरम स्तनों को पण्य-पदार्थ माननेवाली वारवनिताओं के मन के समान और वातचक्र (या पतंग) के समान (एक स्थान पर न रहकर) घूमा। ८४७

अण्णलव् वरियिनुक् कडियव रवन्शीर्
नण्णुव रॅनुम्बॊरु णवैयऱ्त् तॅरिप्पान्
मण्णिनुम् विशुम्बिनु मरुङ्गिनुम् वलित्तार्
कण्णिनु मनत्तिनुन् दनित्तनि कलन्दान् 848

अण्णल्–महावीर; अ अरियिनुक्कु अटियवर्–उन हरि के दास; अवन् चीर् नण्णुवर–उन हरि के दिव्यगुणों को प्राप्त करेंगे; अँनुम् पॊरुळ्–यह शास्त्रार्थ; नवै अऱ्–निर्दोष रीति से; तॅरिप्पान्–बताते हुए; मण्णिनुम् विचुम्पितुम्–भूमि और आकाश में; मरुङ्कितुम्–पार्श्वों में; वलित्तार्–जोर से लड़नेवाले राक्षसों की; कण्णितुम् मनत्तितुम्–आँखों और मन में; तनि तनि–अलग-अलग; कलन्तान्–मिला रहा। ८४८

श्रीविष्णुभक्त श्रीविष्णु के गुणों को प्राप्त कर लेते हैं। यह शास्त्रोक्त विषय है। इसको हनुमान विश्वरूप बनकर अपने में प्रमाणित कर रहा था। क्योंकि वह आकाश, भूमि, पार्श्वों और सबल योद्धा राक्षसों की आँखों और मनों में अलग-अलग रहा। ८४८

कॊडित्तडन् देरॊडुङ् गुरहदक् कुळुवै
अडित्तॊरु तडक्कैयि निलत्तिनिट् टरैत्तान्
इडित्तुनिन् ऱदिर्हदत् तॅयिऱ्ऱुवन् पॊरुप्पै
पिडित्तॊरु तडक्कैयि नुयिरुहप् पिळिन्दान् 849

कॊटि–ध्वजा-सहित; तटम् तेर् ऒटुम्–बड़े रथों के साथ; कुरकत कुळुवै–तुरग-समूह को; ऒरु तट कैयिन्–एक बड़े हाथ से; अटित्तु–पीटकर; निलत्तिन् इट्टु–भूमि पर डालकर; अरैत्तान्–पीस डाला; इटित्तु निन्ऱु अतिर्–बिजली की कड़क के समान चिंघाड़नेवाले; कतत्तु–क्रुद्ध; अँयिऱ्ऱु–दाँतों वाले; वन् पॊरुप्पै–सबल पर्वतों (गजों) को; ऒरु तट कैयिन् पिटित्तु–दूसरे बड़े हाथ से पकड़कर; उयिर् उक–प्राणों को निकालते हुए; पिळिन्तान्–निचोड़ दिया। ८४९

हनुमान ने एक हाथ से पताका-भूषित रथों के साथ तुरगवृन्द को प्रहरित करके भूमि पर डालकर पीस दिया। अपने दूसरे हाथ से अशनि

के समान चिंघाड़ की ध्वनि निकालनेवाले, क्रुद्ध, बड़े दाँतों वाले और पर्वत-सम गजों को ऐसा निचोड़ा कि उनके प्राण निकल गये। ८४९

करुत्तॅळु मनत्तिन रॅयिऱ्ऱिनर् कयिऱ्ऱार्
शॅरुत्तॅरि विळिप्पवर् शिहैक्कळु वलत्तार्
वॅरुत्तॅळु मऱलिह ळिवरॅन वॅदिर्न्दार्
ऑरुत्तुरुत् तिरॅनत्त तनित्तनि युदैत्तान् 850

करुत्तु ऍळु मनत्तिनर्–क्रुद्धमन; ऍयिऱ्ऱिनर्–दंतोरे; कयिऱ्ऱार्–पाशहस्त; चॅरुत्तु–शत्रुता करके; ऍरि विळिप्पवर्–आग-जैसी दृष्टि फेंकनेवाले; चिकै–तीक्ष्ण; कळु–शूल के; वलत्तार्–बलशाली; वॅरुत्तु ऍळु–शत्रुता करके चढ़ आनेवाले; मऱलिकळ् इवरॅन–यम है ये, ऐसा; ऍतिर्न्तार्–चढ़ आये; ऑरुत्तु–उनको दण्डित करके; उरुत्तिरन् ऍन–रुद्र के समान; तनि तनि–अलग-अलग; उतैत्तान्–लात मारी (हनुमान ने)। ८५०

क्रुद्धमन, भयंकर दाँतों वाले, पाशहस्त, वैर के साथ आग बरसाते हुए देखनेवाली आँखों के और तीक्ष्ण त्रिशूलधारी राक्षस द्वेष से उठ आनेवाले यम के समान लगे, तो हनुमान ने रुद्र के समान उन्हें दण्डित करके अलग-अलग लताड़ा। ८५०

शक्करन् दोमर मुलक्कैदण् डयिल्वाळ्
मिक्कन तेर्परि कुडैकॉडि विरवि
उक्कन कुरुदियम् बॅरुन्दिरै युरुट्टप्
पुक्कन कडलिडै नॅडुङ्गरप् पूट्कै 851

उक्कन कुरुति अम्–(राक्षसों के) बहाए रक्त-प्रवाह की; पॅरुम् तिरै–बड़ी-बड़ी लहरों के; उरुट्ट–लुढ़का ले जाने से; चक्करम्–चक्र; तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; तण्टु–गदाएँ; अयिल्–शक्तियाँ; वाळ्–तलवारें; मिक्कन–अधिक हुईं; तेर्–रथ; परि–अश्व; कुटै–छत्र; कॉटि–पताकाएँ; विरवि–मिलकर; नॅटुम् कर–लम्बी सूँड़ों वाले; पूट्कै–गज; कटल् इटै–समुद्र में; पुक्कन–घुस गये। ८५१

राक्षसों के शरीरों से जो रक्त बहा उसका प्रवाह बना। उस प्रवाह की बड़ी-बड़ी लहरें चक्रायुध, तोमर, मूसल, दण्ड, शक्तियाँ और तलवारें बहा ले गयीं। वे बहुत संख्या में रहीं। उनके साथ रथ, अश्व, छत्र और ध्वजाएँ मिल गयीं। लम्बी सूँड़ वाले गज भी उनके साथ जाकर समुद्र में डूब गये। ८५१

ऑट्टिन विशुम्बिनै यॅऱिपड वॅळुन्द
मुट्टिन मलैहळै मुयङ्गिन तिशैयै
ऑट्टिन वॉन्ऱॅयॊन् ऱूडडित् तुडैन्दु
तट्टुमुट् टाडिन तलैयॊड तलैहळ् 852

तलैकळ–राक्षसों के सिर; ऍऱिपट–फेंके जाकर; ऍऴुन्त–ऊपर उठे; विचुम्पितै ऍट्टिन–आकाश में पहुँचे; मलैकळै मुट्टिन–पर्वतों से टकराये; तिचैयै मुयङ्किन–दिशाओं पर लग गये; ऑन्ऱै ऑन्ऱु–एक-दूसरे से; ऊट्टु अटित्तु–घुसकर गुथकर; उटैन्तु–टूटे और; ऑट्टिन–परस्पर चिपक गये; तलैयॊटु–अन्य सिरों के साथ; तट्टु मुट्टु–कूड़े-करकट; आटिन–वने यत्र-तत्र पड़े रहे। ८५२

राक्षसों के सिर हनुमान द्वारा उछाले जाकर उठे और आकाश मे पहुँच गये। पर्वतों से टकराये। दिशाओं में जा लगे। वीच में एक-दूसरे से खूव दवाए जाकर चिपक गये। अन्य सिरों के साथ मिलकर कूड़े-करकटों के समान तितर-बितर पड़े रहे। ८५२

कानै कावल् वेऴक् कणङ्गळ् कदवा ळरिकॊल्ल
वानै यॆय्दत् तनिये निन्ऱ मदमाल् वरैयॊप्पान्
तेनै पुरैकण् कनले शॊरियच् चीऱ्ऱञ् जॆरुक्किन्ऱान्
तानै यानान् शम्बु मालि कालन् ऱन्नयॊप्पान् 853

कानै कावल्–वन को ही अपनी सुरक्षा का स्थान माननेवाले; वेऴक्कणङ्कळ्–गजयूथों को; कत वाळ् अरि–क्रुद्ध और छविमान सिंह के; कॊल्ल–मारने पर; वानै ऍय्त–वे मरकर स्वर्ग गये; तनिये निन्ऱ–तव जो अकेले खड़ा रहा; मत माल् वरै–उस मत्त बड़े गज; ऑप्पान्–के समान रहा; कालन् तनै–यम की; ऑप्पान्–समता करनेवाला; चम्पुमालि–जम्बुमाली; तानै आनान्–अकेला हो गया; तेनै पुरै कण्–शहद-सम (लाल) आँखें; कनले चॊरिय–आग वरसातीं; चीऱ्ऱम् चॆरुक्किन्ऱान्–गुस्से में बढ़ता जाता। ८५३

वन को ही अपना सुरक्षित स्थान समझनेवाले गजों को एक सिंह ने मार दिया तो वे सव व्योमलोक चले गये। तव एक ही गज वचा और वह एकाकी खड़ा रहा। ऐसे एक गज की स्थिति में यम-सम जम्बुमाली, अकेला होकर वहुत क्रुद्ध हुआ और उसकी शहद के रंग की आँखों से आग ही बरस पड़ी। ८५३

काऱ्ऱिऱ् कडिय कलिनप् पुरवि निरुदर् कळत्तुक्कार्
आऱ्ऱुक् कुरुदि निणत्तो डडुत्त वळ्ळऱ् पॆरुङ्गॊळ्ळैच्
चेऱ्ऱिऱ् चॆल्लात् तेरि नाऴि याऴु निलैतेरा
वीऱ्ऱुच् चॆल्लुम् वॆऴियो विल्लै यऴियन् विरैकिन्ऱान् 854

काऱ्ऱिल् कटिय–वायु से भी अधिक तेज चलनेवाले; कलिन पुरवि–लगाम-लगे अश्वों (के); निरुतर्–राक्षस वीर; कळत्तु उक्कार्–समराजिर में निहत हुए; कुरुति आऱ्ऱु–रक्त-नदी में; निणत्तॊटु अटुत्त–मांस-मज्जे के साथ मिले; अळ्ळल् पॆरुम् कॊळ्ळै–वहुत ही अधिक; चेऱ्ऱिल्–कर्दम में; चॆल्ला–जो चल नहीं सका; तेरिन्–उस रथ के; आऴि–पहिये; आऴुम् निलै तेरा–धँसते रहे, वह स्थिति न जानकर; वीऱ्ऱु चल्लुम् वॆऴियो–अलग जाने का मार्ग भी; इल्लै–नहीं रहा, इसलिए;

अऴियन्–दीन (जम्बुमाली); विरैकिन्ऱान्–सवेग जाता (जाने का प्रयास करता) है। ८५४

वायु से भी अधिक तीव्र गति से चलनेवाले लगाम-लगे अश्वों के वीर खेत रह गये। रक्त-नदी मे मांस-मज्जे के बने गहरे कर्दम में रथ फँस जाता था। आगे नहीं जा सके। उसके पहिये धँसते जाते थे, उस बात को जम्बुमाली नहीं जान सका। दूसरा कोई मार्ग भी नहीं रहा। जम्बुमाली, जो दयनीय स्थिति में रहा, अपने रथ को उस स्थिति में तेज़ चलाए जा रहा था। ८५४

एदि यॊन्ऱाऱ् ऱेरु मः(ह्)दा लॊऴियो रुयिर्हॊडल्
नीदि यन्ऱा लुडन्वन् दोरैक् काक्कुम् निलैयिल्लाय्
शादि यन्ऱे पिऱिदॆन् शॆय्दि यवर्पिन् ऱनिनिन्ऱाय्
पोदि यॆन्ऱान् पूत्त मरम्बोऱ् पुण्णाऱ् पॊलिहिन्ऱान् 855

पूत्त मरम् पोल्–पुष्पित पेड़ के समान; पुण्णाल् पॊलिकिन्ऱान्–व्रणों के साथ शोभायमान (हनुमान) ने; एति ऒन्ऱाल्–हथियार एक ही (तुम्हारे पास) है; तेरुम् अ: तु आल्–रथ भी वही; उटन् वन्तोरै–साथ आये लोगों की; काक्कुम् निलै इल्लाय्–रक्षा करने की स्थिति में नही हो; अवर् पिन् तनि निन्ऱाय्–उनके (मरने के) बाद अकेले बचे हो; ऎऴियोर्–दीनहीनों की; उयिर् कोटल्–जान लेना; नीति अन्ऱाल्–न्याय-सम्मत नहीं है, इसलिए; चाति–(लड़ोगे तो) मरोगे; पिऱितु ऎन् चॆय्ति–फिर क्या करो; पोति–चले जाओ; ऎन्ऱान्–कहा। ८५५

पुष्पित तरु-सदृश व्रणों से शोभित पवनसूनु ने जम्बुमाली को समझाया। तुम्हारे पास एक ही हथियार बचा है। साथ आये वीरों की रक्षा करने की स्थिति में नही रहे। वे चल बसे और तुम एकाकी खड़े रहते हो। दीन-हीनों को मारना न्यायसगत नही होगा। तुम लड़ोगे तो अवश्य मरोगे। फिर क्या करोगे ? जाओ। ८५५

नन्ऱु नन्ऱुन् करुणै यॆन्ना नॆरुप्पु नहनक्कान्
पॊन्ऱु वारि नीरुव नॆन्ऱाय् पोलु मॆन्नॆन्ना
वन्ऱिण् शिलैयिन् वयिरक् कालाल् वडित्तिण् शुडर्वाळि
ऒन्ऱु पत्तु नूऱु नूऱा यिरमु मुदैप्पित्तान् 856

उन् करुणै–तुम्हारी दया; नन्ऱु नन्ऱु–भली रही, भली; ऎन्ना–कहकर; नॆरुप्पु नक–आग प्रकट करते हुए; नक्कान्–हँसा (जम्बुमाली); ऎन्नै–मुझे; पॊन्ऱुवारिन् ऒरुवन्–मरनेवालों में एक; ऎन्ऱाय् पोलुम्–एक कहते (गिनते) हो क्या; ऎन्ना–कहकर; वन् तिण्–बड़े और कठोर; चिलैयिन् वयिर कालाल्–धनु के वज्र-सम पैरों द्वारा; वटि तिण् चुटर् वाळि–तेज, कठोर और ज्वलन्त शर; ऒन्ऱु–एक-एक; पत्तु–दहाई में; नूऱु–सैकड़ों और; नूऱायिरमुम्–लाखों में; उतैप्पित्तान्–ठुकवाया (तमिऴ में धनुओं के "पैरों से ठुकवाना" मुहावरा है।)। ८५६

जम्बुमाली ने उत्तर में कहा कि तुम्हारी करुणा भी अच्छी है ! अच्छी ! वह आग निकालते हुए हँसा। उसने कहा कि क्या तुमने मुझे मरनेवालों में एक समझ रखा है ? यह कहकर उसने अपने सशक्त कठोर धनु से तेज़ और ज्वलन्त शरों को एक में, दशक मे, शतक में, सहस्रों के दल में और लाखों के दलों मे चलाया। (धनु के पैरों द्वारा ठुकवाया —यह तमिऴ का अनूठा चित्र है। इधर पैर धनु के दोनों वाज़ू है।)। ८५६

शॅय्दि शॅय्दि शिलैहैक् कॊण्डाल् वॆरुङ्गै तिरिवोरै
नॊय्दिन् वॆल्व दरिदो वॆन्ऩा मुरुव लुरनक्काऩ्
अय्य नङ्गु मिङ्गुङ् गाला लळियु मळैयॆन्ऩ
ऎय्द वॆय्द पहळि यॆल्ला मॆळुवाल् वळुवित्ताऩ् 857

अय्यन्-श्रेष्ठ हनुमान; चिलै कै कॊण्टाल्-धनु हाथ में लोगे तो; वॆरुम् कै तिरिवोरै-खाली हाथ फिरनेवालों को; नॊय्तिन् वॆल्वतु-आसानी से जीतना; अरितो-कठिन होगा क्या; चॆय्ति चॆय्ति-करो, करो; ऎन्ऩा-कहकर; मुरुवल् उऱ-दांत प्रकट करते हुए; नक्काऩ्-हँसा; ऎय्त ऎय्त-प्रेषित होते-होते; पकळि ऎल्लाम्-सभी शरों को; कालाल्-पवन द्वारा; अळियुम् मळै ऎन्ऩ-बिखेरे जानेवाले मेघों के समान; ऎळुवाल्-लौहदण्ड से; अङ्कुम् इङ्कुम्-इधर-उधर; वळुवित्ताऩ्-(निशाना) चूककर छितर जाने दिया। ८५७

महिमावान हनुमान ने व्यंग्य किया। धनु हाथ में लो और निरायुध फिरनेवाले पर जीत पाओ, सुगमता से ! क्या यह कोई कठिन काम है ? करो, करो ! फिर वह दाँत प्रकट करते हुए हँसा। जम्बुमाली ने जितने ही शर चलाए उन सबको उसने पवन से छितरायी जाकर बेकार होनेवाली वर्षा की धाराओं के समान अपने लौहदण्ड से तितर-बितर करके इधर-उधर डाल दिया। ८५७

मुऱ्ऱ मुनिन्द निरुदऩ् मुऩिया मुऩ्ऩुम् बिऩ्ऩुञ्जॆऩ्
ऱुऱ्ऱ पहळि युरादु मुऱिया वुदिर्हिऩ् ऱदॆयुऩ्ऩाच्
चुऱ्ऱु नॆडुन्दे रोट्टित् तॊडर्न्दाऩ् ऱॊडरुन् दुऱैहाणाऩ्
वॆऱ्ऱि यॆळुवैप् पिऱैवा यम्बा लऱुत्तु वीळ्त्तिनाऩ् 858

मुऱ्ऱ मुनिन्त-निपट क्रुद्ध; निरुतऩ्-राक्षस; मुऩिया-और भी गुस्सा करके; मुऩ्ऩुम् पिऩ्ऩुम्-सामने और पीछे; चॆऩ्ऱु उऱ्ऱ-जा जो लगे; पकळि-वे शर; उरातु-हनुमान पर न लगकर; मुऱिया-टूटकर; उतिर्किऩ्ऱतै-चू जाते हैं, उसको; उऩ्ऩा-सोचकर; चुऱ्ऱु-हनुमान के चारों ओर घूमकर; नॆटुम् तेर् ओट्टि-बड़े रथ को चलाते हुए; तॊटर्न्ताऩ्-पास गया; तॊटरुम् तुऱै-(बिल्कुल) पास जाने का मार्ग; काणाऩ्-न देखकर; वॆऱ्ऱि ऎळुवै-विजय दिलाते रहे लौहदण्ड को; पिऱैवाय् अम्पाल्-अर्द्धचन्द्र वाण से; अऱुत्तु-काटकर; वीळ्त्तिऩाऩ्-गिरा दिया। ८५८

जम्बुमाली पहले ही सम्पूर्ण रूप से क्रुद्ध था। अब वह और भी अधिक कोपाक्रान्त हुआ। उसने देखा कि वह जो शर हनुमान के चारों ओर, आगे, पीछे और पार्श्वों में भेज रहा है, वे सब हनुमान पर नहीं लगते वरन् टूटकर बिखर जाते हैं। अपने रथ को उसके पास पहुँचाना चाहा पर रास्ता नहीं मिला। उसने एक अर्द्धचन्द्र बाण से विजय दिलाते रहे उस लौहदण्ड को खण्ड-खण्ड बनाकर गिरा दिया। ८५८

शलित्ता तैयन् कैया लॅय्युञ् जरत्तै युहच्चाडि
ऑलित्ता नमरर् कण्डा रार्प्पत् तेरि नुट्पुक्कुक्
कलित्तान् शिलैयैक् कैयाल् वाङ्गिक् कळुत्ति निडैयिट्टु
वलित्तान् पहुवाय् मडित्तु मलैपोर् ट्रलैमण् णिडैवीळ 859

ऐयन्–सम्मानित महावीर ने; ॲय्युम् चरत्तै–प्रेरित शरों को; कैयाल्–हाथों से; उक–गिराते हुए; चाटि–पीटकर; चलित्तान्–ऊबकर; अमरर् कण्टु आर्प्प–देवों के देखकर सन्तोष-रव करते; ऑलित्तान्–नारे लगाते हुए; कलित्तान्–गर्वीले; तेरितुळ् पुक्कु–(राक्षस के) रथ में घुसकर; चिलैयै–धनु को; कैयाल् वाङ्कि–अपने हाथ से छीन लेकर; पकुवाय् मटित्तु–बड़े अधर मोड़कर; मलै पोल् तलै–पर्वताकार सिर को; मण्णिन् इटै वीळ–भूमि पर गिराते हुए; कळुत्तिन् इटै यिट्टु–गले में डालकर; वलित्तान्–खींचा। ८५९

श्रेष्ठ हनुमान आनेवाले शरों को हाथों से रोककर उन्हें मारते-मारते ऊब उठा। इसलिए उसने एक ऐसा गम्भीर नारा लगाया, जिसको सुनकर अमरगण आनन्द ध्वनि कर उठे। वह गर्वीले जम्बुमाली के रथ में उछलकर घुसा। उसने उसके धनु को अपने हाथ से पकड़कर छीना और उसे उसके गले में डालकर खीचा कि उसका बड़ा खुला मुख बन्द हुआ और उसका पर्वत-सदृश मस्तक धरती पर लोट गया। ८५९

कुदित्तुत् तेरुङ् गोल्हॉ ळाळुम् बरियुङ् गुळम्बाह
मिदित्तुप् पॅयर्न्दु नॅडुन्दो रणत्तै वीरन् मेर्कोण्डान्
कदित्तुप् पळिन्दु कळिन्दार् पॅरुमै कण्डु कळत्तञ्जि
उदित्तुप् पुलर्न्द तोल्वो लुरुवत् तमर रोडिनराल् 860

वीरन्–महावीर; कुतित्तु–नीचे कूदकर; तेरुम्–रथ और; कोल् कॉळ् आळुम्–वेत्रधारी सारथी; परियुम्–और अश्वो को; कुळम्पाक–कर्दम बनाते हुए; मितित्तु–रौंदकर; पॅयर्नतु–वहाँ से हटकर; नॅट्टुम् तोरणत्तै–ऊँचे तोरण; मेर् कॉण्टान्–पर चढ़ बैठा; अमरर्–(अशोकवन-पाल) ऋतुदेव; कति तुप्पु–चलने की शक्ति; अळिन्तु–खोकर; पॅरुमै कण्टु–हनुमान का प्रताप देखकर; कळत्तु–समराजिर से; अञ्चि कळिन्तार्–डरकर जो हटे; उतित्तुप् पुलर्नत–मोटा बनकर जो सूख गया हो; तोल् पोल् उरुवत्तु–उस चमड़े के समान शरीर के होकर; ओटितर्–भागे। ८६०

महावीर उस रथ से नीचे कूदा। उसने रथ को, वेत्रधारी सारथी को और अश्वों को रौदकर कीच बना दी। फिर वहाँ से गया और तोरण-द्वार पर चढ़ बैठ गया। अशोकवनपालक ऋतुदेवता यह देखकर अपनी चलने की शक्ति ही खो गये। हनुमान का पराक्रम देखकर वे डरकर वहाँ से भाग निकले। फूलकर सूखी खाल के समान आकार के वे दौड़े। ८६०

पिरिन्दु पुलम्बु मह्ळिर् काणक् कणवर् पिणम्वऱ्ऱि
विरिन्द कुरुदिप् पेरा ऱीर्त्तु मनैह डॉरुम्वीश
इरिन्द दिलङ्गै यॆऴुन्द दऴुहै यिन्ऱिङ् गिवनाले
चरिन्द दरक्कर् वलियॆन् ऱॆण्णि यऱमुन् दळिर्त्तदाल् 861

विरिन्त–फैले हुए; कुरुति–रक्त की; पेर् आऱु–बड़ी नदी ने; पिरिन्तु पुलम्पुम्–वियुक्त होकर विलपनेवाली; मकळिर् काण–(राक्षस-) स्त्रियाँ देख लें, ऐसा; कणवर् पिणम् पऱ्ऱि–उनके पतियों के शवों को पकड़; ईर्त्तु–खींचकर; मनैकळ् तॊऱुम्–घर-घर में; वीच–फेंक दिया तो; इलङ्कै–लंका नगर (वासी); इरिन्ततु–अस्त-व्यस्त (हुए); अऴुकै ऍऴुन्ततु–रुदन-स्वर उठा; इन्ऱु–अब; इङ्कु–यहाँ; इवनाले–इससे; अरक्कर् वलि–राक्षसों का बल; चरिन्ततु–लट गया; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; अऱमुम् तळिर्त्ततु–धर्म भी लहलहा उठा। ८६१

फैला रक्त-प्रवाह वड़ी नदी के रूप में वहा। उसने विरह में विलाप करनेवाली राक्षसियों के प्रत्यक्ष देखने के लिए उनके पतियों के शवों को खीच लेकर घर-घर पहुँचा दिया। यह देखकर लका अस्त-व्यस्त हो गयी। सर्वत्र रुदन का स्वर उठा। धर्म ने सोचा कि अब मारुति इस लंका में राक्षसों का बल ढहा दिया। वह लहलहा उठा। ८६१

पुक्का रमरर् पॊलन्दा ररक्कन् पॊरुविल् पॆरुङ्गोयिल्
विक्का निन्ऱार् विळम्ब लाऱ्ऱार् वॆरुवि विम्मुवार्
नक्का नरक्क नडुङ्ग लॆन्ऱा नैया नमरॆलाम्
उक्कार् शम्बु मालि युलन्दा नॊन्ऱे कुरङ्गॆन्ऱार् 862

पॊलन् तार् अरक्कन्–स्वर्णहारालंकृत राक्षस (रावण) के; पॊरुवु इल्–अनुपम; पॆरुम् कोयिल्–वड़े महल में; अमरर् पुक्कार्–देव पहुँचे; विक्का निन्ऱार्–सुवकते खड़े रहे; विळम्पल् आऱ्ऱार्–वोल नहीं सके; वॆरुवि–डरकर; विम्मुवार्–तरसे; अरक्कन्–राक्षस; नक्कान्–हँसा; नटुङ्कल् ऍन्ऱान्–मत डरो, कहा; ऐया–प्रभु; नमर् ऍलाम्–हमारे सभी; उक्कार्–मर गये; चम्पुमाली–जम्बुमाली; उलन्तान्–मिट गया; ऒन्ऱे कुरङ्कु–एक ही वानर है; ऍन्ऱार्–कहा (उन्होंने)। ८६२

वे ऋतुदेवता स्वर्णहारधारी राक्षस के अनुपम और वड़े महल में गये। वहाँ सुवकते खड़े रहे। बोलने की शक्ति भी जाती रही। डर से भरे रहे। राक्षस हँसा। मत डरो, कहकर उसने धैर्य वँधाया। तव

उन्होंने कहा कि हमारे सब निहत हो गये। जम्बुमाली भी मर गया। आखिर वानर एक ही है! । ८६२

ऍन्नु मळवि ऍरिन्दु वीङ्गि यॅळुन्द वॅहुळियान्
उन्न वुन्न वुदिरक् कुमिळि विळियू डुमिळ्हिन्ऱान्
शॉन्न कुरङ्गै याने पिडिप्पेन् कडिदु तॉडर्न्दॅन्ऱान्
अन्न दुणर्न्द शेनैत् तलैव रैव रऱिवित्तार् 863

ऍन्नुम् अळविल्–यह कहने मात्र से; ऍरिन्तु–जलकर; वीङ्कि ऍळुन्त–बढ़कर जो उठा; वॅकुळियान्–उस कोप के राक्षस ने; उन्न उन्न–ज्यों-ज्यों स्मरण करता; विळियूटु–दृष्टि के साथ; उतिर कुमुळि–रक्त के बुलबुले; उमिळ्किन्ऱान्–निकालता; चॊन्न कुरङ्कै–तुम्हारे उक्त मर्कट को; यान्–मैं ही; कटितु तॊटर्न्तु–शीघ्र जाकर; पिटिप्पॅन्–पकड़ूँगा; ऍन्ऱान्–कहा; अन्नतु उणर्न्त–उसे सुनकर; चेनै तलैवर् ऐवर्–पंच सेनापतियों ने; अऱिवित्तार्–समझाया। ८६३

ज्योंही उन्होंने यह बात सुनायी, त्योंही रावण कोपाक्रांत हुआ। कोप जलते हुए बढ़ उठा। ज्यों-ज्यों जम्बुमाली के मरण की बात सोचता, त्यों-त्यों उसकी आँखों से रक्त के बुलबुले छूटते। उसने कहा कि मैं ही शीघ्र जाऊँगा और तुम्हारे उक्त वानर को पकड़ूँगा। पंच सेनापतियों ने उसे सुना तो वे उसे समझाने लगे। ८६३

9. पञ्ज शेनापतिहळ् वदैप् पडलम् (पंच सेनापति-वध पटल)

शिलन्दि युण्बदोर् कुरङ्गिन्मेऱ् चेऱियेऱ् ऱिऱलोय्
कलन्द पोरिनिन् कट्पुलक् कडुङ्गनल् कदुव
उलन्द माल्वरै यरुविया ऱॊळुक्कऱ्ऱ वॊक्कप्
पुलर्न्द मामदम् बूक्कुमन् ऱॆदिशैप् पूट्कै 864

तिऱलोय्–शक्तिमन्त; चिलन्ति उण्पतु–मकड़ी (पकड़कर) खानेवाले; ओर् कुरङ्किन् मेल्–एक वानर पर; चेऱियेल्–चढ़ने जाएँगे तो; कलन्त पोरिल्–आपसे हुए युद्ध में; निन् कण् पुलम्–आपकी आँख की इन्द्रिय से निकली; कटुम् कनल्–घोर आग के; कतुव–जलने से; उलन्त माल् वरै–जो सुख गया उस उन्नत बड़े पर्वत में; अरुवि आऱु–बहती नदी के; ऒळुक्कु अऱ्ऱु ऒक्क–बहाव के सूख जाने के समान; तिचै पूट्कै–दिग्गजों का; पुलर्न्त मा मतम्–सूखा बड़ा मद; पूक्कुम् अन्ऱे–फिर से ताजा हो जायगा न। ८६४

(उन सेनापतियों ने कहा—) शक्तिमंत! अगर आप मकड़ी खानेवाले एक वानर पर चढ़ जाएँगे, तो दिग्गजों का मद फिर से ताज़ा होकर बहने नहीं लगेगा? अभी यह गरमी में बड़े पर्वतों पर की नदी-जैसे सूखा हुआ है। वह तब सूखा था, जब आपके साथ हुए युद्ध में आपकी आँखों से निकली आग उन पर पड़ी थी। ८६४

इलङ्गु वॆंजिनत् तम्जिऱै यॆरुळ्वलिक् कलुळऩ्
उलङ्गिन् मेलॆंळुन् दॆन्ननी कुरङ्गिन्मे लुरुक्किन्
अलङ्गत् मालैनिऩ् पुयनिऩैन् दल्लुनन् बहलुम्
कुलुङ्गुम् वन्ऱुयर् नीङ्गुमाल् वॆळ्ळियङ् गुऩ्ऱम् 865

इलङ्कु–विद्यमान; वॆम् चिततु–कठोर कोप वाला; अम् चिऱै–सुन्दर पंखों वाला; अॆरुळ् वलि कलुळऩ्–अतिबलशाली गरुड़; उलङ्किन् मेल्–मच्छर पर; अॆळुन्तु अॆऩ्ऩ–चढ़ आया जैसा; नी–आप; कुरङ्किन् मेल्–वानर पर; उरुक्किन्–शत्रुता करके जाएँगे तो; वॆळ्ळि अम् कुऩ्ऱम्–चाँदी का सुन्दर पर्वत (कैलास); अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली माला के; निन् पुयम् निऩैन्तु–तुम्हारी भुजाओं का स्मरण करके; अल्लुम् नल् पकलुम्–रात और अच्छे दिन में भी; कुलुङ्कुम् वन् तुयर्–कँपानेवाले कठोर दुःख से; नीङ्कुम्–मुक्त हो जायगा न। ८६५

भयंकर कोप और मनोरम पंखों के साथ शोभनेवाला अति बली गरुड़ एक मच्छर पर चढ़ जाता जैसे आप एक वानर से युद्ध करने जायँ, तो चाँदी का मनोरम पर्वत (कैलास) कँपानेवाले भय के कष्ट से विमुक्त हो जायगा! अब वह आपके हिलनेवाली मालाओं से अलंकृत कन्धों के बल का स्मरण करके रात और दिन काँपता रहता है! । ८६५

उरुव दॆन्गॊलो वुरनळि वॆन्बदॊऩ् ऱुडैयार्
पॆरुव दियादॊन्ऱुङ् गाण्गिलर् केट्किलर् पॆयर्न्दार्
शिऱुमै यीदॊप्प दियादुनी कुरङ्गिन्मेऱ् चॆल्लिन्
मुरुवल् पूक्कुमन् ऱेनिन्ऱ मूवर्क्कु मुहङ्गळ् 866

नी–आप; कुरङ्किन् मेल्–वानर के विरुद्ध; चॆल्लिन्–लड़ने जाएँगे तो; उरुवतु अॆन् कॊलो–मिलनेवाला क्या है; चिऱुमै ईतु–लघुता के इस काम की; ओप्पतु यातु–समानता करनेवाला क्या काम है; उरन् अळिवु अॆन्पतु–बल मिट जायगा, यह; ओन्ऱु उटैयार्–(निश्चय) रखनेवाले (त्रिमूर्ति); पॆरुवतु यातॊन्ऱुम् काण्किलर्–प्राप्त करना कुछ न देखकर; केट्किलर्–सुनकर; पॆयर्न्तार्–(विना युद्ध किये ही) हट गये; निऩ्ऱ मूवर्क्कुम्–वैसे हटकर खड़े हुए त्रिदेवों के; मुकङ्कळ्–मुख; मुरुवल् पूक्कुम् अन्ऱे–हास के साथ फूल उठेंगे न। ८६६

आपके, बन्दर के विरुद्ध लड़ने जाने में क्या गौरव होगा? (उसके विपरीत) इसके समान लघुता का काम क्या है? स्वयं त्रिदेवों ने आप से लड़ने में अपने बल की हानि के सिवा कुछ नहीं देखी, न सुनी; और वे समर से हट गये। अब क्या उनके मुख हास के साथ खिल नहीं जाएँगे? । ८६६

अन्ऱि युम्मुतक् काळिन्मै तोन्ऱुमा लरश
वॆन्ऱि यिल्लवर् मॆल्लियोर् तमैच्चॆल विटटाय्

नऩ्ऱि यिऩ्ऱॊऩ्ऱु काण्डियेल् ॲमैच्चॆल नयत्ति
ॲऩ्ऱु कैतॊऴु दिरैञ्जिऩ ररक्कनु मिशैन्दाऩ् 867

अरच–राजा; अऩ्ऱियुम्–इसके सिवा; उत्तक्कु–आपके; आळ् इऩ्मै–सेवकों का अभाव; तोऩ्ऱुम्–प्रकट होगा; वॆऩ्ऱि इल्लवर्–जो विजय नहीं पा सके उन्हें और; मॆल्लियोर् तमै–निर्बलों को; चॆल विट्टाय्–जाने दिया; इऩ्ऱु–आज; ऑऩ्ऱु नऩ्ऱि–एक अच्छा कार्य; काण्टियेल्–देखना चाहो तो; ॲमै चॆल–हमें भेजना; नयत्ति–चाहो; ॲऩ्ऱु–कहकर; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; इऱैञ्चितर्–विनय की; अरक्कतुम् इचैन्ताऩ्–राक्षस भी सम्मत हुआ। ८६७

राजन्! और भी एक बात है। आपके स्वयं चढ़ जाने से ऐसा प्रगट होगा कि आपके और कोई सेवक या कर्मचारी नहीं है। आपने अब तक उन्हीं लोगों को भेजा है, जो विजय पाने में असमर्थ थे या निर्बल थे। अगर आप एक अच्छा कार्य देखना चाहते हों तो हमें भेजने की चाह कीजिए। सेनापतियों ने यह कहकर हाथ जोड़े और विनय की। राक्षस भी सम्मत हुआ। ८६७

उलह मूऩ्ऱैयु मॊरुङ्गुपॆऱ् ऱारॆन वुवन्दार्
तिलह मण्णुऱ वणङ्गिऩर् कोयिलैत् तीर्न्दार्
अलहि ऱेर्परि करियॊडु मिडैन्दपो ररक्कर्
तॊलैवि ऱानैयैक् कदुमॆऩ वरुहॆऩच् चॊऩ्ऩार् 868

उलकम् मूऩ्ऱैयुम्–तीनों लोकों को; ऑरुङ्कु पॆऱ्ऱार्–एक साथ पा लिया हो; ॲऩ उवन्तार्–जैसा हर्षित हुए; तिलकम्–भाल का तिलक; मण् उऱ–भूमि पर पड़े, ऐसा; वणङ्किऩर्–नमस्कार किया; कोयिलै तीर्न्तार्–महल छोड़ निकले; अलकु इल्–असंख्यक; तेर्–रथ; परि–अश्व; करि ऑटु–गजों के साथ; मिटैन्त पोर् अरक्कर्–इकट्ठे आये योद्धा वीर; तॊलैवु इल्–(इनकी) अक्षय; तानैयै–सेना को; कतुम् ॲऩ–'शीघ्र'; वरुकॆऩ–आओ; चॊऩ्ऩार्–कहा। ८६८

उन्हें इतना अपार हर्ष हुआ, मानो तीनों लोकों को एक साथ पा गये हों। भाल का तिलक भूमि पर लगे, ऐसा दण्डवत करके वे महल से बाहर आये। उन्होंने आज्ञा निकाली कि असंख्यक रथों, अश्वों, गजों और पदाति वीरों की सेनाएँ शीघ्र आ जाएँ। ८६८

आनै मेऩ्मुर शऱैन्दऩर् वळ्ळुव रळैत्तार्
पेऩ वेलैयिऩ् पुडैपरन् ददुपॆरुञ् जेऩै
शोऩ मामऴै मुहिलॆऩप् पोर्प्पणै तुवैप्प
मीऩ वानिडै मिऩ्ऩॆऩप् पडैक्कल मिडैन्द 869

वळ्ळुवर्–'वळ्ळुव' लोगों ने; आनै मेल्–गजों पर से; मुरचु अऱैन्तऩर्–ढिंढोरा पीटकर; अऴैत्तार्–आमन्त्रित किया; पॆरुम् चेऩै–बड़ी सेना; पेऩ वेलैयिऩ्–फेन-सहित सागर के समान; पुटै परन्ततु–सब ओर फैली; चोऩ मा मऴै–निरन्तर

वरसनेवाली वर्षा के; मुकिलॅत–मेघों के समान; पोर् पणै–युद्धभेरियाँ; तुवैप्प–ठनकीं; मीन्न वान्निटै–नक्षत्र-भरे आकाश की; मिन् ॲन्न–विजली के समान; पटैक्कलम्–हथियार; मिटैन्त–जुटे । ८६६

वळ्ळुवर (ढिंढोरा पीटनेवाली एक जाति) लोगों ने गज पर ढोल चढ़ाकर मुनादी पिटवा दी। बड़ी सेना फेन-सहित सागर के समान उठ आयी। चारों ओर फैली। निरन्तर बरसनेवाली वर्षा के मेघों के समान मारू ढोल वज उठे। नक्षत्र-भरे आकाश में विजलियों के समान युद्धायुध जुट आये। ८६९

तानै माक्कॉडि मऴैपॉदुत् तुयर्नॅडुन् दाळ
मान्न मार्ररु मारुदि मुन्नियना ळुलन्दु
पोन्न मार्रलर् पुहऴॅन्नक् काल्पॉरप् पुरण्ड
वान्न यार्ऱुवॅण् डिरैयॅन्न वरम्बिल परन्द 870

मऴै पॉतुत्तु–मेघों को छेदकर; उयर् नॅटुम्–ऊपर चलनेवाले लम्बे; ताळ–पैर वाले; वान्न यार्ऱु–आकाशगंगा की; वॅळ् तिरै ॲन्न–श्वेत तरंगों के समान; वरम्पु इल–निस्सीम; परन्त–फैले रहे; तानै मा कॉटि–उस सेना के बड़े-बड़े झण्डे; मार्ऱु अरु–अप्रतिहत; मान्न मारुति–आदरणीय मारुति; मुन्निय–कोप (करके युद्ध) करने पर; नाळ् उलन्तु पोन्न–जिनकी आयु सूख गयी; मार्रलर्–उन शत्रुओं के; पुकऴ् ॲन्न–यश के समान; काल् पॉर–हवा के हिलाने से; पुरण्ट–हिले । ८७०

अनेक श्वेत ध्वजाएँ, हवा में अप्रतिहत मारुति के कोप के सामने जिनकी आयु सूख गयी, उन शत्रुओं के यश के समान हिल रही थीं। उनके खभे मेघ को छेदकर ऊपर गये थे। वे आकाशगंगा की लहरों की तरह श्वेतवर्ण थी। ८७०

विरवु पॉर्कऴल् विशित्तनर् वॅरिनुर विळङ्गच्
चरमों डुक्कित्न पुट्टिलुज् जात्तिनर् शमैयक्
करुवि पुक्कन ररक्कर्माप् पल्लणङ् गवित्नप्
पुरवि यिट्टतेर् पूट्टिन्न परुमित्त पूटकै 871

अरक्कर्–राक्षसों ने; विरवु पॉन् कऴल्–स्वर्णमय पायलें; विचित्ततनर्–बाँध लीं; चरम् ऑट्टुक्कित्न–शरनिलय; पुट्टिलुम्–तूणीर भी; वॅरिन् उऱ–पीठ पर लगाये; विळङ्क–सुन्दर लगें, ऐसा; चात्तितर्–धारण कर लिया; चमैय–खूब युक्त हो, ऐसा; करुवि पुक्कनर्–कवच पहन लिया; पुरवि–अश्व; मा पल्लणम्–वड़ी-वड़ी जीनें; कवित्न–फवती रीति से; इट्ट–पहनाये गये; तेर् पूट्टिन्न–रथ जुड़े गये; पूट्कै–गज; परुमित्त–अलंकृत किये गये । ८७१

राक्षसों ने स्वर्णमय पायलें बाँध लीं। शराश्रय तूणीरों को पीठ को शोभित करते हुए पहन लिया। खूव युक्त रीति से कवच धारण कर लिये। अश्वों पर जीनें कसी। रथ जुते और गज अलंकृत हुए। ८७१

आरु शॅय्दन वार्नैयिन् मदङ्गळव् वाऱ्ऱैच्
चेरु शॅय्दन तेर्हळिन् शिल्लियच् चेऱ्ऱै
नीरु शॅय्दन पुरवियिन् कुरमऱ्ऱन् नीऱ्ऱै
वीरु शॅय्दन वप्परिक् कलिनवाय् विलाळि 872

आर्नैयिन् मतङ्कळ्–गजमद ने; आरु चॅय्तन–नदियाँ बनायी; अ आऱ्ऱै–उन नदियों को; तेर्कळिन् चिल्लि–रथों के पहियों ने; चेरु चॅय्तन–कर्दम बना दिया; अ चेऱ्ऱै–उस कीच को; पुरवियिन् कुरम्–अश्वों के खुरों ने; नीरु चॅय्तन–धूल बना दिया; अ नीऱ्ऱै–उस बुकनी को; अ परि–उन अश्वों के; कलिन वाय्–लगाम वाले मुख (निःसृत); विलाळि–लार ने; वीरु चॅय्तन–फिर फाड़ दिया। ८७२

गजमद नदी बना। उस नदी को रथों के चक्रों ने पंक बना दिया। उस पंक को अश्वों के खुरों ने धूल में परिवर्तित कर दिया। उस धूल को फिर से अश्वों के मुखों की लार और झाग ने सूखा पंक बना दिया, जिसमें दरारें पड़ी रहीं। ८७२

वळङ्गु तेर्हळि लिडिपपॉडु वाशियि नार्प्पुम्
मुळङ्गु वॅङ्गळिऱ् ऱदिर्च्चियु मॉय्हळ् ऑलियुम्
तळङ्गु पल्लियत्त मलैयुङ् गडैयुहत् ताळि
मुळङ्गु मोदैयिन् मुम्मडङ् गॅळुन्ददु मुडुहि 873

वळङ्कु तेर्कळिन्–चलनेवाले रथों के; इटिप्पु ओटु–शब्द के साथ; वाचियिन् आर्प्पुम्–अश्वों का हिनहिनाना; मुळङ्कु–चिंघाड़नेवाले; वॅम् कळिऱ्ऱु–भयंकर गजों की; अतिर्च्चियुम्–ध्वनियाँ; मॉय् कळल् ऑलियुम्–घनी पायलों की ध्वनियाँ और; तळङ्कु–बजनेवाले; पल् इयत्तु–विविध वाद्यों का; अमलैयुम्–स्वर सब; कटै उकत्तु–युगान्त के; आळि मुळङ्कुम्–सागर के गर्जन के; ओतैयिन्–नाद से; मुम् मटङ्कु–तिगुने; मुटुकि–जोर से; ऍळुन्तत्तु–उठे। ८७३

रथों की घरघराहट, अश्वों का हिनहिनाना, भयंकर गजों की चिंघाड़, वीरों की पायलों का क्वणन और अनेक बाजों का नाद, सब मिलकर युगांत-सागर-गर्जन-ध्वनि के तिगुने जोर से उठे। ८७३

आळित् तेर्त्तॉहै यॆम्बदि नायिर मः(ह्)दे
शूळिप् पूट्कैक्कुन् दॉहैयवऱ् ड्रिरट्टियिन् ऱॉहैय
ऊळिक् काऱ्ऱनन्न पुरविमऱ् ऱवर्ऱिनुक् किरट्टि
पाळित् तोण्डुम् बडैक्कलप् पदादियिन् पहुदि 874

आळि तेर् तॉकै–पहियेदार रथों की संख्या; ऐम्पतिनायिरम्–पचास सहस्र; चूळि पूट्कैक्कुम्–मुखपट्टालंकृत गजों की भी; तॉकै–संख्या; अ·ते–वही; ऊळि काऱ्ऱु अनन्न–प्रलय-पवन के समान; पुरवि–अश्व; अवर्ऱिन् इरट्टि तॉकैय–उनकी दुगुनी संख्या के; पाळि तोळ्–सबल कन्धों और; नॆटुम् पटै कलम्–बड़े-बड़े हथियारों

वाले; पत्तातियिऩ् पकुति–पदाति वीरों की संख्या; अवऱ्ऱिऩुक्कु–उनकी; इरट्टि–दुगुनी । ८७४

चक्ररथों की संख्या पचास हज़ार थी। मुखपट्टालंकृत गजों की सख्या भी वही। प्रलयपवन-सरीखे अश्वों की संख्या उसकी दुगुनी थी। स्थूल-स्कन्ध और बड़े हथियारों से युक्त पदाति वीरों की संख्या उनकी सम्मिलित संख्या की दुगुनी थी। ८७४

कूय्त्त रुत्तोऱुन् दरुन्दोऱुन् दानैवॆङ् गुऴुविन्
नीत्तम् वन्दुवन् दियङ्गिडु मिडनिन्ऱि नॆरुङ्गक्
काय्त्त मैन्दवॆङ् गदिर्प्पडै यॊन्ऱॊन्ऱु कदुवित्
तेय्त्तॆ ऴुन्दन पॊऱिक्कुल मऴैक्कुलन् दीय्प्प 875

कूय् तरुम् तोऱुम् तरुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों टेर लगती, त्यों-त्यों; वॆम् तानै कुऴुविऩ् नीत्तम्–(आ जुटनेवाली) भयंकर सेना के दलों की बढ़ती; वन्तु वन्तु–उत्तरोत्तर हुई; इयङ्कुम् इटऩ् इऩ्ऱि–संचार करने का स्थान नहीं पाकर; नॆरुङ्क–सटी खड़ी रही; काय्त्तु अमैन्त–भट्ठी में गरम कर बनाए गये; वॆम् कतिर् पटै–भयंकर ज्वालामयी हथियारों के ढेर; ऒऩ्ऱु ऒऩ्ऱु कतुवि–एक-दूसरे से रगड़कर; तेय्त्तु–घिसाकर; पॊऱि कुलम्–अग्निकणों की राशियाँ; मऴै कुलम् तीय्प्प–मेघराशियों को जलाने (सोखने); ऎऴुन्तत–ऊपर उठ चले। ८७५

ज्यो-ज्यों टेर हुई (बुलावा हुआ), त्यों-त्यो सेना उत्तरोत्तर उठ आयी। बड़ी भीड़ लग गयी और संचार का स्थान ही नहीं रहा। भट्ठी पर तपाकर बनाए गये और भयंकर ज्वालाएँ निकालनेवाले हथियारों ने आपस में ऐसी रगड़ खायी कि अगारे छूटे और मेघों को जला-सुखा देंगे जैसे ऊपर उठ गये। ८७५

पण्म णिक्कुल यानैयिऩ् पुडैदोऱुम् बरन्द
ऒण्म णिक्कुल मऴैयिडै युरुमॆन्न वॊलिप्पक्
कण्म णिक्कुलङ् गनलॆनक् कान्दुव कदुप्पिन्
तण्म णिक्कुलम् मऴैयॆऴुङ् गदिरॆनत् तऴैप्प 876

पण्–सजाए हुए; कुल मणि यानैयिऩ्–श्रेष्ठ जाति के सुन्दर गजों के; पुटै तोऱुम्–पार्श्वों में; परन्त–फैले दिखे; ऒळ् मणि कुलम्–प्रभापूर्ण रत्नों की राशियाँ; मऴै इटै–मेघ-मध्य; उरुम् ऎन्न–वज्र के समान; ऒलिप्प–शब्द करते रहे; कण् मणि कुलम्–आँखों की पुतलियों की राशियाँ; कनल् ऎन्न–आग के समान; कान्तुव–ज्वलन्त रहीं; कतुप्पिऩ्–गालों पर के; तण् मणि कुलम्–शीतल मोतियों की राशियाँ; मऴै ऎऴुम्–मेघ-निर्गत; कतिर् ऎन्न–चन्द्र के समान; तऴैप्प–भरे शोभे। ८७६

गज श्रेष्ठ जाति के थे और वे खूब सजाये गये थे। उनके बाजुओं में रत्नों ने मेघों की-सी ध्वनि निकाली। उनकी आँखों से आग के ही

समान प्रकाश छूट रहा था। गालों पर शीतल मोती थे और वे मेघनिर्गत चन्द्र की-सी रोशनी फैला रहे थे। ८७६

तॉक्क दाम्बडै शुरिकुऴल् मडन्दैयर् तॉडिक्कै
मक्क डायर्मऱ् ऱियावरुन् दडुत्तनर् मरुहि
ऑक्क वेहुदु मॅन्ऱनर् कुरङ्गिन्मुन् नॊरुवर्
पुक्कु मीण्डिल रॆन्ऱुऴ़ दिरङ्गिनर् पुलम्बि 877

तॉक्कतु आम् पटै–जुटी उस सेना के वीरों को; चुरि कुऴल्–घुँघराले केश वाली; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; तॊटि कै मक्कळ्–'तॊडि' नाम के कंकण पहनी हुई बेटियाँ; तायर्–माताएँ; मऱ्ऱु–और अन्य; यावरुम्–सभी ने; मरुकि–व्याकुल होकर; कुरङ्किन् मुन्–उस वानर के समक्ष; ऒरुवर् पुक्कु मीण्टिलर्–एक भी जाकर लौट नहीं आया; ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; पुलम्पि अऴुतु–प्रलाप करती रोयीं; इरङ्कितर्–दुःखी होकर; ऑक्क एकुतुम्–साथ जायँगे; ऍन्ऱनर्–कहकर; तटुत्तनर्–रोका। ८७७

जो वीर इकट्ठे हुए उनको, उनकी घुँघराले केश वाली स्त्रियों, तॊडि नाम के कंकणधारिणी बेटियों, माताओं और अन्यों ने व्याकुलमना होकर यह कहते हुए रोका कि इस वानर के समक्ष गये वीरों में कोई भी जीवित लौट नहीं आया। हम भी साथ जायँगी। वे विलाप करती हुई दुःख से भरकर रोयीं। ८७७

कैप रन्दॅऴ़ु शेनैयङ् गडलिडैक् कलन्दार्
शॅय्है तामवरुन् देरिडैक् कदिरॅन्नच् चॅल्वार्
मॅय्ह लन्दमा ल़िरैवरु मुवमैयै वॅन्ऱार्
ऐव रुम्बॅरुम् बूदमो रैन्दुमीत् तमैन्दार् 878

ऐवरुम्–पाँचों; पॅरुम् पूतम्–बड़े भूतों; ओर् ऐन्तुम् ऑत्तु–पाँचों के समान; अमैन्तार्–बने थे; कै परन्तु ऍऴु–बाज़ुओं में फैलकर उठी; चेनै अम् कटल् इटै–सेना के सागर के बीच; कलन्तार्–जा मिले; ताम्–उनके; चॅय्कै वरुम्–निरन्तर चलनेवाले; तेर् इटै–रथ पर के; कतिर् ऍन्न–सूर्य के समान; चॅल्वार्–जाते रहे; मॅय् कलन्त–शरीर-प्राप्त; माल् निरै–मेघपंक्तियाँ; वरुम् उवमैयै–आती हों, उस उपमा को; वॅन्ऱार्–जीत गये। ८७८

पाँचों सेनापति सम्मिलित पाँचों बड़े भूतों के समान सब ओर उठकर फैल आयी सेना के सागर के मध्य जाकर मिल गये। निरन्तर चलनेवाले एकचक्र-रथ के रथी सूर्य के समान वे चले। साकार आनेवाले मेघों की पंक्ति भी उनकी उपमा के योग्य नहीं रही। वे उस उपमा को हरा गये। ८७८

मुन्दि यम्बल कड़ङ्गिड मुरैमुरै पॊरिहऴ्
शिन्दि यम्बुरु कॊडुञ्जिलै युरुमॅन्नत् तॆरिप्पार्

वन्दि यम्वुऱ मुनिवर्क्कु ममरर्क्कुम् वलियार्
इन्दि यम्वहै यायव यॆन्दुमॊत् तिशॆन्दार् 879

मुन्तु–सामने; इयम् पल–अनेक वाद्य; करङ्किट–वजते जा रहे थे; मुरै मुरै–रह-रहकर; पॊऱिकळ् चिन्ति–अंगारे छुड़ाते हुए; अम्पु उक–शर जिससे चलाये जाते हे; कॊटुम् विलै–उस भयंकर धनु का; उरुम् अॆत–अशनि के समान; तॆऱिप्पार–टंकार निकालते; इयम्पुरु–प्रशंसा योग्य; मुनिवर्क्कुम् अमरर्क्कुन्–मुनियों और देवों के; वलि आर्–वलसंयुत; पकै आयवै–शत्रु जो वनी थीं; इन्तियम् ऐन्तुम् ऒत्तु–पांचों इन्द्रियों की समानता करते हुए; नन्तु इचैन्तार्–आकर (युद्ध में) लगे। ८७८

उनके आगे अनेक वाद्य वजते जा रहे थे। उन्होंने अंगारे छितराते हुए जानेवाले शरों के प्रेपक, धनुओं की टंकार निकाली। प्रशसा-योग्य मुनियों और देवों का सवल शत्रुगण जो है, उस इंद्रियपंचक के समान वे आकर युद्ध में लगे। ८७९

वाश वत्वयक् कुलिशमुम् वरुणन्वन् कयिरुम्
एशि रॆन्ऱिशॆक् किळवनॣ नयिन्मुनै यॆळ्वुम्
ईशन् वनॣरनिच् चूलमु मॆन्ऱिवै यॊन्ऱुम्
ऊशि पोल्वदोर् वडुच्चॆया नॆडुम्वुय मुडैयार् 880

वाचवन् वय कुलिचमुम्–वासव का सशक्त वज्रायुध; वरुणन् वन् कयिरुम्–वरुण का वलवान पाश और; एचु इल्–त्रुटिहीन; तॆन् तिचै किळवन् तन्–दक्षिणी दिशा के अधिपति (यम) का; अयिल् मुनै ऎळुवुम्–तीक्ष्णमुखी दण्डायुध और; ईचन्–परमेश्वर का; तनि वन्–अद्वितीय और कठोर; चूलमुम्–त्रिशूल; ॲन्ऱ इवै ऒन्ऱुम्–ऐसे इनमें कोई भी; ऊचि पोल्वतु–सूई चुभी हो, ऐसा भी; ओर् वटु चॆया–एक निशान नहीं वना सके; नॆटुम् पुयम् उटैयार्–ऐसी भुजाओं के स्वामी थे। ८८०

उनकी लम्वी भुजाएँ ऐसी कठोर वलसंयुत थी कि वासव का वलवान वज्र, वरुणदेव का सवल पाश, त्रुटिहीन दक्षिण दिशा के अधिपति यम का तीक्ष्ण नोक का दण्डायुध और परमेश्वर का अप्रतिम कठोर त्रिशूल —इनमें कोई भी उन पर सूई-चुभी-जैसा निशान भी नहीं वना सकता था। ८८०

शूर्द डिन्दवन् मयिलिडैप् परित्तवन् ऱोहै
पार्प यन्दव नन्नत्ति निऱहिडैप् परित्त
मूरि वॆंजिऱ हिडैयिट्टुत् तॊडुत्तन मुरुक्कि
वीर शूडिहै कयिऱिट्टु नॆऱ्ऱियिन् विशित्तार् 881

चूर् तटिन्तवन्–शूरसंहारक; मयिल् इटै–(कार्तिकेय स्वामी के) मोर से; परित्त–छीने गये; वल् तोकै–सबल पंखों को; पार् पयन्तवन्–प्रपंचसर्जक ब्रह्मा के; अन्नत्तिन् इऱकु इटै–हंसों के पंखों से; परित्त–छीने हुए; मूरि वॆम् चिऱकु–सुदृढ़ और सुन्दर पंखों को; इटै इट्टु–वीच-वीच में; तॊटुत्तन मुरुक्कि–गूँथकर ऐंठकर;

वीर चूटिकै-(बनाया गया) "वीर चूडा"; नॅऱ्ऱियिऩ्-भाल पर; कयिऱ्ऱु इट्टु-रस्सी से; विचित्तार्-बाँध रखा था। ८८१

उनके भालों पर 'वीर चूडिका' नाम के आभरण बँधे थे। वे शूर-संहारक कार्तिकेय के वाहन मोर के सबल पंखों और भूमि के सर्जक ब्रह्मा के वाहन हंस के पंखों को मध्य-मध्य गूँथकर और बटकर बनाये गये थे। ८८१

पॉऩ्ऱि णिऩ्दतो ळिरावणऩ् मार्बॊडुम् बॊरुद
अऩ्ऱि ऴऩ्दको डरिऩ्दिडु मळ्हुरु कुऴैयर्
निऩ्ऱ वऩ्ऱिशै नॅडुङ्गळि यानैयि नॅऱ्ऱि
मिऩ्ऱि णिऩ्दन वोडैयिऩ् वीरपट् टत्तर् 882

पॊऩ् तिणिन्त-स्वर्ण (आभरण) भूषित; तोळ्-कन्धों वाले; इरावणऩ्-रावण के; मार्पु ओटुम्-वक्ष के साथ; पॊरुत अऩ्ऱु-जिस दिन (दिग्गज) भिड़े; इऴन्त कोटु-उनके टूटे दाँतों के; अरिन्तिटुम्-काटकर बने; अऴ्कु उरु-सौन्दर्ययुक्त; कुऴैयर्-कुण्डलधारी; निऩ्ऱ-(हारकर जो) रहे; वल्-बलवान; तिचै कळि नॅटुम् यानैयिऩ्-मत्त दिग्गजों के; नॅऱ्ऱि-मस्तक में; मिऩ् तिरिन्तु अन-बिजली चलती हो ऐसे; ओटैयिऩ्-मुखपट्ट के बने; वीर पट्टत्तर्-वीरपट्टी वाले हैं। ८८२

उनके सुन्दर कर्ण-कुण्डल दिग्गजों के सबल रावण के स्वर्णाभरणभूषित कन्धों और वक्ष से भिड़ते समय टूटे हुए दाँतों के खण्डों से बने थे। उनके भालों पर की वीरपट्टिका उन मत्त दिग्गजों के बिजली की-सी चमक के मुखपट्ट से बनी थी। ८८२

इऩ्दिर ऩिशैयिऴऩ् देहु वाऩिहल्, तऩ्दिमुऩ् कडावितऩ् मुडुहत् तामदऩ्
मऩ्दर वालडि पिडित्तु वल्लैयेल्, उऩ्दुदि नीयॅन वलित्त वूऱ्ऱत्तार् 883

इचै इऴन्तु-नाम खोकर; एकुवाऩ्-जो लौटकर; इन्तिरऩ्-इन्द्र; इकल् तन्ति-सबल-दन्ती (ऐरावत) को; मुऩ् कटावितऩ्-तेज़ी से चलाते हुए; मुटुक-जब चला; ताम्-इन्होंने; अतऩ् मन्तर वाल्-उसकी कोमल दुम के; अटि पिटित्तु-मूल को पकड़कर; वल्लैयेल्-शक्त हो तो; उन्तुति नी-चलाओ तुम; ऍऩ-कहकर; वलित्त-खींचा, ऐसे; ऊऱ्ऱत्तार्-बलशाली। ८८३

रावण से लड़ाई में अपना यश गँवाकर इन्द्र जब पीठ दिखाकर भागने लगा, तब उसने अपने दन्ती ऐरावत को शीघ्र-शीघ्र चलाया। तब इन सेनापतियों ने ऐरावत की पूँछ का मूलभाग पकड़ लिया और कहा कि शक्त हो तो आगे चला लो। वे ऐसे बलशाली थे। ८८३

निदिनॅडुङ् गिऴवऩै नॅरुक्कि नीणहर्प्
पदियॊडुम् बॅरुन्दिरुप् पऱित्त पण्डैनाळ्

विदियोंडु मऩ्ऩवऩ् विऴुन्दु वॆन्निडप्
पॊदियोंड्म् वारिय पॊलऩ्गोॆळ् पूणिऩार् 884

नॆंटुम् निति किऴवर्त्-बहुत बड़े धनी कुबेर को; नॆरुक्कि-युद्ध में हराकर; नीळ् नकर् पतियोॆट्म्-विशाल नगर अलकापुरी के साथ; पॆरुम् तिरु-उसकी बड़ी सम्पत्ति को भी; पऱ्ऱित्त पण्टै नाळ्-जिस दिन छीन लिया (इन्होंने), उस प्राचीन दिन में; अऩ्ऩवऩ्-वे (कुबेर); वितियोॆटु विऴुन्तु-विधिवश हारकर; वॆन् इट-पीठ दिखाकर भागे; पॊति ऒटुम् वारिय-तब गट्ठरों में लिये गये; पॊलऩ् कॊळ् पूणिऩार्-स्वर्ण-निर्मित आभरणधारी हैं। ८८४

वे उन आभरणों के धारक हैं, जो कुबेर के नगर से लूट लाये थे। यह तब हुआ जब उन्होंने पहले कभी बड़े धन के स्वामी कुबेर को युद्ध में हराकर उसका नगर और उसकी सारी सम्पत्ति छीन ली थी और कुबेर विधिवश पीठ दिखाते हुए भागा था। ८८४

पाऩिरुत् तन्दहऩ् पणिय नाहिनिऩ्
कोनिनॆत् तिलऩ्ऩ वुलहङ् गूऱ्ऱुम्
नीनिऱत् तिरावणऩ् मुऩिवु नीक्कुवान्
कालनैक् कालिनिर् कैयिऱ् कट्टिऩार् 885

पाल् निऱुत्तु-विधिसंस्थापक; अन्तकन्-यम; पणियन् आकि-सेवक बनकर; निन् कोल्-आपका शासन; निनॆत्तिलन्-नहीं मानता; ऎन-ऐसा; उलकम् कूऱ्ऱुम्-लोकवासियों ने जब कहा तब; नील् निऱत्तु इरावणन्-नीले वर्ण के रावण के; मुनिवु नीक्कुवान्-कोप को दूर करने के लिए; कालनै-उस यम के; कालिनिल् कैयिनिल्-पैरों और हाथों को; कट्टिनार्-बाँध दिया, ऐसे हैं। ८८५

लोगों ने रावण से कहा कि विधिसंस्थापक यम आपका सेवक नहीं बना, न आपका शासन मानता है। रावण को अपार गुस्सा हो गया। तब इन पंच सेनापतियों ने रावण का कोप शान्त करने के लिए यम के पैरों और हाथों को बाँधा था। ८८५

मलैहळै नहुन्दड मार्वर् माल्हडल्
अलैहळै नहुनॆडुन् दोळ रन्दहऩ्
कॊलैहळै नहुनॆडुङ् गॊलैयर् कॊल्लऩ्
दुलैहळै नहुमन लुमिऴुङ् गण्णिनार् 886

मलैकळै नकुम्-पर्वतों को परिहसित करनेवाले; तट मार्पर्-विशाल वक्षों के; माल् कटल् अलैकळै-वड़े सागर की तरंगों को; नकुम्-निन्दा करनेवाले; नॆटुम् तोळर्-बड़े कन्धों वाले; अन्तकन् कॊलैकळै-यम के संहारक कार्यों को; नकुम्-नीचा दिखानेवाले; नॆटुम् कॊलैयर्-बड़े खूनी लोग हैं; कॊल्लन् ऊतु-लुहारों की फूंकी हुई; उलैकळै नकुम्-भट्ठियों की हँसी उड़ानेवाली; अतल् उमिऴुम्-अग्निवर्षक; कण्णिनार्-आँखों वाले। ८८६

वे पर्वतों की हँसी उड़ानेवाले वक्षःस्थल के हैं। समुद्र की उत्तुंग तरंगों का परिहास करनेवाले (ऊँचे) कन्धों के हैं (या लम्बी भुजाओं के हैं)। इनके खूनी कार्यों के सामने यम के मारक कार्यों की कोई गिनती ही नहीं थी। उनकी आँखें लुहार की फूँकी जानेवाली भट्ठी का परिहास करनेवाली थीं यानी वे लाल थीं और आग बरसानेवाली थीं। ८८६

तोल्हिळर् तिशैदोरु मुलहैच् चुऱ्ऱिय
शाल्हिळर् मुळङ्गॅरि तळङ्गि येऱ्ऱिनुम्
काल्हिळर्न् दडिप्पिनुङ् गालङ् गैयुरु
माल्हडल् किळरिनुञ् जरिक्कुम् वन्मैयार् 887

कालम् कै उऱ–प्रलयकाल के समीप आने पर; तोल् किळर्–दिग्गज-शोभित; तिचै तोऱुम्–आठों दिशाओं में; उलकै चऱ्ऱिय–सारे लोक को घेरकर; चाल् किळर्–खूब बढ़कर; मुळङ्कु ॲरि–शोर के साथ जलनेवाली (प्रलय-) अग्नि; तयङ्कि एऱ्ऱिनुम्–और जोर से उठे तब भी; काल्–पवन; किळर्न्तु–उठकर; अटिप्पितुम्–अत्यधिक जोर से बहे तब भी; माल् कटल्–बड़े सागर; किळरितुम्–उमग आएँ तब भी; चरिक्कुम्–संचार करेंगे, ऐसे; वन्मैयार्–साहसी हैं। ८८७

युगान्त में जब दिग्गज-पालित दिशाओं में और अन्य सभी स्थानों में शब्द के साथ जलनेवाली आग उठे, और भयंकर आँधी वहे, और सारे सागर उमग आवें तो भी ये उनकी कुछ परवाह न करके घूमने का साहस रखनेवाले हैं। ८८७

इव्वहै यैवरु मॅळुन्द तानैयर्, मॉय्हिळर् तोरण मदनै मुऱ्ऱिनार्
कैयॊडु कैयुरु वॆणियुङ् गट्टिनार्, ऐयनु मवर्निलै यमैय नोक्किनान् 888

इ वकै–ऐसे; ऐवरुम्–पाँचों सेनापतियों ने; ॲळुन्त तानैयर्–चढ़ जानेवाली सेना के; मॊय् किळर्–प्रबल रूप से विद्यमान; तोरणम् अतनै–तोरण को; मुऱ्ऱिनार्–घेरकर; कैयॊटु कैयुऱ–एक बाजू से दूसरा लगाकर; अणियुम् कट्टिनार्–सेना के भाग खड़ा किये; ऐयनुम्–महिमावान (हनुमान) ने भी; अवर् निलै–उनकी स्थिति; अमैय–खूब; नोक्किनान्–देख ली। ८८८

ऐसे पाँचों सेनापति अपनी बढ़ी आयी सेना को लेकर शक्तियुत उस तोरण को घेर गये। उन्होंने सेना को दलों में विभाजित कर बाजुओं में मिल जाएँ, ऐसे व्यूहों में खड़ा कर दिया। महिमावान हनुमान ने उनकी स्थिति खूब निहारी। ८८८

अरक्कर्त् माऱ्ऱलु मळविल् शेनैयिन्, तरुक्कुमम् मारुदि तनिमैत् तन्मैयुम्
पॊरुक्कॅन नोक्किय पुरन्द रादियर्, इरक्कमु मवलमुन् दुळक्कु मॅय्दिनार् 889

अरक्कर् तम्–राक्षसों की; आऱ्ऱलुम्–शक्ति और; अळवु इल्–अमाप; चेनैयित् तरुक्कुम्–सेना का गर्व; अ मारुति–उस हनुमान के; तनिमै तन्मैयुम्–और

एकाकीपन को; पोरुक्कॅन नोक्किय–शीघ्र जिन्होंने देखा; पुरन्तरातियर्–उन पुरन्दरादि देवों ने; इरक्कमुम्–सहानुभूति और; अवलमुम्–दुःख और; तुळक्कुम्–कम्पन का; ॲय्तिनार्–अनुभव किया। ८८६

पुरन्दर आदि देवों ने राक्षसों का बल, उस अपार सेना की शान और हनुमान का एकाकीपन अकस्मात् देखा तो उनके मन में एक साथ सहानुभूति, दुःख और भयकंपन के भाव जगे। ८८९

इऱ्ऱन ररक्करिप् पहलु ळॅयॅनाक्, कऱ्ऱुणर् मारुदि कळिक्कुज् जिन्दैयान्
मुऱ्ऱुऱच् चुलाविय मुडिवि ऱानैयॅच्, चुऱ्ऱुऱ नोक्कित्तन् ऱोळै नोक्किनान् 890

इ पकल् उळे–इस अहस् के अन्दर ही; अरक्कर् इऱ्ऱनर्–राक्षस मर गये (जायँगे); ॲना–ऐसा; कऱ्ऱु उणर् मारुति–अध्ययन करके बुद्धिमान बने हनुमान ने; कळिक्कुम् चिन्तैयान्–मुदित-मन होकर; मुऱ्ऱु उऱ–पूर्ण रूप से चारों ओर; चुलाविय–घेरे आयी; मुटिवु इल्–निस्सीम; तानैयै–सेना को; चुऱ्ऱु उऱ–चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर; नोक्कि–देखकर; तन् तोळै–अपने कन्धों को; नोक्किनान्–देख लिया। ८९०

हनुमान शास्त्रों का अध्ययन कर चुका था। वह बड़ा बुद्धिमान था। उसने अनुमान कर लिया कि ये सभी राक्षस इस एक अहस् में मर जायँगे। हर्षित होकर उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी, अपने को घेरे रही सेना के वीरों को देखा फिर अपने कन्धों पर सगर्व दृष्टिपात किया। ८९०

पुन्ऱलैक् कुरङ्गिदु पोलु मालमर्
वॅन्ऱदु विण्णवर् पुहळै वेरॊडुम्
तिन्ऱवल् लरक्करैत् तिरुहित् तिन्ऱदाल्
ॲन्ऱन रयिर्त्तनर् निरुद रॅण्णिलार् 891

ॲण् इलार्–असंख्यक; निरुतर्–राक्षस; पुल् तलै–छोटे सिर वाला; कुरङ्कु इतु पोलुम्–यही बन्दर क्या; माल् अमर् वॅन्ऱतु–बड़े युद्ध में जीता; विण्णवर् पुकळै–देवों के यश को; वेर् ऑटुम् तिन्ऱ–जड़ के साथ (जिन्होंने) खाया; वल् अरक्करै–कठोर राक्षसों को; तिरुकि–तोड़-मरोड़कर; तिन्ऱतु–खाया (इसी ने); ॲन्ऱनर्–कहा; अयिर्त्तनर्–सन्देह किया। ८९१

असंख्यक राक्षसों ने हनुमान को देखा तो उन्हें सन्देह हुआ कि इसी छोटे सिर वाले बन्दर ने बड़ा युद्ध जीता? देवयश को मिटानेवाले राक्षसों को जड़ से मरोड़कर खाया (निर्मूल किया)? । ८९१

आयिडै यनुमनु ममरर् कोनहर्
वायिनित् ऱिव्वळिक् कॊणर्न्दु वैत्तमाच्
चेयॊळित् तोरणन् दुम्बर्च् चेर्न्दु
मोयुयर् विशुम्बैयुम् कडक्क वीङ्गिनान् 892

अ इट्टै–तब; अनुमन्नुम्–हनुमान ने भी; अमरर् कोन्–देवराज; नकर् वायिल् निन्ऱु–के नगर के द्वार से; इ वऴि–यहाँ; कोणर्न्तु वैत्त–जो लाकर रखा गया था; मा चे–अधिक लाल रंग की; ऑळि–रोशनी से युक्त; तोरणत्तु–तोरण के; उम्पर्–ऊपर; चेण् नॅट्टु–बहुत दूर; मी उयर्–ऊपर तक गये; विचुम्पैयुम् कटक्क–आकाश को भी पार करते हुए; वीङ्किनान्–(फूला) विराट् रूप लिया। ८६२

तब हनुमान ने उस तोरण पर खड़े होकर विराट् रूप धारण कर लिया। वह बड़ा तोरण देवेन्द्र के नगर के द्वार से लाकर इधर रखा गया था और लाल स्वर्ण का बना था। हनुमान इतना ऊँचा बढ़ा कि आकाश की चोटी को भी पार कर गया उसका सिर। ८९२

वीङ्गिय वीरनै वियन्तु नोक्किय
तीङ्गिय लरक्करुन् दिरुहि नार्शिनम्
वाङ्गिय शिलैयिनर् वळङ्गि नार्पडै
एङ्गिय शङ्गिन मिडित्त पेरिये 893

वीङ्किय वीरनै–उस तरह बड़े बने वीर को; वियन्तु नोक्किय–विस्मित होकर देखनेवाले; तीङ्कु इयल्–परपीडन-स्वभाव के; अरक्करुम्–राक्षसों ने भी; चिनम् तिरुकिनार्–कोप में बढ़कर; वाङ्किय चिलैयिनर्–कुंचितधनु होकर; पटै वऴङ्किनार्–अस्त्र बरसाये; चङ्कु इनम् एङ्किय–शंखों ने ध्वनि निकाली; पेरि इटित्त–भेरियों ने नाद किया। ८६३

नृशंसकारी राक्षसों ने उस वीर का ऐसा बढ़ा आकार विस्मय के साथ देखा, उनका कोप भी बढ़ा। उन्होंने धनुष उठाकर शरों को हनुमान पर चलाया। तब शंख बज उठे और भेरियाँ ठनकीं। ८९३

ऍऱिन्दन रॅय्दन रॅण्णि ऱन्दन
पॊऱिन्दॅऴु पडैक्कल मरक्कर् पोक्किनार्
शॅऱिन्दन मयिर्प्पुऱन् दिनवु तीर्वुऱच्
चॊऱिन्दन वॅनविरुन् दैयन् ऱूङ्गिनान् 894

अरक्कर्–उन राक्षस वीरों ने; पॊऱिन्तु ऍऴु–अंगारे छोड़ते हुए उठ जानेवाले; ऍण् इऱन्तन पटै कलम्–असंख्यक हथियारों को; ऍऱिन्तनर् ऍय्तनर्–फेंके, चलाये; पोक्किनार्–हनुमान पर मारे; मयिर् पुऱम्–रोमों के मध्य; चॅऱिन्तन–जो लगे; तिनवु तीर्वु उऱ–खुजली मिटाते हुए; चॊऱिन्तन ऍन्न–खुजलाते जैसे रहे; इरुन्तु–उस स्थिति में रहकर; ऐयन् तूङ्किनान्–श्रेष्ठ हनुमान तन्द्रित रहा। ८६४

राक्षसों ने हथियार फेंके और चलाये। वे अंगारे छुड़ाते हुए बढ़ आये, आकर हनुमान की खुजली को मिटाते-से उसके शरीर के बालों के मध्य जाकर ठहर गये। उस स्थिति में हनुमान थोड़ा तन्द्रित बैठा रहा। ८९४

उरुक्कट्ट	नरक्कर	मुदलनु	उरुट्टिनर्
चेरुक्कट्ट	नेरुक्किनर्	शॅरुक्कुम्	मिनुङ्गियार्
मरुङ्गियर्	वरुम्वरि	उवरै	वलिविरॅनु
वेरुक्कॉ	नॅनवंऴ्	अनुम	नॅनुत्तिनान् 895

अरक्करम्–राक्षस भी; शॅरुक्कुम् मिनुङ्गियार्–गर्वीले मन के; उडन् उरु–तभी मिलकर; उरनु उरुट्टिनर्–क्रुद्ध हो लड़े; नेरुक्क उरु–एकदम; नेरुक्किनर्–टकराये; अनुमन्–हनुमान ने भी; मरुङ्गियर् वरुम् वरिसु–अन्यों को भी आना पड़े, ऐसा; उवरै–इनको; वलि विरॅनु–अति शीघ्र; वेरुक्कॉनु–मिटाऊँगा; नॅरु-कहकर; वंऴ्–लोहदण्ड; नॅनुत्तिनान्–(हाथ में) धारण कर लिया। ८९४

गर्वीले राक्षसों ने सब मिलकर पास आकर हनुमान पर आक्रमण किया। हनुमान ने सोचा कि इनको मारूँगा; यही अन्यों को भी युद्ध में निमन्त्रण देने का उपाय है। ऐसा सोचकर उसने लोहदण्ड हाथ में उठा लिया। ८९५

ऊक्किय	पडैक्कलुम्	मुडलुल	वीररुम्
ताक्किय	परिक्कलुम्	तडुत्तल	तेरक्कलुम्
मेक्कुयर्	कोडियुडे	मेह	मालॅपोल्
नूक्किय	करिक्कलुम्	पुरळ	नूरिनान् 896

ऊक्किय–प्रेरित; पडैक्कलुम्–हथियार और; अडल् वीररुम्–क्रुद्ध वीर; ताक्किय परिक्कलुम्–चढ़ आये अश्व; तडुत्तल तेरक्कलुम्–और रोकनेवाले रथ; मेक्कु उयर्–ऊपर उठायी गयी; कोडि उडै–ध्वजाओं के साथ रहे; मेक मालै पोल्–मेघ-श्रेणियों के समान; नूक्किय–चालित; करिक्कलुम्–गज; पुरळ–लोट जायें, ऐसा; नूरिनान्–(हनुमान ने) निहत कर दिया। ८९६

हनुमान ने प्रत्याघात किया, जिससे राक्षसप्रेरित हथियार, क्रुद्ध वीर, आकर टकरानेवाले अश्व, उनको रोकनेवाले रथ और ध्वजा उठाये आनेवाले मेघमाला-से गजवृन्द सब नीचे गिरे और लुढ़क गये। ८९६

वार्मदक्	करिक्कळित्	कोट्टु	वाङ्गिमात्
तेर्पडप्	पुडैक्कुमत्	तेरिन्	शिल्लियाल्
वीररै	युरुट्टुमव्	वीरर्	वाळिनाल्
तारुडेप्	पुरवियैत्	तुणियत्	ताक्कुमाल् 897

वार् मत–मदस्रावी; करिक्कळितु–गजों के; कोट्टु वाङ्कि–दाँतों को छीनकर; मा तेर्–बड़े रथों को; पट पुडैक्कुम्–मिटाते हुए उन पर पटकता; अ तेरिन् चिल्लियाल्–उन रथों के पहियों से; वीररै उरुट्टुम्–वीरों को मारता; अ वीरर् वाळिनाल्–उन वीरों की तलवारों से; तार् उडै पुरवियै–दाम-सहित अश्वों को; तुणिय–खण्ड-खण्ड करते हुए; ताक्कुम्–काटता। ८९७

उसने मत्तगजों के लम्बे दाँतों को छीना और उनसे मारकर बड़े

रथों को तोड़ दिया। उन रथों के पहियों से मारकर वीरों के प्राण हर लिये। उनकी तलवारों से दामालंकृत अश्वों को काटकर मिटाया। ८९७

इरण्डुते रिरण्डुकैत् तलत्तु मेन्दिवे
रिरण्डुमाल् यातैपट् टुरुळ वॅऱ्ऱुमाल्
इरण्डुमाल् यातैहै यिरण्डि तॆन्दिवे
रिरण्डुपा लिनुम्वरुम् बरियै यॆऱ्ऱुमाल् 898

इरण्टु तेर्–दो रथों को; इरण्टु कै तलत्तुम्–दोनों हाथों में; एन्ति–उठा लेकर; वेऱु इरण्टु–अन्य दो; माल् यातै–दो बड़े गजों को; पट्टु उरुळ–मरकर लोट जायें, ऐसा; ॲऱ्ऱुम्–मारता; कै इरण्टिन्–अपने दो हाथों में; इरण्टु माल् यातै–दो बड़े गजों को; एन्ति–उठाकर; इरण्टु पालितुम्–दोनो ओर; वेऱु वरुम्–अलग आनेवाले; परियै ॲऱ्ऱुम्–अश्वों पर दे मारता। ८९८

हनुमान दोनों हाथों में दो रथ उठाता और उनको चलाकर दो बड़े गजों को मारता और गज लुढ़क जाते। फिर दो बड़े-बड़े हाथी उठाते और दोनों ओर आनेवाले अश्वों पर पटककर उन्हें निपात देता। ८९८

मायिर नॆंडुवरै वाङ्गि मण्णिलिट्
टायिरत् तेर्पड वरैक्कु मालळित्
तायिरङ् गळिऱ्ऱैयोर् मरत्ति नालडित्
तेयॆंनु मात्तिरै यॆऱ्ऱि मुऱ्ऱुमाल् 899

मायिरम्–पास रहे; नॆंटु वरै–बड़े पर्वतों को; वाङ्कि–अनायास उखाड़कर; आयिरम् तेर्–सहस्र रथों को; पट–मिटाकर; मण्णिल् इट्टु–भूमि पर डालकर; अळित्तु अरैक्कुम्–बुकनी बनाते हुए पीसता; एय् ॲंनुम् मात्तिरै–'ए' कहने मात्र के अन्दर; आयिरम् कळिऱ्ऱै–सहस्र गजों को; ओर् मरत्तिताल्–एक पेड़ से; अटित्तु ॲऱ्ऱि–मार-पीटकर; मुऱ्ऱुम्–हत करता। ८९९

हनुमान पास रहे एक बड़े पर्वत को आसानी से उखाड़कर उठा लेता और सहस्रों रथों को भूमि पर डालता और तोड़कर बुकनी बना लेता। 'ए' कहने के समय के अन्दर एक वृक्ष से सहस्रों गजों को पीटता और निपात देता। ८९९

विशैयिन्मान् ऱेर्हळुङ् गळिऱुम् विट्टहल्
तिशैयुमा हायमुञ् जॆरियच् चिन्दुमाल्
कुशैहॊळ्पाय् परियॊडुङ् गॊऱ्ऱ वेलॊडुम्
पिशैयुमा लरक्करैप् पॆरुङ्ग रङ्गळाल् 900

विचैयिन्–अति क्षिप्र गति से; मान् तेर्कळुम्–अश्वयुक्त रथों; कळिऱुम्–गजों को; विट्टु–उछालकर; अकल् तिचैयुम्–विशाल दिशाओं और; आकायमुम्–आकाश में; चॆरिय–ठस भर जाएँ, ऐसा; चिन्तुम्–छितरा देता; अरक्करै–राक्षसों को; पॆरुम्

करङ्कळाल्–अपने बड़े हाथों से; कुचै कोळ्–लगाम-लगे; पाय् परि–सरपट भागनेवाले अश्वों; ओटुम्–के साथ; कोट्ट्र वेल् ओटुम्–और विजयदायिनी शक्तियों के साथ; पिचैयुम्–पीसकर मार देता। ९००

और भी हनुमान तेज़ी के साथ अश्वयुक्त रथों और गजों को ले उछालता, जिससे आकाश और दिशाओं में वे भर जाते। उनको ले बिखेर देता। वह कभी राक्षसवीरों को अपने बड़े हाथों से उठाता और उनको लगाम लगे सरपट दौड़नेवाले अश्वों और विजयदायिनी शक्तियों के साथ मसलकर मार डालता। ९००

उदैक्कुम्वॆङ् गरिहळै युळक्कुन् देर्हळै
मिदिक्कुम्वन् बुरवियैत् तेय्क्कुम् वीररै
मदिक्कुम्वल् लॆळुविना लरैक्कु मण्णिडैक्
कुदिक्कुम्वन् ऱलैयिडैक् कडिक्कुङ् गुत्तुमाल् 901

वॆम् करिकळै–क्रूर करियों के; उतैक्कुम्–लातें मारता; उळक्कुम् तेर्कळै–मथनेवाले रथों को; मितिक्कुम्–रौंद डालता; वन् पुरवियै–सशक्त अश्वों को; तेय्क्कुम्–पीसता; वीररै–वीरों को; वल् ऍळुविताल्–सशक्त लौहदण्ड से; मण्णिटै–भूमि पर; मतिक्कुम्–मथ डालता; अरैक्कुम्–बेल देता; वन् तलै इटै–कठोर सिरों पर; कुतिक्कुम्–कूदता; कटिक्कुम्–काटता; कुत्तुम्–घूंसा देता। ९०१

और हनुमान क्रूर गजों के लात मारता। युद्धभूमि को मथते आनेवाले रथों को पैरों से कुचलता। अश्वों को रौंदता। वीरों को लौहदण्ड से बेलता। चटनी-सा बना देता। उनके कठोर सिरों पर कूदता। उनको दाँतों से काटता और घूंसे देता। ९०१

तीयुरु पॊऱियुडैच् चॆङ्गण् वॆङ्गमा
मीयुऱत् तडक्कैयाल् वीरन् वीचुदो
ऱायपॆरुङ् गॊडियन कडलि लाऴ्वन
पायुडै नॆडुङ्गलम् पडुव पोन्ऱवे 902

ती उरु–आग से उत्पन्न; पॊऱि इटै–अंगारों के समान; चॆम् कण्–लाल आँखों वाले; वॆम् कैमा–भयंकर (सूँड़ वाले) गजों को; वीरन्–(हनुमान) महावीर के; तट कैयाल्–बड़े हाथों से; मी उऱ–आकाश में पहुँचाते हुए; वीचु तोऱु–फेंकते हर समय; आय् पॆरुम्–चुनी हुई बड़ी; कॊटियन–ध्वजा वाले; पाय् उटै–पाल-सहित; नॆटुम् कलम्–बड़े पोत; कटलिल् आऴ्वन–समुद्र में मग्न होकर; पटुव–मिटते; पोन्ऱ–जैसे लगते। ९०२

अंगारे निकालनेवाली आग के समान लाल आँखों से युक्त क्रूर हाथियों को महावीर अपने विशाल हाथों से उठाकर फेंकता, तब वे बड़ी ध्वजाओं-सहित पाल वाले बड़े पोत समुद्र में डूबते-जैसे लगते। ९०२

तारोडु मुरुळोडुन् दडक्कै यार्ट्रनि
वीरन्विट् टॆर्ट्रिन्दन कडलिन् वीळ्वन
वारियि नॆळुशुडर्क् कडवुळ् वानवन्
तेरिनै निहर्त्तन पुरवित् तेर्हळे 903

तनि वीरन्–अद्वितीय वीर ने; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; विट्टु ऍऱिन्तन–जिनको उठा फेंका; पुरवि तेर्कळ्–वे अश्व-सहित रथ; तार् ओटुम्–घंटियों की माला के साथ; उरुळ् ओटुम्–पहियों के साथ; कटलिल् वीळ्वन–समुद्र में जा गिरे, तब; वारियिन्–समुद्र से; ऍऴु–उगनेवाले; चुटर् कटवुळ्–किरणमाली; वानवन्–सूर्य-देवता के; तेरिनै–रथ की; निकर्त्तन–समानता कर रहे थे। ६०३

अद्वितीय महावीर द्वारा फेंके गये अश्व-जुते रथ गुरियों से युक्त दामों के साथ और पहियों के साथ समुद्र में जा गिरते हैं। तब वे समुद्र से उग आनेवाले किरणमाली सूर्यदेव के रथ की समता करते। ९०३

मीयुऱ विण्णिडै मुट्टि वीळ्वन, आय्पॆरुन् दिरैक्कड लळुवत् ताळ्वन
ओय्वन पुरविवा युदिरङ् गाल्वन, वायिडै यॆरियुडै वडवै पोन्ऱवे 904

मी विण् इटै–ऊपर आकाश में; उऱ–लगे ऐसा; मुट्टि–जाकर टकराकर; वीळ्वन आय्–गिरकर; पॆरुम् तिरै–उत्तुंग तरंगों के; कटल् अळुवत्तु–समुद्र की गहराई में; आळ्वन–डूबनेवाले; ओय्वन–शिथिल पड़े; पुरवि–अश्व; वाय् उतिरम् काल्वन–मुख से रक्त वमन करते; वाय् इटै–मुख में; ऍरि उटै–अग्नियुक्त; वटवै पोन्ऱ–बड़वाग्नि के समान लगे। ६०४

हनुमान के द्वारा ऊपर उछाले गये अश्व आकाश में जाकर टकराकर नीचे गिरते और उत्तुंग तरंगों वाले समुद्र की गहराई में डूब जाते और निष्क्रिय बन जाते। तब अपने मुखों से रक्त निकालते हुए वे अग्निमुखी बड़वाग्नि के समान लगते। ९०४

वरिन्दुऱ वल्लिदिऱ् चुऱ्ऱि वालिनाल्
विरिन्दुऱ वीशलिऱ् कडलिन् वीऴ्हुनर्
तिरिन्दनर् शॆऱिकयिऱ् ऱरवि नाऱ्ऱिरि
अरुन्दिऱन् मन्दर मनैय रायिनार् 905

वालिताल्–पूँछ से; वल्लितिन्–कसकर; उऱ चुऱ्ऱि वरिन्तु–खूब लपेट बाँधकर; विरिन्तु उऱ–बहुत दूर; वीचलिन्–फेंकने से; कटलिल् वीऴ्कुनर्–समुद्र में जो गिरे वे; तिरिन्तनर्–घूमे; चॆऱि कयिऱ्ऱु अरवितால்–मोटी नेती, (वासुकी) सर्प से; तिरि–घूमनेवाले; अरुम् तिऱल्–बहुत बलवान; मन्तरम् अनैयर्–मन्दरपर्वत के समान; आयिनार्–बने। ६०५

हनुमान अपनी पूँछ लपेटकर कसकर बाँध लेता, बहुत दूर जा गिरें,

ऐसा वीरों को घुमाकर फेंक देता। वे समुद्र में जा गिरते और (लट्टू के समान) घूमते। वे तब वासुकी की मोटी नेती द्वारा घुमाये गये प्रबल व सुदृढ़ मन्दरपर्वत के समान लगते। ९०५

वीरऩ्वऩ् रडक्कैया लॅडुत्तु वीशिय
वार्मदक् कळिऱ्ऱिनिऱ् ऱेरिऩ् वाशियिऩ्
मूरिवॅङ् गडल्पुहक् कडिदु मुऩ्दिऩ
ऊरिऩ्वॅङ् गुरुदिया ऱीर्प्प वोडिऩ 906

वीरऩ्–महावीर द्वारा; वऩ् तट कैयाल्–सशक्त बड़े हाथों से; ॲट्टुत्तु–उठाकर; वीचिय–फेंके गये; वार् मत–बहनेवाले मद के; कळिऱ्ऱिनिल्–गजों से भी; तेरिऩ्–रथों से भी; वाचियिऩ्–अश्वों से भी (अधिक तेज़ी से); ऊरिऩ्–लंका में वही; वॅम् कुरुति आऱु–भयंकर रक्त-नदी द्वारा; ईर्प्प–खिंचकर; ओटिऩ–जो चले वे; मूरि वॅम् कटल्–बड़े और भयंकर समुद्र में; पुक–डूबने के लिए; कटितु मुऩ्तिऩ–आगे गये। ९०६

महावीर के द्वारा उसके सबल और विशाल हाथों से फेंके जाकर मदस्रावी गज और अश्व तेजी से समुद्र की ओर गये। पर उससे भी अधिक तेज़ी से जाते रहे समुद्र में डूबने के वास्ते वे शव, जिनको लंका में बहनेवाली रक्त की नदी तिराते खींच ले जा रही थी। ९०६

पिऱैक्कडै यॅयिऱ्ऱिऩ पिलत्तिऩ् वायिऩ
कऱैप्पुऩऱ् पॉऱिहळो डुमिळुङ् गण्णिन
उऱैप्पुऱु पडैयिऩ वुदिर्ऩ्द याक्कैहळ्
मऱैत्तऩ महरतो रणत्तै वाऩुऱ् 907

उऱैप्पु उऱु–अपने पर खूब लगे (चुभे); पटैयिऩ–हथियारों के साथ रहनेवाले; पिऱै कटै ॲयिऱ्ऱिऩ–चन्द्रकला के समान नोकदार दांत वाले; पिलत्तिऩ् वायिऩ–बिल-सरीखे मुखों वाले; कऱै पुऩल्–चिपकनेवाले रक्त-जल को; पॉऱिकळोटु–अंगारों के साथ; उमिळुम् कण्णिऩ–उगलनेवाली आँखों के; उतिर्ऩ्त याक्कैकळ्–नीचे गिरे पड़े (राक्षसों के) मृतक शरीर (ढेर); वाऩ् उऱ–आकाश तक जाकर; मकर तोरणत्तै–मकराकार तोरण को; मऱैत्तऩ–ढंक दिया (ढेर ने)। ९०७

गड़े हथियारों के साथ चन्द्रकला-सदृश वक्र दाँतों, बिल के समान मुखों और चिपचिपे रक्त के साथ आग उगलनेवाली आँखों से युक्त राक्षस-शवों का ढेर इतना ऊँचा था कि मकर-तोरण ही ढँक गया। ९०७

कुऩ्ऱुळ सरमुळ कुलङ्गॊळ् पेरॅळु
ऑऩ्ऱुऱल पलवुळ वुयिरुण् बाऩुळऩ्
अऩ्ऱिऩर् पलरुळ रैयऩ् कैयिनिल्
पॊऩ्ऱुव दल्लदु पुऱत्तुप् पोवरो 908

कुन्ऱु उळ–पर्वत हैं; मरम् उळ–पेड़ हैं; कुलम् कोळ्–श्रेष्ठतायुक्त; पेर् अॅळु–बड़े लौहदण्ड; ओन्ऱु अल–एक नहीं; पल उळ–अनेक हैं; उयिर् उण्पान्–जीव-खादक (यम); उळन्–है; अन्ऱिन्नर्–शत्रु; पलर् उळर्–अनेक है; ऐयन् कैयिनिल्–उत्तम (महावीर) के हाथों; पोन्ऱुवतु अल्लतु–बिना मरे; पुऱत्तु पोवरो–अलग जा सकेंगे क्या। ६०८

हनुमान उठाकर फेंके, उस काम में आने के लिए पर्वत थे, पेड़ थे और श्रेष्ठ तथा बड़े लौहदण्ड अनेक प्राप्य थे। और जीवभक्षक यम भी प्रस्तुत था। मरने के लिए राक्षस भी अनेक थे। फिर क्या था? विना मरे वे कहीं बचके अलग जायँगे क्या? । ९०८

मुळ्मुदल् कण्णुदऱ् मुरुहऩ् ऱादैकैम्
मळुवॅऩप् पॊलिन्दॊळिर् वयिर वाऩ्ऱनि
अॅळुविनिऱ् पॊलङ्गळ लरक्क रीण्डिय
कुळुविनैक् करियॅनक् कॊन्ऱु नीक्किनाऩ् 909

मुळु मुतल्–सर्वेश्वर; कण्णुतल्–भालनेत्र शिवजी; मुरुकन् तातै–'मुरुगन' (कार्तिकेय) के पिता के; कै मळु अॅन–हाथ के परशु (या तप्त लौहखण्ड) के समान; पोलिन्तु ओळिर्–शोभते हुए प्रकाश छिटकानेवाले; वयिर–वज्रकठोर; वान्–श्रेष्ठ; तनि–अनुपम; अॅळुविनिल्–लौहदण्ड से; पोलम् कळल्–स्वर्ण-पायलधारी; अरक्कर्–राक्षसों के; ईण्टिय कुळुविनै–एकत्रित झुण्ड को; करि अॅन–गज को जैसे; कोन्ऱु नीक्किनान्–मारकर दूर किया (हनुमान ने)। ६०९

कार्तिकेय (तमिळ में मुरुगन, वेलन आदि नाम हैं उनके) के पिता, परमेश्वर और भालनेत्र शिवजी के हाथ के फरसे (या तप्त लोहे) के समान हनुमान का लौहदण्ड वज्र-सम कठोर, उज्ज्वल और अनुपम था। शिवजी ने अपने फरसे से जैसे गज को मारा था, वैसे ही हनुमान ने अपने लौहदण्ड से स्वर्णपायलधारी राक्षसों के इकट्ठे समूह को मारकर दूर किया। ९०९

उलन्दतु ताऩै युवन्दऩ रुम्बर्, अलन्दलै युऱ्ऱदव् वाऴि यिलङ्गै
कलन्द वऴुङ्गुरल् कण्डऩर् निऩ्ऱ, वलन्दरु तोळव रैवरुम् वन्दार् 910

तानै उलन्ततु–सेनाएँ मिटीं; उम्पर् उवन्तनर्–देव हर्षित हुए; अ आऴि इलङ्कै–वह समुद्रावृत लंका; अलम् तलै उऱ्ऱतु–दुःख से अभिभूत होकर; अऴुम् कुरल्–रुदनस्वर से; कलन्ततु–भर गया; कण्टनर्–देखते; निन्ऱ वलम् तरु–जो खड़े रहे वे बलवान; तोळवर् ऐवरुम्–कन्धों वाले पाँचों; वन्तार्–आये। ६१०

सेनाएँ मिटीं। देव हर्षित हुए। उस समुद्रवलयित लंका में दुःख फैला और रुदनस्वर भर उठा। सबल भुजाओं वाले पाँचों सेनापतियों ने उसे देखा। वे हनुमान से युद्ध करने के लिए सामने आये। (उनके नाम वाल्मीकि के अनुसार, विरूपाक्ष, यूपाक्ष, दुर्धर, भासकर्ण और प्रधस थे।)। ९१०

ईर्त्तॅऴु शॅम्बुन लॅक्क रिऴुक्कत्, तेर्त्तुणै याऴि यऴुत्तिनर् शॅन्ऱार्
आर्त्तन रायिर मायिर मम्बाल्, तूर्त्तन रञ्जनैत् तोन्ऱलै यॅन्ऱार् 911

चॅम्पुतल्–रक्तप्रवाह के; ईर्त्तु ऍऴु–खींचते जाने से बने; ऍक्कर्–बालुओं के टीलों के; इऴुक्क–खींचने से; तेर् तुणै आऴि–रथों के चक्रद्वयों को; अऴुत्तितर्–धँसाते हुए; चॅन्ऱार्–जो चले उन पाँचों ने; अञ्चनै तोन्ऱलै–अञ्जनासुत का; एन्ऱार्–सामना किया; आर्त्तनर्–नारे उठाये; आयिरम् आयिरम् अम्पाल्–सहस्र-सहस्र शरों से; तूर्त्तनर्–उसके शरीर को ढक दिया। ९११

रक्तप्रवाह में इधर-उधर बालू के टीले बने थे। उनमें रथ धँस जाते। वैसे ही वे दोनों पहियों को धँसाते, उठाते रथ चलाते गये। उन्होंने अंजनासुत के सामने नारे निकाले और सहस्र-सहस्र शरों से उसके शरीर को ढक दिया। ९११

ऍय्द कडुङ्गणै यावैयु मॅय्दा, नॉय्दह लुम्बडि कैहळि नूराप्
पॉय्दह डॉन्ऱु पॉरुन्दि नॅडुन्देर्, शॅय्द कडुम्बॉऱि यॉन्ऱु शिदैत्तान् 912

ऍय्त–प्रेरित; कटुम् कणै–घातक शरों को; यावैयुम् ऍय्ता–किसी को पास न आने देते हुए; नॉय्तु अकलुम्पटि–आसानी से हट जाएँ, ऐसा; कैकळिन् नूऱा–हाथों से प्रताडित कर मिटाकर; पॉय्तु–अन्दर काटकर; अकटु ऑन्ऱु पॉरुन्ति–बीच में लगाये गये; नॅटुम् तेर् चॅय्त–बड़े रथ में बने; कटुम् पॉऱि ऑन्ऱु–शीघ्रगामी यन्त्र, एक, को; चितैत्तान्–मिटाया। ९१२

हनुमान ने उन शरों को अपने पास नहीं आने देकर दूर ही से अपने हाथों से पीटकर मिटा दिया। उस रथ के बीच में छेद बनाकर उसमें एक यन्त्र लगा हुआ था। तेज़ी से चलनेवाले उस यन्त्र को हनुमान ने तोड़ दिया। ९१२

उऱ्ऱुऱु तेर्शिदै यामु नुयर्न्दान्, मुऱ्ऱिन वीरनै वानिन् मुनिन्दान्
पॉऱ्ऱिर णीळॅऴु वॉन्ऱु पॉऱुत्तान्, ऍऱ्ऱिन नः(ह्)दवन् विल्लिनि लेऱ्ऱान् 913

उऱ्ऱु उऱु–यन्त्र जिसमें लगा था; तेर्–उस रथ के; चितैया मुन्–छिन्न-भिन्न हो जाने से पहले; उयर्न्तान्–राक्षस ऊपर उठा; मुऱ्ऱित वीरनै–रोकते हुए जिसने उसे घेर लिया, उस महावीर से; वानिन्–आकाश में ही रहकर; मुनिन्तान्–लड़ा; पॉन् तिरळ्–काले स्वर्ण के बने; नीळ् ऍऴु ऑन्ऱु–लम्बे दण्ड को; पॉऱुत्तान्–उठा लेकर; ऍऱ्ऱिनन्–(हनुमान ने) मारा; अ:तु–उसको; अवन्–उस निशाचर ने; विल्लितिल्–अपने धनु पर; एऱ्ऱान्–रोक झेल लिया। ९१३

यन्त्र-लगा रथ टूट जाय, इसके पहले ही राक्षस-सेनापति (पाँच में एक) ऊपर आकाश में उछल गया। वहाँ भी हनुमान ने उसे घेर लिया, तो वहीं से वह लड़ने लगा। काले स्वर्ण (लोहे) के बने एक दण्ड को लेकर हनुमान ने उस पर प्रहार किया। राक्षस ने उसे अपने धनु पर रोक लिया। ९१३

मुरिन्ददु मूरिवि लम्मुरि येहोंण्, डॅरिन्द वरक्कन्नोर् वॅऱ्पै यॅडुत्तान्
अरिन्द मनत्तव नन्दवॅ ळुक्कोंण्, डॅरिन्द वरक्कनै यिन्नुयि रुण्डान् 914

मूरि विल्–बलवान धनु; मुरिन्ततु–टूटा; अ मुरिये कोंण्टु–उसके खण्ड को ही लेकर; ऍरिन्त अरक्कन्–जिसने फेंका उस राक्षस ने; ओर् वॅऱ्पै ऍटुत्तान्–पर्वत को उठाया; अरिन्त मनत्तु अवन्–उसको ताड़नेवाले मन के हनुमान ने; अन्त ऍळु कोंण्टु–उस दण्ड को लेकर; ऍरिन्त अरक्कनै–फेंकनेवाले राक्षस को; इन् उयिर् उण्टान्–प्यारे प्राणों से हीन बना दिया (मार दिया)। ९१४

धनु टूटा। उसके टोटे को हनुमान पर फेंकने के बाद राक्षस ने एक पर्वत को उठाया। हनुमान उसका अभिप्राय समझ गया। उसने उसी दण्ड से उस राक्षस के प्राण हर लिये, जिसने उस पर धनु का टोटा फेंका था। ९१४

ऑळिन्दवर् नाल्वरु मूळि युरुत्त, कॉळुन्दुरु तीयॅन वॅञ्जिलै कोवाप्
पॉळिन्दवर् वाळि पुहैन्दन कण्गळ्, विळुन्दन शोरियव् वीरन् मणित्तोळ् 915

ऑळिन्तवर् नाल्वरुम्–बाक़ी रहे चारों ने; ऊळि–युगान्त में; उरुत्त–क्रोध से (भभक) उठी; कॉळुन्तु उरु–ज्वालामयी; ती ऍन–आग के समान; वॅम् चिलै–सन्तापक चापों में; कोवा–सन्धान करके; वाळि पॉळिन्तनर्–शर बरसाये; कण्कळ् पुकैन्तन–आँखें गुँगुआयीं; अ वीरन्–उस महावीर के; मणि तोळ्–सुन्दर कन्धों से; चोरि विळुन्तन–रक्तकण चुए। ९१५

(एक सेनापति मर गया।) बाक़ी चारों ने युगान्त की ज्वालाओं-सहित क्रुद्ध हो उठनेवाली आग के समान भयंकर धनुओं की डोरी लगाकर शर-वर्षा की। उनकी आँखें गुँगुआयीं। उन शरों के लगने से महावीर की सुन्दर भुजाओं से रक्त-कण ढलक आये। ९१५

आयिडै वीरनु मुळ्ळ मळन्ऱान्, माय वरक्कर् वलत्तै युणर्न्दान्
मीयॅरि युय्प्पदोर् कऱ्चॅल विट्टान्, तीयव रच्चिलै यॅप्पॉडि शॅय्दार् 916

अ इटै–तब; वीरनुम्–महावीर ने; उळ्ळम् अळन्ऱान्–तप्तमन होकर; माय अरक्कर्–वंचक राक्षसों के; वलत्तै–बल को; उणर्न्तान्–समझकर; मी–ऊपर; ऍरि उय्प्पतु–आग बरसानेवाले; ओर् कल्–एक पत्थर (पर्वत) को; चॅल विट्टान्–चलाया; तीयवर्–क्रूरों ने; अ चिलैयै–उस पर्वत को; पॉटि चॅय्तार्–चूर कर दिया। ९१६

तब हनुमान का मन भी उद्विग्न हो उठा। उसने मायावी राक्षसों के बल को जान लिया। उसने आग निकालते हुए जानेवाले एक पर्वत को उन पर चलाया। नृशंस राक्षसों ने उसे चूर कर दिया। ९१६

तॉडुत्त तॊडुत्त शरङ्ग ळुरन्दार्, अडुत्तहन् मार्बि नळुन्द वळन्ऱान्
मिडऱ्ऱॊळि लान्विड तेरोडु नॊय्दिन्, ऍडुत्तॊरु वन्ऱनै विण्णि नॆरिन्दान् 917

तॉट्टुत्त तॉट्टुत्त–बार-बार संधान कर; चरङ्कळ् तुरन्तार्–शर चलाये; अट्टुत्तु–लगकर; अकल् मार्पिल् अऴुन्त–(वे) उसके विशाल वक्ष में गड़े; अऴन्ऱान्–तब हनुमान नाराज हुआ; मिटल् तॉऴिलान्–साहसी योद्धा ने; विट्टु तेरॉटु–चलायमान रथ के साथ; ऑरुवन् तनै ऍटुत्तु–एक को उठा लेकर; विण्णिन् ऍऱिन्तान्–आकाश में फेंक दिया। ९१७

तब उन्होंने डोरी से लगा-लगाकर शर चलाये। वे उसके विशाल वक्षःस्थल में जाकर चुभे। क्रुद्ध हो, योद्धा हनुमान ने एक को उसके द्वारा चालित रथ के साथ लेकर आकाश में फेंक दिया। ९१७

एय्न्दॅऴु	तेरुमव्	विण्णितै	यॅल्लाम्
नीन्दिय	दोडि	निमिर्न्ददु	वेहम्
ओय्न्ददु	वीऴ्वदन्	मुन्नुयर्	पारिल्
पाय्न्दवन्	मेलुडन्	मारुदि	पाय्न्दान् 918

एय्न्तु–आकाश में लगा; ऍऴु तेरुम्–उठ जानेवाला वह रथ भी; अ विण्णितै ऍल्लाम्–उस आकाश भर में; नीन्तियतु–तैरा; ओटि निमिर्न्ततु–दौड़ मारी; वेकम् ओय्न्ततु–वेग कम हुआ; वीऴ्वतन् मुन्–गिरने से पहले; उयर् पारिल्–उन्नत भूमि पर; पाय्न्तवन् मेल्–जो कूदा उस पर; उटन्–झट; मारुति पाय्न्तान्–मारुति झपटा। ९१८

उछाला गया वह रथ आकाश को पार कर ऊपर चला। उसका वेग कम हो गया। और उसके नीचे गिरने से पहले राक्षस भूमि पर कूद पड़ा। उस पर हनुमान झपटा। ९१८

मदित्त	कळिऱ्ऱिनिल्	वाळरि	येऱु
कदित्तदु	पाय्वदु	पोऱ्कदि	कॉण्डु
कुदित्तवन्	माल्वरैत्	तोळ्हळ्	कुऴम्प
मिदित्तनन्	वॅञ्जिन	वीररुळ्	वीरन् 919

वॅम् चित्त–भयंकर क्रुद्ध; वीररुळ् वीरन्–वीरों में (सर्वश्रेष्ठ) वीर महावीर ने; मतित्त कळिऱ्ऱिनिन्–मत्त गजों पर; वाळ् अरि एऱु–प्रकाशमय पुरुष सिंह; कतित्ततु–क्रोध करके; पाय्वतु पोल्–झपटता जैसे; कति कॉण्टु–गति अपनाकर; कुतित्तु–कूदकर; अवन्–उसके; माल् वरै–बड़े पर्वत-सम; तोळ्कळ्–कन्धे; कुऴम्प–कर्दम-सा बन जाय, ऐसा; मितित्तनन्–कुचल डाला। ९१९

क्रुद्ध वीरों में (सर्वश्रेष्ठ) वीर (महावीर हनुमान) ने, मत्तगज पर तेजोवान पुरुष सिंह क्रुद्ध होकर झपटा जैसे वेग के साथ उस पर झपटा और उसके बड़े पर्वत-सम कन्धों को कर्दम बनाते हुए अपने पैरों से कुचल डाला और वह मर गया। ९१९

मूण्ड शिनत्तवर् मूवर् मुनिन्दार्, तूण्डिय तेरर् शरङ्ग डुरन्दार्
वेण्डिय वॅञ्जमम् वेऱु विळैप्पार्, याण्डिनि येहुदि यॅन्ऱॅदिर् शॅन्ऱार् 920

मूवर्-(बाक़ी) तीनों ने; मूण्ट चित्तत्तवर्-उठे क्रोध से; मुतिन्तार्-हनुमान पर नाराज़ होकर; तूण्टिय तेरर्-उकसाये गये रथ वाले होकर; चरङ्कळ्-शर; तुरन्तार्-चलाये; वॆण्टिय-इच्छित; वॆम्बु चमर्-भयानक युद्ध; वेऱु विळैप्पार्-और तरह के भी करते; याण्टु-कहाँ; इति-अब; एकुति-जाओगे; ऍन्ऱु-कहते हुए; ऍतिर् चॆन्ऱार्-(हनुमान के) सामने आये। ९२०

(दो चल बसे।) बाक़ी तीनों पहले ही क्रुद्ध थे। (अब उनके क्रोध का पारा और भी चढ़ गया।) अतिक्रुद्ध उन्होंने रथ को आगे चलाते हुए शर चलाये। वे अन्य प्रकारों के युद्ध करने को भी उद्यत हो गये। 'अब तू जायगा कहाँ?' कहते हुए वे हनुमान के सामने गये। ९२०

तिरण्डुयर् तोळिणै यञ्जनैच् चिङ्गम्, अरण्डरु विण्णुऱै वार्हळु मञ्ज
मुरण्डरु तेरवै याण्डोरु मून्ऱिल्, इरण्डै यिरण्डु कैयिर्कोण् डॆळुन्दान् 921

तिरण्टु उयर्-पुष्ट और उन्नत; तोळ् इणै-भुजाद्वय का; अञ्चनै चिङ्कम्-अंजना का केसरी (-सम पुत्र); अरण् तरु-रक्षणदायक; विण्-आकाश में; उऱै-वार्कळुम्-रहनेवालों के; अञ्च-डरते; आण्टु-वहाँ; मुरण् तरु-सारयुक्त; तेर् अवै ओरु मून्ऱिल्-तीन रथों में; इरण्टै-दो को; इरण्टु कैयिल् कॊण्टु-हाथों में उठा लेते हुए; ऍळुन्तान्-ऊपर उछला। ९२१

दो पुष्ट और उन्नत कन्धों वाला अंजना का सिंह (-सदृश) हनुमान सुरक्षित आकाश के वासी देवों को भी भयभीत करते हुए वहाँ रहे सुदृढ़ रथों में दो को अपने हाथों में उठा लेकर ऊपर उछला। ९२१

तूङ्गिय पाय्परि सूद रुलैन्दार्, वीङ्गिय तोळवर् विण्णिन् विशैत्तार्
आङ्गदु कण्डवर् पोयह लामुन्, ओङ्गिनन् मारुदि यॊल्लैयि नुऱ्ऱान् 922

तूङ्किय-लटकते हुए; पाय् परि-सरपट दौड़नेवाले अश्व; चूतर्-और सूत; उलैन्तार्-मर गये; वीङ्किय तोळ् अवर्-स्थूल कन्धों वाले वे दोनों; विण्णिल् विचैत्तार्-आकाश में तेज़ चले; आङ्कु अतु कण्टु-तब उसको देखकर; अवर् पोय् अकला मुन्-उनके दूर जाने से पहले; मारुति-मारुति; ओङ्कितन्-ऊपर उठा; ऑल्लैयिल् उऱ्ऱान्-शीघ्र पास गया। ९२२

तब जो अश्व और सूत लटके रहे, वे मिटे। स्थूल कन्धों वाले दोनों राक्षस आकाश में तेजी से जाने लगे। हनुमान ने वह देखा और उनके दूर जाने से पहले उछलकर उनके पास गया। ९२२

कालिमिर् वॆञ्जिलै कैयि ऩिऱुत्तान्, आनवर् तूणियुम् वाळु महैत्तान्
एनैय वॆम्बडै यिल्लव रॆञ्जार्, वानिडै निन्ऱुयर् मल्लिन् मलैन्दार् 923

काल् निमिर्-दो छोरों के साथ तने हुए; वॆम् चिलै-कठोर धनु को; कैयिन् इऱुत्तान्-हाथों से तोड़ा; आनवर्-उनके; तूणियुम् वाळुम्-तूणीरों और तलवारों

को; अकॅत्तात्–तोड़कर मिटाया; एतैय वॅम्पटै–अन्य हथियारों से; इल्लवर्–हीन वे; अॅञ्चार्–पिछड़े नहीं; वान् इटै निन्ऱु–आकाश में स्थित होकर; उयर् मल्लिन्–उत्कृष्ट मल्लयुद्ध में; मलैन्तार्–भिड़े। ६२३

हनुमान ने दोनों छोरों के साथ उठे हुए उनके कठोर धनुओं को अपने दोनों हाथों से पकड़कर तोड़ दिया। उनके तूणीरों और उनकी तलवारों को भी तोड़कर मिटा दिया। उनके पास कोई और मारू हथियार नहीं थे। तो भी वे पिछड़े नहीं। ऊपर अन्तरिक्ष में ही रहकर मल्लयुद्ध करने लगे। ९२३

वॅळ्ळै ऍयिऱ्ऱर् करुत्तुयर् मॅय्यर्, पिळ्ळ विरित्त पॅरुम्बिल वायर्
कॉळ्ळ वुरुत्तॅळु कोळर वॊत्तार्, ऑळ्ळिय वीर नरुक्कनै यॊत्तान् 924

वॅळ्ळै ऍयिऱ्ऱर्–श्वेत दाँतों वाले; करुत्तु–काले; उयर् मॅय्यर्–ऊँचे शरीर वाले; पिळ्ळ–फूटे; विरित्त–खुले; पॅरुम्–बड़े; पिल वायर्–बिल के समान मुखों वाले; कॉळ्ळ–पकड़ने के लिए; उरुत्तु–क्रुद्ध होकर; ऍळु–उठनेवाले; कोळ् अरवु ऑत्तार्–ग्रह (राहु-केतु) सर्प के समान बने; ऑळ्ळिय वीरन्–तेजोमय महावीर; अरुक्कनै ऑत्तान्–सूर्य के समान लगा। ६२४

श्वेत दाँत वाले, काले और तगड़े शरीर वाले, फटे-से बिल के समान बड़े मुख वाले वे दोनों राहु और केतु नाम के बलवान सर्प-ग्रहों के समान लगे, जो (सूर्य को) पकड़कर निगलने के लिए उठ आते हों। तेजोमय हनुमान सूर्य के समान शोभा। ९२४

ताम्बॅन वालिन् वरिन्दुयर् ताळो, डॅम्ब लिलारिरु तोळ्ह ळिऱुत्तान्
पाम्बॅन नीङ्गिनर् पट्टनर् वीऴ्न्दार्, आम्ब नॆडुम्बहै पोल्बव निन्ऱान् 925

एम्पल् इलार्–अथक उनके; इरु उयर् ताळ् ओटु–दो लम्बे पैरों के साथ; तोळ्कळ्–लम्बी भुजाओं को; वालिन्–अपनी पूँछ से; ताम्पु ॲन–दाम-से जैसे; वरिन्तु–बाँधकर; इऱुत्तान्–तोड़ा; पाम्पु ॲन–सर्पों के समान; नीङ्कितर्–छूटकर; पट्टनर्–निहत होकर; वीऴ्न्तार्–गिरे; आम्पल्–कुमुद के; नॆटुम् पकै–दीर्घ शत्रु, सूर्य; पोल्पवन्–के समान जो रहा; निन्ऱान्–वह (हनुमान) विना आँच के खड़ा रहा। ६२५

हनुमान ने अथक उन दोनों के पैरों और कन्धों को अपनी पूँछ की रस्सी से कसकर उनको तोड़ दिया। वे राहु और केतु नाम के सर्पों के समान दूर हटे; फिर गिरे और मरे। कुमुद-शत्रु सूर्य के समान हनुमान (विना किसी आँच के) खड़ा रहा। ९२५

निन्ऱव नॆन्नैय निन्ऱदु कण्डान्, कुन्ऱिडै वावुरु कोळरि पोल
मिन्ऱिरि वन्ऱले मीदु कुदित्तान्, पॊन्ऱिय वन्बुवि तेरॊडु पुक्कान् 926

निन्ऱवन्–जो खड़ा रहा, वह; एनैयन्–बाक़ी रहे एक को; निन्ऱतु–खड़ा रहता;

कण्टान्–देखकर; कुन्ऱु इटै–पर्वत पर; वावु उऱु–लपकनेवाले; कोळरि पोल–सिंह के समान; मिन् लिरि–बिजली के समान रह-रहकर प्रकट होनेवाले; वन् तलै मीतु–कठोर सिर पर; कुतित्तान्–कूदा; अवन् पोन्ऱि–वह मरकर; तेर् ओटु–रथ के साथ; पुवि पुक्कान्–भूमि पर गिरा। ९२६

इस भाँति जो स्थित रहा, उस हनुमान ने उन पाँच सेनापतियों में एक को अपने सामने खड़ा हुआ देखा। उसका सिर उसकी माया-शक्ति के कारण बिजली के समान रह-रहकर प्रकट हो रहा था। उस कठोर सिर पर हनुमान, पर्वत पर झपटनेवाले केसरी के समान उछलकर कूदा। उस राक्षस ने अपने प्राण छोड़ दिये और वह रथ-सहित भूमि पर गिर गया। ९२६

वञ्जमुङ् गळवुम् वें:(ह्)हि वळियला वळिमे लोडि
नञ्जिनुम् कॉडिय राहि नवैशॅयर् कुरिय नीरार्
वॆञ्जिन वरक्क रैव रॊरुवने वॆल्लप् पट्टार्
अञ्जॆनुम् बुलन्ग ळॊत्ता रनुमनु मऱिवै यॊत्तान् 927

वञ्चमुम्–वंचना और; कळवुम्–चोरी; वॆ.'.कि–चाहकर; वळि अला–बुरे; वळि मेल् ओटि–मार्ग में दौड़-फिरकर; नञ्चिनुम् कॊटियर् आकि–विष से भी नृशंस बनकर; नवै चॅयर्कु–परपीडन करने में; उरिय नीरार्–प्रवृत्त गुण वाले; वॆम् चित–भयंकर क्रोधी; अरक्कर् ऐवर्–पाँच राक्षस; ऒरुवने वॆल्लप्पट्टार्–अकेले हनुमान द्वारा ही जीते गये; अञ्चु ऎनुम् पुलन्कळ् ऒत्तार्–पंचेन्द्रिय के समान रहे; अनुमनुम्–हनुमान भी; अऱिवै ऒत्तान्–ज्ञान के समान रहा। ९२७

वे पाँचों वञ्चना और चोरी पर आसक्त, कुमार्गगामी, विष से भी अधिक क्रूर और नृशंसकार्यतत्पर स्वभाव वाले थे। वे पाँचों एकाकी हनुमान द्वारा मारे गये। वे पञ्चेन्द्रिय के समान रहे और हनुमान ज्ञान के समान था। ९२७

नॆय्दलै युऱ्ऱ वेऱ्कै निरुदरच् चॅरुवि नेर्न्दार्
उय्दलै युऱ्ऱु मीण्डा रॊरुवरु मिल्लै युळ्ळार्
कैदलैप् पूशल् पॊङ्गक् कडुहिनर् काल नुट्कुम्
ऐवरु मुलन्द तन्मै यत्तैवरु ममैयक् कण्डार् 928

अ चॅरुविल् नेर्न्तार्–उस युद्ध में जो लड़े; नॆय् तलै उऱ्ऱ–घृत-लगे सिर वाली; वेल् कै निरुतर्–शक्ति-हस्त राक्षस; उय्तलै उऱ्ऱु–बचकर; मीट्टार्–लौटे; ऒरुवरुम् इल्लै–कोई नहीं रहे; उळ्ळार् अत्तैवरुम्–जो (बचे) थे वे सभी; कालन् उट्कुम्–यम भी जिनसे डरता था वे; ऐवरुम् उलन्त तन्मै–पाँचों जैसे मरे उस प्रकार को; अमैय कण्टार्–समक्ष देखकर; कै तलै–युद्धभूमि से; पूचल् पॊङ्क–शोर मचाते हुए; कटुकिनर्–(रावण के पास) सवेग गये। ९२८

उस युद्ध में लगे रहे घृत-मले सिर वाले भालाओं के धारक राक्षसों

में कोई भी बचकर नहीं लौटा। जो विना लड़े छिपे रहे, उन्होंने यम को भी डरानेवाले उन पाँचों का मरना प्रत्यक्ष देखा। वे युद्धस्थल से शोर मचाते हुए रावण के पास बहुत जल्दी जा पहुँचे। ९२८

इरुक्कुरु मिऩ्ऩे नम्मैक् कुरङ्गॉन विरङ्गि येङ्गि
मरुक्कुरु हिऩ्ऱ नॅञ्जिऩ् मादरै वैदु नोक्कि
उरुक्कुरु शॉल्ला नूऴित् तीयॅऩ्ऩ वुलह मेऴुम्
जुरुक्कॊळ नोक्कुवाऩ्ऱऩ् शॅवित्तॊळै तीयच् चॊऩ्ऩार् 929

कुरङ्कु–वानर; नम्मै–हमें; इऩ्ऩे–आज ही; इरुक्कुरुम्–मार देगा; ॲऩ्ऩ–ऐसा; एङ्कि–डरकर; इरङ्कि–दुःखी होकर; मरुक्कु उरुकिऩ्ऱ–व्यग्र; नॅञ्चिऩ्–मन वाली; मातरै–स्त्रियों को; वैतु नोक्कि–डाँटकर देखकर; उरुक्कु उरु–डपट के; चॊल्लाल्–शब्दों में; ऊऴि ती ॲऩ्ऩ–प्रलयाग्नि-सम; उलकम् एऴुम्–सातों लोकों को; चुरु कॊळ–जलाते-से; नोक्कुवाऩ् तऩ्–घूरनेवाले (रावण) के; चॅवि तॊळै–कर्ण-रन्ध्र; तीय–जल जाएँ, ऐसा; चॊऩ्ऩार्–बोले। ९२९

वहाँ स्त्रियाँ "यह वानर आज ही हमें मार देगा" —यह कहते हुए डर से दुःखी और उद्विग्न हो रही थीं और रावण उन्हें डाँट रहा था। डपट के शब्द कहते हुए उसने इनको युगान्तकालीन अग्नि के समान ऐसा घूरकर देखा, मानो सातों लोकों को जला दे। ऐसे उसके वीसों कर्ण-रन्ध्रों को झुलसाते-से उन्होंने कहा (निम्नांकित समाचार)। ९२९

तानैयु मुलन्द दैया तलैवरुञ् जमैन्दार् ताक्कप्
पोनबिन् मीळ्वेम् यामे यदुवुम्बोर पुरिहि लामै
वानैयुम् वॅन्ऱ ळोरै वल्लैयिऩ् मडिय नूऱि
एनैय रिन्मै शोम्बि यिरुन्ददक् कुरङ्गु मॅन्ऱार् 930

ऐया–प्रभु; तानैयुम् उलन्ततु–सेना भी मिट गयी; तलैवरुम् चमैन्तार्–नायक (पंच सेनापति) भी पक गये (मिट गये); ताक्क–युद्ध करने; पोऩ पिऩ्–जाने के पश्चात्; यामे मीळ्वेम्–हमी बचे; अतुवुम्–वह भी; पोर् पुरिकिलामै–लड़ाई न करने से; अ कुरङ्कु–वह वानर; वाऩैयुम् वॅऩ्ऱ उळोरै–जिन्होने आकाश को भी जीता था, उन (पाँचों) को; वल्लैयिऩ्–शीघ्र; मटिय नूऱि–मार-मिटाकर; एऩैयर् इऩ्मै–औरों के न होने से; चोम्पि–आलस्य अवलम्बन कर; इरुन्ततु–रहा; ॲऩ्ऱार्–(उन्होंने) कहा। ९३०

मालिक! सेनाएँ सूख (मिट) गयी हैं। नायक भी पक (मर) गये। युद्ध के बाद हम ही बचे। वह भी हमने लड़ाई में भाग नहीं लिया, इस वजह से। वह वानर अतिशीघ्र देवलोकविजयी पाँचों सेनापतियों को मारकर योद्धा न होने के कारण आलस्य का अवलम्बन करके चुप बैठा रहता है। ९३०

10. अक्ककुमारन् वदैप् पडलम् (अक्षकुमार-वध पटल)

केट्टलुम् वॅहुळि वॅन्दीक् किळर्न्दॅळु मुयिर्प्प ताहित्
तोट्टलर् तॅरियल् माले वण्डोडुञ् जुरुक्कॉण् डेऱ
ऊट्टरक् कुण्ड पोलु नयनत्ता नॉरुप्पट् टानैत्
ताट्टुणै तॉळुदु मैन्दन् इडुत्तिडै तरुदि यॅन्ऱान् 931

केट्टलुम्–सुनते ही; वॅकुळि वॅम् ती—क्रोध रूपी भयंकर अग्नि; किळर्न्तु ऍळुम्–भभक उठे ऐसा; उयिर्प्पत् आकि–लम्बी साँस छोड़नेवाला बनकर; तोट्टु अलर्–विकसित दलों के; तॅरियल् माले–चुने हुए फूलों की माला; वण्टु ओटुम्–भ्रमरों के साथ; चुरुक् कॉण्टु एऱ–जल-झुलस जाय, ऐसा; ऊट्टु अरक्कु उण्ट पोलुम्–लाख जिनमें भरी हो, ऐसी; नयनत्तान्–आँखों के साथ; ऑरुप्पट्टानै–(लड़ने को) उद्यत उसको; ताळ् तुणै तॉळुतु–चरणद्वय पर नमस्कार करके; तदुत्तु–रोककर; मैन्तन्–पुत्र (अक्षकुमार) ने; इटै तरुति–मुझे अवकाश दीजिए; ऍन्ऱान्–कहा। ९३१

सुनते ही रावण की साँसें क्रोधाग्नि के साथ लम्बी उठीं। उसकी आँखें लाख के समान लाल हुईं और उनसे निकलनेवाले उष्ण से विकसित दल वाले और श्रेष्ठ फूलों की माला भ्रमरों के साथ झुलस गयी। वह युद्धोद्यत हुआ। तब अक्षकुमार ने उसके दोनों पैरों पर नमस्कार करके उसे रोका और निवेदन किया कि मुझे मौक़ा दीजिए। (अक्षकुमार रावण का ही पुत्र था। मन्दोदरी के पेट से इन्द्रजित् के बाद जनमा।)। ९३१

मुक्कणा नूर्दि यन्ऱे मूवुल हडियिर् ऱायोन्
ऑक्कवूर् पऱवै यन्ऱे यवन्ऱुयि लुरह मन्ऱे
तिक्कय मल्ल देपुन् कुरङ्गिन्मेऱ् चेऱि पोलाम्
इक्कड नडियेऱ् कीदि यिरुत्तियोण् डिनिदि लॅन्दाय् 932

ऍन्ताय्–पिताजी; मुक्कणान् ऊर्ति अन्ऱे–त्रिनेत्र शिवजी का वाहन (बैल) तो नहीं; मू उलकु–तीनों लोकों को; अटियिल्–पैरों से; तायोन्–जिसने लाँघकर नापा; ऑक्क ऊर्–(उस विष्णु के) युक्त रूप से सवारी बने; पऱवै अन्ऱे–पक्षी भी नहीं; अवन् तुयिल्–जिस पर वह सोता है, वह; उरकम् अन्ऱे—उरग नहीं; तिक्कयम् अल्लते–दिग्गज भी नहीं; पुन् कुरङ्किन् मेल्–अल्प मर्कट पर; चेऱि पोलाम्–आक्रमण करो क्या; इ कटन्–यह कर्तव्य; अटियेऱ्कु ईति–दास मेरे पास वे दें; ईण्टु–इधर; इतितिन्–सुख से; इरुत्ति–आप रहें। ९३२

अक्षकुमार आगे बोला। पिताजी! क्या वह त्रिनेत्र का वाहन, बैल आ गया कि आप स्वयं जायँ लड़ने के लिए? या त्रिलोकमापक त्रिविक्रमदेव विष्णु का वाहन गरुड़ पक्षी है? वह उसकी शय्या उरग भी नहीं है न! दिग्गजों में कोई भी नहीं। अल्प वानर है, उस पर चढ़

चलेंगे ? यह कर्तव्य मुझे सौंप दीजिए। आप यहाँ निश्चिन्तता के साथ रहिए। ९३२

अण्डर्होन् ऱन्नैप् पऱ्ऱित् तरुहॅन वडियेन् निऱ्कक्
कॉण्डनै यॅम्मुन् ऱन्नैप् पणियॅन नॅञ्जङ् गॉण्ड
दुण्डदु तीरु मन्ऱे युरनिलाक् कुरङ्गॉन् ऱेनुम्
ॲण्डिशै वॅन्ऱ नीये येवुदि यॅन्नै यॅन्ऱान् 933

अटियेन् निऱ्क–मेरे (दास के) रहते; ॲन् मुन् तन्नै–मेरे ज्येष्ठ (मेघनाद) से; अण्टर् कोन् तन्नै–देवराज को; पऱ्ऱि तरुक–पकड़ लाओ; ॲन–ऐसा; पणि कॉण्टनै–वह सेवा आपने करवा ली; ॲन–ऐसा; नॅञ्चम् कॉण्टतु–मेरे मन ने सोचा; उण्टु–था; उरन् इला–निर्बल; कुरङ्कु ॲन्ऱेनुम्–वानर भी हो तो; अतु–वह तरस; तीरुम् अन्ऱे–दूर होगी न; ॲण् तिचै वॅन्ऱ–आठों दिशाओं के विजयी; नीये–आप ही; ॲन्नै एवुति–मुझे भेजें; ॲन्ऱान्–कहा। ९३३

पहले भी, मेरे रहते आपने मेरे बड़े भाई मेघनाद को देवेन्द्र को पकड़ लाने का कार्य सौंपा और उनसे सेवा करवा ली। तभी मेरे मन में यह बात लगी थी। अब निर्बल वानर ही सही, एक मौक़ा दीजिए, तो वह हूक मिटेगी न! आठों दिशाओं के विजेता, आप ही स्वयं मुझे उस कार्य पर जाने की आज्ञा दीजिए। ९३३

कॉय्दळिर् कोदुम् वाऴ्क्कैक् कोडरत् तुरुवु कॉण्डु
कैदवङ् गण्णि यीण्डोर् शिऱुपिऴै यिऴैक्कुङ् गऱ्पाल्
ॲय्दिन निमैया मुक्क णीशने यॅन्ऱ पोदुम्
नॉय्दिनिन् वॅन्ऱु पऱ्ऱित् तरुहुवॅ नॊडियि नुन्पाल् 934

इमैया–जो पलक नहीं मारते; मुक्कण् ईचने–त्रिनेत्र परमेश्वर स्वयं; कॉय् तळिर् कोतुम्–तोड़े हुए पल्लव खाने का; वाऴ्क्कै–जीवन बितानेवाले; कोटरत्तु उरुवु कॉण्टु–वानर का रूप धरकर; कैतवम् कण्णि–वंचना सोचकर; ईण्टु–यहाँ; ओर् चिऱु पिऴै–एक छोटा अपराध; इऴैक्कुम् कऱ्पाल्–करने की परिकल्पना लेकर; ॲय्तितन् ॲन्ऱ पोतुम्–आया हो तो भी; नॉय्तितिन् वॅन्ऱु–शीघ्र जीतकर; नॊटियिन्–पल भर में; उन्पाल्–आपके पास; पऱ्ऱि–पकड़कर; तरुकुवॅन्–लाकर दे दूँगा। ९३४

अपलक त्रिनेत्र परमेश्वर स्वयं छिन्न पल्लवों को खाकर जीवन बितानेवाले बन्दर का रूप लेकर और वञ्चना के विचार से यहाँ छोटी हानि करने का संकल्प लेकर आया हो, तो भी मैं उसको आसानी से जीतूँगा और शीघ्र पकड़ लाकर आपको दे दूँगा। ९३४

तुण्डत्तु णदनिऱ् ऱोन्ऱुङ् गोळरिशुडर् वॅण् गोट्टु
मण्डोत्त निमिर्न्द पन्ऱि यायिनु मलैद लाऱ्ऱा

अण्डत्तैक् कडन्दु पोहि यप्पुऱत् तहलि नॆन्बाल्
तण्डत्तै यिडुदि यन्ऱे निन्वयिऱ् ऱन्दि लेनेल् 935

तुण्ट तूण् अततिल्–टोटे खम्भे से; तोन्ऱम्–जो प्रकट हुआ वह; कोळरि–सिंह भी हो तो; चुटर् वॆण् कोट्टु–चमकदार श्वेत दाँतों में; मण् तोंगुत–भूमि लटकी रही; निमिर्न्त–(वैसा) जो बढ़ा; पन्ऱि आयितुम्–वराह हो तो भी; मलैतल् आऱ्ऱा–मुझसे लड़ नहीं सकेगा; अण्टत्तै कटन्तु पोकि–अण्ड के पार जाकर; अ पुऱत्तु–उस तरफ़ के; अकलिन्–(अण्ड में) चला जाय तो भी; निन् वयिन्–आपके पास; तन्तु इलेन् ऎल्–नहीं दूँगा तो; तण्टत्तै इटुति–दण्ड दे दीजिए। ९३५

काष्ठांश एक खम्भे से जो बाहर आया, वह (नर)-सिंह भी क्यों न हो; या वह वराह क्यों न हो, जिसके दाँतों में भूमि उठा ली गयी थी और जो बहुत अधिक बढ़ा था —दोनों मेरे विरुद्ध लड़ने में समर्थ नहीं हैं। वह वानर अण्ड को पारकर बाह्याण्ड में चला जाए, तो भी उसे पकड़ लाकर आपके पास नहीं दूँ तो आप मनमानी सज़ा दिला दें। ९३५

ऎन्नविवै यियम्बि यीदि विडैयॆन्न विऱैञ्जि निन्ऱ
वन्नैहऴल् वयिरत् तिण्डोण् मैन्दनै महिऴ्न्दु नोक्कित्
तुन्नैपरित् तेरि नेऱिच् चेऱियॆन् ऱिन्नैय शॊन्नान्
पुन्नैमलर्त् तारि नानुम् पोरणि यणिन्दु पोनान् 936

ऎन्न—ऐसा; इवै इयम्पि–ये बातें कहकर; विटै ईति—आज्ञा दें; ऎन्न–कहकर; इऱैञ्चि निन्ऱ–सविनय खड़े रहे; वन्नै कऴल्–बद्ध पायलधारी; वयिर तिण् तोळ्–वज्रस्कन्ध; मैन्तनै—अपने पुत्र को; मकिऴ्न्तु नोक्कि–सहर्ष देखकर; तुन्नै–तीव्रगामी; परि–अश्व-जुते; तेरिन् एऱि—रथ पर चढ़कर; चेऱि–चलो; ऎन्ऱु–कहकर; इन्नैय चॊन्नान्—ऐसी बातें कहीं (रावण ने); मलर् पुन्नै–पुष्पकलित; तारिनानुम्—मालाधारी (अक्षकुमार) भी; पोर् अणि—युद्धसज्जा; अणिन्तु पोनान्–सजाकर गया। ९३६

ऐसी ये बातें कहकर बँधी हुई पायलधारी वज्रस्कन्ध अक्षकुमार यह विनय-निवेदन करके खड़ा रहा कि मुझे आज्ञा दें। रावण ने उसे सहर्ष देखा और कहा कि तीव्रगति अश्वों के जुते रथ पर सवार होकर जाओ। रावण ने और भी अन्य आवश्यक सलाहें दीं। पुष्पों की सुन्दर रीति से गुँथी मालाधारी अक्षकुमार भी युद्धोचित साज सजाकर गया। ९३६

एऱिन्न ऎन्ब मन्नो विन्दिर नहलिल् विट्ट
नूऱॊडु नूऱु पूण्ड नॊऱिल्वयप् पुरवि नोन्ऱेर्
कूऱिन्न ररक्क राशि कुमुऱिन्न मुरशक् कॊण्मू
ऊऱिन्न वुरवुत् तानै यूऴिपेर् कडलै यॊप्प 937

इन्तिरन्–इन्द्र ने; इकलिल् विट्ट–जिनको युद्ध में त्याग दिया था; नॊऱिल्–

तीव्रगति; वय–विजयदायी; नूऱ्ऱॊडु नूऱ्–दो सौ; पुरवि पूण्ट–अश्व जिसमें जुते थे; नोऩ् तेर्–सवल रथ पर; एऱितऩ्–चढ़ा; अरक्कर्–राक्षसों ने; आचि कूऱिऩर्–आशीर्वाद के वचन कहे; मुरच कॊण्मू–भेरियाँ रूपी मेघ; कुमुऱिऩ–घहर उठे; उरवु ताऩै–सवल सेनाएँ; ऊऴि पेर् कटलै ऑप्प–युगान्त में उमग आनेवाले सागर के समान; ऊऱिऩ–उत्तरोत्तर वढ़ती आयीं; ऍऩ्ऩ–कहते हैं। ९३७

अक्षकुमार के रथ में दो सौ तीव्रगति और विजयदायी अश्व जुते थे और वे थे जिन्हें इन्द्र युद्ध में छोड़कर भागा था। वह उस पर सवार हुआ और राक्षसों ने आशिष दी। भेरियाँ मेघ के समान घहर उठीं। सेनाएँ उमग आनेवाले प्रलय-सागर के समान उत्तरोत्तर वढ़ती आयीं। ९३७

पॊरुहडऩ् महर ऍण्णि लॆण्णलाम् बूट्कै पॊङ्गित्
तिरिवऩ मीऩ्ग ळॆण्णि लॆण्णलाञ् जॆम्बॊऩ् ऱिण्डेर्
उरुवुरु मणलै यॆण्णि ऩॆण्णला मुरवुत् ताऩै
वरुदिरै निरैयै यॆण्णि ऩॆण्णलाम् वावुम् वाशि 938

पॊरु कटल्–लहरें जिसमें टकराती हैं, उस सागर के; मकरम् ऍण्णिऩ्–मकरों को गिना जा सकता है तो; पूट्कै ऍण्णल् आम्–हाथियों को भी गिना जा सकता है; पॊङ्कि–ऊपर उठ आकर; तिरिवऩ–जो संचार करती हैं, उन; मीऩ्कळ्–मछलियों को; ऍण्णिऩ्–गिन सकें तो; चॆम् पॊऩ्–लाल स्वर्ण के; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथों का; ऍण्णल् आम्–गिनना हो सकता है; उरुवु अरु–तरंगों से लाये जाकर एकत्रित; मणलै ऍण्णिल्–वालुओं को गिन सकते हैं तो; उरवु ताऩै–वलवान सैनिकों को; ऍण्णलाम्–गिना जा सकता है; वरु तिरै निरैयै ऍण्णिऩ्–आनेवाली तरंग-राशियों को गिना जा सकता है, तो; वावुम् वाचि–सरपट दौड़नेवाले अश्वों को; ऍण्णलाम्–गिना जा सकता है। ९३८

(उसकी चतुरंगिनी सेना की गिनती देखो—) लहरप्रताडित समुद्र के मकरों को गिनकर वता सकते है? तो गजों को भी गिना जा सकता था। जल के सतह पर आकर संचार करनेवाली मछलियों को गिना जा सकता है? तो उस सेना में के लाल स्वर्ण के सवल रथों को गिना जा सकता था। लहरों द्वारा एकत्रित वालुओं की संख्या की गिनती पा सकते हैं? तो सेना के वीरों की संख्या भी गणित की जा सकती थी। एक के वाद एक आनेवाली लहरों की पंक्तियों को गिन सकते हैं? तो सरपट दौड़नेवाले अश्वों को भी गिना जा सकता था। ९३८

आऴिरण् डडुत्त वॆण्णि लायिरङ् गुमर रावि
वेऱिलात् तोळ्र् वॆन्ऱि यरक्कर्तम् वेन्दर् मैन्दर्
एऱिय तेरर् शूऴ्न्दा रिरुदियिऩ् यावु मुण्वान्
शीऱिय कालत् तीयिऩ् शॆऱिशुडरच् चिहैह ळऩ्ऩार् 939

इऱुतियिल्–युगान्त में; यावुम् उण्पाऩ्–सवको मिटाने; चीऱिय–उभर उठी;

काल तीयिऩ्–प्रलयाग्नि की; चॅऱि–घनी; चुटर्–ज्वलन्त; चिकैकळ् अऩ्ऩार्–ज्वालाएँ जैसे; आवि वेऱ इला–अनन्यप्राण; तोळर्–साथी; वॅन्ऱि अरक्कर् तम्–विजेता राक्षसों के; वेन्तर् मैन्तर्–राजाओं के पुत्र; ऍण्णिल्–गिनती में; आऱु इरण्टु अटुत्त–बारह के; आयिरम् कुमरर्–सहस्र कुमार; एऱिय तेरर्–रथारूढ़; चूऴ्न्तार्–घेर आये। ६३६

युगान्त में सृष्टि भर को मिटाने हेतु भभक उठी प्रलयाग्नि की घनी और तेजोमय ज्वालाओं के समान रहनेवाले, अक्षकुमार के अनन्यप्राण मित्र, और विजयशील राक्षस राजाओं के सुत, बारह सहस्र कुँअर रथों पर आरूढ़ होकर उसके साथ उसको घेरते हुए गये। ९३९

मन्दिरक् किळवर् मैन्दर् मदिनिऱै यमैच्चर् मक्कळ्
तन्दिरत् तलैव रीऩ्ऱ तनयर्हळ् पिऱरुन् दादैक्
कन्दरत् तरम्बै मारिऱ् ऱोन्ऱिऩ रक्क रान्ोर्
ऍन्दिरत् तेरर् शूऴ्न्दा रीरिरण् डिलक्कम् वीरर् 940

मन्तिर किळवर्–मन्त्रणा के पदाधिकारी लोगों के; मैन्तर्–पुत्र; मति निऱै–बुद्धिमान; अमैच्चर् मक्कळ्–सचिवों के पुत्र; तन्तिर तलैवर्–सेनापतियों के; ईऩ्ऱ तनयर्कळ्–जनाये पुत्र; अन्तरत्तु अरम्पैमारिल्–आकाश की अप्सराओं के; तातैक्कु तोऩ्ऱिऩर्–पिता रावण द्वारा उत्पन्न; अरक्कर् आऩोर्–राक्षस; पिऱरुम्–और अन्य; ईर् इरण्टु इलक्कम्–चार लाख के; वीरर्–वीर; ऍन्तिर तेरर्–यन्त्रचालित रथों के; चूऴ्न्तार्–घेर आये। ६४०

मन्त्रणा के अधिकारियों के पुत्र, बुद्धिमान सचिवों के पुत्र, सेनानायकों के पुत्र और अप्सराओं के गर्भ से जनमे अक्षकुमार के पिता रावण के पुत्र जो राक्षस थे वे और अन्य —सब मिलाकर चार लाख वीर यन्त्रयुक्त रथों पर आरूढ़ होकर उसके चारों ओर आकर इकट्ठे हुए। ९४०

तोमर मुलक्कै शूलञ् जुडर्मऴु कुलिशन् दोट्टि
एमरु वरिविल् वेल्हो लीट्टिवा ळॅऴुविट् टेऱु
मामरम् वीशु पाश मॅऴुमुळै वयिरत् तण्डु
कामरु कणैयङ् गुन्दङ् गप्पणङ् गाल नेमि 941

तोमरम्—तोमर; उलक्कै–मूसल; चूलम्–त्रिशूल; चुटर् मऴु–प्रकाशमय फरसे; कुलिचम्–कुलिश; तोट्टि–अंकुश; ए मरुम्–शरासन; वरि विल्–सबन्ध धनु; वेल्–शक्तियाँ; कोल्–शर; ईट्टि–भाले; वाळ्–तलवारें; ऍऴु–लौहदण्ड; विट्टेऱु–बरछे; मा मरम्—बड़े पेड़ों को भी; वीचु पाचम्–गिरा सकनेवाले पाश; ऍऴु–शत्रु पर चलनेवाले; वयिर मुळै तण्टु–हीरे के दण्डायुध; कामरु–मनोहर; कणैयम्–वक्रदण्ड; कुन्तम्–कुन्त; कप्पणम्–'अरिकण्ठ' नामक हथियार; काल नेमि–कालचक्र। ६४१

(उस सेना के वीरों के साथ) तोमर, मूसल, त्रिशूल, तेजोमय फरसे,

कुलिश, अंकुश, सबन्ध शरासन, शक्तियाँ, शर, भाले, तलवारें, लौहदण्ड, बछियाँ, बड़े-बड़े पेड़ों को भी नीचे गिरानेवाले पाश, शत्रुघातक हीरे के दण्ड, दर्शनीय वक्रदण्ड, कुन्त और 'कप्पण' (अरिकण्ठ) नामक हथियार। ९४१

ऍन्ऱिवै मुदल यावु मॅळिरिहल् पडैह ळीण्डि
मिन्ऱिरण् डनैय वाहि वयिलॊडु निलवु वीशत्
तुन्ऱिरुन् दूळि पॊङ्गित् तुरुदला लिरुदि शॊल्लाप्
पॊन्ऱिणि युलहम् यावुम् पूदल मान मादो 942

ऍन्ऱु–ऐसे; इवै मुतल–ये आदि; यावुम्–सभी; ऍळिल् तिकऴ्–सुन्दरता-लसित; पटैकळ् ईण्टि–हथियार मिलकर; मिन्–विजलियाँ; तिरण्टु अनैय–एकत्रित हुई जैसे; आकि–बनकर; वॅयिल् ऑटु–धूप के साथ; निलवु वीच–चाँदनी छिटकाते हुए; तुन्ऱु–घने रूप से; इरुम् तूळि–विपुल धूल-राशि; पॊङ्कि–उठी; तुरुतलाल्–आकाश में भर गयी, इसलिए; इरुति चॊल्ला–अन्त जिसका कहा नहीं जा सकता; पॊन् तिणि उलकम् यावुम्–स्वर्णमय (स्वर्ग-) लोक सारा; पूतलम् आन–भूतल हो गया। ९४२

ऐसे और अन्य सभी सुन्दर हथियार एकत्रित होकर एकत्रित बिजलियों के समान बने और उनसे धूप-सा गरम प्रकाश और चाँदनी-सी शीतल किरणें छूट रही थीं। घने रूप से धूलपटल उठा और आकाश में छा गया। इससे अमर स्वर्गलोक भी भूलोक के समान (मिट्टी का) दिखने लगा। ९४२

काहमुङ् गळुहुम् बेयुङ् गालनुङ् गणक्किल् कालम्
शेहुर् वितैयिर् चॅयुद तीमैयुन् दॊडर्न्दु शॅल्लप्
पाहियल् किळविच् चॅव्वाय् पडैविळि पणैत्त वेय्त्तोळ्
तोहैयर् मनमुङ् गण्णुन् दुम्बियुन् दॊडर्न्दु शुऱ्ऱ 943

काकमुम्–कौए; कळुकुम्–और गीध; पेयुम्–पिशाच; कालनुम्–और यम; कणक्कु इल् कालम्–अगणित काल; चेकु उऱ–सुदृढ़ रूप से; वितैयिल् चॅयुत–(बुरे) कर्म जो किये उनका; तीमैयुम्–पाप; तॊटर्न्तु चॅल्ल–साथ-साथ गये; पाकु इयल्–चाशनी की-सी; किळवि–(मधुरतायुक्त) बोली वाली; चॅ वाय्–लाल अधरों; पटै विळि–(तलवार, भाला, शर आदि) हथियारों के सदृश आँखों; पणैत्त–पुष्ट; वेय् तोळ्–बाँस-सम कन्धों वाली; तोकैयर्–कलापी-सी (उनकी पत्नी-) स्त्रियों के; मनमुम् कण्णुम्–मन और आँखों के; तुम्पियुम्–और भ्रमरों के; तॊटर्न्तु–पीछे लगे; चुऱ्ऱ–घेरते जाते। ९४३

(अक्षकुमार के साथ क्या-क्या गये? देखिए कवि की विदग्धता!) कौए, गीध, भूत-पिशाच, यम, अनन्तकाल से राक्षसों के द्वारा सुदृढ़ रूप से किये गये दुष्कर्मों का पाप आदि पीछे लगे साथ गया। और चाशनी-सी

बोली और लाल अधरों वाली, तलवार आदि हथियारों-सी आँखों वाली, स्थूल बाँस-से कन्धों वाली राक्षसियों के मन और आँखें तथा भ्रमर भी उन पर मँड़राते चले। ९४३

उऴैक्कुल नोक्कि ताऱ्ह ऴुलन्दवर्क् कुरिय मादर्
अऴैत्तऴु कुरलिन् वेलै यमलैयि ऩरवच् चेऩ्ऩै
तऴैत्तॆऴु मॊलियि ऩाऩाप् पल्लियन् दुवैत्त लाल्विण्
मऴैक्कुर लिडियिऱ् चॊऩ्ऩ माऱ्ऱङ्ग ळॊऴिप्प मऩ्ऩो 944

उलन्तवर्क्कु–पहले जो मरे उनकी; उरिय मातर्–पत्नी-स्त्रियाँ; उऴै कुल नोक्किनार्कळ्–मृगनयनियाँ; अऴैत्तु ॲऴु कुरलिन्–(अपने पतियों का नाम ले-ले) जो रोती हैं, उस स्वर से; वेलै अमलैयिन्–समुद्र के गर्जन से; अरव चेऩै–आरवयुक्त सेना से; तऴैत्तु ॲऴुम्–बढ़ उठनेवाले; ऑलियिऩ्–शोर से; नाना पल्लियम्–अनेक और विविध बाजे; तुवैत्तलाल्–बजे, इससे; विण्–आकाश में; मऴै कुरल् इटियिल्–मेघ-गर्जन रूपी गाजों से; चॊऩ्ऩ माऱ्ऱङ्कळ्–उच्चरित वचन; ऑऴिप्प–दब जाते (ऐसा)। ६४४

वे जाते रहे। तब पहले हनुमान द्वारा मारे गये राक्षसों की मृगनयनी प्यारी स्त्रियाँ अपने पतियों का नाम ले-ले रो रही थीं। वह स्वर; समुद्र-गर्जन; शोर के साथ चढ़ जानेवाली सेना का निविड नाद; विविध वाद्यों की ध्वनि और आकाश के मेघों का वज्रगर्जन —इन सब मिश्रित स्वरों की तुमुलता के कारण एक-दूसरे की बोली परस्पर सुनायी नहीं दे रही थी। ९४४

मॆयिऱ्कर मणिहळ् वीशुम् विरिहदिर् विळङ्ग वॆय्य
अयिऱ्कर वणिहळ् नील वविरॊळि पऱुह व:(ह)दुम्
ॲयिऱ्ऱिळम् बिऱैह ळॊऩ्ऱ विलङ्गॊळि यॊदुङ्ग याणर्
उयिर्क्कुल मिरवु मऩ्ऱु पहलऩ्ऱॆऩ् ऱुणर्वु तोऩ्ऱ 945

मॆयिल् करम्–(राक्षसों के) शरीर पर के कान्तियुक्त; मणिकळ् वीचुम्–रत्न जो बिखेरते हैं; विरि कतिर्–वे विस्तृत किरणें; विळङ्क–मनोरम रूप से प्रकट होती हैं; वॆय्य–क्रूर; अयिल् कर–भालाधारी हाथों के; अणिकळ्–आभरण; नील अविर्–काले रंग में निकलनेवाली; ऑळि पऱुक–कान्ति को पी जाती हैं (छिपा लेती हैं); अ:तुम्–वह कान्ति भी; ॲयिऱ्ऱु इळम् पिऱैकळ्–दाँतों के बाल-चन्द्रों के; इलङ्कु ऑळि–छिटके हुए प्रकाश में; ऑतुङ्क–छिप जाता; उयिर्क्कुलम्–जीव-राशियों को; इरवुम् अऩ्ऱु–रात नहीं; पकल् अऩ्ऱु–दिन भी नहीं; ॲऩ्ऱु–ऐसा; याणर् उणर्वु तोऩ्ऱ–अनूठा अनुभव होता। ६४५

उन राक्षसों के शरीरों पर अलंकृतकारी रत्नों से छूटनेवाली किरणें प्रकाशमय रहीं। हिंस्र भालों के धारणकारी हाथों के आभूषण उनके शरीर के नील रंग को चाटकर मिटा रहे थे। उन आभरणों के प्रकाश दाँतों

रूपी बालचन्द्र-निःसृत प्रकाश में छिप जा रहा था। इससे जीवों को एक विचित्र अनुभव हो रहा था कि अब न दिन लगता, न रात ही। ९४५

ओङ्गिरुन् दडन्देर् पूण्ड वुळैवयप् पुरवि यॉल्हित्
तूङ्गिन वीळत् तोळुङ् गण्गळु मिडत्त तुळ्ळ
वीङ्गिन मेह मॅङ्गुङ् गुरुदिनीर्त् तुळ्ळि वीळ्प्प
एङ्गिन काह मारप्प विरुळिल्विण् णिडिप्प मादो 946

ओङ्कु–उन्नत; इरुम्–बड़े; तटम् तेर–विशाल रथ में; पूण्ट–जुते; उळै–अयाल-सहित; वय–विजय-सहायक; पुरवि–अश्व; ऑल्कि–थकित होकर; तूङ्कित्त वीऴ–सो जाते; इटत्त तोळुम्–बायें कन्धे और; कण्कळुम्–आँखें; तुळ्ळ–फड़कीं; वीङ्कित्त मेकम्–बड़े मेघ; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; कुरुति नीर् तुळ्ळि–रक्त-जल की बूँदें; वीऴ्प्प–गिराते; काकम्–कौए; एङ्कित्त–डरकर; आर्प्प–उच्च स्वर में बोलते; इरुळ् इल् विण्–निर्मल आकाश; इटिप्प–गरजता। ९४६

(क्या-क्या शकुन हुए?) उन्नत, विशाल और बड़े रथों से जुते अयाल वाले, विजय-साधन अश्व थकित हो ऊँघते जा रहे थे। वीरों के बायें कन्धे फड़के और बायीं आँखें फड़कीं। बड़े-बड़े मेघों ने रक्त की बूँदें गिरायीं। कौए भयार्त होकर उच्च स्वर में बोल उठे। निर्मल आकाश से वज्रघोष-सा सुनायी दिया। ९४६

वॅळ्ळवॅज् जेनै शूळ विण्णुळोर् वॅरुवि विम्म
उळ्ळनीन् दतुङ्गु वॅय्य कूर्रमु मुरुव रुन्नत्
तुळ्ळिय शुळल्हद् पेय्ह डोळ्पुडैत् तार्प्पत् तोन्रुम्
कळ्ळवि ऴलङ्ग लानैक् कार्रिन्शेय् वरवु कण्डान् 947

वॅळ्ळ–'वॅळ्ळम्' की बड़ी संख्या में रही; वॅम् चेनै–भयंकर सेना के; चूऴ–घेरते आते; विण् उळोर्–व्योमलोकवासी; वॅरुवि विम्म–भयातुर हुए; उळ्ळम् नोन्तु–चिन्ताकुल हो; अतुङ्कु–उद्विग्न रहा; वॅय्य–भयंकर; कूर्रमुम्–यम भी; मुरुवल् तुन्न–मुस्कुरा उठा; तुळ्ळिय–उछलनेवाले; चुळल् कण–चंचलाक्ष; पेय्कळ्–भूतों के; तोळ् पुडैत्तु–कन्धे ठोंककर; आर्प्प–कोलाहलनाद मचाते; तोन्रुम्–शोभायमान; कळ् अविऴ्–शहद चूनेवाली; अलङ्कलानै–मालाधारी को; कार्रिन् चेय्–मरुतसूनु ने; वरवु कण्टान्–आता हुआ देखा। ९४७

"वॅळ्ळम्" की (बहुत-बहुत बड़ी) संख्या में सेना गयी। देव डर से भरे। मन मारकर जो दुःखी रहा, वह क्रूर यम अब मुस्कुरा उठा। विवृत्तनयन भूतों ने कन्धे ठोंककर नारे लगाये। इस संभ्रम के साथ शहदस्रावी पुष्पमालाधारी अक्षकुमार को हनुमान ने आता हुआ देखा। ९४७

इन्दिर शित्तो मर्रव् विरावण नॆयो वॅन्नाच्
चिन्दैयि नुवहै कॊण्डु मुनिवुर्र कुरक्कुच् चीयम्

वन्दनन् मुडिन्द दन्ऱो मनक्करुत् तॅन्न वाऴ्त्तिच्
चुन्दरत् तोळै नोक्कि यिरामनैत् तॊऴुदु शॊन्नान् 948

मुनिवु उऱ्ऱ–क्रुद्ध; कुरङ्कु चीयम्–वानर-केसरी ने; इन्तिरचित्तो–इन्द्रजित् क्या; मऱ्ऱ–या दूसरा; अ–वह; इरावणनेयो–रावण ही; ॲन्ना–ऐसा; चिन्तैयिन् उवकै कॊण्टु–मन में हर्ष करके; चुन्तर तोळै–अपनी सुन्दर भुजाओं को; नोक्कि वाऴ्त्ति–देखकर बधाई देकर; इरामनै तॊऴुतु–श्रीराम को (मन ही मन) नमस्कार करके; वन्तनन्–(लक्षित राक्षस) आ गया; मन करुत्तु–मन की कामना; मुटिन्ततु अन्ऱो–पूरी हुई न; ॲन्न–ऐसा; चॊन्नान्–आप ही आप कहा । ९४८

देखते ही वानरकेसरी हनुमान का क्रोध जाग उठा। वह सोचने लगा कि क्या यह इन्द्रजित् है या रावण ही है (जिसको युद्ध में लाना चाहता था) ? उसके मन में हर्ष उमड़ आया और उसने अपनी सुन्दर भुजाओं को सगर्व निहारा और उनको बधाइयाँ दीं। श्रीराम को नमस्कार किया। उसने आप ही आप कहा कि अच्छा, आ गया युद्ध का आधार ! पूरी हो गयी न मेरी मनोकामना ! । ९४८

ॲण्णिय विरुवर् तम्मु ळॊरुवनेल् यान्मुन् शॅय्द
पुण्णिय मुळदा लॅङ्गोन् ऱवत्तॊडुम् बॊरुन्दि नाने
नण्णिय यानु निन्ऱेन् कालनु नणुहि निन्ऱान्
कण्णिय करुम मिन्ऱे मुडिक्कुवॅन् कडिदि नॅन्ऱान् 949

ॲण्णिय–अनुमानित; इरुवर् तम्मुळ्–दो में; ऒरुवनेल्–एक रहा तो; यान्–मेरा; मुन् चॅय्त–पूर्वकृत; पुण्णियम् उळतु–पुण्य-भाग्य है; ॲन् कोन्–मेरे राजा को भी; तवत्तॊटुम्–अपने तप का शुभ फल; पॊरुन्तिनाने–मिल गया; नण्णिय यानुम्–पास आया मैं; निन्ऱेन्–हूँ; कालनुम्–यम भी; नणुकि–पास आकर; निन्ऱान्–खड़ा है; कण्णिय करुमम्–अपना सोचा काम; इन्ऱे–आज ही; कटितिन्–शीघ्र; मुटिक्कुवॅन्–पूरा करूँगा; ॲन्ऱान्–(आप ही आप हनुमान ने) कह लिया। ९४९

"अगर यह मेरे द्वारा अनुमानित दो में एक होगा तो मेरा पूर्वकृत पुण्य सफलीभूत हो गया। मेरे राजा को भी तप का सुफल मिल गया। अच्छा ! मैं इसके सामने हूँ। यम भी समीप आकर है ! अपना संकल्पित कार्य अभी शीघ्र ही पूरा कर लूँगा।" —हनुमान ने आप ही आप कहा। ९४९

पऴियिल दुरुवॅन् ऱालुम् बः(ह्)ऱलै यरक्क नल्लन्
विऴिहळा यिरमुङ् गॊण्ड वेन्दॅन् ऱानु मल्लन्
मॊऴियिन्मऱ् ऱेवर्क्कु मेलान् मुरट्टॊऴिन् मुरुह नल्लन्
अऴिविलोण् कुमरन् यारो वञ्जनक् कुन्ऱ मन्नान् 950

उरु–इसका आकार; पऴि इलतु–अनिंद्य है; ॲन्ऱालुम्–तो भी; पल् तलै–अनेक

सिरों का; अरक्कन् अल्लन्–राक्षस (रावण) नहीं; विऴिकळ् आयिरमुम् कॊण्ट–सहस्र आँखों वाले; वेन्तॆ–देवराज के; वॆन्द्रालुम् अल्लन्–विजेता (इन्द्रजित्) भी नहीं; मुरण् तॊऴिल्–युद्धकर्मचतुर; मुरुकन् अल्लन्–'मुरुगन' (कार्तिकेय) नहीं है; मॊऴियिन्–सोचकर कहें तो; ॲवर्क्कुम् मेलान्–सबों के ऊपर का लगता है; अञ्चन कुन्ड्रम् अन्नान्–काजल-गिरि-सम लगता है; अऴिवु इल्–अक्षय; वॆम्–पराक्रमी; कुमरन्–कुँअर; यारो–कौन है तो। ६५०

(हनुमान ने और भी स्वगत कहा—) इसका रूप अनिंद्य लगता है। तो भी अनेक सिरों वाला रावण नहीं लगता। सहस्राक्ष देवेन्द्र का विजेता इन्द्रजित् भी नहीं। युद्धकुशल 'मुरुगन' (कार्तिकेय) भी नहीं। सोचकर कहा जाय तो लगता है कि वह इन सबसे अधिक श्रेष्ठ है। काजल-गिरि के समान दृश्यमान है। यह अक्षय पराक्रमी कुँअर कौन होगा ? । ९५०

ॲन्ड्रव नुवन्दु विण्डो यिन्दिर शाब मॆन्न
नित्रदो रणत्ति नुम्ब रिरुन्ददोर् नीदि याने
वन्ड्रॊऴि लरक्क नोक्कि वाळॆयि ऱिलङ्ग नक्कान्
कॊन्ड्रदिक् कुरङ्गु पोला मरक्करदङ् गुळात्तै यॆन्ना 951

ॲन्ड्रवन्–ऐसा संशय-वचन जिसने कहा, वह; उवन्तु–हर्षित होकर; विण् तोय्–आकाश में लगे दिखनेवाले; इन्तिर चापम् ॲन्न–इन्द्रधनुष के समान; नित्र–जो खड़ा था; तोरणत्तिन् उम्पर्–तोरण के ऊपर; इरुन्ततु–जो रहा; ओर् नीतियानै–उस अनुपम न्यायी को; वल् तॊऴिल् अरक्कन्–नृशंसकारी राक्षस; नोक्कि–देखकर; इ कुरङ्कु–यही वानर है, जिसने; अरक्कर् तम् कुळात्तै–राक्षसों के दलों को; कॊन्ड्रतु पोल् आम्–मार दिया था शायद; ॲन्ना–कहकर; वाळ् ॲयिऱु–उज्ज्वल दाँतों को; इलङ्क–प्रगट करते हुए; नक्कान्–हँसा। ६५१

इस तरह संशय करके उसके आधार पर हर्षित होकर जो हनुमान आकाशगत इन्द्रधनुष-से तोरण पर विराजमान था, उस न्यायी को नृशंस राक्षस ने देखा। वह यह कहते हुए उज्ज्वल दाँतों को प्रकट करके हँसा कि क्या यही वह मर्कट है, जिसने राक्षसदलों को मार डाला था ? । ९५१

अन्नदा नहुशॊर् केट्ट शारदि यैय केण्मो
इन्नदा मॆन्न लामो वुलहिय लिहऴ लम्मा
मन्ननो डॆदिर्न्द वालि कुरङ्गॆन्ड्रान् मऱ्ऱु मुण्डो
शॊन्नदु तुणिविऱ् कॊण्डु शेऱियॆन् ऱुणरच् चॊन्नान् 952

अन्नतु आम्–वैसा; नकु चॊल्–परिहास-वचन; केट्ट–के श्रोता; चारति–(अक्षकुमार के) सारथी ने; ऐय–नायक; केण्मो–सुनिए; उलकु इयल्–संसार की रीति; इन्नतु आम्–यही है; ॲन्नल्–ऐसा (निश्चित रूप से) कहना; आमो–सम्भव है क्या; इकऴल्–तिरस्कार मत कीजिए; मन्ननोटु–हमारे राजा के साथ;

अॅतिर्न्त वालि—जो लड़ा वह वाली; कुरङ्कु—वानर था; अॅन्ड्राल्—तो; मर्ड्रुम् उण्टो—और कहने को कुछ होगा क्या; चॉन्ननु—मेरा कहा; तुणिविल् कॉण्टु—दृढ़ता के साथ धारण करके; चेड्रि—जाइए; अॅन्ड्र—ऐसा; उणर—समझाकर; चॉन्नान्—कहा। ९५२

उसका व्यंग्य का वचन सुनकर उसके सारथी ने कहा कि नायक! मेरा कहना सुनो। संसार की रीति यही है —ऐसा निर्धारण भी सम्भव है क्या? उसका रूप देखकर उसका तिरस्कार मत कीजिए। (तुमको मालूम ही है कि) हमारे राजा से जो लड़ा वह वाली भी तो एक वानर था। फिर कहने को क्या है? मेरी बात दृढ़ रूप से मन में धारण करके युद्ध में जाओ। सारथी ने समझाया। ९५२

विडन्दिरण् डनैय मॅय्या नव्वुरै विळम्बक् केळा
इडम्बुहुन् दित्तैय शॅय्द विदन्नॊडु शीड्ड्र मॅञ्जत्
तॊडर्न्दुशॅन् ड्रुलह मून्ड्रुन् दुरुविन्नॆ नॊळिवु ड्रामल्
कडन्दुपिन् कुरङ्गॆन् ड्रोदुङ् गरुवैयुङ् गळैवॆ नॆन्ड्रान् 953

विटम् तिरण्टु अन्नैय—विष पुञ्जीभूत हुआ जैसे; मॅय्यान्—रूपवान ने; अ उरै—वह वचन; विळम्प—कहा गया; केळा—सुनकर; चीड्ड्रम् अॅञ्च—कोप के बढ़ते; इटम् पुकुन्तु—हमारे यहाँ प्रवेश करके; इत्तैय चॅय्त—ऐसा जिसने किया; इतन् ओटुम्—इसके साथ; तॊटर्न्तु चॅन्ड्रु—इसको मारकर बाद लगा हुआ जाकर; उलकम् मून्ड्रुम्—तीनों लोकों में; ऑळिवु उड्रामल्—कहीं भी न छोड़कर; तुरुविन्नॆन्—खोजता; कटन्तु—जाकर; पिन्—बाद; कुरङ्कु अॅन्ड्रु ओतुम्—वानर-कथित; करुवैयुम्—गर्भशिशु को भी; कळैवॆन्—निरस्त कर दूंगा; अॅन्ड्रान्—कहा। ९५३

पुञ्जीभूत विष-से रूपधर अक्षकुमार ने उसका वचन सुनकर उत्तर में कहा कि देखो। कम न होकर बढ़ते जानेवाले क्रोध के साथ हमारे ही यहाँ आकर ऐसा कार्य किया है। उसको भी मारूँगा और उससे लगाकर तीनों लोकों में विना किसी स्थान को छोड़े सर्वत्र जाऊँगा और वानर के नाम पर गर्भस्थित वानर-शिशु को भी मारकर निरस्त कर दूंगा। ९५३

आर्त्तॆळुन् दरक्कर् शेनै यञ्जनैक् कुरिय कुन्ड्रैप्
पोर्त्तदु पॊळिन्द दम्मा पॊरुबडैप् परुव मारि
वेर्त्तनर् तिशैकाप् पाळर् चलित्तन विण्णु मण्णुम्
तार्त्तनि वीरत् ड्रानुन् दनिमैयु मवर्मेड् चार्न्दान् 954

अरक्कर् चेन्नै—राक्षस-सेनाओं ने; आर्त्तु अॅळुन्तु—नर्दन कर उठी; अञ्चनैक्कु उरिय—अंजनादेवी के; कुन्ड्रै—पुत्र, पर्वत-सम हनुमान पर; पॊरुपटै परुव मारि—मारू हथियारों की मौसमी बारिश; पॊळिन्ततु—बरसाकर; पोर्त्ततु—ढँक दिया; तिचै काप्पु आळर्—दिक्पाल; वेर्त्तनर्—पसीना-पसीना हो गये; विण्णुम्—आकाश

और; मण्णुम्–भूमि; चलित्तत–दोनों चंचल हो गये; तार् तति वीरन्–हारयुक्त अनुपम महावीर; ततिमैयुम् तातुम्–तनहाई को ही सहायक बनाकर; अवर् मेल् चार्न्तान्–उन पर चढ़ गया। ९५४

तब राक्षस-सेना ने नारे लगाते हुए बढ़कर अंजना के पुत्र, पर्वत-सम हनुमान पर युद्ध-साधन अस्त्र रूपी मौसमी बरसात बरसाकर उसे ढँक दिया। दिक्पाल भी यह देखकर पसीना-पसीना हो गये। आकाश और भूमि दोनों चलित हुए। मालाधारी महावीर तनहाई को ही अपना साथी बनाकर उनसे लड़ने गया। ९५४

ऍऱिन्दन निरुदर् वॅय्दि नॅय्दन पडैहळ् यावुम्
मुऱिन्दन वीरन् मेनि मुट्टिन मूरि यानै
मऱिन्दन मडिन्द तेरुम् वावुमाक् कुळ्वु मम्मा
नॅऱिन्दन वरम्बिल् याक्कै यिलङ्गैदन् नॅऱियिऱ् पेर 955

निरुतर्–राक्षसों द्वारा; वॅय्तित् ऍऱिन्तत–तेजी से फेंके गये; ऍय्तन–और चलाये गये; पटैकळ् यावुम्–सभी हथियार; वीरन् मेति–महावीर के शरीर से; मुट्टित–टकराकर; मुऱिन्तत–टूटे; मूरि यानै–सबल हाथी; मऱिन्तत—मरे; तेरुम्–रथ और; वावु–सरपट चाल के; मा कुळुवुम्–अश्ववृन्द भी; मटिन्त—मरे (औंधे गिरे); इलङ्कै–लंका; तन् नॅऱियिल्–अपनी स्थिति में; पेर–बदल गयी; वरम्पु इल् याक्कै–असीम शरीर; नॅऱिन्तत—दबकर फटे। ९५५

राक्षसों ने जो अस्त्र चलाए और जो हथियार फेंके, वे सब महावीर के शरीर से टकराकर टूट गये। सबल गज सिर के बल गिरे और मरे। रथ और सरपट चाल के अश्वदल भी मर मिटे। लंका के रूप को ही बदलते हुए अपार संख्या में वीरों के शरीर फूटकर लाशें बने और सब जगह भर गये। ९५५

कायॅरि मुळिपुऱ् कातिऱ् कलन्दॅतक् काऱ्ऱिन् शॅम्मल्
एयॅनु मळविऱ् कॉल्लु निरुदर्क्को रॅल्लै यिल्लै
पोयव रुयिरुम् बोहित् तॅन्बुलम् बडर्दल् पॉय्या
दायिर कोडि तूद रुळर्हॉलो नमनुक् कम्मा 956

मुळि–सूखी; पुल् कातिल्–घास के वन में; काय् ऍरि–जलानेवाली आग; कलनतु ऍत–मिल (लग) गयी जैसे; काऱ्ऱिन् चॅम्मल्–पवनकुमार; एय् ऍनुम् अळविन्–'ऐ' कहने की देर के अन्दर; कॉल्लुम् निरुतर्क्कु–जितनों को मार डालता, उन राक्षसों की; ओर् ऍल्लै इल्लै–कोई सीमा नहीं रही; पोय्–जो गये; अवर् उयिरुम्–उनकी जानें (जीवात्मा); तॅन् पुलम्–दक्षिण (यम) लोक; पोकि पटर्तल् पॉय्यातु–जाने से नहीं चूकीं; नमनुक्कु–यम के; आयिर कोटि तूतर्–सहस्र करोड़ दूत; उळर् कॉलो–हैं क्या। ९५६

सूखी घास के वन में आग लगने पर जो स्थिति होती है, वैसी स्थिति

राक्षसों की करते हुए पवननन्दन ने जिनको 'ऐ' शब्द के उच्चारण की देर के अन्दर मार डाला, उन राक्षसों की कोई सीमा नहीं रही। उनके प्राण भी (जीवात्मा भी) दक्षिणी (यम-)लोक में जा पहुँचे —यह भी अचूक था। फिर क्या यम के सहस्र कोटि दूत थे? माँ! । ९५६

वरवुर्ऱार् वारा निन्ऱार् वन्दवर् वरम्बिल् वॅम्बोर्
पॉरवुर्ऱ पॉऴुदुम् वीरन् मुम्मडङ् गाऱ्ऱल् पॉङ्गि
इरविप्पेर्क् कदिरो नॊऴि यिऱुदियि नॅन्न लानान्
उरवुत्तो ळरक्क रॅल्ला मॅन्बिला वुयिर्ह ळॊत्तार् 957

वर उऱ्ऱार्–जो आनेवाले हैं; वारा निन्ऱार्–जो अब आये हैं; वन्तवर्–जो पहले आये थे, वे सभी; वरम्पिल्–अपार; वॅम् पोर्–भयंकर युद्ध; पॉर उऱ्ऱ पॉऴुतुम्–जब करने लगते; वीरन्–महावीर; आऱ्ऱल्–बल में; मुम् मटङ्कु–तिगुना; पॉङ्कि–बढ़कर; ऊऴि इऱुतियिन्–युगान्त में; इरवि–रवि; पेर्–नाम के; कतिरोन् ॲन्तल्–सूर्य के समान; आनान्–हो गया; उरवु तोळ् अरक्कर् ॲल्लाम्–सबल कन्धों वाले सभी राक्षस; ॲन्पु इला–अस्थिहीन; उयिर्कळ् ओत्तार्–जीवों के समान रहे। ९५७

युद्ध में आने को जो थे वे, जो आ रहे थे वे और जो पहले ही आ गये वे असंख्यक थे और भयंकर युद्ध करनेवाले थे। तो भी जब वे लड़ाई में आये तब हनुमान का बल तिगुना बढ़ा। वह युगान्त के रवि नाम के किरणमाली सूर्य के समान बना। सबल कन्धों के राक्षस सब अस्थि-हीन जन्तुओं (कीड़ों) के समान बन गये। ९५७

पिळ्ळप् पट्टन नुदलो डैक्करि पिऱळ्पॉर् ऱेर्परि पिऴैयामल्
अळ्ळप् पट्टऴि कुरुदिप् पॉरुपुन लाऱा हप्पडि शेऱाह
वळ्ळप् पट्टन महरक् कडलॅन मदिल्शुऱ् ऱियपदि मऱलिक्कोर्
कॊळ्ळप् पट्टन वुयिरॅन् नुम्बडि कॊन्ऱा नैम्बुलन् वॅन्ऱाने 958

अळ्ळप् पट्टु अऴि—(हनुमान द्वारा) उठा लिये जाकर जो मिटे; पॉरु कुरुति पुनल्–(उन राक्षसों का) लहरायमान रक्त-जल; आऱु आक–नदी बना; पटि चेऱु आक–भूमि पंक बनी; पिळ्ळ–हनुमान के फोड़ने से; पट्टन—जो मरे; नुतल् ओटै—वे भालपट्ट वाले; करि–गज और; पिऱळ्–औंधे गिरे; पॉन् तेर् परि–स्वर्ण रथ और अश्व; पिऴैयामल्—अचूक (पहुँचे); मकर कटल्–मकरालय; वळ्ळप् पट्टन–समृद्ध हुए; ॲन–ऐसा कहने योग्य; मतिल् चुऱ्ऱिय पति–प्राचीर-वलयित नगरी के; उयिर्–जीव; मऱलिक्के–यम के ही; कॊळ्ळप् पट्टन–माने गये; ॲन्नुम् पटि—ऐसा कहने योग्य रीति से; ऐम्पुलन् वॅन्ऱान्–पञ्चेन्द्रिय-जेता हनुमान ने; कॊन्ऱान्—मार डाला। ९५८

हनुमान ने उठा-उठाकर राक्षसों को निपाता। उनसे रक्त जो बहा वह नदी बन गया और भूमि पंक बन गयी। पञ्चेन्द्रियजयी हनुमान

ने युद्धभूमि में इतने जीवों को मारा कि लोगों को कहना पड़ा कि उसके द्वारा फाड़े गये भालपट्टदार गजों, औंधे गिरे स्वर्ण-रथों और घोड़ों के अचूक रीति से समुद्र में जाने से मकरालय पुष्ट बन गया और प्राचीर-मध्य लंका के सारे जीव यम के ही हो गये। ९५८

तेरे पट्टन वॆंन्ऱार् शिलर्शिलर् तॆऴुहट् चॆम्मुह वयिरत्तोट्
पेरे पट्टऩ ऱॆंन्ऱार् शिलर्शिलर् परिये पट्टन पॆरिदॆंन्ऱार्
कारे पट्टऩ नुदलो डैक्कड करिये पट्टऩ कडिदॆंन्ऱार्
नेरे पट्टनर् पडमा ऱेतऩि निल्ला वुयिरोडु निन्ऱारे 959

नेरे पट्टत्तर्–सामने आकर मरे सो; पट–मरे ही; माटे–पार्श्वों में; निल्ला उयिरोटु–चंचल प्राणों के साथ; तऩि निन्ऱार्–अलग जो खड़े रहे; चिलर्–कुछ ने; तेरे पट्टऩ–रथ ही मिटे; ऍन्ऱार्–कहा; चिलर्–और कुछ ने; तॆऴु कण्–घूरती आँखों; चॆम् मुकम्–(गुस्से से) लाल मुख; वयिर तोळ्–वज्र-सम कन्धे; पेरे–(इनसे युक्त) पदातिक वीर ही; पट्टऩर्–मिटे; ऍन्ऱार्–कहा; चिलर्–और कुछ ने; परिये पॆरितु पट्टऩ–अश्व ही अधिक मरे; ऍन्ऱार्–कहा; चिलर्–अन्य कुछ ने; कारे पट्टऩ–मेघों के ही सम; नुतल् ओटै–भालपट्टधारी; कट करि ए–मत्त गज ही; कटितु पट्टऩ–शीघ्र मरे; ऍन्ऱार्–कहा। ९५९

समक्ष आकर जो मरे, वे मरे ही। पर जो इधर-उधर अस्थिर प्राण लेकर खड़े रहे उनमें कुछ ने कहा कि रथ ही (अधिक संख्या में) टूटे। कुछ ने कहा कि क्रोध-भरी आँखों, लाल मुखों और वज्र-सम कन्धों के पदातिक वीर ही (अधिक) मरे हैं। और कुछ राक्षसों ने कहा कि अश्व ही नाश हुए हैं। अन्य कुछ लोगों ने कहा कि मेघ-समान और भालपट्टधारी मत्तगज ही अत्यधिक संख्या में शीघ्र नाश हुए। ९५९

आऴिप् पॊरुपडै निरुदप् पॆरुवलि यडलो रायमह ळडुपेऴ्वायत्
ताऴिप् पडुदयि रॊत्तार् मारुदि तऩिमत् तॆंन्बदॊर् तहैयात्तान्
एऴिप् पुवनमु मिडैवा ऴुयिर्हळु मॆरिवे लिळैयव रिऩमाह
ऊऴिप् पॆयर्वदॊर् पुऩलॊत् तारऩ लॊत्तात् मारुद मॊत्तानें 960

आऴि–समुद्र-सम; पॊरु पटै–युद्ध-सेना के; निरुत–राक्षस; पॆरु वलि–अतिबली; अटलोर्–वीर; आय् मकळ्–ग्वाल-बाला; अटु–(दूध) औटकर जामन लगाकर जो रख गयी है; पेऴ् वाय्–(उस) बड़े मुख की; ताऴि पटु–कड़ाही पर रहे; तयिर् ऑत्तार्–दही के समान लगे; मारुति–मारुति; तऩि मत्तु ऍन्पतु–अनुपम मथानी कहने; ओर् तकै आताऩ्–योग्य एक बना; ऍरि वेल् इळैयवर्–फेंकी जा सकनेवाली बरछी के धारक जवान वीर; इ एऴु पुवऩमुम्–ये सातों भुवन और; इटै वाऴ् उयिर्कळुम्–उनमें रहनेवाले जीव; इऩम् आक–एक प्रवाह में; ऊऴि पॆयर्वतु–युगान्त में बहनेवाले; ओर् पुऩल्–प्रलय-प्रवाह के; ऑत्तार्–समान रहे; मारुतम् ऑत्ताऩ्–पवन-सम (वली); अऩल् ऑत्ताऩ्–अनल-सम लगा। ९६०

समुद्र के समान बढ़कर लड़नेवाली सेना के अतिबली राक्षस वीर ग्वालबाला के द्वारा बड़े मटके में जमाये हुए दही के समान बने; और हनुमान अनुपम मथानी-सा बन गया। भाले फेंकनेवाले नौजवान वीर सातों भुवनों और उनमें रहनेवाले जीवों के जमघट के समान रहते प्रलय-प्रवाह के समान रहे। पवन-सम मारुति (प्रलय-शोषक) बड़वाग्नि रहा। ९६०

कॉन्ऱा नुडऩ्वरु कुळुवैच् चिलर्पलर् कुरैहिऩ् ऱारुडल् कुलैहिऩ्ऱार्
पिऩ्ऱा निऩ्ऱऩ रुदिरप् पॅरुनदि पॅरुहा निऩ्ऱन वरुकाह
निऩ्ऱार् निन्ऱिलर् तनिनिऩ् ऱानॊरु नेमित् तेरोडु मवऩेरे
शॅऩ्ऱाऩ् वऩ्ऱिर लयिल्वा यम्बुह डॅरिहिऩ् ऱाऩ्विऴि यॅरिहिऩ्ऱाऩ् 961

उटऩ् वरु–साथ आनेवाले; कुळुवै–राक्षसदलों को; कॉन्ऱाऩ्–हनुमान ने मार डाला; चिलर् कुरैकिऩ्ऱार्–कुछ मरे; पलर्–अनेक; उटल् कुलैकिऩ्ऱार्–शरीर काँपते हुए; पिऩ्ऱा निऩ्ऱऩर्–फिरकर जाने लगे; उतिर पॅरु नति–रुधिर की बड़ी नदियाँ; पॅरुका निऩ्ऱऩ–बह उठीं; अरुकु आक–पास; निऩ्ऱार्–जो खड़े रहे; निऩ्ऱिलर्–वे वहाँ खड़े नहीं रहे; तनि निऩ्ऱाऩ्–अकेला जो रहा (अक्षकुमार); ऒरु नेमि–उपमाहीन पहियों वाले; तेर् ऒटुम्–रथ के साथ; अवऩ् नेरे–उस (हनुमान) के समक्ष; चॅऩ्ऱाऩ्–गया; विऴि ऎरिकिऩ्ऱाऩ्–आँखें जलती जैसे रखते हुए; वऩ् तिऱल्–अति कठोर; अयिल् वाय्–तीक्ष्णमुख; अम्पुकळ्–शरों को; तॆरिकिऩ्ऱाऩ्–चुनकर चलाता। ९६१

हनुमान ने अक्षकुमार के साथ आगत राक्षसदलों को मार डाला। कुछ मरे। अनेक कंपित शरीरों के होकर फिर गये। रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बह निकलीं। अक्षकुमार के पास जो रहे वे नहीं रह सके। अक्षकुमार अकेला रह गया। वह अनुपम पहियों वाले अपने रथ को चलाते हुए हनुमान के सामने आया और आँखों से आग-सी निकालते हुए चुन-चुनकर शर चलाने लगा। ९६१

उऱ्ऱा निन्दिर शित्तुक् किळैयव ऩॊरुहा लेपल रुयिरुण्णक्
कऱ्ऱा ऩुम्मुह मॅदिर्वैत् ताऩदु कण्डार् विण्णवर् कशिवुऱ्ऱार्
ऎऱ्ऱा मारुदि निलैयॆऩ् बारिऩि यिमैया विऴियिऩै यिवैयॊन्ऱो
पॆऱ्ऱा मल्लदु पॆऱ्ऱा मॆन्ऱऩर् पिरिया दॆदिरॆदिर् शॆऱिहिऩ्ऱार् 962

इन्तिर चित्तुक्कु–इन्द्रजित् का; इळैयवऩ्–कनिष्ठ; उऱ्ऱाऩ्–आया; ऒरु काले–एक ही बार में; पल उयिर्–अनेक जीवों को; उण्ण कऱ्ऱाऩुम्–खाना जिसने सीखा था, उसने भी; मुकम् ऎतिर् वैत्ताऩ्–अपना मुख उसके सामने किया; अतु–वह; कण्टार्–देखनेवाले; विण्णवर्–देवगण; कचिवु उऱ्ऱार्–शिथिल पड़े; मारुति निलै–मारुति की स्थिति; ऎऱ्ऱु आम्–क्या होगी; ऎऩ्पार्–कहते; इमैया विऴियिऩै–अपलक आँखें; पॆऱ्ऱाम्–हमने पायी है; इवै ऒऩ्ऱो–अकेले ये ही क्या;

पॅऱ्ऱाम्–पायीं; अल्लतु–अहित (का अनुभव) भी; पॅऱ्ऱोम्–पाया है; ॲऩ्ऱऩर्–कहते; पिरियातु–विना अलग हुए; ॲतिर् ॲतिर्–आमने-सामने; चॅऱ्िकिऩ्ऱार्–पिले रहते हैं। ६६२

इन्द्रजित् का छोटा भाई हनुमान के समक्ष आया और एक ही झड़प में अनेक को निहत करनेवाला हनुमान उसकी ओर मुख करके युद्धोद्यत हुआ। देवगण यह देखकर चिन्ताकुल हुए और आपस में कहने लगे कि हनुमान की स्थिति क्या होगी ? हम अपलक नेत्र वाले हुए तो वह क्या अच्छा भाग्य ही रहा ? अहितकारी बातों का देखना भी प्राप्त हो गया। वे अलग नहीं हुए और आमने-सामने ठस जमे खड़े रहे। ९६२

ऍय्दाऩ् वाळिह ळॅरिवा युमिऴ्वत्त वीरे ऴॅदिरवै पार्शोरप्
पॉय्दाऩ् मणियॅळु वॉऩ्ऱा लऩ्ऱदु पॉडिया युदिर्वुऱ वडिवाळि
वॅय्दा यिनपल विट्टाऩ् वीरनुम् वेऱोर् पडॅयिलऩ् माऱावॅङ्
गैदा ऩॅपॉरु पडैया हत्तॉडर् कालार् तेरदऩ् मेलाऩाऩ् 963

ॲरि वाय् उमिऴ्वत–आग वमन करनेवाले; ईर् एऴ् वाळिकळ्–चौदह शर; ॲतिर् ॲय्ताऩ्–(अक्षकुमार ने) हनुमान पर चलाये; अवै–वे; पार् चोर–भूमि पर गिर जायँ, ऐसा; मणि ॲऴु ओऩ्ऱाल्–सुन्दर एक लौहदण्ड से; पॉय्ताऩ्–(हनुमान ने) उसे प्रताडित किया; अऩ्ऱु–तव; अतु–वह; पॉटियाय्–चूर होकर; उतिर्वु उऱ–चू जाय ऐसा; वॅय्तु आयित–संतापक; वटि वाळि–तीक्ष्ण शर; पल विट्टाऩ्–अनेक चलाए; वीरऩुम्–महावीर भी; वेऱु ओर् पटै इलऩ्–निरायुध हो; माऱा–उनके विरोध में; वॅम् कै ताऩे–सबल हाथों को; पॉरु पटै आक–युद्ध का हथियार बनाकर; तॉटर् काल आर्–चलनेवाले चक्रों से युक्त; तेर् अतऩ् मेल्–रथ पर; आताऩ्–चढ़ गया। ६६३

अक्षकुमार ने अग्निवर्षक चौदह बाण चलाये। उनको बेकार कर भूमि पर गिराते हुए हनुमान ने एक लौहदण्ड से उन पर प्रहार किया। अक्षकुमार ने उस दण्ड को चूर कर गिराते हुए सन्तापक और तीक्ष्ण अनेक बाण चलाये। अब महावीर निरायुध रह गया। वह उन बाणों के विरुद्ध अपने हाथों को ही हथियारों के रूप मे प्रयुक्त करते हुए अपने सामने घूमते आते पहियों वाले रथ पर चढ़ गया। ९६३

तेरिऱ् चॅऩ्ऱॅदिर् कोल्हॉळ् वानुयिर् तिऩ्ऱाऩ् पॉरुवरु शॅऱ्िदिण्डेर्
पारिऱ् चॅऩ्ऱदु परिबट् टऩववऩ् वरिविऱ् चिन्दिय पहळिक्कोल्
मार्बिऱ् चॅऩ्ऱऩ शिलपॉर् ऱोळिडै मरॆवुऱ् ऱऩशिल वऱवोनुम्
नेरिऱ् चॅऩ्ऱवऩ् वयिरक् कुऩिशिलै पऱ्िक् कॉण्डॅदि रुऱनिऩ्ऱाऩ् 964

तेरिल् चॅऩ्ऱु–रथ में जाकर; ॲतिर्–सामने; कोल् कॉळ्वाऩ्–वेत्र से अश्व चलानेवाले; उयिर् तिऩ्ऱाऩ्–(सारथी के) प्राण हरे; पॉरुवु अऱ–अनुपम; चॅऱ्ि तिण् तेर्–अति कठोर रथ; पारिल् चॅऩ्ऱतु–भूमि पर गिरा; परि पट्टऩ–अश्व मर गये;

अवन् वरि विल्–उसके सबन्ध धनु से; चिन्तिय–निकले; पकळि कोल्–शरों में; चिल–कुछ; मार्पिल् चॆन्ऱ्न–(हनुमान के) वक्ष में घुस गये; चिल–और कुछ; पॊन् तोळ् इटै–स्वर्णमय कन्धों में; मऱैवु उऱ्ऱन–घुसकर अदृश्य हो रहे; अऱवोनुम्–धर्मस्वरूप हनुमान भी; नेरिल् चॆन्ऱु–(उसके) सामने जाकर; अवन्–उसके; वयिर–वज्रकठोर; कुनि चिलै–झुके धनुष को; पऱ्ऱि कॊण्डु–छीन लेकर; ऎतिर् उऱ–सामने; निन्ऱान्–खड़ा रहा। ६६४

रथ पर पहुँचकर महावीर ने वेत्र लेकर अश्व चलानेवाले सारथी के प्राण हर लिये। वह अनुपम सबल रथ भी भूमि पर गिर गया और अश्व मर गये। अक्ष ने अपने सबन्ध धनु द्वारा अनेक शर जो चलाये, उनमें कुछ महावीर के वक्ष में घुसे। और कुछ स्वर्ण-सम मनोरम कन्धों में चुभकर अदृश्य हो रहे। धर्मस्वरूप महावीर उसके समक्ष गया और उसके वज्रकठोर और झुके धनु को छीनकर उसके सामने खड़ा रहा। ९६४

ऒरुहै यालवन् वयिरत् तिण्शिलै युऱ्ऱुप् पऱ्ऱलु मुरवोनुम्
इरुहै यालॆदिर् वलिया मुन्नम दिऱ्ऱो डियदिवर् पॊऱ्ऱोळान्
शुरिहै वाळव नुरुविक् कुत्तलु मदनैच् चॊऱ्कॊडु वरुतूदन्
पॊरुहै यालिडै पिदिर्वित् तान्मुदिर् पॊऱियो डुम्बडि पऱियावे 965

उरवोनुम्–महावीर के; ऒरु कैयाल्–एक हाथ से; अवन्–उसका; वयिर–वज्र-सम; तिण् चिलै–कठोर धनु; उऱ्ऱु पऱ्ऱलुम्–ग्रसकर पकड़ते ही; इरु कैयाल्–(अक्षकुमार अपने) दोनों हाथों से; ऎतिर् वलिया–आगे खींचे; मुन्नम्–उसके पहले ही; अतु इऱ्ऱु ओटियतु–वह टूटकर गिर गया; अवन्–उसके; चुरिकै वाळ्–छुरा; उरुवि–निकालकर; कुत्तलुम्–घुसेड़ते ही; इवर् पॊन् तोळान्–उन्नत मनोहर कन्धों वाले; चॊऱ् कॊटु–(श्रीराम की) आज्ञा ले; वरु–आगत; तूतन्–दूत (हनुमान) ने; अतनै–उसको; पऱिया–छीन लेकर; मुतिर् पॊऱि–अधिक अंगारे; ओटुम् पटि–बिखेरते हुए; पॊरु कैयाल्–लड़नेवाले एक हाथ से; इटै पितिर्वित्तान्–बीच से तोड़ दिया। ६६५

महावीर हनुमान के एक हाथ से उस अतिबलसंयुक्त धनु को खूब पकड़ने पर, वह धनु अक्षकुमार के दोनों हाथों से छीन लेने से पूर्व ही टूटकर अलग हो गया। उसने अपना छुरा निकालकर हनुमान पर भोंका, तो मनोरम व उन्नत कन्धों वाले श्रीराम की आज्ञा से आये दूत, हनुमान ने उसको पकड़कर छीन लिया और बीच से तोड़कर पटक दिया जिससे बहुत अंगारे छूटकर निकले। ९६५

वाळा लेपॊर लुऱ्ऱा निऱ्ऱदु मण्शे रामुन्नम् वयिरत्तिण्
तोळा लेपॊर मुडुहिप् पुक्किडै तळुविक् कोडलु मुडन्मुऱ्ऱुम्
नीळा रयिलॆन मयिर्दैत् तिडमणि नॆडुवा लवनुड निमिर्वुऱ्ऱु
मीळा वहैपुडै शुऱ्ऱिक् कॊण्डदु पऱ्ऱिक् कॊणडनन् मेलान्नान् 966

वाळाले–तलवार ले; पोरल् उऱ्ऱात्–लड़ना आरम्भ करके; अतु इऱ्ऱु–उसके टूटकर; मण् चेरा मुतम्–भूमि पर लगने के पूर्व ही; वयिर तिण् तोळाले–वज्रकठोर कन्धों से; पोर–लड़ने के लिए; मुट्टुकि–शीघ्र आकर; इटै पुक्कु–वहाँ आकर; तऴुवि कोटलुम्–आलिगन करते ही; नीळ् आर्–लम्बाई से युक्त; अयिल् अँत–शक्तियों के समान; उटल् मुऱ्ऱुम्–(अक्ष के) शरीर भर में; मयिर् तैतुतिट–बाल चुभ गये; मणि नेटु वाल्–मनोरम लम्बी पूँछ ने; अवऩ्–उसको; उटल् निमिर्वु उऱ्ऱु–शरीर निकालकर; मीळा वकै–बचने नहीं देते हुए; पुटै चुऱ्ऱि कोण्टतु–सब ओर से लपेट लिया; पऱ्ऱि कोण्टतऩ्–इस तरह जिसने ग्रस लिया, वह महावीर; मेल् आतात्–(कुमार को नीचे गिराकर) उसके ऊपर बैठ गया। ९६६

खड्गयुद्ध करने को जो उद्यत हुआ था, वह खड्ग के टूटकर भूमि पर लगने से पूर्व अपने वज्र-सम सुदृढ़ कन्धों के सहारे भिड़ने का संकल्प लेकर शीघ्र आया। आकर हनुमान को बाहुपाश में ले लिया। तो लम्बे भालों-जैसे हनुमान के बाल अक्ष के शरीर में चुभे। हनुमान की मनोरम व लम्बी पूँछ ने उसको कसकर ऐसा लपेट लिया कि वह बचकर निकल नहीं पाया। उस तरह पकड़कर महावीर उसे गिराकर उस पर आरूढ़ हो गया। ९६६

पऱ्ऱिक् कोण्डवऩ् वडिवा ळॅनवॊळिर् पल्लिर् उ़हनिमिर् पडर्हैयाल्
अॅऱ्ऱिक् कोण्डलि ऩ्ऱिडैनिऩ् उ़मिऴुशुडर् मिऩ्ऩिन् ऩ्ऱिऩम्विऴु वऩ्ऩॅऩ्ऩ
मुऱ्ऱिक् कुण्डल मुदला मणियुह मुऴैना लाविवर् कुडर्नालक्
कोऱ्ऱत् तिण्शुवल् वयिरक् कैहॊडु कुत्तिप् पुडैयॊरु कुदिहॊण्डाऩ् 967

पऱ्ऱिक् कोण्टु–पकड़कर; अवऩ् वटि वाळ् अॅत–उसकी तेज तलवार के समान; ओळिर्–चमकते; पल्–दाँतों को; इऱ्ऱु उक–तोड़ गिराते हुए; निमिर्–उन्नत; पटर् कैयाल्–विशाल हाथ से; अॅऱ्ऱि–चाँटा मारकर; कोण्टलिऩ् इटै निऩ्ऱु–मेघ-मध्य से; उमिऴ्–निकलनेवाली; चुटर् मिऩ्तिऩ् इतम्–चमकती बिजलियों की राशि; विऴुवत्त अॅऩ्ऩ–गिरी जैसे; कुण्टलम् मुतलाम्–कुण्डल आदि; मणि मुऱ्ऱि उक–रत्नों को मिटाकर बिखरने देकर; नाला इवर् कुटर्–जो बिना लटके विद्यमान थीं, उन अँतड़ियों को; मुऴै नाल–गुहाद्वारों के समान छिद्रों के साथ लटकाकर; कोऱ्ऱ तिण्–विजयशील कठोर; चुवल्–टीले के समान ऊँचा पड़े रहे उसको; वयिर कै कोटु–वज्र-से कठोर हाथों से; कुत्ति–घूँसा मारकर; ओरु पुटै–एक बाजू में; कुति कोण्टाऩ्–कूद पड़ा। ९६७

उसने उसे पकड़ में रखकर अपने उठे हुए विशाल हाथ से ऐसा चाँटा मारा कि उसके तीक्ष्ण तलवार-जैसे चमकीले दाँत टूटकर गिर गये। ऐसा घूँसा मारा कि मेघमध्य से निर्गत बिजलियों की राशि के समान कुण्डल आदि के रत्न छूट छितरे; और चुस्त रही उसकी अँतड़ियाँ गुहाओं के समान छिद्रों के साथ बाहर आकर लटकने लगीं। ऐसा अपने वज्र-तुल्य

हस्त से घूँसा मारकर विजयशाली महावीर, टीले के समान पड़े रहे उसके शरीर से एक बाज़ू में नीचे कूद गया। ९६७

नीत्ता योडिन वुदिरप् पॆरुनदि नीरा हच्चिलै पाराहप्
पोय्त्ताळ् शॆरिदशै यरिशिल् दिन्नपडि पॊङ्गप् पॊरुमुयिर् पोहामल्
मीत्ता निमिर्शुडर् वयिरक् कैहॊडु पिडिया विण्णोडु मण्गाणत्
तेय्त्ता तूळियि नुलहेळ् तेयिनु मॊरुतन् पुहळिडै तेयादान् 968

ऊळियिन्–युगान्त में; उलकु एळ्–सातों लोकों के; तेयिनुम्–मिटने के बाद भी; ऑरु–अनुपम; तन् पुकळ्–जिसका अपना यश; इडै–कुछ भी; तेयातान्–कम नहीं होगा वह; नीत्ताय् ओटिन–प्रवहमान; उतिर पॆरु नति–रुधिर की बड़ी नदी को; नीराक–जल बनाकर; पार्–भूमि को; चिलै आक–सिल बनाकर; पोय्–(भूमि पर) जाकर; ताळ्–पड़े रहे; चॆरि तचै–घने मज्जों के; अरि चिन्तिनपटि–चावल छितरे पड़े जैसे; पॊङ्क–पड़े रहते; पॊरुम् उयिर् पोकामल्–लड़ते रहे प्राण नहीं गये; मीत्तु आ निमिर्–ऊपर उठे हुए; चुटर् वयिर–उज्ज्वल और कठोर; कै कॊटु–हाथों से; पिटिया–(शरीर को) पकड़कर; विण् ओटु–व्योमलोक के साथ; मण् काण–भूलोक को भी देखने देते हुए; तेय्त्तान्–पीसा। ९६८

युगान्त में जब सातों लोक मिट जायँगे तब भी महावीर का यश नहीं मिटेगा। स्थायी रहेगा। ऐसे हनुमान ने प्रवाहमय रक्त-नदी से जल छिड़कते हुए, भूमि को ही सिल बनाकर उस राक्षस के नीचे छितरे मांस-मज्जों के टुकड़ों को धान के दाने बनाकर राक्षस के शरीर को, जिससे उसके प्राण बाहर निकलना न चाहकर लड़ रहे थे (छटपटा रहे थे), लोढ़े के रूप में अपने दोनों उज्ज्वल और वज्र-कठोर हाथों से पकड़कर पिसाई की और उसको व्योमलोक और भूलोक दोनों के वासी देख रहे थे। ९६८

पुण्डाळ् कुरुदियिन् वॆळ्ळत् तुयिर्हॊडु पुक्कार् शिलर्शिलर् पॊदिपेयिन्
पण्डा रत्तिडै यिट्टार् तम्मुडल् पट्टार् शिलर्शिलर् बयमुन्दत्
तिण्डा डित्तिशै यरिया मरुहिन्नर् शॆत्तार् शिलर्शिलर् शॆलवर्ड्रार्
कण्डार् कण्डदॊर् तिशैये विशैहॊडु काल्विट् टार्पडै कैविट्टार् 969

चिलर्–कुछ; पुण् ताळ्–मांस-मज्जे जिसके अन्दर थे उस; कुरुतियिन् वॆळ्ळत्तु–रक्तप्रवाह में; उयिर् कॊटु–प्राणों को बचा ले; पुक्कार्–प्रविष्ट हुए; चिलर्–कुछ ने; पेयिन्–पिशाचों से; पॊति–संगृहीत; पण्टारत्तिटै–शव-भांडारों में; तम् उटल्–अपने शरीरों को; इट्टार्–रखवा लिया; चिलर्–अन्य कुछ; पयम् उन्त–भय के उकसाने से; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; तिण्टाटि–अस्त-व्यस्त होकर; तिचै अऱिया–दिशा न जानते हुए; मरुकितर्–दुःखी होकर; चॆत्तार्–मरे; चिलर्–कुछ; चॆलवु अऱ्ऱार्–गति खो गये; चिलर्–कुछ ने; पटै–हथियारों को; कै विट्टार्–हाथ से त्याग दिया; कण्टार् कण्टतु ओर्–(और) जिस दिशा को देखा उसी; तिचैये–दिशा में ही; विचै कॊटु–सवेग; काल् विट्टार्–पैर बढ़ाये। ९६९

(अक्ष दिवंगत हो गया। फिर) कुछ रक्त-धारा में प्राण लेकर घुस गये; कुछ लोगों ने उन शवों के ढेरों में अपने शरीरों को छिपा लिया, जिनको भूत-पिशाचों ने इकट्ठा कर रखा था। कुछ भय के ही चंगुल में फँसकर मर गये। कुछ अस्त-व्यस्त होकर दिशा जान नहीं सके और संकटग्रस्त होकर विगत-प्राण हुए। कुछ में चलने की शक्ति ही नहीं रह गयी थी। और कुछ राक्षसों ने अपने हाथ के हथियार वहीं छोड़े और जो दिशा देखी उसी दिशा में भगदर मचा दी। ९६९

मीऩाय् वेलैयै युऱ्ऱार् शिलर्शिलर् पशुवाय् वऴिदोॅरु मेय्वुऱ्ऱार्
ऊऩार् परवैयिऩ् वडिवा ऩार्शिलर् शिलर्नाल् मऱैयव रुरुवाऩार्
माऩार् कण्णिळ मडवा रायिऩर् मुऩ्ऩे तङ्गुऴल् वहिर्वुऱ्ऱार्
आऩार् शिलर्शिल रैया निऩ्शर णॆऩ्ऱार् निऩ्ऱव ररियॆऩ्ऱार् 970

चिलर्—कुछ; मीऩाय्—(माया से) मछली बनकर; वेलैयै उऱ्ऱार्—समुद्र पहुँच गये; चिलर्—कुछ; पचुवाय्—गायें बनकर; वऴि तोॅरुम्—मार्ग-मार्ग में; मेय्वु उऱ्ऱार्—चरने लगे; चिलर्—कुछ; ऊऩ् आर्—मांसभक्षी; परवैयिऩ् वटिवु आऩार्—पक्षियों के रूपधारी बने; चिलर्—कुछ ने; नाल् मऱैयवर्—चतुर्वेदी (ब्राह्मण); उरुवु आऩार्—वेषधारी बने; चिलर्—कुछ; माऩ् आर् कण्—मृग की-सी आँखों वाली; इळ मटवार्—तरुण रमणियाँ; आयिऩर—बनकर; तम् कुऴल् मुऩ्ऩे—अपने केश में सामने; वकिर्वु उऱ्ऱार्—माँग बनाये; आऩार्—रहीं; चिलर्—कुछ; ऐया—प्रभु; निऩ् चरण्—आपकी शरण हैं; ॲऩ्ऱार्—कहकर शरणार्थी बने; निऩ्ऱवर्—बाक़ी जो रहे वे; अरि ॲऩ्ऱार्—हरि-नाम बोले। ९७०

कुछ राक्षस माया से मछलियाँ बनकर समुद्र में जा रहने लगे। कुछ गायें बने और मार्गों में यत्र-तत्र चरने लगे। कुछ मांसपक्षी (कौए, गीध आदि पक्षी) बने। कुछ लोगों ने चतुर्वेदी ब्राह्मणों का रूप ले लिया। कुछ मृगनयनी बालाएँ बने और अपने केश में माँग निकाले, खड़े रहे। कुछ उसकी शरण में, "हम आपके शरणागत हैं" —कहते हुए आ गये। बाक़ी जो रहे वे हरि-नाम बोलते रहे। ९७०

तऩ्दा रमुमुरु किळैयुम् दमैयॆदिर् तऴुवुम् दोॅरुनुम् दमरल्लेम्
वन्देम् वाऩव रॆऩ्ऱे हिनर्शिलर् शिलर्मा नुयरॆन वाय्विट्टार्
मन्दा रङ्गिळर्पॊऴिल्वाय् वण्डुह ळाऩार् शिलर्शिलर् मरुळ्हॊण्डार्
इन्दा रॆयिऱुह ळिरुवित् तार्शिल रॆरिपोर् कुञ्जियै यिरुळ्वित्तार् 971

चिलर्—कुछ; तम् तारमुम्—उनकी स्त्रियों और; उरु किळैयुम्—निकट के रिश्तेदारों ने; तमै ॲतिर् तऴुवुम् तोॅरुम्—उनका जब सामने आकर आलिंगन किया तब; नुम तमर् अल्लेम्—(हम) तुम लोगों के (नातेदार) नहीं; वाऩवर् वन्तेम्—देव आये; ॲऩ्ऱु—कहकर; एकिऩर्—दूर चले गये (हनुमान के डर से); मातुयर्—मनुष्य (हैं हम, राक्षस नहीं); ॲन—ऐसा; वाय् विट्टार्—उच्च स्वर में कहा; चिलर्—और

कुछ; मन्तारम् किळर्–मन्दारतरुकलित; पॉळिल् वाय्–उपवन में; वण्टुकळ् आत्तार्–भौंरे बने; चिलर्–कुछ; मरुळ् कॉण्टार्–भ्रमित हुए; चिलर्–कुछ निशाचरों ने; इन्तु आर्–कलाचन्द्र-सम; ऍयिऱुकळ्–दाँतों को; इऱुवित्तार्–तुड़वा लिया; ऍरि पोल्–आग-से; कुञ्चियै–केश को; इरुळ्वित्तार्–काला बना लिया। ९७१

कुछ राक्षसों ने, जब उनकी पत्नियों और रिश्तेदारों ने उनके स्वागत में आलिंगन किया, तब (हनुमान से डरकर) कहा कि हम तुम लोगों के बन्धु नहीं हैं। हम सब देव हैं इधर आये हुए। वे बचाकर भाग चले। कुछ राक्षसों ने उच्च स्वर में चिल्लाकर कहा कि हम मानव हैं। कुछ राक्षस मन्दारतरुकलित अशोक वन में भ्रमर बनकर रह गये। कुछ लोग भ्रमित होकर निष्क्रिय खड़े रह गये। कुछ राक्षसों ने बालचन्द्र-सम अपने दाँतों को तुड़वा लिया और आग-से लाल अपने केशों को काला बना लिया। ९७१

कुण्डलक् कुळैमुहक् कुङ्गुमक् कॉङ्गैयार्
वण्डलैत् तॅळ्हुळड् कऱ्ऱैहाल् वरुडवे
विण्डलत् तहविरैक् कुमुदवाय् विरिदलाल्
अण्डमुऱ् ऱुळदवू रळुदपे रमलैये 972

कुण्टल कुळै मुक–कुण्डल मण्डित मुखों और; कुङ्कुम कॉङ्कैयार्–कुंकुमचर्चित स्तनों वाली राक्षसियाँ; वण्टु अलैत्तु ऍळु–भ्रमरों को अस्त-व्यस्त उठने देते हुए; कुळल् कऱ्ऱै–केश राशि के; काल् वरुट–चरणों को सहलाते; अलत्तक–लाल रूई लगे; विरै–सुवासित; कुमुत वाय्–कुमुदारुण मुख के; विण्टु विरितलाल्–खूब खुलने से; अ ऊर्–उस नगर के (वासियों के); अळुत–रोने का; पेर् अमलै–बड़ा नाद; अण्टम् उऱ्ऱु उळतु–अण्ड भर में व्याप्त हुआ। ९७२

कुण्डलों से अलंकृत मुखों और कुंकुमचर्चित स्तनों वाली राक्षसियों ने अपने केश को खोल दिया, जिससे भ्रमर अस्त-व्यस्त हो उड़ने लगे। उनका केश उनके पैरों को सहला रहा था। वे अपने लाक्षारसरंजित अधरों वाले मुखों को खोलकर रोयीं, जिससे जो शोर निकला वह अण्ड भर में व्याप गया। ९७२

कदिरॅळुन् दनैयशॅन् दिरुमुहक् कणवन्मा
डॅदिरॅळुन् दडिविळुन् दळुदुशो रिळनलार्
अदिनलङ् गोदैशे रोदियो डत्तुवूर्
उदिरमुन् दॅरिहिला दिडेपरन् दॉळुहियै 973

कतिर् ऍळुन्तु अतैय–रवि उगा हो जैसे; चॅम् तिरु मुक्–लाल मुखों के; कणवन् माट्टु–पतियों के पास; ऍतिर् ऍळुन्तु–सामने उठ जाकर; अटि विळुन्तु–

चरणों पर गिरकर; अऴुतु चोर्–रोकर थकी होनेवाली; इळ नलार्–तरुण रमणियों के; अति नलम्–अति सुन्दर; कोतै चेर्–मालायुक्त; ओति ऒाट्टु–केश के साथ; अन्रु–उस दिन; अ ऊर् उतिरमुम्–उस नगर में प्रवहमान रक्त भी; इटै परन्तु ऒाऴुकि–अनेक स्थलों में फैलकर बहकर; तॆरिकिलातु–अपृथक् दृश्य रहा। ६७३

उदयसूर्य के समान लाल मुखों वाले अपने (मृतक) पतियों के सामने जाकर राक्षसियाँ पैरों पर गिरकर रोयीं। उन राक्षसियों के केश भी लाल थे। उस लंका में लाल रक्त भी बह रहा था। केश और रक्त में कोई भेद नहीं दिखायी देता था। (सर्वत्र लाल रक्त और लाल केश दिखायी दे रहे थे। राक्षसों के मुख भी लाल थे। फिर क्या, सब जगह लाली ही लाली है!)। ९७३

ताविल्वॆंज् जॆरुनिलत् तिडॆयुलन् दवर्तमेल्
ओवियम् बुरॆनलार् विऴुदोरुज् जिलरुयिर्त्
तेवुहण् गळुमिमैत् तिलर्हळा मिवैयॆलाम्
आवियोन्रु डलिरण् डायदा लेहॊलाम् 974

वॆम् चॆरु निलत्तु–क्रूर युद्धस्थल में; तावु इल् इटै–पनाह से हीन स्थल में; उलन्तवर् तम् मेल्–मरे पड़े रहों पर; ओवियम् पुरै–चित्र (प्रतिमा-)सी; नलार्–रमणियाँ; विऴु तोरुम्–ज्यों-ज्यों गिरती; चिलर्–कुछ; उयिर्त्तु–लम्बी साँस छोड़कर; एवु कण्कळुम्–बाण-सी आँखें भी; इमैत्तिलर्कळ् आम्–विना पलक मारे (मूंदकर पड़ी) रहीं; इवै ऎलाम्–ये सारे; आवि ओन्रु–प्राण एक; उटल् इरण्टु–शरीर दो; आयतु–रहे; आले कॊलाम्–इसी कारण से शायद। ६७४

उस भयंकर समरांगन में कोई छाँह ही नहीं थी। मृतकों के शवों के ऊपर चित्रप्रतिमा-सम राक्षसियाँ गिरीं। तब उनकी साँसें रुक गयीं और आँखें अपलक होकर मुँद गयीं और मरी-सी हो रहीं। क्योंकि राक्षस और राक्षसी दो शरीर पर एक प्राण थे। ९७४

ओडिन्ना रुयिर्हणा डुडल्हळ्पो लुदवियाय्
वीडिन्नार् वीडिनार् मिडॆयुडर् कुवॆहळ्वाय्
नाडिन्नार् मडनलार् नवॆयिला नण्बरॆक्
कूडिना रूडिन्ना रुम्बर्वाळ् कॊम्बन्नार् 975

मट नलार्–अबोध स्त्रियाँ; उयिर्कळ् नाटु–प्राणों की (आत्मा की) खोज में जानेवाले; उटल्कळ् पोल्–शरीर के समान; ओटित्तार्–भागीं; वीटित्तार् वीटित्तार् मिटै–मरकर सटे पड़े रहे; उटल् कुवैकळ् वाय्–शव-राशियों में; नाटित्तार्–खोज लगाकर; नवै इला नण्परै–निर्दोष संगियों को; उतवियाय्–उपकार करने के लिए; कूटित्तार्–(मरकर) उनसे मिल गयीं; उम्पर् वाऴ्–आकाशवासिनी; कॊम्पु अन्नार्–पुष्पशाखा-सरीखी (अप्सराएँ); ऊटित्तार्–रूठीं। ६७५

अबोध राक्षसी स्त्रियाँ अपने प्राणों (आत्माओं) की खोज में जानेवाले

शरीरों के समान दौड़ीं। मरे पड़े राक्षसों के शवों के ढेरों के बीच में अपने-अपने पति को खोजा। आखिर ढूँढ़ लेकर वे अपने निर्दोष मित्र-से पतियों के साथ मिल गयीं तथा स्वर्ग गयीं। वहाँ व्योमलोकवासिनी पुष्पशाखा-सरीखी अप्सराएँ इनको देखकर रुष्ट हो गयीं। (जो मर जाते हैं, वे स्वर्ग जाकर देव बन जाते हैं। और अप्सराएँ उनको आनन्द प्रदान करती हैं। यह बात ग्रन्थों में कही गयी है। कम्बन ने भी उसकी अनेक स्थलों पर चर्चा की है।)। ९७५

तीट्टुवा ळनैयकट् टॅरिवैयोर् तिरुवन्ताळ्
आट्टिनिन्ऱ् ऱयर्वदो रुदलैक् कुरैयिनैक्
कूट्टिनी योरुयिर्त् तुणैवनॆङ् गोविनै
काट्टुवा यादियॆन्ऱ् ऱळुदुकै कूप्पिनाळ् 976

तीट्टु—पैनायी गयी; वाळ् अतैय—तलवार-सी; कण्—आँखों वाली; तॆरिवै—रमणी; ओर् तिरु अन्ताळ्—एक, लक्ष्मी-सरीखी; आट्टिल् निन्ऱु—नृत्यरत रहकर; अयर्वतु ओर्—थके गये एक; अऱु तलै—सिर-कटे; कुऱैयितै—कबन्ध को; कूट्टि—उसके सिर से लगाकर; नी—तुम; ओर् उयिर् तुणैवन्—अनुपम मेरे प्राण-सम पति; ऍन् कोवितै—मेरे राजा को; काट्टुवाय् आति—दिखानेवाले बनो; ऍन्ऱु—ऐसा; अऴुतु—रोती हुई; कै कूप्पिनाळ्—हाथ जोड़े (उसने)। ६७६

पैनायी गयी तलवार-सी आँखों वाली लक्ष्मी-सरीखी एक रमणी समराजिर में आयी। वहाँ सिर कटकर जो मर गया था, उसका रुण्ड नाच रहा था। उसने उसको उसके मुण्ड के साथ मिलाया और उससे रोते हुए पूछा कि मेरे जीवन-संगी, मेरे राजा को दिखाओ। ९७६

एन्दिना डलैयैयो रॅऴुदरुङ् गॊम्बन्नाळ्
कान्दनिन्ऱ् ऱाडुवा नुडऱ्कवन् दत्तिनै
वेन्दनी यलशिनाय् विडुदिया नडमॆन्ऱाप्
पून्दळिर्क् कैहळाऩ् मॆय्युऱप् पुल्लिनाळ् 977

ऍऴुत अरुम्—चित्र जिसका खींचना कठिन था; ओर् कॊम्पु अन्ताळ्—ऐसी एक पुष्पलता-सी एक राक्षसदयिता ने; तलैयै एन्तिताळ्—(पति के कटे) सिर को उठा लेकर; निन्ऱु आटुवान्—खड़े होकर नाचनेवाले; कान्तन्—पति के; उटल कवन्तत्तितै—शरीर के रुंड को (पकड़कर); वेन्तन्—राजा; नी—तुम; अलचिताय्—थक गये हो; नटम् विटुति—नाचना छोड़ो; ऍन्ता—कहकर; पूम् तळिर्—कोमल किसलय-से; कैकळाल्—हाथों से; मॆय् उऱ—शरीर से लगाकर; पुल्लिताळ्—आलिंगन कर लिया। ६७७

अचित्रार्पणशक्य एक राक्षसी रमणी ने अपने पति का कटा सिर हाथ में ले लिया। उसका कबन्ध नाच रहा था। अपने पति के नाचते उस

कबन्ध को पकड़कर उससे प्रार्थना की कि राजा ! तुम थक गये। नाचना रोक दो। उसने अपने पल्लव-करों से उसका प्रगाढ़ आलिंगन कर लिया। ९७७

अव्वहै कण्डव रमरर् यावरुम्, उय्वहै यरिदॆन वोडि मन्नवन्
शॆव्वडि यदन्मिशै वीऴ्न्दु शॆप्पिनार्, ऎव्वहैप् पॆरुम्बडै यावु माय्न्ददे 978

अ वकै–वह सब कृत्य; कण्टवर्–जिन्होंने देखा; अमरर् यावरुम्–सभी ऋतु-देवों ने; उय् वकै अरितु–जीवित रहने का मार्ग कठिन है; ऎंन्–कहकर; ओटि–भागकर; मन्नवन् चॆं अटि अतन् मिचै–राजा के अरुण चरणों पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; ऎ वकै पॆरुम् पटै–किसी भी तरह की सेना; यावुम्–सभी का; माय्न्ततु–मिटना; चॆप्पिनार्–बताया। ९७८

ऋतुदेवताओं ने इस भाँति सबका मरना देखा तो उन्हें डर लग गया कि अब जीवित बचना कठिन है। वे वहाँ से भागे और राक्षस-राजा के लाल चरणों पर गिरे। उन्होंने सभी सेनाओं को मरने का वृत्तान्त कह सुनाया। ९७८

कयन्महिऴ् कण्णिणै कलुऴि कान्ऱुहप्
पुयन्महिऴ् पुरिहुऴल् पॊडिय ळावुऱ
अयन्महन् महन्मह नडियिन् वीऴ्न्दनळ्
मयन्महळ् वयिऱलैत् तलऱि माऴ्हिनाळ् 979

मयन् मकळ्–मयतनया; कयल् मकिऴ्–'कयल' मछली के समान उन्मत्त; कण् इणै–आँखों के जोड़े से; कलुऴि कान्ऱु उक–जल निकालकर गिराते हुए; पुयल् मकिऴ्–मेघ-सम; पुरि कुऴल्–वेणी के केश को; पॊटि अळावु उऱ–धूल पर लोटने देते हुए; अयन् मकन्–ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के; मकन् मकन्–पुत्र (विश्रवा) के पुत्र (रावण) के; अटियिल् वीऴ्न्तनळ्–चरणों पर गिरी; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटकर; अलऱि–चिल्लाकर; माऴ्किनाळ्–रोयी। ९७९

मयसुता मन्दोदरी ने यह सुना तो वह अपनी 'कयल' मछली-सी मत्त आँखों से अश्रुधारा बहाती हुई और अपने मेघ-सम केश की वेणी को खोलकर भूमि पर लोटने देती हुई ब्रह्मदेव के प्रपौत्र, पुलस्त्य के पौत्र, विश्रवा के पुत्र रावण के चरणों में गिरी और पेट पीटती हुई रोयी, कलपी और व्यग्र हुई। ९७९

तावरुन् दिरुनहर्त् तैय लार्मुदल्
एवरु मिडैविऴुन् दिरङ्गि येङ्गिनार्
कावलन् कान्मिशै विऴुन्दु कावन्मात्
तेवरु मऴुदनर् कळिक्कुज जिन्दैयार् 980

ता अरुम्–दोषहीन; तिरु नकर्–श्री नगरी की; तैयलार् मुतल्–स्त्रियों से

लेकर; एवरुम्-सभी; इटै विळुन्तु-चरणों पर गिरकर; इरङ्कि-दुखी होकर; एङ्किनार्-भयोद्विग्न रहे; कावल् मा तेवरुम्-आदरणीय ऋतुदेवता भी; कळिक्कुम् चिन्तैयार्-मन में आनन्द पाकर; कावलन्-परिपालक के; काल् मिचै-चरणों पर; विळुन्तु-गिरकर; अळुतनर्-(दिखावे के लिए) रोये। ६८०

निर्दोष उस श्री नगर की दयिताओं से लेकर सारे लोग उसके पैरों पर गिरकर रोये। ऋतुदेव भी औपचारिकतावश उसके चरणों पर गिरकर रोये; पर उनके मन पुलकित हो रहे थे। ९८०

11. पाशप् पडलम् [पाश(-बन्धन) पटल]

अव्वळि यव्वुरै केट्ट वाण्डहै
वॅव्विळि यॅरियुह वॅहुळि वीङ्गिनान्
ॲव्वळि युलहमुङ् गुलैय विन्दिरत्
तॅव्वळि तरवुयर् विशयच् चीर्त्तियान् 981

अ वळि-तब; अ उरै-वह वृत्तान्त; केट्ट-जिसने सुना; आण् टकै-पुरुषश्रेष्ठ मेघनाद; ऍ वळि उलकमुम्-किसी भी लोक को (सभी लोकों को); कुलैय-कँपाते हुए; इन्तिर तॅव्वु-इन्द्र की शत्रुता को; अळितर-मिटाकर; उयर् विचय-प्राप्त उत्कृष्ट विजय की; चीर्त्तियान्-कीर्तिमान; वॅम् विळि-क्रूर आँखों से; ऍरि उक-आग बरसाते हुए; वॅकुळि-वीङ्किनान्-कोप में बढ़ा। ६८१

यह समाचार इन्द्रजित् ने सुना। इन्द्रजित् पुरुषश्रेष्ठ था। उसने सब लोकों को अस्त-व्यस्त करते हुए शत्रु देवेन्द्र के बल को मिटाकर परास्त किया था, जिससे उसकी विजयकीर्ति बढ़ गयी थी। जब उसने अपने भाई की मृत्यु का समाचार सुना, तो उसका कोप बढ़ आया जिससे उसकी भयंकर बनी आँखों से आग-सी निकली। ९८१

अरञ्जुडर् वेऱ्ऱन दनुश निऱ्ऱशॊल्
उरञ्जुड वॅरियुयिर्त् तॊरुव नोङ्गिनान्
पुरञ्जुड वरिशिलैप् पॊरुप्पु वाङ्गिय
परञ्जुड रॊरुवनैप् पॊरुवुम् पान्मैयान् 982

अरम् चुटर् वेल्-रेती से रेतकर चमकनेवाले भाले के धारक; तनतु अनुचन्-उसके भाई का; इऱ्ऱ चॊल्-मरने के समाचार ने; उरम् चुट-उसके मन को तपाया; ऍरि उयिर्त्तु-अग्नि के समान श्वास निकालकर; पुरम् चुट-त्रिपुर को जलाने के लिए; वरि चिलै-सबन्ध धनु के रूप में; पॊरुप्पु वाङ्किय-मेरुपर्वत को जिन्होंने झुका लिया; परम् चुटर् ऒरुवनै-परम ज्योति परमेश्वर के; पॊरुवुम् पान्मैयान्-समान रहनेवाला; ऒरुवन्-अद्वितीय वीर; ओङ्किनान्-(मेघनाद) उठा। ६८२

रेती से पैनायी गयी शक्ति-धारी उसके भाई की मृत्यु के समाचार

ने उसके मन को जला-सा दिया। वह अप्रतिम मेघनाद आग के समान गरम निःश्वास छोड़ते हुए, त्रिपुर जलाने के लिए जिन्होंने मेरु को धनु के रूप में झुकाया था, उन ज्योतिर्मय परमेश्वर के समान युद्धोद्यत हो उठा। ९८२

एऱिऩऩ् विशुम्बितुक् कॅल्लै काट्टुव, आऱिरु नूऱुपेय् पूण्ड वाऴितेर्
कूऱिऩ कूऱिऩ शीऱ्कळ् कोत्तलाल्, पीऱिऩ नॅडुन्दिशै पिळन्द दण्डमे 983

विचुम्पितुक्कु—आकाश को भी; ऍल्लै काट्टुव—ऊँचाई की सीमा दिखानेवाले; आऱु इरु नूऱु पेय्—बारह सौ भूत; पूण्ट—जिसमें जुते थे; आऴि तेर्—सशक्त पहियों के रथ पर; ऐऱिऩऩ्—चढ़ा; कूऱिऩ कूऱिऩ—उसके द्वारा कहे गये; चीऱ्कळ्—(कठोर) वचन; कोत्तलाल्—गुँथे हुए आये, इसलिए; नॅटुम् तिचै—लम्बी दिशाएँ; पीऱिऩ—दरारें खा गयीं; अण्टम् पिळन्ततु—अण्ड फटा। ९८३

वह अपने सारयुक्त पहियेदार रथ पर चढ़ा जिसमें आकाश को भी ऊँचाई की सीमा दिखाते-से बढ़े रहे बारह सौ भूत जुते थे। तब उसने क्रोध में लगातार कुछ कठोर वचन कहे, जिनकी उग्र कठोरता के कारण लम्बी दिशाओं में दरारें पड़ गयीं और अण्ड भी फट गया। ९८३

आर्त्तऩ कळ्ळुन् दारुम् बेरियु मशऩि यॅऩ्ऩ
वेर्त्तुयिर् कुलैय मेऩि वॅदुम्बिऩ ऩमरर् वेन्दऩ्
शीर्त्तदु पोरु मॅऩ्ऩात् तेवर्क्कुन् देव राय
मूर्त्तिह डामुन् दन्दम् योहत्तिन् मुयऱ्चि विट्टार् 984

कळ्ळुम्—पायलें और; तारुम्—हार और; पेरियुम्—भेरियाँ; अचऩि ऍऩ्ऩ—अशनि के समान; आर्त्तऩ—नर्दन कर उठीं; अमरर् वेन्तऩ्—देवराज; उयिर् कुलैय—व्यग्रप्राण; मेऩि वेर्त्तु—स्वेदयुक्त शरीर वाला होकर; वॅतुम्पिऩऩ्—तप्त हुआ; तेवर्क्कुम् तेवर् आय—देवाधिदेव; मूर्त्तिकळ् तामुम्—त्रिमूर्ति भी; पोरुम् चीर्त्ततु—युद्ध भी चरम सीमा पर आ गया; ऍऩ्ऩा—सोचकर; तम् तम् योकत्तिऩ्—अपने-अपने योग के; मुयऱ्चि—अभ्यास से; विट्टार्—विरत हुए। ९८४

जब वह जाने लगा तब उसकी पायलों, हारों और भेरियों ने अशनि का-सा नर्दन किया। देवराज काँप गया और उसका शरीर पसीना-पसीना हो गया। देवदेव त्रिदेवों ने भी युद्ध चरम सीमा पर आ गया —यह सोचकर अपना योगाभ्यास छोड़ दिया। ९८४

तम्बियै युन्नुन् दोऱुन् दारैनीर् तदुम्बुङ् गण्णान्
वम्बियल् शिलैयै नोक्कि वाय्मडित् तुरुत्तु नक्कान्
कॉम्बियऩ् माय वाऴ्क्कैक् कुरङ्गिऩाऱ् कुरङ्गा वाऱ्ऱल्
ॲम्बियो तेय्न्दा नॅन्दै पुहऴ्न्ऱो तेय्न्द दॆऩ्ऱान् 985

तम्पियै उन्नुम् तोऱुम्—ज्यों-ज्यों अपने कनिष्ठ का स्मरण करता; तारै नीर्—त्यों-त्यों अश्रुधारा से; ततुम्पुम् कण्णान्—भरी आँखों का; वम्पु इयल्—बन्धनयुक्त; विल्लैं—धनु को; नोक्कि—देखकर; वाय् मटित्तु—अधर मोड़कर; उरुत्तु नक्कान्—कोप की हँसी हँसता; कोम्पु इयल्—शाखाओं में जीने का; माय वाळ्क्कै—मर्त्य-जीवन जीनेवाले; कुरङ्किताल्—वानर से (क्या); कुरङ्का आऱ्ऱल्—अथक बली; ॲम्पियो तेय्न्तान्—मेरा छोटा भाई क्या मरा; ॲन्तै पुकळ् अन्ऱो—मेरे पिता की न; तेय्न्तत्तु—मिट गयी; ॲन्ऱान्—कहा। ९८५

इन्द्रजित् ज्यों-ज्यों अपने भाई की बात सोचता, त्यों-त्यों उसकी आँखें अश्रु से भर जातीं। उसने सबन्ध अपने धनु को देखा। फिर अधर दाँतों से काटते हुए कोप के साथ हँसा। उसने आहत अभिमान के स्वर में कहा कि शाखाजीवी मर्त्य बन्दर द्वारा क्या मेरा छोटा भाई ही नाश हुआ? नहीं। मेरे पिताजी का यश न नाश हुआ!। ९८५

वेऱ्ऱिरण् डन्नवुम् विल्लु मिडैन्दवुम् वॆऱ्पॆन्ऱालुम्
कूऱ्ऱिरण् डाक्कुम् वाट्कैक् कुळुवैयुङ् गुणिक्क लाऱ्ऱेम्
शेऱ्ऱिरण् डरुहु शॆय्युज् जॆऱ्ऱिमदच् चिऱुहण् यानै
आऱ्ऱिरण् डञ्जु नूऱ्ऱि न्निरट्टितेर्त् तॊहैयु म:(ह्)दे 986

वॆऱ्पु ॲन्ऱालुम्—पर्वत ही क्यों न हों; कूऱु इरण्टु आक्कुम्—(भिड़े तो) उसके दो भाग करनेवाले; वेल् तिरण्टनवुम्—शक्तियों-सहित वीर जो एकत्रित हुए; विल्लु मिटैन्तवुम्—धनु (वीर) जितने भीड़ लगाकर मिले; वाळ् कै कुळुवैयुम्—खड्गहस्तों के दलों को; कुणिक्कल् आऱ्ऱेम्—गिनने की शक्ति हमारे पास नहीं है; इरण्टु अरुकु—दोनों बाजुओं (में भूमि) को; चेऱु चॆय्युम्—पंक बनानेवाले; चॆऱ्ऱि मत—मदमत्त; चिऱु कण्—छोटी आँखों के; यानै—गजों की संख्या; आऱु इरण्टु अञ्चु नूऱ्ऱिन् इरट्टि—६×२×५×१००×२ (=१२) हजार है; तेर् तॊकैयुम्—रथों की संख्या भी; अ:ते—वही। ९८६

उसके साथ पर्वत को भी दो भागों में खण्डित करने की शक्ति रखनेवाले भाले (लिये हुए वीर) एकत्रित होकर गये। धनुर्धर वीर मिलकर गये और तलवारधारी वीर गये। पर उनकी संख्या जान लेना हमारी शक्ति के बाहर की बात है। पर दोनों ओर भूमि को पंक बनाते हुए चलनेवाले गजों की संख्या बारह हज़ार थी। रथों की संख्या भी वही। ९८६

आयमात् तानै तान्वन् दण्मिय दण्म वेनैत्
तीयवा णिरुदर् वेन्दर् शेर्न्दवर् शेरत् तेरिन्
एयॆनु मळविन् वन्दा न्निरावण न्निरुन्द याणर्
वायिऱोय् कोयिल् पुक्का नरुविशोर् वयिरक् कण्णान् 987

आय—वैसी; मा तानै—बड़ी सेना; तान् वन्तु अण्मियतु—ही आकर जुड़ी; अण्म—एकत्रित होने पर; एनै—अन्य; तीय वाळ्—क्रूर तलवारधारी; निरुतर् वेन्तर्—राक्षसराज; चेर्न्तवर् चेर—जो आये वे भी आ मिले; एय् ऍनुम् अळविल्—'एय्' कहने के पहले ही; अरुवि चोर्—सरिता के समान (अश्रु) बहाते; वयिर कण्णान्—द्वेषपूर्ण आँखों वाला; तेरिल् वन्तान्—रथ पर आया; इरावणन् इरुन्त—जिसमें रावण रहा; याणर् वायिल् तोय्—सुन्दर द्वार से युक्त; कोयिल् पुक्कान्—मन्दिर (महल) में प्रविष्ट हुआ। ९८७

वैसी बड़ी सेना आकर उससे मिली। साथ अन्य क्रूर तलवारधारी राक्षस राजा भी आकर मिले। उनके साथ नदी-सी अश्रुधारा बहानेवाली और द्वेषपूर्ण आँखों का वह इन्द्रजित् 'एय्' कहने की देर के अन्दर अपने रथ पर आकर मनोरम द्वार के महल में प्रविष्ट हुआ, जिसमें रावण रहता था। ९८७

ताळिणै विऴुन्दान् ऱम्बिक् किरङ्गिनान् ऱरुह णानुम्
तोळिणै पऱ्ऱि येन्दित् तऴुविन नऴुदु शोर्न्दान्
वाळिणै नॆडुङ्गण् मादर् वयिऱलैत् तलऱि माऴ्ह
मीळिपोल् मॊय्म्बि नानुम् विलक्किनन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 988

ताळ् इणै विऴुन्तान्—चरणद्वय पर गिरकर; तम्पिक्कु—छोटे भाई के लिए; इरक्किनान्—दुःख (प्रकट) किया; तरुकणानुम्—निडर रावण भी; तोळ् इणै—(इन्द्रजित् के) बाहुद्वय को; पऱ्ऱि एन्ति—पकड़ उठाकर; तऴुवितन्—आलिंगन करते हुए; अऴुतु चोर्न्तान्—रोया और थका; इणै वाळ्—तलवार के जोड़े के समान; नॆटुम् कण् मातर्—आयत आँखों की स्त्रियाँ; वयिऱु अलैत्तु—पेट पीटती हुई; अलऱि—चिल्लाकर; माऴ्क—व्याकुल हुईं; मीळि पोल् मॊय्म्पितानुम्—यम-सदृश शक्तिशाली (इन्द्रजित्); विलक्कितन्—उनको हटाकर; विळम्पल् उऱ्ऱान्—बोलने लगा। ९८८

वह रावण के चरणद्वय पर गिरा और अपने भाई के मरण के दुःख में रोया। निडर रावण भी उसकी दोनों बाहुओं को पकड़कर उठाया और आलिंगन करते हुए रो-रोकर थक गया। तलवार के जोड़े के समान आँखों वाली राक्षसियाँ भी पेट पीटती हुई चिल्लायीं और शिथिल हुईं। यम-सम बलशाली इन्द्रजित् उन सबको दूर करके अपने पिता से यों बोलने लगा। ९८८

ऒन्ऱुनी युरुदि योरा युऱ्ऱरिन् दुळैय हिऱ्ऱि
वन्ऱिऱऱ् कुरङ्गि नाऱ्ऱन् मरबुनी युणर्न्दु मन्नो
शॆन्ऱुनीर् पोरुदि रॆन्ऱ तिऱत्तिऱम् जॆलुत्तित् तेयक्
कॊन्ऱनै नीये यन्ऱो निरुदर्दङ् गुऴुवै यॆल्लाम् 989

नी—आप; उरुति ऒन्ऱुम्—हित कुछ; ओराय्—नहीं सोचते; उऱ्ऱु अऱिन्तु—

जो हुआ वह सोचकर; उळैयकिऱ्ऱि–दुःख करते हैं; नी–आप; वऩ् तिऱल् कुरङ्किऩ्–अति चतुर वानर का; आऱ्ऱल् मरपु–बल-पराक्रम; उणर्न्तु–जानकर भी; चॆऩ्ऱु–जाकर; नीर् पोरुतिर् ऎऩ्ऱु–तुम जाकर लड़ो, कहकर; तिऱम् तिऱम् वॆलुत्ति–बारी-बारी से भेजकर; निरुतर् तम् कुळुवै ऎल्लाम्–राक्षसों के सारे दलों को; नीये–आपने स्वयं; तेय–क्षीण कराते हुए; कॊऩ्ऱऩै अऩ्ऱो–मरवाया न। ९८९

पिताजी! आप अपना हित कुछ नहीं सोचते। जो बीत गया उसको सोचकर दुःखी हो रहे हैं। आपको अति बलशाली वानर की शक्ति की स्थिति विदित हो गयी थी। तो भी आपने 'जाकर लड़ो' कहकर बारी-बारी से राक्षसदलों को भेजा और उनको क्षय करते हुए मरवा दिया। ९८९

किङ्गरर् शम्बु मालि केडिला वैव रॆऩ्ऱिप्
पैङ्गळ लरक्क रोडु मुडऩ्शॆऩ्ऱ पहुदिच् चेऩै
इङ्गॊरु पेरु मीण्डा रिल्लैयेऱ् कुरङ्ग दॆऩ्दाय्
शङ्गर नयऩ्मा लॆऩ्बोर् तामॆऩ्ऩ् दरत्त दामे 990

ऎऩ्ताय्–पिताजी; किङ्करर्–किंकरदल; चम्पुमालि–जम्बुमाली; केट्टु इला ऐवर्–अक्षयबल पंच सेनापति; ऎऩ्ऱु–ऐसे; इ पैम् कळल्–इन चमकदार पायलधारी; अरक्करोट्टुम्–राक्षसों के साथ; उटऩ् चॆऩ्ऱु–उनसे मिलकर जो गयी; पकुति चेऩै–बड़े भाग की सेनाओं में; इङ्कु–यहाँ; ओरु पेरुम्–नाम मात्र के लिए भी एक; मीण्टार् इल्लैयेल्–नहीं लौटा तो; कुरङ्कु अतु–वह वानर; चङ्करऩ् अयऩ् माल्–शिव, ब्रह्मा और विष्णु; ऎऩ्पोर् ताम् ऎऩ्ऩुम्–कहलानेवाले वे ही हैं; तरत्तदु आम्–मानने योग्य ही है। ९९०

मेरे पिताजी! किंकर, जम्बुमाली, अमिट पंच सेनापति —इन मनोरम चमकदार पायलधारी वीरों के साथ गयी बहुत बड़े अंशों की सेना का कोई भी लौट नहीं आया। तो वह बन्दर शिव, ब्रह्मा और विष्णु कथित त्रिदेव ही है —यही कहना पड़ेगा। ९९०

तिक्किऩै वॆऩ्ऱु मेऩा डिरिबुरन् दीयच् चॆऱ्ऱ
मुक्कणाऩ् वाळै वाङ्गि युलहॊरु मूऩ्ऱुम् वॆऩ्ऱाय्
अक्कऩैक् कॊऩ्ऱु निऩ्ऱ कुरङ्गिऩै याऱ्ऱल् काट्टिप्
पुक्किनि वॆऩ्ऱु मॆऩ्ऱार् पुलम्बऩ्ऱिप् पुलमैत् तामो 991

तिक्किऩै वॆऩ्ऱु–दिशाओं को जीतकर; मेल् नाळ्–पहले; तिरिपुरम् तीय चॆऱ्ऱ–त्रिपुर को जलाकर जिन्होंने मिटाया; मुक्कणाऩ्–उन त्रिनेत्र (शिवजी) द्वारा दत्त; वाळै–तलवार (चन्द्रहास); वाङ्कि–लेकर; उलकु ओरु मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों को; वेऩ्ऱाय्–जीत लिया (आपने); अक्कऩै कॊऩ्ऱु निऩ्ऱ–अक्ष को मारकर जो खड़ा है; कुरङ्किऩै–उस वानर को; आऱ्ऱल् काट्टि–बल प्रयोग करके;

इति–अब; पुक्कु—जाकर; वॆन्ऱ्म् ॲन्ऱाल्–मारेंगे तो; पुलमपु अन्ऱि–बकवास के अलावा; पुलमैत्तु आमो–बुद्धिमत्ता का काम होगा क्या। ९९१

आपने दिग्विजय की; त्रिपुरान्तक त्रिनेत्र शिवजी द्वारा दत्त चन्द्रहास पायी और तीनों लोकों को जीतकर अपने अधीन कर लिया। अब अक्षकुमार के मारक वानर को, अपना बलप्रयोग करके युद्ध में जाकर मार भी देंगे तो वह केवल बकवास होगा; नहीं तो बुद्धिमत्ता का काम होगा क्या ? । ९९१

आयिनु मैय नॊय्दि नाण्डॊऴिर् कुरङ्गै यान्
एयॆनु मळविर् पऱ्ऱित् तरुहुवॆ निडरॆन् ऱॊन्ऱुम्
नीयिनि युळक्कर् पालै यल्लैयीण् डिरुत्ति यॆन्नाप्
पोयिन नमरर् कोवैप् पुहऴॊडु कॊण्डु पोन्दान् 992

आयिनुम्–तो भी; ऐय–प्रभु; नॊय्तिन्–आसानी से; आण् तॊऴिल्–वीर-कर्मी; कुरङ्कै–उस वानर को; यान्–मैं स्वयं; एय् ॲनुम् अळविल्–'एय्' कहने के समय के अन्दर; पऱ्ऱि तरुकुवॆन्–पकड़कर ला दूंगा; नी–आप; इनि–अब; इडर् ॲन्ऱ ऑन्ऱुम्–संकट कहकर कुछ भी; उळक्कल् पालै अल्लै–दुःख करते मत रहिए; ईण्टु इरुत्ति–यहीं (सुख) से रहिए; ॲन्ना–कहकर; अमरर् कोवै–देवराज को; पुकऴ् ओटु–यशसहित; कॊण्टु पोन्तान्–जो पकड़ लाया था; पोयिनन्–(वह इन्द्रजित्) गया। ९९२

तो भी मैं आसानी से उस वीरकर्म वानर को 'एय्' का उच्चारण करने की देरी के अन्दर पकड़ ला दूंगा। अब कुछ चिन्ता करने की आपको कोई आवश्यकता नहीं। यहीं निश्चिन्त रहिए। ऐसा कहकर, इन्द्र को उसके यश के साथ जो क़ैद करके लाया था, वह इन्द्रजित् उठ चला। ९९२

आऴियन् देरु मावु मरक्करु मुरुक्कुञ् जॆङ्गण्
शूऴिवॆङ् गोब मावुन् दुवन्ऱिय निरुदर् शेनै
ऊऴिवॆङ् गडलिर् चुऱ्ऱ वीरुतनि नडुव णिन्ऱ
पाऴिमा मेरु वॊत्तान् वीरत्तिन् पन्मै तीर्त्तान् 993

आऴि अम् तेरुम्–पहियों के साथ रथ; मावुम्–अश्व; अरक्करुम्–राक्षस; मुरुक्कुम्–शत्रुनाशक; चॆङ्कण्–लाल आँखों और; चूऴि–मुखपट्ट वाले; वॆम् कोप–भयंकर रीति से क्रुद्ध; मावुम्–गज और; तुवन्ऱिय–जिसमें भरे थे; निरुतर् चेनै–वह राक्षस-सेना; ऊऴि वॆम् कटलिल्–प्रलय के भयानक सागर के समान; चुऱ्ऱ–उसे घेरकर गयी; वीरत्तिन् पन्मै तीर्त्तान्–'वीर' के बहुवचन को जिसने मिटाया था; तनि नटुवण् निन्ऱ–एकाकी मध्य में खड़े रहे; ऑरु पाऴि–एक बहुत बलवान; मा मेरु ऑत्तान्–बड़े पर्वत के समान लगा। ९९३

पहियेदार मनोरथ रथों, अश्वों, राक्षसों और शत्रुघाती, अरुणाक्ष

मुखपट्टालंकृत भयंकर और क्रुद्ध गजों से भरी राक्षस-सेना युगान्त के भयंकर सागर के समान उसको घेरकर गयी। वह वीरता के आश्रय का बहुवचन मिटानेवाला (यानी वीरता का वही एकमात्र आश्रय) इन्द्रजित् समुद्र-मध्य एकाकी स्थित अप्रतिम बड़े मेरु के समान लगा। ९९३

शॅन्ड्रन्न इॅन्नव मनृनो तिशैहळो डुलह मॅल्लाम्
वॅन्ड्रव निवर्तॅन् ड्रालुम् वीरत्ते निन्ड्र वीरन्
अन्ड्रदु कण्ड वाळि यनुमनै यमरि नाड्ड्रल्
नन्ड्रॅन्न वुवहै कॊण्डान् यावरु नडुक्क मुड्ड्रार् 994

चॅन्ड्रनन्–जो गया; इवन्–यह; तिचैकळोडु–दिशाओं के साथ; उलकम् अॅल्लाम् वॅन्ड्रवन्–सारे लोकों का जीतनेवाला था; अॅन्ड्रालुम्–तो भी; वीरत्ते निन्ड्र वीरन्–वीरचरित्र-स्थित वीर था, (इसलिए); अतु–(हनुमान का साहस) वह; अन्ड्र कण्ट–जिसने उस दिन देखा; वाळि अनुमनै–जययशस्वी हनुमान को (देखकर); अमरिन् आड्ड्रल् नन्ड्र–युद्ध का विक्रम अच्छा है; अॅन्न–ऐसा; उवकै कॊण्टान्–(कहकर) खुश हुआ; यावरुम्–सभी; नटुक्कम् उड्ड्रार्–काँप उठे। ९९४

इस भाँति जो गया, वह इन्द्रजित् दिशाओं के साथ त्रिलोकविजयी था। तो भी वीरता का जीवन बितानेवाला था, इसलिए उसने हनुमान का साहस देखकर प्रशंसा की कि इसका युद्ध-पराक्रम बड़ा विशिष्ट है। वह बहुत मुदित हुआ। पर सभी लोग भय से काँप उठे। ९९४

इलैहुलाम् बूणि नानु मिरुम्बिणङ् गुरुदि येड्ड्र
अलहिल्वॅम् बडैह ळॅड्ड्रि यळविडर् करिय दाहि
मलैहळुङ् गडलुम् याऱुङ् गानमुम् बॅड्ड्रु मड्ड्रोर्
उलहमे यॊत्त दम्मा पोर्प्पॅरुङ् गळमॅन् ड्रुन्ना 995

इलै कुलाम्–पत्रचित्रित; पुणितानुम्–आभरणधारी (इन्द्रजित्) भी; पॅरुम् पोर् कळम्–वह अतिविशाल समरभूमि; इरुम् पिणम्–बड़े-बड़े शवों; कुरुति–रक्त (के तालाब और नदियाँ); एड्ड्र–के द्वारा लाये गये; अलकु इल्–अगणित; वॅम् पटैकळ्–भयंकर हथियार; तॆड्ड्रि–ठोकर लगाते हैं; अळवु इटड्कु–मापने के लिए; अरियतु आकि–कठिन बनकर; मलैकळुम्–पर्वतों और; कटलुम्–सागरों; याऱुम्–और नदियों; कानमुम् पॅड्ड्रु–और जंगलों से युक्त होकर; मड्ड्र ओर् उलकमे ऒत्ततु–अन्य दूसरे भूलोक के समान रही; अॅन्ड्र उन्ना–यह सोचकर। ९९५

इन्द्रजित् ऐसे आभरण पहने हुए था, जिनमें पत्र के आकार की चित्रकारी हुई थी। उसने युद्धभूमि में बड़-बड़े शव देखे; रक्त की नदी देखी। उनसे लाये गये भयंकर अनेक हथियार देखे। और सब बेशुमार थे। तब वह समरभूमि भूलोक के समान ही लगी, जिस पर पर्वत, समुद्र, नदियाँ और कानन भरे पड़े हैं। ९९५

वॆप्पडै हिल्ला नॆञ्जिऱ् चिऱियदोर् विम्मल् कॊण्डान्
अप्पडै वेलै यन्न पॆरुमैय राऱ्ऱ लोडुम्
ऒप्पडै हिल्ला रॆल्ला मुलन्दनर् कुरङ्गु मॊन्ऱे
ऎप्पडै कॊण्डु वॆल्व दिरामत्वन् दॆदिर्क्कि लॆन्ऱान् 996

अप्पु अटै वेलै अन्न–जलपूर्ण सागर-सम; पॆरुमैयर–यशस्वी; आऱ्ऱल् ओटुम्–अपने साहस को; ऒप्पु अटैकिल्लार्–उपमा न रखनेवाले; ऎल्लाम्–सभी राक्षस; उलन्ततर्–सूख गये (मरे); कुरङ्कुम् ऒन्ऱे–(मारनेवाला) वानर तो एक है; इरामन् वन्तु–अगर राम आकर; ऎतिर्क्किल्–लड़ेगा तो; ऎप्पटै कॊण्टु–कौन सी सेना लेकर; वॆल्वतु–जीतना है; ऎन्ऱान्–कहते हुए; वॆप्पु अटैकिल्ला–अव तक जिस हृदय में ताप नहीं हुआ था; नॆञ्चिल्–उस हृदय में; चिऱियतु–छोटी; ओर् विम्मल्–एक तरस को; कॊण्टान्–स्थान दे दिया (इन्द्रजित् ने)। ९९६

"जलपूर्ण सागर-सम यशस्वी, वीरता में अप्रमेय —ये सब वीर मर गये। मारनेवाला एकाकी वानर है! तब राम ही आकर लड़ेगा तो किस सेना के सहारे हम उसे जीत पायेंगे?" —यह कहा इन्द्रजित् ने। उसके मन में इसके पहले कभी कोई दुःख का अनुभव ही नहीं हुआ था। अब उसके मन में किंचित भय पैदा हुआ। ९९६

कण्णना रुयिरै यॊप्पार् कैप्पडैक् करुत्तिन् मिक्कार्
ऎण्णलान् दहैय रल्ल रिऱन्दॆदिर् किडन्दार् तम्मै
मण्णुळे नोक्कि नोक्कि वाय्मडित् तुयिर्त्तान् मायाप्
पुण्णुळे कॊलिट् टन्न मानत्ताऱ् पुळुङ्गु हिन्ऱान् 997

कण् अन्नार्–आँखों के समान (प्यारे); उयिरै ऒप्पार्–प्राण-सम; कै पटै–हाथ में हथियार लेकर लड़ने में; करुत्तिन् मिक्कार्–अधिक ख़याल रखनेवाले; ऎण्णल् आम् तकैयर्–(वीर) गिनने योग्य रीति के; अल्लर्–नहीं थे; इऱन्तु–मरकर; ऎतिर् किटन्तार् तम्मै–सामने जो पड़े रहे उनको; मण् उळे–भूमि पर; नोक्कि नोक्कि–देख-देखकर (सर्वत्र देखकर); वाय् मटित्तु–अधर मोड़कर; उयिर्त्तान्–दीर्घ निःश्वास छोड़ते; माया पुण् उळे–ताजे घाव में; कोल् इट्टु अन्न–छड़ी घुसेड़ दी गयी हो जैसे; मानत्ताल्–अपमान से; पुळुङ्कुकिन्ऱान्–शोक-दग्ध होता (है)। ९९७

जो मरे पड़े थे, वे आँखों और प्राणों के समान प्यारे थे और अपने हाथों के हथियारों के साथ युद्ध करने के बहुत उत्साही थे। ऐसे वे अपार संख्या में मरे पड़े थे। इन्द्रजित् ने उन्हें भूमि पर सर्वत्र देखा। उसका मन विचलित हुआ। अधर मोड़कर लम्बी साँसें छोड़ने लगा। न भरनेवाले व्रण में छड़ी घुस गयी हो जैसे वह अपमानाहत हो तप्त हुआ। ९९७

कान्िडै यत्तैक् कुऱ्ऱ कुऱ्ऱमुङ् गरन्ार् पाडुम्
यातुडै यॆम्बि वीन्द विडुक्कणुम् बिऱवु मॆल्लाम्
मान्िड रिरुव रानुम् वानर मॊन्ऱि नानुम्
आन्िडत् तुळवॆन् वीर मळहिऱ्ऱे यम्म वॆन्ऱान् 998

कान् इटै–(दण्डक-) अरण्य में; अतृतैक्कु उऱ्ऱ–मेरी बुआ का जो हुआ वह; कुऱ्ऱमुम्–हीनता; करनार् पाटुम्–और खर आदि का मरण; यान् उटै ऍम्पि–मेरे छोटे भाई के; वीन्त इटुक्कणुम्–मरने का दुःख; पिऱवुम् ऍल्लाम्–अन्य सभी; मान्िटर् इरुवरानुम्–दो मनुष्यों और; वानरम् ऑन्ऱिनालुम्–एक वानर द्वारा; आन इटत्तु–जब हुए तो; ऍन् उळ वीरम्–मेरी वीरता; अळकिऱ्ऱे अम्म–बड़ी सुन्दर है, मैया; ऍन्ऱान्–(आहत स्वर में) कहा (इन्द्रजित ने)। ९९८

दण्डक वन में मेरी बुआ के अंग कटे। खर आदि मरे। इधर मेरा छोटा भाई मरा। यह सारा अपमान का और दुःखदायी काम दो मनुष्यों और एक वानर के हाथ हुआ। तो, मैया! मेरी वीरता भी खूब प्रशंसनीय रही! । ९९८

नीर्प्पुण्ड वुदिर वारि नॆंडुन्दिरैप् पुणरि तोन्ऱ
ईर्प्पुण्डर् करिय वाय पिणक्कुव डिडऱिच् चॆल्वान्
तेय्प्पुण्ड तम्बि याक्कै शिवप्पुण्ड कण्ग डीयिल्
काय्प्पुण्ड शॆम्बिऱ् ऱोन्ऱक् करुप्पुण्ड मनत्तन् कण्डान् 999

नीर्प्पु उण्ट–द्रवमान; उतिर वारि–रक्त जल; नॆंटुम् तिरै–बड़ी-बड़ी तरंगों से युक्त; पुणरि तोन्ऱ–सागर के सामने दिखते; ईर्प्पु उण्टऱ्कु अरिय आय–छीनने के लिए कठिन; पिण कुवटु–शव-पर्वतों से; इटऱि चॆल्वान्–ठोकर खाते हुए जानेवाला; तेय्प्पु उण्ट–पिसे हुए; तम्पि आक्कै–छोटे भाई के शरीर को; चिवप्पु उण्ट कण्कळ्–लाली भरी आँखें; तीयिल्–आग में; काय्प्पु उण्ट–तपे हुए; चॆम्पिल् तोन्ऱ–ताँबे के समान दिखें, ऐसा; करुप्पु उण्ट–(और) कालिमायुक्त (क्रुद्ध); मनत्तन्–मन वाले ने; कण्टान्–देखा। ९९९

इन्द्रजित् के सामने बहनेवाले रक्त का, बड़ी-बड़ी लहरों वाला समुद्र दिखायी दिया। उसका रथ उस रक्त-नदी से तिराये न जा सकनेवाले शवों से टकराता हुआ आगे बढ़ रहा था। तब उसने अपने भाई के शव को देखा, जो खूब पिसकर कर्दम बन गया था। उसकी लाल आँखें तप्त ताँबे के समान दिखीं। उसका मन कोप से काला हो गया। ९९९

तारुहन् कुरुदि यन्न कुरुदियिऱ् ऱन्िमाच् चीयम्
कूरुहिर् किळैत्त कॊऱ्ऱक् कनहन्मॆय्क् कुळम्बिऱ् ऱोन्ऱत्
तेरुहक् कैयिन् वीरच् चिलैयुह वयिरच् चॆङ्गण्
नीरुहक् कुरुदि शिन्द नॆरुप्पुह वुयिर्त्तु निन्ऱान् 1000

तारुकन् कुरुति अन्न–दारुकासुर के रक्त के समान; कुरुतियिल्–रक्तप्रवाह में; तन्नि मा चीयम्–अद्वितीय बड़े (नर-) सिंह के; कूर् उकिर् किळैत्त–तेज नाखूनों से चीरकर निकाले गये; कोट्र कनकन्–विजयी कनक (-कश्यप) के; मेय् कुळम्पिल्–शरीर के कर्दम में ढेर के समान; तोट्र–दिखा (अक्ष) तो; तेर् उक–रथ को डगमगाने देते हुए; कैयिन् वीर चिलै–हाथ के वीरधनु को; उक–गिराते हुए; वयिर चॅम् कण्–द्वेषपूर्ण लाल आँखों से; नीर् उक–जल बरसाते हुए; कुरुति चिन्न–रक्त बहाते हुए; नॅरुप्पु उक–आग उगलते हुए; उयिर्त्तु निन्रान्–लम्बे श्वास निकालता हुआ खड़ा रहा। १०००

(कालिकादेवी द्वारा निहत) दारुक राक्षस के रक्त के समान रक्तप्रवाह में अक्षकुमार उस कनककश्यप के समान पड़ा हुआ था, जिसके शरीर को अद्वितीय नृसिंह के तेज नाखूनों ने नोच-चीरकर बिल्कुल कर्दम बना दिया था। यह देखकर इन्द्रजित् की स्थिति ऐसी हो गयी कि उसका रथ डगमगा गया। उसके हाथ से धनु छूट गया। द्वेषपूर्ण लाल आँखों से अश्रु के साथ रक्त और आग भी निकली। लम्बी साँसें छोड़ते हुए वह खड़ा रह गया। १०००

वॅव्विलै	ययिल्वे	लुन्दै	वॅम्मैयैक्	करुदि	यावि	
वव्वुदल्	कूट्रु	माट्रा	मारुमा	रुलहिन्	वाळ्वार्	
अव्वुल	हत्तु	ळेरे	लञ्जुव	रॊळिक्क	वैया	
ऍव्वुल	हत्तै	युट्रा	यॅम्मैनीत्	तॊळिदि	ऍन्नदाय्	1001

ऍन्नाय्–तात; वॅम् इलै–भयंकर और पत्राकार सिर वाले; अयिल् वेल्–तीक्ष्ण भाले के; उन्तै–(धारण करनेवाले) तुम्हारे पिता के; वॅम्मैयै करुति–क्रोध को सोचकर; कूट्रुम्–मृत्यु भी; आवि वव्वुतल्–तुम्हारे प्राण हर; आट्रा–नहीं सकती; माऱु माऱु उलकिन्–विविध लोकों में; वाळ्वार्–रहनेवाले; अ उलकत्तु–उस यमलोक में; उळेर् एल्–रहें तो; ऑळिक्क–तुम्हें वहाँ छिपाये रखने से; अञ्चुवर्–डरेंगे; ऐया–बावा; ऍम्मै–हमें; ऍळितिन् नीत्तु–आसानी से छोड़कर; ऍ उलकत्तै–किस लोक में; उट्राय्–पहुँचे। १००१

मेरे तात ! अतिक्रूर और पत्राकार सिर वाले भालाधारी तुम्हारे पिता के कोप का विचार करके मृत्यु में भी तुम्हें ग्रस लेने की शक्ति नहीं। विविध लोकों के वासी भी अपने-अपने लोक मे हों, तो वे तुम्हें वहाँ छिपाये रखने से डरेंगे। बावा ! हमें आसानी से छोड़कर किस लोक में पहुँच गये ?। १००१

आट्रल	नाहि	यन्वा	लरिवळिन्	दयरुम्	वेलै	
शीट्रमॅन्	ट्रॊनुरु	तान्ने	मेन्निमिर्	शॅलविर्	राहित्	
तोट्रिय	तुन्ब	नोयै	युळ्ळुरत्	तुरन्द	दम्मा	
एट्रञ्जा	लाणिक्	काणि	यॅदिर्शॅलक्	कडाय	दॅन्नन	1002

आऱ्ऱलन् आकि–(दुःख) न सह सककर; अऱिवु अऴिन्तु–बुद्धिनाश होकर; अन्पाल्–प्रेम से; अयरुम् वेलै–जब थकित हुआ तब; चीऱ्ऱम् ॲन्ऱु ऒन्ऱु–कोप नाम के उस भाव ने; तान्–स्वयं; मेल् निमिर्–उमग उठ; चॅलविऱ्ऱु आकि–गतिशील बनकर; एऱ्ऱम् चाल् आणिक्कु–खूब अन्दर घुसी कील को; ॲतिर् चॅल–पीछे चलाने; आणि कटायतु ॲन्न–और एक कील मारी गयी जैसे; तोऱ्ऱिय तुन्प नोयै–(मन में) उठे दुःख-रोग को; उळ् उऱ–अन्दर से; तुरन्ततु–निकाला। १००२

इन्द्रजित् अपने भाई की मृत्यु-जनित दुःख सह नहीं सका। बुद्धि नष्ट हो गयी। प्रेम से अभिभूत होकर वह थकित हो रहा था। तब कोप उठा। उसने, ऊपर रखकर पीटने पर जैसे एक कील अन्दर रहनेवाली कील को बाहर निकाल देती है वैसे ही, दुःख के रोग को कोप द्वारा अन्दर से बाहर निकाल दिया। १००२

ईण्डिवै निहऴ्वुऴि यिरवि तेरॅन्नत्, तूण्डुऱु तेरिन्मेऱ् ऱोन्ऱुन् दोन्ऱलै
मूण्डुमुप् पुरञ्जुड मुडुहु मीशनित्, आण्डहै वन्हऴ लनुम नोक्किनान् 1003

ईण्टु–यहाँ; इवै–यह सब; निकऴ्वु उऴि–जब होता रहा तब; इरवि तेर् ॲन्न–रवि और उसके रथ के समान; तूण्टु उऱु–चलाये जा रहे; तेरिन् मेल्–रथ पर; तोन्ऱुम् तोन्ऱलै–विद्यमान राजकुमार को; मूण्टु–कोपाक्रान्त होकर; मु पुरम् चुट–त्रिपुर जलाने हेतु; मुटुकुम्–शीघ्र जानेवाले; ईचनित्–ईश्वर के समान; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; वन् कऴल्–पहनी हुई पायल वाले; अनुमन्–हनुमान ने; नोक्किनान्–देखा। १००३

जब इन्द्रजित् की तरफ़ से यह हो रहा था, तब पायलधारी हनुमान ने, जो त्रिपुरान्त करने के लिए उठकर शीघ्र जानेवाले परमेश्वर के समान था, रवि और उसके रथ के समान, चलायमान रथ पर इन्द्रजित् को आता हुआ देखा। १००३

वॆन्ऱे निदन्मुन् शिलवीररै यॆन्नुम् मॆय्म्मै
अन्ऱे मुडुहिक् कडिदॆय्दि यऴैत्त दम्मा
ऒन्ऱे यिनिवॆल् लुदऱोऱ्ऱ लडुप्प दुळ्ळ
दिन्ऱे शमैयुम् मिवनिन्दिर शित्तु मॆन्बान् 1004

इतन् मुन्–इसके पहले; चिल वीररै–कुछ वीरों को; वॆन्ऱेन्–(जो) मैंने जीता; ॲन्नुम् मॆय्म्मै–वह सत्य; मुटुक्कि–जल्दी जाकर; कटितु ॲय्ति अऴैत्ततु–शीघ्र पहुँचने बुला लाया; अन्ऱे–न; इनि–अब; वॆल्लुतल्–जीतना; तोऱ्ऱल्–हारना; ऒन्ऱे–इनमें एक ही; अटुप्पतु उळ्ळतु–मिलनेवाला है; इन्ऱे चमैयुम्–वह आज ही होगा; इवन्–यही; इन्तिरचित्तुम् ॲन्पान्–इन्द्रजित् नाम का होना चाहिए; (अम्मा–मैया)। १००४

मैंने इसके पहले कुछ वीरों को जीता था। यह सत्य तुरन्त इनको

बहुत शीघ्र युद्ध में बुला लाया न ? अब सचमुच जीतना या हारना —इनमें एक ही बचा है। मैं समझता हूँ कि यह इन्द्रजित् ही है। १००४

कट्टे रुनरुङ्गमळ् कण्णियिक् काळै यॆन्गॆप्
पट्टा लदुवेयव् विरावणन् पाडु माहुम्
कॉट्टे मॆन्वॆण्णियक् केडरु करुपि नाळै
विट्टे हुवदन्रि यरक्करुम् वॆम्मै तीर्वार् 1005

कट्टु एरु–सुगठित; कमळु नरुम् कण्णि–विलसित सुगन्धयुक्त सिर की पुष्पमाला से अलंकृत; इ काळै–यह ऋषभ (इन्द्रजित्); ऍन् कै–मेरे हाथों; पट्टाल्–मरेगा तो; अतुवे–वही; अ इरावणन् पाटुम्–उस रावण की मृत्यु; आकुम्–होगी; अरक्करुम्–राक्षस भी; कॅट्टेम् ॲन्–हम मर गये, यह; ऍण्णि–समझकर; अ केटु अरु–उस अनिंद्य; करुपिनाळै–पतिव्रता देवी को; विट्टु एकुवतु अन्रि–छोड़ जाने के अलावा; वॆम्मै तीर्वार्—शत्रुता भी त्याग देंगे। १००५

इसका शरीर सुगठित है। केश विलासशील सुगन्धि से युक्त पुष्पमाला से अलंकृत है। अगर यह ऋषभ मेरे हाथों मर जायगा तो वही रावण की मृत्यु (का बाइस) हो जायगा। राक्षस भी 'अब हम नाश हो गये' —समझकर अनिंद्य पतिव्रता देवी को श्रीराम के पास छोड़ देंगे। और शत्रुता भी त्याग देंगे। १००५

ऑन्रो विदनान्वरु मूदिय मॊण्मै यानैक्
कॊन्रे नॆन्तिन्दिर नुन्दुयरक् कोळु नीङ्गुम्
इन्रे कुडिहॆट्ट दरक्क रिलङ्गै यान्
वॆन्रे नविरावणन् रुन्नैयुम् वेरॊ डॆन्रान् 1006

इततुाल् वरुम्–इससे प्राप्य; ऊतियम् ऑन्रो–लाभ एक ही है क्या; ऑण्मैयानै–यशस्वी इसको; कॊन्रेन् ॲतिन्–मारूँगा तो; इन्तिरनुम्–इन्द्र भी; तुयर् कोळुम्–दुःख करना; नीङ्कुम्–छोड़ देगा; इन्रे–आज ही; इलङ्कै–लंका और; अरक्कर्–राक्षसों का; कुटि कॆट्टतु–जीवन नाश हो जायगा; यान्–मैं; अ इरावणन् तन्नैयुम्–उस रावण को भी; वेरॊटु वॆन्रेन्–जड़ (पूर्ण रूप) से जीतनेवाला बन जाऊँगा; ॲन्रान्–कहा। १००६

इन्द्रजित् को मारने से होनेवाला लाभ केवल एक ही है क्या ? इस यशस्वी को मार दूँ, तो इन्द्र का भी दुःखग्रस्त रहना दूर होगा। आज ही लंका और राक्षसों का गृहनाश हो जायगा। रावण को भी जीतकर जड़ से काटनेवाला बन जाऊँगा मैं। १००६

अक्काल यरक्करु मान्नैयुन् देरु मावुम्
मुक्का लुलहम्मीरु मून्रैयुम् वॆन्रु मुरुडिप्

पुक्का तिन्मुन्बुक् कुयर्पूशल् पॅरुक्कुम् वेलै
मिक्कानुम् वॆहुण्डोर् मरामरङ् गॊण्डु मिक्कान् 1007

अ कालै–तब; मुक्काल्–तीन बार; उलकम् ऑरु मून्रैयुम्–तीनों लोकों को; वॆन्रु–जीतकर; मुर्रि–पूरा करके; पुक्कात्तिन् मुन्–लंका में प्रविष्ट जिसने किया था, उसके आगे; अरक्करुम्–राक्षसवीर; आतैयुम्–गज; तेरुम्–रथसेना; मावुम्–और अश्वसेना; पुक्कु–घुसकर; उयर् पूचल्–उच्च शोर; पॅरुक्कुम् वेलै–मचाने लगी तब; मिक्कानुम्–श्रेष्ठ हनुमान भी; वॆकुण्टु–कोप करके; ओर् मरामरम् कॊण्टु–एक सालवृक्ष लेकर; मिक्कान्–प्रवृद्ध हो गया। १००७

तब जो तीन बार तीनों लोकों को जीत चुककर लंका में प्रविष्ट हुआ था, उस इन्द्रजित् के सामने राक्षस वीरों, गजों, रथों और अश्वों की चतुरंगिनी सेना ने प्रवेश करके उच्च युद्धघोष किया। श्रेष्ठ हनुमान ने भी एक सालवृक्ष को उखाड़ लेकर अपना विराट् रूप धर लिया। १००७

उदैयुण् डन्यानै युरुण्डन यानै यॊन्रो
मिदियुण् डनयानै विऴुन्दन यानै मेन्मेल्
पुदैयुण् डनयानै पुरण्डन यानै पोराल्
वदैयुण् डनयानै मरिन्दन यानै मण्मेल् 1008

यानै उतै उण्टन–गज लातें खा गये; यानै उरुण्टन–गज लुढ़क गये; ऑन्रु ओ–केवल एक ही क्या; यानै मिति उण्टन–गज रौंद गये; यानै विऴुन्तन–गज गिरे; यानै–गज; मेल् मेल्–एक के ऊपर एक; पुतै उण्टन–धँस गये; यानै पुरण्टन–गज लोटे; यानै–गज; पोराल्–युद्ध में; वतै उण्टन–मारे गये; यानै–गज; मण्मेल् मरिन्तन–भूमि पर चित गिर गये। १००८

(सेना का हर अंग विध्वस्त हुआ, किस प्रकार? सो देखिए।) गज लात खाकर, लुढ़ककर मरे। वही? नहीं। गज पैरों से रौंदे जाकर, नीचे गिरकर, एक के ऊपर एक गिरकर दबाये जाने से, लोटते हुए, युद्ध में मारे जाकर और भूमि पर चित गिरकर, इस भाँति विविध प्रकार से मर गये। १००८

मुडिन्द तेर्क्कुल मुरिन्दन तेर्क्कुल मुरणिऱ्
ऱिडिन्द तेर्क्कुल मिऱ्ऱन तेर्क्कुल मच्चिऱ्
ऱॊडिन्द तेर्क्कुल मुक्कन तेर्क्कुल नॆक्कुप्
पडिन्द तेर्क्कुलम् बरिन्दन तेर्क्कुलम् बडियिल् 1009

तेर्क्कुलम् मुटिन्त–रथवृन्द मिटे; तेर्क्कुलम् मुरिन्तन–रथकुल टूटे; तेर्क्कुलम्–रथकुल; मुरण् इऱ्ऱु–बल खोकर; इटिन्त–ढकेले जाकर नष्ट हुए; तेर्क्कुलम्–रथवृन्द; इऱ्ऱन–खण्ड-खण्ड हुए; तेर्क्कुलम्–रथदल; अच्चु इऱ्ऱु–धुरी टूटने से; ऑटिन्त–टूटे; तेर्क्कुलम् उक्कन–रथवर्ग चूर होकर छितर गये;

तेर्क्कुलम्–रथदल; नॆक्कु–टकराकर; पटिन्त–झुक गये; तेर्क्कुलम्–रथवृन्द; पटियिल्–भूमि में; पद्गिन्तत्त–धँस गये। १००८

(रथ-सेना के) कुछ पूर्ण रूप से मिटे। कुछ खण्ड-खण्ड हुए। कुछ रथवृन्द कमज़ोर होकर ठोकर खाकर मिटे। कुछ छिन्न-भिन्न हुए; कुछ रथों की धुरियाँ टूट गयीं और वे नष्ट हुए। कुछ रथसमूह चूर होकर गिर गये। कुछ मिलकर टक्कर खाकर गिरे। कुछ रथवृन्द भूमि में धँस गये। १००९

शिरनॆ रिन्दवुङ् गण्मणि शिवॆन्दवुञ् जॆड्गिताळ्
तरनॆ रिन्दवु मुदुहिङ्च् चाय्न्दवुन् दार्पूण्
उरनॆ रिन्दवु मुदिरङ्ग ळुमिळ्न्दवु मॊळिर्पॊर्
कुरनॆ रिन्दवुङ् गॊडुङ्गळुत् तॊडिन्दवुङ् गुदिरै 1010

कुतिरै–अश्व; चिरम् नॆरिन्तवुम्–जिनके सिर कुचल गये; कण्मणि चितॆन्तवुम्–जिनकी आँखों की पुतलियाँ नाश हुईं और; चॆट्टि ताळ्–मिलकर पैर; तरम् नॆरिन्तवुम्–दल के दल पिस गये; मुतुकु इट्र–(जो) पीठ के टूटने से; चाय्न्तवुम्–गिर गये और; तार् पूण्–(जिनके) हारालंकृत; उरम् नॆरिन्तवुम्–वक्ष पिस गये; उतिरङ्कळ्–(और जो) रक्त; उमिळ्न्तवुम्–रक्त वमन करने लगे; ऒळिर् पॊन्–(और जिनके) प्रकाशमय स्वर्ण-भूषित; कुरम् नॆरिन्तवुम्–खुर टूटे; कॊटुम् कळुत्तु–(और जिनके) वक्र गले; ऒटिन्तवुम्–टूटे (ऐसे हो गये अश्व)। १०१०

(अश्वों की स्थिति—) कुछ अश्वों के सिर फूट गये। कुछ की आँखों की पुतलियाँ फूट गयीं। कुछ के सबल पैरों के वृन्द फूटे। कुछ की पीठें टूटीं और वे गिर गये। कुछ के गुरियोंदार हारालंकृत वक्ष कुचले। कुछ ने रक्त वमन किया। कुछ के स्वर्णालंकृत प्रकाशमय खुर पिस गये। कुछ के स्थूल गले टूट गये। १०१०

पिडियुण् डार्हळुम् पिळप्पुण् डार्हळुम् बॆरुन्दोळ्
ऒडियुण् डार्हळुन् दलैयुडैन् दार्हळु मुरुवक्
कडियुण् डार्हळुङ् गळुत्तिळन् दार्हळुम् मरत्ताल्
अडियुण् डार्हळु मच्चमुण् डार्हळु मरक्कर् 1011

अरक्कर्–राक्षस वीर; पिटि उण्टार्कळुम्–जो हनुमान से ग्रस्त हुए; पिळप्पु उण्टार्कळुम्–चिर गये; पॆरुम् तोळ्–बड़े कन्धे (जिनके); ऒटि उण्टार्कळुम्–तोड़े गये; तलै उटैन्तार्कळुम्–(जिनके) सिर फूट गये; उरुव–शरीर भर में; कटि उण्टार्कळुम्–जो काटे गये; कळुत्तु इळन्तार्कळुम्–जो कण्ठों से हीन हो गये; मरत्ताल्–सालवृक्ष से; अटि उण्टार्कळुम्–जो पिटे और; अच्चम् उण्टार्कळुम्–वे, जिन्होंने भय खाया (ऐसे बन गये)। १०११

(पदाति के राक्षस वीर कैसे मिटे?) कसकर ग्रस्त, फूटे शरीर,

टूटे कन्धे, फटे सिर, काट खाये गये, कण्ठहीन, सालवृक्ष से खूब पिटे, और भयभीत —इस भाँति वे राक्षस वीर मटियामेट हो गये। १०११

वट्ट वॆञ्जिलै योट्टिय वाळियुम् वयवर्
विट्ट वॆन्दिऱऱ् पडैहळुम् वीरन्मेल् विळुन्द
शुट्ट मॆल्लिरुम् बडैहलैच् चुडुहला ददुपोल्
पट्ट पट्टन तिशैदॊऱुम् बॊऱियॊडुम् बरन्द 1012

वयवर्–वीरों के; वट्ट–गोलाकार झुके गये; वॆम् चिलै–भयंकर धनु से; ओट्टिय–चलाये गये; वाळियुम्–बाण और; विट्ट–फेंके गये; वॆम् तिऱल्–क्रूर शक्ति के; पटैकळुम्–हथियार; वीरन् मेल् विळुन्त–महावीर पर गिरे; चुट्ट–तप्त; मॆल् इरुम्पु–निर्बल लोहा; अटै कलै–निहाई को; चुट्टुकलाततु पोल–जला नहीं पाता जैसे; पट्ट पट्टन–जो लगे वे सारे; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; पॊऱि ऒटुम्–अंगारे छोड़ते हुए; परन्त–फैले। १०१२

राक्षसों के द्वारा धनु को खूब वर्तुल झुकाकर तीव्रगति से प्रेरित बाण और प्रेषित ग़जब की शक्ति के हथियार महावीर पर जाकर जो गिरे वे, स्थूणे को जैसे तप्त लोहा कुछ नहीं कर पाता वैसे ही, सब के सब, नाना दिशाओं में अंगारे बिखेरते हुए जाकर बिखर गये। १०१२

शिहैयॆ ळुञ्जुडर् वाळिह ळिराक्कदर् शेनै
मिहैयॆ ळुञ्जिनत् तनुमन्मेल् विट्टन वॆन्दु
पुहैयॆ ळुन्दन वॆरिन्दन करिन्दन पोद
नहैयॆ ळुन्दन कुळिर्न्दन वान्नुळोर् नाट्टम् 1013

इराक्कतर् चेनै–राक्षसों की सेना द्वारा; मिकै ऎळुम्–बहुत उमड़नेवाले; चिनत्तु–क्रोध के साथ; अनुमन् मेल् विट्टन–हनुमान पर प्रेषित; चिकै ऎळुम्–ज्वाला निकालनेवाले; चुटर् वाळिकळ्–तेजोमय बाण; वॆन्तु–(हनुमान के शरीर पर लगते ही) झुलसकर; पुकै ऎळुन्तन–गुँगुआते हुए; ऎरिन्तन–जले और; करिन्तन पोत–राख बने; वान् उळोर् नाट्टम्–व्योमवासियों की वृष्टि; नकै ऎळुन्तन–वर्धित आनन्द के साथ; कुळिर्न्तन–शीतल बनी। १०१३

राक्षसों ने बहुत क्रुद्ध होकर ज्वाला निकालते हुए चलनेवाले तेजोमय बाण छोड़े। वे हनुमान के शरीर पर लगकर उसकी गर्मी में झुलस गये। गुँगुआते हुए जले और राख बन गये। यह देखकर देवों की आँखें आनन्द-शीतल हो गयीं। १०१३

तेरुम् यानैयुम् बुरवियु मरक्करुञ् जिन्दिप्
पारिन् वीळ्दलुन् दानॊरु तनिनिन्ऱ पणैत्तोळ्
वीर वीरनु मुऱुवलुम् वॆहुळियुम् वीङ्ग
वारुम् वारमॆन् ऱळैक्किन्ऱ वनुमन्मेल् वन्दान् 1014

तेरुम्–रथ और; यानैयुम् पुरवियुम्–गज और अश्व; अरक्करुम्–राक्षस; चिन्दि–अस्त-व्यस्त होकर; पारिन् वीऴ्न्दलुम्–भूमि पर गिर गये तो; तान् ओरु तनि निन्ऱ–आप जो अकेले खड़ा रहा; पणै तोळ्–स्थूल कन्धों वाला; वीर वीरनुम्–वीरों में (श्रेष्ठ) वीर इन्द्रजित्; मुऱुवलुम्–मन्दहास और; वॆकुळियुम् वीङ्क–कोप के बढ़ते; वारुम् वारुम्–आओ-आओ; ऎन्ऱु–कहकर; अऴैक्किन्ऱ–बुलानेवाले; अनुमन् मेल् वन्दान्–हनुमान पर आक्रमण करने आया। १०१४

रथों, गजों, अश्वों और पैदल वीरों की सेनाएँ तितर-बितर होकर भूमि पर गिर गयीं। अकेला खड़ा रहा स्थूल कन्धों वाला वीरों में (श्रेष्ठ) वीर इन्द्रजित्। उसे हँसी भी अधिक हुई और गुस्सा भी बढ़ा। उधर हनुमान 'आओ', 'आओ' कहकर उत्साह के साथ वीरों को लड़ने को आमन्त्रण दे रहा था। इन्द्रजित् उस हनुमान पर चढ़ आया। १०१४

पुरन्द रन्ऱलै पॊदिरॆऱ्ऱिन् दिडप्पुयल् वानिल्
परन्द पल्लुरु मेऱ्ऱिनम् वॆऱ्ऱित्तुयिर् पदैप्प
निरन्द रम्बुवि मुऴुवदुञ् जुमन्द नीडुरहन्
शिरन्दु ळङ्गिड वरक्कन्वॆञ् जिलैयैना णॆऱ्ऱिन्दान् 1015

पुरन्दरन् तलै–पुरन्दर के सिर के; पॊदिर् ऎऱ्ऱिन्दिट–कम्पन के बढ़ते; वानिल् परन्द–आकाश में व्याप्त; पुयल्–मेघों में; पल् उरुम् एऱ्ऱु इनम्–अनेक अशनियों का वृन्द; वॆऱ्ऱित्तु–भय से तनकर; उयिर् पदैप्प–प्राण लड़खड़ाये; निरन्तरम्–निरन्तर; पुवि मुऴुवतुम् चुमन्द–सारी भूमि को ढोनेवाले; नीडु उरकन्–लम्बे आदिशेष के; चिरम् तुळङ्किट–सिर काँपे; अरक्कन्–राक्षस ने; वॆम् चिलैयै–कठोर धनु को; नाण् ऎऱ्ऱिन्दान्–शिञ्जिनी को टंकृत किया। १०१५

उसने अपने भयंकर धनु की ताँत को टंकृत किया, जिसके घोर नाद से इन्द्र का सिर काँप गया; आकाश पर मेघों में रहे वज्र भय खाकर तन गये और उनके प्राण काँप उठे; और निरन्तर सारी भूमि को सिरों पर ढोते रहनेवाले आदिशेष के सहस्र सिर भी काँपे। १०१५

आण्ड नायहन् ऱूदनु मयनुडै यण्डम्
कीण्ड दामॆनक् किरियुह नॆडुनिलङ् गिऴिय
नीण्ड मादिरम् वॆडिपड ववन्नॆडुञ् जिलैयिल्
पूण्ड नाणिऱत् तन्नॆडुन् दोळ्पुडैत् तारत्तान् 1016

आण्ट–लोकपालक; नायकन्–जगन्नाथ श्रीराम के; तूततुम्–दूत ने भी; अयनुटै अण्टम्–अज का अण्ड; कीण्टतु आम्–फट गया; ऎन–जैसे; किरि उक–गिरियाँ चूर हो बिखर जाएँ, ऐसा; नॆटु निलम्–विशाल भूमि; किऴिय–चिर गयी; नीण्ट मातिरम्–लम्बी दिशाएँ; वॆटि पट–फूट जाएँ, ऐसा; अवन् नॆटुम् चिलैयिल्–उसके दीर्घ धनु की; पूण्ट–बँधी; नाण् इऱ–डोरी को काटते हुए; तन् नॆटुम् तोळ्–अपने बड़े कन्धों को; पुटैत्तु–ठोंककर; आर्त्तान्–ध्वनि निकाली। १०१६

लोकपालक जगन्नायक श्रीराम के दूत ने भी अपने कन्धे ठोंके और सिंहनाद किया, जिससे अजदेव का अण्ड भी फूटा; गिरियाँ चूर होकर छितरीं; भूमि पर और लम्बी दिशाओं में दरारें पड़ गयीं और स्वयं इन्द्रजित् के दीर्घ धनु में बँधी डोरी भी कट गयी। १०१६

नल्लै नल्लैयिज् ञालत्तु निन्नौक्कु नल्लार्
इल्लै यिल्लैया लॅरुळ्वलिक्क् कियारोडु मिहल
वल्लै वल्लैयिन् ऱाहुनी पडैत्तुळ वाणाट्
कॅल्लै यॅल्लैयॅन् ऱिन्दिर शित्तुवु मिशैत्तान् 1017

नल्लै नल्लै–समर्थ हो समर्थ; इ ञालत्तु–इस भूमि में; निन् ऑक्कुम्–तुम्हारी समानता करनेवाला; नल्लार्–समर्थ; इल्लै–नहीं; इल्लै–नहीं; अॅरुळ् वलिक्कु–बड़ी शक्ति को (देखा जाय तो); यार् ओटुम्–किसी के साथ भी; इकल वल्लै–लड़ सकते हो; नी पटैत्तु उळ–तुमको मिली; वाळ् नाट्कु ऍल्लै–आयु की सीमा का; ऍल्लै–(ही) अन्त; इन्ऱु आकुम्–आज होगा; ऍन्ऱु–कहकर; इन्तिरचित्तु उम् इचैत्तान्–इन्द्रजित् ने भी कहा। १०१७

तब इन्द्रजित् ने व्यंग्य किया। तुम बड़े कुशल हो, कुशल। इस संसार में तुम्हारे टक्कर का कोई नहीं। तुम्हारे बहुत बल को देखा जाय तो तुम किसी से भी लड़ सकते हो। पर आज का दिन तुम्हारी आयु का अन्तिम दिन हो जायगा! । १०१७

नाळुक् कॅल्लैयु निरुदरा युलहत्तै नलियुम्
कोळुक् कॅल्लैयुङ् गॉडुन्दॉळिड् कॅल्लैयुङ् गॉडियीर्
वाळुक् कॅल्लैयुम् वन्दन वहैकॉण्डु वन्देन्
तोळुक् कॅल्लैयॉन् ऱिल्लैयॅन् ऱनुमनुज् जॉन्नान् 1018

कॉटियीर्–क्रूर (राक्षस); नाळुक्कु ऍल्लैयुम्–(तुम्हारी) आयु का अन्त और; निरुतर् आय्–राक्षस बनकर; उलकत्तै नलियुम्–संसार को त्रस्त करने के; कोळुक्कु ऍल्लैयुम्–तुम्हारे सिद्धान्तों का अन्त और; कॉटुम् तॉळिऱ्कु ऍल्लैयुम्–क्रूर कर्मों का अन्त; वाळुक्कु ऍल्लैयुम्–तलवार का अन्त; वन्तन–सब आ गये; वकै कॉण्टु वन्तेन्–उपाय लाया हूँ; तोळुक्कु ऍल्लै–मेरे भुजबल की सीमा; ऑन्ऱु इल्लै–कुछ नहीं है; ऍन्ऱु–ऐसा; अनुमनुम्–हनुमान ने भी; चॉन्नान्–कहा। १०१८

हनुमान ने भी कहा कि क्रूर राक्षसो! तुम लोगों की आयु, राक्षसों के रूप में लोक को त्रस्त करने का तुम्हारा सिद्धान्त, क्रूर कार्यक्रम, तलवार आदि हथियार —इन सबका अन्त आ गया। उपाय लाया हूँ। मेरे भुजबल की कोई सीमा नहीं रहती। १०१८

इच्चि रत्तैयैत् तॉलैप्पॅन्न् ऱिन्दिरन् पहैजन्
वच्चि रत्तिन्नम् वलियन वयिरवान् कणैहळ

पच्चि रत्तम्वन् दॊऴुहिड वानवर् पदैप्प
अच्चि रत्तिनु मार्विनु मऴुत्तलु मनुमन् 1019

इन्तिरन् पकैञन्–इन्द्रशत्रु; इ चिरत्तैयै–यह विश्वास ही; तॊलैप्पॆन्–नाश करूँगा; वच्चिरत्तितुम्–वज्र से भी; वलियत्त–कठोर; वयिर–सशक्त; वान् कणैकळ्–श्रेष्ठ वाणों को; पचुमै इरत्तम्–ताज़ा खून; वन्तु ऒऴुकिट–आकर बहे ऐसा; वानवर् पतैप्प–देवगण त्रस्त हो जाएँ ऐसा; अ चिरत्तितुम्–उस सिर पर और; मार्पितुम्–वक्ष में; अऴुत्तलुम्–गड़ाने से; अनुमन्–हनुमान। १०१९

इन्द्रशत्रु ने कहा कि यह है तुम्हारा विश्वास ! इसको मिटा दूँगा। कहकर उसने वज्र से भी कठोर और बलवान श्रेष्ठ वाणों को प्रेरित किया; जिनके हनुमान के सिर और वक्ष पर लगने से ताज़ा खून वह निकला और व्योमवासी उद्विग्न हो गये। १०१९

कुऱिदु वानॆन्ऱु कुऱैन्दिलन् कॊडुञ्जिनङ् गॊण्डान्
मऱियुम् वॆण्डिर माहड लुलहॆलाम् वऴङ्गिच्
चिऱिय तायॆशॊन्न तिरुमॊऴि शॆन्नियिऱ् चूडि
नॆऱियि निन्ऱदन् नायहन् पुहऴॆन निमिर्न्दान् 1020

कॊडुम् चितम् कॊण्टान्–भयानक कोप अपनाकर; वान् कुऱितु ऎन्ऱु–आकाश को छोटा कहने देता हुआ; कुऱैन्तिलन्–छोटा न रहकर (यानी विवृद्ध होकर); चिऱिय ताय्–छोटी माता के; चॊन्न–कहे गये; तिरुमॊऴि–श्रीवचन; चॆन्नियिल् चूटि–सिर पर धारण करके; मऱियुम्–आवर्तनशील; वॆण् तिरै–श्वेत तरंगों के; मा कटल्–बड़े सागर से वलयित; उलकु ऎलाम्–सारे लोक को; वऴङ्कि–प्रदान करके; नॆऱियिल् निन्ऱ–धर्ममार्ग पर स्थित; तन् नायकन्–अपने नायक की; पुकऴ् ऎन्न–कीर्ति के समान; निमिर्न्तान्–विराट् रूप में बढ़ गया। १०२०

हनुमान क्रुद्ध हुआ। आकाश को भी छोटा बनाते हुए विवृद्ध हुआ। वह इस प्रकार उन्नत हुआ, जिस प्रकार छोटी माता की आज्ञा के वचन को शिरोधार्य कर आवर्तनशील श्वेत लहरों के बड़े सागरों के मध्य स्थित सारी भूमि को अपने भाई भरत के पास देकर धर्मावलम्वी रहे श्रीराम का यश उन्नत (और विस्तृत) बना था। १०२०

पाह मल्लदु कण्डिल ननुमनैप् पार्त्तान्
माह वन्ऱिशै पत्तॊडुम् वरम्बिला वुलहिऱ्
केह नादनै यॆऱुऴ्वलित् तोळ्पिणित् तीर्त्त
मेह नादनु मयङ्गिन नामॆन वियन्दान् 1021

माक वन् तिचै–बड़ा आकाश आदि; पत्तु–दसों दिशाओं; ऒटुम्–के साथ; वरम्पु इला–निस्सीम; उलकिऱ्कु–अनेक लोकों के; एक नातनै–एक नायक (इन्द्र) को; ऎऱुऴ् वलि–बहुत सबल; तोळ् पिणित्तु–कन्धे बाँधकर; ईर्त्त–जो खींच लाया; मेकनातनुम्–उस इन्द्रजित् ने; अनुमनै पार्त्तान्–हनुमान को देखा;

पाकम् अल्लतु–एक भाग को छोड़कर; कण्टिलन्–(पूरा नहीं) देखा; मयङ्कित्तन् आम् अँत–चकित-सा; वियन्तान्–विस्मित हुआ। १०२१

इन्द्रजित् ने विश्वरूप हनुमान को देखा। इन्द्रजित्, बड़े आकाश को मिलाकर दसों दिशाओं और अनन्त लोकों के एक-नायक इन्द्र के बलवान कन्धों को बाँधकर खींच लाया था। वह इन्द्रजित् भी हनुमान का एक भाग ही अपनी दृष्टिपथ में ला सका। वह विस्मित-भ्रमित हुआ। १०२१

नीण्ड वीरनु नॆडुन्दडक् कैहळै नीट्टि
ईण्डु वॆञ्जर सॆय्दन्न वॆय्दिडा वण्णम्
मीण्डु पोय्विळ वीशियङ् गवन्विट्ट तडन्देर्
पूण्ड पेयॊडु शारदि तरैप्पडप् पुडैत्तान् 1022

नीण्ट वीरनुम्–लम्बोतरे वीर (महावीर) ने भी; नॆट्टुम् तटम्–लम्बे और विशाल; कैकळै नीट्टि–अपने हाथों को बढ़ाकर; ऎय्तन्न–चलाये जाकर; ईण्टु–सवेग आनेवाले; वॆम् चरम्–संतापक शरों को; ऎय्तिटा वण्णम्–अपने पास न आने देते हुए; मीण्टु पोय्–लौट जाकर; विळ–गिराते हुए; वीचि–फेंककर; अङ्कु–वहाँ; अवन् विट्ट–उसके चलाये गये; तटम् तेर्–विशाल रथ को; पूण्ट पेय् ओटु–जुते भूतों के साथ; चारति–सारथी भी; तरै पट–भूमि पर गिरकर मर जाएँ, ऐसा; पुटैत्तान्–आघात किया। १०२२

लम्बोतरे महावीर ने भी अपने लम्बे विशाल हाथों को बढ़ाकर इन्द्रजित्-प्रेरित भयंकर शरों को पास न आने देकर लौटाते हुए झटकार दिया और उसके द्वारा चलाये गये विशाल रथ को उसके जुते भूतों के साथ लेकर भूमि पर ऐसा पटका कि वे भूमि पर गिरकर मिट गये। १०२२

ऊळिक् काऱ्ऱन्न वॊरुपरित् तेरव णुदवप्
पाळित् तोळव नत्तडन् देर्मिशैप् पाय्न्दान्
आळिप् पल्बडै यन्नैयन्न वळप्परुञ् जरत्ताल्
वाळिप् पोर्वलि मारुदि मेनियै मऱैत्तान् 1023

अवण्–उस स्थिति में; ऊळि काऱ्ऱु अन्न–प्रलयपवन के समान; ऒरु परि तेर्–एक अश्व-जुते रथ को; उतव–(सारथी के) ला देने पर; पाळि तोळ् अवन्–स्थूल कन्धों वाला वह; अ तटम् तेर् मिचै–उस विशाल रथ पर; पाय्न्तान्–लपका; पल्–(और उसने) अनेक; आळि पटै अन्नैयन–चक्रायुध-सम; अळप्पु अरुम् चरत्ताल्–अगणित शरों से; वाळि पोर् वलि–लम्बे काल तक जारी रहनेवाले युद्ध के योग्य बल से युक्त; मारुति मेनियै–मारुति के शरीर को; मऱैत्तान्–छिपा दिया। १०२३

उस स्थिति में सारथी ने प्रलयपवनगति अश्वों के जुते एक रथ को ला दिया। भुजबली इन्द्रजित् उस विशाल रथ पर लपका। फिर उसने चक्रायुध के समान अनेक विविध अगणित शरों से युद्धकुशल मारुति के शरीर को ढक दिया। जिसमें दीर्घयुद्धावश्यक बल था। १०२३

उऱ्ऱ वाळिह ळुरत्तडङ् गिऩ्वुह वुदऱाक्
कॊऱ्ऱ मारुदि यऩैयवऩ् ऱेर्मिशैक् कुदित्तुप्
पऱ्ऱि वऩ्गैयाऱ् पऱित्तॆंळुऩ् दुलहॆलाम् वलहाल्
मुऱ्ऱ वॆंऩ्ऱपोर् मूरिवॆंम् जिलैयिऩै मुऱित्ताऩ् 1024

कॊऱ्ऱ मारुति–विजयशील मारुति (ने); उरत्तु अटङ्किऩ्–वक्ष में छिपे; उऱ्ऱ वाळिकळ्–लगे रहे शरों को; उक–बिखेरते हुए; उतऱा–झटकाकर; अऩैयवऩ् तेर् मिचै–उसके रथ पर; कुतित्तु–कूदकर; उलकु ऎंलाम्–सारे लोकों को; पल काल्–अनेक बार; मुऱ्ऱ वॆंऩ्ऱ–पूर्णरूप से जिसने जीता था (उसके); पोर् मूरि–युद्धयोग्य बलवान; वॆंम् चिलैयित्तै–भयानक धनु को; वऩ् कैयाल्–कठोर हाथों से; पऱ्ऱि–ग्रसकर; पऱित्तु–छीनकर; ऎंळुन्तु–ऊपर उछलकर; मुऱित्ताऩ्–उसको तोड़ दिया। १०२४

विजयशील मारुति ने झटका देकर अपने वक्ष में धँसे रहे शरों को दूर बिखेर दिया। फिर वह उसके रथ पर कूद पड़ा। उसने, सारे लोकों को अनेक बार जिसने जीता था, उस इन्द्रजित् के भारी और मारू और भयंकर धनु को अपने बलिष्ठ हाथों से पकड़कर छीन लिया और ऊपर उछलकर उसे तोड़ दिया। १०२४

मुऱिन्त विल्लिऩ्वल् लोशैपोय् मुडिवदऩ् मुऩ्ऩम्
मऱिन्दु पोरिडै वळिक्कॊळा वयिरवाट् पडैयाल्
शॆऱिन्द वाऩ्बॆरुञ् जिऱैयऱ मलैहळैच् चॆयिरा
ऎऱिन्द विऩ्दिर ऩिट्टवाऩ् शिलैयिऩै यॆडुत्ताऩ् 1025

मुऱिन्त–टूटे; विल्लिऩ्–धनु के; वल ओचै–भयंकर स्वर के; पोय् मुटिवतऩ्–जाकर मौन होने के; मुऩ्ऩम्–पूर्व ही; मऱिन्तु–लौटकर; पोर् इटै–युद्ध का; वळि कॊळा–मार्ग अपनाकर; वयिर–वज्र की; वाळ् पटैयाल्–तलवार से; चॆऱिन्त–घने; वाऩ् पॆरुम् चिऱै–बहुत बड़े पंखों को; अऱ–काटकर; मलैकळै–पर्वतों से; चॆयिरा–गुस्सा करके; ऎऱिन्त–उनको जिसने निर्बल बनाया; इन्तिरऩ्–उस इन्द्र के; इट्ट–(समरांगन में परास्त होकर) छोड़े गये; वाऩ् चिलैयित्तै–बड़े धनु को; ऎंटुत्ताऩ्–अपने हाथ में ले लिया। १०२५

टूटे धनु की भयंकर ध्वनि के मौन होने के पहले, फिर युद्ध में लगकर मेघनाद ने, वज्र रूपी तलवार से जिसने सुदृढ़ पंखों को काटकर पर्वतों को क्रोध के साथ प्रहरित किया था, उस इन्द्र के द्वारा हारकर छोड़े गये बड़े धनु को हाथ में लिया। १०२५

नूऱु नूऱुपोर् वाळियोर् तॊडैहॊण्डु नॊय्दिऩ्
माऱिल् वॆंञ्जिऩत् तिरावणऩ् महऩ्शिलै वळैत्ताऩ्
ऊऱु तऩ्ऩॆंडु मेऩियिऱ् पलपड वीऴ्हि
एऱु शेवहऩ् ऱूदनुञ् जिऱिदुपो दिरुन्दाऩ् 1026

ओर् तॉटॅ–एक खेप में; नूरु नूरु पोर् वाळि कॉण्टु–शत-शत मारू बाण लेकर; नॉय्तित्–शीघ्र; माऱु इल्–प्रत्युत्तर रहित; वॅम् चित्तत्तु–भयानक क्रोधी; इरावणन् मकन्–रावण के पुत्र ने; चिलै वळैत्तान्–धनु झुकाया (शर चलाये); एऱु चेवकन्–संवर्धनशील वीरता के श्रीराम का; तूतनुम्–दूत भी; तन् नॅटु मेत्तियिल्–अपने लम्बे शरीर में; ऊऱु पल पट–अनेक घावों के होने के कारण; चिऱ्ऱितु पोतु–कुछ देर; ऑलुकि इरुन्तान्–थका रहा। १०२६

अप्रतिरुद्ध क्रोधी रावण के पुत्र ने धनु को झुकाकर एक खेप में सौ-सौ मारू बाणों के हिसाब से शर चलाये। उत्तरोत्तर विवृद्ध वीरता के नायक श्रीराम का दूत हनुमान भी अपने लम्बे शरीर पर अनेक व्रणों के बन जाने से कुछ देर थकित रहा। १०२६

आर्त्त वानव राहुलङ् गॊण्डऱि वळिन्दार्
पार्त्त मारुदि तारुवॊन् ऱङ्गैयार् पऱ्ऱात्
तूर्त्त वाळिहळ् तुणिबड मुऱैमुऱै शुऱ्ऱिप्
पोर्त्त पॊन्नॆडु मणिमुडित् तलैयिडैप् पुडैत्तान् 1027

आर्त्त वानवर्–(जिन्होंने पहले) आनन्दरव किया था, वे देव; आकुलम् कॊण्टु–व्याकुल होकर; अऱिवु अळिन्तार्–बुद्धिभ्रष्ट हुए; पार्त्त मारुति–उसको देखकर मारुति; तारु ऑन्ऱु–एक तरु को; अम् कैयाल् पऱ्ऱा–अपने सुन्दर हाथ से पकड़कर; तूर्त्त वाळिकळ्–अपने शरीर को छिपाने आये शरों को; तुणि पट–तोड़ते हुए; मुऱै मुऱै चुऱ्ऱि–अनेक बार उसे घुमाकर; पॊन् मणि–स्वर्णरत्नमय; नॅटु मुटि पोर्त्त–लम्बे किरीट से आवृत; तलैयिटै–(इन्द्रजित् के) सिर पर; पुटैत्तान्–(उस तरु से) प्रहार किया। १०२७

देवों ने पहले आनन्द-आरव किया था। अब यह स्थिति देखकर वे व्याकुल और बुद्धिभ्रष्ट हुए। मारुति ने उनकी यह स्थिति देखकर एक पेड़ को उखाड़कर उठा लिया और आवृत करते आनेवाले बाणों को बिखेर देते हुए उसको अनेक बार घुमाया। फिर स्वर्णरत्नमय किरीट से ढके हुए इन्द्रजित् के सिर पर उस पेड़ को दे मारा। १०२७

पार मामर मुडियुडैत् तलैयिडैप् पडलुम्
तारै यिन्नॆडुङ् गऱ्ऱैहळ् शॊरिवन तयङ्ग
आर मालवरै यरुवियि नळिहॊळुङ् गुरुदि
शोर निन्ऱुळन् दुळङ्गिन नमररैत् तॊलैत्तान् 1028

पार मामरम्–भारी बड़ा तरु; मुटियुटै–किरीट-सहित; तलै इटै–सिर पर; पटलुम्–ज्योंही लगा त्योंही; तारैयिन्–रक्तधारा की; नॅटुम् कऱ्ऱैकळ्–लम्बी लटें; चॊरिवन तयङ्क–बहती रहीं; माल् वरै–बड़े पर्वत की; आर–माला-सी; अरुवियिन्–सरिता के समान; अळि कॊळुम् कुरुति–गिरनेवाला गाढ़ा रक्त; चोर–दोनों बाजुओं में गिरता रहा; अमररै तॊलैत्तान्–अमरों का (बल-) नाशक; निन्ऱु–थका खड़ा रहा और; उळम् तुळङ्किनन्–कम्पित-मन हुआ। १०२८

उस भारी वड़े पेड़ के किरीटधारी सिर पर लगते ही इन्द्रजित् के शरीर पर रक्तधारा की लम्बी लटें दोनों वाजुओं में पर्वतधृत मालाओं के समान शोभायमान दिखीं। जब वह गाढ़ा रक्त उस तरह गिरने लगा, तव देवों को हराकर जिसने भगाया था, उस इन्द्रजित् का मन काँप उठा। १०२८

निन्ऱु पोदम्वन् दुरुदलु निऱैपिऱै यॅयिऱु
तिन्ऱु तेवरु मुऩिवरु मवुणरुन् दिहैप्पक्
कुन्ऱु पोनॅडु मारुदि याहमुङ् गुलुङ्ग
ऑन्ऱु पोल्वन वायिरम् बहऴिकोत् तुय्त्तान् 1029

निन्ऱु–थका खड़ा रहकर; पोतम् वन्तु उऱ्तलुम्–सचेत होते ही; पिऱै–चन्द्रकला के समान; निऱै–भरे रहे; ऍयिऱु तिन्ऱु–दाँत पीसते हुए; तेवरुम् मुऩिवरुम्–देवों और मुनियों; अवुणरुम्–और दानवों के; तिकैप्प–चक्रित रहते; कुन्ऱु पोल्–पर्वत-सम; नॅटु मारुति–लम्बोतरे हनुमान के; आकमुम्–शरीर के; कुलुङ्क–काँपते; ऑन्ऱु पोल्वन–एक ही सम; आयिरम् पकऴि–सहस्र बाण; कोत्तु–धनु पर सन्धान करके; उय्त्तान्–चलाये (इन्द्रजित् ने) १०२९

कुछ देर वह स्तब्ध खड़ा रहने के वाद थोड़ा स्वस्थ हुआ। जब उसे बोध हुआ, तव उसने चन्द्रकला-से दाँतों को पीसते हुए एक समान हज़ार बाण धनु पर संधानकर छोड़ा, जिससे कि मुनिगण और दानव चक्रित हुए और पर्वत-सम लम्बोतरे हनुमान का शरीर काँपा। १०२९

उय्त्त वॅञ्जर मुरत्तिनुङ् गरत्तिनु मौऴिप्पक्
कैत्त शिन्दैयन् मारुदि नऩिदवक् कनन्ऱान्
वित्त हन्शिलै विडुकणै विशैयिनुङ् गडुहि
अत्त डम्बॅरुन् देरोडु मॅडुत्तॅऱिन् दार्त्तान् 1030

उय्त्त–चालित; वॅम् चरम्–भयंकर शर; उरत्तित्तुम्–वक्ष में और; करत्तित्तुम्–हाथों में; ऑऴिप्प–घुसकर छिप गये, तव; कैत्त चिन्तैयन्–उचटे मन वाला; मारुति–पवनसुत; नऩि तव–खूब अधिक; कनन्ऱान्–कुपित हुआ; वित्तकन्–विद्यारूप; चिलै विटु–(श्रीराम) धनु से जो छोड़ते हैं; कणै विचैयितुम्–उन बाणों के वेग से अधिक; कटुकि–वेग के साथ जाकर; अ तटम् पॅरुम् तेर् ओटु उम्–उस विशाल और वड़े रथ के साथ; ॲटुत्तु–(उसको भी) उठाकर; ऍऱिन्तु–पटक दिया और; आर्त्तान्–नारे लगाये। १०३०

इन्द्रजित्-प्रेरित वे शर हनुमान के वक्ष और भुजाओं में छिप गये। हनुमान का दिल उचट गया। अत्यधिक क्रोध करके वह ज्ञानमूर्ति श्रीराम के प्रेरित बाण से भी उधिक तेज़ी से गया और उसने उस बड़े और चौड़े रथ के साथ उसको भी उठाकर दूर फेंक दिया और उच्च गर्जन किया। १०३०

कण्णित् मीच्चॅन्ऱ विमैयिडैक् कलप्पदन् मुन्नम्
ऍण्णिन् मीच्चॅन्ऱ वॅरुळ्वलित् तिऱलुडै यिहलोन्
पुण्णित् मीच्चॅन्ऱु पॉळिबुन्नल् पशुम्बुलाल् पॉडिप्प
विण्णित् मीच्चॅन्ऱ तेरॉडुम् बार्मिशै विळुन्दान् 1031

कण्णिन् मी–आँखों के ऊपर; चॅन्ऱ इमै–जो उठी थी वह पलक; कलप्पतन् इटै–(नीचे आ) नीचे की पलक से मिलने की अवधि; मुन्नम्–के पहले; ऍण्णिन् मी चॅन्ऱ–गणना को पार कर गये; ऍरुळ् वलि–अधिक बली; तिऱलुडै इकलोन्–साहसी योद्धा (इन्द्रजित्); पुण्णित् मी चॅन्ऱु–व्रणों के ऊपर से आकर; पॉळि–गिरनेवाले; पुनल् पचुम् पुलाल्–रक्त और ताजा मांस; पॉटिप्प–निकल आये और; विण्णित् मी चॅन्ऱ–आकाश में जो जाता रहा; तेर् ओटुम्–उस रथ के साथ; पार् मिचै–भूमि पर; विळुन्तान्–गिरा। १०३१

आँखों के ऊपर उठी हुई पलकों के गिरकर नीचे की पलकों के साथ लगने में जितनी देर लगती है (यानी पलक मारने की), उतनी देर के अन्दर अपार बली और युद्धसमर्थ इन्द्रजित् आकाशगामी रथ के साथ भूमि पर गिरा और उसके शरीर के व्रणों से रक्त और ताजा मांस बाहर निकल पड़े। १०३१

विळुन्दु पारडै यामुन्न मिन्नॅन्नु मॅयिऱ्ऱान्
ऍळुन्दु माविशुम् बॅय्दिन्न निडैयवन् पडियिल्
शॅळुन्दिण् मामणित् तेर्क्कुलम् यावैयुञ् जिदैय
उळुन्दु पेर्वदन् मुन्नॅडु मारुदि युदैत्तान् 1032

मिन् ऍन्नुम्–बिजली के समान; ऍयिऱ्ऱान्–दाँत वाले (इन्द्रजित्); विळुन्तु–गिरकर; पार् अटैया मुन्नम्–भूमि पर लगने से पहले; ऍळुन्तु–उठकर; मा विचुम्पु–विशाल आकाश; ऍय्तितन्–पहुँचा; इटै–इसके बीच में; नॅटु मारुति–लंबोतरे मारुति ने; उळुन्तु पेर्वतन् मुन्–उड़द के लुढ़कने की देर में; अवन्–उसके; चॅळुम्–आडम्बरपूर्ण; तिण्–सुदृढ़; मा मणि तेर् कुलम्–बड़े रत्नमय रथों; यावैयुम्–सभी को; पटियिल् चितैय–भूमि पर टूटकर गिरें, ऐसा; उतैत्तान्–लात मारी। १०३२

बिजली के समान चमकते दाँत वाला इन्द्रजित् भूमि पर गिरने से पहले ही उठा और ऊपर आकाश में उछल गया। इसके बीच में लम्बोतरे हनुमान ने उड़द के लुढ़कते समय के अन्दर उसके पुष्ट, सुदृढ़ और बड़े रत्नमय सारे रथों के समूहों के लात मारी और वे सब भूमि पर गिरकर तहस-नहस हुए। १०३२

एऱु तेरिल नॆदिर्निऱ्कु मुरनिल नॆरियिल्
शीऱु वॅञ्जिनन् दिरुहिन्न नन्दरन् दिरिवान्

वेऱ्‌ शॅय्वदोर्‌ विनैपिऱि विऩ्‌मैयिन्‌ विरिञ्जन्‌
माऱि लाप्पॅरुम्‌ वडॅक्कलन्‌ दॉडुप्पदे मदित्तान्‌ 1033

एऱ तेर्‌ इलन्‌–सवार होने के लिए रथ न रहा; ऍतिर्‌ निऱ्‌कुम्‌–सामने टिकने की; उरन्‌ इलन्‌–शक्ति न रही; ऍरियिल्‌ चीऱ–आग के समान भिफरकर; वॅम्‌ चितम्‌ तिरुकितन्‌–भयानक कोप में बढ़कर; अन्तरम्‌ तिरिवान्‌–अन्तरिक्ष में घूमता हुआ; वेऱ चॅय्वतु–दूसरा करने; ओर्‌ विनॅ–कोई काम; पिऱितु इन्‌मैयिन्‌–फिर न रहा, इसलिए; विरिञ्चन्‌–विरंचि के; माऱ इला–अप्रतीकार्य; वॅरुम्‌ पटॅक्कलम्‌–बड़ा अस्त्र; तॉटुप्पते–चलाना ही; मतित्तान्‌–सोचा। १०३३

अब इन्द्रजित्‌ रथहीन हो गया। समक्ष टिकने की शक्ति भी उसकी नहीं रही। भभक उठनेवाली अग्नि के समान उसका क्रोध बढ़ गया। अन्तरिक्ष में चलते हुए इन्द्रजित्‌ ने अनुभव किया, अब मेरे करने योग्य कोई कार्य नहीं। इसलिए उसने अप्रतिरुद्ध ब्रह्मास्त्र को चलाने की बात सोच ली। १०३३

पूवुम्‌ वूनिऱ वयिनियुन्‌ दीबमुम्‌ वुहैयुम्‌
ताविल्‌ पावनॅ याऱ्‌कॊडुत्‌ तरुच्चनॅ शमैत्तान्‌
तेवि यावॅयु मुलहमुन्‌ दिरुत्तिय दॅय्वक्‌
कोवि नान्‌मुहन्‌ पडॅक्कलन्‌ दडक्कॅयिऱ्‌ कॊण्डान्‌ 1034

पूवुम्‌–सुमन और; पू निऱ–पुष्प-वर्ण (शुद्ध); अयितियुम्‌–चावल; तीपमुम्‌–दीपाराधन; पुकॅयुम्‌–धूप; तावु इल्‌–निर्दोष; पावनॅयाल्‌–(भक्ति) भावना के साथ; कॊटुत्तु–पूजा में चढ़ाकर; अरुच्चनॅ–अर्चना; चमैत्तान्‌–करके; तेवु उलकम्‌ यावॅयुम्‌–देवताओं और सारे लोकों को; तिरुत्तिय–जिन्होंने क्रम से बनाया उन; तॅय्वक्‌ कोविन्‌–देवनायक; नान्‌ मुकन्‌–चतुर्मुख ब्रह्माजी के; पटॅक्कलम्‌–अस्त्र को; तटम्‌ कॅयिल्‌–अपने विशाल हाथ में; कॊण्टान्‌–ले लिया। १०३४

इन्द्रजित्‌ ने उस अस्त्र की विधिवत पूजा की। पुष्प, शुद्ध चावल, दीप, सुगन्धित धूप आदि को निर्दोष भावना के साथ चढ़ाया। फिर यथोचित अर्चना की। देवों और चराचर सभी प्रपञ्च के सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के अस्त्र को उसने अपने विशाल हाथ में लिया। १०३४

कॊण्डु कॊऱ्‌ऱवॅञ्‌ जिलॅनॅडु नाणॊडु कूट्टिच्‌
चण्ड वेहत्त मारुदि तोळॊडुञ्‌ जार्त्ति
मण्डु ळङ्गिड मादिरन्‌ दुळङ्गिड मदितोय्‌
विण्डु ळङ्गिड मेरुवुन्‌ दुळङ्गिड विट्टान्‌ 1035

कॊण्टु–लेकर; कॊऱ्‌ऱम्‌–विजयदायक; वॅम्‌ चिलॅ–भयंकर धनु की; नॅटु नाणॊटु कूट्टि–लम्बी डोरी से लगाकर; चण्ट वेकत्त–प्रचण्ड वेगवान; मारुति–मारुति के; तोळ्‌ ऒटुम्‌–कन्धों को; चार्त्ति–निशाना बनाकर; मण्‌ तुळङ्किट–

भूमि को कँपाते हुए; मातिरम् तुळङ्किट–दिशाओं को कँपाते हुए; मति तोय्–चन्द्राश्रय; विण् तुळङ्किट–आकाश काँप जाए, ऐसा; मेरुवुम् तुळङ्किट–मेरु भी काँप उठे, ऐसा; विट्टान्–प्रेरित किया (इन्द्रजित्) ने। १०३५

उसने उसे हाथ में लेकर विजयदायी और कठोर धनु की लम्बी डोरी पर रखकर संधान किया, प्रचण्डवेग मारुति के कन्धों का निशाना लगाया और प्रेरित किया, जिससे भूमि काँपी, दिशाएँ काँपीं और चन्द्राश्रय आकाश काँपा तथा मेरुपर्वत भी काँप उठा। १०३५

तणिप्प रुम्बॆरुम् बडैक्कलन् दळलुमिळ् तरुहण्
पणिक्कु लङ्गळुक् करशिन दुरुवित्तैप् पऱ्ऱित्
तुणिक्क वुऱ्ऱुयर् कलुळ्ळनुन् दुणुक्कुऱ्च् चुऱ्ऱिप्
पिणित्त दप्पॆरु मारुदि तोळ्हळैप् पिऱङ्ग 1036

तणिप्पु अरुम्–अवार्य; पॆरुम् पटैक्कलम्–बड़े अस्त्र ने; तळल् उमिळ्–अग्नि-वर्षक; तरुकण्–क्रूर; पणि कुलङ्कळुक्कु–सर्पकुल के; अरचित्तु–राजा का; उरुवित्तै पऱ्ऱि–रूप लेकर; तुणिक्क उऱ्ऱु–उसे खण्डित करने का विचार लेकर; उयर् कलुळ्ळतुम्–उठनेवाला गरुड़ भी; तुणुक्कु उऱ–भयभीत हो, ऐसा; अ पॆरु मारुति–उस विश्वरूप मारुति के; तोळ्कळै–कन्धों को; पिऱङ्क चुऱ्ऱि–खूब लपेट कर; पिणित्तत्तु–बाँध गया। १०३६

उस अवार्य और उत्कृष्ट ब्रह्मास्त्र ने अग्निवर्षक और हिंस्र सर्पराज का रूप लेकर, उसको भग्न करने के लिए उठ आये गरुड़ को भी भयभीत करते हुए आकर, उस विराट्रूप मारुति के कन्धों से लपेटकर उन्हें बाँध दिया। १०३६

तिण्णॆन् याक्कैयैत् तिशैमुहन् पडैशॆन्ऱु तिरुह
अण्णन् मारुदि यन्ऱुतन् पिन्शॆन्ऱ वऱत्तिन्
कण्णि नीरॊडुङ् गनहतो रणत्तॊडुङ् गडैनाळ्
तण्णॆन् मामदि कोळॊडुञ् जायन्दॆनच् चायन्दान् 1037

तिचै मुकन् पटै–दिशामुख (ब्रह्मा) का अस्त्र; तिण् ऎन्–सुदृढ़; याक्कैयै–शरीर को; चॆन्ऱु तिरुक–जाकर लपेटकर दुःख देने लगा तो; अण्णल्–मान्य महावीर; अन्ऱु–उस दिन; तन् पिन् चॆन्ऱ–उसके पीछे गये; अऱत्तिन्–धर्म के; कण्णिन् नीरॊटुम्–नेत्र के अश्रुजल के साथ; कटै नाळ्–युगान्त के दिन; तण् ऎन्–शीतल; मा मति–श्रेष्ठ चन्द्र; कोळ् ऒटुम्–परिवेश के साथ; चाय्न्तु ऎन–गिरा जैसे; कनक तोरणत्तु ऒटुम्–कनकतोरण के साथ; चाय्न्तान्–गिर गया। १०३७

दिशामुख ब्रह्मा के अस्त्र ने हनुमान के बहुत सुदृढ़ शरीर को लपेट कर पीड़ा दी। वह युगान्त में परिवेश के साथ गिरनेवाले शीतल और बड़े चन्द्र के समान कनक-तोरण के साथ नीचे गिर गया; जिससे उसकी सहायता लेकर लंका में आये धर्म की आँखों से आँसू बह निकले। १०३७

शाय्न्द मारुदि शदुमुहऩ् पडैयॆऩुऩ् दऩ्मै
आय्न्दु मऱ्ऱिद ऩाणैयै यवमदित् तहऱल्
एय्न्द दऩ्ऱॆऩ वॆण्णिऩऩ् कण्मुहिऴ्त् तिरुन्दाऩ्
ओय्न्द दामिवऩ् वलियॆऩ वरक्कऩ्वन् दुऱ्ऱाऩ् 1038

चाय्न्त मारुति–नीचे (जो) गिरा (वह) मारुति; चतुमुकऩ् पटै–चतुर्मुख का अस्त्र; ऎऩुम् तऩ्मै–यह तथ्य; आय्न्तु–जानकर; इतऩ् आणैये–इसके शासन से; अवमतित्तु–अवज्ञा करके; अकल्तल्–हटना; एय्न्ततु अऩ्ऱु–उचित नहीं; ऎऩ्ऩ ऎण्णिऩऩ्–ऐसा सोचा; कण् मुकिऴ्त्तु–और आँखें बन्द किये; इरुन्ताऩ्–रहा; अरक्कऩ्–राक्षस; इवऩ् वलि–इसका बल; ओय्न्ततु आम्–समाप्त हो गया; ऎऩ्ऩ–ऐसा सोचकर; वन्तु उऱ्ऱाऩ्–पास आ पहुँचा। १०३८

हनुमान गिरा तो उसने, चतुर्मुख का अस्त्र ही मेरे ऊपर लगा है —यह तथ्य जान लिया। उसने सोचा कि इसकी अवज्ञा करना उचित नहीं है। इसलिए वह आँखें बन्द किए चुप रहा। राक्षस इन्द्रजित् ने सोचा कि उसका बल समाप्त हो गया। वह उसके पास आया। १०३८

उऱ्ऱ कालैयि नुयिर्हॊडु तिशैदॊऱु मॊदुङ्गि
अऱ्ऱ नोक्किनर् निऱ्किऩ्ऱ वाळॆयिऱ् ऱरक्कर्
शुऱ्ऱुम् वन्दुडल् शुऱ्ऱिय तॊळैयॆयिऱ् ऱरवैप्
पऱ्ऱि यीर्त्तऩ रार्त्तऩर् तॆऴित्तनर् पलराल् 1039

उऱ्ऱ कालैयिल्–आ पहुँचने पर; उयिर् कॊटु–प्राण लेकर; तिचै तॊऱुम् ऒतुङ्कि–दिशा-दिशा में हटकर; अऱ्ऱम् नोक्कितर्–मौक़ा देखते हुए; निऱ्किऩ्ऱ–जो खड़े रहे वे; वाळ् ऎयिऱ्ऱु अरक्कर्–श्वेत दाँतों के राक्षस; पलर्–अनेक; चुऱ्ऱुम् वन्तु–चारों ओर आकर; उटल् चुऱ्ऱिय–(हनुमान के) शरीर को लपेटे रहे; तॊळै ऎयिऱ्ऱु अरवै–रन्ध्र-सहित दाँत वाले सर्प को (सर्परूप ब्रह्मास्त्र को); पऱ्ऱि–पकड़कर; ईर्त्ततर्–खींचते (हुए); आर्त्ततर्–गरजे; तॆऴित्ततर्–डाँटा। १०३९

जब इन्द्रजित् उसके पास आया, तब श्वेत दाँतों वाले अनेक राक्षस भी घेर आये, जो अपने प्राण बचा लेकर चारों दिशाओं में इधर-उधर जा छिपे थे और मौके की ताक में रहते थे। उन्होंने रन्ध्रसहित दाँतों वाले सर्प के रूप में हनुमान को, जो लपेटे रहा, उस ब्रह्मास्त्र को पकड़कर खींचा; गर्जन और तर्जन किया। १०३९

कुरक्कु नल्वलङ् गुलैन्ददॆऩ् ऱावलङ् गॊट्टि
इरक्कु मानह रॆऱ्िकड लॊत्तदॆम् मरुङ्गुम्
तिरक्कु माशुणम् वाशुहि यॊत्तदु तेवर्
अरक्क रीत्तऩर् मन्दर मॊत्तऩ ऩुमऩ् 1040

कुरक्कु–बन्दर का; नल् वलम्–अच्छा बल; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हो गया; ॲन्ऱु–कहकर; आवलम् कॉट्टि–शोर मचाते हुए; इरैक्कुम् मा नकर्–कोलाहल-पूर्ण वह बड़ा नगर; ॲऱि कटल् ऑत्ततु–तरंगायमान समुद्र के समान रहा; ॲमरुङ्कुम्–सब ओर; तिरैक्कुम्–लपेटकर कसनेवाला; माचुणम्–सर्प; वाचुकि ऑत्ततु–वासुकी-सम रहा; अरक्कर् तेवर् ऑत्तनर्–राक्षस देवों के समान लगे; अनुमन्–हनुमान; मन्तरम् ऑत्ततन्–मन्दर पर्वत-सा रहा। १०४०

सारी लंका नगरी ने कोलाहल मचाया कि हरि का अच्छा बल मिट गया। तब वह तरंगायमान सागर के समान रही। चारों ओर से हनुमान को जो लपेटे रहा, वह अस्त्र वासुकी के समान रहा। राक्षस देवों के समान रहे और हनुमान मन्दरपर्वत के समान रहा। (सारा मिलकर क्षीरसागर-मथन का दृश्य उपस्थित कर रहा था।)। १०४०

करुत्त माशुणङ् गनहमा मेनियैक् कट्ट
अऱत्तुक् काङ्गोरु तनित्तुणै यानिन्ऱ वनुमन्
मऱत्तु मारुदम् बोरुदनाळ् वाळरा वरशु
पुऱत्तुच् चुऱ्ऱिय मेरुमाल् वरैयैयुम् बोन्ऱान् 1041

करुत्त माचुणम्–(क्रुद्ध) काले सर्प (अस्त्र) के; कनक मा मेनियै–स्वर्णसंनिभ देह को; कट्ट–कसने पर; अऱत्तुक्कु–धर्म के; आङ्कु–वहाँ के; ऑरु तनि तुणै आ–एक अनुपम सहायक के रूप में; निन्ऱ अनुमन्–जो रहा वह हनुमान; मऱत्तु–सबल; मारुतम् पॉरुत नाळ्–पवन के प्रहार के समय; वाळ् अरा अरचु–उज्ज्वल सर्पराज (आदिशेष); पुऱत्तु चुऱ्ऱिय–जिसको चारों ओर से लपेटे रहा; मेरु माल् वरैयैयुम्–उस महामेरु के; पोन्ऱान्–समान भी रहा। १०४१

क्रुद्ध और काले (अस्त्र-) सर्प ने हनुमान के कनकवर्ण शरीर को खूब कस लिया। तब धर्म का अद्वितीय सहायक हनुमान उस मेरु के समान लगा, जिसको सर्पराज आदिशेष ने पवन की होड़ में चारों ओर से लपेटकर बाँध लिया था। १०४१

वन्दि रैत्तनर् मैन्दरु महळिरु मळैपोल्
अन्द रत्तिनुम् विशुम्बिनुन् दिशैतोऱु मार्प्पार्
मुन्दि युऱ्ऱदो रुवहैक्कोर् करैयिलै मॊऴियिन्
इन्दि रन्बिणिप् पुण्डना ळॊत्तदव् विलङ्गै 1042

मैन्तरुम्–पुरुषों और; मकळिरुम्–स्त्रियों ने; वन्तु–आकर; इरैत्तनर्–शोर मचाया; मऴै पोल्–मेघ-जैसे; अन्तरत्तिनुम्–रिक्त स्थानों में और; विचुम्पितुम्–आकाश में; तिचै तोऱुम्–चारों दिशाओं में; आर्प्पार्–(रहकर) नर्दन करते; मुन्ति–सबसे पहले; उऱ्ऱतु ओर् उवकैक्कु–उन्हें जो हुआ उस आनन्द का; ओर् करै इल्लै–(एक) ठिकाना नहीं रहा; मॊऴियिन्–कहना चाहें तो; अ इलङ्कै–वह

लंका; इन्तिरन्–(जिस दिन) इन्द्र; पिणिप्पु उण्ट–पकड़ा गया; नाळ् ऑत्ततु–उस दिन के समान रहा। १०४२

राक्षस तरुणों और तरुणियों ने आकर शोर मचाया; मेघों के समान दिशाओं और आकाश में उद्घोष किया। सबसे पहले, उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। किसी तरह उसको बताना हो तो कहना पड़ेगा कि लंका की स्थिति उस दिन की-सी रही, जिस दिन इन्द्र मेघनाद द्वारा बाँध लाया गया था। १०४२

12. पिणिविडु पडलम् (वन्धन-मुक्ति पटल)

ऍय्युमि नीरुमि ऍरिमिन् पोळ्ळुमिन्
कॉय्युमिन् कुडरितैक् कूरु कूरुहळ्
शॅय्युमि नुलहिडैत् तेय्मिन् ऱिन्नुमिन्
उय्युमे लिल्लैनम् मुयिरॅन् ऱोडुवार् 1043

ऍय्युमिन्–बाण चलाओ (इस पर); ईरुमिन्–(तलवार से) काटो; ऍरिमिन्–(भाले आदि) घुसेड़ो; पोळ्ळुमिन्–फोड़ो; कुटरितै कॉय्युमिन्–अँतड़ियों को निकालो; कूरु कूरुकळ्–खण्ड-खण्ड; चॅय्युमिन्–बना लो; उलकु इटै–भूमि पर; तेय्मिन्–(डालकर) पीसो; तिन्नुमिन्–खाओ; उय्युम् एल्–जीवित रहेगा तो; नम् उयिर् इल्लै–हमारे प्राण नहीं (बचेंगे); ऍन्ऱु–कहते हुए; ओटुवार्–(हनुमान के पास) दौड़ते। १०४३

राक्षस ऐसे-ऐसे कहते दौड़ आये— इस पर बाण चलाओ; तलवार से काट लो। भाले घुसेड़ो। कुदाल आदि से फोड़ो। अँतड़ियों को नोच लो। उसे छिन्न-भिन्न कर दो। भूमि पर डालकर कुचलो। खा लो। अगर यह बच जायगा तो हमारी जानें नहीं बच रहेंगी। १०४३

मैत्तडङ् गण्णियर् मैन्दर् यावरुम्
पैत्तलै यरवॅनक् कनन्ऱु पैतलै
इत्तनै पॉळ्दुहॊण् डिरुप्प दोवॅना
मॊय्त्तनर् कॉलैशॅय मुयल्हिन् ऱार्शिलर् 1044

मै–अंजनयुक्त; तटम् कण्णियर्–बड़ी आँखों वाली राक्षस-स्त्रियाँ और; मैन्तर्–राक्षस युवक; यावरुम्–सभी; पै तलै अरवु–फन-सहित साँप; ऍन–जैसे; कनन्ऱु–कोप करके; पैतलै–इस छोकरे को; इत्तनै पॉळ्ळुतु–इतनी देर; कॊण्टु–(जीवित) रखकर; इरुप्पतो–रहना है क्या; ऍना–कहकर; मॊय्त्तनर्–उस पर टूट पड़े; चिलर्–कुछ; कॉलै चॅय–हत्या करने का; मुयल्किन्ऱार्–प्रयत्न करते है। १०४४

अञ्जन-लगी विशाल आँखों वाली राक्षसरमणियाँ और तरुण सभी

फन वाले सर्प के समान फुफकारते आये। 'इस छोकरे को इतनी देर जीवित रहने दिया जाय क्यों ?' यह प्रश्न करते हुए वे सब उसके चारों ओर मिल आये। कुछ उसको मारने का भी प्रयास करने लगे। १०४४

नच्चडै पडैहळा नलियु मीट्टदो
वच्चिर वुडन्मरि कडलिन् वाय्मडुत्
तुच्चियि नळुत्तुमि नुरुत्त दिन्रेनिल्
किच्चिडै यिडुमॅन्नक् किळक्किन् ड्रार्शिलर् 1045

चिलर्–कुछ; नच्चु अटै–विषैले; पटैकळाल्–हथियारों द्वारा; नलियुम् ईट्टतो–मिटनेवाला है क्या; वच्चिर उटल्– वज्र-से शरीर को; मरि कटलिन् वाय्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों के सागर में; मटुत्तु–डुबोकर; उच्चियिल् उरुत्तु–सिर को पकड़कर; अळुत्तुमिन्–दबाओ; अतु इन्रु ॲनिन्–वह नहीं होगा तो; किच्चु इटै–अग्नि में; इटुम्–डालो; ॲन–ऐसा; किळक्किन्ड्रार्–कहते। १०४५

कुछ राक्षसों ने संशय उठाया कि क्या यह विषैले अस्त्रों द्वारा मारा जा सकेगा ? इसलिए उनका सुझाव था कि इसके वज्र-सम कठोर शरीर को प्रत्यावर्तनशील तरंगों वाले समुद्र में फेंककर सिर दबाकर डुबो दो। अगर ऐसा नहीं हो तो आग में डाल दो। १०४५

ॲन्दैयै यॅम्बियै यॅम्मु न्नोर्हळैत्, तन्दनै पोहॅन्नत् तडुक्किन् ड्रार्पलर्
अन्दरत् तमरर्त माणै यालिवन्, वन्दॅन् ड्रुयिर्हॉळ मरुहि नार्पलर् 1046

पलर्–और अनेक; ॲन्तैयै–हमारे पिताओं को; ॲम्पियै–हमारे छोटे भाइयों को; ॲम् मुन्नोर्कळै–हमारे ज्येष्ठ भ्राताओं को; तन्तनै–दे दो, बाद; पोकु–जाओ; ॲन्ना–कहकर; तटुक्किन्ड्रार्–रोकते हैं; पलर्–अनेक; अन्तरत्तु–आकाशलोक के; अमरर् तम्–अमरों की; आणैयाल्–आज्ञा से; इवन् वन्तत्तु–यह आया; ॲन्रु–कहकर; उयिर् कॉळ–उसके प्राण हरने; मरुकिनार्–आतुर हुए। १०४६

अनेक राक्षसों ने उसे यह कहते हुए रोका कि हमारे पिता को लौटा दो, तभी जाओ; हमारे छोटे भाई को, हमारे बड़े भाई को लौटा दो, तभी जा सको। अनेक ने कहा कि यह व्योम के देवों की आज्ञा से आया है। वे उसके प्राण हरने को आतुर हुए। १०४६

ओङ्गलम् बॅरुवलि युयिरि नन्बरै, नीङ्गल मिन्ड्रॉडु नीङ्गि नामिनि
एङ्गल मिवन्शिरत् तिरुन्द लाऱ्ड्रिरु, वाङ्गल मॅन्ड्रळु माद रार्पलर् 1047

ओङ्कल्–पर्वत के सदृश; अम् पॅरु वलि–सुन्दर और अतिबलिष्ठ; उयिरिन् अन्परै–प्राण-सम प्यारों को; नीङ्कलम्–हम छोड़कर नहीं रहे थे; इन्रु ऑटु नीङ्किनाम्–आज से वियुक्त हो गये; इनि एङ्कलम्–अब आर्त नहीं होंगे; इवन् चिरत्तु इरुन्तु अलाल्–इसके सिर पर रहकर ही, अन्यथा; तिरु वाङ्कलम्–अपने

मंगलसूत्रों (अहिवात के चिह्नों) को अलग नहीं करेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा कहकर; अऴुम्–रोनेवाली; मातरार्–स्त्रियाँ; पलर्–अनेक रहीं। १०४७

अनेक राक्षस-स्त्रियाँ रोयीं। पर्वत-सदृश सुन्दर और अतिबली हमारे प्राणप्रिय पतियों से हम कभी अलग नहीं हुई थीं। आज से हम वियुक्त हो गयीं। अब हम आतुर नहीं होंगी। पर इसके सिर को ही पीठ बनाकर उस पर बैठेंगी और मंगलसूत्र निकालेंगी। अन्यथा नहीं। १०४७

कॊण्डनर् ॲदिर्शॆलुङ् गॊऱ्ऱ मानहर्, अण्डमुऱ् ऱदुनॆडि दार्क्कु मार्प्पदु
कण्डमुऱ् ऱुऴवरुङ् गणवर्क् कॆङ्गिय, कुण्डल मुहत्तियर्क् कुवहै कूरवे 1048

कॊण्ट्टनर्–(हनुमान को) ले जानेवालों के; ॲतिर् चॆलुम्–सामने से आनेवाले; कॊऱ्ऱ मा नकर्–विजयी बड़े नगर के (राक्षसों) ने; नॆट्टितु आर्क्कुम्–उच्च घोष जो निकाला; आर्प्पु अतु–वह शोर; कण्टम् उऱ्ऱ उऴ–(हनुमान द्वारा) छिन्न-भिन्न हुए; अरुम् कणवर्क्कु एङ्किय–अपने पतियों के लिए आर्त; कुण्टल मुकत्तियर्क्कु–कर्णकुण्डलालंकृत मुखों वालियों को; उवकै कूर–आनन्द दिलाते हुए; अण्टम् उऱ्ऱतु–अण्ड भर में व्यापा। १०४८

हनुमान को खींचते ले जा रहे थे लोग। तब उनके सामने से जो राक्षस तमाशबीन बनकर आये थे, उन्होंने घोर आनन्दरव उठाया। वह घोष सारे अण्ड में फैला और उसे सुनकर युद्ध में आहत पतियों के लिए तरसनेवाली कर्णकुण्डलालंकृत मुखों की राक्षसी स्त्रियाँ मुदित हुईं। १०४८

वडियुडैक् कनर्पडै वयवर् माल्करि
कॊडियुडैत् तेर्परि कॊण्डु वीशलिन्
इडिपडच् चिदैन्दमाल् वरैयि निल्लॆलाम्
पॊडिपडक् किडन्दन कण्डु पोयिनान् 1049

वटि उटै–तीक्ष्ण; कतल् पटै–अनल-सम आयुधधारी; वयवर् वीरों; माल् करि–बड़े गजों; कॊटि उटै तेर्–ध्वजायुक्त रथों; परि–अश्वों को; कॊण्टु वीचलिन्–(हनुमान ने) उठाकर फेंका था, इसलिए; इटि पट चितैन्त–प्रहार पाकर जो टूटे थे; माल् वरैयिन्–बड़े पर्वतों-से; इल् ॲलाम्–सभी घर; पॊटि पट–चूर होकर; किटन्तन–जो पड़े रहे वह; कण्टु–देखते हुए; पोयिनान्–हनुमान जाता रहा। १०४९

हनुमान भी बन्धन में रहकर तमाशा देखता जा रहा था। उसने पहले तीक्ष्ण और अग्निवर्षक हिंस्र हथियारधारी वीरों, बड़े नागों, ध्वजा-सहित रथों और अश्वों को उठा ले फेंका था। वे सब जाकर बड़े पर्वतों के समान प्रासादों को चूर कर गये थे। उस चूर्ण को देखते हुए वह गया। १०४९

मुयिऱ्लैत् तॆऴुमुदु मरत्तिऩ् मॊय्म्बुतोळ्
कयिऱ्लैप् पुण्ड्दु कण्डुङ् गाण्गिला
तॆयिऱ्लैत् तॆऴुमिद ऴरक्क रेऴैयर्
वयिऱ्लैत् तिरियलिऩ् मयङ्गि ऩार्पलर् 1050

मुयिऱु–माटे (लाल चींटे); अलैत्तु ऍऴु–संकट देते हुए जिस पर चढ़ते हैं; मुतु मरत्तिऩ्–उस वृद्ध तरु के समान; मॊय्म्पु तोळ्–बलवान कन्धों को; कयिऱु अलैप्पु उण्टतु कण्टुम्–रस्सी पीड़ा देती रहीं, वह देखकर भी; काण्किलातु–विना देखे (डर के कारण); ऍयिऱु अलैत्तु ऍऴुम्–दाँत के किटकिटाने से बाहर निकले हुए; इतऴ्–ओठों वाली; अरक्कर् एऴैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटकर; इरियलिऩ्–अस्त-व्यस्त भागीं, इसलिए; पलर् मयङ्किऩार्–अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

एक वृद्ध तरु को माटे (लाल चींटे) जैसे रस्सी हनुमान को बाँधकर संकट देती रही। राक्षसियाँ देखना चाहतीं पर देख नहीं सकीं। उनके दाँत किटकिटाते और ओंठ बाहर निकल आते। वे अपना पेट पीटती हुई तितर-बितर भाग गयीं। अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

आर्प्पुऱ् वञ्जिन रडङ्गि ऩार्पलर्
पोर्प्पुऱच् चॆयलिनैप् पुहल्हिऩ् ऱार्पलर्
पार्प्पुऱप् पार्प्पुऱप् पयत्ति ऩार्पदॆत्
तूर्प्पुऱत् तिरियलुऱ् ऱोडु वार्पलर् 1051

पलर्–अनेक; आर्प्पु उऱ–अधिक कोलाहल के शोर के उठने से; अञ्चिऩर्–डरकर; अटङ्किऩार्–चुप हो गये; पलर्–अनेक; पोर्–युद्ध में; पुऱ चॆयलिऩै–(हनुमान के) वीरता के कृत्यों को; पुकल्किऩ्ऱार्–बतलाते; पलर्–अन्य अनेक; पार्प्पु उऱ पार्प्पु उऱ–ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों; पयत्तिऩाल्–डर से; पतैत्तु–थर्राकर; ऊर् पुऱत्तु–नगर के बाहर की ओर; इरियल् उऱ्ऱु–अस्त-व्यस्त होकर; ओटुवार्–भागते। १०५१

लंका में जो तुमुल शोर मचा, उसे सुनकर अनेक जन स्तब्ध रहे। अनेक हनुमान के युद्ध में साहसिक कार्यों का बखान करते रहे। अनेक हनुमान को ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों भयाभिभूत होकर नगर के बाहर की ओर, अस्त-व्यस्त भागे। १०५१

कान्दुऱु कदऴॆयिऱ् ऱरविऩ् कट्टॊरु
पून्दुणर् शेर्त्तॆनप् पॊलियुम् वाण्मुहम्
तेर्न्दुऱु पॊरुळ्पॆऱ वॆण्णिच् चॆय्युमिऩ्
वेन्दुऱल् पऴुदॆऩ विळम्बु वार्शिलर् 1052

कान्तु उऱु–जलानेवाले; कतऴ् ऍयिऱु–हिंस्र दाँतों वाले; अरविऩ्–सर्प का; कट्टु–बन्धन; ऑरु पूम् तुणर्–एक पुष्पमाला; चेर्त्तु ऍऩ–द्वारा बाँधा

गया हो जैसे; वाण् मुकम्–उज्ज्वल-मुख (हनुमान को); पॊलियुम्–शोभायमान है; उऱु पॊरुळ् पॆऱ–उचित हित-प्राप्त्यर्थ; तेर्न्तु ऎण्णि–अच्छी तरह सोचकर; चॆय्युमित्–(कार्य) करो; वेन्तु उऱल्–(इस स्थिति में) राजा के पास जाना; पऴुतु–ग़लत है; ऎन्–ऐसा; विळम्पुवार्–कहते; चिलर्–कुछ राक्षस। १०५२

कुछ राक्षसों ने कहा कि यह जलाने के स्वभाव के दाँतों के सर्प का वन्धन है। तो भी इस वन्दर का प्रकाशमय मुख ऐसा भासमान है, मानो कोमल पुष्पदाम से बाँधा गया हो। सोचो खूव और अच्छा फलदायी काम करो। इसी स्थिति में इसको लेकर राजा के पास जाने का काम ग़लत होगा। १०५२

ऒळिवरु	नाहत्तिऱ्	कॊल्ह	लुण्मैयन्
ऱॆळिवर	लन्ऱिद	नॆण्णम्	वेऱॆन्ाक्
कळिवरु	शिन्दैयाऱ्	काण्डि	नङ्गळैच्
चुळिहिलै	यामॆन्त्	तॊऴुहिन्	ऱार्शिलर् 1053

ऒळिवु अरु–जो छिपा नहीं है; नाकत्तिऱ्कु–उस नाग (ब्रह्मास्त्र) से; ऒल्कल्– दुःखी (सा) रहना; उण्मै अन्ऱु–सत्य नहीं (लगता); ऎळिवरल् अन्ऱु–इतना दुर्वल नहीं; इतन् ऎण्णम् वेऱु–इसका तात्पर्य और है; ऎन्ा–सोचकर; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; कळि वरु चिन्तैयाल्–प्रसन्नचित्त हो; काण्टि–हम पर वृष्टि रखो; नङ्कळै–हम पर; चुळिकिलै–कोपवृष्टि मत डालो; ऎन्–कहकर; तॊऴुकिन्ऱार्–नमस्कार किया। १०५३

यह ब्रह्मास्त्र का नाग परोक्ष रूप से नहीं प्रत्यक्ष रूप से उसको कस रहा है। तो भी इसका दुःखी-सा दिखना ढोंग ही है, सत्य नहीं है। इसको बाँधना उतना हल्का कार्य नहीं है। इसका छिपा तात्पर्य दूसरा कुछ होगा —यह कहकर कुछ राक्षसों ने सीधे हनुमान से विनय की कि हम पर प्रसन्नचित्त दृष्टि रखो। कोप की दृष्टि मत डालो। वे हनुमान को नमस्कार करते। १०५३

पैङ्गऴ	लनुमनै्प्	पिणित्त	पान्दळैक्
किङ्गर	रॊरुपुडैक्	किळर्न्दु	पऱ्ऱिनार्
ऐम्बदि	न्ायिर	रळवि	लाऱ्ऱलर्
मॊय्म्बिनि	नॆरुळ्वलिक्	करुळन्	मुम्मैयार् 1054

पैम् कऴल्–चमकदार (स्वर्ण) पायलधारी; अनुमनै–हनुमान को; पिणित्त पान्तळै–जो वद्ध कर रहा था, उस सर्प को; मॊय्म्पितिन्–पराक्रम में; ऎऱुऴ् वलि करुळत्–अतिवली गरुड़ के; मुम्मैयार्–तिगुने वलशाली; अळवु इल् आऱ्ऱलर्–अपार साहसी; किङ्करर् ऐम्पतिन्ायिरर्–पचास सहस्र किंकर; ऒरु पुटै–एक तरफ़; किळर्न्तु– मिलकर; पऱ्ऱितार्–पकड़ ले चले। १०५४

जब यह सब हो रहा था तब पचास सहस्र किंकर, जो बल में गरुड़ के तिगुने थे, चमकदार स्वर्णपायलधारी हनुमान को उसके नाग-बन्धन के साथ एक ओर मिलकर खींचते चले जा रहे थे। १०५४

तिण्डिऱ् लरक्करदऩ् जॅरुक्कुच् चिन्दुवाऩ्
तण्डलि ऱन्तुरुक् करन्द तन्मैयाऩ्
मण्डमर् तॉडङ्गिय वाऩ रत्तुरुक्
कॉण्डऩ ऩन्दहऩ् कॉल्लॅन् ऱार्पलर् 1055

तिण् तिऱल्–अतिबली; अरक्कर् तम्–राक्षसों का; चॅरुक्कु–घमंड; चिन्तुवाऩ्–चूर करने के लिए; अन्तकऩ्–यम; तण्टल् इल्–अबाध; तऩ् उरु–अपना रूप; करन्त–छिपाने की; तन्मैयाऩ्–स्थिति में; मण्टु अमर्–घमासान युद्ध; तॉटङ्किय–प्रारम्भ जिसने किया उस; वातरत्तु उरु–वानर का रूप; कॉण्टऩऩ् कॉल्–ले गया है क्या; ॲऩ्ऱार् पलर्–कहा अनेक ने। १०५५

अनेक कहते कि अतिबली राक्षसों का गर्व चूर करने हेतु यमराज अपना अवारित रूप छिपा लेकर युद्धकर्ता हनुमान का रूप ले आया है, शायद ! । १०५५

अरमियत् तलन्दॉरु मम्बॉन् माळिहैत्
तरमुऱ निलन्दॊऱुञ् जाळ रन्दॊऱुम्
मुरशॅऱि कडैदॊऱु मिरैत्तु मॊय्त्तनर्
निरैवळै महळिरु निरुदर् मैन्दरुम् 1056

निरै वळै–पंक्तियों में चूडाधारिणी; मकळिरुम्–राक्षस-रमणियाँ और; निरुतर् मैन्तरुम्–तरुण राक्षस लोग; अरमिय तलम् तॊऱुम्–हर्म्य-हर्म्य में; अम् पॊऩ् माळिकै–सुन्दर स्वर्ण-महलों के; तरम् उऱु–श्रेष्ठ; निलम् तॊऱुम्–स्थानों में; चाळरम् तॊऱुम्–गवाक्षों में; मुरचु ॲऱि–भेरियाँ जहाँ बजती है, उन; कटै तॊऱुम्–स्थानों में; इरैत्तु–शोर मचाते हुए; मॊय्त्तनर्–आकर भर गई। १०५६

राक्षस-रमणियाँ, जिनके हाथों को पंक्तियों में कंकण अलंकृत कर रहे थे और राक्षस तरुण हर्म्यों में, स्वर्ण प्रासादों के श्रेष्ठ स्थलों में और झरोखों में, गवाक्षों में, भेरियों के बजने के स्थानों में —सर्वत्र कोलाहल करते हुए आ जुटे। १०५६

कयिलैयि नॊरुदनिक् कणिच्चि वाऩवऩ्
मयिलियर् चीदैदऩ् कऱ्पिन् माट्चियाल्
ॲयिलुडैत् तिरुनहर् चिदैप्प वॅय्दिऩऩ्
अयिलॅयिऱ् ऱॊरुकुरङ् गायॅन् ऱार्पलर् 1057

कयिलैयिऩ्–कैलासपति; ऑरु तऩि–अद्वितीय; कणिच्चि वाऩवऩ्–परशुधर ईश्वर; मयिल् इयल्–मयूराभा; चीतै तऩ्–सीतादेवी के; कऱ्पिऩ् माट्चियाल्–

पातिव्रत्य के गौरव से; अयिल् ऍयिऱ्ऱु–तीक्ष्ण दाँतों के; ऒरु कुरङ्काय्–एक वानर बनकर; ऍयिल् उटै–प्राचीर-सह; तिरुनकर्–श्रीयुक्त नगर (लंका) को; चितैप्प–तहस-नहस करने; ऍय्तितत्–आये हैं; ऍऩ्पार् पलर्–कहते अनेक। १०५७

कुछ लोगों ने अनुमान लगाया। कैलासपति परशुधर परमेश्वर, सीताजी के पातिव्रत्य की महिमा से, तेज़ दाँतों वाला हरि बनकर प्राचीर-वलयित श्रीयुक्त लंका नगर को मिटाने आये हैं। १०५७

अरम्बैयर् विज्जै नाट्टळह वल्लियर्
नरम्बिऩ् मिऩियशॊऱ् ऩाह नाडियर्
करुम्बिशैच् चित्तिय रियक्कर् कऩ्ऩियर्
वरम्बरु शुम्मैयर् तलैम यङ्गिऩार् 1058

अरम्पैयर्–अप्सराएँ; विज्चै नाट्टु–विद्याधरलोक की; अळक वल्लियर्–सुकेशिनी, लता-सी स्त्रियाँ; नरम्पिऩुम्–तंत्री से भी; इऩिय चॊल्–मधुरभाषिणी; नाक नाटियर्–नागलोक-वासिनियाँ; करुम्पु इचै–इक्षुरस-सम मधुर गानेवाली; चित्तियर्–सिद्धस्त्रियाँ; इयक्कर् कऩ्ऩियर्–यक्षदयिताएँ; वरम्पु अऱ्ऱ–असीम; चुम्मैयर्–भीड़ बनी; तलै मयङ्किऩार्–स्थान-स्थान में मिली रहीं। १०५८

अप्सराएँ, विद्याधरलोक की सुकेशिनी, लता-समाना नारियाँ, तन्त्री (वीणा) से भी मधुर बोली वाली नागकन्याएँ, इक्षुरस-तुल्य स्वर वाली सिद्धस्त्रियाँ, यक्षकुल-दयिताएँ —आदि सभी बड़ी भीड़ में आकर जुड़ी रहीं और मिश्रित खड़ी रहीं। १०५८

नीरिडैक् कण्डुयि ऩॆडिय नेमियुम्
तारुडैत् तऩिमल रुलहिऩ् ऱादैयुम्
ओरुडऱ् कॊण्डुदम् मुरुव माऱ्ऱिऩर्
पारिडैप् पुहुन्दनर् पहैत्तॆऩ् बार्पलर् 1059

नीर् इटै–(प्रलय-)जलमध्य; कण् तुयिल्–(योग-)निद्रारत; ऩॆटिय नेमियुम्–बड़े चक्रधारी और; तऩि मलर्–श्रेष्ठ पुष्पों की; तार् उटै–मालाधारी; उलकिऩ् तातैयुम्–लोकपिता ब्रह्मा और; ओर् उटल् कॊण्टु–एक शरीर बन; तम् उरुवम् माऱ्ऱिऩर्–अपना रूप बदलकर; पारिटै पुकुन्ततर्–भूमि में (अवतरित हो) आये हैं; पकैत्तु–लड़ने से; ऍऩ्–क्या होगा; ऍऩ्पार्–कहते; पलर्–अनेक। १०५९

प्रलयप्रवाह-मध्य योगनिद्रारत विपुल चक्रधर श्रीविष्णु, और अनुपम कमलपुष्पदामधारी लोकपिता ब्रह्मा दोनों एक शरीर हो अपना रूप बदलकर भूमि पर इस वानर के रूप में अवतरित हो आये हैं। इससे लड़ने से क्या होगा ? —ऐसा अनेक ने कहा। १०५९

अरक्करु मरक्कियर् कुऴामु मल्लवर्
करक्किलर् ऩॆडुमऴैक् कण्णि ऩीरदु

विरैक्कुळऱ् चीदैदन् मॅलिवु नोक्कियो
इरक्कमो वऱत्तिन दॅण्मै येहॉलो 1060

अरक्करुम्–राक्षस नरों; अरक्कियर् कुळामुम्–और नारियों के दलों के; अल्लवर्–जो नहीं रहे वे (देव आदि); नॅटु मळै–निरन्तर वर्षा के समान; कण्णित् नीर् अतु–आँखों के आँसुओं को; करक्किलर्–नहीं छिपाते (रोकते); विरै कुळल्–सुवासित केशिनी; चीतै तन्–सीता का; मॅलिवु नोक्कियो–दुःख देखकर; इरक्कमो–या (हनुमान के प्रति) सहानुभूति; अऱत्तिन्–धर्म-सम्बन्धी; ॲण्मैये कॉलो–विचार क्या। १०६०

राक्षस पुरुषों और स्त्रियों से अन्य (देवादि) लोगों ने अपनी आँखों से आँसू को बहने से नहीं रोका (न छिपाया)। वे क्यों दुःख कर रहे थे? सुगन्धित केशिनी सीता का कष्ट देखकर, या हनुमान की सहानुभूति में; या धर्म का विचार करके? । १०६०

आण्डॉळि लनुमनु मवरॉ डेहिन्नान्
मीण्डिलन् वेऱॊन्ऱुम् विरुम्ब लुऱ्ऱिलन्
ईण्डिदु वेतॉडर्न् तिलङ्गै वेन्दनैक्
काण्डले नलन्नॅनक् करुत्ति लॅण्णिनान् 1061

आण् तॉळिल् अनुमनुम्–पुरुषयोग्य कार्य करनेवाले हनुमान ने भी; मीण्टिलन्–न लौटकर; वेऱु ऑन्ऱुम्–और कुछ; विरुम्पल् उऱ्ऱिलन्–नहीं चाहता हुआ; ईण्टु–यहाँ; इतुवे तॉटर्न्तु–इसी क्रम को अपनाकर; इलङ्कै वेन्तनै–लंका के राजा को; काण्टले–देखना ही; नलन् ॲन–भला है, ऐसा; करुत्तिन् ॲण्णिनान्–मन में सोचा; अवरॊटु एकिनान्–उनके साथ गया। १०६१

पुरुषोचित कार्यदक्ष महावीर ने न लौटना चाहा, न और ही कुछ। "हम इसी क्रम में जायँगे और लंका के राजा से मिलेंगे। यही अच्छा है।" —यह सोचकर वह उनके साथ चुपचाप गया। १०६१

ॲन्दैय दरुळिनु मिरामन् शेवडि, शिन्दैशॅय् नलत्तिनुन् दैव रीन्दन
मुन्दुळ वरत्तिनुम् बाश मुऱ्ऱुऱच्, चिन्दुवॅ नयर्वुऱु शिन्दै शीरिदाल् 1062

ॲन्तै अतु अरुळिनुम्–मेरे पिता (वायुदेव) की कृपा से; इरामन् चे अटि–श्रीराम के श्रेष्ठ चरणों के; चिन्तै चॅय्–स्मरण करने से प्राप्त; नलत्तिनुम्–पुण्यप्रताप से; तेवर् ईन्तन–देव-दत्त; मुन्तु उळ–पूर्व के; वरत्तिनुम्–वरों के वल से; पाचम्–पाश को; मुऱ्ऱु उऱ–पूर्ण रूप से; चिन्तुवॅन्–छिन्न कर दूंगा; अयर्वु उऱु–(पर) थकित (सा) रहने का; चिन्तै–यह विचार; चीरितु–अच्छा है। १०६२

उसने यह भी सोचा कि अपने पिताजी की कृपा, श्रीराम के उत्तम चरण-स्मरण के प्रभाव और देव-प्रदत्त प्राचीन वरों के प्रताप से मैं इस पाश को छिन्न-भिन्न कर सकता हूँ। पर थकित-सा रहने का यह विचार ही ठीक है। १०६२

वळैयॅयिऱ् ऱरक्कनै युऱ्ऱु मन्दिरत्, तळवऱु मुदियरु मऱिय वाणैयाल्
विळैवन विळम्बिनान् मिदिलै नाडियै, इळहिन नॆन्वयि नीद लेयुमाल् 1063

वळै ऎयिऱ्ऱु–वक्र दाँतों वाले; अरक्कनै–राक्षस (राजा) के पास; उऱ्ऱु–जाकर; मन्तिरत्तु–मंत्रणा-सभा में; अळवु अऱु–अपार; मुतियरुम्–वृद्धों के; अऱिय–जाने; आणैयाल्–(श्रीराम की) आज्ञा से; विळैवन–होनेवाली बातें; विळम्पिनाल्–कहें तो; इळकिननु–मन में पसीजकर; मितिलै नाटियै–मिथिलाकुमारी को; ऎन् वयिन्–मेरे पास; ईतल् एयुम्–शायद दे भी दे, यह सम्भव है। १०६३

वक्रदन्त रावण के पास जाऊँगा। वहाँ मंत्री-सभा में अगणित वृद्ध रहेंगे। उनके जाने अगर मैं श्रीराम की आज्ञा के संभाव्य नतीजों का वर्णन करूँ तो रावण का मन नरम हो जाय और शायद वह मिथिला-सुता को मेरे पास सौंप भी दे। १०६३

अल्लदुउ मवनुडैत् तुणैव रायिनार्क्, कॊल्लैयुन् दॆरिवुऱु मॆण्णुन् देऱ्ऱलाम्
वल्लव निलैमैयु मनमुन् देऱ्ऱलाम्, शॊल्लुह मुहमॆनुन् दूदु शॊल्लवे 1064

अल्लतूउम्–उसके अलावा; अवनुटै–उसके; तुणैवर्–सहायक; आयिनार्क्कु–जो बने हैं, उनके; ऎल्लैयुम्–(प्रताप की) सीमा भी; तॆरिवुऱुम्–जानी जा सकेगी; ऎण्णुम् तेऱ्ऱलाम्–संख्या भी जान सकते; मुकम् ऎनम्–मुख जो कहा जाता है; तूतु चॊल्लवे–वह दूत में जाकर कहूँ तो; चॊल् उक–उसके वचन निकलेंगे तब; वल्लवन् निलैमैयुम्–प्रतापी उसकी स्थिति और; मनमुम्–मनोभाव; तेऱ्ऱलाम्–समझ सकते हैं। १०६४

अलावा, उसके सहायकों की स्थिति और संख्या भी जान सकेंगे। दूत राजा का मुख कहा जाता है। वैसा मैं राजाराम का संदेश सुनाऊँ तो तब प्रतापी रावण के मुख से जो शब्द निकलेंगे, उनसे उसकी स्थिति और उसके मनोगत भाव भी समझे जा सकते हैं। १०६४

वालितन् निऱुदियुम् मरत्तिऱ् कुऱ्ऱदुम्
कूलवॆञ् जेनैयिन् कुणिप्पि लामैयुम्
मेलवन् कादलन् वलियुम् मेन्मैयुम्
नीनिऱत् तिरावण नॆञ्जिऱ् ऱैक्कुमाल् 1065

वालि तन्–वाली का; इऱुतियुम्–अन्त और; मरत्तिऱ्कु–(सातों साल-) तरुओं का; उऱ्ऱतुम्–जो हाल हुआ, वह; कूल वॆम्–कठोर; कूल चेनैयिन्–लंगूर-सेना की; कुणिप्पु इलामैयुम्–अगणितता और; मेलवन्–ऊपर स्थित सूर्य के; कातलन् वलियुम्–पुत्र का बल; मेन्मैयुम्–और गौरव; नील् निऱत्तु–काले रंग के; इरावणन् नॆञ्चिल्–रावण के मन में; तैक्कुम्–चुभेंगे (प्रभाव डालेंगे)। १०६५

वाली-वध, सालवृक्षों का बेधन, भयंकर लंगूर-सेना की अगणितता

और सूर्यसूनु का बल-विक्रम और गौरव —यह सारी बातें नील वर्ण रावण के मन में बिठायी जा सकती हैं। १०६५

आदला तरक्कत्तै यॅय्दि यार्ऱलुम्
नीदियु मनक्कॉळ निरुवि निन्ऱदिल्
पादियिन् मेऱ्चॅल नूऱिप् पयप्पयप्
पोदले करुममॅन् ऱनुमन् बोयिनान् 1066

आतलाल्–इसलिए; अरक्कतै अॅय्ति–राक्षस के पास जाकर; आऱ्ऱलुम्–(श्रीराम का) पराक्रम और; नीतियुम्–न्याय; मनम् कॉळ–समझाते हुए; निरुवि स्थिर करके; निन्ऱतिल्–जो बची रही; पातियिन् मेल् चॅल–उस सेना की आधी से अधिक को; नूऱि–मारकर; पयप्पय–धीरे-धीरे; पोतले–जाना ही; करुमम्–करणीय है; अॅन्ऱु–ऐसा सोचकर; अनुमन्–हनुमान; पोयिनान्–चुप जाता रहा। १०६६

इसलिए रावण के पास जाकर श्रीराम का पराक्रम और उनकी नय आदि उसके मन में घर कर ले, ऐसा समझाऊँगा। (अगर कुछ असर नहीं हो तो) जो सेना इस युद्ध के बाद बची है, उसमें से आधी से अधिक को मिटाकर धी रे-धीरे जाना ही मेरा करणीय कार्य है। —ऐसा सोचते हुए हनुमान गया। १०६६

कडवुळर्क् करशनैक् कडन्द तोन्ऱलुम्
पुडैवरुम् बॅरुम्बडैप् पुणरि पोर्त्तॅळ
विडैपिणिप् पुण्डदु पोलुम् वीरनैक्
कुडैहॅळु मन्ननिर् कॉण्डु पोयिनान् 1067

कटवुळर्क्कु अरचनै–देवराज को; कटन्त–जिसने हराया; तोन्ऱलुम्–वह राक्षसराजकुमार भी; पुटै वरुम्–पार्श्व में आनेवाली; पॅरुम् पटै पुणरि–बहुत बड़ी सेना-सागर के; पोर्त्तु अॅळ–घेरकर शोर के साथ आते; विटै–ऋषभ; पिणिप्पु उण्टतु–बन्धन में आ गया जैसे; पोलुम्–रहनेवाले; वीरनै–महावीर को; कुटै कॅळु–विजयचिह्नक छत्रशोभित; मन्नन् इल्–राजा के महल में; कॉण्टु पोयितान्–ले गया। १०६७

देवराजविजेता इन्द्रजित् सागर के समान सेना के मध्य रहकर बद्ध ऋषभ-जैसे महावीर को विजयछत्र रावण के महल में ले गया। १०६७

तूदुव रोडिनर् तॉळुदु तॉल्लैनाळ्
मादिरङ् गडन्दवर् कुरुहि मन्ननिन्
कादलन् मरैमलर्क् कडवुळ् वाळियाल्
एदिल्वा नरम्बिणिप् पुण्ड दामॅन्ऱार् 1068

तूतुवर्–(इन्द्रजित् के) दूत; ओटिनर्–दौड़े; तॉल्लै नाळ्–प्राचीन दिन के;

मातिरम् कटन्तवन्–दिग्विजयी रावण के; कुड्रकि–पास जाकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; मन्न–राजा; निन् कातलन्–आपके पुत्र ने; मरै मलर्–कमलपुष्प के स्वामी; कटवुळ्–ब्रह्मा देवता के; वाळियाल्–अस्त्र द्वारा; एतिल् वानरम्–द्वेषपूर्ण वानर; पिणिप्पुण्टतु–बाँध लिया गया है; ॲन्ड्रार्–बोले। १०६८

इन्द्रजित्-प्रेषित दूत दौड़े। दिग्विजयी रावण के पास जाकर नमस्कार किया। निवेदन किया कि राजा! आपके सुपुत्र ने कमलासन ब्रह्मा के अस्त्र द्वारा द्वेषपूर्ण वानर को बाँध दिया है। १०६८

केट्टलुङ् गिळर्शुडर् कॅट्ट वान्न
ईट्टिरुळ् विळुङ्गिय मार्बिन् यानैयिन्
कोट्टॊडुम् पॊरुदपे रारङ् गॊण्डॆदिर्
नीट्टिन नुवहैयि निमिर्न्द नॆञ्जिनान् 1069

केट्टलुम्–सुनते ही; उवकैयिल्–आनन्द से; निमिर्न्त–फूले हुए; नॆञ्चिनान्–दिल वाला होकर; किळर् चुटर्–विकासशील प्रभा से; कॅट्ट वान्–रहित आकाश को; ईट्टु इरुळ्–पुंजीभूत अंधकार ने; विळुङ्किय ॲन्त–निगल लिया जैसे; मार्पिन्–अपने वक्ष में; यानैयिन् कोटु ऑटुम् पॊरुत–दिग्गजों के दाँतों के साथ भिड़ते रहे; पेर् आरम् कॊण्टु–बड़े हार को लेकर; ॲतिर् नीट्टिनन्–(उस दूत के) आगे बढ़ाया (रावण ने)। १०६९

यह सुनते ही रावण का वक्ष फूल उठा। मन आनन्द से भर गया। वर्धनशील तेजपुंज सूर्य और चन्द्ररहित आकाश को अन्धकार लील गया जैसे रहा उसका विशाल वक्ष। उसमें दिग्गजों के दाँत जड़े गये थे। उन पर एक बड़ी मुक्तामाला हिलकर उनको रगड़ रही थी। रावण ने उसको निकालकर उस दूत के सामने बढ़ाया। (दूत अनेक आये, ऐसा ही लगता है। पर शायद सन्देश एक ही ने सुनाया और उसे ही हार दिया गया।)। १०६९

ॲल्लैयि लुवहैया लिवर्न्द तोळिनन्
पुल्लुड़ मलर्न्दहट् कुमुदप् पूविनान्
ऑल्लैयि नोडिनी रुरैत्तॆन् नाणैयाल्
कॊल्ललै तरुहॆन्क् कूरु वीरॆन्ड्रान् 1070

ॲल्लै इल्–निस्सीम; उवकैयाल्–आनन्द से; इवर्न्त–जो फूल उठे; ऐसे; तोळिनन्–कन्धों वाले; पुल्लुड़ मलर्न्त–लस कर खिले; कळ्–शहद-भरे; कुमुत पूविनान्–कुमुद-पुष्प हाथ में रखनेवाले (रावण) ने; ऑल्लैयिल्–अतिशीघ्र; नीर् ओटि–तुम दौड़ो; ॲन् आणैयाल्–मेरी आज्ञा द्वारा; उरैत्तु–कहकर; कॊल्ललै–मत मारो; तरुक–ला दो; ॲन्–ऐसा; कूरुवीर्–कहो; ॲन्ड्रान्–कहा। १०७०

अपार आनन्द से उसके कन्धे फूल उठे। उसके हाथ में (जैसे रिवाज था) लस कर विकसित और शहद-भरा कुमुदपुष्प था। रावण

ने उनसे कहा कि भागो और मेरा आदेश (इन्द्रजित् को) सुनाओ। वानर को न मारकर इधर जीवित लाया जाय। १०७०

अव्वुर तूदरु माणै यालवरुम्, तॅव्वुरै नीक्किना तरियच् चॅप्पिनार्
इव्वुरै निहऴ्वुऴि यिरुन्द शीदैयाम्, वॅव्वुरै नीङ्गिना णिलैमै ळम्बुवाम् 1071

तूतरुम्–दूतों ने भी; आणैयाल्–(रावण की) आज्ञा के अनुसार; अ उरै–उस आदेश-वचन को; वरुम्–(अपने सामने हनुमान को ले) आते हुए; तॅव् उरै–'शत्रु' का नाम ही; नीक्किनात्–जिसने मिटा दिया, उस इन्द्रजित् से; अरिय चॅप्पिनार्–समझाते हुए कहा; इ उरै निकऴ् उऴि–जब यह बात चल रही थी; इरुन्त चीतैयाम्–(जो अशोक वन में) रहीं उन सीता; वॅव् उरै नीङ्किताळ्–अनिन्द्य देवी की; निलै–स्थिति; विळम्पुवाम्–कहेंगे। १०७१

दूत रावण की आज्ञा ले गये। सामने इन्द्रजित् आ रहा था जिसने शत्रु का अभाव कर रखा था। उन्होंने इन्द्रजित् से रावण के आदेश-वचन कहे। यहाँ यह बातें हो रही थीं। तब अशोक वन में जो अनिंद्य सीताजी रही; उनकी स्थिति बताएँगे। १०७१

इरुत्तनन् कडिपॉऴि लॅण्णि लोर्पड
ऑरुत्तन नॅन्ऱुकॉण् डुवक्कित् ड्राळुयिर्
वॅरुत्तनळ् शोर्वुऱ वीरऱ् कुऱ्ऱवैक्
करुत्तलिल् शिन्दैयाळ् कवन्ऱु कूऱिनाळ् 1072

कटि पॉऴिल् इऱुत्तनन्–सुगन्धपूर्ण अशोक वन का नाश किया; ऍण् इलोर्–असंख्य राक्षसों को; पट–मिटाते हुए; ऑऱुत्तनन्–मार डाला; ऍन्ऱु कॉण्टु–ऐसा जान लेकर; उवक्कित्ऱाळ्–जो हर्षित रहीं उनसे; करुत्तल् इल् चिन्तैयाळ्–कोप या घृणा से काला जिसका मन कभी न हुआ (उस त्रिजटा ने); उयिर् वॅरुत्तनळ्–जीवित रहने से उचटकर; चोर्वु उऱ–लट जाएँ, ऐसा; वीरऱ्कु–महावीर को; उऱ्ऱतै–जो हुआ; कवन्ऱु–व्यग्रता के साथ; कूऱिनाळ्–कहा। १०७२

देवी ने जब जाना कि हनुमान ने सुगन्धपूर्ण अशोक वन का नाश किया और असंख्यक राक्षसों को मार डाला, तब वह बहुत हर्षित हुईं। पर उनसे कोप या घृणा से जिसका मन काला नहीं हुआ था, उस त्रिजटा ने व्यग्रता के साथ महावीर हनुमान को जो हुआ, वह वृत्तान्त बताया। यह सुनकर देवी जीवन से ही उचट गयीं और बहुत लट गयीं। १०७२

ओवि यम्बुहै युण्डदु पोलवोर्
पूविन् मॅल्लियन् मेनि पॉडियुऱप्
पावि वेडन्गैप् पार्प्पुऱ वॅय्दुरुम्
तूवि यन्नमन् नाळिवै शॉल्लिनाळ् 1073

ओर् पूविऩ्–एक पुष्प-तुल्य; मॆल्लियल् मेऩि–कोमल शरीर; ओवियम्–चित्र; पुकै उण्टतु–धुएँ से ढँक गया; पोल–जैसे; पॊटि उऱ–स्वेदयुक्त हुआ; पावि वेटऩ् कै–पापी विराध के हाथ में; पार्प्पु उऱ–अपने बच्चे के लगने से; वॆय्तु उऴम्–व्याकुल रहनेवाली; तुवि अऩ्ऩम्–कोमल परों वाली हंसिनी के; अऩ्ऩाळ्–समान जो रहीं; इवै चॊल्लिऩाळ्–(वे सीताजी) यों बोलीं। १०७३

उनके पुष्प-सम कोमल शरीर पर पसीना निकल आया और वे धुएँ में छिपे चित्र के समान निष्प्रभ हुईं। वह उस कोमल पैरों वाली हंसिनी की-सी स्थिति में, जिसका पोटा किसी पापी व्याध के हाथ लग गया हो। वे यों बोलीं। १०७३

उऱ्ऱुण् डाय विशुम्बै युरुविऩाय्, मुऱ्ऱुण् डायहलै यावैयु मुऱ्ऱुरक्
कऱ्ऱुण् डायॊरु कळ्ळ वरक्कनाल्, पऱ्ऱुण् डायिदु वोवऱप् पाऩ्मैये 1074

उऱ्ऱु–अन्य भूतों को अपने में लिये; उण्टाय–जो पहले उत्पन्न हुआ; विचुम्पै–उस आकाश को; उरुविऩाय्–व्याप्त रहकर; मुऱ्ऱुण्टाय्–उसके ऊपर गये; कलै यावैयुम्–सभी (६४) कलाओं को; मुऴुतुऱ–पूर्ण रूप से; कऱ्ऱुण्टाय्–(सूर्य से) सीख लिया; ऒरु कळ्ळ अरक्कऩाल्–एक चोर राक्षस द्वारा; पऱ्ऱुण्टाय्–बन्धन में डाल दिये गये; इतुवो–क्या यही; अऱ पाऩ्मै–धर्म की व्यवस्था है। १०७४

आकाश अन्य भूतों को अपने में लेकर सबसे पहले प्रकट हुआ था। तुम उस आकाश को व्यापकर उसके ऊपर भी गये। चौसठों कलाओं को तुमने सूर्य के सामने उनकी ओर मुख किये पीछे विना मुड़े चलते हुए सूर्य से सीखीं। ऐसे तुम एक चोर राक्षस द्वारा बन्धन में डाल दिये गये। क्या यही धर्म की व्यवस्था है? । १०७४

कडलह डऩ्दु पुहुन्दनै कण्डहर्, उडलह डऩ्दुनिऩ् ऱूऴि कडऩ्दिलै
अडलह डऩ्द तिरळ्पुयत् तण्णऩी, इडर्ह डऩ्दिलै वऩ्दिड रेलुमो 1075

अटल् कटऩ्त–शत्रुबलपारंगत; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धों के; अण्णल्–महिमावान; कटल् कटऩ्तु–सागर पार करके; पुकुऩ्तऩै–आये; कण्टकर्–कंटक लोगों के; उटल् कटऩ्तु निऩ्ऱु–शरीरों को नष्ट करके रहने पर भी; ऊऴि कटऩ्तिलै–आयु के उस पार नहीं हुए; नी इटर् कटऩ्तिलै–तुम दुःख को तर नहीं गये; इटर् वऩ्तु–(क्या तुम पर भी) संकट आ; एलुमो–लग सकेगा। १०७५

तुम समुद्र तरकर इधर आये। कंटकों के शरीरों को विक्षत किया, पर अपनी आयु के उस पार नहीं गये (तुम जीवित रहे)। तो भी तुम कष्टों के उस पार जा नहीं पाये क्या? क्या तुम पर भी संकट आ सकता है? । १०७५

आऴि काट्टियॅन् ऩारुयिर् काट्टिऩाय्, ऊऴि काट्टुवॅ नॅऩ्ऱुरैत् तेऩदु
वाऴि काट्टुव दुण्डुऩ् वरैप्पुयप्, पाऴि काट्टिप् पऴियैयुङ् गाट्टिऩाय् 1076

आऴि काट्टि–(श्रीराम की) मुँदरी दिखाकर; ऍऩ् आर् उयिर् काट्टिऩाय्–मेरे प्यारे प्राण दिखाये (बचाये); ऊऴि काट्टुवॅऩ्–युग-युग दिखाऊँगी (जीवित रहने का वर दूँगी); ऍऩ्ऱु उरैत्तेऩ्–ऐसा कहा मैने; अदु–वह (आशीर्वाद); वाऴि काट्टुवतु–चिरंजीवता दिखाएगा; उण्टु–अवश्य होगा; उऩ्–तुम्हारे; वरै पुय पाऴि–पर्वत-सम हाथों का बल; काट्टि–दिखाकर; पऴियैयुम्–अपयश भी; काट्टिऩाय्–पैदा कर लिया, तुमने। १०७६

तुमने श्रीराम की मुँदरी दिखायी और मेरे प्राणों को भी दिखाया (दिलाया)। मैंने तुमको आशीर्वाद दिया कि तुम्हें अनेक युग दिखाऊँगी (युगों तक जीवित रहोगे)। वह तुम्हें अनेक युगों को दिखायगा भी (युगों तक जीवित रखेगा)। तुम अपना महान् भुजबल दिखाने चले और निन्दा दिखवा ली। (इसमें काट्टु— दिखाना, जीवित रखना, दिलाना, प्राप्त करना आदि अनेक अर्थों को व्यंजना और लक्षणा के आधार पर देता है।)। १०७६

कण्डु पोयिऩै नीणॅऱि काट्टिड, मण्डु पोरि ऩरक्कऩै मायत्तॅऩ्ऩैक्
कॊण्डु मऩ्ऩवऩ् पोमॅऩुङ् गॊळ्हैयैत्, तण्डि ऩायॅऩक् कारुयिर् तन्दनी 1077

ऍऩक्कु–मुझे; आर् उयिर् तन्त–प्यारा प्राणदान करके; नी–तुम; कण्टु पोयिऩै–मुझसे मिलकर गये; मण्टु पोरिऩ्–घमासान युद्ध में; अरक्कऩै–राक्षस को; मायत्तु–मारकर; नीळ् नॅऱि काट्टिट–लम्बा (यमराज्य का) मार्ग दिखाकर; ऍऩ्ऩै–मुझे; मऩ्ऩवऩ्–राजा (राम); कॊण्टु पोम्–ले जाएँगे; ऍऩुम् कॊळ्कैयै–इस धारणा को; तण्टिऩाय्–तोड़ दिया तुमने। १०७७

तुम मुझे प्राण प्रदान करके मुझसे मिलकर गये। तब तुम कह गये कि घमासान युद्ध होगा; उसमें श्रीराम राक्षस को मारकर यमलोक का लम्बा मार्ग दिखा देंगे। फिर मुझे अपने साथ ले जायँगे। अब उस धारणा को तुमने तोड़ दिया। १०७७

एयप् पऩ्ऩिऩ ऩिऩ्ऩदऩ् ऩारुयिर्, तीयक् कऩ्ऱु पिडियुऱत् तोङ्गुरुम्
तायैप् पोलत् तळर्न्दु मयङ्गिऩाळ्, तीयैच् चुट्टवोर् कऱ्पॅऩुन् दीयिऩाळ् 1078

तीयै–आग को; चुट्टतु–जलानेवाली; ओर् कऱ्पु ऍऩुम्–पातिव्रत्य नाम की; तीयिऩाळ्–अग्नि वाली; एय–योग्य रीति से; इऩ्ऩ पऩ्ऩिऩळ्–ऐसा कहती हुई; कऩ्ऱु पिटि उऱ–बछड़े के बँध जाने पर; तोङ्कुरुम्–दुःखनेवाली; तायै पोल–माता गाय के समान; तऩ् आर् उयिर्–अपने (शरीर से) युक्त प्राणों के; तीय–झुलसते; तळर्न्तु–लटकर; मयङ्किऩाळ्–बेसुध हुई। १०७८

अग्नि को भी जला सकनेवाली पातिव्रत्याग्नि से भूषित देवी सीता इस तरह कहती हुई, बछड़े के (हिंस्र पशु द्वारा) पकड़े जाने पर दुखनेवाली माता गाय के समान, उनके प्राणों के तप्त होकर क्षीण होते, लटकर वेसुध हुईं। १०७८

पॅरुन्द हैप्पॅरि योत्तॅप्पि णित्तपोर्
मुरुन्दन् मऱ्ऱै युलहॉरु मून्ऱैयुम्
अरुन्द वप्पय नालर शाळ्हिन्ऱान्
इरुन्द वप्पॅरुङ् गोयिल्शॅन् ऱॅय्दिनान् 1079

पॅरुम् तकै–योग्यता में वड़े और; पॅरियोत्तै–(आकार में भी) वड़े हनुमान को; पिणित्त–जिसने वाँधा; पोर् मुरुन्तन्–वह युद्ध-कुशल इन्द्रजित्; मऱ्ऱै–(लंका के) अलावा; उलकु ऑरु मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों पर; अरुम् तव पयन्ताल्–श्रेष्ठ तपस्या के फलस्वरूप; अरचु आळ्किन्ऱान्–जो राज्य (शासन) करता है; इरुन्त–उसका वासस्थान; अ पॅरुम् कोयिल्–उस वड़े मन्दिर में; चॅन्ऱु ऍय्तिनान्–जा पहुँचा। १०७९

उधर गुण और आकार में बड़े महावीर को जिसने वाँध दिया था वह इन्द्रजित्, लंका के अलावा तीनों लोकों पर पूर्वपुण्यप्रताप से शासन करनेवाला रावण जहाँ रहा, उस बड़े मन्दिर में जा पहुँचा। १०७९

तलङ्गण् मून्ऱिऱ्कुम् विरिदॉरु मदितळैत् तॅन्न
अलङ्गल् वॅण्गुडै कण्गुडै यविरॉळि परप्प
वलङ्गॉ डोळिन्नान् मण्णिनूऱुम् वानुऱ वॅडुत्त
पॉलङ्गॉण् मामणि वॅळ्ळियङ् गुन्ऱॅन्नप् पॉलिय 1080

अलङ्कल्–हार जिससे लटकते थे; वॅण् कुटै–वह श्वेत छत्र; तलङ्कळ् मून्ऱिऱ्कुम्–तीनों लोकों के लिए; पिऱितु ऑरु मति–और एक चन्द्र; तळैत्तु ऍन्न–अतिशय रूप से प्रकाश देता रहा जैसे; कण् कुटै–आँखों में खुभता हुआ; अविर् ऑळि–फैलनेवाला प्रकाश; परप्प–छिटकाता रहा; वलम् कॊळ् तोळिन्नाल्–सबल कन्धों से; मण् निन्ऱुम् वान् उऱ–भूमि से लेकर आकाश को छूते हुए; ऍटुत्त–जो उठाया गया; पॊलम् कॊळ्–सुन्दरतायुक्त; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नमय; वॅळ्ळि अम्–सुन्दर चाँदी के; कुन्ऱु ऍन्न–पर्वत-से; विळङ्क–शोभ रहे थे। १०८०

(आगे १०९७वें पद्य तक लगातार चलनेवाले वाक्य में रावण का वर्णन है। वाक्य १०९७वें पद्य में ही पूर्ण होता है।) श्वेत छत्र था, जिससे मोती आदि की लड़ियाँ लटक रही थीं। वह तीनों लोकों पर प्रकाश फैलाने के लिए बने एक दूसरे चन्द्र के समान प्रभा बिखेर रहा था, जो आँखों में खुभ रहा था। और वह उस सुन्दर रत्नमय और श्वेत कैलासगिरि

के समान भी शोभ रहा था, जिसे रावण ने अपने सबल हाथों से भूमि से आकाश तक उठाया था। १०८०

पुळ्ळु यर्त्तवन् ऱिहिरियुम् बुरन्दर नयिलुम्
तळ्ळिन् मुक्कणात् कणिच्चियुन् दाक्किय तळुम्बुम्
कळ्ळु यिर्क्कुमॅन् गुळलियर् मुहिळ्विरर् कदिर्वाळ्
वळ्ळु हिर्प्पॅरुङ् गुऱिहळुम् बुयङ्गळिन् वयङ्ग 1081

पुळ् उयर्त्तवन्–गरुड़ध्वज का; तिकिरियुम्–चक्रायुध; पुरन्तरन् अयिलुम्–और पुरन्दर का भाला (वज्र); मुक्कणात्–त्रिनेत्र शिवजी का; तळ् इल्–अप्रतिहत; कणिच्चियुम्–परशु; ताक्किय–इनके प्रहार से हुए; तळुम्पुम्–दाग़ और; कळ् उयिर्क्कुम्–(पुष्प के कारण) शहद-निहित; मॅन् कुळलियर्–कोमल केशिनी राक्षसियों की; मुकिळ्–कलियों-सी; विरल्–उँगलियों के; कतिर् वाळ्–उज्ज्वल तलवार-सम; वळ् उकिर्–तीक्ष्ण नाखूनों के बने; पॅरुम् कुऱिकळुम्–बड़े-बड़े (नखक्षत) निशान; पुयङ्कळिल् विळङ्क–भुजाओं में शोभायमान थे। १०८१

गरुड़ध्वज श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र, पुरन्दर का वज्र और त्रिनेत्र शिवजी का अबाध फरसा —इनके लगने से बने व्रणों के दाग़ और शहद-लसे कोमल केश वाली प्यारी राक्षसियों की कलियों के समान बन्द उँगलियों के ज्वलन्त तलवार के समान नाखूनों के बने नखक्षत उनकी भुजाओं पर विद्यमान थे। १०८१

तुन्ऱु शॅम्मयिर्च् चुडर्नॅडुङ् गऱ्ऱैहळ् शुऱ्ऱु
निन्ऱु तिक्कुऱ निरैत्तन कदिर्क्कुळा निमिर
ऑन्ऱु शीऱ्ऱत्ति नुयिर्प्पॅनुम् बॅरुम्बुहै युयिर्प्पत्
तॅन्ऱि शैक्कुमोर् वडवन ऱिरुत्तिय दॅन्न 1082

तुन्ऱु चॅम् मयिर्–घने लाल केशों की; चुटर् नॅटुम्–प्रकाशमय लम्बी; कऱ्ऱैकळ्–लटें; चुऱ्ऱु निन्ऱु–सब ओर रहीं; तिक्कु उऱ–सभी दिशाओं में लगे ऐसा; निरैत्तन–पंक्तियों में; कतिर् कुळाम्–किरणों की राशियाँ; निमिर–बढ़ीं; ऑन्ऱु–युक्त; चीऱ्ऱत्तिन्–कोप का; उयिर्प्पु ऍनुम्–श्वास रूपी; पॅरुम् पुकै–बड़ा धुआँ; उयिर्प्प–प्रकट होकर; तॅन् तिचैक्कुम्–दक्षिण दिशा में भी; ओर्–वह; वट अनल्–एक बड़वाग्नि; तिरुत्तियतु ऍन्न–पैदा हुई जैसे रहा। १०८२

उसके मुख के चारो ओर घने लाल बालों की लटें थीं। उनसे सभी दिशाओं में लाल प्रकाश की किरणें छूट रही थीं। कोप के कारण साँसें धुएँ के रूप में निकल रही थीं। सब मिलकर बड़वाग्नि का दृश्य उपस्थित कर रहे थे और वह दक्षिण दिशा की बड़वाग्नि-सी लगी। १०८२

मरह दक्कॊळुङ् गदिरॊडु माणिक्क नॅडुवाळ्
नरह तेयत्तु णडुक्कुरा विरुळैयु नक्कच्

चिरम नैत्तैयुन् दिशैतॉरुन् दिशैतॉरुञ् जॅलुत्ति
उरहर् कोत्तिति दरशुवीऱ् ऱिरुन्दन नॊप्प 1083

मरकतम्–मरकत की; कॉऴुम् कतिर् ऑट्टु–पुष्ट किरणों के साथ; माणिक्क नॅट्टुवाऴ्–माणिक्य की लम्बी किरणें; नरक तेयत्तुऴ्–नरक देश में; नट्टुक्कु उऱा–अचल; इरुळैयुम्–अन्धकार को भी; नक्क–चाटकर दूर करती रहीं; चिरम् अत्तैत्तैयुम्–सभी सिरों को; तिचै तॉरुम् तिचैतॉरुम्–दिशा-दिशा में; चॅलुत्ति–मोड़कर; उरकर् कोन्–नागराज; इत्तितु–सुख से; अरचु वीऱ्ऱिरुन्ततन्–राज-सिंहासन पर विराज रहा; ऑप्प–जैसे। १०८३

वह अपने सिरों को जब दिशा-दिशा में घुमाता, तब मरकत मणियों के पुष्ट प्रकाश और माणिक्य पत्थरों की ज्योति दोनों उठकर नरक प्रदेश के अचल अन्धकार को भी चाट लेते। वह तब, उरगराज सिंहासन पर विराजमान हो, जैसा लगा। १०८३

कुवित्त पन्मणिक् कुप्पहळ् कलैयॉडुङ् गॉऴिप्पच्
चविच्चु डर्क्कन्न लणिन्दपॉऱ् ऱॊळॊडु तयङ्गप्
पुवित्त डम्बडर् मेरुवैप् पॊन्मुडि यॅन्नक्
कवित्तु मालिरुङ् गरुङ्गड लिरुन्ददु कडुप्प 1084

कुवित्त–राशियों में रहे; पल् मणि कुप्पैकळ्–अनेक रत्नसमूह; कलै ऑट्टुम्–उत्तरीय के साथ; कॊऴिप्प–लगे फिरते; अणिन्त–पहने हुए; चवि चुटर्–छवि-मय; कलन्–आभरण; पॊन् तोळ् ऑट्टुम्–स्वर्णकवच-धारी कन्धों पर; तयङ्क–शोभते; माल् इरुम्–बहुत बड़ा; करुम् कटल्–नीला सागर; पुवि तटम्–भूतल में; पटर्–फैले रहे; मेरुवै पॊन् मुटि ॲन्न–मेरु को स्वर्ण-किरीट के स्थान में; कवित्तु–पहने हुए; इरुन्ततु–रहा; कट्टुप्प–जैसे। १०८४

उसके उत्तरीय में गुँथे रहे अनेक रत्नों की राशियाँ उत्तरीय वस्त्र के साथ हिलती-डोलती रहीं। उसने जो आभरण पहन रखे थे, वे उसके बीसों सुन्दर स्कन्धों के साथ तेजोमय रहे। वह तब काले और बड़े सागर के समान शोभ रहा था, जो अपने सिर पर भूतल में विशाल रूप से व्याप्त मेरु के किरीट को धारण किये रहता हो। १०८४

शिन्दु राहत्तिन् शॅऱितुहिल् कच्चॊडु शॅऱियप्
पन्दि वॅण्मुत्ति नणिहलन् मुळुनिलाप् परप्प
इन्दु वॅण्गुडै नीऴलिऱ् ऱारहै यिनम्बूण्डु
अन्दि वानुडुत् तल्लुवीऱ् ऱिरुन्ददा मॅन्न 1085

चिन्तुराकत्तिन् चॅऱि तुकिल्–घने सिन्दूर-वर्ण के कपड़े; कच्चु ऑट्टुम्–कमरबन्द के साथ; चॅऱिय–खूब कसे रहे; पन्ति–पंक्ति में; वॅण् मुत्तिन् अणि कलन्–सफ़ेद मोतियों के आभरण; मुळु निला–पूर्णचन्द्र की चाँदनी-सा प्रकाश; परप्प–फैलाते; इन्तु वॅण् कुटै–चन्द्र के समान श्वेत छत्र की; निऴलिल्–छाँह में;

अलुलु-रात; अन्तिवान्-उद्दुतु-सन्ध्या-गगन पहने हुए; तारकै इनम् पूण्डु-तारागणों के आभरणों से अलंकृत हो; वीऱ्ऱिरुन्ततु आम्-विराजमान रही; अन्न-जैसे। १०८५

घना रक्त-वर्ण वस्त्र और उसके ऊपर कमरबन्द शोभायमान थे। पंक्तियों में मोतियों को रखकर बनाये गये आभरण राकाचन्द्र की चाँदनी-सी प्रभा बिखेर रहे थे। सब मिलकर रात्रि की देवी की-सी शोभा बन रही थी, जो इन्द्र-सम श्वेत छत्र कि छाँह में संध्यागगन-वस्त्र पहनकर तारागणाभरणों से अलंकृत होकर विराजमान हो। १०८५

वण्मैक् कुन्दिरु मऱैहट्कुम् वानिनुम् पॅरिय
तिण्मैक् कुन्दनि युऱैयुळान् मुळ्मुहन् दिशैयिल्
कण्वैक् कुन्दोरुङ् गळिऱ्ऱोडु मादिरङ् गाक्कुम्
ऑण्मरक् कुम्मऱ्ऱै यिरुवर्क्कुम् बॅरुम्बय मॅय्द 1086

वण्मैक्कुम्-दानशीलता और; तिरु मऱैकट्कुम्-दिव्य वेदों और; वानिलुम् पॅरिय-आकाश से भी बड़े; तिण्मैक्कुम्-साहस का; तनि उऱैयुळान्-अप्रतिम आश्रयस्थान रावण; मुळु मुकम्-सारे मुखों को; तिचैयिल्-एक साथ एक दिशा में; कण् वैक्कुम् तोरुम्-रखकर ज्यों-ज्यों दृष्टि दौड़ाता, त्यों-त्यों; कळिऱ्ऱोटु-गजों के साथ; मातिरम् काक्कुम्-दिशाओं का पालन करनेवाले; ऍण्मरक्कुम्-आठों (दिक्पालों) को और; मऱ्ऱै इरुवर्क्कुम्-अन्य (आकाश और पाताल के ध्रुव और आदिशेष) दोनों को; पॅरुम् पयम् ऍय्त-बड़ा भय लगता। १०८६

रावण दानशीलता, दिव्य वेदज्ञान और आकाश से भी बड़ा साहस —इनका अनुपम आगार था। जब उसके दसों मुख एक ही समय दसों दिशाओं की ओर फिरते और आँखें उन दिशाओं पर पड़तीं, तब आठों दिग्गजों के साथ आठों दिक्पाल और आकाश का ध्रुव और पाताल का अनन्तनाग —सबको बड़ा भय ग्रहण कर लेता। १०८६

एक नायहऩ् ऱेवियै यॅदिर्न्ददऩ् पिऩ्बु
नाहर् वाळिड मुदलॅन नान्मुहन् वैहुम्
माह माल्विशुम् बीऱॅन नडुवुळ वरैप्पिल्
तोहै मादर्हळ् मैन्दरिऱ् ऱोऩ्ऱिऩर् शुऱ्ऱु 1087

एक नायकन्-एक नायक श्रीराम की; तेवियै-देवी को; ऍतिर्न्ततन् पिन्पु-देखने के बाद; नाकर् वाळ् इटम्-नागलोक; मुतल् ऍन-से लेकर; नान्मुकन् वैकुम्-चतुर्मुख जहाँ वास करते हैं उस; माक माल् विचुम्पु-बड़े आकाश में स्थित ब्रह्मा के लोक को; ईऱु ऍन-अन्त बनाकर; नटु उळ-मध्य में रहनेवाले; वरैप्पिल्-लोकों की रहनेवाली; तोकै मातर्कळ्-कलापी-सी रमणियाँ; मैन्तरिल्-तरुणों के समान (कामोत्तेजना में असमर्थ); चुऱ्ऱु तोन्ऱिनर्-चारों ओर लगी रहीं। १०८७

अद्वितीय (एक) नायक श्रीराम की देवी से साक्षात्कार होने के बाद कोई भी स्त्री रावण के मन में प्रवेश नहीं कर सकी। इसलिए नागलोक से लेकर आकाश के ब्रह्मा के लोक तक मध्य में रहनेवाले सभी लोकों की कलापी-सी कन्याएँ उसे जो घेरे रहीं, वे युवकों के समान घेरे रहीं। (उसके मन में उनके कारण कोई कामोद्वेग उठा नहीं।) । १०८७

वान रङ्गळुम् वानव रिरुवरु मनिदर्
आन पुन्ऱॊऴि लोरॆन विहळ्हिन्ऱ ववरुम्
एनै निन्ऱव रिरुडियर् शिलरॊऴिन् दियारुम्
तून विन्ऱवे लरक्कर्दङ् गुळुवॊडु शुऱ्ऱ 1088

वानरङ्कळुम्–वानर और; वानवर् इरुवरुम्–शिवजी और श्रीविष्णु, दोनों देवता; मनितर् आन–मानव जो रहे; पुल् तॊऴिलोर्–तुच्छ कार्य करनेवाले; ॲन–ऐसा; इकऴ्कित्ऱ–निन्दा करनेवाले; अवरुम्–वे राक्षस; एनै निन्ऱवर्–और जो रहे; इरुटियर् चिलर्–कुछ ऋषि; ऑऴिन्तु–इनको छोड़कर; यारुम्–अन्य सभी; तू नविन्ऱ–मांसलिप्त; वेल्–भालाधारी; अरक्कर् तम् कुऴु–राक्षसों के दलों; ऑटु–के साथ; चुऱ्ऱ–घेरे रहते। १०८८

उसकी सेवा में उसके चारों ओर सभी लोग मांसलिप्त भालाधारी राक्षसों के साथ खड़े रहे। उनमें केवल वानर, शिव और विष्णु—दो देव, राक्षसों द्वारा तुच्छ मानव कहकर निन्दित मनुष्य और कुछ ऋषि—ये ही नहीं थे। (बाक़ी सभी थे।) । १०८८

नरम्बु कण्णहत् तुळ्ळुऱै नऱैनिऱै पाण्डिल्
निरम्बु शिल्लरिप् पाणियुङ् गुऱडुनिन् ऱिशैप्प
अरम्बै मङ्गैय रमिऴ्दुहुत् तालन्न पाडल्
वरम्बि लिन्निशै शॆविदॊऱुञ् जॆविदॊऱुम् वऴङ्ग 1089

नरम्पु कण् अकत्तु–तंत्रियों में; उळ् उऱै नऱै–अन्तर्निहित स्वर रूपी शहद; निऱै पाण्टिल्–लक्षणशुद्ध खँजड़ी; निरम्पु चिल्लरि पाणियुम्–भरे रहे 'चिल्लरि' नाम के बाजे; कुऱटुम्–और 'कुऱडु' नाम के तालवाद्य; निन्ऱु इचैप्प–बज उठते; अरम्पै मङ्कैयर्–अप्सराएँ; अमिऴ्तु उकुत्ताल्–अमृत सरसातीं; ॲन्न–जैसे; पाटल्–जो गाती है उन गानों के; वरम्पु इल्–असीम; इन् इचै–मधुर ध्वनि; चॆवि तॊऱुम् चॆवि तॊऱुम्–कर्ण-कर्ण में; वऴङ्क–लगती। १०८९

रावण अपने कानों से संगीत सुन रहा था। वीणा आदि तंत्रियों का स्वरमधु, खँजड़ी, चिल्लरी और 'कुऱडु' (नामक) तालवाद्य आदि के ताल-मेल में अप्सराएँ अमृतगान गा रही थीं। उसकी ध्वनिमधुरता अपार थी। रावण के हर कान में वह संगीत भर रहा था। १०८९

कूडु पाणियि ऩिशैयॊडु मुळवॊडुङ् गूडत्
तोडु शीऱडि विऴिमऩङ् गैयॊडु तॊडरुम्
आड ऩोक्कुऱि ऩरुन्दव मुऩिवर्क्कु ममैन्द
वीडु मीट्कुऱ मेऩहै मेऩहै विळङ्ग 1090

पाणियिऩ् कूट्टु–ताल से मेल खानेवाले; इचै ऑटुम्–संगीत के साथ; मुळवु ऑटुम्–और मर्दल के साथ; कूट–मेल लगाते हुए; तोट्टु चीऱ अटि–कमलदल-से चरणों का रखना; विऴि मऩम् कैयॊटु तॊटरुम्–दृष्टि, मन और हाथों की मुद्राएँ जिससे मेल रखती हैं, उस; आटल् नोक्कु उऱिऩ्–नाच को देखें तो; अरुम् तव मुऩिवर्क्कुम्–कठोर तपस्वी मुनियों को भी; अमैन्त–उनके योग्य; वीटु–मोक्ष से; मीट्कुऱम्–लौटा दे, ऐसा नाचनेवाली; मेल् नकै–हास-वदना; मेऩकै–मेनका; विळङ्क–शोभा के साथ रहती। १०९०

हासवदना मेनका नाच रही थी। करताल के मेल में गाना, मर्दल का स्वर आदि के साथ अपने कमलदल-सम सुन्दर चरणों को ठीक तरह से रखकर नाच रही थी। उसकी दृष्टि, हस्तमुद्राएँ और पदचाप —इनमें अतिशय मनमोहक मेल था। वह नृत्य मुनि भी देख ले तो कठोर तपस्या से प्राप्त मोक्ष-गमन से भी उसे लौटा लेता। ऐसा नाचती हुई मेनका उसके बग़ल में विद्यमान थी। १०९०

ऊडि ऩार्मुहत् तुऱुनऱ वॊरुमुह मुण्णक्
कूडि ऩार्मुहक् कळिनऱै यॊरुमुहङ् गुडिप्पप्
पाडि ऩार्मुहत् तारमु दॊरुमुहम् बरुह
आडि ऩार्मुहत् तारमु दॊरुमुह मरुन्द 1091

ऊटिऩार्–जो रूठी रहीं; मुकत्तु उऱु–उनके मुखों पर दिखनेवाले भावों के; नऱवु–मधुर शहद को; ऒरु मुकम् उण्ण–एक मुख पान करता; कूटिऩार् मुकम्–उससे जो मिली थीं, उनके मुख पर के; कळि नऱै–मोद-मधु; ऒरु मुकम् कुटिप्प–(और) एक मुख स्वादन करता; पाटिऩार् मुकत्तु–गानेवालियों के मुखों का; आर् अमुतु–मधुर अमृत-रस; ऒरु मुकम् परुक–एक मुख पीता रहता; आटिऩार् मुकत्तु–नाचनेवालियों के भावों का; आर् अमुतु–मधुर अमृत; ऒरु मुकम् अरुन्त–एक मुख पीता रहता। १०९१

उसके दस मुख थे। हर एक एक काम कर रहा था। एक मुख रूठी हुई स्त्रियों के मुखों का भावमधु पी रहा था। दूसरा उन स्त्रियों के मुदित मुखों के आनन्द का मधु-रस लूट रहा था, जो उससे मिल गयी थीं। तीसरा गानेवालियों के मुखभावों का मधु पी रहा था। चौथा नाचने वालियों के आनन्द रूपी अमृत का स्वादन कर रहा था। १०९१

तेव रोडिरुन् दरशिय लॊरुमुहञ् जॆलुत्त
मूव रोडुमा मन्दिर मॊरुमुह मुयलप्

पाव हारिदन् पावह् मॉरुमुहम् वयिलप्
पूवै शात्तहि युरुवॅळि यॉरुमुहम् वॉरुन्द 1092

ऑरु मुकम्–एक मुख; तेवरोटु इरुन्तु–देवों के साथ मिलकर; अरचु इयल्–राजतन्त्र; चॅलुत्त–वनाता; मूवरोटुम्–(पुरोहित, मन्त्री, सेनापति) तीनों के साथ; मा मन्तिरम्–श्रेष्ठ मन्त्रणा में; ऑरु मुकम् मुयल–एक मुख लगा रहता; पावकारि तन्–पापकर्मा रावण के; पावकम्–भावों को; ऑरु मुकम् पयिल–एक मुख बनाता रहता; पूवै चात्तकी–देवी जानकी के; उरु वॅळि–अन्तरिक्ष में दिखनेवाले मिथ्या रूप में; ऑरु मुकम् पॉरुन्त–एक मुख लगा रहता। १०९२

पाँचवाँ मुख देवों के साथ राजनय की बातें कह रहा था। छठा पुरोहित, मन्त्री और सेनापति तीनों के साथ मन्त्रणा में लगा था। सातवाँ उस पापी के पाप कर्मों की कल्पना में लीन था। आठवाँ मुख देवी जानकी का मिथ्या रूप, जो अन्तरिक्ष में (उसकी कल्पना के कारण) दिखाई दे रहा था, उसे देखने में व्यस्त था। १०९२

कान्दण् मॅल्विरर् चत्तहिदन् कर्पॅनुङ् गडलै
नीन्दि येरुव दॅङ्ङत्तॅन् ड्रॉरुमुह नित्तैयच्
चान्द ळाविय कॉङ्गैनन् महळिर्तर् चूळ्न्दार्
एन्दु माडियि नॉरुमुह मॅळिलित्तै नोक्क 1093

कान्तळ्–'कांदळ' नाम के फूल जैसे; मॅल् विरल्–कोमल उँगलियों वाली; चत्तकि–जानकी के; कर्पु अॅतुम् कटलै–पातिव्रत्य रूपी सागर को; नीन्ति एरुवतु–तैरकर तीर पर चढ़ना; ऍङ्ङत्–कैसा; ऍन्रु–ऐसा; ऑरु मुकम् नितैय–एक मुख सोचता; चान्तु अळाविय–चन्दन-चर्चित; कॉङ्कै–स्तनों वाली; तन् चूळ्न्तार्–उसको घेरे रहीं; नल् मकळिर्–सुन्दरी रमणियों द्वारा; एन्तुम् आटियिन्–धृत मुकुर में; ऍळिलितै–अपनी सुन्दरता को; ऑरु मुकम् नोक्क–एक मुख देखता रहता। १०९३

नवाँ मुख सोच रहा था कि 'कान्दळ' पुष्प के समान कोमल उँगलियों वाली जानकी के पातिव्रत्य-सागर को कैसे तरा जाय ? दशवाँ मुख आईने में अपना सौंदर्य देख रहा था, जिसे चन्दनचर्चित स्तनों वाली उसकी पार्श्ववर्तिनियाँ उठाकर उसके मुख के सामने दिखा रही थीं। १०९३

पॉदुम्बर् वैहुतेन् पुक्करुन्दु दर्कहम् बुलरुम्
मदम्बॅय् वण्डॅत्तच् चत्तहिपान् मत्तञ्जॅल मरुहि
वॅदुम्बु वारहम् वॅन्दळि वार्नहिल् विळिनीर्
तदुम्बु वार्विळित् तारॅवे ड्रॉडॉरुन् दाक्क 1094

पॉतुम्पर्–झाड़ों में; वैकु तेन्–मिलनेवाले शहद को; पुक्कु अरुन्तुतर्कु–घुसकर पान करने; अकम् पुलरुम्–मन को संकट में डालनेवाले; मतम् पॅय् वण्टु अॅत्त–मदस्रावी भ्रमर जैसे; चत्तकि पाल्–जानकी की ओर; मतम् चॅल–मन के जाते;

मळ्कि वॅतुम्पुवार्–दुःख-तप्त रहनेवाली; अकम् वॅन्तु–चित्त झुलसकर; अळिवार्–मिटनेवाली; नकिल्–स्तनों पर; विळि नीर्–और आँखों के आँसू; ततुम्पुवार्–छलकानेवाली स्त्रियों के; विळि तारै–नेत्रों की पंक्तियाँ रूपी; वेल्–भाले; तोळ् तोळम्–सारे कन्धों पर; ताकक–प्रहार करते। १०९४

उसका मन झाड़-मध्य रहे शहद को घुसकर पीने के लिए लालायित रहनेवाले भ्रमर के समान जानकी की ओर जा रहा था। उससे अनेक स्त्रियाँ दुःखतप्त हुईं। वे व्याकुलमना होकर झुलसीं और क्षीण हुईं। अपने स्तनों पर अपनी आँखों से आँसू बहाने लगीं। ऐसी रावण की प्यारियों की आँखों की पंक्तियों के भाले उसके कन्धों में जाकर चुभ रहे थे। १०९४

मार् ळाविय महरन्द नड्वुण्डु महळिर्
वीड् ळाविय मुहिण्मुलै मॅळुहिय शान्दिन्
शेड् ळाविय शिरुनरुज् जीदळत् तॅन्ड्रल्
ऊड् ळाविय कडुवॅन वुडलिडै नुळैय 1095

माऱ अळाविय–(विरहियों के साथ) वैमनस्य रखनेवाला; मकरन्त नऱवु उण्टु–मकरन्द-भरा शहद पान कर; मकळिर् वीऱ अळाविय–स्त्रियों के गर्वोन्नत; मुकिळ् मुलै–कुड्मल स्तनों पर; मॅळुकिय चान्तिन्–लिप्त चन्दन के; चेऱ अळाविय–लेप पर लगा आनेवाला; चिऱु–मन्द; नऱुम्–सुगन्धित; चीतळ–शीतल; तॅन्ड्रल्–मलयपवन; ऊऱ अळाविय–दुःखमिश्रित; कटु अॅन्न–विष के समान; उटल् इटै–रावण के शरीर के अन्दर; नुळैय–प्रवेश करता। १०९५

विरही जनों का शत्रु है मलयपवन। वह मकरन्द और शहद पीकर (समेट लेकर) स्त्रियों के गर्वोन्नत, कलियों-से स्तनों पर लिप्त चन्दनलेप से लगकर बहा। वह मन्द सुगन्धित शीतल दक्षिणी पवन दुःखदायी विष के समान उसके शरीर में घुसकर उसे सता रहा था। १०९५

तिङ्गळ् वाणुदत् मडन्दैयर् शेयरि किडन्द
अङ्ग यत्तडन् दामरैक् कलरियो नाहि
वॅङ्गण् वानवर् दानव रॅन्ड्रिवर् विरियाप्
पोङ्गु कैहळान् दामरैक् किन्दुवे पोन्ड्रम् 1096

तिङ्कळ् वाळ् नुतल्–(आठवें दिन के) चन्द्रमा-जैसे उज्ज्वल ललाट वालियों के; चेय् अरि किटन्त–लाल डोरों से युक्त; अम् कय–सुन्दर सरोवर के; तटम् तामरैक्कु–बड़े-बड़े कमलपुष्पों के लिए; अलरियोन् आकि–सूर्य बनकर; वॅम् कण्–शत्रु; वानवर् तानवर् अॅन्ऱु–देव और दानव-कथित; इवर्–इन लोगों के; विरिया–अविकसित (बन्द); पोङ्कु–रहनेवाले; कैकळ् आम् तामरै–हाथ रूपी कमलों के लिए; इन्तुवे पोन्ऱम्–चन्द्र के ही समान रहा। १०९६

रावण आठवें दिन के चन्द्रमा-तुल्य ललाट वाली स्त्रियों के, लाल डोरों से युक्त व सुन्दर सरोवर के कमल-तुल्य मुखों के लिए सूर्य था (उनके मुख मोदविकसित थे) और शत्रु देव-दानवों के वन्द (अंजलि-बद्ध) हाथों के कमलों के लिए इन्दु-सम था। (रावण के सामने उनके हाथ हमेशा अंजलि में जुड़े थे।)। १०९६

इरुन्द वॅण्डिशैक् किळवत्तै मारुदि यॅदिर्न्दान्
करुन्दि णाहत्तै नोक्किय कलुळत्तिऱ् कनन्ऱान्
तिरुन्दु तोळिडै वीक्किय पाशत्तैच् चिन्दि
उरुन्दु नञ्जुपोल् ववन्वयिऱ् पाय्वॅन्ऩ् ऱुडन्ऱान् 1097

इरुन्त–इस भाँति विराजमान; ऍण्तिचै किळवत्तै–आठों दिशाओं के राजा को; मारुति–मारुति ने; ऍतिर्न्तान्–सामने (लाया) जाकर देखा; करुम्–काले; तिण्–सवल; नाकत्तै नोक्किय–देखते हुए; कलुळत्तिल्–गरुड़ के समान; कनन्ऱान्–नाराज हुआ; तिरुन्तु तोळ् इटै–सुघड़ कन्धों पर के; वीक्किय–कसे हुए; पाचत्तै चिन्ति–पाश को तोड़कर; उरुन्तु नञ्चु पोल्पवन्–संकटकारी विष-तुल्य; वयिऩ्–(रावण) पर; पाय्वॅन्–झपटूँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; उटन्ऱान्–क्रुद्ध हुआ। १०९७

मारुति ने आठों दिशाओं के शासक, रावण को समक्ष देखा। काले और मोटे सर्प को देखकर गरुड़-जैसा वह कोप से भर गया। उसने आप ही आप कहा कि "अपने सुघर कन्धों से पाश-वन्धन को तोड़ दूँगा। दुःखदायी विष-सदृश रहनेवाले रावण पर झपट पड़ूँगा।" वह क्रुद्ध हुआ। १०९७

उऱङ्गु हिन्ऱपो दुयिरुण्डल् कुऱ्ऱमॅन् ऱौळिन्देन्
पिऱङ्गु पॊन्मणि याशनत् तिरुक्कवुम् बॅऱ्ऱेन्
तिऱङ्ग ळॅन्बल शिन्दिप्प दिवन्ऱलै शिदऱि
अऱङ्गोळ् कॊम्बित्तै मीट्टुड नहल्वॅन्ऩ् ऱमैन्दान् 1098

उऱङ्कुकिन्ऱ पोतु–सोते समय; उयिर् उण्टल्–प्राण पी (हर) लेना; कुऱ्ऱम् ऍन्ऱु–दोप है, समझकर; ऒळिन्तेन्–वह विचार त्याग दिया; पिऱङ्कु–शोभायमान; पॊन् मणि आचनत्तु–स्वर्ण-रत्नमय आसन पर; इरुक्कवुम् पॆऱ्ऱेन्–रहता हुआ देखता हूँ; तिऱङ्कळ् पल–अनेक रीतियों से; ऍन् चिन्तिप्पतु–क्या सोचना है; इवन् तलै चितऱि–इसके सिरों को गिराकर; अऱम् कॊळ् कॊम्पितै–(पातिव्रत्य) धर्मावलम्बी पुष्पशाखा-सी देवी को; मीट्टु–छुड़ाकर; उटन् अकल्वॅन्–तुरन्त चला जाऊँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; अमैन्तान्–संकल्प किया। १०९८

जब रावण सो रहा था तब मैंने उसे मारने का विचार त्याग दिया था, क्योंकि निद्रारत आदमी को मारना दोषपूर्ण है। अब देखता हूँ कि वह स्वर्णरत्नमय आसन पर आसीन है। अब विविध रीतियों से क्या

सोचना है ? अभी इसके सिरों को गिरा दूँगा और पातिव्रत्यधर्मपालिनी पुष्पशाखा-तुल्य देवी को छुड़ाकर तुरन्त ले जाऊँगा। हनुमान ने यह संकल्प किया। १०९८

तेवर् दानवर् मुदलिनर् शेवहन् रॆवि
कावल् कण्डिव णिरुन्दवर् कट्पुलन् कदुवप्
पाव कारितन् मुडित्तलै पऱित्तिलॆ नॆन्ऱाल्
एव दामिनि मेर्चॆय्यु माळ्वितै यॆन्ऱान् 1099

चेवकन् तेवि—श्रेष्ठ श्रीवीरराघव की देवी को; कावल् कण्टु—बन्धन में देखकर भी; इवण् इरुन्तवर्—यहाँ रहनेवाले; तेवर् तानवर् मुतलितर्—देव, दानव आदि; कण्पुलन् कतुव—अक्षेन्द्रियगोचर रीति से; पावकारि तन्—पापकर्मा के; मुटि तलै—मुकुटधारी सिरों को; पऱित्तु इलॆन् ऎन्ऱाल्—न नोच लूँ तो; इनि मेल्—आगे; चॆय्युम् आळ् वितै—कर्तव्य पौरुषकर्म; एवतु आम्—कौन सा होगा; ऎन्ऱान्—कहा। १०९९

ये रहे देव और दानव, जो श्रेष्ठ श्रीवीरराघव की देवी को बन्धन में देखकर भी यहाँ चुप रहते हैं। इनकी ही आँखों के सामने पापकर्मा इसके सिर नहीं नोच लूँगा, तो अन्य कौन सेवा-कार्य (पौरुषमय कार्य) है जो किया जाय ? । १०९९

माडि रुन्दमर् ऱिवन्बुणर् मङ्गैयर् मरुहि
ऊडि रिन्दिड मुडित्तलै तिशैदोरु मुरुट्टि
आडल् कण्डुनिन् ऱार्क्किन्ऱ ददुकोडि दम्मा
तेडि वन्ददोर् कुरङ्गॆनुम् बॆरुम्बोरुळ् तॆरिय 1100

तेटि वन्ततु—खोजता आया; ओर् कुरङ्कु—एक वानर; माटु इरुन्त—पास में रही; इवन् पुणर् मङ्कैयर्—इसकी समागमयोग्य स्त्रियों को; मरुकि—भ्रमित-दुःखित होकर; ऊटु इरिन्तिट—अन्दर तितर-बितर भागने को मजबूर करते हुए; मुटि तलै—मुकुट-सिर को; तिचै तोरुम् उरुट्टि—दसों दिशाओं में लुढ़काकर; आटल् कण्टु—उनका तड़पना देखकर; निन्ऱु आर्क्किन्ऱतु—खड़ा होकर आनन्दनर्दन करता है; अतु कोटितु—वह हिंस्र है; ऎनुम्—ऐसा; पॆरुम् पॊरुळ्—बड़ा यश; तॆरिय—प्रकट हो ऐसा। ११००

एक वानर जानकी को खोजता आया। उसने इसके पास जो रहीं, इसके समागमयोग्य उन स्त्रियों को भ्रमित-दुःखित हो अन्दर तितर-बितर भागने देते हुए इसके मुकुटसिरों को दसों दिशाओं में लुढ़का दिया; उन सिरों का छटपटाना देखता है और खड़ा होकर आनन्दनर्दन करता है। यह बड़ा ही क्रूर बन्दर है। —ऐसी बड़ी (कीर्ति की) बात प्रकट करते हुए— । ११००

नीण्ड वाळॅयिऱ् ऱरक्कनैक् कण्गळि नेरे
काण्डल् वेण्डियिव् वुयिर्शुमन् दॅदिर्शिल कळ्ऱि
मीण्ड पोळ्दुण्डु वशॅप्पॉरुळ् वॆन्ऱिले नॆनितुम्
माण्ड पोदितुम् वुहळ्त्ऱि मऱ्ऱ्मीन् ऱुण्डो 1101

नीण्ट वाळ्–लम्बी तलवार-तुल्य; ऍयिऱ्ऱु अरक्कनै–दन्तोरे (रावण-) राक्षस को; कण्कळित्–आँखों के; नेरे काण्टल् वेण्टि–समक्ष देखना चाहकर; इ उयिर्–यह प्राण; चुमन्तु–धारण करता हुआ; ऍतिर्–उसके सामने; चिल कळ्ऱि–कुछ कहकर; मीण्ट पोळ्तु–लौट जाने पर भी; वचै पॉरुळ् उण्टु–निवावचन ही होगा; वॆन्ऱु इलेत्–मैं न जीतूँ; ऍतितुम्–तो भी; माण्ट पोतितुम्–मरने पर भी; पुकळ् अन्ऱि–यश के सिवा; मऱ्ऱुम् ऑन्ऱु उण्टो–और दूसरा (अपयश) होगा क्या। ११०१

लम्बी तलवार के समान दाँतों वाले राक्षस (रावण) को समक्ष देखना चाहा। इसीलिए यह प्राण धारण करता रहा। अब इसके मुख पर कुछ कहकर लौट जाऊँ तो भी अपवाद ही होगा। पर लड़ूँ तो न जीतने पर भी, मारे जाने पर भी यश ही मिलेगा। उसे छोड़कर दूसरा (अपयश) मिलेगा क्या? (नहीं)। ११०१

ऑन्ऱु तोळिडे यिऱुक्किय पाशमिऱ् ऱेहक्
कुन्ऱिन् मेलॅळ्ड् गोळरि येऱॆनक् कुदियिल्
शॆन्ऱु कूडुव लॆन्वदु शिन्दनै शॆय्या
नित्ऱु कारिय मन्ऱॆन नीदियि नितैन्दान् 1102

ऑन्ऱु–ऐसा सोचकर; तोळ् इटै–कन्धों के मध्य; इऱुक्किय पाचम्–कसे हुए पाश को; इऱ्ऱु एक–भग्न कर दूर के; कुन्ऱित् मेल्–गिरि पर; ऍळुम्–उछलने के लिए उठे; कोळरि एऱु–पुरुष केसरी; ऍत–जैसे; कुतियिल् चॆन्ऱु–एक छलांग में जाकर; कूटुवल् ऍन्पतु–पहुँच जाऊँगा, ऐसा; चिन्ततै चॆय्या–सोचकर; नित्ऱु–रुककर; कारियम् अन्ऱु–यह करणीय नहीं; ऍत–ऐसा; नीतियित्–न्याय की रीति से; नितैन्तान्–विचारा (हनुमान ने)। ११०२

ऐसा सोचकर उसने विचार किया कि स्कन्धपाश को तोड़कर पर्वत पर उछलने को उठनेवाले पुरुष केसरी के समान छलाँग मारूँ और रावण के पास जाऊँ। पर यह विचार रोककर वह नीति की बात सोचने लगा कि यह करने योग्य कार्य नहीं। ११०२

कॉल्ललान् दरत्तनु मल्लन् कॊऱ्ऱमुम्
शॊल्ललान् दरत्तनु मल्लन् ऱॊल्लॆनाळ्
अल्लॆलान् दिरण्डन्न निऱत्त नाऱ्ऱलॆ
वॆल्लला मिरामनाऱ् पिऱरुम् वॆल्वरो 1103

कॉल्लल् आम्–मार सकूँ ऐसी; तरत्ततुम् अल्लन्–बनावट का भी नहीं;

कोऱ्ऱमुम्–इसका पराक्रम भी; चोल्लल् आम् तरत्ततुम्–वर्ण्य रीति का; अल्लन्–नहीं; तोल्लै नाळ्–बहुत प्राचीन काल से; अल् ऍलाम्–अन्धकार सब; तिरण्ड अत्त–इकट्ठा हुआ जैसे; निऱत्तन्–रंग वाले के; आऱ्ऱलै–बल को; इरामत्ताल् वॆल्लल् आम्–श्रीराम ही परास्त कर सकेंगे; पिऱरुम् वॆल्वरो–दूसरे जीत सकेंगे क्या। ११०३

हनुमान ने सोचा कि यह रावण ऐसी बनावट का नहीं दिखता कि आसानी से मारा जाय! उसकी विजयशीलता भी वर्णनीय नहीं लगती। बहुत प्राचीन काल से लेकर अब तक का सारा अन्धकार इकट्ठा होकर आया हो —ऐसे रंग का है यह! इसके पराक्रम को एक श्रीराम ही परास्त कर सकते हैं। और कोई जीत सकेगा क्या? । ११०३

ऍन्नैयुम् वॆलऱ्करि दिवनुक् कीण्डिवन्
तन्नैयुम् वॆलऱ्करि दॆन्क्कुन् दाक्किनाल्
अन्नवे कालङ्गळ् कऴियु मादलाल्
तुन्नरुञ् जॆरुत्तॊऴि ऱ्ऱॊडङ्ग रूयदो 1104

ऍन्नैयुम् वॆलऱ्कु–मुझे भी जीतना; इवनुक्कु अरितु–इसके लिए दुस्साध्य है; ईण्डु–यहाँ; इवन् तन्नैयुम्–इसको भी; ऍनक्कुम्–मेरा; वॆलऱ्कु अरितु–जीतना असाध्य होगा; ताक्किनाल्–इससे लड़ूँ तो; अन्नवे–वैसे ही; कालङ्कळ् कऴियुम्–काल बीत जायगा; आतलाल्–इसलिए; तुन् अरुम्–अगम; चॆरु तॊऴिल्–युद्ध-कार्य; तॊटङ्कल्–प्रारम्भ करना; तूयतो–सही होगा क्या। ११०४

उसका मुझे जीतना भी असाध्य है। वैसे ही यहाँ उसे जीतना भी मेरे लिए दुस्साध्य है! अगर युद्ध में लग जाऊँ तो परस्पर अजेय होने से बहुत दिन बीत जायँगे। इसलिए अगम युद्ध का प्रारम्भ करना निर्दोष काम होगा क्या (कैसे)? । ११०४

एऴुय रुलहङ्गळ् यावु मिन्बुऱप्
पाऴिवन् बुयङ्गळो डरक्कन् पः(ह्)ऱलैप्
पूऴियिऱ् पुरट्टलॆन् बूणिप् पामॆन
ऊऴियान् विळम्बिय वुरैयु मॊन्ऱुण्डाल् 1105

एऴु–सात; उयर् उलकङ्कळ्–ऊपर के लोक; यावुम् इन्पु उऱ–सब सुखी रहें ऐसा; अरक्कन्–राक्षस (रावण) के; पाऴि–स्थूल; वन् पुयङ्कळ् ओटु–सबल हाथों के साथ; पल् तलै–अनेक (दस) सिरों को; पूमियिल् पुरट्टल्–भूमि पर लुढ़काना; ऍन् पूणिप्पु आम्–मेरा संकल्प है; ऍन–ऐसा; ऊऴियान्–युगपति श्रीराम का; विळम्पिय–कहा; उरैयुम् ऒन्ऱु–वचन भी एक; उण्टु–है। ११०५

इसके अलावा श्रीराम की सौगन्ध भी एक है। उन्होंने कहा है कि भूमि के साथ ऊपर के सातों लोकों को सुखी बनाते हुए इस राक्षस

रावण की स्थूल और सशक्त भुजाओं के साथ इसके अनेक (दस) सिरों को भूमि पर लुढ़काने का मैंने संकल्प किया है। ११०५

इङ्गोरु तिङ्गळे यिरुप्पल् यान्ऩेत्त
अङ्गणा यहत्ऩत्त दाणे कूऱिय
मङ्गेयु मत्ऩुयिर् तुऱत्तल् वाय्मैयाल्
पोङ्गुवॆञ् जॆरुविडेप् पॊऴुदु पोक्किऩाल् 1106

पोङ्कु–बहुत; वॆम् चॆरु इटै–भयंकर युद्ध में; पॊऴुतु पोक्किताल्–समय व्यय करूँ तो; इङ्कु–यही; ओरु तिङ्कळे–एक ही महीने; यान् इरुप्पल्–मैं जीवित रहूँगी; ऎन्ऩ–ऐसा; अम् कण्–सुन्दर भूतल के; नायकन् तन्तु आणै–नायक श्रीराम की सौगन्ध खाकर; कूऱिय–जिन्होंने कहा; मङ्कैयुम्–उन देवी का भी; मन् उयिर्–अपने से लगे प्राणों को; तुऱत्तल्–त्याग देना; वाय्मै आल्–सत्य हो जायगा। ११०६

और भी समयभक्षी घमासान समर में मैं समय व्यय करता रहूँ, तो अपने जगत्पति श्रीराम की सौगन्ध खाकर जिन देवी ने कहा कि मैं एक ही महीने जीवित रहूँगी, उनका मरना सत्य हो जायगा। ११०६

आदला नमर्त्तॊऴि लऴहिद् ऱन्ऱुरुम्
तूदऩान् दन्मैये तूय्दॆऩ् ऱुन्ऩिऩान्
वेदना यहऩ्ऱऩित् तुणैवऩ् वॆन्ऱिशाल्
एदिल्वा ळरक्कऩ्ऱ दिरुक्कै यॆय्दिऩाऩ् 1107

आतलाल्–इसलिए; अमर् तॊऴिल्–युद्ध का काम; अऴकितु अन्ऱु–सुन्दर (अच्छा) काम नहीं; अरुम् तूतन्–श्लाघ्य दूत; आम् तन्मैये–बनने का गुण ही; तूय्तु–निर्दोष है; ऎन्ऱु उन्ऩितान्–ऐसा सोचता; वेत नायकन्–वेदनायक श्रीराम का; तनि तुणैवन्–अद्वितीय सहायक; वॆन्ऱि चाल्–विजयशील; एतिल्–शत्रु; वाळ् अरक्कन्तु–तलवारधारी राक्षस (रावण) के; इरुक्कै–रहने के स्थान पर; ऎय्तितान्–पहुँचा। ११०७

इन कारणों से समरकार्य सुन्दर काम नहीं है! श्रेष्ठ दूत का पात्र अदा करना ही निर्दोष है। यह सोचकर वेदनाथ श्रीराम का अप्रतिम सहायक हनुमान पराक्रमी शत्रु, तलवारधारी रावण के पास गया। ११०७

तीट्टिय वाळॆन्ऩत् तॆऱुहट् टेवियर्
ईट्टिय कुऴुविडै यिरुन्द वेन्दऱ्कुक्
काट्टिऩ ऩनुमनैक् कडलि ऩारमु
दूट्टिय वुम्बरै युलैय वोट्टिऩाऩ् 1108

तीट्टिय वाळ् ऎन्न–तेज की हुई तलवार के समान; तॆऱु कण्–चुभती आँखों वाली; तेवियर्–अपनी स्त्रियों के; ईट्टिय कुऴु इटै–एकत्रित समूह-मध्य; इरुन्त

एन्तरकु–जो रहा उस राजा को; कटलिन्–क्षीरसागर का; आर् अमुतु ऊट्टिय–अपूर्व अमृत जिन्होंने खाया था, उन; उम्परै–देवों को; उलैय–दुःखी करके; ओट्टित्तान्–जिसने भगाया उस (इन्द्रजित्) ने; अनुमत्तै–हनुमान को; काट्टित्तन्–दिखाया। ११०८

तब क्षीरसागरामृतपायी देवों को दुःखी कर खदेड़नेवाले इन्द्रजित् ने हनुमान को उस रावण को दिखाया जो तेज की हुई तलवार के समान चुभकर वेदना देनेवाली आँखों से युक्त अपनी पत्नियों के जमघट के मध्य रहा। ११०८

पुवनमॅत् तनैयवै यनैत्तुम् बोर्हडन्
दवनैयुर् ररियुरु वान वाण्डहै
शिवनॅनच् चॅङ्गणा नॅनच्चॅय् शेवहन्
इवनॅनक् कूरिनिन् ड्रिरुहै कूप्पिनान् 1109

पुवनम् अॅत्तनै–भुवन जितने हैं; अवै अनैत्तुम्–उन सबको; पोर् कटन्तवनै–युद्ध में जिसने जीता था, उसके; उऱ्ऱु–पास जाकर; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; अरि उरुवान इवन्–वानर-रूप में यह; चिवन् अॅन–शिव के समान; चॅम् कणान् अॅन–अरुणाक्ष (श्रीविष्णु) के समान; चॅय्–युद्ध किया; चेवकन्–श्रेष्ठ वीर है; अॅन कूऱि–यह कहकर; निन्ऱु–उसके सामने स्थित होकर; इरु कै कूप्पिनान्–दोनों हाथ जोड़े (इन्द्रजित् ने)। ११०९

जितने भुवन हैं उन सबके युद्धविजेता, रावण के पास जाकर इन्द्रजित् ने कहा कि पुरुषश्रेष्ठ ! वानरशरीरधारी यह श्रेष्ठ वीर है, जिसने शिव के समान और अरुणाक्ष (पुण्डरीकाक्ष) विष्णु के समान युद्ध किया। ११०९

नोक्किय कण्गळा नॉरिऱ्क नऱ्पॉरि
तूक्किय वनुमन्मॅय् मयिर्शु कुक्कॊळत्
ताक्किय वुयिर्प्पॊडु तवऴ्न्द वॅम्बुहै
वीक्किय ववनुडल् विशित्त पाम्बिनै 1110

नोक्किय कण्कळाल्–उसको देखनेवाली (रावण की) आँखों से; नॉरिल्–छूटकर जल्दी गये; कनल् पॊरि–अग्नि के कण; तूक्किय–खड़े रहे; अनुमन् मॅय् मयिर्–हनुमान के शरीर के बालों को; चुऱु कॊळ–झुलसाते हुए; ताक्किय–वेग से लगे; उयिर्प्पु ओटुम्–श्वास के साथ; तवऴ्न्त–जो मिलकर गया उस; वॅम् पुकै–गरम धुएँ ने; अवन् उटल् विचित्त–शरीर को बाँधे रहे; पाम्पिन्–सर्प (अस्त्र) के समान; वीक्किय–कसकर बाँध लिया। १११०

रावण ने हनुमान को सक्रोध घूरा। तब उसकी आँखों से जो अग्निकण निकलकर तेज चले, वे हनुमान के शरीर के उठे हुए बालों को झुलसाते हुए उस पर गिरे। उसकी साँसों के साथ जो धुआँ बढ़ चला, उसने उस सर्पपाश के समान उसके शरीर को कस लिया जो उसके शरीर को बाँधे हुए था। १११०

अऩ्ऩदोर् वॅहुळिय ऩमर रादियर्
तुऩ्ऩिय तुऩ्ऩलर् तुणुक्कज् जुऱ्ऱुर
ऎॅऩ्ऩिवण् वरवुनी यारॆ यॆऩ्ऱवऩ्
तऩ्मैयै विऩ्विनऩ् कूऱ्ऱिऩ् ऱऩ्मैयाऩ् 1111

कूऱ्ऱिऩ् तऩ्मैयाऩ्–यम के-से स्वभाव वाले ने; अऩ्ऩतु ओर्–ऐसे; वॅकुळियऩ्–क्रुद्ध बनकर; अमरर् आतियर्–देव आदि; तुऩ्ऩिय–जो घेरे रहे; तुऩ्ऩलर्–उन शत्रुओं को; तुणुक्कम्–डर; चुऱ्ऱु उऱ–अभिभूत करते हुए लगे, ऐसा; इवण् वरवु–यहाँ आना; ऎॅऩ्–क्यों; नी यारॆ–तुम कौन; ऎॅऩ्ऱु–ऐसा; अवऩ् तऩ्मैयै–उसकी स्थिति; वितविऩऩ्–पूछी। १११९

यम के-से स्वभाव के उस रावण ने ऐसा क्रुद्ध बनकर हनुमान से उसकी बातें जानने के विचार से पूछा कि तुम्हारा इधर आना क्योंकर हुआ ? तुम हो कौन ? उसका क्रोधी स्वर ऐसा था कि पास रहे देव आदि उसके शत्रु दहल उठे। ११११

नेमियो कुलिशियो नॅडुङ्ग णिच्चियो
तामरैक् किळवऩो तऱुहट् प:(ह्)ऱलैप्
पूमिताङ् गौरुवनो पॊरुदु मुऱ्ऱुवाऩ्
नाममु मुरुवमुङ् गरन्दु नण्णिनाय् 1112

नेमियो–चक्रधारी (विष्णु) हो; कुलिचियो–कुलिशपाणी; नॅट्टम् कणिच्चियो–दीर्घ त्रिशूल रखनेवाला शिव; तामरै किळवऩो–कमलासन ब्रह्मा; तऱुकण्–निडर; पल् तलै–अनेक सिरों का; पूमि ताङ्कु–भूभारवाही; ऒरुवऩो–एक (आदिशेष) हो; पॊरुतु–लड़कर; मुऱ्ऱुवाऩ्–नाश करने; नाममुम् उरुवमुम्–नाम और रूप; करन्तु–छिपाकर; नण्णिताय्–इधर आये। १११२

रावण ने पूछा कि तुम क्या चक्रधारी विष्णु हो ? या कुलिशपाणी ? लम्बे त्रिशूल रखनेवाला शिव ? या कमलासन ब्रह्मा ? या निडर और अनेक सिर वाले भू-भृत एक आदिशेष ? इसमें कौन हो जो लंका में युद्ध करके उसका सत्यानाश करने हेतु नाम व रूप बदलकर आये हो ? । १११२

निऩ्ऱशैत् तुयिर्हवर् नीलक् कालनो
कुऩ्ऱशैत् तयिलुऱ वॅऱिन्द कॊऱ्ऱऩो
तॅन्ऱिशैक् किळवनो तिशैनिऩ् ऱाट्चियर्
ऎॅऩ्ऱिशैक् किऩ्ऱव रिवरुळ् यावऩो 1113

निऩ्ऱु–(समक्ष) स्थित होकर; अचैत्तु–बन्धन में कसकर; उयिर् कवर्–प्राण हरनेवाला; नील कालऩो–काला कालदेव यम; कुऩ्ऱु अचैत्तु–(क्रौंच) गिरि को हिलाकर; अयिल्–भाला; उऱ–अन्दर जाकर तोड़ दे, ऐसा; ऎॅऱिन्त–जिसने फेंका; कॊऱ्ऱऩो–वह विजयी कुमारदेव हो; तॅऩ् तिचै–दक्षिणी दिशा का;

किळवत्ती–पालक यम हो; तिचै नित्त्रु–दिशाओं में रहकर; आट्चियर् ऑत्त्रु–पालन करनेवाले (दिग्पाल) ऐसा; इचैक्कुम्–कहलानेवाले; इवरुळ्–इनमें; नी यावत्–तुम कौन हो। १११३

रावण ने आगे पूछा कि क्या तुम काले रंग वाले कालदेव हो, जो जीवों के समक्ष खड़े होकर उनको पाशबद्ध करके उनके प्राण हर ले जाता है ? या वह विजयी (कार्तिकेय) कुमार हो, जिसने अपनी शक्ति चलाकर क्रौंच पर्वत को हिलाते हुए दो भागों में चीर दिया ? या दक्षिणी दिशा के स्वामी यमराज हो ? (यम और कालदेव अलग माने जाते हैं, और कालदेव यम का आज्ञाकारी दूत है जो जीवों के प्राण हर ले जाता है।) दिक्पाल में तुम कौन हो ? । १११३

अन्दणर् वेळ्वियि त्ताक्कि याणैयित्
वन्दुर विडुत्तदोर् वयवॅम् बूदमो
मुन्दोरु मलरुळो त्तिलङ्गै मुर्रुरच्
चिन्दॅन्नत् तिरुत्तिय तॅरुहट् टॅय्वमो 1114

अन्तणर्–मुनि द्वारा; वेळ्वियित्–यज्ञ में; आक्कि–उत्पन्न करके; आणैयित्–आज्ञा के अनुसार; वन्तु उर–मेरे पास आने के लिए; विटुत्ततु–प्रेषित; ओर् वय–एक बलवान; वॅम्–भयंकर; पूतमो–भूत हो क्या; मुन्तु ओरु–सर्वप्रथम; मलर् उळोत्–कमलवासी (ब्रह्मा) द्वारा; इलङ्कै मुर्रु उर–लंका का अन्त करते; चिन्तु ॲन्त–तहस-नहस करो; ॲन्त–कहकर; तिरुत्तिय–रचित; तॅरु कण्–दाहक आँखों वाला; तॅय्वमो–देवता हो। १११४

या तुम एक बहुत ही बलिष्ठ और हिंस्र भूत हो, जिसे मुनियों ने यज्ञ से उद्भूत करके अपनी आज्ञा द्वारा मेरे पास आने के लिए प्रेषित किया ? या कोई द्वेष के साथ जलानेवाली आँखों का देवता हो, जिसको सर्वप्रथम स्रष्ट ब्रह्मा ने, लंका नगर को पूर्णरूप से चूर कर दो, कहकर रचकर भेजा है ? । १११४

यारैनी यॅत्तनैयिङ् गॅय्दु कारियम्
आरुत्तै विडुत्तव ररिय वाणैयाल्
शोर्विलै शॊल्लुदि यॅन्नच् चॊल्लिनान्
वेरॊडु ममरर्तम् बुहळ्वि ळुङ्गिनान् 1115

अमरर् तम् पुकळ्–देवों के यश को; वेर् ओटु–जड़ से; विळुङ्कित्तान्–जिसने खा लिया, उस (रावण) ने; नी यार्–तुम कौन हो; इङ्कु ॲय्तु–इधर आने का; कारियम् ॲत्तै–कार्य क्या है; आर् उत्तै विटुत्तवर्–कौन तुमको भेजनेवाला है; अरिय–मुझे बताते हुए; आणैयाल्–मेरी आज्ञा से; चोर्वु इलै–बिना छिपाये; चॊल्लुति–कहो; ॲन्त–ऐसा; चॊल्लित्तात्–कहा। १११५

देवों के यश को जिसने जड़ से खाया (मिटाया) था, उस रावण ने और भी पूछा कि तुम कौन हो ? इधर आने का हेतु-कार्य कौन सा था ? किसने तुम्हें इधर भेजा ? मेरी आज्ञा है। विना छिपाये सारी बातें बता दो। रावण ने अपनी बात समाप्त की। १११५

शॊल्लिय वऩैवरु मल्लॆऩ् शॊऩ्ऩवप्
पुल्लिय वलियिऩो रेवल् पूण्डिलॆऩ्
अल्लियङ् गमलमे यऩैय शॆङ्गणोर्
विल्लिदऩ् ऱूदऩ्या ऩिलङ्गै मेयिऩेऩ् 1116

चॊल्लिय-(तुमसे) कथित; अऩैवरुम् अल्लॆऩ्-सभी में (कोई) नहीं हूँ; याऩ्-मैने; चॊऩ्ऩ-कथित; अ-उन; पुल्लिय-अल्प; वलियिऩोर्-बलवानों की; एवल्-सेवकाई; पूण्टिलॆऩ्-नहीं अपनायी है; अल्लि अम्-दलों के साथ सुन्दर; कमलमे अऩैय-कमल ही सम; चॆम् कण्-अरुणाक्ष; ओर्-अद्वितीय; विल्लितऩ्-धनुवीर का; तूतऩ्-दूत हूँ; याऩ् इलङ्कै मेयिऩेऩ्-मैं लंका आया। १११६

हनुमान ने उत्तर दिया कि मैं उन सभी में कोई नहीं हूँ, जिनके नाम तुमने लिये। उन अल्पबली लोगों की दासता मैंने ग्रहण नहीं की है। पंखुड़ियों-सहित कमलपुष्प ही सम जिनके अरुणाक्ष हैं, उन अनुपम धनुवीर का दूत बनकर मैं लंका में आया। १११६

अऩैयवऩ् यारॆऩ वऱिदि याहियेल्
मुऩैवरु ममररु मूवर् तेवरुम्
ऎऩैयव रेऩैयर् यावर् यावैयुम्
निऩैवरुम् विऩैयमु मुडिक्क निऩ्ऱुळाऩ् 1117

अऩैयवऩ्-वह धनुर्धर; यार्-कौन है; ऎऩ-ऐसा; अऱिति आकियेल्-जानना चाहो तो; मुऩैवरुम्-मुनि; अमररुम्-देव; मूवर् तेवरुम्-त्रिदेव; ऎऩैयवर् एऩैयर्-ऐसे अन्य; यावर्-जो भी हों वे; यावैयुम्-अन्य सभी (निर्जीव पदार्थ); निऩैवु अरुम्-जिसको सोच भी नहीं सकते; विऩैयमुम्-वह कार्य भी; मुटिक्क-कर चुकने को; निऩ्ऱु उळाऩ्-(संकल्प लेकर) रहते हैं। १११७

अगर तुम जानना चाहो कि वे वीर कौन हैं तो सुनो। मुनिगण, देवलोग, त्रिदेव और इनके जैसे जितने लोग है, और अन्य जो भी जड़ है, वे जिसकी कल्पना भी नहीं करते वैसे कठिन काम को भी करने का निश्चय लेकर रहनेवाले है वे। १११७

ईट्टिय वलियु मेना ळियऱ्ऱिय तवमुम् याणर्क्
कूट्टिय पडैयुन् देवर् कॊडुत्तनल् वरमुङ् गॊट्पुम्
तीट्टिय वाळ्वु मॆय्दत् तिरुत्तिय पिऱवु मॆल्लाम्
नीट्टिय पहऴि यॊऩ्ऱाऩ् मुदलॊडु मुडिक्क निऩ्ऱाऩ् 1118

ईट्टिय वलियुम्–तुम लोगों ने जो संग्रह किया है, वह बल और; मेल् नाळ्–प्राचीन दिनों में; इयट्रिय तवमुम्–(तुम लोगों द्वारा) की हुई तपस्या; याणर् कूट्टिय–नये रूप से एकत्रित; पटैयुम्–सेना भी; तेवर् कॊटुत्त–देवों द्वारा दत्त; नल् वरमुम्–अच्छे वर; कॊट्पुम्–अन्य साधन; तीट्टिय वाळ्वुम्–श्रेष्ठ जीवन; ऎय्त–बिताने के लिए; तिरुत्तिय पिड़वुम्–रचित सभी; नीट्टिय पकळि ऒन्ड्राल्–(मेरे स्वामी द्वारा) बढ़ाए हुए एक अस्त्र से; मुतल् ऒटु मुटिक्क–नाश करने (का संकल्प लेकर); निन्ड्रान्–स्थित हैं। १११८

उनका संकल्प है कि तुम्हारा सम्पादित बल, पूर्वकृत तपस्या का फल, नवीन तौर से तुम्हारे द्वारा संगृहीत आयुध, देवताओं द्वारा दत्त वर, अन्य आपके सारे तन्त्र, तुम्हारा श्रेष्ठ जीवन और उसको वैसे बनानेवाली सारी सामग्रियाँ, इन सबको अपने द्वारा प्रेषित एक ही शर द्वारा समाप्त कर लूँ। १११८

तेवरुम् बिड़रु मल्लन् ड्रिशैक्कळि ड्रल्लन् ड्रिक्किन्
कावल रल्ल नीशन् कयिलैयङ् गिरियु मल्लन्
मूवरु मल्लन् मड़्ड़ै मुनिवरु मल्ल नॆल्लैप्
पूवल यत्तै याण्ड पुरवलन् पुदल्वन् पोलाम् 1119

तेवरुम्–देवों में और; पिड़रुम् अल्लन्–अन्यों में एक नहीं; तिचै कळिड़ अल्लन्–दिग्गज नहीं; तिक्किन् कावलर् अल्लन्–दिग्पाल नहीं; ईचन्–ईश्वर की; कयिलै अम् किरियुम्–कैलास की सुन्दर गिरि भी; अल्लन्–नहीं; मूवरुम्–त्रिदेव भी; अल्लन्–नहीं; मड़्ड़ै–अन्य; मुनिवरुम् अल्लन्–मुनिगण नहीं; ऎल्लै पूवलयत्तै–समस्त भूवलय पर; आण्ट पुरवलन्–जिन्होंने शासन किया, उन राजा के; पुतल्वन् पोल् आम्–पुत्र ही हैं। १११९

वे (तुमसे हारकर जो भागे) उन देवों या अन्यों में एक नहीं। दिग्गज, दिग्पाल, ईश्वर की चाँदी की कैलासगिरि, त्रिदेव और अन्य मुनिगण इनमें कोई नही। पर वे समस्त भूमि के पालक एक राजा के ही पुत्र हैं। १११९

पोदमुम् बॊरुन्दु वेळ्विप् पुरैयरु पयन्नुम् बॊय्दीर्
मादवज् जुमन्दु तीरा वरङ्गळु मड़्ड़ुम् यावुम्
यादव निनैन्दा नन्न पयत्तन वेदु वेण्डिन्
वेदमु मड़मुज् जॊल्लु मॆय्यड़ मूर्त्ति विल्लोन् 1120

पोतमुम्–(आत्म-) बोध; पॊरुन्तु वेळ्वि–योग्य यज्ञ के; पुरै अड़–निर्दोष; पयनुम्–फल और; पॊय् तीर्–असत्य-रहित; मा तवम्–बड़े तप से; चुमन्तु–धारणकर; तीरा वरङ्कळुम्–अमिट वर और; मड़्ड़ुम् यावुम्–अन्य सभी; यातु अवन् निनैन्तान्–जो उन्होंने चाहा; अन्न पयत्तन–वह देनेवाले बने; एतु वेण्टिन्–

हेतु चाहो तो; विल्लोन्-वे धनुर्धर; वेतमुम्-वेदों द्वारा प्रतिपादित; अऱमुम् चॊल्लुम्-और धर्म द्वारा कथित; मॆय् अऱ मूर्त्ति-सत्यधर्ममूर्ति हैं। ११२०

ज्ञान, शास्त्रयुक्त यज्ञ के अमोघ फल, असत्यरहित तपस्या, अक्षय वर और अन्य गौरव —ये सब उनके मनमाने फलदायक बने हैं। हेतु क्या है ? वे धनुवीर वेदशास्त्र-प्रतिपादित सत्यधर्मस्वरूप हैं। ११२०

कारणङ् गेट्टि यायिऩ् कडैयिला मऱैयिऩ् कण्णुम्
आरणङ् गाट्ट माट्टा वऱिविऩुक् कऱिवाय् निऩ्ऱाऩ्
पोरणङ् गिडङ्गर् कव्वप् पॊदुनिऩ्ऱ मुदले यॆऩ्ऱ
वारणङ् गाक्क वन्दा नमररैक् काक्क वन्दाऩ् 1121

कारणम्-(अवतार का) कारण; केट्टि आयिऩ्-पूछोगे तो; कटै इला-अनन्त; मऱैयिऩ् कण्णुम्-वेदों में; आरणम् काट्ट माट्टा-उपनिषदों द्वारा भी बताये न जा सकनेवाले; अऱिविऩुक्कु अऱिवाय्-ज्ञान के भी ज्ञान (आधार-स्वरूप); निऩ्ऱाऩ्-जो हैं; पोर् अणङ्कु-युद्ध में पीड़ित करते हुए; इटङ्कर् कव्व-ग्राह के ग्रसने पर; पॊतु-सामान्य; मुतले ऎऩ्ऱ-आदिदेव पुकारने पर; वारणम् काक्क-गजेन्द्रसंरक्षणार्थ; वन्ताऩ्-जो आये; अमररै-(वे) देवों को; काक्क-रक्षित करने; वन्ताऩ्-आये हैं। ११२१

वह परात्पर ब्रह्म मनुष्य क्यों हुए ? कारण पूछो तो अनन्त वेदों द्वारा या उपनिषदों द्वारा अनिर्दिष्ट ज्ञान के ज्ञानमूल हैं वे। जब ग्राह ने त्रास देते हुए गजेन्द्र का पैर ग्रस लिया, तब गजेन्द्र ने 'सर्वसामान्य रूप से विद्यमान आदिवस्तु !' यही कहकर पुकारा। उसे बचाने पधारे थे वे। आज वे ही देवों के रक्षणार्थ अवतार ले पधारे हैं। ११२१

❀मूलमु नडुवु मीऱु मिल्लदोर् मुम्मैत् ताय
कालमुङ् गणक्कु नीत्त कारणन् कैवि लेन्दिच्
चूलमुन् दिहिरि शङ्गुङ् गरहमुन् दुऱन्दु तॊल्लै
आलमु मलरुम् वॆळ्ळिप् पॊरुप्पुम्विट् टयोत्ति वन्दान् 1122

मूलमुम् नटुवुम्-आदि और मध्य; ईऱुम् इल्लतोर्-अन्त जिनका नहीं हैं, वह; कारणन्-कारणभूत; मुम्मैत्तु आय-तीन (भूत, वर्तमान और भविष्य); कालमुम्-कालों के; कणक्कुम्-तर्क के; नीत्त कारणन्-पार रहनेवाला कारण हैं; कै विल् एन्ति-हाथ में धनु लेकर; चूलमुम्-त्रिशूल; तिकिरि-चक्र; चङ्कुम्-शंख और; करकमुम्-कमण्डल को; तुऱन्तु-छोड़कर; तॊल्लै-प्राचीन; आलमुम्-वटपत्र को; मलरुम्-और कमलपुष्प; वॆळ्ळि पॊरुप्पुम्-और चाँदी के (कैलास) पर्वत को; विट्टु-त्यागकर; अयोत्ति वन्तान्-अयोध्या आये। ११२२

आदि, मध्य और अन्तहीन हैं वे। सभी के कारणभूत हैं। त्रिकाल और तर्क के परे है। अशेष कारणों का कारण हैं। वे ही हाथ में धनु

धारण कर शंख-चक्र, त्रिशूल और कमण्डल (विष्णु, शिव, ब्रह्मा के हाथ की वस्तुओं) और वटपत्र, कैलासपर्वत और कमलपुष्प (उनके वासस्थानों) को छोड़कर अयोध्या में आये हैं। (कम्बन की धारणा है कि श्रीराम वे आदिमूर्ति हैं, जिनके विष्णु, ईश्वर और ब्रह्मा रूप हैं; जिनको वे तत्तत् कार्य के लिए अपना लेते हैं।)। ११२२

अऱन्दलै निरुत्ति वेद मरुळ्शुरन् दऱैन्द नीदित्
तिऱन्दॅरिन् दुलहम् बूणच् चॅन्नॅऱि शॅलुत्तित् तीयोर्
इऱन्दुह नूऱित् तक्कोरिडर्दुडैत् तेह वीण्डुप्
पिऱन्दनन् ऱन्बॊर् पाद मेत्तुवार् पिऱप्प ऱुप्पान् 1123

तन् पॊन् पातम्–अपने (उनके) स्वर्णचरणों की; एत्तुवार्–वन्दना करनेवालों का; पिऱप्पु अऱुप्पान्–जन्म के काटनेवाले हैं; अऱम् तलै निऱुत्ति–धर्म की संस्थापना करके; वेतम् अरुळ् चुरन्तु–वेदों ने कृपा करके; अऱैन्त–जो घोषित किया; नीति तिऱम्–उन नीतिमार्गों को; उलकम् तॅरिन्तु–संसार जानकर; पूण–अपनावे, ऐसा; चॅम् नॅऱि चॅलुत्ति–धर्मशासन करके; तीयोर् इऱन्तु उक–दुष्टों को मार; नूऱि–मिटाकर; तक्कोर् इटर्–शिष्टों का दुःख; तुटैत्तु–(पोंछ) दूर करके; एक–(बाद अपने परमपद) जाने का संकल्प करके; ईण्टु पिऱन्तनन्–इधर (भूमि में) अवतरित हुए हैं। ११२३

वे अपने चरणों की वन्दना करनेवाले भक्तों का जन्म काटनेवाले प्रभु हैं। धर्मसंस्थापना करना, वेदों द्वारा करुणा के साथ विहित नीति-मार्ग को प्रशस्त बनाना, लोगों को उनका ज्ञान दिलाकर उन पर जाने को सिखाना, दुष्टों का निग्रह, शिष्टों का कष्ट-निवारण आदि करके फिर अपने स्थान में लौट जाने का संकल्प लेकर वे अयोध्या में अवतार ले आये हैं। ११२३

अन्नवर् कडिमै शॅय्वेन् नाममु मनुम नॅन्बेन्
नन्नुद ऱन्नैत् तेडि नाऱ्पॅरुन् दिशैयिऱ् पोन्द
मन्नरिऱ् ऱॅन्बाल् वन्द तानैक्कु मन्नन् वालि
तन्मह नवन्ऱन् ऱूदन् वन्दनॅन् ऱनियेनॅन्ऱान् 1124

अन्नवर्कु–ऐसे उनकी; अटिमै चॅय्वेन्–दासता करता हूँ; नाममुम्–नाम (का); अनुमन् ऍन्पेन्–हनुमान कहाता हूँ; नल् नुतल् तन्नै–(सुन्दर) भाल वाली (सीताजी) को; तेटि–खोजकर; नाल् पॅरुम् तिचैयिल्–चार लम्बी दिशाओं में; पोन्त–जो गये; मन्नरिल्–उन सेनानायकों में; तॅन् पाल् वन्त–दक्षिण की तरफ़ आगत; तानैक्कु मन्नन्–सेना का नायक; वालि तन् मकन्–वाली का पुत्र; अवन् तन् तूतन्–उसका दूत मैं; तनियेन्–एकाकी; वन्तनॅन्–आया हूँ; ऍन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ११२४

उनका दासकर्म करनेवाला हूँ, मैं। मेरा नाम हनुमान है।

सुन्दर भाल वाली सीताजी की खोज में चारों दिशाओं में अनेक वानर वीर गये। उनमें दक्षिण दिशा की ओर जो आयी उस सेना का नायक वाली का पुत्र अंगद है। उसका मैं दूत हूँ और मैं इधर एकाकी आया। ११२४

ऍन्ऱलु मिलङ्गै वेन्द नॆयिऱ्ऱिन मॆऴिलि नाप्पण्
मिन्ऱिरिन् दॆन्न नक्कु वालिशेय् विडुत्त तूद
वन्ऱिऱ लाय वालि वलियन्गॊ लरशिन् वाऴ्क्कॆ
नन्ऱॆहॊ लॆन्न लोडुम् नायहन् ऱूद नक्कान् 1125

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा की; ऍयिऱ्ऱ इतम्–दन्तपंक्तियाँ; ऍऴिलि नाप्पण्–मेघमध्य; मिन् तिरिन्तु–बिजली चमकी; ऍन्न–जैसे; नक्कु–हँसकर; वालि चेय्–वालीपुत्र के; विट्टुत्त तूत–प्रेषित दूत; वन् तिऱल् आय–बहुत बली; वालि–वाली; वलियन् कॊल्–स्वस्थ है क्या; अरचिन् वाऴ्क्कै–उसका राज्य-शासन; नन्ऱ कॊल्–अच्छा चलता है क्या; ऍन्ऱल् ओटुम्–पूछने पर; नायकन्–सर्वलोकनायक का; तूतन्–दूत; नक्कान्–हँसा। ११२५

हनुमान के यह कहने पर लंकाधिपति हँसा और उसकी दन्तपंक्तियाँ मेघमध्य बिजली के समान चमकीं। उसने प्रश्न किया कि वालीसुतप्रेषित दूत! क्या अतिबलिष्ठ वाली स्वस्थ है? उसका राज्य-शासन अच्छा चलता है क्या? जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब सर्वलोकनायक का दूत हँस उठा। (दोनों की हँसी में जो भेद है, वह स्वादनयोग्य है!)। ११२५

अञ्जलै यरक्क पार्विट् टन्दर मडैन्दा नन्ऱे
वॆञ्जिन वालि मीळान् वालुम्बोय् विळिन्द दन्ऱे
अञ्जन मेनि यान्ऱ नडुहणै यॊन्ऱाल् माळ्हित्
तुञ्जिन नॆङ्गळ् वेन्दन् शूरियन् ऱोन्ऱ लॆन्ऱान् 1126

अरक्क–राक्षस; अञ्चलै–डरो मत; वॆम् चिन–भयानक क्रोधी; वालि–वाली; पार् विट्टु–भूतल छोड़कर; अन्तरम् अटैन्तान्–अन्तरिक्ष (स्वर्ग) सिधार गये; मीळान्–लौट नहीं आएँगे; अन्ऱे–उसी समय; वालुम्–उनकी पूँछ भी; पोय् विळिन्तत्तु–मिट गयी; अञ्चन मेनियान् तन्–अंजनवर्ण (श्रीराम) के; अटु कणै–घातक बाण; ऒन्ऱाल्–एक के द्वारा; माळ्कि–पीड़ित होकर; तुञ्चित्तन्–सो गया; ऍङ्कळ् वेन्तन्–हमारे राजा; चूरियन् तोन्ऱल्–सूर्यकुमार; ऍन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ११२६

हनुमान ने (आश्वासन के स्वर में) उत्तर दिया कि राक्षस रावण! डरो मत! वाली अब भूमि पर नहीं हैं! भयंकर क्रोधी वाली अन्तरिक्ष (स्वर्ग) में सिधार गये। वे लौट नहीं आयेंगे! उसी दिन उनकी पूँछ

भी चली गयी नाश होकर ! (रावण वाली की पूँछ से ही अधिक डरता था, क्योंकि उसी में वह बँधा फिरा !) अंजनवर्ण श्रीराम के एक ही घातक शर से आहत होकर पीड़ा के साथ (सदा के लिए) सो गया ! अब हमारे राजा सूर्यसूनु सुग्रीव हैं। ११२६

ऎऩ्ऩुडै यीट्टि ऩालव् वालियै यॆरुळ्वा यम्बाल्
इऩ्ऩुयि रुण्ड दिप्पो दियाण्डैया ऩिराम ऩॆऩ्बाऩ्
अऩ्ऩवऩ् ऱेवि तऩ्ऩै यङ्गद ऩाड लुऱ्ऱ
तऩ्मैयै युरैशॆय् हॆऩ्ऩच् चमीरणऩ् ऱऩयऩ् शॊल्वाऩ् 1127

ऎऩ् उटै ईट्टिऩाल्–किस अभिप्राय से; **इरामऩ् ऎऩ्पाऩ्**–राम नाम के उसने; **अ वालियै**–उस वाली के; **ऎरुळ् वाय्**–बलिष्ठ; **अम्पाल्**–शर से; **इऩ् उयिर् उण्टतु**–प्यारे प्राणों को खा (हर) लिया; **इप्पोतु**–अब; **याण्टैयाऩ्**–कहाँ रहता है; **अऩ्ऩवऩ् तेवि तऩ्ऩै**–उसकी पत्नी को; **अङ्कतऩ् नाटल् उऱ्ऱ**–अंगद के ढूँढ़ने का; **तऩ्मैयै**–वृत्तान्त; **उरै चॆय्क**–बताओ; **ऎऩ्ऩ**–कहने पर; **चमीरणऩ् तऩयऩ्**–समीरणसूनु; **चॊल्वाऩ्**–बोला। ११२७

रावण ने पूछा कि राम नामक व्यक्ति ने किस अभिप्राय से उस वाली के प्यारे प्राण सशक्त बाण चलाकर हर लिये ? वह राम अब कहाँ रहता है ? उसकी देवी को अंगद खोजता आया, उसका हेतु क्या है ? बताओ। तब समीरणसूनु ने उत्तर में यों कहा। ११२७

तेवियै नाडि वऩ्द शॆङ्गणाऱ् कॆङ्गळ् कोमाऩ्
आवियॊऩ् ऱाह नट्टा ऩरुन्दुयर् तुडैत्ति यॆऩ्ऩ
ओवियर्क् कॆळुद वॊण्णा वुरुवत्त ऩुरुमै योडुम्
कोवियर् चॆल्व मुऩ्ऩे कॊडुत्तुवा लियैयुङ् गॊऩ्ऱाऩ् 1128

तेवियै नाटि वऩ्त–देवी को खोजते आये; **चॆङ्कणाऱ्कु**–अरुणाक्ष श्रीराम का; **ऎङ्कळ् कोमाऩ्**–हमारे राजा; **आवि ऒऩ्ऱु आक**–प्राण एक बनाकर; **नट्टाऩ्**–मित्र हुए; **अरुम् तुयर् तुटैत्ति**–मेरा कठोर दुःख मिटाओ; **ऎऩ्ऩ**–कहने पर; **ओवियर्क्कु**–चितेरों के लिए; **ऎळुत ऒण्णा**–जिनका चित्र खींचना असाध्य है; **उरुवत्तऩ्**–ऐसे रूप वाले (श्रीराम) ने; **उरुमैयोटुम्**–रुमा के साथ; **को इयल् चॆल्वम्**–राज्य की श्री को भी; **मुऩ्ऩे कॊटुत्तु**–पहले देकर; **वालियैयुम् कॊऩ्ऱाऩ्**–वाली को भी मारा (श्रीराम ने)। ११२८

अपनी देवी सीताजी को खोजते हुए अरुणाक्ष श्रीराम आये। तब हमारे राजा ने दोनों के प्राण एक बनाकर उनसे मित्रता बना ली। और उनसे प्रार्थना की कि मेरा कठोर दुःख मिटाइए। तभी, समर्थ चितेरों के लिए भी जिनका चित्र बनाना असाध्य है, उन श्रीराम ने सुग्रीव को उनकी पत्नी रुमा के साथ राज्य भी दिलाने का वादा कर दिया। बाद वाली को भी मार डाला। ११२८

आयवन् ऱन्नो डाण्डत् तिङ्गळोर् नान्गुम् वैहि
मेयवॅञ् जेनै शूऴ वीर्रिति दिरुन्द वीरन्
पोयित्ति नाडु मॅन्नप् पोन्दनम् बुहुन्द तीदॅन्
ऱेयवन् ऱूदन् शॊन्ना निरावण निदनैच् चॊन्नान् 1129

आयवन् तन् ओट्टु–ऐसे सुग्रीव (की सम्मति) से; आण्टु–वहाँ; तिङ्कळ् ओर् नान्कुम्–एक मासचतुष्टय; वैकि–ठहरकर; इतितु वीऱ्ऱु इरुन्त वीरन्–जो सुख से रहे, उन श्रीवीरराघव के; मेय वॅम् चेनै चूऴ–एकत्रित भयंकर (वानर) सेना के घेरकर आने पर; इति पोय् नाटुम्–अब जाकर खोजो; ॲन्न–कहने पर; पोन्ततम्–हम आये; पुकुन्ततु ईतु–हुआ यह; ॲन्ऱु–ऐसा; एयवन्–जिन्होंने भेजा था, उनके; तूतन्–दूत ने; चॊन्नान्–कहा; इरावणन्–रावण ने; इततै–यह; चॊन्नान्–कहा। ११२९

फिर ऐसे सुग्रीव की सम्मति से श्रीराम चार महीने वहीं, ऋष्यमूक पर्वत पर ससुख ठहरे रहे। अनुपम वीर के पास भयानक वानर-सेना आ मिली। तब उन्होंने आज्ञा दी कि अब जाकर सीताजी की खोज लगाओ। हम आये। आज्ञापक श्रीराम के दूत ने यों कहा। रावण यों बोला। ११२९

उङ्गुलत् तलैवन् ऱन्नो डॊप्पिला वुयर्च्चि योनै
वॅङ्गोलै यम्बिर् कॊन्ऱार् काट्टॊऴिन् मेऱ्कॊण् डोरेल्
ॲङ्गुलप् पुरुनुञ् जीर्त्ति नुम्मोडु मियैन्द दॅन्ऱाल्
मङ्गुलिर् पॊलिन्द ञाल मादुमै युडैत्तु मादो 1130

उम् कुल तलैवन् तन् ऑट्टु–तुम्हारे (वानर) कुल के अधिपति थे, साथ-साथ; ऑप्पु इला–उपमा-रहित; उयर्च्चियोनै–जो उत्तम थे, उनको; वॅम्–भयंकर; कॊलै अम्पिल्–मारक शर से; कॊन्ऱार्कु–जिसने मारा उसकी; आळ्तॊऴिल्–दासता का काम; मेल् कॊण्टीर् एल्–अपनाया है (तुम लोगों ने) तो; नुम् चीर्त्ति–तुम्हारा गौरव; ॲङ्कु उलप्पुरुम्–कहाँ जाकर मिटेगा; नुम् ऑटुम्–तुम्हारे लिए; इयैन्ततु ॲन्ऱाल्–युक्त रहा तो; मङ्कुलिल् पॊलिन्त–मेघों के कारण पनपनेवाला; ञालम्–यह लोक; मातुमै उटैत्तु मातो–सौन्दर्यमय होगा न। ११३०

वाली तुम्हारे कुल का अधिपति था; अलावा इसके वह अप्रमेय गौरवयुक्त था। उसको जिसने अपने भयंकर मारक अस्त्र द्वारा मारा, उसकी दासता का काम तुम लोगों ने अपना लिया है! तुम्हारी कीर्ति कहाँ मिटेगी? अगर यह काम तुम्हारे लिए योग्य हुआ तो मेघों के कारण पनपनेवाला यह भूलोक बड़ा सौंदर्यमय रहेगा न? (व्यंग्य का वचन है।)। ११३०

तम्मुनैक् कॊल्वित् तन्नार् कॊन्ऱवर् कन्बु शान्ऱ
उम्मिनत् तलैव नेव यार्दमक् कुरैक्क लुऱ्ऱ

तॅम्मुनैत् तूदु वन्दा यिहल्पुरि तन्मै यॅन्नै
नॊम्मॅनक् कॊल्ला नॅञ्ज मञ्जलै नुवरि यॅन्ऱान् 1131

तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ भ्राता को; कॊल्वित्तु–किसी के द्वारा मरवाकर; अन्तान् कॊन्ऱवर्क्कु–वैसा मारनेवाले के प्रति; अन्पु चान्ऱ–प्रेम रखनेवाले; उम् इत्त–तुम्हारे समूह के; तलैवन् एव–राजा के भेजने पर; यातु–क्या; ॲमक्कु–हमसे; उरैक्कल् उऱ्ऱतु–बताना पड़ा है; ॲम् मुनै–मेरे समक्ष; तूतु वन्ताय्–दूत के रूप में जो आये; इकल् पुरि–ऐसा तुम युद्ध करो; तन्मै ॲन्तै–इसका हेतु क्या है; नॊम् ॲन–सहसा; कॊल्लाम्–मारेंगे नहीं; नॅञ्चम् अञ्चलै–मन में मत डरो; नुवल्ति–कहो; ॲन्ऱान्–कहा। ११३१

अपने ज्येष्ठ भ्राता को किसी के द्वारा मरवाकर, और मारनेवाले पर ही प्रेम करनेवाले अपने समूह के नायक द्वारा प्रेषित तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो ? और मेरे पास दूत बनकर आगत तुमने युद्ध किया। उसका कारण क्या है ? हम तुमको सहसा मारेंगे नहीं। इसलिए विना डरे बताओ। रावण ने हनुमान से कहा। ११३१

तुणर्त्त तारवन् शॊल्लिय शॊऱ्कळैप्
पुणर्त्तु नोक्किप् पॊदुनिन्ऱ नीर्मैयै
उणर्त्ति नाल दुरुमॅन्न वुन्नरुङ्
गुणत्ति नात्तु मित्तैयत्त कूऱिनान् 1132

उन्त अरुम्–अचिंतनीय; कुणत्तित्तानुम्–उत्तम गुणी हनुमान ने; तुणर्त्त तार्–फूलों के गुच्छों की बनी मालाधारी; चॊल्लिय चॊऱ्कळै–(रावण द्वारा) कथित वचनों को; पुणर्त्तु नोक्कि–मिलाकर विचारा; पॊतु निन्ऱ–सर्वसाधारण; नीर्मैयै उणर्त्तित्ताल्–श्रेष्ठ तत्त्वों को समझाऊँ; अतु उरुम्–तो वह फल देगा; ॲन्न–सोचकर; इत्तैयत्त कूऱितान्–यों बोला। ११३२

हनुमान अचिन्तनीय श्रेष्ठ गुणी था। उसने फूलों के गुच्छों की बनी मालाधारी रावण के सब वचनों को मिलाकर सोचा। उसे लगा कि सर्वसामान्य तत्त्व समझाए जाएँ तो वह शायद अच्छा फल दे सकता है। इसलिए वह यों बोला। ११३२

तूदु वन्ददु शूरियन् कान्मुळै, एदु वॊन्ऱिय नीदि यियैन्दत्त
शादु वॅन्ऱुणर् हिऱ्ऱियेऱ् ऱक्कत्त, कोदि ऱन्दत्त निन्वयिऱ् कूऱुवाम् 1133

चूरियन्–सूर्य के; कान् मुळै–(पैर के अंकुर) पुत्र का; तूतु वन्ततु–दूत बनकर आना हुआ (आया); एतु ऑन्ऱिय–हेतुयुक्त; नीति इयैन्तत्त–नीतिसम्मत; तक्कत्त–तुम्हारे हितकारी; कोतु इऱन्तत्त–दोषरहित; आम्–होंगे (मेरे कथन); चातु ॲन्ऱु–साधु, ऐसा; उणर्किऱ्ऱियेल्–मानोगे तो; निन् वयिन्–तुमसे; कूऱुवाम्–कहेंगे। ११३३

मैं इधर सूर्यसूनु सुग्रीव का दूत बनकर आया हूँ। मैं अब जो भी बातें कहूँगा, वे हेतुयुक्त, नीतिसम्मत, हितकारिणी और निर्दोष हैं। अगर तुम साधु समझोगे तो बताऊँगा। ११३३

वऱिदु वीऴ्त्तनै वाऴ्क्कैयै मन्नऱम्, शिऱिदु नोक्कलै तीमै तिरुत्तिनाय्
इऱुदि युऱ्ऱुळ दायिनु मिन्नुमोर्, उऱुदि केट्टि युयिर्नॆडि दोम्बुवाय् 1134

वाऴ्क्कैयै–जन्म को; वऱितु–व्यर्थ; वीऴ्त्तनै–बिगाड़ दिया; मन् अऱम्–राजधर्म पर; चिऱितुम्–ज़रा भी; नोक्कलै–ध्यान नहीं दिया; तीमै तिरुत्तिनाय्–पाप को खूब किया; इऱुति–अन्तकाल; उऱ्ऱु उळतु–आ गया है; आयिनुम्–तो भी; इन्नुम्–अब भी; ओर् उऱुति–एक हितोपदेश; केट्टि–सुनो; उयिर्–प्राण; नॆटितु ओम्पुवाय्–बहुत काल तक पाल सकोगे। ११३४

तुमने अपने जन्म को व्यर्थ बिगाड़ दिया है। राजधर्म पर किंचित् भी ध्यान नहीं दिया। पापकार्य बहुत तत्परता के साथ कर रहे हो। तुम्हारा अन्तकाल आ ही गया तो भी एक हितोपदेश है! सुनो तो बहुत काल तक अपने प्राणों को सुरक्षित रख सकोगे। ११३४

पोयिऱ् ऱेनित् पुलन्वॆन्ऱु पोऱ्ऱिय, वायिऱ् ऱीर्वरि दाहिय मादवम्
कायिऱ् ऱीर्वरुङ् गेडरुङ् गऱ्पिनाल्, तीयिऱ् ऱूयव ळैत्तुयर् शॆय्ददाल् 1135

कायिल्–क्रोध करे तो; तीर्वु अरुम्–अवार्य और; केटु अरुम्–अचल; कऱ्पिताल्–पातिव्रत्य में; तीयिल् तूयवळै–अग्नि से भी पवित्र देवी को; तुयर् चॆय्तताल्–तुमने कष्ट दिया, इसलिए; नित् पुलन् वॆन्ऱु–अपनी इन्द्रियों का निग्रह करके; पोऱ्ऱिय–परिपालित; वायिल्–किसी भी मार्ग से; तीर्वु अरितु आकिय–अक्षुण्ण रहा; मा तवम्–(तुम्हारा) बड़ा तप; पोयिऱ्ऱे–फलहीन हो गया तो। ११३५

पातिव्रत्य धर्म ऐसा है कि पतिव्रता नारी गुस्सा करेगी तो वह अवार्य होगा। पातिव्रत्य अचल है। पातिव्रत्य धर्मपालन के कारण सीताजी अग्नि से भी पवित्र हैं। उनको तुमने कष्ट दिया है। इसलिए इन्द्रिय-निग्रह करके जिस महान् तप को तुम सभी विध अक्षय रूप से पालते आ रहे थे वह अब छूट जानेवाला है!। ११३५

इन्ऱु वीन्ददु नाळैच् चिऱिदिऱ्ऱै, निन्ऱु वीन्द दलालिऱ्ऱै निऱ्कुमो
ऒन्ऱु वीन्ददु नल्लुणर् वुम्बरै, वॆन्ऱु वीक्किय वीक्कम् विदियिनाल् 1136

इन्ऱु वीन्ततु–आज का दिन हो गया (चला गया); नाळै–'कल'; चिऱितु इऱ्ऱै निन्ऱु–कुछ समय ठहरकर; वीन्ततु–मिटा; अलाल्–नहीं तो; इऱ्ऱै निऱ्कुमो–कुछ स्थायी रहेगा क्या; नल् उणर्वु–श्रेष्ठ बुद्धिमान; उम्परै–देवों को; वॆन्ऱु वीक्किय–जीतकर अर्जित; वीक्कम् ऒन्ऱु–एक गौरव; वितियिताल्–विधि के कारण; वीन्ततु–नष्ट हो गया। ११३६

'आज' तो गया। 'कल' कुछ देर के बाद जायगा; नहीं तो वह कुछ (अमर) रहनेवाला है क्या ? तुमने श्रेष्ठ ज्ञानी, देवों को जीता और गौरव सम्पादन किया। अब वह, विधि के विधान से दूर हो गया, देखो। ११३६

तीमै नन्मैयैत् तीत्तलॉल् लादॆन्तुम्, वाय्मै नीक्किनै मादवत् ताल्वन्द
तूय्मै तूयव ळन्वयिऱ् ऱोन्ऱिय, नोय्मै याऱ्ऱुदैक् किन्ऱनै नोक्कलाय् 1137

तीमै–पापकार्य; नन्मैयै–अच्छे धर्मों को; तीत्तल् ऑल्लातु–मिटा नहीं सकेगा; ॲन्तुम्–इस; वाय्मै–सत्य को; नीक्किनै–तुमने हटा दिया; मातवत्ताल् वन्त तूय्मै–बड़ी तपस्या से प्राप्त पवित्रता को; नोक्कलाय्–न देखकर; तूयवळ् तन्–पवित्र देवी के; वयिन् तोन्ऱिय–प्रति हुए; नोय्मैयाल्–(कामना-) रोग से; तुटैक्किन्ऱनै–पोंछ रहे हो। ११३७

साधु कहा करते थे कि पाप पुण्य को मिटा नहीं सकता। पर तुमने उस कथन को झूठा बना दिया। महान् तप के सिलसिले में तुमने पवित्रता पायी थी। उसकी तुमने चिन्ता नहीं की और पातिव्रत्य में पवित्र देवी सीता पर उदित कामरोग से उसे मिटा रहे हो। ११३७

तिऱन्दि ऱम्बिय कामच् चॅरुक्किनाल्
मऱन्दु तत्त मदियिन् मयङ्गिनार्
इऱन्दि ऱन्दिऴिन् देऱुव दैयलाल्
अऱन्दि ऱम्बिन राऱुळ रायिनार् 1138

तिऱम् तिऱम्पिय–अतिक्रमित; काम चॅरुक्कित्ताल्–कामाहंकार से; मऱन्तु–सही मार्ग को भूलकर; तम् तम् मतियिन्–अपनी-अपनी बुद्धि में; मयक्कितार्–भ्रमित लोग; इऱन्तु इऱन्तु–मर-मरकर; इऴिन्तु एऱुवते अलाल्–नीचे गिरते ही जायँगे, नहीं तो; अऱम् तिऱम्पित्तर्–धर्म का उल्लंघन करनेवाले; आर् उळर् आयित्तार्–कौन श्रेष्ठ गति पर स्थिर रहे। ११३८

जिनमें अतिक्रमित काम है और अहंकार भी, वे अपने बुद्धिभ्रम से फिर-फिर मरते और अधोगति में उत्तरोत्तर बढ़ते जाते। इस स्थिति के सिवा कौन अधर्मी हुए हैं जो सकुशल रहे हैं। ११३८

नामत् ताऴ्हडन् ञालत् तविन्दवर्, ईमत् तान्मऱैन् दारिळ मादर्पाल्
कामत् तालिऱन् दार्हळि वण्डुऱै, तामत् तारिन रॆण्णिनुञ् जार्वरो 1139

नामत्तु–भयोत्पादक; आऴ् कटल्–गम्भीर समुद्र-मध्य; ञालत्तु–इस भूतल में; इळ मातर् पाल्–कम आयु की स्त्रियों के; कामत्ताल् इऱन्तार्–काम में सीमा लाँघकर; कळि वण्टु उऱै–मधु पीकर मत्त रहनेवाले भ्रमरों से भूषित; ताम तारितर्–पुष्पमालाधारी (पुरुष); अविन्तवर्–सब तरह से नष्ट होकर; ईमत्ताल्–चिता

पर; मऱैन्तार्–जो जल मिटे; ऍण्णितुम्–(वे) गिनती में; चार्वरो–आयेंगे क्या। ११३९

भयानक और गहरे सागरवलयित भूतल में कम आयु की स्त्रियों पर अत्यधिक कामासक्त होकर जो श्मशान की आग में मरे, उन मधुपायी भ्रमर-मण्डित मालाधारी पुष्प गिनती में आयेंगे क्या ? । ११३९

पॊरुळुङ् गाममु मॆन्ऱिवै पोक्किवे, ऱिरुळुण् डामॆन्न वॆण्णल रीदलुम्
अरुळुङ् गादलिऱ् ऱीर्दलु मल्लदोर्, तॆरुळुण् डामॆन्न वॆण्णलर् शीरियोर् 1140

चीरियोर्–साधू लोग; पॊरुळुम् काममुम् ऍन्नु–अर्थ और काम कथित; इवै पोक्कि–इनके सिवा; वेऱु इरुळ् उण्टु आम्–अन्य अन्धकार है; ऍन्न ऍण्णलर्–ऐसा नहीं सोचते; ईतलुम्–भिक्षा (ग़रीबों को) देना; अरुळुम्–कृपा करना; कातलिल् तीर्तलुम्–काम (या कामना) से दूर रहना; अल्लतु ओर्–इनके अलावा कोई; तॆरुळ् उण्टाम्–स्पष्ट ज्ञान है; ऍन्न ऍण्णलर्–ऐसा नहीं माना है (उन्होंने)। ११४०

साधू लोगों ने अर्थासक्ति और कामासक्ति के सिवा और कहीं अन्धकार है —ऐसा नहीं माना था। (भिक्षा-) दान और दया और काम से बचना —इनके से अन्य ज्ञान का अस्तित्व भी नहीं माना था। ११४०

इच्चैत् तन्मैयि निऱ्पिऱ रिल्लिनै, नच्चि नाळु नहैयुऱ नाणिलै
पच्चै मेनि पुलर्न्दु पऴिपडूउम्, कॊच्चै याण्मैयुञ् जीर्मैयिऱ् कूडुमो 1141

इच्चै तन्मैयिनिल्–काम अपने स्वभाव से; पिऱर् इल्लिनै–परदारा को; नच्चि–चाहकर; नाळुम् नकै उऱ–दिने-दिने हँसी का पात्र बनकर; नाण् इलै–बेशरम बनकर; पच्चै मेनि–चिकना शरीर; पुलर्न्तु–सूखकर; पऴि पटु उम्–अपयश के वश होकर; कॊच्चै आण्मैयुम्–नीच पुंसत्व के साथ रहता है, यह भी; चीर्मैयिल्–अच्छे गुणों में; कूटुमो–मिलेगा क्या। ११४१

काम की स्वाभाविक प्रेरणा से परदारा की इच्छा करना, सदा परिहास का पात्र बनना, निर्लज्ज होकर रूप के सौंदर्य की तरावट का सूख जाना और निन्दित होना —इन सबके साथ रहनेवाला नीच पौरुष भी श्रेष्ठ गुणों में लिया जायगा क्या ? । ११४१

ओद नीरुल हाण्डव रुन्रुणैप्, पोद नीदिय राऱुळर् पोयिन्नार्
वेद नीदि विदिवऴि मेल्वरुम्, काद नीयऱत् तॆल्लै कडत्तियो 1142

ओतम् नीर् उलकु–तरंगायमान जल (समुद्र) वलयित भूमि के; आण्टवर्–शासक; पोयिन्नार्–चल बसे; उन् तुणै–(उनमें) तुम-जैसे; पोतम् नीतियर्–बुद्धि और नीतिमान्; आर् उळर्–कौन है; वेत नीति–वेद और नीति (जिन्होंने संसार को सिखायी); विति–उन विधायक ब्रह्मा के; वऴि मेल् वरुम्–वंश में उत्पन्न; कातल् नी–पुत्र तुम; अऱत्तु ऍल्लै–धर्म की सीमा का; कटत्तियो–व्यतिक्रम करोगे क्या। ११४२

तरंगायमान जल के सागर से वलयित भूमि का पालन करके जो मरे, उनमें तुम्हारे जितने ज्ञानी और न्यायी कितने हैं ? तुम ब्रह्मा के वंशज हो और ब्रह्मा ने ही वेद-शास्त्र आदि का ज्ञान संसार को दिया। तुम धर्म की सीमा का उल्लंघन करोगे क्या ? । ११४२

वॅरुप्पुण् डाय वॊरुत्तियै वेणडिन्नाल्
मरुप्पुण् डायपिन् वाळ्हिन्ऱ वाळ्विनिल्
उरुप्पुण् डाय्मिह वोङ्गिय नाशियै
अरुप्पुण् डाल दळ्हॅन लाहुमे 1143

वॅरुप्पु उण्टु आय–जिसके मन में घृणा है; ऑरुत्तियै–ऐसी एक स्त्री को; वेण्टिनाल्–चाहोगे तो; मरुप्पु उण्टाय पिन्–इनकार होने के वाद; वाळ्किन्ऱ वाळ्विनिल्–जीनेवाले जीवन से; उरुप्पु उण्टु आय्–सुन्दर अंग जो बनी है; मिक ओङ्किय नाचियै–बहुत उन्नत नाक का; अरुप्पु उण्टाल्–कटना हो जाय; अतु–वह (नासिका-रहित मुख); अळ्कु ॲन्तल् आकुमे–सुन्दर कहा जा सकता है न। ११४३

अप्रिय और घृणा करनेवाली स्त्री को चाहो; इनकार भी मिल जाय। फिर निर्लज्ज जीवन जीने से सुन्दर अंग जो उन्नत है, उस नाक का कट जाना अधिक सुन्दर कह सकेंगे न ? । ११४३

पारै नूरुव पऱ्पल पॊऱ्पुयम्, ईरै नूऱु तलैयुळ वॆन्निनुम्
ऊरै नूरुङ् गडुङ्गन लुट्पॊदि, शीरै नूऱवै शेमञ् जॆलुत्तुमो 1144

पारै नूरुव–भूमिनाशक; पल्पल पॊन् पुयम्–अनेक सुन्दर हाथ; ईर् ऐ–दस; नूऱु तलै उळ–सौ सिर हैं; ॲन्निनुम्–तो भी; चेमम् चॆलुत्तुमो–भला कर सकते हैं क्या; अवै–वे; ऊरै नूरुम्–नगर-दाहक; कटुम् कनल्–भयंकर अग्नि को; उळ् पॊति–अन्दर लिये रहनेवाले; नूऱु चीरै–सौ वस्त्र हैं। ११४४

भूतलनाशक अनेक हाथ और दस सौ सिर हों तुम्हारे; तो भी भला मिल सकता है क्या उनसे ? उनको सौ (अनेक) साड़ियाँ समझो, जिनमें आग बँधी रहती है जो नगर को ही जला देगी। ११४४

पुरम्बि ळैप्परुन् दीप्पुहप् पॊङ्गिनोन्
नरम्बि लैत्तनिन् पाडलि नल्हिय
वरम्बि ळक्कु मऱैपिळै यादवन्
शरम्बि ळैक्कुमॆन् ऱॆण्णुदल् शालुमो 1145

पुरम् पिळैप्पु अरुम्–त्रिपुर न बचें; ती–ऐसी बड़ी अग्नि; पुक–घुसे इस भाँति; पॊङ्कितोन्–क्रुद्ध शिवजी; नरम्पु इळैत्त–अपने हाथ की नसों को तन्त्री बनाकर जो तुमने स्वर निकाला; निन् पाटलिन्–ऐसे तुम्हारे सामगान से; नल्किय–तृप्त होकर दिये गये; वरम् पिळैक्कुम्–वर चूक जायेंगे; मऱै पिळैयातवन्–वेदमार्ग

का उल्लंघन जो नहीं करते; चरम्–(उनका) बाण; पिऴ़ैक्कुम् ॲन्ऱ–चूक जायगा, ऐसा; ॲण्णुतल्–सोचना; चालुमो–युक्त होगा क्या। ११४५

ईश्वर क्रुद्ध हुए और त्रिपुर में आग लग गयी और पुर नहीं बचे। ऐसे शिवजी ने तुम्हारे हाथों की नसों की तन्त्री से उत्पन्न सामगान से तृप्त होकर तुम्हें वर दिये थे। वे भी व्यर्थ हो सकते हैं, पर वेदमार्ग से जो नहीं हटते उन श्रीराम के शर चूक जायँगे —ऐसा समझना ठीक होगा क्या ? (नहीं होगा)। ११४५

ईऱि	नाऴ़ुह	ॲञ्जलि	नऱ्ऱिरु
नऱि	नॊय्दिनै	याहि	नुऴ़ैदियो
वेऱु	मिन्नु	नहैयाम्	विनैत्तॊऴ़िल्
तेऱि	नार्पलर्	कामिक्कुञ्	जॅव्वियोय् 1146

तेऱिनार् पलर्–अनेक परिष्कृत ज्ञानी द्वारा; कामिक्कुम्–काम्य; चॅव्वियोय्–गुणों वाले; ईऱु इल् नाऴ़् उक–अक्षुण्ण (साढ़े तीन करोड़ सालों की) आयु नष्ट करते हुए; ॲञ्चल् इल्–अक्षय; नल् तिरु–श्रेष्ठ सम्पत्ति को; नऱि–मिटाते हुए; नॊय्तिनै आकि–क्षुद्र बनकर; वेऱम्–विपरीत; इन्नम् नकै आम्–और परिहासयोग्य; वित्तै तॊऴ़िल्–कार्य करने में; नुऴ़ैतियो–प्रविष्ट होना चाहते हो क्या। ११४६

सुलझे हुए अनेक ज्ञानी जिन गुणों की कामना करते हैं, उन गुणों से भूषित (रावण)! अक्षय तुम्हारी साढ़े तीन करोड़ सालों की आयु का क्षय करते हुए, अक्षुण्ण त्रैलोकाधिपत्य आदि श्रियों का नाश करते हुए, दीन बनकर, इस वैभवमय जीवन के विपरीत हँसी के योग्य काम में प्रवृत्त होना चाहते हो क्या ?। ११४६

पिऱन्दु	ळार्पिऱ	वाद	पॅरुम्बदम्
शिऱन्दु	ळार्पॅरुन्	देवर्क्कुन्	देवराय्
इऱन्दु	ळार्पिऱर्	यारु	मिरामनै
मऱन्दु	ळारुळ	राहिलर्	वाय्मैयाल् 1147

पिऱन्तुळार्–जनमे हुए; पिऱवात–और पुनर्जन्म न हो, ऐसे; पॅरुम् पतम्–परम-पद को प्राप्त कर; चिऱन्तुळार्–उत्कृष्ट जो हुए हैं; पॅरुम् तेवर्क्कुम्–बड़े देवों के भी; तेवराय् इऱन्तुळार्–देव जो बने हैं; पिऱर् यारुम्–अन्य वे भी; इरामनै मऱन्तुळार् आकिलर्–श्रीराम को भूलनेवाले नहीं होते; वाय्मै–यह सत्य है। ११४७

जन्म जो ले चुके हैं वे, फिर से जन्म जहाँ से नहीं होता उस परमपद-वासी वे, देवों के देव जो हैं त्रिदेव वे, और अन्य देवता —कोई भी श्रीराम को नहीं भूलते हैं। यह सत्य है। ११४७

आद	लाऱ्ऱ	नरुम्बॅऱ्ऱ	चॅलवमुम्
ओदु	पल्हिळै	युम्मुयि	रुम्मुऱ्च्

चीदै यैत्तरु हॆंत्तॆंनच् चॆंप्पित्तान्
शोदि यान्मह त्तिऱ्कॆंन्ऱु शॊंल्लित्तान् 1148

आतलाल्–इसलिए; तन् पॆंऱल् अरुम्–अपनी दुष्प्राप्य; चॆंल्वमुम्–सम्पत्ति; ओतु पल् किळैयुम्–(बन्धु) कहलानेवाले अनेक बन्धु-बान्धव; उयिरुम्–प्राण; उऱ–लगे रहें, इस वास्ते; चीतैयै तरुक ऎंन्–सीताजी को लौटा दो, ऐसा कहो; ऎंन–ऐसा; चोतियान् मकन्–ज्योतिर्मय (सूर्य) के पुत्र ने; निऱ्कु ऎंन्ऱु–तुम्हारे लिए; चॊंल्लित्तान्–कहला भेजा। ११४८

इसलिए अपने दुष्प्राप्य धन, अपने कहे जानेवाले बन्धु-बान्धव और अपने प्राण —इनको स्थायी रखना चाहो तो सीताजी को लाकर श्रीराम के पास अर्पित कर दो। सुग्रीव ने मुझसे कहा कि मैं यह सब तुमसे कहूँ। ११४८

ऎंन्ऱ लुम्मिवै शॊंल्लिय दॆंऱ्कॊरु, कुन्ऱिल् वाळुङ् गुरङ्गुहॊं लामिदु
नन्ऱु नन्ऱॆंन मानहै शॆंय्दनन्, वॆंन्ऱि यॆंन्ऱॊंन्ऱु तानन्ऱि वेऱिलान् 1149

ऎंन्ऱलुम्–कहते ही; वॆंन्ऱि ऎंन्ऱु–विजय नाम की स्थिति; ऒंन्ऱु तान् अन्ऱि–एक के सिवा; वेऱु इलान्–और किसी को न जाननेवाले ने; इवै–ये बातें; ऎंऱ्कु चॊंल्लियतु–मुझसे कहीं; कुन्ऱिल् वाळुम्–पर्वतवासी; ऒंरु कुरङ्कु कॊंल् आम्–एक वानर ही न; इतु नन्ऱु–यह भी खूब; नन्ऱु ऎंन–अच्छा रहा; ऎंन–ऐसा; मा नकै–अट्टहास; चॆंय्तनन्–किया। ११४९

हनुमान के ऐसा कहने पर विजयेतर स्थिति न जाननेवाले रावण ने कहा कि हा! यह उपदेश देनेवाला एक पर्वतवासी वानर ही है तो! यह भी खूब रहा! अच्छा! वह ठठाकर हँसा। ११४९

कुरक्कु वाऱ्त्तैयु मात्तिडर् कॊंऱ्ऱमुम्
निरक्कु नीदि हॊंलाम्नॆंऱि नीङ्गियॆंन्
पुरत्ति नुट्टरुन् दूदु पुहुन्दपिन्
अरक्क रैक्कॊंन्ऱ वः(ह)दुरै यायॆंन्ऱान् 1150

कुरक्कु वाऱ्त्तैयुम्–बन्दर का उपदेश; मात्तिटर् कॊंऱ्ऱमुम्–मनुष्यों का पराक्रम; निरक्कुम् नीति कॊंल् आम्–बड़ी नेक नीति बन गये क्या; ऎंन् पुरत्तिन् उळ्–मेरे नगर के अन्दर; तरुम् तूतु–किसी के प्रेषित दूत के रूप में; पुकुन्त पिन्–प्रविष्ट होने के बाद; नॆंऱि नीङ्कि–मार्ग (सीमा) लाँघकर; अरक्करै कॊंन्ऱ–राक्षसों को मारने का; अ:तु–वह; उरैयाय्–(क्यों,) कहो; ऎंन्ऱान्–कहा। ११५०

रावण ने हनुमान से कहा कि वानर का उपदेश देना और मानवों का जीत पाना सीधा न्याय बन गया शायद! (वह रहे।) मेरे नगर के अन्दर दूत के रूप में न आये! फिर अपने दौत्यधर्म का उल्लंघन

करके यहाँ के राक्षसों को मारा जो था वह क्यों? सीधा उत्तर दो। ११५०

काट्टु वारिन्मै यार्कडि काविन्नै, वाट्टि नेन्नैन्नैक् कॊल्ल वन्दार्हळै
वीट्टि न्नेन्वित्तै मॅन्मैयि नालुन्रन्, माट्टु वन्ददु काणु मदियिन्नाल् 1151

काट्टुवार्–(तुम्हें) मुझे बतानेवाले; इन्मैयाल्–नहीं रहे, इसलिए; कटि कावित्तै–सुगन्धपूर्ण उद्यान को; वाट्टितेन्–नष्ट किया; ॲन्नै कॊल्ल वन्तार्कळै–मुझे मार डालने जो आये; वीट्टितेन्–उन्हें मार डाला; पिन्नै–बाद; मॅन्मैयिनाल्–नरम रहा तभी; उन् तन् माट्टु–तुम्हारे पास; वन्ततु–आना; काणुम् मतियिनाल्–मिलने के मन से (हुआ)। ११५१

हनुमान ने उत्तर दिया कि रावण! कोई नहीं मिला जो मुझे तुमको दिखाये! इसलिए मैंने सुवासपूर्ण अशोक वन को मिटाया। उससे नाराज होकर जो मुझे मारने आये, उन राक्षसों को मैंने मार डाला। पश्चात् मैं अपना उग्र रूप त्यागकर सौम्य रूप में रहा; इसलिए तुम्हारे पास आया तुमसे मिलने (संदेश सुनाने) की इच्छा से। ११५१

ॲन्नु मात्तिरत् तीण्ड्ॲरि नीण्डुह
मिन्नुम् वाळॅयिड् ऱन्शिन्नम् वीङ्गिन्नान्
कॊन्मि न्नॆन्ऱॆन्नन् कॊल्लियर् शेर्दलुम्
नित्मि न्नॆन्ऱन्नन् वीडण न्नीदियान् 1152

ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–(हनुमान के) ऐसा कहने मात्र से; ईण्टु ॲरि–बढ़ी हुई अग्नि के; नीण्टु उक–बहुत दूर तक जाकर गिरे; मिन्नुम्–ऐसा चमकनेवाले; वाळ् ॲयिड्ऱन्–तलवार-से दन्तोरे रावण ने; चिनम् वीङ्किनान्–बहुत क्रोध में आकर; कॊल्मिन् ॲन्ऱनन्–मारो, कहा; कॊल्लियर् चेर्तलुम्–वधिकों के (हनुमान के) पास पहुँचते ही; नीतियान्–नीतिमान्; वीटणन्–विभीषण ने; नित्मिन्–ठहरो; ॲन्ऱनन्–कहा। ११५२

ज्योंही हनुमान ने यह कहा, त्योंही चमकदार तलवार-सम दन्तोरे, रावण का गुस्सा भभक उठा। जिससे आग निकलकर बहुत दूर तक फैली और अंगारे छितरे। उसने तुरन्त आज्ञा दी, मार डालो इसे। वधिक लोग पास आ ही गये कि नीतिमान् विभीषण ने रोकते हुए कहा कि रुको। ११५२

आण्डॅ ळुन्दुनिन्न् ऱण्ण लरक्कन्नै
नीण्ड कैयिन् वणङ्गिन न्नीदियान्
मूण्ड कोब मुऱैयदन् ऱामॅन्न
वेण्डु मॅय्युरै पैय विळम्बिनान् 1153

नीतियान्–नीतिज्ञ ने; आण्टु–तब; ॲऴुन्तु निन्ऱु–उठ खड़े होकर; अण्णल्–महिमावान; अरक्कत्तै–राक्षस (रावण) को (देख); नीण्ट कैयिन्–अपने दीर्घ हाथों से; वणङ्कितन्–नमस्कार किया; मूण्ट कोपम्–बढ़ा यह कोप; मुऱैयतु अन्ऱु आम्–क्रमगत नहीं है; ॲन्न–ऐसा; वेण्टुम् मॅय् उरै–सर्वमान्य वचन; पैय–धीरे-धीरे; विळम्पिनान्–कहा। ११५३

नीतिमान् विभीषण ने उठकर अपने महिमामय रावण को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। फिर निवेदन किया कि आपका बढ़ा हुआ कोप न्याय-सम्मत नहीं है। फिर वह सर्वमान्य सत्य को बहुत ही सावधानी से कहने लगा। ११५३

अन्तण नुलह मून्ऱु मादियि नऱत्ति नाऱ्ऱित्
तन्दवन् मरबिन् वन्दाय् तवनॆऱि युणर्न्दु तक्कोय्
इन्दिरन् करुम माऱ्ऱु मिऱैवनी यियम्बु तूदु
वन्दन नॆन्ऱ पिन्नुङ् गोऱियो मऱैहळ् वल्लोय् 1154

तक्कोय्–सौम्य; मऱैकळ् वल्लोय्–वेदविदग्ध; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों को; आतियिन्–प्रथम; अऱत्तिन् आऱ्ऱि–धर्म के द्वारा ही; तन्तवन्–जिसने सृष्ट किया; अन्तणन्–उस ब्रह्मविद् (ब्रह्मा) के; मरपिन् वन्ताय्–वंशज हैं; तव नॆऱि उणर्न्तु–तप-मार्ग जानकर; इन्तिरन्–देवेन्द्र; करुमम् आऱ्ऱुम्–जिनकी सेवा करता है; इऱैवन् नी–वह प्रभु हैं आप; इयम्पु तूतु–(स्वामी का सन्देश) कहनेवाला दूत; वन्तनॆन्–आया (मैं); ॲन्ऱ पिन्नुम्–कहने के बाद भी; कोऱियो–मार डालेंगे क्या। ११५४

सुयोग्य ! वेदविदग्ध ! आप ब्रह्मविद् ब्रह्माजी के वंशज हैं, जिन्होंने इन तीनों लोकों को धर्म के मार्ग पर रहकर आदि में सृष्ट किया। आपकी तपस्या का गौरव समझकर इन्द्र भी आपका आज्ञाकारी रहता है। आप ऐसे स्वामी हैं। वैसे आप इसको यह कहने के बाद भी मारेंगे कि मैं सन्देश सुनाने आया हुआ दूत हूँ ? । ११५४

पूदलप् परप्पि नण्डप् पॊहुट्टिनुट् पुऱत्तुट् पॊय्दीर्
वेदमुऱ् ऱियङ्गु वेप्पिन् वेऱुवे ऱिडत्तु वेन्दर्
मादरैक् कॊलैशॆय् दार्ह ळुळरॆन्न वरितुम् वन्द
तूदरैक् कॊन्ऱु ळार्हळ् यावरे तॊल्लै नल्लोर् 1155

पू तल परप्पिन्–भूतल के विस्तार में; अण्ट पॊकुट्टिन् उळ्–अण्डगोल के अन्दर; पुऱत्तुळ्–बाहर; पॊय् तीर्–जो कभी असत्य नहीं बन सकते; वेतम् उऱ्ऱु इयङ्कुम्–वे वेद जहाँ चालू रहते हैं; वेप्पिन्–उन लोकों में; वेऱु वेऱु इटत्तु वेन्तर्–विविध स्थानों के राजाओं में; मातरै–माताओं को; कॊलै चॆय्तार्कळ्–मारनेवाले; उळर्–हैं; ॲन्न–ऐसा; वरितुम्–हो सकता है तो भी; तॊल्लै नल्लोर्–प्राचीन साध

लोग; वन्त तूतरै–आगत दूतों को; कॊन्ऱु उळार्कळ्–जिन्होंने मार डाला; यावर्–कौन हैं। ११५५

इस भूतल के स्थल में, अण्डगोल के अन्दर और अण्डगोल के वाहर भी जहाँ नित्यवेदमार्ग संस्थापित है, विविध स्थानों में आपको ऐसे राजा शायद मिल सकेंगे जिन्होंने स्त्रियों को मार डाला हो; पर प्राचीन और सुयोग्य राजा कौन है, जिन्होंने दूतों को मारा हो? । ११५५

पहैप्पुल नणुहि युयत्तार् पहर्न्ददु पहर्न्दु पऱ्ऱार्
मिहैप्पुल नडक्कि मॆय्म्मै विळम्बुदल् विरदम् बूण्ड
तहैप्पुलक् करुमत् तोरैक् कोऱलिऱ् ऱक्कार् यार्क्कुम्
नहैप्पुलन् पिऱिदुण् डामे नङ्गुल नवैयिन् ऱामे 1156

पकै पुलत्तु अणुकि–शत्रु के स्थान में आकर; उयत्तार्–जिन्होंने भेजा; पकर्न्ततु–उन्होंने जो सन्देश भेजा; पकर्न्तु–वह सुनाकर; पऱ्ऱार्–शत्रु का; मिकै पुलन्–कोप के भाव को; अटक्कि–(अपने वचनों से) शमन करके; मॆय्मै विळम्पुतल्–सत्य कहने का; विरतम् पूण्ट–जिन्होंने व्रत रखा है; तकै पुल–श्रेष्ठ बुद्धिमान; करुमत्तोरै–दूतों को; कोऱलिन्–मारने से बढ़कर; तक्कार् यार्क्कुम्–शिष्ट सभी लोगों के लिए; नकै पुलन्–हँसी योग्य काम; पिऱितु उण्टामे–दूसरा कोई हो सकता है क्या; नम् कुलम्–हमारा कुल; नवै इन्ऱु आमे–कलंक-हीन रहेगा क्या। ११५६

जो दूत शत्रु के स्थान में निडर होकर पहुँच जाते हैं, फिर अपने प्रेषक का सन्देश सुनाते है, फिर शत्रु के कोप आदि की भावनाओं को अपने चातुर्य-वचन द्वारा शमन करते हैं, ऐसे सत्यवादनव्रती कार्यकुशल दूतों को मारने से बढ़कर उत्तम लोगों द्वारा परिहसनीय विषय और कुछ हो सकता है क्या ? हमारा कुल निर्दोष हो सकेगा क्या ? ११५६

मुत्तलै यॆः(ह)हन् मऱ्ऱै मुरान्दहन् मुनिवन् मुन्ना
अत्तलै नम्मै नोना वमरर्क्कु नहैयिऱ् ऱामाल्
अॆत्तलै युलहङ् गाक्कुम् वेन्दनी वेऱ्ऱो रेव
इत्तलै यॆय्दि नानैक् कॊल्लुद लिळुक्क मिन्नुम् 1157

अॆत्तु अलै–उछलती आनेवाली तरंगों से भरे समुद्र-मध्य रहनेवाले; उलकम् काक्कुम्–लोकपालक; वेन्त नी–राजा आप; वेऱ्ऱोर् एव–शत्रु द्वारा भेजे जाने पर; इ तलै–यहाँ; अॆय्तितानै–जो आया इसे; कॊल्लुतल्–मारें, यह; इळुक्कम्–गौरव के विपरीत बात है; मु तलै अॆ.'.कन्–त्रिशूलधारी; मऱ्ऱै मुरान्तकन्–दूसरा, मुरारि; मुनिवन्–ब्राह्मण ब्रह्मा; मुन्ना–आदि; नम्मै नोना–हमसे ईर्ष्या करनेवाले; अ तलै–वहाँ (ऊपर) के; अमरर्क्कुम्–देवों के लिए; नकै इऱ्ऱु आम्–हँसने योग्य होगा; इन्नुम्–और भी। ११५७

उछलकर बढ़नेवाली तरंगों वाले सागर-मध्य स्थित भूमि के पालक राजा ! आपका, शत्रु द्वारा भेजा जाकर जो इधर आया है, उस दूत को मारना दोषपूर्ण होगा। और भी त्रिशूलधारी शिव, मुरारि विष्णु और ब्राह्मण-श्रेष्ठ ब्रह्मा आदि हमसे ईर्ष्या करनेवाले ऊपर के देवों को हमारी हँसी उड़ाने का मौका मिल जायगा। और भी। ११५७

इळैयव उन्नैक् कॉल्ला दिरुशॅवि मूक्कॉ डीर्न्दु
विळैवुरै यॅन्रु विट्टार् वीरराय् मॅय्म्मै योर्वार्
कळैदियेल् लावि नम्बा लिवन्वन्दु कण्णिर् कण्ड
अळवुरै यामर् चॅय्दि यादियॅन् ड्रमैयच् चॉन्नान् 1158

वीरर् आय्–वीर रहकर; मॅय्मै ओर्वार्–सत्य पर चलनेवाले; इळैयवळ् तन्नै–हमारी छोटी बहिन को; कॉल्लातु–विना मारे; मूक्कु ओटु–नाक के साथ; इरु चॅवि–दोनों कानों को; ईर्न्तु–काटकर; विळैवु उरै–(जो) हुआ (वह जाकर) कहो; ॲन्रु विट्टार्–ऐसा कहकर भेज दिया; आवि कळैतियेल्–(इसके) प्राण निकाल देंगे; नम्पाल्–हमारे पास; इवन् वन्तु–इसने आकर; कण्णिल् कण्ट अळवु–अपनी आँखों से जितना देखा, उतना; उरैयामल् चॅय्ति आति–जाकर न कहेगा, ऐसा करनेवाले आप बन जायँगे; ॲन्रु–यह; अमैय–मन में बात लगे, ऐसा; चॉन्नान्–कहा। ११५८

श्रीराम और लक्ष्मण वीर है और सत्यनिष्ठ है। उन्होंने हमारी छोटी बहिन को (उसके अनुचित काम करने पर भी) मारा नहीं। पर उसकी नाक के साथ दोनों कानों को काटा और यह कहकर भेज दिया कि जाकर जो हुआ उसे सुना दो। अगर आप इस दूत के प्राण हर लेंगे तो आप ही इसको वहाँ जाकर अपनी आँखों-देखी बातें कहने से रोकनेवाले बन जायँगे। विभीषण ने ऐसा अपने तर्क पेश किये कि वे रावण के मन में प्रभाव डाल सकें। ११५८

नल्ल दुरैत्ताय् नम्बियिव नवैशॅय् दान्ने यानालुम्
कॉल्लल् पळुदे पोयवरैक् कूरिक् कॉणर्दि कडिदॅन्नात्
तॉल्लै वालै मूलमरच् चुट्टु नहरैच् चूळ्पोक्कि
ॲल्लै कडक्क विडुमिन्ग ळॅन्ङा निन्ङा रिरैत्तॅळुन्दार् 1159

नम्पि–सौम्य; नल्लतु उरैत्ताय्–अच्छा कहा तुमने; इवन् नवै चॅय्तान्ने–इसने अपराध किया ही है; आनालुम्–तो भी; कॉल्लल्–मारना; पळुते–गलत ही होगा; पोय् कूरि–जाकर कहो और; कॉणर्ति कटितु–लाओ शीघ्र; ॲन्ना–कहकर; तॉल्लै वालै–संकटकारी (इसकी) पूँछ को; मूलम् अर–समूल नष्ट करते हुए; चुट्टु–जलाकर; नकरै चूळ् पोक्कि–नगर में घुमा ले जाकर; ॲल्लै कटक्क–सीमा-पार; विटुमिन्कळ्–छोड़ो; ॲन्ड्रान्–(रावण ने) आज्ञा सुनायी; निन्ड्रार्–पास जो खड़े रहे; इरैत्तु ॲळुन्तार्–शोर मचाते हुए उठे। ११५९

विभीषण का कहा सुनकर रावण ने कहा कि श्रेष्ठ पुरुष ! तुमने अच्छी नीति बतायी। इसने अवश्य अपराध किया है तो भी इसको मारना गलत है। फिर हनुमान की ओर देखकर रावण ने कहा कि जाओ और शीघ्र लाओ उसे। फिर रावण ने राक्षसों को आज्ञा दी कि इसकी संकटकारी दुम को जलाकर मूल से नष्ट करा दो। फिर इसको लंका में चारों ओर घुमाओ और लंका की सीमा के बाहर कर दो। राक्षस लोग उत्साह-ध्वनि करते हुए उठे। ११५९

आय कालत् तयन्वडयो डिरुप्प वाहा दन्नलिडुहै
तूय पाश मॅन्नप्पलवुङ् गॉणर्न्दु पिणिमिन् ऱोळॅन्न्ना
मेय तॅय्वप् पडॅक्कलत्तै विदियिन् मीट्टान् पोर्वॅन्ड्रान्
एयॅ न्नामुन् न्निडैवुक्कुत् तॉडैवन् कयिर्ड्राऱ् पिणित्तीर्प्पार् 1160

आय कालत्तु–तब; पोर् वॅन्ड्रान्–युद्धविजेता (इन्द्रजित्) ने; अयन् पटॅयोट् इरुप्प–ब्रह्मास्त्रबद्ध रहते समय; अतल् इटुकै–आग लगाना; आकातु–ठीक नहीं हो सकता; तूय पाचम् अॅन्न पलवुम्–श्रेष्ठ अनेक रस्सियाँ; कॉणर्न्तु–लाकर; तोळ्–इसके कन्धों को; पिणिमिन्–बाँध लो; अॅन्न्ना–कहकर; मेय–उस पर लगे रहे; तॅय्व पटॅकलत्तै–दिव्य अस्त्र को; वितियिन्–यथाविधि; मीट्टान्–लौटा लिया; एय् अॅन्ना मुन्–'ए' कहने की देरी के अन्दर; इटॅ पुक्कु–पास जाकर; तॉटॅ–बटे हुए; वन् कयिड्राल्–मोटे रस्से से; पिणित्तु–बाँधकर; ईर्प्पार्–(राक्षस) खींचने लगे। ११६०

उस समय युद्धविजेता इन्द्रजित् ने कहा कि ब्रह्मास्त्रबद्ध स्थिति में रहनेवाले इसके शरीर पर आग लगाना ठीक नहीं है। इसलिए मोटे रस्सों से इसकी भुजाओं को बाँध लो। यह कहकर इन्द्रजित् ने हनुमान पर लगे रहे ब्रह्मास्त्र को मन्त्रविधि के अनुसार लौटा लिया। 'ए' कहने की देरी के अन्दर राक्षस उसके पास पहुँच गये। मोटे और बटे हुए रस्सों से उसे खूब कसकर खीचने लगे। ११६०

नाट्टि नहरि नडुवुळ्ळ कयिऱ्ऱ नविलुन् दहैमैयवो
वीट्टि नूश नॅडुम्बाश मर्ड्र तेरुम् विशितुऱन्द
माट्टुम् बुरवि यायमॅला मरुवि वाङ्गुन् दॉडैयळिन्द
पूट्टु वल्लि मुदलाय पुरशै यिळन्द पोर्यानै 1161

वीट्टिन्–(लंका के) घरों के; ऊचल्–झूलों के; नॅटुम् पाचम्–लम्बे रस्से; अड्र–(बाक़ी) नहीं रहे; तेरुम्–रथ भी; विचि तुऱन्त–रस्सी से रहित हो गये; माट्टुम्–जहाँ (अश्व) बाँधे जाते हैं; पुरवि आयम् अॅलाम्–सभी अश्वशालाएँ; मरुवि वाङ्कुम्–बाँधकर जो खोली जाती हैं; तॉटॅ अळिन्त–उन रस्सियों से हीन हो गयीं; पोर् यानै–युद्धगज; पूट्टुम् वल्लि–जो उनके पेट और पीठ पर लगाया जाता है, उस कलापक को; पुरचै–जो उसके गले में बांधा जाता है, उस 'पुरशै' नामक रस्सी;

मुतलाय–आदि को; इळन्त–खो गये; नाट्टिन् नकरिन्–देश में और नगर में; नट्टु उळ्ळ–बीच में रहनेवाली; कयिऱ–रस्सियों की बात; नविलुम् तकैमैयवो–कहने योग्य होंगी क्या। ११६१

(ये रस्से-रस्सियाँ कितनी आयीं, कहाँ से आयीं ?) लंका के घरों में जो झूले लगे थे, उन सबकी रस्सियाँ लायी गयीं और झूले रस्सियों से हीन रहे। रथों के रस्से, अश्वशालाओं में अश्व बाँधने-खोलनेवाले रस्से, गजों के कलापक और पेट के रस्से सभी लाये गये और अश्व, रथ, गज आदि रस्से से हीन रहे। उस स्थिति में नगर के और देश के मध्य रही रस्सियों की बातें कहना आवश्यक हैं क्या ? । ११६१

मण्णिऱ् कण्ड वानवरै वलियिऱ् कवर्न्द वरम्बॅट्ऱ
ऍण्णऱ् करिय वेत्तैयरै यिहलिऱ् पऱित्त दमक्कियैन्द
पॅण्णिऱ् कमैन्द मङ्गलत्तिऱ् पिणित्त कयिऱे यिडैपिळैत्त
कण्णिऱ् कण्ड वन्बाश मॅल्ला मिट्टुक् कट्टिनार् 1162

मण्णिल् कण्ट–(दिग्विजय के सन्दर्भ में) भूमि (के विविध भागों) से हर लाये गये; वानवरै–देवों से; वलियिल् कवर्न्त–बलात्कारपूर्वक प्राप्त; वरम् पॅट्ऱ–वर द्वारा प्राप्त; ऍण्णऱ्कु अरिय–गिनने में असाध्य; एत्तैयरै–अन्यों से; इकलिल् पऱित्त–युद्ध में बलात् लिये गये; कण्णिल् कण्ट–आँखों देखे गये; वन् पाचम् ऍल्लाम्–स्थूल पाश सभी लेकर; इट्टु कट्टिनार्–उनका उपयोग करके बाँधा; तमक्कु इयैन्त–अपनी जो बनी थीं; पॅण्णिऱ्कु अमैन्त–पत्नी स्त्रियों के गले में लगे; मङ्कलत्तिल् पिणित्त–मंगल-सूत्र के रूप में बद्ध; कयिऱे–रस्सियाँ ही; इटै पिळैत्त–बीच में बचीं। ११६२

भूलोक के अनेक स्थानों से दिग्विजय के अवसर पर रावण तथा राक्षसों द्वारा हर लाये गये रस्से; देवों से बलात्कारपूर्वक लाये गये रस्से; वरों द्वारा प्राप्त, अगणित अन्यों को युद्ध में हराकर लायी गयी रस्सियाँ —राक्षस लोगों ने ये दृष्टि में पड़ी सभी रस्सियाँ लाकर हनुमान को बाँध लिया। लंका में कोई रस्सी बची रही तो राक्षसों की पत्नियों के मंगलसूत्र के रूप में लगी मंगलसूत्र की रस्सियाँ थीं। ११६२

कडवुट् पडैयैक् कडन्दऱत्ति नाणै कडन्दे ताहामे
विडुवित् तळित्तार् तॅव्ववरे वॅन्ऱे नन्ऱो विवर् वॅन्ऱि
शुडुविक् किन्ऱ दिव्वरैच् चुडुहॅन् ऱरैत्त तुणिवॅन्ऱु
नडुवुऱ् ऱैय मऱनोक्कि मुऱ्ऱु मुवन्दा नवैयऱ्ऱान् 1163

नवै अऱ्ऱान्–निर्दोष हनुमान; कटवुळ् पटैयै–दिव्यास्त्र को; कटन्तु–लाँघकर; अऱत्तिन् आणै–धर्म के शासन का; कटन्तेन् आकामे–उल्लंघन करनेवाला न बनकर (मैं); तॅव् अवरे–उन शत्रुओं ने ही; विटुवित्तु अळित्तार्–छुड़ाकर उपकार किया;

इवर् वॆंन्ऱि–इनकी जय पर; वॆंन्ऱेन् अन्ऱ ओ–मैने जय पा ली है न; चुट्टुविक्किन्ऱतु–(पूंछ) जलाने का कार्य यह; इ ऊरै चुट्टुक–इस नगर को जला दो; ॲन्ऱ–ऐसा; उरैत्त तुणिवु–कहा हुआ स्पष्ट कथन है; ॲन्ऱ–ऐसा; नट्टवु उऱ्ऱु–तटस्थ रहकर; ऐयम् अऱ नोक्कि–असन्दिग्ध रूप से देखकर; मुऱ्ऱुम् उवन्तान्–पूर्ण रूप से हर्षित हुआ। ११६३

अनिन्द्य हनुमान ने निम्न प्रकार विचार किया। अच्छा हुआ कि मुझे दिव्य ब्रह्मास्त्र का उल्लंघन और उसकी अवज्ञा न करनी पड़ी। शत्रुओं ने ही वह अपराध करने से छुड़ाकर बड़ा उपकार किया। अब इनकी विजय मेरी विजय हो गयी न? अब रावण की यह आज्ञा कि इसकी दुम जलाओ, स्पष्ट रूप से मुझे दिया गया संकेत है कि इस नगर को ही जला दो। हनुमान ने तटस्थता से सोचकर यह निर्णय किया और उसे अपार हर्ष हुआ। ११६३

नॊय्य पाशम् बुरप्पिबिणिप्प नोन्मै यिलन्बो लुडनुणङ्गि
वॆय्य वरक्कर् पुऱत्तलैप्प वीडु मुणर्न्दे विरैविल्लान्
ऐयन् विञ्जै तनैयऱिन्दु मऱिया दान्बो लविञ्जैयॆन्नुम्
पॊय्यै मॆय्ये नडिक्किन्ऱ योहि पोन्ऱान् पोहिन्ऱान् 1164

नॊय्य पाचम्–दुर्बल पाशों से; पुऱम् पिणिप्प–शरीर बँधा रहा (तो भी); नोन्मै इलन् पोल्–अशक्त हुए-से; उटल् नुणङ्कि–शरीर से मुरझाकर; वॆय्य अरक्कर्–नृशंस राक्षसों के; पुऱत्तु अलैप्प–इधर-उधर घुमाकर कष्ट देते; वीटुम् उणर्न्ते–छूटने का मार्ग जानते हुए भी; विरैवु इल्लान्–उसमें त्वरा न रहने से; ऐयन्–महिमावान; विञ्चै तनै अऱिन्तुम्–(आत्म-) विद्या जानने पर भी; अऱियातान् पोल्–अविद्यावशी के समान; अविञ्चै ॲन्नुम् पॊय्यै–अविद्या-मिथ्या को; मॆय्ये नटिक्किन्ऱ–सत्य मानता-सा जो अभिनय (व्यवहार) करता है; योकि पोन्ऱान्–उस योगी के समान; पोकिन्ऱान्–(उनसे खींचा जाकर) जाता है। ११६४

आखिर दुर्बल रस्सियों से ही बँधा रहा हनुमान। तो भी अशक्त के समान वह मुरझाया रहा। राक्षसों ने उसके पार्श्व में रहकर हनुमान को इधर से उधर और उधर से इधर घुमाया। हनुमान को उनसे अपने को छुड़ा लेने का मार्ग विदित था; तो भी उसने उस ओर त्वरा नहीं दिखायी। मानो आत्मविद्याज्ञानी योगी अविद्या की मिथ्या को सत्य मानते-से व्यवहार करते हैं। वैसे ही हनुमान खींचा जाकर उनके साथ जाता रहा। ११६४

वेन्दन् कोयिल् वायिऱॊरुम् विरैविर् कडन्दु वॆळ्ळिडैयिल्
पोन्दु पुऱनिन् ऱिरैक्किन्ऱ पॊरैतीर् मऱवर् पुऱञ्जुऱ्ऱ
एन्दु नॆडुवाल् किळिशुऱ्ऱि मुऱ्ऱुन् दोय्त्ता रिळुदॆण्णॆय्
कान्दु कडुन्दीक् कॊळुत्तिना रार्त्ता रण्डङ् गडिहलङ्ग 1165

वेन्तन् कोयिल्–राजा के मन्दिर के; वायिल् तॉरुम्–सभी द्वारों को; विरैविल् कटन्तु–शीघ्र पार कर; वॆळिटैयिल् पोन्तु–खुले मैदान में आकर; पुरम् निन्ऱु–उसके चारों ओर खड़े होकर; इरैक्कित्ऱ–शोर मचानेवाले; पॊरै तीर्–असहनशील; मऱवर्–वीर राक्षस; पुरम् चुऱ्ऱ–सभी ओर घेरे रहे; एन्तु नॆट्टु वाल्–उठी हुई लम्बी पूंछ में; किळि–(फटे-पुराने) वस्त्र; चुऱ्ऱि–लपेटकर; इळुतु ऑण्णॆय्–घृत और तेल में; मुऱ्ऱुम् तोय्त्तार्–पूरा भिगो दिया; कान्तुम्–जलती; कटुम् ती–उग्र आग; कॊळुत्तितार्–लगा दी; अण्टम्–अण्ड को; कटि कलङ्क–भयभीत करते हुए; आर्त्तार्–नर्दन किया। ११६५

राक्षस हनुमान को खींचते हुए राजमहल के सभी द्वारों को शीघ्र पार करके खुले मैदान में आये। फिर उन्होंने चारों ओर से घेरकर बड़े कोलाहल के साथ उसकी उठी हुई लम्बी पूँछ में फटे-पुराने कपड़े लपेटे और घी तथा तेल में उसे भिगोये। पश्चात् उन्होंने उसमें आग लगायी और ऐसा नर्दन किया कि अण्डगोल ही अस्त-व्यस्त हो गया। ११६५

ऑक्क वॊक्क वुडन्विशित्त वुलप्पि लाद वुडऱ्पाशम्
पक्कम् बक्क मिरुहूऱाय् नूऱा यिरवर् पऱ्ऱिनार्
पुक्क पडैजर् पुडैहाप्पोर् पुणरिक् कणक्कर् पुऱञ्जॆल्वोर्
तिक्कि तळवा लयनिन्ऱु काण्बोर्क् कॆल्लै तॆरिवरिदाल् 1166

ऑक्क ऑक्क–अनेक (रस्सियाँ) मिलाकर; उटन् विचित्त–एक साथ जो बँधा रहा; उलप्पु इलात–जो टूट नहीं सकता; उटल् पाचम्–वह शरीर-पाश; पक्कम् पक्कम्–दोनों बाजुओं में; इरु कूऱाय्–दो भागों में; नूऱु आयिरवर्–सौ सहस्र राक्षसों ने; पऱ्ऱितार्–पकड़ लिया; पुटै काप्पोर्–पार्श्वरक्षक; पुक्क पटैजर्–वहाँ आगत हथियारधारी वीर; पुणरि कणक्कर्–'समुद्र' की संख्या में रहे; पुऱम् चॆल्वोर्–उनकी बग़ल में जानेवाले; तिक्कित् अळवु–दिशाओं भर में व्याप्त रहे; आल्–इसलिए; अयल् नित्ऱु काण्पोर्क्कु–उनसे हटकर खड़े होकर देखनेवालों के लिए; ॲल्लै तॆरिवु–सीमा जानना; अरितु–कठिन था। ११६६

हनुमान के शरीर पर अनेक परतों में स्थूल रस्से बाँधे गये थे। और दोनों बाजुओं में लाख-लाख राक्षसों ने खड़े होकर पाश को पकड़ लिया। उनके बाद हथियारधारी राक्षस आकर खड़े हो गये। उनकी संख्या 'समुद्र' की हिसाब में थी। उनके बाद घेरे जानेवाले राक्षसों की बड़ी भीड़ लगी थी। वे दिगन्त तक फैले रहे। इसलिए परे रहकर उन राक्षसों की सीमा जानना दुस्साध्य था। ११६६

अन्द नहरुङ् गडिहावु मळिवित् तक्कन् मुदलायोर्
शिन्द नूऱिच् चोदैयॊडुम् पेशि मन्निदर् तिऱञ्जॆप्प
वन्द कुरङ्गिर् कुऱ्ऱदन्नै वम्मिन् काण वम्मॆन्ऱु
तन्दन् दॆरुवुम् वायिऱॊरुम् यारु मऱियच् चाऱ्ऱिनार् 1167

अनृत नकरुम्–वह नगर; कटि कावुम्–सुरक्षित अशोक वन; अऴिवितुु–मिटाकर; अक्कन् मुतलायोर्–अक्ष आदि को; चिन्त–छिन्न-भिन्न हो जाएँ, ऐसा; नूऱ्‌ि–मारकर; चीतै ओटुम् पेचि–सीता के साथ बोलकर; मनितर् तिऱम्–मनुष्यों का पराक्रम; चॅप्प वनृत–कहने के लिए आये; कुरक्किऱ्कु–बन्दर पर; उऱ्ऱतनै–जो बीत रहा है, उसको; वम्मिन्–आओ; काण वम्–देखने के लिए आओ; ऍन्ऱु–ऐसा; तम् तम् तॅरुवुम्–अपनी-अपनी वीथियों और; वायिल् तोऱुम्–द्वार-द्वार पर; यारुम् अऱिय–सभी को सुनाते हुए; चाऱ्ऱितार्–कहा। ११६७

राक्षस लोग अपनी गली-गली और द्वार-द्वार पर सबको यह बताते हुए जा रहे थे कि इस नगर और अशोक वन का नाश करके अक्षकुमार आदि को मार डालकर, और सीता के साथ मिलकर बातें करके हमारे राजा से तुच्छ मानव लोगों की शक्ति की प्रशंसा करने जो आया था, उस वानर पर जो बीत रहा है उसे आकर देखो। आओ, आओ। ११६७

आर्त्ता रण्डत् तप्पुऱत्तु मऱिविप् पार्पो लङ्गोडिङ्
गीर्त्तार् मुरश मॅऱ्ऱिना रिडित्तार् तॅऴित्ता रॅम्मरुङ्गुम्
बार्त्ता रोडिच् चानहिक्कुम् बहर्न्दा रवळु मुयिर्पदैत्ताळ्
वेर्त्ता ळुलन्दाळ् विम्मिनाळ् विऴुन्दा ळऴुदाळ् वॅय्दुयिर्त्ताळ् 1168

अण्टत्तु अप्पुऱत्तुम्–अण्ड के उस पार भी; अऱिविप्पार् पोल–सुनाते जैसे; आर्त्तार्–बहुत उच्च स्वर में घोष किया (राक्षसों ने); अङ्कु ओटु इङ्कु–उधर से इधर; ईर्त्तार्–खींचा; मुरचम्–भेरियाँ; ऍऱ्ऱितार्–ठनकायीं; इटित्तार्–(हनुमान को) ढकेला; तॅऴित्तार्–डाँटा-डपटा; ऍ मरुङ्कुम्–सब ओर; पार्त्तार्–घूमकर देखा; ओटि–दौड़कर; चानकिक्कुम्–जानकी से भी; पकर्न्तार्–कहा; अवळुम्–वे भी; उयिर् पतैत्ताळ्–प्राण-विह्वल हुईं; वेर्त्ताळ्–पसीना-पसीना हो गयीं; उलन्ताळ्–खिन्नमना हुईं; विम्मिनाळ्–सिसकीं; विऴुन्ताळ्–नीचे गिरीं; अऴुताळ्–रोयीं; वॅय्तु उयिर्त्ताळ्–तप्त साँसें छोड़ीं। ११६८

वे ऐसा शोर मचाते गये, मानो वे अण्डगोल के बाहर भी यह समाचार पहुँचाना चाहते हों। कुछ राक्षसों ने हनुमान को इधर-उधर भटकाया। कुछ लोगों ने भेरियाँ बजायीं। कुछ राक्षसों ने हनुमान को ढकेला। कुछ लोगों ने उसे डाँटा। कुछ लोगों ने चारों ओर जाकर देखा। कुछ लोगों ने जानकी के पास जाकर समाचार दिया। जानकी जी यह सुनकर उद्विग्न हो गयीं। उनके प्राण छटपटाने लगे। पसीने-पसीने हो गयीं। लट गयीं। सिसकीं। भूमि पर गिरीं। रोयीं। तप्त साँसें छोड़ने लगीं। ११६८

ताये यनैय करुणैयान् ऱुणैये येदुन् दहविल्ला
नाये यनैय वल्लरक्कर् नलियक् कण्डा नल्हायो
नीये युलहुक् कोरुशान्ऱु निऱ्के तॅरियुङ् गऱ्पदनिल्
तूये नॅन्निऱ् ऱॅऴिहिनुऱे ऱॅरिये यवनैच् चुडलॅन्ऱाळ् 1169

ऍरिये–अग्निदेव; ताये अन्नैय–माता ही सम; करुणैयान्–करुणामय हनुमान का; तुणैये–सहायक; तकवु एतुम्–कोई भी अच्छा गुण; इल्ला–जिनमें नहीं है; नाये अन्नैय–कुत्तों के समान; वल् अरक्कर्–नृशंस राक्षस; नलिय–कष्ट दे रहे हैं; कण्टाल्–देखते जब हो; नल्कायो–सहायता नहीं दोगे क्या; नीये–तुम ही; उलकुक्कु और चान्ऱु–संसार के लिए अनुपम साक्षी हो; निऱ्के तॅरियुम्–तुम ही (सब) जानते हो; आतलाल्–इसलिए; कऱ्पु अतनिल्–पातिव्रत्य में; तूयेन् ऍन्ऩिल्–पवित्र हूँ तो; अवनै चुटल्–उसको मत जलाओ; तॊऴुकिन्ऱेन्–नमन करती हूँ; ऍन्ऱाळ्–कहा (देवी ने)। ११६९

सीताजी ने अग्नि का ध्यान करके कहा कि अग्निदेव! हनुमान माता के ही समान कृपालु है। उसके तुम ही अकेले सहायक हो। कुत्ते के समान बिल्कुल अयोग्य राक्षसों को हनुमान को सताते देखकर तुम उसे सहायता नहीं दोगे क्या? तुम सारे ससार के साक्षीरूप हो! इसलिए तुम सब जानते ही हो। अगर मैं पातिव्रत्य में पवित्र हूँ तो उसे तुम मत जलाओ। तुमसे प्रार्थना करती हूँ। ११६९

वॅळिऱ्ऱमॅन् नहैयवळ् विळम्बु मेल्वैयिल्
ऑळिऱ्ऱवॅङ् गनलव नुळ्ळ मुट्किनान्
तळिर्त्तन मयिर्प्पुऱज् जिलिर्प्पत् तण्मैयाल्
कुळिर्त्तदक् कुरिशिल्वा लॅन्बु कूरवे 1170

वॅळिऱ्ऱ–श्वेत; मॅन्–कोमल; नकै अवळ्–दाँतों वाली उनके; विळम्पुम् एल्वैयिल्–कहने मात्र से; ऑळिर्त्त–ज्वलन्त; वॅम् कनल् अवन्–सन्तापक अग्नि वह; उळ्ळम्–मन में; उट्कितान्–भीत हुआ; पुऱम् मयिर्–शरीर पर के बाल; तण्मैयाल्–शीतलता से; चिलिर्प्प–पुलकित हुए; तळिर्त्तन–समृद्ध हुए; अ कुरिचिल् वाल्–उस श्रेष्ठ हनुमान की पूँछ; ऍन्पु कूर–हड्डियों तक; कुळिर्त्ततु–शीतल हुई। ११७०

श्वेत रंग की और मनोरम दन्तावली से भूषित देवी ने जब यह कहा, तब ज्वलन्त तथा दाहक अग्नि मन में भीत हुआ। फलस्वरूप हनुमान के शरीर पर के बाल शीतलता के कारण पुलकित हुए। उस उत्तम हनुमान की पूँछ हड्डी तक शीतल हो गयी। ११७०

मऱ्ऱिनिप् पलवॅन् वेलै वडवनल् पुविय ळाय
कऱ्ऱैवॅङ् गनलि मऱ्ऱैक् कायत्ती मुनिवर् काक्कुम्
मुऱ्ऱुऱु मुम्मैच् चॅन्दी मुप्पुर मुरुङ्गच् चुट्ट
कॊऱ्ऱव नॅऱ्ऱिक् कण्णिन् वन्नियुङ् गुळिर्न्द वन्ऱे 1171

वेलै–समुद्र में; वट अतल्–उत्तर में रहनेवाली अग्नि; पुवि अळाय–भूमि पर मिली रहनेवाली; कऱ्ऱै वॅम् कतलि–पुंजीभूत गरम आग; मऱ्ऱै–और; काय ती–आकाश की अग्नि; मुनिवर् काक्कुम्–मुनियों द्वारा पालित; मुऱ्ऱु उऱु–पूर्ण

रहनेवाली; मुम्मै चॅम् ती–त्रिविध श्रेष्ठ अग्नि; मु पुरम्–त्रिपुर को; मुरुक्क चुट्ट–मिटाते हुए जिसने जलायी; कॉऱ्ऱवन्–विजयी; नॅऱ्ऱि–(श्रीशिवजी) के भाल की; कण्णिन् वन्नियुम्–आँख की अग्नि; कुळिर्न्त–ठण्डी पड़ गयी; मऱ्ऱु इनि–फिर और; पल ॲन्–बहुत कहने को क्या है ? । ११७१

(अग्नि के सारे अंश ठण्डे पड़ गये ।) समुद्र में उत्तरी भाग में पायी जानेवाली बड़वाग्नि, भूमि पर मिश्रित रहनेवाली पुञ्जीभूत गरम आग, आकाश की अग्नि, मुनिपालित त्रिविध होमाग्नि (आह्वनीय, गार्हपत्य और दक्षिणा) विजयी शिवजी के भालनेत्र की त्रिपुरदाहक अग्नि —सब शीतल पड़ गयीं । और आगे अधिक विविध कहने को क्या है ? । ११७१

अणडमुङ् गडन्दा ऩ्ङ्गै यन्नलियुङ् गुळिर्न्द दङ्गिक्
कुण्डमुङ् गुळिर्न्द मेहत् तुरुमॅलाङ् गुळिर्न्द कॉऱ्ऱच्
चण्डवॅङ् गदिर्ह ळाहित् तळुङ्गिरुळ् विळुङ्गुन् दाविल्
मण्डलङ् गुळिर्न्द मीळा नरहमुङ् गुळिर्न्द मादो 1172

अण्टमुम् कटन्तात्–अण्ड-गोल के पार रहनेवाले (सत्यलोक के ब्रह्मा) की; अम् कै अन्नलियुम्–हथेली-मध्य रहनेवाली अग्नि भी; कुळिर्न्ततु–ठण्डी हुई; अङ्कि कुण्टमुम्–अग्निकुण्ड भी; कुळिर्न्त–शीतल बन गये; मेकत्तु उरुम् ॲलाम्–मेघ-मध्य सारी अशनियाँ; कुळिर्न्त–ठण्डी हो गयीं; कॉऱ्ऱ–प्रबल; चण्ट वॅम् कतिर्कळ् आकि–प्रचण्ड और उग्र किरणें बनकर; तळुङ्कु इरुळ्–स्वर के साथ उठनेवाले अन्धकार को; विळुङ्कुम्–निगलनेवाले; ता इल् मण्टलम्–अक्षय सूर्यमण्डल; कुळिर्न्त–शीतल हो गये; मीळा नरकमुम्–निर्विकार नरक भी; कुळिर्न्त–तापहीन हो गया । ११७२

इस अण्ड के परे सत्यलोक में रहनेवाले ब्रह्माजी की हथेली की अग्नि, उनके यज्ञकुण्डों की अग्नि और मेघ की अशनियाँ भी ठण्डी हो गयीं । प्रचण्ड और उग्र किरणों के द्वारा शब्दायमान अन्धकार को भी लीलनेवाले अक्षय आदित्यमण्डल भी ठण्डे हो गये । अविकृत एक-रूप रहनेवाला नरक भी शीतल हो गया । ११७२

वॅऱ्पिना लियन्ऱ दन्न वालिन्नै विळुङ्गि वॅन्दी
निऱ्पिनुञ् जुडादु निन्ऱ नीर्मैये निनैन्दि नोक्कि
अऱ्पिना रऱाद शिन्दै यनुमनुञ् जनहन् बावै
कऱ्पिना लियन्ऱ वॅन्बाल् पॅरियदोर् कळिय नानान् 1173

अन्पिन् नार्–(श्रीराम-) भक्ति का तागा; अऱात चिन्तै–(जिसमें) न टूटा, ऐसे मन का; अनुमनुम्–हनुमान भी; वॅम् ती–प्रचण्ड अग्नि; वॅऱ्पिनाल् इयन्ऱतु अन्न–पर्वत के बने-जैसे; वालिनै–दुम को; विळुङ्कि–निगलकर; निऱ्पिनुम्–बनी रही तो भी; चुटातु निन्ऱ–बिना जलाये रहने की; नीर्मैये–रीति को; निनैन्तु नोक्कि–अपने मन में विचार कर; जनकन् पावै–जनकसुता के; कऱ्पिनाल्–

पातिव्रत्य से; इयन्ऱ्ऱलु–बनी है यह; ॲन्ऱपान्–निश्चय करके; पॅरियतु ओर् कळियन् आनान्–बहुत ही बड़े हर्ष के वश का हुआ। ११७३

हनुमान के मन में श्रीराम-भक्ति का ताँता कभी टूटता ही नहीं था। उसके पर्वत के बने-से द्रुम को भयंकर आग संवृत किये रही। तो भी उसे गर्मी नहीं लग रही थी। इस वैशिष्ट्य के सम्बन्ध में हनुमान ने सोचा। उसे सूझ गया कि यह जनकसुता के पातिव्रत्य का अद्भुत प्रभाव है। यह निर्धारण होते ही वह अतिहर्षित हुआ। ११७३

अऱ्ऱैयव् विरविऱ् ऱान्ऱ नऱिविनान् मुळ्ळुदु मुन्नप्
पॅऱ्ऱिल नॅन्नितु माण्डोन् ऱुळ्ळदु पिळैयु ऱामे
मऱ्ऱुरु पॉऱिमुन् शॅल्ल मऱैन्दुशॅल् लऱिवु मानक्
कऱ्ऱिला वरक्कर् तामे काट्टलिऱ् ऱॅरियक् कण्डान् 1174

अऱ्ऱै अ इरविल्–उस दिन की उस रात में; तान्–स्वयं; तन् अऱिविनाल्–अपनी बुद्धि से; मुळ्ळुतुम् उन्न पॅऱ्ऱिलन्–पूर्ण रूप से जान नहीं पाया; ॲन्नितुम्–तो भी; आण्टु–तब (जब खींचा जाता रहा); ऑन्ऱु उळ्ळतु–किसी का रहना; पिळै उऱामे–न छूटा, ऐसा; कऱ्ऱु इला–अपढ़; अरक्कर्–राक्षस; तामे काट्टलिल्–स्वयं दिखाते गये, इसलिए; उऱु पॉऱि–बाहर लगी हुई इन्द्रियों के; मुन् चॅल्ल–आगे जाते; मऱैन्तु चॅल्–उनके पीछे छिपे-छिपे जानेवाली; अऱिवु मान–बुद्धि के समान; तॅरिय कण्टान्–(हनुमान ने) देखा और जाना। ११७४

उस दिन की रात में (जब वह नगर में सीताजी का अन्वेषण करता, घूमा) उसने अपनी बुद्धि के सहारे लंका नगर के सारे दृश्य नहीं देख पाये थे। पर अब राक्षसों ने खुद सारी वस्तुएँ दिखा दीं, कोई भी विषय या दृश्य छूट नहीं पाया था। जैसे शरीर से लगी बाह्येन्द्रियाँ आगे-आगे इंद्रिय-गोचर विषयों को दिखाती जाती हैं और उनके पीछे छिपे-छिपे जाकर मन सभी से अवगत होता है, वैसे ही हनुमान लंका में रहे सभी वस्तुओं को देखता चला। ११७४

मुळ्ळुवदुन् दॅरिय नोक्कि मुऱ्ऱुमूर् मुडियच् चॅन्ऱान्
वळ्ळुवुरु काल मीदॅन् ऱॅण्णिनन् वलिदिऱ् पऱ्ऱित्
तळ्ळुविन रिरण्डु नूऱा यिरम्बुयत् तडक्कै ताम्बो
डॅळुवॅन नाल विण्मे लॅळुन्ददन् विळुन्द वॅल्लाम् 1175

मुळ्ळुवतुम्–सारे (नगर) को; तॅरिय नोक्कि–खूब देखकर; ऊर् मुऱ्ऱुम्–नगर भर में; मुटिय चॅन्ऱान्–सर्वत्र गया; वळ्ळुवु उरु कालम्–वच निकलने का समय; ईतु ॲन्ऱु–यही है, ऐसा; ॲण्णिनन्–सोचकर; वलितिल् पऱ्ऱि–मजबूती से पकड़कर; तळ्ळुवितर्–जो लिपटे रहे उन राक्षसों के; इरण्टु नूऱायिरम्–दो लाख; पुयम् तट कै–कन्धों और विशाल हाथों को; ताम्पु ओटु–रस्सों के साथ; ॲळु ॲन–खम्भों के

समान; नाल–लटकने देते हुए; विण्मेल्–आकाश में; ॲऴुन्ततन्–उछला; ॲल्लाम् विऴुन्त–सब गिर गये। ११७५

हनुमान पूर्ण रूप से सारी वस्तुएँ देखते हुए नगर भर में गया। उसने उचित अवसर पर निर्णय किया कि यही वच निकलने का समय है। यह संकल्प करते ही वह सहसा आकाश में उछला। तब दो लाख (एक लाख राक्षसों के) बड़े और मोटे हाथ रस्सों-सहित खम्भों के समान लटके रहे। कुछ देर के बाद वे सब नीचे गिर गये। ११७५

इऱ्ऱवा ळरक्कर् नूऱा यिरवरु मिऴन्द तोळार्
मुऱ्ऱित्ता रुलन्दा रैयन् मॊय्म्बित्तो डुडलै मूऴ्हच्
चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱि त्तोडुन् दोत्ऱुवा त्तरवित् शुऱ्ऱम्
वऱ्ऱिय कलुऴ ऩॆन्ऩप् पॊलिन्दतन् विशुम्बित् पालान् 1176

इऱ्ऱ वाळ्–टूटी तलवारों के; अरक्कर्–राक्षस; नूऱ आयिरवरुम्–लाखों; इऴन्त तोळार्–भुजाहीन होकर; मुऱ्ऱित्तार् उलन्तार्–पूर्ण रूप से मिट गये; ऐयन्–महिमावान हनुमान; मॊय्म्पित्तोटु–कन्धों के साथ; उटलै मूऴ्क चुऱ्ऱिय–शरीर को जो पूरा-पूरा कसे रहे; कयिऱ्ऱित्तोटुम्–उन रस्सों के साथ भी; विचुम्पिन् पालान्–आकाश में; तोन्ऱुवान्–जो प्रकट था, वह; अरविन् चुऱ्ऱम् पऱ्ऱिय–सर्पों के झुण्ड जिससे लगे रहते हैं वैसे; कलुऴन् ॲन्ऩ–गरुड़ के समान; पॊलिन्ततन्–शोभायमान रहा। ११७६

लाखों राक्षसों की तलवारें टूटीं। फिर वे भुजाहीन हुए। फिर पूर्ण रूप से प्राणहीन हो गये। हनुमान भुजाओं और शरीर पर लपेटे रहे पाश के साथ जब आकाश में दिखायी दे रहा था, तब वह सर्पवृन्द-घिरे गरुड़ के समान प्रकट हो रहा था। ११७६

तुन्ऩलर् पुरत्तै मुऱ्ऱुञ् जुडुतॊऴिऱ् ऱॊल्लै योरुम्
पन्ऩिन्ऩ पॊरुळु नाणप् पादह रिरुक्कै पऱ्ऱ
मन्ऩनै वाऴ्त्ति वाऴ्त्ति वयङ्गॆरि मडुप्पॆ ऩॆन्ऩाप्
पॊन्ऩहर् मीदे तन्ऩॊर् वालिनैप् पोह विट्टान् 1177

तुन्ऩलर्–शत्रुओं के; पुरत्तै–नगर को; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; चुटु तॊऴिल्–जलाने के (युद्ध के अंग के रूप में) कार्य के सम्बन्ध में; तॊल्लैयोरुम्–प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा; पन्ऩित–वर्णित; पॊरुळुम्–बाह्य साहित्य परिपाटियों के विषयों को भी (भावार्थ में इसका भाव देख लें); नाण–लजाते हुए; पातकर् इरुक्कै–पातकों के वासस्थानों में; पऱ्ऱ–जलाते हुए; वयङ्कु ॲरि–फैलनेवाली आग; मटुप्पॆन्–लगा दूँगा; ॲन्ऩा–कहकर; मन्ऩनै–राजाराम को; वाऴ्त्ति वाऴ्त्ति–बार-बार संस्तुति करते हुए; पॊन् नकर् मीते–स्वर्ण-नगरी पर; तन्–अपनी; पोर् वालिनै–युद्ध-पुच्छ को; पोक विट्टान्–सरकने दिया (हनुमान ने)। ११७७

हनुमान ने यह निर्णय करके कि पातक राक्षसों के वासस्थान सभी

प्रासादों में आग लगे, ऐसा आग लगाऊँगा। और राजाराम के श्रीचरणों की बार-बार वन्दना करके अपने युद्ध-पुच्छ को उस स्वर्णनगरी पर सरकने दिया, जिससे प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा निर्दिष्ट शत्रु-पुर-दहन-वर्णन की परिपाटियों के अनुसार वर्ण्य विषय भी लज्जित हुए। [यानी इस प्रकार दहन का काम चला की उसका वर्णन करें तो उसके आगे प्राचीन आचार्यों की बातें भी फीकी पड़ जायँ। अनुवादक की अवतरणिका में (बालकाण्ड की) पाठक देख सकते हैं कि तमिऴ-काव्य में प्रेम (अहम)और युद्ध (पुऱम) के दो प्रधान विषयों के काव्य-वर्णन में क्या-क्या रीतियाँ अपनायी जायँ; प्रसंगों का नामकरण कैसे हो ? प्रसंगों के अन्तर्गत कैसा समय, कैसी ऋतु, कौन से पक्षी, पशु, लोग आदि की चर्चा होनी चाहिए —यह सब निश्चित है। इस शत्रुनगर-दहन का वर्णन 'पुऱ' तिणै के अन्तर्गत "उऴ पुल वञ्जि" तुऱै में आता है।] । ११७७

अप्पुऱऴ् वेलै काऱ् मलङ्गुपे रिलङ्गै तऩ्ऩै
ऍप्पुऱत् तळवुन् दीय वॊरुहणत् तॅरित्त कॊट्पाल्
तुप्पुऱऴ् मेनि यण्णऩ् मेरुविल् कुऴैयत् तोळाल्
मुप्पुरत् तॅय्द कोले यॊत्तदम् मूरिप् पोर्वाल् 1178

उऱऴ् अप्पु—परस्पर टकरानेवाली लहरों के जल से भरे; वेलै काऱुम्—समुद्र तक; अलङ्कु पेर् इलङ्कै तऩ्ऩै—विद्यमान बड़ी लंका को; ऍ पुऱत्तु अळवुम् तीय—सभी ओरों की सीमा तक जल जाय, ऐसा; ऒरु कणत्तु—एक क्षण में; ऍरित्त—जलाने के; कॊट्पु आल्—प्रभाव से; अ मूरि—वह बलवान; पोर् वाल्—युद्ध-पुच्छ; तुप्पु उऱऴ्—प्रवाल-सम; मेऩि अण्णल्—(लाल) शरीर के प्रभु शिवजी ने; मेरु विल्—मेरु-धनु को; कुऴैय—झुकाते हुए; तोळाल्—अपने हाथ से; मु पुरत्तु ऍय्त—त्रिपुर पर जो चलाया; कोले ऒत्ततु—उस बाण के ही समान था। ११७८

परस्पर टकराती हुई उठनेवाली तरंगों के जल से भरे समुद्र तक फैली लंका को उस पूँछ ने एक पल में सभी ओर से जलाकर खाक बना दिया। उस सामर्थ्य को देखते हुए वह सबल और युद्धविक्रमी दुम, प्रवाललाल-शरीरी श्रीशिवजी द्वारा मेरुधनु को झुकाकर उनके हाथों से छोड़े गये शर के ही समान रही। ११७८

वॆळ्ळियिऩ् पॊऩ्ऩि ऩाह विळङ्गुपॊऩ् मणियिऩ् विञ्जै
तॆळ्ळिय कडवुट् टच्चऩ् कैम्मुयऩ् ऱिरिदिऱ् चॆय्द
तळ्ळरु मनैह डोऱु मुऱैमुऱै ताविच् चॆऩ्ऱाऩ्
ऒळ्ळॆरि योडुङ् गुऩ्ऱत् तूळिवी ऴुरुमो डॊप्पाऩ् 1179

वॆळ्ळियिऩ्—चाँदी के; पॊऩ्ऩिऩ्—और स्वर्ण के; विळङ्कु पॊऩ् मणियिऩ्—और प्रभापूर्ण रत्नों के; आक—बने हों ऐसा; विञ्चै तॆळ्ळिय—शिल्प-विद्या में निपुण;

कटवुळ् तच्चन्–दिव्य शिल्पी विश्वकर्मा द्वारा; कै मुयन्ऱु–अपना हस्तकौशल पूर्ण रूप से प्रयोग करके; अरितिल् चॅय्त–अपूर्व रूप से निर्मित; तळ् अरु–अमिट; मतॅकळ् तोऱुम्–भवनों में; ऑळ् ऑरि ओटुम्–प्रज्वलित आग के साथ; कुन्ऱत्तु–पर्वत पर; ऊऴि वीऴ्–युगान्त में गिरनेवाली; उरुम् ओट्टु ऑप्पान्–अशनि की तुलना करनेवाला हनुमान; मुऱै मुऱै–क्रम से; तावि चॅन्ऱान्–भवन से भवन उछलता जा रहा था। ११७९

लंका के प्रासाद शिल्पविद्याविदग्ध विश्वकर्मा द्वारा रजत, स्वर्ण, मनोरम प्रभापूर्ण रत्नों आदि का उपयोग करके अपना सारा हस्तकौशल लगाकर रचे गये थे। वे आसानी से मिटाये जा सकनेवाले नहीं थे। उन प्रासादों पर हनुमान अपने ज्वलंत द्रुम के साथ बारी-बारी से गिरा। जैसे युगान्त में अशनि पर्वतों पर गिरती है, वैसे ही वह आग लगाता हुआ एक से दूसरे पर उछलकर कूदता चलने लगा। ११७९

नीनिऱ निरुदर् याण्डुम् नॅय्पॉऴि वेळ्वि नीक्कप्
पाल्वरुम् बशिय नन्वान् मारुदि वालैप् पऱ्ऱि
आलमुण् डवनिन् ऱूट्ट वुलहॅला मवियि नुण्णुम्
कालमे यॅन्न मन्नो कन्नलियुङ् गडिदि नुण्डान् 1180

नील् निऱ–नीलवर्ण; निरुतर्–राक्षसों के; याण्टुम्–सर्वत्र; नॅय् पॉऴि–घृत जिनमें पुष्कल रूप से अग्नि में डाला जाता है; वेळ्वि नीक्क–उन यज्ञों को रोकने से; पाल् वरुम्–अपने पास आगत; पचियन्–बुभुक्षु; कन्नलियुम्–अग्निदेव भी; मारुति वालै–मारुति की पूँछ को; अन्पाल्–लगाव के साथ; पऱ्ऱि–पकड़कर; आलम् उण्टवन्–विषभोक्ता शिवजी के; निन्ऱु ऊट्ट–स्वयं खिलाने (संहार करने) पर; उलकु ऍलाम्–सारे लोकों को; अवियिन्–हवि के समान; उण्णुम् कालमे ऍन्न–खानेवाले काल ही के समान; कटितिन् उण्टान्–शीघ्र खा लिया (जला दिया)। ११८०

नीलवर्ण राक्षसों ने यज्ञों को रोका था, जिनमें अग्नि घी को होम के रूप में समृद्ध रीति से अर्पित किया जाता है। इसलिए वह अग्निदेव भूखा रह गया। अब वह हनुमान के पास गया और उसने हनुमान की पूँछ पकड़कर जाते हुए सारी लंका को ऐसा खा लिया (भस्म कर लिया), जैसे विषभोक्ता शिवजी के खिलाने पर युगान्त का कालदेवता सारे लोकों को हवि के समान खा लेता है। ११८०

13. इलङ्गै यॅरियूट्टु पडलम् (लंका-दहन पटल)

कॉडियैप् पऱ्ऱि विदानङ् गॊळुत्तित्ताळ्, नॅडिय तूणैत् तडवि नॅडुञ्जुवर्
मुडियच् चुऱ्ऱि मुळुदु मुरुक्किऱ्ऱाल्, कडिय मामनै दोऱुङ् गडुङ्गनल् 1181

कटुम् कनल्–प्रचण्ड अग्नि; कटिय–सुरक्षित; मा मनै तोऱुम्–सभी बड़े-बड़े भवनों में; कॉटियै पऱ्ऱि–ध्वजा को लगकर; वितानम् कॊळुत्ति–वितानों को

जलाकर; ताळ्-पीठों पर; नॅटिय तूणं-लम्बे खम्भों को; तटवि-लगकर; नॅटुम् चुवर्-ऊँची दीवारों को; मुटिय चुट्रि-पूर्ण रूप से घेरकर; मुळुतुम्-(इस भाँति) पूरा-पूरा; मुरुक्किट्रु-(भवनों को) जला दिया। ११८१

प्रचण्ड अग्नि ने सुरक्षित रहे सारे घरों को, ध्वजा में लगकर, वितान जलाकर, पीठ-सहित लम्बे खंभों को भस्म करके और लम्बी दीवारों को चारों ओर से घेरकर पूर्ण रूप से जला डाला। ११८१

वाश लिट्ट वॅरिमणि माळिहै, मूश मुट्टि मुळुदु मुरुक्कलाल्
ऊश लिट्टन्न वोडि युलैन्दुपोय्प्, पूश लिट्ट विरियर् पुरमॅलाम् 1182

वाचल् इट्ट-द्वार पर लगायी गयी; ॲरि-आग के; मणि माळिकै-रत्नमय प्रासादों को; मूच मुट्टि-मण्डलाकार जोर से लगकर; मुळुतुम् मुरुक्कलाल्-पूर्ण रूप से जला देने से; इरियल्-अस्त-व्यस्त; पुरम् ॲलाम्-नगरवासी सभी; ऊचल् इट्टु अन्न-झूलों के समान आगे-पीछे; ओटि-भागे; उलैन्तु पोय्-लटकर; पूचल् इट्ट-(उन्होंने) बड़ा शोर मचाया। ११८२

हनुमान ने द्वार पर ही आग लगायी। पर उसने सुन्दर प्रासादों को सभी ओर से ग्रसकर पूरा-पूरा जला डाला। इसलिए सभी पुरवासी अस्त-व्यस्त हो झूले-जैसे (पेंग मारते और आगे से पीछे और पीछे से आगे आते-जाते हैं वैसे) भागे, थके और बड़ा शोर मचाने लगे। ११८२

मणियि नाय वयङ्गॉळि माळिहै, पिणियिऱ् चॅञ्जुडर्क् कट्रै पॅरुक्कलाल्
तिणिहॉ डीयुट्र दुट्रिल देर्हिलार्, अणिव ळैक्कैनल् लारल मन्दुळार् 1183

मणियिन् आय-रत्न-निर्मित; ऑळि वयङ्कु-प्रकाशमय; माळिकै-प्रासाद; पिणियिन्-(आग के) लगने से; चॅम् चुटर् कट्रै-लाल किरणों की लटों को; पॅरुक्कलाल्-(प्रतिबिम्बों के रूप में) संख्या में बढ़ाने से; तिणि कॉळ्-घनी; ती उट्र-आग-लगे स्थान; तुट्रिल-जिन स्थानों में आग नहीं लगी थी, वे स्थान; तेर्किलार्-(उनमें भेद) जो नहीं जान सकीं; अणि वळै कै-(वे) कंकण वाले हाथों की; नल्लार्-स्त्रियाँ; अलमन्तु उळार्-गड़बड़ायी रहीं। ११८३

वे प्रासाद रत्नों के बने थे और चिकने और प्रभापूर्ण थे। इसलिए उनमें लगी आग की ज्वालाएँ प्रतिबिम्बित दिखीं और आग की लटें अत्यधिक संख्या में बढ़ी दिखायी दीं। इसलिए कंकणहस्ता स्त्रियाँ यह भेद नहीं कर सकीं कि कहाँ आग लगी है, कहाँ नहीं! इसलिए वे किंकर्तव्यमूढ बनी भ्रमित रहीं। ११८३

वान हत्तै नॅडुम्बुहै मायत्तलाल्, पोन तिक्करि यादु पुलम्बिनार्
तेन हत्त मलर्पल शिन्दिय, कान हत्तु मयिलन्न काट्चियार् 1184

तेन् अकत्त-शहद जिसके मध्य में है; पल मलर्-ऐसे विविध फूल; चिन्तिय-

जहाँ गिरे पड़े हैं; कानकत्तु–उस वन के; मयिल् अन्न–मोरों के समान; काट्चियार्–दिखनेवाली स्त्रियाँ; नॆंडुम् पुकै–बहुत दूर तक व्याप्त धुआँ; वानकत्तै मायत्तल् आल्–आकाश को छिपाए रहा; पोन तिक्कु–(इसलिए) किस ओर गयीं, यह दिशा; अऱियातु–न जानकर; पुलम्पिनार्–विलपीं। ११८४

विविध मधुगर्भसुमनाकीर्णवन्यमयूरनिभ स्त्रियाँ बहुत दूर तक फैले हुए धूम के आकाश को आच्छादित करने से यह न जान सकीं कि वे किस दिशा में गयी हैं और विलाप करती हुई रोयीं। ११८४

कूय्क्कॊ ऴुम्बुनल् कुञ्जियिऱ् कून्दलिन्
मीच्चॊ रिन्दनर् मादरुम् वीररुम्
एय्त्त तन्मैयि ऩालॆरि यिन्मैयुम्
तीक्कॊ ऴुन्दिन वुन्दॆरि यामैयाल् 1185

वीररुम् मातरुम्–वीर पुरुष और स्त्रियाँ; एय्त्त तन्मैयिताल्–समानता की वजह से; ऎरि इन्मैयुम्–आग का न लगना; ती कॊऴुन्तिन्वुम्–आग का जला रहना; तॆरियामैयाल्–न जानने से; कूय्–चिल्लाते हुए; कॊऴुम् पुनल्–बहुत परिमाण में जल को; कुञ्चियिल्–(पुरुषों के) केशों पर (स्त्रियों ने); कून्तलिल्–और (स्त्रियों की) वेणी पर (पुरुषों ने); मी चॊरिन्तनर्–ऊपर से डाले। ११८५

वीर राक्षस पुरुषों के केश और सुन्दर राक्षसी स्त्रियों की वेणी दोनों आग के ही समान अरुणवर्ण थी। इसलिए वे यह निर्णय नहीं कर सके कि सिर पर आग लगी है या नहीं लगी है। अतः रोते-चिल्लाते हुए पुरुषों ने स्त्रियों की वेणी पर समृद्ध रूप से जल उड़ेला और स्त्रियों ने पुरुषों के केश पर जल उड़ेला। ११८५

इल्लिऱ् ऱङ्गुम् वयङ्गॆरि यावैयुम्
शॊल्लिऱ् ऱीर्न्दन पोलरुन् दॊल्लुरुप्
पुल्लिक् कॊण्डन मायैप् पुणर्प्पऱक्
कल्लित् तम्मियल् पॆय्दुङ् गरुत्तर्पोल् 1186

मायै–माया को; पुणर्प्पु अऱ–लगाव हटाते हुए; कल्लि–उखाड़ फेंककर; तम् इयल्पु–स्वभाव में; ऎय्तुम्–आगत; करुत्तर् पोल्–विवेकी के समान; इल्लिल् तङ्कुम्–(राक्षसों के) घरों में रही; वयङ्कु ऎरि यावैयुम्–ज्वलन्त अग्नि सभी ने; चॊल्लिल् तीर्न्तन पोल्–(रावण की) आज्ञा से छूट गयी-जैसी; अरुम्–अपूर्व; तॊल् उरु–अपना पुराना (स्वाभाविक) रूप; पुल्लि कॊण्टन–अपना लिया। ११८६

राक्षसों के घरों में रहनेवाली अग्नि ने मानो रावण की आज्ञा से छूटकर अपना पुराना अपूर्व रूप और गुण अपना लिया। तब वह उस विवेकी के समान रही, जो माया को मूल से उखाड़ फेंककर स्वभावस्थ हो गये हों। ११८६

आय दङ्गोर् कुऱळुरु वायडित्, ताय ळन्दुल हङ्ग डरक्कोळ्वान्
मीयॅ ळुन्द करियवन् मेनियिल्, पोयॅ ळुन्दु परन्ददु वॅम्बुहै 1187

ओर् कुऱळ् उरुवाय्–पहले एक वामन के आकार में; तर–(गये और दान) दिये जाने पर; उलकङ्कळ्–लोकों को; अटि ताय्–अपने चरणों से लाँघकर; अळन्तु कोळ्वान्–नाप लेने के लिए; मी ॲळुन्त–आकाश में ऊँचे बढ़े हुए; करियवत्–काले रंग के त्रिविक्रम श्रीविष्णु के; मेनियिल्–शरीर की तरह; वॅम् पुकै–गरम धुआँ; अङ्कु ॲळुन्तु पोय्–वहाँ से उठकर गया और; परन्ततु आयतु–सर्वत्र व्याप्त हुआ। ११८७

गरम धुआँ घने रूप से उठा और लंका के ऊपर सारे आकाश में फैला। (कवि की कल्पना है कि) वह, पहले वामन के रूप में जाकर दान प्राप्त करने के बाद तीनों लोकों को अपने चरणों से नापकर अपना लेने के निमित्त जो त्रिविक्रम के रूप में संवर्द्धित हुए उन विष्णु के समान रहा। ११८७

नील निऱ्ऱ निऱत्तन कीळ्निलै, मालिन् वॅञ्जिन यानैयै मानुव
मेल्वि ळुन्दॅरि मुऱ्ऱुम् विळुङ्गलाल्, तोलु रिन्दु कळन्ऱन तोलॅलाम् 1188

नीलन् निऱ्ऱ–काले; निऱत्तत–रंग वाले; तोल् ॲलाम्–गज सभी; मेल् विळुन्तु–ऊपर लगकर; ॲरि–आग के; मुऱ्ऱुम् विळुङ्कलाल्–पूरी तरह से आवृत कर लेने से; तोल् उरिन्तु–चमड़ा उघड़कर; कळन्ऱत–दूर हो गया, होकर; कीळ् निलै–पूरब की दिशा के; मालित्–इन्द्र के; वॅम् चित्त यानैयै–(ऐरावत नाम के) भयंकर क्रोधी गज के; मानुव–समान हो गये। ११८८

लंका के गजों के चर्म आग में जलकर दूर हो गये। तब वे सफ़ेद होकर सब पूर्व दिशा के पालक इन्द्र के ऐरावत के समान लगे। ११८८

मीदि मङ्गलन् दालन्न वॅम्बुहै, शोदि मङ्गलत् तीयॊडुञ् जुऱ्ऱलाल्
वीदि मङ्गुलिन् वीळ्पुनल् मीप्पडर्, ओदि मङ्गळिन् माद रॊदुङ्गिनार् 1189

मीतु–ऊपर; इमम् कलन्ताल् अन्त–हिम-मिश्रित-सा जो रहा; वॅम्पुकै–उस धूम के; चोति मङ्कु अल्–ज्योति जिसकी मन्द नहीं हो रही थी (अमन्दप्रभ); अ तीयॊटु–उस अग्नि के साथ; चुऱ्ऱलाल्–मण्डल बनाता रहा, इसलिए; वीति–वीथियों में; मातर्–स्त्रियाँ; मङ्कुलिन् वीळ् पुनल्–मेघ से गिरनेवाले जल को छोड़; मी पटर्–आकाश में उड़ते रहे; ओतिमङ्कळिन्–हंसों के समान; ऒतुङ्कितार्–हटकर चलीं। ११८९

हिमावृत-सा वह धुआँ अभेदज्योति अग्नि के साथ मण्डलाकार फैल रहा था। तब राक्षसियाँ उससे बचकर दूर हट जाने लगीं। वे उन हंसों के समान थीं, जो मेघ से गिरे, भूमि पर जमे अशुद्ध जल को छोड़कर उपर उड़े जा रहे हों। ११८९

पॉडित्तॅ ऴुन्द पॅरुम्बॊरि पोवन
इडिक्कु लङ्गळिन् वीऴ्वन वॅङ्गणुम्
वॅडित्त वेलै वॅदुम्बिड मीन्गुलम्
तुडित्तु वॅन्दु पुलर्न्दुयिर् शोर्न्दवाल् 1190

पॉटित्तु ॲऴुन्त–कणों के रूप में उठे; पॅरुम् पॉरि–बड़े-बड़े अग्निकण; पोवन–ऊपर जाते; वीऴ्वन–नीचे गिरते; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; इटि कुलङ्कळिन्–अशनिवृन्दों के समान; वॅटित्त–फटे; वेलै वॅतुम्पिट–(इसलिए) समुद्र खौला, इसलिए; मीन् कुलम्–मत्स्यकुल; तुटित्तु–तड़पे; वॅन्तु–जले; पुलर्न्तु–झुलसे; उयिर् चोर्न्त–प्राण से हाथ धोये (उन्होंने)। ११९०

बड़े बड़े अंगारे छूटे और फैले। वे ऊपर जाते और नीचे गिर जाते। और सर्वत्र अशनिकुल के समान घोर शब्द के साथ फटे। समुद्र खौल गया। झषककुल तड़पे, जले, झुलसे और प्राणहीन हो गये। ११९०

परुहु तीमडुत् तुळ्ळुऱप् पऱ्ऱलाल्, अरुहु नीडिय वाडहत् तारैहळ्
उरुहि वेलैयि नूडुपुक् कुऱ्ऱन, तिरुहु पॊन्नॅडुन् दण्डिऱ् ऱिरण्डवाल् 1191

परुकु–सबको खाने का स्वभाव रखनेवाली; ती–आग; मटुत्तु–सर्वत्र व्याप्त होकर; उळ् उऱ–अन्दर पहुँचकर; पऱ्ऱल् आल्–जलती है, इसलिए; अरुकु–पास रही; नीटिय–लम्बी; आटक तारैकळ्–स्वर्णतारें; उरुकि–पिघलकर; वेलैयिन् ऊटु–समुद्र में; पुक्कु उऱ्ऱन–जा पहुँचीं; तिरुकु नॅटुम्–पेचदार लम्बे; पॊन् तण्टिल्–स्वर्णदण्डों के समान; तिरण्ट–पुष्ट और मोटे दिखायी दिये। ११९१

सबको भस्म करने के स्वभाव वाली अग्नि सर्वत्र व्यापकर बाहर क्या अंदर से भी जलाने लगी तो स्वर्ण पिघलकर धारों के रूप में बहने लगा। सभी धारें समुद्र में गयीं और पेचदार स्वर्णदण्डों में परिवर्तित हो गयीं। ११९१

उरैयिन् मुन्दुल हुण्णु मॅरियदाल्, वरैनि वन्दन पन्मणि माळिहै
निरैयि नीणॅडुञ् जोलैयि निऱ्कुमो, तरैयुम् वॅन्ददु पॊन्नॅनुन् दन्मैयाल् 1192

उरैयिन् मुन्तु–(साधु के शाप) वचन के समान शीघ्र; उलकु उण्णुम् ॲरि अतु–लोकदाहक वह आग; वरै–पर्वत के समान; निवन्तन–उन्नत; पन् मणि माळिकै–विविध रत्नमय प्रासादों की; निरैयिन्–पंक्तियों के साथ; नीळ् नॅटुम् चोलैयिन्–बहुत बड़े विशाल उद्यानों तक से; निऱ्कुमो–सीमित रह जायगी क्या; तरैयुम्–भूमि भी; पॊन् ॲनुम् तन्मैयाल्–स्वर्ण होने के कारण; वॅन्ततु–जल गयी। ११९२

साधुओं के शाप बहुत शीघ्र कार्यान्वित हो जाते हैं। उसी शीघ्रता की लोकदाहक आग भी क्या उन्नत विविध रत्नमय प्रासादों और बड़े-बड़े उद्यानों तक सीमित रहेगी ? लंका की भूमि भी सोने की थी। अतः भूमि भी जलकर भस्म बन गयी। ११९२

कल्लि नुम्वलि दाम्बुहैक् कर्रैयाल् ॲल्लि पॅर्र् दिमैयवर् नाट्टिडम्
वल्लि कोलि निवन्दन मामणिच्, चिल्लि योडुन् दिरण्डन तेरॅलाम् 1193

कल्लितुम् वलितु–पत्थर से भी घना; आम्–जो रहा; पुकै कर्रैयाल्–उस धुएँ की राशियों से; इमैयवर् नाट्टु इटम्–देवलोक का सारा स्थल; ॲल्लि पॅर्रतु–अन्धकार से भर गया; वल्लि कोलि–ध्वजाओं से अलंकृत करके; निवन्तन–ऊँचे बनाये गये; तेर् ॲलाम्–सारे रथ; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नों से सजे हुए; चिल्लियोटुम्–चक्रों के साथ; तिरण्टन–जलकर एक पिंड बन गये। ११९३

धुएँ की लटें पत्थर से भी कठोर थीं। उनके घने व्यापने से देवों के लोकों के सारे स्थल अंधकारमग्न हो गये। ध्वजाओं से अलंकृत बड़े-बड़े रथ जो थे, वे सब अपने श्रेष्ठ रत्नजडित पहियों के साथ पिघलकर पिण्डाकार बन गये। ११९३

पेय मन्ऱिनि लन्ऱु पिऱङ्गॅरि, माय रुण्ड नऱवै मडुत्तदाल्
तूय रॅन्ऱिलर् वैहिडन् दुन्निनाल्, तीय रन्ऱियुन् दीमैयुञ् जॅय्वराल् 1194

पेय मन्ऱिनिल्–मधुशालाओं में; अन्ऱु–उस दिन; पिऱङ्कु ॲरि–(जो) जली (वह) आग; मायर् उण्ट–मायाचतुर राक्षसों से पीत; नऱवै–सुरा को; मटुत्तताल्–स्वयं पीने (उसमें लगने) से; तूयर् ॲन्ऱु इलर्–अपवित्र; वैकु इटम्–(लोगों के) वासस्थान; तुन्निनाल्–जायँ तो; तीयर् अन्ऱियुम्–(ऐसे जो जाते हैं वे) बुरे नहीं होने पर भी; तीमैयुम् चॅय्वर्–बुरा काम करेंगे। ११९४

मधुशालाओं में जो आग लगी उसने वहाँ रही ताड़ी का अशन किया। ताड़ी वञ्चक राक्षसों का पान है। पवित्र आग का उसका अशन करना इस मसल का प्रमाण है कि अपवित्र लोगों के स्थान में जानेवाले स्वयं बुरे न होने पर भी बुरे काम कर देते हैं। ११९४

तऴुवि लङ्गै तऴङ्गॅरि दाय्च्चॅल, वऴुविल् वेलै युलैयिन् मऱुहिन
ॲऴुहॊ ऴुञ्जुडर्क् कर्रैशॅन् ऱॅय्दलाल्, कुऴुवु तण्बुनन् मेहङ् गॊदित्तवे 1195

इलङ्कै तऴुवु–लंका में लगकर; तऴङ्कु ॲरि–शब्द के साथ जलनेवाली आग; ताय् चॅल–उछल चली, इसलिए; वऴुवु इल् वेलै–अपृथक् रहनेवाला सागर; उलैयिन्–(अन्न पकाने के लिए) खौलते पानी के समान; मऱुकिन–खौल गया; ॲऴु–ऊपर उठती; कॊऴुम् चुटर् कर्रै–घनी आग की लटें; चॅन्ऱु ॲय्तल् आल्–ऊपर जा पहुँचीं, इसलिए; कुऴुवु–घुमड़े हुए; तण् पुनल् मेकम्–शीतल जल-भरे मेघ; कॊतित्त–गरम हो तपे। ११९५

लंका पर लगी आग सशब्द फैलती हुई चली। इसलिए अपृथक् रहनेवाले सागर का जल धान पकाने के लिए खौलाये गये जल के समान खौल गया। ऊपर उठनेवाली घनी लपटें आकाश तक गयीं, इस वजह से समूह में रहे शीतल जल-भरे मेघ गरम हो गये। ११९५

ऊनि लोडु मॅरियी डुयङ्गुवार्, कानि लोडु नॅडुम्बुनल् काणॅना
वान्ि लोडु महळिर् मयङ्गिन्नार्, वेनि लोडरुन् देरिडे वीऴ्न्दन्नर् 1196

ऊन्िल् ओटुम्–मज्जे के अन्दर लगती जलती; ॲरि ओटु–आग से; उयङ्कुवार्–दुःखी; वान्िल् ओटु–अन्तरिक्ष में भागनेवाली; मकळिर्–राक्षसियाँ; मयङ्कित्नार्–वेहोश हुईं; कान्िल् ओटुम्–वन में वहता; नॅटुम् पुनल्–वड़े प्रवाह; काण् ॲना–देखो कहकर; वेन्िल् ओटु–ग्रीष्म में वहता-सा दिखनेवाले; अरुम् तेर् इटै–अपूर्व मृगजल में; वीऴ्न्ततर्–गिरीं । ११९६

स्त्रियों के मज्जों के अन्दर भी आग पहुँचकर जलाने लगी। असह्य वेदना के साथ वे अन्तरिक्ष में भागीं, पर वेसुध हो गयीं। उनके सामने मृगजल (तमिऴ में इसे 'भूतरथ' कहते हैं।) देखा। कहने लगीं कि देखो जंगल में वहनेवाला जलप्रवाह इधर है! वे पास गयीं और गिरीं। ११९६

तेन् वाम्बॊळि ऱीप्पडच् चिन्दिय, शोनै मामलर्त् तुम्वि तॊडर्न्दयल्
पोन् तीच्चुडर् पुण्डरि हत्तडम्, 'कान् मामॅन वीऴ्न्दु करिन्दवे 1197

तेन्–शहद की मक्खियाँ; अवाम्–जहाँ चाव के साथ आती हैं; पॊळिल्–उन उद्यानों में; ती पट–आग लगी, इसलिए; चिन्तिय–तितर-वितर हुए; चोनै मा मलर्–घटा-सम वड़े फूलों पर; तुम्पि–(मँड़रानेवाले) भ्रमर; तॊटर्न्तु–उसमें लगातार लगकर; अयल् पोन्–उससे दूर भी व्याप्त; ती चुटर्–अग्नि की ज्वालाओं को; पुण्टरिक तटम् कानम् आम्–विशाल पुण्डरीकवन है; ॲन–ऐसा सोचकर; वीऴ्न्तु–गिरकर; करिन्त–राख बने। ११९७

उद्यानों में भी आग लगी, जहाँ शहद की मक्खियाँ चाव के साथ आती हैं। आग उद्यानों के उस पार भी फैल गयी। घटा-सम जो पुष्पों पर मँड़रा रहे थे, वे आग से डरकर तितर-वितर हुए और दूर के स्थानों पर लगी आग के विस्तार को विशाल पुण्डरीक-वन समझकर उसमें जाकर गिरे और भस्म हो गये। ११९७

नऱ्क डम्मिदु नम्मुयिर् नायहर्, मऱ्क डन्दॅऱ माण्डन्नर् वाऴ्विलम्
इऱ्क डन्दिनि येहलम् यामॅन, विऱ्क डन्द नुदलियर् वीडिन्नार् 1198

विल् कटन्त–धनु से भी अधिक मनोरम; नुतलियर्–भाल वाली राक्षसियाँ; नम् उयिर् नायकर्–हमारे प्राणप्रिय पति; मर्कटम् तॅऱ–मर्कट के मारने से; माण्टन्नर्–मर गये; याम्–हम; वाऴ्वु इलम्–(सुहागिन के) जीवन से रहित हो गये; इल् कटन्तु–घर से बाहर; इन्ि–अव; एकलम्–नहीं जा सकतीं; ॲन–ऐसा सोचकर; इतु नल् कटम्–यह अच्छा कर्तव्य बना; ॲन–यह निश्चय करके; वीटिन्नार्–प्राण त्याग गयीं। ११९८

धनु के रूप की सुन्दरता को हरानेवाले ललाटों से शोभित राक्षसियों ने सोचा कि हमारे प्राणनाथ मर्कट के मार डालने से मर गये। अब

(दक्षिण में प्रचलित प्रथा के अनुसार विधवाएँ) हम बाहर कहीं खुले में आ-जा भी नहीं सकतीं। यही अच्छा काम है— आग में गिरकर सती हो जाएँ। यह निर्णय करके वे आग में कूद पड़ीं। ११९८

पूक्क रिन्दु पॉरिप्पॉरि यायडै, नाक्क रिन्दु शिनैनरुञ् जाम्बराय्
मेक्क रिन्दु नॅडुम्बणै वेरुरक्, काक्क रिन्दु करुङ्गरि यान्वे 1199

पू–सारे फूल; करिन्तु–झुलसकर काले बनकर; पॉरि पॉरियाय्–राख के कण बने; अटै ना–पत्र रूपी जिह्वाएँ; करिन्तु–झुलसीं और राख बनीं; चित्तै नरुम् चाम्पराय्–डालियाँ अच्छी क्षार बनीं; मे करिन्तु–ऊपर के भाग जले; नॅटुम् पणै–बड़ी शाखाएँ और; वेर् उर–जड़ एक बनकर (समान रूप से); का करिन्तु–उपवन जलकर राख बना, इसलिए; करुम् करि आत–काली राख के ढेर बन गये। ११९९

उद्यानों में फूल जले; जिह्वा के स्थान रहे पत्र जले; और छोटी टहनियाँ जलीं। ऊपर के अंश जले। बड़ी-बड़ी डालों की जो गति हुई वही जड़ों की भी हुई। इस भाँति सारे के सारे उद्यान जलकर भस्म के ढेर बन गये। ११९९

कार्मु ळुक्क वॅळुङ्गनऱ् कट्रैबोय्, ऊर्मु ळुक्क वॅदुप्प वुरुहिन
शोरीं ळुक्क मरामैयिऱ् ऱुन्नुबॉन्, वेर्वि डुप्पदु पोन्ऱन विण्णॅलाम् 1200

कार् मुळुक्क–मेघों को आवृत करते हुए; अॅळुम्–उठी; कतल् कट्रै–अग्नि की ज्वालाएँ; पोय्–जाकर; ऊर् मुळुक्क–(व्योम-) लोक भर को; वॅतुप्प–जलाने लगीं तो; उरुकित चोर् ऑळुक्कम्–पिघलकर गिरनेवाली अग्निमय धाराएँ; अऱामैयिल्–टूटती नहीं थीं, इसलिए; विण् अॅलाम्–सारे व्योमलोक; तुन्नु–घने रूप से; पॉन् वेर्–स्वर्ण की जड़ें; विटुप्पतु–निःसृत करते; पोन्ऱत–जैसे लगे। १२००

आग की लपटें उठीं और मेघों को आवृत कर गयीं। वह आकाश में फैली और व्योमलोकों को भी ताप देने लगी। तब वहाँ के स्वर्ण पिघले और तारें बनीं। उनको देखने पर ऐसा लगा, मानो व्योमलोक घनी स्वर्णमयी जड़ें निकाल रहे हों। १२००

नॅरुक्कि मीमिशै योङ्गु नॅरुप्पळल्
शॅरुक्कुम् वॅण्गदिर्त् तिङ्गळैच् चॅन्ऱुर
उरुक्कि मॅय्यि नमुद मुहुत्तलाल्
अरक्क रुञ्जिल राविपॅर्ऱारो 1201

नॅरुक्कि–बहुत घने रूप से; मी मिचै–आकाश पर; ओङ्कु–उठ रही; नॅरुप्पु अळल्–आग की लपट; चॅरुक्कुम्–गर्वीले; वॅण् कतिर् तिङ्कळै–श्वेतकिरण चन्द्रमण्डल में; चॅन्ऱु उर–जा लगी, तो; उरुक्कि–उसको पिघलाकर; मॅय्यिन्–(राक्षसों के) शरीर पर; अमुतम् उकुत्तलाल्–अमृत बरसाने से; अरक्करुम् चिलर्–कुछ राक्षस भी; आवि पॅऱ्ऱार्–पुनः जीवित हो गये। १२०१

ऊपर की ओर उठती चलनेवाली घनी विवृद्ध अग्नि गर्वीले श्वेत किरणों के चन्द्रमण्डल में जा लगी। तब वह पिघला और अमृत गिरने लगा। वह अमृत कुछ मृतक राक्षसों के शवों पर गिरा और उन्हें पुनः प्राण मिल गये। १२०१

परुदि पऱ्ऱि निमिर्न्दॅऴु पैङ्गनल्
करुहि मुऱ्ऱु मॅरिन्दॅऴु कार्मऴै
अरुहु शुऱ्ऱु मिरुन्दैय दायहल्
उरुहु पॉऱ्ऱिर ळॊत्तन ऩॊण्गदिर् 1202

परुति पऱ्ऱि–सूर्यमण्डल को पकड़कर; निमिर्न्तु ऍऴु–ऊपर उठनेवाली; पैम् कतल्–इस नवीन आग से; करुकि–झुलसकर; मुऱ्ऱुम् ऍरिन्तु–पूर्ण रूप से जलकर; ऍऴु–उठे; कार् मऴै–काले मेघ; अरुकु चुऱ्ऱुम्–पास, चारों ओर; इरुन्तै अतु आय्–रहनेवाले कोयले के समान दिखे; ऑळ् कतिर्–उज्ज्वल किरणमाली; अकल् उरुकु–(मिट्टी के) दिये-मध्य पिघलनेवाले; पॊन् तिरळ्–स्वर्णपिंड; ऑत्ततन्–समान रहा। १२०२

सूर्यमण्डल को भी पकड़कर यह अनोखी आग ऊपर गयी। उससे पूर्ण रूप से मेघ झुलस गये और वे काले मेघ सूर्य के चारों ओर कोयलों के समान लगे। तब उज्ज्वल किरणमाली मिट्टी के कटोरे में पिघलनेवाले स्वर्ण के समान लगा। [इसमें सुनार की अँगीठी का दृश्य वर्णित है। मेघ अँगीठी के जलते कोयले हैं। सूर्यमण्डल मिट्टी के कटोरे के समान लगा जिसमें रखकर सुनार सोने को पिघलाता है और सूर्य उस स्वर्ण के समान दिखा। दूसरी दृष्टव्य वस्तु एक ही स्थान पर (१२०१, १२०२वें पद्यों में) चन्द्र और सूर्य दोनों का वर्णन है। मूल टीकाकार का अनुमान है कि पूर्णिमा की रात को हनुमान ने सीता का अन्वेषण किया और दूसरी रात के आखिरी पहर में उसने लंका में आग लगायी।]। १२०२

तळैकॉ ळुन्दिय तावॅरि तामणि
मुळैकॉ ळुन्दि मुहत्तिडै मॊय्त्तपेर्
उळैकॉ ळुन्द वुलन्दुलै वुऱ्ऱऩ
वळैकु ळम्बिन् मणिनिऱ वाशिये 1203

तळै–(अश्व के) पैरों को बाँधने के पाश को; कॉळुन्तिय–जलाकर; तावु ऍरि–ऊपर उछली आग; तामणि–गले के रस्सों के साथ; मुळै–खूँटे को भी; कॉळुन्ति–जलाकर; मुकत्तु इटै मॊय्त्त–मुख पर घने रूप से उगे रहे; पेर् उळै–लम्बे वालों को; कॉळुन्त–जलाकर; वळै कुळम्पिन्–कुंचित खुरों वाले; मणि निऱ–सुन्दर रंगीन; वाचि–वाजी; उलन्तु–मुरझाकर; उलैवु उऱ्ऱन–मर गये। १२०३

अश्वशालाओं में अग्नि ने अश्वों के पैरों के बन्धन-रस्सी जलायी;

फिर गले की रस्सियाँ जलायीं; खूँटे जलाये; फिर अश्वों के मुखों पर उगे लम्बे बाल जलाये। इस तरह कुञ्चित खुरों के और सुन्दर रंगीन अश्व तपे, संकटग्रस्त हुए और आख़िर जल मरे। १२०३

ऍळुन्दु पॉऱ्ऱलत् तेऱलि नीळ्पुहैक्
कॉळुन्दु शुऱ्ऱ वुयिर्प्पिलर् कोळुऱ
अळुन्दु पट्टुळ रॉत्तयर्न् दारळल्
विळुन्दु मुऱ्ऱिनर् कूऱ्ऱै विळुङ्गुवार् 1204

कूऱ्ऱै विळुङ्कुवार्–यम को (यों ही) निगल सकनेवाले राक्षस; ऍळुन्तु–उठकर; पॊन् तलत्तु–स्वर्ण (स्वर्ग) लोक को; एऱलिन्–जब चढ़ जाने लगे; नीळ्–लम्बे; पुकै–धुएँ के; कॊळुन्तु–किसलय (अग्र भाग) के; चुऱ्ऱ–घेर लेने से; उयिर्प्पु इलर्–श्वास न छोड़ सकें; कोळ् उऱ–इस रीति से आवृत होकर; अळुन्तु पट्टु उळर् ऒत्तु–फँसकर मरनेवालों के समान; अयर्न्तार्–बेहोश होकर; अळल् विळुन्तु–आग में गिरकर; मुऱ्ऱिनर्–चल बसे। १२०४

राक्षस ऐसे थे कि वे यम को यों ही निगल ले सकते थे। वे आग से बचने के लिए अन्तरिक्ष में उठकर स्वर्णलोक स्वर्ग में जाने लगे। तब धुएँ के अग्रभाग ने उन्हें घेर लिया। तब दम घुटकर धुएँ से आवृत होकर मृतक के समान बेसुध हो गये और अग्नि में गिरकर मर गये। १२०४

कोशि हत्तिनि लुऱ्ऱ कॉळुङ्गनल्, तूशि नुत्तरि हत्तॉडुम् जुऱ्ऱुऱा
वाश मैक्कुळल् पऱ्ऱ मयङ्गिनार्, पाशि ळैप्पर वेप्पड रल्हुलार् 1205

पचुमै इऴै–चमकदार स्वर्णाभरणधारिणी; परवै पटर्–समुद्र-सम विशाल; अल्कुलार्–भगों से युक्त राक्षस-स्त्रियों के; कोचिकत्तितिल्–रेशमी वस्त्रों में; उऱ्ऱ–लगी; कॊळुम् कनल्–घनी आग; उत्तरिक तूचिन् ओटुम्–उत्तरीय (वस्त्र) के साथ भी; चुऱ्ऱु उऱा–घेरकर लगी; वाचम् मै कुळल्–सुगन्धित काले केश में भी; पऱ्ऱ–लगी; मयङ्कितार्–तो चक्रित हो गयीं। १२०५

उज्ज्वल मनोरम आभरणधारिणी, समुद्र-विशाल भगों वाली राक्षस-स्त्रियों के कौशेय अधोवस्त्रों में पहले आग लगी। फिर उत्तरीय वस्त्रों में लगी। बाद सुगन्धपूर्ण काले केश भी आग के वश हो गये। बेचारियाँ क्या करतीं ? भ्रमित और चक्रित हो गयीं। १२०५

निलवि ळक्किय तुहिलिन नॅरुप्पुण निरुदर्
इलवि नुञ्जिल मुत्तुळ वॅनुनहै यिळैयार्
पुलवि यिन्गरै कण्डव रमुदुहप् पुणरुम्
कलवि यिन्गरै कण्डिलर् मण्डिनर् कडन्मेल् 1206

पुलवियिन्–संसर्ग की; करै कण्टवर्–विद्या के पारंगत (पूरा कर चुके थे); निरुतर्–वे राक्षस; इलवितुम्–लाल सेमर में; चिल मुत्तु उळ–कुछ मोती भी हैं;

अँतुम्–ऐसा माना जाय, इस प्रकार; नकै इळैयार्–दाँतों से शोभायमान तरुणियाँ; निल विळक्किय तुकिलितै–चाँदनी-से महीन वस्त्रों को; नॆरुप्पु उण–आग के जला देने से; अमुतु उक–अत्यन्त सुख का अमृत जिसमें छलक आता है; पुणरुम्–वैसा संगमित होनेवाले; कलवियिऩ् करै–संसर्ग की चरम सीमा को; कण्टिलर्–न पाकर; कटल् मेल् मण्टिऩर्–समुद्र में जाकर गिर गये। १२०६

संसर्ग में लगे रहे राक्षस-दम्पती। लाल सेमर में कुछ मोती हों, ऐसे दाँतों वाली स्त्रियाँ और उनके पुरुष प्रणय-विद्या-पारंगत थे। उनके चाँदनी-सम वस्त्र आग में जल गये। इसलिए सुख अमृत के समान जिसमें निःसृत होता है, उस संसर्ग-कार्य के अन्त में आ नहीं पाये थे। उसी स्थिति में वे उठ भागे और समुद्र में जाकर मिलकर गिरे। १२०६

पञ्ज रत्तॊडु पशुनिऱक् किळिवॆन्दु पदैप्प
अञ्जनक् कण्णि ऩरुविनीर् मुलैमुत्तिऱ् ऱलैप्पक्
कुञ्ज रत्तऩ कॊऴुनरैत् तऴुवुरुङ् गोदिप्पाल्
मञ्जि डैप्पुहु मिऩ्ऩॆऩप् पुहैयिडै मऱैन्दार् 1207

पचुमै निऱ किळि–हरे रंग के शुक; पञ्चरत्तु ऒटु–पिंजरों के साथ; वॆन्तु–झुलसकर; पतैप्प–तड़पते हैं, तब; अञ्चऩ कण्णिऩ्–अंजनयुक्त नेत्रों से; अरुवि नीर्–नदी के समान बहनेवाला अश्रुजल; मुलै मुत्तिल्–कुचाग्र पर; अलैप्प–गिरकर दुःख देते हैं और; कुञ्चरत्तु अऩ–कुंजर के समान; कॊऴुनरै–पतियों को; तऴुवु उरुम्–आलिंगन करने की (स्वर्ग पहुँचकर); कोतिप्पाल्–तपिश से; मञ्चु इटै–मेघमध्य; पुकु मिऩ् ऎऩ–घुसती बिजली के समान; पुकै इटै–धुएँ के मध्य; मऱैन्तार्–अदृश्य हो (मर) गये। १२०७

राक्षसियों ने देखा कि उनके पले हरे रंग के शुक उनके पिंजरों के साथ जलते और तड़पते हैं। उनकी अंजनयुक्त आँखों से अश्रुजल सरिता के समान बहे और कुचाग्र पर गिरे। वे दुःखी हुईं और अपने मृत पतियों का, स्वर्ग में जाकर आलिंगन करने की अपार तापक इच्छा से मेघमध्य घुसनेवाली बिजलियों के समान धुएँ के अन्दर घुसीं और मरकर अदृश्य हो गयीं। १२०७

वरैयि नैप्पुरै माडङ्ग ळॆरिपुह महळिर्
पुरैयिल् पॊऩ्कलऩ् विल्लिड विशुम्बिडैप् पोवार्
करैयि ऩुट्पुहैप् पडलैयिऩ् करिन्दऩर् कलङ्गित्
तिरैयि ऩुट्पॊलि शित्तिरप् पावैयिऩ् शॆयलार् 1208

वरैयितै–पर्वतों से; पुरै–तुल्य; माटङ्कळ्–प्रासादों में; ऎरि पुक–आग लगी तो; मकळिर्–स्त्रियाँ; पुरै इल्–निर्दोष; पॊऩ् कलऩ्–स्वर्णाभरण; विल् इट–आभा निकालते; विचुम्पु इटै पोवार्–अन्तरिक्ष में जातीं; करै इल्–अपार; नुण् पुकै–सूक्ष्म धुएँ के; पटलैयिल्–पटल में; कलङ्कि–रंग बदलकर; तिरैयिऩ् उळ्

पॊलि–पर्दे के पीछे विद्यमान; चित्तिर पावैयिऩ्–चित्रप्रतिमा-जैसे; चॆयलार्–व्यवहार करनेवाली बनकर; करिन्तत्तर्–प्रभा खोकर झुलस गयीं। १२०८

पर्वत-जैसे ऊँचे और बड़े प्रासादों में आग लगी तो वहाँ की स्त्रियाँ अपने दोषहीन स्वर्णाभरणों की कांति बिखेरते हुए अन्तरिक्ष में जाने लगती हैं। अपार धुएँ का पटल महीन भी है। उसके पीछे वे मन्दप्रभ दिखती हैं, जैसे पर्दे के पीछे से दिखनेवाली चित्र-प्रतिमाएँ। वे आग में झुलसती हैं और मर जाती हैं। वह कार्य भी, वे ही प्रतिमाएँ वैसा हो रही हों, ऐसा दिखता है। १२०८

अहरु वुऩ्ऩरुञ् जाऩ्दमु मुदलिय वत्तेहम्
बुहरि नऩ्मरत् तुरुवॆंड़ि युलहॆंलाम् बोर्प्पप्
पहरु मूऴियिड़् कालवॆंङ् गडुङ्गऩल् परुहुम्
महर वेलैयिऩ् वॆंऩ्दऩ नऩ्दऩ वनङ्गळ् 1209

पकरुम्–(ग्रन्थों में) उक्त; ऊऴियिल्–युगान्त में; काल वॆंम् कटुम् कऩल्–प्रचण्ड और उग्र कालाग्नि द्वारा; परुकुम्–सोखे हुए; मकर वेलैयिऩ्–मकरालयों के समान; नन्तऩ वऩङ्कळ्–नन्दन वन; अकरु उम्–अगरु; नरुम् चान्तमुम्–और सुगन्धित चन्दनतरु; मुतलिय–आदि; अत्तेकम्–अनेक; पुकर् इल्–दोषहीन; नल् मरत्तु–श्रेष्ठ तरुओं का; उरु वॆंड़ि–स्वाभाविक सुवास; उलकु ऍलाम्–सारे लोक में; पोर्प्प–व्याप जाय, ऐसा; वॆंऩ्तऩ–जल गये। १२०९

ग्रन्थों में युगान्तकालीन भयानक कालाग्नि के मकरालयों को सोख लेने की बात कही गयी है। उन मकरालयों के समान नन्दन वन जले। अगरु, सुबासित चन्दन-तरु आदि जले। उनसे निकली सुगन्ध सारी दुनिया पर छा गयी। इस भाँति वे सब जल गये। १२०९

मिऩ्ऩल्प रॆंऩ्दॆंऴु कॊऴुञ्जुड रिलङ्गैयूर् विऴुङ्गि
निऩैव रुम्बॆंरुन् दिशैयुड़ विरिहिऩ्ड़ निलैयाल्
शिनैप रऩ्दॆंरि शेर्ऩ्दिला निऩ्ड़वुञ् जिलवॆंम्
कऩल्प रऩ्दवुन् दॆंरिन्दिल कड़्पहक् कानम् 1210

मि(ऩ्) ऩल् परन्तु–बिजली-सा प्रकाश फैलाकर; ऍऴु–उठनेवाली; कॊऴुम् चुटर्–घनी आग; इलङ्कै ऊर् विऴुङ्कि–लंका नगरी को निगल (जला) कर; निऩैवु अरुम्–अचित्य; पॆरुम् तिचै–लम्बी दिशाओं में; उड़–फैली; विरिकिऩ्ड़ निलैयाल्–विस्तार के कारण; कड़्पक कातम्–कल्पकानन; चिल–कुछ; चिऩै परन्तु–डालियों में फैली; ऍरि–आग; चेर्न्तु इला निऩ्ड़वुम्–न जला पायी, ऐसे; वॆंम् कऩल् परन्तवुम्–भयंकर आग से जल गये ऐसे; तॆरिन्तु इल–इनमें भेद नहीं जाना जा सका। १२१०

विपुल आग की लपटें बिजली के समान उठीं। उन्होंने सारी लंका को भस्म कर डाला। फिर वे लम्बी दिशाओं में फैलीं। उनका विस्तार

ऐसा था कि कल्पकाननों में जली डालियों वाले तरुओं और विना जले रहनेवाली डालियों के तरुओं में भेद ही नहीं मालूम हो रहा था। (कल्पतरु स्वयं प्रकाशमान थे। इसलिए यह भ्रम हुआ।)। १२१०

मूळुम् वॆम्बुहै मुऱ्ऱुऱच् चुऱ्ऱिय मुळ्नीर्
माळुम् वण्णमा मलैनॆडुन् दलैदोऱुम् वळङ्गिप्
पूळै वीयॆऩप् पोवऩ पुणरियिऱ् पुऩलिन्
मीळ यावैयुन् दॆरिन्दिल मुहिऱ्कण मिशैये 1211

मुकिल् कणम्–मेघसमूह; मुळु नीर्–पूरा जल; माळुम् वण्णम्–रिक्त करते हुए; मा मलै–बड़े-बड़े पर्वतों के; नॆटुम् तलै तोऱुम्–उच्च शिखरों पर; वळङ्कि–बरसाकर; पुणरियिल्–समुद्र के; पुऩलिऩ् मीळ–जल में गये; पूळै वी ॲऩ–'पूळै' नामक फूल के समान श्वेत बने; पोवऩ–जो गये; मूळुम् वॆम् पुकै–लंका में व्याप्त भयंकर धुआँ; मुऱ्ऱु उऱ–सर्वत्र फैला रहा, इसलिए; यावैयुम् तॆरिन्तिल–(मार्ग या मार्ग में स्थित पदार्थ) कुछ भी न जान सके; मिचैये–आकाश में ही; चुऱ्ऱिय–घूमते-भटकते रहे। १२११

मेघसमूह अपना सारा जल पर्वतों के उच्च शिखरों पर बरसाकर रिक्त हो गये। वे समुद्र से फिर से जल ग्रहण करने के वास्ते 'पूळै' नामक फूल के-से श्वेत रंग मे गये। पर सर्वत्र धुआँ घेरा रहा। इसलिए मेघसमूहों को विदित नहीं हुआ कि मार्ग कहाँ है और मार्ग में क्या-क्या पड़े है। इसलिए वे ऊपर ही ऊपर घूमते-भटकते रहे। १२११

मिक्क वॆम्बुहै विळुङ्गलिऩ् वॆळ्ळियङ् गिरियुम्
ऑक्क वॆऱ्पिनो डऩ्ऩमुङ् गाक्कैयि ऩुरुव
पक्क वेलैयिऩ् पडियदु पाऱ्कडऩ् मुडिविल्
तिक्क यङ्गळुङ् कयङ्गळुम् वेऱुमै तॆरिया 1212

मिक्क–अत्यधिक; वॆम् पुकै–भयंकर धुएँ के; विळुङ्कलिऩ्–आवृत कर लेने से; वॆळ्ळि अम् किरियुम्–रजतगिरि जो रही, वह श्वेत कैलास गिरि भी; वॆऱ्पितोटु ऑक्क–अन्य पर्वतों के समान (काली) बन गयी; अऩ्ऩमुम्–हंस पक्षी भी; काक्कैयिऩ् उरुव–कौओं के रंग के हुए; पाल् कटल्–(श्वेत) क्षीरसागर; पक्क वेलैयिऩ्–पास रहे (अन्य) समुद्र के; पटियतु–स्वभाव (रंग) का हो गया; मुटिविल्–दिगन्त के; तिक्कयङ्कळुम्–दिग्गज; कयङ्कळुम्–अन्य गजों से; वेऱुमै तॆरिया–भिन्न नहीं दिखे। १२१२

विपुल धुएँ के घेरने के कारण कैलास, जो रजतगिरि के रूप में श्वेत रंग की गिरि थी, अब अन्य गिरियों के समान काली हो गयी। हँस कौए-से वन गये। श्वेत (क्षीर-) सागर पास के अन्य समुद्रों के समान रंग वदल गये। दिगंतों में रहनेवाले दिग्गज भी अब श्वेत नहीं रहे, पर अन्य साधारण गजों से भिन्न नही दिखे। १२१२

करिन्दु शिन्दिडक् कडुङ्गन ट्रॉडर्न्दुडल् कदुव
उरिन्द मॅय्यिन्न रोडिन्नर् नीरिडै यॉळिप्पार्
विरिन्द कून्दलुङ् गुञ्जियु मिडैदलिर् ट्रानुम्
ॲरिन्दु वेहिन्ऱ दॉत्तदव् वॅरितिरैप् परवै 1213

करिन्तु–झुलसकर; चिन्तिट–गिराते हुए; कटुम् कत्तल्–प्रचण्ड आग; तॊटर्न्तु–लगातार; उटल् कतुव–शरीरों पर लपेटे रही; उरिन्त मॆय्यितर्–(इनसे) चमड़ा-उधेड़े शरीर वाले हो; ओटित्तर्–भागे; नीर् इटै–जल में; ऑळिप्पार्–छिपने लगे; विरिन्त कून्तलुम्–खुली वेणियाँ (स्त्रियों की); कुञ्चियुम्–और केश (पुरुषों के) दोनों; मिटैतलिल्–अत्यधिक मिश्रित रहीं, इसलिए; अ–वह; ऍरि तिरै–लहरायमान समुद्र; तानुम् ऍरिन्तु–खुद जलकर; वेकिन्ऱतु–झुलसता; ऑत्ततु–जैसा लगा। १२१३

उग्र आग ने राक्षसों के शरीरों को निरन्तर जलाया और वे चमड़े झुलसकर राख बनकर गिर गये। वे भागकर समुद्र के जल के अन्दर छिपे। उन पुरुषों और स्त्रियों के केशों और वेणियों से समुद्र भर गया। तब वह सागर भी खुद जलता-तपता-सा दिखा। १२१३

मरुङ्गिन् मेलॉरु महवुहॉण् डॉरुतनि महवै
अरुङ्गै यार्पर्ऱि मऱ्ऱॉरु महवुनिन् ऱरऱ्ऱ
नॅरुङ्गि नीणॆडु मॅरिहुळल् शुरुक्कॉळ नीङ्गिक्
करुङ्ग डऱ्ऱलै वीळ्न्दन रक्कियर् कदऱि 1214

मरुङ्किन् मेल्–गोद में; ऑरु मकवु–एक बच्चा; कॊण्टु–लेकर; ऑरु तनि मकवै–और एक बालक को; अरुम् कैयाल् पऱ्ऱि–अपने अन्य हाथ से पकड़कर; मऱ्ऱु ऑरु मकवु–तीसरा एक बच्चा; निन्ऱु अरऱ्ऱ–खड़ा होकर रोता आता; नॅरुङ्कि–घनी; नीळ् नॅटुम्–अतिदीर्घ; ऍरि कुळल्–जलती वेणी; चुरुक्कॊळ–झुलसती; अरक्कियर्–(इस स्थिति में) राक्षसियाँ; नीङ्कि–अपना-अपना स्थान छोड़कर; कतऱि–चिल्लाती हुई; करुम् कटल् तलै–काले समुद्र में; वीऴ्न्तनर्–(जाकर) गिरीं। १२१४

कुछ स्त्रियाँ गोद में एक बच्चा लिये, हाथ से एक बालक को पकड़े निकलीं। तीसरा बालक खड़ा रो रहा था। उनकी घनी, लम्बी और अग्नि के-से रंग वाली वेणी जलकर झुलसने लगी। वे अपना घर छोड़कर विलाप करती हुई भागीं और काले सागर में कूद पड़ीं। १२१४

विल्लुम् वेलुम्वॅङ् गुन्दमु मुदलिय विऱहाय्
ॲल्लु डैच्चुड रॅन्नप्पुह लॅः(ह्)हॅला मुरुहित्
तॊल्लै नन्निलै तॊडर्न्दपे रुणर्विन्नर् तॊऴिल्वोल्
शिल्लि युण्डैयिड् ट्रिरण्डन्न पडैक्कलत् तिरळ्हळ् 1215

विऱ्कायु–ईंधन विल्लुम्–धनु और; वेलुम्–भाले और; कुन्तमुम्–कुन्त;

बने; ऍल् उटै–सूर्य की; चुटर् ऍन–किरणें हैं, ऐसा; पुकल्–कहने योग्य; ऍ.'.कु ऍलाम्–फ़ौलाद सब; उरुकि–पिघलकर; पटक्कल तिरळ्कळ्–हथियारों की राशियाँ; तॊल्लै–पूर्व की; नल् निलै–अच्छी स्थिति में; तॊटर्न्दन–जो पहुँच गये; पेर् उणर्विनर्–बड़े आत्मज्ञानियों के; तॊऴिल् पोल्–साधनाकार्य के समान; चिल्लि उणटैयिल्–(अपनी मूलस्थिति) छोटे पिंड के रूप में; तिरण्टन–पिंडीभूत हो रहे। १२१५

धनु, भाले और कुन्त आदि सभी हथियार ईंधन बन गये। सूर्य की किरणों के समान चमकनेवाले उन हथियारों के फ़ौलादी भाग पिघल गये। वे हथियार उन तत्त्वज्ञों के समान, जो अपनी पूर्वस्थिति में पहुँच जाते हैं, अपनी पूर्वस्थिति में अर्थात् फ़ौलाद के छोटे-छोटे पिण्डों के रूप में परिवर्तित हो गये। १२१५

शॆय्दु डर्क्कन वल्लियुम् बुरशैयुञ् जिन्दि
नॊय्दि निट्टवन् ऱ्ऱिपऱित् तुडर्लॆरि नुऴैय
मॊय्द डच्चॆवि निऱुत्तिवान् मुदुहिनिऱ् मुरुक्किक्
कैयॆ डुत्तऴैत् तोडिन वोडैवॆङ् गळिऱु 1216

ओटै वॆम् कळिऱु–मुखपट्टालंकृत भयानक गज; उटल्–शरीर में; ऍरि नुऴैय–आग के लगने से; तुटर् चॆय्–शृंखलाबद्ध; कन वल्लियुम्–भारी बन्धन को; पुरचैयुम्–और कलापक को; चिन्दि–गिराकर; इट्ट–जिनसे बाँधे गये थे; वल् तऱि–उन सबल खूँटों को; नॊय्तिन्–आसानी से; पऱित्तु–उखाड़कर; मॊय् तट चॆवि–सशक्त अपने बड़े कानों को; निऱुत्ति–खड़ा करके; वाल्–दुम को; मुतुकितिल् मुरुक्कि–पीठ के ऊपर ऐंठ-मरोड़कर रखते हुए; कै ऍटुत्तु–सूँड़ उठाकर; अऴैत्तु–दुहाई मचाते हुए; ओटिन–भागे। १२१६

मुखपट्टालंकृत गजों के शरीरों पर आग लगी और घुसकर जलाने लगी। तब साँकल का बन्धन जलकर गिर गया। कलापक भी गिर गया। गजों ने बन्धन के कठोर सबल खूँटों को उखाड़ फेंक दिया। फिर अपने सबल और बड़े कानों को ताने और अपनी पूँछ को घुमाकर पीठ पर डाले सूँड़ें उठाकर चिंघाड़ते हुए भागे। १२१६

वॆरुळुम् वॆम्बुहैप् पडलैयिन् मेऱ्चॆल वॆरुवि
इरुळुम् वॆङ्गडल् विऴुन्दन वॆऴुन्दिल परवै
मरुळिन् मीऩ्गणम् विऴुङ्गिड वुलन्दन मनत्तोर्
अरुळिल् वञ्जरैत् तञ्जमॆन् ऱडैन्दव रनैय 1217

मनत्तुत्–मन में; ओर् अरुळ् इल्–कुछ भी कृपा न रखनेवाले; वञ्चरै–वंचकों को; तञ्चम् ऍन्ऱु–शरण कहकर; अटैन्तवर् अनैय–उनके पास जो आये उनके समान; परवै–पक्षी; वॆरुळुम्–भयकारी; वॆम् पुकै पटलैयिन् मेल्–गरम धुएँ के पटल के ऊपर; चॆल वॆरुवि–जाने से डरकर; इरुळुम्–काले; वॆम् कटल्–संकटदायी

समुद्र में; विऴुन्तत्त–गिरे; ॲऴुन्तिल–ऊपर आ नहीं सके; मरुळिन् मीन्–मदमत्त मछलियों के; कणम्–समूहों के; विऴुङ्किट–निगल लेने से; उलन्तत्त–मर गये। १२१७

निर्दयमन वञ्चकों की शरण में आये हुओं के समान पक्षीगण डरावने धूमपटल के ऊपर जाने से डरकर काले समुद्र में जाकर गिरे। तो क्या हुआ? उनको ऊपर उठने नहीं देते हुए मदमत्त मछलियों ने निगल लिया। १२१७

नीरै वऱ्ऱिडप् परुहिमा नॆडुनिलन् दडवित्
तारु वैच्चुट्टु मलैहळैत् तळऱ्चॆय्दु तनिमा
मेरुवैप् पऱ्ऱि यॆरिहिन्ऱ कालवॆङ् गनल्बोल्
ऊरै मुऱ्ऱुवित् तिरावणन् मनैपुक्क तुयर्दी 1218

उयर् ती–ऊँचे उठनेवाली वह आग; वऱ्ऱिट–(जलाशयों को) सोखते हुए; नीरै परुकि–जल को पीकर; मा नॆट्ु–अधिक विशाल; निलम्–भूतल में; तटवि–फैलकर; तारुवै चुट्टु–लकड़ियों को जलाकर; मलैकळै–पर्वतों को; तळल् चॆय्तु–तप्त बनाकर; तनि मा मेरुवै–अनुपम और बड़े मेरुपर्वत में; पऱ्ऱि ॲरिकिन्ऱ–लगी जलनेवाली; काल वॆम् कनल् पोल्–भयंकर कालाग्नि के समान; ऊरै मुऱ्ऱुवित्तु–नगर को पूरी तरह से जलाकर; इरावणन् मनै–रावण के महल में; पुक्कतु–घुसी। १२१८

उठती हुई आग ने जलाशयों को सोखकर जल से खाली कर दिया। भूतल को तपा दिया। लकड़ियों को जलाया और पर्वतों को तप्त कर दिया। अनुपम मेरु को जलानेवाली कालाग्नि के समान वह सारी लंका का नाश करने के बाद रावण के महल में जा लगी। १२१८

वान मादरु मऱ्ऱुळ महळिरु मरुहिप्
पोन पोनदिक् कनैवरु मऱिहिलर् पोनार्
एनै निन्ऱव रॆङ्गणु मिरिन्दन रिलङ्गैक्
कोन वाऩवर् पदिहॊण्ड नाळॆनक् कुलैन्दार् 1219

वान मातरुम्–अप्सराएँ; मऱ्ऱु उळ–और रहनेवाली अन्य; मकळिरुम्–स्त्रियाँ; अनैवरुम्–सभी; मरुकि–दहलकर; पोन पोन तिक्कु–गमन की दिशा; अऱिकिलर् पोनार्–नहीं जानती गयी; एनै–अन्य; निन्ऱवर्–जो खड़ी रह गयीं, वे; ॲङ्कणुम् इरिन्तनर्–सर्वत्र भटकीं; इलङ्कै कोन्–लंकाधिपति ने; अ वानवर पति–(जिस दिन) उस देवलोक को; कॊण्ट नाळ् ॲन–ले लिया उस दिन के समान; कुलैन्तार्–हड़बड़ायीं। १२१९

रावण के महल में अप्सराएँ थीं और अन्य स्त्रियाँ भी। वे सब हड़बड़ाकर गमनदिशा से भी अज्ञात होकर तितर-बितर भागीं। जो नही भागी वे इधर-उधर भटकी और जिस दिन रावण ने देवेन्द्र की नगरी

अमरावती को जीत लिया था, उस दिन की-सी स्थिति में आकर हड़वड़ायीं। १२१९

नावि युन्नरुङ् गलवैयुङ् गऱ्पह नक्क
पूवु मारमु महिलुमॆन् ऱिनैयन पुहैयत्
तेवु तण्मऴै शॆऱिपॆरुङ् गुलमॆनत् तिशैयित्
पावै माऱ्नरुङ् गुऴल्हळुम् वरिमळम् वरन्द 1220

नावियुम्–कस्तूरी और; नऱुम् कलवैयुम्–गन्धलेप; कऱ्पकम् नक्क–कल्पतरु-विकसित; पूवुम्–सुमन; आरमुम्–और चन्दन; अकिलुम्–अगरु की लकड़ियाँ; ऎन्ऱु इत्तैयन–आदि ऐसे; पुकैय–धुएँ वने; तण्–शीतल; चॆऱि–घने; मऴै–मेघों के; पॆरुम् कुलम्–वड़े समूहों; ऎन–के समान; तिचैयित्–सभी दिशाओं की; तेवु पावैमार्–दैवी स्त्रियों के; नऱुम् कुऴल्फळुम्–सुवासित केश भी; परिमळम् परन्त–नये अच्छे सुवास से वासित हुए। १२२०

रावण के महल में कस्तूरी, गन्धलेप, कल्पतरु के विकसित फूल, चन्दन-काष्ठ और अगरु के काठ आदि थे। सव गुँगुआने लगे। तव शीतल घने मेघों के वड़े समूहों के समान जो दैवी स्त्रियों के केश थे और जो पहले ही सुगन्ध-भरे थे, अव वे और भी नवीन सुवास से सुवासित हो गये। १२२०

शूऴुम् वॆञ्जुडर् तॊडर्न्दिड यावरुन् दॊडरा
आऴि वॆञ्जिनत् ताण्डॊऴि लिरावणन् मनैयिन्
ऊऴि वॆङ्गन लुण्डिड वुलहमॆन् ऱुयर्न्द
एऴुम् वॆन्दॆन वॆरिन्दन नॆडुनिलै येऴुम् 1221

चूऴुम् वॆम् चुटर्–चारों ओर घेरे रहनेवाली आग के; तॊटर्न्तिट–लगने से; यावरुम् तॊटरा–किसी के लिए भी अगम; आऴि वॆम् चिततुतु–समुद्र-सम (गम्भीर) और त्रासक क्रोध का; आण् तॊऴिल्–वीरकृत्य; इरावणन्–रावण के; मनैयिन्–महल के; नॆटु निलै एऴुम्–सातों तल्ले; ऊऴि वॆम् कनल्–युगान्त की भयंकर आग द्वारा; उण्टिट–जलाये जाने से; उलकम् ऎन्ऱु उयर्न्त एऴुम्–ऊपर के सातों लोक; वॆन्ततु ऎन–जल गये जैसे; ऎरिन्तन–जल गये। १२२१

सर्वत्र घेरे रही आग सव जगह जा लगी। तो दुर्गम समुद्र-सम गम्भीर, क्रोधी और वीरकर्म रावण का महल भी जल गया। वह सात तल्लों का था। इसलिए युगान्त में ऊपर के सातों लोक जैसे जले वैसा उसका जलना रहा। १२२१

पॊन्ऱि रत्तिय दादलि निरावणन् वुरैतीर्
कुन्ऱ मॊत्तुयर् तडनॆडु मानिलैक् कोयिल्
निन्ऱ दुऱ्ऱॆरि परुहिड नॆहिऴ्वुऱ वुरुहित्
तॆन्ऱि शॆक्कुमोर् मेरुवुण् डामॆनत् तॆरिन्द 1222

इरावणत्–रावण का; पुरै तीर्–अकलंक; कुत्र्म् ऑत्तु उयर्–पर्वत-सम उन्नत; तट नॅट्टु–विशाल; मा निलै–अधिक (सात) तल्लों का; कोयिल्–महल को; पॉन् तिरुत्तियतु–स्वर्णनिर्मित था; आतलित्–इसलिए; नित्र्–जो भी स्थित है, उसको; तुट्रु ॲरि–लगकर जलानेवाली आग के; परुकिट–अशन करने से; नॅकिऴ्वु उट्र–नरम बनकर; उरुकि–पिघलकर; तॅन् तिचैक्कुम्–दक्षिणी दिशा में भी; ओर् मेरु उण्ट्टु–एक मेरु; आम् ॲन–है, ऐसा कहने योग्य रीति से; तॅरिन्त–दिखा। १२२२

रावण का महल निर्दोष था; पर्वत के समान था। सात तल्लों का बहुत बड़ा मकान था। वह स्वर्ण का था। उसको आग ने जलाया तो वह पिघलकर दक्षिण दिशा का मेरु बना-सा दिखने लगा। १२२२

अन्नैय कालैयि न्नरक्कनु मरिवैयर् कुऴुवुम्
पुन्नैम णिप्पॉलि पुट्पह विमानत्तुप् पोनार्
निन्नैयु मात्तिरै यावरु नीङ्गिनर् निनैयुम्
विन्नैयि लामैयिन् वॅन्ददव् विलङ्गन्मे लिलङ्गै 1223

अत्तैय कालैयित्–उस समय; अरक्कनुम्–राक्षस (रावण) और; अरिवैयर् कुऴुवुम्–उसकी स्त्रियों का समूह; पुत्तै मणि पॉलि–सजे हुए रत्नों के साथ चमकनेवाले; पुट्पक विमानत्तु–पुष्पक यान पर; पोनार्–गये; यावरुम्–(अन्य) सभी; नित्तैयुम् मात्तिरै–सोचने मात्र से; नीङ्कितर्–चले गये; नित्तैयुम वित्तै–सोचा हुआ काम करने की क्षमता; इलामैयिन्–न रहने से; अ विलङ्कन् मेल् इलङ्कै–उस त्रिकूटपर्वतस्थ लंका नगर; वेन्ततु–आग में भुन गया। १२२३

तब रावण और उसकी स्त्रियाँ पुष्पक यान पर बैठकर चले गये। अन्य राक्षस भी सोचने मात्र से वहाँ से चले गये। पर बेचारी त्रिकूटपर्वतस्थ लंका सोच नहीं सकी और सोचा हुआ करने का गुण भी उसमें नहीं था (वह जड थी)। अतः वह वहीं रहकर जल गयी। १२२३

आऴित् तेरव न्नरक्करै यऴलॅऴ नोक्कि
एऴुक् केऴॅन वडुक्किय वुलहङ्ग ळॅरियुम्
ऊऴिक् कालम्वन् दुट्रदो पिऱ्रिदुवे ऱुण्डो
पाऴित् तीशुड वॅन्ददॅन् नहरॅनप् पहर्न्दान् 1224

आऴि तेर् अवन्–पहियेदार रथ के स्वामी उस (रावण) ने; अरक्करै–राक्षसों पर; अऴल् ॲऴ नोक्कि–आग्नेय दृष्टि डालकर; एऴुक्कु एऴु–नीचे के सात के मुक़ाबले में ऊपर सात; ॲन अट्टुक्किय–ऐसे एक के ऊपर एक रचे गये; उलकङ्कळ्–चौदहों लोक; ॲरियुम्–जिसमें जल जायँगे, ऐसा; ऊऴि कालम्–युगान्त का काल; वन्तु उट्रतो–आ गया क्या; पिऱ्रितु– या) अन्य; वेरु उण्टो–कुछ हो गया; नकर्–नगर; पाऴि ती चुट–बड़ी आग के जलाने से; वॅन्ततु ॲन्–जल गया क्यों; ॲन–ऐसा; पकर्न्तान्–पूछा। १२२४

पहियों वाले रथ के स्वामी रावण ने तब आग्नेय नेत्रों से राक्षसों को देखकर उनसे प्रश्न किया कि क्या एक के ऊपर एक चुने हुए, नीचे और ऊपर के चौदहों भुवनों को जलानेवाला युगांत आ गया ? या और कुछ हो गया? नगर बड़ी आग में जला क्योंकर ? । १२२४

करङ्गळ् कूप्पित्तर् तङ्गिळै तिरुवोडुङ् गाणार्
इरङ्गु हित्त्रवल् लरक्करी दियम्बिन्न रिरैयोय्
तरङ्ग वेलैयि न्नॅडियदन् वालिट्ट तऴलाल्
कुरङ्गु शुट्टदी दॅन्त्रलु मिरावणन् कॉदित्तान् 1225

तम् किळै–अपने परिवारों को; तिरु ओटुम्–सम्पत्ति के साथ; काणार्–जो देख नहीं रहे थे (खो चुके थे); इरङ्कुकिन्त्र–दुःखी; वल् अरक्कर्–बलवान (उन) राक्षसों ने; करङ्कळ् कूप्पिनर्–हाथ जोड़कर; ईतु इयम्पित्तर्–यह कहा; इरैयोप्–स्वामी; तरङ्कम् वेलैयिन्–तरंगायमान समुद्र से भी; नॅटिय–विस्तृत रूप से; तन् वाल्–अपनी पूंछ में; इट्ट तऴलाल्–लगायी गयी आग से; कुरङ्कु–वानर का; चुट्टतु ईतु–जलाने का काम है यह; ॲन्त्रलुम्–कहते ही; इरावणन् कॉतित्तान्–रावण खौल उठा । १२२५

पहले ही राक्षस अपने बन्धु-बान्धवों और परिवारों के साथ अपनी सारी सम्पत्ति खो चुके थे। वे दुःखी थे। उन्होंने हाथ जोड़कर यह उत्तर दिया— प्रभु ! वानर ने अपनी पूंछ पर लगायी गयी, तरंगायमान समुद्र-सम विपुल आग से जलाने का जो काम किया उसी का फल यह है ! यह सुनकर रावण उबल पड़ा। १२२५

इन्त्रु पुन्तॉऴिर् कुरङ्गुतन् वलियिना लिलङ्गै
नित्त्रु वॅन्दुमा नीरॅऴु हित्त्रदु नॅरुप्पु
तित्त्रु तेक्किडु हिन्त्रदु तेवर्हळ् शिरिप्पार्
नन्त्रु नन्त्रुपो रिरावणन् वलियॅन नक्कान् 1226

इन्त्रु–आज; पुन् तॉऴिल्–क्षुद्रकर्म; कुरङ्कु–वानर; तन् वलियिनाल्–अपने बल से; इलङ्कै नित्त्रु वॅन्तु–लंका खूब जलती है और; मा नीरु ॲऴुकिन्त्रतु–बहुत राख निकलती है; नॅरुप्पु तिन्त्रु–आग अशन कर; तेक्कु इटुकिन्त्रतु–डकार लेती है; तेवर्कळ्–देवलोग; चिरिप्पार्–हँसेंगे; इरावणन् पोर् वलि–रावण का युद्धबल; नन्त्रु नन्त्रु–भला है, अच्छा है; ॲन्–कहकर; नक्कान्–(क्रोध की हँसी) हँसा। १२२६

रावण ने कहा कि हूँ ! आज क्षुद्र-कर्म एक वानर के बल से लंका स्थिर रूप से जलती है और भस्म उठता है ! आग अशन करके डकार ले रही है ! देव लोग हँसेंगे ! रावण का युद्धपराक्रम बड़ा अच्छा रहा ! बड़ा भला बना ! वह यह कहकर ठठाकर (क्रुद्ध हँसी) हँसा। १२२६

उण्डनॅ रुप्पैक्, कण्डनर् पट्रिक्
कॉण्डणै हॅन्ऱान्, अण्डरै वॅन्ऱान् 1227

अण्टरै वॅन्ऱात्-देवों के विजेता ने; उण्ट नॅरुप्पै-(लंका का) अशन करनेवाले अग्निदेव को; कण्टनर्-देखनेवाले; पट्रिक् कॉण्टु-पकड़कर; अणैक-आओ; ऍन्ऱात्-आज्ञा दी। १२२७

देवों के विजेता रावण ने आज्ञा निकाली कि लंका के दाहक अग्निदेव को जो भी देखें वे उसे पकड़ ले आवें। १२२७

उट्रह लामुन्, शॅट्र कुरङ्गैप्
पट्रुमि नॅन्ऱान्, मुट्र मुनिन्दान् 1228

मुट्र मुनिन्तात्-अत्यधिक क्रुद्ध रावण ने; चॅट्र कुरङ्कै-हानिकारक बन्दर को; उट्रु अकला मुन्-वहाँ छोड़ जाने से पहले; पट्रुमित्-पकड़ लो; ऍन्ऱात्-कहा। १२२८

अतिक्रुद्ध रावण ने आगे कहा कि हानिकारक मर्कट को उसके वहाँ जाकर बचने के पूर्व ही पकड़ लाओ। १२२८

शारय निन्ऱार्, वीरर् विरैन्दार्
नेरुदु मॅन्ऱार्, तेरिनर् शॅन्ऱार् 1229

चार् अयल् निन्ऱार्-लगे जो पास रहे; वीरर्-वे वीर; नेरुतुम् ऍन्ऱार्-सम्मत हैं, कहा; विरैन्तार्-शीघ्र; तेरिनर् चॅन्ऱार्-रथ पर सवार हो गये। १२२९

पास लगे जो खड़े रहे उन वीरों ने कहा कि जैसी आज्ञा ! वे शीघ्र रथों पर सवार होकर चले। १२२९

ऍल्लै यिहन्दार्, विल्लर् वॅहुण्डार्
पल्लदि हारत्, तॉल्लर् तॉडर्न्दार् 1230

ऍल्लै इकन्तार्-असीम; विल्लर्-धन्वी वीर; वॅकुण्टार्-क्रुद्ध हुए; पल् अतिकार-अनेक अधिकार के पदों पर; तॉल्लर्-बहुत काल से रहनेवाले; तॉटर्न्तार्-पीछे गये। १२३०

अपार धन्वी वीर रोष के साथ उठे। अनेक अधिक अनुभवी पदाधिकारी भी उनके पीछे गये। १२३०

नीर्हॅळु वेलै निमिर्न्दार्, तार्हॅळु तानै शमैन्दार्
पोर्हॅळु मालै पुनैन्दार्, ओरॅळु वीर रुयर्न्दार् 1231

उयर्न्तार्-उनमें बड़े; ओर् ऍळु वीरर्-सात वीर; पोर्कॅळु मालै पुनैन्तार्-युद्धचिह्न श्रेष्ठ माला पहनकर; नीर्कॅळु-जल-भरे; वेलै-सागर के समान; निमिर्न्तार्-उमग उठे; तार् कॅळु तानै-अग्रसेना में; चमैन्तार्-मिलकर गये। १२३१

उनमें सबसे उच्च हैसियत के सात वीर "तुम्बै" फूलों की माला (यह युद्ध पर जाने का चिह्न है) पहने, जल-भरे सागर के समान उठे और अग्रसेना में जा, मिले। १२३१

विण्णिनै वेलै विऴिम्बार्, मण्णिनै योडि वळैन्दार्
अण्णलै नाडि यणैन्दार्, कण्णिनिऩ् वेऱयल् कण्डार् 1232

विण्णिनै–आकाश को और; वेलै विऴिम्पु आर्–समुद्र के तीर से लगी रही; मण्णिनै–भूमि को; ओटि वळैन्तार्–दौड़कर घेर लिया (राक्षसों ने); अण्णलै नाटि–गौरववान (हनुमान) को खोजकर; अणैन्तार्–पास गये; अयल्–पास ही; वेऱु–अकेले रहते (हनुमान को); कण्णिनिल्–अपनी आँखों से; कण्टार्–देखा। १२३२

उन्होंने जाकर आकाश और समुद्र के तीर से लगी भूमि को घेर लिया। उन्होने महिमावान हनुमान का अन्वेषण किया और उसे पास ही अकेले बैठे हुए पाया। १२३२

पऱ्ऱुदिर् पऱ्ऱुदि ऍऩ्बार्, ऍऱ्ऱुदि ऍऱ्ऱुदि ऍऩ्बार्
मुऱ्ऱिऩर् मुऱ्ऱु मुनिन्दार्, कऱ्ऱुणर् मारुदि कण्डाऩ् 1233

पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो; ऍऩ्पार्–कहनेवाले; ऍऱ्ऱुतिर् ऍऱ्ऱुतिर्–धक्का दो, धकेलो; ऍऩ्पार्–कहनेवाले; मुऱ्ऱितर्–घेर गये; मुऱ्ऱुम् मुनिन्तार्–अतिक्रुद्ध हो आक्रमण किया; कऱ्ऱु उणर्–ग्रंथाध्ययन करके ज्ञानी बने; मारुति–मारुति ने; कण्टाऩ्–उनको देखा। १२३३

राक्षसों ने पकड़ो, पकड़ो, प्रहार करो, धकेलो के नारे लगाते हुए वहुत ही क्रुद्ध होकर उसे घेर लिया। शास्त्रज्ञ हनुमान ने उन्हें देख लिया। १२३३

एल्हॊडु वञ्ज ऍदिर्न्दार्, काल्हॊडु कैहॊडु कार्पोल्
वेल्हॊडु कोलिऩर् वॆंन्दी, वाल्हॊडु तानुम् वळैत्ताऩ् 1234

वञ्चर्–वंचक राक्षस; कार् पोल्–मेघों के समान; एल् कॊटु–सामने आकर; ऍतिर्न्तार्–प्रकट हुए; काल् कॊटु–पैरों से; कै कॊटु–हाथों से; वेल् कॊटु–भालाओं से; कोलितर्–रोकते हुए घेर गये; वॆम् ती–भयंकर आग लगी रही; वाल् कॊटु–अपनी पूँछ की सहायता से; तानुम्–उस (हनुमान) ने भी; वळैत्ताऩ्–आवृत कर लिया। १२३४

वंचक राक्षस काले मेघों के समान सामने आकर प्रकट हुए। फिर पैरों, हाथों और भालाओं के सहारे उसे घेर गये। हनुमान ने भी अपनी भयंकर आग लिये रहनेवाली पूँछ को बढ़ाकर उनको लपेट लिया। १२३४

पादव मॊन्ऱु पऱित्ताऩ्, मादिरम् वालिऩ् वळैत्ताऩ्
मोदिनऩ् मोद मुनिन्दार्, एदियु नाळु मिऴन्दार् 1235

मातिरम्–सभी दिशाओं से; वालित्–अपनी पूँछ से; वळैत्तात्–(राक्षसों को) घेर लिया; पातवम् ऑन्ऱु–एक पादप; पऱित्तात्–उखाड़ लेकर; मोतित्तत्–उससे पीटा; मोत–पीटने से; मुतिन्तार्–क्रुद्ध शत्रुओं ने; एतियुम्–हथियारों और; नाळुम्–अपनी आयु के दिन; इळन्तार्–खो दिया। १२३५

उसने सभी दिशाओं से उन्हें आवृत करके एक पादप उखाड़ लिया और उससे उनको पीटा। पिटाई से क्रुद्ध उन शत्रुओं ने अपने हथियारों से ही नहीं, बल्कि अपनी आयु से भी हाथ धो लिया। १२३५

नूऱिड मारुदि नॉन्दार्, ऊऱिड वूनॉडु पुण्णीर्
शेऱिड वूरिडु शॅन्दी, आऱिड वोडिन दाऱाय् 1236

मारुति–मारुति के; नूऱिट–पीटने से; नॉन्तार्–दुःखी हुए राक्षस; ऊऱु इट–व्रणों के बनने से; ऊत् ओटु पुण्णीर्–मांस के साथ बहनेवाले व्रणनिर्गत रक्त; चेऱु इट–कर्दम बना दिया उससे; ऊर् इटु–नगर में लगी; चॅम् ती–लाल आग; आऱिट–बुझ जाय ऐसा; आऱाय् ओटित्तु–नदी के रूप में बहा। १२३६

मारुति का आघात पाकर राक्षस पीड़ित व दुःखी हुए। उनके शरीरों पर व्रण बने और मांस बहाते हुए व्रण-निर्गत रक्त नदियाँ बनकर लंका पर लगी आग को बुझाते हुए बहा। १२३६

तोऱ्ऱिनर् तुञ्जिल रल्लार्, एऱ्ऱिहल् वीर रॅदिर्न्दार्
काऱ्ऱिन् महन्गलै कऱ्ऱान्, कूऱ्ऱिनु मुम्मडि कॉन्ऱान् 1237

तुञ्चित्तर् अल्लार्—बिना मृतक हुए; तोऱ्ऱित्तर्–जो दिखायी दिये; एऱु–पुरुष सिंह के समान; इकल् वीरर्–योद्धा वीर; ऍतिर्न्तार्—हनुमान से टकराये; कलै कऱ्ऱान्–कलानिपुण (हनुमान); काऱ्ऱित् मकन्–पवनसुत ने; कूऱ्ऱितुम्–यम से; मु मटि–तिगुने (ज़ोर से); कॉन्ऱान्—मार डाला। १२३७

जो नहीं मरे वे वीर उसके सामने आये। पुरुष सिंह के समान उन योद्धा वीरों ने हनुमान से युद्ध छेड़ा। सर्वविद्यापारंगत हनुमान ने यम से तिगुने ज़ोर के साथ उनका हनन कर दिया। १२३७

मञ्जुऱळ् मेनियर् वन्ऱोळ्, मॉय्म्बित्तर् वीरर् मुडिन्दार्
ऐम्बदि नायिर रल्लार्, पॅम्बुनल् वेलै पडिन्दार् 1238

मञ्चु उऱळ्–मेघ-सम; मेतियर्–काले रूप वाले; वत् तोळ्–सबल कन्धों के; मॉय्म्पित्तर् वीरर्–साहसी वीर; ऐम्पतित् आयिरर्–पचास सहस्र; मुटिन्तार्—मरे; अल्लार्–अन्य; पॅम् पुनल् वेलै–हरे जल के समुद्र में; पटिन्तार्–गिरे (डूबे)। १२३८

पचास सहस्र मेघवर्ण वीर्यस्कंध राक्षस उसके हाथों मरे। जो बचे, वे हरे जल के समुद्र में जा गिरे। १२३८

तोय्च्चतऩ् वालदि तोयाक्, काय्च्चिन वेलै कलन्दार्
पोय्च्चिलर् पोन्ऱिऩर् पोनार्, एच्चॅन मैन्द रॅदिर्न्दार् 1239

वालति–पूँछ को; तोय्च्चतऩ्–डुवोया; तोया–डुवोने पर; काय्च्चित्त–उवल पड़े; वेलै–समुद्र में; पोय् कलन्तार्–जो जाकर गिरे थे; चिलर्–वे कुछ (राक्षस); पोन्ऱितर् पोतार्–मर गये; मैन्तर्–कुछ (बाहर निकले) वीर; एच्चु ॲंत–निन्दा होगी, समझकर; ॲतिर्न्तार्–चढ़ आये। १२३९

हनुमान ने पूँछ को समुद्र में डुवोया। डुवोते ही समुद्र उवला। तव जो गिरे थे उनमें कुछ मर गये। जो वाहर आये उन साहसी वीरों ने निंदा से डरकर हनुमान पर आक्रमण किया। १२३९

शुऱ्ऱिऩर् तेरिऩर् तोला, विऱ्ऱॊऴिल् वीरम् विळैत्तार्
ॲऱ्ऱिनऩ् मारुदि यॅऱ्ऱ, उऱ्ऱॅऴु वोरु मुलन्दार् 1240

चुऱ्ऱितर्–घूमते हुए; तेरितर्–रथी वीरों ने; तोला–अपराजित; विल् तॊऴिल्–धनुकर्म में; वीरम् विळैत्तार्–बड़ा साहस दिखाया; मारुति ॲऱ्ऱितऩ्–मारुति ने आघात किया; ॲऱ्ऱ–मारने पर; उऱ्ऱु ॲऴुवोरुम्–फिर से जो आये वे भी; उलन्तार्–मिटे। १२४०

घूमनेवाले रथों पर सवार होकर कुछ वीरों ने अजेय धनु-कर्म दिखाया। मारुति ने उन्हें धकेल दिया। धक्का खाकर वे भी मरे जो उठकर लड़ने आये थे। १२४०

विट्टुयर् विञ्जैयर् वॅन्दी, वट्ट मुलैत्तिरु वैहुम्
पुट्टिरळ् शोलै पुऱत्तुम्, शुट्टिल दॅन्बदु शोन्नार् 1241

विट्टु–उस स्थान को छोड़कर; उयर्–जो ऊपर गये; विञ्चैयर्–उन्होंने; वॅम् ती–नाशक आग ने; वट्ट मुलै तिरु–वर्तुलस्तना देवी श्री; वैकुम्–जहाँ रहीं; पुळ् तिरळ्–उस खग-भरे; चोलै पुऱत्तुम्–उद्यान के (अन्दर और) बाहर भी; चुट्टु इलतु–जलाया नहीं है; ॲन्पतु–यह समाचार; चोन्तार्–आपस में कह लिया। १२४१

वहाँ से विद्याधर लोग दूर ऊपर गये हुए थे। उन्होंने आपस में एक समाचार कहा। हनुमान द्वारा लगायी गयी आग ने वर्तुलस्तनी सीतादेवी जहाँ रही, उस उद्यान के अन्दर और बाहर जलाया नहीं है। १२४१

वन्दवर् शॊल्ल महिऴ्न्दान्, वॅन्दिऱल् वीरन् वियन्दान्
उय्न्दॅन तॆन्न वुयर्न्दान्, पैन्दॊडि ताळ्हळ् पणिन्दान् 1242

वन्तवर्–ऐसे आगतों के; चॊल्ल–कहने पर; वॅम् तिऱल्–गजब की वीरता का; वीरऩ्–वीर (महावीर); मकिऴ्न्तान्–हर्षित हुआ; वियन्तान्–(सीताजी की महिमा पर) विस्मित हुआ; उय्न्ततऩ्–(निन्दा से) बच गया; ॲन्त–समझकर;

उयर्न्तात्–अन्तरिक्ष में उठा; पैम् तॉटि–चमकदार आभरणभूषित (सीता) के; ताळ्कळ्–पैरों पर; पणिन्तात्–विनत हुआ। १२४२

आगत विद्याधरों के यों कहने पर बड़ा सामर्थ्यशाली वीर हनुमान हर्षित हुआ। सीताजी की महिमा से विस्मित हुआ। उसे राहत मिली कि मुझ पर दोष नहीं लगेगा। वह ऊपर उड़ा। उसने आकर चमकीले स्वर्णाभरणधारिणी सीताजी के श्रीचरणों पर नमन किया। १२४२

पार्त्तनळ् शानहि पाराक्, कूर्त्तॅरि मेनि कुळिर्न्दाळ्
वार्त्तैयॅन् वन्दनै यॅन्नाप्, पोर्त्तॊळिल् मारुदि पोनान् 1243

पार्त्तनळ्–देखा; चानकि–जानकी ने; पारा–देखते ही; ॲरि मेनि–जलता रहा शरीर; कूर्त्तु कुळिर्न्ताळ्–खूब शीतल हुआ, ऐसी (हर्षित) हुईं; वार्त्तै ॲन्–कहने को क्या है; वन्तनै ॲन्ना–वन्दना कहकर; पोर् तॊळिल् मारुति–युद्धकर्म-कुशल मारुति; पोनान्–चला गया। १२४३

जानकी ने हनुमान पर अपनी दृष्टि फेरी। आश्वस्त हुई और उनका तपता शरीर शीतल हुआ; आगे वचन के लिए कहाँ स्थान है? हनुमान ने 'नमस्कार' कहा, और विदा ली। फिर युद्धचतुर मारुति लौट चला। १२४३

तॆळ्ळिय मारुदि शॆन्ऱान्, कळ्ळ वरक्कर्हळ् कण्डाल्
ॲळ्ळुवर् पऱ्ऱुव रॆन्ना, ऒळ्ळॅरि योनु मॊळित्तान् 1544

तॆळ्ळिय मारुति–सुलझी हुई बुद्धि वाले मारुति; चॆन्ऱान्–चला गया; कळ्ळ अरक्कर्कळ्–चोर राक्षस; कण्टाल्–देखेंगे तो; ॲळ्ळुवर्–निन्दा करेंगे; पऱ्ऱुवर्–पकड़ेंगे; ॲन्ना–ऐसा समझकर (डरकर); ऒळ् ॲरियोनुम्–ज्वलन्त अग्निदेव भी; ऒळित्तान्–छिप गया। १२४४

ज्वलन्त अग्निदेव भी यह सोचकर छिप गया कि सुलझा हुआ बुद्धिमान हनुमान भी (मुझे अकेले छोड़कर) चला गया। चोर राक्षस देखेंगे तो मुझे गाली देंगे और पकड़ (रावण के पास) ले जाएँगे। १२४४

14. तिरुवडि तॊळुद पडलम् (श्रीचरण-वन्दना पटल)

नीङ्गुवॆन् विरैवि नॆन्नु निनैविनन् मरुङ्गु निन्ऱ
आङ्गॊरु कुडुमिक् कुन्ऱै यरुक्कनि लणैन्द वैयन्
वीङ्गिन नुलहै यॆल्लाम् विळुङ्गिन नॆन्न वीरन्
पूङ्गळ् ऱॊळुदु वाळ्त्ति विशुम्बिडैक् कडिदु पोनान् 1245

विरैविन्–शीघ्र; नीङ्कुवॆन्–छोड़ जाऊँगा; ॲन्नुम् निनैवितन्–यह विचार करनेवाला; आङ्कु–वहाँ; मरुङ्कु निन्ऱ–पास रहनेवाले; ऒरु कुटुमि कुन्ऱै–

एक शिखर-सहित पर्वत पर; अरुक्कतिऩ्-सूर्य के समान; अणैन्दु ऐयऩ्-जो पहुँचा वह महिमावान; उलकै ॲल्लाम्-सारे लोकों को; विऴुङ्कितऩ् ॲऩ्ऩ-उदरस्थ जिन्होंने किया उन (श्रीविष्णु) के समान; वीङ्किऩऩ्-विराट् रूप लेकर; वीरऩ्-वीर श्रीराम के; पूम् कऴल्-सुन्दर पायलधारी चरणों को; तॊऴुतु वाऴ्त्ति-पूजा और स्तुति करके; विचुम्पु इटै-अन्तरिक्ष में; कटितु पोऩाऩ्-शीघ्र गया। १२४५

सवेग जाने का निश्चयकारी हनुमान वहीं पास रहे एक पर्वत-शिखर पर उदयाचल पर सूर्य-जैसे चढ़ा। महिमावान हनुमान ने विश्वभुक् विष्णुदेव के समान विश्वरूप धरा। श्रीराम के सुन्दर पायलधारी चरणों की संस्तुति की। फिर वह शीघ्र गया। १२४५

मैऩ्नाह मॆऩ्ऩ निऩ्ऱ कुऩ्ऱैयु मरबि ऩॆय्दिक्
कैऩ्नाह मऩैयो ऩुऱ्ऱ दुणर्त्तिऩऩ् कणत्तिऩ् कालैप्
पैऩ्नाह निहर्क्कुम् वीरर् तऩ्ऩॆडु वरवु पार्क्कुम्
कॊय्न्नाह नऱुन्देऩ् शिऩ्दुङ् गुऩ्ऱिडैक् कुदियुङ् गॊण्डाऩ् 1246

कै नाकम् अऩैयोऩ्-सूँड़ वाले नाग (करि) के समान रहनेवाले मारुति ने; मैनाकम्-मैनाक; ॲऩ्ऩ निऩ्ऱ-नाम के साथ स्थित; कुऩ्ऱैयुम्-पर्वत को; मरपिऩ् ॲय्ति-क्रम से पहुँचकर; उऱ्ऱतु उणर्त्तिऩऩ्-लंका में जो घटा वह वृत्तान्त सुनाया; कणत्तिऩ् कालै-एक क्षण की देर में; तऩ् ऩॆटुम् वरवु पार्क्कुम्-बहुत देर से अपनी प्रतीक्षा करनेवाले; पै नाकम्-फैले फनों वाले सर्प; निकर्क्कुम् वीरर्-से तुल्य वीर (जहाँ रहे); कॊय् नाक-तोड़ने योग्य सुरपुन्नाग के फूल; नऱुम् तेऩ् चिन्तुम्-जिस पर शहद गिराते थे; कुऩ्ऱु इटै-उस (महेन्द्र) पर्वत पर; कुतियुम् कॊण्टाऩ्-कूद पड़ा। १२४६

सूँड़ वाले नाग-सा वह वीर यथाक्रम मैनाक पर्वत पर पहुँचा। उससे उसने लंका का वृत्तान्त पूरा बताया। फिर एक ही क्षण की देरी में वह महेन्द्र पर्वत पर आ कूदा। उस महेन्द्र पर्वत पर बहुत देर से अंगदादि वीर फन-उठाए सर्पों के समान सिर उठाकर उसके आने की राह देख रहे थे। वह पर्वत ऐसा था, जिस पर तोड़ने योग्य (विकसित) सुरपुन्नाग फूल शहद गिरा रहे थे। १२४६

पोय्वरुङ् गरुम मुऱ्ऱिर् ऱॆऩ्बदोर् पॊम्मल् पॊङ्ग
वाय्वॆरीइ निऩ्ऱ वॆऩ्ऱि वाऩर वीरर् मऩ्ऩो
पाय्वरु नीळत् ताङ्ग णिरुन्दऩ पऱवैप् पार्प्पुत्
ताय्वरक् कण्ड दऩ्ऩ वुवहैयिऱ् ऱऴिर्त्तता रम्मा 1247

पाय् वरु-जिसमें अति क्षिप्र गति से आता है; नीळत्तु आङ्कण्-उस नीड़ के अन्दर; इरुन्तऩ-रहे; पऱवै पार्प्पु-पक्षी के बच्चों ने; ताय् वर-माता को आते; कण्टतु अऩ्ऩ-देख लिया जैसे; वाय् वॆरीइ निऩ्ऱ-मुख खोलकर जो भय प्रकट कर रहे थे; वॆऩ्ऱि वाऩर वीरर्-विजयी वानर वीर; पोय् वरुम् करुमम्-हो आने का

कार्य; मुड्रिड्रु–सम्पूर्ण हुआ; ॲन्पतु–ऐसा; ओर् पॉम्मल् पॊङ्क–अनुपम आनन्दजनित सौन्दर्य के बढ़ने से; उवकैयिल्–हर्षातिरेक से; तळिर्त्तार्–प्रफुल्लित हो उठे। १२४७

नीड़ में विहग-शिशु माता पक्षी की प्रतीक्षा में हैं। तब मादा पक्षी सरपट अन्दर घुस आता है। उसको देखकर खग-शिशुओं की जो हालत होती है, उसी स्थिति में आये वे विजयी वानर वीर, जो अपना मुख खोलकर मारुति सम्बन्धी भय को प्रकट बोल रहे थे। तब उन्हें यह देखकर आनन्द हुआ कि लंका-गमन का आशय सुसम्पन्न हो गया। आनन्द से उनकी देहकांति बढ़ी। हर्षातिरेक से उनके शरीर प्रफुल्लित हुए। १२४७

अऴुदनर् शिलवर् मुन्निन् ड्रार्त्तनर् शिलव रणमित्
तॊऴुदनर् शिलव राडिल् तुळ्ळिनर् शिलव रळ्ळि
मुऴुदुड् विऴुङ्गु वार्पोल् मॊय्त्तनर् शिलवर् मुड्रुम्
तऴुविनर् शिलवर् कॊण्डु शुमन्दनर् शिलवर् ताङ्गि 1248

चिलवर्–कुछ; अऴुतनर्–(आनन्द के कारण) रोये; चिलवर्–कुछ वानरों ने; मुन् निन्ड्रु–उसके सामने खड़े होकर; आर्त्तनर्–आनन्दगर्जन किया; चिलवर्–कुछ एक ने; अण्मि–पास जाकर; तॊऴुतनर्–नमन किया; चिलवर्–कुछ; आटि–नाचे; तुळ्ळिनर्–उछले; चिलवर्–कुछ; अळ्ळि–उठाकर; मुऴुतु उड्–पूर्ण रूप से; विऴुङ्कुवार् पोल्–निगल जायँगे जैसे; मॊय्त्तनर्–बहुत पास आये; चिलवर्–कुछ; मुड्रुम्–पूर्ण रूप से; तऴुविनर्–लिपट गये; चिलवर्–कुछ वीरों ने; कॊण्टु ताङ्कि–उठा लेकर; चुमन्तनर्–धारण कर लिया। १२४८

हनुमान को देखकर कुछ वानर वीर रोये। कुछ एक ने उच्च आनन्दघोष किया। कुछ ने जाकर नमन किया। कुछ नाचे-उछले। कुछ इतने समीप गये, मानो उसे यों ही उठाकर निगल लें। कुछ उससे बिल्कुल लिपट गये। कुछ ने उसे उठाकर अपने सिर पर रख लिया। १२४८

तेनॊडु किऴङ्गुङ् गायु नड्रियन वरिदिड् ड्रेडि
मेन्मुड्रै वैत्तो मण्ण नुहर्न्दनै मॅलिवु तीर्दि
मानवाण् मुहमे यॅङ्गट् कुरैत्तदु माड्र मॅन्नात्
तानुहर् शाह मॅल्ला मुड्रैमुड्रै शिलवर् तन्दार् 1249

चिलवर्–कुछ एक ने; अण्णल्–महिमामय; मान–महान्; वाळ्–उज्ज्वल; मुकमे–मुख ही ने; माड्रम्–(शुभ-) समाचार; ॲङ्कट्कु–हमें; उरैत्ततु–बता दिया; नड्रियन–स्वादिष्ट; तेन् ऑटु–मधु के साथ; किऴङ्कुम्–कन्द और; कायुम्–फल (तरकारी); अरितिल् तेटि–कष्ट के साथ खोजकर; मेल् मुड्रै–अच्छे क्रम से; वैत्तोम्–(हमने) रखे हैं; नुकर्न्तनै–भुगतकर; मॅलिवु–थकावट; तीर्ति–दूर करो; ॲन्ना–कहकर; ताम् नुकर्–अपने भोज के लिए सुरक्षित;

चाकम् ॲल्लाम्–सभी शाकों को; मुऱै मुऱै–वारी-वारी से; तन्दार्–लाकर दिया । १२४९

कुछ वानरों ने कहा— महिमावान ! तुम्हारे रोबीले और सहास वदन ने सारा वृत्तान्त बता दिया है ! अब तुम स्वादिष्ट शहद, कन्द और तरकारी (कच्चे फल जो यों ही भोजन के रूप में खाये जाते हैं) भुगतो और विश्रान्त हो जाओ । हमने वह सब कष्ट के साथ ढूँढ़ लाकर रखा है । यह कहकर उन्होंने वारी-वारी से अपने भोजन के लिए सुरक्षित रखे हुए शाक आदि लाकर दिये । १२४९

ताळ्हळिऩ् मार्बिऱ् ऱोळिऱ् ऱलैयिऩिऱ् ऱडक्कै तम्मिल्
वाळ्हळिऩ् वेलिऩ् वाळि मळैहळिऩ् वहिर्न्द पुण्गळ्
नाळ्हण्मे लुलहिऱ् चॅऩ्ऱ नम्बिदऩ् कण्ण वाह
ऊळ्हॊळ नोक्कि नोक्कि युयिरुह वुयिर्त्तु नॊन्दार् 1250

ताळ्कळिऩ्–पैरों में; मार्पिल्–वक्ष में; तोळिल्–कन्धों पर; तलैयिऩिल्–सिर पर; तट कै तम्मिल्–विशाल हाथों में; वाळ्कळिऩ्–तलवारों से; वेलिऩ्–भालाओं से; वाळि मळैकळिऩ्–शर-वर्षाओं से; वकिर्न्त–चिरकर बने; पुण्कळ्–व्रणों को; उलकिल् चॅऩ्ऱ–संसार में बीत गये; नाळ्कळ् मेल्–दिनों के समान (अगणित); नम्पि तऩ्–नायक के; कण्ण आक–शरीर पर लगा; ऊळ् कॊळ–पूर्ण रूप से; नोक्कि नोक्कि–देखकर; उयिर् उक–प्राण निकल जाएँ, ऐसा; उयिर्त्तु–साँसें छोड़ते हुए; नॊन्तार्—पीड़ित हुए । १२५०

वानरों ने उन व्रणों को देख लिया जो हनुमान के पैरों, वक्ष, कन्धों, सिर और विशाल हाथों में तलवारों, भालाओं और शर-वर्षा द्वारा लग गये थे । उसके शरीर के व्रणों को उन्होंने पूर्ण रूप से देखा तो उनकी साँसें ऐसी चलने लगीं, मानो वे प्राण निकालकर ले जायँ । उन्होंने बहुत पीड़ा का अनुभव किया । १२५०

वालिहा दलनै मुन्दै वणङ्गिऩ नॆण्गिन् वेन्दैक्
कालुऱप् पणिन्दु पिन्ऩैक् कडऩ्मुऱै कडवोर्क् कॆल्लाम्
एलुऱ वियऱ्ऱि याङ्ग णिरुन्दिव णिरुन्दोर्क् कॆल्लाम्
ञालना यहत्ऱऩ् ऱेवि शॊल्लिऩ नन्मै यॆन्ऱाऩ् 1251

मुन्नै–पहले-पहल; वालि कातलऩै–वालीनन्दन को; वणङ्कित्तु–नमस्कार करके; ॲण्किऩ् वेन्दै–रीछों के राजा (जाम्बवान) को; काल् उऱ–चरणो में लगकर; पणिन्तु–नमन करके; पिऩ्ऩै–बाद; कटवोर्क्कु ॲल्लाम्–जिनका करना चाहिए, उन सबका; कटऩ् मुऱै–यथाकर्तव्य आदर आदि; एल् उऱ–उचित रीति से; इयऱ्ऱि–करके; आङ्कण् इरुन्तु–वहाँ रहकर के; इवण् इरुन्तोर्क्कु ॲल्लाम्–यहाँ जो रहे उन (आप) सबको; ञाल नायकऩ् तऩ्–जगन्नाथ की; तेवि–देवी ने; नऩ्मै–हिताशीर्वाद; चॊल्लिऩळ्–कहे; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा (हनुमान) ने । १२५१

हनुमान ने सबसे पहले वालीपुत्र को नमस्कार किया। फिर रीछों के राजा जाम्बवान के पायँलागन किया। फिर जिन-जिनका जैसा-जैसा आदर दिखाना चाहिए, वैसे उनकी अभ्यर्थना की। फिर वहाँ एक ओर आसीन होकर हनुमान ने उन लोगों से कहा कि जगन्नाथ की देवी ने यहाँ रहे तुम सबको अपनी शुभ कामना भेजी है। १२५१

अँन्ऱलुङ् गरङ्गळ् कूप्पि यॅळुन्दऩ रिऱैञ्जिप् पोऱ्ऱि
निन्ऱन रुवहै पौङ्ग विम्मला निमिर्न्द नॅञ्जर्
शॅन्ऱदु मुदला वन्द दिऱुदियाय्च् चॅप्पर् पालै
वन्ऱिऱ लुरवो यॅन्नच् चौल्लिनन् मरुत्तिन् मैन्दन् 1252

अँन्ऱलुम्–कहते ही; ॲळुन्ततर्–वे सब उठे; करङ्कळ् कूप्पि–हाथ जोड़कर; उवकै पौङ्क–उमगते आनन्द के साथ; इऱैञ्चि–नमन करके; पोऱ्ऱि–स्तुति करके; विम्मलाल्–आनन्द-स्फीति से; निमिर्न्त नॅञ्चर्–उत्साहपूर्ण मन के साथ; वन् तिऱल्–बहुत अधिक; उरवोय्–बलवान; चॅन्ऱतु मुतल् आ–जबसे गये, तबसे लेकर; वन्ततु इऱुतियाय्–आने तक का (वृत्तान्त); चॅप्पल् पालै–कहिए; अँन्न–कहने पर; मरुत्तिन् मैन्तन्–मरुत् के पुत्र ने; चौल्लिनन्–कहा। १२५२

हनुमान के ऐसा कहने पर सब उठ खड़े हुए। हाथ जोड़कर सीताजी की स्तुति की। उनके सीने आनन्द की स्फीति से फूल गये। उन्होंने हनुमान से याचना की कि अतिबली वीर! तुम्हारे यहाँ से जाने से लेकर यहाँ लौट आते तक जो हुआ वह सारा वृत्तान्त सुनाओ। पवन-सूनु ने सब बातें कहीं। १२५२

आण्डहै देवि युळ्ळत् तरुन्दव मसैयच् चौल्लिप्
पूण्डपे रडैया ळङ्गैक् कौण्डदुम् बुहन्ऱु पोरिल्
नीण्डवा ळरक्क रोडु निहऴ्न्ददुम् नॅरुप्पुच् चिन्दि
मीण्डदुम् विळम्बान् ऱान्ऱन् वॅन्ऱियै विळम्ब वॅळ्हि 1253

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; तेवि उळ्ळत्तु–देवी के मन के; अरुम् तवम्–अभूतपूर्व (पातिव्रत्य-संकल्प रूपी) तप को; अमैय चौल्लि–साफ़ बताकर; पूण्ट–उनके पहने हुए; पेर् अटैयाळम्–प्रबल अभिज्ञान; कै कौण्टतुम्–हाथ में लेना भी; पुकन्ऱु–बताकर; तन् वॅन्ऱियै–अपनी विजय को; तान् विळम्प–खुद कहने से; वॅळ्कि–लजाकर; पोरिल्–युद्ध में; नीण्ट वाळ्–लम्बी तलवारों वाले; अरक्करोटु–राक्षसों के साथ; निकऴ्न्ततुम्–जो हुआ वह; नॅरुप्पु–और आग; चिन्ति–लगाकर; मीण्टतुम्–लौटना; विळम्पान्–बोला नहीं। १२५३

पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने देवी के दृढ़ मन के पातिव्रत्य-तप की श्रेष्ठता को साफ़-साफ़ बताकर उनके पहने हुए आभरण को प्रमुख अभिज्ञान के रूप में प्राप्त कर आने का वृत्तान्त भी सुनाया। अपनी विजय-कहानी अपने

मुख से कहने से लजाकर उसने लंका में युद्ध में लम्बी तलवारधारी राक्षसों के साथ जो हुआ वह और लंका-दहन आदि समाचार नहीं कहे। १२५३

पॉरुदमै पुण्णे शॉल्ल वॅन्ऱमै पोन्द तन्मै
उरैशॅय ऊर्ती यिट्ट दोङ्गिरुम् बुहैये योदक्
करुदलर् पॅरुमै देवि मीण्डिलाच् चॅयले काट्टत्
तॅरिदर वुणर्न्देम् पिन्न ॲन्निनित् तेर्व दॅन्ऱार् 1254

पॉरुतमै–लड़ना; पुण्णे चॉल्ल–व्रण ही कहते है; वॅन्ऱमै–जीत पाना; पोन्त तन्मै–लौट आना ही; उरै चॅय–वताता हे; ऊर् ती इट्टतु–नगर में आग लगाना; ओङ्कु–उठा; इरुम् पुकैये–विपुल धूम ही; ओत–वर्णित करता है; करुतलर्–शत्रुओं के; पॅरुमै–वड़प्पन को; तेवि–देवी का; मीण्टु इला–न लौट आने का; चॅयले–कार्य ही; काट्ट–दिखाता है; तॅरितर उणर्न्तेम्–साफ़ समझ गये; पिन्तर्–फिर; ॲन्नु इत्ति तेर्वतु–क्या है समझने को; ॲन्ऱार्–कहा। १२५४

(तो भी वानर वीर अनुमान कर गये। उन्होंने कहा—) तुमने वहाँ युद्ध किया, यह तुम्हारे शरीर के व्रण ही बता रहे हैं। तुमने विजय पायी यह बात तुम्हारे लौट आने के प्रकार से ही साफ़ विदित हो गयी। तुमने लंका मे आग लगायी —यह वात वहाँ जो घना धुआँ उठा, उससे हमने जान ली थी। देवी लौट नहीं आयी —यह वात शत्रुओं के वलगौरव को साफ़ बता रही है। हम सब समझ गये। फिर क्या है, तुमसे पूछकर जान लेने को ? । १२५४

यावदु मिनिवे ऱॅण्ण वेण्डुव दिरैयु मिल्लै
शेवहन् ऱेवि तन्नैक् कण्डदु विरैविऱ् चॅप्पि
आवदव् वण्ण लुळ्ळत् तरुन्दुय रहऱ्ऱ लेयाम्
बोवदु पुलमै यॅन्नाप् पॉरुक्कॅन वॅळुन्दु पोनार् 1255

इनि–आगे; वेऱु ॲण्ण वेण्टुवतु–अन्य कुछ सोचने को; यावतुम् इऱैयुम् इल्लै–कुछ भी जरा भी नहीं है; आवतु–जो करना है, वह; चेवकन्–श्रीवीरराघव की; तेवि तन्नै–देवी को; कण्टतु–जो देखा है; विरैविल्–(वह) शीघ्र; चॅप्पि–कहकर; अण्णल् उळ्ळत्तु–महिमावान प्रभु के मन का; अरुम् तुयर्–कठोर दुःख को; अकऱ्ऱल् ए आम्–दूर करना ही है; पोवतु–जाना; पुलमै–बुद्धिमत्ता का काम है; ॲन्ना–कहकर; पॉरुक्कु ॲन–सहसा; ॲळुन्तु पोनार्–उठ के चले। १२५५

(सब वीरों ने एक साथ विचारा।) अब सोचने के लिए कुछ भी नही, कोई भी विषय नहीं। अब करना यही है कि श्रीवीरराघव की पत्नी से भेंट करने की बात शीघ्र जाकर कहें और महिमावान श्रीराम के मन का कठोर दुःख दूर करें। इसलिए जाना ही बुद्धिमत्ता का काम होगा। वे शीघ्र उठकर चले। १२५५

[इसके आगे 'मधुवन' का वृत्तान्त है। पन्द्रह पद्य में वर्णित यह वृत्तान्त क्षेपक माना जाता है। अतः हम इनको छोड़ देते हैं।]

एदुना ळिऱ्न्द शाल वरुन्दिन दिरुन्द शेनै
आदलाल् विरैविऱ् चॅल्ल लावदन् ऱ्ळिय मॅम्मै
शादऱीर्त् तळित्त वीर तलैमहन् मॅलिवु तीरप्
पोदुनी मुन्न रॅन्ऱार् नन्ऱॅन्न वनुमन् पोनान् 1256

अळियम् ॲम्मै–दीन हमें; चातल् तीर्त्तु–मरने से बचाने की; अळित्त वीर–कृपा करनेवाले वीर; एतु नाळ्–(अन्वेषण) हेतु (निश्चित) दिन; चाल इऱन्त–बहुत पहले ही पूरे हो गये; इरुन्त चेनै–यहाँ जो रही वह सेना; वरुन्तितु–दुःखी रही; विरैविल् चॅल्लल् आवतु–शीघ्र जाने में समर्थ; अन्ऱु–नहीं है; आतलाल्–इसलिए; तलैमकन्–हमारे नायक के; मॅलिवु तीर–दुःख को दूर करने; नी–आप; मुन्नर्–पहले; पोतु–जाएँ; ॲन्ऱार्–कहा; नन्ऱु ॲन–अच्छा कहकर; अनुमन्–हनुमान; पोनान्–गया। १२५६

वीरों ने हनुमान से कहा कि हे वीर! जिसने हम दीनों को मरने से बचाया! सीताजी के अन्वेषणार्थ निर्णीत अवधि के दिन कभी के बीत गये। यहाँ जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रही वह सेना अधिक संकटग्रस्त होकर निर्बल हो गयी। इसलिए वह शीघ्र जाने में असमर्थ है। इसलिए तुम पहले जाकर समाचार दो, ताकि नायक श्रीराम का दुःख दूर हो। हनुमान ने कहा कि ठीक है। वह चला। १२५६

मुत्तलै यॅः(ह्)हि नाऱ्कु मुडिप्परुङ् गरुम मुऱ्ऱि
वित्तहत् तूदन् मीण्ड दिऱ्दियाय् विळैन्द तन्मै
अत्तलै यऱिन्द वॅल्ला मऱैत्तन माऴि यान्माट्
टित्तलै निहऴ्न्द वॅल्ला मियम्बुवा नॅडुत्तुक् कॊण्डाम् 1257

वित्तक–(श्रीराम का) समर्थ; तूतन्–दूत; मुत्तलै ॲः·कितार्कुम्–त्रिशिर शूलधारी के लिए भी; मुटिप्पु अरुम्–असाध्य; करुमम् मुऱ्ऱि–कार्य सम्पन्न करके; मीण्टतु–लौटा; इऱुतियाय्–वहाँ तक का; अ तलै–वहाँ; विळैन्त तन्मै–जो घटा वह वृत्तान्त; अऱिन्ततु ॲल्लाम्–हमारे जाने सभी; अऱैन्तनम्–हमने कहे; इ तलै–यहाँ; आऴियान् माट्टु–चक्रधारी श्रीराम के प्रति; निकऴ्न्त–जो हुआ; ॲल्लाम्–वह सब; इयम्पुवान्–कहने को; ॲटुत्तुक् कॊण्टाम्–तत्पर हुए हैं। १२५७

(कवि—) सर्वसमर्थ दूत हनुमान त्रिशूलधारी शिवजी के लिए भी असाध्य कार्य सम्पन्न कर आया। वहाँ तक का उधर का सारा वृत्तान्त जो हम जानते थे, हमने बताया है। अब इधर चक्रधर विष्णु के अवतार (या चक्रवर्ती) श्रीराम पर क्या बीता वह कहने चलते हैं। १२५७

❀शेऱ्ऱिऴ मरैमलर्त् तिरुवैत् तेर्हॆंतक्
काऱ्ऱिऩ्मा मकऩ्मुतऱ् कवियिऩ् शेऩैयै
नाऱ्ऱिशै मरुङ्गिऩ् मेवि नायहऩ्
तेऱ्ऱिऩ तिरुन्दनऩ् कतिरिऩ् चॆम्मले 1257(अ)

चेऱ्ऱु–पंक में उत्पन्न; इळ मरैमलर्–नवीन कमल पर रहनेवाली; तिरुवै–श्री (सीता) को; तेर्क ॲंत–खोजो कहकर; काऱ्ऱिऩ् मा मकऩ् मुतल्–वायु के महान् पुत्र आदि; कवियिऩ् चेऩैयै–कपियों की सेना को; नाऱ्ऱिचै मरुङ्किऩुम्–चारों दिशाओं की ओर; एवि–प्रेषित करके; नायकऩ्–नायक श्रीराम को; तेऱ्ऱिऩऩ् इरुन्तऩऩ्–धीरज बँधाता रहा; कवियिऩ् चॆम्मल्–कपिकुलपति। १२५७ (अ)

कपिकुलाधिप सुग्रीव पंकजपुष्पासना श्रीलक्ष्मी को खोजने के लिए वायुपुत्र आदि की सेना को चारों दिशाओं में प्रेषित करके नायक श्रीराम को धीरज बँधाता रहा। (यह पद्य हमारे मूल टीकाकार की दृष्टि में क्षेपक है। उन्होंने नियमानुसार इसे अतिरिक्त पदों के अन्तर्गत दिया है। उसे संख्या नहीं दी है। हमने इसीलिए इसे दिया है कि टी०के० चिदम्बरनाथ मुदलियार क्षेपक नहीं मानते, वरन् प्रामाणिक मानते हैं। और भी कथा-प्रवाह में इसका स्थान उचित ही लगता है।)। १२५७(अ)

कार्वरै यिरुन्दवक् कदिरिन् कादलऩ्
शीरिय शॊऱ्कळाऱ् ऱॆरुट्टच् चॆङ्गणाऩ्
आरुयि रायिर मुडैय ऩामॆऩच्
चोर्दॊऱुम् जोर्दॊऱु मुयिर्त्तुत् तोऩ्ऱिऩाऩ् 1258

चॆम् कणाऩ्–अरुणाक्ष; चोर् तॊऱुम् चोर् तॊऱुम्–जब-जब (अत्यधिक दुःख से) श्रान्त हो जाते; कार् वरै इरुन्त अ–(तब)काले (प्रश्रवण) पर्वत पर जो रहा, उस; कतिरिऩ् कातलऩ्–किरणमाली सूर्यनन्दन के; चीरिय चॊऱ्कळाल्–श्रेष्ठ शब्दों से; तॆरुट्ट–समझाने पर; आयिरम्–सहस्र; आर् उयिर् उटैयऩ् आम्–प्राणों को धारण करनेवाले; ॲंऩ–जैसे; अयिर्त्तु तोऩ्ऱिऩाऩ्–बार-बार श्वास छोड़ते प्राणवान बने। १२५८

जब-जब अरुणाक्ष श्रीराम विरहपीड़ा से श्रान्त हो जाते, तब उस काले प्रश्रवण पर्वत पर साथ जो रहा, उस सूर्यसूनु ने श्रेष्ठ वचन कहकर ढाढ़स दिया। तब रामचन्द्रजी का श्वास जो रुका रहता फिर से चलने लगता। उन्हें देखकर ऐसा लगता कि क्या इनके सहस्र प्राण हैं ?। १२५८

तण्डलि नॆंडुन्दिशै मूऩ्ऱुऩ् दाविऩर्
कण्डिलर् मडन्दैयै यॆऩ्ऩुङ् गट्टुरै
उण्डुयि रहत्तॆंऩ वीरुक्क वुम्मुळऩ्
तिण्डिऱ लनुमनै निऩैयुज् जिऩ्वैयाऩ् 1259

तण्टल् इल्–अबाध गति से; नॅट्टुम् तिचै मून्ऱुम्–तीन लम्बी दिशाओं में; तावित्तार्–लपक जो चले वे; मटन्तैयै–देवी को; कण्टिलर्–देख नहीं पाये; ॲन्नुम्–यह; कट्टुरै–वचन; अकत्तु उयिर् उण्टु–अन्दर प्राण हैं; ॲत–ऐसी स्थिति में; ओरुक्कवुम्–बड़ा कष्ट देता रहा; तिण् तिऱल्–अतिशय बलशाली; अनुमतै–हनुमान का; नितैयुम् चिन्तैयान्–स्मरण करनेवाले मन के हो; उळन्–(जीवित) रहे (किसी विध)। १२५६

अबाध गति से जो तीन लम्बी दिशाओं में गये थे, वे लौट आ गये। वे देवी के दर्शन नहीं कर सके। यह कथन उन्हें, चूँकि प्राण थे, सता रहा था। वे अतिबलिष्ठ हनुमान का स्मरण करते रहे। इसलिए ज्यों-त्यों अपने प्राणों को रखते रहे। १२५९

* आरिय नरुन्दुयरक् कडलु ळाऴ्बवन्
शीरिय दन्ऱुनज् जॅयहै तीर्वरुम्
मूरिवॅम् बऴियॊडु मुडिन्द दामॆनाच्
चूरियन् पुदल्वनै नोक्किच् चॊल्लुवान् 1260

आरियन्–आर्य श्रीराम; अरुम्–कठोर; तुयर् कटल् उळ्–दुःख-सागर में; आऴ्पवन्–मग्न; चूरियन् पुतल्वळै नोक्कि–सूर्य-पुत्र को देखकर; नम् चॅय्कै–हमारा काम; चीरियतु अन्ऱु–श्रेष्ठ नहीं; तीर्वु अरुम्–अवार्य; मूरि वॅम् पऴि ओटु–कठोर और भयंकर निन्दा के साथ; मुटिन्ततु आम्–समाप्त हो जायगा; ॲता–कहकर; चॊल्लुवान्–आगे बोले। १२६०

कठोर दुःखसागरमग्न श्रीराम ने अर्कपुत्र से कहा कि हमारा कार्य श्रेष्ठ नहीं लगता। वह अवार्य और कठोर भयंकर अपमान में पूरा होगा। वे आगे यों बोले। १२६०

* कुऱित्तना ळिहन्दन कुन्ऱत् तॅन्ऱिशै
वॅऱिक्करुङ् गुऴलियै नाडन् मेयिनार्
मऱित्तिवण् वन्दिलर् माण्डु ळार्हॊलो
पिऱित्तवर्क् कुऱ्ऱुळ वॆन्न पॆऱ्ऱियो 1261

कुऱित्त नाळ्–निर्णीत दिन; इकन्तत–बीत गये; कुन्ऱ–बीतने पर; तॅन् तिचै–दक्षिण दिशा में; वॅऱि करुम्–सुगन्धित काले; कुऴलियै–केश वाली को; नाटल् मेयितार्–खोजने जो चले; मऱित्तु–(वे) लौटकर; इवण्–यहाँ; वन्तिलर्–आये नहीं; माण्टुळार् कॊल् ओ–मर गये क्या; पिऱित्तु–दूसरा; अवर्क्कु उऱ्ऱु उळतु–उन पर जो बीता; ॲन्न पॆऱ्ऱि ओ–कैसा है तो। १२६१

अवधि के दिन बीत गये। तो भी दक्षिण दिशा में सुवासित काले केश की सीता की खोज में जो चले वे लौट के इधर नहीं आये। क्या वे मर गये होंगे? फिर उन्हें क्या हुआ होगा? कैसा हुआ होगा?। १२६१

❀माण्डन्न ळवळिवण् माण्ड वार्त्तैयै
मीण्डवर्क् कुरैत्तलिन् विळिद नन्ऱॆन्ताप्
पूण्डदोर् तुयरोडु पॊन्ऱिनार् कॊलो
तेण्डिन्न रिन्नमुन् दिरिहिन्ऱार् कॊलो 1262

अवळ् माण्टनळ्–वह मर गयीं; इवण्–यहाँ; मीण्टु–लौट आकर; माण्ट वार्त्तैयै–मरने का समाचार; अवर्क्कु उरैत्तलिन्–उनसे कहने से; विळितल्–(हमारा) मरना; नन्ऱु–अधिक अच्छा है; ऎन्ता–ऐसा सोचकर; पूण्टतु ओर् तुयर् ओटु–अपनाए गये एक दुःख के साथ; पॊन्ऱिनार् कॊल् ओ–मर गये क्या; इन्नमुम्–अब भी; तेण्टिन्नर्–खोजते हुए; तिरिकिन्ऱार् कॊल् ओ–भटक रहे हैं क्या। १२६२

"सीता चल बसीं। लौट यहाँ आकर सीता की मृत्यु का समाचार देने से मर जाना बेहतर है।" —ऐसा निश्चय करके दुःखी होकर वे मर गये क्या? या अब भी खोजते हुए इधर-उधर भटक रहे हैं?। १२६२

कण्डन ररक्करैक् कऱुवु कैम्मिह
मण्डमर् तॊडङ्गिनार् वञ्जर् मायैयाल्
विण्डल मदनिन्मे यिनर्हॊल् वेऱिलात्
तण्डलि नॆडुञ्जिऱैत् तळैप्पट् टार्हॊलो 1263

अरक्करै–राक्षसों को; कण्टनर्–देखकर; कऱुवु–कोप के; कै मिक–बढ़ने से; मण्टु–घमासान; अमर् तॊटङ्किनार्–युद्ध प्रारम्भ करके; वञ्चर् मायैयाल्–वंचकों के मायाकृत्य से; विण् तलम् अतनिन्–स्वर्गलोक में; मेयिनर् कॊल्–पहुँच गये क्या; वेऱु इला–निरुपाय; तण्टल् इन्–अबाध; नॆटुम् चिऱै–दीर्घ कारा में; तळैप्पट्टार् कॊल्–बँध गये क्या। १२६३

(या) राक्षसों को देख पाकर बढ़ते क्रोध के साथ उन्होंने युद्ध प्रारम्भ किया और वञ्चकों के मायाकृत्य से स्वर्ग पहुँच गये? या निरुपाय दीर्घ कारा में वन्दी कर रखे गये हैं?। १२६३

कूऱिन नाळव रिरुक्कै कूडलम्
एऱलञ् जुदुमॆन्न विन्ब दुन्बङ्गळ्
आऱिन्न ररुन्दव ममैहिन्ऱार्हॊलो
वेऱवर्क् कुऱ्ऱदॆन् विळम्बु वायॆन्ऱान् 1264

कूऱिन नाळ्–निर्णीत दिन में; अवर् इरुक्कै–उनके (श्रीराम के) वासस्थान; कूटलम्–पहुँचे नहीं; एऱल् अञ्चुतुम्–जाने से भय लगता है; ऎन्न–ऐसा सोचकर; इन्प तुन्पङ्कळ् आऱिनर्–सुख-दुःख-श्रान्त होकर; अरुम् तवम्–कठोर तपस्या में; अमैकिन्ऱार् कॊल्–विश्रान्त हैं; ओ–क्या; वेऱु ऎन्–और क्या; अवर्क्कु उऱ्ऱतु–उनका हुआ; विळम्पुवाय्–बोलो; ऎन्ऱान्–बोले। १२६४

"अवधि के दिन बीत गये। वहाँ पहुँचने में डर लगता है।" ऐसा सोचकर सुखदुःखनिवृत्त होकर वे कठोर तपस्या में विश्रान्त रहते हैं क्या ? फिर उनका क्या हुआ होगा। बोलो। श्रीराम ने सुग्रीव से पूछा। १२६४

※ ऍऩ्बुऴि यनुमऩु मिरवि येऩ्बवऩ्
तॆऩ्बुलत् तुळॅऩ्ऩत् तॆरिव दायिनाऩ्
पॊऩ्बॊऴि तडक्कयप् पौरुविल् वीरऩुम्
अऩ्बुरु शिन्दैया नमैय नोक्किऩाऩ् 1265

ऍऩ्पुऴि—जब वे यह कह रहे थे; अनुमऩुम्—(तब) हनुमान और; इरवि ऍऩ्पवऩ्—रवि नाम का वह; तॆऩ् पुलत्तु उळत् अॆऩ्ऩ—दक्षिण में उदित हुआ जैसे; तॆरिवतु आयिऩाऩ्—प्रकट हुआ; पॊऩ् पॊऴि—(याचक को) स्वर्ण-वर्षा के समान देनेवाले; तट कै—विशाल हाथों के; अ पौरुवु इल् वीरऩुम्—उन अनुपम् वीर (श्रीराम) ने भी; अऩ्पु उरु चिन्तैयाऩ्—प्रेममग्न हो; अमैय—खूब; नोक्किऩाऩ्—(हनुमान पर) दृष्टि गड़ाकर देखी। १२६५

श्रीराम यों कह ही रहे थे कि दक्षिण में रवि प्रकट हो गया-जैसे हनुमान दिखायी दिया। (याचक—) स्वर्णवर्षी हाथों के उन अनुपम वीर श्रीराम ने भी बड़े प्रेम के साथ हनुमान को ध्यान से देखा। १२६५

※ ऍय्दिऩ ऩनुमऩु मॅय्दि येऩ्दऱ्
मॊय्हऴ ऱॊऴुदिलन् मुळरि नीङ्गिय
तैयलै नोक्किय तलैयन् कैयिऩऩ्
वैयहन् दऴीइनॅडि दिरैञ्जि वैहिऩाऩ् 1266

अनुमऩुम्—हनुमान भी; ऍय्तिऩऩ्—आ पहुँचा; ऍय्ति—पहुँचकर; एऩ्तल् तऩ्—प्रभु के; मॊय् कऴल्—सुदृढ़ पायलधारी चरणों को; तॊऴुतु इलऩ्—वन्दना न करके; मुळरि नीङ्किय—कमल छोड़कर (भूमि पर) अवतरित; तैयलै—देवी (की दिशा) को; नोक्किय—उद्दिश्य करके; तलैयऩ् कैयिऩऩ्—फिरे मुख वाला और जुड़े हाथों वाला बन; वैयकम् तऴीई—भूमि पर लगकर; नॆटितु इऱैञ्चि—बहुत देर दण्डवत करता हुआ; वैकिऩाऩ्—रहा। १२६६

हनुमान भी वहाँ आया। (उसने एक विचित्र काम किया।) वह सम्मानित प्रभु श्रीराम के सुदृढ़ पायलधारी चरणों पर नमस्कार न करके कमलवास छोड़, भूमि पर अवतरित हुई श्रीलक्ष्मी, सीताजी जिस दक्षिण दिशा में रहीं उस ओर मुख करके और उसी ओर हाथ जोड़कर भूमि पर दण्डवत् की मुद्रा में भूमि से लगकर गिरा और लम्बी देर तक पड़ा रहा। १२६६

※ तिण्डिऱ लवऩ्ऱॊय ऱॆरिय नोक्किनाऩ्
वण्डुऱै योदियुम् वलियण् मऱ्ऱिवऩ्

कण्डदु मुण्डवळ् कऱ्पु नऩ्ऱॆऩक्
कॊण्डनऩ् कुऱिप्पिना लुणरुङ् गॊळ्हैयाऩ् 1267

कुऱिप्पिताल्–इंगित से; उणरुम् कॊळ्कैयाऩ्–आशय समझने की (विवेक) शक्ति रखनेवाले श्रीराम ने; तिण् तिऱल्–बहुत ही कुशल; अवऩ् चॆयल्–उसका कार्य; तॆरिय नोक्कितान्–भलीभाँति देखा और जाना; वण्टु उऱै–भ्रमराश्रय; ओतियुम्–केशिनी भी; वलियळ्–स्वस्थ हैं; इवऩ् कण्टतुम्–इसकी भेंट भी; उण्टु–हुई है; अवळ् कऱ्पुम्–उसका पातिव्रत्य भी; नऩ्ऱु–सुदृढ़ है; ऎऩ–ऐसा; कॊण्टऩऩ्–ताड़ लिया। १२६७

श्रीराम इंगितज्ञ थे। उन्होंने सामर्थ्यशाली उस हनुमान के तत्त्वार्थपूर्ण कार्य देखा और समझ गये कि भ्रमरावृत सुकेशिनी सीताजी स्वस्थ है; इसने उनसे भेंट की है और उनका पातिव्रत्य सुरक्षित है। १२६७

आङ्गवऩ् शॆय्हैये यळवै यामॆना
ओङ्गिय वुणर्विनाल् विळैन्द दुऩ्निनाऩ्
वीङ्गिन तोळ्पुनर् कण्कळ् विम्मिन
नीङ्गिय दरुन्दुयर् काद लीण्डवे 1268

आङ्कु–वहाँ; अवऩ् चॆय्कैये–उसका काम ही; अळवै आम्–मापदण्ड हैं; ऎऩा–मानकर; ओङ्किय उणर्वितल्–उत्कृष्ट अपने ज्ञान द्वारा; विळैन्ततु उऩ्नितान्–जो घटा उसका अनुमान कर लिया। (श्रीराम ने); तोळ् वीङ्कित–(उनके) कन्धे फूल उठे; कण्कळ्–आँखें; पुनल् विम्मित–(अश्रु-) जल से भरीं; अरुम् तुयर्–कठोर दुःख; नीङ्कियतु–दूर हुआ; कातल्–(सीता पर) प्रेम; नीण्टतु–वर्द्धित हुआ। १२६८

श्रीराम ने अपने उत्कृष्ट ज्ञान द्वारा, हनुमान के कृत्य को माप बनाकर बीते कार्यों का अनुमान लगा लिया। तब उनके कन्धे फूल उठे। आँखें अश्रुजल से खूब भर गयीं। कठोर दुःख दूर हो गया। सीताजी के प्रति प्रेम बढ़ गया। १२६८

❀ कण्डनॆऩ् कऱ्पिनुक् कणियैक् कण्गळाल्
तॆण्डिरै यलैहड लिलङ्गैत् तॆऩ्नहर्
अण्डर्ना यहविनित् तविर्दि यैयमुम्
पण्डुळ तुयरुमॆऩ् ऱनुमन् पऩ्निनाऩ् 1269

अनुमऩ्–हनुमान ने; अण्टर् नायक–देवनायक; तॆळ् तिरै–साफ़ और उठ गिरनेवाली; अलै–तरंगाकुल; कटल्–समुद्र-मध्य; इलङ्कै–लंका (नाम) के; तॆऩ् नकर्–दक्षिण (में रहनेवाले) नगर में; कऱ्पिऩुक्कु अणियै–पातिव्रत्य के शृंगार को; कण्कळाल् कण्टॆऩ्–आँखों से देखा; इति–आगे; ऐयमुम्–सन्देह और; पण्टु उळ–पहले से रहा; तुयरुम्–दुःख; तविर्ति–दूर करें; ऎऩ्ऱु–ऐसा; पऩ्नितान्–(कहकर) विस्तार से कहा। १२६९

हनुमान ने श्रीराम से निवेदन किया, हे देवादिदेव! (अण्डनायक!) स्वच्छ और लहराती तरंगों के समुद्रमध्य, दक्षिण में स्थित लंका के नगर में मैंने पातिव्रत्य के श्रृंगार मान्य सीताजी को अपनी आँखों से देख लिया। अब आप सन्देह और बहुत दिनों का दुःख छोड़ दें। उसने आगे विस्तार से यों कहा। १२६९

❀ उन्बॅरुन् देवि यॅन्नुनु मुरिमैक्कु मुन्नैप् पॅरुर
मन्बॅरु मरुहि यॅन्नुम् वाय्मैक्कु मिदिलै वेन्दन्
तन्बॅरुन् दनयै यॅन्नुन् दन्मैक्कुन् दहैमै शान्ऱ
ॲन्बॅरुन् दॅय्व मैया विन्नमुङ् गेट्टि यॅन्बान् 1270

ऐया–प्रभु; उन् पॅरुम् तेवि–आपकी महीयसी देवी; ॲन्नुम् उरिमैक्कुम्–रहने का स्वत्व और; उन्नै पॅर्र–आपके जनक; मन्–चक्रवर्ती की; पॅरुम् मरुकि–सम्मान्य बहू के; ॲन्नुम् वाय्मैक्कुम्–उस गौरव के लिए; मितिलै वेन्तन् तन्–मिथिला के राजा की; पॅरुम् तनयै–सुपुत्री; ॲन्नुम् तन्मैक्कुम्–होने के गौरवपूर्ण स्थान के लिए; तकैमै चान्र–पूर्ण योग्य; ॲन् पॅरुम् तॅय्वम्–मेरी आराध्या देवी; इन्नमुम् केट्टि–और भी सुनिए; ॲन्रान्–कहा। १२७०

प्रभु! आपकी उत्तम धर्मपत्नी का पद, आपके जनक चक्रवर्ती दशरथ की आदरणीय पतोहू बनने का गौरव, मिथिला के राजा की सम्मान्य पुत्री बनने का भाग्य —इनके बिल्कुल योग्य हैं मेरी आराध्या श्रेष्ठ देवी। और भी सुनिए। हनुमान ने जारी किया। १२७०

❀ पॊन्नल दिल्लैप् पॊन्नै यॊप्पॆन पॊरैयि निन्राळ्
तन्नल दिल्लैत् तन्नै यॊप्पॆनत् तनक्कु वन्द
निन्नल दिल्लै निन्नै यॊप्पॆन निनक्कु नेर्न्दाळ्
ॲन्नल दिल्लै यॆन्नै यॊप्पॆन वॆनक्कु मीन्दाळ् 1271

पॊन्नै ऒप्पु–स्वर्ण से तुल्य; पॊन् अलतु इल्लै–स्वर्ण छोड़ दूसरा नहीं; ॲन–इसी रीति से; पॊरैयिल्–क्षमा के गुण में; निन्राळ्–स्थित हैं; तन्नै ऒप्पु–अपनी-अपने समान; तन् अलतु–अपने को छोड़; इल्लै–दूसरा नहीं; ॲन–ऐसे ही; तनक्कु वन्त–अपने पति के रूप में प्राप्त; निन्नै ऒप्पु–आपसे तुल्य; निन् अलतु–आपके सिवा; इल्लै–नहीं; ॲन–ऐसा (गौरव); निनक्कु नेर्न्ताळ्–आपको दिलाया है (देवी ने); ॲन्नै ऒप्पु–मेरे समान; ॲन् अलतु–मुझे छोड़ दूसरा; इल्लै ॲन–नहीं है, यह; ॲनक्कुम्–(गौरव) मुझे भी; ईन्ताळ्–प्रदान किया। १२७१

स्वर्ण से तुल्य स्वर्ण से अन्य कोई वस्तु नहीं है। वैसे ही वे अनुपम क्षमाशीला हैं। अपनी सानी वे अपने से अलावा कोई नहीं रखतीं। उन्होंने आपको भी 'आपसे तुल्य आपके सिवा अन्य नहीं है' —यह कहाने का गौरव प्रदान किया है। मुझे भी यह पद दिला दिया है, जिससे अपने से तुल्य मैं ही हूँ। कोई दूसरा मेरे समान नहीं है। (स्वर्ण ताडन,

निघर्षण, तापन…किसी से भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। सीताजी की उपमा इसी से स्वर्ण से दी गयी है। सीताजी के कारण अब श्रीराम अनुपम सौभाग्यवान पति बन गये। 'कुरळ' का कहना है— सती पत्नी के अतिरिक्त पुरुष के लिए प्राप्य बड़ी वस्तु क्या है ? हनुमान का भी गौरव इतना बढ़ा कि सामान्य वानर असामान्य दूत बन गया। इस पद्य में नेऱ्न्दाळ्, ईन्दाळ् —दो क्रिया शब्द आये हैं। दोनों के अर्थों में यह भिन्नता है कि पहला शब्द समानता का द्योतक है और दूसरा यह इंगित करता है कि पानेवाला नीची हैसियत में है।)। १२७१

उऩ्गुल मुऩ्ऩ दाक्कि युयर्वुहळ्क् कौरुत्ति याय
तऩ्गुलऩ् दऩ्ऩ दाक्कित् तऩ्ऩैयित् तऩिमै शॅय्दाऩ्
वऩ्गुलङ् गूऱ्ऱुक् कीन्दु वाऩवर् कुलत्तै वाळ्वित्
तॅऩ्गुल मॅनक्कुत् तन्दा ळॅन्ऩिनिच् चॅय्व दॅम्मोय् 1272

ॲम् ओय्–मेरी माता; उऩ् कुलम्–आपका कुल; उऩ्ऩतु आक्कि–आपका स्थापित करके; उयर् पुकळ्क्कु–उन्नत सुयश के लिए; ऑरुत्ति आय—योग्य अकेली जो हैं; तऩ् कुलम्—वह अपना कुल; तऩ्ऩतु आक्कि–अपना स्थापित कर; तऩ्ऩै इ तऩिमै चॅय्ताऩ्–अपने को जिसने इस तरह पृथक् किया; वऩ् कुलम्–(उस रावण के) नृशंस कुल को; कूऱ्ऱुक्कु ईन्तु–मृत्यु के हाथ सौंपकर; वाऩवर् कुलत्तै–देवकुल को; वाळ्वित्तु–निर्भय जीवन प्रदान करके; ॲऩ् कुलम्–मेरा कुल; ॲऩक्कु तन्ताळ्–मुझे दिलाया; इऩि–आगे; ॲऩ् चॅय्वतु–करने को क्या है। १२७२

मेरी माता ने आपके कुल को आपका बना दिया (यानी आपके नाम पर आपका कुल स्मरण किया जायगा); उच्च यशस्विनी अपने कुल को अपना बना लिया (उनका कुल उनके नाम पर चलेगा); अपने को आपसे पृथक् करनेवाले रावण के कुल को मृत्यु का बना दिया; देवकुल को निर्भय जीवन का बनाया और मेरे कुल को मुझे दे दिया (यानी मामूली बन्दर भी हनुमान के कुल का बताया जायगा)। इससे बढ़कर कहने को क्या है ? । १२७२

❀ विऱ्पॅरुन् दडन्दोळ् वीर वीङ्गुनी रिलङ्गै वॅऱ्पिऩ्
नऱ्पॅरुन् दवत्त ळाय नङ्गैयैक् कण्डे नल्लेऩ्
इऱ्पिऱप् पॅऩ्ब दॊऩ्ऱु मिरुम्बॊऱै यॅऩ्ब दॊन्ऱुम्
कऱ्पॅनुम् बॅयर दॊऩ्ऱुङ् गळिनडम् बुरियक् कण्डेऩ् 1273

विल्–(कोदण्ड) धनुर्धर; पॅरुम्–बड़े; तटम् तोळ्–विशाल कन्धों वाले; वीर–वीर; वीङ्कु नीर्–बहुत जल के समुद्र की घिरी; इलङ्कै वॅऱ्पिल्–लंका की गिरि पर; नल् पॅरुम् तवत्तळ् आय–अच्छे और बड़े तप में लगी; नङ्कैयै–देवी को; कण्टेऩ् अल्लेऩ्–नहीं देखा; इल् पिऱप्पु ॲऩ्पतु–कुल-जन्म, यह; ऑऩ्ऱुम्–एक; इरुम् पॊऱै ॲऩ्पतु–अति गम्भीर क्षमा नाम की; ऑऩ्ऱुम्–एक वस्तु और; कऱ्पु–

पातिव्रत्य; अँन्नुम् पॅयर् अतु–नाम की; ऑन्ड्रुम्–एक चीज; कळि नटम् पुरिय–(इनको) मत्त नृत्य करते हुए; कण्टेन्–देखा। १२७३

कोदण्ड के धारक बड़े और विशाल भुजाओं वाले वीर ! विपुल जलाश्रय समुद्र के मध्य त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका में मैंने केवल अति-श्रेष्ठ तपस्विनी स्त्री को नहीं देखा; वरन् श्रेष्ठ कुल में जन्म, गम्भीर क्षमा और सतीत्व —इन तीनों तत्त्वों को मिलकर मत्तता से आनन्दनृत्य करते हुए देखा। १२७३

कण्णिनु मुळैनी तैयल् करुत्तिनु मुळैनी वायिन्
अँण्णिनु मुळैनी कॉङ्गै यिणैक्कुवै तन्नि नोवा
दण्णलवॅङ् गाम नॅय्द वलरम्बु तॉळैत्त वाडाप्
पुण्णिनु मुळैनी निन्नैप् पिरिन्दमै पॉरुन्दिड् डामो 1274

नी–आप; तैयल् कण्णितुम्–देवी की आँखों में भी; उळै–हैं; करुत्तित्तुम्–मन में भी; नी उळै–आप विद्यमान हैं; वायिन् अँण्णिनुम्–मुख के बोलों में भी; नी उळै–आप रहते हैं; कॉङ्कै इणै–स्तनद्वय के; कुवै तन्निल्–अग्रभाग में; ओवातु–निरन्तर; अण्णल्–महिमावान; वॅम् कामन्–सन्तापक कामदेव द्वारा; अँय्त–प्रेषित; अलर् अम्पु–पुष्प-शर; तॉळैत्त–से विद्ध; आडा–जो नहीं भरता, उस; पुण्णितुम्—घाव में भी; नी उळै–आप ही हैं; निन्नै पिरिन्तमै–आपसे वियुक्त होने की बात कहना; पॉरुन्तिड्डु आमो–युक्त होगा क्या। १२७४

प्रभु ! आप देवी की आँखों पर सदा विद्यमान है; उनके मन में विराजमान हैं; मुख के शब्दों में घुले मिले हैं। महिमावान और सन्तापक कामदेव द्वारा निरन्तर प्रेषित सुमन-शरों से उनके स्तनद्वय के अग्र भाग में बने, सदा ताज़े व्रण में भी है। फिर आपसे वे अलग हो गयीं —यह कहना युक्त होगा क्या ? । १२७४

वेलैयु ळिलङ्गै यॅन्नुम् विरिनह रॉरुशार् विण्डोय्
कालैयु मालै तानु मिल्लदोर् कनहक् कऱ्पच्
चोलैयङ् गदनि नुम्बि पुल्लिनाड् डॉडुत्त तूय
शालैयि लिरुन्दा ळैय तवञ्जॅय्द तवमान् दैयल् 1275

ऐय–प्रभु; तवम् चॅय्त तवम्–स्वयं तप ने तपस्या करके जिन्हें पाया; आम् तैयल्–वह देवी; वेलै उळ्–समुद्र-मध्य; इलङ्कै अँन्नुम्–लंका नाम के; विरि नकर्–विशालनगर के; ऑरु चार्–एक तरफ़; विण् तोय्–गगनस्पर्शी; कालैयुम् मालै तानुम्–(और) सवेरा और शाम; इल्लतु–जहाँ (उनमें भेद) नहीं रहते; ओर्–उस एक; कनक कऱ्प चोलै–एक स्वर्णकल्पतरुओं का वन; अङ्कु–वहाँ; अतनिन्–उसमें; उम्पि–आपके कनिष्ठ द्वारा; पुल्लिनाल् तॉडुत्त–घास से निर्मित; तूय चालैयिन्–पवित्र पर्णशाला में; इरुन्ताळ्–रहीं। १२७५

प्रभु ! तप का तपस्या का फल है वे ! समुद्रमध्यस्थित लंका नगर

के किसी कोने में अशोक वन है, जिसके कनककल्प तरु आकाश से बातें करते रहते हैं। वहाँ सवेरे और शाम का भेद दिखायी ही नही देता (क्योंकि कल्पतरु का प्रकाश एक-सा है)। उसमें आपके छोटे भाई द्वारा घास की निर्मित पर्णशाला में देवी रहती हैं। १२७५

मण्णोडुङ् गॊण्डु पोनान् वानुयर् कऱ्पि ऩाडन्
पुण्णिय मेनि तीण्ड वञ्जुवा नुलहम् बूत्त
कण्णहऩ् कमलत् तण्णल् करुत्तिलाट् टॊडुदल् कण्णिऩ्
ऎण्णरुङ् गूऱाय् माय्दि यॆऩ्ऱदोर् मॊऴियै यॆण्णि 1276

उलकम् पूत्त—लोकसर्जक; कण् अकऩ्—विशाल; कमलत्तु अण्णल्—कमल पर विराजमान ब्रह्माजी ने; करुत्तु इलाऴ्—तुम पर मन न लगानेवाली को; तॊट्टल्—स्पर्श करना; कण्णिऩ्—सोचोगे तो; ऎण् अरुम् कूऱाय्—असंख्य खण्डों में; माय्ति—(विभक्त होकर) मरोगे; ऎऩ्ऱतु—जो कहा था; ओर् मॊऴियै—उस कथन को; ऎण्णि—सोचकर; वाऩ् उयर्—बहुत उत्कृष्ट; कऱ्पिऩाऴ् तऩ्—पातिव्रत्य-शीला के; पुण्णिय मेति—पवित्र शरीर को; तीण्ट अञ्चुवाऩ्—स्पर्श करने से डरता; मण् ऒट्टुम्—भूमि के साथ; कॊण्टु पोऩाऩ्—ले गया। १२७६

पञ्चसर्जक, कमलासन, सम्मान्य ब्रह्मा ने रावण को शाप दिया था कि अगर तुम पर मन न लगानेवाली किसी स्त्री का स्पर्श करोगे तो तुम असंख्यक टुकड़ों में फूटकर मर जाओगे। इस शाप के स्मरण से ही रावण अत्युत्तम सती सीताजी के पवित्र शरीर का स्पर्श करने से डरकर भूखण्ड के साथ ही उन्हें ले गया था। १२७६

तीण्डिल नॆऩ्ऩुम् वाय्मै तिशैमुहऩ् शॆय्द मुट्टै
कीण्डिल दऩ्ऩद नुच्चि किऴिन्दिल दॆऴुन्दु वेलै
मीण्डिल शुडर्हऴ् यावुम् विऴुन्दिल वेदञ् जॆय्है
माण्डिल वॆऩ्ऩुन् दऩ्मै वाय्मैया नुणर्दि मऩ्ऩो 1277

तीण्टिलऩ्—उसने स्पर्श नही किया; ऎऩ्ऩुम् वाय्मै—यह सत्य; तिचैमुकऩ् चॆय्त मुट्टै—चतुर्मुखसृष्ट अण्डगोल; कीण्टु इलतु—फटा नहीं; अऩ्ऩतऩ् उच्चि—अनन्तनाग का सिर; किऴिन्तिलतु—चिरा नहीं; वेलै ऎऴुन्तु—समुद्र उमड़कर; मीण्टिल—भूतल को लीलकर नही लौटे; चुटर्कऴ् यावुम्—सभी प्रकाशमण्डल; विऴुन्तिल—गिरे नहीं; वेतम् चॆय्कै—वेद और वेद-विधियाँ; माण्टिल—नष्ट नहीं हुईं; ऎऩ्ऩुम् तऩ्मै—ये स्थितियाँ; वाय्मैयाल्—अब भी विद्यमान हैं, इससे; उणर्ति—जान लें। १२७७

उसने उनका स्पर्श नहीं किया। यह सत्य इन अटल रहनेवाली बातों से प्रमाणित है। चतुर्मुखसृष्ट अण्डगोल नही फूटा। अनन्तनाग का सिर नहीं चिरा। समुद्र उमड़कर भूतल को लीलकर पुनः यथावत नहीं

हुए। सूर्य, चन्द्र आदि तेज के मण्डल चुए नहीं। वेद और वेदविधियाँ बेकार नहीं हुईं। १२७७

❀ शोहत्‌ता ळाय नङ्ग कऱ्पित्ताऱ् ऱौळुदऱ् कौत्त
माहत्‌तार् देवि मारुम् वान्‌शिऱप् पुऱ्ऱार् मऱ्ऱैप्
पाहत्‌ता ळल्ल ळीशन् महुडत्‌ताळ् पदुमत् ताळुम्
आहत्‌ता ळल्लण् माय नायिर मोलि याळाल् 1278

चोकत्‌ताळ् आय–दुःखिनी बनी; नङ्कै–देवी के; कऱ्पिनाल्–पातिव्रत्य से; माकत्‌तार् तेविमारुम्–व्योमवासियों की पत्नियाँ भी; तॊळुतऱ्कु ऒत्त–पूजार्ह; वान् चिऱप्पु–बड़े गौरव को; उऱ्ऱार्–प्राप्त कर गयी हैं; मऱ्ऱै–और; ईचन् पाकत्‌ताळ्–परमेश्वर की अर्द्धांगिनी; अल्लळ्–न बनकर; मकुटत्‌ताळ्–सिर पर रहनेवाली बनीं; पतुमत्‌ताळुम्–पद्मा भी; मायन् आकत्‌ताळ् अल्लळ्–मायावी की वक्षनिवासिनी न बनकर; आयिरम् मोलियाळ्–उनके सहस्र सिरों पर शोभनेवाली बनीं। १२७८

शोकाकुल नायिका सीताजी के पातिव्रत्य की महिमा से अन्य देवियाँ भी गौरवान्वित हो गयीं, पूजार्ह हो गयीं। और भी शिवपत्नी को अर्द्धांगिनी के पद में रहकर भी शिवजी के सिर पर रहने से प्राप्य गौरव मिल गया। श्रीपद्मा भी मायावी की वक्षःस्थलवासिनी से सहस्र सिरों पर रखकर पूज्य हो गयीं। १२७८

इलङ्गैयै मुळुदु नाडि यिरावण ऩिरुक्कै यॆय्दिप्
पॊलङ्गुळै यवरै यॆल्लाम् पॊदुवुऱ नोक्किप् पोनेन्
अलङ्गुतण् शोलै पुक्के नव्वळि यणङ्ग ऩाळैक्
कलङ्गुवॆण् डिरैयिऱ् ऱाय कण्णिऩ्ऩीर्क् कडलिऱ् कण्डेऩ् 1279

इलङ्कैयै मुळुतुम् नाटि–लंका भर में खोजकर; इरावणन् इरुक्कै ऎय्ति–रावण का वासस्थान पहुँचकर; पॊलन् कुळै–सुन्दर कर्णकुण्डलालंकृता; अवरै ऎल्लाम्–(स्त्रियों) सभी को; पॊतु उऱ नोक्कि–सामान्य रूप से देखता हुआ; पोतेन्–गया; अलङ्कु–हिलनेवाले (पत्तों और डालों के); तण् चोलै–शीतल अशोक वन में; पुक्केन्–प्रविष्ट हुआ; अ वळि–वहाँ; अणङ्कु अत्ताळै–देवी स्त्री-सम इनको; कलङ्कु–विलोडित; वॆळ् तिरैयिऱ्ऱु आय–सफ़ेद तरंगों वाले; कण्णिन् नीर् कटलिल्–अश्रुजल-सागर में; कण्टेन्–(मैंने) देखा। १२७९

मैंने लंका भर में खोजा। रावण के महल में गया। वहाँ सुन्दर कुण्डलधारिणी सब स्त्रियों को सरसरी निगाह से देखकर आगे गया और अशोक वन में पहुँचा, जिसमें तरु के पल्लव और डालें हवा में हिलती रहीं। वहाँ देवी-सी सीता को मैंने विलोडित श्वेत तरंगों वाले अश्रुजल-सागर-मध्य देखा। १२७९

अरक्किय रळवऱ् ऱाऱ्ह ळलहैयिऩ् कुऴ्वु मञ्ज
नॅरुक्किऩर् काप्प निऩ्बा ऩेशमे यच्च नीक्क
इरक्कमॆऩ् ऱॊऩ्ऱु ताऩो रेऩ्दिऴै वडिव मॆय्दित्
तरुक्कुयर् शिऱैयुऱ् ऱऩ्ऩ तहैयळत् तमिय ळम्मा 1280

अळवु अऱ्ऱार्कळ्–असंख्यक; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; अलकैयिऩ्–पिशाचों के; कुऴुवुम् अञ्च–झुण्डों को भी भयभीत कर सकनेवाली; नॅरुक्किऩर्–बिल्कुल पास से घेरकर; काप्प–रक्षित करती रहीं; अच्चम्–भय को; निऩ् पाल् नेचमे–आपके प्रति प्रेम के ही द्वारा; नीक्क–दूर करके; अ तमियळ्–वे एकाकिनी; इरक्कम् ॲऩ्ऱु–दीनता नाम का; ऑऩ्ऱुतान्–एक (तत्त्व) ही; ओर् एऩ्तिऴै वटिवम्–एक आभरणधारिणी (अंगना) का रूप; ॲय्ति–लेकर; तरुक्कु उयर्–अतिकठोर; चिऱै उऱ्ऱु–कारा में बन्द रहा; अऩ्ऩ–जैसी; तकैयळ्–स्थिति में रहनेवाली हैं। १२८०

बेशुमार निशाचरियाँ, जिनसे भूतव्रात भी भयभीत होते हैं, बिल्कुल पास से घेरकर उनकी रखवाली कर रही हैं। उससे जो भय देवी के मन में पैदा होता है, उससे आपके प्रति प्रेम ही रक्षा कर रहा है। वे एकाकिनी ऐसी दिख रही है, मानो दीनता ही (आभरणधारिणी) अंगना का रूप धरकर अति कठोर कारा में वन्दिनी बनी रहती हो। १२८०

तैयलै वणङ्गऱ् कॊत्त विडैपॆऱुन् दऩ्मै नोक्कि
ऐयना ऩिरुन्द कालै यलङ्गल्वे लिलङ्गै वेन्दऩ्
ॲय्दिन ऩिरन्दु कूऱि यिऱैञ्जिन ऩिरुन्द नङ्गै
वॆय्दुरै शॊल्लच् चीऱिक् कॊऱ्ऩमेऱ् कॊण्डु विट्टाऩ् 1281

ऐय–आर्य; तैयलै–देवी को; वणङ्कऱ्कु ऑत्त–नमस्कार (भेंट) करने योग्य; इटै–अवकाश; पॆरुम् तऩ्मै–प्राप्त करने के उपाय को; नोक्कि–सोचकर; नाऩ्–(जब) मैं; इरुन्त कालै–रहा, उस समय; अलङ्कल् वेल्–मालाधारी, भाले वाला; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंका का राजा; ॲय्तिऩऩ्–आया; इरन्तु कूऱि–विनय सुनाकर; इऱैञ्चिऩऩ्–नमस्कार किया; इरुन्त नङ्कै–(वन्दिनी) जो रहीं, उन देवी के; वॆय्तु उरै–कठोर वचन; चॊल्ल–कहने पर; चीऱि–कोप करके; कॊऱ्ऱल्–मारने पर; मेऱ्कॊण्टु विट्टाऩ्–तुल गया। १२८१

देव ! देवी से भेंट करूँ, उस समय की प्रतीक्षा में मैं बैठा था। तब माला से अलंकृत भालाधारी लंका का राजा रावण आया। उसने दीनता के वचन कहकर देवी को नमस्कार किया। वन्दिनी रही देवी ने कुछ कटु वचन कहे। रावण को गुस्सा हुआ और वह देवी को मारने पर उतारू हो गया। १२८१

आयिडै यणङ्गिन् कऱ्पु मैयनिन् ऩरुळुञ् जॆय्य
तूयनल् लऱनु मॆऩ्ऱिङ् गिऩैयऩ तॊडर्न्दु काप्पप्
पोयिन ऩरक्कि मारैच् चॊल्लुमिन् पोमि ऩॆऩ्ऱाङ्
गेयिन ववरॆ लामॆऩ् मन्दिरत् तुऱङ्गि यिऱ्ऱार् 1282

ऐय–आर्य; आ इटै–तब; अणङ्किन् कर्पुम्–भगवती का सतीत्व; निन् अरुळम्–आपकी कृपा; चॅय्य–श्रेष्ठ; तूय–पवित्र; नल् अऱनुम्–अच्छा धर्म; ॲन्ऱु इत्तैयत–आदि ऐसे तत्त्व; तॉटर्न्तु काप्प–निरन्तर रक्षा करते रहे; अरक्किमारै–राक्षसियों को (देख) उनसे; पोमिन्–जाओ; चॉल्लुमिन्–समझाकर कहो; ॲन्ऱु–कहकर; पोयितन्–गया; एयिन–आज्ञापित; अवर् ॲलाम्–वे सब; ॲन् मन्तिरत्तु–मेरे जादू से; उऱङ्कि–सोकर; इऱ्ऱार्–निष्क्रिय रहीं। १२८२

तब, हे प्रभु ! भगवती का सतीत्व, आपका अनुग्रह और श्रेष्ठ व पवित्र सद्धर्म —ऐसे तत्त्वों ने देवी की रक्षा की और निरन्तर वे उनकी रक्षा करते रहे तो रावण ने राक्षसियों को बुलाकर आज्ञा सुनायी कि चलो। उसे सलाह दो। फिर वह चला गया। उससे आज्ञापित वे सब मेरे मंत्रित जादू के कारण जडवत् सो गयीं। १२८२

अन्नदोर् पॉऴुदि नङ्गै यारुयिर् तुऱप्प दाह
उन्नितऴ् कॉडियॊन् ऱेन्दिक् कॉम्बॊडु मुऱैप्पच् चुऱ्ऱित्
तन्मणिक् कऴुत्तिऱ् चार्त्तु मळवैयिऱ् ऱडुत्तु नायेन्
पॊन्नडि वणङ्गि निन्ऱु निन्पॅयर् पुहन्ऱ पोऴ्दिल् 1283

अन्नतु ओर् पॉऴुतिन्–ऐसे एक समय में; नङ्कै–देवी के; आर् उयिर्–प्राणों को; तुऱप्पतु आक–त्यागने का; उन्नितऴ्–निश्चय करके; कॉटि ऑन्ऱु–एक लता को; एन्ति–पकड़कर; कॉम्पु ऑटुम्–शाखा से; उऱैप्प चुऱ्ऱि–दृढ़ रूप से लपेटकर; तन् मणि कऴुत्तिल्–अपने सुन्दर गले में; चार्त्तुम् अळवैयिल्–लपेटते समय; नायेन्–दास मैं; तटुत्तु–रोककर; पॊन् अटि–(स्वर्ण-) सुन्दर चरण; वणङ्कि निन्ऱु–नमन करके खड़ा होकर; निन् पॅयर्–आपका श्रीनाम; पुकन्ऱु पोऴ्तिल्–जब दुहराने लगा, तब। १२८३

उस समय नायिका देवी ने प्राणहत्या कर लेने का संकल्प करके एक लता को पकड़ा, उसे एक शाखा से खूब कसकर बाँधा। ज्योंही वे उसे अपने गले में लपेटने लगीं, त्योंही दास मैंने रोक लिया। उनके चरणों पर नमस्कार करके आपके श्रीनाम को दुहराने लगा। तब। १२८३

वञ्जनै यरक्कर् चॅय्है यामॆन मनक्कॊण् डेयुम्
अञ्जन वण्णत् तान्ऱन् पॅयरुरैत् तळिय वॅन्बाल्
तुञ्जुरु पॊऴुदिर् ऱन्दाय् तुऱक्कमॆन् ऱुवन्दु चॊन्नाळ्
मञ्जन वण्णक् कॊङ्गै वऴिहिन्ऱ मऴैक्क णीराळ् 1284

मञ्चु अत–मेघ-सम; वण्ण कॊङ्कै–सुन्दर स्तनों पर; वऴिकिन्ऱ–गिरकर बहनेवाले; मऴै कण् नीराळ्–वर्षा के समान अश्रुजल-सहित देवी ने; वञ्चनै–वंचक; अरक्कर् चॅय्कै आम्–राक्षसों का काम; ॲन–ऐसा; मनक् कॊण्टेयुम्–मन में विचार करने पर भी; तुञ्चु उऱु पॊऴुतिल्–मरते समय; अळिय–दीना; ॲन्पाल्–मेरे पास; अञ्चन वण्णत्तान् तन्–अंजनवर्ण (श्रीराम) का; पॅयर् उरैत्तु–नाम जपकर; तुऱक्कम् तन्ताय्–स्वर्ग दिलाया तुमने; ॲन्ऱु–ऐसा; उवन्तु–हर्षित होकर; चॊन्नाळ्–कहा। १२८४

मेघों की वर्षा के समान उनकी आँखों ने अश्रुवर्षा बरसायी, जो उनके मनोरम स्तनों पर से होकर बहने लगी। ऐसी आँखों की देवी ने यह सोचा कि मेरा प्रकट होना वञ्चक राक्षस का ही काम है। तो भी उन्होंने हर्षाक्त स्वर में मुझसे कहा कि मरते समय दीना मेरे सामने आये और तुमने अंजनवर्ण श्रीराम का नाम जपकर मुझे स्वर्ग दिला दिया! । १२८४

अऱिवुऱत् तेऱच् चॊन्न पेरडै याळम् यावुम्
शॆऱिवुऱ नोक्कि नायेन् शिन्दैयिऱ् ऱिरुक्क मिन्मै
मुऱिवऱ वॆण्णि वण्ण मोदिरङ् गाट्टक् कॊण्डाळ्
इऱुदियि नुयिर्दन् दीयु मरुन्दॊत्त दन्नैय दॆन्दाय् 1285

ऍन्ताय्–धाता; अऱिवु उऱ–बुद्धि में लगे और; तेऱ–साफ़ समझ जाए, ऐसा; चॊन्न–मेरे कहे हुए; पेर् अटैयाळम् यावुम्–सभी प्रमुख अभिज्ञानों को; चॆऱिवु उऱ–गम्भीर रूप से ध्यान लगाकर; नोक्कि–देखकर; नायेन् चिन्तैयिल्–दास मेरे मन में; तिरुक्कम् इन्मै–कलुष का न रहना; मुऱिवु अऱ–पीछे बदलना न पड़े, ऐसा; ऍण्णि–विचार करके; वण्ण मोतिरम्–सुन्दर मणिमुँदरी को; काट्ट–मेरे दिखाने पर; कॊण्टाळ्–ग्रहण किया; अन्नैयतु–वह; इऱुतियिन्–अन्त काल में; उयिर् तन्तु ईयुम्–प्राणस्थापन के लिए दी जानेवाली; मरुन्तु–(मृत संजीवनी नाम की) औषध; ऒत्ततु–के समान बना। १२८५

धातादेव! मैंने उन्हें समझाते हुए जो प्रबल अभिज्ञान-वचन कहे, उन सब पर देवी ने ध्यान देकर सोचा। मेरे मन में कलुष नहीं था—यह बात उन्हें असंदिग्ध रूप में लगी। फिर मैंने आपकी श्रीअंगुलीयक को अभिज्ञान के रूप में दिखाया तो उन्होंने उसे ले लिया। वही अन्त काल में प्राणों को रोक रखनेवाली मृतसंजीवनी नामक औषध के समान बनी। १२८५

ऒरुकणत् तिरण्डु कण्डे नॊळिमणि याऴि यून्ऱत्
तिरुमुलैत् तडत्तु वैत्ताळ् वैत्तलुम् जॆल्व निन्बाल्
विरहमॆन् बदनिन् वन्द वॆङ्गोळुन् दीयि नाल्वॆन्
दुरुहिय दुडन्ने यारि वलित्तदु कुळिर्प्पुळ् ळूऱ 1286

चॆल्व–भाग्यवन्त; ऒरु कणत्तु–एक ही पल के अन्दर; इरण्टु कण्टेन्–दो (विषय) देखे; ऒळि मणि आऴि–तेजोमय मणिमुँदरी को; ऊन्ऱ–खूब गड़ाकर; तिरु मुलै तटत्तु–श्रीस्तनतल पर; वैत्ताळ्–रख लिया (देवी ने); वैत्तलुम्–रखते ही; निन् पाल्–आपके; विरकम् ऍन्पततिन्–विरह से; वन्त–उत्पन्न; वॆम् कॊळुम् तीयिताल्–भयंकर और विपुल आग (ताप) से; वॆन्तु–गरम होकर; उरुकियतु–पिघला; कुळिर्प्पु–आशा की (हर्षोत्पन्न) शीतलता; उळ् ऊऱ–अन्दर होने से; उटन्ने–तुरन्त; आऱि–ठण्डा पड़कर; वलित्ततु–(पूर्ववत्) दृढ़ बना। १२८६

भाग्यवंत! एक ही समय में मैंने दो विचित्रताएँ देखीं। देवी ने तेजोमय मणिमुँदरी को अपने श्रीस्तनों के ऊपर रखा। रखते ही आपके

विरहताप रूपी विपुल तथा भयानक आग से वह गरम होकर पिघल गयी। पर तुरन्त, विश्वासजनित आन्तरिक सन्तोष की शीतलता ने उसे ठण्डा कर दिया और वह पूर्ववत् सुदृढ़ बन गयी। १२८६

वाङ्गिय वाळि तन्नै वञ्जरूर् वन्द दामॆन्
राङ्गुयर् मळैक्क णीरा लायिरङ् गलश माट्टि
एङ्गिन ळिरुन्द दल्ला लियम्बल ळॆय्त्त मेनि
वीङ्गिनळ् वियन्द दल्ला लिमैत्तिल ळुयिर्प्पु विट्टाळ् 1287

वाङ्किय आळि तन्नै–गृहीत मुँदरी को; वञ्चर् ऊर्–वंचकनगर; वन्ततम्–आया है (अतः अपवित्र हो गया); ॲन्ऱु–सोचकर; आङ्कु–तब; उयर् मळैकण् नीराल्–उत्कृष्ट वर्षा-सम अश्रुजल के; आयिरम् कलचम्–सहस्र कलशों से; आट्टि–अभिषिक्त कर; एङ्कितळ्–दुःखाभिभूत होकर; इरुन्ततु अल्लाल्–चुप रहना छोड़कर; इयम्पलळ्–कुछ नहीं बोलीं; ॲय्त्त मेऩि–कृश बना शरीर; वीङ्कितळ्–फूल उठा; वियन्ततु अल्लाल्–विस्मित रहना छोड़कर: इमैत्तिलळ्–पलकें नहीं गिरायीं; उयिर्प्पु विट्टाळ्–साँसें रोक लीं। १२८७

देवी ने हाथ में आयी मुँदरी के सम्बन्ध में सोचा कि यह वंचक लोगों के नगर में आयी है, अतः अपवित्र हो गयी है। इसलिए भावनाओं के कारण उत्कृष्ट बने, वर्षा-जैसे अपने सहस्रकलश-परिमाण में निकले अश्रुजल से उसे अभिषिक्त करा दिया। और वे चुप रहीं, पर बोलीं नहीं। कृश बना रहा शरीर फूला और वे विस्मय करती रहीं पर पलकें नहीं गिरायीं। उसी दशा में वे साँसें भी रोके रह गयीं। (सहस्रकलशाभिषेक शास्त्रोक्त पवित्रकारी क्रिया है।)। १२८७

अन्नवट् कडिये नुन्निर् पिरिन्दपि नडुत्त वॆल्लाम्
शॊन्मुऱै यऱियच् चॊल्लित् तोहैनी यिरुन्द शूळल्
इन्नदॆन् ऱऱिहि लामै यित्तुणै ताळ्त्त दॆन्ऱॆन्
मन्ननिन् वरुत्तप् पाडु मुणर्त्तिनॆन् नुयिर्प्पु वन्दाळ् 1288

मन्न–राजा; अटियेन्–दास मेरे; उन्निल् पिरिन्त पिन्–आपसे छूटने के बाद; अट्टुत्त ॲल्लाम्–जो घटा वह सब; अन्नवट्कु–उन्हें; अऱिय–समझाते हुए; चॊल् मुऱै–कथनोचित रीति से; चॊल्लि–कहकर; तोकै–कलापी-सी देवी; इ तुणै–इतनी देर; ताऴ्त्ततु–विलम्ब करना; नी–आपके; इरुन्त चूऴल्–रहने का स्थान; इन्नतु–अमुक है; ॲन्ऱु–ऐसा; अऱिकिलामै–न जानने का फल है; ॲन्ऱॆन्–(मैंने) कहा; निन् वरुत्तप्पाटुम्–आपका दुःख भी; उणर्त्तिनॆन्–बताया; उयिर्प्पु वन्ताळ्–साँसें छोड़ने लगीं। १२८८

महाराज ! मैंने उन्हें सारा वृत्तान्त ठीक प्रकार से कह सुनाया, जो मुझ दास के आपसे अलग हो जाने के बाद घटा था। फिर मैंने समझाया कि मयूरनिभ देवी ! इतना विलम्ब हुआ आपके रहने का स्थान न जानने के

कारण ही। मैंने आपके दुःख का हाल भी बताया। यह सुनने के बाद ही वे साँसें छोड़ने लगीं। १२८८

इङ्गुळ तन्मै यॅल्ला मियल्बुळि यियम्बक् केट्टाळ्
अङ्गुळ तन्मै यॅल्ला मडियॅनुक् करियच् चॊन्नाळ्
तिङ्गळॊन् ऱिरुपप॑ नॆन्ऱा ळन्नदु तीर्न्द पिन्नै
मङ्गुव दुण्मै यॅन्ऱुन् मलरडि शॆन्नि वैत्ताळ् 1289

इङ्कु–यहाँ; उळ–जो हैं; तन्मै ऍल्लाम्–उन सभी विषयों को; इयल्पुळि–यथा हैं, वैसे ही; इयम्प–मेरे कहने पर; केट्टाळ्–सुन लिया; अङ्कु उळ–वहाँ के रहनेवाले; तन्मै ऍल्लाम्–सभी वृत्तान्त; अटियॅनुक्कु–मुझसे; अऱिय–समझाते हुए; चॊन्नाळ्–(देवी ने) कहा; तिङ्कळ् ऒन्ऱु–एक मास; इरुप्पॆन्–(जीवित) रहूँगी; ऍन्ऱाळ्–कहा; अन्नतु–उस (एक मास) के; तीर्न्त पिन्नै–बीत जाने के बाद; मङ्कुवतु–बुझ जाना; उण्मै–निश्चित है; ऍन्ऱु–ऐसा; उन् मलर् अटि–आपके कमल-चरण; चॆन्नि वैत्ताळ्–सिर पर धर लिये। १२८९

यहाँ के सारे हाल मैंने जो सुनाये, उन्होंने सुने। फिर उन्होंने वहाँ के सारे हाल साफ़-साफ़ बताकर कहा कि एक ही महीने जीवित रहूँगी। बाद मेरा जीवन-दीप बुझ जायगा —यह ध्रुव है। यह कहकर उन्होंने आपके कमल-चरण अपने सिर पर धर लिये (आपको नमस्कार किया)। १२८९

वैत्तपिन् ऱुहिलिन् वैत्त मामणिक् करशै वाङ्गिक्
कैत्तलत् तिनिदि नीन्दा डामरैक् कण्ग ळार
वित्तह काण्डि यॅन्ऱु कॊडुत्तनन् वेद नन्नूल्
उयत्तन काल मॅल्लाम् बुहऴॊडु मोङ्गि निऱ्पान् 1290

वेत नल् नल्–श्रेष्ठ वेद-शास्त्रों द्वारा; उयत्तन–निर्णीत; कालम् ऍल्लाम्–काल भर; पुकऴ् ओटुम्–यश के साथ; ओङ्कि–मान में बढ़ता हुआ; निऱ्पान्–जो रहेगा, उस हनुमान ने; वैत्तपिन्–रखने के बाद (नमस्कार करने के बाद); तुकिलिन् वैत्त–अपने वस्त्र में निहित; मा मणिक्कु अरचै–श्रेष्ठ मणियों में राजा चूडामणि को; वाङ्कि–(बन्धन खोल) लेकर; कै तलत्तु–मेरे हाथ में; इनितिन् ईन्ताळ्–प्रेम के साथ दिया; वित्तक–बुद्धिसमर्थ; तामरै कण्कळ् आर–कमलनेत्र भर; काण्टि–देख लीजिए; ऍन्ऱु–कहकर; कॊटुत्तनन्–दिया। १२९०

श्रेष्ठ वेदों के बताये काल तक बढ़ते यश के साथ जो रहनेवाला है, उस चिरंजीव हनुमान ने आगे कहा। आपको नमस्कार करके देवी ने अपने वस्त्र में बाँध रखा हुआ चूडामणि निकाला। उन्होंने उसे मेरे करतल में रखा। बुद्धिसमर्थ! अपने कमलनेत्र भरकर आप देख लें। हनुमान ने चूडामणि श्रीराम के हाथ में दिया। १२९०

पॆप्पयप् पयन्द कामम् बरिणमित् तुयर्न्दु पॊङ्गि
मॆय्युऱ् वॆंदुम्बि युळ्ळम् मॆलिवुरु निलैयै विट्टान्
ऐयऩुक् कङ्गि मुऩ्ऩ रङ्गैयाऱ् पऱ्ऱुम् नङ्गै
कैयॆऩ लायिऱ् ऱॆऩ्ऱे कैपुक्क मणियिऩ् काट्चि 1291

कै पुक्क–हस्तप्रविष्ट; मणियिऩ् काट्चि–मणि का दृश्य; ऐयऩुक्कु–प्रभु के लिए; अङ्कि मुऩ्ऩर्–(विवाह के समय) अग्नि के सामने; अम् कैयाल्–अपने सुन्दर हाथ से; पऱ्ऱुम्–(जिनको) ग्रहण किया; नङ्कै कै–उन देवी के हस्त; ऎऩ्ऩल्–ऐसा; आयिऱ्ऱु–लगा; पयन्त–उससे जनित; कामम्–प्रेम; पै पय–धीरे-धीरे; परिणमित्तु–बढ़कर; उयर्न्तु–उठकर; पॊङ्कि–उमड़कर; मॆय् उऱ–शरीर खूब; वॆंतुमपि–गरम होकर; उळ्ळम्–मन; मॆलिवु उऱुम्–दुर्बल बनने की; निलैयै–स्थिति को; विट्टाऩ्–छोड़ दिया। १२९१

जब वह चूडामणि श्रीराम के हाथ में आया, तब वह उन्हें देवी सीता के हाथ के समान लगा, जिसको उन्होंने विवाह के अवसर पर अपनी हथेली (मुट्ठी) के अन्दर कर लिया था। इससे मन में प्रेम उद्भूत हुआ, उठा, बढ़ा और उमगा। इससे शरीर का गरम होना और मन का दुर्बल होना आदि कष्ट दूर हो गये। १२९१

पॊडित्तऩ वुरोम मॆऩ्मेऱ् पॊळिन्दऩ कण्णीर् पॊङ्गित्
तुडित्तन मार्बुन् दोळुन् दोऩ्ऱिऩ वियर्वित् तुळ्ळि
मडित्तदु मणिवा यावि वरुवदु पोव दाहित्
तडित्तदु मेऩि यॆऩ्ऩे यारुळर् तन्मैत् तेर्वार् 1292

उरोमम्–रोम; पॊटित्तऩ–पुलकित हुए; कण् नीर्–अश्रुजल; पॊङ्कि–उमड़कर; मेऩ् मेल्–उत्तरोत्तर; पॊळिन्तऩ–बहा; मार्पुम् तोळुम्–वक्ष और कन्धे; तुटित्तऩ–फड़के; वियर्वित् तुळ्ळि–पसीने की बूँदें; तोऩ्ऱिऩ–प्रकट हो आयीं; मणि वाय्–सुन्दर अधर; मटित्ततु–मुड़े; आवि–साँसें; पोवतु वरुवतु आकि–जातीं-आतीं बनीं; मेऩि–शरीर; तटित्ततु–फूल उठा; ऎऩ्ऩे–क्या (ही आश्चर्य); तऩ्मै तेर्वार्–स्थिति जाननेवाले; यार् उळर्–कौन हैं। १२९२

श्रीराम के रोम पुलकित हुए। आँखें डबडबा आयीं और उत्तरोत्तर अश्रुजल उमड़कर वर्षा के समान बहने लगा। भुजाएँ और वक्ष फड़क उठा। स्वेदकण प्रकट हुए। सुन्दर अधर मुड़े। साँसें तीव्र गति से निकलने और अन्दर आने लगीं। शरीर फूल गया। कैसा आश्चर्य! तब की उनकी स्थिति का वर्णन कौन परख कर सकेगा? । १२९२

आण्डैय ऩरुक्कन् मैन्द नैयहे ळरिवै नम्वाल्
काण्डलुक् कॊळिय ळाऩा ळॆऩ्ऱपिऩ् कालन् दाळ
ईण्डिऩ् मिरुत्ति पोला मॆऩ्ऱऩ ऩॆऩ्ऱ लोडुम्
तूण्डिरण् डऩैय तोळान् पॊरुक्कॆऩ वॆळुन्दु शॊऩ्ऩाऩ् 1293

आण्टैयन्-पास जो रहा; अरुक्कन् मैन्तन्-उस सूर्यसूनु ने; ऐय-प्रभु; केळ्-सुनिए; अरिवै-देवी; नम्पाल्-हमारे पास; काण्टलुक्कु-देखने (लाने) के लिए; ऍळियळ् आनाळ्-सुलभ हो गयीं; ऍन्ऱ् पिन्-ऐसा हो जाने के बाद; कालम् ताळ-समय बीत जाय; ईण्टु-(ऐसा) यहाँ; इनुम् इरुत्ति पोल् आम्-अब भी रह जायेंगे लगता है; ऍन्ऱनन्-कहा; ऍन्ऱल् ओटुम्-कहते ही; तूण् तिरण्ट अन्नय-खम्भे स्थूल बने दिखते जैसे; तोळान्-भुजा वाले श्रीराम ने; पॊरुक्कु ऍल-झट; ऍळुन्तु-उठकर; चॊन्नान्-कहा। १२६३

तब सूर्यसूनु ने, जो पास रहा, निवेदन किया कि स्वामी! सुनिए। अब देवी हमारे पास देखी जायँगी। वे सुलभ हो गयी है। फिर व्यर्थ आप यहाँ और रहेंगे भी क्या? उसके ऐसा कहते ही खंभे-जैसे पुष्ट कंधों वाले श्रीराम ससंभ्रम उठे और बोले। १२९३

ऍळुहवॆम् बडैह ळॆन्ऱा नॆयॆनु मळवि लॆङ्गुम्
मुळुमुर शॆऱ्ऱिक् कॊऱ्ऱ वळ्ळुवर् मुड्क्क मुन्दिप्
पॊळिदिरै वेलै येळुम् बुऱंपरन् दॆन्नप् पॊङ्गि
वळुवलिल् वॆळ्ळत् तानै तॆन्ऱिशै वळर्न्द दन्ऱे 1294

ऍळुक-उठें; वॆम् पटैकळ्-सबल सेनाएँ; ऍन्ऱान्-कहा; ए ऍनुम् अळविल्-'ए' कहने के समय के अन्दर; कॊऱ्ऱ वळ्ळुवर्-विजयी "वळ्ळुव" लोगों ने; ऍङ्कुम्-सर्वत्र; मुळु मुरचु-बड़ी-बड़ी भेरियाँ; ऍऱ्ऱि मुट्क्क-बजाकर स्वरित किया; पॊळि तिरै-तरंग उठानेवाले; वेलै एळुम्-सातों समुद्र; पुऱं परन्तु-बाहर उमड़े आये; ऍन्न-जैसे; वळुवल् इल्-अमोघ; वॆळ्ळ-बड़ी संख्या की; तानै-सेना; मुन्ति पॊङ्कि-पहले उठकर; तॆन् तिचै-दक्षिण दिशा में; वळर्न्ततु-बढ़ चली। १२६४

सबल सेनाएँ उठ आएँ! श्रीराम ने कहा। 'ए' अक्षर का उच्चारण करने के इतने समय के अन्दर विजयी भेरियाँ बजानेवाले 'वळ्ळुव' जाति के लोगों ने सर्वत्र भेरियाँ बजाकर स्वरित किया। अमोघ वानर-सेनाएँ उठ के क्या आयीं, मानो तरंगायमान सातों समुद्र उमगकर फैल आये हों! वे पहले ही कूच कर दक्षिण दिशा में बढ़ चली। १२९४

वीररुम् विरैविर् पोनार् विलङ्गन्मे लिलङ्गै वॆय्योन्
पेर्विलाक् कावर् पाडुम् बॆरुमैयु मरणुङ् गॊऱ्ऱक्
कार्निऱत् तरक्क रॆन्बोर् कणिदमुम् बिऱवु मॆल्लाम्
वार्हळ लनुमन् शॊल्ल वळिनॆडि दॆळिदिर् पोनार् 1295

वीररुम्-वीर भी; विरैविल् पोनार्-तेज चले; वार् कळल् अनुमन्-लम्बी पायलधारी हनुमान के; विलङ्कन् मेल्-त्रिकूट पर्वत पर की; इलङ्कै-लंका के; वॆय्योन्-उष्णरश्मि; पेर्वु इला-जहाँ नहीं जा सकता, ऐसा; कावल् पाटुम्-सुरक्षा का प्रबन्ध और; पॆरुमैयुम्-बड़प्पन; अरणुम्-सुरक्षा-प्रबन्ध (गढ़ निर्माण आदि);

कॊऱ्ऱ–विजयी; कार् निऱत्तु–काले रंग के; अरक्कर् ऎन्पोर्–राक्षस नामक लोगों की; कणितमुम्–संख्या; पिऱवुम्–और अन्य विषय; ऎल्लाम्–सब; चॊल्ल–कहते हुए जाते; वऴि नॆटितु–लम्बा मार्ग; ऎळितिल्–अनायास; पोनार्–तय करते गये। १२९५

वीर श्रीराम और लक्ष्मण भी जाने लगे। लम्बी पायलधारी हनुमान भी उनके साथ त्रिकूट पर स्थित लंका नगर का ऐसा सुरक्षा-प्रबन्ध, जिससे सूर्य भी उसमें न जा पाये, उसके अन्य बड़प्पन, गढ़ आदि प्रबन्ध, काले रंग के विजयी राक्षसों की संख्या और अन्य समाचार सुनाता हुआ चला। वे ये सब सुनते हुए चले जा रहे थे। १२९५

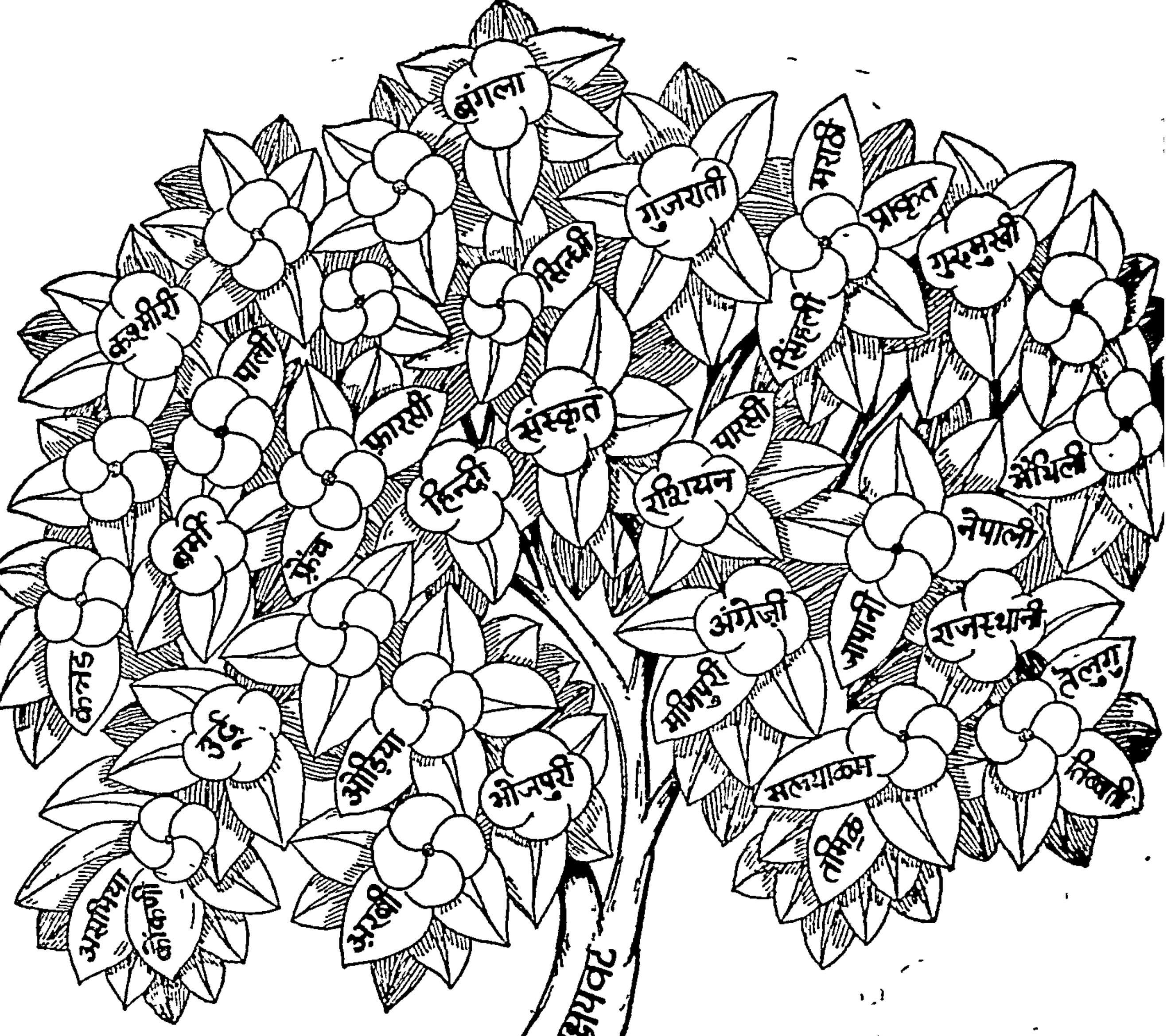
अन्नॆऱि यिरण्डु नाळि लङ्गदन् मुदलि नोर्हळ्
पॊन्नडि वणङ्गि नारेप् पुहऴ्न्दुडन् पॊरुन्दिप् पोवार्
इन्नॆडुम् बळुवक् कुन्ऱि लिन्नुऴि यिरुत्तुप् पिन्नर्
पन्निरु पहलिऱ् चॆन्ऱु तॆन्ऱिशैप् परवै कण्डार् 1296

अ नॆऱि–उस मार्ग में; इरण्टु नाळिल्–दो दिनों में; अङ्कतन् मुतलितोर्कळ्–अंगदादि वीर; पॊन् अटि वणङ्किनारै–जिन्होंने अपने सुन्दर चरणों पर नमस्कार किया (उनको); पुकऴ्न्तु–प्रशंसा करके; उटन् पॊरुन्ति–उनके साथ लगकर; पोवार्–जानेवाले; इन्–सुहावने; नॆटुम् पळुव–विशाल बागों से पूर्ण; कुन्ऱिल्–पर्वतों पर; इन् उऴि–सुखद स्थानों में; इरुत्तु–ठहरकर; पिन्नर्–बाद; पन्निरु पकलिल्–बारह दिनों में; चॆन्ऱु–जाकर; तॆन् तिचै परवै–दक्षिण सागर को; कण्टार्–देखा। १२९६

उस मार्ग में दो दिन चलने के बाद अंगदादि वीर भी (जिन्होंने हनुमान को पहले खबर देने भेज दिया था) आकर श्रीराम आदि के चरणों पर नत हुए। सबने उनकी प्रशंसा की। फिर सब आगे चले। मार्ग में पर्वतों पर सुहावने बागों में ठहरते हुए वे बढ़े और उन्होंने बारह दिन चलकर दक्षिणी सागर को सामने देखा (वे सागर-तीर पर आ पहुँचे)। १२९६

॥ सुन्दरकाण्ड समाप्त ॥

' प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'



प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

